MPPSC 2026

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

NODIA

भूगोल

GEOGRAPHY

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF

GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!

- Textbooks
- Previous Year Chapterwise Question Banks
- 30 Sets Sample Papers
- Worksheets

FREE!

DOWNLOAD NOW!

SCAN & DOWNLOAD

GET IT ON Google Play

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

2026

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

भूगोल

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

Downloaded from www.pdf.tube

MPPSC सहायक प्राध्यापक भूगोल
Edition May 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

Information contained in this book has been obtained by author, from sources believes to be reliable. However, neither NODIA nor its author guarantee the accuracy or completeness of any information herein and NODIA nor its author shall be responsible for any error, omissions, or damages arising out of use of this information. This book is published with the understanding that NODIA and its author are supplying information but are not attempting to render engineering or other professional services.

© NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹600.00

This book is available on amazon and flipkart only and not available in market.

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

अध्याय 1.	भौगोलिक विचारधारा का इतिहास	7
अध्याय 2.	भू-आकृति विज्ञान	68
अध्याय 3.	जलवायु विज्ञान	123
अध्याय 4.	समुद्र विज्ञान	182
अध्याय 5.	जनसंख्या भूगोल एवं अधिवास भूगोल	240
अध्याय 6.	राजनीतिक भूगोल, प्रादेशिक नियोजन एवं विकास	300
अध्याय 7.	आर्थिक भूगोल	358
अध्याय 8.	भारत का भूगोल	420
अध्याय 9.	मानचित्रकला	480
अध्याय 10.	मध्य प्रदेश का भूगोल	541

Click Here to Buy book on Amazon

सहायक प्राध्यापक परीक्षा–2026
द्वितीय प्रश्न–पत्र
पाठ्यक्रम – भूगोल

इकाई–1: भौगोलिक विचारधारा का इतिहास:

- प्राचीनकाल में भौगोलिक विचारों का विकास।
- आधुनिक भूगोल के विकास में जर्मनी तथा फ्राँसीसी सम्प्रदाय का योगदान।
- भूगोल में ब्रिटिश तथा अमेरिकन सम्प्रदाय का योगदान।
- भूगोल में द्वैतवाद: भौतिक तथा मानव भूगोल; क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल।
- निश्चयवाद तथा सम्भववाद; प्रतिमान बदलाव; भूगोल में परिपेक्ष (प्रत्यक्षवाद, व्यवहारवाद, आदर्शवाद, मानवतावाद, उत्तराधुनिकतावाद)।

इकाई–2: भू–आकृति विज्ञान:

- मौलिक संकल्पताएँ; अंतर्जात तथा बहिर्जात शक्तियाँ।
- अनाच्छादन प्रक्रम, अपक्षय तथा अपरंदन।
- भू–सन्नतियों: वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त तथा प्लेट विवर्तनिकी।
- भू–आकृतिक चक्र की संकल्पना– डब्ल्यू एम. डेविस तथा डब्ल्यू. पेंक।
- नदीय, हिमनदीय, शुष्क, तटीय एवं कार्स्ट चक्रों से संबद्ध भू–आकृतियाँ।

इकाई–3 : जलवायु विज्ञान :

- वायुमंडल का संघटन तथा संरचना; सूर्याभिताप; पृथ्वी का ऊष्मा बजट; तापमान का वितरण।
- वायुमंडलीय दाब तथा वायु का सामान्य परिसंचरण; ग्रहीय तथा स्थानीय पवन; इ.एन.एस.ओ. घटनाएँ (एल–नीनो, ला–नीना तथा दक्षिणी दोलन)।
- वायुराशियाँ; वाताग्र; उष्णकटिबंधीय तथा शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवात।
- विश्व जलवायु का वर्गीकरण: कोपेन तथा थार्न्थवेट की योजनाएँ; वर्षण के प्रकार तथा वितरण।
- ओजोन का क्रमिक ह्रास; वैश्विक उष्मन; पर्यावरणीय जोखिम (तड़ितझंझा, ओला वृष्टि, उष्म एवं शीत लहरें, बाढ़ एवं सूखा)।

इकाई–4: समुद्र विज्ञान :

- महासागरीय नितल के उच्चावच्च– हिन्द, अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागर।
- महासागरीय निक्षेप; महासागरीय संसाधन।
- प्रवाल भित्तियाँ: उत्पत्ति तथा प्रकार।
- महासागरों का तापमान; लवणता; महासागरीय जल का घनत्व।
- ज्वार–भाटा तथा महासागरीय धाराएँ।

इकाई–5: जनसंख्या भूगोल; अधिवास भूगोल :

- जनसंख्या भूगोल: विश्व में जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप; जनसंख्या वृद्धि; प्रजननशीलता तथा मृत्युदर विश्लेषण।
- जनांकिकीय संक्रमण; प्रवास के प्रतिरूप तथा प्रक्रिया; जनसंख्या नीति।
- जनसंख्या–संसाधन प्रदेश, सांस्कृतिक प्रदेश।
- अधिवास भूगोल: नगर–प्रदेश; प्राथमिक नगर (प्राइमेट सिटी); कोटि–आकार नियम; नगरीय वृद्धि की पारिस्थितिक प्रक्रियाएँ; नगरीय उपांत।

NODIA

- अधिवास पदानुक्रम; केन्द्रीय–स्थान सिद्धान्त : क्रिस्टालर तथा लॉश।

इकाई–6: राजनीतिक भूगोल, प्रादेशिक नियोजन तथा विकास:

- राजनीतिक भूगोल: केन्द्र स्थल तथा उपांत–स्थल (परिधीय स्थल) सिद्धान्त।
- राज्य के भौगोलिक तत्व: भौतिक, मानवीय तथा आर्थिक; सीमान्त तथा सीमाएँ।
- हिन्द महासागर का भू–राजनीतिक महत्व; भारत में अन्तर–प्रान्तीय मुद्दे तथा प्रमुख जल विवाद।
- प्रादेशिक नियोजन एवं विकास: नियोजन प्रदेशों की संकल्पना; प्रादेशिक परिसीमन की विधियाँ; प्रदेशों के प्रकार।
- विकास के संकेतक; सम्पोषित (सतत्) विकास; भारत में प्रादेशिक नियोजन।

इकाई–7: आर्थिक भूगोल:

- अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक (प्रखण्ड): प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक तथा चतुर्थक; कृषि उत्पादकता तथा दक्षता का माप; शस्य संयोजन तथा विभेदन; वॉन–थ्यूने मॉडल; विश्व की प्रमुख कृषि प्रणालियाँ।
- प्राकृतिक संसाधन : नवीकरणीय तथा अनवीकरणीय; संसाधनों का संरक्षण।
- उद्योगों का स्थानीयकरण; वेबर तथा लॉश के उपागम।
- संसाधन–आधारित तथा स्वच्छंद (फुटलूज़) उद्योग।
- परिवहन के प्रकार तथा परिवहन लागत; अभिगम्यता तथा सम्बद्धता।

इकाई–8: भारत का भूगोल:

- भू–आकृतिक विभाग।
- जलवायु–इसकी प्रादेशिक विभिन्नताएँ; मानसून तथा जेट धाराएँ।
- वनस्पति के प्रकार तथा वानस्पतिक प्रदेश; कृषि संसाधन– प्रमुख फसलें।
- खनिज तथा शक्ति संसाधन।
- प्रमुख उद्योग तथा औद्योगिक प्रदेश।

इकाई–9: मानचित्रकला :

- भौगोलिक अध्ययनों में उपकरण के रूप में मानचित्र; मानचित्रों के प्रकार; मापक्रम तकनीकें; पदक्रम (रैंक स्कोर); महत्व–प्रदान अंक (भारित अंक); प्रवाह मानचित्र; निकटतम पड़ोसी विश्लेषण; भौगोलिक विश्लेषण के लिए प्रतिचयन तकनीकें।
- सांख्यिकीय आरेख; प्रक्षेप एवं उनके प्रकार।
- दूरसंवेदन तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली; अंकीय मानचित्रण; मानचित्रण में कम्प्यूटर अनुप्रयोग।
- सांख्यिकीय विधियाँ: केन्द्रीय प्रवृति की माप; विचलन की माप: मानक विचलन।
- साधारण तथा बहु सह–संबंध; समाश्रयण।

इकाई–10: मध्यप्रदेश का भूगोल:

- भू–आकृतिक विभाग; मृदा तथा उसके प्रकार; प्रमुख नदियाँ।
- वर्षा प्रतिरूप; कृषि संसाधन– सिंचाई तथा प्रमुख फसलें।
- खनिज तथा ऊर्जा संसाधन।
- प्रमुख उद्योग– सीमेंट, कागज, रसायन तथा एल्युमीनियम।
- जनसंख्या, मध्यप्रदेश के भौगोलिक प्रदेश – नर्मदा घाटी, मालवा पठार, बुन्देलखंड पठार, बघेलखंड पठार, मध्यभारत पठार।

****

Downloaded from www.pdf.tube

NODIA

अध्याय 01
भौगोलिक विचारधारा का इतिहास

1. किसे व्यापक रूप से 'भूगोल' शब्द का सर्वप्रथम उपयोग करने और पृथ्वी की परिधि की अत्यधिक परिशुद्धता के साथ गणना करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) हेरोडोटस
(B) इरेटोस्थनीज
(C) टॉलेमी
(D) स्ट्रैबो

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्रारंभिक भौगोलिक विचारों में एनेक्सीमेंडर के प्रमुख योगदान का सही वर्णन करता है?
(A) उन्होंने यूनान में 'ग्नोमोन' की शुरुआत की और ज्ञात विश्व का पहला मानचित्र बनाया।
(B) वे खगोलीय और गणितीय सिद्धांतों के आधार पर विश्व का मानचित्र बनाने वाले पहले व्यक्ति थे।
(C) उन्होंने 'जेस पीरियोडोस' नामक शास्त्रीय कृति में एक व्यवस्थित भौगोलिक विवरण लिखा।
(D) उन्होंने तर्क दिया कि पृथ्वी एक पूर्ण गोला है और मध्य सूर्य के चारों ओर घूमती है।

3. प्राचीन यूनानी भूगोल में 'क्लाइमेटा' की अवधारणा मुख्य रूप से किसे संदर्भित करती थी?
(A) एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में देखे गए विशिष्ट मौसम प्रतिरूप।
(B) मुख्य रूप से सापेक्ष ऊँचाई के आधार पर वर्गीकृत ऊर्ध्वाधर जलवायु क्षेत्र।
(C) दिन के उजाले की विशिष्ट अवधि द्वारा परिभाषित अक्षांश के समानांतर क्षेत्र।
(D) विभिन्न ऐतिहासिक और आधुनिक मानवीय गतिविधियों द्वारा परिभाषित सांस्कृतिक क्षेत्र।

4. भूगोल में स्ट्रैबो के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: स्ट्रैबो की 'जियोग्राफिया' 17 खंडों की एक विशाल कृति थी जिसने रोमन लोगों के लिए ज्ञात विश्व के विश्वकोश विवरण के रूप में कार्य किया।
कथन II: उनका कार्य मुख्य रूप से गणितीय भूगोल और मानचित्रकला पर केंद्रित था, जिसमें ऐतिहासिक और राजनीतिक पहलुओं की उपेक्षा की गई थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

5. किस प्राचीन यूनानी विद्वान को अक्सर 'इतिहास का पिता' कहा जाता है, लेकिन उन्होंने फारसी साम्राज्य की भूमि और लोगों का वर्णन करके भूगोल में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(A) थेल्स
(B) हेकेटियस
(C) हेरोडोटस
(D) अरस्तू

6. सूची I में दिए गए प्राचीन भूगोलवेत्ताओं को सूची II में उनके महत्वपूर्ण कार्यों या अवधारणाओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (भूगोलवेत्ता)
P. टॉलेमी
Q. इरेटोस्थनीज
R. हेकेटियस
S. स्ट्रैबो
सूची II: (कार्य/अवधारणा)
1. जियोग्राफिया (17 खंड)
2. जेस पीरियोडोस
3. जियोग्राफिके हाइफेजेसिस (भूगोल के लिए मार्गदर्शिका)
4. पृथ्वी की परिधि का मापन
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

7. खगोल विज्ञान और गणितीय भूगोल पर एक व्यापक ग्रंथ 'अल्मागैस्ट', जिसने एक हजार से अधिक वर्षों तक पश्चिमी और इस्लामी विज्ञान को प्रभावित किया, किसके द्वारा लिखा गया था?
(A) हिप्पार्कस
(B) इरेटोस्थनीज
(C) अरस्तू
(D) क्लॉडियस टॉलेमी

8. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा प्राचीन यूनानी भौगोलिक सोच का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं थी?
(A) जानबूझकर की गई मानवीय गतिविधियों के उत्पाद के रूप में सांस्कृतिक परिदृश्यों का अध्ययन।
(B) गोलाकार पृथ्वी और उसके खगोलीय गुणों का वैज्ञानिक विचार।
(C) ज्ञात विश्व का विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में व्यवस्थित विभाजन।

Click Here to Buy book on Amazon

(D) पृथ्वी के वास्तविक भौतिक आकार की गणना करने का गणितीय प्रयास।

9. भूगोल में अरस्तू का योगदान मुख्य रूप से किस क्षेत्र में था?
(A) राजनीतिक भूगोल, प्राचीन राज्य की आदर्श संरचना का विश्लेषण करके।
(B) मानचित्रकला, नवीन मानचित्र प्रक्षेपों और आलेखन प्रणालियों को विकसित करके।
(C) भौतिक भूगोल, प्राकृतिक प्रक्रियाओं के अनुभवजन्य प्रेक्षणों के माध्यम से।
(D) क्षेत्रीय भूगोल, रोमन साम्राज्य के भीतर प्रांतों का वर्णन करके।

10. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): टॉलेमी के विश्व मानचित्र में, सदियों तक प्रामाणिक रहने के बावजूद, महत्वपूर्ण त्रुटियाँ थीं, जैसे कि यूरेशियाई भूभाग के आकार को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना।
कारण (R): टॉलेमी पृथ्वी की परिधि के लिए एक गलत और बहुत छोटी गणना पर निर्भर थे, जिससे उनके मानचित्रों का पैमाना विकृत हो गया था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

11. 'कोरोलॉजी' शब्द, जो बाद में हेटनर के कार्य का केंद्र बना, उसकी प्राचीन जड़ें किस भूगोलवेत्ता के कार्य में हैं जिन्होंने स्थानों के वर्णन पर बल दिया था?
(A) टॉलेमी
(B) इरेटोस्थनीज
(C) थेल्स
(D) स्ट्रैबो

12. प्राचीन विद्वान और उनके विश्वास का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) एनेक्सीमेंडर – तर्क दिया कि पृथ्वी एक पूर्ण गोला थी।
(B) थेल्स – मानते थे कि पृथ्वी जल पर तैरती हुई एक चपटी डिस्क थी।
(C) प्लेटो – पृथ्वी को एक घन मानते थे।
(D) अरस्तू – एक बेलनाकार पृथ्वी का प्रस्ताव दिया।

13. आधुनिक भूगोल की नींव में इमैनुएल कांट का प्राथमिक योगदान क्या था?
(A) जैव विविधता के दस्तावेजीकरण के लिए दक्षिण अमेरिका में व्यापक क्षेत्रीय कार्य का समापन।
(B) पर्यावरणीय नियतिवाद के संबंध में सिद्धांत का व्यवस्थित निरूपण।
(C) भूगोल का इतिहास से भिन्न एक क्षेत्र-विवरणी (कोरोलॉजिकल) विज्ञान के रूप में वर्गीकरण।
(D) 'पेय' या छोटे, सजातीय प्राकृतिक क्षेत्रों की अवधारणा का विकास।

14. निम्नलिखित में से किसे अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट के साथ आधुनिक जर्मन भूगोल के 'शास्त्रीय काल' का प्रमुख व्यक्तित्व माना जाता है?
(A) फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन
(B) फ्रेडरिक रैटजेल
(C) अल्फ्रेड हेटनर
(D) कार्ल रिटर

15. आधुनिक भूगोल की नींव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट के भूगोल के दृष्टिकोण को व्यवस्थित या विषयगत माना जाता है।
कथन II: कार्ल रिटर के भूगोल के दृष्टिकोण को क्षेत्रीय और सोद्देश्य माना जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

16. जर्मन भूगोल में 'लैंडरकुंडे' की अवधारणा, जो विशिष्ट क्षेत्रों या देशों के विस्तृत अध्ययन पर केंद्रित है, सबसे निकटता से किससे संबंधित है?
(A) अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट
(B) अल्फ्रेड हेटनर
(C) फ्रेडरिक रैटजेल
(D) इमैनुएल कांट

17. फ्रेडरिक रैटजेल अपनी कृति 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं, जिसने किसकी नींव रखी?
(A) सांस्कृतिक भूगोल
(B) राजनीतिक और मानव भूगोल
(C) भू-आकृति विज्ञान
(D) जलवायु विज्ञान

18. फ्रेडरिक रैटजेल द्वारा प्रस्तुत की गई वह कौन सी अवधारणा है, जो उस 'जीवित स्थान' को संदर्भित करती है जिसकी एक राज्य को बढ़ने और फलने-फूलने के लिए आवश्यकता होती है?
(A) लेबेन्सराम
(B) जॉनर डी वी
(C) पेय
(D) एर्डकुंडे

19. अल्फ्रेड हेटनर ने भूगोल को किस रूप में परिभाषित किया?
(A) एक इडियोग्राफिक विज्ञान जो अद्वितीय स्थानों की प्रकृति का वर्णन करने से संबंधित है।
(B) एक नोमोथेटिक विज्ञान जो स्थानिक संगठन प्रतिरूपों के

Downloaded from www.pdf.tube

लिए सार्वभौमिक नियमों की खोज करता है।
(C) एक कोरोलॉजिकल विज्ञान जो विभिन्न घटनाओं के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करता है।
(D) एक क्रोनोलॉजिकल विज्ञान जो समय के साथ घटनाओं की प्रगति का अध्ययन करता है।

20. भूगोल के जर्मन स्कूल के योगदान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कार्ल रिटर ने एक सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण अपनाया, उनका मानना था कि पृथ्वी की रचना ईश्वर द्वारा मानव जाति को शिक्षित करने के लिए की गई थी।
II. अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट की 'कॉस्मॉस' एक बहु-खंडीय कृति थी जिसका उद्देश्य पृथ्वी के बारे में सभी वैज्ञानिक ज्ञान का संश्लेषण करना था।
III. फ्रेडरिक रैटजेल ने मानव समाजों पर पर्यावरण के प्रभाव के विरुद्ध तर्क दिया।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

21. हम्बोल्ट और रिटर के दृष्टिकोण के बीच मुख्य अंतर यह था कि:
(A) हम्बोल्ट एक प्रसिद्ध विश्व अन्वेषक थे, जबकि रिटर एक 'आरामकुर्सी' भूगोलवेत्ता थे।
(B) हम्बोल्ट एक कट्टर पर्यावरणीय नियतिवादी थे, जबकि रिटर एक संभववादी थे।
(C) हम्बोल्ट ने व्यवस्थित दृष्टिकोण का उपयोग किया, जबकि रिटर ने क्षेत्रीय संश्लेषण का उपयोग किया।
(D) हम्बोल्ट ने मानव भूगोल पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि रिटर ने भौतिक भूगोल पर ध्यान केंद्रित किया।

22. जर्मन भूगोलवेत्ता फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन को किस देश के भू-आकृति विज्ञान पर उनके कार्य के लिए जाना जाता है?
(A) ब्राजील
(B) चीन
(C) भारत
(D) रूस

23. किस जर्मन विद्वान के कार्य को हम्बोल्ट और रिटर के शास्त्रीय काल और क्षेत्र-विवरणी पर केंद्रित नए भूगोल के बीच एक कड़ी के रूप में देखा जाता है?
(A) इमैनुएल कांट
(B) ऑस्कर पेशेल
(C) अल्फ्रेड हेटनर
(D) फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन

24. भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल के संस्थापक, जिन्होंने संभववाद के दर्शन का समर्थन किया, कौन थे?
(A) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
(B) जीन ब्रून्स
(C) इमैनुएल डी मार्टोन
(D) अल्बर्ट डिमांजिया

25. विचार के फ्रांसीसी स्कूल के संदर्भ में, 'जॉनर डी वी' किसे संदर्भित करता है?
(A) एक विशिष्ट परिदृश्य की भौतिक विशेषताएं और स्थलाकृति।
(B) एक राष्ट्र-राज्य की राजनीतिक सीमाएं और प्रशासनिक सीमाएं।
(C) एक विशिष्ट समुदाय के भीतर स्थापित परंपराएं और जीवन जीने के तरीके।
(D) मानव व्यवहार के स्थानिक प्रतिरूपों को नियंत्रित करने वाले सार्वभौमिक नियम।

26. भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: विडाल डी ला ब्लाश के नेतृत्व में भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल ने पर्यावरणीय नियतिवाद का पुरजोर विरोध किया।
कथन II: विडालियन परंपरा का मूल 'पेय' कहे जाने वाले छोटे, सजातीय क्षेत्रों का अध्ययन था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

27. जीन ब्रून्स ने 'मृदा के अनुत्पादक उपयोग के तथ्यों' और 'पौधों और जानवरों की विजय के तथ्यों' पर आधारित मानव भूगोल के लिए एक रूपरेखा प्रस्तावित की। इस रूपरेखा को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जा सकता है:
(A) शहरी प्रणालियों और उनके पदानुक्रमित संगठन का एक संरचनात्मक मॉडल।
(B) संप्रभु राज्य विस्तार पर आधारित राजनीतिक भू-राजनीति का एक सिद्धांत।
(C) पारंपरिक क्षेत्रीय भूगोल दृष्टिकोणों की एक पद्धतिगत आलोचना।
(D) पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करने वाली आवश्यक मानवीय गतिविधियों का वर्गीकरण।

28. सूची I में फ्रांसीसी स्कूल के भूगोलवेत्ताओं को सूची II में उनके योगदान के प्रमुख क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (भूगोलवेत्ता)
P. विडाल डी ला ब्लाश
Q. जीन ब्रून्स
R. इमैनुएल डी मार्टोन
S. अल्बर्ट डिमांजिया
सूची II: (योगदान)
1. भौतिक भूगोल, विशेष रूप से 'ट्रेते डी जियोग्राफिक फिजिक'
2. अधिवास और परिवहन पर केंद्रित मानव भूगोल
3. मानव भूगोल के सिद्धांत और अंतःक्रिया

NODIA

4. संभववाद और 'जॉनर डी वी'

कूट:

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

29. विडालियन विचारधारा में 'पेय' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) केंद्रीकृत प्रशासनिक नियंत्रण वाला एक बड़ा राजनीतिक राज्य।
(B) अपने औसत तापमान द्वारा परिभाषित एक वैश्विक जलवायु क्षेत्र।
(C) एक विशिष्ट पहचान और सजातीयता वाला एक छोटा, प्राकृतिक क्षेत्र।
(D) औद्योगिक उत्पादन पर केंद्रित एक शहरी महानगरीय क्षेत्र।

30. विडाल डी ला ब्लाश द्वारा स्थापित भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल का केंद्रीय विषय निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(A) छोटी क्षेत्रीय इकाइयों ('पेय') पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) 'जॉनर डी वी' की अवधारणा।
(C) संभववाद का दर्शन।
(D) स्थानिक संगठन के सार्वभौमिक नियमों की खोज।

31. एनाल्स स्कूल का प्राथमिक पद्धतिगत दृष्टिकोण, जिसका फ्रांसीसी भूगोल पर गहरा प्रभाव पड़ा, वह था:
(A) ऐतिहासिक और अंतःविषय संश्लेषण।
(B) मात्रात्मक विश्लेषण और मॉडल निर्माण।
(C) सख्त पर्यावरणीय नियतिवाद।
(D) उत्तर-संरचनावादी विखंडन।

32. यदि एक भूगोलवेत्ता यह अध्ययन करता है कि एक पहाड़ी क्षेत्र के समुदाय ने सीढ़ीदार खेती, ऋतु प्रवास और स्थानीय शिल्प पर आधारित एक अद्वितीय आजीविका कैसे विकसित की है, तो वे संभवतः किस अवधारणा को लागू कर रहे हैं?
(A) लेबेन्सराम
(B) जॉनर डी वी
(C) अपरदन चक्र
(D) केंद्रीय स्थान सिद्धांत

33. निम्नलिखित में से कौन 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में जर्मन और फ्रांसीसी भूगोल स्कूलों के बीच के अंतर का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) जर्मन स्कूल विशेष रूप से भौतिक था, जबकि फ्रांसीसी स्कूल विशेष रूप से मानवीय था।
(B) जर्मन स्कूल नियतिवाद की ओर झुका हुआ था, जबकि फ्रांसीसी स्कूल ने संभववाद का मार्ग प्रशस्त किया।
(C) जर्मन स्कूल ने अन्वेषण पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि फ्रांसीसी स्कूल ने मानचित्रकला पर ध्यान केंद्रित किया।
(D) जर्मन स्कूल ने क्षेत्रीय अध्ययनों को खारिज कर दिया, जबकि फ्रांसीसी स्कूल ने उनका समर्थन किया।

34. 'ट्रेते डी जियोग्राफिक फिजिक' (भौतिक भूगोल पर ग्रंथ) एक मौलिक कृति थी जिसने फ्रांस और उसके बाहर भौतिक भूगोल के अध्ययन को बहुत प्रभावित किया। इसके लेखक कौन थे?
(A) इमैनुएल डी मार्टोन
(B) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
(C) जीन ब्रून्स
(D) अल्बर्ट डिमांजिया

35. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): फ्रांसीसी भौगोलिक परंपरा, विशेष रूप से विडाल डी ला ब्लाश के अधीन, क्षेत्रीय संश्लेषण पर अपने बल के कारण जानी जाती है।
कारण (R): फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने किसी क्षेत्र के उस अद्वितीय व्यक्तित्व को समझने की कोशिश की जो लोगों और उनके पर्यावरण के बीच दीर्घकालिक अंतःक्रिया से उभरा था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

36. कौन सा ब्रिटिश भूगोलवेत्ता भू-राजनीतिक 'हृदयस्थल सिद्धांत' विकसित करने के लिए प्रसिद्ध है?
(A) एल. डडली स्टैम्प
(B) ए. जे. हर्बर्टसन
(C) पर्सी एम. रॉक्सबी
(D) हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर

37. भूगोल में ए. जे. हर्बर्टसन का प्रमुख योगदान विश्व का किस रूप में विभाजन था?
(A) प्रभाव के राजनीतिक क्षेत्र।
(B) भाषा और धर्म पर आधारित सांस्कृतिक क्षेत्र।
(C) जलवायु और वनस्पति पर आधारित प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्र।
(D) आर्थिक गतिविधि पर आधारित भूमि-उपयोग क्षेत्र।

38. 1930 के दशक में 'लैंड यूटिलाइजेशन सर्वे ऑफ ब्रिटेन', जिसने पूरे देश में भूमि उपयोग का मानचित्रण किया था, किसके द्वारा निर्देशित किया गया था?
(A) हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर
(B) एल. डडली स्टैम्प
(C) पैट्रिक गेडिस
(D) ए. जे. हर्बर्टसन

39. ब्रिटिश भू-राजनीतिक विचारधारा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: हैल्फोर्ड मैकिंडर के हृदयस्थल सिद्धांत ने सुझाव

Click Here to Buy book on Amazon

दिया कि यूरेशियाई भूभाग का नियंत्रण विश्व प्रभुत्व की कुंजी थी।
कथन II: उनका सिद्धांत मुख्य रूप से सांस्कृतिक भूगोल में योगदान था, जो लोक परंपराओं पर केंद्रित था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

40. निम्नलिखित ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं को उनके सबसे प्रभावशाली प्रकाशनों के आधार पर सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. एल. डडली स्टैम्प (The Land of Britain: Its Use and Misuse)
2. हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर (The Geographical Pivot of History)
3. ए. जे. हर्बर्टसन (The Major Natural Regions: An Essay in Systematic Geography)

(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

41. मैकिंडर के "इतिहास की भौगोलिक धुरी" का मूल विचार यह था कि:
(A) समुद्री शक्ति हमेशा थल शक्ति की ताकत पर हावी रहेगी।
(B) वैश्विक शक्ति का भविष्य उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में निहित है।
(C) पूर्वी यूरोप का नियंत्रण 'हृदयस्थल' पर अधिकार करने के लिए महत्वपूर्ण था।
(D) जलवायु किसी राष्ट्र की सापेक्ष शक्ति का अंतिम निर्धारक था।

42. 20वीं सदी की शुरुआत में भूगोल के ब्रिटिश स्कूल के दृष्टिकोण को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) अनुभवजन्य, व्यावहारिक और क्षेत्रीय तथा साम्राज्यवादी हितों पर केंद्रित।
(B) अत्यधिक सैद्धांतिक और अमूर्त मात्रात्मक मॉडलिंग पर आधारित।
(C) मुख्य रूप से उत्तर-आधुनिक आलोचना और विखंडन पर केंद्रित।
(D) व्यवहारवादी और मानवतावादी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के प्रभुत्व वाला।

43. किस अमेरिकी भूगोलवेत्ता को 'अमेरिकी भूगोल का जनक' माना जाता है और वे अपने 'अपरदन चक्र' के सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) कार्ल ओ. सॉयर
(B) यशायाह बोमन
(C) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(D) विलियम मॉरिस डेविस

44. एलेन चर्चिल सेंपल, जो एक प्रमुख अमेरिकी भूगोलवेत्ता थीं, किस भौगोलिक दर्शन की कट्टर समर्थक थीं?
(A) संभववाद
(B) पर्यावरणीय नियतिवाद
(C) मानवतावाद
(D) उत्तर-आधुनिकतावाद

45. भूगोल के अमेरिकी स्कूल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विलियम मॉरिस डेविस का अपरदन चक्र का मॉडल परिदृश्य विकास का वर्णन करने वाली एक विकासवादी योजना थी।
II. कार्ल सॉयर ने पर्यावरणीय नियतिवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की और 'सांस्कृतिक परिदृश्य' के अध्ययन का समर्थन किया।
III. रिचर्ड हार्टशॉर्न ने तर्क दिया कि भूगोल का केंद्रीय कार्य सार्वभौमिक स्थानिक नियमों की खोज करना था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

46. प्रसिद्ध शुरुआती पंक्ति, "मनुष्य पृथ्वी की सतह की उपज है," फ्रेडरिक रैटजेल के किस छात्र द्वारा लिखी गई पुस्तक से है?
(A) एल्सवर्थ हंटिंगटन
(B) विलियम मॉरिस डेविस
(C) यशायाह बोमन
(D) एलेन चर्चिल सेंपल

47. कार्ल ओ. सॉयर के प्रभावशाली पत्र 'द मॉर्फोलॉजी ऑफ लैंडस्केप' (1925) ने तर्क दिया कि भूगोल का कार्य किसका अध्ययन करना है?
(A) 'प्राकृतिक परिदृश्य' का 'सांस्कृतिक परिदृश्य' में परिवर्तन।
(B) मानव सभ्यता के विकास पर जलवायु का प्रभाव।
(C) मानव अधिवास के ज्यामितीय प्रतिरूप और वितरण।
(D) आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों के लिए आदर्श स्थान।

48. रिचर्ड हार्टशॉर्न ने अपनी कृति 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी' में तर्क दिया कि भूगोल एक ऐसा विषय है जो प्रदान करता है:
(A) वैश्विक स्थानिक वितरण के संबंध में वैज्ञानिक नियमों का विकास।
(B) पृथ्वी की सतह के परिवर्तनशील चरित्र का एक व्यवस्थित और तर्कसंगत विवरण।
(C) भौगोलिक ज्ञान में निहित शक्ति संरचनाओं की आलोचना।

(D) भविष्य के भू-राजनीतिक संघर्षों के परिणाम की भविष्यवाणी करने के लिए एक सैद्धांतिक मॉडल।

49. 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' की अवधारणा सबसे निकटता से किस भूगोलवेत्ता से जुड़ी है?
(A) विलियम मॉरिस डेविस
(B) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(C) कार्ल ओ. सॉयर
(D) एल्सवर्थ हंटिंगटन

50. अमेरिकी भूगोलवेत्ता एल्सवर्थ हंटिंगटन किसके बारे में अपने विवादास्पद सिद्धांतों के लिए जाने जाते हैं?
(A) जलवायु नियतिवाद, जलवायु को सभ्यताओं के उदय और पतन से जोड़ना।
(B) शहरी आकृति विज्ञान।
(C) अपरदन चक्र।
(D) लैटिन अमेरिका का सांस्कृतिक परिदृश्य।

51. भूगोल के बर्कले स्कूल की पहचान सबसे निकटता से किसके कार्य से की जाती है?
(A) रिचर्ड हार्टशॉर्न और क्षेत्रीय विभेदीकरण।
(B) विलियम मॉरिस डेविस और भू-आकृति विज्ञान।
(C) कार्ल ओ. सॉयर और सांस्कृतिक-ऐतिहासिक भूगोल।
(D) विलियम बंज और उग्र भूगोल।

52. यशायाह बोमन के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: यशायाह बोमन एक अमेरिकी भूगोलवेत्ता थे जिन्हें अनुप्रयुक्त भूगोल में उनके कार्य और एक राजनीतिक सलाहकार के रूप में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता था।
कथन II: उनका कार्य मुख्य रूप से अमूर्त सैद्धांतिक मॉडल विकसित करने पर केंद्रित था, जिसमें वास्तविक दुनिया की समस्याओं से बचा गया था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

53. भौतिक और मानव भूगोल के बीच द्वैतवाद मुख्य रूप से किस बारे में बहस है?
(A) क्या भूगोल को मात्रात्मक या गुणात्मक विधियों का उपयोग करना चाहिए।
(B) क्या भूगोल अनिवार्य रूप से एक विज्ञान है या एक कला।
(C) क्या भूगोल को प्राकृतिक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए या मानवीय गतिविधियों पर।
(D) क्या भूगोल को अतीत को प्राथमिकता देनी चाहिए या वर्तमान को।

54. व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच द्वैतवाद इस प्रश्न पर केंद्रित है कि क्या भूगोल को:
(A) मुख्य रूप से एक भौतिक विज्ञान या सामाजिक विज्ञान के रूप में कार्य करना चाहिए।
(B) घटनाओं के सामान्य नियमों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए या अद्वितीय क्षेत्रीय संयोजनों पर।
(C) पद्धतिगत रूप से अभिलेखीय अनुसंधान के स्थान पर क्षेत्रीय कार्य को प्राथमिकता देनी चाहिए।
(D) सैद्धांतिक रूप से नियतिवादी या संभववादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

55. सूची I में भौगोलिक द्वैतवाद को सूची II में उसके मूल प्रश्न के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (द्वैतवाद)
P. व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय
Q. भौतिक बनाम मानव
R. नियतिवाद बनाम संभववाद
S. इडियोग्राफिक बनाम नोमोथेटिक
सूची II: (मूल प्रश्न)
1. क्या उद्देश्य अद्वितीय का वर्णन करना है या सामान्य नियमों को स्थापित करना है?
2. क्या पर्यावरण मानवीय गतिविधियों को नियंत्रित करता है, या यह केवल संभावनाएं प्रदान करता है?
3. क्या भूगोल को प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए या मानव समाजों पर?
4. क्या भूगोल को विषयों का वैश्विक स्तर पर अध्ययन करना चाहिए या विशिष्ट स्थानों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए?
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

56. यह तर्क कि भूगोल को 'विज्ञानों की जननी' होना चाहिए जो प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों के बीच सेतु का काम करे, किनके बीच द्वैतवाद को हल करने का एक प्रयास है?
(A) भौतिक और मानव भूगोल।
(B) व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल।
(C) ऐतिहासिक और समकालीन भूगोल।
(D) सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त भूगोल।

57. उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के वैश्विक वितरण और प्रतिरूपों का अध्ययन करने वाला एक भूगोलवेत्ता किस प्रकार का अध्ययन कर रहा है?
(A) क्षेत्रीय
(B) इडियोग्राफिक
(C) व्यवस्थित
(D) मानवतावादी

58. 'दक्कन के पठार का अद्वितीय भौगोलिक व्यक्तित्व' पर एक मोनोग्राफ लिखने वाला भूगोलवेत्ता किस प्रकार का अध्ययन कर रहा है?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) क्षेत्रीय
(B) व्यवस्थित
(C) नोमोथेटिक
(D) प्रत्यक्षवादी

59. निम्नलिखित में से कौन सा विद्वान भूगोल के क्षेत्रीय दृष्टिकोण से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है?
(A) अलेक्ज़ेंडर वॉन हम्बोल्ट
(B) विलियम मॉरिस डेविस
(C) ऑस्कर पेशेल
(D) अल्फ्रेड हेटनर

60. व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच की बहस अक्सर ज्ञान के किन दो दृष्टिकोणों के बीच की बहस से जुड़ी होती है?
(A) निगमनात्मक और आगमनात्मक
(B) नोमोथेटिक और इडियोग्राफिक
(C) गुणात्मक और मात्रात्मक
(D) अनुभवजन्य और सैद्धांतिक

61. निम्नलिखित में से कौन सा विषय के भीतर एक प्रमुख द्वैतवाद नहीं माना जाता है?
(A) भौतिक बनाम मानव भूगोल
(B) व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय भूगोल
(C) गुणात्मक बनाम मात्रात्मक भूगोल
(D) नियतिवाद बनाम संभववाद

62. यह विचार कि "भौगोलिक अध्ययन का उचित विषय स्थानिक दृष्टिकोण से मानव-पर्यावरण प्रणाली है" किस द्वैतवाद को संश्लेषित करने का एक प्रयास है?
(A) ऐतिहासिक बनाम समकालीन
(B) सैद्धांतिक बनाम अनुप्रयुक्त
(C) इडियोग्राफिक बनाम नोमोथेटिक
(D) भौतिक बनाम मानव

63. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): रिचर्ड हार्टशॉर्न ने क्षेत्रीय भूगोल और क्षेत्रीय विभेदीकरण की अवधारणा को विषय के मूल के रूप में समर्थन दिया।
कारण (R): उनका मानना था कि स्थानों के अद्वितीय चरित्र को सार्वभौमिक वैज्ञानिक नियमों द्वारा पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है, इसलिए उन्होंने एक इडियोग्राफिक दृष्टिकोण का पक्ष लिया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

64. पर्यावरणीय नियतिवाद का दार्शनिक रुख क्या सुझाव देता है?
(A) मनुष्यों के पास अपने पर्यावरण को संशोधित करने की असीमित क्षमता है।
(B) भौतिक पर्यावरण संस्कृति को आकार देने वाली प्रमुख शक्ति है।
(C) मानवीय विकल्प भौगोलिक प्रतिरूपों के प्राथमिक चालक हैं।
(D) मनुष्य और पर्यावरण पारस्परिक अंतःक्रिया की स्थिति में मौजूद हैं।

65. संभववाद का दर्शन, जो पर्यावरणीय नियतिवाद की प्रतिक्रिया है, तर्क देता है कि:
(A) मानवीय गतिविधियों पर कोई पर्यावरणीय सीमाएँ नहीं हैं।
(B) पर्यावरण सीमाएँ निर्धारित करता है, लेकिन संस्कृति मानवीय विकल्पों द्वारा निर्धारित होती है।
(C) सभी मानव समाज स्थान की परवाह किए बिना विकास के एक ही स्तर पर पहुँचते हैं।
(D) मानवीय गतिविधियाँ अप्रत्याशित हैं और उनका वैज्ञानिक रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

66. कौन सी विचारधारा संभववाद के विकास के साथ सबसे मजबूती से जुड़ी हुई है?
(A) विडाल डी ला ब्लाश के अधीन फ्रांसीसी स्कूल।
(B) रैटजेल के अधीन जर्मन स्कूल।
(C) डेविस के अधीन अमेरिकी स्कूल।
(D) मैकिंडर के अधीन ब्रिटिश स्कूल।

NODIA

67. निम्नलिखित में से किस भूगोलवेत्ता को पर्यावरणीय नियतिवाद का प्रमुख समर्थक माना जाएगा?
(A) कार्ल सॉयर
(B) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
(C) एल्सवर्थ हंटिंगटन
(D) रिचर्ड हार्टशॉर्न

68. पर्यावरणीय नियतिवाद की आलोचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: एनाल्स स्कूल से जुड़े इतिहासकार लुसिएन फेब्रे, पर्यावरणीय नियतिवाद के कड़े आलोचक और संभववाद के समर्थक थे।
कथन II: उन्होंने प्रसिद्ध रूप से कहा था, "कहीं भी अनिवार्यताएं नहीं हैं, बल्कि हर जगह संभावनाएं हैं।"
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

69. ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रस्तावित 'रुको-और-जाओ नियतिवाद' या 'नव-नियतिवाद' की अवधारणा क्या सुझाव देती है?

(A) मानवीय गतिविधि पर पर्यावरण का कोई प्रभाव नहीं है।
(B) मनुष्य स्वतंत्र रूप से चुनाव करते हैं, लेकिन पर्यावरण विकल्पों की बुद्धिमत्ता का न्याय करता है।
(C) मनुष्य प्रगति की गति को नियंत्रित करते हैं, लेकिन प्रकृति ने प्रारंभिक दिशा निर्धारित की है।
(D) संस्कृति किसी समाज की प्रगति की एकमात्र निर्धारक है।

70. "पर्यावरण अपने आप में एक अर्थहीन शब्द है; मनुष्य के बिना, यह एक शून्य है।" यह कथन किस भौगोलिक परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है?
(A) पर्यावरणीय नियतिवाद
(B) संभववाद
(C) मात्रात्मक क्रांति
(D) संरचनावाद

71. पर्यावरणीय नियतिवाद की आलोचना मुख्य रूप से इसकी किस प्रवृत्ति पर केंद्रित है?
(A) मात्रात्मक डेटा पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करना।
(B) भौतिक परिदृश्यों की व्याख्या करने में असमर्थ होना।
(C) फ्रांसीसी दर्शन से बहुत अधिक प्रभावित होना।
(D) अत्यधिक सरल, नृजाति-केंद्रित होना और संस्कृति तथा प्रौद्योगिकी की उपेक्षा करना।

72. एक भूगोलवेत्ता जो यह तर्क देता है कि ग्रेट ब्रिटेन की समुद्री सफलता उसके द्वीप स्थान का प्रत्यक्ष और अनिवार्य परिणाम थी, वह किसके अनुरूप दृष्टिकोण व्यक्त कर रहा है?
(A) पर्यावरणीय नियतिवाद
(B) संभववाद
(C) मानवतावाद
(D) व्यवहारवाद

73. नियतिवाद और संभववाद के बीच बहस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नियतिवाद यह मानता है कि भौतिक पर्यावरण सक्रिय शक्ति है, जबकि मानव समाज निष्क्रिय है।
II. संभववाद पर्यावरणीय बाधाओं के एक समूह के भीतर मानवीय एजेंसी और निर्णय लेने की भूमिका पर बल देता है।
III. नव-नियतिवाद को एक मध्यम मार्ग के रूप में देखा जा सकता है, जो यह सुझाव देता है कि प्रकृति दिशा निर्धारित करती है लेकिन मनुष्य गति को नियंत्रित करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

74. विज्ञान के दर्शन में 'प्रतिमान विस्थापन' शब्द को किसके द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था?
(A) थॉमस कुहन
(B) कार्ल पॉपर
(C) ऑगस्ट कॉम्टे
(D) इमैनुएल कांट

75. भूगोल के संदर्भ में, 1950 और 1960 के दशक की 'मात्रात्मक क्रांति' को एक प्रमुख प्रतिमान विस्थापन माना जाता है। यह बदलाव मुख्य रूप से किसका कदम था?
(A) मानव भूगोल के अध्ययन से भौतिक भूगोल की जांच की ओर।
(B) पर्यावरणीय नियतिवाद से संभववाद के दर्शन की ओर।
(C) पारंपरिक क्षेत्रीय कार्य से आर्मचेयर भौगोलिक विश्लेषण की ओर।
(D) इडियोग्राफिक क्षेत्रीय विवरण से नोमोथेटिक स्थानिक विज्ञान की ओर।

76. मात्रात्मक क्रांति से पहले भूगोल में कौन सा प्रतिमान प्रभावी था?
(A) स्थानिक विज्ञान
(B) क्षेत्रीय भूगोल (क्षेत्रीय विभेदीकरण)
(C) पर्यावरणीय नियतिवाद
(D) उत्तर-आधुनिकतावाद

77. मात्रात्मक क्रांति द्वारा पेश किए गए प्रतिमान की मुख्य विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) स्थान की विशिष्टता पर बल।
(B) मानवीय चेतना और अनुभव पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) सांख्यिकीय विधियों और गणितीय मॉडलों का उपयोग।
(D) भौगोलिक ग्रंथों का विखंडन।

78. पारंपरिक क्षेत्रीय प्रतिमान पर बौद्धिक आक्रमण, जिसने मात्रात्मक क्रांति को गति देने में मदद की, किसके द्वारा प्रसिद्ध रूप से व्यक्त किया गया था?
(A) रिचर्ड हार्टशॉर्न द्वारा 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी' में।
(B) कार्ल सॉयर द्वारा 'द मॉर्फोलॉजी ऑफ लैंडस्केप' में।
(C) विलियम बंज द्वारा 'थियोरेटिकल ज्योग्राफी' में।
(D) फ्रेड के. शेफर द्वारा अपने पत्र 'एक्सेप्शनलिज्म इन ज्योग्राफी' में।

79. 'शेफर-हार्टशॉर्न बहस' 20वीं सदी के भूगोल में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। उनकी असहमति का मूल कारण क्या था?
(A) शेफर एक नियम-खोजने वाले, वैज्ञानिक भूगोल की वकालत कर रहे थे जबकि हार्टशॉर्न एक विवरणात्मक, इडियोग्राफिक क्षेत्रीय भूगोल का बचाव कर रहे थे।
(B) शेफर नियतिवाद का समर्थन कर रहे थे जबकि हार्टशॉर्न संभववाद का समर्थन कर रहे थे।
(C) शेफर मानवतावादी विधियों को बढ़ावा दे रहे थे जबकि हार्टशॉर्न मात्रात्मक विधियों को बढ़ावा दे रहे थे।
(D) शेफर भौतिक भूगोल पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे जबकि हार्टशॉर्न मानव भूगोल पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।

Click Here to Buy book on Amazon

80. प्रत्यक्षवादी/मात्रात्मक प्रतिमान के दौरान भूगोल का एक केंद्रीय लक्ष्य किसकी खोज था?
(A) स्थान का अद्वितीय सार।
(B) सार्वभौमिक स्थानिक नियम और सिद्धांत।
(C) समाज में छिपी शक्ति संरचनाएं।
(D) परिदृश्यों का ऐतिहासिक विकास।

81. भूगोल में निम्नलिखित में से कौन सा दृष्टिकोण मात्रात्मक क्रांति की कथित अमानवीय और अत्यधिक सरल प्रकृति के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में उभरा?
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) व्यवहारवादी और मानवतावादी भूगोल
(C) पर्यावरणीय नियतिवाद
(D) भू-राजनीति

82. सूची I में भौगोलिक परिप्रेक्ष्य को सूची II में उसके मुख्य केंद्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (परिप्रेक्ष्य)
P. प्रत्यक्षवाद
Q. व्यवहारवाद
R. मानवतावाद
S. उत्तर-आधुनिकतावाद
सूची II: (मुख्य केंद्र)
1. व्यक्तिपरक अनुभव, अर्थ और मानवीय चेतना।
2. भव्य सिद्धांतों का विखंडन और विमर्श तथा शक्ति पर ध्यान।
3. वैज्ञानिक पद्धति, स्थानिक नियम और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण।
4. व्यक्तिगत संज्ञान, निर्णय लेना और मानसिक मानचित्र।
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

83. भूगोल में मात्रात्मक क्रांति का दार्शनिक आधार क्या था?
(A) अस्तित्ववाद
(B) मार्क्सवाद
(C) तार्किक प्रत्यक्षवाद
(D) घटनावाद

84. भूगोल में एक परिप्रेक्ष्य के रूप में प्रत्यक्षवाद किस पर बल देता है?
(A) व्यक्तिपरक व्याख्या और जीवंत अनुभव।
(B) सामाजिक संरचनाओं और वर्ग संघर्ष की भूमिका।
(C) भौगोलिक घटनाओं की विशिष्टता और गैर-पुनरावृत्ति प्रकृति।
(D) सत्यापन योग्यता, वस्तुनिष्ठता और सार्वभौमिक नियमों की खोज।

85. भूगोल में प्रत्यक्षवादी प्रतिमान के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इसने सांख्यिकीय और गणितीय तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा दिया।
(B) इसका उद्देश्य भूगोल को एक नोमोथेटिक विज्ञान बनाना था।
(C) इसने सहभागी अवलोकन जैसी गुणात्मक विधियों को प्राथमिकता दी।
(D) इसने अंतरिक्ष को एक स्वतंत्र, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता के रूप में माना।

86. भूगोल में व्यवहारवाद प्रत्यक्षवादी मॉडलों की आर्थिक-तर्कसंगतता की मान्यताओं की आलोचना के रूप में उभरा। इसके बजाय यह किस पर ध्यान केंद्रित करता है?
(A) पर्यावरण को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियम।
(B) पर्यावरण के प्रति व्यक्ति की व्यक्तिपरक धारणा और निर्णय लेने की प्रक्रियाएं।
(C) पूंजीवाद की गहरी संरचनाएं जो अंतरिक्ष को आकार देती हैं।
(D) सांस्कृतिक परिदृश्यों का ऐतिहासिक विकास।

87. 'मानसिक मानचित्र' की अवधारणा भूगोल के किस परिप्रेक्ष्य में केंद्रीय है?
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) संरचनावाद
(C) उत्तर-आधुनिकतावाद
(D) व्यवहारवाद

88. व्यवहारवादी भूगोल के विकास में कौन सा विद्वान एक प्रमुख व्यक्ति है, विशेष रूप से पर्यावरणीय धारणा पर उनके कार्य के साथ?
(A) विलियम किर्क
(B) डेविड हार्वे
(C) यी-फू तुआन
(D) एडवर्ड सोजा

89. मानवतावादी भूगोल मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) स्थानिक अंतःक्रिया व्यवहार के संबंध में भविष्य बताने वाले मॉडल डिजाइन करना।
(B) मानव सभ्यताओं पर जलवायु के ऐतिहासिक प्रभाव का विश्लेषण करना।
(C) मानवीय अनुभव और स्थान को दिए गए अर्थ को समझना।
(D) वैश्विक आर्थिक और प्राकृतिक संसाधनों के वितरण का मानचित्रण करना।

90. 'टोपोफिलिया' और 'टोपोफोबिया' की अवधारणाएं किस भूगोलवेत्ता और परिप्रेक्ष्य से सबसे निकटता से जुड़ी हैं?
(A) यी-फू तुआन (मानवतावाद)
(B) डेविड हार्वे (मार्क्सवाद)
(C) फ्रेड शेफर (प्रत्यक्षवाद)

NODIA

(D) एलेन सेंपल (नियतिवाद)

91. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): मानवतावादी भूगोल घटनावाद और अस्तित्ववाद जैसी गुणात्मक पद्धतियों का उपयोग करता है।
कारण (R): यह दुनिया को उसमें रहने वाले व्यक्तियों के दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करता है, उनके व्यक्तिपरक अनुभवों और व्याख्याओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

92. निम्नलिखित में से कौन सा प्रश्न एक मानवतावादी भूगोलवेत्ता द्वारा पूछे जाने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) जनसंख्या घनत्व के आधार पर एक नए सुपरमार्केट के लिए इष्टतम स्थान क्या है?
(B) खानाबदोश और गतिहीन लोगों के बीच 'घर' की भावना कैसे भिन्न होती है?
(C) वर्षा और फसल की पैदावार के बीच सांख्यिकीय संबंध क्या है?
(D) हृदयस्थल सिद्धांत वर्तमान भू-राजनीतिक तनावों की व्याख्या कैसे करता है?

93. कॉलिंगवुड जैसे विचारकों से प्रभावित भूगोल में आदर्शवाद का परिप्रेक्ष्य यह मानता है कि:
(A) सभी वास्तविकता मौलिक रूप से भौतिक है।
(B) दुनिया भाषा द्वारा निर्मित एक सामाजिक रचना है।
(C) मानवीय गतिविधि को केवल उसके पीछे के विचार को समझकर ही समझा जा सकता है।
(D) सार्वभौमिक नियम सभी स्थानिक प्रतिरूपों को नियंत्रित करते हैं।

94. भूगोल में उत्तर-आधुनिकतावाद की विशेषता क्या है?
(A) एकल, वस्तुनिष्ठ सत्य में विश्वास।
(B) भव्य, सर्वव्यापी सिद्धांतों का निर्माण।
(C) सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए कठोर वैज्ञानिक विधियों का अनुप्रयोग।
(D) मेटा-नैरेटिव्स के प्रति संशय और विखंडन, अंतर तथा शक्ति/विमर्श पर ध्यान।

95. निम्नलिखित भौगोलिक दृष्टिकोणों को प्रमुख या आलोचनात्मक प्रतिमानों के रूप में उनके उभरने के सामान्य क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. प्रत्यक्षवाद / स्थानिक विज्ञान
2. मानवतावादी भूगोल
3. पर्यावरणीय नियतिवाद
4. उत्तर-आधुनिकतावाद

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 3, 4, 1

96. एक भूगोलवेत्ता जो यह विश्लेषण कर रहा है कि कैसे औपनिवेशिक क्षेत्रों के मानचित्रों का उपयोग दुनिया को देखने के विशिष्ट तरीके बनाकर साम्राज्यवादी शक्ति को वैध बनाने के लिए किया गया था, वह संभवतः किस परिप्रेक्ष्य के भीतर काम कर रहा है?
(A) व्यवहारवाद
(B) उत्तर-आधुनिकतावाद
(C) प्रत्यक्षवाद
(D) पर्यावरणीय नियतिवाद

97. निम्नलिखित में से कौन मुख्य रूप से मानवतावादी भूगोल से नहीं जुड़ा है?
(A) यी-फू तुआन
(B) डेविड हार्वे
(C) ऐनी बटिमर
(D) एडवर्ड रेल्फ

98. विचार कि "माध्यम ही संदेश है", यह सुझाव देता है कि संचार का रूप उसकी सामग्री के समान ही महत्वपूर्ण है, यह किस भौगोलिक परिप्रेक्ष्य के लिए प्रासंगिक एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि है?
(A) उत्तर-आधुनिकतावाद
(B) प्रत्यक्षवाद
(C) आदर्शवाद
(D) नियतिवाद

99. व्यवहारवादी और मानवतावादी भूगोल के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) व्यवहारवादी भूगोल गुणात्मक है, जबकि मानवतावादी भूगोल मात्रात्मक है।
(B) व्यवहारवादी भूगोल समूहों का अध्ययन करता है, जबकि मानवतावादी भूगोल व्यक्तियों का अध्ययन करता है।
(C) व्यवहारवादी भूगोल व्यवहार के अधिक परिष्कृत वैज्ञानिक मॉडल बनाने की कोशिश करता है, जबकि मानवतावादी भूगोल व्यक्तिपरक अर्थ को समझने के पक्ष में वैज्ञानिक मॉडल को खारिज करता है।
(D) व्यवहारवादी भूगोल एक फ्रांसीसी परंपरा है, जबकि मानवतावादी भूगोल एक जर्मन परंपरा है।

100. मिशेल फौकॉल्ट का कार्य, शक्ति, ज्ञान और विमर्श पर अपने ध्यान के साथ, किस भौगोलिक परिप्रेक्ष्य पर अत्यधिक प्रभावशाली रहा है?
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) पर्यावरणीय नियतिवाद
(C) बर्कले स्कूल

NODIA

(D) उत्तर-आधुनिक और उत्तर-संरचनात्मक भूगोल

101. भूगोल में प्रत्यक्षवाद की आलोचनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मानवीय चेतना, मूल्यों और इरादों की भूमिका की अनदेखी करता है।
II. यह मानता है कि मनुष्य हमेशा तर्कसंगत 'आर्थिक मानव' के रूप में कार्य करते हैं।
III. इसका वस्तुनिष्ठता का दावा अंतर्निहित वैचारिक पूर्वाग्रहों को छुपाता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

102. यह अवधारणा कि वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित है और भौगोलिक ज्ञान तटस्थ नहीं है बल्कि शक्ति संबंधों को दर्शाता है, किसके केंद्र में है?
(A) आदर्शवाद
(B) उत्तर-आधुनिकतावाद
(C) मानवतावाद
(D) व्यवहारवाद

103. 'एर्डकुंडे', कार्ल रिटर द्वारा उपयोग किया जाने वाला शब्द, का शाब्दिक अनुवाद है:
(A) पृथ्वी लेखन
(B) पृथ्वी मापन
(C) पृथ्वी वर्णन
(D) पृथ्वी विज्ञान

104. प्राचीन रोमन भूगोलवेत्ताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: स्ट्रैबो और टॉलेमी जैसे प्राचीन रोमन भूगोलवेत्ता आम तौर पर अपने यूनानी पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक व्यावहारिक और विवरणात्मक थे।
कथन II: अनुप्रयुक्त भूगोल, जैसे कि सैन्य और प्रशासनिक मानचित्रण में रोमन योगदान महत्वपूर्ण था, लेकिन सैद्धांतिक और गणितीय भूगोल में कम था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

105. मिलेटस के हेकेटियस अपनी कृति 'जेस पीरियोडोस' के लिए जाने जाते हैं। इस कृति को पहली बार किए गए प्रयासों में से एक माना जाता है:
(A) पृथ्वी की परिधि की गणना करने का।
(B) मानवीय चरित्र पर जलवायु के प्रभाव पर ग्रंथ का।
(C) एक मानचित्र के साथ ज्ञात विश्व का व्यवस्थित विवरण देने का।
(D) नौकायन निर्देशों और बंदरगाह विवरणों का संग्रह करने का।

106. सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण, जो पृथ्वी की विशेषताओं में एक दैवीय उद्देश्य या योजना देखता है, सबसे मजबूती से किस जर्मन भूगोलवेत्ता के साथ जुड़ा हुआ है?
(A) कार्ल रिटर
(B) अलेक्ज़ेंडर वॉन हम्बोल्ट
(C) फ्रेडरिक रैटजेल
(D) अल्फ्रेड हेटनर

107. रैटजेल के नियतिवाद और सेंपल तथा हंटिंगटन जैसे अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं के नियतिवाद में एक मुख्य अंतर यह है कि:
(A) रैटजेल ने संस्कृति की भूमिका को पूरी तरह से खारिज कर दिया, जबकि अमेरिकियों ने इसकी अनुमति दी।
(B) रैटजेल एक संभववादी थे, जबकि अमेरिकी सख्त नियतिवादी थे।
(C) रैटजेल ने नस्ल पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि अमेरिकियों ने राजनीतिक प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित किया।
(D) रैटजेल ने राज्य पर एक जीव के रूप में ध्यान केंद्रित किया, जबकि अमेरिकियों ने जलवायु पर ध्यान केंद्रित किया।

108. एल. डडली स्टैम्प के नेतृत्व में 'लैंड यूटिलाइजेशन सर्वे ऑफ ब्रिटेन' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) शहरी विकास के एक नए सिद्धांत का परीक्षण करना।
(B) नियोजन उद्देश्यों के लिए, भूमि के प्रत्येक टुकड़े का उपयोग कैसे किया जा रहा था, इसका एक विस्तृत रिकॉर्ड बनाना।
(C) पर्यावरणीय नियतिवाद के सिद्धांत को सिद्ध करना।
(D) शैक्षिक उद्देश्यों के लिए प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्रों की पहचान करना।

109. निम्नलिखित में से कौन एक अमेरिकी भूगोलवेत्ता को उनकी मुख्य अवधारणा के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) यशायाह बोमन – अपरदन चक्र
(B) कार्ल सॉयर – क्षेत्रीय विभेदीकरण
(C) विलियम मॉरिस डेविस – भू-आकृतिक चक्र
(D) रिचर्ड हार्टशॉर्न – सांस्कृतिक परिदृश्य

110. सूची I में दिए गए विद्वान को सूची II में उस भौगोलिक दर्शन के साथ सुमेलित कीजिए जिससे वे सबसे अधिक जुड़े हुए हैं।
सूची I: (विद्वान)
P. एलेन सी. सेंपल
Q. विडाल डी ला ब्लाश
R. फ्रेड के. शेफर
S. यी-फू तुआन
सूची II: (दर्शन)
1. संभववाद
2. प्रत्यक्षवाद / स्थानिक विज्ञान

Downloaded from www.pdf.tube

3. मानवतावाद
4. पर्यावरणीय नियतिवाद

कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-1, Q-3, R-4, S-2

111. भूगोल में 'इडियोग्राफिक' बनाम 'नोमोथेटिक' का द्वैतवाद किनके बीच के तनाव को संदर्भित करता है?
(A) अद्वितीय स्थानों का अध्ययन करना बनाम सामान्य नियमों की खोज करना।
(B) भौतिक बनाम मानवीय घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) गुणात्मक बनाम मात्रात्मक डेटा का उपयोग करना।
(D) ऐतिहासिक बनाम समकालीन प्रक्रियाओं पर बल देना।

112. प्रतिमान विस्थापन की अवधारणा यह सुझाव देती है कि विज्ञान किसके माध्यम से प्रगति करता है?
(A) ज्ञान का धीमा, निरंतर संचय।
(B) 'सामान्य विज्ञान' की अवधि जिसके बाद क्रांतिकारी संकट और नए ढांचे में बदलाव आता है।
(C) मौजूदा सिद्धांतों को एक-एक करके गलत साबित करने की प्रक्रिया।
(D) केवल तर्क और गणित का अनुप्रयोग।

113. एक अध्ययन जो यह जांचता है कि एक पहाड़ी क्षेत्र के समुदाय ने सीढ़ीदार खेती, ऋतु प्रवास और स्थानीय शिल्प पर आधारित एक अद्वितीय आजीविका कैसे विकसित की है, वह किसकी विशेषता होगी?
(A) प्रत्यक्षवादी भूगोल
(B) व्यवहारवादी भूगोल
(C) ऐतिहासिक भूगोल
(D) भू-आकृति विज्ञान

114. "मेटा-नैरेटिव्स" या भव्य सिद्धांतों की अस्वीकृति किसकी पहचान है?
(A) उत्तर-आधुनिकतावाद
(B) प्रत्यक्षवाद
(C) मार्क्सवाद
(D) नियतिवाद

115. आधुनिक फ्रांसीसी भूगोल के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह इतिहास के एनाल्स स्कूल से बहुत प्रभावित था।
(B) इसने विस्तृत क्षेत्रीय मोनोग्राफ पर बल दिया।
(C) यह मात्रात्मक क्रांति का जन्मस्थान था।
(D) इसने संभववाद के दर्शन का समर्थन किया।

116. अलेक्ज़ेंडर वॉन हम्बोल्ट की कृति 'कॉस्मॉस' को सबसे अच्छी तरह इस रूप में वर्णित किया गया है:
(A) पर्यावरणीय नियतिवाद के सिद्धांत के संबंध में एक व्यापक बचाव।
(B) प्रशिया की भौतिक प्रकृति पर केंद्रित एक विशिष्ट क्षेत्रीय भूगोल।
(C) यूरोप में शक्ति के राजनयिक संतुलन से संबंधित एक राजनीतिक ग्रंथ।
(D) प्राकृतिक दुनिया और विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों का एक समग्र संश्लेषण।

117. एक 'सांस्कृतिक समूह' द्वारा 'प्राकृतिक परिदृश्य' से निर्मित 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की अवधारणा किस मौलिक कृति का केंद्रीय विषय है?
(A) रिचर्ड हार्टशॉर्न की 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी'
(B) हैल्फोर्ड मैकिंडर की 'द जियोग्राफिकल पिवट ऑफ हिस्ट्री'
(C) कार्ल सॉयर की 'द मॉर्फोलॉजी ऑफ लैंडस्केप'
(D) जीन ब्रून्स की 'ह्यूमन ज्योग्राफी'

118. हार्टशॉर्न-शेफर बहस मौलिक रूप से इस प्रश्न पर केंद्रित थी कि भूगोल को क्या होना चाहिए:
(A) एक भौतिक या एक मानव विज्ञान।
(B) एक इडियोग्राफिक या एक नोमोथेटिक विषय।
(C) एक अनुप्रयुक्त या एक सैद्धांतिक क्षेत्र।
(D) एक नियतिवादी या एक संभववादी अध्ययन।

119. किसी विशेष स्थान पर होने के 'जीवंत अनुभव' को समझने के लिए घटनावाद का उपयोग करने वाला भूगोलवेत्ता किस परंपरा के भीतर काम कर रहा है?
(A) व्यवहारवाद
(B) प्रत्यक्षवाद
(C) संरचनावाद
(D) मानवतावादी भूगोल

120. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): मात्रात्मक क्रांति की मानव व्यवहार के बारे में इसकी सरल मान्यताओं के लिए आलोचना की गई थी, जो अक्सर इसे अनुमानित, तर्कसंगत क्रियाओं तक सीमित कर देती थी।
कारण (R): इसके जवाब में, धारणा, संज्ञान और निर्णय लेने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए व्यवहारवादी भूगोल का उदय हुआ, जो पर्यावरण और मानवीय क्रियाओं के बीच मध्यस्थता करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

121. टॉलेमी के विश्व मानचित्र में सबसे बड़ी त्रुटि क्या थी, जिसने कोलंबस को प्रभावित किया था?

NODIA

(A) उत्तरी ध्रुव को भूमध्य रेखा पर रखना।
(B) अफ्रीका के आकार को कम आंकना।
(C) हिंद महासागर को एक बंद समुद्र के रूप में दिखाना।
(D) अमेरिका को एक छोटे द्वीप समूह के रूप में चित्रित करना।

122. भूगोलवेत्ताओं का कौन सा युग्म जर्मन परंपरा में व्यवस्थित और क्षेत्रीय दृष्टिकोणों के बीच तीव्र अंतर का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) हम्बोल्ट और रिटर
(B) रैटजेल और रिचथोफेन
(C) हेटनर और पेशेल
(D) कांट और हम्बोल्ट

123. 'जियोपॉलिटिक' शब्द, जो राजनीतिक भूगोल का अधिक नियतिवादी और राज्य-केंद्रित संस्करण है, जर्मनी में रैटजेल के शिष्यों द्वारा विकसित किया गया था, जिनमें सबसे प्रमुख थे:
(A) अल्फ्रेड हेटनर
(B) फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन
(C) कार्ल रिटर
(D) कार्ल हॉशोफर

124. अपरदन चक्र पर डब्लू. एम. डेविस के कार्य ने भूगोलवेत्ताओं को क्या प्रदान किया?
(A) सांस्कृतिक विकास का एक मॉडल।
(B) भू-आकृतियों के वर्गीकरण और व्याख्या के लिए एक आनुवंशिक प्रणाली।
(C) जनसंख्या घनत्व की गणना करने की एक विधि।
(D) शहरी विकास का एक सिद्धांत।

125. 'ऐतिहासिक' और 'समकालीन' भूगोल का द्वैतवाद किसके बारे में एक बहस है?
(A) पुराने मानचित्रों बनाम उपग्रह चित्रों का उपयोग करना।
(B) भौतिक प्रक्रियाओं बनाम मानवीय गतिविधियों का अध्ययन करना।
(C) परिदृश्यों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना या उनकी वर्तमान स्थिति पर।
(D) एक इडियोग्राफिक बनाम एक नोमोथेटिक दृष्टिकोण।

126. भूगोल में उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण की एक प्रमुख विशेषता 'विखंडन' पर बल देना है, जिसका अर्थ है:
(A) शहरी संरचनाओं को भौतिक रूप से ध्वस्त करना।
(B) शून्य से भौगोलिक सिद्धांतों का पुनर्निर्माण करना।
(C) भौगोलिक ज्ञान के सभी रूपों को अस्वीकार करना।
(D) पाठों और मानचित्रों का विश्लेषण करके उनकी अंतर्निहित मान्यताओं को प्रकट करना।

127. निम्नलिखित में से कौन सी आलोचना आमतौर पर मानवतावादी भूगोल के विरुद्ध नहीं की जाती है?
(A) यह सांख्यिकीय मॉडलों पर अत्यधिक बल देता है और भूगोल का अमानवीयकरण करता है।
(B) यह बहुत अधिक व्यक्तिपरक है और इसे सत्यापित नहीं किया जा सकता है।
(C) यह छोटे समूहों पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति रखता है और इसे सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है।
(D) इसे एक 'अभिजात' परिप्रेक्ष्य के रूप में देखा जा सकता है, जो विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की धारणाओं पर ध्यान केंद्रित करता है।

128. 'व्यवहारवादी पर्यावरण' और 'दृश्य घटना पर्यावरण' की अवधारणाओं को पेश करने का श्रेय किसे दिया जाता है?
(A) जूलियन वोलपर्ट
(B) विलियम किर्क
(C) केविन लिंच
(D) पीटर गोल्ड

129. उत्तर-आधुनिकतावाद और प्रत्यक्षवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: उत्तर-आधुनिकतावाद 'अंतर' और 'अन्यथा' का जश्न मनाता है और सार्वभौमिक दावों की आलोचना करता है।
कथन II: प्रत्यक्षवाद सार्वभौमिक नियमों को स्थापित करने की कोशिश करता है और व्यक्तिपरक, व्यक्तिगत दृष्टिकोणों की आलोचना करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

130. रिचर्ड हार्टशॉर्न के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनकी पुस्तक 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी' क्षेत्रीय भूगोल प्रतिमान का एक शक्तिशाली बचाव थी।
II. उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य कार्य 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' है।
III. वे मात्रात्मक क्रांति और स्थानिक नियमों की खोज के प्रबल समर्थक थे।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

131. प्राचीन यूनान में, पृथ्वी का 'उष्ण', 'शीतोष्ण' और 'शीत' कटिबंधों में विभाजन किस पर आधारित था?
(A) देखी गई वनस्पति।
(B) जनसंख्या घनत्व।
(C) सूर्य का कोण और परिणामी तापमान।
(D) राजनीतिक सीमाएँ।

132. 'विविधता में एकता' की अवधारणा किसके समग्र कार्य का एक केंद्रीय विषय है?

Click Here to Buy book on Amazon

(A) इमैनुएल कांट
(B) फ्रेडरिक रैटजेल
(C) अल्फ्रेड हेटनर
(D) अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट

133. किसी क्षेत्र के भौतिक और मानवीय तत्वों के संश्लेषण से उभरने वाले अद्वितीय चरित्र और व्यक्तित्व के लिए फ्रांसीसी शब्द है:
(A) जॉनर डी वी
(B) मिलियू
(C) पर्सनैलिटी
(D) पेय

134. "जो पूर्वी यूरोप पर शासन करता है, वह हृदयस्थल को नियंत्रित करता है; जो हृदयस्थल पर शासन करता है, वह विश्व-द्वीप को नियंत्रित करता है; जो विश्व-द्वीप पर शासन करता है, वह विश्व को नियंत्रित करता है।" यह प्रसिद्ध सूत्र किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
(A) अल्फ्रेड थायर महान
(B) हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर
(C) निकोलस स्पाइकमैन
(D) यशायाह बोमन

135. किस अमेरिकी भूगोलवेत्ता के 'पायनियर फ्रिंज' पर कार्य ने भूगोल के प्रति एक अनुप्रयुक्त दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया, जिसमें अधिवास की संभावनाओं पर सलाह दी गई थी?
(A) कार्ल सॉयर
(B) विलियम मॉरिस डेविस
(C) एलेन सेंपल
(D) यशायाह बोमन

136. क्षेत्रीय भूगोल की 'केवल विवरण' के रूप में आलोचना किसके लिए एक प्रमुख प्रेरणा थी?
(A) मात्रात्मक क्रांति।
(B) पर्यावरणीय नियतिवाद का उदय।
(C) फ्रांसीसी संभववादी स्कूल का विकास।
(D) मानवतावादी भूगोल का उदय।

137. निम्नलिखित में से कौन भौगोलिक संदर्भ में 'आदर्शवाद' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) यह विश्वास कि भौतिक दुनिया ही एकमात्र वास्तविकता है।
(B) 'आदर्श' या पूर्ण भौगोलिक रूप का अध्ययन, जैसे कि पूर्ण शहर।
(C) यह विचार कि वास्तविकता मानसिक रूप से निर्मित है और विचार प्राथमिक कारण हैं।
(D) भौगोलिक नियोजन के माध्यम से काल्पनिक सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति।

138. निम्नलिखित में से कौन सा विद्वान यह समझने के लिए कि 'स्थान' का निर्माण और विपणन कैसे किया जाता है, रियल एस्टेट विज्ञापनों में उपयोग की जाने वाली भाषा का विश्लेषण करने में सबसे अधिक रुचि रखेगा?
(A) एक उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता
(B) एक प्रत्यक्षवादी भूगोलवेत्ता
(C) एक भू-आकृति विज्ञानी
(D) एक जैव-भूगोलवेत्ता

139. पृथ्वी को 'मानव-आबाद एक्यूमीन' के रूप में देखने की अवधारणा किन प्राचीन लोगों के लिए एक केंद्रीय विचार थी?
(A) रोमन
(B) मिस्रवासी
(C) फारसी
(D) यूनानी

140. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) रैटजेल – एंथ्रोपोजियोग्राफिया
(B) हेटनर – पर्यावरणीय नियतिवाद
(C) विडाल डी ला ब्लाश – संभववाद
(D) डेविस – अपरदन चक्र

NODIA

141. 19वीं शताब्दी में एक विश्वविद्यालय विषय के रूप में भूगोल का विकास किस देश में सबसे मजबूत और सबसे प्रभावशाली था?
(A) ब्रिटेन
(B) फ्रांस
(C) जर्मनी
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

142. एक अध्ययन जो उन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जिनका उपयोग एक खरीदार यह तय करने के लिए करता है कि किस सुपरमार्केट में जाना है, जिसमें दूरी, मूल्य और गुणवत्ता की उनकी धारणा शामिल है, किसका एक उदाहरण है?
(A) मार्क्सवादी भूगोल
(B) संरचनावादी भूगोल
(C) भू-राजनीति
(D) व्यवहारवादी भूगोल

143. ब्रिटिश भूगोल के प्रारंभिक चरणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: अपने प्रारंभिक चरणों में भूगोल का ब्रिटिश स्कूल अन्वेषण और उपनिवेशवाद की व्यावहारिक आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ा था।
कथन II: रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी ने ब्रिटिश साम्राज्य के लिए अभियानों को बढ़ावा देने और भौगोलिक जानकारी के संग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

144. 'स्थान और स्थानहीनता' पर ध्यान केंद्रित करना किस मानवतावादी भूगोलवेत्ता के कार्य का एक प्रमुख विषय है?
(A) यी-फू तुआन
(B) एडवर्ड रेल्फ
(C) ऐनी बटिमर
(D) डेविड ले

145. सूची I में दी गई भौगोलिक अवधारणा को सूची II में उसके प्रमुख प्रस्तावक के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. सांस्कृतिक परिदृश्य
Q. क्षेत्रीय विभेदीकरण
R. हृदयस्थल सिद्धांत
S. जॉनर डी वी
सूची II: (प्रस्तावक)
1. रिचर्ड हार्टशॉर्न
2. हैल्फोर्ड मैकिंडर
3. कार्ल सॉयर
4. विडाल डी ला ब्लाश
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

146. किस प्राचीन दार्शनिक ने चंद्र ग्रहण के दौरान चंद्रमा पर पृथ्वी की छाया का अवलोकन करके पृथ्वी के गोलाकार आकार के लिए पहला अनुभवजन्य प्रमाण प्रदान किया था?
(A) अरस्तू
(B) प्लेटो
(C) थेल्स
(D) इरेटोस्थनीज

147. 'कॉस्मॉस' का संबंध हम्बोल्ट से है, वैसे ही 'एर्डकुंडे' का संबंध _____ से है।
(A) रैटजेल
(B) हेटनर
(C) रिटर
(D) रिचथोफेन

148. वाक्यांश "प्रकृति कभी भी एक सलाहकार से अधिक नहीं होती" संक्षेप में किस दर्शन के सार को दर्शाता है?
(A) पर्यावरणीय नियतिवाद
(B) प्रत्यक्षवाद
(C) संरचनावाद
(D) संभववाद

149. शहरी समाजशास्त्र के शिकागो स्कूल ने, शहर की संरचना के अपने पारिस्थितिक मॉडल के साथ, भूगोल के किस उप-विषय के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला?
(A) भू-आकृति विज्ञान
(B) राजनीतिक भूगोल
(C) शहरी भूगोल
(D) जैव-भूगोल

150. भौगोलिक विचारधारा के इतिहास में निम्नलिखित प्रमुख प्रकाशनों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी' (Hartshorne)
2. 'द मॉर्फोलॉजी ऑफ लैंडस्केप' (Sauer)
3. 'कॉस्मॉस' (Humboldt)
4. 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' (Ratzel)
(A) 4, 3, 1, 2
(B) 3, 4, 2, 1
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 1, 2, 3, 4

151. रिचर्ड हार्टशॉर्न द्वारा किस द्वैतवाद को "मिथ्या द्विभाजन" माना गया था क्योंकि उनका मानना था कि मानवीय और भौतिक घटनाएं पृथ्वी की सतह पर अविभाज्य रूप से आपस में जुड़ी हुई हैं?
(A) व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय
(B) इडियोग्राफिक बनाम नोमोथेटिक
(C) ऐतिहासिक बनाम समकालीन
(D) भौतिक बनाम मानव

152. 'अंतरिक्ष' पर केंद्रित प्रतिमान से 'स्थान' पर केंद्रित प्रतिमान की ओर बदलाव किसके उदय की विशेषता है?
(A) मानवतावादी भूगोल
(B) भू-राजनीति
(C) पर्यावरणीय नियतिवाद
(D) जैव-भूगोल

153. एक भूगोलवेत्ता जो एक सीमा दीवार के बारे में एक राजनेता के भाषण का विखंडन करके उसकी अंतर्निहित राष्ट्रवादी और बहिष्करणवादी विचारधाराओं को प्रकट करता है, वह किस प्रकार के विश्लेषण में लगा हुआ है?
(A) प्रत्यक्षवादी भूगोल
(B) व्यवहारवादी भूगोल
(C) उत्तर-आधुनिक भूगोल
(D) भौतिक भूगोल

154. भूगोल में 'क्षमता' और 'निष्पादन' की अवधारणा, जहाँ क्षमता वह है जो लोग अपने स्थानिक वातावरण के बारे में जानते हैं और निष्पादन वह है जो वे वास्तव में करते हैं, किससे संबंधित है?
(A) व्यवहारवादी दृष्टिकोण
(B) मानवतावादी दृष्टिकोण
(C) संरचनावादी दृष्टिकोण
(D) प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण

Downloaded from www.pdf.tube

155. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): भूगोल के जर्मन स्कूल ने आधुनिक शैक्षणिक विषय के लिए नींव रखी।
कारण (R): कांट, हम्बोल्ट, रिटर और रैटजेल जैसे विचारकों ने भूगोल का दार्शनिक आधार, व्यवस्थित और क्षेत्रीय अध्ययन की इसकी दोहरी परंपराएं और मानव-पर्यावरण संबंधों में इसका प्रारंभिक प्रयास स्थापित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

156. प्राचीन विद्वान हिप्पार्कस का कार्य भूगोल के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने:
(A) रोमन विश्व का 17 खंडों का विश्वकोश लिखा।
(B) अक्षांश और देशांतर के ग्रिड का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे और मानचित्र प्रक्षेप विकसित किए।
(C) पृथ्वी की परिधि की परिशुद्ध गणना की।
(D) तर्क दिया कि पृथ्वी एक चपटी डिस्क थी।

157. "एक्सेप्शनलिज्म इन ज्योग्राफी" में फ्रेड के. शेफर का मुख्य तर्क यह था कि भूगोल को एक विशिष्ट विषय नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे एक क्या होना चाहिए:
(A) ऐतिहासिक विज्ञान।
(B) भौतिक विज्ञान।
(C) नियमों पर आधारित सामाजिक विज्ञान।
(D) क्षेत्र-आधारित कला।

158. निम्नलिखित में से कौन भूगोल के अमेरिकी स्कूल का योगदान नहीं है?
(A) सांस्कृतिक परिदृश्य की अवधारणा।
(B) अपरदन चक्र का सिद्धांत।
(C) 20वीं सदी की शुरुआत में पर्यावरणीय नियतिवाद का पुरजोर समर्थन।
(D) 'जॉनर डी वी' की अवधारणा के माध्यम से संभववाद का विकास।

159. 'जीवन-जगत', घटनावाद की एक अवधारणा जो तत्काल अनुभव की दुनिया को संदर्भित करती है, मानवतावादी भूगोल में किन विद्वानों द्वारा लाई गई थी?
(A) यी-फू तुआन और एडवर्ड रेल्फ
(B) विलियम बंज और डेविड हार्वे
(C) डब्लू. एम. डेविस और ई. सी. सेंपल
(D) एच. जे. मैकिंडर और एल. डी. स्टैम्प

160. कौन सा परिप्रेक्ष्य संचय और वर्ग संघर्ष की अंतर्निहित पूंजीवादी प्रक्रियाओं के परिणाम के रूप में एक शहर में गरीबी के स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण करने की सबसे अधिक संभावना रखेगा?
(A) मानवतावादी भूगोल
(B) मार्क्सवादी/उग्र भूगोल
(C) व्यवहारवादी भूगोल
(D) प्रत्यक्षवादी भूगोल

161. 17वीं शताब्दी में वेरेनियस द्वारा लिखित 'जियोग्राफिया जनरैलिस' एक महत्वपूर्ण कृति है क्योंकि इसने:
(A) रंगीन मानचित्रों वाला पहला एटलस पेश किया।
(B) औपचारिक रूप से व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच द्वैतवाद स्थापित किया।
(C) सौर मंडल के कोपरनिकन मॉडल को खारिज कर दिया।
(D) पहली बार नई दुनिया के भूगोल का वर्णन किया।

162. ऑस्कर पेशेल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: जर्मन भूगोलवेत्ता ऑस्कर पेशेल, कार्ल रिटर के सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण के आलोचक थे।
कथन II: पेशेल ने भूगोल के प्रति अधिक व्यवस्थित और तुलनात्मक दृष्टिकोण की वकालत की, जिससे यह प्राकृतिक विज्ञान मॉडल की ओर बढ़ गया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

163. 'एनाल्स स्कूल' द्वारा 'दीर्घकालिक ऐतिहासिक संरचनाओं' पर ध्यान केंद्रित करने ने फ्रांसीसी भूगोल को किस ओर प्रभावित किया?
(A) मात्रात्मक विधियों और अल्पकालिक मॉडलों को अपनाने की ओर।
(B) विशेष रूप से समकालीन भू-राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन करने की ओर।
(C) समाजों और वातावरण के बीच गहरे संबंधों पर ध्यान केंद्रित करने की ओर।
(D) भौतिक भूगोल के अध्ययन को पूरी तरह से खारिज करने की ओर।

164. ए. जे. हर्बर्टसन की 'प्राकृतिक क्षेत्रों' की योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) विश्व के राजनीतिक विभाजन के लिए आधार प्रदान करना।
(B) ब्रिटिश जलवायु की श्रेष्ठता सिद्ध करना।
(C) संरक्षण के लिए वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट का मानचित्रण करना।
(D) भौतिक और मानव भूगोल पढ़ाने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना।

165. अमेरिकी भूगोल के विकास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

NODIA

I. यह विषय शुरु में भौतिक भूगोल, विशेष रुप से डब्लू. एम. डेविस के अधीन भू-आकृति विज्ञान के प्रभुत्व में था।
II. सेंपल और हंटिंगटन जैसे व्यक्तित्वों द्वारा पर्यावरणीय नियतिवाद की एक मजबूत परंपरा स्थापित की गई थी।
III. कार्ल सॉयर के नेतृत्व में बर्कले स्कूल ने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भूगोल पर केंद्रित एक प्रमुख विकल्प पेश किया।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

166. निम्नलिखित में से कौन व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच द्वैतवाद का सही वर्णन करता है?
(A) प्रकृति पर ध्यान बनाम संस्कृति पर ध्यान।
(B) नियमों पर ध्यान बनाम विशिष्टता पर ध्यान।
(C) अतीत पर ध्यान बनाम वर्तमान पर ध्यान।
(D) मानचित्रों पर ध्यान बनाम पाठों पर ध्यान।

167. प्रसंभाव्यवाद, जो नियतिवाद का एक नरम संस्करण है, यह सुझाव देता है कि:
(A) मानवीय क्रियाएं पूरी तरह से यादृच्छिक हैं।
(B) संस्कृति ही मानव व्यवहार को निर्धारित करने वाला एकमात्र कारक है।
(C) किसी भी वातावरण में सभी परिणाम समान रूप से संभव हैं।
(D) पर्यावरण कुछ मानवीय प्रतिक्रियाओं को अधिक संभावित बनाता है।

168. यह विचार कि भूगोल में एक 'प्रतिमान विस्थापन' हुआ, यह संकेत देता है कि मात्रात्मक क्रांति केवल नई तकनीकों का समावेश नहीं थी, बल्कि विषय के किसमें एक मौलिक परिवर्तन था:
(A) मूल प्रश्न, विधियाँ और दार्शनिक मान्यताएँ।
(B) वित्त पोषण के स्रोत।
(C) विभागीय नाम।
(D) छात्र नामांकन संख्या।

169. भूगोल में आदर्शवाद इस बात पर बल देता है कि किसी भौगोलिक क्रिया को समझने के लिए व्यक्ति को:
(A) उसके आर्थिक लागत-लाभ अनुपात की गणना करनी चाहिए।
(B) उसका सटीक स्थान मानचित्रित करना चाहिए।
(C) निर्णय लेने वालों की विचार प्रक्रियाओं और इरादों का पुनर्निर्माण करना चाहिए।
(D) उसके पर्यावरणीय प्रभाव का विश्लेषण करना चाहिए।

170. भूगोल में उत्तर-आधुनिकतावादी आलोचना का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) यह तर्क देना कि मर्केटर प्रक्षेप यूरोपीय-केंद्रित विचारों को पुष्ट करता है।
(B) सांख्यिकीय कठोरता की कमी के लिए क्षेत्रीय मोनोग्राफ की आलोचना करना।
(C) शहरी विकास का एक नया गणितीय मॉडल प्रस्तावित करना।
(D) यह कहना कि उष्णकटिबंधीय जलवायु आलसी स्वभाव की ओर ले जाती है।

171. हेरोडोटस ने अपने 'इतिहास' में जिन 'गपशप करने वाले भूगोलवेत्ता' का उल्लेख किया था, वे संभवतः कौन थे?
(A) रोमन सैन्य सर्वेक्षणकर्ता।
(B) मिस्र के पुजारी जिन्होंने नील नदी की बाढ़ को मापा था।
(C) रॉयल रोड के फारसी प्रशासक।
(D) आयोनियन लोगोग्राफर जिन्होंने स्थानों के प्रारंभिक विवरण लिखे थे।

172. टॉलेमी और अन्य लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्द 'कोरोग्राफी' का तात्पर्य किससे था?
(A) मानचित्र बनाने के गणितीय सिद्धांत।
(B) क्षेत्रों का विवरण, जो स्थलाकृति से अधिक विस्तृत होता है।
(C) संपूर्ण विश्व का अध्ययन।
(D) तारों द्वारा नौवहन की कला।

173. सामान्य सिद्धांतों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों की तुलना करने वाली भूगोल में तुलनात्मक कार्यप्रणाली किन दो जर्मन भूगोलवेत्ताओं की पहचान थी?
(A) रैटजेल और हेटनर
(B) कांट और पेशेल
(C) हम्बोल्ट और रिटर
(D) रिचथोफेन और रैटजेल

174. निम्नलिखित में से कौन मानव भूगोल में जीन ब्रून्स के 'आवश्यक तथ्यों' की तीन मुख्य श्रेणियों में से नहीं है?
(A) मृदा के अनुत्पादक उपयोग के तथ्य।
(B) पौधों और जानवरों की विजय के तथ्य।
(C) विनाशकारी शोषण के तथ्य।
(D) राजनीतिक संगठन और शासन के तथ्य।

175. 20वीं सदी की शुरुआत में भूगोल के ब्रिटिश स्कूल की विरासत को किसके प्रति इसके योगदान से सबसे अच्छी तरह पहचाना जाता है?
(A) क्षेत्रीय भूगोल, अनुप्रयुक्त अध्ययन और भू-राजनीति।
(B) अमूर्त सिद्धांत और दर्शन।
(C) मात्रात्मक विधियाँ और स्थानिक विश्लेषण।
(D) उत्तर-आधुनिकतावादी और उग्र सिद्धांत।

176. किस अमेरिकी भूगोलवेत्ता द्वारा भूगोल को 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' के अध्ययन के रूप में दी गई परिभाषा ने काफी समय तक इस विषय पर अपना प्रभाव बनाए रखा?
(A) विलियम मॉरिस डेविस

Click Here to Buy book on Amazon

(B) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(C) कार्ल सॉयर
(D) यशायाह बोमन

177. वेरेनियस की 'जियोग्राफिया जनरैलिस' (1650) ऐतिहासिक रूप से किस लिए महत्वपूर्ण है:
(A) अमेरिका का विस्तृत मानचित्र प्रदान करने के लिए।
(B) स्पष्ट रूप से भूगोल को सामान्य और विशेष शाखाओं में विभाजित करने के लिए।
(C) यह सिद्ध करने के लिए कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।
(D) टॉलेमी के कार्य की आलोचना करने के लिए।

178. सूची I में दिए गए विद्वान को सूची II में उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले विचारधारा के स्कूल के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विद्वान)
P. डब्लू. एम. डेविस
Q. ए. जे. हर्बर्टसन
R. एफ. रैटजेल
S. ई. डी मार्टोन
सूची II: (विचारधारा का स्कूल)
1. जर्मन स्कूल
2. फ्रांसीसी स्कूल
3. ब्रिटिश स्कूल
4. अमेरिकी स्कूल
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

179. भूगोल में 'प्रतिमान' शब्द का अर्थ है:
(A) एक विशिष्ट गणितीय सूत्र।
(B) मानचित्र प्रक्षेप का एक प्रकार।
(C) किसी क्षेत्र में मान्यताओं और सिद्धांतों का प्रचलित ढांचा।
(D) एक राजनीतिक विचारधारा।

180. व्यवहारवादी भूगोल का एक मुख्य सिद्धांत यह है कि किसी व्यक्ति का स्थानिक व्यवहार किसके प्रति एक प्रतिक्रिया है?
(A) वस्तुनिष्ठ, वास्तविक दुनिया का वातावरण।
(B) सामाजिक रूप से निर्मित वातावरण।
(C) ऐतिहासिक वातावरण।
(D) बोधगम्य, व्यक्तिपरक वातावरण।

181. निम्नलिखित में से किसने तर्क दिया कि भूगोल को प्राकृतिक विज्ञानों के साथ वर्गीकृत किया जाना चाहिए और इसकी विषय वस्तु को कारण-संबंधों के आधार पर परिभाषित किया जाना चाहिए?
(A) कार्ल रिटर
(B) अल्फ्रेड हेटनर
(C) ऑस्कर पेशेल
(D) पॉल विडाल डी ला ब्लाश

182. कार्ल सॉयर के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) वे पर्यावरणीय नियतिवाद के कड़े आलोचक थे।
(B) उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य कार्य स्थानिक नियमों की खोज करना था।
(C) उन्होंने सांस्कृतिक भूगोल के बर्कले स्कूल की स्थापना की।
(D) उन्होंने सांस्कृतिक परिदृश्य की अवधारणा विकसित की।

183. व्यवस्थित और क्षेत्रीय द्वैतवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच द्वैतवाद आज भी बना हुआ है, हालांकि कई भूगोलवेत्ता दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग करते हैं।
कथन II: 'जलवायु परिवर्तन' और 'सुंदरबन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव' का अध्ययन इस द्वैतवाद को दर्शाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

184. आदर्शवाद का दर्शन किसके सबसे अधिक विपरीत है?
(A) भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद।
(B) मानवतावाद।
(C) संभववाद।
(D) उत्तर-आधुनिकतावाद।

185. परिदृश्य के प्रतीकात्मक अर्थों और सांस्कृतिक आख्यानों को समझने के लिए उसके "पाठ" की जांच करने वाला भूगोलवेत्ता किनसे सबसे निकटता से विधियाँ उधार ले रहा है?
(A) भौतिकी और रसायन विज्ञान।
(B) अर्थशास्त्र और सांख्यिकी।
(C) साहित्यिक आलोचना और संकेत विज्ञान।
(D) जीव विज्ञान और पारिस्थितिकी।

186. 'एक्यूमीन' या आबाद दुनिया की अवधारणा किस प्राचीन सभ्यता के लिए एक केंद्रीय भौगोलिक विचार थी?
(A) यूनानी
(B) रोमन
(C) मिस्रवासी
(D) चीनी

187. जर्मन अवधारणा 'लैंडरकुंडलिशे स्कीमा' किसे संदर्भित करती है?
(A) परिदृश्य विकास का एक मॉडल।
(B) राज्य विकास का एक सिद्धांत।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) जलवायु का वर्गीकरण।
(D) क्षेत्रीय अध्ययन के लिए एक कठोर रूपरेखा, जिसकी अक्सर सूत्रबद्ध होने के लिए आलोचना की जाती है।

188. कौन सा फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता अपने 'स्थलीय एकता' के सिद्धांत और 'अंतःक्रिया' के सिद्धांत के लिए जाना जाता है?
(A) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
(B) जीन ब्रून्स
(C) इमैनुएल डी मार्टोन
(D) अल्बर्ट डिमांजिया

189. समाजशास्त्र और जीव विज्ञान से प्रभावित किस ब्रिटिश भूगोलवेत्ता ने 'स्थान-कार्य-लोक' की अवधारणा और क्षेत्रीय सर्वेक्षण विधियों को बढ़ावा दिया?
(A) हैल्फोर्ड मैकिंडर
(B) एल. डडली स्टैम्प
(C) पैट्रिक गेडिस
(D) ए. जे. हर्बर्टसन

190. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): कार्ल सॉयर की सांस्कृतिक परिदृश्य की अवधारणा पर्यावरणीय नियतिवाद के प्रतिमान के लिए एक सीधी चुनौती थी।
कारण (R): सॉयर ने इस बात पर जोर दिया कि संस्कृति कारक है, प्राकृतिक क्षेत्र माध्यम है, और सांस्कृतिक परिदृश्य परिणाम है, जिससे पर्यावरणीय नियंत्रण के स्थान पर मानवीय गतिविधियों को महत्व दिया गया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

191. यह दृष्टिकोण कि 'मनुष्य प्रस्ताव करता है, प्रकृति निर्णय करती है' नियतिवाद और संभववाद के बीच एक मध्यम मार्ग प्रदान करता है। यह सबसे निकटता से किससे जुड़ा है?
(A) नव-नियतिवाद या 'रुको-और-जाओ नियतिवाद'।
(B) फ्रांसीसी स्कूल।
(C) व्यवहारवाद।
(D) बर्कले स्कूल।

192. मात्रात्मक क्रांति ने किस कार्यप्रणाली पर बल देकर भूगोल को अधिक 'वैज्ञानिक' बनाने की कोशिश की?
(A) घटनावाद।
(B) तार्किक प्रत्यक्षवाद।
(C) व्याख्यावाद।
(D) सामाजिक निर्माणवाद।

193. 'स्थान की भावना' की अवधारणा भूगोल की किस शाखा के लिए एक केंद्रीय विषय है?
(A) भू-आकृति विज्ञान
(B) मानवतावादी भूगोल
(C) जलवायु विज्ञान
(D) मात्रात्मक भूगोल

194. यह विचार कि कोई एकल, वस्तुनिष्ठ 'सत्य' नहीं है, बल्कि कई 'सत्य' या 'विमर्श' हैं, किसका एक मौलिक सिद्धांत है:
(A) उत्तर-आधुनिकतावाद।
(B) प्रत्यक्षवाद।
(C) पर्यावरणीय नियतिवाद।
(D) संरचनावाद।

NODIA

195. किस प्राचीन लेखक के भौगोलिक कार्य की उनके समय में काफी हद तक उपेक्षा की गई थी, लेकिन पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ताओं के लिए इसे फिर से खोजा गया और यह एक प्रमुख स्रोत बन गया?
(A) हेरोडोटस
(B) स्ट्रैबो
(C) टॉलेमी
(D) इरेटोस्थनीज

196. तापमान को मानचित्रित करने के लिए अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट द्वारा समताप रेखाओं का उपयोग किसका एक अग्रणी उदाहरण था?
(A) क्षेत्रीय भूगोल।
(B) राजनीतिक भूगोल।
(C) सांस्कृतिक भूगोल।
(D) व्यवस्थित, तुलनात्मक भूगोल।

197. फ्रांस में क्षेत्रीय मोनोग्राफ की विडालियन परंपरा किस पर केंद्रित थी?
(A) स्थान के सार्वभौमिक नियमों को खोजना।
(B) फ्रांसीसी औपनिवेशिक विस्तार को बढ़ावा देना।
(C) एक विशिष्ट क्षेत्र के भूगोल का समग्र, संश्लेषित विवरण प्रदान करना।
(D) गणितीय मॉडल विकसित करना।

198. 'अनुक्रमिक अधिभोग' मॉडल, जो एक क्षेत्र में सांस्कृतिक समूहों के उत्तराधिकार और परिदृश्य पर प्रत्येक द्वारा छोड़ी गई छाप का अध्ययन करता है, किसके द्वारा विकसित किया गया था?
(A) कार्ल सॉयर
(B) डरवेंट व्हिटलसी
(C) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(D) विलियम मॉरिस डेविस

199. हार्टशॉर्न के 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' का मूल विचार यह है कि भूगोल का प्राथमिक कार्य क्या है:
(A) उन नियमों को तैयार करना जो घटनाओं के स्थान को

नियंत्रित करते हैं।
(B) भू-राजनीतिक संबंधों के भविष्य की भविष्यवाणी करना।
(C) स्थान के व्यक्तिपरक अनुभव को समझना।
(D) पृथ्वी की सतह पर क्षेत्रों के बीच के अंतरों की व्याख्या करना।

200. भूगोल में उत्तर-आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य को दर्शाने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भौगोलिक 'तथ्य' खोजे नहीं जाते बल्कि शक्ति के विमर्शों के माध्यम से निर्मित होते हैं।
II. मानचित्रों के छिपे हुए वैचारिक संदेशों को प्रकट करने के लिए उनका विखंडन करना आवश्यक है।
III. भूगोल का लक्ष्य स्थानिक वास्तविकता के बारे में एक मात्र वस्तुनिष्ठ सत्य की खोज करना है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

201. किस जर्मन भूगोलवेत्ता के क्षेत्र-विवरणी पर कार्य ने स्थानों/क्षेत्रों के विज्ञान के रूप में भूगोल के लिए दार्शनिक आधार प्रदान किया?
(A) फ्रेडरिक रैटजेल
(B) अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट
(C) अल्फ्रेड हेटनर
(D) कार्ल रिटर

202. भौगोलिक ज्ञान में रोमन साम्राज्य का सबसे महत्वपूर्ण योगदान किस क्षेत्र में था?
(A) व्यावहारिक भूगोल, जिसमें सैन्य और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए मानचित्रण शामिल है।
(B) गणितीय और सैद्धांतिक भूगोल।
(C) ऐतिहासिक भूगोल और परिदृश्य विकास।
(D) भूगोल का दर्शन।

203. मात्रात्मक क्रांति और मानवतावादी भूगोल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मात्रात्मक क्रांति के कारण स्थान के अद्वितीय चरित्र के बजाय अमूर्त अंतरिक्ष और ज्यामितीय गुणों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
कथन II: मानवतावादी भूगोल इसके जवाब में उभरा, जिसने 'स्थान' और 'लोगों' को विषय में वापस लाने की कोशिश की।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

204. यह दर्शन कि "ज्ञान के निर्माण में मस्तिष्क सक्रिय है" और यह कि ऐतिहासिक घटनाओं को अभिनेताओं के विचारों पर पुनर्विचार करके समझा जाना चाहिए, किसके रूप में जाना जाता है:
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) आदर्शवाद
(C) अनुभववाद
(D) भौतिकवाद

205. भूगोल में प्रभुत्व या उदय के कालानुक्रमिक क्रम में निम्नलिखित विचारधाराओं को व्यवस्थित कीजिए।
1. संभववाद का फ्रांसीसी स्कूल
2. पर्यावरणीय नियतिवाद का जर्मन स्कूल
3. स्थानिक विज्ञान का अमेरिकी स्कूल
4. सांस्कृतिक परिदृश्य का बर्कले स्कूल
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

206. निम्नलिखित में से कौन भूगोल के अमेरिकी स्कूल से नहीं जुड़ा है?
(A) डब्लू. एम. डेविस
(B) कार्ल सॉयर
(C) एलेन सेंपल
(D) हैल्फोर्ड मैकिंडर

207. निम्नलिखित में से कौन भूगोल में द्वैतवाद नहीं है?
(A) सिद्धांत बनाम व्यवहार
(B) नियतिवाद बनाम संभववाद
(C) व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय
(D) भौतिक बनाम मानव

208. 'मानसिक मानचित्र' की अवधारणा को पीटर गोल्ड और रॉडने व्हाइट द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था, और यह किस भौगोलिक दृष्टिकोण के लिए एक केंद्रीय उपकरण है?
(A) उत्तर-आधुनिकतावाद
(B) व्यवहारवाद
(C) संरचनावाद
(D) नियतिवाद

209. भूगोल पर लागू होने वाले प्रतिमान विस्थापन मॉडल की प्राथमिक आलोचना यह है कि:
(A) भूगोल कभी नहीं बदला है।
(B) भूगोल में प्रतिमान अक्सर एक-दूसरे को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करने के बजाय साथ-साथ मौजूद रहते हैं।
(C) मात्रात्मक क्रांति का कोई वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ा।
(D) थॉमस कुहन भूगोलवेत्ता नहीं थे।

210. एनेक्सीमेंडर भूगोल में ऐतिहासिक रूप से किस लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे पहले ज्ञात विद्वान थे जिन्होंने:

Click Here to Buy book on Amazon

(A) एक टैबलेट पर ज्ञात विश्व का मानचित्र बनाने का प्रयास किया।
(B) गोलाकार पृथ्वी के पक्ष में तर्क दिया।
(C) पृथ्वी की परिधि की गणना की।
(D) जलवायु को क्षेत्रों में वर्गीकृत किया।

211. भूगोल में सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण, पृथ्वी को एक उद्देश्य के लिए डिज़ाइन किया गया देखने का विचार, किसके कार्य में सबसे स्पष्ट रूप से पाया जाता है:
(A) अलेक्ज़ेंडर वॉन हम्बोल्ट
(B) फ्रेडरिक रैटज़ेल
(C) कार्ल रिटर
(D) अल्फ्रेड हेटनर

212. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) जीन ब्रून्स - पर्यावरणीय नियतिवाद
(B) कार्ल सॉयर - मात्रात्मक क्रांति
(C) रिचर्ड हार्टशॉर्न - उत्तर-आधुनिकतावाद
(D) यी-फू तुआन - मानवतावादी भूगोल

213. जीवंत अनुभव, घटनावाद और 'जीवन-जगत' जैसी अवधारणाओं पर ध्यान मानवतावादी भूगोल को दर्शन की किस शाखा से जोड़ता है?
(A) तार्किक प्रत्यक्षवाद
(B) मार्क्सवाद
(C) अस्तित्ववाद
(D) अनुभववाद

214. 'प्राकृतिक क्षेत्रों' पर अपने कार्य के लिए और शिक्षा में भूगोल को बढ़ावा देने के लिए जाने जाने वाले ब्रिटिश भूगोलवेत्ता थे:
(A) एल. डडली स्टैम्प
(B) ए. जे. हर्बर्टसन
(C) हैल्फोर्ड मैकिंडर
(D) पी. एम. रॉक्सबी

215. सूची I में पुस्तक के शीर्षक को सूची II में उसके लेखक के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पुस्तक)
P. द नेचर ऑफ ज्योग्राफी
Q. कॉस्मॉस
R. इन्फ्लुएंस ऑफ जियोग्राफिक एनवायरनमेंट
S. द जियोग्राफिकल पिवट ऑफ हिस्ट्री
सूची II: (लेखक)
1. एलेन चर्चिल सेंपल
2. हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर
3. रिचर्ड हार्टशॉर्न
4. अलेक्ज़ेंडर वॉन हम्बोल्ट
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

216. कथन "पर्यावरण कच्चा माल प्रदान करता है, मनुष्य अपनी संस्कृति का उपयोग करके उसमें से चयन करता है और एक परिदृश्य तैयार करता है" किसके विचारों को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) सांस्कृतिक भूगोल का बर्कले स्कूल
(B) पर्यावरणीय नियतिवादी
(C) प्रत्यक्षवादी स्कूल
(D) शहरी पारिस्थितिकी का शिकागो स्कूल

217. अन्वेषण के युग से शैक्षणिक भूगोल में परिवर्तन को किसके बदलाव के रूप में चिन्हित किया गया था:
(A) मानचित्रण से सिद्धांत निर्माण की ओर।
(B) समुद्री यात्रा से स्थल यात्रा की ओर।
(C) विवरण और वस्तु-सूची से व्याख्या और संश्लेषण की ओर।
(D) गुणात्मक से मात्रात्मक विधियों की ओर।

218. भूगोल में इमैनुएल कांट का मुख्य योगदान क्या था?
(A) ज्ञान का उनका दार्शनिक वर्गीकरण, जिसमें भूगोल को एक क्षेत्र-विवरणी विज्ञान के रूप में स्थान दिया गया।
(B) उनकी व्यापक यात्राएँ और क्षेत्रीय प्रेक्षण।
(C) उनका परिदृश्य विकास का सिद्धांत।
(D) जलवायु नियतिवाद पर उनका कार्य।

219. 'अनुक्रमिक अधिभोग' की अवधारणा किसे समझने के लिए सबसे उपयोगी है?
(A) शहरों का ज्यामितीय प्रतिरूप।
(B) प्रवास के नियम।
(C) कृषि पर जलवायु का प्रभाव।
(D) परिदृश्य में इतिहास और संस्कृति की परतें।

220. निम्नलिखित में से कौन सा उत्तर-आधुनिक भूगोल का विषय नहीं है?
(A) मानचित्रों और पाठों का विखंडन।
(B) एक एकल, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की खोज।
(C) प्रतिनिधित्व और विमर्श पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) अंतर और 'अन्यथा' का जश्न मनाना।

221. पृथ्वी की परिधि मापने के लिए इरेटोस्थनीज का कार्य किन दो शहरों में सूर्य के कोण के प्रेक्षण पर आधारित था?
(A) एथेंस और स्पार्टा
(B) रोम और कार्थेज
(C) सीन और अलेक्ज़ेंड्रिया
(D) बेबीलोन और थीब्स

222. रैटज़ेल की 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' मुख्य रूप से किसका अध्ययन है?
(A) मानव नस्लों का वितरण।
(B) शहरी बस्तियों की आकृति विज्ञान।

NODIA

(C) गैर-साक्षर समाजों की सांस्कृतिक परंपराएं।
(D) मानव समाजों और उनके भौतिक वातावरण के बीच संबंध।

223. भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल ने 'पेय' कहे जाने वाले छोटे, अद्वितीय क्षेत्रों के अध्ययन पर बल दिया।
कथन II: इस दृष्टिकोण ने एक समुदाय और उसके विशिष्ट पर्यावरण के बीच संबंधों की विस्तृत, समग्र समझ की अनुमति दी, जिसे 'जॉनर डी वी' की अवधारणा में समाहित किया गया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

224. 'लैंड यूटिलाइजेशन सर्वे ऑफ ब्रिटेन' का मुख्य लक्ष्य क्या था?
(A) एक भू-राजनीतिक सिद्धांत सिद्ध करना।
(B) राष्ट्रीय नियोजन के लिए भूमि उपयोग की एक व्यापक वस्तु-सूची प्रदान करना।
(C) 'अपरदन चक्र' मॉडल का परीक्षण करना।
(D) स्कूलों के लिए एक नया पाठ्यक्रम बनाना।

225. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): डब्लू. एम. डेविस का 'अपरदन चक्र' दशकों तक भू-आकृति विज्ञान में एक अत्यधिक प्रभावशाली मॉडल था।
कारण (R): इसने भू-आकृतियों को समझने और वर्गीकृत करने के लिए एक सरल, विकासवादी और निगमनात्मक ढांचा प्रदान किया, जिसे सिखाना और लागू करना आसान था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. भूगोल में इडियोग्राफिक से नोमोथेटिक दृष्टिकोण की ओर बदलाव किसका मुख्य लक्ष्य था?
(A) मात्रात्मक क्रांति
(B) मानवतावादी झुकाव
(C) सांस्कृतिक झुकाव
(D) उत्तर-आधुनिक झुकाव

227. उन व्यक्तिपरक भावनाओं, स्मृतियों और जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित करने वाला अध्ययन जो लोगों का उनके बचपन के घरों के प्रति होता है, किसका उदाहरण होगा?
(A) प्रत्यक्षवादी भूगोल
(B) भू-राजनीति
(C) मानवतावादी भूगोल
(D) जैव-भूगोल

228. यह विचार कि अंतरिक्ष और समाज पारस्परिक रूप से गठित होते हैं, जिसका अर्थ है कि सामाजिक संबंध स्थान बनाते हैं और स्थान बदले में सामाजिक संबंधों को आकार देते हैं, किसकी एक केंद्रीय अंतर्दृष्टि है?
(A) पर्यावरणीय नियतिवाद
(B) प्रारंभिक क्षेत्रीय भूगोल
(C) भू-आकृति विज्ञान
(D) आलोचनात्मक मानव भूगोल।

229. किस प्राचीन विद्वान की अक्सर एक 'आरामकुर्सी भूगोलवेत्ता' के रूप में आलोचना की जाती है, जिन्होंने प्रत्यक्ष प्रेक्षण के बजाय अन्य स्रोतों से जानकारी संकलित की थी?
(A) इरेटोस्थनीज
(B) हेरोडोटस
(C) टॉलेमी
(D) स्ट्रैबो

230. जर्मन भूगोलवेत्ता अल्फ्रेड हेटनर के कार्य का प्राथमिक केंद्र किस पर था?
(A) राजनीतिक भूगोल और राज्य।
(B) एक क्षेत्र-विवरणी विज्ञान के रूप में भूगोल की कार्यप्रणाली और तार्किक संरचना।
(C) सभ्यता पर जलवायु का प्रभाव।
(D) चीन का भू-आकृति विज्ञान।

231. फ्रांसीसी भूगोल में 'मिलियू' की अवधारणा, जो 'पर्यावरण' के समान है, किसके बीच बहस के केंद्र में थी?
(A) क्षेत्रीय और व्यवस्थित भूगोल।
(B) भौतिक और मानव भूगोल।
(C) गुणात्मक और मात्रात्मक भूगोल।
(D) नियतिवाद और संभववाद।

232. निम्नलिखित में से कौन प्रारंभिक अमेरिकी भूगोल स्कूल की विरासत का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) भू-आकृति विज्ञान और पर्यावरणीय नियतिवाद पर गहरा बल।
(B) सांस्कृतिक परिदृश्यों और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं पर ध्यान।
(C) संभववाद और क्षेत्रीय संश्लेषण के प्रति प्रतिबद्धता।
(D) मात्रात्मक और सांख्यिकीय विधियों का विकास।

233. भौतिक और मानव भूगोल का द्वैतवाद विषय के _____ पर एक बहस है।
(A) कार्यप्रणाली
(B) दर्शन
(C) विस्तार और विषय वस्तु
(D) अनुप्रयोग

Downloaded from www.pdf.tube

234. विज्ञान के इतिहास और दर्शन में थॉमस कुहन का मुख्य योगदान किसकी अवधारणा थी?
(A) प्रतिमान विस्थापन
(B) मिथ्याकरण
(C) प्रत्यक्षवाद
(D) अनुभववाद

235. भूगोल में प्रत्यक्षवाद के विरोध में या आलोचना के रूप में उत्पन्न हुए प्रमुख दृष्टिकोणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. व्यवहारवाद
II. मानवतावाद
III. पर्यावरणीय नियतिवाद
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

236. आदर्शवाद का परिप्रेक्ष्य सुझाव देता है कि एक भूगोलवेत्ता किसी क्षेत्र के अधिवास प्रतिरूप की व्याख्या तब तक नहीं कर सकता जब तक कि वह किसे न समझ ले:
(A) अंतर्निहित आर्थिक नियम।
(B) इसे बनाने वाले लोगों के विचार और इरादे।
(C) क्षेत्र का भौतिक भूगोल।
(D) जनसंख्या का सांख्यिकीय वितरण।

237. वाक्यांश 'कहीं भी अनिवार्यताएं नहीं हैं, बल्कि हर जगह संभावनाएं हैं; और संभावनाओं के स्वामी के रूप में मनुष्य उनके उपयोग का निर्णायक है' किसे दिया जाता है:
(A) फ्रेडरिक रैटजेल
(B) एलेन सेंपल
(C) लुसिएन फेब्रे
(D) डब्लू. एम. डेविस

238. स्ट्रैबो की 'जियोग्राफिया' किस रूप में सबसे अधिक मूल्यवान है:
(A) गणितीय भूगोल की एक कृति।
(B) नौवहन के लिए एक मार्गदर्शिका।
(C) भौतिक भूगोल पर एक पाठ्यपुस्तक।
(D) ऑगस्टन युग का एक ऐतिहासिक-भौगोलिक विश्वकोश।

239. भूगोल और कोरोग्राफी के बीच के अंतर को पहली बार व्यवस्थित रूप से किसके द्वारा प्रस्तुत किया गया था:
(A) टॉलेमी
(B) इरेटोस्थनीज
(C) हेकेटियस
(D) स्ट्रैबो

240. हम्बोल्ट और रिटर के कार्य के बीच मुख्य अंतर यह है कि हम्बोल्ट ने _____ पर ध्यान केंद्रित किया जबकि रिटर ने _____ पर ध्यान केंद्रित किया।
(A) मानव भूगोल; भौतिक भूगोल
(B) व्यवस्थित भूगोल; क्षेत्रीय भूगोल
(C) क्षेत्रीय भूगोल; व्यवस्थित भूगोल
(D) नियतिवाद; संभववाद

241. भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल का 'जॉनर डी वी' पर बल किस दार्शनिक रुख की सीधी अभिव्यक्ति है?
(A) नियतिवाद
(B) संभववाद
(C) प्रत्यक्षवाद
(D) संरचनावाद

242. मैकिंडर का हृदयस्थल सिद्धांत किसका एक मॉडल है:
(A) भू-राजनीति
(B) सांस्कृतिक भूगोल
(C) शहरी भूगोल
(D) भू-आकृति विज्ञान

243. कार्ल सॉयर और बर्कले स्कूल का कार्य पर्यावरणीय प्रभावों से हटकर किस ओर ध्यान केंद्रित करने का प्रतिनिधित्व करता है:
(A) आर्थिक मॉडल।
(B) राजनीतिक संरचनाएं।
(C) सांस्कृतिक-ऐतिहासिक प्रक्रियाएं।
(D) मनोवैज्ञानिक धारणाएं।

NODIA

244. हार्टशॉर्न की 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी' में मौलिक तर्क यह है कि भूगोल एक इडियोग्राफिक विज्ञान है जो किससे संबंधित है:
(A) सार्वभौमिक नियमों की खोज करना।
(B) भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करना।
(C) सामाजिक असमानता की आलोचना करना।
(D) पृथ्वी की सतह के परिवर्तनशील चरित्र का तर्कसंगत विवरण प्रदान करना।

245. कौन सा परिप्रेक्ष्य इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि व्यक्तिगत लोग पर्यावरण के अपने अपूर्ण ज्ञान और संज्ञानात्मक प्रसंस्करण के आधार पर स्थानिक निर्णय कैसे लेते हैं?
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) मानवतावाद
(C) व्यवहारवाद
(D) नियतिवाद

246. उत्तर-आधुनिकतावादी विमर्श पर बल क्या सुझाव देता है?
(A) भूगोलवेत्ताओं को एक-दूसरे से अधिक बात करनी चाहिए।
(B) भौगोलिक वास्तविकता भाषा और ज्ञान की प्रणालियों

के माध्यम से निर्मित और बनाए रखी जाती है।
(C) मौखिक परंपराएं लिखित पाठों से अधिक महत्वपूर्ण हैं।
(D) भूगोल का अभ्यास बहस के माध्यम से सबसे अच्छा किया जाता है।

247. जर्मन और फ्रांसीसी भूगोल स्कूलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: भूगोल को एक शैक्षणिक विषय के रूप में स्थापित करने में जर्मन स्कूल सहायक था।
कथन II: इसके विपरीत, फ्रांसीसी स्कूल मुख्य रूप से अन्वेषण पर केंद्रित था और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों पर इसका बहुत कम प्रभाव था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

248. 'स्थान' की महसूस किए गए मूल्य और अर्थ के केंद्र के रूप में अवधारणा किसके लिए केंद्रीय है:
(A) मानवतावादी भूगोल
(B) प्रत्यक्षवाद
(C) भू-राजनीति
(D) मात्रात्मक क्रांति

249. 'शेफर-हार्टशॉर्न बहस' भूगोल के किन दो दृष्टिकोणों के बीच संघर्ष का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) भौतिक बनाम मानव
(B) नियतिवाद बनाम संभववाद
(C) नोमोथेटिक बनाम इडियोग्राफिक
(D) ब्रिटिश बनाम अमेरिकी

250. सूची I में दिए गए भौगोलिक परिप्रेक्ष्य को सूची II में उससे जुड़ी एक मुख्य अवधारणा के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (परिप्रेक्ष्य)
P. व्यवहारवाद
Q. मानवतावाद
R. उत्तर-आधुनिकतावाद
S. प्रत्यक्षवाद
सूची II: (अवधारणा)
1. विखंडन
2. स्थानिक नियम
3. मानसिक मानचित्र
4. टोपोफिलिया
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

251. थेल्स और एनेक्सीमेंडर जैसी प्रारंभिक यूनानी भौगोलिक पूछताछ मुख्य रूप से किससे संबंधित थी?
(A) संस्कृति पर पर्यावरण का प्रभाव।
(B) राजनीतिक सीमाएं और साम्राज्य।
(C) विस्तृत क्षेत्रीय विवरण।
(D) पृथ्वी और ब्रह्मांड की प्रकृति और ज्यामिति।

252. वह भूगोलवेत्ता कौन था जिसने राज्य को एक जीवित जीव के रूप में देखा जिसे विस्तार करने की आवश्यकता थी, और लेबेन्सराम की अवधारणा विकसित की?
(A) कार्ल रिटर
(B) फ्रेडरिक रैटजेल
(C) अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट
(D) पॉल विडाल डी ला ब्लाश

253. कौन सी विचारधारा परिदृश्य का एक पाठ के रूप में अध्ययन करने की सबसे अधिक संभावना रखेगी जिसे सांस्कृतिक मूल्यों और विश्वासों को समझने के लिए पढ़ा जा सकता है?
(A) प्रत्यक्षवादी स्कूल
(B) फ्रांसीसी संभववादी स्कूल
(C) सांस्कृतिक भूगोल का बर्कले स्कूल
(D) भू-आकृति विज्ञान का डेविसियन स्कूल

254. 'व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय' द्वैतवाद किसके सर्वोत्तम तरीके के बारे में एक बहस है:
(A) भौगोलिक अनुसंधान को वित्तपोषित करने के लिए।
(B) स्कूलों में भूगोल पढ़ाने के लिए।
(C) वास्तविक दुनिया की समस्याओं के लिए भूगोल लागू करने के लिए।
(D) भौगोलिक ज्ञान और पूछताछ को व्यवस्थित करने के लिए।

255. यह दर्शन कि पर्यावरण मानव समाजों को विकल्पों की एक श्रृंखला प्रदान करता है, किसके रूप में जाना जाता है:
(A) संभववाद
(B) पर्यावरणीय नियतिवाद
(C) प्रत्यक्षवाद
(D) आदर्शवाद

256. 20वीं सदी के मध्य में भूगोल में एक प्रमुख प्रतिमान विस्थापन में _____ से _____ की ओर बदलाव शामिल था।
(A) नियतिवाद; संभववाद
(B) क्षेत्रीय विवरण; स्थानिक विज्ञान
(C) भौतिक भूगोल; मानव भूगोल
(D) गुणात्मक विधियाँ; क्षेत्रीय कार्य

257. आधुनिक भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल का संस्थापक किसे माना जाता है?
(A) जीन ब्रून्स
(B) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
(C) इमैनुएल डी मार्टोन
(D) लुसिएन फेब्रे

Click Here to Buy book on Amazon

258. भूगोल की 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' के अध्ययन के रूप में परिभाषा सबसे निकटता से किससे जुड़ी है:
(A) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(B) फ्रेड के. शेफर
(C) कार्ल सॉयर
(D) डब्लू. एम. डेविस

259. मानवतावादी दृष्टिकोण की एक प्रमुख विशेषता व्यक्तिपरक अनुभव को समझने के लिए _____ विधियों का उपयोग है।
(A) मात्रात्मक और सांख्यिकीय
(B) प्रयोगात्मक और प्रयोगशाला-आधारित
(C) गुणात्मक और घटनावादी
(D) निगमनात्मक और मॉडल-आधारित

260. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): उत्तर-आधुनिक भूगोल 'मेटा-नैरेटिव्स' का कड़ा आलोचक है।
कारण (R): यह तर्क देता है कि मार्क्सवाद या आधुनिकीकरण सिद्धांत जैसे भव्य सिद्धांत अत्यधिक सरल हैं और स्थानीय, विविध और वैकल्पिक दृष्टिकोणों को दबा देते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

261. मानचित्रकला में रोमन योगदान का सबसे अच्छा उदाहरण किसके द्वारा दिया गया है:
(A) मर्केटर प्रक्षेप का विकास।
(B) देशांतर का सटीक मापन।
(C) प्यूटिंगर टेबल, जो एक योजनाबद्ध सड़क मानचित्र है।
(D) अल्मागैस्ट तारा सूची।

262. किस जर्मन भूगोलवेत्ता ने पुरजोर वकालत की कि भूगोल एक इडियोग्राफिक विज्ञान है?
(A) फ्रेडरिक रैटजेल, नियमों की अपनी खोज में।
(B) अल्फ्रेड हेटनर, कांट के वर्गीकरण का अनुसरण करते हुए।
(C) ऑस्कर पेशेल, अपनी तुलनात्मक पद्धति के साथ।
(D) फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन, अपने प्रारंभिक कार्य में।

263. आल्प्स की एक विशिष्ट घाटी में एक समुदाय के पारंपरिक, सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के तरीके का अध्ययन करने वाला एक भूगोलवेत्ता संभवतः किसकी जांच कर रहा है:
(A) लेबेन्सराम
(B) केंद्रीय व्यापार जिला
(C) प्रतिमान
(D) जॉनर डी वी

264. पैट्रिक गेडिस की 'कनर्बेशन' की अवधारणा _____ स्कूल से _____ भूगोल के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान थी।
(A) ब्रिटिश; शहरी
(B) जर्मन; राजनीतिक
(C) फ्रांसीसी; ग्रामीण
(D) अमेरिकी; सांस्कृतिक

265. "इतिहास की भौगोलिक धुरी" शब्द का अर्थ वही है जिसे मैकिंडर ने यह भी कहा था:
(A) रिमलैंड
(B) विश्व-द्वीप
(C) हृदयस्थल
(D) बाहरी अर्धचंद्राकार क्षेत्र

266. एक भूगोलवेत्ता जो यह मानता है कि "किसी परिदृश्य को समझने के लिए, आपको उस संस्कृति को समझना होगा जिसने उसे आकार दिया है" वह किसके साथ सबसे अधिक जुड़ा हुआ है:
(A) कार्ल ओ. सॉयर
(B) डब्लू. एम. डेविस
(C) एल्सवर्थ हंटिंगटन
(D) फ्रेड के. शेफर

267. हार्टशॉर्न और शेफर के बीच मुख्य पद्धतिगत तर्क यह था कि भूगोल को क्या होना चाहिए:
(A) भौतिक या मानवीय।
(B) अनुप्रयुक्त या सैद्धांतिक।
(C) मात्रात्मक या गुणात्मक।
(D) नियम-खोजने वाला या क्षेत्र-विवरणी देने वाला।

268. यह विचार कि भूगोलवेत्ताओं को 'जीवन-जगत' को समझने के लिए अपनी पूर्वधारणाओं को त्यागना चाहिए, किस दार्शनिक पद्धति से लिया गया है?
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) घटनावाद
(C) अनुभववाद
(D) मार्क्सवाद

269. डेरिडा और फौकॉल्ट जैसे विचारकों का कार्य किस पर सबसे अधिक प्रभावशाली रहा है?
(A) प्रत्यक्षवादी भूगोल
(B) भू-आकृति विज्ञान
(C) उत्तर-आधुनिक भूगोल
(D) पर्यावरणीय नियतिवाद

270. भूगोल में द्वैतवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भौतिक बनाम मानव भूगोल का द्वैतवाद विषय की मूल विषय वस्तु पर सवाल उठाता है।
II. व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय भूगोल का द्वैतवाद अध्ययन के

NODIA

पद्धतिगत दृष्टिकोण से संबंधित है।
III. कई समकालीन भूगोलवेत्ता इन द्वैतवादों को झूठे विकल्पों के रूप में देखते हैं और एकीकृत दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

271. अलेक्जेंड्रिया के पुस्तकालय के प्रमुख कौन थे जिन्होंने पृथ्वी की परिधि की गणना की थी?
(A) इरेटोस्थनीज
(B) टॉलेमी
(C) स्ट्रैबो
(D) हिप्पार्कस

272. जर्मन और अमेरिकी परंपराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: 19वीं सदी के अंत की जर्मन भौगोलिक परंपरा शैक्षणिक जगत में अत्यधिक प्रभावशाली थी।
कथन II: अमेरिकी भौगोलिक परंपरा काफी हद तक जर्मन-प्रशिक्षित भूगोलवेत्ताओं या उनके विचारों द्वारा रखी गई नींव पर बनाई गई थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

273. शहरी आकृति विज्ञान पर शिकागो स्कूल का कार्य शहर के अध्ययन के लिए पारिस्थितिक अवधारणाओं को लागू करने का एक उदाहरण है, जिसने किसे प्रभावित किया:
(A) राजनीतिक भूगोल
(B) शहरी भूगोल
(C) सांस्कृतिक भूगोल
(D) ऐतिहासिक भूगोल

274. 'रुको-और-जाओ नियतिवाद' किससे जुड़ी अवधारणा है:
(A) ग्रिफिथ टेलर
(B) एल्सवर्थ हंटिंगटन
(C) विडाल डी ला ब्लाश
(D) कार्ल सॉयर

275. निम्नलिखित प्रमुख भौगोलिक कार्यों को उनके प्रकाशन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. 'द जियोग्राफिकल पिवट ऑफ हिस्ट्री'
2. 'जियोग्राफिया'
3. 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी'
4. 'कॉस्मॉस'
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 1, 2, 4, 3

NODIA

276. एक भूगोलवेत्ता जो कहता है, "उष्णकटिबंधीय क्षेत्र दुर्बल करने वाली जलवायु के कारण निर्धनता के लिए नियत हैं," वह किसके अनुरूप दृष्टिकोण व्यक्त कर रहा है:
(A) संभववाद
(B) मानवतावाद
(C) उत्तर-आधुनिकतावाद
(D) पर्यावरणीय नियतिवाद

277. 'मात्रात्मक क्रांति' किस विचारधारा के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी?
(A) प्रत्यक्षवाद
(B) संभववाद का फ्रांसीसी स्कूल।
(C) हार्टशॉर्न की क्षेत्रीय परंपरा।
(D) पर्यावरणीय नियतिवाद।

278. मानवतावादी भूगोल का प्राथमिक केंद्र निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) सार्वभौमिक स्थानिक नियमों का निर्माण।
(B) मानवीय अनुभव, अर्थ और स्थान के प्रति जुड़ाव को समझना।
(C) अंतरिक्ष में वर्ग संघर्ष का विश्लेषण।
(D) मानव व्यवहार का सांख्यिकीय मॉडलिंग।

279. 'सांस्कृतिक परिदृश्य' पर अपने कार्य के लिए सबसे प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता कौन हैं:
(A) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(B) विलियम मॉरिस डेविस
(C) यशायाह बोमन
(D) कार्ल ओ. सॉयर

280. बाद के स्कूलों द्वारा प्रत्यक्षवाद की सबसे मौलिक आलोचना क्या थी:
(A) मूल्य-मुक्त वस्तुनिष्ठता का इसका दावा और मानवीय चेतना की इसकी उपेक्षा।
(B) गणित का उपयोग।
(C) क्षेत्रीय भूगोल पर ध्यान।
(D) क्षेत्रीय कार्य की कमी।

281. रैटजेल की 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' के पहले खंड ने मानव समूहों पर डार्विनवादी विचारों को लागू किया, जिसने किसकी आधारशिला रखी:
(A) संभववाद
(B) सांस्कृतिक पारिस्थितिकी
(C) राजनीतिक भूगोल और भू-राजनीति
(D) क्षेत्रीय विज्ञान

282. 'पेय' शब्द _____ स्कूल की एक अवधारणा है जो _____ को संदर्भित करता है।

(A) फ्रांसीसी; छोटा प्राकृतिक क्षेत्र
(B) जर्मन; बड़ा राज्य
(C) ब्रिटिश; औपनिवेशिक क्षेत्र
(D) अमेरिकी; महानगरीय क्षेत्र

283. 'हृदयस्थल-रिमलैंड' सिद्धांत से कौन जुड़ा है?
(A) रैटजेल और हॉशोफर
(B) डेविस और पेंक
(C) हम्बोल्ट और रिटर
(D) मैकिंडर और स्पाइकमैन

284. 'एक्सेप्शनलिज्म इन ज्योग्राफी' फ्रेड के. शेफर का एक पत्र था जिसने किसके विचारों के विरुद्ध तर्क दिया था:
(A) कार्ल सॉयर
(B) रिचर्ड हार्टशॉर्न
(C) डब्लू. एम. डेविस
(D) डेविड हार्वे

285. सूची I में भूगोलवेत्ता को सूची II में उनके संबद्ध परिप्रेक्ष्य के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (भूगोलवेत्ता)
P. रिचर्ड हार्टशॉर्न
Q. फ्रेड शेफर
R. यी-फू तुआन
S. डेविड हार्वे
सूची II: (परिप्रेक्ष्य)
1. मानवतावाद
2. प्रत्यक्षवाद / स्थानिक विज्ञान
3. मार्क्सवाद / आलोचनात्मक भूगोल
4. क्षेत्रीय विभेदीकरण
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

286. आदर्शवाद यह मानता है कि भौतिक दुनिया सीधे जानने योग्य नहीं है और सारा ज्ञान मस्तिष्क का उत्पाद है। यह किसके बिल्कुल विपरीत है:
(A) मानवतावाद
(B) संभववाद
(C) उत्तर-आधुनिकतावाद
(D) अनुभववाद और प्रत्यक्षवाद

287. भूगोल में उत्तर-आधुनिक विचार का मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) भव्य आख्यानों के प्रति संशय और अंतर पर बल।
(B) प्रगति और वस्तुनिष्ठ विज्ञान में विश्वास।
(C) सार्वभौमिक सिद्धांतों की खोज।
(D) पर्यावरणीय नियतिवाद का पालन।

288. किस प्राचीन सभ्यता ने गणितीय और खगोलीय भूगोल में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(A) रोमन
(B) यूनानी
(C) फारसी
(D) मिस्रवासी

289. आधुनिक जर्मन भूगोल के किन दो संस्थापकों के कार्य में 'तुलनात्मक पद्धति' केंद्रीय थी?
(A) हेटनर और रैटजेल
(B) हम्बोल्ट और रिटर
(C) कांट और पेशेल
(D) रिचथोफेन और हेटनर

290. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं—कथन (Assertion A) और कारण (Reason R)। उचित विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।
कथन (A): विडाल डी ला ब्लाश के अधीन भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल ने संभववाद की अवधारणा का समर्थन किया।
कारण (R): यह परिप्रेक्ष्य जर्मन पर्यावरणीय नियतिवाद की कथित कठोरता के विरुद्ध सीधी प्रतिक्रिया के रूप में विकसित किया गया था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

291. हैल्फोर्ड मैकिंडर, ए. जे. हर्बर्टसन और एल. डडली स्टैम्प सभी किस राष्ट्रीय भूगोल स्कूल के प्रमुख व्यक्तित्व हैं?
(A) जर्मन
(B) फ्रांसीसी
(C) ब्रिटिश
(D) अमेरिकी

292. डेविसियन अपरदन चक्र एक मॉडल है जो किसके विकास का वर्णन करता है:
(A) संस्कृतियाँ
(B) शहर
(C) राजनीतिक राज्य
(D) भू-आकृतियाँ

293. यह विचार कि भूगोल प्राकृतिक विज्ञानों और मानविकी के बीच की खाई को पाटता है, किनके बीच द्वैतवाद को हल करने का एक प्रयास है:
(A) व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल
(B) नियतिवाद और संभववाद
(C) भौतिक और मानव भूगोल
(D) नोमोथेटिक और इडियोग्राफिक दृष्टिकोण

Downloaded from www.pdf.tube

294. शहर के केंद्र से दूरी और भूमि मूल्य के बीच नियम-समान संबंध खोजने के लिए सांख्यिकीय प्रतिगमन का उपयोग करने वाला भूगोलवेत्ता किस प्रतिमान के भीतर काम कर रहा है?
(A) मानवतावाद
(B) प्रत्यक्षवाद / स्थानिक विज्ञान
(C) उत्तर-आधुनिकतावाद
(D) संभववाद

295. मानवतावादी भूगोल के निम्नलिखित केंद्रीय विचारों पर विचार कीजिए:
I. अर्थ के केंद्र के रूप में 'स्थान' का महत्व, न कि केवल अंतरिक्ष में एक अवस्थिति।
II. व्यक्तिपरक अनुभव को समझने के लिए गुणात्मक विधियों का उपयोग।
III. मानव स्थानिक व्यवहार के सार्वभौमिक नियमों की खोज।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II, और III

296. भौगोलिक पाठों के अंतर्निहित पूर्वाग्रहों और शक्ति संरचनाओं को उजागर करने के लिए उनका विखंडन किसकी केंद्रीय कार्यप्रणाली है:
(A) उत्तर-आधुनिकतावाद
(B) व्यवहारवाद
(C) प्रत्यक्षवाद
(D) भू-आकृति विज्ञान

297. विद्वानों का कौन सा युग्म 20वीं सदी के मध्य के अमेरिकी भूगोल में "नोमोथेटिक बनाम इडियोग्राफिक" बहस में विरोधी दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) डेविस और सॉयर
(B) सेंपल और हंटिंगटन
(C) शेफर और हार्टशॉर्न
(D) बोमन और तुआन

298. इतिहास के एनाल्स स्कूल के संस्थापक, जिनके ऐतिहासिक संश्लेषण के कार्य ने भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल को बहुत प्रभावित किया, कौन थे:
(A) लुसिएन फेब्रे और मार्क ब्लोच
(B) इमैनुएल डी मार्टोन
(C) जीन ब्रून्स
(D) विडाल डी ला ब्लाश

299. प्रत्यक्षवादी प्रतिमान का एक मूल विश्वास यह है कि:
(A) सारा ज्ञान व्यक्तिपरक है।
(B) वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित है।
(C) मानवीय अंतर्ज्ञान ज्ञान का उच्चतम रूप है।
(D) केवल वही ज्ञान जो अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य है, प्रामाणिक है।

300. भौगोलिक विचारधारा का पर्यावरणीय नियतिवाद से संभववाद में संक्रमण किसके महत्व में बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है:
(A) मानवीय गतिविधियों से पर्यावरणीय नियंत्रण की ओर।
(B) पर्यावरणीय नियंत्रण से मानवीय गतिविधियों की ओर।
(C) क्षेत्रीय अध्ययनों से व्यवस्थित अध्ययनों की ओर।
(D) गुणात्मक विधियों से मात्रात्मक विधियों की ओर।

NODIA
www.nodia.in

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) इरेटोस्थनीज
प्राचीन यूनानी विद्वान इरेटोस्थनीज को भूगोल का जनक माना जाता है। उन्होंने सर्वप्रथम 'जियोग्राफिया' शब्द का प्रयोग किया था। उन्होंने अलेक्जेंड्रिया में सूर्य की किरणों के कोण का मापन करके पृथ्वी की परिधि की वैज्ञानिक गणना की। उनका यह प्रयास गणितीय भूगोल के विकास में सहायक सिद्ध हुआ। उन्होंने पृथ्वी को पाँच जलवायु कटिबंधों में विभाजित करने का प्रयास किया था।

2. (A) उन्होंने यूनान में 'ग्नोमोन' की शुरुआत की और ज्ञात विश्व का पहला मानचित्र बनाया।
एनेक्सीमेंडर यूनानी भूगोल के प्रमुख स्तंभ हैं जिन्होंने बेबीलोन के यंत्र 'ग्नोमोन' को यूनान में प्रचलित किया था। इस उपकरण की सहायता से सूर्य की छाया मापकर अक्षांश और देशांतर का अनुमान लगाया जाता था। उन्होंने उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर ज्ञात विश्व का प्रथम मानचित्र तैयार किया था। उनके कार्यों ने मानचित्रकला और खगोलीय भूगोल के विकास हेतु वैज्ञानिक चिंतन को बढ़ावा दिया।

3. (C) दिन के उजाले की विशिष्ट अवधि द्वारा परिभाषित अक्षांश के समानांतर क्षेत्र।
प्राचीन यूनानी भूगोल में 'क्लाइमेटा' शब्द का उपयोग पृथ्वी की सतह पर अक्षांशों के समांतर उन क्षेत्रों को दर्शाने हेतु होता था जहाँ दिन की अधिकतम लंबाई समान होती है। यह विभाजन सूर्य के प्रकाश की अवधि और उसके कोण पर आधारित था। हिप्पार्कस ने इस प्रणाली का उपयोग करके पृथ्वी को सात प्रमुख जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया था, जो वैज्ञानिक भूगोल का आधार बना।

4. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
स्ट्रैबो द्वारा रचित 'जियोग्राफिया' सत्रह खंडों का व्यापक ग्रंथ है जो प्राचीन काल के भौगोलिक ज्ञान का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें रोमन साम्राज्य के विस्तार और तत्कालीन ज्ञात विश्व का विस्तृत विवरण मिलता है। स्ट्रैबो का कार्य केवल गणितीय भूगोल तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने ऐतिहासिक और राजनीतिक पहलुओं पर भी बल दिया। उनका दृष्टिकोण क्षेत्र-विवरणी और क्षेत्रीय विवरण प्रधान माना जाता है।

5. (C) हेरोडोटस
हेरोडोटस को इतिहास का जनक कहा जाता है, किंतु उनका भौगोलिक योगदान भी महत्वपूर्ण है। वे इतिहास को भूगोल के संदर्भ में देखते थे। उन्होंने नील नदी की बाढ़ के कारणों की जांच की और फारसी साम्राज्य के विभिन्न प्रदेशों के निवासियों की जीवनशैली का वर्णन किया। उन्होंने कैस्पियन सागर को आंतरिक सागर माना था। उनके विवरणों में जातीय और सांस्कृतिक भूगोल की स्पष्ट झलक मिलती है।

6. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
प्राचीन भूगोलवेत्ताओं ने भूगोल के विकास में अमूल्य योगदान दिया है। टॉलेमी ने मानचित्रकला के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया, जबकि इरेटोस्थनीज ने पृथ्वी की परिधि का सटीक मापन किया था। हेकेटियस ने ज्ञात विश्व का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया और स्ट्रैबो ने सत्रह खंडों वाली 'जियोग्राफिया' की रचना की। इन विद्वानों के कार्यों ने भूगोल को एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित किया।

7. (D) क्लॉडियस टॉलेमी
क्लॉडियस टॉलेमी द्वारा रचित 'अल्मागैस्ट' खगोल विज्ञान और गणितीय भूगोल का महान ग्रंथ है जिसने शताब्दियों तक वैज्ञानिक सोच को प्रभावित किया। इस पुस्तक में उन्होंने पृथ्वी को ब्रह्मांड के केंद्र में मानते हुए खगोलीय पिंडों की गति का वर्णन किया था। यद्यपि उनकी गणनाओं में त्रुटियाँ थीं, लेकिन उनके द्वारा विकसित अक्षांश और देशांतर की प्रणाली ने भविष्य की मानचित्रकला हेतु ठोस आधार प्रदान किया।

8. (A) जानबूझकर की गई मानवीय गतिविधियों के उत्पाद के रूप में सांस्कृतिक परिदृश्यों का अध्ययन।
प्राचीन यूनानी भूगोल मुख्य रूप से पृथ्वी के भौतिक आकार, खगोलीय स्थिति और प्राकृतिक जलवायु क्षेत्रों के विश्लेषण पर केंद्रित था। वे पृथ्वी को एक गोले के रूप में देखते थे और गणितीय विधियों से उसकी परिधि की गणना करते थे। यद्यपि उन्होंने विभिन्न प्रदेशों के निवासियों का वर्णन किया, लेकिन 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की आधुनिक अवधारणा उस समय विकसित नहीं हुई थी। यह संकल्पना आधुनिक भूगोल का हिस्सा है।

9. (C) भौतिक भूगोल, प्राकृतिक प्रक्रियाओं के अनुभवजन्य प्रेक्षणों के माध्यम से।
अरस्तू का भूगोल में योगदान मुख्य रूप से भौतिक भूगोल और प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में उनके अनुभवजन्य दृष्टिकोण के कारण है। उन्होंने पृथ्वी के गोलाकार होने के प्रमाण दिए और गुरुत्वाकर्षण के प्रारंभिक सिद्धांतों पर चर्चा की। मौसम विज्ञान और समुद्र विज्ञान के क्षेत्र में उनके प्रेक्षणों ने प्राकृतिक प्रक्रियाओं को समझने में सहायता की। उनका ध्यान मुख्य रूप से भौतिक जगत की प्रक्रियाओं पर केंद्रित था।

10. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
टॉलेमी ने अपने विश्व मानचित्र में यूरेशियाई भूभाग को वास्तविक आकार से बहुत बड़ा दिखाया था। इस त्रुटि का मुख्य कारण यह था कि वे पृथ्वी की परिधि की बहुत छोटी और त्रुटिपूर्ण गणना पर विश्वास करते थे। कम परिधि के कारण मानचित्र का पैमाना विकृत हो गया, जिससे स्थलों के बीच की दूरियाँ

Click Here to Buy book on Amazon

बढ़-चढ़ाकर प्रदर्शित हुईं। इसी दोषपूर्ण मानचित्र ने बाद में कोलंबस को प्रेरित किया था।

11. (D) स्ट्रैबो
'कोरोलॉजी' या क्षेत्र-विवरणी की संकल्पना की जड़ें स्ट्रैबो के कार्यों में देखी जा सकती हैं। उन्होंने पृथ्वी की सतह पर विभिन्न स्थानों के अद्वितीय चरित्र के वर्णन पर बल दिया था। उन्होंने भूगोल को केवल गणितीय गणनाओं तक सीमित न रखकर उसे विभिन्न प्रदेशों के इतिहास और संस्कृति से जोड़ा। यही विचार बाद में आधुनिक काल में क्षेत्रीय भूगोल के सिद्धांतों का मुख्य आधार बना।

12. (B) थेल्स – मानते थे कि पृथ्वी जल पर तैरती हुई एक चपटी डिस्क थी।
यूनानी विद्वान थेल्स प्रथम दार्शनिक थे जिन्होंने पृथ्वी की उत्पत्ति और आकृति के बारे में वैज्ञानिक चिंतन प्रारंभ किया। उनका मानना था कि पृथ्वी जल के विशाल भंडार पर तैरती हुई एक चपटी डिस्क के समान है। यद्यपि बाद के विद्वानों ने पृथ्वी के गोलाकार होने के प्रमाण दिए, लेकिन थेल्स के विचारों ने प्रकृति को समझने की एक तर्कसंगत और स्वतंत्र वैज्ञानिक परंपरा की शुरुआत की।

13. (C) भूगोल का इतिहास से भिन्न एक क्षेत्र-विवरणी (कोरोलॉजिकल) विज्ञान के रूप में वर्गीकरण।
इमैनुएल कांट ने भूगोल को वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हुए इसे क्षेत्र-विवरणी विज्ञान के रूप में वर्गीकृत किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि जहाँ इतिहास घटनाओं का अध्ययन कालक्रम के अनुसार करता है, वहीं भूगोल पृथ्वी की सतह पर घटनाओं के स्थानिक वितरण का विश्लेषण करता है। उनके इस दार्शनिक वर्गीकरण ने भूगोल को स्वतंत्र शैक्षणिक विषय के रूप में विकसित होने का अवसर प्रदान किया।

14. (D) कार्ल रिटर
आधुनिक जर्मन भूगोल के शास्त्रीय काल में कार्ल रिटर अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व थे। रिटर ने भूगोल के प्रति क्षेत्रीय और सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण अपनाया, जो हम्बोल्ट के व्यवस्थित दृष्टिकोण का पूरक था। उनकी प्रसिद्ध कृति 'एर्डकुंडे' ने क्षेत्रीय संश्लेषण के महत्व को स्थापित किया। रिटर का मानना था कि पृथ्वी की संरचना मानव जाति के विकास हेतु ईश्वर की योजना का हिस्सा है। उनके विचारों ने भौगोलिक शिक्षा को प्रभावित किया।

15. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
आधुनिक भूगोल के संस्थापकों के रूप में हम्बोल्ट और रिटर के दृष्टिकोण एक-दूसरे के पूरक थे। हम्बोल्ट ने भूगोल के व्यवस्थित अध्ययन पर बल दिया, जहाँ उन्होंने भौतिक घटनाओं के वैश्विक वितरण और उनके अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया। इसके विपरीत, कार्ल रिटर ने क्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाया, जिसमें उन्होंने पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट चरित्र को समझने का प्रयास किया। दोनों ने भूगोल को विश्वविद्यालय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

16. (B) अल्फ्रेड हेटनर
जर्मन भूगोल में 'लैंडरकुंडे' की संकल्पना अल्फ्रेड हेटनर के कार्यों से जुड़ी हुई है। इसका अर्थ विशिष्ट क्षेत्रों या देशों का व्यवस्थित भौगोलिक अध्ययन करना है। हेटनर का मानना था कि भूगोल एक क्षेत्र-विवरणी विज्ञान है जिसका उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्टता को समझना है। उनके इस विचार ने क्षेत्रीय भूगोल को वैज्ञानिक कार्यप्रणाली प्रदान की और इसे भूगोल का मुख्य केंद्र बनाया।

17. (B) राजनीतिक और मानव भूगोल
फ्रेडरिक रैटजेल की प्रसिद्ध कृति 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' ने आधुनिक मानव भूगोल और राजनीतिक भूगोल की नींव रखी। उन्होंने मानव समूहों के वितरण और उनके पर्यावरण के साथ संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। रैटजेल ने 'लेबेन्सराम' जैसी संकल्पनाओं के माध्यम से यह समझाया कि राज्य का विकास उसकी भौगोलिक सीमाओं से प्रभावित होता है। उनके विचारों ने पर्यावरणीय नियतिवाद की प्रारंभिक विचारधारा को अत्यधिक बल प्रदान किया।

18. (A) लेबेन्सराम
फ्रेडरिक रैटजेल द्वारा प्रतिपादित 'लेबेन्सराम' का शाब्दिक अर्थ 'जीवित स्थान' है। यह सिद्धांत राज्य को एक जैविक जीव के रूप में देखता है जिसे जीवित रहने हेतु निरंतर क्षेत्रीय विस्तार की आवश्यकता होती है। रैटजेल का मानना था कि शक्तिशाली राज्यों को कमजोर क्षेत्रों की ओर बढ़ना चाहिए ताकि वे संसाधनों की आपूर्ति सुनिश्चित कर सकें। इस विचार ने बाद में भू-राजनीति को बहुत प्रभावित किया।

19. (C) एक कोरोलॉजिकल विज्ञान जो विभिन्न घटनाओं के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करता है।
अल्फ्रेड हेटनर ने भूगोल को एक 'कोरोलॉजिकल' या क्षेत्र-विवरणी विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार भूगोल का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर पाए जाने वाले विभिन्न तत्वों के क्षेत्रीय वितरण और उनके परस्पर संबंधों का अध्ययन करना है। वे इसे ऐसा विज्ञान मानते थे जो स्थानों की विशिष्टता को उजागर करता है। हेटनर के विचारों ने भूगोल को इतिहास से अलग पहचान दी।

20. (A) केवल I और II
जर्मन भूगोलवेत्ता कार्ल रिटर ने सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण अपनाया था, जिसके अनुसार पृथ्वी को ईश्वर ने मानव विकास हेतु एक विशेष योजना के तहत बनाया है। अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट ने 'कॉस्मॉस' में तत्कालीन समस्त वैज्ञानिक ज्ञान को संश्लेषित करने का प्रयास किया था। फ्रेडरिक रैटजेल ने मानव समाजों पर पर्यावरण के गहरे प्रभाव का समर्थन किया था। अतः प्रथम दो कथन सही हैं जबकि तीसरा कथन असत्य है।

21. (C) हम्बोल्ट ने व्यवस्थित दृष्टिकोण का उपयोग किया, जबकि रिटर ने क्षेत्रीय संश्लेषण का उपयोग किया।
हम्बोल्ट और रिटर के बीच मुख्य अंतर उनकी कार्यप्रणाली में था। हम्बोल्ट ने व्यवस्थित भूगोल का समर्थन किया, जहाँ उन्होंने वैश्विक संदर्भ में जलवायु या वनस्पति के वितरण का

NODIA

अध्ययन किया। इसके विपरीत, कार्ल रिटर ने क्षेत्रीय संश्लेषण पर ध्यान केंद्रित किया, जहाँ उन्होंने विशिष्ट भौगोलिक इकाइयों के भीतर मौजूद तत्वों के अंतर्संबंधों को समझा। इन दृष्टिकोणों ने आधुनिक भूगोल के व्यवस्थित और क्षेत्रीय विभाजन की नींव रखी।

22. (B) चीन
फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन प्रसिद्ध जर्मन भूगोलवेत्ता और भूवैज्ञानिक थे। उन्हें चीन के व्यापक अन्वेषण और वहां के भू-आकृति विज्ञान पर कार्यों हेतु अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। उन्होंने सात खंडों में चीन का विस्तृत भौगोलिक विवरण लिखा, जिसमें वहां की पर्वत प्रणालियों और कोयला क्षेत्रों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया। उनके कार्यों ने भू-आकृति विज्ञान की अध्ययन पद्धतियों को अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

23. (D) फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन
फर्डिनेंड वॉन रिचथोफेन के कार्यों को शास्त्रीय काल और आधुनिक क्षेत्रीय भूगोल के बीच महत्वपूर्ण सेतु माना जाता है। उन्होंने भूगोल को पृथ्वी की सतह के क्षेत्रीय विभेदीकरण के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया। रिचथोफेन ने ही सर्वप्रथम 'कोरोग्राफी' और 'कोरोलॉजी' के बीच अंतर को स्पष्ट किया था। उनके शैक्षणिक नेतृत्व ने जर्मन भूगोल के स्वर्ण युग को आगे बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई और क्षेत्रीय अनुसंधान को प्रोत्साहित किया।

24. (A) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
पॉल विडाल डी ला ब्लाश आधुनिक फ्रांसीसी भूगोल के संस्थापक और संभववाद की विचारधारा के प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने पर्यावरणीय नियतिवाद का खंडन करते हुए तर्क दिया कि प्रकृति मनुष्य हेतु केवल संभावनाएं प्रस्तुत करती है और मनुष्य अपनी संस्कृति के अनुसार उनका चयन करता है। उन्होंने 'पेय' नामक छोटे क्षेत्रों के अध्ययन पर बल दिया ताकि मानव और पर्यावरण के संबंधों को गहराई से समझा जा सके।

25. (C) एक विशिष्ट समुदाय के भीतर स्थापित परंपराएं और जीवन जीने के तरीके।
फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता विडाल डी ला ब्लाश द्वारा प्रतिपादित 'जॉनर डी वी' या 'जीवन पद्धति' की संकल्पना एक समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहारों को दर्शाती है। यह विशिष्ट पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप विकसित होती है। यह संकल्पना बताती है कि लोग प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपनी विशिष्ट पहचान कैसे बनाते हैं। यह संभववाद का मुख्य अंग है जो मानवीय क्रियाशीलता को महत्व देता है।

26. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
विडाल डी ला ब्लाश के नेतृत्व में फ्रांसीसी भूगोल ने पर्यावरणीय नियतिवाद की आलोचना की और संभववाद का समर्थन किया। इसमें मनुष्य को एक सक्रिय शक्ति माना गया। विडालियन परंपरा का अन्य महत्वपूर्ण स्तंभ 'पेय' का अध्ययन था। 'पेय' उन छोटे क्षेत्रों को कहा जाता था जहाँ लोगों और पर्यावरण के बीच गहरा सामंजस्य स्थापित हो गया था। इन धारणाओं ने फ्रांसीसी भौगोलिक चिंतन को मानवीय स्वरूप प्रदान किया।

27. (D) पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करने वाली आवश्यक मानवीय गतिविधियों का वर्गीकरण।
जीन ब्रून्स ने मानव भूगोल को वैज्ञानिक रूप देने हेतु मानवीय गतिविधियों का व्यवस्थित वर्गीकरण प्रस्तुत किया। उन्होंने मिट्टी के उपयोग, पौधों और जानवरों पर नियंत्रण के माध्यम से किए गए परिवर्तनों को आवश्यक तथ्यों के रूप में पहचाना। उनका यह ढांचा यह समझने में सहायता करता है कि मानव अपनी आवश्यकताओं हेतु किस प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण को रूपांतरित करता है। यह वर्गीकरण मानव-पर्यावरण संबंधों का ठोस आधार है।

28. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने विषय के विकास में विविधतापूर्ण योगदान दिया। विडाल डी ला ब्लाश ने संभववाद की नींव रखी, जबकि जीन ब्रून्स ने मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया का विश्लेषण किया। इमैनुएल डी मार्टोन ने भौतिक भूगोल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया और मानक ग्रंथ लिखे। अल्बर्ट डिमांजिया ने अपने अनुसंधान में ग्रामीण अधिवास और परिवहन प्रणालियों पर विशेष ध्यान दिया। इन विद्वानों ने फ्रांसीसी भूगोल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

29. (C) एक विशिष्ट पहचान और सजातीयता वाला एक छोटा, प्राकृतिक क्षेत्र।
विडालियन विचारधारा में 'पेय' की संकल्पना का उपयोग लघु क्षेत्रीय इकाई को परिभाषित करने हेतु होता है जिसकी विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान होती है। यह क्षेत्र भू-वैज्ञानिक संरचना और जलवायु के मामले में सजातीय होता है। 'पेय' का अध्ययन भूगोलवेत्ताओं को सूक्ष्म स्तर पर मानव और प्रकृति के बीच के संतुलन को समझने में सहायता करता है। यह संकल्पना आधुनिक क्षेत्रीय नियोजन हेतु अत्यंत प्रासंगिक है।

30. (D) स्थानिक संगठन के सार्वभौमिक नियमों की खोज।
विडाल डी ला ब्लाश द्वारा स्थापित फ्रांसीसी भूगोल क्षेत्रीय विशिष्टताओं और संभववाद के दर्शन पर केंद्रित था। वे 'पेय' जैसे छोटे क्षेत्रों के अध्ययन में रुचि रखते थे। इसके विपरीत, 'स्थानिक संगठन के सार्वभौमिक नियमों की खोज' मात्रात्मक भूगोल और प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण की विशेषता है, जो बाद में उभरी। फ्रांसीसी स्कूल ने अमूर्त सामान्यीकरण के स्थान पर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में क्षेत्रीय विवरण को प्राथमिकता दी थी।

31. (A) ऐतिहासिक और अंतःविषय संश्लेषण।
'एनाल्स स्कूल' एक प्रभावशाली फ्रांसीसी ऐतिहासिक विचारधारा थी जिसने भूगोल के साथ गहरा संबंध स्थापित किया। इसका प्राथमिक दृष्टिकोण ऐतिहासिक विकास को दीर्घकालिक भौगोलिक और सामाजिक संरचनाओं के संश्लेषण के रूप में देखना था। इसने भूगोलवेत्ताओं को समाज और

Downloaded from www.pdf.tube

पर्यावरण के संबंधों को व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में समझने हेतु प्रेरित किया। इस अंतःविषय दृष्टिकोण ने फ्रांसीसी भूगोल को समृद्ध बनाया और क्षेत्रीय अध्ययनों में नवीन गहराई प्रदान की।

32. (B) जॉनर डी वी
जब भूगोलवेत्ता पहाड़ी समुदायों की विशिष्ट आजीविका पद्धतियों, जैसे सीढ़ीदार खेती और ऋतु प्रवास का अध्ययन करता है, तो वह विडाल डी ला ब्लाश की 'जॉनर डी वी' संकल्पना को लागू करता है। यह संकल्पना इस बात पर बल देती है कि मानव समाज अपने भौतिक वातावरण की सीमाओं और संभावनाओं के भीतर अपनी परंपराओं का निर्माण स्वयं करता है। यह पहाड़ी क्षेत्रों में सफल मानवीय अनुकूलन को दर्शाता है।

33. (B) जर्मन स्कूल नियतिवाद की ओर झुका हुआ था, जबकि फ्रांसीसी स्कूल ने संभववाद का मार्ग प्रशस्त किया।
19वीं सदी के अंत में जर्मन और फ्रांसीसी स्कूलों के बीच वैचारिक अंतर स्पष्ट था। रैटजेल के नेतृत्व में जर्मन स्कूल ने पर्यावरणीय नियतिवाद का समर्थन किया, जिसमें प्रकृति मानव सभ्यता की दिशा निर्धारित करती है। इसके विपरीत, फ्रांसीसी स्कूल ने संभववाद को बढ़ावा दिया, जिसके अनुसार प्रकृति विकल्प प्रदान करती है और मनुष्य अपनी इच्छाशक्ति से उनका उपयोग करता है। यह द्वैतवाद आधुनिक भौगोलिक चिंतन की प्रमुख विशेषता है।

34. (A) इमैनुएल डी मार्टोन
'ट्रेते डी जियोग्राफिक फिजिक' नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता इमैनुएल डी मार्टोन ने की थी। यह पुस्तक भौतिक भूगोल के क्षेत्र में मानक संदर्भ ग्रंथ बन गई, जिसमें भू-आकृति विज्ञान और जलवायु विज्ञान का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। डी मार्टोन के कार्य ने पूरे विश्व में भौतिक भूगोल के अध्ययन को नई दिशा और गहराई प्रदान की। उन्होंने भौगोलिक प्रक्रियाओं के विश्लेषण में वैज्ञानिक शुद्धता को प्राथमिकता दी।

35. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
फ्रांसीसी भौगोलिक परंपरा क्षेत्रीय संश्लेषण पर अत्यधिक बल देने हेतु प्रसिद्ध है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी क्षेत्र की उस विशिष्ट पहचान को उजागर करना था जो मानव समाज और पर्यावरण के बीच निरंतर अंतःक्रिया से निर्मित हुई थी। फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं का मानना था कि किसी स्थान को केवल उसके भौतिक लक्षणों से नहीं समझा जा सकता, बल्कि वहां के लोगों के सांस्कृतिक योगदान को शामिल करना अनिवार्य है।

36. (D) हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर
हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर एक प्रमुख ब्रिटिश भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने भू-राजनीति के क्षेत्र में 'हृदयस्थल सिद्धांत' का प्रतिपादन किया। उन्होंने यूरेशिया के मध्य भाग को 'हृदयस्थल' के रूप में पहचाना और तर्क दिया कि इस क्षेत्र को नियंत्रित करने वाली शक्ति विश्व राजनीति पर प्रभुत्व स्थापित कर सकती है। उनके विचार ने समुद्री शक्ति के पारंपरिक महत्व को चुनौती दी और थल शक्ति की रणनीतिक महत्ता को रेखांकित किया था।

37. (C) जलवायु और वनस्पति पर आधारित प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्र।
ए. जे. हर्बर्टसन ने विश्व को 'प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्रों' में विभाजित करने की योजना प्रस्तुत की। उनका यह वर्गीकरण मुख्य रूप से जलवायु, वनस्पति और स्थलाकृति की समानताओं पर आधारित था। हर्बर्टसन का मानना था कि इन प्राकृतिक विशेषताओं का मानव जीवन और आर्थिक गतिविधियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उनकी इस क्षेत्रीय रूपरेखा ने भौगोलिक शिक्षा को नया ढांचा प्रदान किया, जिससे दुनिया का तुलनात्मक अध्ययन सरल हो गया।

38. (B) एल. डडली स्टैम्प
एल. डडली स्टैम्प ने 1930 के दशक में ब्रिटेन के भूमि उपयोग सर्वेक्षण का ऐतिहासिक कार्य संपन्न किया। इस परियोजना के तहत देश की भूमि के प्रत्येक खंड का मानचित्रण किया गया ताकि संसाधनों के उपयोग को समझा जा सके। स्टैम्प का यह कार्य व्यावहारिक भूगोल का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने ब्रिटेन के कृषि नियोजन और भूमि सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने भूगोल को सामाजिक कल्याण और राष्ट्रीय विकास से जोड़ा।

39. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
हैल्फोर्ड मैकिंडर का हृदयस्थल सिद्धांत भू-राजनीति का मौलिक सिद्धांत है, जिसमें उन्होंने यूरेशिया के नियंत्रण को विश्व प्रभुत्व की कुंजी माना था। उन्होंने तर्क दिया कि संसाधनों से भरपूर यह विशाल भूभाग वैश्विक राजनीति का केंद्र है। यद्यपि यह सिद्धांत पूरी तरह से शक्ति के स्थानिक वितरण और सामरिक रणनीति पर आधारित था, लेकिन यह सांस्कृतिक भूगोल पर केंद्रित नहीं था। अतः कथन I सत्य और कथन II असत्य है।

40. (A) 2, 3, 1
ब्रिटिश भूगोल के इतिहास में इन विद्वानों का क्रम विषय के विकास को दर्शाता है। हैल्फोर्ड मैकिंडर ने 1904 में 'हृदयस्थल सिद्धांत' के साथ भू-राजनीति की शुरुआत की। इसके बाद, 1905 में ए. जे. हर्बर्टसन ने प्राकृतिक क्षेत्रों की संकल्पना प्रस्तुत की। अंत में, एल. डडली स्टैम्प ने 1930 के दशक में भूमि उपयोग सर्वेक्षण के माध्यम से भूगोल के व्यावहारिक अनुप्रयोग को प्रदर्शित किया। यह क्रम भूगोल के सैद्धांतिक से व्यावहारिक विकास को दर्शाता है।

41. (C) पूर्वी यूरोप का नियंत्रण 'हृदयस्थल' पर अधिकार करने के लिए महत्वपूर्ण था।
मैकिंडर के सिद्धांत का मूल मंत्र था कि जो शक्ति पूर्वी यूरोप पर शासन करेगी, वह 'हृदयस्थल' को नियंत्रित करेगी। उनके अनुसार हृदयस्थल वह सुरक्षित क्षेत्र था जो समुद्री आक्रमण से बचा हुआ था और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध था। इस क्षेत्र पर अधिकार होने का अर्थ पूरे 'विश्व-द्वीप' पर प्रभुत्व होना था। मैकिंडर ने वैश्विक इतिहास को थल शक्ति और समुद्री शक्ति के बीच के संघर्ष के रूप में देखा था।

NODIA

42. (A) अनुभवजन्य, व्यावहारिक और क्षेत्रीय तथा साम्राज्यवादी हितों पर केंद्रित।
20वीं सदी की शुरुआत में ब्रिटिश भूगोल अनुभवजन्य और व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रेरित था। ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार की आवश्यकताओं ने भूगोलवेत्ताओं को अन्वेषण, मानचित्रण और क्षेत्रीय अध्ययन हेतु प्रोत्साहित किया। रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी जैसी संस्थाओं ने इन गतिविधियों को बढ़ावा दिया। यह भूगोल अमूर्त सिद्धांतों के बजाय धरातलीय वास्तविकताओं, संसाधनों के वितरण और सामरिक महत्व को समझने पर केंद्रित था। इस प्रकार, ब्रिटिश स्कूल ने साम्राज्य-समर्थक भूगोल विकसित किया।

43. (D) विलियम मॉरिस डेविस
विलियम मॉरिस डेविस को अमेरिकी भूगोल का जनक माना जाता है। उनका सबसे बड़ा योगदान भू-आकृति विज्ञान में 'अपरदन चक्र' का सिद्धांत है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि नदियाँ परिदृश्य को क्रमिक चरणों—युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था—के माध्यम से रूपांतरित करती हैं। उनका यह मॉडल भू-आकृतियों के विकास को समझने हेतु एक व्यवस्थित ढांचा प्रदान करता है। डेविस के विचारों ने भू-आकृति विज्ञान के अध्ययन और शिक्षण को वैश्विक स्तर पर गहराई से प्रभावित किया।

44. (B) पर्यावरणीय नियतिवाद
एलेन चर्चिल सेंपल प्रभावशाली अमेरिकी भूगोलवेत्ता थीं और वे फ्रेडरिक रैटजेल के विचारों से प्रभावित थीं। उन्होंने पर्यावरणीय नियतिवाद का समर्थन किया और तर्क दिया कि मानव व्यवहार और इतिहास भौतिक पर्यावरण द्वारा निर्धारित होते हैं। उनकी पुस्तक 'अमेरिकन हिस्ट्री एंड इट्स जियोग्राफिक कंडीशंस' ने भौगोलिक स्थिति के महत्व को समझाया। वे मानती थीं कि मनुष्य पृथ्वी की सतह की उपज है और प्रकृति ही उसकी नियति तय करती है।

45. (A) केवल I और II
विलियम मॉरिस डेविस ने भू-आकृति विज्ञान में अपरदन चक्र का विकासवादी मॉडल प्रस्तुत किया। कार्ल सॉयर ने पर्यावरणीय नियतिवाद की आलोचना की और 'सांस्कृतिक परिदृश्य' के अध्ययन को केंद्र में रखा। रिचर्ड हार्टशॉर्न का तर्क था कि भूगोल एक 'इडियोग्राफिक' विज्ञान है जो क्षेत्रों के विशिष्ट चरित्र के वर्णन पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि केवल सार्वभौमिक नियमों की खोज पर। अतः प्रथम दो कथन सही हैं जबकि तीसरा कथन अधूरा है।

46. (D) एलेन चर्चिल सेंपल
"मनुष्य पृथ्वी की सतह की उपज है" यह प्रसिद्ध पंक्ति एलेन चर्चिल सेंपल की पुस्तक की प्रारंभिक पंक्तियों में से एक है। सेंपल ने इस विचार के माध्यम से पर्यावरणीय नियतिवाद के चरम रूप को प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि जलवायु और धरातलीय परिस्थितियां न केवल मानव की शारीरिक विशेषताओं को प्रभावित करती हैं, बल्कि उसके विचारों और संस्कृति को भी पूरी तरह नियंत्रित करती हैं। यह वाक्य नियतिवादी चिंतन का प्रतीक है।

47. (A) 'प्राकृतिक परिदृश्य' का 'सांस्कृतिक परिदृश्य' में परिवर्तन।
कार्ल ओ. सॉयर ने भूगोल को नए दृष्टिकोण से परिभाषित किया। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य कार्य यह अध्ययन करना है कि कैसे एक 'सांस्कृतिक समूह' पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करके 'प्राकृतिक परिदृश्य' को 'सांस्कृतिक परिदृश्य' में परिवर्तित करता है। इस प्रक्रिया में संस्कृति वह कारक है जो प्राकृतिक माध्यम पर अपना प्रभाव डालती है। सॉयर के कार्य ने नियतिवाद को चुनौती दी और सांस्कृतिक भूगोल में मानवीय क्रियाशीलता को स्थापित किया।

48. (B) पृथ्वी की सतह के परिवर्तनशील चरित्र का एक व्यवस्थित और तर्कसंगत विवरण।
रिचर्ड हार्टशॉर्न ने अपनी प्रसिद्ध कृति में भूगोल को 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' के विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि भूगोल का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की सतह के विभिन्न हिस्सों के बीच मौजूद विविधताओं का तर्कसंगत और व्यवस्थित वर्णन करना है। उन्होंने विषय को एक ऐसी विवरणी माना जो विभिन्न तत्वों के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करती है। हार्टशॉर्न के विचारों ने भौगोलिक अनुसंधान हेतु एक मजबूत दार्शनिक आधार प्रदान किया।

49. (B) रिचर्ड हार्टशॉर्न
'क्षेत्रीय विभेदीकरण' की संकल्पना रिचर्ड हार्टशॉर्न के भौगोलिक चिंतन का मूल केंद्र है। इसके अनुसार, पृथ्वी की सतह एक समान नहीं है और भूगोल का मुख्य कार्य यह समझना है कि एक स्थान दूसरे स्थान से क्यों भिन्न है। हार्टशॉर्न ने तर्क दिया कि भूगोलवेत्ता को उन तत्वों के जटिल संयोगों का अध्ययन करना चाहिए जो किसी विशेष क्षेत्र को उसकी विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। यह विचार क्षेत्रीय भूगोल की नींव है।

50. (A) जलवायु नियतिवाद, जलवायु को सभ्यताओं के उदय और पतन से जोड़ना।
एल्सवर्थ हंटिंगटन अमेरिकी भूगोलवेत्ता थे जो अपने जलवायु नियतिवाद के सिद्धांतों हेतु जाने जाते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि मानव ऊर्जा और सभ्यताओं का विकास जलवायु परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होता है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सिविलाइजेशन एंड क्लाइमेट' में उन्होंने दावा किया कि अनुकूल जलवायु वाले क्षेत्र ही उच्च सभ्यताओं को जन्म दे सकते हैं। यद्यपि उनके विचार विवादास्पद रहे, लेकिन उन्होंने मानव-पर्यावरण संबंधों पर होने वाली चर्चाओं को प्रभावित किया।

51. (C) कार्ल ओ. सॉयर और सांस्कृतिक-ऐतिहासिक भूगोल।
भूगोल के बर्कले स्कूल की पहचान कार्ल ओ. सॉयर के क्रांतिकारी कार्यों से होती है। इस स्कूल ने पर्यावरणीय नियतिवाद को नकारते हुए सांस्कृतिक-ऐतिहासिक भूगोल को बढ़ावा दिया। सॉयर ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे विभिन्न संस्कृतियाँ समय के साथ अपने प्राकृतिक वातावरण को बदलती हैं और अद्वितीय सांस्कृतिक परिदृश्यों का निर्माण करती हैं। इस दृष्टिकोण ने अमेरिकी भूगोल में मानवीय रचनात्मकता को अध्ययन के केंद्र में स्थापित किया।

Click Here to Buy book on Amazon

52. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
यशायाह बोमन प्रसिद्ध अमेरिकी भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने अनुप्रयुक्त भूगोल के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। वे अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के सलाहकार थे और उन्होंने पेरिस शांति सम्मेलन में सीमाओं के पुनर्निर्धारण में सक्रिय भूमिका निभाई थी। उनका कार्य केवल अमूर्त सिद्धांतों तक सीमित नहीं था, बल्कि वे वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में भूगोल की उपयोगिता पर विश्वास करते थे। अतः कथन I सही और कथन II गलत है।

53. (C) क्या भूगोल को प्राकृतिक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए या मानवीय गतिविधियों पर।
भौतिक और मानव भूगोल के बीच द्वैतवाद इस बहस को संदर्भित करता है कि भूगोल का अध्ययन क्षेत्र क्या होना चाहिए। एक ओर भौतिक भूगोल है जो पृथ्वी की प्राकृतिक प्रक्रियाओं, जैसे भू-आकृति और जलवायु का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। दूसरी ओर मानव भूगोल है जो मानवीय बस्तियों और संस्कृति के स्थानिक वितरण पर ध्यान केंद्रित करता है। यह द्वैतवाद इस प्रश्न को जन्म देता है कि क्या ये दो अलग विषय हैं।

54. (B) घटनाओं के सामान्य नियमों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए या अद्वितीय क्षेत्रीय संयोजनों पर।
व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल का द्वैतवाद विषय के अध्ययन की कार्यप्रणाली से संबंधित है। व्यवस्थित भूगोल एक विशेष भौगोलिक घटना का वैश्विक स्तर पर अध्ययन करता है ताकि सामान्य सिद्धांतों को खोजा जा सके। इसके विपरीत, क्षेत्रीय भूगोल पृथ्वी की सतह को विशिष्ट इकाइयों में विभाजित करता है और प्रत्येक क्षेत्र के अनूठे मेल का अध्ययन करता है। यह बहस भूगोल को 'नोमोथेटिक' या 'इडियोग्राफिक' विज्ञान बनाने के बीच है।

55. (C) P-4, Q-3, R-2, S-1
भौगोलिक द्वैतवाद विषय की प्रकृति को समझने हेतु महत्वपूर्ण हैं। व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय भूगोल यह तय करता है कि अध्ययन वैश्विक हो या विशिष्ट स्थानों पर। भौतिक बनाम मानव भूगोल प्राकृतिक और मानवीय तत्वों के विभाजन को दर्शाता है। नियतिवाद और संभववाद मानव-पर्यावरण संबंधों में प्रभुत्व के प्रश्न पर विचार करते हैं। इडियोग्राफिक बनाम नोमोथेटिक द्वैतवाद अद्वितीय क्षेत्रों के विवरण या सार्वभौमिक नियमों की स्थापना पर केंद्रित होता है।

56. (A) भौतिक और मानव भूगोल।
भूगोल को 'विज्ञानों की जननी' कहना इस बात पर बल देता है कि यह विषय प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों को जोड़ने वाली कड़ी है। यह दृष्टिकोण भौतिक और मानव भूगोल के बीच के द्वैतवाद को समाप्त करने का प्रयास करता है। भूगोलवेत्ताओं का तर्क है कि पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों को एक-दूसरे से अलग करके नहीं समझा जा सकता। एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाकर ही भौगोलिक समस्याओं का समाधान संभव है।

57. (C) व्यवस्थित
जब कोई भूगोलवेत्ता उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के वैश्विक वितरण और उनके प्रतिरूपों का अध्ययन करता है, तो वह व्यवस्थित भूगोल का अनुसरण करता है। इस दृष्टिकोण में एक विशिष्ट भौगोलिक तत्व को चुना जाता है और पूरी पृथ्वी की सतह पर उसका विश्लेषण किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उस विशेष घटना के पीछे छिपे सामान्य नियमों और वैज्ञानिक सिद्धांतों को खोजना होता है। यह अध्ययन व्यापक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य को अपनाता है।

58. (A) क्षेत्रीय
'दक्कन के पठार का अद्वितीय भौगोलिक व्यक्तित्व' जैसे विषय पर लिखना क्षेत्रीय भूगोल का उदाहरण है। इस प्रकार के अध्ययन में एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र को चुना जाता है और वहां मौजूद भौतिक लक्षणों तथा मानवीय गतिविधियों के समन्वय का गहराई से विश्लेषण किया जाता है। इसका उद्देश्य उस क्षेत्र की विशिष्टता को प्रस्तुत करना है जो उसे अन्य क्षेत्रों से अलग बनाती है। यह भूगोल के इडियोग्राफिक स्वरूप को दर्शाता है।

59. (D) अल्फ्रेड हेटनर
अल्फ्रेड हेटनर को भूगोल के क्षेत्रीय दृष्टिकोण या कोरोलॉजी का सशक्त समर्थक माना जाता है। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल एक ऐसा विज्ञान है जो पृथ्वी की सतह पर क्षेत्रों के बीच मौजूद विविधताओं का अध्ययन करता है। उनके अनुसार, भूगोलवेत्ता का मुख्य कार्य यह विश्लेषण करना है कि किसी स्थान पर विभिन्न तत्व आपस में मिलकर कैसे एक विशिष्ट क्षेत्रीय इकाई का निर्माण करते हैं। इसी विचार ने बाद में क्षेत्रीय विभेदीकरण को आधार प्रदान किया।

60. (B) नोमोथेटिक और इडियोग्राफिक
व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच की बहस दर्शन की दो धाराओं—नोमोथेटिक और इडियोग्राफिक—से जुड़ी है। नोमोथेटिक दृष्टिकोण सार्वभौमिक नियमों और सामान्य सिद्धांतों की खोज पर बल देता है, जो व्यवस्थित भूगोल का आधार है। वहीं इडियोग्राफिक दृष्टिकोण अद्वितीय तथ्यों और विशिष्ट क्षेत्रों के गहन विवरण पर केंद्रित होता है, जो क्षेत्रीय भूगोल की विशेषता है। भूगोल के इतिहास में यह तनाव निरंतर बना रहा है कि विषय को नियम बनाने वाला विज्ञान होना चाहिए या वर्णनात्मक।

61. (C) गुणात्मक बनाम मात्रात्मक भूगोल
भूगोल के विकास में भौतिक बनाम मानव, व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय, और नियतिवाद बनाम संभववाद को विषय के सबसे मौलिक और पारंपरिक द्वैतवाद माना जाता है। ये द्वैतवाद विषय की विषय-वस्तु, कार्यप्रणाली और दर्शन से संबंधित हैं। यद्यपि गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों के बीच बहस महत्वपूर्ण रही है, लेकिन इसे आमतौर पर विषय की मूल संरचना को परिभाषित करने वाले शास्त्रीय द्वैतवादों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

62. (D) भौतिक बनाम मानव
यह विचार कि भौगोलिक अध्ययन का मुख्य विषय मानव-पर्यावरण प्रणाली है, वास्तव में भौतिक और मानव भूगोल के बीच के द्वैतवाद को पाटने का प्रयास है। यह परिप्रेक्ष्य मानता है कि न तो केवल भौतिक वातावरण का अध्ययन पूर्ण है और न ही केवल मानवीय क्रियाओं का। पृथ्वी की सतह पर ये दोनों तत्व एक अविभाज्य इकाई के रूप में मौजूद हैं। इस एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाने से भूगोल एक समग्र विज्ञान बन जाता है।

63. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
रिचर्ड हार्टशॉर्न ने क्षेत्रीय विभेदीकरण को भूगोल का मूल कार्य माना, क्योंकि उनका मानना था कि प्रत्येक स्थान का अपना अनूठा चरित्र होता है। उन्होंने तर्क दिया कि इन विशिष्टताओं को केवल सामान्य वैज्ञानिक नियमों के माध्यम से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। इसलिए, उन्होंने इडियोग्राफिक या विवरण प्रधान दृष्टिकोण का पक्ष लिया। उनके अनुसार, भूगोल का मुख्य गौरव पृथ्वी की सतह की विविधता का तर्कसंगत विवरण प्रस्तुत करने में निहित है।

64. (B) भौतिक पर्यावरण संस्कृति को आकार देने वाली प्रमुख शक्ति है।
पर्यावरणीय नियतिवाद का दार्शनिक रुख यह मानता है कि पृथ्वी का भौतिक वातावरण, जैसे जलवायु और स्थलाकृति, मानव समाज के विकास को निर्धारित करने वाले प्राथमिक कारक हैं। इस विचारधारा के अनुसार, मनुष्य एक निष्क्रिय कारक है जो प्रकृति के नियमों और सीमाओं के अनुसार अपना जीवन जीने हेतु बाध्य है। रैटजेल और सेंपल तक, इस विचार ने लंबे समय तक भूगोल को प्रभावित किया, जिसमें मानवीय भाग्य को भौगोलिक स्थितियों का परिणाम माना गया।

65. (B) पर्यावरण सीमाएँ निर्धारित करता है, लेकिन संस्कृति मानवीय विकल्पों द्वारा निर्धारित होती है।
संभववाद का दर्शन पर्यावरणीय नियतिवाद की प्रतिक्रिया में विकसित हुआ, जो मानता है कि मनुष्य प्रकृति का दास नहीं बल्कि स्वामी है। इस विचार के अनुसार, भौतिक वातावरण मनुष्य को संभावनाओं की एक श्रृंखला प्रदान करता है, जिनमें से वह अपनी तकनीकी क्षमता के आधार पर चुनाव करता है। यद्यपि प्रकृति कुछ सीमाएँ लगाती है, लेकिन उन सीमाओं के भीतर मनुष्य अपनी रचनात्मकता से परिदृश्य को बदलने में सक्षम है। यह मानवीय स्वायत्तता को महत्व देता है।

66. (A) विडाल डी ला ब्लाश के अधीन फ्रांसीसी स्कूल।
संभववाद के दर्शन का सबसे सशक्त विकास पॉल विडाल डी ला ब्लाश के नेतृत्व में फ्रांसीसी भूगोल स्कूल में हुआ। विडाल ने तर्क दिया कि प्रकृति कभी भी एक सलाहकार से अधिक नहीं होती। उन्होंने यह दिखाने हेतु सूक्ष्म क्षेत्रीय अध्ययन किए कि कैसे एक ही पर्यावरण में अलग-अलग संस्कृतियाँ अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अलग जीवन पद्धतियां विकसित करती हैं। फ्रांसीसी स्कूल के इस दृष्टिकोण ने मानव भूगोल को एक मानवीय पहचान प्रदान की थी।

67. (C) एल्सवर्थ हंटिंगटन
एल्सवर्थ हंटिंगटन को 20वीं सदी में पर्यावरणीय नियतिवाद के कट्टर समर्थकों में से एक माना जाता है। उन्होंने विशेष रूप से 'जलवायु नियतिवाद' पर बल दिया और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मानवीय प्रगति और सभ्यताओं का वैभव सीधे तौर पर अनुकूल जलवायु स्थितियों से जुड़ा हुआ है। उनके अनुसार, ठंडी जलवायु वाले क्षेत्रों के लोग स्वाभाविक रूप से अधिक विकसित होते हैं। यद्यपि उनके सिद्धांतों की आलोचना हुई, लेकिन उन्होंने नियतिवादी विचारधारा को नया वैज्ञानिक स्वरूप दिया।

68. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
लुसिएन फेब्रे पर्यावरणीय नियतिवाद के विरोधी और संभववाद के समर्थक थे। उन्होंने तर्क दिया कि भौतिक वातावरण मनुष्य के ऊपर कोई अनिवार्य नियंत्रण नहीं रखता। उनका प्रसिद्ध कथन, "कहीं भी अनिवार्यताएं नहीं हैं, बल्कि हर जगह संभावनाएं हैं," संभववाद के मूल मंत्र को व्यक्त करता है। फेब्रे का मानना था कि मनुष्य अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग करके प्रकृति द्वारा दी गई संभावनाओं का स्वामी बन जाता है और अपनी नियति स्वयं लिखता है।

69. (C) मनुष्य प्रगति की गति को नियंत्रित करते हैं, लेकिन प्रकृति ने प्रारंभिक दिशा निर्धारित की है।
ग्रिफिथ टेलर ने नियतिवाद और संभववाद के बीच विवाद सुलझाने हेतु 'नव-नियतिवाद' या 'रुको-और-जाओ नियतिवाद' का प्रस्ताव दिया। उन्होंने ट्रैफिक पुलिसकर्मी का उदाहरण दिया जो यातायात की दिशा नहीं बदल सकता, लेकिन उसकी गति को नियंत्रित कर सकता है। इसी तरह, प्रकृति मनुष्य हेतु विकास की सीमाएँ निर्धारित करती है, लेकिन उन सीमाओं के भीतर मनुष्य किस गति से प्रगति करेगा, यह उसकी अपनी क्षमता पर निर्भर करता है। यह एक मध्यम मार्ग है।

70. (B) संभववाद
यह कथन कि "पर्यावरण मनुष्य के बिना एक शून्य है" संभववादी परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है। यह विचार बल देता है कि प्राकृतिक तत्वों का अपना कोई स्वतंत्र मूल्य नहीं होता जब तक कि मनुष्य उन्हें संसाधनों में परिवर्तित न कर दे। संभववाद के अनुसार, पर्यावरण केवल एक मंच है जिस पर मानव अपनी सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का नाटक प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण मानवीय चेतना और क्रियाशीलता को भौगोलिक अध्ययन के केंद्र में स्थापित करता है।

71. (D) अत्यधिक सरल, नृजाति-केंद्रित होना और संस्कृति तथा प्रौद्योगिकी की उपेक्षा करना।
पर्यावरणीय नियतिवाद की आलोचना इसकी उस प्रवृत्ति पर केंद्रित है जहाँ यह मानवीय संस्कृति और तकनीक की भूमिका को नजरअंदाज कर देता है। आलोचकों का तर्क है कि यह विचारधारा अत्यधिक सरल है और जटिल मानवीय संबंधों को केवल भौगोलिक कारकों का परिणाम मान लेती है। साथ ही, नियतिवादी लेखन में अक्सर नृजाति-केंद्रित पूर्वाग्रह देखे गए, जहाँ पश्चिमी सभ्यताओं की श्रेष्ठता को जलवायु के आधार पर उचित ठहराने का प्रयास किया गया था।

NODIA

72. (A) पर्यावरणीय नियतिवाद
यह तर्क कि ब्रिटेन की समुद्री सफलता उसकी द्वीप स्थिति का अनिवार्य परिणाम थी, पर्यावरणीय नियतिवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दृष्टिकोण मानता है कि भौगोलिक स्थिति ही किसी राष्ट्र के भाग्य और ऐतिहासिक उपलब्धियों का एकमात्र कारण है। यह मानवीय निर्णयों और साहसी अन्वेषणों जैसे कारकों की उपेक्षा करता है। नियतिवाद के अनुसार, ब्रिटेन के लोगों के पास समुद्री शक्ति बनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था क्योंकि वातावरण ने उन्हें इसी दिशा में कार्य हेतु बाध्य किया था।

73. (D) I, II, और III
नियतिवाद और संभववाद के बीच की बहस भूगोल के सबसे पुराने विवादों में से एक है। नियतिवाद प्रकृति को एक सक्रिय शक्ति मानता है जो समाज को आकार देती है, जबकि संभववाद मानवीय विकल्पों के महत्व पर बल देता है। ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रस्तुत नव-नियतिवाद इन दोनों के बीच मध्यम मार्ग की तलाश करता है, जहाँ प्रकृति को एक मार्गदर्शक माना गया है। ये तीनों संकल्पनाएं मानव-पर्यावरण संबंधों की जटिलता को समझने के विभिन्न आयाम प्रस्तुत करती हैं।

74. (A) थॉमस कुहन
विज्ञान के दर्शन में थॉमस कुहन ने प्रतिमान विस्थापन की संकल्पना को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द स्ट्रक्चर ऑफ साइंटिफिक रिवोल्यूशन' के माध्यम से प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार विज्ञान का विकास क्रमिक न होकर क्रांतिकारी परिवर्तनों के माध्यम से होता है। जब प्रचलित प्रतिमान समस्याओं का समाधान करने में विफल होता है, तब संकट की स्थिति उत्पन्न होती है और एक नया प्रतिमान उभरता है जो विषय की दिशा बदल देता है। कुहन के इस विचार ने भूगोल में अनुसंधान को प्रभावित किया है।

75. (D) इडियोग्राफिक क्षेत्रीय विवरण से नोमोथेटिक स्थानिक विज्ञान की ओर।
1950 के दशक की मात्रात्मक क्रांति ने भूगोल में क्रांतिकारी प्रतिमान विस्थापन को जन्म दिया। यह बदलाव पारंपरिक क्षेत्रीय भूगोल से हटकर एक वैज्ञानिक 'स्थानिक विज्ञान' की ओर था। इस नए प्रतिमान का लक्ष्य भौगोलिक घटनाओं के पीछे छिपे सार्वभौमिक नियमों को खोजना था। इसने भूगोल को एक वर्णनात्मक कला के बजाय विश्लेषणात्मक विषय के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया, जहाँ स्थानिक संगठन और प्रतिरूपों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सके।

76. (B) क्षेत्रीय भूगोल (क्षेत्रीय विभेदीकरण)
मात्रात्मक क्रांति के आगमन से पहले, भूगोल में 'क्षेत्रीय भूगोल' का प्रतिमान सबसे प्रभावशाली था। रिचर्ड हार्टशॉर्न जैसे विद्वानों के नेतृत्व में, इस प्रतिमान ने माना कि भूगोल का मुख्य कार्य पृथ्वी की सतह पर क्षेत्रों की अद्वितीय विशेषताओं का वर्णन करना है। उस समय भूगोलवेत्ता मुख्य रूप से गुणात्मक डेटा पर निर्भर थे। यद्यपि 1950 के दशक में इस वर्णनात्मक दृष्टिकोण की आलोचना बढ़ गई, जिससे सांख्यिकीय विधियों और नियम-आधारित स्थानिक विश्लेषण की नई लहर को बल मिला था।

77. (C) सांख्यिकीय विधियों और गणितीय मॉडलों का उपयोग।
मात्रात्मक क्रांति द्वारा पेश किए गए प्रतिमान की मुख्य विशेषता भूगोल में कठोर सांख्यिकीय तकनीकों और गणितीय मॉडलों का समावेश था। इसका उद्देश्य भूगोल को अधिक 'वैज्ञानिक' और 'वस्तुनिष्ठ' बनाना था। शोधकर्ताओं ने स्थानिक अंतःक्रियाओं और शहरी पदानुक्रम को समझने हेतु कंप्यूटर और जटिल गणनाओं का उपयोग शुरू किया। इसने व्यक्तिपरक विवरणों के स्थान पर सत्यापन योग्य डेटा को प्राथमिकता दी, जिससे भूगोल एक ऐसा विषय बन गया जो भविष्य की स्थानिक प्रवृत्तियों की भविष्यवाणी कर सके।

78. (D) फ्रेड के. शेफर द्वारा अपने पत्र 'एक्सेप्शनलिज्म इन ज्योग्राफी' में।
फ्रेड के. शेफर ने अपने प्रसिद्ध लेख के माध्यम से हार्टशॉर्न के क्षेत्रीय विवरण प्रधान दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना की थी। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल को केवल विशिष्ट क्षेत्रों के वर्णन तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे अन्य विज्ञानों की तरह सामान्य नियमों की खोज करनी चाहिए। इस वैचारिक आक्रमण ने भूगोल में मात्रात्मक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। शेफर के इस हस्तक्षेप ने भूगोल में 'नोमोथेटिक' दृष्टिकोण की आवश्यकता को मजबूती से स्थापित किया था।

79. (A) शेफर एक नियम-खोजने वाले, वैज्ञानिक भूगोल की वकालत कर रहे थे जबकि हार्टशॉर्न एक विवरणात्मक, इडियोग्राफिक क्षेत्रीय भूगोल का बचाव कर रहे थे।
शेफर-हार्टशॉर्न बहस भौगोलिक चिंतन के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ थी। हार्टशॉर्न का मानना था कि भूगोल एक 'अपवादवादी' विषय है जो केवल अद्वितीय स्थानों का अध्ययन करता है। इसके विपरीत, शेफर ने तर्क दिया कि भूगोल को एक नियम-खोजने वाला 'स्थानिक विज्ञान' बनना चाहिए। इस बहस ने मात्रात्मक क्रांति की नींव रखी और भूगोल को वर्णनात्मक क्षेत्रीय अध्ययन से हटाकर सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक मॉडलों की ओर धकेल दिया था।

80. (B) सार्वभौमिक स्थानिक नियम और सिद्धांत।
प्रत्यक्षवादी या मात्रात्मक प्रतिमान के दौरान, भूगोलवेत्ताओं का प्राथमिक लक्ष्य स्थानिक व्यवस्थाओं को नियंत्रित करने वाले सार्वभौमिक नियमों की खोज करना था। उन्होंने माना कि मानवीय गतिविधियाँ यादृच्छिक नहीं हैं, बल्कि वे निश्चित नियमों का पालन करती हैं जिन्हें गणितीय रूप से व्यक्त किया जा सकता है। इस काल में केंद्रीय स्थान सिद्धांत और गुरुत्वाकर्षण मॉडल जैसे सिद्धांतों ने लोकप्रियता हासिल की। लक्ष्य ऐसा विज्ञान विकसित करना था जो स्थानिक प्रतिरूपों की व्याख्या कर सके और सटीक भविष्यवाणी कर सके।

81. (B) व्यवहारवादी और मानवतावादी भूगोल
मात्रात्मक क्रांति के दौरान भूगोल अत्यंत सांख्यिकीय और अमानवीय हो गया था, जहाँ मनुष्यों को केवल 'तर्कसंगत आर्थिक इकाई' माना गया। इस दृष्टिकोण के विरुद्ध 1970

Click Here to Buy book on Amazon

के दशक में व्यवहारवादी और मानवतावादी भूगोल का उदय हुआ। इन नवीन दृष्टिकोणों ने तर्क दिया कि मानवीय भावनाओं और मूल्यों को केवल गणितीय सूत्रों से नहीं समझा जा सकता। व्यवहारवाद ने व्यक्तिगत निर्णय प्रक्रिया पर ध्यान दिया, जबकि मानवतावाद ने व्यक्तिपरक अनुभवों और मानवीय चेतना के महत्व को पुन: स्थापित करने का प्रयास किया।

82. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भूगोल के विभिन्न परिप्रेक्ष्य विषय को समझने के अलग-अलग तरीके प्रदान करते हैं। प्रत्यक्षवाद जहाँ वैज्ञानिक पद्धति और वस्तुनिष्ठ स्थानिक नियमों पर बल देता है, वहीं व्यवहारवाद व्यक्तिगत धारणाओं के माध्यम से निर्णय प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। मानवतावाद का केंद्र मानवीय चेतना और व्यक्तिपरक अनुभव है। उत्तर-आधुनिकतावाद स्थापित भव्य सिद्धांतों को चुनौती देता है और शक्ति संबंधों के विखंडन पर ध्यान केंद्रित करता है। ये सभी मिलकर भूगोल को बहुआयामी विषय बनाते हैं।

83. (C) तार्किक प्रत्यक्षवाद
भूगोल में मात्रात्मक क्रांति का दार्शनिक आधार 'तार्किक प्रत्यक्षवाद' था। यह विचारधारा केवल उन्हीं तथ्यों को सत्य मानती है जिन्हें अनुभवजन्य रूप से सत्यापित किया जा सके और जिन्हें वैज्ञानिक विधियों द्वारा मापा जा सके। तार्किक प्रत्यक्षवाद ने भूगोलवेत्ताओं को व्यक्तिपरक व्याख्याओं को त्यागने और केवल वस्तुनिष्ठ डेटा पर ध्यान केंद्रित करने हेतु प्रेरित किया। इसका उद्देश्य भूगोल को कठोर विज्ञान के रूप में स्थापित करना था, जहाँ गणितीय शुद्धता के माध्यम से स्थानिक वास्तविकता का निरूपण हो सके।

84. (D) सत्यापन योग्यता, वस्तुनिष्ठता और सार्वभौमिक नियमों की खोज।
भूगोल में प्रत्यक्षवाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जो वैज्ञानिक पद्धति की सर्वोच्चता में विश्वास करता है। यह सत्यापन योग्य डेटा, निष्पक्ष वस्तुनिष्ठता और प्राकृतिक विज्ञानों की तरह सार्वभौमिक नियमों की खोज पर बल देता है। प्रत्यक्षवादी भूगोलवेत्ता मानते हैं कि स्थानिक घटनाओं को गणितीय सूत्रों और मॉडलों में बांधा जा सकता है। इसमें व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के लिए कोई स्थान नहीं होता। इसका मुख्य उद्देश्य विश्वसनीय और सभी भौगोलिक स्थितियों में समान रूप से लागू होने वाला ज्ञान तंत्र विकसित करना है।

85. (C) इसने सहभागी अवलोकन जैसी गुणात्मक विधियों को प्राथमिकता दी।
प्रत्यक्षवादी प्रतिमान के संबंध में यह कथन असत्य है कि उसने गुणात्मक विधियों को प्राथमिकता दी। इसके विपरीत, प्रत्यक्षवाद ने सांख्यिकीय विश्लेषण और गणितीय मॉडलिंग को ही ज्ञान का एकमात्र वैध स्रोत माना। सहभागी अवलोकन जैसी गुणात्मक तकनीकें प्रत्यक्षवाद के ढांचे के अनुकूल नहीं थीं, क्योंकि उनमें व्यक्तिपरकता का जोखिम रहता था। प्रत्यक्षवाद ने भूगोल को एक 'नोमोथेटिक' विज्ञान बनाने पर बल दिया और अंतरिक्ष को ऐसी ज्यामितीय वास्तविकता माना जिसका गणितीय विश्लेषण हो सके।

86. (B) पर्यावरण के प्रति व्यक्ति की व्यक्तिपरक धारणा और निर्णय लेने की प्रक्रियाएं।
व्यवहारवादी भूगोल मात्रात्मक क्रांति की इस मान्यता को चुनौती देता है कि मनुष्य हमेशा पूरी तरह से तर्कसंगत कार्य करता है। इसके बजाय, यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे अलग-अलग व्यक्ति पर्यावरण को देखते और समझते हैं। यह परिप्रेक्ष्य मानता है कि हमारी क्रियाएं वास्तविक दुनिया के बजाय उस दुनिया की हमारी 'धारणा' पर आधारित होती हैं। इसलिए, व्यक्तिगत निर्णय लेने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं और पर्यावरणीय संज्ञान व्यवहारवादी भूगोल के अध्ययन के मुख्य विषय बन जाते हैं।

87. (D) व्यवहारवाद
'मानसिक मानचित्र' की संकल्पना व्यवहारवादी भूगोल का अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है। यह उन आंतरिक छवियों को संदर्भित करता है जो व्यक्ति अपने भौगोलिक वातावरण के बारे में अपने मस्तिष्क में बनाता है। ये मानचित्र अक्सर वास्तविक भौतिक मानचित्रों से भिन्न होते हैं और व्यक्ति के अनुभवों को दर्शाते हैं। व्यवहारवादी भूगोलवेत्ता इन मानसिक मानचित्रों का विश्लेषण करके यह समझने का प्रयास करते हैं कि लोग स्थानिक चुनाव किस आधार पर लेते हैं।

88. (A) विलियम किर्क
विलियम किर्क व्यवहारवादी भूगोल के विकास में अग्रणी विद्वान माने जाते हैं। उन्होंने 1950 के दशक में विचार प्रस्तुत किया कि भूगोलवेत्ताओं को केवल भौतिक वातावरण का अध्ययन नहीं करना चाहिए, बल्कि उस 'व्यवहारवादी पर्यावरण' पर भी ध्यान देना चाहिए जो मानवीय निर्णयों को प्रभावित करता है। उनके कार्यों ने स्पष्ट किया कि मनुष्य अपनी धारणाओं के आधार पर प्रतिक्रिया करता है। किर्क के इन विचारों ने बाद में व्यवहारवादी क्रांति हेतु मजबूत सैद्धांतिक आधार तैयार किया था।

89. (C) मानवीय अनुभव और स्थान को दिए गए अर्थ को समझना।
मानवतावादी भूगोल का प्राथमिक उद्देश्य मनुष्यों के उन संबंधों को समझना है जो वे स्थानों के साथ विकसित करते हैं। यह दृष्टिकोण 'अंतरिक्ष' को केवल ज्यामितीय दूरी के रूप में नहीं, बल्कि 'स्थान' के रूप में देखता है जो मानवीय अनुभवों और भावनाओं से समृद्ध होता है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता यह जानने का प्रयास करते हैं कि लोग अपने घर या देश को क्या अर्थ देते हैं। यह प्रत्यक्षवाद के यांत्रिक मॉडल के विरुद्ध एक मानवीय प्रतिक्रिया है।

90. (A) यी-फू तुआन (मानवतावाद)
'टोपोफिलिया' और 'टोपोफोबिया' की संकल्पनाएं प्रसिद्ध मानवतावादी भूगोलवेत्ता यी-फू तुआन द्वारा प्रस्तुत की गई थीं। 'टोपोफिलिया' का अर्थ है किसी स्थान के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव, जबकि 'टोपोफोबिया' उस स्थान के प्रति भय या अरुचि को दर्शाता है। तुआन ने समझाया कि कैसे मानवीय भावनाएं किसी भौतिक स्थान को अर्थपूर्ण 'स्थान' में बदल देती हैं। उनके इन विचारों ने भूगोल में व्यक्तिपरक अनुभवों के अध्ययन को नई पहचान प्रदान की थी।

NODIA

91. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मानवतावादी भूगोल घटनावाद और अस्तित्ववाद जैसे दार्शनिक आधारों पर खड़ा है, जो प्रत्यक्षवाद की कठोरता को नकारते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि दुनिया की कोई एक वस्तुनिष्ठ वास्तविकता नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति उसे अपने अनुभवों के माध्यम से अलग तरह से देखता है। इसलिए, मानवतावादी भूगोलवेत्ता वैज्ञानिक सूत्रों के बजाय गुणात्मक पद्धतियों का उपयोग करते हैं ताकि वे लोगों के 'जीवंत अनुभव' को गहराई से समझ सकें। यह मानव को अध्ययन के केंद्र में स्थापित करता है।

92. (B) खानाबदोश और गतिहीन लोगों के बीच 'घर' की भावना कैसे भिन्न होती है?
मानवतावादी भूगोलवेत्ता का मुख्य केंद्र मानवीय अनुभव और भावनात्मक जुड़ाव होता है। इसलिए, वह 'घर' की भावना जैसे व्यक्तिपरक विषयों में अधिक रुचि लेगा। खानाबदोशों हेतु घर एक गतिशील संकल्पना हो सकती है, जबकि गतिहीन लोगों हेतु यह स्थिर भौतिक स्थान है। यह प्रश्न इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि लोग 'स्थान' को क्या अर्थ देते हैं। इसके विपरीत, अन्य विकल्प सांख्यिकी या भू-राजनीतिक सिद्धांतों से संबंधित हैं, जो प्रत्यक्षवादी भूगोल की पहचान हैं।

93. (C) मानवीय गतिविधि को केवल उसके पीछे के विचार को समझकर ही समझा जा सकता है।
भूगोल में आदर्शवाद का परिप्रेक्ष्य मानता है कि पृथ्वी पर मानवीय क्रियाएं केवल बाहरी कारकों का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि उनके पीछे विशिष्ट विचार या इरादा होता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक भूगोलवेत्ता को किसी परिदृश्य को समझने हेतु उस व्यक्ति के मस्तिष्क में प्रवेश करना चाहिए जिसने उसे बनाया है। यह भौतिकवादी व्याख्याओं को चुनौती देता है और तर्क देता है कि वास्तविकता विचारों की ही अभिव्यक्ति है। अतः मानवीय भूगोल का अध्ययन उद्देश्यों का अध्ययन है।

94. (D) मेटा-नैरेटिव्स के प्रति संशय और विखंडन, अंतर तथा शक्ति/विमर्श पर ध्यान।
भूगोल में उत्तर-आधुनिकतावाद की सबसे बड़ी पहचान उन भव्य सिद्धांतों को चुनौती देना है जो पूरी दुनिया को एक ही सांचे में देखने का दावा करते हैं। यह विचारधारा 'विखंडन' की पद्धति अपनाती है ताकि उजागर किया जा सके कि कैसे ज्ञान और शक्ति का मेल भौगोलिक धारणाओं को आकार देता है। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता स्थानिक विविधताओं और हाशिए पर मौजूद समूहों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे वस्तुनिष्ठ सत्य के बजाय कई 'सत्य' की संभावनाओं को स्वीकार करते हैं।

95. (A) 3, 1, 2, 4
भौगोलिक विचारधारा का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रहा है। सबसे पहले 19वीं सदी में पर्यावरणीय नियतिवाद का प्रभुत्व था। इसके बाद 1950-60 के दशक में मात्रात्मक क्रांति और प्रत्यक्षवाद का उदय हुआ, जिसने वैज्ञानिक नियमों पर बल दिया। 1970 के दशक में इस सांख्यिकीय दृष्टिकोण के विरुद्ध मानवतावादी भूगोल उभरा। अंत में, 20वीं सदी के उत्तरार्ध में उत्तर-आधुनिकतावाद आया, जिसने स्थापित सिद्धांतों का विखंडन किया। यह क्रम भूगोल के वर्णनात्मक से आलोचनात्मक विषय बनने को दर्शाता है।

96. (B) उत्तर-आधुनिकतावाद
भूगोलवेत्ता जो औपनिवेशिक मानचित्रों का विश्लेषण यह दिखाने हेतु करता है कि वे साम्राज्यवादी शक्ति को कैसे वैध बनाते थे, वह उत्तर-आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कार्य कर रहा है। उत्तर-आधुनिकतावाद बल देता है कि मानचित्र कभी तटस्थ नहीं होते, बल्कि वे शक्ति संबंधों को बढ़ावा देने वाले उपकरण होते हैं। यह दृष्टिकोण 'विमर्श' के माध्यम से उजागर करता है कि कैसे ज्ञान का निर्माण किसी खास वर्ग के हितों हेतु किया जाता है। यहाँ मानचित्रण एक राजनीतिक कृत्य माना जाता है।

97. (B) डेविड हार्वे
डेविड हार्वे मुख्य रूप से मार्क्सवादी और उग्र भूगोल से जुड़े हुए हैं, न कि मानवतावादी भूगोल से। यद्यपि उन्होंने प्रारंभ में मात्रात्मक भूगोल में योगदान दिया था, लेकिन बाद में वे पूंजीवाद की स्थानिक संरचनाओं और सामाजिक अन्याय के मुखर आलोचक बन गए। इसके विपरीत, यी-फू तुआन, ऐनी बटिमर और एडवर्ड रेल्फ मानवतावादी भूगोल के स्तंभ माने जाते हैं। हार्वे का दृष्टिकोण संरचनात्मक और आर्थिक है, जो मानवतावाद के व्यक्तिपरक केंद्र से भिन्न है।

98. (A) उत्तर-आधुनिकतावाद
यह विचार कि "माध्यम ही संदेश है" उत्तर-आधुनिकतावादी भौगोलिक चिंतन हेतु अत्यंत प्रासंगिक है। यह सुझाव देता है कि भौगोलिक जानकारी जिस तरीके से प्रस्तुत की जाती है—चाहे वह मानचित्र हो या पाठ—वह उसकी सामग्री के समान ही प्रभावशाली होती है। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता विश्लेषण करते हैं कि संचार के विभिन्न रूप कैसे हमारी धारणा को गढ़ते हैं और वास्तविकताओं को विकृत करते हैं। यह विचारधारा प्रतिनिधित्व के साधनों पर सवाल उठाती है।

99. (C) व्यवहारवादी भूगोल व्यवहार के अधिक परिष्कृत वैज्ञानिक मॉडल बनाने की कोशिश करता है, जबकि मानवतावादी भूगोल व्यक्तिपरक अर्थ को समझने के पक्ष में वैज्ञानिक मॉडल को खारिज करता है।
व्यवहारवादी और मानवतावादी भूगोल दोनों मात्रात्मक क्रांति के आलोचक हैं, लेकिन उनकी पद्धतियों में अंतर है। व्यवहारवाद अभी भी वैज्ञानिक पद्धति के भीतर रहकर मानवीय व्यवहार के मॉडल बनाने का प्रयास करता है। इसके विपरीत, मानवतावादी भूगोल किसी भी प्रकार के सामान्यीकृत मॉडल को पूरी तरह खारिज कर देता है। यह केवल व्यक्तिगत अनुभव और उस 'अर्थ' पर ध्यान केंद्रित करता है जो लोग स्थानों को देते हैं। मानवतावाद व्याख्या पर अधिक निर्भर है।

100. (D) उत्तर-आधुनिक और उत्तर-संरचनात्मक भूगोल
मिशेल फौकॉल्ट के शक्ति, ज्ञान और विमर्श संबंधी सिद्धांतों का उत्तर-आधुनिक और उत्तर-संरचनात्मक भूगोल पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उनके विचारों ने भूगोलवेत्ताओं को यह समझने में सहायता की कि कैसे भौगोलिक ज्ञान का उपयोग समाज

Downloaded from www.pdf.tube

को नियंत्रित करने हेतु किया जाता है। फौकॉल्ट का मानना था कि शक्ति ज्ञान के माध्यम से खुद को स्थापित करती है। इस दृष्टिकोण ने मानचित्रण और शहरी नियोजन में छिपे हुए राजनीतिक एजेंडे को उजागर करने का मार्ग प्रशस्त किया था।

101. (D) I, II, और III
भूगोल में प्रत्यक्षवाद की आलोचना इसके यांत्रिक और अमानवीय दृष्टिकोण के कारण की जाती है। यह मानवीय चेतना और व्यक्तिगत मूल्यों की भूमिका को नजरअंदाज करता है, जो वास्तविक दुनिया में स्थानिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। प्रत्यक्षवाद मनुष्य को 'आर्थिक रोबोट' मान लेता है, जो एक गलत धारणा है। साथ ही, इसका वस्तुनिष्ठता का दावा भी संदेहास्पद है क्योंकि सांख्यिकीय डेटा का चयन अक्सर अंतर्निहित वैचारिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित होता है, जिन्हें यह वैज्ञानिक आवरण में छुपा देता है।

102. (B) उत्तर-आधुनिकतावाद
यह धारणा कि वास्तविकता एक सामाजिक रचना है और भौगोलिक ज्ञान निष्पक्ष नहीं होता, उत्तर-आधुनिकतावाद का मूल केंद्र है। यह विचारधारा मानती है कि हम जिसे 'सत्य' कहते हैं, वह वास्तव में शक्तिशाली वर्गों द्वारा निर्मित एक विमर्श है। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि कैसे स्थान का वर्णन शक्ति संबंधों को बनाए रखने हेतु किया जाता है। यह दृष्टिकोण सभी भव्य सिद्धांतों को संशय की दृष्टि से देखता है और स्थानीय अनुभवों को महत्व देता है।

103. (D) पृथ्वी विज्ञान
'एर्डकुंडे' कार्ल रिटर द्वारा उपयोग किया गया जर्मन शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'पृथ्वी विज्ञान' है। रिटर ने इस शब्द का उपयोग अपने ग्रंथ के शीर्षक के रूप में किया, जिसमें उन्होंने भूगोल को ऐसी विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जो पृथ्वी के विभिन्न भागों के संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। उनके लिए 'एर्डकुंडे' का अर्थ केवल पृथ्वी का वर्णन करना नहीं था, बल्कि इसके पीछे छिपे हुए ईश्वरीय उद्देश्य को समझना था।

104. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्राचीन रोमन भूगोलवेत्ता अपने यूनानी पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक व्यावहारिक और विवरणात्मक दृष्टिकोण रखते थे। रोमन साम्राज्य की विशालता के कारण, वहां भूगोल का उपयोग मुख्य रूप से प्रशासनिक नियंत्रण और सैन्य अभियानों हेतु किया गया। यद्यपि उन्होंने यूनानी खगोलीय ज्ञान को अपनाया, लेकिन उनका अपना योगदान अनुप्रयुक्त क्षेत्रों जैसे मानचित्रण और क्षेत्रीय विवरणों में अधिक था। उनके कार्य साम्राज्य के कुशल संचालन हेतु अत्यंत उपयोगी भौगोलिक जानकारी प्रदान करते थे।

105. (C) एक मानचित्र के साथ ज्ञात विश्व का व्यवस्थित विवरण देने का।
मिलेटस के हेकेटियस को भूगोल के क्षेत्र में प्रारंभिक व्यवस्थित वर्णनकर्ता के रूप में जाना जाता है। उनकी कृति 'जेस पीरियोडोस' ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें उन्होंने तत्कालीन ज्ञात विश्व का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया था। इस ग्रंथ के साथ एक मानचित्र भी संलग्न था, जिसने दुनिया को देखने का एक प्रारंभिक ढांचा प्रदान किया। हेकेटियस के इस कार्य ने भूगोल में विवरण प्रधान और मानचित्र आधारित अध्ययन की परंपरा की नींव रखी थी।

106. (A) कार्ल रिटर
सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण कार्ल रिटर के भौगोलिक चिंतन की प्रमुख विशेषता है। रिटर का दृढ़ विश्वास था कि पृथ्वी की रचना एक सोचे-समझे ईश्वरीय उद्देश्य के तहत की गई है, जहाँ धरातलीय बनावट मानव जाति को विकसित करने हेतु बनाई गई है। उनके अनुसार, भूगोलवेत्ता का कार्य प्रकृति के इन गुप्त उद्देश्यों को समझना है। यह दृष्टिकोण रिटर के कार्यों को दार्शनिक गहराई प्रदान करता है, जो उन्हें हम्बोल्ट के शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अलग बनाता है।

107. (D) रैटजेल ने राज्य पर एक जीव के रूप में ध्यान केंद्रित किया, जबकि अमेरिकियों ने जलवायु पर ध्यान केंद्रित किया।
यद्यपि रैटजेल और बाद के अमेरिकी नियतिवादी दोनों ही पर्यावरण के प्रभाव पर जोर देते थे, लेकिन उनके मुख्य केंद्रों में अंतर था। रैटजेल ने मुख्य रूप से राजनीतिक भूगोल में रुचि ली और राज्य को एक जैविक जीव के रूप में देखा। इसके विपरीत, हंटिंगटन जैसे अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं ने सभ्यता के विकास पर जलवायु के प्रत्यक्ष नियंत्रण को अपने अध्ययन का केंद्र बनाया। रैटजेल का नियतिवाद अधिक राजनीतिक था, जबकि अमेरिकी नियतिवाद पर्यावरणीय था।

108. (B) नियोजन उद्देश्यों के लिए, भूमि के प्रत्येक टुकड़े का उपयोग कैसे किया जा रहा था, इसका एक विस्तृत रिकॉर्ड बनाना।
एल. डडली स्टैम्प द्वारा निर्देशित भूमि उपयोग सर्वेक्षण का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय नियोजन हेतु वैज्ञानिक आधार तैयार करना था। इस सर्वेक्षण ने ब्रिटेन के चप्पे-चप्पे का मानचित्रण किया ताकि स्पष्ट हो सके कि भूमि का उपयोग किस प्रकार हो रहा है। स्टैम्प का यह कार्य व्यावहारिक भूगोल का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने युद्ध के बाद ब्रिटेन के कृषि नियोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने भूगोल को सामाजिक कल्याण से जोड़ा।

NODIA

109. (C) विलियम मॉरिस डेविस – भू-आकृतिक चक्र
विलियम मॉरिस डेविस अमेरिकी भूगोल के प्रसिद्ध विद्वान हैं, जिनका नाम 'भू-आकृतिक चक्र' के सिद्धांत के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा है। उन्होंने एक व्यवस्थित मॉडल दिया कि कैसे समय के साथ प्राकृतिक कारक धरातल को विभिन्न चरणों—युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था—में ढालते हैं। उनके इस सिद्धांत ने भू-आकृति विज्ञान को नई वैज्ञानिक दिशा दी। अन्य विकल्पों में विद्वानों और उनकी संकल्पनाओं का मेल त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि सॉयर सांस्कृतिक परिदृश्य से संबंधित हैं।

110. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
भौगोलिक विद्वानों ने विभिन्न विचारधाराओं के माध्यम से विषय को समृद्ध किया है। एलेन सी. सेंपल ने पर्यावरणीय नियतिवाद का समर्थन किया, जबकि विडाल डी ला ब्लाश ने संभववाद की नींव रखी। फ्रेड के. शेफर ने प्रत्यक्षवाद की वकालत करते

हुए भूगोल को नियम-खोजने वाला विषय बनाने पर जोर दिया। यी-फू तुआन ने मानवतावादी भूगोल के माध्यम से मानवीय अनुभवों को समझने का मार्ग प्रशस्त किया। इन विविध दृष्टिकोणों ने भूगोल को गतिशील शैक्षणिक विषय बनाया।

111. (A) अद्वितीय स्थानों का अध्ययन करना बनाम सामान्य नियमों की खोज करना।
भूगोल में 'इडियोग्राफिक' बनाम 'नोमोथेटिक' का द्वैतवाद विषय के मूल उद्देश्यों के बीच तनाव को दर्शाता है। इडियोग्राफिक दृष्टिकोण का लक्ष्य विशिष्ट स्थानों की अद्वितीय विशेषताओं का गहन अध्ययन करना है। इसके विपरीत, नोमोथेटिक दृष्टिकोण सार्वभौमिक नियमों और वैज्ञानिक सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास करता है जो सभी स्थानों पर लागू हो सकें। यह विवाद मात्रात्मक क्रांति के दौरान चरम पर था, जब भूगोल को विवरण प्रधान विषय से हटाकर वैज्ञानिक बनाने का प्रयास हुआ।

112. (B) 'सामान्य विज्ञान' की अवधि जिसके बाद क्रांतिकारी संकट और नए ढांचे में बदलाव आता है।
थॉमस कुहन के अनुसार, विज्ञान का विकास सीधा नहीं होता, बल्कि यह 'प्रतिमान विस्थापन' के माध्यम से होता है। एक प्रतिमान वह स्वीकृत ढांचा है जिसके भीतर वैज्ञानिक कार्य करते हैं। जब मौजूदा प्रतिमान नई विसंगतियों की व्याख्या करने में असमर्थ होता है, तो विषय में संकट पैदा होता है। इसके परिणामस्वरूप क्रांतिकारी बदलाव आता है और नया प्रतिमान उभरता है जो विषय की दिशा और मान्यताओं को बदल देता है। मात्रात्मक क्रांति एक प्रमुख प्रतिमान विस्थापन था।

113. (B) व्यवहारवादी भूगोल
जब भूगोलवेत्ता अध्ययन करता है कि पहाड़ी समुदाय ने पर्यावरण के प्रति अपनी धारणा के आधार पर कैसे अनूठी आजीविका विकसित की है, तो वह व्यवहारवादी भूगोल के सिद्धांतों को लागू करता है। यह दृष्टिकोण केवल भौतिक संसाधनों को नहीं देखता, बल्कि उन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर भी ध्यान केंद्रित करता है जो स्थानीय समुदायों को अनुकूल बनाने में सहायता करती हैं। यह विश्लेषण उजागर करता है कि कैसे मानवीय निर्णय स्थानिक प्रतिरूपों को आकार देते हैं।

114. (A) उत्तर-आधुनिकतावाद
उत्तर-आधुनिकतावाद की प्रमुख विशेषता "मेटा-नैरेटिव्स" या उन भव्य सिद्धांतों की अस्वीकृति है जो दुनिया को एक ही दृष्टिकोण से समझाने का दावा करते हैं। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता मानते हैं कि मार्क्सवाद या प्रत्यक्षवाद जैसे बड़े सिद्धांत स्थानीय सच्चाइयों को दबा देते हैं। वे सार्वभौमिक सत्यों के स्थान पर कई छोटे 'सत्यों' और विखंडन पर जोर देते हैं। यह विचारधारा किसी भी सर्वव्यापी व्याख्या के प्रति संशय रखती है और शक्ति संबंधों के सूक्ष्म विश्लेषण को प्राथमिकता देती है।

115. (C) यह मात्रात्मक क्रांति का जन्मस्थान था।
आधुनिक फ्रांसीसी भूगोल के बारे में यह कथन गलत है कि यह मात्रात्मक क्रांति का जन्मस्थान था। वास्तव में, मात्रात्मक क्रांति की शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में हुई थी। इसके विपरीत, फ्रांसीसी भूगोल अपनी क्षेत्रीय मोनोग्राफ परंपरा और संभववाद के दर्शन हेतु प्रसिद्ध रहा है। यह विडाल डी ला ब्लाश के विचारों से गहराई से प्रभावित था। फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने सांख्यिकीय मॉडलों के स्थान पर मानव और पर्यावरण के ऐतिहासिक संबंधों को सदैव प्राथमिकता दी थी।

116. (D) प्राकृतिक दुनिया और विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों का एक समग्र संश्लेषण।
अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट की महान कृति 'कॉस्मॉस' उनके जीवन भर के अनुसंधान का परिणाम थी। इसका मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के बारे में तत्कालीन समस्त वैज्ञानिक ज्ञान को एक समग्र ढांचे में प्रस्तुत करना था। हम्बोल्ट ने भौतिक घटनाओं के बीच के परस्पर संबंधों और प्रकृति की एकता को उजागर करने का प्रयास किया। यह पुस्तक केवल भूगोल तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें खगोल विज्ञान और जलवायु विज्ञान का भी संगम था। 'कॉस्मॉस' ने वैज्ञानिक संश्लेषण की नई परंपरा स्थापित की।

117. (C) कार्ल सॉयर की 'द मॉर्फोलॉजी ऑफ लैंडस्केप'
कार्ल सॉयर की प्रसिद्ध कृति एक क्रांतिकारी रचना है जिसने 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की संकल्पना को भूगोल के केंद्र में स्थापित किया। उन्होंने तर्क दिया कि संस्कृति एक सक्रिय शक्ति है जो समय के साथ प्राकृतिक माध्यम को रूपांतरित करके विशिष्ट सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करती है। इस विचार ने पर्यावरणीय नियतिवाद को सीधी चुनौती दी, जिसमें प्रकृति को नियंत्रक माना जाता था। सॉयर के इस कार्य ने भूगोलवेत्ताओं का ध्यान उन मानवीय प्रक्रियाओं की ओर खींचा जो परिदृश्य को आकार देती हैं।

118. (B) एक इडियोग्राफिक या एक नोमोथेटिक विषय।
हार्टशॉर्न-शेफर बहस का मूल आधार यह प्रश्न था कि भूगोल को एक इडियोग्राफिक (वर्णनात्मक) विषय होना चाहिए या नोमोथेटिक (नियम बनाने वाला)। हार्टशॉर्न ने तर्क दिया कि भूगोल का उद्देश्य अद्वितीय स्थानों का वर्णन करना है। इसके विपरीत, शेफर ने इस 'अपवादवाद' का विरोध किया और कहा कि भूगोल को वैज्ञानिक नियमों की खोज करनी चाहिए। इस बहस ने भूगोल में मात्रात्मक क्रांति और वैज्ञानिक पद्धति के प्रवेश हेतु वैचारिक जमीन तैयार की थी।

119. (D) मानवतावादी भूगोल
जब कोई भूगोलवेत्ता किसी स्थान पर होने के 'जीवंत अनुभव' को समझने हेतु घटनावाद का उपयोग करता है, तो वह मानवतावादी परंपरा के भीतर कार्य कर रहा होता है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता वस्तुनिष्ठ मापन के बजाय व्यक्तिपरक अर्थों और भावनाओं को महत्व देते हैं। वे यह जानने की कोशिश करते हैं कि कैसे कोई स्थान स्मृतियों के कारण विशेष बन जाता है। यह दृष्टिकोण मानव को सक्रिय और अर्थ प्रदान करने वाला प्राणी मानता है, जो प्रत्यक्षवाद के सांख्यिकीय मॉडलों के विपरीत है।

Click Here to Buy book on Amazon

120. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मात्रात्मक क्रांति के दौरान मानवीय व्यवहार को बहुत सरल बना दिया गया था, जहाँ माना गया कि लोग हमेशा तर्कसंगत निर्णय लेते हैं। इस यांत्रिक सोच की आलोचना हुई, क्योंकि यह वास्तविक मानवीय जटिलताओं को नजरअंदाज करती थी। इसके जवाब में व्यवहारवादी भूगोल का उदय हुआ, जिसने तर्क दिया कि मनुष्य वास्तविक दुनिया के बजाय उसकी अपनी 'धारणा' के प्रति प्रतिक्रिया करता है। व्यवहारवाद ने निर्णय लेने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के अध्ययन को भूगोल में शामिल किया था।

121. (C) हिंद महासागर को एक बंद समुद्र के रूप में दिखाना।
टॉलेमी के विश्व मानचित्र की सबसे बड़ी त्रुटियों में से एक हिंद महासागर को पूरी तरह से भूमि से घिरा हुआ बंद समुद्र दिखाना था। उन्होंने अफ्रीका के दक्षिणी भाग को पूर्व की ओर मुड़ा हुआ और एशिया के साथ जुड़ा हुआ चित्रित किया था। इस गलत चित्रण ने धारणा पैदा की कि अफ्रीका के चारों ओर समुद्री मार्ग से एशिया पहुँचना असंभव है। इसी तरह की त्रुटियों ने कोलंबस जैसे यात्रियों को वैकल्पिक समुद्री मार्गों की तलाश हेतु प्रेरित किया था।

122. (A) हम्बोल्ट और रिटर
अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट और कार्ल रिटर जर्मन भौगोलिक परंपरा के दो ऐसे स्तंभ हैं जिनके दृष्टिकोणों में व्यवस्थित और क्षेत्रीय अध्ययन का अंतर दिखाई देता है। हम्बोल्ट ने व्यवस्थित भूगोल का समर्थन किया, जिसमें भौतिक घटनाओं के वैश्विक वितरण का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता था। इसके विपरीत, रिटर ने क्षेत्रीय भूगोल पर बल दिया, जहाँ उन्होंने विशिष्ट भौगोलिक इकाइयों के समग्र संश्लेषण को समझने का प्रयास किया। इन कार्यों ने आधुनिक भूगोल के दो मुख्य स्तंभों को स्थापित किया।

123. (D) कार्ल हॉशोफर
'जियोपॉलिटिक' शब्द और इसकी नियतिवादी विचारधारा को जर्मनी में कार्ल हॉशोफर ने व्यापक रूप से विकसित किया। रैटजेल के 'लेबेन्सराम' के विचारों से प्रेरणा लेते हुए, हॉशोफर ने इसे राजनीतिक उपकरण के रूप में प्रस्तुत किया जो राज्य के क्षेत्रीय विस्तार को भौगोलिक आधार पर न्यायोचित ठहराता था। उनके सिद्धांतों का नाजी जर्मनी की विदेश नीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। हॉशोफर हेतु भूगोल केवल अकादमिक विषय नहीं था, बल्कि यह राष्ट्रीय शक्ति प्राप्त करने हेतु एक रणनीतिक विज्ञान था।

124. (B) भू-आकृतियों के वर्गीकरण और व्याख्या के लिए एक आनुवंशिक प्रणाली।
विलियम मॉरिस डेविस के अपरदन चक्र के सिद्धांत ने परिदृश्य विकास को समझने हेतु एक ठोस आनुवंशिक प्रणाली प्रदान की। उन्होंने तर्क दिया कि किसी भी भू-आकृति की वर्तमान स्थिति संरचना, प्रक्रिया और समय का परिणाम होती है। इस त्रयी के माध्यम से उन्होंने भू-आकृतियों के व्यवस्थित विकास को विभिन्न चरणों में समझाया। डेविस का यह मॉडल अत्यंत प्रभावशाली था, जिसने भू-आकृति विज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक विवरणों के स्थान पर तर्कसंगत और विकासवादी व्याख्याओं को स्थापित किया था।

125. (C) परिदृश्यों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना या उनकी वर्तमान स्थिति पर।
ऐतिहासिक और समकालीन भूगोल के बीच द्वैतवाद इस बहस पर आधारित है कि क्या भूगोलवेत्ता को केवल वर्तमान स्थानिक प्रतिरूपों का अध्ययन करना चाहिए या उन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का भी विश्लेषण करना चाहिए जिन्होंने उन्हें आकार दिया है। ऐतिहासिक भूगोलवेत्ता परिदृश्यों के क्रमिक विकास को समझने पर जोर देते हैं। इसके विपरीत, समकालीन भूगोल वर्तमान सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु तात्कालिक स्थानिक विश्लेषण को अधिक प्राथमिकता देता है। यह भूगोल की समय-विषयक गहराई को दर्शाता है।

126. (D) पाठों और मानचित्रों का विश्लेषण करके उनकी अंतर्निहित मान्यताओं को प्रकट करना।
उत्तर-आधुनिक भूगोल में 'विखंडन' एक आलोचनात्मक पद्धति है जिसका उपयोग भौगोलिक ग्रंथों और मानचित्रों के पीछे छिपे हुए संदेशों को उजागर करने हेतु किया जाता है। विखंडन का उद्देश्य यह दिखाना है कि जिसे हम 'वस्तुनिष्ठ ज्ञान' मानते हैं, वह अक्सर शक्ति संबंधों और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित होता है। उदाहरण हेतु, मानचित्र का विखंडन यह प्रकट कर सकता है कि सीमाओं का अंकन किसी राजनीतिक एजेंडे को बढ़ावा देता है। यह प्रक्रिया भूगोल को अधिक आत्म-चिंतनशील विषय बनाती है।

127. (A) यह सांख्यिकीय मॉडलों पर अत्यधिक बल देता है और भूगोल का अमानवीयकरण करता है।
मानवतावादी भूगोल की यह आलोचना नहीं की जा सकती कि वह सांख्यिकीय मॉडलों पर बल देता है, क्योंकि यह स्वयं मात्रात्मक विधियों के विरुद्ध एक शक्तिशाली प्रतिक्रिया के रूप में उभरा था। मानवतावाद का मूल मंत्र ही सांख्यिकी को त्यागकर मानवीय चेतना को वापस लाना है। यद्यपि आलोचक इसे अक्सर 'अत्यधिक व्यक्तिपरक' मानते हैं और यह तर्क देते हैं कि इसके निष्कर्षों को सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता। इसे कभी-कभी 'अभिजात' भी कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्तिगत धारणाओं को प्राथमिकता देता है।

128. (B) विलियम किर्क
विलियम किर्क को व्यवहारवादी भूगोल के क्षेत्र में 'व्यवहारवादी पर्यावरण' और 'दृश्य घटना पर्यावरण' के बीच अंतर स्पष्ट करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने तर्क दिया कि जहाँ 'दृश्य घटना पर्यावरण' वास्तविक भौतिक दुनिया है, वहीं 'व्यवहारवादी पर्यावरण' वह दुनिया है जिसे मनुष्य अपने मस्तिष्क में समझता है। उनके अनुसार, मानवीय क्रियाएं भौतिक वास्तविकता के बजाय इस मानसिक धारणा के प्रति प्रतिक्रिया होती हैं। किर्क के इन विचारों ने मानव और पर्यावरण के संबंधों को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की।

NODIA

129. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
उत्तर-आधुनिकतावाद और प्रत्यक्षवाद भौगोलिक चिंतन के दो विपरीत ध्रुव हैं। उत्तर-आधुनिकतावाद सार्वभौमिक दावों को खारिज करता है और स्थानिक विविधता तथा हाशिए की आवाजों को सुनने पर बल देता है। यह मानता है कि ज्ञान व्यक्तिपरक है। इसके विपरीत, प्रत्यक्षवाद का लक्ष्य व्यक्तिगत दृष्टिकोणों को हटाकर वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना और सार्वभौमिक नियम बनाना है। प्रत्यक्षवाद जहाँ विज्ञान की शुद्धता और मापन को महत्व देता है, वहीं उत्तर-आधुनिकतावाद व्याख्या के माध्यम से छिपी हुई वास्तविकताओं को उजागर करता है।

130. (A) केवल I और II
रिचर्ड हार्टशॉर्न की पुस्तक 'द नेचर ऑफ ज्योग्राफी' क्षेत्रीय भूगोल के प्रतिमान का ऐतिहासिक बचाव थी, जिसने भूगोल को 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' के विज्ञान के रूप में स्थापित किया। उनका मानना था कि भूगोलवेत्ता का मुख्य कार्य क्षेत्रों की विविधता का वर्णन करना है। यद्यपि हार्टशॉर्न मात्रात्मक क्रांति के समर्थक नहीं थे; बल्कि वे इडियोग्राफिक भूगोल के पक्षधर थे। बाद में मात्रात्मक क्रांति के समर्थकों ने हार्टशॉर्न के इसी क्षेत्रीय और विवरणात्मक दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना की थी। अतः प्रथम दो कथन सही हैं।

131. (C) सूर्य का कोण और परिणामी तापमान।
प्राचीन यूनानी भूगोल में पृथ्वी का विभाजन मुख्य रूप से खगोलीय आधार पर किया गया था। विद्वानों ने देखा कि जैसे-जैसे हम भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ते हैं, सूर्य की किरणों का कोण बदलता जाता है, जिससे तापमान में भिन्नता आती है। इसी प्रेक्षण के आधार पर उन्होंने पृथ्वी को तीन प्रमुख कटिबंधों में विभाजित किया—उष्ण कटिबंध, शीतोष्ण कटिबंध और शीत कटिबंध। यह विभाजन आज भी आधुनिक जलवायु विज्ञान के बुनियादी वर्गीकरण का आधार बना हुआ है।

132. (D) अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट
'विविधता में एकता' अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट के संपूर्ण भौगोलिक चिंतन का केंद्रीय दर्शन है। हम्बोल्ट का मानना था कि यद्यपि पृथ्वी की सतह पर अनंत विविधताएं दिखाई देती हैं, लेकिन वे सभी एक विशाल जैविक एकता के सूत्र में बंधी हुई हैं। उन्होंने यात्राओं के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि जलवायु और वनस्पति एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं हैं। उनका यह समग्र दृष्टिकोण आधुनिक पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान के विकास हेतु अत्यंत प्रेरणादायक रहा है।

133. (C) पर्सनैलिटी
फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने किसी क्षेत्र के भौतिक लक्षणों और मानवीय संस्कृति के मेल से उत्पन्न होने वाले विशिष्ट चरित्र हेतु 'पर्सनैलिटी' शब्द का उपयोग किया। यह संकल्पना बल देती है कि एक क्षेत्र केवल चट्टानों का समूह नहीं है, बल्कि वह एक जीवित इकाई है जिसका अपना स्वभाव होता है। यह व्यक्तित्व वहां रहने वाले लोगों और पर्यावरण के बीच सामंजस्य से निर्मित होता है। विडाल डी ला ब्लाश के अनुसार, भूगोलवेत्ता का मुख्य कार्य इसी क्षेत्रीय व्यक्तित्व को पहचानना है।

134. (B) हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर
यह प्रसिद्ध सूत्र हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर ने अपनी पुस्तक 'डेमोक्रेटिक आइडियल्स एंड रियलिटी' में प्रतिपादित किया था। मैकिंडर ने वैश्विक शक्ति संतुलन को समझने हेतु 'हृदयस्थल' की संकल्पना दी, जो यूरेशिया के मध्य में स्थित सुरक्षित क्षेत्र है। उनके अनुसार, पूर्वी यूरोप इस क्षेत्र का प्रवेश द्वार है और जो शक्ति इसे नियंत्रित करेगी, वह पूरे हृदयस्थल पर शासन करेगी। यह सिद्धांत आज भी वैश्विक भू-राजनीति और सामरिक रणनीति के विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु माना जाता है।

135. (D) यशायाह बोमन
यशायाह बोमन की कृति 'पायनियर फ्रिंज' अनुप्रयुक्त भूगोल का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें उन्होंने नए बसने वाले क्षेत्रों में मानवीय बस्तियों की संभावनाओं का विश्लेषण किया। उन्होंने यह जानने का प्रयास किया कि किन परिस्थितियों में मनुष्य नए वातावरण में सफलतापूर्वक बस सकते हैं। बोमन का यह कार्य केवल अकादमिक नहीं था, बल्कि इसने नीति निर्माताओं को भूमि उपयोग हेतु व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान किए। इसने भूगोल को सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी विज्ञान के रूप में स्थापित किया।

136. (A) मात्रात्मक क्रांति।
क्षेत्रीय भूगोल की यह कहकर आलोचना की जाने लगी कि यह केवल 'वर्णन' मात्र है, जिसमें वैज्ञानिक विश्लेषण की कमी है। इसी असंतोष ने भूगोल में मात्रात्मक क्रांति को जन्म दिया। नए भूगोलवेत्ताओं ने तर्क दिया कि भूगोल को एक 'स्थानिक विज्ञान' बनना चाहिए, जो सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके घटनाओं की व्याख्या कर सके। इस बदलाव का उद्देश्य भूगोल को अधिक सैद्धांतिक और वस्तुनिष्ठ बनाना था। मात्रात्मक क्रांति ने भूगोल को उसकी पारंपरिक विवरणात्मक जड़ों से निकालकर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की ओर मोड़ा।

137. (C) यह विचार कि वास्तविकता मानसिक रूप से निर्मित है और विचार प्राथमिक कारण हैं।
भौगोलिक संदर्भ में 'आदर्शवाद' वह दार्शनिक दृष्टिकोण है जो मानता है कि पृथ्वी पर मौजूद मानवीय गतिविधियाँ वास्तव में मानवीय विचारों की अभिव्यक्ति हैं। इस विचारधारा के अनुसार, हम बाहरी दुनिया को सीधे तौर पर नहीं जानते, बल्कि हमारा ज्ञान हमारे मस्तिष्क द्वारा निर्मित होता है। इसलिए, किसी भी भौगोलिक घटना को समझने हेतु भूगोलवेत्ता को उन विचारों का पुनर्निर्माण करना चाहिए जिन्होंने उसे जन्म दिया। यह दृष्टिकोण भौतिकवादी और नियतिवादी व्याख्याओं को चुनौती देता है जहाँ केवल बाहरी कारकों को महत्व मिलता है।

138. (A) एक उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता
एक उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता रियल एस्टेट विज्ञापनों की भाषा का विश्लेषण करने में सबसे अधिक रुचि रखेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि उत्तर-आधुनिकतावाद मानता है कि 'स्थान' का निर्माण केवल भौतिक नहीं होता, बल्कि उसे भाषा के माध्यम से सामाजिक रूप से निर्मित किया जाता है। विज्ञापनों में उपयोग किए जाने वाले शब्द यह निर्धारित करते हैं कि लोग किसी स्थान को कैसे देखते हैं। उत्तर-आधुनिकतावादी

NODIA

इस विमर्श का विखंडन करके उजागर करते हैं कि कैसे ये प्रतिनिधित्व उपभोक्तावादी हितों और शक्ति संबंधों को बढ़ावा देते हैं।

139. (D) यूनानी
'एक्यूमीन' या 'आबाद दुनिया' की संकल्पना प्राचीन यूनानी भूगोलवेत्ताओं हेतु अत्यंत केंद्रीय विचार थी। उन्होंने पूरी पृथ्वी के उस भाग को 'एक्यूमीन' कहा जो मनुष्यों के रहने योग्य था और जहाँ सभ्यताएं विकसित हो रही थीं। यूनानियों ने इस क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करने का प्रयास किया और इसे निर्जन क्षेत्रों से अलग माना। यह संकल्पना प्रमाण है कि प्राचीन यूनानी केवल भौतिक भूगोल में ही नहीं, बल्कि मानव समाज और उसके निवास स्थान के संबंधों को समझने में भी रुचि रखते थे।

140. (B) हेटनर – पर्यावरणीय नियतिवाद
अल्फ्रेड हेटनर का पर्यावरणीय नियतिवाद के साथ मेल त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि हेटनर वास्तव में क्षेत्रीय भूगोल और 'कोरोलॉजी' के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने नियतिवाद के कट्टर विचारों के स्थान पर स्थानों के अद्वितीय चरित्र और तत्वों के क्षेत्रीय समन्वय के अध्ययन पर बल दिया। इसके विपरीत, रैटजेल को नियतिवाद हेतु, विडल डी ला ब्लाश को संभववाद हेतु, और डेविस को अपरदन चक्र के सिद्धांत हेतु सही ढंग से जाना जाता है। हेटनर का मुख्य योगदान भूगोल को दार्शनिक आधार प्रदान करने में रहा है।

141. (C) जर्मनी
19वीं शताब्दी में भूगोल का स्वतंत्र विश्वविद्यालय विषय के रूप में सबसे व्यवस्थित विकास जर्मनी में हुआ। हम्बोल्ट, रिटर और रैटजेल जैसे महान विद्वानों ने जर्मन भूगोल को वैज्ञानिक और दार्शनिक गरिमा प्रदान की। जर्मनी में ही भूगोल के अध्ययन हेतु विशिष्ट विभागों और शोध संस्थानों की स्थापना हुई, जिसने पूरी दुनिया हेतु एक मानक स्थापित किया। आधुनिक भौगोलिक चिंतन की अधिकांश शाखाएँ अपनी जड़ें इसी जर्मन परंपरा में पाती हैं। इसी कारण जर्मनी को आधुनिक भूगोल का घर माना जाता है।

142. (D) व्यवहारवादी भूगोल
जब भूगोलवेत्ता अध्ययन करता है कि खरीदार दूरी और गुणवत्ता की अपनी व्यक्तिगत 'धारणा' के आधार पर कैसे निर्णय लेता है, तो वह व्यवहारवादी भूगोल के परिप्रेक्ष्य में कार्य करता है। व्यवहारवाद मानता है कि मनुष्य हमेशा पूर्णतः तर्कसंगत नहीं होता, बल्कि उसका स्थानिक व्यवहार उसके पास मौजूद अपूर्ण जानकारी का परिणाम होता है। यह अध्ययन वास्तविक दुनिया की दूरी के बजाय व्यक्ति के मस्तिष्क में मौजूद 'महसूस की गई दूरी' पर ध्यान केंद्रित करता है। यह मानवीय क्रियाओं की मनोवैज्ञानिक गहराई को उजागर करता है।

143. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
ब्रिटिश भूगोल का प्रारंभिक विकास वास्तव में साम्राज्यवादी विस्तार की आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। नए क्षेत्रों की खोज और उनके संसाधनों का मानचित्रण तत्कालीन ब्रिटेन की प्राथमिकता थी। रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने दुनिया भर में साहसिक अभियानों को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, ब्रिटिश भूगोल अत्यंत व्यावहारिक और अनुप्रयुक्त विज्ञान के रूप में उभरा, जो अन्वेषण और मानचित्रण के माध्यम से वैश्विक प्रभाव बढ़ाने में सहायक था। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

144. (B) एडवर्ड रेल्फ
'स्थान और स्थानहीनता' एडवर्ड रेल्फ के मानवतावादी भूगोल का अत्यंत प्रभावशाली विषय है। रेल्फ ने तर्क दिया कि 'स्थान' मानवीय अर्थों और जुड़ाव का केंद्र होता है, लेकिन आधुनिक शहरी विकास के कारण कई जगहें अपनी विशिष्टता खो रही हैं। उन्होंने 'स्थानहीनता' शब्द का प्रयोग उन परिदृश्यों हेतु किया जो मानकीकृत और मानवीय जुड़ाव से रहित होते हैं, जैसे शॉपिंग मॉल। उनका कार्य भूगोलवेत्ताओं को स्थान की गुणवत्ता और मानवीय अनुभव के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

145. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भौगोलिक संकल्पनाएं और उनके प्रस्तावक विषय की वैचारिक समृद्धि को दर्शाते हैं। कार्ल सॉयर ने 'सांस्कृतिक परिदृश्य' पर बल दिया, जबकि रिचर्ड हार्टशॉर्न ने 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' को भूगोल का मूल कार्य माना। हैल्फोर्ड मैकिंडर ने अपने 'हृदयस्थल सिद्धांत' के माध्यम से वैश्विक भू-राजनीति की दिशा बदली। विडाल डी ला ब्लाश ने 'जॉनर डी वी' की संकल्पना के जरिए समझाया कि कैसे समुदाय पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाते हैं। इन विद्वानों ने भूगोल को विभिन्न आयामों में विस्तार दिया है।

146. (A) अरस्तू
अरस्तू प्राचीन यूनान के महान दार्शनिक थे जिन्होंने वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर भूगोल में योगदान दिया। उन्होंने चंद्र ग्रहण के दौरान चंद्रमा पर पड़ने वाली पृथ्वी की छाया के घुमावदार आकार को देखकर निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी अवश्य ही गोलाकार होनी चाहिए। यह पृथ्वी के आकार के संबंध में दिया गया पहला ठोस और अनुभवजन्य प्रमाण माना जाता है। अरस्तू के इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने प्राचीन काल की काल्पनिक धारणाओं को समाप्त करने में सहायता की जो पृथ्वी को चपटा मानते थे।

147. (C) रिटर
जिस प्रकार अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'कॉस्मॉस' के माध्यम से व्यवस्थित भूगोल को प्रतिष्ठित किया, उसी प्रकार कार्ल रिटर ने 'एर्डकुंडे' की रचना करके क्षेत्रीय भूगोल की नींव रखी। रिटर की 'एर्डकुंडे' एक विशाल ग्रंथ था जिसमें उन्होंने पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों का समग्र विश्लेषण किया। ये दोनों विद्वान आधुनिक भूगोल के दो प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। हम्बोल्ट जहाँ वैश्विक संश्लेषण पर केंद्रित थे, वहीं रिटर ने पृथ्वी की क्षेत्रीय विविधता और उसके पीछे छिपे सोद्देश्यवादी ढांचे को उजागर किया।

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

148. (D) संभववाद
"प्रकृति कभी भी एक सलाहकार से अधिक नहीं होती" यह वाक्यांश संभववाद के दर्शन का मूल मंत्र है। यह विचार बल देता है कि प्राकृतिक वातावरण मनुष्य के ऊपर कोई कठोर नियंत्रण नहीं रखता, बल्कि वह केवल विभिन्न संभावनाओं का एक समूह प्रस्तुत करता है। अंतिम निर्णय मनुष्य का होता है कि वह अपनी तकनीकी क्षमता के अनुसार उन संभावनाओं का उपयोग कैसे करता है। यह विचारधारा मानवीय एजेंसी और स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानती है और पर्यावरणीय नियतिवाद के उस विचार को नकारती है।

149. (C) शहरी भूगोल
समाजशास्त्र के शिकागो स्कूल ने 20वीं सदी की शुरुआत में शहर की आंतरिक संरचना को समझने हेतु पारिस्थितिक मॉडलों का विकास किया। इन मॉडलों ने समझाया कि कैसे विभिन्न सामाजिक समूह शहरी अंतरिक्ष हेतु प्रतिस्पर्धा करते हैं और विशिष्ट क्षेत्रों का निर्माण करते हैं। इस दृष्टिकोण का शहरी भूगोल के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। भूगोलवेत्ताओं ने इन अवधारणाओं को अपनाकर शहरों के भूमि उपयोग प्रतिरूपों और आवासीय पृथक्करण का अधिक वैज्ञानिक और स्थानिक विश्लेषण करना प्रारंभ किया। इसने शहरी नियोजन को नई दिशा दी।

150. (B) 3, 4, 2, 1
भौगोलिक विचारधारा के इतिहास में इन प्रकाशनों का क्रम विषय की दिशा में आए बदलावों को दर्शाता है। हम्बोल्ट की 'कॉस्मॉस' (1845) ने सबसे पहले वैज्ञानिक संश्लेषण की नींव रखी। इसके बाद रैटजेल की 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' (1882) ने मानव भूगोल को मजबूती दी। कार्ल सॉयर की प्रसिद्ध कृति (1925) ने सांस्कृतिक परिदृश्य की संकल्पना के साथ नियतिवाद को चुनौती दी। अंत में, हार्टशॉर्न की पुस्तक (1939) ने क्षेत्रीय विभेदीकरण को एक शास्त्रीय प्रतिमान के रूप में स्थापित किया। यह कालक्रम व्यवस्थित से क्षेत्रीय विकास को दर्शाता है।

151. (D) भौतिक बनाम मानव
रिचर्ड हार्टशॉर्न ने भौतिक और मानव भूगोल के बीच के द्वैतवाद को एक "मिथ्या द्विभाजन" माना था। उनका तर्क था कि पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक वातावरण और मानवीय गतिविधियाँ इतनी गहराई से जुड़ी हुई हैं कि उन्हें अलग इकाइयों के रूप में पढ़ना भौगोलिक वास्तविकता को खंडित करना है। हार्टशॉर्न के अनुसार, भूगोल का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रों के 'परिवर्तनशील चरित्र' को समझना है। इसलिए, उन्होंने एक एकीकृत भौगोलिक दृष्टिकोण का समर्थन किया जो इस कृत्रिम विभाजन को समाप्त करके क्षेत्रीय समग्रता पर ध्यान केंद्रित करता है।

152. (A) मानवतावादी भूगोल
'अंतरिक्ष' से 'स्थान' की ओर बदलाव मानवतावादी भूगोल के उदय की प्रमुख विशेषता है। मात्रात्मक भूगोल में 'अंतरिक्ष' को केवल एक ज्यामितीय और निर्जीव विस्तार माना गया था जहाँ अवस्थितियों को मापा जाता था। इसके विपरीत, मानवतावादी भूगोल ने 'स्थान' की संकल्पना पर बल दिया, जिसे वह मानवीय अर्थों और भावनाओं के केंद्र के रूप में देखता है। यह बदलाव भूगोल में मानवीय चेतना को वापस लाने का प्रयास था, जहाँ एक भौगोलिक बिंदु केवल एक निर्देशांक न रहकर स्मृतियों का हिस्सा बन जाता है।

153. (C) उत्तर-आधुनिक भूगोल
जब एक भूगोलवेत्ता किसी राजनेता के भाषण या भौगोलिक पाठ का विखंडन करता है, तो वह उत्तर-आधुनिक भूगोल के सिद्धांतों का पालन कर रहा होता है। उत्तर-आधुनिकतावाद मानता है कि भाषा और विमर्श कभी भी तटस्थ नहीं होते, बल्कि वे शक्ति संबंधों को बढ़ावा देते हैं। सीमा दीवार के भाषण का विश्लेषण यह प्रकट कर सकता है कि कैसे भूगोल का उपयोग राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काने हेतु किया जाता है। यह दृष्टिकोण स्थापित आख्यानों के पीछे छिपी हुई राजनीति और बहिष्करण की प्रक्रियाओं को उजागर करने का कार्य करता है।

154. (A) व्यवहारवादी दृष्टिकोण
भूगोल में 'क्षमता' और 'निष्पादन' का विचार व्यवहारवादी दृष्टिकोण से गहराई से जुड़ा है। यहाँ 'क्षमता' का अर्थ है वह मानसिक ज्ञान जो एक व्यक्ति पर्यावरण के बारे में रखता है, जबकि 'निष्पादन' वह वास्तविक व्यवहार है जो वह उस ज्ञान के आधार पर करता है। व्यवहारवादी भूगोलवेत्ता यह समझने का प्रयास करते हैं कि कैसे व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के कारण लोगों की स्थानिक क्षमता और उनके वास्तविक व्यवहार के बीच अंतर पैदा होता है। यह विश्लेषण मानवीय क्रियाओं को आंतरिक संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के परिणाम के रूप में देखता है।

155. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भूगोल को आधुनिक शैक्षणिक विषय के रूप में स्थापित करने का श्रेय जर्मन स्कूल को जाता है। कांट ने इसे दार्शनिक आधार दिया, हम्बोल्ट और रिटर ने इसकी दोहरी परंपराओं—व्यवस्थित और क्षेत्रीय अध्ययन—को वैज्ञानिक रूप से पुष्ट किया, और रैटजेल ने मानव-पर्यावरण संबंधों की नई दिशाएं खोलीं। इन विद्वानों के बौद्धिक योगदान और विश्वविद्यालय प्रणालियों ने ही भूगोल को एक व्यवस्थित कार्यप्रणाली प्रदान की। इसी जर्मन नींव पर ही बाद में विश्व के अन्य देशों में भौगोलिक शोध और शिक्षण के ढांचे का निर्माण हुआ था।

NODIA

156. (B) अक्षांश और देशांतर के ग्रिड का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे और मानचित्र प्रक्षेप विकसित किए।
प्राचीन यूनानी विद्वान हिप्पार्कस का भूगोल में असाधारण योगदान रहा है। उन्होंने ही सबसे पहले स्थानों की सटीक स्थिति निर्धारित करने हेतु अक्षांश और देशांतर के व्यवस्थित ग्रिड का उपयोग करने का प्रस्ताव दिया था। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मानचित्रों को समतल सतह पर उतारने हेतु नए प्रक्षेपों का आविष्कार किया। उनके इन गणितीय और तकनीकी नवाचारों ने मानचित्रकला को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान किया, जिस पर बाद में टॉलेमी जैसे विद्वानों ने अपना कार्य खड़ा किया और आधुनिक नौवहन का मार्ग प्रशस्त हुआ था।

157. (C) नियमों पर आधारित सामाजिक विज्ञान।
फ्रेड के. शेफर ने अपने क्रांतिकारी पत्र में तर्क दिया कि भूगोल को केवल अद्वितीय विवरण देने वाला विषय नहीं माना जाना चाहिए। इसके बजाय, उन्होंने भूगोल को नियमों पर आधारित 'नोमोथेटिक' सामाजिक विज्ञान के रूप में विकसित करने की वकालत की। शेफर का मानना था कि भूगोलवेत्ताओं का मुख्य कार्य स्थानिक प्रतिरूपों को नियंत्रित करने वाले वैज्ञानिक नियमों की खोज करना होना चाहिए। उनके इस विचार ने भूगोल को वर्णनात्मक क्षेत्रीय अध्ययन से हटाकर विश्लेषणात्मक 'स्थानिक विज्ञान' बनाने हेतु प्रेरित किया, जो मात्रात्मक क्रांति का आधार बना।

158. (D) 'जॉनर डी वी' की अवधारणा के माध्यम से संभववाद का विकास।
'जॉनर डी वी' और संभववाद का विकास भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल का योगदान है, न कि अमेरिकी स्कूल का। पॉल विडाल डी ला ब्लाश के नेतृत्व में फ्रांसीसी विद्वानों ने इस विचारधारा को गढ़ा था। इसके विपरीत, अमेरिकी स्कूल ने सांस्कृतिक परिदृश्य, अपरदन चक्र और प्रारंभिक दौर में पर्यावरणीय नियतिवाद जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अमेरिकी भूगोल ने अपनी शुरुआत में भौतिक प्रक्रियाओं और बाद में मानव द्वारा परिदृश्य के रूपांतरण के अध्ययन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, जिससे उसकी एक विशिष्ट पहचान बनी थी।

159. (A) यी-फू तुआन और एडवर्ड रेल्फ
'जीवन-जगत' की संकल्पना को मानवतावादी भूगोल में लाने का श्रेय यी-फू तुआन और एडवर्ड रेल्फ जैसे विद्वानों को जाता है। यह संकल्पना घटनावाद से ली गई है, जो मनुष्यों के तत्काल और जीवंत अनुभव की दुनिया को संदर्भित करती है। तुआन और रेल्फ ने तर्क दिया कि भूगोलवेत्ताओं को यह भी समझना चाहिए कि लोग अपने दैनिक जीवन में स्थानों को कैसे महसूस करते हैं और उन्हें क्या अर्थ देते हैं। उनके इस कार्य ने भूगोल को एक गहरी दार्शनिक और मानवीय संवेदनशीलता प्रदान की, जो व्यक्तिपरक अनुभवों को महत्व देती है।

160. (B) मार्क्सवादी/उग्र भूगोल
मार्क्सवादी या उग्र भूगोल वह परिप्रेक्ष्य है जो समाज में मौजूद स्थानिक असमानताओं को पूंजीवादी व्यवस्था की अंतर्निहित प्रक्रियाओं के परिणाम के रूप में देखता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक शहर में गरीबी के प्रतिरूप संसाधनों के असमान वितरण और पूंजी के संचय की रणनीतियों द्वारा निर्मित होते हैं। उग्र भूगोलवेत्ता केवल गरीबी का मानचित्रण नहीं करते, बल्कि वे उन दमनकारी सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देते हैं जो इन असमानताओं को जन्म देती हैं। यह भूगोल का एक क्रांतिकारी रूप है जो सामाजिक परिवर्तन पर बल देता है।

161. (B) औपचारिक रूप से व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच द्वैतवाद स्थापित किया।
बर्न्हार्ड वेरेनियस द्वारा लिखित 'जियोग्राफिया जनरैलिस' भौगोलिक चिंतन के इतिहास में मील का पत्थर है। इस पुस्तक ने पहली बार भूगोल को दो स्पष्ट शाखाओं—'सामान्य' और 'विशेष' भूगोल—में विभाजित किया। वेरेनियस ने तर्क दिया कि सामान्य भूगोल उन नियमों का अध्ययन करता है जो पूरी पृथ्वी पर लागू होते हैं, जबकि विशेष भूगोल विशिष्ट क्षेत्रों के अद्वितीय लक्षणों का वर्णन करता है। इस विभाजन ने आधुनिक भूगोल के संगठनात्मक ढांचे को जन्म दिया और विषय को एक वैज्ञानिक कार्यप्रणाली प्रदान की, जिससे शोध का मार्ग प्रशस्त हुआ।

162. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
जर्मन भूगोलवेत्ता ऑस्कर पेशेल ने कार्ल रिटर के सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना की थी, क्योंकि उनका मानना था कि भूगोल को ईश्वरीय योजना के बजाय वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। पेशेल ने भूगोल के प्रति एक अधिक व्यवस्थित दृष्टिकोण की वकालत की, जिसमें उन्होंने धरातलीय रूपों के वर्गीकरण और उनके वैज्ञानिक कारणों की खोज पर बल दिया। उनके प्रयासों ने भूगोल को प्राकृतिक विज्ञानों के मॉडल के करीब लाने में सहायता की और विषय में अनुभवजन्य प्रेक्षण तथा व्यवस्थित विश्लेषण की परंपरा को मजबूती प्रदान की थी।

163. (C) समाजों और वातावरण के बीच गहरे संबंधों पर ध्यान केंद्रित करने की ओर।
फ्रांसीसी 'एनाल्स स्कूल' द्वारा दी गई 'दीर्घकालिक ऐतिहासिक संरचनाओं' की संकल्पना ने फ्रांसीसी भूगोल को समाज और पर्यावरण के संबंधों को सदियों पुराने ऐतिहासिक संदर्भ में देखने हेतु प्रभावित किया। इसने भूगोलवेत्ताओं को उन स्थायी भौगोलिक कारकों को समझने हेतु प्रेरित किया जिन्होंने किसी जीवन पद्धति को आकार दिया है। इस प्रभाव के कारण फ्रांसीसी भूगोल में क्षेत्रीय संश्लेषण और मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया का अध्ययन अधिक गहरा बन गया। इसने भूगोल को इतिहास के साथ जोड़कर एक समृद्ध और अर्थपूर्ण विषय के रूप में विकसित किया था।

164. (D) भौतिक और मानव भूगोल पढ़ाने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना।
ए. जे. हर्बर्टसन ने अपनी 'प्राकृतिक क्षेत्रों' की योजना मुख्य रूप से भौगोलिक शिक्षा हेतु एक व्यवस्थित आधार प्रदान करने के उद्देश्य से बनाई थी। उनका मानना था कि पृथ्वी को जलवायु और स्थलाकृति की समानताओं के आधार पर बड़े प्राकृतिक खंडों में बांटने से छात्र भौतिक वातावरण और मानवीय गतिविधियों के बीच के संबंधों को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। उनकी यह रूपरेखा भौतिक भूगोल के सिद्धांतों और मानव भूगोल के तथ्यों को एक साथ जोड़ने वाली कड़ी के रूप में कार्य करती थी, जिससे विषय को समझना तर्कसंगत हो गया।

165. (D) I, II, और III
अमेरिकी भूगोल का विकास कई महत्वपूर्ण चरणों से गुजरा है। प्रारंभ में, डेविस के भू-आकृति विज्ञान के प्रभुत्व के कारण विषय का झुकाव भौतिक भूगोल की ओर अधिक था। इसके बाद, एलेन सेंपल और हंटिंगटन ने पर्यावरणीय नियतिवाद की सशक्त परंपरा स्थापित की, जिसमें प्रकृति के प्रभाव को सर्वोपरि माना गया। अंत में, कार्ल सॉयर के नेतृत्व में बर्कले स्कूल ने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भूगोल का प्रभावशाली

Click Here to Buy book on Amazon

विकल्प प्रस्तुत किया। ये तीनों धाराएं मिलकर अमेरिकी भौगोलिक चिंतन की समृद्ध और विविध विरासत का निर्माण करती हैं।

166. (B) नियमों पर ध्यान बनाम विशिष्टता पर ध्यान।
व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच का द्वैतवाद इस प्रश्न पर आधारित है कि भूगोल का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए। व्यवस्थित भूगोल सामान्य नियमों और सिद्धांतों की खोज पर ध्यान केंद्रित करता है जो पूरी दुनिया की समान घटनाओं पर लागू हो सकें। इसके विपरीत, क्षेत्रीय भूगोल किसी विशेष क्षेत्र की विशिष्टता और वहां के तत्वों के अनूठे मेल का अध्ययन करता है। यह बहस भूगोल को 'नोमोथेटिक' विज्ञान (नियम बनाने वाला) या 'इडियोग्राफिक' अध्ययन (विशिष्टता का वर्णन करने वाला) मानने के बीच के तनाव को दर्शाती है।

167. (D) पर्यावरण कुछ मानवीय प्रतिक्रियाओं को अधिक संभावित बनाता है।
प्रसंभाव्यवाद नियतिवाद का एक आधुनिक संस्करण है, जो मानता है कि यद्यपि भौतिक पर्यावरण मानवीय गतिविधियों को पूरी तरह निर्धारित नहीं करता, लेकिन वह कुछ विकल्पों को दूसरों की तुलना में अधिक 'संभावित' बना देता है। यह विचार ओ. एच. के. स्पेट जैसे भूगोलवेत्ताओं से जुड़ा है। उनके अनुसार, प्रकृति मनुष्य हेतु केवल एक मंच नहीं है, बल्कि वह ऐसी शक्ति है जो कुछ विशेष निर्णयों को बढ़ावा देती है। यह संभववाद की स्वतंत्रता और नियतिवाद के नियंत्रण के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

168. (A) मूल प्रश्न, विधियाँ और दार्शनिक मान्यताएँ।
भूगोल में 'प्रतिमान विस्थापन' का अर्थ केवल नए उपकरणों का उपयोग नहीं था, बल्कि यह विषय की पूरी वैचारिक संरचना में मौलिक परिवर्तन था। मात्रात्मक क्रांति ने भूगोल के मूल प्रश्नों को बदल दिया—अब 'कहाँ' के बजाय 'क्यों और कैसे' पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। इसकी विधियाँ वर्णनात्मक से बदलकर विश्लेषणात्मक और गणितीय हो गईं। साथ ही, इसकी दार्शनिक मान्यताएं भी क्षेत्रीय विशिष्टता से हटकर तार्किक प्रत्यक्षवाद की ओर स्थानांतरित हो गईं। इस बदलाव ने भूगोल को आधुनिक 'स्थानिक विज्ञान' के रूप में पुनर्गठित किया।

169. (C) निर्णय लेने वालों की विचार प्रक्रियाओं और इरादों का पुनर्निर्माण करना चाहिए।
भूगोल में आदर्शवाद का दार्शनिक आधार है कि मानवीय गतिविधियाँ मानवीय विचारों का परिणाम होती हैं। इसलिए, एक आदर्शवादी भूगोलवेत्ता मानता है कि किसी भौगोलिक क्रिया को समझने हेतु उस व्यक्ति के मस्तिष्क में प्रवेश करना आवश्यक है जिसने उसे अंजाम दिया। यह दृष्टिकोण 'अतीत पर पुनर्विचार' करने और मानवीय इरादों का विश्लेषण करने पर बल देता है। इसके अनुसार, वास्तविक भौगोलिक ज्ञान केवल उन मानसिक प्रक्रियाओं को समझकर प्राप्त किया जा सकता है जो परिदृश्य को आकार देती हैं। यह व्याख्यात्मक भूगोल का आधार है।

170. (A) यह तर्क देना कि मर्केटर प्रक्षेप यूरोपीय-केंद्रित विचारों को पुष्ट करता है।
उत्तर-आधुनिकतावादी आलोचना का मुख्य उद्देश्य भौगोलिक प्रतिनिधित्वों में छिपे शक्ति संबंधों को उजागर करना है। यह तर्क देना कि मर्केटर प्रक्षेप यूरोपीय-केंद्रित है, इसका बेहतरीन उदाहरण है, क्योंकि यह मानचित्र विकसित देशों को उनके वास्तविक आकार से बहुत बड़ा दिखाकर मनोवैज्ञानिक श्रेष्ठता का भाव पैदा करता है। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता इस प्रकार के विखंडन के माध्यम से दिखाते हैं कि नक्शे कभी भी केवल तकनीकी उपकरण नहीं होते, बल्कि वे दुनिया को देखने का एक विशिष्ट और पक्षपाती तरीका थोपते हैं। यह शक्ति का खेल है।

171. (D) आयोनियन लोगोग्राफर जिन्होंने स्थानों के प्रारंभिक विवरण लिखे थे।
हेरोडोटस ने अपने ऐतिहासिक लेखन में आयोनियन लोगोग्राफर्स को 'गपशप करने वाले भूगोलवेत्ता' के रूप में संदर्भित किया था। ये वे लेखक थे जिन्होंने यात्राओं के आधार पर विभिन्न विदेशी स्थानों और उनकी परंपराओं के बारे में प्रारंभिक विवरण लिखे थे। यद्यपि उनके विवरणों में भौगोलिक तथ्यों के साथ लोककथाओं का मिश्रण होता था, लेकिन उन्होंने भूगोल की प्रारंभिक नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हेरोडोटस ने उनके विवरणों का उपयोग किया लेकिन उनकी अविश्वसनीयता के प्रति वे हमेशा सचेत रहे थे। उन्होंने भूगोल को व्यवस्थित करने का प्रयास किया।

172. (B) क्षेत्रों का विवरण, जो स्थलाकृति से अधिक विस्तृत होता है।
प्राचीन काल में, विशेष रूप से टॉलेमी द्वारा उपयोग किए गए शब्द 'कोरोग्राफी' का अर्थ किसी क्षेत्र का सूक्ष्म और विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना था। यह 'ज्योग्राफी' से इस मायने में भिन्न था कि कोरोग्राफी किसी छोटे क्षेत्र, जैसे एक प्रांत के विशिष्ट लक्षणों और मानवीय पहलुओं के वर्णन पर केंद्रित थी। यह स्थलाकृति के अध्ययन से भी अधिक विस्तृत थी। यह आधुनिक क्षेत्रीय भूगोल के सूक्ष्म विश्लेषण का एक प्रारंभिक प्राचीन स्वरूप माना जा सकता है, जिसमें स्थानीय पहचान और सांस्कृतिक बारीकियों को महत्व दिया जाता था।

173. (C) हम्बोल्ट और रिटर
आधुनिक भूगोल के संस्थापकों, अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट और कार्ल रिटर, दोनों की कार्यप्रणाली में 'तुलनात्मक पद्धति' एक केंद्रीय स्तंभ थी। हम्बोल्ट ने विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के बीच तुलना करके तापमान के सामान्य नियमों को खोजा, जबकि रिटर ने अलग-अलग क्षेत्रों की विशेषताओं की तुलना करके उनके बीच की विविधताओं को स्पष्ट किया। उनकी इस पद्धति का उद्देश्य तुलना के माध्यम से पृथ्वी की सतह पर होने वाली घटनाओं के पीछे छिपे वैज्ञानिक संबंधों को उजागर करना था। इसने भूगोल को एक व्यवस्थित और तुलनात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित किया।

NODIA

174. (D) राजनीतिक संगठन और शासन के तथ्य।
जीन ब्रून्स ने मानव भूगोल को व्यवस्थित संरचना देने हेतु 'अनिवार्य तथ्यों' की तीन मुख्य श्रेणियाँ प्रस्तावित की थीं। इनमें मृदा के अनुत्पादक उपयोग के तथ्य, पौधों और जानवरों की विजय के तथ्य, और विनाशकारी शोषण के तथ्य शामिल थे। यद्यपि राजनीतिक भूगोल महत्वपूर्ण है, लेकिन ब्रून्स ने अपनी इस मौलिक रुपरेखा में 'राजनीतिक संगठन और शासन' को इन प्राथमिक 'अनिवार्य तथ्यों' की श्रेणी में नहीं रखा था। उनका ध्यान मुख्य रुप से मनुष्य और भूमि के भौतिक संबंधों और उनके द्वारा किए गए प्रत्यक्ष परिवर्तनों पर था।

175. (A) क्षेत्रीय भूगोल, अनुप्रयुक्त अध्ययन और भू-राजनीति।
20वीं सदी की शुरुआत में ब्रिटिश भूगोल स्कूल की विरासत इसकी व्यावहारिक और अनुप्रयुक्त प्रकृति रही है। मैकिंडर के 'हृदयस्थल सिद्धांत' ने भू-राजनीति की नींव रखी, जबकि हर्बर्टसन की संकल्पना ने क्षेत्रीय भूगोल को नया ढांचा प्रदान किया। इसके अलावा, एल. डडली स्टैम्प द्वारा किए गए भूमि उपयोग सर्वेक्षणों ने दिखाया कि कैसे भूगोल का उपयोग राष्ट्रीय नियोजन हेतु किया जा सकता है। ब्रिटिश स्कूल ने भूगोल को साम्राज्य और समाज हेतु उपयोगी एक प्रभावी विज्ञान बनाया, जो अन्वेषण और संसाधनों के प्रबंधन पर बल देता था।

176. (B) रिचर्ड हार्टशॉर्न
रिचर्ड हार्टशॉर्न ने अपनी कालजयी पुस्तक में भूगोल को 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार, भूगोल का मुख्य कार्य पृथ्वी की सतह पर एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच मौजूद विविधताओं का तर्कसंगत और व्यवस्थित विवरण प्रदान करना है। हार्टशॉर्न का मानना था कि भूगोलवेत्ता को उन सभी तत्वों के अंतर्संबंधों का अध्ययन करना चाहिए जो किसी विशेष क्षेत्र को उसकी विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। उनकी इस परिभाषा ने कई दशकों तक भूगोल को विवरणात्मक क्षेत्रीय विज्ञान के रुप में स्थापित रखा था।

177. (B) स्पष्ट रुप से भूगोल को सामान्य और विशेष शाखाओं में विभाजित करने के लिए।
बर्न्हार्ड वेरेनियस द्वारा रचित 'जियोग्राफिया जनरैलिस' भौगोलिक चिंतन के इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ थी। यह पहली ऐसी कृति थी जिसने भूगोल को व्यवस्थित रुप से दो मुख्य शाखाओं—'सामान्य भूगोल' और 'विशेष भूगोल'—में विभाजित किया। सामान्य भूगोल में उन्होंने पृथ्वी के भौतिक नियमों की चर्चा की, जबकि विशेष भूगोल में उन्होंने विशिष्ट देशों के विवरण पर बल दिया। इस द्वैतवाद ने भविष्य के भौगोलिक अनुसंधान हेतु ठोस ढांचा तैयार किया और भूगोल को वर्णनात्मक विवरणों से हटाकर व्यवस्थित विज्ञान की ओर मोड़ा।

178. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
भौगोलिक विद्वानों का उनके संबंधित स्कूलों के साथ मिलान विषय के अंतरराष्ट्रीय विकास को दर्शाता है। डब्लू. एम. डेविस अमेरिकी स्कूल के स्तंभ थे जिन्होंने भू-आकृति विज्ञान को प्रसिद्ध किया। ए. जे. हर्बर्टसन ब्रिटिश स्कूल के विद्वान थे जिन्होंने प्राकृतिक क्षेत्रों की संकल्पना दी। फ्रेडरिक रैटजेल जर्मन स्कूल के संस्थापक माने जाते हैं जिन्होंने मानव भूगोल को बढ़ावा दिया। ई. डी मार्टोन फ्रांसीसी स्कूल के दिग्गज थे जिन्होंने भौतिक भूगोल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया। इन स्कूलों ने भूगोल को एक समृद्ध शैक्षणिक अनुशासन बनाया है।

179. (C) किसी क्षेत्र में मान्यताओं और सिद्धांतों का प्रचलित ढांचा।
भूगोल में 'प्रतिमान' शब्द का तात्पर्य उन सर्वमान्य नियमों और दार्शनिक मान्यताओं के समूह से है जो एक विशेष समय में किसी विषय के अनुसंधान की दिशा निर्धारित करते हैं। यह एक प्रकार का बौद्धिक ढांचा है जिसके माध्यम से वैज्ञानिक दुनिया को देखते हैं। जब किसी विषय में एक प्रतिमान नई समस्याओं को सुलझाने में विफल रहता है, तो उसे एक नए प्रतिमान द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है, जिसे 'प्रतिमान विस्थापन' कहते हैं। भूगोल में मात्रात्मक क्रांति और मानवतावादी भूगोल का उदय इसके प्रमुख उदाहरण माने जाते हैं।

180. (D) बोधगम्य, व्यक्तिपरक वातावरण।
व्यवहारवादी भूगोल का मौलिक सिद्धांत है कि मनुष्य का स्थानिक व्यवहार उस भौतिक वातावरण के प्रति नहीं होता जैसा वह वास्तव में है, बल्कि वह उस 'बोधगम्य और व्यक्तिपरक वातावरण' के प्रति होता है जैसा वह उसे अपने मस्तिष्क में समझता है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना 'मानसिक मानचित्र' होता है जो उसके अनुभवों और सीमित सूचनाओं के आधार पर बनता है। इसलिए, व्यवहारवादी भूगोलवेत्ता मानवीय क्रियाओं को समझने हेतु इसी मनोवैज्ञानिक परत को केंद्र में रखते हैं। यह दृष्टिकोण वास्तविक दुनिया और मानवीय धारणा के अंतर को स्पष्ट करता है।

181. (C) ऑस्कर पेशेल
जर्मन भूगोलवेत्ता ऑस्कर पेशेल ने 19वीं सदी के मध्य में भूगोल को अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ बनाने की वकालत की। उन्होंने कार्ल रिटर के सोद्देश्यवादी और धार्मिक विचारों का विरोध करते हुए तर्क दिया कि भूगोल को प्राकृतिक विज्ञानों के समान कार्य करना चाहिए। पेशेल का मानना था कि भूगोलवेत्ता का मुख्य कार्य धरातलीय रुपों के बीच कारण-संबंधों की खोज करना और उन्हें वैज्ञानिक नियमों के आधार पर परिभाषित करना है। उनकी पद्धति ने भू-आकृति विज्ञान को मजबूती दी, जिससे विषय में वैज्ञानिक विश्लेषण को प्राथमिकता मिलने लगी।

182. (B) उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य कार्य स्थानिक नियमों की खोज करना था।
कार्ल सॉयर के बारे में यह कथन गलत है कि उन्होंने स्थानिक नियमों की खोज को भूगोल का मुख्य कार्य माना। इसके विपरीत, सॉयर मात्रात्मक नियमों और सांख्यिकीय मॉडलों के विरोधी थे। उन्होंने भूगोल को 'सांस्कृतिक परिदृश्य' के अध्ययन के रूप में देखा, जहाँ मानव संस्कृति प्राकृतिक वातावरण को समय के साथ बदलती है। उन्होंने बर्कले स्कूल की स्थापना की और सांस्कृतिक-ऐतिहासिक भूगोल को बढ़ावा दिया, जो विशिष्ट क्षेत्रों के ऐतिहासिक विकास को समझने पर केंद्रित था। उनके लिए भूगोल एक गुणात्मक और विवरण प्रधान विषय था।

Downloaded from www.pdf.tube

183. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
व्यवस्थित और क्षेत्रीय भूगोल के बीच का द्वैतवाद आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि ये दोनों दृष्टिकोण विश्लेषण हेतु अलग-अलग स्तर प्रदान करते हैं। उदाहरण हेतु, जब हम 'जलवायु परिवर्तन' का अध्ययन करते हैं, तो हम व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाते हैं जो वैश्विक प्रतिरूपों को देखता है। लेकिन जब हम 'सुंदरबन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव' पढ़ते हैं, तो हम क्षेत्रीय दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं जो विशिष्ट परिस्थितियों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह मेल सिद्ध करता है कि पूर्ण भौगोलिक समझ हेतु इन दोनों पद्धतियों का समन्वय अनिवार्य है।

184. (A) भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद।
आदर्शवाद का दर्शन मौलिक रूप से भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद के विपरीत खड़ा है। जहाँ प्रत्यक्षवाद केवल उन तथ्यों को स्वीकार करता है जिन्हें मापा जा सके, वहीं आदर्शवाद यह तर्क देता है कि वास्तविकता मानवीय विचारों और मानसिक निर्माणों की उपज है। आदर्शवाद के अनुसार, बाहरी दुनिया को समझने हेतु हमें उन मानवीय इरादों को समझना होगा जिन्होंने उसे आकार दिया है। यह दृष्टिकोण प्रत्यक्षवाद की वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक मापन की कठोरता को चुनौती देता है, क्योंकि यह मानवीय चेतना और व्यक्तिपरक अर्थ को प्राथमिकता देता है।

185. (C) साहित्यिक आलोचना और संकेत विज्ञान।
जब कोई भूगोलवेत्ता किसी परिदृश्य का एक 'पाठ' के रूप में अध्ययन करता है, तो वह साहित्यिक आलोचना और संकेत विज्ञान से जुड़ी विधियों का उपयोग कर रहा होता है। यह दृष्टिकोण उत्तर-आधुनिक भूगोल की पहचान है, जो मानती है कि परिदृश्य केवल भौतिक स्थान नहीं हैं, बल्कि वे प्रतीकों से भरे हुए हैं जो समाज के सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं। जिस तरह एक पाठक पुस्तक की व्याख्या करता है, उसी तरह भूगोलवेत्ता परिदृश्य का विखंडन करके उसके छिपे हुए अर्थों को उजागर करता है। यह अध्ययन सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व को प्राथमिकता देता है।

186. (A) यूनानी
'एक्यूमीन' की संकल्पना प्राचीन यूनानी भूगोलवेत्ताओं की प्रमुख वैचारिक उपलब्धि थी। इसका उपयोग पृथ्वी के उस भाग को दर्शाने हेतु किया जाता था जो ज्ञात था और जहाँ मानव बस्तियाँ बसी हुई थीं। यूनानियों ने इस आबाद दुनिया की सीमाओं और इसकी जलवायु परिस्थितियों का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन करने का प्रयास किया। यह संकल्पना न केवल उनकी भौगोलिक जिज्ञासा को दर्शाती है, बल्कि यह भी बताती है कि वे पृथ्वी को मानव निवास के संदर्भ में समझने हेतु कितने उत्सुक थे। यह विचार सदियों तक भौगोलिक ग्रंथों में बना रहा था।

187. (D) क्षेत्रीय अध्ययन के लिए एक कठोर रूपरेखा, जिसकी अक्सर सूत्रबद्ध होने के लिए आलोचना की जाती है।
'लैंडरकुंडलिशे स्कीमा' जर्मन भूगोल में क्षेत्रीय अध्ययन हेतु विकसित की गई अत्यंत व्यवस्थित रूपरेखा थी। इसका उद्देश्य किसी क्षेत्र का अध्ययन करते समय निश्चित क्रम का पालन करना था—जैसे पहले भूविज्ञान, फिर जलवायु और अंत में मानवीय गतिविधियाँ। यद्यपि इसने क्षेत्रीय भूगोल को स्पष्ट संरचना दी, लेकिन बाद में इसकी आलोचना हुई कि यह बहुत अधिक यांत्रिक हो गई थी। आलोचकों का मानना था कि यह सांचा किसी क्षेत्र के जीवित चरित्र को पकड़ने के बजाय केवल सूचनाओं का एक निर्जीव संकलन बनकर रह गया था।

188. (B) जीन ब्रून्स
जीन ब्रून्स, जो विडाल डी ला ब्लाश के शिष्य थे, अपने 'स्थलीय एकता' और 'अंतःक्रिया' के सिद्धांतों हेतु मानव भूगोल में प्रसिद्ध हैं। उनका मानना था कि पृथ्वी पर कोई भी भौगोलिक तथ्य अकेला नहीं होता, बल्कि सभी तत्व एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। ब्रून्स ने तर्क दिया कि मानवीय गतिविधियों और प्राकृतिक वातावरण के बीच निरंतर आदान-प्रदान चलता रहता है। उनके इन सिद्धांतों ने भूगोल को गतिशील स्वरूप प्रदान किया, जहाँ घटनाओं को उनके व्यापक अंतर्संबंधों के संदर्भ में समझा जाता है।

189. (C) पैट्रिक गेडिस
पैट्रिक गेडिस एक बहुआयामी विद्वान थे जिन्होंने समाजशास्त्र के सिद्धांतों को भूगोल और शहरी नियोजन में लागू किया। उन्होंने 'स्थान-कार्य-लोक' की एक मौलिक त्रयी प्रस्तुत की, जो किसी भी क्षेत्रीय समाज को समझने का आधार बनी। गेडिस ने 'क्षेत्रीय सर्वेक्षण' की पद्धति को बढ़ावा दिया, जिसमें उन्होंने स्थानीय स्तर पर सूक्ष्म अध्ययन करने पर जोर दिया ताकि समस्याओं का समाधान हो सके। उनके इन विचारों ने ब्रिटिश भूगोल को प्रभावित किया और वे आधुनिक शहरी नियोजन के जनक माने जाते हैं, जिन्होंने पर्यावरण के सामंजस्य पर बल दिया।

NODIA

190. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्ल सॉयर द्वारा प्रतिपादित 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की संकल्पना ने पर्यावरणीय नियतिवाद की जड़ों पर प्रहार किया। नियतिवाद जहाँ प्रकृति को मनुष्य का नियंत्रक मानता था, वहीं सॉयर ने संस्कृति को एक सक्रिय कारक के रूप में स्थापित किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से समझाया कि प्राकृतिक वातावरण केवल एक माध्यम है, जिस पर मानव संस्कृति अपनी तकनीकी ज्ञान के माध्यम से काम करती है। इसके परिणामस्वरूप एक सांस्कृतिक परिदृश्य का जन्म होता है। यह विचार मानवीय क्रियाशीलता को भौगोलिक अध्ययन के केंद्र में ले आया, जिसने भौगोलिक चिंतन को बदल दिया।

191. (A) नव-नियतिवाद या 'रुको-और-जाओ नियतिवाद'।
ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रस्तुत 'नव-नियतिवाद' सुझाव देता है कि "मनुष्य प्रस्ताव करता है, लेकिन प्रकृति निर्णय करती है।" यह विचारधारा नियतिवाद की कठोरता और संभववाद की असीमित स्वतंत्रता के बीच एक संतुलित मध्यम मार्ग प्रदान करती है। टेलर का मानना था कि मनुष्य प्रकृति द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर ही अपनी प्रगति की गति को नियंत्रित कर सकता है। वह प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकता, बल्कि उसे पर्यावरण की सलाह को ध्यान में रखते हुए अपने

विकास की योजना बनानी चाहिए। यह विचार टिकाऊ विकास का प्रारंभिक रूप है।

192. (B) तार्किक प्रत्यक्षवाद।
मात्रात्मक क्रांति ने भूगोल को अधिक वैज्ञानिक बनाने हेतु 'तार्किक प्रत्यक्षवाद' की कार्यप्रणाली को अपनाया। इस दृष्टिकोण का मुख्य बल अनुभवजन्य डेटा के संग्रह और सत्यापन योग्य नियमों के निर्माण पर था। इसने भूगोलवेत्ताओं को उन सभी व्यक्तिपरक व्याख्याओं को त्यागने हेतु प्रेरित किया जिन्हें मापा नहीं जा सकता था। तार्किक प्रत्यक्षवाद के प्रभाव में, भूगोल एक ऐसी 'स्थानिक विज्ञान' शाखा बन गया जो गणितीय मॉडलों के माध्यम से भविष्य की प्रवृत्तियों की सटीक भविष्यवाणी करने का दावा करती थी। इसने विषय में सांख्यिकीय विश्लेषण को प्राथमिकता दी थी।

193. (B) मानवतावादी भूगोल
'स्थान की भावना' मानवतावादी भूगोल की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय संकल्पना है। यह उन भावनात्मक संबंधों को संदर्भित करती है जो लोग किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान के साथ विकसित करते हैं। मानवतावादी भूगोलवेत्ता तर्क देते हैं कि एक स्थान केवल एक अवस्थिति नहीं है, बल्कि वह मानवीय अर्थों और भावनाओं का एक केंद्र है। यह संकल्पना भूगोल में व्यक्तिपरक अनुभवों को महत्व देती है। यह समझने में सहायता करती है कि क्यों कुछ स्थान हमारे लिए 'घर' जैसा महसूस होते हैं और क्यों हम उनके प्रति लगाव की भावना रखते हैं।

194. (A) उत्तर-आधुनिकतावाद।
उत्तर-आधुनिकतावाद का एक मौलिक सिद्धांत यह है कि कोई भी एकल, वस्तुनिष्ठ 'सत्य' मौजूद नहीं है। इसके बजाय, यह विचारधारा मानती है कि जिसे हम 'सत्य' कहते हैं, वह वास्तव में विभिन्न 'विमर्शों' और शक्ति संबंधों की उपज है। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता तर्क देते हैं कि अलग-अलग समूहों के पास दुनिया को देखने के अपने-अपने तरीके और सत्य होते हैं। इसलिए, भूगोल को किसी एक भव्य सिद्धांत के बजाय उन अनेक आवाजों को सुनना चाहिए जो अक्सर मुख्यधारा के विज्ञान द्वारा दबा दी जाती हैं। यह विचारधारा बहुलता का सम्मान करती है।

195. (C) टॉलेमी
क्लॉडियस टॉलेमी का भौगोलिक कार्य प्राचीन काल के बाद सदियों तक विस्मृत रहा। यद्यपि 15वीं शताब्दी में पुनर्जागरण काल के दौरान इस ग्रंथ की पुनः खोज ने यूरोप के भौगोलिक ज्ञान में क्रांति ला दी। टॉलेमी द्वारा विकसित अक्षांश और देशांतर की प्रणाली ने उस समय के अन्वेषकों हेतु आवश्यक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य किया। उनके कार्यों ने कोलंबस जैसे यात्रियों को नई दुनिया की खोज हेतु प्रेरित किया। इस प्रकार, टॉलेमी के विचारों ने सदियों बाद फिर से जीवित होकर आधुनिक नौवहन और मानचित्रकला के विकास की आधारशिला रखी थी।

196. (D) व्यवस्थित, तुलनात्मक भूगोल।
अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट द्वारा समताप रेखाओं का आविष्कार व्यवस्थित एवं तुलनात्मक भूगोल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने वैश्विक स्तर पर तापमान के वितरण का अध्ययन किया और विभिन्न स्थानों की तुलना करके जलवायु के सामान्य नियमों को समझने का प्रयास किया। यह कार्य दर्शाता है कि हम्बोल्ट केवल स्थानीय विवरणों में रुचि नहीं रखते थे, बल्कि वे ऐसी वैज्ञानिक प्रणालियाँ विकसित करना चाहते थे जो पूरी दुनिया की भौतिक घटनाओं के बीच के संबंधों को स्पष्ट कर सकें। उनके इस व्यवस्थित दृष्टिकोण ने जलवायु विज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

197. (C) किसी क्षेत्र के भूगोल का समग्र, संश्लेषित विवरण प्रदान करना।
विडाल डी ला ब्लाश द्वारा स्थापित क्षेत्रीय मोनोग्राफ की फ्रांसीसी परंपरा का मुख्य उद्देश्य किसी छोटे क्षेत्र का अत्यंत विस्तृत और समग्र विवरण प्रस्तुत करना था। ये अध्ययन केवल भौतिक भूगोल तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे इन दोनों के परस्पर मेल से उभरे हुए क्षेत्र के 'अद्वितीय व्यक्तित्व' को संश्लेषित करने का प्रयास करते थे। भूगोलवेत्ता वहां की मिट्टी, इतिहास और लोगों की 'जीवन पद्धति' के बीच के गहरे संबंधों का विश्लेषण करते थे। इस सूक्ष्म और समग्र दृष्टिकोण ने फ्रांसीसी क्षेत्रीय भूगोल को उसकी विशिष्ट पहचान और गहराई प्रदान की थी।

198. (B) डरवेंट व्हिटलसी
'अनुक्रमिक अधिभोग' की संकल्पना डरवेंट व्हिटलसी द्वारा विकसित की गई थी, जो ऐतिहासिक भूगोल में एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह मॉडल यह समझाने का प्रयास करता है कि कैसे एक ही क्षेत्र में समय के साथ विभिन्न सांस्कृतिक समूह एक के बाद एक आते हैं और वहां के परिदृश्य पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ते हैं। प्रत्येक नया समूह पिछले समूह द्वारा छोड़ी गई विरासत के साथ अंतःक्रिया करता है, जिससे परिदृश्य की परतों का निर्माण होता है। यह विचार यह समझने में सहायता करता है कि वर्तमान परिदृश्य अनेक संस्कृतियों के क्रमिक ऐतिहासिक प्रभाव का रूप है।

199. (D) पृथ्वी की सतह पर क्षेत्रों के बीच के अंतरों की व्याख्या करना।
रिचर्ड हार्टशॉर्न के अनुसार 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' भूगोल का मुख्य लक्ष्य है, जिसका अर्थ है पृथ्वी की सतह की विविधता का अध्ययन करना। हार्टशॉर्न ने तर्क दिया कि भूगोलवेत्ता का प्राथमिक कार्य यह विश्लेषण करना है कि पृथ्वी का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से क्यों भिन्न है। उनका मानना था कि प्रत्येक क्षेत्र भौतिक और मानवीय तत्वों के एक अद्वितीय संयोजन से बना होता है, जिसे केवल सूक्ष्म क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से ही समझा जा सकता है। यह दृष्टिकोण भूगोल को ऐसी विवरणी मानता है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों का तर्कसंगत विवरण प्रस्तुत करती है।

200. (A) केवल I और II
उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता मानते हैं कि भौगोलिक 'तथ्य' कोई स्वतंत्र सत्य नहीं हैं, बल्कि वे विशिष्ट विमर्शों और शक्ति

Click Here to Buy book on Amazon

संरचनाओं के माध्यम से बनाए जाते हैं। इसलिए, वे मानचित्रों और भौगोलिक लेखों के 'विखंडन' पर बहुत जोर देते हैं ताकि उनके पीछे छिपे वैचारिक एजेंडे को उजागर किया जा सके। इसके विपरीत, उत्तर-आधुनिकतावाद कभी भी 'एक मात्र वस्तुनिष्ठ सत्य' की खोज का दावा नहीं करता; बल्कि यह सार्वभौमिक सत्यों के प्रति संशय रखता है। अतः कथन I और II सही हैं, जबकि III गलत है।

201. (C) अल्फ्रेड हेटनर
जर्मन भूगोलवेत्ता अल्फ्रेड हेटनर ने भूगोल को एक 'क्षेत्र-विवरणी' विज्ञान के रूप में स्थापित करने हेतु दार्शनिक नींव रखी। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर क्षेत्रों की विशिष्टता और वहां के तत्वों के क्षेत्रीय समन्वय का अध्ययन करना है। हेटनर के अनुसार, भूगोलवेत्ता को यह देखना चाहिए कि विभिन्न घटनाएं किसी स्थान पर मिलकर कैसे एक अद्वितीय इकाई का निर्माण करती हैं। उनके इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने क्षेत्रीय भूगोल को ठोस शैक्षणिक आधार प्रदान किया, जिससे यह विषय अन्य विज्ञानों के बीच पहचान बना सका।

202. (A) व्यावहारिक भूगोल, जिसमें सैन्य और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए मानचित्रण शामिल है।
रोमन साम्राज्य का भौगोलिक ज्ञान में सबसे महत्वपूर्ण योगदान उसकी व्यावहारिक उपयोगिता में निहित था। चूंकि रोमन साम्राज्य का विस्तार बहुत विशाल था, इसलिए उन्हें अपने क्षेत्रों के नियंत्रण हेतु सटीक मानचित्रों की आवश्यकता थी। उन्होंने सैन्य अभियानों को सफल बनाने और सड़कों के विशाल नेटवर्क के प्रबंधन हेतु व्यावहारिक मानचित्रण तकनीकों का विकास किया। यद्यपि वे यूनानी सैद्धांतिक ज्ञान पर निर्भर थे, लेकिन उन्होंने उस ज्ञान को शासन चलाने हेतु एक शक्तिशाली उपकरण में बदल दिया, जो उनके प्रशासनिक कौशल का प्रमाण था।

203. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मात्रात्मक क्रांति ने भूगोल को वैज्ञानिक रूप देने के प्रयास में सांख्यिकीय विधियों पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया, जिससे क्षेत्रों का अद्वितीय चरित्र कहीं खो गया। इसके जवाब में 1970 के दशक में मानवतावादी भूगोल का उदय हुआ, जिसने इस अमानवीय और यांत्रिक दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना की। मानवतावादी भूगोलवेत्ताओं ने 'स्थान' और 'लोगों' को विषय के केंद्र में वापस लाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि भौगोलिक अध्ययन का उद्देश्य मानवीय अनुभवों और उन भावनाओं को समझना है जो लोगों का उनके पर्यावरण के साथ जुड़ाव बनाती हैं।

204. (B) आदर्शवाद
आदर्शवाद वह दार्शनिक विचारधारा है जो मानती है कि ज्ञान के निर्माण में मानवीय मस्तिष्क एक सक्रिय भूमिका निभाता है। इसके अनुसार, बाहरी भौतिक दुनिया को हम केवल अपने विचारों के माध्यम से ही समझ सकते हैं। भूगोल में इस दर्शन का तात्पर्य है कि किसी भी मानवीय परिदृश्य या ऐतिहासिक घटना को पूरी तरह समझने हेतु हमें उन व्यक्तियों के विचारों और इरादों का पुनर्निर्माण करना होगा जिन्होंने उन क्रियाओं को अंजाम किया था। यह दृष्टिकोण भौतिकवादी व्याख्याओं को चुनौती देता है और मानवीय उद्देश्यों के अध्ययन को प्राथमिकता देता है।

205. (C) 2, 1, 4, 3
भौगोलिक विचारधारा के विकास का क्रम विषय की बदलती प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है। सबसे पहले 19वीं सदी के अंत में जर्मन स्कूल का 'पर्यावरण नियतिवाद' प्रभावी था। इसके बाद 20वीं सदी की शुरुआत में फ्रांसीसी स्कूल ने 'संभववाद' प्रस्तुत किया। फिर 1920 के दशक में कार्ल सॉयर ने बर्कले स्कूल के माध्यम से 'सांस्कृतिक परिदृश्य' पर ध्यान केंद्रित किया। अंत में 1950 और 60 के दशक में अमेरिकी भूगोल में 'स्थानिक विज्ञान' और मात्रात्मक क्रांति का उदय हुआ। यह कालक्रम भूगोल के भौतिक से वैज्ञानिक बनने की यात्रा है।

206. (D) हैल्फोर्ड मैकिंडर
हैल्फोर्ड मैकिंडर प्रमुख ब्रिटिश भूगोलवेत्ता थे, जिनका संबंध भूगोल के ब्रिटिश स्कूल से है। वे अपने 'हृदयस्थल सिद्धांत' और भू-राजनीति में योगदान हेतु विश्व प्रसिद्ध हैं। इसके विपरीत, डब्लू. एम. डेविस, कार्ल सॉयर और एलेन सेंपल सभी अमेरिकी भूगोल स्कूल के स्तंभ माने जाते हैं जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में भौगोलिक चिंतन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैकिंडर का कार्य मुख्य रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के सामरिक हितों और वैश्विक शक्ति संतुलन के अध्ययन पर केंद्रित था, जो अमेरिकी परंपरा से भिन्न था।

207. (A) सिद्धांत बनाम व्यवहार
भूगोल के इतिहास में नियतिवाद बनाम संभववाद, व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय, और भौतिक बनाम मानव भूगोल जैसे द्वैतवाद विषय के मूल दर्शन से जुड़े हुए हैं। यद्यपि 'सिद्धांत बनाम व्यवहार' को आमतौर पर भूगोल के उन शास्त्रीय द्वैतवादों में शामिल नहीं किया जाता है जिन्होंने इस अनुशासन को वैचारिक रूप से विभाजित किया हो। भूगोल में सिद्धांत और व्यवहार को अक्सर एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखा जाता है, जहाँ सैद्धांतिक मॉडल वास्तविक दुनिया की समस्याओं को सुलझाने हेतु व्यावहारिक आधार प्रदान करते हैं। यह द्विभाजन शास्त्रीय नहीं है।

208. (B) व्यवहारवाद
'मानसिक मानचित्र' की संकल्पना व्यवहारवादी भूगोल का एक केंद्रीय उपकरण है, जिसे पीटर गोल्ड और रॉडने व्हाइट ने लोकप्रिय बनाया। यह उन आंतरिक और व्यक्तिपरक छवियों को दर्शाता है जो लोग अपने भौगोलिक वातावरण के बारे में अपने दिमाग में संजोते हैं। व्यवहारवादी भूगोलवेत्ता इन मानचित्रों का अध्ययन करके विश्लेषण करते हैं कि लोग किसी स्थान के बारे में क्या जानते हैं और उनके ये विचार उनके वास्तविक स्थानिक निर्णयों को कैसे प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन मानवीय व्यवहार की मनोवैज्ञानिक गहराई और व्यक्तिगत धारणाओं को उजागर करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

209. (B) भूगोल में प्रतिमान अक्सर एक-दूसरे को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करने के बजाय साथ-साथ मौजूद रहते हैं।
थॉमस कुहन के प्रतिमान विस्थापन मॉडल की भूगोल में आलोचना यह है कि यहाँ पुराने प्रतिमान पूरी तरह कभी समाप्त नहीं होते। विज्ञान के कुछ क्षेत्रों में नया प्रतिमान पुराने को मिटा देता है, लेकिन भूगोल में क्षेत्रीय भूगोल और मात्रात्मक भूगोल जैसे विभिन्न दृष्टिकोण आज भी साथ मौजूद हैं। भूगोलवेत्ता अक्सर एक ही समय में अलग-अलग प्रतिमानों की विधियों का उपयोग करते हैं। इसलिए, भूगोल का विकास विस्थापनों के बजाय विभिन्न विचारधाराओं के निरंतर सह-अस्तित्व और क्रमिक संश्लेषण का परिणाम अधिक प्रतीत होता है।

210. (A) एक टैबलेट पर ज्ञात विश्व का मानचित्र बनाने का प्रयास किया।
एनेक्सीमेंडर को यूनानी भूगोल के इतिहास में महान पथप्रदर्शक माना जाता है। उनका सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान ज्ञात विश्व का प्रथम मानचित्र तैयार करना था, जिसे उन्होंने संभवतः मिट्टी के टैबलेट या धातु की प्लेट पर उकेरा था। यद्यपि वह मानचित्र आज उपलब्ध नहीं है, लेकिन उनके इस प्रयास ने पृथ्वी की सतह को ग्राफिक रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा की शुरुआत की। एनेक्सीमेंडर के इन प्रारंभिक कार्यों ने मानचित्रकला और खगोलीय भूगोल के वैज्ञानिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया था।

211. (C) कार्ल रिटर
भूगोल में सोद्देश्यवादी दृष्टिकोण कार्ल रिटर के कार्यों की एक अद्वितीय पहचान है। रिटर का दृढ़ विश्वास था कि पृथ्वी की प्रत्येक भौगोलिक विशेषता एक ईश्वरीय योजना के तहत मानव विकास हेतु बनाई गई है। उनके अनुसार, प्रकृति का मुख्य उद्देश्य मानव जाति की प्रगति हेतु उपयुक्त मंच प्रदान करना है। रिटर ने अपने लेखन में इस दार्शनिक विचार पर जोर दिया कि भूगोलवेत्ता को केवल धरातलीय रूपों का वर्णन नहीं करना चाहिए, बल्कि उनके पीछे छिपे हुए उस महान ईश्वरीय उद्देश्य को भी समझना चाहिए।

212. (D) यी-फू तुआन - मानवतावादी भूगोल
यी-फू तुआन और मानवतावादी भूगोल का मेल पूरी तरह सही है, क्योंकि तुआन ने ही इस विचारधारा को भूगोल के केंद्र में स्थापित किया। उन्होंने 'स्थान' और 'अनुभव' जैसे मानवीय पहलुओं पर बल दिया। इसके विपरीत, अन्य युग्म गलत हैं क्योंकि जीन ब्रून्स संभववाद से, कार्ल सॉयर सांस्कृतिक परिदृश्य से, और रिचर्ड हार्टशॉर्न क्षेत्रीय विभेदीकरण से जुड़े हुए हैं। तुआन के कार्यों ने स्पष्ट किया कि भूगोल केवल निर्जीव अंतरिक्ष का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह मानवीय भावनाओं और अर्थों का अध्ययन है।

213. (C) अस्तित्ववाद
मानवतावादी भूगोल की जड़ें अस्तित्ववाद और घटनावाद जैसे दार्शनिक सिद्धांतों में गहरी हैं। अस्तित्ववाद मानवीय स्वतंत्रता और जीवन के अर्थ पर बल देता है, जो मानवतावादी भूगोल के अनुकूल है। यह विचारधारा मानती है कि मनुष्य अपने कार्यों के माध्यम से अपनी दुनिया का निर्माण स्वयं करता है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता 'जीवन-जगत' के अध्ययन के माध्यम से यह समझने की कोशिश करते हैं कि लोग दैनिक जीवन में भौगोलिक अर्थों को कैसे गढ़ते हैं। यह दृष्टिकोण प्रत्यक्षवाद की वस्तुनिष्ठता के स्थान पर मानवीय व्यक्तिपरकता को प्राथमिकता देता है।

214. (B) ए. जे. हर्बर्टसन
ए. जे. हर्बर्टसन प्रभावशाली ब्रिटिश भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने क्षेत्रीय भूगोल और भौगोलिक शिक्षा में अमूल्य योगदान दिया। वे अपनी 'प्राकृतिक क्षेत्रों' की योजना हेतु विशेष रूप से जाने जाते हैं, जिसमें उन्होंने विश्व को जलवायु और स्थलाकृति की समानताओं के आधार पर विभाजित किया था। हर्बर्टसन ने भूगोल को स्कूलों और विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित करने हेतु कार्य किया। उनका मानना था कि प्राकृतिक क्षेत्रों का अध्ययन छात्रों को मानव और पर्यावरण के बीच के जटिल अंतर्संबंधों को समझाने का सबसे प्रभावी तरीका है।

215. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भौगोलिक साहित्य के ग्रंथों और उनके लेखकों का मेल विषय के विकास को दर्शाता है। हार्टशॉर्न ने 'द नेचर ऑफ Geography' लिखकर क्षेत्रीय भूगोल को दार्शनिक आधार दिया, जबकि हम्बोल्ट ने 'कॉस्मॉस' के माध्यम से प्राकृतिक संश्लेषण प्रस्तुत किया। एलेन चर्चिल सेंपल ने 'इन्फ्लुएंस ऑफ जियोग्राफिक एनवायरनमेंट' में पर्यावरणीय नियतिवाद का समर्थन किया। हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर ने 'द जियोग्राफिकल पिवट ऑफ हिस्ट्री' के जरिए भू-राजनीति में क्रांतिकारी सिद्धांत दिया। ये सभी कृतियाँ भूगोल के विभिन्न प्रतिमानों के विकास के स्तंभ हैं।

216. (A) सांस्कृतिक भूगोल का बर्कले स्कूल
यह कथन कि "पर्यावरण कच्चा माल प्रदान करता है और मनुष्य अपनी संस्कृति से एक परिदृश्य तैयार करता है" कार्ल सॉयर द्वारा स्थापित बर्कले स्कूल के विचारों को दर्शाता है। यह विचारधारा पर्यावरणीय नियतिवाद को पूरी तरह नकारती है जहाँ प्रकृति को नियंता माना गया था। सॉयर का मानना था कि संस्कृति वह सक्रिय कारक है जो प्राकृतिक माध्यम पर अपनी छाप छोड़ती है और सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करती है। यह दृष्टिकोण मानवीय कौशल और सांस्कृतिक विविधता को भौगोलिक अध्ययन का केंद्र बनाता है।

217. (C) विवरण और वस्तु-सूची से व्याख्या और संश्लेषण की ओर।
भूगोल का अन्वेषण के युग से गंभीर शैक्षणिक विषय के रूप में परिवर्तन इस बात से चिन्हित होता है कि अब भूगोल केवल नई जगहों की सूची बनाने तक सीमित नहीं रहा। इसके स्थान पर, भूगोलवेत्ताओं ने घटनाओं के पीछे छिपे हुए 'क्यों' और 'कैसे' को समझने, भौगोलिक प्रक्रियाओं की वैज्ञानिक व्याख्या करने और विभिन्न तत्वों के बीच के संबंधों का संश्लेषण करने पर ध्यान केंद्रित किया। यह बदलाव विषय को अधिक तर्कसंगत और सैद्धांतिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम था, जिसने भूगोल को विज्ञान के रूप में स्थापित किया।

NODIA

218. (A) ज्ञान का उनका दार्शनिक वर्गीकरण, जिसमें भूगोल को एक क्षेत्र-विवरणी विज्ञान के रूप में स्थान दिया गया।
इमैनुएल कांट का भूगोल में सबसे बड़ा योगदान उनका दार्शनिक वर्गीकरण है, जहाँ उन्होंने भूगोल को एक 'कोरोलॉजिकल' विज्ञान माना। उन्होंने तर्क दिया कि जहाँ इतिहास घटनाओं का अध्ययन समय के संदर्भ में करता है, वहीं भूगोल पृथ्वी की सतह पर घटनाओं के स्थानिक वितरण का अध्ययन करता है। कांट के इस वर्गीकरण ने भूगोल को अन्य विज्ञानों के बीच स्पष्ट स्थान दिया। उनके विचारों ने रिटर और हेटनर जैसे विद्वानों को भूगोल की कार्यप्रणाली को परिभाषित करने हेतु तार्किक आधार प्रदान किया था।

219. (D) परिदृश्य में इतिहास और संस्कृति की परतें।
'अनुक्रमिक अधिभोग' की संकल्पना यह समझने हेतु उपयोगी है कि कैसे एक भौगोलिक क्षेत्र में विभिन्न मानव समुदायों के आने से वहां के परिदृश्य पर इतिहास की परतें जम जाती हैं। यह मॉडल दिखाता है कि वर्तमान परिदृश्य उन सभी समूहों की गतिविधियों का परिणाम है जिन्होंने वहां अपना प्रभाव छोड़ा है। भूगोलवेत्ता इस संकल्पना का उपयोग करके परिदृश्य के अतीत को देख सकता है और यह समझ सकता है कि पिछली संस्कृतियों के अवशेष आज भी वर्तमान की पहचान का अभिन्न अंग कैसे बने हुए हैं।

220. (B) एक एकल, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की खोज।
उत्तर-आधुनिक भूगोल की प्रमुख विशेषता है कि वह 'एकल और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता' की खोज के विचार को खारिज करता है। इसके बजाय, यह मानता है कि वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित होती है और इसे अलग समूहों द्वारा अलग तरह से देखा जाता है। उत्तर-आधुनिकतावाद मानचित्रों के विखंडन पर बल देता है ताकि उनमें छिपे शक्ति संबंधों को उजागर किया जा सके। यह 'भव्य आख्यानों' के प्रति संशय रखता है और स्थानीय विविधताओं तथा हाशिए की आवाजों को सुनने की वकालत करता है। यह व्याख्यात्मक विषय है।

221. (C) सीन और अलेक्जेंड्रिया
इरेटोस्थनीज ने पृथ्वी की परिधि मापने हेतु सीन और अलेक्जेंड्रिया नामक दो शहरों के बीच सूर्य के कोण के अंतर का उपयोग किया था। उन्होंने देखा कि ग्रीष्म संक्रांति के समय दोपहर में सीन में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती थीं, जबकि अलेक्जेंड्रिया में सूर्य का निश्चित कोण बनता था। इन दोनों शहरों के बीच की दूरी और कोण के अंतर का उपयोग करके उन्होंने एक सटीक ज्यामितीय गणना की। प्राचीन काल में पृथ्वी के आकार को वैज्ञानिक रूप से मापने का यह अद्भुत प्रयास था, जिसने गणितीय भूगोल की नींव रखी।

222. (D) मानव समाजों और उनके भौतिक वातावरण के बीच संबंध।
फ्रेडरिक रैटजेल की कृति 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' मुख्य रूप से मानव समाजों और उनके भौतिक वातावरण के बीच के संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन है। इस पुस्तक में रैटजेल ने समझाया कि कैसे पृथ्वी की सतह पर मानव समूहों का वितरण प्राकृतिक कारकों, जैसे जलवायु और स्थलाकृति, द्वारा प्रभावित होता है। यद्यपि उन्होंने पर्यावरणीय नियतिवाद की नींव रखी, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य मानव और प्रकृति के संबंधों को एक व्यवस्थित भौगोलिक ढांचे में प्रस्तुत करना था। इस कार्य ने आधुनिक मानव भूगोल को वैज्ञानिक शाखा के रूप में विकसित किया।

223. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल द्वारा 'पेय' जैसे छोटे क्षेत्रों के सूक्ष्म अध्ययन पर अत्यधिक बल दिया गया। इन क्षेत्रों में समुदायों और भौतिक पर्यावरण के बीच एक गहरा संतुलन स्थापित हो गया था। इसी संबंध को विडाल डी ला ब्लाश ने 'जॉनर डी वी' या 'जीवन पद्धति' की संकल्पना के माध्यम से स्पष्ट किया। फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं का मानना था कि इन सूक्ष्म क्षेत्रीय अध्ययनों के माध्यम से ही मानव और प्रकृति के बीच के उस जटिल और संश्लेषित रिश्ते को समझा जा सकता है जो किसी क्षेत्र की पहचान बनाता है।

224. (B) राष्ट्रीय नियोजन के लिए भूमि उपयोग की एक व्यापक वस्तु-सूची प्रदान करना।
एल. डडली स्टैम्प द्वारा संचालित भूमि उपयोग सर्वेक्षण का मुख्य लक्ष्य संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करने हेतु सटीक वैज्ञानिक डेटाबेस तैयार करना था। इस सर्वेक्षण ने ब्रिटेन की भूमि के हर टुकड़े का मानचित्रण किया ताकि स्पष्ट हो सके कि कहाँ खेती हो रही है और कहाँ बस्तियाँ हैं। इस व्यापक वस्तु-सूची ने सरकार को युद्ध के बाद के कृषि सुधारों और शहरी नियोजन की नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने में सहायता की। यह भूगोल की व्यावहारिक उपयोगिता और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रसिद्ध उदाहरण है।

225. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
डब्लू. एम. डेविस का 'अपरदन चक्र' मॉडल वास्तव में दशकों तक भू-आकृति विज्ञान का सबसे प्रभावशाली सिद्धांत रहा। इसने परिदृश्य के विकास को समझने का सरल तरीका प्रदान किया। डेविस ने भू-आकृतियों को युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था जैसे स्पष्ट चरणों में विभाजित किया, जिससे वैज्ञानिकों हेतु उनकी व्याख्या करना आसान हो गया। इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण इसकी 'सिखाने में सुगमता' और 'व्यापक अनुप्रयोग' था। यद्यपि बाद में इसकी आलोचना हुई, लेकिन इसने भू-आकृति विज्ञान को एक व्यवस्थित वैज्ञानिक आधार प्रदान करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

226. (A) मात्रात्मक क्रांति
भूगोल में इडियोग्राफिक से नोमोथेटिक दृष्टिकोण की ओर बदलाव मात्रात्मक क्रांति का प्रमुख लक्ष्य था। 1950 के दशक में भूगोलवेत्ताओं ने तर्क दिया कि विषय को केवल विशिष्ट क्षेत्रों के विवरण तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे वैज्ञानिक विधियों और गणितीय मॉडलों का उपयोग करके स्थानिक संगठन के सार्वभौमिक नियमों की खोज करनी चाहिए। इस क्रांतिकारी बदलाव ने भूगोल को वर्णनात्मक कला के बजाय एक विश्लेषणात्मक 'स्थानिक विज्ञान' के रूप में पुनर्गठित किया, जहाँ सत्यापन योग्य सिद्धांतों और भविष्यवाणियों को प्राथमिकता दी जाने लगी थी।

Click Here to Buy book on Amazon

227. (C) मानवतावादी भूगोल
बचपन के घर के प्रति व्यक्तिपरक भावनाओं और स्मृतियों का अध्ययन मानवतावादी भूगोल का उदाहरण है। यह दृष्टिकोण केवल भौतिक भवन का अध्ययन नहीं करता, बल्कि उस 'अर्थ' और 'लगाव' पर ध्यान केंद्रित करता है जो एक व्यक्ति उस स्थान के साथ महसूस करता है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता 'स्थान की भावना' को समझने हेतु गुणात्मक विधियों का उपयोग करते हैं। यह अध्ययन मनुष्यों को केवल सांख्यिकीय आंकड़ों के रूप में नहीं, बल्कि भावनाओं से युक्त प्राणियों के रूप में देखता है, जिनका अपने पर्यावरण के साथ एक गहरा रिश्ता होता है।

228. (D) आलोचनात्मक मानव भूगोल।
आलोचनात्मक मानव भूगोल की यह केंद्रीय अंतर्दृष्टि है कि अंतरिक्ष और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। इसका तात्पर्य है कि सामाजिक संबंध केवल अंतरिक्ष में 'घटित' नहीं होते, बल्कि वे सक्रिय रूप से हमारे आसपास के स्थानों का निर्माण करते हैं। साथ ही, वे स्थान और वहां की भौतिक संरचनाएं भी हमारे सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती हैं। यह दृष्टिकोण 'अंतरिक्ष' को केवल एक निष्क्रिय मंच नहीं, बल्कि एक गतिशील सामाजिक उत्पाद मानता है जो शक्ति संघर्षों और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं द्वारा लगातार बदला और बनाया जाता है।

229. (C) टॉलेमी
क्लॉडियस टॉलेमी की अक्सर 'आरामकुर्सी भूगोलवेत्ता' के रूप में आलोचना की जाती है क्योंकि उन्होंने अपने कार्यों का निर्माण स्वयं की यात्राओं के बजाय मुख्य रूप से पुराने अभिलेखों और यात्रियों के विवरणों से जानकारी संकलित करके किया था। उनकी गणनाओं में कई त्रुटियाँ थीं, जैसे हिंद महासागर को बंद दिखाना, जो प्रत्यक्ष अनुभव की कमी को दर्शाती हैं। यद्यपि उनके गणितीय सिद्धांत महत्वपूर्ण थे, लेकिन उनकी कार्यप्रणाली ने उन्हें संकलनकर्ता अधिक बना दिया था। उन्होंने धरातलीय वास्तविकता के बजाय पुस्तकालय में उपलब्ध स्रोतों पर अधिक विश्वास किया।

230. (B) एक क्षेत्र-विवरणी विज्ञान के रूप में भूगोल की कार्यप्रणाली और तार्किक संरचना।
जर्मन भूगोलवेत्ता अल्फ्रेड हेटनर का प्राथमिक योगदान भूगोल को सुदृढ़ दार्शनिक आधार प्रदान करने में था। उन्होंने भूगोल को 'कोरोलॉजिकल' विज्ञान के रूप में परिभाषित किया, जिसका उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर तत्वों के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करना है। हेटनर ने जोर दिया कि भूगोलवेत्ता का कार्य क्षेत्रों की विशिष्टता के पीछे छिपे तर्कों को समझना है। उनके इन विचारों ने भूगोल को स्वतंत्र शैक्षणिक विषय के रूप में अपनी तार्किक संरचना और अध्ययन की सीमाओं को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी।

231. (D) नियतिवाद और संभववाद।
फ्रांसीसी भूगोल में 'मिलियू' की संकल्पना नियतिवाद और संभववाद के बीच की ऐतिहासिक बहस के केंद्र में रही है। 'मिलियू' का अर्थ वह वातावरण है जिसमें मनुष्य रहता है। नियतिवादियों ने इसे नियंत्रक शक्ति माना जो मानव व्यवहार तय करती है। इसके विपरीत, संभववादियों ने तर्क दिया कि 'मिलियू' केवल संभावनाएं प्रदान करता है और मनुष्य अपनी संस्कृति से उन विकल्पों का उपयोग करता है। इस संकल्पना ने यह समझने में सहायता की कि कैसे मानव समाज और पर्यावरण एक-दूसरे के साथ निरंतर अंतःक्रिया करते हैं।

NODIA

232. (A) भू-आकृति विज्ञान और पर्यावरणीय नियतिवाद पर गहरा बल।
प्रारंभिक अमेरिकी भूगोल की विरासत को भू-आकृति विज्ञान और पर्यावरणीय नियतिवाद के प्रति उसके गहरे झुकाव से पहचाना जा सकता है। डब्लू. एम. डेविस ने भौतिक भूगोल को शक्तिशाली बनाया, जबकि एलेन सेंपल और हंटिंगटन ने नियतिवाद को चरम पर पहुँचाया। उस दौर में भूगोलवेत्ताओं का मानना था कि पृथ्वी की सतह का भौतिक स्वरूप और जलवायु ही मानव इतिहास की दिशा तय करती है। यद्यपि बाद में कार्ल सॉयर ने इस विचार को चुनौती दी, लेकिन शुरुआती अमेरिकी भूगोल मुख्य रूप से प्रकृति के कठोर प्रभाव के अध्ययन पर केंद्रित था।

233. (C) विस्तार और विषय वस्तु
भौतिक और मानव भूगोल का द्वैतवाद विषय के विस्तार और उसकी मूल विषय वस्तु को लेकर होने वाली बहस है। एक पक्ष का मानना है कि भूगोल को केवल पृथ्वी की प्राकृतिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन तक सीमित रहना चाहिए। दूसरा पक्ष तर्क देता है कि भूगोल का मुख्य केंद्र मानवीय गतिविधियाँ और संस्कृतियाँ होनी चाहिए। यह द्वैतवाद सवाल उठाता है कि क्या इन्हें एक एकीकृत विषय के रूप में पढ़ना चाहिए जो पृथ्वी पर मानव और प्रकृति के संबंधों का समग्र विश्लेषण करता हो।

234. (A) प्रतिमान विस्थापन
थॉमस कुहन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में 'प्रतिमान विस्थापन' की क्रांतिकारी संकल्पना प्रस्तुत की। उनके अनुसार, विज्ञान का विकास अचानक आने वाले बड़े बदलावों से होता है। जब प्रचलित वैज्ञानिक प्रतिमान विसंगतियों की व्याख्या करने में विफल होता है, तो विषय में संकट पैदा होता है और नया प्रतिमान जन्म लेता है जो पुरानी मान्यताओं को बदल देता है। भूगोल में मात्रात्मक क्रांति और मानवतावादी भूगोल का आगमन कुहन की इसी संकल्पना के प्रमुख उदाहरण हैं, जिन्होंने विषय की दिशा और विधियों को पूरी तरह बदल दिया था।

235. (A) केवल I और II
भूगोल में प्रत्यक्षवाद की अत्यधिक सांख्यिकीय प्रकृति के विरोध में व्यवहारवाद और मानवतावाद जैसे दृष्टिकोण उभरे। व्यवहारवाद ने तर्क दिया कि मानवीय व्यवहार मनोवैज्ञानिक धारणाओं से संचालित होता है। मानवतावाद ने व्यक्तिपरक अनुभव और मानवीय चेतना के महत्व को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। इसके विपरीत, पर्यावरणीय नियतिवाद तो मात्रात्मक क्रांति से बहुत पहले का पुराना प्रतिमान था। अतः केवल व्यवहारवाद और मानवतावाद ही प्रत्यक्षवाद की प्रमुख आलोचनाओं के रूप में उभरे थे। ये दृष्टिकोण मानवीय पक्ष को प्राथमिकता देते हैं।

236. (B) इसे बनाने वाले लोगों के विचार और इरादे।
आदर्शवाद का परिप्रेक्ष्य मानता है कि पृथ्वी की सतह पर जो भी मानवीय परिदृश्य हमें दिखाई देते हैं, वे उन लोगों के विचारों की एक ठोस अभिव्यक्ति हैं जिन्होंने उन्हें बनाया है। इसलिए, एक आदर्शवादी भूगोलवेत्ता तर्क देता है कि किसी बस्ती के विकास की व्याख्या केवल भौतिक कारकों से नहीं की जा सकती। उसे समझने हेतु ऐतिहासिक परिस्थितियों और निर्णय लेने वालों की मानसिक प्रक्रियाओं का पुनर्निर्माण अनिवार्य है। यह दृष्टिकोण भूगोल को मानवीय मस्तिष्क और उद्देश्यों के गहराई से जुड़ा हुआ विषय मानता है।

237. (C) लुसिएन फेब्रे
यह प्रभावशाली कथन लुसिएन फेब्रे का है, जो संभववाद के मुखर समर्थकों में से एक थे। उनके अनुसार, प्रकृति मनुष्य हेतु कोई अनिवार्य कानून नहीं बनाती, बल्कि वह केवल संभावनाओं का एक विशाल क्षेत्र प्रस्तुत करती है। मनुष्य अपनी बुद्धि और संस्कृति के आधार पर इन संभावनाओं में से चुनाव करने का अधिकार रखता है। यह विचार पर्यावरणीय नियतिवाद पर प्रहार करता है, जहाँ मनुष्य को प्रकृति का लाचार दास माना गया था। फेब्रे के इस दर्शन ने मानवीय सृजनात्मक शक्ति को भौगोलिक अध्ययन के केंद्र में स्थापित किया।

238. (D) ऑगस्टन युग का एक ऐतिहासिक-भौगोलिक विश्वकोश।
स्ट्रैबो द्वारा रचित सत्रह खंडों की 'जियोग्राफिया' ऑगस्टन युग के भौगोलिक और ऐतिहासिक ज्ञान का विशाल विश्वकोश है। यह कृति अत्यंत मूल्यवान है क्योंकि इसमें स्ट्रैबो ने रोमन साम्राज्य के तत्कालीन ज्ञात विश्व का न केवल भौतिक, बल्कि वहां के निवासियों और इतिहास का भी विस्तृत विवरण दिया है। स्ट्रैबो ने भूगोल को 'प्रशासकीय विज्ञान' माना जो शासकों हेतु उपयोगी हो। उनका यह कार्य प्राचीन विश्व के क्षेत्रीय भूगोल का सबसे व्यापक दस्तावेज़ है, जो विवरण प्रधान भौगोलिक परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

239. (A) टॉलेमी
भूगोल और कोरोग्राफी के बीच के अंतर को पहली बार व्यवस्थित ढंग से क्लॉडियस टॉलेमी ने स्पष्ट किया था। टॉलेमी के अनुसार, भूगोल पूरी पृथ्वी का व्यापक चित्रण है जो गणितीय सिद्धांतों पर आधारित होता है। इसके विपरीत, कोरोग्राफी किसी विशिष्ट छोटे स्थान का सूक्ष्म विवरण है, जिसमें वहां के स्थानीय लक्षणों और मानवीय पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है। उन्होंने भूगोल की तुलना मानव शरीर के चित्रण से और कोरोग्राफी की तुलना व्यक्तिगत अंगों के सूक्ष्म विवरण से की थी। यह अंतर आज भी क्षेत्रीय भूगोल में प्रासंगिक है।

240. (B) व्यवस्थित भूगोल; क्षेत्रीय भूगोल
हम्बोल्ट और रिटर के बीच का पद्धतिगत अंतर आधुनिक भूगोल की दो मुख्य शाखाओं को परिभाषित करता है। अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट ने 'व्यवस्थित भूगोल' पर ध्यान केंद्रित किया, जहाँ उन्होंने पूरी दुनिया के संदर्भ में जलवायु या चुंबकत्व जैसी घटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। इसके विपरीत, कार्ल रिटर ने 'क्षेत्रीय भूगोल' का समर्थन किया, जहाँ उन्होंने पृथ्वी को क्षेत्रीय इकाइयों में बांटकर वहां के तत्वों के संश्लेषित संबंधों का अध्ययन किया। इन कार्यों ने भूगोल को संतुलित शैक्षणिक विषय के रूप में स्थापित करने की आधारशिला रखी थी।

241. (B) संभववाद
फ्रांसीसी भूगोल स्कूल द्वारा प्रतिपादित 'जॉनर डी वी' या 'जीवन पद्धति' की संकल्पना संभववाद के दर्शन की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह विचार बल देता है कि मानवीय समुदाय अपनी संस्कृति और तकनीकी ज्ञान के माध्यम से पर्यावरण के साथ विशिष्ट सामंजस्य विकसित करते हैं। यह विचारधारा मानती है कि भौतिक वातावरण मनुष्य पर कठोर नियंत्रण नहीं थोपता, बल्कि मनुष्य अपनी बुद्धि से प्रकृति द्वारा दी गई संभावनाओं में से चुनाव करता है। 'जॉनर डी वी' मानवीय रचनात्मकता और सांस्कृतिक अनुकूलन को भौगोलिक अध्ययन का केंद्र बनाता है।

242. (A) भू-राजनीति
हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर द्वारा प्रस्तुत 'हृदयस्थल सिद्धांत' भू-राजनीति का अत्यंत महत्वपूर्ण मॉडल है। इस सिद्धांत ने वैश्विक शक्ति संतुलन का विश्लेषण थल शक्ति और समुद्री शक्ति के बीच के स्थानिक संघर्ष के रूप में किया। मैकिंडर ने यूरेशिया के मध्य भाग को 'हृदयस्थल' के रूप में चिन्हित किया और इसे वैश्विक प्रभुत्व की कुंजी माना। उनके इस विचार ने रणनीतिक भूगोल और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन को नई दिशा दी। यह सिद्धांत आज भी विश्लेषण हेतु उपयोग किया जाता है कि भौगोलिक अवस्थिति राष्ट्र की शक्ति को कैसे निर्धारित करती है।

243. (C) सांस्कृतिक-ऐतिहासिक प्रक्रियाएं।
कार्ल सॉयर और बर्कले स्कूल का कार्य भूगोल में बड़ा वैचारिक परिवर्तन लेकर आया। उन्होंने भूगोलवेत्ताओं का ध्यान पर्यावरणीय प्रभावों से हटाकर उन 'सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं' की ओर मोड़ा जो परिदृश्य को आकार देती हैं। सॉयर का तर्क था कि एक परिदृश्य केवल प्राकृतिक कारकों का परिणाम नहीं होता, बल्कि वह मानव संस्कृति के निरंतर हस्तक्षेप से निर्मित 'सांस्कृतिक परिदृश्य' होता है। इस दृष्टिकोण ने भूगोल में इतिहास और मानवविज्ञान के तत्वों को शामिल किया, जिससे यह समझने में सहायता मिली कि मानव समाज अपनी छाप कैसे छोड़ते हैं।

244. (D) पृथ्वी की सतह के परिवर्तनशील चरित्र का तर्कसंगत विवरण प्रदान करना।
रिचर्ड हार्टशॉर्न ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में भूगोल को 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' का विज्ञान माना। उनका मुख्य तर्क था कि भूगोल का प्राथमिक उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर क्षेत्रों के बीच मौजूद विविधताओं का तर्कसंगत और व्यवस्थित विवरण प्रदान करना है। उन्होंने इसे 'इडियोग्राफिक' दृष्टिकोण कहा। हार्टशॉर्न के अनुसार, भूगोलवेत्ता का मुख्य गौरव उन अद्वितीय क्षेत्रीय संयोजनों को समझना है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों को उनका विशिष्ट चरित्र प्रदान करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण दशकों तक क्षेत्रीय भूगोल की आधारशिला बना रहा और विवरणात्मक शोध को प्रोत्साहित किया।

Downloaded from www.pdf.tube

245. (C) व्यवहारवाद
व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य मानता है कि मनुष्य हमेशा पूर्णतः तर्कसंगत तरीके से व्यवहार नहीं करता। इसके बजाय, यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि व्यक्तिगत लोग अपने पर्यावरण के अधूरे ज्ञान के आधार पर स्थानिक निर्णय कैसे लेते हैं। व्यवहारवादी भूगोलवेत्ता अध्ययन करते हैं कि कैसे हमारा मस्तिष्क सूचनाओं का प्रसंस्करण करता है और कैसे हमारे 'मानसिक मानचित्र' हमारे वास्तविक व्यवहार को निर्धारित करते हैं। यह दृष्टिकोण मानवीय क्रियाओं को समझने हेतु मनोविज्ञान और भूगोल के बीच सेतु का कार्य करता है। यह सांख्यिकीय मॉडलों की सीमाओं को उजागर करता है।

246. (B) भौगोलिक वास्तविकता भाषा और ज्ञान की प्रणालियों के माध्यम से निर्मित और बनाए रखी जाती है।
उत्तर-आधुनिकतावादी विमर्श पर बल देने का तात्पर्य है कि हम दुनिया को जैसे देखते हैं, वह कभी निष्पक्ष नहीं होता। भौगोलिक वास्तविकता भाषा और ज्ञान की उन प्रणालियों द्वारा निर्मित होती है जिन्हें समाज में 'सत्य' मान लिया जाता है। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता तर्क देते हैं कि भौगोलिक ज्ञान तटस्थ नहीं होता, बल्कि वह हमेशा शक्ति संबंधों और वैचारिक एजेंडे से जुड़ा होता है। यह दृष्टिकोण स्थापित भौगोलिक सत्यों को चुनौती देने और उनके छिपे हुए अर्थों को समझने पर जोर देता है। यह ज्ञान की राजनीति को उजागर करता है।

247. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
यह सत्य है कि जर्मन स्कूल ने भूगोल को आधुनिक शैक्षणिक विषय के रूप में स्थापित करने और उसे दार्शनिक आधार देने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। यद्यपि, यह कथन गलत है कि फ्रांसीसी स्कूल का विश्वविद्यालय शिक्षा पर कम प्रभाव था। इसके विपरीत, विडाल डी ला ब्लाश के नेतृत्व में फ्रांसीसी स्कूल ने अत्यंत प्रभावशाली विश्वविद्यालय परंपरा विकसित की, जिसने विस्तृत क्षेत्रीय मोनोग्राफ और संभववाद के माध्यम से भूगोल को नई मानवीय गरिमा दी। फ्रांसीसी भूगोल का प्रभाव इतना गहरा था कि उसने विश्व भर में क्षेत्रीय अध्ययन के तौर-तरीकों को बदल दिया था।

248. (A) मानवतावादी भूगोल
'स्थान' को केवल अंतरिक्ष में एक बिंदु के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय अर्थों और भावनाओं के केंद्र के रूप में देखना मानवतावादी भूगोल की मुख्य पहचान है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता तर्क देते हैं कि एक भौगोलिक स्थल तब 'स्थान' बनता है जब मनुष्य उसके साथ स्मृतियाँ और पहचान जोड़ते हैं। यह दृष्टिकोण 'स्थान की भावना' को समझने हेतु व्यक्तिपरक अनुभवों को प्राथमिकता देता है। यह प्रत्यक्षवाद के उस यांत्रिक नजरिए के विरुद्ध प्रतिक्रिया है जहाँ दुनिया को केवल मापे जाने वाले निर्देशांकों का समूह माना गया था।

249. (C) नोमोथेटिक बनाम इडियोग्राफिक
शेफर-हार्टशॉर्न बहस भौगोलिक चिंतन के इतिहास में 'नोमोथेटिक बनाम इडियोग्राफिक' दृष्टिकोणों के बीच संघर्ष का उत्कृष्ट उदाहरण है। हार्टशॉर्न ने इडियोग्राफिक दृष्टिकोण का बचाव किया, जिसमें भूगोल का लक्ष्य अद्वितीय क्षेत्रों का विवरण देना था। इसके विपरीत, शेफर ने नोमोथेटिक दृष्टिकोण की वकालत की, जहाँ भूगोल को वैज्ञानिक नियमों की खोज करने वाला 'स्थानिक विज्ञान' बनना चाहिए। इस बहस ने भूगोल की मूल प्रकृति पर सवाल खड़े किए और अंततः विषय को वर्णनात्मक क्षेत्रीय अध्ययन की पारंपरिक जड़ों से निकालकर विश्लेषणात्मक दिशा की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

250. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
भूगोल के विभिन्न परिप्रेक्ष्य अपनी विशिष्ट संकल्पनाओं के माध्यम से विषय को गहराई प्रदान करते हैं। व्यवहारवाद 'मानसिक मानचित्रों' के जरिए मानवीय संज्ञान का अध्ययन करता है, जबकि मानवतावाद 'टोपोफिलिया' जैसी संकल्पनाओं के माध्यम से स्थान के प्रति भावनात्मक लगाव को समझाता है। उत्तर-आधुनिकतावाद 'विखंडन' की पद्धति अपनाकर स्थापित भौगोलिक सत्यों की वैचारिक जड़ों को कुरेदता है। अंत में, प्रत्यक्षवाद 'स्थानिक नियमों' की खोज करके भूगोल को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। इन दृष्टिकोणों का समन्वय भूगोल को अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी सामाजिक विज्ञान बनाता है।

251. (D) पृथ्वी और ब्रह्मांड की प्रकृति और ज्यामिति।
थेल्स और एनेक्सीमेंडर जैसे प्रारंभिक यूनानी विद्वानों की भौगोलिक जिज्ञासा मुख्य रूप से ब्रह्मांड विज्ञान और गणितीय भूगोल के क्षेत्र में थी। वे पृथ्वी की उत्पत्ति और ब्रह्मांड में उसकी स्थिति को समझने हेतु उत्सुक थे। उन्होंने ज्यामितीय सिद्धांतों का उपयोग करके पृथ्वी का मानचित्रण करने और खगोलीय पिंडों की गति के आधार पर भौगोलिक गणनाएं करने का प्रयास किया। उनके ये प्रारंभिक कार्य खगोलीय भूगोल के विकास की आधारशिला थे, जो प्रकृति को मिथकों के स्थान पर तर्क और मापन के माध्यम से समझने की वैज्ञानिक परंपरा को दर्शाते हैं।

252. (B) फ्रेडरिक रैटजेल
फ्रेडरिक रैटजेल ने अपनी कृति 'पोलिटिशे जियोग्राफि' में राज्य को एक 'जीवित जीव' के रूप में देखने का विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने तर्क दिया कि जिस प्रकार जीव को जीवित रहने हेतु ऊर्जा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार राष्ट्र को फलने-फूलने हेतु क्षेत्रीय विस्तार की आवश्यकता होती है। इसी विचार से उन्होंने 'लेबेन्सराम' की संकल्पना विकसित की। रैटजेल का मानना था कि राज्य का अस्तित्व उसके भौगोलिक स्थान से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। उनके इन विचारों ने आधुनिक भू-राजनीति और साम्राज्यवादी नीतियों को बहुत अधिक प्रभावित किया था।

253. (C) सांस्कृतिक भूगोल का बर्कले स्कूल
कार्ल सॉयर के नेतृत्व में सांस्कृतिक भूगोल का बर्कले स्कूल परिदृश्य को एक 'पाठ' के रूप में पढ़ने की विचारधारा का समर्थन करता है। इस स्कूल का मानना है कि हमारे आसपास का दृश्य जगत—जैसे खेत, घर और मंदिर—केवल भौतिक संरचनाएं नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक मूल्यों और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के प्रतीक हैं। भूगोलवेत्ता इन प्रतीकों का विश्लेषण करके उस समाज की सोच और उसकी जीवन शैली को समझ

NODIA

सकता है। यह दृष्टिकोण परिदृश्य के पीछे छिपे अर्थों को उजागर करने हेतु एक व्याख्यात्मक पद्धति अपनाता है।

254. (D) भौगोलिक ज्ञान और पूछताछ को व्यवस्थित करने के लिए।
व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय भूगोल का द्वैतवाद इस प्रश्न पर आधारित है कि भौगोलिक ज्ञान को सबसे बेहतर तरीके से कैसे संगठित किया जा सकता है। व्यवस्थित भूगोल एक विशेष घटना को चुनकर पूरी दुनिया के संदर्भ में उसका अध्ययन करता है ताकि सामान्य नियमों को समझा जा सके। इसके विपरीत, क्षेत्रीय भूगोल पृथ्वी को विशिष्ट इकाइयों में बांटकर प्रत्येक स्थान के भीतर मौजूद सभी तत्वों के अंतर्संबंधों का समग्र विश्लेषण करता है। ये दोनों पद्धतियां भूगोलवेत्ताओं को जानकारी को व्यवस्थित करने और पृथ्वी की जटिलता को अलग-अलग स्तरों पर समझने में सहायता करती हैं।

255. (A) संभववाद
संभववाद वह भौगोलिक दर्शन है जो मानता है कि भौतिक पर्यावरण मनुष्य हेतु केवल एक निष्क्रिय मंच नहीं है, बल्कि वह संभावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। इस विचारधारा के अनुसार, मनुष्य अपनी बुद्धि और तकनीकी कौशल के आधार पर इन संभावनाओं में से चुनाव करने हेतु स्वतंत्र है। यह दर्शन पर्यावरणीय नियतिवाद के उस विचार को चुनौती देता है जहाँ मनुष्य को प्रकृति के अधीन माना गया था। संभववाद के अनुसार, मनुष्य अपनी रचनात्मकता से परिदृश्य को रूपांतरित करने में सक्षम है, जो मानवीय स्वायत्तता को सिद्ध करता है।

256. (B) क्षेत्रीय विवरण; स्थानिक विज्ञान
20वीं सदी के मध्य में भूगोल में हुआ प्रमुख प्रतिमान विस्थापन पारंपरिक 'क्षेत्रीय विवरण' से हटकर आधुनिक 'स्थानिक विज्ञान' की ओर बढ़ने का प्रतिनिधित्व करता है। पहले भूगोलवेत्ता मुख्य रूप से विशिष्ट क्षेत्रों की अद्वितीय विशेषताओं का वर्णनात्मक अध्ययन करते थे। मात्रात्मक क्रांति के साथ, विषय का ध्यान स्थानिक प्रतिरूपों को नियंत्रित करने वाले वैज्ञानिक नियमों की खोज की ओर स्थानांतरित हो गया। इस बदलाव ने भूगोल को अधिक सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक बनाया, जहाँ अब केवल वर्णन के स्थान पर घटनाओं की वैज्ञानिक व्याख्या और भविष्यवाणी को महत्व दिया जाने लगा।

257. (B) पॉल विडाल डी ला ब्लाश
पॉल विडाल डी ला ब्लाश को आधुनिक फ्रांसीसी भूगोल का निर्विवाद संस्थापक माना जाता है। उन्होंने न केवल संभववाद के दर्शन को मजबूती दी, बल्कि ऐसी शैक्षणिक परंपरा का निर्माण किया जिसने मानवीय क्रियाशीलता को केंद्र में रखा। विडाल ने 'पेय' के सूक्ष्म अध्ययन और 'जॉनर डी वी' की संकल्पना के माध्यम से समझाया कि कैसे मनुष्य और पर्यावरण सामंजस्य बिठाकर अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान बनाते हैं। उनके नेतृत्व में फ्रांसीसी भूगोल ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई, जहाँ विवरणात्मक क्षेत्रीय संश्लेषण और मानवीय संवेदनशीलता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी।

258. (A) रिचर्ड हार्टशॉर्न
भूगोल को 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' के अध्ययन के रूप में परिभाषित करने का मुख्य श्रेय रिचर्ड हार्टशॉर्न को जाता है। उन्होंने अपनी प्रभावशाली पुस्तक 'द नेचर ऑफ Geography' में तर्क दिया कि भूगोल का प्राथमिक उद्देश्य पृथ्वी की सतह के परिवर्तनशील और विविध चरित्र को समझना है। हार्टशॉर्न के अनुसार, भूगोलवेत्ता को उन सभी तत्वों के अनूठे संयोजन का विश्लेषण करना चाहिए जो एक स्थान को दूसरे से विशिष्ट बनाते हैं। उनकी यह परिभाषा कई दशकों तक भूगोलवेत्ताओं हेतु मार्गदर्शक बनी रही, जिसने क्षेत्रीय भूगोल को विषय के मूल उद्देश्य के रूप में स्थापित किया।

259. (C) गुणात्मक और घटनावादी
मानवतावादी भूगोल की प्रमुख विशेषता व्यक्तिपरक मानवीय अनुभवों और अर्थों को समझने हेतु 'गुणात्मक और घटनावादी' विधियों का उपयोग करना है। यह दृष्टिकोण प्रत्यक्षवाद की सांख्यिकीय तकनीकों को पर्याप्त नहीं मानता, क्योंकि वे मानवीय भावनाओं और चेतना की गहराई को पकड़ने में विफल रहती हैं। मानवतावादी भूगोलवेत्ता गहन साक्षात्कार और व्यक्तिगत वृत्तांतों का उपयोग करते हैं ताकि वे जान सकें कि लोग 'स्थान' के साथ कैसा जुड़ाव महसूस करते हैं। यह पद्धति भूगोल में मानवीय गरिमा और व्यक्तिपरकता को वैज्ञानिक शुष्कता के ऊपर वरीयता प्रदान करती है।

260. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उत्तर-आधुनिक भूगोल वास्तव में उन सभी 'मेटा-नैरेटिव्स' या भव्य सिद्धांतों का कड़ा आलोचक है जो दुनिया की जटिलताओं को एक ही नियम या विचारधारा के माध्यम से समझाने का दावा करते हैं। उत्तर-आधुनिकतावादियों का तर्क है कि ये बड़े सिद्धांत अक्सर अत्यधिक सरल होते हैं और वे स्थानीय विविधताओं तथा उन हाशिए पर मौजूद समूहों की आवाजों को दबा देते हैं जो इन सांचों में फिट नहीं बैठते। इसलिए, यह विचारधारा विखंडन और बहुलता पर जोर देती है, जहाँ प्रत्येक स्थानीय अनुभव और वैकल्पिक दृष्टिकोण को समान सम्मान दिया जाता है।

261. (C) प्यूटिंगर टेबल, जो एक योजनाबद्ध सड़क मानचित्र है।
मानचित्रकला में रोमन योगदान का अद्भुत उदाहरण 'प्यूटिंगर टेबल' है। यह एक अत्यंत लंबा और योजनाबद्ध मानचित्र है जो रोमन साम्राज्य के विशाल सड़क नेटवर्क और शहरों को दर्शाता है। यह आधुनिक मेट्रो मानचित्रों की तरह एक व्यावहारिक उपकरण था, जिसका उद्देश्य यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का सही क्रम बताना था। यह रोमन भूगोलवेत्ताओं की व्यावहारिक सोच का प्रतीक है, जिन्होंने भौगोलिक जानकारी को साम्राज्य के कुशल संचालन हेतु एक उपयोगी तकनीक में बदल दिया था। यह उनकी प्रशासनिक कुशलता को भी दर्शाता है।

262. (B) अल्फ्रेड हेटनर, कांट के वर्गीकरण का अनुसरण करते हुए।
जर्मन भूगोलवेत्ता अल्फ्रेड हेटनर ने इमैनुएल कांट के दार्शनिक वर्गीकरण का अनुसरण करते हुए भूगोल को एक 'इडियोग्राफिक' और 'कोरोलॉजिकल' विज्ञान के रूप में

Click Here to Buy book on Amazon

स्थापित किया। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य कार्य पृथ्वी की सतह पर मौजूद क्षेत्रों की विशिष्टता और वहां के तत्वों के क्षेत्रीय समन्वय का अध्ययन करना है। हेटनर का मानना था कि भूगोल को केवल सामान्य नियमों की खोज तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे प्रत्येक स्थान के अपने विशेष चरित्र को उजागर करना चाहिए। उनके इस दृष्टिकोण ने क्षेत्रीय भूगोल को स्वतंत्र शैक्षणिक पहचान प्रदान की।

263. (D) जॉनर डी वी
जब एक भूगोलवेत्ता आल्प्स की किसी घाटी में रहने वाले समुदाय के पारंपरिक और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के तरीके का अध्ययन करता है, तो वह वास्तव में विडाल डी ला ब्लाश की 'जॉनर डी वी' संकल्पना की जांच कर रहा होता है। यह संकल्पना इस बात पर केंद्रित है कि कैसे कोई समुदाय अपने विशिष्ट भौतिक वातावरण की संभावनाओं का उपयोग करके अपनी संस्कृति और तकनीकी कौशल का संगम विकसित करता है। यह अध्ययन मानव और प्रकृति के बीच के उस संतुलन को उजागर करता है जो सदियों की निरंतर अंतःक्रिया के बाद एक विशिष्ट जीवन शैली के रूप में उभरता है।

264. (A) ब्रिटिश; शहरी
पैट्रिक गेडिस द्वारा प्रस्तुत 'कनर्बेशन' की संकल्पना ब्रिटिश भूगोल स्कूल से शहरी भूगोल के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान थी। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग उन विशाल शहरी क्षेत्रों को परिभाषित करने हेतु किया जो कई शहरों और कस्बों के आपस में जुड़ने के परिणामस्वरूप निर्मित होते हैं। गेडिस ने न केवल शहरों के भौतिक विस्तार को देखा, बल्कि उनके सामाजिक पहलुओं पर भी बल दिया। उनकी इस संकल्पना ने आधुनिक शहरी नियोजन और नगरीय विकास की प्रवृत्तियों को समझने हेतु नया दृष्टिकोण प्रदान किया, जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

265. (C) हृदयस्थल
हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर ने अपने भू-राजनीतिक सिद्धांत में जिस "इतिहास की भौगोलिक धुरी" शब्द का प्रयोग किया था, उसे ही उन्होंने बाद में 'हृदयस्थल' के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार, यह यूरेशिया के मध्य का वह विशाल भूभाग है जो किसी भी समुद्री शक्ति की पहुँच से बाहर है और अपार संसाधनों से भरा हुआ है। मैकिंडर का मानना था कि इस धुरी पर नियंत्रण प्राप्त करने वाली शक्ति पूरी दुनिया की राजनीति पर प्रभुत्व स्थापित करने की क्षमता रखती है। यह संकल्पना थल शक्ति की सामरिक श्रेष्ठता को सिद्ध करने हेतु रणनीतिक तर्क थी।

266. (A) कार्ल ओ. सॉयर
यह विचार कि किसी परिदृश्य को समझने हेतु उस संस्कृति को समझना अनिवार्य है जिसने उसे आकार दिया है, कार्ल ओ. सॉयर के भौगोलिक दर्शन का मूल आधार है। सॉयर ने 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की संकल्पना के माध्यम से तर्क दिया कि प्रकृति केवल एक मंच प्रदान करती है, जबकि संस्कृति वह सक्रिय शक्ति है जो समय के साथ उसे रूपांतरित करती है। उनके अनुसार, भूगोलवेत्ता का कार्य उन मानवीय और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण करना है जिनके माध्यम से संस्कृतियों ने अपनी छाप पृथ्वी पर छोड़ी है। इस दृष्टिकोण ने भूगोल में मानवीय रचनात्मकता को स्थापित किया।

267. (D) नियम-खोजने वाला या क्षेत्र-विवरणी देने वाला।
हार्टशॉर्न और शेफर के बीच का मुख्य पद्धतिगत संघर्ष इस बात पर था कि भूगोल की प्रकृति क्या होनी चाहिए—'नियम-खोजने वाली' (नोमोथेटिक) या 'क्षेत्र-विवरणी देने वाली' (इडियोग्राफिक)। हार्टशॉर्न का मानना था कि भूगोल का मुख्य गौरव क्षेत्रों की विशिष्टता का वर्णन करने में है। इसके विपरीत, फ्रेड के. शेफर ने इस 'अपवादवाद' को खारिज किया और तर्क दिया कि भूगोल को अन्य विज्ञानों की तरह सार्वभौमिक नियमों की खोज करनी चाहिए। इस बहस ने भूगोल को वर्णनात्मक जड़ों से निकालकर विश्लेषणात्मक 'स्थानिक विज्ञान' बनाने की दिशा में निर्णायक मोड़ प्रदान किया था।

268. (B) घटनावाद
भूगोल में यह विचार कि शोधकर्ताओं को 'जीवन-जगत' को समझने हेतु अपनी पूर्वधारणाओं को त्याग देना चाहिए, 'घटनावाद' की दार्शनिक पद्धति से लिया गया है। घटनावाद मानता है कि वास्तविकता का अनुभव व्यक्तिपरक होता है और उसे वैसे ही समझना चाहिए जैसे वह अनुभव करने वाले व्यक्ति को दिखाई देती है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता इस पद्धति का उपयोग यह जानने हेतु करते हैं कि लोग दैनिक जीवन में 'स्थान' के साथ कैसा भावनात्मक जुड़ाव रखते हैं। यह दृष्टिकोण प्रत्यक्षवाद की वस्तुनिष्ठता के स्थान पर मानवीय चेतना और जीवंत अनुभव को भौगोलिक ज्ञान का आधार बनाता है।

269. (C) उत्तर-आधुनिक भूगोल
डेरिडा और फौकॉल्ट जैसे फ्रांसीसी विचारकों के कार्यों ने उत्तर-आधुनिक भूगोल पर गहरा प्रभाव डाला है। डेरिडा की 'विखंडन' पद्धति और फौकॉल्ट के 'शक्ति-ज्ञान-विमर्श' संबंधी सिद्धांतों ने भूगोलवेत्ताओं को भौगोलिक पाठों के छिपे अर्थों को समझने में सहायता की। उन्होंने उजागर किया कि भौगोलिक ज्ञान कभी तटस्थ नहीं होता, बल्कि वह हमेशा शक्ति संबंधों को बनाए रखने हेतु निर्मित किया जाता है। इन दार्शनिकों के प्रभाव के कारण, भूगोल अब केवल स्थानों का अध्ययन नहीं रहा, बल्कि यह प्रतिनिधित्व और वैचारिक संघर्षों का एक आलोचनात्मक क्षेत्र बन गया है।

270. (D) I, II, और III
भूगोल में द्वैतवाद विषय के विकास की विभिन्न वैचारिक लड़ाइयों को दर्शाते हैं। भौतिक बनाम मानव भूगोल विषय की मूल विषय वस्तु पर सवाल उठाता है, जबकि व्यवस्थित बनाम क्षेत्रीय भूगोल अध्ययन की कार्यप्रणाली से संबंधित है। यद्यपि आधुनिक भूगोल में इन विभाजनों को अब संकुचित माना जाता है। कई समकालीन भूगोलवेत्ता इन द्वैतवादों को 'झूठे विकल्पों' के रूप में देखते हैं और एकीकृत दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि पृथ्वी की जटिलताओं को समझने हेतु प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों का समन्वित अध्ययन करना अनिवार्य है।

NODIA

271. (A) इरेटोस्थनीज
इरेटोस्थनीज प्राचीन विश्व के महान विद्वान और अलेक्जेंड्रिया के प्रसिद्ध पुस्तकालय के प्रमुख थे। उन्होंने खगोल विज्ञान और भूगोल के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि पृथ्वी की परिधि की पहली अत्यंत सटीक गणना करना थी, जिसके लिए उन्होंने सूर्य की छाया और ज्यामितीय सिद्धांतों का उपयोग किया। उन्होंने ही सर्वप्रथम 'जियोग्राफिया' शब्द का प्रयोग किया और पृथ्वी को विभिन्न जलवायु कटिबंधों में विभाजित किया। उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण उन्हें अक्सर 'भूगोल का जनक' माना जाता है, जिन्होंने इस विषय को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

272. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
19वीं सदी के अंत में जर्मन भौगोलिक परंपरा शैक्षणिक जगत में सबसे अधिक प्रभावशाली थी, जहाँ हम्बोल्ट, रिटर और रैटजेल जैसे विद्वानों ने भूगोल को वैज्ञानिक विषय के रूप में प्रतिष्ठित किया था। इसी समय, अमेरिकी भूगोल की नींव भी काफी हद तक इन्ही जर्मन विचारों या वहां से प्रशिक्षित भूगोलवेत्ताओं द्वारा रखी गई थी। उदाहरण हेतु, एलेन सेंपल ने रैटजेल से शिक्षा प्राप्त की थी, जिसने अमेरिकी भूगोल में पर्यावरणीय नियतिवाद को मजबूती दी। जर्मन स्कूल ने संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रारंभिक भौगोलिक चिंतन और कार्यप्रणाली की दिशा निर्धारित करने में भूमिका निभाई थी।

273. (B) शहरी भूगोल
शिकागो स्कूल द्वारा शहरी समाजशास्त्र के क्षेत्र में विकसित किए गए पारिस्थितिक मॉडल का शहरी भूगोल के विकास पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। इन मॉडलों ने समझाया कि कैसे शहर के भीतर विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों का वितरण 'पारिस्थितिक प्रतिस्पर्धा' के आधार पर होता है। भूगोलवेत्ताओं ने इन अवधारणाओं को अपनाकर शहरों के आंतरिक भूमि उपयोग और आवासीय क्षेत्रों के स्थानिक विश्लेषण को अधिक वैज्ञानिक बनाया। इसने शहरी भूगोल को केवल बस्तियों के वर्णन से आगे बढ़ाकर एक ऐसा विषय बना दिया जो शहरों के गतिशील सामाजिक परिवर्तनों की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।

274. (A) ग्रिफिथ टेलर
'रुको-और-जाओ नियतिवाद' या नव-नियतिवाद की संकल्पना प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रस्तुत की गई थी। यह विचारधारा नियतिवाद की कठोरता और संभववाद की असीमित स्वतंत्रता के बीच एक संतुलित मध्यम मार्ग प्रदान करती है। टेलर ने ट्रैफिक पुलिसकर्मी का उदाहरण दिया जो यातायात की दिशा नहीं बदल सकता लेकिन उसकी गति को नियंत्रित कर सकता है। उनके अनुसार, प्रकृति विकास की मूल सीमाएं तय करती है, लेकिन उन सीमाओं के भीतर मनुष्य किस गति से आगे बढ़ेगा, यह उसके विवेक पर निर्भर है। यह विचार मानव-पर्यावरण संबंधों की व्यावहारिक समझ है।

275. (C) 2, 4, 1, 3
भौगोलिक साहित्य के इन प्रमुख कार्यों का कालक्रम विषय के वैचारिक विकास की यात्रा को दर्शाता है। स्ट्रैबो की 'जियोग्राफिया' प्राचीन काल का विश्वकोश है। हम्बोल्ट की 'कॉस्मॉस' (1845) ने आधुनिक वैज्ञानिक संश्लेषण की शुरुआत की। मैकिंडर की कृति (1904) ने भू-राजनीति को जन्म दिया। अंत में, हार्टशॉर्न की प्रसिद्ध पुस्तक (1939) ने क्षेत्रीय विभेदीकरण को एक शास्त्रीय प्रतिमान के रूप में स्थापित किया। यह क्रम भूगोल के प्राचीन विवरणों से आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों और क्षेत्रीय संश्लेषण तक पहुँचने के महत्वपूर्ण पड़ावों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

276. (D) पर्यावरणीय नियतिवाद
एक भूगोलवेत्ता जो यह कहता है कि उष्णकटिबंधीय जलवायु निर्धनता का कारण है, वह स्पष्ट रूप से पर्यावरणीय नियतिवाद का समर्थन कर रहा है। यह विचारधारा मानती है कि मनुष्य और समाज का भाग्य भौतिक वातावरण, विशेष रूप से जलवायु, द्वारा निर्धारित होता है। यह तर्क हंटिंगटन जैसे विद्वानों के विचारों से मेल खाता है, जिन्होंने दावा किया था कि अनुकूल जलवायु ही उच्च सभ्यताओं को जन्म दे सकती है। यह दृष्टिकोण मानवीय कौशल और सांस्कृतिक अनुकूलन की शक्ति को नजरअंदाज कर देता है और भौगोलिक परिस्थितियों को ही अंतिम सत्य मानता है।

NODIA

277. (C) हार्टशॉर्न की क्षेत्रीय परंपरा।
भूगोल में मात्रात्मक क्रांति मुख्य रूप से रिचर्ड हार्टशॉर्न द्वारा प्रतिपादित 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' की परंपरा के विरुद्ध तीखी बौद्धिक प्रतिक्रिया थी। 1950 के दशक के युवा भूगोलवेत्ताओं का मानना था कि हार्टशॉर्न का दृष्टिकोण भूगोल को केवल अद्वितीय स्थानों के 'वर्णन' तक सीमित कर देता है। उन्होंने इस वर्णनात्मक और इडियोग्राफिक परंपरा को चुनौती दी और तर्क दिया कि भूगोल को सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से सार्वभौमिक स्थानिक नियमों की खोज करनी चाहिए। इस वैचारिक टकराव ने भूगोल को वर्णनात्मक कला से आधुनिक 'स्थानिक विज्ञान' में बदल दिया था।

278. (B) मानवीय अनुभव, अर्थ और स्थान के प्रति जुड़ाव को समझना।
मानवतावादी भूगोल का प्राथमिक केंद्र मनुष्यों के उन व्यक्तिपरक अनुभवों को समझना है जो वे आसपास की दुनिया को प्रदान करते हैं। यह दृष्टिकोण 'अंतरिक्ष' को केवल एक ज्यामितीय दूरी के रूप में नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण 'स्थान' के रूप में देखता है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता यह जानने का प्रयास करते हैं कि लोग अपने घर या देश के प्रति कैसा भावनात्मक लगाव रखते हैं। यह प्रत्यक्षवाद की शुष्क सांख्यिकी के विरुद्ध मानवीय प्रतिक्रिया है, जो भौगोलिक अध्ययन में मानवीय चेतना और व्यक्तिगत धारणाओं के महत्व को पुन: स्थापित करने का कार्य करती है।

279. (D) कार्ल ओ. सॉयर
'सांस्कृतिक परिदृश्य' की संकल्पना हेतु कार्ल ओ. सॉयर को विश्व भर में सबसे प्रसिद्ध माना जाता है। उन्होंने अपने मौलिक लेख के माध्यम से तर्क दिया कि भूगोल का मुख्य कार्य यह अध्ययन करना है कि कैसे मानव संस्कृति एक सक्रिय एजेंट के रूप में प्राकृतिक वातावरण को समय के साथ बदलती

है। सॉयर के अनुसार, परिदृश्य पर दिखाई देने वाली प्रत्येक मानवीय छाप—जैसे खेत और बस्तियाँ—उस समाज की संस्कृति का उत्पाद है। उनके इस कार्य ने पर्यावरणीय नियतिवाद को चुनौती दी और सांस्कृतिक भूगोल के क्षेत्र में नई विचारधारा की नींव रखी थी।

280. (A) मूल्य-मुक्त वस्तुनिष्ठता का इसका दावा और मानवीय चेतना की इसकी उपेक्षा।
मानवतावाद और व्यवहारवाद द्वारा प्रत्यक्षवाद की सबसे मौलिक आलोचना यह थी कि इसने भूगोल को पूरी तरह अमानवीय बना दिया था। प्रत्यक्षवाद ने दावा किया कि वह केवल वस्तुनिष्ठ डेटा पर आधारित है, लेकिन आलोचकों ने तर्क दिया कि मानवीय भावनाओं और मूल्यों को नजरअंदाज करके कभी भी स्थानिक वास्तविकता को नहीं समझा जा सकता। प्रत्यक्षवाद ने मनुष्यों को केवल सांख्यिकीय आंकड़ों या 'आर्थिक मानव' के रूप में देखा, जिससे भूगोल की वह गहराई खत्म हो गई जो मानव और स्थान के वास्तविक संबंधों को समझने हेतु अनिवार्य है।

281. (C) राजनीतिक भूगोल और भू-राजनीति
फ्रेडरिक रैटजेल की 'एंथ्रोपोजियोग्राफिया' ने न केवल मानव भूगोल को वैज्ञानिक आधार दिया, बल्कि इसने आधुनिक राजनीतिक भूगोल और भू-राजनीति की आधारशिला भी रखी। रैटजेल ने जैविक विकासवादी विचारों को राज्यों पर लागू किया। उन्होंने 'लेबेन्सराम' की संकल्पना के माध्यम से तर्क दिया कि राज्य एक जीवित इकाई है जिसे विकसित होने हेतु क्षेत्रीय विस्तार की आवश्यकता होती है। यह विचार राज्य की शक्ति और भौगोलिक स्थिति के बीच सामरिक संबंधों को समझने का प्रथम व्यवस्थित प्रयास था, जिसने भविष्य की साम्राज्यवादी नीतियों को गहराई से प्रभावित किया।

282. (A) फ्रांसीसी; छोटा प्राकृतिक क्षेत्र
'पेय' शब्द भूगोल के फ्रांसीसी स्कूल की अत्यंत महत्वपूर्ण और मौलिक संकल्पना है। यह एक ऐसे छोटे और सजातीय प्राकृतिक क्षेत्र को संदर्भित करता है जिसकी अपनी एक विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान होती है। विडाल डी ला ब्लाश और उनके शिष्यों का मानना था कि 'पेय' का सूक्ष्म अध्ययन ही मानव और पर्यावरण के बीच के उस गहरे संतुलन को समझने का सबसे अच्छा तरीका है जो सदियों की अंतःक्रिया के बाद विकसित होता है। यह संकल्पना भूगोल में क्षेत्रीय विशिष्टता और सूक्ष्म विश्लेषण पर बल देती है, जो फ्रांसीसी परंपरा का केंद्र है।

283. (D) मैकिंडर और स्पाइकमैन
'हृदयस्थल-रिमलैंड' की बहस भू-राजनीति के दो सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों से जुड़ी है। हैल्फोर्ड जे. मैकिंडर ने 'हृदयस्थल सिद्धांत' दिया, जिसमें उन्होंने यूरेशिया के मध्य भाग के नियंत्रण को वैश्विक शक्ति की कुंजी माना। इसके जवाब में निकोलस स्पाइकमैन ने 'रिमलैंड सिद्धांत' प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि यूरेशिया के तटीय क्षेत्र का नियंत्रण हृदयस्थल की तुलना में अधिक सामरिक महत्व का है। इन विद्वानों के विचारों ने शीत युद्ध के दौरान वैश्विक रणनीतियों और शक्ति संघर्षों के विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

284. (B) रिचर्ड हार्टशॉर्न
फ्रेड के. शेफर का प्रसिद्ध पत्र "एक्सेप्शनलिज्म इन Geography" सीधे तौर पर रिचर्ड हार्टशॉर्न द्वारा प्रतिपादित क्षेत्रीय भूगोल के विचारों पर बड़ा बौद्धिक प्रहार था। शेफर ने हार्टशॉर्न के उस 'अपवादवादी' तर्क को खारिज कर दिया जिसमें भूगोल को केवल अद्वितीय क्षेत्रों के विवरण तक सीमित माना गया था। उन्होंने वकालत की कि भूगोल को एक आधुनिक 'स्थानिक विज्ञान' बनना चाहिए जो वैज्ञानिक नियमों की खोज करे। इस वैचारिक असहमति ने भूगोल में गहरे विभाजन को जन्म दिया, जिसने अंततः वर्णनात्मक क्षेत्रीय भूगोल के प्रभाव को कम किया और मात्रात्मक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।

285. (C) P-4, Q-2, R-1, S-3
भौगोलिक विद्वानों का उनके संबंधित परिप्रेक्ष्यों के साथ मेल विषय के वैचारिक विकास को दर्शाता है। रिचर्ड हार्टशॉर्न ने 'क्षेत्रीय विभेदीकरण' को भूगोल का मूल कार्य मानकर विवरणात्मक अध्ययन पर जोर दिया। फ्रेड शेफर ने 'प्रत्यक्षवाद' की वकालत करते हुए भूगोल को वैज्ञानिक नियमों की ओर मोड़ा। यी-फू तुआन ने 'मानवतावाद' के माध्यम से मानवीय अनुभवों और स्थान के अर्थ को उजागर किया। अंत में, डेविड हार्वे ने 'मार्क्सवाद' के जरिए समाज की आर्थिक संरचनाओं और स्थानिक अन्याय का विश्लेषण किया। इन दृष्टिकोणों ने आधुनिक भूगोल को बहुआयामी विषय बनाया है।

286. (D) अनुभववाद और प्रत्यक्षवाद
आदर्शवाद का दार्शनिक आधार है कि वास्तविकता का केंद्र मानवीय मस्तिष्क और विचार हैं। यह दृष्टिकोण 'अनुभववाद और प्रत्यक्षवाद' के बिल्कुल विपरीत है, जो यह मानते हैं कि केवल वही ज्ञान सत्य है जिसे इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जा सके या मापा जा सके। जहाँ प्रत्यक्षवाद बाहरी तथ्यों पर निर्भर करता है, वहीं आदर्शवाद तर्क देता है कि जिसे हम 'सत्य' मानते हैं, वह हमारे विचारों द्वारा निर्मित होता है। इसलिए, भौगोलिक क्रियाओं को समझने हेतु आदर्शवाद मानवीय इरादों और मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन को ही एकमात्र सही मार्ग मानता है।

287. (A) भव्य आख्यानों के प्रति संशय और अंतर पर बल।
भूगोल में उत्तर-आधुनिक विचार का मुख्य सिद्धांत उन 'भव्य आख्यानों' या सर्वव्यापी सिद्धांतों को चुनौती देना है जो पूरी दुनिया को एक ही नियम से समझाने की कोशिश करते हैं। उत्तर-आधुनिकतावाद मानता है कि वास्तविकता जटिल होती है, जिसे किसी एक सिद्धांत, जैसे मार्क्सवाद, में नहीं बांधा जा सकता। यह विचारधारा स्थानिक विविधता और 'अंतर' को महत्व देती है जो अक्सर मुख्यधारा के विज्ञान द्वारा नजरअंदाज कर दी जाती हैं। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता विखंडन के माध्यम से स्थापित सत्यों की वैचारिक जड़ों की जांच करते हैं और बहुलता का समर्थन करते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

288. (B) यूनानी
प्राचीन यूनानी सभ्यता ने गणितीय और खगोलीय भूगोल के विकास में सबसे मौलिक योगदान दिया। अरस्तू, इरेटोस्थनीज और हिप्पार्कस जैसे विद्वानों ने पृथ्वी के गोलाकार होने के प्रमाण दिए, अक्षांश और देशांतर की प्रणाली विकसित की और परिधि का सटीक मापन किया। उन्होंने ही मानचित्रों हेतु प्रक्षेपों का आविष्कार किया और जलवायु कटिबंधों की संकल्पना दी। उनके इन वैज्ञानिक प्रयासों ने भूगोल को व्यवस्थित अनुशासन के रूप में स्थापित किया। आधुनिक भूगोल की लगभग सभी वैज्ञानिक शाखाओं की जड़ें इसी समृद्ध प्राचीन यूनानी परंपरा में गहराई से जुड़ी हुई हैं।

289. (B) हम्बोल्ट और रिटर
आधुनिक जर्मन भूगोल के संस्थापकों, अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट और कार्ल रिटर, दोनों के कार्यों में 'तुलनात्मक पद्धति' एक अनिवार्य उपकरण थी। हम्बोल्ट ने विभिन्न देशों की जलवायु की तुलना करके प्रकृति की वैश्विक एकता को उजागर किया। वहीं कार्ल रिटर ने अलग-अलग क्षेत्रों की भौगोलिक विशेषताओं की तुलना करके उनके मानवीय विकास पर प्रभावों का विश्लेषण किया। उनकी इस पद्धति का उद्देश्य विवरण देना नहीं, बल्कि तुलना के माध्यम से पृथ्वी की सतह पर मौजूद जटिल अंतर्संबंधों और वैज्ञानिक संबंधों की खोज करना था, जिसने भूगोल को वैज्ञानिक गरिमा प्रदान की।

290. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विडाल डी ला ब्लाश के नेतृत्व में फ्रांसीसी स्कूल द्वारा संभववाद का समर्थन वास्तव में जर्मन पर्यावरणीय नियतिवाद की कठोरता के विरुद्ध सीधी प्रतिक्रिया थी। जर्मन विद्वानों ने तर्क दिया था कि प्रकृति मनुष्य के भाग्य की नियंत्रक है, जो फ्रांसीसी विद्वानों को संकुचित लगा। इसके जवाब में, संभववाद ने विचार प्रस्तुत किया कि मनुष्य सक्रिय एजेंट है जिसके पास अपनी बुद्धि के आधार पर चुनाव करने की स्वतंत्रता है। विडाल ने सिद्ध किया कि एक ही पर्यावरण में अलग-अलग मानव समूह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अलग जीवन पद्धतियां विकसित कर सकते हैं।

291. (C) ब्रिटिश
हैल्फोर्ड मैकिंडर, ए. जे. हर्बर्टसन और एल. डडली स्टैम्प ये तीनों ही भूगोल के ब्रिटिश स्कूल के प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं। मैकिंडर ने भू-राजनीति और हृदयस्थल सिद्धांत के माध्यम से वैश्विक शक्ति संतुलन का विश्लेषण किया। हर्बर्टसन ने विश्व के प्रमुख 'प्राकृतिक क्षेत्रों' का वर्गीकरण करके क्षेत्रीय भूगोल को नई दिशा दी। स्टैम्प ने भूमि उपयोग सर्वेक्षणों के माध्यम से भूगोल को व्यावहारिक नियोजन हेतु उपयोगी विज्ञान बनाया। इन विद्वानों के योगदान ने ब्रिटिश भूगोल को अनुभवजन्य शोध, व्यावहारिक उपयोगिता और साम्राज्यवादी रणनीतियों के प्रति संवेदनशील बनाया था।

292. (D) भू-आकृतियाँ
विलियम मॉरिस डेविस द्वारा प्रतिपादित 'अपरदन चक्र' का सिद्धांत मुख्य रूप से भू-आकृतियों के क्रमिक और व्यवस्थित विकास का वर्णन करने वाला वैज्ञानिक मॉडल है। डेविस ने प्रस्तावित किया कि किसी भी परिदृश्य का स्वरूप उसकी 'संरचना, प्रक्रिया और समय' का परिणाम होता है। उन्होंने भू-आकृतियों के विकास को युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था जैसे स्पष्ट चरणों में विभाजित किया। उनका यह मॉडल यह समझने में सहायता करता है कि कैसे नदियाँ समय के साथ पर्वतीय क्षेत्रों को घिसकर मैदान में बदल देती हैं। यह सिद्धांत दशकों तक भू-आकृति विज्ञान का आधार रहा था।

293. (C) भौतिक और मानव भूगोल
यह विचार कि भूगोल प्राकृतिक विज्ञानों और मानविकी के बीच सेतु का कार्य करता है, भौतिक और मानव भूगोल के बीच के द्वैतवाद को हल करने का दार्शनिक प्रयास है। भूगोलवेत्ताओं का मानना है कि पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों को एक-दूसरे से पूरी तरह अलग करके नहीं समझा जा सकता। एक एकीकृत विषय के रूप में, भूगोल भौतिक वातावरण के वैज्ञानिक नियमों और मानव समाज की सांस्कृतिक जटिलताओं का एक साथ विश्लेषण करता है। यह समग्र दृष्टिकोण भूगोल को विशिष्ट पहचान देता है, जहाँ पृथ्वी को समग्रता में देखा जाता है।

294. (B) प्रत्यक्षवाद / स्थानिक विज्ञान
जब कोई भूगोलवेत्ता शहर के केंद्र से दूरी और भूमि मूल्य के बीच के संबंधों को समझने हेतु सांख्यिकीय प्रतिगमन और गणितीय मॉडलों का उपयोग करता है, तो वह प्रत्यक्षवाद या 'स्थानिक विज्ञान' के प्रतिमान में कार्य कर रहा होता है। यह दृष्टिकोण इस मान्यता पर आधारित है कि स्थानिक घटनाओं को वैज्ञानिक नियमों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। प्रत्यक्षवादी भूगोलवेत्ता वस्तुनिष्ठ डेटा को प्राथमिकता देते हैं ताकि वे ऐसे सार्वभौमिक सिद्धांतों को खोज सकें जो शहरी विकास की सटीक व्याख्या कर सकें। यह मात्रात्मक क्रांति का मूल आधार है।

295. (A) केवल I और II
मानवतावादी भूगोल का मुख्य बल 'स्थान' की संकल्पना पर है, जिसे वह मानवीय अनुभवों और भावनाओं के केंद्र के रूप में देखता है, न कि केवल अंतरिक्ष के एक निर्जीव बिंदु के रूप में। यह दृष्टिकोण व्यक्तिपरक अनुभवों को समझने हेतु गुणात्मक विधियों को अपनाता है। इसके विपरीत, मानवतावादी भूगोल कभी भी मानव व्यवहार के 'सार्वभौमिक नियमों' की खोज नहीं करता; बल्कि वह इन वैज्ञानिक सामान्यीकरणों का विरोध करता है क्योंकि उसका मानना है कि प्रत्येक मानवीय अनुभव अद्वितीय होता है। अतः कथन I और II मानवतावादी भूगोल की सही विशेषताएं हैं।

296. (A) उत्तर-आधुनिकतावाद
भौगोलिक पाठों और मानचित्रों का विखंडन करना उत्तर-आधुनिकतावाद की अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय कार्यप्रणाली है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य उन अंतर्निहित पूर्वाग्रहों और शक्ति संरचनाओं को उजागर करना है जो अक्सर 'वस्तुनिष्ठ ज्ञान' के नाम पर भौगोलिक प्रतिनिधित्वों में छुपे होते हैं। उत्तर-आधुनिक भूगोलवेत्ता मानते हैं कि मानचित्र कभी भी तटस्थ नहीं होते, बल्कि वे दुनिया को देखने का एक विशिष्ट तरीका

NODIA

थोपते हैं जो किसी खास समूह के हितों की रक्षा करता है। विखंडन के माध्यम से वे इन स्थापित सत्यों को चुनौती देते हैं और भौगोलिक ज्ञान के राजनीतिक आयामों को सामने लाते हैं।

297. (C) शेफर और हार्टशॉर्न
20वीं सदी के मध्य में अमेरिकी भूगोल में 'नोमोथेटिक बनाम इडियोग्राफिक' की प्रसिद्ध बहस फ्रेड के. शेफर और रिचर्ड हार्टशॉर्न के बीच हुई थी। हार्टशॉर्न ने इडियोग्राफिक दृष्टिकोण का समर्थन किया, जिसमें भूगोल का मुख्य उद्देश्य अद्वितीय क्षेत्रों का विवरण देना था। इसके विपरीत, शेफर ने नोमोथेटिक दृष्टिकोण की वकालत की, जहाँ भूगोल को वैज्ञानिक नियमों की खोज करने वाला 'स्थानिक विज्ञान' बनना चाहिए। इस वैचारिक टकराव ने भूगोल की कार्यप्रणाली को गहराई से प्रभावित किया और अंततः मात्रात्मक क्रांति के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने विषय को विश्लेषणात्मक मॉडलों की ओर मोड़ा।

298. (A) लुसिएन फेब्रे और मार्क ब्लोच
इतिहास के 'एनाल्स स्कूल' के संस्थापक लुसिएन फेब्रे और मार्क ब्लोच थे, जिनके विचारों ने फ्रांसीसी भूगोल को बहुत गहराई से प्रभावित किया। इस स्कूल ने केवल राजनीतिक घटनाओं के बजाय समाज, अर्थव्यवस्था और भूगोल के बीच के दीर्घकालिक अंतर्संबंधों के अध्ययन पर जोर दिया। फेब्रे ने विशेष रूप से संभववाद के दर्शन को मजबूती दी और मानवीय एजेंसी के महत्व को रेखांकित किया। उनके इस अंतःविषय दृष्टिकोण ने फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं को क्षेत्रों के ऐतिहासिक विकास को एक संश्लेषित परिप्रेक्ष्य में समझने हेतु प्रेरित किया, जो आज भी फ्रांसीसी भौगोलिक परंपरा की पहचान है।

299. (D) केवल वही ज्ञान जो अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य है, प्रामाणिक है।
प्रत्यक्षवादी प्रतिमान का मूल विश्वास है कि केवल वही ज्ञान विश्वसनीय माना जा सकता है जिसे वैज्ञानिक विधियों द्वारा मापा जा सके और अनुभवजन्य रूप से सत्यापित किया जा सके। यह विचारधारा तार्किक प्रत्यक्षवाद पर आधारित है, जो भावनाओं और व्यक्तिपरक व्याख्याओं को ज्ञान के वैध स्रोत के रूप में पूरी तरह खारिज करती है। प्रत्यक्षवादी भूगोलवेत्ता मानते हैं कि पृथ्वी की स्थानिक वास्तविकता वस्तुनिष्ठ है और उसे सांख्यिकीय डेटा तथा गणितीय सूत्रों के माध्यम से समझा जा सकता है। इसका उद्देश्य भूगोल को कठोर विज्ञान बनाना था जो सार्वभौमिक सत्य प्रदान कर सके।

300. (B) पर्यावरणीय नियंत्रण से मानवीय गतिविधियों की ओर।
भौगोलिक विचारधारा का पर्यावरणीय नियतिवाद से संभववाद में संक्रमण अत्यंत महत्वपूर्ण वैचारिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह बदलाव भूगोल के केंद्र को 'पर्यावरणीय नियंत्रण' से हटाकर 'मानवीय गतिविधियों' की ओर ले जाता है। नियतिवाद जहाँ प्रकृति को सक्रिय शक्ति और मनुष्य को निष्क्रिय दास मानता था, वहीं संभववाद ने मनुष्य को जागरूक एजेंट के रूप में स्थापित किया जो अपनी बुद्धि से प्रकृति द्वारा दी गई संभावनाओं में से चुनाव करता है। यह संक्रमण भौगोलिक अध्ययन में मानवीय गरिमा, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक विविधता के महत्व को मान्यता देने की दिशा में बड़ा कदम था।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 02
भू-आकृति विज्ञान

1. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'भू-आकृति विज्ञान' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) पृथ्वी की चट्टानों की रासायनिक संरचना और खनिज संरचना का अध्ययन।
(B) भू-प्रक्रमों द्वारा निर्मित स्थलाकृतिक विशेषताओं की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।
(C) पृथ्वी के ऐतिहासिक जलवायु पैटर्न और बस्तियों पर उनके विभिन्न प्रभावों का अध्ययन।
(D) विभिन्न भूगर्भीय अवधियों में जीवन रूपों के भौगोलिक वितरण का विश्लेषण।

2. "वर्तमान, अतीत की कुंजी है" की अवधारणा किस मौलिक भूगर्भीय सिद्धांत का केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) एकरूपतावाद
(B) आकस्मिकवाद
(C) पर्वत निर्माण
(D) पटल विरूपण

3. अंतर्जात बलों के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) वे पृथ्वी की सतह पर कार्य करते हैं, जिससे अपक्षय और अपरदन होता है।
(B) वे विशेष रुप से धीमे और क्रमिक होते हैं, कभी भी किसी अचानक घटना का कारण नहीं बनते।
(C) वे पृथ्वी के भीतर से उत्पन्न होते हैं और प्रमुख उच्चावच आकृतियों का निर्माण करते हैं।
(D) वे अपनी ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत सीधे सूर्य से प्राप्त करते हैं।

4. निम्नलिखित में से किसे पटल विरूपणी बल माना जाता है?
(A) ज्वालामुखी विस्फोट
(B) भूकंप
(C) एक बड़ा भूस्खलन
(D) महादेशजनक संचलन

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): अंतर्जात बलों को रचनात्मक बल माना जाता है।
कारण (R): वे पृथ्वी की सतह पर असमानताएं और पर्वत, पठार तथा महाद्वीप जैसी प्रमुख उच्चावच आकृतियां बनाते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

6. बिना किसी महत्वपूर्ण वलन या भ्रंशन के एक महाद्वीपीय द्रव्यमान को प्रभावित करने वाला बड़े पैमाने पर ऊपर की ओर संचलन किस प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) पर्वत निर्माणकारी संचलन
(B) महादेशजनक संचलन
(C) अपशल्कन
(D) अनाच्छादन

7. बहिर्जात बलों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इन्हें बाह्य बल या अनाच्छादन प्रक्रियाओं के रूप में भी जाना जाता है।
(B) इनका अंतिम प्रभाव परिदृश्य को घिसना है, जिससे एक अधिक समतल सतह का निर्माण होता है।
(C) इनमें अपक्षय, अपरदन और निक्षेपण जैसी प्रक्रियाएं शामिल हैं।
(D) ये पृथ्वी के भीतर से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा द्वारा संचालित होते हैं।

8. अपक्षय, वृहद् क्षरण और अपरदन का संयुक्त प्रभाव जो पृथ्वी की सतह को नीचा करने का कारण बनता है, कहलाता है:
(A) अनाच्छादन
(B) अधिवृद्धि
(C) पटल विरूपण
(D) समस्थैतिकी

9. निम्नलिखित में से कौन रासायनिक अपक्षय की प्रक्रिया नहीं है?
(A) ऑक्सीकरण
(B) कार्बोनेशन
(C) तुषार विदारण
(D) जलयोजन

10. सूची I में दी गई प्रक्रिया को सूची II में दिए गए बल के प्रकार के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (प्रक्रिया)
P. पर्वत निर्माण
Q. अपक्षय
R. ज्वालामुखी क्रिया

NODIA

S. अपरदन
सूची II: (बल का प्रकार)
1. बहिर्जात प्रक्रिया
2. आकस्मिक अंतर्जात बल
3. पटल विरुपणी अंतर्जात बल
4. बहिर्जात प्रक्रिया
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: पर्वत निर्माणकारी प्रक्रियाओं को पर्वत निर्माणकारी संचलन कहा जाता है।
कथन II: महाद्वीप निर्माणकारी प्रक्रियाओं को महादेशजनक संचलन कहा जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

12. चट्टानों के अपने ही स्थान पर टूटने-फूटने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) अपरदन
(B) अपक्षय
(C) परिवहन
(D) निक्षेपण

13. चट्टान की संकेंद्रित परतों का छिलके की तरह उतरना, जो अक्सर ग्रेनाइट गुंबदों में देखा जाता है, एक प्रकार का भौतिक अपक्षय है जिसे कहा जाता है:
(A) तुषार क्रिया
(B) कणीय विखंडन
(C) अपशल्कन
(D) कार्बोनेशन

14. चट्टानों में लौह-युक्त खनिजों में जंग लगना किस रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) जलयोजन
(B) कार्बोनेशन
(C) विलयन
(D) ऑक्सीकरण

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): रासायनिक अपक्षय आर्द्र उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सबसे प्रभावी और तीव्र होता है।
कारण (R): उच्च तापमान और प्रचुर नमी रासायनिक प्रतिक्रियाओं को तेज करती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

16. चूना पत्थर क्षेत्र में, कार्बन डाइऑक्साइड के साथ मिश्रित वर्षा जल कार्बोनिक अम्ल बनाता है, जो चट्टान को घोल देता है। यह किसका प्राथमिक उदाहरण है?
(A) ऑक्सीकरण
(B) कार्बोनेशन
(C) जल-अपघटन
(D) जलयोजन

17. निम्नलिखित में से कौन अपरदन का प्राथमिक दूत नहीं है?
(A) बहता जल
(B) तापमान परिवर्तन
(C) पवन
(D) हिमनद

18. एक अपरदन दूत द्वारा चट्टानी मलबे का अधिग्रहण और परिवहन किसके लिए सबसे उपयुक्त परिभाषा है?
(A) अपरदन
(B) अपक्षय
(C) अनाच्छादन
(D) वृहद् क्षरण

19. निम्नलिखित में से कौन जैविक अपक्षय का एक उदाहरण है?
(A) जमने पर चट्टान की दरारों में पानी का प्रसार।
(B) अम्लीय वर्षा जल द्वारा चूना पत्थर का घुलना।
(C) चट्टान की दरारों में पौधों की जड़ों की वृद्धि।
(D) दबाव के कारण बाहरी परतों का उतरना।

20. सूची I में दी गई अपक्षय प्रक्रिया को सूची II में दिए गए विवरण के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (अपक्षय प्रक्रिया)
P. तुषार क्रिया
Q. कार्बोनेशन
R. जलयोजन
S. ऑक्सीकरण
सूची II: (विवरण)
1. खनिज पानी सोखते हैं और फैलते हैं
2. घुली हुई ऑक्सीजन के साथ खनिजों की प्रतिक्रिया
3. दरारों में पानी का जमने-पिघलने का चक्र
4. खनिजों के साथ कार्बोनिक अम्ल की प्रतिक्रिया
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

21. समुद्र तल का एक लंबा, संकीर्ण और उथला अवसाद, जिसकी विशेषता तलछटीकरण है और जो बाद में वलित होकर एक पर्वत श्रृंखला में बदल जाता है, कहलाता है:

Downloaded from www.pdf.tube

(A) ग्राबेन
(B) रिफ्ट घाटी
(C) भू-सन्नति
(D) मध्य-महासागरीय कटक

22. भू-सन्नति का सिद्धांत मुख्य रूप से किसकी उत्पत्ति की व्याख्या करने के लिए विकसित किया गया था?
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) वलित पर्वत
(C) ज्वालामुखी द्वीप
(D) रिफ्ट घाटियाँ

23. 1912 में महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत किसने प्रस्तावित किया था?
(A) डब्लू. एम. डेविस
(B) हैरी हेस
(C) आर्थर होम्स
(D) अल्फ्रेड वेगनर

24. निम्नलिखित में से किसका उपयोग महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के प्रमाण के रूप में नहीं किया गया था?
(A) सागर नितल प्रसरण की क्रियाविधि।
(B) महाद्वीपों का जिग-सॉ फिट, विशेष रूप से दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका का।
(C) विभिन्न महाद्वीपों में समान जीवाश्मों का वितरण।
(D) वर्तमान उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अतीत के हिमनद के प्रमाण।

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): यह प्रस्तावित किया गया था कि अतीत में पैंजिया नाम का एक महामहाद्वीप मौजूद था।
कारण (R): महाद्वीपीय तटरेखाओं के मिलान, जीवाश्म वितरण और पुरा-जलवायु संकेतकों से इसके प्रमाण प्रदान किए गए थे।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. महामहाद्वीप सिद्धांत के अनुसार, पैंजिया एक विशाल महासागर से घिरा हुआ था जिसे कहा जाता था:
(A) पैंथलासा
(B) टेथिस सागर
(C) इयापेटस महासागर
(D) प्रशांत महासागर

27. महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) इसने सुझाव दिया कि महाद्वीप कभी एक साथ जुड़े हुए थे।
(B) यह संचलन के लिए एक ठोस तंत्र प्रदान करने में विफल रहा।
(C) इसने समर्थन के लिए ग्लॉसॉप्टेरिस वनस्पतियों जैसे जीवाश्म साक्ष्यों का उपयोग किया।
(D) इसने मेंटल संवहन को प्रेरक शक्ति के रूप में सही ढंग से पहचाना।

28. प्लेट विवर्तनिकी का सिद्धांत एक व्यापक सिद्धांत है जो व्याख्या करता है:
(A) केवल पर्वतों के निर्माण की।
(B) कठोर स्थलमंडलीय प्लेटों के निर्माण और संचलन की।
(C) केवल भूकंपों की घटना की।
(D) विभिन्न जलवायु में रासायनिक अपक्षय की प्रक्रिया की।

29. वह सीमा जहाँ दो विवर्तनिक प्लेटें एक-दूसरे से दूर जा रही हैं, कहलाती है:
(A) अभिसारी सीमा
(B) रूपांतर सीमा
(C) अपसारी सीमा
(D) सबडक्शन ज़ोन

30. सूची I में दी गई प्लेट सीमा को सूची II में संबंधित विशेषता के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (प्लेट सीमा)
P. अपसारी
Q. अभिसारी (महासागरीय-महाद्वीपीय)
R. अभिसारी (महाद्वीपीय-महाद्वीपीय)
S. रूपांतर
सूची II: (संबंधित विशेषता)
1. वलित पर्वत (जैसे हिमालय)
2. स्ट्राइक-स्लिप भ्रंश (जैसे सैन एंड्रियास)
3. मध्य-महासागरीय कटक
4. ज्वालामुखी चाप और खाई
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

31. हिमालय पर्वतों का निर्माण किस प्रकार के प्लेट टकराव का परिणाम है?
(A) महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसरण
(B) महासागरीय-महासागरीय अभिसरण
(C) महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसरण
(D) अपसारी प्लेट सीमा

32. गहरे समुद्र की खाइयाँ सबसे अधिक किस भूगर्भीय विशेषता से जुड़ी हैं?
(A) मध्य-महासागरीय कटक
(B) सबडक्शन ज़ोन
(C) रिफ्ट घाटियाँ

NODIA

(D) रूपांतर भ्रंश

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: सागर नितल प्रसरण मध्य-महासागरीय कटकों पर होता है।
कथन II: पुरानी महासागरीय पपड़ी सबडक्शन क्षेत्रों में नष्ट हो जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

34. प्रशांत महासागर में "रिंग ऑफ फायर" तीव्र भूकंपीय और ज्वालामुखी गतिविधि का क्षेत्र है, जिसका मुख्य कारण है:
(A) विवर्तनिक प्लेटों का अभिसरण और सबडक्शन।
(B) विशाल प्रशांत प्लेट का सक्रिय अपसरण।
(C) कई रूपांतर भ्रंश रेखाओं की एक जटिल श्रृंखला।
(D) एक नई महाद्वीपीय रिफ्ट का स्थानीय निर्माण।

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): महासागरीय पपड़ी की आयु मध्य-महासागरीय कटक से दूरी के साथ बढ़ती जाती है।
कारण (R): मध्य-महासागरीय कटकों पर ज्वालामुखी गतिविधि के माध्यम से नई महासागरीय पपड़ी का निरंतर निर्माण हो रहा है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

36. कौन सा सिद्धांत प्लेट विवर्तनिकी को चलाने वाले तंत्र के लिए सबसे स्वीकृत व्याख्या प्रदान करता है?
(A) ध्रुव-पलायन बल
(B) पृथ्वी का विस्तार
(C) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(D) मेंटल संवहन धाराएं

37. कैलिफोर्निया में सैन एंड्रियास भ्रंश किस प्रकार की प्लेट सीमा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) अपसारी
(B) अभिसारी (सबडक्शन)
(C) रूपांतर
(D) अभिसारी (टकराव)

38. डेविस के "भौगोलिक चक्र" का मुख्य घटक कौन सा है?
(A) जलवायु, वनस्पति, मिट्टी
(B) संरचना, प्रक्रम, अवस्था
(C) उत्थान, अपरदन, निक्षेपण
(D) अपक्षय, वृहद् क्षरण, परिवहन

39. डेविस के अपरदन चक्र में, एक नदी की 'युवा' अवस्था की विशेषता क्या है?
(A) एक विस्तृत बाढ़ का मैदान और कई विसर्प।
(B) एक मंद ढाल और धीमी गति से बहने वाला पानी।
(C) गोखुर झीलों और प्राकृतिक तटबंधों का निर्माण।
(D) तीव्र लंबवत अपरदन और V-आकार की घाटी का निर्माण।

40. सूची I में दी गई डेविस की अवस्था को सूची II में दी गई विशेषता के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (डेविस की अवस्था)
P. युवावस्था
Q. प्रौढ़ावस्था
R. वृद्धावस्था
S. अंतिम उत्पाद
सूची II: (विशेषता)
1. विस्तृत बाढ़ का मैदान, विसर्प, गोखुर झीलें
2. मोनाडनॉक के साथ पेनीप्लेन
3. V-आकार की घाटी, तीव्र शीर्षवर्ती अपरदन
4. अधिकतम उच्चावच, पूर्ण विकसित अपवाह तंत्र
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

41. डब्लू. एम. डेविस के अनुसार, एक आर्द्र क्षेत्र में नदी अपरदन के चक्र के अंत में निर्मित अंतिम स्थलाकृति क्या है?
(A) पेडिप्लेन
(B) एंडरम्फ
(C) पेनीप्लेन
(D) पैनप्लेन

42. अलग-थलग, अवशिष्ट पहाड़ियाँ जो पेनीप्लेन से अचानक ऊपर की ओर उठती हैं, कहलाती हैं:
(A) मोनाडनॉक
(B) इनसेलबर्ग
(C) यारडांग
(D) ड्रमलिन

43. भू-आकृतिक चक्र के डेविसियन मॉडल की एक बड़ी आलोचना निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह जलवायु की भूमिका को बहुत अधिक महत्व देता है।
(B) यह केवल शुष्क वातावरण पर लागू होता है।
(C) यह विकास में संरचना की भूमिका की अनदेखी करता है।
(D) यह मानता है कि अपरदन से पहले तीव्र उत्थान होता है।

44. वाल्थर पेंक द्वारा प्रस्तावित भू-दृश्य विकास का मॉडल मुख्य रूप से किसके बीच के संबंध पर जोर देता है?
(A) संरचना और प्रक्रम

Click Here to Buy book on Amazon

(B) उत्थान की दर और अपरदन की दर
(C) जलवायु और वनस्पति
(D) समय और अवस्था

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): पेंक के मॉडल को डेविस के मॉडल की तुलना में भू-दृश्य विकास के प्रति अधिक गतिशील दृष्टिकोण माना जाता है।
कारण (R): पेंक ने उत्थान और अपरदन को क्रमिक घटनाओं के बजाय निरंतर और परस्पर क्रिया करने वाली प्रक्रियाएं माना।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

46. पेंक के मॉडल में, "बढ़ता विकास" शब्द उस चरण को संदर्भित करता है जहाँ:
(A) अपरदन की दर उत्थान की दर से अधिक हो जाती है।
(B) उत्थान की दर स्थिर और एकसमान होती है।
(C) विवर्तनिक उत्थान पूरी तरह से बंद हो गया है।
(D) उत्थान की दर अपरदन की दर से अधिक होती है।

47. पेंक के अपरदन चक्र का अंतिम उत्पाद, अवतल ढाल वाला एक निचला मैदान, कहलाता है:
(A) एंडरम्फ
(B) पेनीप्लेन
(C) पैनफैन
(D) प्राइमरम्फ

48. डेविस और पेंक के मॉडलों की तुलना करते हुए सही कथन की पहचान करें।
(A) डेविस का मॉडल समय पर निर्भर है, जबकि पेंक का समय से स्वतंत्र है।
(B) डेविस तीव्र उत्थान का उपयोग करते हैं, जबकि पेंक निरंतर उत्थान का उपयोग करते हैं।
(C) डेविस ने अंतर्जात बलों पर जोर दिया, जबकि पेंक ने बहिर्जात बलों पर।
(D) दोनों मॉडल एक ही अंतिम उत्पाद पर पहुँचते हैं, जिसे पेनीप्लेन कहा जाता है।

49. भू-आकृतिक शब्दावली में 'प्राइमरम्फ' शब्द किसको संदर्भित करता है?
(A) पृथ्वी की रासायनिक संरचना का अध्ययन।
(B) प्रारंभिक, उत्थान से पूर्व की भूमि की सतह।
(C) भू-दृश्य विकास का अंतिम चरण।
(D) एकसमान विकास के दौरान बनी भू-आकृति।

50. सूची I में दी गई अवधारणा को सूची II में प्रस्तावक के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (अवधारणा/शब्द)
P. अपरदन चक्र ('संरचना, प्रक्रम, अवस्था')
Q. महाद्वीपीय विस्थापन
R. रूपात्मक विश्लेषण (उत्थान बनाम अपरदन)
S. भू-सन्नति सिद्धांत
सूची II: (प्रस्तावक)
1. अल्फ्रेड वेगनर
2. डब्लू. एम. डेविस
3. हॉल और डाना
4. वाल्थर पेंक
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

51. V-आकार की घाटी किसके द्वारा निर्मित एक विशिष्ट अपरदनात्मक स्थलाकृति है?
(A) हिमनद क्रिया
(B) पवन क्रिया
(C) नदी क्रिया
(D) तटीय तरंग क्रिया

52. नदी विकास की किस अवस्था में गार्ज, कैनियन और जलगर्तिका जैसी विशेषताएं मुख्य रूप से बनती हैं?
(A) वृद्धावस्था
(B) प्रौढ़ावस्था
(C) कायाकल्प अवस्था
(D) युवावस्था

53. मुख्य धारा से कटी हुई नदी की एक परित्यक्त विसर्प लूप, एक जल निकाय बनाती है जिसे कहा जाता है:
(A) टार्न
(B) लैगून
(C) गोखुर झील
(D) प्लाया झील

54. उस स्थान पर जहाँ एक नदी पहाड़ी अग्रभाग से मैदान पर निकलती है, तलछट के पंखे के आकार के निक्षेपों को क्या कहा जाता है?
(A) डेल्टा
(B) जलोढ़ पंख
(C) प्राकृतिक तटबंध
(D) पॉइंट बार

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): डेल्टा नदियों के मुहाने पर बनते हैं जहाँ वे समुद्र या झील जैसे स्थिर जल निकाय में प्रवेश करती हैं।
कारण (R): मुहाने पर नदी का वेग अचानक कम हो जाता है,

Downloaded from www.pdf.tube

जिससे वह अपने तलछट के भार को निक्षेपित कर देती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

56. निम्नलिखित में से कौन सी नदियों से जुड़ी एक निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है?
(A) बाढ़ का मैदान
(B) जलप्रपात
(C) गार्ज
(D) जलगर्तिका

57. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा उच्च स्तर पर बहने वाली नदी एक जल-विभाजक को तोड़कर पड़ोसी नदी के ऊपरी जल को पकड़ लेती है, कहलाती है:
(A) नदी विसर्पण
(B) नदी कायाकल्प
(C) नदी अपहरण
(D) गुम्फित नदी

58. नदी स्थलाकृति और उसके प्रकार के गलत युग्म की पहचान करें।
(A) डेल्टा - अपरदनात्मक
(B) विसर्प - अपरदनात्मक और निक्षेपणात्मक
(C) प्राकृतिक तटबंध - निक्षेपणात्मक
(D) जलप्रपात - अपरदनात्मक

59. बाढ़ के दौरान नदी के किनारों पर जमा तलछट की लकीरों को क्या कहा जाता है?
(A) पॉइंट बार
(B) सैंड बार
(C) एस्कर
(D) प्राकृतिक तटबंध

60. सूची I में दी गई नदी स्थलाकृति को सूची II में दी गई प्राथमिक प्रक्रिया के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (नदी स्थलाकृति)
P. गोखुर झील
Q. जलोढ़ पंख
R. कैनियन
S. प्राकृतिक तटबंध
सूची II: (प्राथमिक प्रक्रिया)
1. शुष्क क्षेत्र में लंबवत अपरदन
2. बाढ़ के दौरान निक्षेपण
3. विसर्प का कटना
4. पर्वत की तलहटी में निक्षेपण
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

61. हिमनद अपरदन द्वारा हिमनद घाटी के शीर्ष पर निर्मित कटोरे के आकार का, एम्फीथिएटर जैसा अवसाद है:
(A) ड्रमलिन
(B) केटल
(C) सर्क
(D) एस्कर

62. जब कई सर्क एक साथ अपरदित होते हैं, तो वे एक तेज, चाकू जैसी धार वाली लकीर बनाते हैं जिसे कहा जाता है:
(A) हॉर्न
(B) U-आकार की घाटी
(C) फियोर्ड
(D) एरेट

63. स्विस आल्प्स में मैटरहॉर्न किस हिमनद अपरदनात्मक विशेषता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) पिरामिडल चोटी या हॉर्न
(B) लटकती घाटी
(C) सर्क
(D) एरेट

64. एक नदी घाटी के विपरीत जो V-आकार की होती है, हिमनद द्वारा बनाई गई घाटी की विशिष्ट आकृति होती है:
(A) ऊर्ध्वाधर भुजाओं वाला समतल तल
(B) U-आकार
(C) S-आकार
(D) असममित आकार

65. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): हिमनद अपरदन के शक्तिशाली दूत हैं, जो परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदलने में सक्षम हैं।
कारण (R): हिमनद अपरदन उत्पाटन और अपघर्षण की प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

66. एक छोटी सहायक हिमनद घाटी जो अधिक ऊंचाई पर एक मुख्य हिमनद घाटी से मिलती है, कहलाती है:
(A) लटकती घाटी
(B) कटे हुए स्पर
(C) रिबन झील
(D) फियोर्ड

NODIA

67. एक लंबी, लहरदार कटक जो स्तरीकृत रेत और बजरी से बनी होती है और हिमनद के भीतर या नीचे बहने वाली हिमजल धारा द्वारा निक्षेपित होती है, क्या कहलाती है?
(A) हिमोढ़
(B) ड्रमलिन
(C) एस्कर
(D) केम

68. ड्रमलिन हिमनदों से जुड़ी निक्षेपणात्मक विशेषताएं हैं। उनका विशिष्ट आकार क्या है?
(A) स्तरीकृत रेत की लहरदार कटक।
(B) हिमनद मलबे की शंकु के आकार की पहाड़ियाँ।
(C) तलछट के सपाट शीर्ष वाले टीले।
(D) टिल की लम्बी, असममित पहाड़ियाँ।

69. घाटी हिमनद के किनारों पर किस प्रकार का हिमोढ़ बनता है?
(A) अंतस्थ हिमोढ़
(B) मध्यस्थ हिमोढ़
(C) पार्श्विक हिमोढ़
(D) तलस्थ हिमोढ़

70. सूची I में दी गई हिमनद स्थलाकृति को सूची II में दिए गए प्रकार के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (हिमनद स्थलाकृति)
P. एरेट
Q. ड्रमलिन
R. एस्कर
S. सर्क
सूची II: (प्रकार)
1. निक्षेपणात्मक (हिमनद-जलीय)
2. अपरदनात्मक
3. अपरदनात्मक
4. निक्षेपणात्मक (हिमनद टिल)
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

71. समुद्र का एक गहरा, लंबा, संकीर्ण U-आकार का प्रवेश द्वार, जो एक निमज्जित हिमनद द्रोणी है, कहलाता है:
(A) लैगून
(B) ज्वारनदमुख
(C) रिया
(D) फियोर्ड

72. निम्नलिखित में से कौन सी हिमनद द्वारा निर्मित अपरदनात्मक स्थलाकृति नहीं है?
(A) हिमनद-अवक्षेप मैदान
(B) हॉर्न
(C) U-आकार की घाटी
(D) सर्क

73. सतह से ढीले कणों को उठाने और हटाने की पवन प्रक्रिया कहलाती है:
(A) अपघर्षण
(B) सन्निघर्षण
(C) अपवाहन
(D) साल्टेशन

74. पवन अपघर्षण द्वारा छतरी के आकार में तराशी गई चट्टान को क्या कहा जाता है?
(A) छत्रक शैल या गारा
(B) यारडांग
(C) ज़्यूगेन
(D) ड्रीकान्टर

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): आर्द्र क्षेत्रों की तुलना में शुष्क क्षेत्रों में पवन अपरदन का अधिक प्रभावी दूत है।
कारण (R): शुष्क क्षेत्रों में वनस्पति आवरण और नमी की कमी पवन को ढीली सतह सामग्री को आसानी से उठाने और परिवहन करने की अनुमति देती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

76. प्रचलित पवन दिशा के समानांतर संरेखित चट्टान की लम्बी कटक, जो नालियों या गलियारों द्वारा अलग की जाती है, कहलाती है:
(A) ज़्यूगेन
(B) यारडांग
(C) इनसेलबर्ग
(D) बरखान

77. निम्नलिखित में से कौन सी पवन द्वारा निर्मित निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है?
(A) अपवाहन गर्त
(B) यारडांग
(C) बालुका स्तूप
(D) छत्रक शैल

78. अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप जिसके सींग पवन की दिशा में आगे की ओर निकले होते हैं, कहलाते हैं:
(A) सीफ स्तूप
(B) अनुप्रस्थ स्तूप
(C) पैराबोलिक स्तूप
(D) बरखान

79. पवन द्वारा उड़ाई गई महीन दाने वाली सिल्ट के विस्तृत निक्षेपों को कहा जाता है:

Click Here to Buy book on Amazon

(A) लोएस
(B) जलोढ़क
(C) टिल
(D) रेगोलिथ

80. सूची I में दी गई शुष्क स्थलाकृति को सूची II में दी गई प्राथमिक प्रक्रिया के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (शुष्क स्थलाकृति)
P. बरखान
Q. अपवाहन गर्त
R. यारडांग
S. इनसेलबर्ग
सूची II: (प्राथमिक प्रक्रिया)
1. पवन अपघर्षण और अपवाहन
2. पवन निक्षेपण
3. विभेदी अपक्षय और अपरदन का अवशेष
4. पवन द्वारा ढीली रेत को हटाना
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

81. रेगिस्तानी मैदान से ऊपर उठने वाली अलग-थलग अवशिष्ट पहाड़ियाँ कहलाती हैं:
(A) ड्रमलिन
(B) इनसेलबर्ग
(C) मोनाडनॉक
(D) एस्कर

82. शुष्क स्थलाकृतियों का कौन सा युग्म पूरी तरह से निक्षेपणात्मक है?
(A) बालुका स्तूप और लोएस
(B) यारडांग और बरखान
(C) इनसेलबर्ग और लोएस
(D) छत्रक शैल और सीफ स्तूप

83. चूना पत्थर की प्रधानता वाला परिदृश्य, जिसकी विशेषता सिंकहोल और गुफाएं हैं, कहलाता है:
(A) नदी स्थलाकृति
(B) पवन स्थलाकृति
(C) कार्स्ट स्थलाकृति
(D) हिमनद स्थलाकृति

84. अधिकांश कार्स्ट विशेषताओं के निर्माण के लिए जिम्मेदार मौलिक रासायनिक प्रक्रिया है:
(A) लोहे का ऑक्सीकरण
(B) खनिजों का जलयोजन
(C) सिलिकेट्स का जल-अपघटन
(D) कैल्शियम कार्बोनेट का विलयन

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): कार्स्ट स्थलाकृति शुद्ध, मोटे और अत्यधिक संधियुक्त चूना पत्थर वाले क्षेत्रों में सबसे प्रभावी ढंग से विकसित होती है।
कारण (R): ये विशेषताएं पानी के आसान रिसाव और दरारों के साथ चट्टान के घुलने की अनुमति देती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

86. कार्स्ट क्षेत्र में सतह पर एक गोलाकार अवसाद, जो चूना पत्थर के घुलने या गुफा की छत के ढहने से बनता है, कहलाता है:
(A) पोल्ये
(B) सिंकहोल या डोलिन
(C) उवाला
(D) लैपिस

87. जब कई सिंकहोल आपस में मिल जाते हैं, तो वे एक बड़ा, अनियमित अवसाद बनाते हैं जिसे कहा जाता है:
(A) पोल्ये
(B) गुफा
(C) लैपिस
(D) उवाला

NODIA

88. चूना पत्थर की गुफा की छत से लटकने वाली आकृतियों को क्या कहते हैं?
(A) स्टैलेक्टाइट
(B) स्टैलेग्माइट
(C) स्तंभ
(D) प्रवाह-पाषाण

89. कार्स्ट गुफा में कौन सी निक्षेपणात्मक विशेषता फर्श से ऊपर की ओर बढ़ती है?
(A) स्टैलेक्टाइट
(B) ड्रेपरी
(C) स्टैलेग्माइट
(D) हेलिक्टाइट

90. सूची I में दी गई कार्स्ट स्थलाकृति को सूची II में दिए गए विवरण के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (कार्स्ट स्थलाकृति)
P. स्टैलेक्टाइट
Q. स्टैलेग्माइट
R. सिंकहोल
S. पोल्ये
सूची II: (विवरण)
1. गुफा के फर्श से ऊपर की ओर बढ़ता है
2. गुफा की छत से नीचे लटकता है

3. बड़ा, सपाट तल वाला बंद अवसाद
4. विलयन द्वारा निर्मित सतही अवसाद
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

91. चूना पत्थर की गुफा के अंदर बनने वाली स्तंभ जैसी विशेषता जब एक स्टैलेक्टाइट और एक स्टैलेग्माइट आपस में मिल जाते हैं, कहलाती है:
(A) उवाला
(B) प्रवाह-पाषाण
(C) हेलिक्टाइट
(D) स्तंभ

92. कार्स्ट स्थलाकृति के विकास के लिए आवश्यक शर्तों में निम्नलिखित में से कौन सी शामिल नहीं है?
(A) सतह पर या उसके पास घुलनशील चट्टान, अधिमानतः चूना पत्थर की उपस्थिति।
(B) चट्टान को संतृप्त रखने के लिए उच्च जल स्तर।
(C) कम से कम मध्यम वर्षा।
(D) चट्टान में जोड़ों और दरारों की उपस्थिति।

93. समुद्री लहरों की अपरदनात्मक क्रिया निम्नलिखित में से कौन सी स्थलाकृति बनाने के लिए जिम्मेदार है?
(A) पुलिन
(B) स्पिट
(C) समुद्री भृगु
(D) टॉम्बोलो

94. लहरों द्वारा रेत के निक्षेपण से निर्मित स्थलाकृति, जो तट के समानांतर चलती है और कभी-कभी लैगून को घेर लेती है, कहलाती है:
(A) समुद्री मेहराब
(B) तरंग-घर्षित चबूतरा
(C) समुद्री स्तंभ
(D) रोधिका

95. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में चिह्नित किया गया है।
अभिकथन (A): लहरों की ऊर्जा तटीय अपरदन और निक्षेपण का प्राथमिक चालक है।
कारण (R): लहरें समुद्र के पानी पर चंद्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव से उत्पन्न होती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

96. जब एक समुद्री गुफा एक अंतरीप के आर-पार अपरदित हो जाती है, तो यह बनाती है:
(A) समुद्री स्तंभ
(B) समुद्री मेहराब
(C) वातछिद्र
(D) जियो

97. समुद्र में खड़ा चट्टान का एक अलग-थलग स्तंभ, जो कभी अंतरीप का हिस्सा था, कहलाता है:
(A) समुद्री मेहराब
(B) समुद्री स्तंभ
(C) टॉम्बोलो
(D) स्पिट

98. निम्नलिखित में से कौन सी निक्षेपणात्मक विशेषता है जो एक द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ती है?
(A) टॉम्बोलो
(B) स्पिट
(C) रोधिका
(D) कुस्पेट फोरलैंड

99. समुद्री भृगु के आधार पर लहरों के अपरदन से निर्मित हल्की ढलान वाली सतह कहलाती है:
(A) पुलिन
(B) बर्म
(C) तरंग-घर्षित चबूतरा
(D) अपतटीय रोधिका

100. सूची I में दी गई तटीय स्थलाकृति को सूची II में दिए गए प्रकार के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (तटीय स्थलाकृति)
P. समुद्री स्तंभ
Q. पुलिन
R. टॉम्बोलो
S. समुद्री गुफा
सूची II: (प्रकार)
1. निक्षेपणात्मक
2. अपरदनात्मक
3. अपरदनात्मक
4. निक्षेपणात्मक
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

101. रेत की एक लंबी कटक जो जमीन से निकलकर पानी के निकाय में जाती है, कहलाती है:
(A) टॉम्बोलो
(B) पुलिन
(C) स्पिट
(D) रोधिका

Downloaded from www.pdf.tube

102. एक पर्यटक समुद्री स्तंभों, मेहराबों और तरंग-घर्षित चबूतरे वाले परिदृश्य को देखता है। इस तटरेखा का सबसे अच्छा वर्णन इस रूप में किया गया है:
(A) उन्मज्जित तटरेखा
(B) एक अपरदनात्मक तटरेखा
(C) निमज्जित तटरेखा
(D) एक निक्षेपणात्मक तटरेखा

103. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: भू-आकृतिक चक्र की अवधारणा पहली बार व्यवस्थित रूप से डब्लू. एम. डेविस द्वारा प्रस्तावित की गई थी।
कथन II: वाल्थर पेंक के मॉडल को डेविसियन चक्र की आलोचना और विकल्प माना जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

104. अंतर्जात और बहिर्जात बलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अंतर्जात बल रचनात्मक होते हैं, जबकि बहिर्जात बल आम तौर पर विनाशात्मक होते हैं।
2. भूकंप बहिर्जात बलों का परिणाम हैं।
3. अनाच्छादन बहिर्जात बलों की क्रियाओं के लिए एक व्यापक शब्द है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

105. अपरदन दूतों द्वारा ले जाए गए कणों की घर्षण क्रिया द्वारा चट्टानों के घिसने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) संक्षारण
(B) सन्निघर्षण
(C) अपघर्षण
(D) जलीय क्रिया

106. प्लेट विवर्तनिकी में, 'स्थलमंडल' क्या है?
(A) पृथ्वी का कठोर बाहरी भाग, जिसमें पपड़ी और ऊपरी मेंटल शामिल है।
(B) पृथ्वी का पिघला हुआ बाहरी क्रोड।
(C) ऊपरी मेंटल की अर्ध-पिघली हुई परत।
(D) महासागरीय और महाद्वीपीय तलछट की परत।

107. टेथिस सागर निम्नलिखित में से किस भूगर्भीय सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण तत्व है?
(A) दक्कन ट्रैप का निर्माण।
(B) अपरदन का चक्र।
(C) मध्य-अटलांटिक कटक का निर्माण।
(D) प्लेट विवर्तनिकी और महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांतों में हिमालय की उत्पत्ति की व्याख्या करना।

108. कौन सा शब्द विकास के उस चरण को संदर्भित करता है जहाँ अपरदन की दर उत्थान की दर के बराबर होती है, जिससे निरंतर सापेक्ष उच्चावच का परिदृश्य बनता है?
(A) बढ़ता विकास
(B) समान विकास
(C) घटता विकास
(D) प्राइमरम्फ

109. गार्ज और कैनियन के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) गार्ज मुख्य रूप से हिमनदों द्वारा बनता है, जबकि कैनियन नदियों द्वारा बनता है।
(B) गार्ज काफी चौड़ा होता है, जबकि कैनियन आमतौर पर बहुत संकीर्ण होता है।
(C) कैनियन एक चौड़ी, सीढ़ीनुमा भुजाओं वाली घाटी है, जबकि गार्ज संकीर्ण और खड़ी है।
(D) गार्ज एक निक्षेपणात्मक विशेषता है, जबकि कैनियन एक अपरदनात्मक विशेषता है।

110. अपरदन के भू-आकृतिक चक्र के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. वृद्धावस्था
2. युवावस्था
3. प्रौढ़ावस्था

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 1, 3
(D) 2, 3, 1

111. हिमनद का अपरदनात्मक कार्य किन दो मुख्य प्रक्रियाओं द्वारा पूरा किया जाता है?
(A) उत्पाटन और अपघर्षण
(B) अपवाहन और अपघर्षण
(C) विलयन और सन्निघर्षण
(D) जलीय क्रिया और संक्षारण

112. जब एक सहायक हिमनद से पार्श्विक हिमोढ़ मुख्य हिमनद से पार्श्विक हिमोढ़ के साथ मिल जाता है, तो कौन सी निक्षेपणात्मक विशेषता बनती है?
(A) अंतस्थ हिमोढ़
(B) मध्यस्थ हिमोढ़
(C) तलस्थ हिमोढ़
(D) पीछे हटता हिमोढ़

113. 'ज़्यूगेन' शुष्क क्षेत्रों में कोमल चट्टानों के ऊपर खड़े प्रतिरोधी चट्टानों के मेजनुमा द्रव्यमान हैं। वे मुख्य रूप से किसके द्वारा बनते हैं?
(A) पवन निक्षेपण

NODIA

(B) पवन अपघर्षण द्वारा विभेदी अपरदन
(C) तुषार क्रिया
(D) नदी निक्षेपण

114. अपक्षय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अपक्षय में एक स्थान से दूसरे स्थान तक चट्टानी मलबे का संचलन शामिल होता है।
2. गर्म, शुष्क जलवायु में भौतिक अपक्षय प्रमुख होता है।
3. रासायनिक अपक्षय में चट्टानों की रासायनिक संरचना का परिवर्तन शामिल होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

115. कार्स्ट परिदृश्य में समतल तल वाला, खड़ी भुजाओं वाला, बड़े पैमाने का अवसाद है:
(A) सिंकहोल
(B) उवाला
(C) पोल्ये
(D) गुफा

116. नदी घाटी के आंशिक रूप से डूबने से बनी निमज्जित तटरेखा कहलाती है:
(A) फियोर्ड तटरेखा
(B) डालमेशियन तटरेखा
(C) हाफ तटरेखा
(D) रिया तटरेखा

117. 'अपरदन का आधार तल' की अवधारणा किसके द्वारा प्रस्तावित भू-आकृतिक मॉडल का केंद्र थी?
(A) वाल्थर पेंक
(B) ग्रोव कार्ल गिल्बर्ट
(C) डब्लू. एम. डेविस
(D) एल. सी. किंग

118. शुरुआती विस्थापन सिद्धांतों में महाद्वीपों के पश्चिम की ओर विस्थापन के लिए कौन सा बल जिम्मेदार माना गया था?
(A) संवहन धाराएं
(B) सूर्य और चंद्रमा का ज्वारीय बल
(C) रिज़ पुश
(D) स्लैब पुल

119. द्वीप चाप, जैसे जापान और फिलीपींस, किस प्रकार की प्लेट सीमा पर बनते हैं?
(A) महासागरीय-महासागरीय अपसारी
(B) महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसारी
(C) महाद्वीपीय रिफ्ट ज़ोन
(D) महासागरीय-महासागरीय अभिसारी

120. अन्तर्ग्रथित स्पर की विशेषता वाला परिदृश्य नदी के किस मार्ग का विशिष्ट उदाहरण है?
(A) ऊपरी मार्ग (युवावस्था)
(B) निचला मार्ग (वृद्धावस्था)
(C) मध्य मार्ग (प्रौढ़ावस्था)
(D) कायाकल्पित मार्ग

121. 'अनाच्छादन' शब्द में निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया शामिल नहीं है?
(A) अपक्षय
(B) अपरदन
(C) पर्वत निर्माण
(D) परिवहन

122. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: पटल विरूपण में वे सभी प्रक्रियाएं शामिल हैं जो पृथ्वी की पपड़ी के हिस्सों को संचलित, ऊपर उठाती या निर्मित करती हैं।
कथन II: ज्वालामुखी क्रिया बहिर्जात प्रक्रिया का एक रूप है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

123. महाद्वीपों का 'जिग-सॉ पजल' की तरह फिट होना किस सिद्धांत के लिए एक प्रमुख प्रमाण था?
(A) प्लेट विवर्तनिकी
(B) सागर नितल प्रसरण
(C) समस्थैतिकी
(D) महाद्वीपीय विस्थापन

124. निम्नलिखित में से कौन शुष्क अपरदन चक्र से जुड़ी स्थलाकृति है?
(A) सर्क
(B) पेडिमेंट
(C) मोनाडनॉक
(D) प्राकृतिक तटबंध

125. प्लेट विवर्तनिकी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पृथ्वी का स्थलमंडल कई मुख्य और छोटी प्लेटों में विभाजित है।
2. अधिकांश भूकंप और ज्वालामुखी गतिविधि प्लेट सीमाओं पर होती है।
3. प्लेटें स्थिर हैं और लाखों वर्षों से नहीं हटी हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2 और 3
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

Click Here to Buy book on Amazon

126. दरारों में पानी के बार-बार जमने और पिघलने के कारण चट्टानों के टूटने को कहा जाता है:
(A) तापीय प्रसार
(B) दबाव मुक्ति
(C) नमक क्रिस्टल की वृद्धि
(D) तुषार विदारण

127. भू-आकृतिक मॉडल के बढ़ते विकास चरण में, एक ढाल प्रोफाइल आमतौर पर होती है:
(A) उत्तल
(B) अवतल
(C) सीधी
(D) सपाट

128. एक नदी विसर्प एक ऐसी विशेषता है जिसमें शामिल है:
(A) केवल अपरदन
(B) बाहरी किनारे पर अपरदन और भीतरी किनारे पर निक्षेपण दोनों
(C) केवल निक्षेपण
(D) युवावस्था में लंबवत अपरदन

129. अवर्गीकृत और अस्तरहीन हिमनद निक्षेपों को सामूहिक रूप से कहा जाता है:
(A) लोएस
(B) टिल
(C) जलोढ़क
(D) अवक्षेप

130. नालियों और खरोंचों वाली आधारभूत चट्टानी सतहें, जिन्हें हिमनद स्ट्रीएशन कहा जाता है, किस हिमनद प्रक्रिया का प्रमाण हैं?
(A) अपघर्षण
(B) उत्पाटन
(C) पिघलना
(D) निक्षेपण

131. निम्नलिखित में से कौन भू-सन्नति की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) दो भ्रंशों के बीच भूमि का उठा हुआ खंड।
(B) नवगठित पर्वत की चोटी।
(C) तलछट संचय की एक लंबी, धंसती हुई द्रोणी।
(D) एक गोलाकार ज्वालामुखी गर्त।

132. पूर्वी अफ्रीकी रिफ्ट घाटी किसके द्वारा निर्मित स्थलाकृति का एक उदाहरण है?
(A) एक अभिसारी प्लेट सीमा
(B) एक रूपांतर प्लेट सीमा
(C) एक सबडक्शन क्षेत्र
(D) एक महाद्वीप पर अपसारी प्लेट सीमा

133. शुष्क अपरदन चक्र में अंतिम, लगभग समतल अपरदनात्मक सतह को क्या कहा जाता है?
(A) पेनीप्लेन
(B) एंडरम्फ
(C) पेडीप्लेन
(D) पैनप्लेन

134. डेविसियन भू-आकृतिक चक्र से जुड़े निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. चक्र तीव्र, अल्पकालिक उत्थान के साथ शुरू होता है।
2. अंतिम उत्पाद पेडीप्लेन नामक एक विशेषताहीन मैदान है।
3. भू-दृश्य विकास संरचना, प्रक्रम और अवस्था का प्रतिफल है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

135. जब लहरें एक अंतरीप के चारों ओर मुड़ती हैं और इसके पीछे शांत पानी में तलछट जमा करती हैं, तो कौन सी निक्षेपणात्मक स्थलाकृति बनती है?
(A) स्पिट
(B) लैगून
(C) अपतटीय रोधिका
(D) पुलिन

136. चट्टान खनिजों द्वारा पानी का अवशोषण, जिससे उनका विस्तार होता है और चट्टान के भीतर तनाव उत्पन्न होता है, किसकी प्रक्रिया है?
(A) जलयोजन
(B) ऑक्सीकरण
(C) कार्बोनेशन
(D) विलयन

137. कौन सी स्थलाकृति कार्स्ट परिदृश्य से संबंधित नहीं है?
(A) डोलिन
(B) उवाला
(C) ड्रमलिन
(D) स्टैलेक्टाइट

138. प्लेट विवर्तनिकी का सिद्धांत निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी की सफलतापूर्वक व्याख्या करता है?
(A) समुद्री ज्वार का दैनिक चक्र।
(B) भूकंपों और ज्वालामुखियों का वितरण।
(C) एंडीज और हिमालय जैसे वलित पर्वतों का निर्माण।
(D) मध्य-महासागरीय कटकों की उपस्थिति।

139. नदी चक्र की प्रौढ़ावस्था में, नदी की प्रोफाइल की विशेषता होती है:

NODIA

(A) क्षिप्रकाओं और जलप्रपातों के साथ एक खड़ी ढाल।
(B) बहुत धीमी प्रवाह के साथ लगभग सपाट ढाल।
(C) बिना बाढ़ के मैदान के V-आकार की घाटी।
(D) अपरदन और निक्षेपण के बीच संतुलन के साथ एक श्रेणीबद्ध प्रोफाइल।

140. महाद्वीपीय विस्थापन और प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांतों से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. महाद्वीपों की उत्पत्ति पर सैद्धांतिक कार्य का प्रकाशन।
2. सागर नितल प्रसरण परिकल्पना का प्रस्ताव।
3. प्लेट विवर्तनिकी के व्यापक सिद्धांत की सामान्य स्वीकृति।

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

141. वेंटिफैक्ट क्या है?
(A) एक ज्वालामुखी मुख जो गैसें उत्सर्जित करता है।
(B) चूना पत्थर की गुफा में एक निक्षेपणात्मक विशेषता।
(C) एक चट्टान जिसे पवन द्वारा उड़ाई गई रेत द्वारा आकार दिया गया, गड्ढेदार बनाया गया और पॉलिश किया गया है।
(D) एक प्रकार की छोटी, लहरदार हिमनद कटक।

142. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: अपशल्कन भौतिक अपक्षय का एक रूप है जो ग्रेनाइट जैसी विशाल, सजातीय चट्टानों में आम है।
कथन II: अपशल्कन फेल्डस्पार खनिजों के साथ पानी की रासायनिक प्रतिक्रिया के कारण होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

143. एंडीज पर्वत दक्षिण अमेरिकी प्लेट के नीचे नाज़का प्लेट के सबडक्शन का परिणाम हैं। यह किसका उदाहरण है?
(A) महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसरण
(B) महासागरीय-महासागरीय अभिसरण
(C) महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसरण
(D) एक रुपांतर सीमा

144. निम्नलिखित स्थलाकृतियों पर विचार करें:
1. हिमोढ़
2. एरेट
3. U-आकार की घाटी

उपरोक्त में से कौन से हिमनद अपरदन के उत्पाद हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

145. "भू-दृश्य विकास में संरचना प्रमुख नियंत्रण कारक है।" यह कथन किसके द्वारा प्रस्तावित भू-आकृतिक मॉडल में एक मौलिक धारणा है?
(A) वाल्थर पेंक
(B) डब्लू. एम. डेविस
(C) एल. सी. किंग
(D) जे. टी. हैक

146. एक भूगोलवेत्ता एक परिदृश्य का अध्ययन करते हुए लैपिस और कई सिंकहोल की उपस्थिति पर ध्यान देता है। इस क्षेत्र में आधारभूत चट्टान सबसे अधिक होने की संभावना है:
(A) चूना पत्थर
(B) ग्रेनाइट
(C) बलुआ पत्थर
(D) बेसाल्ट

147. रोधिका या प्रवाल भित्ति द्वारा खुले समुद्र से अलग किया गया एक बड़ा जल निकाय है:
(A) ज्वारनदमुख
(B) फियोर्ड
(C) लैगून
(D) रिया

148. गुरुत्वाकर्षण के प्रत्यक्ष प्रभाव में चट्टान और रेगोलिथ के नीचे की ओर संचलन को सबसे अच्छा कहा जाता है:
(A) अपरदन
(B) अपक्षय
(C) अनाच्छादन
(D) वृहद् क्षरण

149. चक्र की अवधारणा निम्नलिखित में से किस भू-आकृतिक दूत पर इसकी कम पूर्वानुमानित और अधिक अवसरवादी प्रकृति के कारण कम लागू होती है?
(A) नदी
(B) हिमनद
(C) तटीय
(D) कार्स्ट

150. निम्नलिखित में से कौन भू-आकृति विज्ञान में एक मौलिक अवधारणा नहीं है?
(A) भू-आकृतिक प्रक्रियाएं स्थलाकृतियों पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ती हैं।
(B) किसी स्थलाकृति का आर्थिक मूल्य उसके भू-आकृतिक वर्गीकरण को निर्धारित करता है।
(C) भौतिक प्रक्रियाएं जो आज संचालित होती हैं, वे पूरे भूगर्भीय समय के दौरान संचालित थीं।
(D) भूगर्भीय संरचना स्थलाकृति विकास में एक प्रमुख नियंत्रण कारक है।

NODIA

151. पृथ्वी के भीतर से उत्पन्न होने वाले बल, जैसे ज्वालामुखी गतिविधि, कहलाते हैं:
(A) बहिर्जात बल
(B) अनाच्छादन बल
(C) संक्षारक बल
(D) अंतर्जात बल

152. एक मानक भू-आकृतिक चक्र में, किस अवस्था में एक नदी प्रणाली अपना अधिकतम उच्चावच और सबसे जटिल अपवाह तंत्र प्राप्त करती है?
(A) प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था
(B) युवावस्था
(C) उत्तर वृद्धावस्था
(D) संप्राय मैदान निर्माण

153. महाद्वीपीय विस्थापन और प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धांत के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि:
(A) विस्थापन ने संचलन का प्रस्ताव दिया, जबकि प्लेट विवर्तनिकी सुझाव देती है कि महाद्वीप स्थिर हैं।
(B) प्लेट विवर्तनिकी केवल प्रशांत पर लागू होती है, जबकि विस्थापन वैश्विक दायरे में था।
(C) प्लेट विवर्तनिकी में समुद्र तल शामिल है, जबकि विस्थापन ने केवल महाद्वीपीय पपड़ी को संचलित किया।
(D) विस्थापन को चुंबकीय पट्टियों द्वारा समर्थित किया गया था, जिसे प्लेट विवर्तनिकी पूरी तरह से खारिज करती है।

154. नदी चक्र से जुड़ी निम्नलिखित स्थलाकृतियों पर विचार करें:
1. जलगर्तिका
2. जलोढ़ पंख
3. बाढ़ का मैदान
उपरोक्त में से कौन सी निक्षेपणात्मक स्थलाकृतियां हैं?
(A) केवल 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

155. दो सर्कों के बीच चाकू जैसी लकीर एरेट है। वह विशेषता क्या है जो तब बनती है जब तीन या अधिक सर्क एक-दूसरे की ओर शीर्षवर्ती अपरदन करते हैं?
(A) लटकती घाटी
(B) टार्न
(C) कोल
(D) हॉर्न

156. फेल्डस्पार से मिट्टी के खनिजों का बनना किस रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) ऑक्सीकरण
(B) जल-अपघटन
(C) कार्बोनेशन
(D) चिलेशन

157. कौन सी तटीय विशेषता एक ढहे हुए समुद्री मेहराब का अपरदनात्मक अवशेष है?
(A) समुद्री गुफा
(B) पुलिन
(C) समुद्री स्तंभ
(D) टॉम्बोलो

158. शुरुआती विस्थापन सिद्धांतों में प्रस्तावित 'ध्रुव-पलायन बल' कथित तौर पर किसके कारण हुआ था?
(A) ध्रुवों का चुंबकीय आकर्षण।
(B) मेंटल में संवहन धाराएं।
(C) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव।
(D) पृथ्वी के घूर्णन से भूमध्य रेखा की ओर केंद्रत्यागी बल का निर्माण।

159. कुछ भू-आकृतिक प्रणालियों में, 'एंडरम्फ' शब्द डेविसियन प्रणाली में किस विशेषता के अनुरूप है?
(A) पेनीप्लेन
(B) प्रारंभिक उच्चभूमि
(C) मोनाडनॉक
(D) V-आकार की घाटी

160. निम्नलिखित हिमनद स्थलाकृतियों को उनके बनने के संभावित क्रम में व्यवस्थित करें:
1. एरेट
2. सर्क
3. हॉर्न
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 3, 1

161. एक क्षेत्र अपवाहन गर्तों और बरखान स्तूपों के क्षेत्रों की विशेषता वाला है। वहां काम करने वाला प्रमुख भू-आकृतिक दूत है:
(A) बहता जल
(B) पवन
(C) हिमनद बर्फ
(D) भूजल

162. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: अपक्षय की प्रक्रिया अपरदन होने के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है।
कथन II: अपरदन में अपक्षयित सामग्री का परिवहन शामिल होता है, जबकि अपक्षय एक स्वस्थानी प्रक्रिया है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

163. मध्य-अटलांटिक कटक किस प्रकार की प्लेट सीमा का एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) अभिसारी (महासागरीय-महाद्वीपीय)
(B) अभिसारी (महाद्वीपीय-महाद्वीपीय)
(C) अपसारी
(D) रूपांतर

164. निम्नलिखित में से कौन भू-सन्नति से पर्वत श्रृंखला के निर्माण का एक चरण नहीं है?
(A) लिथोजेनेसिस (तलछटीकरण)
(B) ओरोजेनेसिस (पर्वत निर्माण)
(C) ग्लिप्टोजेनेसिस (अपरदन और नक्काशी)
(D) पेनीप्लेनेशन (समतलीकरण)

165. शुष्क चक्र की स्थलाकृतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इनसेलबर्ग पवन द्वारा निर्मित निक्षेपणात्मक विशेषताएं हैं।
2. पेडिमेंट पर्वतों की तलहटी में हल्की ढलान वाली अपरदनात्मक सतहें हैं।
3. लोएस पवन द्वारा उड़ाई गई रेत का निक्षेप है, जो आमतौर पर बड़े स्तूप बनाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 2
(D) 1, 2 और 3

166. एक नदी को पार्श्व अपरदन के माध्यम से अपनी घाटी को सक्रिय रूप से चौड़ा करते हुए देखा जाता है, और इसमें विसर्प के साथ एक अच्छी तरह से विकसित बाढ़ का मैदान है। यह नदी अपनी किस अवस्था में है?
(A) युवावस्था
(B) प्रौढ़ावस्था
(C) वृद्धावस्था
(D) उत्कीर्ण अवस्था

167. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा भार कम होने और विस्तार के कारण चट्टान की परतें प्याज की परतों की तरह उतरती हैं, कहलाती है:
(A) कणीय विखंडन
(B) तुषार क्रिया
(C) लवण अपक्षय
(D) अपशल्कन

168. निम्नलिखित में से कौन सा कार्स्ट स्थलाकृति को उसके विवरण के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) उवाला - कई छोटे सिंकहोल के मिलने से बना एक संयुक्त सिंकहोल।
(B) स्टैलेक्टाइट - गुफा के फर्श से उगने वाला एक स्तंभ।
(C) सिंकहोल - एक बड़ी, सपाट तल वाली घाटी।
(D) पोल्ये - गुफा की छत से लटकने वाली बर्फ की जैसी आकृति।

169. महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के प्रस्ताव पर वैज्ञानिक समुदाय की मुख्य आपत्ति थी:
(A) महाद्वीपीय तटरेखाओं का खराब मिलान।
(B) जीवाश्म साक्ष्यों की कमी।
(C) प्रस्तावित प्रेरक बलों की अपर्याप्तता।
(D) पुरा-जलवायु साक्ष्यों की अनुपस्थिति।

170. एक निमज्जित तटरेखा पर एक डूबा हुआ नदी मुहाना, जो कीप के आकार का प्रवेश द्वार बनाता है, कहलाता है:
(A) ज्वारनदमुख
(B) फियोर्ड
(C) लैगून
(D) डेल्टा

NODIA

171. अधिकांश नदियों और धाराओं के लिए अंतिम आधार तल है:
(A) एक प्रतिरोधी चट्टान की परत
(B) एक बड़ी झील
(C) स्थानीय जल स्तर
(D) समुद्र तल

172. माना जाता है कि विवर्तनिक प्लेटों का संचलन किसके द्वारा संचालित होता है?
(A) चंद्रमा और सूर्य से ज्वारीय बल।
(B) पृथ्वी के मेंटल के भीतर संवहन धाराएं।
(C) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र।
(D) समस्थैतिक समायोजन की प्रक्रिया।

173. एस्कर को हिमोढ़ से क्या अलग करता है?
(A) एस्कर अपरदनात्मक हैं, जबकि हिमोढ़ निक्षेपणात्मक हैं।
(B) एस्कर सामने पाए जाते हैं, जबकि हिमोढ़ ऊपर पाए जाते हैं।
(C) एस्कर स्तरीकृत निक्षेप हैं, जबकि हिमोढ़ अवर्गीकृत टिल हैं।
(D) एस्कर चट्टान से बने होते हैं, जबकि हिमोढ़ बर्फ से बने होते हैं।

174. भू-दृश्य विकास के कुछ मॉडलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह मुख्य रूप से समय पर निर्भर है, जो युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था के चरणों में व्यवस्थित है।
2. यह उत्थान की दर और अनाच्छादन की दर के बीच के अनुपात पर केंद्रित है।
3. अंतिम उत्पाद हमेशा उत्तल ढाल वाला भू-दृश्य होता है।

गतिशील संबंध मॉडलों के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3

(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 2

175. कील पर जंग लगना चट्टानों में किस अपक्षय प्रक्रिया के अनुरूप है?
(A) ऑक्सीकरण
(B) कार्बोनेशन
(C) जलयोजन
(D) विलयन

176. निम्नलिखित में से कौन सी तटीय निक्षेपण की स्थलाकृति है?
(A) तरंग-घर्षित चबूतरा
(B) स्पिट
(C) समुद्री मेहराब
(D) समुद्री भृगु

177. "पैंजिया" शब्द किसको संदर्भित करता है?
(A) महामहाद्वीप के चारों ओर का सार्वभौमिक महासागर।
(B) वह महामहाद्वीप जो उत्तर पेलियोजोइक युग के दौरान मौजूद था।
(C) महामहाद्वीप के विभाजित होने के बाद का उत्तरी भूखंड।
(D) महामहाद्वीप के विभाजित होने के बाद का दक्षिणी भूखंड।

178. एक नदी जो एक प्रतिरोधी चट्टान की कटक के आर-पार काटती है, और अपना मार्ग बनाए रखती है क्योंकि कटक का उत्थान हुआ था, कहलाती है:
(A) पूर्ववर्ती सरिता
(B) अनुवर्ती सरिता
(C) परवर्ती सरिता
(D) प्रति-अनुवर्ती सरिता

179. यदि किसी गुफा के फर्श से ऊपर की ओर निक्षेपणात्मक विशेषताएं बढ़ती हुई देखी जाती हैं, तो वे होंगी:
(A) स्टैलेक्टाइट
(B) हेलिक्टाइट
(C) स्टैलेग्माइट
(D) ड्रेपरी

180. एक विशिष्ट अल्पाइन हिमनद परिदृश्य में निम्नलिखित स्थलाकृतियों को उच्चतम ऊंचाई से न्यूनतम ऊंचाई तक व्यवस्थित करें:
1. U-आकार की घाटी का तल
2. हॉर्न
3. लटकती घाटी
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 1, 3
(D) 2, 3, 1

181. यह अवधारणा कि बड़े पैमाने पर भूगर्भीय परिवर्तन छोटी, हिंसक घटनाओं में हुए, कहलाती है:
(A) एकरूपतावाद
(B) क्रमिकवाद
(C) आकस्मिकवाद
(D) पटल विरूपण

182. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: कुछ भू-आकृतिक मॉडलों में, एक अवतल घाटी ढाल प्रोफाइल घटते विकास के चरण को इंगित करती है।
कथन II: यह तब होता है जब घाटी के गहरा होने की दर घाटी की भुजाओं के नीचे की ओर घिसने की दर से कम हो जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

183. जीवाश्म फ़र्न ग्लोसॉप्टेरिस महाद्वीपीय विस्थापन के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण था क्योंकि:
(A) यह एक विशिष्ट समुद्री जानवर था जो हर एक प्रमुख महाद्वीप पर पाया जाता था।
(B) यह केवल अत्यधिक ठंडे और बर्फीले हिमनद वातावरण में पनप सकता था।
(C) इसकी खोज केवल दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के स्थानीय क्षेत्रों में हुई थी।
(D) इसके बीज इतने भारी थे कि उन्हें पवन द्वारा विस्तृत महासागरों के पार नहीं ले जाया जा सकता था।

184. निम्नलिखित स्थलाकृतियों पर विचार करें:
1. यारडांग
2. एस्कर
3. बरखान
उपरोक्त में से कौन मुख्य रूप से पवन द्वारा आकार दिया गया है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

185. एक भूगर्भीय परिदृश्य के निम्नलिखित विवरण को पढ़ें और सर्वोत्तम व्याख्या की पहचान करें। हिमालय के एक अध्ययन से पता चलता है कि पर्वत अभी भी ऊपर उठ रहे हैं। इस निरंतर पर्वत निर्माण की सबसे अच्छी व्याख्या किसके द्वारा की गई है?
(A) प्राचीन हिमनदों के पिघलने के बाद समस्थैतिक पुनरुत्थान।
(B) सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियों की अपरदनात्मक गतिविधि।
(C) भारतीय और यूरेशियन प्लेटों का निरंतर अभिसरण।
(D) चक्रवात मॉडलों में वर्णित तीव्र उत्थान का एक चरण।

Click Here to Buy book on Amazon

186. किस प्रकार का हिमोढ़ हिमनद की सबसे दूर की अग्रिम सीमा को चिन्हित करता है?
(A) अंतस्थ हिमोढ़
(B) मध्यस्थ हिमोढ़
(C) पार्श्विक हिमोढ़
(D) तलस्थ हिमोढ़

187. कार्स्ट परिदृश्य की सतही विशेषताओं के लिए शब्द, जिसकी विशेषता तीखे, नालीदार और गड्ढेदार चूना पत्थर की भूलभुलैया है, कहलाता है:
(A) पोल्ये
(B) हम्स
(C) ट्रेवर्टीन
(D) लैपिस या कार्रेन

188. नदी परिदृश्य विकास के सैद्धांतिक अंत बिंदु में, कौन सी विशेषता सबसे विशिष्ट है?
(A) इनसेलबर्गों के साथ बिंदीदार पेडीप्लेन।
(B) पेनीप्लेन नामक एक निचला, लगभग विशेषताहीन मैदान।
(C) गहरी घाटियों के साथ अधिकतम उच्चावच का परिदृश्य।
(D) संरचनात्मक बेंचों के प्रभुत्व वाली एक ऊबड़-खाबड़ सतह।

189. निम्नलिखित में से कौन बहिर्जात प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) वलन
(B) भ्रंशन
(C) अपक्षय
(D) ज्वालामुखी क्रिया

190. फियोर्ड क्या है?
(A) एक निमज्जित नदी घाटी।
(B) एक उथला तटीय लैगून।
(C) एक निक्षेपणात्मक रेत रोधिका।
(D) एक निमज्जित हिमनद घाटी।

191. अंतर्जात और बहिर्जात बलों के बीच प्राथमिक अंतर निहित है:
(A) उनकी उत्पत्ति में।
(B) संचालन की गति में।
(C) भौगोलिक स्थिति में।
(D) जलवायु पर प्रभाव में।

192. यदि एक भूविज्ञानी को अंतस्थ हिमोढ़ों की एक श्रृंखला मिलती है, जिनमें से प्रत्येक पिछले वाले की तुलना में घाटी में ऊपर स्थित है, तो क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(A) हिमनद तेजी से आगे बढ़ा।
(B) हिमनद स्थिरता की अवधि के साथ पीछे हटने की सामान्य स्थिति में था।
(C) हिमनद लंबे समय तक स्थिर था।
(D) घाटी एक नदी द्वारा बनी थी, हिमनद द्वारा नहीं।

193. पटल विरूपणी संचलन के दो प्रमुख प्रकार हैं:
(A) अपक्षय और अपरदन
(B) महादेशजनक और पर्वत निर्माणकारी
(C) अचानक और विनाशकारी
(D) नदी और हिमनद

194. तटीय स्थलाकृतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समुद्री स्तंभ अपरदनात्मक विशेषताएं हैं।
2. टॉम्बोलो एक रोधिका है जो द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ती है।
3. पुलिन तटीय अपरदन द्वारा बनते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

195. प्लेट विवर्तनिकी के विकास में सागर नितल प्रसरण परिकल्पना का मुख्य योगदान यह था कि इसने प्रदान किया:
(A) महाद्वीपीय विस्थापन के प्रमाण।
(B) भू-सन्नतियों के निर्माण के लिए एक स्पष्टीकरण।
(C) प्लेट संचलन के लिए एक व्यवहार्य तंत्र।
(D) चक्रवात भू-आकृतिक मॉडलों की आलोचना।

196. अवक्षेप मैदान किससे जुड़ी स्थलाकृति है?
(A) रेगिस्तान में नदी निक्षेपण।
(B) तटवर्ती प्रवाह द्वारा तटीय निक्षेपण।
(C) महीन सिल्ट का पवन निक्षेपण।
(D) हिमनद के मुहाने से आगे हिमनद-जलीय निक्षेपण।

197. भू-आकृतिक चक्रों में 'अवस्था' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) विशिष्ट जलवायु क्षेत्र जिसमें भू-दृश्य विकसित होता है।
(B) भू-दृश्य के नीचे स्थित चट्टान का प्रकार।
(C) वह समय अवधि जिसके दौरान एक भू-दृश्य विकास से गुजर रहा है।
(D) अपरदनात्मक प्रक्रियाओं की तीव्रता।

198. इनमें से कौन नदी की निक्षेपणात्मक विशेषता नहीं है?
(A) डेल्टा
(B) जलगर्तिका
(C) जलोढ़ पंख
(D) प्राकृतिक तटबंध

199. "रिंग ऑफ फायर" किसका प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) प्लेट अपसरण
(B) रूपांतर भ्रंशन
(C) समस्थैतिक समायोजन
(D) प्लेट अभिसरण और सबडक्शन

NODIA

200. तटीय अंतरीप के विकास के दौरान आम तौर पर बनने वाली निम्नलिखित स्थलाकृतियों को क्रम में व्यवस्थित करें:
1. समुद्री स्तंभ
2. समुद्री गुफा
3. समुद्री मेहराब

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

201. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा घुलनशील खनिज जल द्वारा घोल में घुलकर हटा दिए जाते हैं, कहलाती है:
(A) अपघर्षण
(B) सन्निघर्षण
(C) संक्षारण या विलयन
(D) जलीय क्रिया

202. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत को शुरू में कई भूवैज्ञानिकों द्वारा खारिज कर दिया गया था।
कथन II: इसके खारिज होने का मुख्य कारण महाद्वीप कैसे संचलित हो सकते हैं, इसकी व्याख्या करने के लिए एक प्रशंसनीय तंत्र की कमी थी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II एक सही व्याख्या है।
(B) दोनों कथन I और कथन II सही हैं लेकिन कथन II व्याख्या नहीं है।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

203. 'मोनाडनॉक' शब्द किस भू-आकृतिक सिद्धांत से जुड़ा है?
(A) रूपात्मक विश्लेषण
(B) पेडीप्लेनेशन चक्र
(C) प्लेट विवर्तनिकी
(D) नदी अपरदन चक्र

204. हिमनद स्थलाकृतियों के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) U-आकार की घाटी हिमनद घाटियों की एक उत्कृष्ट अपरदनात्मक विशेषता है।
(B) सर्क एक हिमनद घाटी के शीर्ष पर एक निक्षेपणात्मक बेसिन है।
(C) ड्रमलिन हिमनद टिल से बनी निक्षेपणात्मक विशेषताएं हैं।
(D) एस्कर हिमनद-जलीय निक्षेपों की एक लहरदार कटक है।

205. भौतिक और रासायनिक अपक्षय के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि:
(A) भौतिक अपक्षय ठंडी जलवायु में होता है, और रासायनिक अपक्षय गर्म जलवायु में।
(B) भौतिक अपक्षय तीव्र होता है, और रासायनिक अपक्षय धीमा।
(C) भौतिक अपक्षय चट्टानों को छोटे टुकड़ों में तोड़ता है, जबकि रासायनिक अपक्षय उनकी रासायनिक संरचना को बदल देता है।
(D) भौतिक अपक्षय पौधों और जानवरों के कारण होता है, जबकि रासायनिक अपक्षय पानी के कारण होता है।

206. भू-आकृतिक मॉडल में "बढ़ते विकास" से गुजरने वाला भू-दृश्य प्रदर्शित करेगा:
(A) घटता उच्चावच और अवतल ढाल।
(B) स्थिर उच्चावच और सीधी ढाल।
(C) एक सपाट, विशेषताहीन मैदान।
(D) बढ़ता उच्चावच और उत्तल ढाल।

207. निम्नलिखित में से कौन पवन की प्राथमिक अपरदनात्मक प्रक्रिया है?
(A) अपवाहन
(B) उत्पाटन
(C) विलयन
(D) जल-अपघटन

208. एंडीज पर्वत किस पर बनी पर्वत श्रृंखला का एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) अपसारी सीमा
(B) महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसारी सीमा
(C) महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसारी सीमा
(D) रूपांतर सीमा

209. गुफा निक्षेप क्या हैं?
(A) चूना पत्थर की सतह पर अपरदनात्मक विशेषताएं।
(B) गुफा के भीतर पाई जाने वाली निक्षेपणात्मक विशेषताएं।
(C) शुष्क वातावरण में पाई जाने वाली कोई भी स्थलाकृति।
(D) सिंकहोल का वैज्ञानिक नाम।

210. वलित पर्वत में भू-सन्नति के विकास के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ओरोजेनेसिस
2. ग्लिप्टोजेनेसिस
3. लिथोजेनेसिस

निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 3, 1, 2
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

211. किस प्रक्रिया में परिवहन किए गए चट्टान के टुकड़ों का एक-दूसरे से टकराने के कारण घिसना शामिल है?
(A) अपघर्षण
(B) संक्षारण
(C) सन्निघर्षण

Downloaded from www.pdf.tube

(D) जलीय क्रिया

212. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: पेनीप्लेन की अवधारणा नदी अपरदन चक्र का सैद्धांतिक अंतिम उत्पाद है।
कथन II: पेनीप्लेन खड़ी भुजाओं वाले मोनाडनॉक के प्रभुत्व वाला एक उच्च-उच्चावच भू-दृश्य है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

213. रेत या कंकड़ की एक लंबी कटक जो द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ती है, कहलाती है:
(A) स्पिट
(B) रोधिका
(C) टॉम्बोलो
(D) पुलिन

214. कौन सी स्थलाकृति नदी की युवावस्था की विशेषता नहीं है?
(A) V-आकार की घाटी
(B) गोखुर झील
(C) जलप्रपात
(D) जलगर्तिका

215. 'अंडों की टोकरी' स्थलाकृति एक ऐसे भू-दृश्य का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है जो इससे ढका हो:
(A) एस्कर
(B) केम
(C) हिमोढ़
(D) ड्रमलिन

216. प्लेट विवर्तनिकी का सिद्धांत किन दो पूर्ववर्ती विचारों से विकसित हुआ?
(A) महाद्वीपीय विस्थापन और सागर नितल प्रसरण
(B) आकस्मिकवाद और एकरूपतावाद
(C) भू-सन्नति सिद्धांत और समस्थैतिकी
(D) अपरदन चक्र और अनाच्छादन

217. सही युग्म की पहचान करें।
(A) ओरोजेनेसिस - महाद्वीप निर्माण
(B) एपिरोजेनेसिस - पर्वत निर्माण
(C) पटल विरूपण - धीमी, बड़े पैमाने पर पृथ्वी का संचलन
(D) ज्वालामुखी क्रिया - एक बहिर्जात प्रक्रिया

218. रेगिस्तानी वातावरण में, एक पर्वत श्रृंखला के आधार पर स्थित, आधारभूत चट्टान को काटकर बनी और जलोढ़क की एक पतली परत से ढकी कम उच्चावच की एक विस्तृत, हल्की ढलान वाली अपरदनात्मक सतह को कहा जाता है:
(A) पेडिमेंट
(B) पेनीप्लेन
(C) प्लाया
(D) जलोढ़ पंख

219. कार्स्ट क्षेत्र की एक फील्ड ट्रिप में संभवतः किसका अवलोकन शामिल होगा?
(A) U-आकार की घाटियाँ और हिमोढ़
(B) बालुका स्तूप और यारडांग
(C) समुद्री भृगु, स्तंभ और मेहराब
(D) सिंकहोल, गुफाएं और स्टैलेक्टाइट

220. निम्नलिखित नदी स्थलाकृतियों को व्यवस्थित करें जैसा कि वे आमतौर पर नदी के स्रोत से उसके मुहाने तक दिखाई देंगी:
1. डेल्टा
2. V-आकार की घाटी
3. विसर्प और बाढ़ का मैदान
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 2, 1, 3
(D) 3, 2, 1

221. बहिर्जात प्रक्रियाओं को चलाने वाला मुख्य बल है:
(A) पृथ्वी के आंतरिक भाग से भूतापीय ऊष्मा
(B) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(C) सूर्य से ऊर्जा
(D) पृथ्वी का घूर्णन

222. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: कुछ मॉडलों की एक मुख्य धारणा यह है कि उत्थान तीव्र होता है और उसके बाद विवर्तनिक स्थिरता की एक लंबी अवधि होती है।
कथन II: अन्य मॉडल उत्थान के साथ-साथ अपरदन होने की अनुमति देते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

223. अपक्षय और अनाच्छादन के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) अपक्षय एक स्वस्थानी प्रक्रिया है, जबकि अनाच्छादन में सामग्री का परिवहन शामिल है।
(B) अपक्षय एक रासायनिक प्रक्रिया है, जबकि अनाच्छादन एक भौतिक प्रक्रिया है।
(C) अपक्षय केवल पहाड़ों में होता है, जबकि अनाच्छादन हर जगह होता है।
(D) कोई अंतर नहीं है; ये शब्द पर्यायवाची हैं।

224. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता हिमनद निक्षेपण द्वारा निर्मित है, अपरदन द्वारा नहीं?
(A) सर्क
(B) हिमोढ़

NODIA

(C) एरेट
(D) लटकती घाटी

225. विलयन की प्रक्रिया निम्नलिखित में से किस चट्टान के प्रकार पर सबसे प्रभावी है?
(A) ग्रेनाइट
(B) चूना पत्थर
(C) बेसाल्ट
(D) बलुआ पत्थर

226. जहाँ प्लेटें एक-दूसरे के बगल से क्षैतिज रूप से खिसकती हैं, वहाँ किस प्रकार की प्लेट सीमा मौजूद होती है?
(A) रूपांतर सीमा
(B) अपसारी सीमा
(C) अभिसारी सीमा
(D) सबडक्शन ज़ोन

227. तटीय विशेषताओं की निम्नलिखित सूची में से अपरदनात्मक स्थलाकृति की पहचान करें:
(A) पुलिन
(B) स्पिट
(C) तरंग-घर्षित चबूतरा
(D) टॉम्बोलो

228. नदी चक्र की वृद्धावस्था में, निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता सबसे प्रमुख है?
(A) गार्ज
(B) क्षिप्रकाएं
(C) जलप्रपात
(D) विसर्प और गोखुर झीलें

229. भू-आकृतिक चक्र को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) ऋतुओं का वार्षिक परिवर्तन और परिदृश्य पर इसका प्रभाव।
(B) दुनिया भर में विवर्तनिक प्लेटों का संचलन।
(C) एक मॉडल जो समय के साथ स्थलाकृतियों के क्रमिक विकास का वर्णन करता है।
(D) ज्वार द्वारा अपरदन और निक्षेपण की दैनिक प्रक्रिया।

230. नदी प्रोफाइल की निम्नलिखित विशेषताओं को ऊपरी मार्ग से निचले मार्ग की ओर व्यवस्थित करें:
1. विस्तृत बाढ़ का मैदान
2. अन्तर्ग्रथित स्पर
3. डेल्टा
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 3, 1

231. 'अपशल्कन गुंबद' शब्द किससे उत्पन्न स्थलाकृति को संदर्भित करता है?
(A) तुषार विदारण
(B) तीव्र रासायनिक अपक्षय
(C) हिमनद अपघर्षण
(D) दबाव मुक्ति और शीटिंग

232. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: भू-सन्नतियाँ प्रमुख तलछट संचय के स्थल हैं।
कथन II: भू-सन्नति के भीतर के तलछट अक्सर संकुचित और वलित होकर पर्वत श्रृंखलाएं बनाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

233. 'प्राइमरम्फ' शब्द किसको संदर्भित करता है?
(A) अंतिम, निम्न-उच्चावच मैदान।
(B) पहाड़ के किनारे पर एक खड़ी ढाल।
(C) प्रारंभिक, उत्थान से पूर्व की सतह या निम्न-उच्चावच परिदृश्य।
(D) एकसमान विकास का परिदृश्य।

234. जलोढ़ पंख सबसे विशिष्ट रूप से पाए जाते हैं:
(A) जहाँ एक खड़ी पहाड़ी सरिता मैदान पर निकलती है।
(B) समुद्र में प्रवेश करने वाली नदी के मुहाने पर।
(C) विसर्प के भीतरी मोड़ पर।
(D) एक विस्तृत बाढ़ के मैदान के बीच में।

235. पवन का "सैंडब्लास्टिंग" प्रभाव तकनीकी रूप से कहलाता है:
(A) अपवाहन
(B) सन्निघर्षण
(C) साल्टेशन
(D) अपघर्षण

236. यूरेशियन प्लेट के साथ भारतीय प्लेट के टकराव के परिणामस्वरूप किसका निर्माण हुआ?
(A) एंडीज पर्वत
(B) हिमालय
(C) रॉकी पर्वत
(D) आल्प्स

237. निम्नलिखित में से कौन सा भौतिक अपक्षय का रूप नहीं है?
(A) तापीय अपक्षय
(B) तुषार क्रिया
(C) कार्बोनेशन
(D) दबाव मुक्ति

238. एक जल-विभाजक के विपरीत दिशाओं में दो आसन्न सर्क जब पीछे की ओर अपरदित होकर एक दर्रा या काठी बनाते हैं, तो उसे कहा जाता है:

Click Here to Buy book on Amazon

(A) हॉर्न
(B) एरेट
(C) टार्न
(D) कोल

239. निम्नलिखित परिदृश्य के आधार पर स्थलाकृति की पहचान करें। चूना पत्थर क्षेत्र में एक छात्र फील्ड ट्रिप पर कई बंद अवसादों वाले परिदृश्य को देखता है, जिनमें से कुछ पानी से भरे हुए हैं। ये विशेषताएं हैं:
(A) सिंकहोल
(B) सर्क
(C) केटल
(D) अपवाहन गर्त

240. निम्नलिखित अवधारणाओं/सिद्धांतों को उनके ऐतिहासिक विकास के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. प्लेट विवर्तनिकी
2. एकरूपतावाद
3. महाद्वीपीय विस्थापन
निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

241. पर्वत निर्माणकारी बलों का परिणाम होता है:
(A) महाद्वीपों और महासागर बेसिनों का निर्माण।
(B) वलित और भ्रंशोत पर्वतों का निर्माण।
(C) परिदृश्य का सामान्य रूप से घिसना।
(D) ज्वालामुखियों का फटना।

242. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: विस्थापन के शुरुआती सिद्धांत साक्ष्यों में मजबूत थे लेकिन उनमें एक परिभाषित तंत्र की कमी थी।
कथन II: बाद के व्यापक सिद्धांतों ने मेंटल संवहन जैसे तंत्र और सागर नितल प्रसरण जैसे अतिरिक्त साक्ष्य प्रदान किए।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

243. U-आकार की घाटी के निर्माण के लिए जिम्मेदार प्राथमिक दूत है:
(A) एक नदी
(B) पवन
(C) एक हिमनद
(D) समुद्री लहरें

244. बहिर्जात बलों द्वारा भूमि की सतह के धीरे-धीरे घिसने को सामूहिक रुप से कहा जाता है:
(A) पटल विरूपण
(B) अधिवृद्धि
(C) पर्वत निर्माण
(D) अनाच्छादन

245. निम्नलिखित में से कौन सी एक निक्षेपणात्मक विशेषता है?
(A) गार्ज
(B) कैनियन
(C) डेल्टा
(D) जलप्रपात

246. स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट के बीच क्या संबंध है?
(A) वे एक ही विशेषता के दो अलग-अलग नाम हैं।
(B) स्टैलेक्टाइट छत से विकसित होते हैं, जबकि स्टैलेग्माइट फर्श से।
(C) स्टैलेक्टाइट अपरदनात्मक हैं, जबकि स्टैलेग्माइट निक्षेपणात्मक हैं।
(D) स्टैलेक्टाइट हिमनद गुफाओं में पाए जाते हैं, स्टैलेग्माइट कार्स्ट गुफाओं में।

247. कुछ भू-आकृतिक चक्रों में 'अवस्था' की अवधारणा की आलोचना की गई है क्योंकि:
(A) यह चट्टान की संरचना की भूमिका पर बहुत अधिक जोर देती है।
(B) शुष्क क्षेत्रों में इसे लागू करना कठिन है।
(C) यह अपरदन की प्रक्रिया की अनदेखी करती है।
(D) यह एक ऐसे अनुक्रम का संकेत देती है जो प्रकृति में नहीं हो सकता है।

248. लहरों की क्रिया द्वारा तटरेखा के समानांतर तलछट के संचलन को कहा जाता है:
(A) तटवर्ती प्रवाह
(B) बैकवाश
(C) स्वाश
(D) ज्वारीय धारा

249. हिमनदों द्वारा उत्पाटन की प्रक्रिया में शामिल है:
(A) एम्बेडेड चट्टान के टुकड़ों के साथ आधारभूत चट्टान को पीसना।
(B) महीन दाने वाले टिल का निक्षेपण।
(C) दरारों में हिमजल का जमना और चट्टान के टुकड़ों का टूटना।
(D) हिमजल धाराओं द्वारा तलछट की छंटाई।

250. प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धांत के अनुसार, नया महासागरीय स्थलमंडल कहाँ बनता है?
(A) अपसारी सीमाओं पर
(B) सबडक्शन क्षेत्रों में
(C) रूपांतर भ्रंशों पर
(D) महाद्वीपीय टकराव क्षेत्रों में

Downloaded from www.pdf.tube

251. कौन सा कथन अपरदन को अपक्षय से सबसे अच्छी तरह अलग करता है?
(A) अपरदन एक रासायनिक प्रक्रिया है, जबकि अपक्षय यांत्रिक है।
(B) अपक्षय में सामग्री का संचलन शामिल है, जबकि अपरदन में नहीं।
(C) अपक्षय जमीन के ऊपर होता है, जबकि अपरदन जमीन के नीचे।
(D) अपरदन में निष्कासन शामिल है, जबकि अपक्षय स्वस्थानी विखंडन है।

252. 'मोनाडनॉक' का 'पेनीप्लेन' से वही संबंध है जो '_____' का 'पेडीप्लेन' से है।
(A) यारडांग
(B) इनसेलबर्ग
(C) ड्रमलिन
(D) हिमोढ़

253. यह विचार कि "वर्तमान अतीत की कुंजी है" किसका सिद्धांत है?
(A) आकस्मिकवाद
(B) प्लेट विवर्तनिकी
(C) एकरूपतावाद
(D) भू-सन्नति सिद्धांत

254. एक लटकती घाटी अक्सर किसका स्थल होती है?
(A) डेल्टा
(B) बालुका स्तूप
(C) सिंकहोल
(D) जलप्रपात

255. किस प्रकार की प्लेट सीमा में न तो पपड़ी का निर्माण होता है और न ही विनाश?
(A) रूपांतर सीमा
(B) अभिसारी सीमा
(C) अपसारी सीमा
(D) सबडक्शन ज़ोन

256. निम्नलिखित में से कौन अपरदन चक्र में प्रौढ़ावस्था की प्रमुख विशेषता है?
(A) V-आकार की घाटियों और क्षिप्रप्रकाओं की प्रधानता।
(B) अधिकतम उच्चावच के साथ एक अच्छी तरह से विकसित अपवाह तंत्र।
(C) लगभग समतल मैदान पर बहने वाली एक सुस्त नदी।
(D) भूखंड का प्रारंभिक उत्थान।

257. लोएस निक्षेप किससे बने होते हैं?
(A) मोटे, हिमनद द्वारा निक्षेपित पत्थर।
(B) महीन दाने वाली, पवन द्वारा उड़ाई गई सिल्ट।
(C) जल-वर्गीकृत रेत और बजरी।
(D) रासायनिक रूप से अवक्षेपित कैल्शियम कार्बोनेट।

258. स्थलाकृति और भू-आकृतिक दूत के गलत युग्म की पहचान करें:
(A) सर्क - नदी
(B) U-आकार की घाटी - हिमनद
(C) डेल्टा - नदी
(D) बरखान - पवन

259. भू-सन्नति का सिद्धांत मूल रूप से किसके अस्तित्व की व्याख्या करने के लिए तैयार किया गया था?
(A) मध्य-महासागरीय कटक
(B) ज्वालामुखी द्वीप चाप
(C) वलित पर्वतों में उथले पानी के अनुक्रम
(D) महाद्वीपीय शील्ड

260. पुलिन किसकी स्थलाकृति है?
(A) तटीय अपरदन
(B) नदी अपरदन
(C) हिमनद निक्षेपण
(D) तटीय निक्षेपण

261. परहिमानी वातावरण में तीव्र तुषार विदारण के परिणामस्वरूप बनने वाला अवरुद्ध, कोणीय भू-दृश्य कहलाता है:
(A) पेनीप्लेन
(B) अवक्षेप मैदान
(C) फेलसेनमीर
(D) लोएस मैदान

262. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: पैसिफिक रिंग ऑफ फायर लगातार भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोटों का क्षेत्र है।
कथन II: यह गतिविधि प्रशांत महासागर बेसिन के आसपास कई विवर्तनिक प्लेटों के अभिसरण और सबडक्शन के कारण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II एक सही व्याख्या है।
(B) दोनों कथन I और कथन II सही हैं लेकिन कथन II व्याख्या नहीं है।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

263. विभिन्न भू-आकृतिक मॉडलों के बीच एक तीव्र विरोधाभास यह है कि:
(A) कुछ मॉडल चक्रवात हैं जबकि अन्य नहीं हैं।
(B) कुछ आर्द्र जलवायु पर लागू होते हैं जबकि अन्य केवल शुष्क पर लागू होते हैं।
(C) कुछ पेडीप्लेन के साथ समाप्त होते हैं जबकि अन्य पेनीप्लेन के साथ।
(D) कुछ उत्थान को क्रमिक मानते हैं, अन्य अपरदन के साथ एकसाथ होने वाला मानते हैं।

264. सर्क बेसिन में स्थित एक छोटी झील को कहा जाता है:

NODIA

(A) टार्न
(B) केटल झील
(C) गोखुर झील
(D) प्लाया

265. निम्नलिखित में से कौन पवन अपरदन द्वारा निर्मित स्थलाकृति का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) हिमोढ़
(B) एस्कर
(C) यारडांग
(D) स्टैलेग्माइट

266. एक स्पिट जो खाड़ी के आर-पार विकसित होती है और उसे खुले समुद्र से पूरी तरह से अलग कर देती है, कहलाती है:
(A) बेमाउथ रोधिका
(B) टॉम्बोलो
(C) कुस्पेट फोरलैंड
(D) रोधिका द्वीप

267. नदी अपहरण की प्रक्रिया नदी चक्र के किस चरण के दौरान होने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) वृद्धावस्था
(B) उत्तर प्रौढ़ावस्था
(C) पेनीप्लेनेशन
(D) युवावस्था

268. कटकों पर नई पपड़ी बनने और खाइयों में पुरानी पपड़ी के नष्ट होने की अवधारणा किसका केंद्रीय हिस्सा है?
(A) भू-सन्नति सिद्धांत
(B) प्लेट विवर्तनिकी का सिद्धांत
(C) अपरदन का चक्र
(D) महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत

269. दरारों और छिद्रों में नमक के क्रिस्टल के बढ़ने से चट्टान का टूटना किसका एक रूप है?
(A) रासायनिक अपक्षय
(B) जैविक अपक्षय
(C) भौतिक अपक्षय
(D) अपरदनात्मक अपक्षय

270. पोल्ये किस प्रकार के भू-दृश्य में पाए जाने वाला एक बहुत बड़ा, लम्बा, समतल तल वाला अवसाद है?
(A) हिमनद
(B) नदीय
(C) पवन
(D) कार्स्ट

271. महाद्वीपीय स्तर के हिमनद को किस रूप में भी जाना जाता है?
(A) हिम चादर हिमनद
(B) अल्पाइन हिमनद
(C) घाटी हिमनद
(D) सर्क हिमनद

272. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: अनाच्छादन एक समतलीकरण या 'घिसने' की प्रक्रिया है।
कथन II: अनाच्छादन में अपक्षय, वृहद् क्षरण और अपरदन की प्रक्रियाएं शामिल हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

273. डेविसियन मॉडल में भू-दृश्य विकास को नियंत्रित करने वाले प्राथमिक कारक कौन से हैं?
(A) उत्थान, अपरदन, निक्षेपण
(B) संरचना, प्रक्रम, अवस्था
(C) युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था
(D) अपक्षय, अपरदन, परिवहन

274. प्रशांत प्लेट के बीच में हवाई द्वीपों के निर्माण की सबसे अच्छी व्याख्या किसके द्वारा की गई है?
(A) एक हॉटस्पॉट या मेंटल प्लम
(B) एक अपसारी सीमा
(C) एक सबडक्शन क्षेत्र
(D) एक रूपांतर भ्रंश

275. शुष्क या अर्ध-शुष्क क्षेत्र में पहाड़ी की तलहटी में नदी निक्षेपण द्वारा कौन सी स्थलाकृति निर्मित होती है?
(A) डेल्टा
(B) एस्कर
(C) जलोढ़ पंख
(D) हिमोढ़

276. महादेशजनक संचलन का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) प्लेट सीमाओं पर संपीड़न बल।
(B) नदियों की अपरदनात्मक शक्ति।
(C) पृथ्वी की पपड़ी में ऊर्जा का अचानक मुक्त होना।
(D) पपड़ी का व्यापक, क्षेत्रीय उत्थान या अवतलन।

277. तरंग-घर्षित चबूतरा किस भू-आकृतिक दूत से जुड़ी एक अपरदनात्मक विशेषता है?
(A) नदियाँ
(B) पवन
(C) समुद्री लहरें
(D) हिमनद

278. भू-दृश्य में "घटते विकास" के चरण की विशिष्ट विशेषता कौन सी है?
(A) उत्थान की त्वरित दर।
(B) निम्न-क्षरण की प्रधानता और अवतल ढाल का विकास।
(C) पूर्ण और सापेक्ष उच्चावच में वृद्धि।

Click Here to Buy book on Amazon

(D) सीधी घाटी-पार्श्व ढाल और स्थिर उच्चावच।

279. पृथ्वी की सतह को नीचा करने वाली सामूहिक प्रक्रियाओं के लिए शब्द है:
(A) अधिवृद्धि
(B) विवर्तनिकी
(C) पर्वत निर्माण
(D) अनाच्छादन

280. छत्रक शैल किसके द्वारा बनती है?
(A) चट्टान के आधार के पास होने वाला उच्च पवन अपघर्षण।
(B) चट्टान संरचना के शीर्ष पर अधिक पवन अपघर्षण।
(C) एक स्थायी चट्टान बाधा के आसपास रेत का निक्षेपण।
(D) रासायनिक अपक्षय जो शीर्ष की तुलना में आधार को तेजी से घोलता है।

281. सबडक्शन ज़ोन मुख्य रूप से किस प्रकार की प्लेट सीमा से जुड़े हैं?
(A) अपसारी
(B) रूपांतर
(C) अभिसारी
(D) प्रसरण

282. निम्नलिखित में से कौन सी हिमनद अपरदन की स्थलाकृति है?
(A) सर्क
(B) ड्रमलिन
(C) एस्कर
(D) हिमोढ़

283. यह अवधारणा कि "भू-आकृतिक प्रक्रियाएं स्थलाकृतियों पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ती हैं" का अर्थ है कि:
(A) सभी स्थलाकृतियां एक जैसी दिखती हैं।
(B) एक समय में भू-दृश्य पर केवल एक ही प्रक्रिया कार्य कर सकती है।
(C) स्थलाकृतियां एक बार बनने के बाद बदलती नहीं हैं।
(D) स्थलाकृति के आकार का उपयोग निर्माण प्रक्रिया का अनुमान लगाने के लिए किया जा सकता है।

284. U-आकार की घाटी, लटकती घाटियों और एरेट वाले भू-दृश्य को संभवतः किसके द्वारा आकार दिया गया था?
(A) नदीय प्रक्रियाएं
(B) हिमनद प्रक्रियाएं
(C) पवन प्रक्रियाएं
(D) कार्स्ट प्रक्रियाएं

285. प्राकृतिक तटबंध किसके द्वारा बनते हैं?
(A) नदी के किनारे पवन निक्षेपण।
(B) घाटी के किनारे हिमनद निक्षेपण।
(C) बाढ़ की घटनाओं के दौरान मोटे तलछट का नदी निक्षेपण।
(D) बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए मानवीय इंजीनियरिंग।

286. कार्स्ट स्थलाकृति के विकसित होने के लिए मूलभूत आवश्यकता क्या है?
(A) बहुत शुष्क जलवायु।
(B) ग्रेनाइट आधारभूत चट्टान की उपस्थिति।
(C) अत्यधिक कम उच्चावच।
(D) चूना पत्थर जैसी घुलनशील चट्टान की उपस्थिति।

287. "पैंजिया" और "पैंथलासा" शब्द किस सिद्धांत से जुड़े हैं?
(A) महाद्वीपीय विस्थापन
(B) प्लेट विवर्तनिकी
(C) भू-आकृतिक चक्र
(D) भू-सन्नति सिद्धांत

288. एक मानक भू-आकृतिक चक्र की प्रौढ़ावस्था में, घाटी की प्रोफाइल को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) एक संकीर्ण V-आकार के रूप में।
(B) बाढ़ के मैदान के साथ एक विस्तृत, खुले आकार के रूप में।
(C) एक गहरी, ऊर्ध्वाधर-दीवारों वाली कैनियन के रूप में।
(D) एक लगभग सपाट, अस्पष्ट चैनल के रूप में।

289. बहते पानी के बल द्वारा चट्टानी सामग्री को अलग करने और हटाने को कहा जाता है:
(A) अपघर्षण
(B) जलीय क्रिया
(C) सन्निघर्षण
(D) संक्षारण

290. समुद्री स्तंभ और स्टंप किसके अपरदन के अंतिम अवशेष हैं?
(A) अंतरीप
(B) पुलिन
(C) लैगून
(D) डेल्टा

291. कुछ भू-आकृतिक चक्रों की एक आम आलोचना उनकी:
(A) सरलता और विस्तार की कमी है।
(B) उत्थान की भूमिका पर विचार करने में विफलता है।
(C) जटिल शब्दावली और अमूर्त सैद्धांतिक प्रकृति है।
(D) आर्द्र क्षेत्रों में अनुपयोगिता है।

292. पीछे हटते हिमनद द्वारा टिल के निक्षेपण से बनी कम, लहरदार पहाड़ियों का मैदान कहलाता है:
(A) अंतस्थ हिमोढ़
(B) पार्श्विक हिमोढ़
(C) मध्यस्थ हिमोढ़
(D) तलस्थ हिमोढ़

293. निम्नलिखित में से कौन सा एक अंतर्जात बल है?
(A) पवन द्वारा अपरदन
(B) तुषार क्रिया द्वारा अपक्षय
(C) पटल विरूपण

NODIA

(D) वृहद् क्षरण

294. नदी चक्र की "वृद्धावस्था" में कौन सी विशेषता सबसे विशिष्ट होगी?
(A) गहरे गार्ज
(B) मोनाडनॉक के साथ एक पेनीप्लेन
(C) तीक्ष्ण अंतर-सरिता विभाजक
(D) कई जलप्रपात

295. मध्य-महासागरीय कटकों के दोनों ओर पुरा-चुंबकीय पट्टियों का समानांतर संरेखण किसके लिए महत्वपूर्ण प्रमाण था?
(A) महाद्वीपों की आयु।
(B) भू-आकृतिक चक्र की अवधारणा।
(C) भू-सन्नतियों का निर्माण।
(D) सागर नितल प्रसरण का सिद्धांत।

296. 'याज़ू' सरिता एक सहायक नदी है जो मुख्य नदी के बाढ़ के मैदान में उससे मिलने से पहले काफी दूरी तक उसके समानांतर बहती है। इसका मार्ग किसके द्वारा अवरुद्ध होता है?
(A) एक प्राकृतिक तटबंध
(B) एक जलोढ़ पंख
(C) एक नदी वेदिका
(D) एक एस्कर

297. इनमें से कौन सी स्थलाकृति भूजल द्वारा चूना पत्थर के विलयन से निर्मित होती है?
(A) एक ज्वालामुखी काल्डेरा
(B) एक हिमनद सर्क
(C) एक कार्स्ट कंदरा
(D) एक पवन-निर्मित यारडांग

298. घाटी हिमनद और महाद्वीपीय हिमनद की स्थलाकृतियों के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर है:
(A) घाटी हिमनद में स्थलाकृति का सीमित प्रभाव।
(B) उनके द्वारा अपरदित चट्टान का प्रकार।
(C) वह गति जिस पर बर्फ चलती है।
(D) बर्फ का तापमान।

299. भू-आकृति विज्ञान के संदर्भ में, 'प्रक्रम' का अर्थ है:
(A) अंतर्निहित भूविज्ञान और चट्टान का प्रकार।
(B) वह समय अवधि जिसके दौरान भू-दृश्य विकसित हो रहा है।
(C) स्थलाकृति का अंतिम आकार।
(D) भौतिक और रासायनिक क्रियाएं जो भूमि की सतह को आकार देती हैं।

300. मध्य-अटलांटिक कटक उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ:
(A) अफ्रीकी और दक्षिण अमेरिकी प्लेटें टकरा रही हैं।
(B) उत्तरी अमेरिकी और यूरेशियन प्लेटें एक-दूसरे से दूर जा रही हैं।
(C) प्रशांत प्लेट का सबडक्शन हो रहा है।
(D) भारतीय प्लेट अरब प्लेट के बगल से खिसक रही है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) भू-प्रक्रमों द्वारा निर्मित स्थलाकृतिक विशेषताओं की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।
भू-आकृति विज्ञान पृथ्वी की सतह पर विद्यमान विभिन्न स्थलाकृतियों की उत्पत्ति और उनके विकास का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह विषय धरातल पर कार्यरत आंतरिक और बाह्य बलों के प्रभाव को समझने का प्रयास करता है। इसमें नदियों, पवन और हिमनद जैसे कारकों द्वारा समय के साथ भू-दृश्यों में होने वाले परिवर्तनों का गहन विश्लेषण किया जाता है, जो संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. (A) एकरूपतावाद
जेम्स हटन द्वारा प्रतिपादित एकरूपतावाद का सिद्धांत यह मानता है कि वर्तमान में सक्रिय भू-वैज्ञानिक प्रक्रम ही अतीत में भी कार्यरत थे। "वर्तमान, अतीत की कुंजी है" का अर्थ है कि आज की प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राचीन भू-वैज्ञानिक घटनाओं की व्याख्या संभव है। यह सिद्धांत भू-आकृति विज्ञान का आधार है, जो पृथ्वी के दीर्घकालिक इतिहास को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।

3. (C) वे पृथ्वी के भीतर से उत्पन्न होते हैं और प्रमुख उच्चावच आकृतियों का निर्माण करते हैं।
अंतर्जात बल पृथ्वी के आंतरिक भाग में तापीय विषमता और रेडियोधर्मी तत्वों के कारण उत्पन्न होते हैं। ये बल भू-पर्पटी पर पर्वत, पठार और महाद्वीपों जैसे विशाल उच्चावचों के निर्माण के लिए उत्तरदायी हैं। इन्हें रचनात्मक बल कहा जाता है क्योंकि ये धरातल पर नवीन आकृतियाँ निर्मित करते हैं। ये प्रक्रियाएँ कभी मंद होती हैं तो कभी भूकंप और ज्वालामुखी के रूप में तीव्र होती हैं।

4. (D) महादेशजनक संचलन
पटल विरूपणी बलों के अंतर्गत वे प्रक्रियाएँ आती हैं जो पृथ्वी की पपड़ी के विस्तृत हिस्सों को संचलित या ऊपर उठाती हैं। महादेशजनक संचलन इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसमें महाद्वीपों के विशाल क्षेत्र ऊर्ध्वाधर दिशा में गति करते हैं। ये बल अत्यंत मंद गति से कार्य करते हैं और लाखों वर्षों में भौगोलिक परिवर्तन लाते हैं। भूकंप और ज्वालामुखी जैसी क्रियाएँ इसके विपरीत अचानक उत्पन्न होने वाले बल हैं।

5. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंतर्जात बलों को रचनात्मक बल माना जाता है क्योंकि वे पृथ्वी की सतह पर विषमताएँ उत्पन्न करते हैं। ये आंतरिक शक्तियाँ ही पर्वत श्रृंखलाओं, विस्तृत पठारों और महाद्वीपीय खंडों के निर्माण के लिए उत्तरदायी होती हैं। यदि ये बल कार्य न करें, तो बाह्य बल पृथ्वी की सतह को पूर्णतः समतल कर देंगे। अतः पृथ्वी के जटिल उच्चावच का निर्माण इन्हीं आंतरिक शक्तियों द्वारा प्रदत्त ऊर्जा से होता है।

NODIA

6. (B) महादेशजनक संचलन
महादेशजनक संचलन में पृथ्वी की पपड़ी का एक बड़ा हिस्सा ऊर्ध्वाधर दिशा में संचलित होता है। यह संचलन इतना मंद और व्यापक होता है कि इसमें चट्टानें वलित होने के बजाय पूरे महाद्वीपीय खंड के रूप में ऊपर उठती हैं। इसे उत्थान या अवतलन की प्रक्रिया भी कहते हैं। यह पर्वत निर्माणकारी संचलन से भिन्न है क्योंकि इसमें क्षैतिज संपीड़न के स्थान पर लंबवत बल कार्य करता है।

7. (D) ये पृथ्वी के भीतर से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा द्वारा संचालित होते हैं।
बहिर्जात बल अपनी ऊर्जा पृथ्वी के आंतरिक भाग के बजाय मुख्य रूप से सूर्य से प्राप्त करते हैं। ये बल धरातल पर सक्रिय रहकर अंतर्जात बलों द्वारा निर्मित उच्चावच को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। इनमें वर्षा, पवन, हिमनद और गुरुत्वाकर्षण प्रमुख हैं जो चट्टानों का अपक्षय और अपरदन करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य धरातल की विषमताओं को दूर कर उसे समतल सतह में परिवर्तित करना होता है।

8. (A) अनाच्छादन
अनाच्छादन एक व्यापक शब्दावली है जिसमें अपक्षय, वृहद् क्षरण और अपरदन जैसी प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। इन प्रक्रियाओं का संयुक्त प्रभाव पृथ्वी की सतह को धीरे-धीरे घिसना और उसे नीचा करना है। अपक्षय जहाँ चट्टानों को अपने स्थान पर तोड़ता है, वहीं अपरदन उन्हें परिवहन कर ले जाता है। इन क्रियाओं के फलस्वरूप धरातल की ऊपरी परतें हटती हैं और कठोर चट्टानें सतह पर प्रकट होती हैं।

9. (C) तुषार विदारण
तुषार विदारण भौतिक अपक्षय का एक प्रकार है जिसमें रासायनिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसमें चट्टानों की दरारों में भरा जल जमने पर फैलता है, जिससे चट्टानें टूट जाती हैं। इसके विपरीत ऑक्सीकरण, कार्बोनेशन और जलयोजन रासायनिक प्रक्रियाएँ हैं। इन प्रक्रियाओं में वायुमंडलीय गैसों और जल के संपर्क से चट्टानों के खनिजों में रासायनिक बदलाव आता है, जिससे वे कमजोर होकर गलने लगती हैं।

10. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
पृथ्वी की भू-आकृतिक प्रक्रियाओं को उनके उत्पत्ति के स्रोतों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। पर्वत निर्माणकारी बल पटल विरूपणी श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे मंद गति से स्थलाकृतियों का निर्माण करते हैं। ज्वालामुखी क्रिया तीव्र अंतर्जात बल का उदाहरण है। दूसरी ओर, अपक्षय और अपरदन बहिर्जात प्रक्रियाएँ हैं जो वायुमंडलीय कारकों द्वारा संचालित

होती हैं और धरातल को घिसकर समतल बनाने का प्रयास करती हैं।

11. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा संचालित संचलन दो श्रेणियों में विभाजित हैं। पर्वत निर्माणकारी संचलन मुख्य रूप से क्षैतिज दिशा में कार्य करता है, जिससे वलन और भ्रंशन द्वारा पर्वतों का विकास होता है। महादेशजनक संचलन ऊर्ध्वाधर दिशा में कार्य करता है, जिससे महाद्वीपों के बड़े भाग ऊपर उठते या नीचे धंसते हैं। ये दोनों प्रक्रियाएँ धरातल पर विशालकाय संरचनाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

12. (B) अपक्षय
अपक्षय वह प्रक्रिया है जिसमें चट्टानें वायुमंडलीय कारकों जैसे तापमान और नमी के प्रभाव से अपने ही स्थान पर टूटती हैं। इसमें सामग्री का कोई बड़े पैमाने पर परिवहन शामिल नहीं होता, इसलिए इसे 'स्व-स्थाने' प्रक्रिया कहा जाता है। अपक्षय चट्टानों को कमजोर और चूर्णित कर देता है, जिससे अपरदन के दूतों के लिए उन्हें हटाना और परिवहन करना अत्यंत सरल हो जाता है, जो मृदा निर्माण हेतु आवश्यक है।

13. (C) अपशल्कन
अपशल्कन भौतिक अपक्षय की एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसमें चट्टान की ऊपरी परतें प्याज के छिलके की भाँति पृथक होने लगती हैं। यह घटना प्रायः ग्रेनाइट जैसी विशाल चट्टानों में देखी जाती है। जब ऊपरी भार कम होता है या तापीय विस्तार के कारण चट्टान में तनाव पैदा होता है, तो बाहरी परतें आंतरिक भाग से अलग होकर टूटने लगती हैं। इससे गुंबदाकार स्थलाकृतियों का विकास होता है।

14. (D) ऑक्सीकरण
ऑक्सीकरण एक रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया है जो तब होती है जब चट्टानों में उपस्थित लोहे जैसे खनिज वायुमंडलीय ऑक्सीजन और नमी के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। इस अभिक्रिया के फलस्वरूप लौह ऑक्साइड का निर्माण होता है, जिससे चट्टानों का रंग लाल या पीला हो जाता है। यह प्रक्रिया खनिजों की संरचना को कमजोर कर देती है, जिससे कठोर चट्टानें आसानी से भुरभुरी होकर टूटने लगती हैं।

15. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
रासायनिक अपक्षय की दर तापमान और नमी की उपलब्धता पर अत्यधिक निर्भर करती है। आर्द्र उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में प्रचुर वर्षा और उच्च तापमान के कारण खनिजों और जल के बीच रासायनिक प्रतिक्रियाएँ अत्यंत तीव्र हो जाती हैं। अधिक नमी चट्टानों के विलेय खनिजों को घोलने और उन्हें कमजोर करने में सहायक होती है। इसके विपरीत, ठंडे या शुष्क क्षेत्रों में रासायनिक अभिक्रियाओं की गति बहुत मंद होती है।

16. (B) कार्बोनेशन
कार्बोनेशन रासायनिक अपक्षय की वह प्रक्रिया है जिसमें वर्षा जल वायुमंडल की कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर हल्के अम्ल में बदल जाता है। जब यह अम्लीय जल चूना पत्थर जैसी चट्टानों के संपर्क में आता है, तो वह कैल्शियम कार्बोनेट को घोल देता है। यह प्रक्रिया कार्स्ट स्थलाकृतियों के निर्माण के लिए उत्तरदायी है। इससे चट्टानों में छिद्र, दरारें और विशाल भूमिगत गुफाएँ विकसित होती हैं।

17. (B) तापमान परिवर्तन
तापमान परिवर्तन मुख्य रूप से अपक्षय का एक कारक है, न कि अपरदन का प्राथमिक दूत। यह चट्टानों के विस्तार और संकुचन द्वारा उन्हें केवल कमजोर करता और तोड़ता है। इसके विपरीत, बहता जल, पवन और हिमनद अपरदन के गतिशील दूत हैं क्योंकि ये न केवल चट्टानों को काटते हैं बल्कि टूटी हुई सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान तक परिवहन भी करते हैं।

18. (A) अपरदन
अपरदन एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें बहता जल, पवन या हिमनद जैसे दूत चट्टानों को काटकर उनके मलबे का अधिग्रहण करते हैं और उसे दूर ले जाते हैं। यह अपक्षय से भिन्न है क्योंकि इसमें परिवहन का तत्व अनिवार्य रूप से शामिल होता है। अपरदन के कारण धरातल की सतह निरंतर घिसती रहती है और स्थलाकृतियों के आकार में परिवर्तन आता है, जो नवीन भू-दृश्यों को जन्म देता है।

19. (C) चट्टान की दरारों में पौधों की जड़ों की वृद्धि।
जैविक अपक्षय जीवित जीवों की गतिविधियों द्वारा चट्टानों के विखंडन को संदर्भित करता है। जब पौधों की जड़ें चट्टानों की सूक्ष्म दरारों में प्रवेश करती हैं, तो वे बढ़ने के साथ ही चट्टानों पर अत्यधिक शारीरिक दबाव डालती हैं। यह दबाव दरारों को चौड़ा कर देता है, जिससे अंततः चट्टानें टूट जाती हैं। इसी प्रकार बिल खोदने वाले जीव भी चट्टानों के क्षय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

20. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
अपक्षय की विभिन्न प्रक्रियाएँ खनिजों के साथ विशिष्ट क्रियाएँ करती हैं। तुषार क्रिया में दरारों में जल के जमने से यांत्रिक दबाव बनता है। कार्बोनेशन में अम्लीय जल चूना पत्थर जैसे खनिजों को घोलता है। जलयोजन की प्रक्रिया में खनिज जल सोखकर फैलते हैं, जिससे चट्टान के आंतरिक ढाँचे में तनाव पैदा होता है। ऑक्सीकरण में ऑक्सीजन खनिजों के साथ मिलकर रासायनिक परिवर्तन लाती है, जो सतह को कमजोर करता है।

21. (C) भू-सन्नति
भू-सन्नति समुद्र के एक लंबे, संकीर्ण और उथले अवसाद को कहते हैं जहाँ निरंतर तलछट का निक्षेपण होता रहता है। इस संचय के भार से द्रोणी धीरे-धीरे धंसती जाती है, जिससे और अधिक तलछट जमा होने का स्थान बनता है। कालांतर में, विवर्तनिक बलों द्वारा इन संचित अवसादों पर पड़ने वाले क्षैतिज दबाव के कारण ये मुड़कर ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं का रूप ले लेते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

22. (B) वलित पर्वत
भू-सन्नति सिद्धांत मुख्य रूप से वलित पर्वतों की उत्पत्ति और उनके विकास की प्रक्रिया को समझाने के लिए विकसित किया गया था। यह सिद्धांत बताता है कि कैसे लंबी और उथली समुद्री द्रोणियों में लाखों वर्षों तक जमा हुए तलछट बाद में दबाव के कारण मुड़कर ऊँचे पर्वतों में परिवर्तित हो जाते हैं। हिमालय जैसे विशाल वलित पर्वतों की उत्पत्ति को इसी ऐतिहासिक अवधारणा के माध्यम से समझा जा सकता है।

23. (D) अल्फ्रेड वेगनर
जर्मन मौसमविद् अल्फ्रेड वेगनर ने 1912 में महाद्वीपीय विस्थापन का क्रांतिकारी सिद्धांत प्रस्तुत किया था। उन्होंने यह तर्क दिया कि सभी महाद्वीप पूर्व में एक विशाल भूखंड "पैंजिया" का हिस्सा थे, जो कालांतर में टूटकर अलग हो गए। यद्यपि उनके पास विस्थापन के तंत्र की सटीक भौतिक व्याख्या नहीं थी, लेकिन उनके द्वारा दिए गए साक्ष्य आधुनिक प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के विकास हेतु आधार स्तंभ सिद्ध हुए।

24. (A) सागर नितल प्रसरण की क्रियाविधि।
अल्फ्रेड वेगनर ने अपने सिद्धांत के समर्थन में कई प्रमाण दिए थे, लेकिन सागर नितल प्रसरण उनमें सम्मिलित नहीं था। उन्होंने महाद्वीपों के भौगोलिक मिलान, समान जीवाश्मों और प्राचीन हिमनद के साक्ष्यों का उपयोग किया था। सागर नितल प्रसरण की अवधारणा 1960 के दशक में हैरी हेस द्वारा दी गई थी, जो वेगनर के सिद्धांत के बहुत बाद आई और विस्थापन तंत्र को वैज्ञानिक आधार दिया।

25. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वेगनर ने प्रस्तावित किया था कि लगभग 200 मिलियन वर्ष पहले पृथ्वी के सभी महाद्वीप आपस में जुड़े हुए थे, जिसे उन्होंने 'पैंजिया' नाम दिया था। इस महामहाद्वीप के अस्तित्व के ठोस प्रमाण दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के तटों के भौगोलिक मिलान तथा समान जीवाश्मों के वितरण से मिलते हैं। पुरा-जलवायु साक्ष्य भी इस महामहाद्वीप के विखंडन और महाद्वीपों के क्रमिक विस्थापन की पुष्टि करते हैं।

26. (A) पैंथलासा
महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के अनुसार, जब सभी महाद्वीप 'पैंजिया' नामक एक विशाल भूखंड के रूप में जुड़े थे, तब पृथ्वी पर केवल एक ही विशाल महासागर मौजूद था। इस सार्वभौमिक महासागर को 'पैंथलासा' कहा जाता था। जैसे-जैसे पैंजिया का विखंडन हुआ और महाद्वीप एक-दूसरे से दूर जाने लगे, पैंथलासा का आकार भी बदलने लगा। आधुनिक प्रशांत महासागर को इसी प्राचीन महासागर का अवशेष माना जाता है।

27. (D) इसने मेंटल संवहन को प्रेरक शक्ति के रूप में सही ढंग से पहचाना।
महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत की सबसे बड़ी कमी यह थी कि वेगनर महाद्वीपों के संचलन के लिए एक सही और स्वीकार्य प्रेरक शक्ति प्रदान नहीं कर सके थे। उन्होंने इसके लिए ज्वारीय बल और ध्रुवीय केंद्रत्यागी बल जैसे निर्बल कारकों को उत्तरदायी माना था। मेंटल संवहन धाराओं को प्रेरक शक्ति के रूप में आर्थर होम्स ने बहुत बाद में प्रस्तावित किया था, जिससे वेगनर के मूल विचार को पुष्ट किया गया।

28. (B) कठोर स्थलमंडलीय प्लेटों के निर्माण और संचलन की।
प्लेट विवर्तनिकी एक आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांत है जो पृथ्वी के बाहरी आवरण को कई कठोर खंडों में विभाजित मानता है। यह सिद्धांत इन प्लेटों के एस्थेनोस्फीयर पर तैरने और उनके मध्य होने वाली अंतःक्रियाओं की व्याख्या करता है। इसी संचलन के कारण पर्वतों का निर्माण, भूकंप और ज्वालामुखी जैसी गतिविधियाँ होती हैं। यह सिद्धांत महाद्वीपीय विस्थापन और सागर नितल प्रसरण जैसी अवधारणाओं को तार्किक आधार प्रदान करता है।

29. (C) अपसारी सीमा
अपसारी सीमा वह विवर्तनिक क्षेत्र है जहाँ दो प्लेटें एक-दूसरे से विपरीत दिशा में संचलित होती हैं। इस खिंचाव के कारण नीचे से गर्म मैग्मा ऊपर की ओर प्रवाहित होता है और नवीन पपड़ी का निर्माण करता है। इस प्रक्रिया को रचनात्मक सीमा भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ निरंतर नवीन स्थलमंडल का सृजन होता है। मध्य-अटलांटिक कटक इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है, जहाँ समुद्र तल का प्रसार हो रहा है।

30. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
प्लेट विवर्तनिकी में विभिन्न प्रकार की सीमाएँ विशिष्ट भू-आकृतियाँ निर्मित करती हैं। अपसारी सीमाओं पर प्लेटों के दूर जाने से मध्य-महासागरीय कटकों का निर्माण होता है। महासागरीय और महाद्वीपीय प्लेटों के अभिसरण से ज्वालामुखी चाप और गहरी खाइयाँ बनती हैं। वहीं, दो महाद्वीपीय प्लेटों की टक्कर से हिमालय जैसे विशाल वलित पर्वत विकसित होते हैं। रूपांतर सीमाओं पर प्लेटें परस्पर घर्षण करते हुए खिसकती हैं।

NODIA

31. (A) महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसरण
हिमालय पर्वत श्रृंखला का निर्माण भारतीय प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य हुए भीषण टकराव का परिणाम है। चूंकि दोनों ही महाद्वीपीय प्लेटें हैं, इसलिए कोई भी प्लेट पूर्णतः नीचे नहीं धंसी। इसके बजाय, उनके मध्य जमा हुए टेथिस सागर के अवसाद भीषण दबाव के कारण मुड़कर ऊपर उठ गए। इस प्रक्रिया को महाद्वीपीय-महाद्वीपीय अभिसरण कहा जाता है, जिसके कारण आज भी हिमालय की ऊँचाई में वृद्धि हो रही है।

32. (B) सबडक्शन ज़ोन
गहरे समुद्र की खाइयाँ उन क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ एक महासागरीय प्लेट किसी अन्य प्लेट के नीचे मेंटल में धंसती है। इस क्षेत्र को सबडक्शन ज़ोन कहा जाता है। जैसे ही भारी महासागरीय प्लेट नीचे की ओर जाती है, वह समुद्र तल पर एक बहुत गहरा और संकीर्ण गड्ढा बनाती है। मारियाना ट्रेंच इसी प्रक्रिया का उदाहरण है। ये खाइयाँ अक्सर तीव्र भूकंपीय और ज्वालामुखीय गतिविधियों से संबद्ध होती हैं।

33. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सागर नितल प्रसरण एक सतत भू-वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो मध्य-महासागरीय कटकों पर मैग्मा के बाहर निकलने से शुरु होती है। जैसे-जैसे नवीन पपड़ी बनती है, वह पुरानी पपड़ी को कटक से दूर धकेलती है। संतुलन बनाए रखने के लिए, यह पुरानी और भारी महासागरीय पपड़ी अंततः सबडक्शन क्षेत्रों में दूसरी प्लेट के नीचे धंसकर मेंटल में विलीन हो जाती है। यह चक्र पृथ्वी के स्थिर आकार को सुनिश्चित करता है।

34. (A) विवर्तनिक प्लेटों का अभिसरण और सबडक्शन।
प्रशांत महासागर के चारों ओर स्थित "रिंग ऑफ फायर" विश्व का सबसे सक्रिय भूकंपीय और ज्वालामुखीय क्षेत्र है। इसका मुख्य कारण यहाँ उपस्थित कई अभिसारी प्लेट सीमाएँ हैं, जहाँ महासागरीय प्लेटें निरंतर महाद्वीपीय प्लेटों के नीचे धंस रही हैं। इस प्रक्रिया से तीव्र ऊष्मा और दबाव उत्पन्न होता है, जिससे मैग्मा निर्मित होता है और ज्वालामुखी विस्फोट होते हैं। इसी घर्षण के कारण यहाँ विनाशकारी भूकंप आते हैं।

35. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सागर नितल प्रसरण के सिद्धांत के अनुसार, मध्य-महासागरीय कटकों पर ज्वालामुखी गतिविधि के माध्यम से नवीन मैग्मा ऊपर आता है और ठंडा होकर नवीन महासागरीय पपड़ी बनाता है। जैसे-जैसे नवीन पदार्थ जमा होता है, वह पूर्व निर्मित पपड़ी को कटक के दोनों ओर दूर धकेल देता है। परिणामस्वरूप, चट्टानों की आयु कटक से दूरी बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती जाती है, जो प्लेट विवर्तनिकी की पुष्टि करती है।

36. (D) मेंटल संवहन धाराएं
वर्तमान में यह स्वीकार किया जाता है कि विवर्तनिक प्लेटों के संचलन के पीछे मुख्य शक्ति पृथ्वी के मेंटल में होने वाली संवहन धाराएं हैं। पृथ्वी के आंतरिक भाग की अत्यधिक ऊष्मा के कारण अर्ध-पिघला हुआ पदार्थ ऊपर उठता है और फिर ठंडा होकर नीचे गिरता है। यह चक्रीय प्रवाह ऊपर स्थित कठोर स्थलमंडलीय प्लेटों पर घर्षण पैदा करता है, जिससे वे मंद गति से विस्थापित होती हैं।

37. (C) रूपांतर
कैलिफोर्निया का सैन एंड्रियास भ्रंश एक रूपांतर प्लेट सीमा का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ प्रशांत प्लेट और उत्तरी अमेरिकी प्लेट परस्पर क्षैतिज रूप से खिसक रही हैं। इस प्रकार की सीमा पर न तो नवीन पपड़ी का निर्माण होता है और न ही पुरानी पपड़ी नष्ट होती है। यहाँ प्लेटों के मध्य होने वाले घर्षण और ऊर्जा के अचानक मुक्त होने से प्रायः शक्तिशाली भूकंपों की उत्पत्ति होती है।

38. (B) संरचना, प्रक्रम, अवस्था
विलियम मॉरिस डेविस ने स्थलाकृतियों के विकास को समझाने के लिए "भौगोलिक चक्र" की अवधारणा प्रस्तुत की थी। उनके अनुसार, किसी भी परिदृश्य का स्वरूप तीन मुख्य कारकों पर निर्भर करता है: चट्टानों की संरचना, उन पर कार्यरत अपरदन के प्रक्रम और समय का चरण जिसे उन्होंने अवस्था कहा। डेविस ने इन तीनों को भू-आकृतिक विकास के 'त्रिक' के रूप में परिभाषित किया, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

NODIA

39. (D) तीव्र लंबवत अपरदन और V-आकार की घाटी का निर्माण।
डेविस के अपरदन चक्र की युवावस्था में नदी का ढाल अत्यंत तीव्र होता है और जल की वेगवान गति के कारण अत्यधिक ऊर्जा होती है। इस अवस्था में नदी का मुख्य कार्य अपनी घाटी को गहरा करना होता है, जिसे लंबवत अपरदन कहा जाता है। इसके परिणामस्वरूप गहरी और संकीर्ण V-आकार की घाटियों और जलप्रपातों का निर्माण होता है। इस चरण में पार्श्व अपरदन की तुलना में ऊर्ध्वाधर कटान प्रभावी होता है।

40. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
डेविस का अपरदन चक्र स्थलाकृतियों के क्रमिक विकास को प्रदर्शित करता है। युवावस्था में तीव्र लंबवत अपरदन से V-आकार की घाटियाँ निर्मित होती हैं। प्रौढ़ावस्था में अपवाह तंत्र पूर्ण विकसित होता है और उच्चावच अपने चरम पर होता है। वृद्धावस्था में नदी की गति मंद हो जाती है, जिससे विसर्प और विस्तृत बाढ़ के मैदान बनते हैं। अंततः, संपूर्ण क्षेत्र एक लगभग समतल मैदान में परिवर्तित हो जाता है।

41. (C) पेनीप्लेन
डेविस के अनुसार, अपरदन चक्र का अंतिम लक्ष्य भू-दृश्य का पूर्ण समतलीकरण है। जब नदियाँ लाखों वर्षों तक निरंतर अपरदन और निक्षेपण का कार्य करती हैं, तो अंततः एक विस्तृत और निम्न ऊँचाई वाला मैदान निर्मित होता है जिसकी ढाल अत्यंत मंद होती है। इस अंतिम स्थलाकृति को 'पेनीप्लेन' या 'संप्राय मैदान' कहा जाता है। यह मैदान समुद्र तल के आधार स्तर के अत्यंत समीप होता है।

42. (A) मोनाडनॉक
जब अपरदन चक्र अपनी अंतिम अवस्था में पहुँचता है, तो पेनीप्लेन का निर्माण होता है। कुछ स्थानों पर अत्यधिक कठोर चट्टानें उपस्थित होती हैं जो अपरदन का बेहतर प्रतिरोध करती हैं। ये कठोर चट्टानी अवशेष पेनीप्लेन की सपाट सतह पर पृथक पहाड़ियों के रूप में ऊँचे दिखाई देते हैं। इन्हें 'मोनाडनॉक' कहा जाता है। इनका नाम अमेरिका के माउंट मोनाडनॉक के आधार पर रखा गया है, जो इसका आदर्श उदाहरण है।

43. (D) मानता है कि अपरदन से पहले तीव्र उत्थान होता है।
डेविस के मॉडल की प्रमुख आलोचना यह है कि वह उत्थान की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र और अल्पकालिक मानता है। उनके अनुसार अपरदन केवल उत्थान पूर्णतः रुकने के पश्चात ही प्रारंभ होता है। आलोचकों, विशेषकर वाल्थर पेंक का तर्क है कि प्रकृति में उत्थान और अपरदन दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं। यह मानना अवास्तविक है कि नदियाँ तब तक प्रतीक्षा करेंगी जब तक पर्वत पूर्ण ऊँचाई प्राप्त न कर लें।

44. (B) उत्थान की दर और अपरदन की दर
वाल्थर पेंक ने भू-दृश्य विकास को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा। उनका मॉडल मुख्य रूप से इस तथ्य पर आधारित है कि किसी क्षेत्र की स्थलाकृति आंतरिक शक्तियों द्वारा होने

वाले उत्थान और बाहरी शक्तियों द्वारा होने वाले अपरदन के मध्य के अनुपात का परिणाम होती है। पेंक ने माना कि परिदृश्य का रूप उत्थान और अपरदन की सापेक्षिक गति से निर्धारित होता है, जो अधिक वैज्ञानिक है।

45. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पेंक का मॉडल डेविस के मॉडल की तुलना में अधिक तार्किक है क्योंकि यह प्रकृति की वास्तविक कार्यप्रणाली को प्रदर्शित करता है। डेविस ने जहाँ उत्थान और अपरदन को पृथक समय पर होने वाली घटनाएँ माना था, वहीं पेंक ने स्पष्ट किया कि जैसे ही भूमि ऊपर उठना प्रारंभ होती है, अपरदन के प्रक्रम उस पर तुरंत कार्य करना प्रारंभ कर देते हैं। यह निरंतर होने वाली अंतःक्रिया ही स्वरूप निर्धारित करती है।

46. (D) उत्थान की दर अपरदन की दर से अधिक होती है।
पेंक के 'बढ़ते विकास' के चरण में आंतरिक शक्तियाँ अत्यंत सक्रिय होती हैं, जिससे भूमि के उत्थान की गति अपरदन की गति से कहीं अधिक होती है। इसके परिणामस्वरूप, क्षेत्र की पूर्ण ऊँचाई और सापेक्ष उच्चावच दोनों में निरंतर वृद्धि होती रहती है। इस चरण में घाटियाँ संकरी और ढाल उत्तल होती हैं। यह पर्वत निर्माण की शुरुआती और सर्वाधिक सक्रिय अवस्था को प्रदर्शित करता है जहाँ विवर्तनिकी शक्तियाँ प्रमुख होती हैं।

47. (A) एंडरम्फ
पेंक के अनुसार, जब अपरदन की प्रक्रिया दीर्घकाल तक चलती है और अंततः उत्थान पूर्णतः रुक जाता है, तो परिदृश्य का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है। अपरदन के अंतिम चरण में निर्मित होने वाले इस विस्तृत और मंद ढाल वाले मैदान को 'एंडरम्फ' कहा जाता है। यह डेविस के पेनीप्लेन के समान है, किंतु इसके निर्माण की प्रक्रिया और ढाल की विशेषताएँ भिन्न होती हैं, जो वृद्ध परिदृश्य का प्रतीक है।

48. (B) डेविस तीव्र उत्थान का उपयोग करते हैं, जबकि पेंक निरंतर उत्थान का उपयोग करते हैं।
डेविस और पेंक के मॉडलों में मूल अंतर उत्थान और अपरदन के मध्य समय के संबंध को लेकर है। डेविस का मानना था कि विकास प्रारंभ होने से पूर्व भूमि का अत्यंत तीव्र उत्थान होता है। इसके विपरीत, पेंक ने प्रस्तावित किया कि उत्थान एक लंबी और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो अपरदन के साथ-साथ घटित होती है। पेंक के लिए शक्ति संतुलन स्थलाकृतियों के विकास का मुख्य तत्व था।

49. (B) प्रारंभिक, उत्थान से पूर्व की भूमि की सतह।
'प्राइमरम्फ' शब्द पेंक के मॉडल का आधारभूत हिस्सा है। यह उस प्रारंभिक और निम्न ऊँचाई वाली भूमि की सतह को संदर्भित करता है जिस पर विवर्तनिकी बलों के कारण उत्थान प्रारंभ होना होता है। यह एक ऐसी आधारभूत सतह है जहाँ से भू-आकृतिक विकास की पूर्ण प्रक्रिया का शुभारंभ माना जाता है। प्राइमरम्फ का कोई विशिष्ट उच्चावच नहीं होता और यह पर्वत निर्माण हेतु आधार प्रदान करती है।

50. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भू-आकृति विज्ञान के विभिन्न विद्वानों ने मौलिक अवधारणाएँ प्रस्तुत की हैं। डेविस ने त्रिक सिद्धांत दिया जिसमें संरचना, प्रक्रम और अवस्था पर बल दिया गया। वेगनर ने महाद्वीपीय विस्थापन का विचार दिया जो बताता है कि महाद्वीप गतिशील हैं। पेंक ने उत्थान और अपरदन के अंतर्संबंधों की व्याख्या की। वहीं, हॉल और डाना ने भू-सन्नति सिद्धांत प्रतिपादित किया, जो वलित पर्वतों के निर्माण से संबंधित है।

51. (C) नदी क्रिया
V-आकार की घाटी नदी द्वारा निर्मित एक अत्यंत महत्वपूर्ण अपरदनात्मक स्थलाकृति है। जब नदी अपनी युवावस्था में होती है और पर्वतीय क्षेत्रों में तीव्र ढाल पर बहती है, तो उसकी गतिज ऊर्जा बहुत अधिक होती है। इस कारण वह मुख्य रूप से अपनी घाटी की तली को गहरा करती है, जिसे लंबवत अपरदन कहा जाता है। इन प्रक्रियाओं के सम्मिलित प्रभाव से घाटी का आकार अंग्रेजी के 'V' अक्षर जैसा बन जाता है।

52. (D) युवावस्था
नदी के विकास की युवावस्था वह चरण है जहाँ नदी का मुख्य कार्य ऊर्ध्वाधर कटान या अपनी घाटी को गहरा करना होता है। इस अवस्था में ढाल अत्यंत तीव्र होती है, जिससे नदी का वेग अधिक होता है। परिणामस्वरूप, नदी कठोर चट्टानों के मध्य संकीर्ण और गहरी घाटियाँ निर्मित करती है जिन्हें गार्ज और कैनियन कहा जाता है। इसी दौरान नदी के तल में जलगर्तिकाएँ भी बनती हैं, जो तीव्र अपरदन का संकेत हैं।

53. (C) गोखुर झील
मैदानी क्षेत्रों में नदियाँ टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर बहती हैं जिन्हें विसर्प कहा जाता है। समय के साथ, विसर्प के मोड़ अत्यधिक गहरे हो जाते हैं और अंततः नदी का मुख्य मार्ग सीधा हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, विसर्प का वह घुमावदार हिस्सा मुख्य धारा से पृथक हो जाता है और एक झील का रूप ले लेता है। इसकी विशिष्ट आकृति के कारण इसे 'गोखुर झील' कहा जाता है, जो वृद्धावस्था का लक्षण है।

54. (B) जलोढ़ पंख
जब कोई नदी पर्वतीय क्षेत्रों से तीव्र वेग के साथ उतरकर अचानक समतल मैदानी भाग में प्रवेश करती है, तो उसके वेग में भारी कमी आ जाती है। इस कारण नदी अपने साथ लाए गए भारी मलबे, जैसे कंकड़ और रेत को ढाल के आधार पर निक्षेपित करना प्रारंभ कर देती है। यह निक्षेप पंख के आकार में फैल जाता है, जिसे 'जलोढ़ पंख' कहा जाता है। ये पंख कृषि हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

55. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
डेल्टा का निर्माण नदी के जीवन चक्र के अंतिम चरण में होता है जब वह समुद्र में गिरती है। इस स्थान पर नदी का वेग शून्य के करीब पहुँच जाता है क्योंकि समुद्र का जल उसे बाधित करता है। वेग कम होने से नदी की भार वहन क्षमता समाप्त हो जाती है और वह सूक्ष्म सिल्ट को मुहाने पर जमा करने लगती है। यह जमाव धीरे-धीरे उपजाऊ त्रिभुजाकार भूमि का निर्माण करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

56. (A) बाढ़ का मैदान
बाढ़ का मैदान नदी द्वारा निर्मित एक प्रमुख निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है। जब नदी में जल की मात्रा बढ़ती है और वह अपने किनारों को तोड़कर आसपास के निचले इलाकों में फैल जाती है, तो पानी के साथ लाई गई महीन मिट्टी उन क्षेत्रों में जमा हो जाती है। बार-बार होने वाली इस प्रक्रिया से एक उपजाऊ समतल मैदान का निर्माण होता है। इसके विपरीत, जलप्रपात और गार्ज नदी के अपरदनात्मक कार्यों के परिणाम हैं।

57. (C) नदी अपहरण
नदी अपहरण एक भू-आकृतिक घटना है जिसमें एक शक्तिशाली और तीव्र अपरदन करने वाली नदी अपने जल-विभाजक को काटकर पड़ोसी नदी के ऊपरी जल को अपने मार्ग में मिला लेती है। यह मुख्य रूप से शीर्षवर्ती अपरदन के कारण घटित होता है। इस प्रक्रिया के पश्चात, अपहरण की गई नदी का निचला हिस्सा सूख जाता है। यह घटना दर्शाती है कि नदियाँ निरंतर अधिक जल ग्रहण करने हेतु संघर्ष करती हैं।

58. (A) डेल्टा - अपरदनात्मक
डेल्टा नदी की एक निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है, न कि अपरदनात्मक। यह नदी के मुहाने पर तलछट के जमाव से निर्मित होती है जब उसकी गति मंद हो जाती है। इसके विपरीत, विसर्प में अपरदन और निक्षेपण दोनों क्रियाएँ साथ चलती हैं। प्राकृतिक तटबंध बाढ़ के दौरान मलबे के जमाव से बनते हैं। जलप्रपात तब निर्मित होते हैं जब नदी चट्टानों के मध्य अंतर के कारण नीचे गिरती है और कटाव करती है।

59. (D) प्राकृतिक तटबंध
जब नदी में बाढ़ आती है, तो पानी किनारों से बाहर निकलकर फैल जाता है। किनारों के समीप पानी का वेग कम होने से भारी तलछट वहीं जमा हो जाते हैं। बार-बार बाढ़ आने से ये निक्षेप ऊँची मेढ़ों का रूप ले लेते हैं जो नदी के समानांतर चलते हैं। इन्हें ही 'प्राकृतिक तटबंध' कहा जाता है। ये तटबंध नदी को उसके सामान्य प्रवाह में बनाए रखने में सहायता करते हैं, किंतु इनके टूटने से खतरा बढ़ता है।

60. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
नदी की विभिन्न प्रक्रियाएँ विशिष्ट स्थलाकृतियों को जन्म देती हैं। गोखुर झील तब निर्मित होती है जब विसर्प का मोड़ मुख्य धारा से कट जाता है। जलोढ़ पंख पर्वतों की तलहटी में मलबे के निक्षेपण से बनते हैं। कैनियन शुष्क क्षेत्रों में नदी द्वारा किए गए तीव्र और गहरे लंबवत अपरदन का परिणाम होते हैं। वहीं, प्राकृतिक तटबंध बाढ़ के दौरान नदी के किनारों पर होने वाले क्रमिक निक्षेपण से विकसित होते हैं।

61. (C) सर्क
सर्क हिमनद द्वारा निर्मित एक अत्यंत विशिष्ट अपरदनात्मक आकृति है। यह हिमनद घाटी के ऊपरी भाग में एक विशाल, कटोरे के आकार का अवसाद होता है जिसकी तीन भुजाएँ खड़ी और एक भुजा खुली होती है। इसका निर्माण हिमनद द्वारा किए गए उत्पाटन और अपघर्षण के कारण होता है। हिमनद के पिघलने के पश्चात इन अवसादों में जल भर जाता है, जिससे सुंदर झीलों का निर्माण होता है जिन्हें 'टार्न' कहा जाता है।

62. (D) एरेट
जब किसी पर्वत शिखर के विपरीत किनारों पर दो या अधिक सर्क निरंतर पीछे की ओर अपरदन करते हैं, तो उनके मध्य की चट्टानी दीवार अत्यंत पतली और धारदार हो जाती है। इस चाकू जैसी तीक्ष्ण लकीर को 'एरेट' कहा जाता है। यह हिमनद अपरदन की गहनता का प्रतीक है। पर्वतारोहियों हेतु एरेट पर चलना अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है। यह स्थलाकृति ऊँचे हिमनदी क्षेत्रों में तीखे शिखरों के मध्य विभाजक का कार्य करती है।

63. (A) पिरामिडल चोटी या हॉर्न
जब तीन या अधिक सर्क एक ही पर्वत के चारों ओर निरंतर पीछे की ओर अपरदन करते हैं, तो वे पहाड़ के शिखर को एक नुकीली आकृति में परिवर्तित कर देते हैं। इस तीक्ष्ण चोटी को 'हॉर्न' या पिरामिडल चोटी कहा जाता है। स्विट्ज़रलैंड का मैटरहॉर्न इसी भू-आकृतिक प्रक्रिया का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि कैसे हिमनद चारों तरफ से कटान करके एक विशाल पर्वत को नुकीले शिखर में बदल सकते हैं।

64. (B) U-आकार
हिमनद घाटियों का आकार नदियों द्वारा निर्मित V-आकार की घाटियों से भिन्न होता है। चूंकि हिमनद अपनी पूर्ण चौड़ाई में बर्फ से भरा होता है, इसलिए वह न केवल घाटी के तल को काटता है बल्कि उसकी भुजाओं का भी पार्श्व अपरदन करता है। इस शक्तिशाली घर्षण के कारण घाटी चौड़ी हो जाती है और किनारे अत्यंत खड़े हो जाते हैं। परिणामस्वरूप जो स्थलाकृति बनती है, वह अंग्रेजी के 'U' अक्षर के समान होती है।

65. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हिमनद धरातल पर अपरदन के सबसे शक्तिशाली दूतों में से एक हैं क्योंकि वे विशाल मात्रा में बर्फ और चट्टानी टुकड़ों के साथ संचलित होते हैं। उनका अपरदन कार्य उत्पाटन और अपघर्षण विधियों से होता है। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से हिमनद कठोर चट्टानों को काटकर विशाल घाटियों और तीक्ष्ण शिखरों का निर्माण करते हैं, जो अन्य दूतों द्वारा संभव नहीं है। यह पर्वतीय क्षेत्रों के स्वरूप को पूर्णतः बदल देता है।

66. (A) लटकती घाटी
जब एक विशाल मुख्य हिमनद और एक लघु सहायक हिमनद साथ बहते हैं, तो मुख्य हिमनद अपनी घाटी को अधिक गहरा कर देता है। सहायक हिमनद की कम बर्फ के कारण उसकी घाटी का कटाव कम होता है। जब हिमनद पिघल जाते हैं, तो सहायक घाटी मुख्य घाटी की तुलना में बहुत ऊँचाई पर स्थित दिखाई देती है, जिसे 'लटकती घाटी' कहा जाता है। यहाँ से गिरने वाला जल प्रायः सुंदर जलप्रपातों का निर्माण करता है।

67. (C) एस्कर
एस्कर हिमनद-जलीय निक्षेपण द्वारा निर्मित एक लंबी और टेढ़ी-मेढ़ी कटक है। यह तब निर्मित होती है जब हिमनद के

NODIA

नीचे बहने वाली जलधारा अपने साथ लाई गई रेत और बजरी को जमा कर देती है। जब हिमनद पूर्णतः पिघल जाता है, तो यह जमाव ऊँची मेढ़ की तरह धरातल पर उभरा हुआ दिखाई देता है। एस्कर कई किलोमीटर लंबे हो सकते हैं और इनका उपयोग प्रायः दुर्गम क्षेत्रों में मार्गों के रूप में किया जाता है।

68. (D) टिल की लम्बी, असममित पहाड़ियाँ।
ड्रमलिन हिमनद निक्षेपण की विशिष्ट आकृति है, जो उल्टी हुई नौका के समान दिखाई देती है। ये मुख्य रूप से हिमनद टिल से बनी लम्बी पहाड़ियाँ होती हैं। इनका एक सिरा ऊँचा और खड़ा होता है तथा दूसरा सिरा मंद ढाल वाला होता है जो हिमनद के प्रवाह की दिशा को दर्शाता है। जब किसी क्षेत्र में बड़ी संख्या में ड्रमलिन पाए जाते हैं, तो उसे 'अंडों की टोकरी वाली स्थलाकृति' कहा जाता है।

69. (C) पार्श्विक हिमोढ़
हिमोढ़ हिमनद द्वारा निक्षेपित मलबे के ढेर होते हैं। पार्श्विक हिमोढ़ विशेष रूप से घाटी हिमनद के दोनों किनारों पर निर्मित होते हैं जहाँ बर्फ घाटी की दीवारों के संपर्क में होती है। जैसे-जैसे हिमनद आगे बढ़ता है, वह किनारों से चट्टानों को रगड़ता है, जिससे बड़ी मात्रा में मलबा जमा हो जाता है। यह मलबा हिमनद के किनारों पर लंबी मेढ़ों के रूप में दिखाई देता है, जो हिमनद के इतिहास का साक्ष्य प्रदान करता है।

70. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
हिमनदी स्थलाकृतियों को उनके निर्माण की प्रक्रिया के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। एरेट और सर्क अपरदनात्मक विशेषताएँ हैं जो बर्फ के घर्षण से बनती हैं। इसके विपरीत, ड्रमलिन और एस्कर निक्षेपणात्मक आकृतियाँ हैं। ड्रमलिन सीधे हिमनद के मलबे से निर्मित होते हैं। एस्कर पिघले हुए जल की धाराओं द्वारा रेत के जमाव से बनते हैं, इसलिए वे हिमनद-जलीय निक्षेप की श्रेणी में आते हैं, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

71. (D) फियोर्ड
फियोर्ड एक गहरी और संकीर्ण समुद्री खाड़ी है जो वास्तव में एक जलमग्न हिमनद घाटी है। इनका निर्माण तब होता है जब उच्च अक्षांशों में हिमनद द्वारा गहरी की गई U-आकार की घाटियाँ समुद्र तल बढ़ने के कारण जल से भर जाती हैं। फियोर्ड के किनारे अत्यंत खड़े और ऊँचे होते हैं। नॉर्वे और अलास्का के तट अपने सुंदर फियोर्ड्स के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं, जो अद्भुत प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

72. (A) हिमनद-अवक्षेप मैदान
हिमनद-अवक्षेप मैदान एक निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है, न कि अपरदनात्मक। इसका निर्माण तब होता है जब हिमनद के मुहाने से पिघला हुआ जल निकलता है और अपने साथ लाए गए महीन तलछट को विस्तृत क्षेत्र में फैला देता है। इसके विपरीत, हॉर्न, U-आकार की घाटी और सर्क हिमनद की घर्षण शक्ति से निर्मित होते हैं। अतः, अवक्षेप मैदान हिमनद के अंत का संकेत देता है जहाँ उसकी परिवहन शक्ति समाप्त हो जाती है।

73. (C) अपवाहन
अपवाहन पवन की एक प्रमुख अपरदनात्मक प्रक्रिया है जिसमें तीव्र हवाएँ रेतीली सतह से ढीले कणों को उठाकर उड़ा ले जाती हैं। इस प्रक्रिया के कारण धरातल पर छिछले गड्ढे बन जाते हैं। सहारा जैसे बड़े रेगिस्तानों में अपवाहन के कारण विशाल गर्तों का निर्माण होता है, जिन्हें 'अपवाहन गर्त' कहा जाता है। यह प्रक्रिया उन क्षेत्रों में प्रभावी होती है जहाँ वनस्पति का अभाव होता है और मिट्टी पूर्णतः सूखी होती है।

74. (A) छत्रक शैल या गारा
छत्रक शैल पवन अपरदन का अद्भुत उदाहरण है जो शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। चूंकि पवन द्वारा उड़ाई गई रेत धरातल से कुछ ऊँचाई तक ही सर्वाधिक प्रभावशाली होती है, इसलिए वह बड़ी चट्टानों के निचले हिस्से को ऊपरी हिस्से की तुलना में तीव्र गति से काटती है। इस विभेदी अपरदन के कारण चट्टान का आधार संकीर्ण हो जाता है जबकि ऊपरी भाग छतरी की तरह बचा रहता है, जिसे छत्रक शैल कहते हैं।

75. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पवन अपरदन उन क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रभावी होता है जहाँ वर्षा अत्यंत अल्प होती है और धरातल शुष्क रहता है। शुष्क क्षेत्रों में वनस्पति का अभाव पवन की गति को रोकने में विफल रहता है, जिससे वह रेत को सरलता से उड़ा ले जाती है। नमी की कमी के कारण मिट्टी के कण एक-दूसरे से मजबूती से नहीं जुड़े होते, जो पवन के 'अपवाहन' कार्य को सुगम बना देता है।

76. (B) यारडांग
यारडांग शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक तीक्ष्ण और लम्बी कटक है, जो प्रचलित पवन की दिशा के समानांतर विकसित होती है। इनका निर्माण तब होता है जब कठोर और कोमल चट्टानों की परतें लंबवत रूप में स्थित होती हैं। पवन कोमल चट्टानों को शीघ्रता से काटकर गहरे गलियारे बना देती है, जबकि कठोर चट्टानें ऊँची लकीरों के रूप में शेष रहती हैं। यारडांग का आकार प्रायः उल्टी हुई नौका जैसा होता है।

77. (C) बालुका स्तूप
बालुका स्तूप पवन द्वारा निर्मित प्रमुख निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है। जब पवन के मार्ग में कोई बाधा जैसे झाड़ी या चट्टान आती है, तो पवन का वेग कम हो जाता है और वह अपने साथ लाई गई रेत को जमा करने लगती है। समय के साथ यह जमाव रेत की पहाड़ी का रूप ले लेता है। इसके विपरीत, अपवाहन गर्त, यारडांग और छत्रक शैल पवन के अपरदनात्मक कार्यों के परिणाम हैं, जो धरातल को काटते हैं।

78. (D) बरखान
बरखान एक विशिष्ट अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप है जो उन क्षेत्रों में निर्मित होता है जहाँ पवन एक ही दिशा से प्रवाहित होती है। इसकी विशेषता यह है कि इसके दो 'सींग' पवन की दिशा में आगे निकले होते हैं। बरखान का पवन अभिमुख ढाल मंद होता है, जबकि पवन विमुख ढाल खड़ा होता है। ये स्तूप रेगिस्तानों में समूहों में पाए जाते हैं और अपनी अद्वितीय ज्यामितीय सुंदरता हेतु प्रसिद्ध हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

79. (A) लोएस
लोएस पवन द्वारा उड़ाई गई अत्यंत महीन धूल के निक्षेपों को कहा जाता है जो अपने उत्पत्ति स्थान से दूर जाकर जमा होते हैं। ये निक्षेप अत्यंत सरंध्र और उपजाऊ होते हैं। लोएस के विस्तृत मैदान चीन और अमेरिका में पाए जाते हैं। चीन का पीला लोएस मैदान इसका विशाल उदाहरण है, जहाँ की मिट्टी पीली और अत्यंत गहरी है। यह पवन की निक्षेपण शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है जो कृषि हेतु उपयोगी है।

80. (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
शुष्क क्षेत्रों में पवन विशिष्ट आकृतियाँ निर्मित करती है। बरखान पवन निक्षेपण से बने अर्धचंद्राकार स्तूप हैं। अपवाहन गर्त पवन द्वारा सतह की ढीली रेत को उड़ा ले जाने से बने गड्ढे हैं। यारडांग कठोर और कोमल चट्टानों के मध्य पवन द्वारा किए गए विभेदी अपघर्षण के कारण लम्बी कटकों के रूप में विकसित होते हैं। इनसेलबर्ग वे कठोर चट्टानी अवशेष हैं जो अपरदन के पश्चात रेगिस्तानी मैदानों में पृथक पहाड़ियों के रूप में खड़े रहते हैं।

81. (B) इनसेलबर्ग
इनसेलबर्ग शुष्क क्षेत्रों में पाए जाने वाले पृथक और खड़े ढाल वाले अवशिष्ट पर्वत होते हैं। ये पहाड़ियाँ आसपास के समतल मैदानों से अचानक ऊपर की ओर उठती हुई दिखाई देती हैं। इनका निर्माण तब होता है जब दीर्घकालिक अपरदन के कारण कोमल चट्टानें घिस जाती हैं, किंतु कठोर चट्टानों के कुछ भाग शेष रह जाते हैं। 'इनसेलबर्ग' का अर्थ 'द्वीप पर्वत' होता है। दक्षिण अफ्रीका के रेगिस्तानों में ये प्रमुख विशेषता हैं।

82. (A) बालुका स्तूप और लोएस
बालुका स्तूप और लोएस दोनों पवन द्वारा किए गए निक्षेपण कार्यों के परिणाम हैं। बालुका स्तूप मोटे रेत के कणों के जमाव से बनते हैं जो प्रायः रेगिस्तानी क्षेत्रों के भीतर पाए जाते हैं। लोएस अत्यंत महीन धूल के कणों से निर्मित होते हैं जिन्हें पवन लंबी दूरी तक उड़ाकर ले जाती है और विस्तृत क्षेत्रों में जमा कर देती है। इसके विपरीत, यारडांग और इनसेलबर्ग मुख्य रूप से अपरदनात्मक स्थलाकृतियाँ हैं।

83. (C) कार्स्ट स्थलाकृति
कार्स्ट स्थलाकृति उन क्षेत्रों की विशेषता है जहाँ धरातल पर चूना पत्थर या जिप्सम जैसी घुलनशील चट्टानें प्रचुर मात्रा में होती हैं। यहाँ सतही जल और भूमिगत जल के रासायनिक प्रभाव से चट्टानें घुलकर विलक्षण आकृतियाँ निर्मित करती हैं। कार्स्ट क्षेत्रों में सतही अपवाह बहुत अल्प होता है क्योंकि जल तुरंत सिंकहोल के माध्यम से भूमिगत हो जाता है, जिससे गुफाओं और भूमिगत नदियों का विशाल तंत्र विकसित होता है।

84. (D) कैल्शियम कार्बोनेट का विलयन
कार्स्ट स्थलाकृतियों के निर्माण के पीछे मौलिक प्रक्रिया कैल्शियम कार्बोनेट का जल में विलयन है। जब वर्षा जल वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड सोखकर हल्का अम्ल बनाता है, तो यह चूना पत्थर के संपर्क में आता है। यह अम्ल चट्टान के मुख्य घटक कैल्शियम कार्बोनेट के साथ प्रतिक्रिया कर उसे घुलनशील बना देता है। इस रासायनिक प्रक्रिया के कारण चट्टानें घुलकर नष्ट होने लगती हैं, जिससे सिंकहोल और गुफाएँ जन्म लेती हैं।

85. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्स्ट विशेषताओं का सर्वोत्तम विकास तभी संभव है जब आधारभूत चूना पत्थर की चट्टानें शुद्ध हों और उनमें पर्याप्त संधियाँ उपस्थित हों। शुद्ध चूना पत्थर जल के साथ रासायनिक क्रिया करने में अधिक संवेदनशील होता है। चट्टान में उपस्थित संधियाँ जल को गहराई तक रिसने का मार्ग प्रदान करती हैं, जिससे रासायनिक विलयन की प्रक्रिया धरातल के भीतर तक पहुँच जाती है। इसी कारण संधियुक्त चट्टानों में जटिल कार्स्ट परिदृश्य बनते हैं।

86. (B) सिंकहोल या डोलिन
सिंकहोल कार्स्ट परिदृश्य की सर्वाधिक सामान्य सतही विशेषता है। यह कीप के आकार का अवसाद होता है जो चूना पत्थर की सतह के घुलने से निर्मित होता है। कभी-कभी, जब भूमिगत गुफा की छत दुर्बल हो जाती है, तो वह अचानक नीचे ढह जाती है, जिससे बड़े सिंकहोल का निर्माण होता है। ये गड्ढे कार्स्ट क्षेत्रों में जल निकास के द्वार के रूप में कार्य करते हैं और सतही जल को भूमिगत प्रणालियों में भेज देते हैं।

87. (D) उवाला
जब कार्स्ट क्षेत्र में कई लघु सिंकहोल निरंतर अपरदन और विलयन के कारण परस्पर मिल जाते हैं, तो वे एक विशाल और अनियमित आकार के अवसाद का निर्माण करते हैं जिसे 'उवाला' कहा जाता है। यह सिंकहोल की तुलना में अधिक विस्तृत होता है। उवाला का तल ऊबड़-खाबड़ हो सकता है। यह स्थलाकृति दर्शाती है कि क्षेत्र में रासायनिक अपक्षय सक्रिय है और वह धरातल को नीचे कर रहा है, जिससे भूमिगत जल तंत्र विकसित हो रहे हैं।

88. (A) स्टैलेक्टाइट
स्टैलेक्टाइट कार्स्ट गुफाओं के भीतर बनने वाली एक अद्भुत निक्षेपणात्मक विशेषता है। जब चूना पत्थर युक्त जल गुफा की छत से नीचे टपकता है, तो वाष्पीकरण के कारण कैल्शियम कार्बोनेट का कुछ भाग छत पर ही जम जाता है। निरंतर होने वाली इस प्रक्रिया से नुकीले खंभे जैसी आकृति बन जाती है जो छत से नीचे की ओर लटकती है। ये आकृतियाँ चूना पत्थर के पुनरावक्षेपण का प्रत्यक्ष परिणाम हैं, जो अत्यंत सुंदर दिखती हैं।

89. (C) स्टैलेग्माइट
स्टैलेग्माइट गुफा के फर्श पर विकसित होने वाली निक्षेपणात्मक आकृति है। जब गुफा की छत से टपकने वाला चूना युक्त जल फर्श पर गिरता है, तो वहाँ धीरे-धीरे कैल्शियम कार्बोनेट जमा होने लगता है। समय के साथ यह जमाव फर्श से ऊपर की ओर एक स्तंभ की भाँति बढ़ने लगता है। स्टैलेग्माइट प्रायः स्टैलेक्टाइट के ठीक नीचे निर्मित होते हैं। चूंकि ये टपकते जल के प्रहार से बनते हैं, इसलिए इनकी आकृति अधिक मोटी और चौड़ी होती है।

NODIA

90. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
कार्स्ट स्थलाकृतियों का वर्गीकरण उनकी स्थिति और निर्माण विधि पर आधारित है। स्टैलेक्टाइट गुफा की छत से नीचे लटकते हैं, जबकि स्टैलेग्माइट फर्श से ऊपर बढ़ते हैं। सिंकहोल वे सतही गड्ढे हैं जो विलयन प्रक्रिया द्वारा निर्मित होते हैं। पोल्ये कार्स्ट परिदृश्य की विशालतम विशेषता है, जो एक विस्तृत और सपाट तल वाली घाटी के रूप में होती है। यह विवर्तनिकी और विलयन दोनों का संयुक्त परिणाम होती है, जो विशिष्ट है।

91. (D) स्तंभ
कार्स्ट गुफा के भीतर जब छत से नीचे की ओर बढ़ने वाला स्टैलेक्टाइट और फर्श से ऊपर बढ़ने वाला स्टैलेग्माइट परस्पर मिल जाते हैं, तो वे एक पूर्ण ऊर्ध्वाधर ढांचे का निर्माण करते हैं जिसे 'स्तंभ' कहा जाता है। यह स्तंभ गुफा की छत को फर्श से जोड़ता है और चूना पत्थर के संचय की अंतिम अवस्था को प्रदर्शित करता है। समय के साथ ये स्तंभ अत्यंत मोटे हो जाते हैं, जो गुफा को भव्यता प्रदान करते हैं।

92. (B) चट्टान को संतृप्त रखने के लिए उच्च जल स्तर।
कार्स्ट स्थलाकृति के सर्वोत्तम विकास हेतु उच्च जल स्तर के स्थान पर जल का निरंतर नीचे की ओर प्रवाह आवश्यक है। यदि जल स्तर अत्यधिक ऊँचा होगा, तो जल चट्टान के भीतर गहराई तक नहीं जा पाएगा और रासायनिक विलयन की प्रक्रिया बाधित हो जाएगी। इसके विपरीत, घुलनशील चूना पत्थर की उपस्थिति और चट्टानों में संधियों का होना अनिवार्य शर्तें हैं। जल का मुक्त संचलन ही गुफाओं के निर्माण हेतु ऊर्जा प्रदान करता है।

93. (C) समुद्री भृगु
समुद्री भृगु एक खड़ी चट्टानी ढाल है जो समुद्र के तट पर लहरों के निरंतर प्रहार से निर्मित होती है। जब शक्तिशाली लहरें तटीय चट्टानों के आधार पर प्रहार करती हैं, तो वे वहाँ एक 'नॉच' बना देती हैं। ऊपरी चट्टान का सहारा समाप्त होने पर वह समुद्र में गिर जाती है, जिससे एक खड़ा चेहरा या भृगु निर्मित होता है। इसके विपरीत, पुलिन, स्पिट और टॉम्बोलो लहरों के निक्षेपणात्मक कार्यों के परिणाम हैं।

94. (D) रोधिका
रोधिका लहरों द्वारा जमा की गई रेत की एक लंबी कटक होती है जो तट के समानांतर चलती है। प्रायः ये रोधिकाएँ तट से कुछ दूरी पर जल के ऊपर उभरी होती हैं। जब ये रोधिकाएँ समुद्र की ओर से एक खाड़ी को पूर्णतः घेर लेती हैं, तो तट और रोधिका के मध्य एक शांत जल क्षेत्र बन जाता है जिसे 'लैगून' कहते हैं। चिल्का झील इसका प्रमुख उदाहरण है। रोधिकाएँ तट की रक्षा भी करती हैं।

95. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
लहरों की ऊर्जा तटीय परिवर्तनों का मुख्य कारण है, किंतु यह ऊर्जा सूर्य से उत्पन्न पवन द्वारा आती है, न कि चंद्रमा के खिंचाव से। चंद्रमा और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण समुद्र में ज्वार-भाटा उत्पन्न करता है। दूसरी ओर, समुद्री लहरें तब निर्मित होती हैं जब हवा जल की सतह पर घर्षण पैदा करती है। अतः लहरें अपरदन और निक्षेपण करती हैं, किंतु उनका मुख्य स्रोत पवन की गतिज ऊर्जा है।

96. (B) समुद्री मेहराब
जब लहरें किसी तट से समुद्र की ओर निकले हुए चट्टानी भाग पर दोनों ओर से प्रहार करती हैं, तो वे वहाँ दो समुद्री गुफाओं का निर्माण करती हैं। निरंतर अपरदन के कारण ये गुफाएँ परस्पर मिल जाती हैं और चट्टान के आर-पार एक द्वार बन जाता है। इस स्थलाकृति को 'समुद्री मेहराब' कहा जाता है। मेहराब का ऊपरी भाग एक पुल की भाँति दिखाई देता है। यह तटीय अपरदन की एक सुंदर और अस्थायी अवस्था है।

97. (B) समुद्री स्तंभ
समुद्री स्तंभ तटीय अपरदन का एक अवशिष्ट रूप है। इसका निर्माण तब होता है जब समुद्री मेहराब की छत गुरुत्वाकर्षण के कारण टूटकर समुद्र में गिर जाती है। इसके परिणामस्वरूप, मुख्य तट से एक भाग पूर्णतः पृथक हो जाता है और जल के मध्य एक खंभे की भाँति खड़ा रह जाता है। समय के साथ लहरें इस स्तंभ के आधार को भी काटती रहती हैं, जिससे यह अंततः पूर्णतः नष्ट हो जाता है।

98. (A) टॉम्बोलो
टॉम्बोलो एक विशिष्ट निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है जहाँ रेत की एक रोधिका किसी द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ देती है। इसका निर्माण लहरों के अपवर्तन और शांत जल क्षेत्रों में तलछट के जमाव के कारण होता है। टॉम्बोलो के कारण एक द्वीप 'जुड़ा हुआ द्वीप' बन जाता है। यह दर्शाता है कि कैसे लहरें न केवल तट को काटती हैं, बल्कि नए स्थलीय संपर्क मार्ग बनाने हेतु रेत का कुशल निक्षेपण भी करती हैं।

99. (C) तरंग-घर्षित चबूतरा
तरंग-घर्षित चबूतरा एक मंद ढाल वाली चट्टानी सतह है जो समुद्री भृगु के आधार पर पाई जाती है। इसका निर्माण तब होता है जब लहरों के प्रहार से भृगु धीरे-धीरे पीछे की ओर हटता है। जैसे-जैसे तट का कटाव होता है, भृगु के सम्मुख एक समतल चबूतरा शेष रह जाता है जो ज्वार के समय जल में डूबा रहता है। यह इस बात का प्रमाण है कि समुद्र ने कभी उस स्थान तक भूमि का अपरदन किया था।

100. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
तटीय स्थलाकृतियों को उनकी उत्पत्ति के आधार पर अपरदनात्मक और निक्षेपणात्मक श्रेणियों में विभक्त किया जाता है। समुद्री स्तंभ और समुद्री गुफाएँ लहरों के काटने की शक्ति से निर्मित होते हैं। दूसरी ओर, पुलिन और टॉम्बोलो रेत के जमाव से बनते हैं। पुलिन तट के साथ मलबे के विस्तृत जमाव को कहते हैं, जबकि टॉम्बोलो एक विशिष्ट संकीर्ण कटक है जो द्वीपों को भूमि से जोड़ती है। यह वर्गीकरण महत्वपूर्ण है।

101. (C) स्पिट
स्पिट रेत की एक लंबी और संकीर्ण कटक होती है जिसका एक सिरा मुख्य भूमि से जुड़ा होता है और दूसरा सिरा खुले समुद्र में निकला होता है। इसका निर्माण तटीय धाराओं द्वारा

Downloaded from www.pdf.tube

लाए गए मलबे के निक्षेपण से होता है। प्रायः स्पिट का समुद्री सिरा लहरों के प्रभाव से मुड़कर कुंडी जैसा आकार ले लेता है। स्पिट्स प्रायः खाड़ियों के मुहाने पर बनते हैं और धीरे-धीरे उसे लैगून में परिवर्तित करने की क्षमता रखते हैं।

102. (B) एक अपरदनात्मक तटरेखा
जिस तटरेखा पर समुद्री स्तंभ, मेहराब और तरंग-घर्षित चबूतरे जैसी विशेषताएँ प्रमुखता से पाई जाती हैं, वह स्पष्ट रूप से एक अपरदनात्मक तटरेखा है। ये सभी आकृतियाँ लहरों द्वारा चट्टानों के निरंतर कटान और विनाश का परिणाम हैं। ऐसी तटरेखाएँ प्रायः ऊबड़-खाबड़ होती हैं जहाँ लहरें सीधे कठोर चट्टानों से टकराती हैं। इसके विपरीत, निक्षेपणात्मक तटरेखाओं पर पुलिन और रोधिकाएँ अधिक दिखाई देती हैं, जो शांत जल का संकेत हैं।

103. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भू-आकृति विज्ञान के इतिहास में डब्लू. एम. डेविस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिन्होंने स्थलाकृतियों के समय-बद्ध विकास या "भौगोलिक चक्र" की व्याख्या की। उनके अनुसार परिदृश्य युवा, प्रौढ़ और वृद्ध अवस्थाओं से गुजरता है। वाल्थर पेंक ने बाद में इस विचार को चुनौती दी कि अपरदन केवल उत्थान रुकने के पश्चात प्रारंभ होता है। पेंक का मॉडल अधिक गतिशील था जिसने उत्थान और अपरदन के निरंतर संबंधों को उजागर किया।

104. (A) केवल 1 और 3
अंतर्जात बल पृथ्वी के भीतर से कार्य करते हैं और पर्वत जैसी नवीन संरचनाएँ बनाकर धरातल पर विषमता पैदा करते हैं, इसलिए इन्हें रचनात्मक कहा जाता है। बहिर्जात बल बाहरी रूप से कार्य करते हैं और अनाच्छादन द्वारा इन आकृतियों को घिसकर समतल बनाने का प्रयास करते हैं, अतः इन्हें विनाशात्मक माना जाता है। भूकंप एक अंतर्जात बल का परिणाम है क्योंकि इसकी उत्पत्ति पृथ्वी की आंतरिक परतों में होती है।

105. (C) अपघर्षण
अपघर्षण अपरदन की वह यांत्रिक प्रक्रिया है जिसमें बहता जल, पवन या हिमनद अपने साथ ले जाए जा रहे चट्टानी मलबे का उपयोग 'हथियार' के रूप में करते हैं। ये दूत मलबे को आधारभूत चट्टान पर रगड़ते हैं, जिससे चट्टान धीरे-धीरे घिसती और कटती जाती है। इसे 'सैंडपेपर प्रभाव' भी कहा जा सकता है। यह प्रक्रिया घाटियों को गहरा करने में अत्यंत प्रभावी होती है। सन्निघर्षण इससे भिन्न है क्योंकि उसमें कण स्वयं टकराते हैं।

106. (A) पृथ्वी का कठोर बाहरी भाग, जिसमें पपड़ी और ऊपरी मेंटल शामिल है।
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार, स्थलमंडल पृथ्वी की सबसे ऊपरी और कठोर परत है। इसकी मोटाई लगभग 100 से 200 किलोमीटर तक होती है और इसमें भू-पर्पटी के साथ-साथ मेंटल का सबसे ऊपरी ठोस भाग भी सम्मिलित होता है। यह स्थलमंडल ही कई प्लेटों में विभाजित है जो एस्थेनोस्फीयर पर तैरती हैं। प्लेटों का यह संचलन ही ज्वालामुखियों, भूकंपों और विशाल पर्वत श्रृंखलाओं के निर्माण हेतु उत्तरदायी है।

107. (D) प्लेट विवर्तनिकी और महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांतों में हिमालय की उत्पत्ति की व्याख्या करना।
टेथिस सागर एक प्राचीन महासागरीय द्रोणी थी जो अंगारा लैंड और गोंडवाना लैंड के मध्य स्थित थी। प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार, जब भारतीय प्लेट उत्तर की ओर बढ़ते हुए यूरेशियन प्लेट से टकराई, तो इसी सागर में जमा हुए तलछट भीषण दबाव के कारण मुड़कर ऊपर उठ गए। इसी प्रक्रिया से हिमालय का निर्माण हुआ। आज भी हिमालय में मिलने वाले समुद्री जीवाश्म इस बात का प्रमाण हैं कि वहाँ कभी सागर था।

NODIA

108. (B) समान विकास
'समान विकास' पेंक के मॉडल का वह चरण है जहाँ आंतरिक शक्तियों द्वारा होने वाले उत्थान की दर और बाहरी शक्तियों द्वारा होने वाले अपरदन की दर परस्पर बराबर हो जाती है। इसके कारण परिदृश्य की पूर्ण ऊँचाई तो बढ़ सकती है, किंतु पहाड़ियों की चोटियों और घाटियों के मध्य का सापेक्ष उच्चावच स्थिर बना रहता है। इस अवस्था में ढालें सीधी होती हैं। यह संतुलन की एक ऐसी स्थिति है जहाँ निर्माण और विनाश समान हैं।

109. (C) कैनियन एक चौड़ी, सीढ़ीनुमा भुजाओं वाली घाटी है, जबकि गार्ज संकीर्ण और खड़ी है।
गार्ज और कैनियन दोनों ही नदी के तीव्र लंबवत अपरदन के परिणाम हैं, किंतु उनका स्वरूप भिन्न होता है। गार्ज एक अत्यंत संकीर्ण और गहरी घाटी होती है जिसकी भुजाएँ लगभग ऊर्ध्वाधर होती हैं। इसके विपरीत, कैनियन अधिक विस्तृत होता है और इसकी भुजाएँ सीढ़ीनुमा या ढालदार होती हैं। कैनियन प्रायः शुष्क क्षेत्रों में बनते हैं जहाँ चट्टानों की परतें भिन्न कठोरता की होती हैं, जैसे अमेरिका का प्रसिद्ध ग्रैंड कैनियन।

110. (D) 2, 3, 1
डेविस के अपरदन चक्र के अनुसार, स्थलाकृतियों का विकास एक निश्चित क्रम में होता है। यह प्रक्रिया तीव्र उत्थान के पश्चात 'युवावस्था' से प्रारंभ होती है जहाँ लंबवत अपरदन प्रमुख होता है। इसके पश्चात 'प्रौढ़ावस्था' आती है जहाँ नदियाँ अपनी घाटियों को चौड़ा करती हैं और उच्चावच अधिकतम होता है। अंत में 'वृद्धावस्था' आती है जिसमें अपरदन की शक्ति क्षीण हो जाती है और क्षेत्र संप्राय मैदान में बदल जाता है।

111. (A) उत्पाटन और अपघर्षण
हिमनद का अपरदन कार्य अत्यंत शक्तिशाली होता है और यह दो प्रमुख प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है। 'उत्पाटन' में हिमनद का पिघला जल चट्टान की दरारों में जमकर उसे उखाड़ देता है। 'अपघर्षण' में हिमनद इन पत्थरों को आधारभूत चट्टान पर रगड़ता हुआ आगे बढ़ता है, जिससे सतह चिकनी हो जाती है। ये दोनों क्रियाएँ मिलकर विशाल U-आकार की घाटियों और सर्कों का निर्माण करने में पूर्णतः सक्षम होती हैं।

112. (B) मध्यस्थ हिमोढ़
जब दो पृथक घाटी हिमनद एक साथ मिलते हैं, तो उनके आंतरिक किनारों पर स्थित पार्श्विक हिमोढ़ भी परस्पर जुड़ जाते हैं। यह संयुक्त मलबा अब बड़े हिमनद के मध्य में एक लंबी कटक के रूप में प्रवाहित होने लगता है, जिसे 'मध्यस्थ हिमोढ़' कहा जाता है। यह हिमनद की सतह पर एक काली पट्टी के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। हिमनद के पिघलने के पश्चात, यह घाटी के मध्य में एक लंबी रेखा की भाँति जमा होता है।

113. (B) पवन अपघर्षण द्वारा विभेदी अपरदन
ज़्यूगेन शुष्क क्षेत्रों में पाए जाने वाले मेजनुमा स्थलाकृतिक रूप हैं, जिनका निर्माण कठोर और कोमल चट्टानों की क्षैतिज परतों पर पवन के प्रभाव से होता है। पवन द्वारा उड़ाई गई रेत कोमल चट्टानों की दरारों को चौड़ा कर देती है, जिससे ऊँची और संकीर्ण खाइयाँ बन जाती हैं। ऊपर स्थित कठोर चट्टान की परत एक टोपी की भाँति कार्य करती है। ये आकृतियाँ रेगिस्तानी परिदृश्य को एक विलक्षण स्वरूप प्रदान करती हैं।

114. (A) केवल 2 और 3
अपक्षय एक 'स्व-स्थाने' प्रक्रिया है जिसमें चट्टानें अपने स्थान पर टूटती हैं, न कि उनका परिवहन होता है। भौतिक अपक्षय मुख्य रूप से शुष्क क्षेत्रों में प्रभावी होता है जहाँ तापमान का अंतर चट्टानों को यांत्रिक रूप से तोड़ता है। रासायनिक अपक्षय में जल और वायु की उपस्थिति से खनिजों की संरचना बदल जाती है, जिससे चट्टानें गलने लगती हैं। ये दोनों प्रक्रियाएँ मृदा निर्माण और परिदृश्य के क्रमिक विनाश हेतु आवश्यक मानी जाती हैं।

115. (C) पोल्ये
पोल्ये कार्स्ट स्थलाकृति की विशालतम विशेषता है। यह एक अत्यंत बड़ा, बंद और सपाट तल वाला अवसाद होता है जिसकी भुजाएँ खड़ी होती हैं। पोल्ये का क्षेत्रफल कई सौ वर्ग किलोमीटर तक हो सकता है। इनका निर्माण विवर्तनिक हलचलों और चूना पत्थर के व्यापक विलयन के संयुक्त प्रभाव से होता है। पोल्ये का तल प्रायः उपजाऊ मिट्टी से भरा होता है, जिससे कार्स्ट क्षेत्रों में कृषि हेतु ये स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

116. (D) रिया तटरेखा
रिया तटरेखा का निर्माण तब होता है जब समुद्र तल बढ़ने के कारण किसी नदी की निचली घाटी आंशिक रूप से समुद्र के जल में डूब जाती है। इससे तटरेखा अत्यंत ऊबड़-खाबड़ और कटी-फटी हो जाती है, जहाँ पुराने पहाड़ प्रायद्वीप बन जाते हैं। रिया का आकार मुहाने पर चौड़ा और अंदर की ओर संकीर्ण होता जाता है। यह फियोर्ड से भिन्न है क्योंकि रिया का निर्माण नदी की घाटियों के डूबने से होता है।

117. (C) डब्लू. एम. डेविस
'अपरदन का आधार तल' की अवधारणा डेविस के भौगोलिक चक्र का एक केंद्रीय स्तंभ है। इसका अर्थ है वह न्यूनतम स्तर जिससे नीचे कोई भी नदी अपनी घाटी को और गहरा नहीं काट सकती। सामान्यतः समुद्र तल को ही अंतिम आधार तल माना जाता है। डेविस ने तर्क दिया कि नदियाँ निरंतर इस स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करती हैं, जिससे अंततः एक पेनीप्लेन बनता है। यह अवधारणा नदी की अपरदनात्मक शक्ति को समझाती है।

118. (B) सूर्य और चंद्रमा का ज्वारीय बल
अल्फ्रेड वेगनर ने अपने सिद्धांत में प्रस्तावित किया था कि महाद्वीपों के पश्चिम की ओर खिसकने हेतु सूर्य और चंद्रमा का ज्वारीय खिंचाव उत्तरदायी है। उनका मानना था कि जैसे-जैसे पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, यह ज्वारीय बल महाद्वीपीय खंडों पर एक प्रकार का खिंचाव डालता है, जिससे वे पश्चिम की ओर विस्थापित होते हैं। यद्यपि बाद में वैज्ञानिकों ने इस विचार को गलत पाया क्योंकि यह बल इसके लिए अत्यंत अपर्याप्त था।

119. (D) महासागरीय-महासागरीय अभिसारी
द्वीप चाप उन क्षेत्रों में निर्मित होते हैं जहाँ दो महासागरीय प्लेटें एक-दूसरे की ओर बढ़ती हैं और टकराती हैं। इस प्रक्रिया में, अधिक सघन और भारी प्लेट दूसरी प्लेट के नीचे मेंटल में धंस जाती है, जिसे सबडक्शन कहते हैं। गहराई में जाने पर यह प्लेट पिघलकर मैग्मा बनाती है, जो समुद्र तल पर ज्वालामुखी विस्फोट करता है। समय के साथ ये ज्वालामुखी समुद्र की सतह से ऊपर आकर द्वीपों की एक श्रृंखला का निर्माण करते हैं।

120. (A) ऊपरी मार्ग (युवावस्था)
अन्तर्ग्रथित स्पर नदी के ऊपरी मार्ग की एक विशिष्ट विशेषता है। पहाड़ी क्षेत्रों में जहाँ नदी का मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा होता है, वह अपनी घाटी को गहरा करते समय पर्वत के कठोर हिस्सों को पूर्णतः नहीं काट पाती। इसके बजाय, वह उनके चारों ओर से मुड़कर बहती है। इससे ऐसा प्रतीत होता है मानो पहाड़ की भुजाएँ एक-दूसरे में फँसी हुई हैं। यह दृश्य नदी की शुरुआती ऊर्जा और पर्वतीय बाधाओं के मध्य संतुलन को दर्शाता है।

121. (C) पर्वत निर्माण
'अनाच्छादन' एक बहिर्जात प्रक्रिया है जिसमें अपक्षय, अपरदन और परिवहन सम्मिलित होते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की सतह को घिसकर समतल करना और उसे नीचा करना है। इसके विपरीत, पर्वत निर्माण एक अंतर्जात प्रक्रिया है जो पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा संचालित होती है। जहाँ अनाच्छादन धरातल की ऊँचाई को कम करता है, वहीं पर्वत निर्माण संपीड़न के माध्यम से नवीन ऊँचाइयाँ सृजित करता है। अतः यह अनाच्छादन का भाग नहीं है।

122. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
पटल विरूपण उन सभी आंतरिक प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जो पृथ्वी की पपड़ी को संचलित करती हैं और पर्वतों का निर्माण करती हैं। यह कथन पूर्णतः सत्य है। किंतु ज्वालामुखी क्रिया एक अंतर्जात प्रक्रिया है, न कि बहिर्जात। इसकी उत्पत्ति पृथ्वी के गर्भ में मैग्मा के बनने और उसके ऊपर आने से होती है। यद्यपि इसका प्रभाव सतह पर दिखाई देता है, लेकिन इसकी ऊर्जा आंतरिक भाग से आती है, जो इसे अंतर्जात बल बनाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

123. (D) महाद्वीपीय विस्थापन
महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत का सर्वाधिक आकर्षक प्रमाण महाद्वीपों के तटों का 'जिग-सॉ फिट' होना था। यदि हम विश्व के मानचित्र पर दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के तटों को देखें, तो वे एक-दूसरे में पूर्णतः समाहित होते प्रतीत होते हैं। वेगनर ने तर्क दिया कि यह समानता इस बात का प्रमाण है कि ये दोनों महाद्वीप कभी एक ही विशाल भूखंड का हिस्सा थे। यह विचार आज भी प्लेट विवर्तनिकी के आधारभूत प्रमाणों में से एक है।

124. (B) पेडिमेंट
पेडिमेंट शुष्क क्षेत्रों में पर्वत की तलहटी में पाई जाने वाली एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थलाकृति है। यह एक विस्तृत और मंद ढाल वाली चट्टानी सतह होती है जो अपरदन के कारण निर्मित होती है। इसके ऊपर प्रायः मलबे की एक अत्यंत पतली परत होती है। शुष्क अपरदन चक्र के दौरान, जैसे-जैसे पर्वत पीछे की ओर हटते हैं, पेडिमेंट का विस्तार होता जाता है। इसके विपरीत, सर्क हिमनद क्षेत्रों की और प्राकृतिक तटबंध बाढ़ वाले मैदानी इलाकों की विशेषता है।

125. (C) केवल 1 और 2
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत बताता है कि पृथ्वी का स्थलमंडल स्थिर नहीं है, बल्कि वह कई प्लेटों में विभाजित है जो निरंतर संचलित हो रही हैं। यह कहना कि प्लेटें स्थिर हैं, पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है क्योंकि वे प्रतिवर्ष कुछ सेंटीमीटर की गति से खिसकती हैं। अधिकांश महत्वपूर्ण भू-वैज्ञानिक घटनाएँ इन्हीं प्लेटों की सीमाओं पर घटित होती हैं जहाँ वे आपस में टकराती हैं या दूर जाती हैं। यह सिद्धांत आधुनिक भू-विज्ञान की आधारशिला है।

126. (D) तुषार विदारण
तुषार विदारण ठंडे पर्वतीय क्षेत्रों में भौतिक अपक्षय की एक अत्यंत शक्तिशाली प्रक्रिया है। जब चट्टान की दरारों में जमा जल रात के समय जमता है, तो उसके आयतन में लगभग 9 प्रतिशत की वृद्धि होती है। यह फैलाव दरार की दीवारों पर अत्यधिक दबाव डालता है। बार-बार जमने और पिघलने के इस चक्र से चट्टानें दुर्बल हो जाती हैं और अंततः कोणीय टुकड़ों में टूट जाती हैं। यह प्रक्रिया ढालों पर मलबे के ढेर बनाने के लिए उत्तरदायी है।

127. (A) उत्तल
पेंक के मॉडल के अनुसार, 'बढ़ते विकास' के चरण में भूमि का उत्थान अत्यंत तीव्र होता है। इस अवस्था में घाटियों का गहरा होना पार्श्व अपरदन की तुलना में अधिक तीव्र होता है, जिससे पहाड़ियों की भुजाएँ उत्तल ढाल वाली हो जाती हैं। उत्तल ढाल इस बात का संकेत है कि उत्थान की शक्तियाँ अभी भी अपरदन की तुलना में अधिक प्रभावशाली हैं। यह नवीन और सक्रिय रूप से ऊपर उठते हुए पर्वतीय क्षेत्रों की प्रमुख पहचान है।

128. (B) बाहरी किनारे पर अपरदन और भीतरी किनारे पर निक्षेपण दोनों
नदी विसर्प का निर्माण अपरदन और निक्षेपण की संयुक्त क्रिया का एक अनूठा उदाहरण है। जब नदी मुड़ती है, तो जल का मुख्य वेग मोड़ के बाहरी किनारे से टकराता है, जिससे वहाँ का तीव्र कटाव होता है। इसके विपरीत, मोड़ के भीतरी किनारे पर जल का वेग अत्यंत कम हो जाता है, जिससे वहाँ रेत और कंकड़ का जमाव होने लगता है। इस दोहरी प्रक्रिया के कारण विसर्प का घुमाव समय के साथ अधिक गहरा होता जाता है।

129. (B) टिल
'टिल' हिमनद द्वारा सीधे निक्षेपित किए गए मलबे को कहा जाता है जो पूर्णतः अवर्गीकृत और अस्तरहीन होता है। चूंकि हिमनद अपनी विशाल शक्ति से चट्टानों को तोड़ता है, इसलिए टिल में महीन मिट्टी से लेकर विशालकाय पत्थर तक सब कुछ एक साथ मिश्रित पाया जाता है। इसमें जल द्वारा की जाने वाली छंटाई का अभाव होता है, इसलिए यह किसी भी प्रकार की परतों में व्यवस्थित नहीं होता। टिल का पाया जाना प्राचीन हिमनदों का प्रमाण है।

130. (A) अपघर्षण
हिमनद स्ट्रीएशन वे बारीक खरोंचें होती हैं जो हिमनद के नीचे की आधारभूत चट्टान पर दिखाई देती हैं। इनका निर्माण तब होता है जब हिमनद अपने तल में जमे हुए कठोर पत्थर के टुकड़ों को आधारभूत चट्टान पर घिसता हुआ आगे बढ़ता है। इस प्रक्रिया को अपघर्षण कहा जाता है। ये खरोंचें न केवल हिमनद की घर्षण शक्ति को दर्शाती हैं, बल्कि वे उस दिशा को भी स्पष्ट करती हैं जिसमें प्राचीन हिमनद प्रवाहित हो रहे थे, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

131. (C) तलछट संचय की एक लंबी, धंसती हुई द्रोणी।
भू-सन्नति की अवधारणा एक ऐसी लंबी और उथली समुद्री द्रोणी का वर्णन करती है जिसमें करोड़ों वर्षों तक नदियों द्वारा लाया गया तलछट जमा होता रहता है। जैसे-जैसे तलछट का भार बढ़ता है, द्रोणी का तल और भी नीचे धंसता जाता है, जिससे निक्षेपण की प्रक्रिया निरंतर बनी रहती है। यह संचित मलबा ही बाद में विवर्तनिक दबाव के कारण वलित होकर विशाल पर्वत श्रृंखलाओं का रूप ले लेता है। हिमालय का जन्म इसी से हुआ है।

132. (D) एक महाद्वीप पर अपसारी प्लेट सीमा
पूर्वी अफ्रीकी रिफ्ट घाटी एक महाद्वीपीय खंड के भीतर हो रहे प्लेट अपसरण का उदाहरण है। यहाँ अफ्रीकी प्लेट धीरे-धीरे दो भागों में टूट रही है, जिससे धरातल में विशाल दरारें पड़ रही हैं और मध्य भाग नीचे धंस रहा है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि अपसारी सीमाएँ केवल समुद्र के भीतर ही नहीं, बल्कि महाद्वीपों के मध्य में भी निर्मित हो सकती हैं। भविष्य में, यह दरार इतनी चौड़ी हो सकती है कि वहाँ नवीन सागर बन जाए।

133. (C) पेडीप्लेन
शुष्क अपरदन चक्र के अंतिम चरण में, जब पर्वतों का निरंतर पीछे की ओर हटना पूर्ण हो जाता है, तो विस्तृत पेडिमेंट परस्पर मिल जाते हैं। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप एक बहुत ही मंद ढाल वाला और लगभग समतल मैदान निर्मित होता है जिसे 'पेडीप्लेन' कहा जाता है। यह डेविस के पेनीप्लेन के समान है, किंतु इसके निर्माण की प्रक्रिया 'पेडिमेंट विस्तार' पर आधारित

Downloaded from www.pdf.tube

होती है। यहाँ बीच-बीच में अवशिष्ट पहाड़ियाँ या इनसेलबर्ग खड़े रह सकते हैं।

134. (B) केवल 1 और 3
डेविस का भू-आकृतिक मॉडल यह मानता है कि परिदृश्य का विकास एक तीव्र और अल्पकालिक उत्थान के पश्चात प्रारंभ होता है। उनका मंत्र "संरचना, प्रक्रम और अवस्था" बताता है कि स्थलाकृतियाँ इन तीनों कारकों का परिणाम हैं। किंतु डेविस के मॉडल में अंतिम उत्पाद को 'पेनीप्लेन' कहा जाता है, न कि 'पेडीप्लेन'। पेडीप्लेन शुष्क चक्र की विशेषता है। डेविस का मॉडल मुख्य रूप से आर्द्र क्षेत्रों में नदियों के कार्यों पर केंद्रित है।

135. (D) पुलिन
पुलिन या बीच तटीय निक्षेपण की सर्वाधिक सामान्य स्थलाकृति है। जब लहरें किसी तट के चारों ओर मुड़ती हैं, तो उनकी ऊर्जा क्षीण हो जाती है, जिससे वे अपने साथ लाए गए रेत और कंकड़ को तट पर जमा कर देती हैं। यह जमाव विशेष रूप से शांत जल क्षेत्रों में अधिक होता है। पुलिन न केवल मनोरंजन के स्थल हैं, बल्कि वे तट की रक्षा भी करते हैं। इनकी सामग्री लहरों की शक्ति और स्थानीय चट्टानों के प्रकार पर निर्भर करती है।

136. (A) जलयोजन
जलयोजन एक रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया है जिसमें चट्टानों के खनिज जल के अणुओं को अवशोषित कर लेते हैं। इससे खनिजों के आयतन में वृद्धि होती है और वे फूल जाते हैं, जिससे चट्टान के आंतरिक ढाँचे पर अत्यधिक दबाव और तनाव उत्पन्न होता है। यह प्रक्रिया प्रायः चट्टानों को भुरभुरा बना देती है और उन्हें सरलता से टूटने में सहायता करती है। उदाहरण के लिए, जब एनहाइड्राइट जल सोखता है, तो वह जिप्सम में परिवर्तित हो जाता है।

137. (C) ड्रमलिन
ड्रमलिन हिमनद निक्षेपण द्वारा निर्मित एक स्थलाकृति है, न कि कार्स्ट प्रक्रिया का भाग। यह हिमनद टिल से बनी एक असममित पहाड़ी होती है। इसके विपरीत, डोलिन, उवाला और स्टैलेक्टाइट सभी कार्स्ट स्थलाकृति के उदाहरण हैं जो चूना पत्थर के क्षेत्रों में जल के रासायनिक विलयन से निर्मित होते हैं। अतः ड्रमलिन का संबंध ठंडे हिमनदी क्षेत्रों से है, जबकि अन्य तीनों का संबंध घुलनशील चट्टानी क्षेत्रों से है, जो स्पष्ट अंतर है।

138. (A) समुद्री ज्वार का दैनिक चक्र।
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत पृथ्वी के आंतरिक बलों द्वारा संचालित प्लेटों के संचलन, पर्वत निर्माण और भूकंपों के वितरण की सफलतापूर्वक व्याख्या करता है। यह महासागरीय कटकों के वैज्ञानिक कारण भी प्रदान करता है। किंतु समुद्री ज्वार-भाटा का दैनिक चक्र इस सिद्धांत के अंतर्गत नहीं आता है। ज्वार-भाटा मुख्य रूप से चंद्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के कारण होने वाली जलीय घटना है। इसका विवर्तनिक प्लेटों के खिसकने से कोई संबंध नहीं है।

139. (D) अपरदन और निक्षेपण के बीच संतुलन के साथ एक श्रेणीबद्ध प्रोफाइल।
नदी चक्र की प्रौढ़ावस्था में, नदी एक प्रकार के संतुलन की स्थिति में पहुँच जाती है जिसे 'श्रेणीबद्ध प्रोफाइल' कहा जाता है। इस अवस्था में नदी का ढाल मध्यम होता है और उसकी ऊर्जा इतनी होती है कि वह अपने साथ लाए गए मलबे का परिवहन कर सके। यहाँ लंबवत अपरदन कम हो जाता है और पार्श्व अपरदन अधिक प्रभावी होता है, जिससे विस्तृत बाढ़ के मैदान बनते हैं। नदी अब अपनी घाटी को गहरा करने के बजाय उसे चौड़ा करती है।

140. (B) 1, 2, 3
भू-वैज्ञानिक सिद्धांतों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सर्वप्रथम 1912 में अल्फ्रेड वेगनर ने महाद्वीपीय विस्थापन का क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया था। इसके पश्चात 1960 के दशक के प्रारंभ में हैरी हेस ने सागर नितल प्रसरण की परिकल्पना दी। अंततः इन सभी विचारों को सम्मिलित कर 1960 के दशक के उत्तरार्ध में प्लेट विवर्तनिकी का व्यापक सिद्धांत स्वीकार किया गया। यह क्रम आधुनिक भू-विज्ञान की वैज्ञानिक समझ के विकास को सटीक रूप से प्रदर्शित करता है।

141. (C) एक चट्टान जिसे पवन द्वारा उड़ाई गई रेत द्वारा आकार दिया गया, गड्ढेदार बनाया गया और पॉलिश किया गया है।
वेंटिफैक्ट शुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला विशिष्ट पत्थर है। इसका निर्माण पवन द्वारा किया जाता है जब वह अपने साथ उड़ाकर लाई गई रेत के कणों से इन पत्थरों पर प्रहार करती है। इस प्रक्रिया के कारण पत्थरों के चेहरे सपाट और अत्यंत चिकने हो जाते हैं। वेंटिफैक्ट्स प्रायः कोणीय आकृति के होते हैं और इनकी पॉलिश की हुई सतहें प्राचीन पवन की दिशाओं को समझने हेतु भू-वैज्ञानिकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करती हैं।

142. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
अपशल्कन वास्तव में भौतिक अपक्षय का एक रूप है जो ग्रेनाइट जैसी कठोर चट्टानों में देखा जाता है, जहाँ बाहरी परतें प्याज के छिलके की भाँति उतरती हैं। यह मुख्य रूप से चट्टान पर दबाव मुक्ति या तापमान परिवर्तन के कारण होता है, न कि किसी रासायनिक अभिक्रिया के कारण। यद्यपि रासायनिक अपक्षय भी संभव है, किंतु अपशल्कन की मुख्य प्रक्रिया यांत्रिक तनाव पर आधारित है। अतः कथन I इसकी भौतिक प्रकृति को सही बताता है।

143. (A) महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसरण
एंडीज पर्वत महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसरण का शानदार उदाहरण हैं। यहाँ नाज़का प्लेट, जो महासागरीय प्लेट है, दक्षिण अमेरिकी महाद्वीपीय प्लेट से टकराती है। चूंकि महासागरीय प्लेट अधिक भारी और सघन होती है, वह महाद्वीपीय प्लेट के नीचे मेंटल में धंस जाती है। इस सबडक्शन की प्रक्रिया से भारी दबाव और ऊष्मा उत्पन्न होती है, जिससे न केवल वलित पर्वतों का निर्माण होता है, बल्कि सक्रिय ज्वालामुखी और तीव्र भूकंपीय गतिविधियाँ भी यहाँ सामान्य हैं।

144. (B) केवल 2 और 3
हिमनद के कार्यों को अपरदनात्मक और निक्षेपणात्मक श्रेणियों में विभक्त किया जाता है। एरेट और U-आकार की घाटी पूर्णतः हिमनद की घर्षण और काटने की शक्ति द्वारा निर्मित होती हैं, इसलिए वे अपरदनात्मक विशेषताएँ हैं। इसके विपरीत, हिमोढ़ हिमनद द्वारा लाए गए मलबे और पत्थरों के जमाव से निर्मित होता है, अतः यह एक निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है। यह अंतर हमें यह समझने में सहायता करता है कि हिमनद कहाँ परिदृश्य को काट रहा है।

145. (B) डब्लू. एम. डेविस
विलियम मॉरिस डेविस के मॉडल में यह माना गया है कि किसी भी स्थलाकृति का विकास अंतर्निहित चट्टानी संरचना से गहराई से प्रभावित होता है। उनके अनुसार, 'संरचना' वह कच्चा माल है जिस पर अपरदन के प्रक्रम कार्य करते हैं। चट्टान की कठोरता और परतों का झुकाव यह निर्धारित करते हैं कि अपरदन कितनी तीव्र गति से होगा और अंतिम आकृति कैसी होगी। यही कारण है कि डेविस ने संरचना को अपने प्रसिद्ध 'त्रिक' में प्रथम स्थान दिया है।

146. (A) चूना पत्थर
लैपिस और सिंकहोल जैसी विशेषताओं की उपस्थिति इस बात का निश्चित संकेत है कि उस क्षेत्र की आधारभूत चट्टान चूना पत्थर है। चूना पत्थर एक घुलनशील चट्टान है जो वर्षा जल में घुली कार्बन डाइऑक्साइड के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया कर धीरे-धीरे गलने लगती है। लैपिस कटी-फटी चट्टानी सतहों को कहते हैं, जबकि सिंकहोल वे गड्ढे हैं जहाँ से जल भूमिगत होता है। ये दोनों ही 'कार्स्ट स्थलाकृति' के प्रमुख अंग हैं जो अत्यंत विशिष्ट हैं।

147. (C) लैगून
लैगून समुद्र के तट पर स्थित एक उथला और शांत जल क्षेत्र होता है जो रेतीली रोधिकाओं या प्रवाल भित्तियों द्वारा खुले समुद्र से पूर्णतः या आंशिक रूप से पृथक हो जाता है। इसका संपर्क समुद्र से केवल संकीर्ण रास्तों के माध्यम से होता है। भारत के पूर्वी तट पर स्थित चिल्का झील लैगून का बेहतरीन उदाहरण है। ये जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध होते हैं और तटीय सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो पारिस्थितिकी हेतु आवश्यक है।

148. (D) वृहद् क्षरण
वृहद् क्षरण उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें गुरुत्वाकर्षण के प्रत्यक्ष प्रभाव के कारण चट्टानी मलबा और मिट्टी ढाल के साथ नीचे की ओर संचलित होते हैं। इसमें बहते जल या पवन जैसे किसी बाहरी अपरदन दूत की सक्रिय भूमिका नहीं होती, बल्कि गुरुत्वाकर्षण ही मुख्य प्रेरक बल होता है। इसके अंतर्गत भूस्खलन और मृदा सर्पण जैसी घटनाएँ आती हैं। यह प्रक्रिया प्रायः भारी वर्षा के पश्चात और तीव्र हो जाती है और पहाड़ों को घिसने में महत्वपूर्ण है।

149. (C) तटीय
तटीय क्षेत्रों में अपरदन और निक्षेपण की प्रक्रियाएँ अत्यंत जटिल होती हैं क्योंकि यहाँ लहरें, ज्वार-भाटा और समुद्री धाराएँ एक साथ कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त, समुद्र तल में परिवर्तन और विवर्तनिक गतिविधियाँ भी तटीय परिदृश्य को निरंतर प्रभावित करती हैं। इस कारण तटीय स्थलाकृतियों के विकास हेतु किसी एक निश्चित 'चक्र' को लागू करना कठिन होता है। तटीय वातावरण अपनी तीव्र गतिशीलता के कारण किसी एकल मॉडल में सरलता से नहीं बँधता, जो इसे अद्वितीय बनाता है।

150. (B) किसी स्थलाकृति का आर्थिक मूल्य उसके भू-आकृतिक वर्गीकरण को निर्धारित करता है।
भू-आकृति विज्ञान विशुद्ध रूप से एक प्राकृतिक विज्ञान है जो स्थलाकृतियों के आकार, उत्पत्ति और विकास के भौतिक कारणों का अध्ययन करता है। किसी पर्वत का आर्थिक मूल्य क्या है, इसका उसके वैज्ञानिक वर्गीकरण से कोई संबंध नहीं होता। इसके विपरीत, वर्तमान प्रक्रियाओं द्वारा अतीत की व्याख्या, चट्टानी संरचना का प्रभाव और विशिष्ट प्रक्रियाओं द्वारा छोड़ी गई छाप जैसे सिद्धांत इस विज्ञान के वास्तविक आधार स्तंभ हैं। अतः आर्थिक मूल्य इसकी कोई मौलिक अवधारणा नहीं है।

151. (D) अंतर्जात बल
अंतर्जात बल वे शक्तियाँ हैं जो पृथ्वी के आंतरिक भाग में उत्पन्न होती हैं। इन बलों का मुख्य स्रोत पृथ्वी की आंतरिक ऊष्मा, रेडियोधर्मी क्षय और विवर्तनिक प्लेटों का संचलन है। ज्वालामुखी, भूकंप और पर्वत निर्माण जैसी क्रियाएँ इन्हीं बलों का परिणाम हैं। ये बल धरातल पर नवीन स्थलाकृतियाँ सृजित करते हैं और विषमताएँ पैदा करते हैं, इसलिए इन्हें रचनात्मक बल भी कहा जाता है। बिना इन आंतरिक शक्तियों के पहाड़ों और महाद्वीपों का अस्तित्व संभव नहीं होता।

152. (A) प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था
अपरदन चक्र के विकास में प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था वह समय है जब परिदृश्य अपने सर्वाधिक भव्य रूप में होता है। इस अवस्था तक नदियाँ अपनी सहायक नदियों के साथ पूरे क्षेत्र में एक पूर्ण विकसित अपवाह तंत्र निर्मित कर चुकी होती हैं। चूँकि इस समय तक लंबवत अपरदन चरम पर होता है और घाटियाँ गहरी हो चुकी होती हैं, इसलिए चोटियों और घाटी के तलों के मध्य का 'उच्चावच' अपने अधिकतम स्तर पर पहुँच जाता है। यह भू-दृश्य की सर्वाधिक उबड़-खाबड़ प्रकृति है।

153. (C) प्लेट विवर्तनिकी में समुद्र तल शामिल है, जबकि विस्थापन ने केवल महाद्वीपीय पपड़ी को संचलित किया।
वेगनर का सिद्धांत मुख्य रूप से इस विचार पर आधारित था कि महाद्वीप भारी समुद्री सीमा के ऊपर तैरते हुए खिसकते हैं। इसके विपरीत, आधुनिक प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत यह बताता है कि केवल महाद्वीप ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समुद्र तल भी कठोर प्लेटों का भाग है जो निरंतर संचलित होती हैं। प्लेट विवर्तनिकी में समुद्र तल का निर्माण और विनाश एक अनिवार्य

Click Here to Buy book on Amazon

भाग है, जिसने वेगनर के सिद्धांत को एक संपूर्ण और तार्किक वैश्विक आधार प्रदान किया है।

154. (A) केवल 2 और 3
नदी की स्थलाकृतियों को उनकी उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। जलोढ़ पंख और बाढ़ के मैदान निक्षेपणात्मक आकृतियाँ हैं क्योंकि ये नदी द्वारा लाए गए मलबे के जमाव से निर्मित होते हैं। जलोढ़ पंख पर्वतों की तलहटी में बनते हैं, जबकि बाढ़ के मैदान मैदानी क्षेत्रों में विकसित होते हैं। इसके विपरीत, जलगर्तिका नदी के तल में पत्थर के टुकड़ों द्वारा किए गए घर्षण से बनने वाला गड्ढा है, जो विशुद्ध रूप से एक अपरदनात्मक विशेषता है।

155. (D) हॉर्न
हॉर्न हिमनद अपरदन का अत्यंत भव्य परिणाम है। जब तीन या उससे अधिक सर्क एक ही पर्वत के शिखर की ओर पीछे की ओर अपरदन करते हैं, तो वे पहाड़ की चोटी को चारों तरफ से काट देते हैं। अंततः शिखर एक अत्यंत तीक्ष्ण और पिरामिड जैसी नुकीली चोटी का रूप ले लेता है, जिसे हॉर्न कहते हैं। स्विट्ज़रलैंड का मैटरहॉर्न इसका प्रसिद्ध उदाहरण है। जबकि एरेट केवल दो सर्कों के मध्य की कटक है, हॉर्न वह बिंदु है जहाँ कई एरेट मिलते हैं।

156. (B) जल-अपघटन
जल-अपघटन एक महत्वपूर्ण रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया है जिसमें जल के अणु चट्टानी खनिजों के साथ सीधे प्रतिक्रिया करते हैं और उनके रासायनिक बंधों को तोड़ देते हैं। फेल्डस्पार जैसे खनिजों के मामले में, जल-अपघटन के कारण वे मिट्टी के खनिजों में परिवर्तित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया चट्टानों को अत्यंत कोमल और भुरभुरा बना देती है, जिससे वे सरलता से नष्ट हो जाती हैं। यह मृदा निर्माण की दिशा में एक प्रमुख चरण है और आर्द्र जलवायु क्षेत्रों में होता है।

157. (C) समुद्री स्तंभ
समुद्री स्तंभ तटीय अपरदन के क्रमिक चरणों का अंतिम उत्पाद है। जब लहरें किसी तट को काटकर पहले समुद्री गुफा और फिर समुद्री मेहराब निर्मित करती हैं, तो समय के साथ मेहराब की छत दुर्बल होकर गिर जाती है। छत गिरने के पश्चात, मुख्य भूमि से पृथक एक भाग समुद्र के मध्य एक खंभे की भाँति खड़ा रह जाता है। इसे ही समुद्री स्तंभ या 'स्टैक' कहते हैं। यह इस बात का साक्ष्य है कि समुद्र की लहरें कितनी शक्तिशाली और विनाशकारी हो सकती हैं।

158. (D) पृथ्वी के घूर्णन से भूमध्य रेखा की ओर केंद्रत्यागी बल का निर्माण।
अल्फ्रेड वेगनर ने महाद्वीपों के संचलन की व्याख्या हेतु 'ध्रुव-पलायन बल' का सुझाव दिया था। उनका तर्क था कि चूंकि पृथ्वी ध्रुवों पर चपटी है, इसलिए इसके घूर्णन के कारण एक केंद्रत्यागी बल उत्पन्न होता है। वेगनर का मानना था कि यह बल महाद्वीपों को ध्रुवों से दूर भूमध्य रेखा की ओर धकेलने हेतु पर्याप्त है। किंतु भौतिकविदों ने बताया कि यह बल महाद्वीपों जैसे विशाल भूखंडों को हिलाने हेतु अत्यंत निर्बल है और यह सिद्धांत का निर्बल बिंदु सिद्ध हुआ।

159. (A) पेनीप्लेन
'एंडरम्फ' और 'पेनीप्लेन' दोनों ही अपरदन चक्र के अंतिम उत्पाद को प्रदर्शित करने वाले शब्द हैं। डेविस ने अपने मॉडल में आर्द्र क्षेत्रों में नदियों द्वारा निर्मित अंतिम निम्न-उच्चावच मैदान को पेनीप्लेन कहा था। उसी प्रकार, वाल्थर पेंक ने अपरदन के अंतिम चरण में निर्मित होने वाली लगभग समतल सतह हेतु एंडरम्फ शब्द का प्रयोग किया। यद्यपि दोनों के निर्माण की सैद्धांतिक व्याख्या में अंतर है, किंतु स्थलाकृतिक रूप से वे एक ही प्रकार के वृद्ध परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

160. (B) 2, 1, 3
हिमनद क्षेत्रों में स्थलाकृतियों का विकास एक निश्चित क्रम में होता है। सर्वप्रथम, बर्फ के उत्पाटन और घर्षण से पहाड़ के किनारों पर कटोरे के आकार के 'सर्क' निर्मित होते हैं। जैसे-जैसे ये सर्क पीछे की ओर बढ़ते हैं, दो समीपवर्ती सर्कों के मध्य की दीवार पतली होकर तीक्ष्ण 'एरेट' में परिवर्तित हो जाती है। अंत में, जब तीन या अधिक सर्क एक ही शिखर की ओर बढ़ते हैं, तो वे पहाड़ की चोटी को काटकर एक नुकीला 'हॉर्न' निर्मित कर देते हैं।

161. (B) पवन
जिस क्षेत्र में अपवाहन गर्त और बरखान बालुका स्तूप पाए जाते हैं, वहाँ का मुख्य भू-आकृतिक कारक पवन है। अपवाहन गर्त पवन द्वारा सतह से ढीली रेत को उड़ा ले जाने से बने गड्ढे हैं, जो पवन की अपरदनात्मक शक्ति को प्रदर्शित करते हैं। वहीं, बरखान रेत के अर्धचंद्राकार निक्षेप हैं जो पवन की दिशा के साथ निर्मित होते हैं, जो इसकी निक्षेपण शक्ति का प्रमाण हैं। यह संयोजन प्रायः शुष्क रेगिस्तानी वातावरण में पाया जाता है जहाँ जल की भूमिका अत्यंत सीमित होती है।

162. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अपक्षय और अपरदन एक-दूसरे के पूरक हैं। अपक्षय चट्टानों को अपने ही स्थान पर विखंडित कर दुर्बल कर देता है, जिससे वे लघु टुकड़ों में विभाजित हो जाती हैं। यह 'स्व-स्थाने' प्रक्रिया अपरदन हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करती है, क्योंकि दुर्बल चट्टानों को उखाड़ना सरल होता है। अपरदन में इन टुकड़ों का दूतों द्वारा परिवहन सम्मिलित होता है। ये दोनों प्रक्रियाएँ संयुक्त रूप से धरातल को नवीन रूप प्रदान करती हैं, जो भू-आकृति विज्ञान में महत्वपूर्ण है।

163. (C) अपसारी
मध्य-अटलांटिक कटक पृथ्वी पर अपसारी प्लेट सीमा का सर्वाधिक विशाल और सक्रिय उदाहरण है। यह अटलांटिक महासागर के मध्य में उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत एक जलमग्न पर्वत श्रृंखला है। यहाँ विवर्तनिक प्लेटें परस्पर विपरीत दिशा में खिसक रही हैं। इस प्रसरण के कारण नीचे से मैग्मा ऊपर आता है और नवीन समुद्र तल निर्मित करता है। यह कटक निरंतर हो रहे सागर नितल प्रसरण का प्रत्यक्ष साक्ष्य है जो महासागर को धीरे-धीरे चौड़ा कर रहा है, जो अत्यंत रोचक है।

NODIA

164. (D) पेनीप्लेनेशन (समतलीकरण)
भू-सन्नति से पर्वत निर्माण की प्रक्रिया में तीन मुख्य चरण होते हैं। सर्वप्रथम 'लिथोजेनेसिस' होता है जिसमें द्रोणी में तलछट जमा होती है। फिर 'ओरोजेनेसिस' आता है जहाँ विवर्तनिक दबाव से यह तलछट वलित होकर पर्वत निर्मित करती है। अंत में 'ग्लिप्टोजेनेसिस' होता है जिसमें बाह्य दूत इन पर्वतों को काटकर आकृतियाँ निर्मित करते हैं। पेनीप्लेनेशन पर्वत निर्माण का भाग नहीं है, बल्कि यह अंतिम प्रक्रिया है जो पर्वत के पूर्णतः घिस जाने के पश्चात उसे समतल मैदान में परिवर्तित करती है।

165. (C) केवल 2
शुष्क क्षेत्रों में पेडिमेंट पर्वत की तलहटी में स्थित मंद ढाल वाली अपरदनात्मक सतहें होती हैं जो अत्यंत विशिष्ट हैं। इनसेलबर्ग निक्षेपणात्मक नहीं, बल्कि कठोर चट्टानों के अवशिष्ट भाग हैं जो अपरदन के पश्चात शेष रह जाते हैं। लोएस पवन द्वारा उड़ाई गई अत्यंत महीन धूल के निक्षेप हैं जो विस्तृत मैदान निर्मित करते हैं, न कि विशाल बालुका स्तूप। अतः, इन विकल्पों में केवल पेडिमेंट से संबंधित विवरण ही पूर्णतः सत्य है जो रेगिस्तानी परिदृश्य के क्रमिक विकास को सही ढंग से प्रदर्शित करता है।

166. (B) प्रौढ़ावस्था
नदी की प्रौढ़ावस्था वह समय है जब उसका मुख्य कार्य लंबवत कटान के स्थान पर पार्श्व अपरदन करना होता है। इस अवस्था में नदी का वेग पर्वतों से उतरने के पश्चात कम हो जाता है, जिससे वह अपनी घाटी को चौड़ा करने लगती है। घाटी के चौड़ा होने से विस्तृत बाढ़ के मैदान विकसित होते हैं और नदी टेढ़े-मेढ़े विसर्प में प्रवाहित होना प्रारंभ कर देती है। यह संतुलन की अवस्था है जहाँ नदी न केवल अपरदन करती है, बल्कि उपजाऊ मिट्टी का निक्षेपण भी करती है।

167. (D) अपशल्कन
अपशल्कन एक भौतिक अपक्षय प्रक्रिया है जो मुख्य रूप से ग्रेनाइट जैसी सघन चट्टानों को प्रभावित करती है। जब ऊपरी चट्टानों के अपरदन के कारण नीचे की चट्टानों पर दबाव कम हो जाता है, तो वे फैलने लगती हैं। इस विस्तार और तापमान के दैनिक उतार-चढ़ाव के कारण चट्टान की बाहरी परतें आंतरिक भाग से पृथक हो जाती हैं और प्याज के छिलके की भाँति उतरने लगती हैं। इसके परिणामस्वरूप धरातल पर गुंबदाकार पहाड़ियों का निर्माण होता है। यह प्रक्रिया यांत्रिक तनाव का उत्कृष्ट उदाहरण है।

168. (A) उवाला - कई छोटे सिंकहोल के मिलने से बना एक संयुक्त सिंकहोल।
कार्स्ट स्थलाकृतियों में उवाला एक संयुक्त अवसाद है जो तब निर्मित होता है जब रासायनिक विलयन से कई समीप स्थित सिंकहोल परस्पर जुड़ जाते हैं। यह एक अनियमित और विस्तृत गड्ढा होता है। स्टैलेक्टाइट छत से लटकते हैं, न कि फर्श से विकसित होते हैं। सिंकहोल अपेक्षाकृत लघु और गोलाकार गड्ढे होते हैं, जबकि पोल्ये विशालतम सपाट तल वाली घाटियाँ होती हैं। यह शब्दावली चूना पत्थर क्षेत्रों में जल की घुलाने की शक्ति के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती है।

169. (C) प्रस्तावित प्रेरक बलों की अपर्याप्तता।
वेगनर के सिद्धांत को तत्कालीन वैज्ञानिकों ने मुख्य रूप से इसलिए अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे विस्थापन हेतु प्रस्तावित तंत्र से सहमत नहीं थे। वेगनर ने ज्वारीय बल और केंद्रत्यागी बल को महाद्वीपों को हिलाने वाली शक्ति माना था, जो गणनाओं में अत्यंत निर्बल सिद्ध हुए। यद्यपि उनके पास भौगोलिक प्रमाण अत्यंत सुदृढ़ थे, किंतु भौतिकी के नियमों के आधार पर एक ठोस प्रेरक बल की कमी ने उनके विचार को दीर्घकाल तक मुख्यधारा से दूर रखा, जब तक कि संवहन धाराओं की खोज नहीं हुई।

170. (A) ज्वारनदमुख
ज्वारनदमुख या एस्टुअरी एक ऐसी तटीय स्थलाकृति है जहाँ नदी का मीठा जल समुद्र के खारे जल से मिलता है। यह प्रायः एक निमज्जित नदी मुहाना होता है जो कीप के आकार का होता है। यहाँ ज्वार की लहरें नदी के मार्ग में काफी अंदर तक प्रवेश करती हैं। ज्वारनदमुख में गाद का जमाव अल्प होता है क्योंकि ज्वारीय धाराएँ मुहाने को स्वच्छ रखती हैं। भारत में नर्मदा और तापी नदियाँ सुंदर ज्वारनदमुख निर्मित करती हैं। यह क्षेत्र पारिस्थितिकी तंत्र हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

171. (D) समुद्र तल
समुद्र तल को नदियों के अपरदन का 'अंतिम आधार तल' माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी नदी अपनी घाटी को समुद्र की सतह से अधिक गहरा नहीं काट सकती, क्योंकि समुद्र में विलीन होने के पश्चात उसका वेग शून्य हो जाता है। यद्यपि झीलें 'स्थानीय आधार तल' के रूप में कार्य कर सकती हैं, किंतु दीर्घकाल में संपूर्ण नदी प्रणाली समुद्र तल के अनुसार ही स्वयं को ढालने का प्रयास करती है। यह अवधारणा भू-दृश्य विकास की सीमा को समझने में सहायता करती है।

172. (B) पृथ्वी के मेंटल के भीतर संवहन धाराएं।
विवर्तनिक प्लेटों के संचलन का प्राथमिक कारण पृथ्वी के मेंटल में होने वाली ऊष्मीय संवहन धाराएं हैं। पृथ्वी के आंतरिक भाग की अत्यधिक ऊष्मा मेंटल के मैग्मा को गर्म करती है, जिससे वह ऊपर उठता है और प्लेटों के नीचे फैलता है। यह फैलाव और फिर ठंडा होकर नीचे गिरना एक चक्रीय गति उत्पन्न करता है जो ऊपर स्थित कठोर प्लेटों को मंद गति से खिसकाता है। यह प्रक्रिया एक विशाल यंत्र की भाँति कार्य करती है जो महाद्वीपों के विस्थापन हेतु आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती है।

173. (C) एस्कर स्तरीकृत निक्षेप हैं, जबकि हिमोढ़ अवर्गीकृत टिल हैं।
एस्कर और हिमोढ़ दोनों हिमनद निक्षेप हैं, किंतु उनकी बनावट में वृहद् अंतर है। हिमोढ़ सीधे हिमनद की बर्फ द्वारा छोड़े गए मलबे से निर्मित होते हैं, इसलिए इनमें बड़े पत्थरों और महीन मिट्टी का मिश्रण बिना किसी क्रम के होता है। इसके विपरीत, एस्कर हिमनद के नीचे प्रवाहित होने वाली जलधाराओं द्वारा

Downloaded from www.pdf.tube

जमा किए जाते हैं। बहता जल मलबे की छंटाई कर देता है, जिससे एस्कर में रेत और बजरी की व्यवस्थित परतें पाई जाती हैं। यह अंतर उनके निर्माण के माध्यम को स्पष्ट करता है।

174. (D) केवल 2
गतिशील संबंध मॉडल, जैसे पेंक का मॉडल, इस विचार पर आधारित हैं कि स्थलाकृतियों का स्वरूप केवल समय व्यतीत होने से नहीं, बल्कि आंतरिक उत्थान और बाह्य अपरदन की शक्तियों के मध्य के तात्कालिक अनुपात से निर्धारित होता है। यह मॉडल समय-आधारित चरणों के स्थान पर शक्तियों के संतुलन पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें माना जाता है कि यदि उत्थान तीव्र होगा तो उच्चावच में वृद्धि होगी। यह दृष्टिकोण भू-आकृति विज्ञान में प्रक्रियाओं की गतिशीलता और उनके आपसी संबंधों को अधिक महत्व प्रदान करता है।

175. (A) ऑक्सीकरण
लोहे पर जंग लगना एक रासायनिक प्रक्रिया है जहाँ लोहा ऑक्सीजन और नमी के साथ मिलकर आयरन ऑक्साइड बनाता है। भू-विज्ञान में ठीक यही प्रक्रिया उन चट्टानों के साथ होती है जिनमें लोहे की मात्रा अधिक होती है। जब इन चट्टानों के खनिज ऑक्सीजन और जल के संपर्क में आते हैं, तो उनका रंग लाल हो जाता है और उनकी मजबूती क्षीण हो जाती है। यह रासायनिक अपक्षय का सामान्य उदाहरण है जो कठोर चट्टानों को धीरे-धीरे दुर्बल कर मिट्टी में परिवर्तित करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

176. (B) स्पिट
स्पिट तटीय निक्षेपण की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो लहरों द्वारा लाई गई रेत के जमाव से निर्मित होती है। यह एक संकीर्ण रोधिका की भाँति होती है जिसका एक सिरा तट से जुड़ा होता है। इसके विपरीत, समुद्री भृगु, समुद्री मेहराब और तरंग-घर्षित चबूतरे पूर्णतः अपरदनात्मक स्थलाकृतियाँ हैं जो लहरों द्वारा चट्टानों को काटने और नष्ट करने से निर्मित होती हैं। स्पिट का निर्माण प्रायः खाड़ियों के मुहाने पर होता है जहाँ जल की गति मंद हो जाती है और मलबे का निक्षेपण सरल होता है।

177. (B) वह महामहाद्वीप जो उत्तर पेलियोजोइक युग के दौरान मौजूद था।
अल्फ्रेड वेगनर के सिद्धांत के अनुसार, 'पैंजिया' उस विशाल महामहाद्वीप का नाम था जो लगभग 200 मिलियन वर्ष पूर्व पृथ्वी पर विद्यमान था। उस समय विश्व के सभी आधुनिक महाद्वीप आपस में एक विशाल भूखंड के रूप में संयुक्त थे। पैंजिया के चारों ओर विस्तृत विशाल महासागर को पैंथलासा कहा जाता था। कालांतर में आंतरिक बलों के कारण पैंजिया का विखंडन हुआ और इसके खंड पृथक दिशाओं में विस्थापित होकर आधुनिक सात महाद्वीपों और पाँच महासागरों के रूप में व्यवस्थित हो गए, जो विस्मयकारी है।

178. (A) पूर्ववर्ती सरिता
पूर्ववर्ती सरिता वह नदी होती है जिसका मार्ग उस क्षेत्र के भूगर्भीय उत्थान से भी प्राचीन होता है। जब नदी के मार्ग में कोई पर्वत श्रृंखला धीरे-धीरे ऊपर उठती है, तो नदी अपने प्राचीन मार्ग को बनाए रखने हेतु उस उठते हुए भाग को उतनी ही तीव्र गति से काटती रहती है। इसके परिणामस्वरूप नदी पर्वत के मध्य में एक अत्यंत गहरी घाटी या गार्ज का निर्माण करती है। हिमालय से निकलने वाली सिंधु और सतलुज नदियाँ पूर्ववर्ती सरिताओं के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो पर्वत निर्माण के बावजूद मार्ग नहीं बदलतीं।

179. (C) स्टैलेग्माइट
कार्स्ट गुफाओं में स्टैलेग्माइट वे निक्षेप हैं जो फर्श से ऊपर की ओर बढ़ते हैं। इनका निर्माण तब होता है जब गुफा की छत से चूना युक्त जल की बूंदें नीचे गिरती हैं। बूंदों के गिरने पर उनमें घुला कैल्शियम कार्बोनेट फर्श पर एक स्थान पर संचित होने लगता है और समय के साथ एक मोटे खंभे का रूप ले लेता है। स्टैलेग्माइट प्रायः अपने ऊपर लटकने वाले स्टैलेक्टाइट की तुलना में अधिक चौड़े होते हैं। यह चूना पत्थर के पुनरावक्षेपण की प्रक्रिया का एक अत्यंत सुंदर और मंद भू-वैज्ञानिक परिणाम है।

180. (D) 2, 3, 1
अल्पाइन हिमनद क्षेत्रों में स्थलाकृतियों का वितरण उनके निर्माण की प्रक्रिया पर निर्भर करता है। 'हॉर्न' पर्वत का सर्वाधिक ऊँचा और नुकीला शिखर होता है। उसके नीचे 'लटकती घाटियाँ' स्थित होती हैं जो सहायक हिमनदों द्वारा निर्मित की जाती हैं और मुख्य घाटी के ऊपर स्थित होती हैं। सबसे निचले स्तर पर 'U-आकार की मुख्य घाटी का तल' होता है जहाँ मुख्य हिमनद ने अपनी चौड़ी द्रोणी निर्मित की होती है। यह व्यवस्था स्पष्ट करती है कि हिमनद कैसे ऊँचे शिखरों से लेकर गहरी घाटियों तक धरातल को आकार देते हैं।

181. (C) आकस्मिकवाद
आकस्मिकवाद एक प्रारंभिक भू-वैज्ञानिक विचार था जिसके अनुसार पृथ्वी की स्थलाकृतियों में वृहद् परिवर्तन अचानक और अत्यंत हिंसक घटनाओं के कारण हुए। इस सिद्धांत के समर्थकों का मानना था कि बाढ़ या ज्वालामुखी विस्फोट जैसी विनाशकारी घटनाओं ने बहुत ही अल्प समय में पहाड़ों और घाटियों का निर्माण किया। यह विचार 'एकरूपतावाद' के विपरीत है, जो मानता है कि परिवर्तन अत्यंत मंद और क्रमिक प्रक्रियाओं द्वारा होते हैं। आधुनिक भू-विज्ञान में आकस्मिक घटनाओं की भूमिका सीमित रूप में स्वीकार की जाती है।

182. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
वाल्थर पेंक के मॉडल में अवतल घाटी ढाल 'घटते विकास' के चरण का प्रतीक है। यह तब घटित होता है जब विवर्तनिक उत्थान पूर्णतः रुक जाता है या अत्यंत मंद हो जाता है। इस स्थिति में नदी द्वारा अपनी घाटी को गहरा करने की तुलना में घाटी की भुजाओं का पीछे की ओर खिसकना और मंद होना अधिक प्रभावी हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप गहरी घाटियाँ धीरे-धीरे चौड़ी और मंद ढाल वाली हो जाती हैं, जो एक वृद्ध और शांत परिदृश्य के क्रमिक विकास की ओर स्पष्ट संकेत करती हैं।

NODIA

183. (D) इसके बीज इतने भारी थे कि उन्हें पवन द्वारा विस्तृत महासागरों के पार नहीं ले जा सकता था।
'ग्लॉसॉप्टेरिस' एक प्राचीन वनस्पति थी जिसके जीवाश्म दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, भारत और अंटार्कटिका में पाए गए हैं। वेगनर ने तर्क दिया कि चूंकि इस पौधे के बीज अत्यंत भारी थे और वे पवन द्वारा हजारों मील चौड़े महासागरों को पार नहीं कर सकते थे, इसलिए इन महाद्वीपों का अतीत में परस्पर जुड़ा होना अनिवार्य था। यह जीवाश्म साक्ष्य महाद्वीपीय विस्थापन के पक्ष में सर्वाधिक शक्तिशाली तर्कों में से एक सिद्ध हुआ, क्योंकि यह एक विशाल संयुक्त भूखंड 'गोंडवाना लैंड' की उपस्थिति की पुष्टि करता था।

184. (A) केवल 1 और 3
यारडांग और बरखान दोनों ही शुष्क रेगिस्तानी क्षेत्रों में पवन की शक्तियों द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ हैं। यारडांग पवन के अपरदनात्मक कार्य का परिणाम है जहाँ कठोर और कोमल चट्टानों की पट्टियाँ निर्मित होती हैं। बरखान पवन के निक्षेपणात्मक कार्य का परिणाम है जहाँ रेत के अर्धचंद्राकार टीले निर्मित होते हैं। इसके विपरीत, एस्कर हिमनदी पिघले हुए जल द्वारा रेत के जमाव से बनी एक कटक है। अतः पवन की भूमिका केवल यारडांग और बरखान के निर्माण में ही प्रत्यक्ष और प्राथमिक होती है।

185. (C) भारतीय और यूरेशियन प्लेटों का निरंतर अभिसरण।
हिमालय की निरंतर बढ़ती ऊँचाई का मुख्य कारण भारतीय प्लेट का यूरेशियन प्लेट के नीचे उत्तर की ओर निरंतर खिसकना है। यह संचलन एक अभिसारी प्लेट सीमा पर हो रहा है जहाँ भारतीय प्लेट प्रति वर्ष लगभग 5 सेंटीमीटर की गति से यूरेशियन प्लेट को धक्का प्रदान कर रही है। इस संपीड़न बल के कारण पहाड़ों की चट्टानें वलित होकर और भी ऊपर उठ रही हैं। यह प्रक्रिया करोड़ों वर्षों से निरंतर जारी है और यही कारण है कि हिमालय विश्व की सर्वाधिक युवा पर्वत श्रृंखला है।

186. (A) अंतस्थ हिमोढ़
अंतस्थ हिमोढ़ हिमनद द्वारा निक्षेपित मलबे की वह कटक है जो हिमनद के सबसे आगे के छोर पर निर्मित होती है। यह कटक उस अधिकतम सीमा को चिन्हित करती है जहाँ तक हिमनद कभी पहुँचा था। जब हिमनद का आगे बढ़ना और पिघलना संतुलन में होता है, तो वह दीर्घकाल तक एक ही स्थान पर मलबे का ढेर संचित कर देता है। यह स्थलाकृति भू-वैज्ञानिकों को यह समझने में सहायता करती है कि हिमयुग के दौरान बर्फ की चादरें कितनी दूर तक विस्तृत थीं और जलवायु परिवर्तन कब प्रारंभ हुआ।

187. (D) लैपिस या कार्रेन
लैपिस कार्स्ट परिदृश्य की एक अत्यंत उबड़-खाबड़ सतही विशेषता है। जब वर्षा जल चूना पत्थर की चट्टानों की संधियों और दरारों के साथ प्रवाहित होता है, तो वह उन्हें रासायनिक रूप से घोल देता है। इससे चट्टान की सतह पर तीक्ष्ण शिखरों और गहरी नालियों का एक जटिल जाल निर्मित हो जाता है जिसे 'कार्रेन' भी कहा जाता है। ऐसी सतहों पर चलना अत्यंत कठिन होता है क्योंकि वे बहुत धारदार होती हैं। यह विशेषता दर्शाती है कि कैसे जल कठोर पत्थर को एक जटिल भूलभुलैया में परिवर्तित कर सकता है।

188. (B) पेनीप्लेन नामक एक निचला, लगभग विशेषताहीन मैदान।
डेविस के अनुसार, नदी अपरदन चक्र का अंतिम लक्ष्य एक ऐसी स्थिति प्राप्त करना है जहाँ परिदृश्य की पूर्ण ऊर्जा समाप्त हो जाती है। करोड़ों वर्षों के निरंतर अपरदन के पश्चात, नदियाँ ऊँचे पहाड़ों को काटकर एक अत्यंत मंद ढाल वाले मैदान में परिवर्तित कर देती हैं। इसे 'पेनीप्लेन' या संप्राय मैदान कहते हैं। इस मैदान पर केवल कहीं-कहीं कठोर चट्टानों के अवशेष दिखाई देते हैं। यह स्थलाकृति भू-दृश्य के पूर्ण विनाश और शांति के चरण को प्रदर्शित करती है जहाँ विकास की गुंजाइश अल्प होती है।

189. (C) अपक्षय
अपक्षय एक प्रमुख बहिर्जात प्रक्रिया है जो पृथ्वी की सतह पर वायुमंडलीय कारकों जैसे तापमान और वर्षा के प्रभाव से संचालित होती है। यह चट्टानों को उनके स्थान पर तोड़ने और दुर्बल करने का कार्य करती है। इसके विपरीत, वलन, भ्रंशन और ज्वालामुखी क्रिया अंतर्जात प्रक्रियाएँ हैं जो पृथ्वी के आंतरिक भाग की ऊष्मा और दबाव से उत्पन्न होती हैं। बहिर्जात प्रक्रियाएँ मुख्य रूप से सूर्य की ऊर्जा और गुरुत्वाकर्षण से शक्ति प्राप्त करती हैं और इनका लक्ष्य अंतर्जात बलों द्वारा निर्मित विषमताओं को दूर करना होता है।

190. (D) एक निमज्जित हिमनद घाटी।
फियोर्ड एक गहरी, संकीर्ण और खड़ी भुजाओं वाली समुद्री खाड़ी है जो मूल रूप से एक हिमनद द्वारा निर्मित U-आकार की घाटी थी। जब हिमयुग के पश्चात समुद्र का स्तर बढ़ा, तो ये गहरी घाटियाँ समुद्र के जल से भर गईं। फियोर्ड की गहराई प्रायः मुहाने की तुलना में अंदर की ओर अधिक होती है। नॉर्वे के फियोर्ड अपनी प्राकृतिक भव्यता हेतु प्रसिद्ध हैं। यह स्थलाकृति इस बात का शानदार प्रमाण है कि कैसे अतीत के विशाल हिमनदों ने पहाड़ों को काटकर समुद्र के भीतर तक गहरे मार्ग निर्मित किए थे।

191. (A) उनकी उत्पत्ति में।
अंतर्जात और बहिर्जात बलों के मध्य सर्वाधिक मौलिक अंतर उनके ऊर्जा स्रोत और उत्पत्ति के स्थान में है। अंतर्जात बल पृथ्वी के आंतरिक भाग से उत्पन्न होते हैं, जिनका मुख्य कारण रेडियोधर्मी ऊष्मा और विवर्तनिक संचलन है। ये बल पर्वत जैसी नवीन आकृतियाँ निर्मित करते हैं। दूसरी ओर, बहिर्जात बल पृथ्वी की सतह पर वायुमंडल और सूर्य की ऊर्जा द्वारा संचालित होते हैं। इनका कार्य धरातल पर पूर्व निर्मित आकृतियों को घिसकर समतल करना है। इस प्रकार, एक शक्ति 'निर्माता' है तो दूसरी 'सुधारक' है।

192. (B) हिमनद स्थिरता की अवधि के साथ पीछे हटने की सामान्य स्थिति में था।
अंतस्थ हिमोढ़ों की एक श्रृंखला जो घाटी में ऊपर की ओर स्थित है, यह दर्शाती है कि हिमनद धीरे-धीरे पिघलकर पीछे हट रहा था। प्रत्येक हिमोढ़ कटक उस समय की स्थिति को

Click Here to Buy book on Amazon

सूचित करती है जब हिमनद कुछ समय हेतु स्थिर हुआ और मलबे का ढेर जमा किया, फिर जलवायु और उष्ण होने पर वह और पीछे चला गया। यह साक्ष्य अतीत के जलवायु परिवर्तनों और ग्लेशियरों के सिमटने के इतिहास को समझने हेतु वैज्ञानिकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, जो हिमयुग के अंत का स्पष्ट संकेत देता है।

193. (B) महादेशजनक और पर्वत निर्माणकारी
पटल विरूपणी संचलन दो मुख्य प्रकार के होते हैं जो पृथ्वी की पपड़ी को आकार प्रदान करते हैं। महादेशजनक संचलन ऊर्ध्वाधर दिशा में अत्यंत मंद गति से होता है, जिससे संपूर्ण महाद्वीप ऊपर उठते या नीचे धंसते हैं। पर्वत निर्माणकारी संचलन क्षैतिज दिशा में कार्य करता है और संपीड़न के माध्यम से वलन और भ्रंशन पैदा करता है, जिससे ऊँचे पहाड़ों का जन्म होता है। ये दोनों संचलन इतने मंद होते हैं कि इनके प्रभाव को महसूस करने में लाखों वर्ष लग जाते हैं, किंतु ये ही वैश्विक उच्चावच निर्धारित करते हैं।

194. (A) केवल 1 और 2
तटीय स्थलाकृतियों में समुद्री स्तंभ अपरदन की प्रक्रिया से निर्मित होते हैं जब एक मेहराब की छत गिर जाती है, अतः यह अपरदनात्मक है। टॉम्बोलो एक निक्षेपणात्मक विशेषता है जहाँ रेत की एक रोधिका द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ती है। पुलिन भी निक्षेपण का ही परिणाम है, न कि अपरदन का, क्योंकि यह लहरों द्वारा लाई गई रेत और बजरी के जमाव से निर्मित होता है। अतः प्रथम और द्वितीय कथन तकनीकी रूप से सत्य हैं, जबकि तृतीय कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि पुलिन के निर्माण में निक्षेपण मुख्य प्रक्रिया है।

195. (C) प्लेट संचलन के लिए एक व्यवहार्य तंत्र।
सागर नितल प्रसरण की परिकल्पना ने विवर्तनिकी के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी मोड़ दिया क्योंकि इसने सर्वप्रथम यह समझाया कि महाद्वीप वास्तव में कैसे संचलित हो सकते हैं। हैरी हेस ने बताया कि मध्य-महासागरीय कटकों पर नवीन समुद्र तल निर्मित हो रहा है, जो प्लेटों को धक्का देकर एक-दूसरे से दूर ले जाता है। इस तंत्र ने वेगनर के सिद्धांत की सर्वाधिक वृहद् कमी को दूर किया और आधुनिक प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत हेतु एक ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि धरातल स्थिर नहीं है।

196. (D) हिमनद के मुहाने से आगे हिमनद-जलीय निक्षेपण।
अवक्षेप मैदान का निर्माण हिमनद के अंत या मुहाने के सम्मुख होता है। जब हिमनद पिघलता है, तो उससे निकलने वाली जलधाराएँ अपने साथ भारी मात्रा में रेत और सिल्ट लेकर आती हैं। जैसे ही ये धाराएँ पहाड़ी क्षेत्र से बाहर निकलती हैं, वे इस मलबे को एक विस्तृत और समतल क्षेत्र में फैला देती हैं। यह मैदान प्रायः परतों में व्यवस्थित होता है क्योंकि जल मलबे की छंटाई कर देता है। यह स्थलाकृति हिमनद के सीधे निक्षेपों और बहते जल के संयुक्त कार्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

197. (C) वह समय अवधि जिसके दौरान एक भू-दृश्य विकास से गुजर रहा है।
डेविस के भू-आकृतिक चक्र में 'अवस्था' का अर्थ समय की प्रगति से है। उनके अनुसार, स्थलाकृतियाँ समय के साथ एक निश्चित अनुक्रम का पालन करती हैं, जिसे उन्होंने युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था के चरणों में विभाजित किया। प्रत्येक अवस्था में परिदृश्य के विशिष्ट लक्षण होते हैं जो यह बताते हैं कि अपरदन की प्रक्रिया कितने समय से सक्रिय है। यद्यपि पेंक जैसे विद्वानों ने इसकी आलोचना की, किंतु डेविस हेतु 'अवस्था' वह पैमाना था जो ऊँचे पहाड़ों के समतल मैदान में बदलने की यात्रा को मापता था।

198. (B) जलगर्तिका
जलगर्तिका नदी के अपरदनात्मक कार्य का परिणाम है, न कि निक्षेपणात्मक। इनका निर्माण नदी के तल में होता है जब भँवरदार जल में पत्थर के टुकड़े फंसकर आधारभूत चट्टान को ड्रिल की भाँति घिसते हैं और गहरे गोल गड्ढे निर्मित कर देते हैं। इसके विपरीत, डेल्टा, जलोढ़ पंख और प्राकृतिक तटबंध सभी निक्षेपणात्मक विशेषताएँ हैं। डेल्टा मुहाने पर निर्मित होता है, जलोढ़ पंख पर्वत की तलहटी में और प्राकृतिक तटबंध किनारों पर बाढ़ के दौरान बनते हैं। अतः जलगर्तिका नदी की काटने की शक्ति का प्रतीक है।

199. (D) प्लेट अभिसरण और सबडक्शन
प्रशांत महासागर के चारों ओर की "रिंग ऑफ फायर" विवर्तनिक प्लेटों के अभिसरण और विशेष रूप से सबडक्शन का परिणाम है। यहाँ प्रशांत प्लेट और अन्य महासागरीय प्लेटें निरंतर महाद्वीपीय प्लेटों के नीचे मेंटल में धंस रही हैं। इस प्रक्रिया में भारी घर्षण और दबाव उत्पन्न होता है, जिससे मैग्मा निर्मित होता है जो ज्वालामुखियों के रूप में बाहर प्रकट होता है। इसी सबडक्शन के कारण यहाँ विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली भूकंप भी आते हैं। यह क्षेत्र प्लेट विवर्तनिकी की विनाशकारी शक्तियों का जीवंत प्रदर्शन करता है।

200. (A) 2, 3, 1
तटीय अंतरीप पर स्थलाकृतियों का विकास अपरदन की तीव्रता के साथ एक निश्चित क्रम में होता है। सर्वप्रथम, लहरें चट्टान की संधियों को काटकर 'समुद्री गुफा' निर्मित करती हैं। जब यह गुफा आर-पार कट जाती है, तो यह 'समुद्री मेहराब' का रूप धारण कर लेती है। अंत में, जब मेहराब की छत गिर जाती है, तो केवल एक स्वतंत्र खड़ा चट्टानी खंभा शेष रह जाता है जिसे 'समुद्री स्तंभ' कहा जाता है। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे लहरें धीरे-धीरे कठोर भू-भागों को काटकर उन्हें लघु टुकड़ों और अंततः रेत में परिवर्तित कर देती हैं।

201. (C) संक्षारण या विलयन
संक्षारण या विलयन वह प्रक्रिया है जिसमें बहता जल या भूमिगत जल चट्टानों में उपस्थित घुलनशील खनिजों को रासायनिक रूप से घोल देता है और उन्हें अपने साथ ले जाता है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से चूना पत्थर और जिप्सम जैसी चट्टानों पर अत्यंत प्रभावशाली होती है। विलयन के कारण ही कार्स्ट क्षेत्रों में विशाल गुफाओं और सिंकहोल का निर्माण होता है।

NODIA

यह अपरदन की एक मूक प्रक्रिया है क्योंकि इसमें सामग्री ठोस टुकड़ों के रूप में नहीं, बल्कि जल में पूर्णतः घुलकर अदृश्य रूप में प्रवाहित होती है।

202. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II एक सही व्याख्या है।
वेगनर का सिद्धांत 1912 में प्रस्तुत किए जाने के पश्चात दीर्घकाल तक विवादों में रहा। यद्यपि उनके पास महाद्वीपों के मिलान और जीवाश्मों के वितरण के ठोस प्रमाण थे, किंतु वे यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं कर सके कि महाद्वीप जैसे विशालकाय शिलाखंड किस शक्ति के कारण खिसक सकते हैं। वेगनर द्वारा प्रस्तावित ज्वारीय बल अत्यंत निर्बल थे। एक विश्वसनीय प्रेरक तंत्र की इसी कमी के कारण समकालीन वैज्ञानिकों ने उनके विचार को तब तक पूर्णतः स्वीकार नहीं किया जब तक आधुनिक विवर्तनिकी सिद्धांतों का विकास नहीं हुआ।

203. (D) नदी अपरदन चक्र
'मोनाडनॉक' शब्द डब्लू. एम. डेविस द्वारा प्रतिपादित नदी अपरदन चक्र से जुड़ा है। यह चक्र की अंतिम अवस्था, पेनीप्लेन, की एक विशिष्ट विशेषता है। जब नदियाँ संपूर्ण क्षेत्र को काटकर समतल बना देती हैं, तो कुछ अत्यधिक कठोर चट्टानों के टुकड़े अपरदन का प्रतिरोध करते हुए खड़े रह जाते हैं। ये पृथक ऊँची पहाड़ियाँ पेनीप्लेन की सपाट सतह पर बिंदी की भाँति दिखाई देती हैं। इनका नाम अमेरिका के माउंट मोनाडनॉक के आधार पर रखा गया है और ये चक्र की पूर्णता और चट्टानी प्रतिरोध का प्रतीक मानी जाती हैं।

204. (B) सर्क एक हिमनद घाटी के शीर्ष पर एक निक्षेपणात्मक बेसिन है।
सर्क के बारे में यह कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि सर्क एक विशुद्ध रूप से अपरदनात्मक स्थलाकृति है, न कि निक्षेपणात्मक। यह हिमनद द्वारा चट्टान को उखाड़ने और घिसने से निर्मित एक विशाल, कटोरे के आकार का अवसाद है। इसके विपरीत, U-आकार की घाटी हिमनद अपरदन का परिणाम है, जबकि ड्रमलिन और एस्कर निक्षेपणात्मक विशेषताएँ हैं। ड्रमलिन हिमनद टिल के जमाव से निर्मित होते हैं और एस्कर बर्फ के नीचे प्रवाहित होने वाली जलधाराओं द्वारा जमा की गई रेत की लंबी कटक होती है, जो विशिष्ट है।

205. (C) भौतिक अपक्षय चट्टानों को छोटे टुकड़ों में तोड़ता है, जबकि रासायनिक अपक्षय उनकी रासायनिक संरचना को बदल देता है।
अपक्षय की दोनों विधियों में मुख्य अंतर चट्टान के साथ होने वाले परिवर्तन की प्रकृति में है। भौतिक अपक्षय में केवल यांत्रिक तनाव जैसे तापमान के कारण चट्टानें बिना अपनी आंतरिक बनावट बदले लघु कोणीय टुकड़ों में टूट जाती हैं। इसके विपरीत, रासायनिक अपक्षय में वायुमंडलीय गैसों और जल की प्रतिक्रिया से खनिजों का रूप परिवर्तित हो जाता है, जैसे लोहे में जंग लगना। भौतिक अपक्षय चट्टान का बाह्य आकार बदलता है, जबकि रासायनिक अपक्षय उसके रासायनिक गुणों को ही बदलकर उसे दुर्बल कर देता है।

206. (D) बढ़ता उच्चावच और उत्तल ढाल।
पेंक के 'बढ़ते विकास' के चरण में, पृथ्वी की आंतरिक शक्तियाँ अत्यंत सक्रिय होती हैं और उत्थान की दर अपरदन की दर से अधिक होती है। इस तीव्र उत्थान के कारण नदियाँ अपनी घाटियों को अत्यंत गहराई तक काटती हैं, जिससे पहाड़ियों की चोटियों और घाटी के तलों के मध्य का सापेक्ष उच्चावच निरंतर बढ़ता जाता है। साथ ही, तीव्र लंबवत अपरदन और पहाड़ी पार्श्वों के धीरे-धीरे कटने के कारण ढाल का स्वरूप उत्तल हो जाता है। यह अवस्था नवीन वलित पर्वतों की शुरुआती और सक्रिय विकासवादी स्थिति को दर्शाती है।

207. (A) अपवाहन
अपवाहन पवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्राथमिक अपरदनात्मक प्रक्रिया है। इसमें पवन अपनी शक्ति से रेगिस्तानी सतह से ढीली मिट्टी और रेत के कणों को उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़ा ले जाती है। इस प्रक्रिया से धरातल पर छिछले गड्ढे निर्मित हो जाते हैं, जिन्हें अपवाहन गर्त कहा जाता है। उत्पाटन हिमनद की प्रक्रिया है, जबकि विलयन और जल-अपघटन रासायनिक अपक्षय के भाग हैं। पवन का मुख्य कार्य ढीली सामग्री को हटाना है, जिससे वह धरातल को नीचा करने और चट्टानी सतहों को उजागर करने में सक्षम होती है।

208. (B) महासागरीय-महाद्वीपीय अभिसारी सीमा
एंडीज पर्वत दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर स्थित एक विशाल पर्वत श्रृंखला है जो महासागरीय और महाद्वीपीय प्लेटों के आपसी अभिसरण से निर्मित हुई है। यहाँ भारी नाज़का महासागरीय प्लेट, दक्षिण अमेरिकी महाद्वीपीय प्लेट के नीचे मेंटल में धंस रही है। इस सबडक्शन की प्रक्रिया से तीव्र संपीड़न होता है, जिससे तट के समीप की चट्टानें मुड़कर ऊँचे पर्वतों में परिवर्तित हो जाती हैं। इस सीमा पर सक्रिय ज्वालामुखियों की एक लंबी श्रृंखला भी पाई जाती है, जो गहराई में पिघले हुए मैग्मा के ऊपर आने का परिणाम है।

209. (B) गुफा के भीतर पाई जाने वाली निक्षेपणात्मक विशेषताएं।
गुफा निक्षेप कार्स्ट गुफाओं के भीतर चूना युक्त जल के टपकने और वाष्पीकरण से बनने वाली विशिष्ट आकृतियाँ हैं। इनमें स्टैलेक्टाइट, स्टैलेग्माइट और स्तंभ सर्वाधिक प्रमुख हैं। जब वर्षा जल चूना पत्थर को घोलकर गुफा में पहुँचता है, तो वहाँ की परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण कैल्शियम कार्बोनेट पुनः ठोस रूप में संचित होने लगता है। ये निक्षेप अत्यंत मंद गति से विकसित होते हैं और हजारों वर्षों में अद्भुत आकृतियाँ ग्रहण करते हैं। ये निक्षेप न केवल गुफा को सुंदरता प्रदान करते हैं बल्कि प्राचीन जलवायु के साक्ष्य भी हैं।

210. (A) 3, 1, 2
भू-सन्नति से पर्वत निर्माण की प्रक्रिया तीन प्रमुख चरणों का पालन करती है। सर्वप्रथम 'लिथोजेनेसिस' होता है जिसमें लाखों वर्षों तक लंबी समुद्री द्रोणी में तलछट का जमाव होता है। इसके पश्चात 'ओरोजेनेसिस' का चरण आता है जहाँ विवर्तनिक संपीड़न के कारण ये संचित तलछट वलित होकर ऊँचे पर्वतों का रूप धारण कर लेते हैं। अंत में 'ग्लिप्टोजेनेसिस' की प्रक्रिया प्रारंभ होती है जहाँ बाह्य दूत इन पर्वतों को काटकर

NODIA

शिखर और घाटियाँ निर्मित करते हैं। यह अनुक्रम पर्वतों के जन्म से लेकर उनके अलंकरण तक की कहानी कहता है।

211. (C) सन्निघर्षण
सन्निघर्षण अपरदन की वह प्रक्रिया है जिसमें बहता जल, पवन या हिमनद द्वारा परिवहन किए जा रहे चट्टान के टुकड़े परस्पर एक-दूसरे से टकराते हैं। इस निरंतर घर्षण और टक्कर के कारण ये पत्थर धीरे-धीरे घिसते हैं, लघु होते जाते हैं और अंततः गोल और चिकने कंकड़ में परिवर्तित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया अपरदन के दूतों द्वारा ढोए जा रहे 'भार' के भीतर ही घटित होती है। यह अपघर्षण से पृथक है क्योंकि अपघर्षण में मलबा आधारभूत चट्टान को घिसता है, जबकि यहाँ कण स्वयं एक-दूसरे को ही घिसकर बारीक बनाते हैं।

212. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
पेनीप्लेन की अवधारणा डेविस के मॉडल का सैद्धांतिक अंतिम उत्पाद है, जो एक अत्यंत मंद ढाल वाला और निम्न-उच्चावच वाला मैदान होता है। यह कथन पूर्णतः सत्य है। किंतु, पेनीप्लेन एक उच्च-उच्चावच भू-दृश्य नहीं है, बल्कि यह एक अत्यंत वृद्ध और समतल परिदृश्य है जहाँ उच्चावच लगभग समाप्त हो चुका होता है। मोनाडनॉक इस पर केवल कहीं-कहीं पृथक पहाड़ियों के रूप में दिखाई देते हैं, न कि वे संपूर्ण भू-दृश्य पर हावी होते हैं। अतः, पेनीप्लेन भू-आकृतिक शांति और अपरदन की समाप्ति का निर्विवाद प्रतीक माना जाता है।

213. (C) टॉम्बोलो
टॉम्बोलो एक विशिष्ट तटीय निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है जहाँ रेत की एक लंबी रोधिका किसी द्वीप को मुख्य भूमि से संयुक्त कर देती है। इसका निर्माण उन स्थानों पर होता है जहाँ लहरों की ऊर्जा अल्प होती है, जिससे वे अपने साथ लाए गए मलबे को संचित कर देती हैं। टॉम्बोलो के कारण एक पृथक द्वीप अब मुख्य भूमि का भाग बन जाता है और वहाँ तक स्थलीय मार्ग सुलभ हो जाता है। यह लहरों द्वारा किए गए रचनात्मक कार्य का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो तटरेखा के भूगोल को स्थायी रूप से नवीन स्वरूप प्रदान करता है।

214. (B) गोखुर झील
गोखुर झील नदी की वृद्धावस्था की विशेषता है, न कि युवावस्था की। युवावस्था में नदी का ढाल अत्यंत तीव्र होता है और वह मुख्य रूप से लंबवत अपरदन करती है, जिससे V-आकार की घाटियाँ और जलप्रपात निर्मित होते हैं। गोखुर झील तब निर्मित होती है जब नदी मैदानी इलाकों में मंद हो जाती है और विसर्प बनाती है। विसर्प का कोई मोड़ जब मुख्य धारा से पृथक हो जाता है, तभी यह झील अस्तित्व में आती है। अतः, गोखुर झील का पाया जाना इस बात का संकेत है कि नदी ने अपनी पर्वतीय ऊर्जा का त्याग कर दिया है।

215. (D) ड्रमलिन
'अंडों की टोकरी' स्थलाकृति ड्रमलिन के समूहों वाले विस्तृत क्षेत्र को कहा जाता है। ड्रमलिन हिमनद टिल से बनी लम्बी और चिकनी पहाड़ियाँ होती हैं जिनका आकार उल्टी हुई नौका या आधे कटे हुए अंडे जैसा होता है। जब किसी क्षेत्र में सैकड़ों ड्रमलिन एक साथ पाए जाते हैं, तो ऊँचाई से देखने पर वह परिदृश्य टोकरी में रखे हुए अंडों के समान प्रतीत होता है। यह हिमनद निक्षेपण का शानदार उदाहरण है जो अतीत में विशाल हिम चादरों की उपस्थिति और उनके प्रवाह की दिशा का स्पष्ट भौगोलिक प्रमाण प्रदान करता है।

216. (A) महाद्वीपीय विस्थापन और सागर नितल प्रसरण
प्लेट विवर्तनिकी का आधुनिक सिद्धांत दो महान पूर्ववर्ती विचारों के समन्वय से उत्पन्न हुआ है। अल्फ्रेड वेगनर के महाद्वीपीय विस्थापन ने यह विचार दिया कि महाद्वीप गतिशील हैं, किंतु वे इसका तंत्र नहीं समझा सके। पश्चात हैरी हेस के सागर नितल प्रसरण सिद्धांत ने स्पष्ट किया कि महासागरीय कटकों पर नवीन पपड़ी निर्मित हो रही है जो महाद्वीपों को धकेलती है। इन दोनों अवधारणाओं के संयोजन ने ही प्लेट विवर्तनिकी को पूर्ण वैज्ञानिक आधार प्रदान किया, जिसने विश्व की भू-वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को एक सूत्र में पिरो दिया।

217. (C) पटल विरूपण - धीमी, बड़े पैमाने पर पृथ्वी का संचलन
पटल विरूपण उन सभी आंतरिक प्रक्रियाओं को सामूहिक रूप से कहा जाता है जो पृथ्वी की पपड़ी को अत्यंत मंद गति से संचलित या ऊपर उठाती हैं। इसमें महादेशजनक और पर्वत निर्माणकारी दोनों संचलन सम्मिलित हैं। इसके विपरीत, ओरोजेनेसिस का अर्थ पर्वत निर्माण है, न कि महाद्वीप निर्माण। एपिरोजेनेसिस महाद्वीप निर्माण से संबंधित है। ज्वालामुखी क्रिया एक अंतर्जात प्रक्रिया है, न कि बहिर्जात। अतः, केवल पटल विरूपण का विवरण ही तकनीकी रूप से सत्य है, जो वैश्विक उच्चावच के निर्माण की अदृश्य प्रक्रिया को दर्शाता है।

218. (A) पेडीमेंट
पेडीमेंट रेगिस्तानी क्षेत्रों में पर्वतों की तलहटी में स्थित एक विस्तृत और मंद ढाल वाली अपरदनात्मक सतह है। इसका निर्माण मुख्य रूप से 'चादरी अपरदन' और पहाड़ों के पीछे हटने के कारण होता है। पेडीमेंट प्रायः आधारभूत चट्टान को काटकर निर्मित होते हैं और इनके ऊपर मलबे की एक अत्यंत पतली चादर होती है। यह शुष्क क्षेत्रों में भू-दृश्य के समतलीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। पेडीमेंट के नीचे की ओर का विस्तार धीरे-धीरे प्लाया में परिवर्तित हो जाता है, जो रेगिस्तानी जल निकास प्रणाली का भाग है।

219. (D) सिंकहोल, गुफाएं और स्टैलेक्टाइट
कार्स्ट क्षेत्र की यात्रा पर आपको वे सभी स्थलाकृतियाँ देखने को मिलेंगी जो चूना पत्थर के रासायनिक विलयन से निर्मित होती हैं। सिंकहोल वे सतही गड्ढे हैं जहाँ से जल धरातल के भीतर प्रवेश करता है। धरातल के नीचे आपको विशाल प्राकृतिक गुफाएँ और कंदराएँ मिलेंगी। इन गुफाओं के भीतर छत से लटकते हुए स्टैलेक्टाइट और फर्श से उगते हुए स्टैलेग्माइट इस परिदृश्य की अद्वितीय सुंदरता को प्रदर्शित करते हैं। ये आकृतियाँ भूमिगत जल और घुलनशील चट्टान के मध्य लाखों वर्षों तक चली रासायनिक प्रतिक्रियाओं का भव्य परिणाम हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

220. (B) 2, 3, 1
किसी भी आदर्श नदी के मार्ग में स्थलाकृतियों का क्रम उसकी ऊर्जा और ढाल के अनुसार परिवर्तित होता है। नदी के स्रोत के समीप, जहाँ ढाल तीव्र होती है, वह गहरी 'V-आकार की घाटी' निर्मित करती है। जैसे ही नदी मैदानी इलाकों में पहुँचती है, उसकी गति क्षीण हो जाती है और वह टेढ़े-मेढ़े रास्तों यानी 'विसर्प और विस्तृत बाढ़ के मैदान' का निर्माण करती है। अंत में, समुद्र में विलीन होने से पूर्व नदी अपनी गति पूर्णतः खो देती है और मलबे के निक्षेपण से 'डेल्टा' बनाती है। यह क्रम नदी की जीवन यात्रा का भौगोलिक प्रतिबिम्ब है।

221. (C) सूर्य से ऊर्जा
बहिर्जात प्रक्रियाएँ, जैसे अपक्षय और अपरदन, मुख्य रूप से सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा द्वारा संचालित होती हैं। सौर विकिरण ही वायुमंडल में तापमान के अंतर, पवन के संचलन और वर्षा की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है, जो आगे चलकर धरातल को नवीन रूप प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, गुरुत्वाकर्षण बल भी एक सहायक शक्ति के रूप में कार्य करता है जो जल को नीचे की ओर प्रवाहित होने और मलबे को गिरने में सहायता करता है। बहिर्जात बल बाहरी वातावरण से ऊर्जा लेकर धरातल की विषमताओं को समतल करते हैं।

222. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भू-आकृति विज्ञान में स्थलाकृतियों के विकास को लेकर दो प्रमुख विचारधाराएँ रही हैं। डब्लू. एम. डेविस का मॉडल यह मानता है कि परिदृश्य का विकास एक तीव्र उत्थान के पश्चात विवर्तनिक स्थिरता की दीर्घ अवधि में होता है। इसके विपरीत, वाल्थर पेंक और अन्य गतिशील मॉडल यह प्रस्तावित करते हैं कि उत्थान और अपरदन दोनों प्रक्रियाएँ निरंतर साथ-साथ चलती हैं और परस्पर प्रभावित करती हैं। ये दोनों कथन भू-दृश्य विकास की भिन्न सैद्धांतिक व्याख्याओं को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं, जो इस विज्ञान की वैचारिक विविधता को दर्शाते हैं।

223. (A) अपक्षय एक स्वस्थानी प्रक्रिया है, जबकि अनाच्छादन में सामग्री का परिवहन शामिल है।
अपक्षय और अनाच्छादन के मध्य का अंतर उनकी कार्यप्रणाली में निहित है। अपक्षय एक 'स्व-स्थाने' प्रक्रिया है, जिसका अर्थ है कि चट्टानें अपने ही स्थान पर विखंडित होती हैं, उनमें कोई संचलन नहीं होता। इसके विपरीत, अनाच्छादन एक व्यापक शब्दावली है जिसमें अपक्षय के साथ-साथ अपरदन और परिवहन भी सम्मिलित होते हैं। अनाच्छादन का मुख्य उद्देश्य संपूर्ण सतह को घिसकर मलबे को दूर ले जाना है। इस प्रकार, अपक्षय सामग्री को केवल तैयार करता है, जबकि अनाच्छादन उस सामग्री को हटाकर ऊँचाई कम करता है।

224. (B) हिमोढ़
हिमोढ़ हिमनद द्वारा निर्मित एक निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है। जब हिमनद पिघलता है, तो वह अपने साथ लाए गए पत्थर और मिट्टी के मलबे को मेढ़ों के रूप में जमा कर देता है। इसके विपरीत, सर्क, एरेट और लटकती घाटी हिमनद के अपरदनात्मक कार्यों के परिणाम हैं जो बर्फ के रगड़ने और चट्टानों को उखाड़ने से निर्मित होते हैं। अतः, हिमोढ़ हमें यह सूचित करता है कि हिमनद कहाँ तक विस्तृत था और उसने अपना भार कहाँ संचित किया, जबकि अन्य तीनों आकृतियाँ हिमनद की काटने और घिसने की अपार शक्ति का प्रमाण हैं।

225. (B) चूना पत्थर
विलयन की रासायनिक प्रक्रिया चूना पत्थर पर सर्वाधिक प्रभावी होती है। चूना पत्थर मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट से निर्मित होता है, जो अम्लीय वर्षा जल के साथ अत्यंत सुगमता से प्रतिक्रिया करता है और घुलनशील हो जाता है। इसके विपरीत, ग्रेनाइट जैसी चट्टानें सिलिकेट खनिजों से बनी होती हैं जो जल में सरलता से नहीं घुलते। चूना पत्थर के इसी विशेष गुण के कारण ही कार्स्ट प्रदेशों में विलक्षण भूमिगत गुफाओं और सिंकहोल का निर्माण होता है। यह दर्शाता है कि चट्टान की रासायनिक संरचना अपक्षय दर को निर्धारित करती है।

226. (A) रूपांतर सीमा
रूपांतर सीमा वह विवर्तनिक क्षेत्र है जहाँ दो प्लेटें एक-दूसरे के विपरीत दिशा में क्षैतिज रूप से खिसकती हैं। इस प्रकार की सीमा पर प्लेटों का न तो निर्माण होता है और न ही विनाश, इसलिए इसे 'संरक्षी सीमा' भी कहा जाता है। यहाँ प्लेटों के मध्य होने वाला घर्षण अत्यंत अधिक होता है, जिससे तनाव संचित होता रहता है। जब यह तनाव अचानक मुक्त होता है, तो तीव्र भूकंपों की उत्पत्ति होती है। कैलिफोर्निया का सैन एंड्रियास भ्रंश इसका विश्व प्रसिद्ध उदाहरण है। यह सीमा धरातल के द्रव्यमान को स्थिर बनाए रखती है।

NODIA

227. (C) तरंग-घर्षित चबूतरा
तरंग-घर्षित चबूतरा एक अपरदनात्मक तटीय स्थलाकृति है। इसका निर्माण तब होता है जब लहरें निरंतर समुद्री भृगु के आधार को काटती हैं, जिससे भृगु धीरे-धीरे पीछे की ओर खिसकता है। इसके फलस्वरूप तट के सम्मुख एक समतल चट्टानी धरातल शेष रह जाता है। इसके विपरीत, पुलिन, स्पिट और टॉम्बोलो लहरों के निक्षेपणात्मक कार्यों के परिणाम हैं जहाँ रेत और मलबे का संचय होता है। अतः, चबूतरा समुद्र की काटने वाली शक्ति का प्रतीक है, जबकि अन्य तीनों आकृतियाँ समुद्र की संचय करने वाली शक्ति को दर्शाती हैं।

228. (D) विसर्प और गोखुर झीलें
नदी चक्र की वृद्धावस्था में नदी की ऊर्जा और वेग न्यूनतम हो जाता है क्योंकि ढाल अत्यंत मंद होती है। इस अवस्था में नदी अपने साथ लाए गए भार को ढोने में असमर्थ होती है और अत्यंत सुस्त गति से प्रवाहित होती है। इसके परिणामस्वरूप, नदी मैदानी भागों में टेढ़े-मेढ़े रास्तों या विसर्प में बहती है। समय के साथ, जब ये विसर्प मुख्य धारा से पृथक हो जाते हैं, तो गोखुर झीलें निर्मित होती हैं। गार्ज और जलप्रपात नदी की युवावस्था की विशेषताएँ हैं जहाँ वह अपनी पूर्ण शक्ति के साथ पर्वतों को काटती है।

229. (C) एक मॉडल जो समय के साथ स्थलाकृतियों के क्रमिक विकास का वर्णन करता है।
भू-आकृतिक चक्र एक वैज्ञानिक अवधारणा है जो यह बताती है कि कैसे एक ऊबड़-खाबड़ और नव-निर्मित भू-दृश्य समय के

साथ विभिन्न चरणों से गुजरते हुए अंततः एक लगभग समतल मैदान में परिवर्तित हो जाता है। यह मॉडल परिदृश्य के 'जन्म' से लेकर उसके 'बुढ़ापे' तक की पूर्ण यात्रा का वर्णन करता है। डेविस का अपरदन चक्र इसका सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण है। यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि वर्तमान में हम जो पहाड़ या मैदान देख रहे हैं, वे अपने विकास के किस चरण में विद्यमान हैं।

230. (B) 2, 1, 3
नदी की स्थलाकृतियों का वितरण उसके ऊपरी मार्ग से मुहाने तक की ऊर्जा में होने वाले परिवर्तन को दर्शाता है। नदी के पहाड़ी स्रोत के समीप 'अन्तर्ग्रथित स्पर' निर्मित होते हैं जहाँ नदी पर्वतीय बाधाओं के मध्य से मार्ग बनाती है। जैसे ही नदी मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है, वह अपनी घाटी को चौड़ा करके 'विस्तृत बाढ़ का मैदान' बनाती है जहाँ कृषि और बस्तियाँ विकसित होती हैं। अंत में, समुद्र में विलीन होने से पूर्व नदी की गति अत्यंत मंद हो जाती है और वह मलबे के निक्षेपण से 'डेल्टा' का निर्माण करती है।

231. (D) दबाव मुक्ति और शीटिंग
'अपशल्कन गुंबद' भौतिक अपक्षय की एक विशिष्ट प्रक्रिया का परिणाम है। जब ग्रेनाइट जैसी विशाल चट्टानों के ऊपर की परतों का अपरदन हो जाता है, तो नीचे की चट्टानों पर पड़ने वाला भारी दबाव अचानक समाप्त हो जाता है। इस दबाव मुक्ति के कारण चट्टान ऊपर की ओर विस्तारित होने लगती है, जिससे उसमें समानांतर दरारें या 'शीटिंग' उत्पन्न होती हैं। इसके पश्चात बाहरी परतें प्याज के छिलके की भाँति पृथक होने लगती हैं। यह प्रक्रिया चट्टान को एक चिकनी और गोल गुंबद जैसी आकृति प्रदान करती है, जो अत्यंत भव्य है।

232. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भू-सन्नति सिद्धांत के अनुसार, ये लंबी और संकीर्ण समुद्री द्रोणियाँ करोड़ों वर्षों तक तलछट संचय के मुख्य केंद्र बनी रहती हैं। नदियों द्वारा लाया गया मलबा यहाँ निरंतर जमा होता रहता है, जिससे द्रोणी का तल धंसता जाता है और तलछट की एक विशाल मोटाई निर्मित हो जाती है। बाद में, जब विवर्तनिक बल सक्रिय होते हैं, तो इन कोमल अवसादों पर पार्श्व दबाव पड़ता है, जिससे वे मुड़कर वलित पर्वतों का रूप धारण कर लेते हैं। हिमालय जैसे महान पर्वतों का जन्म इन्हीं संचित और वलित अवसादों की परतों से हुआ है।

233. (C) प्रारंभिक, उत्थान से पूर्व की सतह या निम्न-उच्चावच परिदृश्य।
'प्राइमरम्फ' शब्द का प्रयोग वाल्थर पेंक ने भू-दृश्य विकास की शुरुआती अवस्था को प्रदर्शित करने के लिए किया था। यह उस मूल और निम्न ऊँचाई वाली आधारभूत सतह को संदर्भित करता है जिस पर अभी विवर्तनिक उत्थान होना शेष है। यह एक प्रकार का 'कच्चा भू-दृश्य' है जो बाद में आंतरिक और बाह्य शक्तियों की अंतःक्रिया से जटिल पहाड़ों और घाटियों में परिवर्तित हो जाता है। प्राइमरम्फ की अवधारणा हमें यह समझने में सहायता करती है कि कोई भी पर्वत श्रृंखला एक पूर्व-विद्यमान शांत और समतल धरातल से विकसित होती है।

234. (A) जहाँ एक खड़ी पहाड़ी सरिता मैदान पर निकलती है।
जलोढ़ पंख एक विशिष्ट निक्षेपणात्मक आकृति है जो उस स्थान पर निर्मित होती है जहाँ नदी पर्वतीय ढाल को त्यागकर अचानक समतल मैदान में प्रवेश करती है। इस संक्रमण बिंदु पर ढाल में अचानक न्यूनता आने से नदी का वेग और उसकी परिवहन शक्ति अत्यंत कम हो जाती है। परिणामस्वरूप, नदी अपने साथ लाए गए भारी मलबे, जैसे कंकड़ और रेत को एक पंखे के आकार में निक्षेपित कर देती है। ये पंख न केवल आकर्षक दिखते हैं बल्कि ये जल संचयन और कृषि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण और उपजाऊ सिद्ध होते हैं।

235. (D) अपघर्षण
पवन का 'सैंडब्लास्टिंग' प्रभाव वैज्ञानिक रूप से अपघर्षण कहलाता है। शुष्क क्षेत्रों में पवन अपने साथ रेत के कणों को अत्यंत तीव्र गति से उड़ाती है। जब ये कण मार्ग में आने वाली चट्टानों से टकराते हैं, तो वे एक रेगमाल की भाँति चट्टान की सतह को रगड़ते और घिसते हैं। यह प्रक्रिया विशेष रूप से धरातल से कुछ फुट की ऊँचाई तक सर्वाधिक प्रभावशाली होती है, जिससे छत्रक शैल जैसी विलक्षण आकृतियाँ निर्मित होती हैं। अपघर्षण पवन की वह शक्ति है जो कठोर पत्थरों को तराशकर उन्हें पॉलिश या गड्ढेदार बना देती है।

236. (B) हिमालय
हिमालय पर्वत श्रृंखला का निर्माण भारतीय प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य हुए विशाल टकराव का परिणाम है। लगभग 50 मिलियन वर्ष पूर्व, उत्तर की ओर खिसकती भारतीय प्लेट ने यूरेशियन प्लेट को टक्कर प्रदान की, जिससे उनके मध्य स्थित टेथिस सागर के अवसाद मुड़कर ऊपर उठ गए। चूंकि दोनों प्लेटें महाद्वीपीय थीं, इसलिए भीषण संपीड़न हुआ। इस प्रक्रिया ने विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियों को जन्म दिया। यह टकराव आज भी जारी है, जिसके कारण हिमालय प्रतिवर्ष कुछ मिलीमीटर और ऊपर की ओर उठ रहा है।

237. (C) कार्बोनेशन
कार्बोनेशन रासायनिक अपक्षय का एक प्रकार है, न कि भौतिक अपक्षय का। इसमें वर्षा जल और कार्बन डाइऑक्साइड मिलकर एक हल्का अम्ल निर्मित करते हैं जो चट्टानी खनिजों, विशेष रूप से चूना पत्थर के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया कर उन्हें घोल देता है। इसके विपरीत, तापीय अपक्षय, तुषार क्रिया और दबाव मुक्ति भौतिक प्रक्रियाएँ हैं। इन भौतिक प्रक्रियाओं में चट्टान की रासायनिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं आता, बल्कि वे केवल तापमान या भार कम होने के कारण यांत्रिक रूप से लघु टुकड़ों में विखंडित हो जाती हैं।

238. (D) कोल
'कोल' हिमनद क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक विशिष्ट दर्रा या काठी जैसी आकृति है। इसका निर्माण तब होता है जब एक ही पर्वत कटक के विपरीत दिशाओं में स्थित दो सर्क निरंतर पीछे की ओर अपरदन करते हैं। जैसे-जैसे ये सर्क परस्पर समीप आते हैं, उनके मध्य की ऊँची दीवार घिसकर नीचे हो जाती है, जिससे एक प्राकृतिक मार्ग निर्मित हो जाता है। कोल पर्वतीय क्षेत्रों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने हेतु महत्वपूर्ण मार्ग प्रदान

Click Here to Buy book on Amazon

करते हैं। यह हिमनद की शीर्षवर्ती अपरदन शक्ति का एक स्पष्ट भौगोलिक परिणाम है।

239. (A) सिंकहोल
चूना पत्थर क्षेत्रों में पाए जाने वाले बंद अवसाद या गड्ढे 'सिंकहोल' कहलाते हैं। ये कार्स्ट स्थलाकृति की सर्वाधिक प्रमुख पहचान हैं। सिंकहोल का निर्माण तब होता है जब भूमिगत जल चूना पत्थर को रासायनिक रूप से घोल देता है, जिससे सतह पर कीप के आकार के गड्ढे निर्मित हो जाते हैं। ये गड्ढे वर्षा जल को सीधे भूमिगत गुफाओं में प्रेषित करने के द्वार का कार्य करते हैं। इनमें जल संचित होने पर ये लघु झीलों की भाँति दिखाई दे सकते हैं। यह प्रक्रिया धरातल को भीतर से खोखला कर उसे नीचे धंसा सकती है।

240. (B) 2, 3, 1
भू-वैज्ञानिक विचारों का विकास एक तार्किक अनुक्रम में हुआ है। सर्वप्रथम 'एकरूपतावाद' का सिद्धांत आया जिसने स्थापित किया कि वर्तमान प्रक्रियाएँ ही अतीत की कुंजी हैं। इसके दीर्घकाल पश्चात, 1912 में वेगनर ने 'महाद्वीपीय विस्थापन' का क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया कि महाद्वीप गतिशील हैं। अंततः, 1960 के दशक में 'प्लेट विवर्तनिकी' का आधुनिक सिद्धांत विकसित हुआ जिसने विस्थापन के तंत्र और समुद्र तल के रहस्यों को मिलाकर एक पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान की। यह अनुक्रम क्रमिक वैज्ञानिक सुधार को सटीक रूप से दर्शाता है।

241. (B) वलित और भ्रंशोत पर्वतों का निर्माण।
पर्वत निर्माणकारी बल पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों का परिणाम हैं जो मुख्य रूप से क्षैतिज दिशा में कार्य करते हैं। जब ये बल चट्टानों पर भीषण दबाव डालते हैं, तो चट्टानें मुड़कर वलित पर्वतों का निर्माण करती हैं। वहीं, जब चट्टानों में तनाव उत्पन्न होता है, तो वे टूटकर विस्थापित हो जाती हैं, जिससे भ्रंशोत पर्वतों और रिफ्ट घाटियों का जन्म होता है। ये बल धरातल पर ऊँचे और ऊबड़-खाबड़ उच्चावच सृजित करने हेतु उत्तरदायी हैं, जो बहिर्जात बलों के अपरदन कार्य हेतु नवीन कच्चा माल निरंतर प्रदान करते रहते हैं।

242. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भू-वैज्ञानिक सिद्धांतों के इतिहास में, वेगनर के विस्थापन सिद्धांत को उसके समय में वृहद् आलोचना झेलनी पड़ी क्योंकि उसके पास मजबूत प्रमाण होने के बावजूद संचलन का कोई वैज्ञानिक कारण नहीं था। पश्चात, प्लेट विवर्तनिकी जैसे व्यापक सिद्धांतों ने मेंटल संवहन और सागर नितल प्रसरण जैसे ठोस प्रमाण प्रदान किए। इन आधुनिक खोजों ने वेगनर के शुरुआती विचारों की पुष्टि की और उन्हें एक संपूर्ण वैज्ञानिक ढांचे में पिरो दिया, जिससे यह पूर्णतः स्पष्ट हुआ कि महाद्वीप कैसे और क्यों विस्थापित होते हैं।

243. (C) एक हिमनद
U-आकार की घाटी के निर्माण हेतु हिमनद ही एकमात्र उत्तरदायी दूत है। नदियाँ जहाँ संकीर्ण V-आकार की घाटियाँ निर्मित करती हैं, वहीं हिमनद अपनी विशाल मात्रा और चौड़ाई के कारण घाटी के तल और उसकी भुजाओं दोनों को समान रूप से काटता और रगड़ता है। इस भीषण पार्श्व और ऊर्ध्वाधर अपरदन के कारण घाटी चौड़ी हो जाती है, उसका तल समतल हो जाता है और किनारे अत्यंत खड़े हो जाते हैं, जिससे उसका आकार अंग्रेजी के 'U' अक्षर जैसा बन जाता है। यह स्थलाकृति अतीत के भारी हिमीकरण का स्पष्ट प्रमाण है।

244. (D) अनाच्छादन
अनाच्छादन एक व्यापक भू-आकृतिक शब्दावली है जो उन सभी बाहरी प्रक्रियाओं को सम्मिलित करती है जो पृथ्वी की सतह को घिसकर नीचा करने का प्रयास करती हैं। इसमें अपक्षय, अपरदन और परिवहन सम्मिलित हैं। ये बहिर्जात बल सूर्य की ऊर्जा से संचालित होते हैं और अंतर्जात बलों द्वारा निर्मित ऊँचे पहाड़ों को धीरे-धीरे काटकर उन्हें समतल मैदानों में परिवर्तित करने हेतु निरंतर कार्यरत रहते हैं। अनाच्छादन के कारण ही करोड़ों वर्षों में पृथ्वी का परिदृश्य बदलता है और कठोर चट्टानें उपजाऊ मिट्टी में परिवर्तित हो जाती हैं।

245. (C) डेल्टा
डेल्टा नदी की एक विशिष्ट निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है जो उसके मुहाने पर निर्मित होती है। जब नदी समुद्र में प्रवेश करती है, तो उसकी गति लगभग समाप्त हो जाती है, जिससे वह अपने साथ लाए गए महीन तलछट को वहाँ संचित कर देती है। यह जमाव प्रायः त्रिभुजाकार भूमि का रूप ग्रहण कर लेता है। इसके विपरीत, गार्ज, कैनियन और जलप्रपात नदी के अपरदनात्मक कार्यों के परिणाम हैं जो मुख्य रूप से ऊपरी क्षेत्रों में चट्टानों को काटकर बनते हैं। अतः, डेल्टा नदी के जीवन चक्र के अंत और उसकी संचय शक्ति का प्रतीक है।

246. (B) स्टैलेक्टाइट छत से विकसित होते हैं, जबकि स्टैलेग्माइट फर्श से।
कार्स्ट गुफाओं में स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट के मध्य मुख्य अंतर उनकी स्थिति और उत्पत्ति की दिशा में निहित है। स्टैलेक्टाइट गुफा की छत से नीचे की ओर लटकने वाले नुकीले खंभे होते हैं जो टपकते हुए चूना युक्त जल के जमाव से निर्मित होते हैं। इसके विपरीत, स्टैलेग्माइट फर्श से ऊपर की ओर बढ़ते हैं जब वही जल की बूंदें फर्श पर गिरकर वहाँ कैल्शियम कार्बोनेट का संचय करती हैं। समय के साथ ये दोनों परस्पर मिलकर एक पूर्ण स्तंभ निर्मित कर सकते हैं। यह दोनों ही आकृतियाँ पुनरावक्षेपण का अद्भुत परिणाम हैं।

247. (D) यह एक ऐसे अनुक्रम का संकेत देती है जो प्रकृति में नहीं हो सकता है।
भू-आकृतिक चक्रों में 'अवस्था' की अवधारणा, विशेष रूप से डेविस के मॉडल में, इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह विकास के एक निश्चित और अपरिवर्तनीय अनुक्रम (युवा, प्रौढ़, वृद्ध) को अनिवार्य मानती है। आलोचकों का तर्क है कि प्रकृति इतनी पूर्वानुमानित नहीं है; विवर्तनिक हलचलें किसी भी समय चक्र को बाधित कर सकती हैं या उसे नवीन जीवन प्रदान कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, उत्थान और अपरदन की दरें सर्वत्र समान नहीं होतीं। इसलिए, स्थलाकृतियों को केवल समय के आधार पर चरणों में विभक्त करना अवास्तविक है।

NODIA

248. (A) तटवर्ती प्रवाह
तटवर्ती प्रवाह एक तटीय प्रक्रिया है जिसमें लहरें तट से एक कोण पर टकराती हैं और तलछट को तट के समानांतर एक निश्चित दिशा में आगे विस्थापित करती हैं। यह प्रक्रिया समुद्र के किनारे मलबे के निरंतर परिवहन हेतु उत्तरदायी है। इसी तटवर्ती प्रवाह के कारण पुलिन का विस्तार होता है और स्पिट जैसी आकृतियाँ निर्मित होती हैं। यह दर्शाता है कि समुद्र की लहरें न केवल तट को सीधे काटती हैं, बल्कि वे एक परिवहन तंत्र की भाँति भी कार्य करती हैं जो तटीय भूगोल को निरंतर पुनर्गठित और नवीन स्वरूप प्रदान करता रहता है।

249. (C) दरारों में हिमजल का जमना और चट्टान के टुकड़ों का टूटना।
उत्पाटन हिमनद अपरदन की एक प्रमुख विधि है। इसमें हिमनद का पिघला हुआ जल आधारभूत चट्टान की दरारों में प्रविष्ट हो जाता है और पुनः जमकर चट्टान के टुकड़ों को जकड़ लेता है। जैसे-जैसे विशाल हिमनद आगे बढ़ता है, वह इन जकड़े हुए भारी पत्थर के टुकड़ों को अपनी शक्ति से उखाड़ लेता है। ये पत्थर अब हिमनद की बर्फ का भाग बन जाते हैं और आगे चलकर अपघर्षण हेतु 'हथियार' के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उत्पाटन ही वह प्रक्रिया है जिससे हिमनद कठोर चट्टानों को उबड़-खाबड़ और कटा-फटा बनाने में पूर्णतः सक्षम होते हैं।

250. (A) अपसारी सीमाओं पर
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार, नवीन महासागरीय पपड़ी या स्थलमंडल का निर्माण मुख्य रूप से अपसारी सीमाओं पर होता है। यहाँ दो विवर्तनिक प्लेटें एक-दूसरे से विपरीत दिशा में खिसकती हैं, जिससे पृथ्वी के मेंटल से तप्त मैग्मा ऊपर की ओर प्रवाहित होता है। यह मैग्मा सतह पर आकर ठंडा और ठोस हो जाता है, जिससे मध्य-महासागरीय कटकों के साथ नवीन सतह निर्मित होती है। इस प्रक्रिया को 'रचनात्मक सीमा' भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ पृथ्वी अपनी सतह का निरंतर विस्तार करती है, जो सागर नितल प्रसरण का आधार है।

251. (D) अपरदन में निष्कासन शामिल है, जबकि अपक्षय स्वस्थानी विखंडन है।
अपक्षय और अपरदन दोनों अनाच्छादन के भाग हैं, किंतु उनकी कार्यविधि पूर्णतः भिन्न है। अपक्षय एक 'स्थैतिक' प्रक्रिया है जहाँ चट्टानें बिना किसी संचलन के अपने स्थान पर ही विखंडित और विघटित होती हैं। इसके विपरीत, अपरदन एक 'गतिशील' प्रक्रिया है जिसमें बहता जल, पवन या हिमनद जैसे दूत न केवल चट्टानों को काटते हैं बल्कि विखंडित मलबे को वहाँ से हटाकर दूर ले जाते हैं। सरल शब्दों में, अपक्षय चट्टानों को तोड़ने का कार्य करता है और अपरदन उस मलबे को धरातल से साफ करने और परिवहन करने का कार्य करता है।

252. (B) इनसेलबर्ग
भू-आकृति विज्ञान में मोनाडनॉक और इनसेलबर्ग दोनों ही अपने-अपने अपरदन चक्रों की अवशिष्ट आकृतियाँ हैं। मोनाडनॉक आर्द्र नदी क्षेत्रों में पेनीप्लेन की सपाट सतह पर शेष बची हुई कठोर चट्टानी पहाड़ियाँ हैं। ठीक उसी प्रकार, इनसेलबर्ग शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पेडीप्लेन की सतह पर पृथक खड़ी अवशिष्ट पहाड़ियाँ होती हैं। दोनों ही इस बात का प्रमाण हैं कि दीर्घकाल तक हुए भीषण अपरदन के पश्चात भी कुछ कठोर भाग नष्ट होने से बच गए हैं। यह तुलना भिन्न जलवायु क्षेत्रों में भू-दृश्य विकास की समानता को दर्शाती है।

253. (C) एकरूपतावाद
"वर्तमान अतीत की कुंजी है" एकरूपतावाद के सिद्धांत का मूल मंत्र है, जिसे जेम्स हटन ने प्रतिपादित किया था। इस विचार का अर्थ है कि पृथ्वी को आकार देने वाले जो भू-वैज्ञानिक प्रक्रम (जैसे अपरदन, ज्वालामुखी, वर्षा) आज हम देख रहे हैं, वे ही संपूर्ण भू-वैज्ञानिक इतिहास के दौरान निरंतर कार्य कर रहे थे। आज की प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक रूप से समझकर हम करोड़ों वर्ष प्राचीन चट्टानों और स्थलाकृतियों के निर्माण की सटीक व्याख्या कर सकते हैं। यह सिद्धांत भू-आकृति विज्ञान की नींव है जो क्रमिक परिवर्तनों पर सर्वाधिक बल देता है।

254. (D) जलप्रपात
लटकती घाटी प्रायः भव्य जलप्रपातों का जन्मस्थान होती है। यह तब निर्मित होती है जब एक लघु सहायक हिमनद अपनी उथली घाटी को एक अत्यंत गहरी मुख्य हिमनद घाटी में विलीन करता है। जब बर्फ पिघल जाती है, तो सहायक घाटी मुख्य घाटी के तल से काफी ऊँचाई पर 'लटकती' हुई प्रतीत होती है। सहायक घाटी से आने वाली नदी जब मुख्य घाटी के खड़े किनारे से नीचे की ओर गिरती है, तो वह एक ऊँचे और सुंदर जलप्रपात का निर्माण करती है। योसमाइट नेशनल पार्क के कई प्रसिद्ध जलप्रपात इसी भू-आकृतिक प्रक्रिया का परिणाम हैं।

255. (A) रूपांतर सीमा
रूपांतर सीमा विवर्तनिकी की एक ऐसी विशेष सीमा है जहाँ दो प्लेटें एक-दूसरे के पार्श्व से क्षैतिज रूप से खिसकती हैं। इस प्रक्रिया में न तो मेंटल से मैग्मा ऊपर आकर नवीन पपड़ी निर्मित करता है (जैसा अपसारी सीमा पर होता है) और न ही कोई पपड़ी धंसकर नष्ट होती है (जैसा अभिसारी सीमा पर होता है)। इसलिए इसे 'संरक्षी सीमा' भी कहा जाता है। यहाँ प्लेटों के मध्य केवल भीषण घर्षण होता है, जो ऊर्जा संचित करता है और पश्चात विनाशकारी भूकंपों के रूप में प्रकट होता है। यह सीमा धरातल के द्रव्यमान को स्थिर बनाए रखती है।

256. (B) अधिकतम उच्चावच के साथ एक अच्छी तरह से विकसित अपवाह तंत्र।
अपरदन चक्र की प्रौढ़ावस्था वह चरण है जहाँ परिदृश्य अपनी पूर्ण परिपक्वता प्राप्त कर लेता है। इस समय तक, मुख्य नदी और उसकी अनगिनत सहायक नदियों ने संपूर्ण क्षेत्र में एक जाल बिछा दिया होता है, जिसे एक पूर्ण विकसित अपवाह तंत्र कहा जाता है। चूंकि नदियाँ अपनी घाटियों को गहरा कर चुकी होती हैं किंतु चोटियाँ अभी भी ऊँची होती हैं, इसलिए इस अवस्था में चोटियों और घाटियों के मध्य की ऊँचाई का अंतर या 'सापेक्ष उच्चावच' अपने उच्चतम स्तर पर होता है। यह भू-दृश्य की सर्वाधिक जटिल और उबड़-खाबड़ अवस्था है।

Downloaded from www.pdf.tube

257. (B) महीन दाने वाली, पवन द्वारा उड़ाई गई सिल्ट।
लोएस के निक्षेप पवन की निक्षेपण शक्ति का एक अद्भुत उदाहरण हैं। ये अत्यंत महीन सिल्ट और धूल के कणों से निर्मित होते हैं जिन्हें पवन रेगिस्तानी या हिमनदी क्षेत्रों से उड़ाकर सैकड़ों किलोमीटर दूर ले जाती है। लोएस के निक्षेपों में प्रायः परतों का अभाव होता है और ये अत्यंत सरंध्र तथा उपजाऊ होते हैं। चीन का पीला लोएस मैदान इसका विश्व में विशालतम उदाहरण है, जहाँ की मिट्टी अत्यंत गहरी और पीली है। यह भौगोलिक साक्ष्य दर्शाता है कि कैसे हवा सूक्ष्म धूल के कणों से विशाल और उपजाऊ मैदान निर्मित कर सकती है।

258. (A) सर्क - नदी
सर्क और नदी का युग्म अशुद्ध है क्योंकि सर्क एक हिमनद द्वारा निर्मित अपरदनात्मक स्थलाकृति है, न कि नदी द्वारा। सर्क का निर्माण बर्फ के उत्पाटन और घर्षण से होता है। इसके विपरीत, U-आकार की घाटी हिमनद द्वारा, डेल्टा नदी द्वारा मुहाने पर निक्षेपण से और बरखान रेगिस्तानों में पवन के निक्षेपण से निर्मित होते हैं। ये तीनों युग्म अपनी निर्माण प्रक्रिया और दूतों के साथ पूर्णतः सही ढंग से सुमेलित हैं। स्थलाकृतियों की सटीक पहचान उनके पीछे कार्य करने वाले विशिष्ट भू-आकृतिक दूतों को समझने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

259. (C) वलित पर्वतों में उथले पानी के अनुक्रम
भू-सन्नति सिद्धांत मूल रूप से यह समझाने हेतु विकसित किया गया था कि हिमालय जैसे महान वलित पर्वतों की ऊँची चोटियों पर उथले समुद्र में रहने वाले जीवों के जीवाश्म और तलछट कैसे पहुँच गए। इस सिद्धांत ने प्रस्तावित किया कि ये पर्वत कभी लंबी, संकरी और धंसती हुई समुद्री द्रोणियाँ थीं जहाँ करोड़ों वर्षों तक उथले जल के तलछट निरंतर जमा होते रहे। पश्चात, विवर्तनिक दबाव के कारण ये संचित परतें वलित होकर ऊपर की ओर उठ गईं। यह पर्वतों के निर्माण से पूर्व की उनकी 'गर्भावस्था' की वैज्ञानिक कहानी कहता है।

260. (D) तटीय निक्षेपण
पुलिन या बीच तटीय क्षेत्रों में लहरों द्वारा किए गए निक्षेपण कार्य का सर्वाधिक प्रमुख परिणाम है। जब लहरें तट के समीप पहुँचती हैं, तो उनकी ऊर्जा क्षीण हो जाती है, जिससे वे अपने साथ समुद्र से बहाकर लाए गए रेत, कंकड़ और पत्थर के मलबे को तट के साथ संचित कर देती हैं। यह संचय धीरे-धीरे एक समतल या हल्की ढाल वाली रेतीली सतह निर्मित कर देता है। पुलिन न केवल तटीय परिदृश्य को सुंदरता प्रदान करते हैं, बल्कि वे समुद्र के सीधे प्रहार से तट की रक्षा करने वाले एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच के रूप में भी कार्य करते हैं।

261. (C) फेलसेनमीर
फेलसेनमीर या 'पत्थरों का समुद्र' एक ऐसा परिदृश्य है जो परहिमानी क्षेत्रों में तीव्र तुषार विदारण के कारण निर्मित होता है। इन क्षेत्रों में बार-बार जमने और पिघलने के चक्र से आधारभूत चट्टानें विखंडित होकर बड़े-बड़े कोणीय पत्थरों और मलबे में परिवर्तित हो जाती हैं। ये पत्थर संपूर्ण क्षेत्र को आच्छादित कर लेते हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो वहाँ पत्थरों का एक विशाल विस्तार या सागर हो। यह भौतिक अपक्षय की चरम अवस्था को प्रदर्शित करता है जहाँ वनस्पति का पूर्ण अभाव होता है और केवल विखंडित चट्टानी मलबे का साम्राज्य होता है।

262. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं और कथन II एक सही व्याख्या है।
"पैसिफिक रिंग ऑफ फायर" विश्व का सर्वाधिक सक्रिय ज्वालामुखी और भूकंप बेल्ट है, जो प्रशांत महासागर के चारों ओर विस्तृत है। यहाँ निरंतर होने वाली हलचलें विवर्तनिक प्लेटों के आपसी टकराव और सबडक्शन का प्रत्यक्ष परिणाम हैं। चूंकि प्रशांत प्लेट कई छोटी और बड़ी महाद्वीपीय प्लेटों के नीचे धंस रही है, इसलिए मेंटल में पिघलने वाली पपड़ी मैग्मा के रूप में ज्वालामुखियों के माध्यम से बाहर प्रकट होती है। यह क्षेत्र प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत की कार्यप्रणाली का सबसे जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है, जहाँ पृथ्वी निरंतर अपनी सतह पुनर्गठित करती है।

263. (D) कुछ उत्थान को क्रमिक मानते हैं, अन्य अपरदन के साथ एकसाथ होने वाला मानते हैं।
भू-आकृति विज्ञान के विभिन्न मॉडलों के मध्य सर्वाधिक वृहद् वैचारिक मतभेद उत्थान और अपरदन के समय को लेकर है। डेविस का मॉडल यह मानता है कि अपरदन तभी प्रारंभ होता है जब उत्थान की प्रक्रिया पूर्णतः समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत, पेंक और अन्य आधुनिक विद्वानों का तर्क है कि उत्थान और अपरदन दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और निरंतर साथ-साथ चलते हैं। यह विरोधाभास परिदृश्य के विकास की गति और उसके अंतिम स्वरूप की वैज्ञानिक समझ को गहराई से प्रभावित करता है, जो इस विज्ञान के दार्शनिक आधार को परिभाषित करता है।

264. (A) टार्न
टार्न एक अत्यंत सुंदर पर्वतीय झील है जो प्रायः हिमनद द्वारा निर्मित सर्क बेसिन के भीतर पाई जाती है। जब हिमयुग के पश्चात हिमनद पिघल जाते हैं, तो उनके द्वारा बनाए गए कटोरे के आकार के गहरे अवसादों में जल भर जाता है, जिससे इन झीलों का निर्माण होता है। ये झीलें ऊँचे पहाड़ों में नीले या हरे रंग के रत्नों की भाँति दिखाई देती हैं। टार्न का अस्तित्व इस बात का प्रमाण है कि उस स्थान पर कभी शक्तिशाली हिमनद का शीर्ष भाग स्थित था। यह हिमनदी क्षेत्रों के सौंदर्य और उनकी भू-आकृतिक विरासत का एक अभिन्न भाग है।

265. (C) यारडांग
यारडांग पवन अपरदन द्वारा निर्मित एक उत्कृष्ट स्थलाकृति है जो शुष्क रेगिस्तानी क्षेत्रों में प्रमुखता से पाई जाती है। इनका निर्माण तब होता है जब पवन कोमल चट्टानों को तीव्र गति से काटकर गहरे गलियारे निर्मित कर देती है और कठोर चट्टानें ऊँची लकीरों या कटकों के रूप में शेष बच जाती हैं। इनका आकार प्रायः प्रचलित पवन की दिशा के समानांतर होता है। इसके विपरीत, हिमोढ़ और एस्कर हिमनद की प्रक्रियाएँ हैं, जबकि स्टैलेग्माइट कार्स्ट क्षेत्रों के निक्षेप हैं। यारडांग पवन की विभेदी अपरदन शक्ति का प्रत्यक्ष साक्ष्य है जो धरातल को उबड़-खाबड़ बनाती है।

NODIA

266. (A) बेमाउथ रोधिका
बेमाउथ रोधिका तटीय निक्षेपण की वह अवस्था है जहाँ एक स्पिट या रोधिका इतनी लंबी हो जाती है कि वह किसी खाड़ी के मुहाने को एक छोर से दूसरे छोर तक पूर्णतः बंद कर देती है। इस प्रक्रिया से खाड़ी अब खुले समुद्र से पृथक हो जाती है और एक शांत जल निकाय या लैगून में परिवर्तित हो जाती है। यह निक्षेपण की चरम अवस्था को प्रदर्शित करता है जहाँ तटीय धाराएँ भारी मात्रा में रेत संचित करती हैं। यह परिदृश्य के भूगोल को परिवर्तित कर समुद्र के एक भाग को अंततः स्थलीय झील या दलदल में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है।

267. (D) युवावस्था
नदी अपहरण की घटना नदी चक्र की युवावस्था के दौरान होने की सर्वाधिक संभावना होती है। इस चरण में नदियाँ पहाड़ी ढालों पर होती हैं और उनमें तीव्र ऊर्जा होती है, जिससे वे 'शीर्षवर्ती अपरदन' अत्यंत तीव्र गति से करती हैं। जब एक शक्तिशाली नदी अपने स्रोत को पीछे की ओर काटते हुए जल-विभाजक को पार कर लेती है, तो वह दूसरी कम ऊँचाई वाली नदी के ऊपरी जल को अपने मार्ग में मोड़ लेती है। यह प्रक्रिया नदी प्रणालियों के मध्य होने वाले प्राकृतिक संघर्ष और शक्ति संतुलन को अत्यंत रोचक और भौगोलिक तरीके से प्रदर्शित करती है।

268. (B) प्लेट विवर्तनिकी का सिद्धांत
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह पृथ्वी की पपड़ी के निरंतर पुनर्चक्रण की सटीक व्याख्या करता है। मध्य-महासागरीय कटकों पर मैग्मा के ऊपर आने से नवीन पपड़ी का निर्माण होता है, जो 'रचनात्मक' कार्य है। साथ ही, यह पुरानी पपड़ी को धकेलता है जो अंततः गहरी खाइयों में सबडक्शन के माध्यम से मेंटल में प्रविष्ट होकर नष्ट हो जाती है। यह 'विनाशात्मक' कार्य और निर्माण के मध्य का संतुलन ही पृथ्वी के वैश्विक आकार को स्थिर रखता है। यह विचार वेगनर के विस्थापन सिद्धांत से कहीं अधिक वैज्ञानिक है।

269. (C) भौतिक अपक्षय
दरारों में नमक के क्रिस्टल की वृद्धि भौतिक या यांत्रिक अपक्षय का एक प्रकार है। शुष्क या तटीय क्षेत्रों में जब चट्टानों के छिद्रों में खारा जल भर जाता है और पश्चात वाष्पित होता है, तो पीछे छूटे हुए नमक के कण क्रिस्टल का रूप ग्रहण करने लगते हैं। ये बढ़ते हुए क्रिस्टल चट्टान की दीवारों पर अत्यधिक यांत्रिक दबाव डालते हैं, जिससे चट्टान दुर्बल होकर टुकड़ों में विखंडित होने लगती है। यद्यपि इसमें रसायनों का समावेश है, किंतु मुख्य कार्य यांत्रिक दबाव द्वारा चट्टान को तोड़ना है, इसलिए इसे भौतिक अपक्षय की श्रेणी में रखा जाता है।

270. (D) कार्स्ट
पोल्ये कार्स्ट परिदृश्य की विशालतम और सर्वाधिक भव्य स्थलाकृति है। यह एक अत्यंत वृहद्, लंबी और सपाट तल वाली द्रोणी होती है जिसकी भुजाएँ अत्यंत खड़ी होती हैं। पोल्ये का निर्माण विवर्तनिक धंसान और चूना पत्थर के व्यापक रासायनिक विलयन के सम्मिलित प्रभाव से होता है। इनका आकार कई किलोमीटर लंबा और चौड़ा हो सकता है। कार्स्ट क्षेत्रों में पोल्ये का तल प्रायः उपजाऊ मिट्टी से आच्छादित होता है, जो इसे कृषि और बस्तियों हेतु एक महत्वपूर्ण स्थल बनाता है। यह कार्स्ट प्रक्रिया के पूर्ण और परिपक्व विकास का प्रतीक है।

271. (A) हिम चादर हिमनद
महाद्वीपीय हिमनद, जिसे 'हिम चादर' भी कहा जाता है, बर्फ का एक विशाल भंडार होता है जो हज़ारों वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को पूर्णतः आच्छादित कर लेता है। ये हिमनद किसी विशिष्ट घाटी तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे संपूर्ण परिदृश्य, यहाँ तक कि पहाड़ों को भी अपने नीचे दबा देते हैं। वर्तमान में अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड इसके सर्वाधिक वृहद् उदाहरण हैं। महाद्वीपीय हिमनद गुरुत्वाकर्षण के कारण अपने ही भार से किनारों की ओर विस्तृत होते हैं। ये हिमनद वैश्विक जलवायु और समुद्र के जल स्तर को नियंत्रित करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

272. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अनाच्छादन वास्तव में एक व्यापक समतलीकरण प्रक्रिया है जिसका अंतिम लक्ष्य पहाड़ों और ऊँचे स्थानों को घिसकर समुद्र तल के बराबर लाना है। यह कथन पूर्णतः सत्य है क्योंकि अनाच्छादन में अपक्षय, वृहद् क्षरण और अपरदन जैसी सभी प्रक्रियाएँ सम्मिलित रूप से कार्य करती हैं। अपक्षय जहाँ चट्टानों को विखंडित करता है, वहीं अपरदन और वृहद् क्षरण उस मलबे को ढाल के नीचे या दूर ले जाते हैं। ये तीनों प्रक्रियाएँ मिलकर पृथ्वी की सतह पर होने वाले निरंतर विनाश और परिमार्जन हेतु उत्तरदायी हैं, जो भू-आकृतिक संतुलन बनाए रखती हैं।

273. (B) संरचना, प्रक्रम, अवस्था
डेविसियन मॉडल में स्थलाकृतियों के विकास को नियंत्रित करने वाले तीन मुख्य स्तंभ 'संरचना, प्रक्रम और अवस्था' हैं। 'संरचना' चट्टानों की कठोरता और उनकी बनावट को प्रदर्शित करती है। 'प्रक्रम' का अर्थ है वे बाहरी बल (जैसे नदी या पवन) जो चट्टानों को निरंतर काटते हैं। 'अवस्था' समय के उस विशिष्ट चरण को बताती है जिससे होकर परिदृश्य वर्तमान में गुजर रहा है। डेविस का अटूट विश्वास था कि इन तीनों कारकों को जानकर किसी भी स्थलाकृति के इतिहास और भविष्य की वैज्ञानिक भविष्यवाणी की जा सकती है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

274. (A) एक हॉटस्पॉट या मेंटल प्लम
हवाई द्वीपों का निर्माण किसी प्लेट सीमा पर नहीं, बल्कि प्रशांत प्लेट के मध्य में स्थित एक 'हॉटस्पॉट' के कारण हुआ है। मेंटल प्लम पृथ्वी की गहराई से आने वाली तप्त मैग्मा की एक स्थिर धारा है जो ऊपर स्थित गतिशील विवर्तनिक प्लेट को जलाकर ज्वालामुखी निर्मित करती है। जैसे-जैसे प्रशांत प्लेट उत्तर-पश्चिम की ओर खिसकती है, पुराने ज्वालामुखी निष्क्रिय होकर कटक बन जाते हैं और हॉटस्पॉट के ऊपर एक नवीन सक्रिय ज्वालामुखी द्वीप जन्म लेता है। यह प्रक्रिया द्वीपों की एक लंबी श्रृंखला के निर्माण की सटीक व्याख्या करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

275. (C) जलोढ़ पंख
जलोढ़ पंख एक विशिष्ट निक्षेपणात्मक स्थलाकृति है जो उन क्षेत्रों में प्रमुखता से पाई जाती है जहाँ एक खड़ी ढाल वाली पहाड़ी नदी अचानक समतल मैदानी भाग में प्रवेश करती है। इस संक्रमण बिंदु पर नदी का वेग अचानक क्षीण हो जाता है, जिससे वह अपने साथ लाए गए भारी मलबे, जैसे रेत और बजरी, को पंखे के आकार में निक्षेपित कर देती है। शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में ये पंख अत्यंत स्पष्ट होते हैं और प्रायः परस्पर जुड़कर एक 'पर्वतपादीय मैदान' का निर्माण करते हैं। यह नदी की परिवहन क्षमता में आए आकस्मिक परिवर्तन का प्रतीक है।

276. (D) पपड़ी का व्यापक, क्षेत्रीय उत्थान या अवतलन।
महादेशजनक संचलन पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा संचालित होता है, जिसका मुख्य प्रभाव महाद्वीपीय खंडों का बड़े पैमाने पर ऊर्ध्वाधर उत्थान या अवतलन है। यह संचलन अत्यंत मंद गति से होता है और इसमें चट्टानें मुड़ने या टूटने के स्थान पर पूरे भूखंड के रूप में ऊपर उठती हैं या नीचे धंसती हैं। इससे तटीय क्षेत्रों में समुद्र तल के सापेक्ष परिवर्तन दिखाई देते हैं, जैसे प्राचीन तटरेखाओं का ऊपर उठना या जलमग्न होना। यह प्रक्रिया महाद्वीपों के वैश्विक विन्यास और समुद्र के स्तर के दीर्घकालिक नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

277. (C) समुद्री लहरें
तरंग-घर्षित चबूतरा समुद्री लहरों के अपरदनात्मक कार्य से संबद्ध एक महत्वपूर्ण विशेषता है। जब शक्तिशाली लहरें तटीय भृगु के आधार पर निरंतर प्रहार करती हैं, तो वे उसे नीचे से काटकर पीछे धकेल देती हैं। भृगु के पीछे हटने के पश्चात जो समतल चट्टानी फर्श शेष बचता है, उसे ही चबूतरा कहा जाता है। यह चबूतरा कम ज्वार के समय स्पष्ट दिखाई देता है और प्रायः लहरों द्वारा घिसे हुए पत्थरों से आच्छादित होता है। यह स्थलाकृति समुद्र की विनाशकारी शक्ति और तटरेखा के क्रमिक विनाश का एक जीवंत ऐतिहासिक और भौगोलिक साक्ष्य है।

278. (B) निम्न-क्षरण की प्रधानता और अवतल ढाल का विकास।
पेंक के भू-आकृतिक मॉडल में 'घटते विकास' का चरण तब आता है जब विवर्तनिक उत्थान पूर्णतः रुक जाता है। इस अवस्था में नदी द्वारा घाटी को गहरा करने की शक्ति अत्यंत क्षीण हो जाती है, जबकि घाटी की भुजाओं का पीछे की ओर खिसकना और मंद होना प्रमुख हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, पहाड़ियों की ढाल उत्तल से परिवर्तित होकर अवतल हो जाती है और सापेक्ष उच्चावच धीरे-धीरे घटने लगता है। यह परिदृश्य के बुढ़ापे और उसके अंततः पूर्ण समतलीकरण की दिशा में अंतिम महत्वपूर्ण भू-वैज्ञानिक चरण माना जाता है।

279. (D) अनाच्छादन
अनाच्छादन उन सभी बाहरी और सामूहिक प्रक्रियाओं हेतु एक व्यापक शब्दावली है जो पृथ्वी की सतह को घिसकर उसकी ऊँचाई न्यून करने का निरंतर कार्य करती हैं। इसमें मुख्य रूप से अपक्षय, वृहद् क्षरण और अपरदन सम्मिलित हैं। जहाँ अंतर्जात बल पर्वतों का निर्माण कर विषमता उत्पन्न करते हैं, वहीं अनाच्छादन की प्रक्रियाएँ निरंतर उन्हें काटकर समतल बनाने का प्रयास करती हैं। यह एक कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है जो करोड़ों वर्षों में ऊँचे पहाड़ों को भी मैदानों में परिवर्तित करने की शक्ति रखती है, जिससे भू-दृश्य का निरंतर पुनरुद्धार होता है।

280. (A) चट्टान के आधार के पास होने वाला उच्च पवन अपघर्षण।
छत्रक शैल या मशरूम रॉक का निर्माण पवन के विशिष्ट अपरदन कार्य के कारण होता है। रेगिस्तानी क्षेत्रों में पवन अपने साथ उड़ाकर लाए गए रेत के कणों का उपयोग 'रेगमाल' की भाँति करती है। चूंकि भारी रेत के कण धरातल से केवल कुछ ही फीट की ऊँचाई तक प्रभावी होते हैं, इसलिए पवन किसी भी खड़ी चट्टान के निचले भाग को ऊपरी भाग की तुलना में अधिक तीव्र गति से काटती है। लंबे समय तक होने वाले इस विभेदी कटाव के कारण चट्टान का आधार अत्यंत संकीर्ण हो जाता है और ऊपरी भाग एक चौड़ी छतरी जैसा शेष रहता है।

281. (C) अभिसारी
सबडक्शन ज़ोन मुख्य रूप से अभिसारी प्लेट सीमाओं से संबद्ध होते हैं, जहाँ दो विवर्तनिक प्लेटें एक-दूसरे की ओर संचलित होती हैं। जब एक भारी महासागरीय प्लेट किसी अन्य प्लेट से टकराती है, तो वह उसके नीचे पृथ्वी के मेंटल में धंस जाती है। इसी धंसने वाले क्षेत्र में अत्यंत गहरी खाइयाँ निर्मित होती हैं और तीव्र भूकंपीय गतिविधियाँ होती हैं। सबडक्शन की यह प्रक्रिया प्राचीन महासागरीय पपड़ी के विनाश हेतु उत्तरदायी है, जो पृथ्वी के आंतरिक भाग में पुनर्चक्रित होकर मैग्मा में परिवर्तित हो जाती है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

282. (A) सर्क
सर्क हिमनद द्वारा निर्मित एक विशिष्ट अपरदनात्मक स्थलाकृति है। यह पहाड़ के किनारे पर स्थित एक विशाल, कटोरे के आकार का अवसाद होता है जिसका निर्माण बर्फ के उत्पाटन और घर्षण से होता है। इसके विपरीत, ड्रमलिन, एस्कर और हिमोढ़ हिमनद के निक्षेपणात्मक कार्यों के परिणाम हैं। ड्रमलिन टिल की पहाड़ियाँ हैं, एस्कर रेत की कटक है और हिमोढ़ मलबे के संचित ढेर हैं। अतः, सर्क हिमनद की घर्षण और काटने की अपार शक्ति का सर्वाधिक स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है जो ऊँचे शिखरों को निरंतर तराशने का कार्य करता है।

283. (D) स्थलाकृति के आकार का उपयोग निर्माण प्रक्रिया का अनुमान लगाने के लिए किया जा सकता है।
भू-आकृति विज्ञान का एक मौलिक सिद्धांत यह है कि प्रत्येक प्राकृतिक प्रक्रम स्थलाकृतियों पर अपनी एक विशिष्ट 'छाप' या संकेत छोड़ता है। उदाहरण के लिए, U-आकार की घाटी सदैव हिमनद की ओर संकेत करती है, जबकि V-आकार की घाटी नदी के कार्य को प्रदर्शित करती है। भू-वैज्ञानिक इसी छाप का उपयोग करके किसी क्षेत्र के प्राचीन इतिहास और वहाँ सक्रिय रहे भौगोलिक बलों की पहचान करते हैं। यह सिद्धांत स्थलाकृतियों के बाह्य स्वरूप और उनके निर्माण के कारणों के मध्य एक गहरा और वैज्ञानिक संबंध स्थापित करता है।

284. (B) हिमनद प्रक्रियाएं
U-आकार की घाटी, लटकती घाटियाँ और तीक्ष्ण एरेट हिमनद प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित एक विशिष्ट भू-दृश्य का निर्माण करते

Downloaded from www.pdf.tube

हैं। ये सभी आकृतियाँ विशाल मात्रा में बर्फ के रगड़ने, चट्टानों को उखाड़ने और पर्वतों को पार्श्व रूप से काटने का परिणाम हैं। ऐसी स्थलाकृतियाँ मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में पाई जाती हैं जो या तो वर्तमान में हिमनदों से आच्छादित हैं या अतीत के हिमयुग के दौरान हिमीकरण के प्रभाव में थे। यह परिदृश्य हिमनद की अपार शक्ति का प्रमाण है जो कठोर पहाड़ों को भी पूर्णतः पुनर्गठित और सुंदर बनाने में सक्षम है।

285. (C) बाढ़ की घटनाओं के दौरान मोटे तलछट का नदी निक्षेपण।
प्राकृतिक तटबंध नदी के किनारों पर निर्मित होने वाली ऊँची मेढ़ें होती हैं जो बाढ़ के दौरान मलबे के निक्षेपण से निर्मित होती हैं। जब नदी में बाढ़ आती है और जल किनारों से बाहर विस्तृत होता है, तो वेग अचानक क्षीण होने के कारण भारी रेत और बजरी किनारों के ठीक पार्श्व में संचित हो जाते हैं। बार-बार होने वाली इस प्रक्रिया से ये किनारे धीरे-धीरे ऊँचे उठते जाते हैं। ये तटबंध नदी को उसके मार्ग में सीमित करने में सहायता करते हैं, किंतु इनके विखंडन पर बाढ़ अत्यंत विनाशकारी हो सकती है जो नदी की निक्षेपण शक्ति को दर्शाती है।

286. (D) चूना पत्थर जैसी घुलनशील चट्टान की उपस्थिति।
कार्स्ट स्थलाकृति के विकास हेतु सर्वाधिक अनिवार्य शर्त आधारभूत चट्टान का घुलनशील होना है, जिसमें चूना पत्थर सबसे प्रमुख है। ये चट्टानें रासायनिक रूप से अम्लीय जल के साथ प्रतिक्रिया करती हैं और धीरे-धीरे घुल जाती हैं, जिससे सिंकहोल और गुफाओं का निर्माण होता है। यदि चट्टान कठोर और अघुलनशील जैसे ग्रेनाइट होगी, तो कार्स्ट प्रक्रियाएँ कार्य नहीं कर पाएँगी। अतः, चट्टान की रासायनिक संरचना ही वह प्राथमिक नियंत्रण है जो कार्स्ट परिदृश्य के निर्माण और उसकी जटिलता को निर्धारित करता है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

287. (A) महाद्वीपीय विस्थापन
'पैंजिया' और 'पैंथलासा' शब्द अल्फ्रेड वेगनर द्वारा प्रतिपादित महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के आधारभूत स्तंभ हैं। पैंजिया उस विशाल और एकल महामहाद्वीप को कहा जाता था जिसमें कभी विश्व के सभी महाद्वीप एक साथ संयुक्त थे। पैंथलासा उस सार्वभौमिक और वृहद् महासागर का नाम था जिसने इस महामहाद्वीप को चारों ओर से घेरा हुआ था। वेगनर ने इन शब्दों का प्रयोग यह समझाने हेतु किया कि कैसे पृथ्वी की सतह अतीत में आज की तुलना में पूर्णतः भिन्न थी और कैसे विस्थापन ने आधुनिक वैश्विक भूगोल को जन्म दिया।

288. (B) बाढ़ के मैदान के साथ एक विस्तृत, खुले आकार के रूप में।
नदी चक्र की प्रौढ़ावस्था में, नदी की घाटी का स्वरूप संकीर्ण V-आकार से परिवर्तित होकर अधिक विस्तृत और खुला हो जाता है। इस अवस्था में नदी का लंबवत अपरदन कम हो जाता है और वह पार्श्व अपरदन अधिक करती है, जिससे घाटी चौड़ी हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, नदी के दोनों ओर विस्तृत और उपजाऊ 'बाढ़ के मैदान' विकसित होते हैं और नदी टेढ़े-मेढ़े विसर्प में प्रवाहित होती है। यह परिदृश्य नदी की परिपक्वता और उसके द्वारा अपनी घाटी को पूर्णतः व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को अत्यंत स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

289. (B) जलीय क्रिया
जलीय क्रिया अपरदन की वह प्रक्रिया है जिसमें बहता हुआ जल अपनी गति और शक्ति के सीधे प्रहार से चट्टानी सामग्री को ढीला करता है और हटा देता है। यह विशेष रूप से तब प्रभावी होता है जब जल का वेग अत्यंत अधिक हो या वह चट्टान की दरारों में वायु को भीषण दबाव के साथ दबा देता है, जिससे चट्टान के टुकड़े उखड़ जाते हैं। इसमें मलबे या रसायनों की कोई भूमिका नहीं होती, बल्कि केवल जल का अपना यांत्रिक बल ही अपरदन का कार्य करता है। यह बाढ़ और समुद्री लहरों के दौरान सर्वाधिक विनाशकारी सिद्ध होता है।

290. (A) अंतरीप
समुद्री स्तंभ और स्टंप वास्तव में किसी तटीय अंतरीप के अंतिम अपरदनात्मक अवशेष होते हैं। अंतरीप वह कठोर चट्टानी भाग होता है जो समुद्र की ओर निकला होता है। लहरें सर्वप्रथम इस अंतरीप के दोनों ओर गुफाएँ निर्मित करती हैं, फिर मेहराब और अंत में जब मेहराब की छत गिर जाती है, तो केवल एक पृथक खड़ा चट्टानी स्तंभ शेष बचता है। समय के साथ, यह स्तंभ भी घिसकर लघु होकर स्टंप बन जाता है और फिर पूर्णतः अदृश्य हो जाता है। यह तटीय रेखा के क्रमिक पीछे हटने और समुद्र के निरंतर आगे बढ़ने की कहानी कहता है।

NODIA

291. (C) जटिल शब्दावली और अमूर्त सैद्धांतिक प्रकृति है।
भू-आकृतिक चक्रों, विशेष रूप से डेविस और पेंक के मॉडलों की एक प्रमुख आलोचना उनकी अत्यधिक सैद्धांतिक और कभी-कभी अस्पष्ट शब्दावली को लेकर की जाती है। आलोचकों का मानना है कि 'युवा', 'प्रौढ़' और 'वृद्ध' जैसे मानवीय शब्दों का पर्वतों पर प्रयोग करना अत्यंत सरल और अमूर्त है, जो वास्तविक भू-वैज्ञानिक जटिलताओं की उपेक्षा करता है। इसके अतिरिक्त, इन मॉडलों में प्रयुक्त कई तकनीकी शब्द भिन्न संदर्भों में भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं। आधुनिक विद्वान अब अधिक व्यावहारिक और प्रक्रिया-आधारित विश्लेषण को प्राथमिकता प्रदान करते हैं।

292. (D) तलस्थ हिमोढ़
तलस्थ हिमोढ़ हिमनद द्वारा निक्षेपित मलबे की वह परत होती है जो हिमनद के तल और आधारभूत चट्टान के मध्य संचित होती है। जब एक विशाल हिमनद पिघलकर पीछे हटता है, तो वह अपने पीछे अवर्गीकृत टिल की एक विस्तृत और लहरदार चादर छोड़ जाता है। यह मैदान कम ऊँचाई वाली पहाड़ियों की भाँति दिखाई देता है। यह हिमनद निक्षेपण का सर्वाधिक विस्तृत रूप है जो प्रायः हज़ारों वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को उपजाऊ हिमनदी मिट्टी से आच्छादित कर देता है। यह दर्शाता है कि हिमनद ने अपने मार्ग में मलबे का कितना वृहद् संचय किया था।

293. (C) पटल विरूपण
पटल विरूपण एक महत्वपूर्ण अंतर्जात बल है जो पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा संचालित होता है। इसमें वे सभी प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं जो पृथ्वी की पपड़ी को संचलित करती हैं, उसे वलित करती हैं या ऊपर उठाती हैं, जिससे पर्वतों और महाद्वीपों का निर्माण होता है। इसके विपरीत, पवन अपरदन, तुषार क्रिया और वृहद् क्षरण सभी बहिर्जात प्रक्रियाएँ हैं जो

पृथ्वी की सतह पर बाहरी कारकों द्वारा संचालित होती हैं और उच्चावच को नष्ट करने का कार्य करती हैं। अतः, पटल विरूपण पृथ्वी के आंतरिक इंजन की शक्ति का प्रतीक है जो नवीन स्थलाकृतियाँ सृजित करता है।

294. (B) मोनाडनॉक के साथ एक पेनीप्लेन
नदी चक्र की 'वृद्धावस्था' में परिदृश्य अपनी ऊर्जा पूर्णतः खो चुका होता है। करोड़ों वर्षों के निरंतर अपरदन के पश्चात, ऊँचे पहाड़ और घाटियाँ घिसकर एक लगभग समतल मैदान में परिवर्तित हो जाती हैं, जिसे डेविस ने 'पेनीप्लेन' कहा है। इस मैदान पर कहीं-कहीं कठोर चट्टानों के अवशेष टीलों के रूप में दिखाई देते हैं, जिन्हें 'मोनाडनॉक' कहते हैं। गार्ज और जलप्रपात नदी की युवावस्था की ऊबड़-खाबड़ आकृतियाँ हैं। पेनीप्लेन का निर्माण भू-आकृतिक विकास के पूर्ण होने और एक शांत धरातल की स्थापना का निर्विवाद प्रतीक माना जाता है।

295. (D) सागर नितल प्रसरण का सिद्धांत।
मध्य-महासागरीय कटकों के दोनों ओर चुंबकीय पट्टियों का समानांतर और विपरीत संरेखण सागर नितल प्रसरण की पुष्टि करने वाला सर्वाधिक शक्तिशाली प्रमाण था। जब कटकों से मैग्मा निकलकर ठोस बनता है, तो वह उस समय के पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को संचित कर लेता है। वैज्ञानिकों ने पाया कि कटक के दोनों ओर समान अंतराल पर चुंबकीय ध्रुव व्युत्क्रमित थे, जो यह सिद्ध करता है कि समुद्र तल धीरे-धीरे मध्य से विस्तृत हो रहा है और नवीन पदार्थ निरंतर निर्मित हो रहा है। इस खोज ने प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत को विश्व स्तर पर दृढ़ता प्रदान की।

296. (A) एक प्राकृतिक तटबंध
याज़ू सरिता एक ऐसी सहायक नदी है जो मुख्य नदी के विशाल प्राकृतिक तटबंधों के कारण उसमें सीधे समाहित नहीं हो पाती। जब मुख्य नदी अपने किनारों पर ऊँची मेढ़ें निर्मित कर लेती है, तो सहायक नदी को मुख्य धारा के समानांतर ही प्रवाहित होना पड़ता है। यह काफी दूरी तय करने के पश्चात ही किसी उपयुक्त स्थान पर मुख्य नदी से मिल पाती है। इस प्रकार की जल निकास व्यवस्था को 'याज़ू प्रकार' कहा जाता है। यह मैदानी इलाकों में नदी की निक्षेपण शक्ति और उसके द्वारा निर्मित अवरोधों का एक अत्यंत रोचक और महत्वपूर्ण भौगोलिक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

297. (C) एक कार्स्ट कंदरा
कार्स्ट कंदरा या गुफा का निर्माण भूमिगत जल द्वारा चूना पत्थर की चट्टानों को रासायनिक रूप से घोलने से होता है। जब अम्लीय जल दरारों के माध्यम से नीचे जाता है, तो वह धीरे-धीरे चट्टान को भीतर से खोखला कर देता है, जिससे विशाल कक्ष और गलियारे निर्मित हो जाते हैं। यह कार्स्ट स्थलाकृति की एक विशिष्ट विशेषता है। इसके विपरीत, काल्डेरा ज्वालामुखी से, सर्क हिमनद से और यारडांग पवन की क्रियाओं से संबद्ध हैं। कार्स्ट गुफाएँ प्रकृति की वह छिपी हुई कलाकृतियाँ हैं जो पूर्णतः जल की रासायनिक घुलाने वाली शक्ति पर आधारित हैं।

298. (A) घाटी हिमनद में स्थलाकृति का सीमित प्रभाव।
घाटी हिमनद और महाद्वीपीय हिमनद के मध्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि घाटी हिमनद पूर्णतः पर्वतों और पूर्व-विद्यमान घाटियों की स्थलाकृति द्वारा निर्देशित होते हैं, वे केवल ढाल का अनुसरण करते हैं। इसके विपरीत, महाद्वीपीय हिमनद इतने विशाल होते हैं कि वे संपूर्ण परिदृश्य को अपने नीचे दबा देते हैं और उनकी गति ऊँचाई-नीचाई से स्वतंत्र होकर अपने ही भार के कारण होती है। घाटी हिमनद विशिष्ट U-आकार की घाटियाँ निर्मित करते हैं, जबकि महाद्वीपीय हिमनद संपूर्ण महाद्वीप की सतह को घिसकर चिकना और चौरस बनाने का कार्य करते हैं।

299. (D) भौतिक और रासायनिक क्रियाएं जो भूमि की सतह को आकार देती हैं।
भू-आकृति विज्ञान में 'प्रक्रम' का अर्थ उन सभी सक्रिय शक्तियों और विधियों से है जो स्थलाकृतियों का निर्माण या विनाश करती हैं। इसमें बहते जल, पवन, हिमनद, लहरों और भूमिगत जल के भौतिक कार्यों के साथ-साथ अपक्षय जैसी रासायनिक अभिक्रियाएँ भी सम्मिलित हैं। प्रक्रम वह 'उपकरण' है जिसका प्रयोग प्रकृति धरातल को तराशने हेतु करती है। डेविस के त्रिक में प्रक्रम ही वह गतिशील शक्ति है जो चट्टानी ढांचे को समय के साथ एक निश्चित आकार और स्वरूप में परिवर्तित करने हेतु उत्तरदायी मानी जाती है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

300. (B) उत्तरी अमेरिकी और यूरेशियन प्लेटें एक-दूसरे से दूर जा रही हैं।
मध्य-अटलांटिक कटक पृथ्वी पर एक विशाल अपसारी प्लेट सीमा का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ उत्तरी अमेरिकी और यूरेशियन प्लेटें निरंतर एक-दूसरे से विपरीत दिशा में खिसक रही हैं। इस प्रसरण के कारण पृथ्वी के आंतरिक मेंटल से मैग्मा ऊपर आता है, समुद्र तल पर फैलता है और ठंडा होकर नवीन महासागरीय पपड़ी का निर्माण करता है। यह प्रक्रिया करोड़ों वर्षों से निरंतर जारी है, जिससे अटलांटिक महासागर धीरे-धीरे चौड़ा हो रहा है। यह कटक सागर नितल प्रसरण और विवर्तनिक प्लेटों की गतिशीलता का सबसे शानदार वैश्विक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 03
जलवायु विज्ञान

1. पृथ्वी के वायुमंडल में आयतन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सी गैस सर्वाधिक मात्रा में पाई जाती है?
(A) ऑक्सीजन
(B) नाइट्रोजन
(C) आर्गन
(D) कार्बन डाइऑक्साइड

2. वायुमंडल की संरचना के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: क्षोभमंडल की विशेषता ऊंचाई बढ़ने के साथ तापमान में होने वाली सामान्य कमी है।
कथन II: समताप मंडल में ओजोन परत होती है, जो सूर्य से हानिकारक पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

3. निम्नलिखित में से कौन सी वायुमंडल में ऊष्मा स्थानांतरण की प्राथमिक प्रक्रिया नहीं है?
(A) चालन
(B) संवहन
(C) ऊर्ध्वपातन
(D) विकिरण

4. जलवायु विज्ञान में 'सूर्यातप' शब्द का तात्पर्य है:
(A) वायुमंडल और बादलों द्वारा पृथ्वी का ऊष्मारोधन।
(B) पृथ्वी से अंतरिक्ष में ऊष्मा ऊर्जा के बाहर निकलने की प्रक्रिया।
(C) पृथ्वी के महासागरों के भीतर संचित कुल ऊष्मा की मात्रा।
(D) पृथ्वी की सतह पर प्राप्त होने वाला सौर विकिरण।

5. पृथ्वी के ऊष्मा बजट के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) पृथ्वी लंबी अवधि में तुलनात्मक रूप से स्थिर औसत तापमान बनाए रखती है।
(B) आने वाला सौर विकिरण वार्षिक रूप से बाहर जाने वाले पार्थिव विकिरण द्वारा संतुलित होता है।
(C) ऊष्मा बजट सभी अक्षांशों पर एक समान है और इसमें कोई स्थानीय अधिशेष या कमी नहीं होती है।
(D) सौर विकिरण का कितना हिस्सा परावर्तित होता है, यह निर्धारित करने में एल्बिडो महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

6. मौसम मानचित्र पर समान वायुमंडलीय तापमान वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा को कहा जाता है:
(A) समदाब रेखा
(B) समताप रेखा
(C) समवर्षा रेखा
(D) समलवण रेखा

7. वायुमंडल में पवन के सामान्य संचरण का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूर्णन।
(B) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव।
(C) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र।
(D) वैश्विक तापमान और दबाव के प्रतिरूप।

8. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): क्षोभमंडल को मौसम की घटनाओं के लिए वायुमंडल की सबसे महत्वपूर्ण परत माना जाता है।
कारण (R): वायुमंडलीय जलवाष्प और धूल के कणों का अधिकांश भाग क्षोभमंडल में ही केंद्रित होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

9. उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटी से भूमध्यरेखीय निम्न वायुदाब पेटी की ओर चलने वाली भूमंडलीय पवनों को कहा जाता है:
(A) पछुआ पवनें
(B) ध्रुवीय पूर्वी पवनें
(C) व्यापारिक पवनें
(D) मानसून

10. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: वायुमंडलीय परत
P. क्षोभमंडल
Q. समताप मंडल
R. मध्यमंडल
S. तापमंडल
सूची II: विशेषता
1. ऊंचाई के साथ तापमान बढ़ता है, इसमें आयनमंडल होता है

NODIA

2. ऊंचाई के साथ तापमान घटता है, उल्कापिंड यहाँ जल जाते हैं
3. ऊंचाई के साथ तापमान बढ़ता है, इसमें ओजोन परत होती है
4. ऊंचाई के साथ तापमान घटता है, अधिकांश मौसम यहाँ घटित होता है

कोड:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

11. एल नीनो के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) इसमें पूर्वी प्रशांत महासागर के सतही जल का असामान्य शीतलन शामिल है।
(B) यह पूरे प्रशांत क्षेत्र में सामान्य से अधिक मजबूत व्यापारिक पवनों से जुड़ा है।
(C) इसके कारण ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया में वर्षा में काफी वृद्धि होती है।
(D) इसमें मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर के सतही जल का गर्म होना शामिल है।

12. एक समान तापमान और आर्द्रता की विशेषताओं वाले वायु के विशाल पुंज को कहा जाता है:
(A) वायु वाताग्र
(B) वायु राशि
(C) वायु पार्सल
(D) वायु पॉकेट

13. वायुमंडल के संगठन से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल का एक प्रमुख घटक है, जो लगभग 21% है।
2. जलवाष्प की सांद्रता अत्यधिक परिवर्तनशील है और ऊंचाई के साथ घटती जाती है।
3. ओजोन मुख्य रूप से समताप मंडल में केंद्रित है और पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

14. दो अलग-अलग वायु राशियों के बीच के सीमा क्षेत्र को क्या कहा जाता है?
(A) जेट स्ट्रीम
(B) गर्त
(C) कटक
(D) वाताग्र

15. जब एक ठंडी वायु राशि सक्रिय रूप से आगे बढ़ती है और एक गर्म वायु राशि को प्रतिस्थापित करती है, तो किस प्रकार का वाताग्र बनता है?
(A) शीत वाताग्र
(B) उष्ण वाताग्र
(C) अचर वाताग्र
(D) संरोधित वाताग्र

16. उष्णकटिबंधीय चक्रवातों को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। उत्तरी अटलांटिक महासागर और पूर्वी उत्तर प्रशांत क्षेत्र में उन्हें कहा जाता है:
(A) टाइफून
(B) हरिकेन
(C) चक्रवात
(D) विली-विली

17. कोपेन की वर्गीकरण योजना के अनुसार, 'Af' जलवायु का सबसे अच्छा वर्णन है:
(A) उष्णकटिबंधीय मानसून
(B) उष्णकटिबंधीय वर्षावन
(C) उष्णकटिबंधीय आर्द्र और शुष्क
(D) गर्म मरुस्थल

18. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): बढ़ते अक्षांश के साथ तापमान सामान्यतः घटता है।
कारण (R): ध्रुवों की ओर सौर किरणों का आपतन कोण अधिक तिरछा हो जाता है, जिससे ऊर्जा बड़े क्षेत्र में फैल जाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

19. थॉर्नथवेट का जलवायु वर्गीकरण तंत्र मुख्य रूप से किस अवधारणा पर आधारित है?
(A) औसत वार्षिक तापमान और वर्षण।
(B) प्राकृतिक वनस्पति का वितरण।
(C) संभावित वाष्पोत्सर्जन और आर्द्रता सूचकांक।
(D) वायु राशियों और वाताग्रों का संचलन।

20. निम्नलिखित में से कौन सी स्थानीय पवन का उदाहरण है?
(A) पछुआ पवनें
(B) व्यापारिक पवनें
(C) ध्रुवीय पूर्वी पवनें
(D) फान

21. वह घटना जिसमें पेरू के तट पर सामान्य स्थिति के अधिक तीव्र रूप में असामान्य रूप से ठंडी समुद्री धारा दिखाई देती है, कहलाती है:

Downloaded from www.pdf.tube

(A) एल नीनो
(B) दक्षिणी दोलन
(C) ला नीना
(D) प्रशांत दशकीय दोलन

22. शीतोष्ण चक्रवात की विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह विशेष रूप से गर्म उष्णकटिबंधीय महासागर की सतहों पर उत्पन्न होता है।
(B) यह दो अलग-अलग वायु राशियों के बीच एक वाताग्र के साथ बनता है।
(C) इसके केंद्र में एक सुस्पष्ट और स्वच्छ चक्षु होती है।
(D) यह मध्य-अक्षांश क्षेत्रों में पूर्व से पश्चिम की ओर चलता है।

23. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म स्थानीय पवन और उसके क्षेत्र के साथ सही सुमेलित है?
(A) चिनूक - आल्प्स पर्वत
(B) मिस्ट्रल - रॉकी पर्वत
(C) फान - नील घाटी
(D) लू - भारत के उत्तरी मैदान

24. ओजोन परत के क्षरण का प्राथमिक कारण किसका उत्सर्जन है?
(A) प्रशीतकों से क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs)।
(B) जीवाश्म ईंधन के दहन से कार्बन डाइऑक्साइड।
(C) कृषि गतिविधियों द्वारा उत्पादित मीथेन।
(D) ज्वालामुखी विस्फोटों से सल्फर डाइऑक्साइड।

25. ENSO के 'दक्षिणी दोलन' घटक का तात्पर्य किनके बीच वायुमंडलीय दबाव के उतार-चढ़ाव वाले प्रतिरूप से है?
(A) उत्तरी अटलांटिक और दक्षिणी अटलांटिक महासागर।
(B) हिंद महासागर और प्रशांत महासागर क्षेत्र।
(C) पूर्वी प्रशांत और पश्चिमी प्रशांत महासागर।
(D) आर्कटिक और अंटार्कटिक ध्रुवीय क्षेत्र।

26. जब आर्द्र वायु को किसी पर्वतीय बाधा के ऊपर चढ़ने के लिए मजबूर किया जाता है, तो किस प्रकार की वर्षा होती है?
(A) पर्वतीय वर्षा
(B) संवहनीय वर्षा
(C) वाताग्र वर्षा
(D) चक्रवातीय वर्षा

27. वायुमंडल की निम्नलिखित परतों पर विचार कीजिए:
1. मध्यमंडल
2. क्षोभमंडल
3. तापमंडल
4. समताप मंडल

उपरोक्त परतों को पृथ्वी की सतह से ऊपर की ओर क्रमानुसार व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 1, 2, 4, 3

28. 'ग्रीनहाउस प्रभाव', जो भूमंडलीय तापन में योगदान देता है, वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा:
(A) ओजोन परत पृथ्वी को गर्म करने के लिए पराबैंगनी विकिरण को रोकती है।
(B) वायुमंडलीय गैसें अवरक्त विकिरण को अवशोषित और पुनः विकीर्ण करती हैं।
(C) औद्योगिक प्रदूषण पृथ्वी को ठंडा करने के लिए सौर विकिरण को परावर्तित करता है।
(D) पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण वायुमंडल में ऊष्मा छोड़ता है।

29. औसत से कम वर्षा वाली लंबी अवधि, जिससे जल की कमी हो जाती है, कहलाती है:
(A) बाढ़
(B) लू
(C) सूखा
(D) शीत लहर

30. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: जलवायु प्रकार (कोपेन)
P. Aw
Q. BWh
R. Cfa
S. ET
सूची II: विशेषता
1. टुंड्रा जलवायु
2. आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु
3. उष्णकटिबंधीय सवाना जलवायु
4. गर्म मरुस्थलीय जलवायु
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

31. बिजली कड़कने, गरजने और अक्सर भारी बारिश या ओलों के साथ आने वाले भीषण तूफान को कहते हैं:
(A) तड़ित झंझा
(B) टॉरनेडो
(C) हरिकेन
(D) डस्ट डेविल

32. स्थल और समुद्र के विभेदी तापन का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम क्या है?
(A) स्थायी हिमटोपियों का निर्माण।
(B) स्थल समीर और समुद्र समीर का विकास।
(C) भूकंप की घटना।

NODIA

(D) दिनों की लंबाई में भिन्नता।

33. शीतोष्ण चक्रवात की संरचना के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इनमें एक सुपरिभाषित उष्ण क्षेत्र और एक शीत क्षेत्र होता है।
(B) पवन की गति तूफान के केंद्र या चक्षु में सबसे अधिक होती है।
(C) वे आमतौर पर एक वाताग्र प्रणाली से जुड़े होते हैं।
(D) वे आम तौर पर पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हैं।

34. असामान्य रूप से गर्म और असुविधाजनक गर्म और आर्द्र मौसम की अवधि को कहा जाता है:
(A) लू
(B) शीत लहर
(C) फान
(D) बर्फानी तूफान

35. वायु के क्षैतिज संचलन के माध्यम से ऊष्मा के स्थानांतरण को क्या कहा जाता है?
(A) संवहन
(B) विकिरण
(C) अभिवहन
(D) चालन

36. भूमंडलीय पवनों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: महासागर के विशाल विस्तार के कारण उत्तरी गोलार्ध की तुलना में दक्षिणी गोलार्ध में पछुआ पवनें अधिक शक्तिशाली और स्थिर होती हैं।
कथन II: व्यापारिक पवनों का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि ऐतिहासिक रूप से इनका उपयोग व्यापारिक जहाजों पर नाविकों द्वारा किया जाता था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

37. 'mT' के रूप में नामित एक वायु राशि को इस प्रकार वर्णित किया जाएगा:
(A) समुद्री शीतोष्ण
(B) महाद्वीपीय उष्णकटिबंधीय
(C) समुद्री उष्णकटिबंधीय
(D) महाद्वीपीय शीतोष्ण

38. कोपेन के वर्गीकरण के अनुसार, अक्षर 'B' किस प्रमुख जलवायु समूह का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) उष्णकटिबंधीय वर्षा जलवायु
(B) शुष्क जलवायु
(C) आर्द्र मध्यतापीय जलवायु
(D) ध्रुवीय जलवायु

39. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पृथ्वी का ऊष्मा बजट आने वाले सौर विकिरण और बाहर जाने वाले पार्थिव विकिरण के बीच पूर्ण संतुलन को संदर्भित करता है।
2. उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शुद्ध विकिरण अधिशेष और ध्रुवों पर शुद्ध कमी होती है।
3. वायुमंडलीय और महासागरीय परिसंचरण द्वारा ऊर्जा का क्षैतिज स्थानांतरण इस अक्षांशीय ऊष्मा असंतुलन को ठीक करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

40. अपनी सामान्य सीमाओं से परे जल की एक बड़ी मात्रा का उमड़ना, विशेष रूप से सामान्य रूप से शुष्क भूमि पर, कहलाता है:
(A) बाढ़
(B) सूखा
(C) ओलावृष्टि
(D) तड़ित झंझा

41. अचर वाताग्र की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) एक ठंडी वायु राशि तेजी से गर्म वायु राशि को ऊपर की ओर धकेलती है।
(B) एक गर्म वायु राशि धीरे से ठंडी वायु राशि के ऊपर सरकती है।
(C) दो वायु राशियाँ एक-दूसरे को प्रतिस्थापित किए बिना मिलती हैं।
(D) एक शीत वाताग्र एक उष्ण वाताग्र से आगे निकल जाता है।

42. वायुमंडल में जलवाष्प के सीधे बर्फ के क्रिस्टल में बदलने की प्रक्रिया, बिना तरल बने, कहलाती है:
(A) ऊर्ध्वपातन
(B) वाष्पीकरण
(C) संघनन
(D) संलयन

43. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): पृथ्वी की सतह पर प्राप्त होने वाले सूर्यातप की मात्रा वायुमंडल के शीर्ष पर प्रवेश करने वाली मात्रा से कम होती है।
कारण (R): वायुमंडल आने वाले सौर विकिरण के एक हिस्से को अवशोषित, प्रकीर्णित और परावर्तित करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

44. किस प्रकार का चक्रवात आमतौर पर क्षेत्रफल में बड़ा होता है लेकिन अपने समकक्ष की तुलना में इसकी पवन की गति और वायुदाब प्रवणता कम होती है?
(A) उष्णकटिबंधीय चक्रवात
(B) शीतोष्ण चक्रवात
(C) ध्रुवीय चक्रवात
(D) मेसो-चक्रवात

45. भूमि के पास ठंडी वायु की परत के ऊपर गर्म वायु की परत के स्थित होने की घटना को कहा जाता है:
(A) तापमान ह्रास दर
(B) तापीय विसंगति
(C) तापमान व्युत्क्रमण
(D) तापमान अभिवहन

46. वायुमंडलीय दबाव के संदर्भ में, निम्न दाब प्रणाली सामान्यतः किससे जुड़ी होती है?
(A) स्वच्छ आकाश और शांत स्थिति।
(B) नीचे गिरती हवा और स्थिर मौसम।
(C) नीचे उतरती हवा और शुष्क स्थिति।
(D) ऊपर उठती हवा, बादल और वर्षा।

47. कोपेन के वर्गीकरण में, दूसरा अक्षर 'w' क्या दर्शाता है?
(A) शुष्क शीत ऋतु
(B) शुष्क ग्रीष्म ऋतु
(C) पूरे वर्ष वर्षा
(D) गर्म ग्रीष्म ऋतु

48. ओलावृष्टि ठोस वर्षण का एक रुप है जिसमें शामिल हैं:
(A) बादलों से गिरने वाले नन्हे बर्फ के क्रिस्टल।
(B) बर्फ के गोले या अनियमित टुकड़े।
(C) नरम और अपारदर्शी बर्फ के गोले।
(D) जमे हुए वर्षा की बूंदें जो पारदर्शी होती हैं।

49. निम्नलिखित में से कौन सी एक भूमंडलीय पवन नहीं है?
(A) व्यापारिक पवनें
(B) मानसून
(C) पछुआ पवनें
(D) ध्रुवीय पूर्वी पवनें

50. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: आपदा
P. बाढ़
Q. सूखा
R. लू
S. तड़ित झंझा
सूची II: विवरण
1. असामान्य रूप से उच्च तापमान की लंबी अवधि
2. जल द्वारा भूमि का जलमग्न होना
3. बिजली और गरज के साथ आने वाला तूफान
4. लंबी अवधि तक वर्षा की कमी
कोड:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

51. कोरिओलिस प्रभाव, जो गतिशील वस्तुओं को उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर विक्षेपित करता है, किसका परिणाम है?
(A) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र।
(B) सूर्य का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव।
(C) पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूर्णन।
(D) पृथ्वी की धुरी का झुकाव।

52. उष्णकटिबंधीय चक्रवात का चक्षु किसका क्षेत्र है?
(A) अत्यधिक तीव्र हवाएं और भारी बारिश।
(B) भीषण तड़ित झंझा और ओले।
(C) तूफान के भीतर सबसे कम तापमान।
(D) शांत मौसम और अक्सर स्वच्छ आकाश।

53. थॉर्नथवेट के 1948 के वर्गीकरण के अनुसार, P/E सूचकांक किसका माप है?
(A) तापीय दक्षता।
(B) पवन वेग।
(C) वर्षण प्रभावशीलता।
(D) संभावित सूर्यातप।

54. वायुमंडलीय गैस और उसके आयतन के अनुसार अनुमानित प्रतिशत के गलत युग्म की पहचान करें।
(A) नाइट्रोजन - 78%
(B) कार्बन डाइऑक्साइड - 1%
(C) ऑक्सीजन - 21%
(D) आर्गन - 0.93%

55. एक संरोधित वाताग्र में, सतह पर आमतौर पर क्या होता है?
(A) दो ठंडी वायु राशियाँ मिलती हैं और पूरी तरह मिश्रित हो जाती हैं।
(B) एक उष्ण वाताग्र और एक शीत वाताग्र समानांतर चलते हैं।
(C) एक गर्म वायु राशि एक ठंडी वायु राशि को दो भागों में विभाजित करती है।
(D) एक ठंडी वायु राशि द्वारा एक गर्म वायु राशि को ऊपर उठा दिया जाता है।

56. सूर्य की ऊष्मा पृथ्वी तक मुख्य रूप से ऊष्मा स्थानांतरण की किस प्रक्रिया के माध्यम से पहुँचती है?
(A) विकिरण
(B) चालन
(C) संवहन
(D) अभिवहन

NODIA

57. ला नीना के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: ला नीना की घटनाएं विषुवतीय प्रशांत क्षेत्र में असामान्य रुप से ठंडे समुद्री तापमान से जुड़ी होती हैं।
कथन II: ला नीना के परिणामस्वरुप अक्सर पूर्वी ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया में औसत से अधिक आर्द्र स्थिति होती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

58. भूमंडलीय तापन में योगदान के मामले में निम्नलिखित में से किसे सबसे महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस माना जाता है?
(A) कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)
(B) मीथेन (CH_4)
(C) नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O)
(D) क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs)

59. पवन के तेजी से और महत्वपूर्ण रुप से ठंडा होने की अवधि, विशेष रुप से वह जो बेमौसम हो, कहलाती है:
(A) लू
(B) शीत वाताग्र
(C) ध्रुवीय प्रकोप
(D) शीत लहर

60. शीतोष्ण चक्रवात के निर्माण से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. अचर वाताग्र का निर्माण।
2. वाताग्र के साथ एक तरंग का विकास।
3. वाताग्र का संरोधन।
4. सुस्पष्ट उष्ण और शीत वाताग्रों के साथ परिपक्व अवस्था।
इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 3, 1, 2

61. महाद्वीपीय ध्रुवीय (cP) वायु राशि का स्रोत क्षेत्र क्या है?
(A) गर्म उष्णकटिबंधीय महासागर
(B) निम्न-अक्षांश वाले गर्म मरुस्थल
(C) उच्च-अक्षांश वाली ठंडी भूमि सतहें
(D) मध्य-अक्षांश वाले ठंडे महासागर

62. वायुमंडल के सामान्य संचरण में, उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित तापीय रुप से प्रत्यक्ष कोशिका को किस नाम से जाना जाता है?
(A) फेरेल कोशिका
(B) ध्रुवीय कोशिका
(C) वॉकर कोशिका
(D) हेडली कोशिका

63. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): उष्णकटिबंधीय चक्रवात भूमध्य रेखा पर नहीं बनते हैं।
कारण (R): कोरिओलिस बल, जो प्रारंभिक चक्रवाती चक्रण प्रदान करने के लिए आवश्यक है, भूमध्य रेखा पर शून्य होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

64. कोपेन जलवायु वर्गीकरण 'Csb' संभवतः निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पाया जाएगा?
(A) अमेज़न बेसिन
(B) कैलिफोर्निया का भूमध्यसागरीय तट
(C) मध्य साइबेरिया
(D) सहारा मरुस्थल

65. वायुमंडलीय दबाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वायुमंडलीय दबाव किसी दिए गए बिंदु के ऊपर वायु के स्तंभ का भार है।
2. ऊंचाई बढ़ने के साथ दबाव कम होता जाता है।
3. उच्च वायुदाब वाले क्षेत्र को चक्रवात के रूप में जाना जाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

66. बाढ़ और सूखे के बीच मुख्य अंतर किससे संबंधित है?
(A) जल की अधिकता या कमी
(B) सौर विकिरण की मात्रा
(C) पवन की गति
(D) वायुमंडलीय तापमान

67. समताप मंडल के ठीक ऊपर कौन सी वायुमंडलीय परत स्थित है?
(A) क्षोभमंडल
(B) तापमंडल
(C) मध्यमंडल
(D) बाह्यमंडल

68. किसी सतह का 'एल्बिडो' उसकी किसका माप है?
(A) ऊष्मा अवशोषण क्षमता
(B) उत्सर्जकता
(C) पारदर्शिता
(D) परावर्तन क्षमता

NODIA

69. निम्नलिखित में से कौन सा संवहनीय उत्थान द्वारा निर्मित वर्षण का उदाहरण है?
(A) पश्चिमी घाट के पवनमुखी ढाल पर वर्षा।
(B) उष्ण वाताग्र से जुड़ी बूंदाबांदी।
(C) विषुवतीय क्षेत्र में दोपहर के बाद होने वाली तड़ित वर्षा।
(D) सर्दियों में हिमालय पर हिमपात।

70. "दक्षिणी दोलन सूचकांक" की गणना किनके बीच दबाव के अंतर के आधार पर की जाती है?
(A) लंदन और न्यूयॉर्क
(B) डार्विन और ताहिती
(C) टोक्यो और सैन फ्रांसिस्को
(D) मुंबई और पर्थ

71. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: प्रक्रिया
P. चालन
Q. संवहन
R. अभिवहन
S. विकिरण
सूची II: विवरण
1. पवन द्वारा ऊष्मा का क्षैतिज स्थानांतरण
2. विद्युत चुंबकीय तरंगों के माध्यम से ऊष्मा का स्थानांतरण
3. आणविक संपर्क के माध्यम से ऊष्मा का स्थानांतरण
4. तरल के संचलन द्वारा ऊष्मा का ऊर्ध्वाधर स्थानांतरण
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

72. शीतोष्ण चक्रवातों के संचलन की सामान्य दिशा होती है:
(A) पश्चिम से पूर्व
(B) पूर्व से पश्चिम
(C) उत्तर से दक्षिण
(D) दक्षिण से उत्तर

73. थॉर्नथवेट के वर्गीकरण में, 'तापीय दक्षता' एक सूचकांक है जो दर्शाता है:
(A) वर्षण की मात्रा।
(B) पवन की गति।
(C) तापमान के आधार पर पौधों की वृद्धि की संभावना।
(D) मिट्टी में नमी की कमी।

74. रॉकी पर्वत के पवनविमुख ढाल से नीचे उतरने वाली गर्म, शुष्क पवन को कहा जाता है:
(A) चिनूक
(B) मिस्ट्रल
(C) बोरा
(D) सिरोको

75. कौन सा कथन वैश्विक, वार्षिक औसत पर पृथ्वी के ऊष्मा बजट का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) पृथ्वी को ऊर्जा का शुद्ध लाभ होता है, जिससे निरंतर तापन होता है।
(B) पृथ्वी को ऊर्जा की शुद्ध हानि होती है, जिससे निरंतर शीतलन होता है।
(C) ध्रुवीय क्षेत्रों को औसत रूप से खोने की तुलना में अधिक ऊर्जा प्राप्त होती है।
(D) वैश्विक स्तर पर आने वाली ऊर्जा बाहर जाने वाली ऊर्जा के बराबर होती है।

76. डोलड्रम्स भूमध्य रेखा के पास शांत या हल्की परिवर्तनशील पवनों का क्षेत्र है, जो कहाँ स्थित है?
(A) उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियों में
(B) अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र के भीतर
(C) उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटियों में
(D) ध्रुवीय उच्च दाब क्षेत्रों में

77. ओजोन के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: ओजोन समताप मंडल में लाभकारी है लेकिन क्षोभमंडल में हानिकारक है।
कथन II: क्षोभमंडल में ओजोन एक प्रदूषक और प्रकाश रासायनिक धुंध का एक घटक है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

78. शीतोष्ण चक्रवात के जन्म से लेकर उसके समाप्त होने तक के जीवन चक्र को कहा जाता है:
(A) वाताग्रजनन
(B) वाताग्रलयन
(C) चक्रवातलयन
(D) चक्रवातजनन

79. 'अश्व अक्षांश' किन वायुदाब पेटियों से संबंधित हैं?
(A) उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटियाँ
(B) भूमध्यरेखीय निम्न दाब पेटी
(C) उपध्रुवीय निम्न दाब पेटियाँ
(D) ध्रुवीय उच्च दाब पेटियाँ

80. उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) उन्हें कम से कम 26.5°C के गर्म समुद्री सतह तापमान की आवश्यकता होती है।
(B) वे संघनन की गुप्त ऊष्मा से अपनी ऊर्जा प्राप्त करते हैं।
(C) वे उष्णकटिबंधीय पेटी में भूमि और समुद्र दोनों पर बनते

Downloaded from www.pdf.tube

हैं।
(D) वे बहुत तीव्र वायुदाब प्रवणता से जुड़े होते हैं।

81. कोपेन की योजना के अनुसार निम्नलिखित में से किस जलवायु प्रकार की विशेषता शुष्क ग्रीष्म ऋतु है?
(A) Cs
(B) Af
(C) Am
(D) Cw

82. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): पर्वतों के पवनमुखी ढालों पर आमतौर पर पवनविमुख ढालों की तुलना में अधिक वर्षा होती है।
कारण (R): जैसे ही आर्द्र वायु पवनमुखी ढाल पर चढ़ती है, यह रुद्धोष्म रूप से ठंडी होती है, जिससे संघनन और वर्षण होता है, जबकि पवनविमुख ढाल पर उतरती हवा गर्म और शुष्क हो जाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

83. ओले किस प्रकार के बादल के भीतर बनते हैं?
(A) पक्षाम बादल
(B) स्तरी बादल
(C) कपासी वर्षी बादल
(D) वर्षा स्तरी बादल

84. फेरेल कोशिका कहाँ स्थित एक वायुमंडलीय परिसंचरण कोशिका है?
(A) उष्णकटिबंधीय क्षेत्र (0° से 30° अक्षांश)
(B) ध्रुवीय क्षेत्र (60° से 90° अक्षांश)
(C) समताप मंडल
(D) मध्य-अक्षांश (30° से 60° अक्षांश)

85. भूमंडलीय तापन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह पूर्व-औद्योगिक काल से देखे गए पृथ्वी के जलवायु तंत्र के दीर्घकालिक तापन को संदर्भित करता है।
2. इसका प्राथमिक कारण सूर्य की ऊर्जा उत्पादन में प्राकृतिक उतार-चढ़ाव है।
3. इसके कारण समुद्र के स्तर में वृद्धि और अधिक चरम मौसम जैसी घटनाएं होती हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

86. एक मौसम संबंधी सूखे को किसके द्वारा परिभाषित किया जाता है?
(A) नदी प्रवाह या भूजल स्तर में कमी।
(B) लंबी अवधि तक वर्षण की कमी।
(C) किसी विशेष फसल की जरूरतों को पूरा करने के लिए मिट्टी में नमी की कमी।
(D) जल की कमी का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव।

87. कौन सी वायुमंडलीय परत उच्चतम तापमान की विशेषता वाली है, जहाँ तापमान 1000°C से अधिक हो जाता है?
(A) क्षोभमंडल
(B) समताप मंडल
(C) मध्यमंडल
(D) तापमंडल

NODIA

88. तापमान के क्षैतिज वितरण को मानचित्र पर किसके उपयोग से सबसे प्रभावी ढंग से दिखाया जाता है?
(A) समताप रेखाएं
(B) समदाब रेखाएं
(C) समोच्च रेखाएं
(D) समवर्षा रेखाएं

89. निम्नलिखित में से कौन सी घटना प्रत्यक्ष रूप से ENSO चक्र से संबंधित नहीं है?
(A) एल नीनो
(B) ला नीना
(C) ध्रुवीय भंवर
(D) दक्षिणी दोलन

90. पृथ्वी के वायुमंडल में निम्नलिखित गैसों पर विचार कीजिए:
1. आर्गन
2. ऑक्सीजन
3. कार्बन डाइऑक्साइड
4. नाइट्रोजन

उपरोक्त गैसों को उनके आयतन के प्रतिशत के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 4, 2, 1, 3
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 4, 2, 3, 1

91. सतही महासागरीय धाराओं और वायुमंडलीय पवनों का प्राथमिक चालक बल क्या है?
(A) भू-तापीय ऊष्मा
(B) ज्वारीय बल
(C) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र
(D) विभेदी सौर तापन

92. वाताग्र बनने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) वाताग्रलयन
(B) वाताग्रजनन

(C) चक्रवातजनन
(D) संरोधन

93. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: स्थानीय पवन
P. फान
Q. मिस्ट्रल
R. सिरोको
S. बोरा
सूची II: विशेषता/क्षेत्र
1. एड्रियाटिक सागर के ऊपर उत्तर से चलने वाली ठंडी, शुष्क पवन
2. सहारा से भूमध्य सागर की ओर चलने वाली गर्म, धूल भरी पवन
3. आल्प्स से रोन घाटी की ओर चलने वाली ठंडी, शुष्क पवन
4. आल्प्स के पवनविमुख ढाल पर गर्म, शुष्क पवन
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

94. जब किसी स्थान से शीत वाताग्र गुजरता है, तो मौसम में सबसे संभावित परिवर्तन क्या होता है?
(A) तापमान में धीरे-धीरे वृद्धि और हल्की, लगातार बारिश।
(B) स्थिर तापमान के साथ बूंदाबांदी और कोहरे की लंबी अवधि।
(C) स्वच्छ आकाश और पवन की गति में कमी।
(D) तापमान में तेजी से गिरावट और पवन की दिशा में अचानक बदलाव।

95. कोपेन की योजना में, अक्षर 'E' का उपयोग किसे दर्शाने के लिए किया जाता है?
(A) ध्रुवीय जलवायु
(B) विषुवतीय जलवायु
(C) शुष्क जलवायु
(D) शीतोष्ण जलवायु

96. पृथ्वी के वायुमंडल और महासागरों के औसत तापमान में क्रमिक वृद्धि को सबसे सही रूप में क्या कहा जाता है?
(A) ओजोन क्षरण
(B) अम्लीय वर्षा
(C) एल नीनो
(D) भूमंडलीय तापन

97. सर्दियों में उत्तरी कनाडा के ऊपर बनने वाली वायु राशि को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) mT (समुद्री उष्णकटिबंधीय)
(B) cP (महाद्वीपीय ध्रुवीय)
(C) mP (समुद्री ध्रुवीय)
(D) cT (महाद्वीपीय उष्णकटिबंधीय)

98. क्षोभमंडल में 'सामान्य ह्रास दर' लगभग कितनी होती है?
(A) प्रति 1000 मीटर पर 6.5°C की कमी
(B) प्रति 1000 मीटर पर 6.5°C की वृद्धि
(C) प्रति 1000 मीटर पर 1°C की कमी
(D) प्रति 1000 मीटर पर 1°C की वृद्धि

99. निम्नलिखित में से कौन सा वाताग्र वर्षा का उदाहरण है?
(A) कांगो बेसिन में दोपहर की बौछारें।
(B) मानसून के दौरान मुंबई के तट पर भारी वर्षा।
(C) शीतोष्ण चक्रवात से जुड़ी वर्षा।
(D) पेटागोनिया में वर्षा छाया प्रभाव।

100. तापमान के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: विश्व भर में तापमान का वितरण मुख्य रूप से अक्षांश द्वारा नियंत्रित होता है।
कथन II: अन्य कारक जैसे ऊंचाई, समुद्र से दूरी और महासागरीय धाराएं भी तापमान वितरण को महत्वपूर्ण रूप से संशोधित करती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

101. मानचित्र पर एक 'आइसोक्रोन' किन बिंदुओं को जोड़ती है?
(A) समान वायुदाब
(B) समान तापमान
(C) समान यात्रा समय
(D) समान वर्षण

102. तड़ित झंझा के जीवन चक्र की परिपक्व अवस्था की विशेषता कौन सी है?
(A) बादल में केवल आरोही वायु धाराएं मौजूद होती हैं।
(B) शक्तिशाली आरोही और अवरोही वायु धाराएं दोनों एक साथ मौजूद होती हैं।
(C) केवल अवरोही वायु धाराएं मौजूद होती हैं, और तूफान समाप्त हो रहा होता है।
(D) बादल अभी भी अपने प्रारंभिक कपासी निर्माण चरण में है।

103. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): समताप रेखाएं सामान्यतः अक्षांशों के समानांतर चलती हैं।
कारण (R): पृथ्वी की सतह द्वारा प्राप्त सूर्यातप की मात्रा मुख्य रूप से अक्षांश का परिणाम होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

Click Here to Buy book on Amazon

(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

104. निम्नलिखित में से कौन सी उष्णकटिबंधीय चक्रवात के निर्माण की स्थिति नहीं है?
(A) एक शक्तिशाली ऊर्ध्वाधर पवन कर्तन
(B) पहले से मौजूद निम्न दाब क्षेत्र
(C) पर्याप्त रूप से गर्म समुद्री सतह तापमान
(D) एक महत्वपूर्ण कोरिओलिस बल

105. वायु राशियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वायु राशि का स्रोत क्षेत्र एक विस्तृत क्षेत्र होना चाहिए जिसमें समान सतह विशेषताएं हों।
2. एक बार बनने के बाद वायु राशि स्थिर रहती है और गति नहीं करती है।
3. वायु राशियों को उनकी नमी की मात्रा और तापमान के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

106. वाताग्र के समाप्त होने को क्या कहा जाता है?
(A) वाताग्रलयन
(B) वाताग्रजनन
(C) संरोधन
(D) अभिसरण

107. 'ध्रुवीय वाताग्र' किन दो वायु राशियों के बीच की सीमा है?
(A) दो अलग-अलग उष्णकटिबंधीय वायु राशियाँ
(B) समुद्री ध्रुवीय और महाद्वीपीय ध्रुवीय वायु
(C) दो अलग-अलग आर्कटिक वायु राशियाँ
(D) ठंडी ध्रुवीय वायु और गर्म उष्णकटिबंधीय वायु

108. थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण में, पूरे वर्ष भारी आर्द्रता अधिशेष वाले क्षेत्र को किस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) शुष्क
(B) अति-आर्द्र
(C) अर्ध-शुष्क
(D) उप-आर्द्र

109. समताप मंडल में ओजोन क्षरण का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) पराबैंगनी प्रकाश के साथ ऑक्सीजन की अभिक्रिया।
(B) सौर विकिरण द्वारा मीथेन गैस का अपघटन।
(C) क्लोरीन और ब्रोमीन यौगिकों से जुड़ी उत्प्रेरक अभिक्रियाएं।
(D) ऊपरी वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की वृद्धि।

110. एक कैटाबेटिक पवन एक प्रकार की स्थानीय पवन है जो:
(A) दिन के दौरान घाटी या पहाड़ के ढाल पर ऊपर की ओर चलती है।
(B) पवनविमुख ढाल से नीचे उतरने वाली एक गर्म, शुष्क पवन है।
(C) दिन के समय समुद्र से भूमि की ओर चलती है।
(D) गुरुत्वाकर्षण और रात के शीतलन के कारण ढाल से नीचे की ओर चलती है।

111. सामान्य परिसंचरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) फेरेल कोशिकाएं हेडली और ध्रुवीय कोशिकाओं द्वारा संचालित होती हैं।
(B) हेडली कोशिकाएं तापीय रूप से अप्रत्यक्ष परिसंचरण हैं।
(C) ध्रुवीय कोशिकाएं मध्य-अक्षांशों में स्थित होती हैं।
(D) सामान्य परिसंचरण में केवल दो कोशिकाएं होती हैं।

112. चक्रवातीय तूफान का सबसे हिंसक और विनाशकारी प्रकार, जो आकार में छोटा होता है, वह है:
(A) हरिकेन
(B) शीतोष्ण चक्रवात
(C) टाइफून
(D) टॉरनेडो

113. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: शब्द
P. एल्बिडो
Q. सूर्यातप
R. पार्थिव विकिरण
S. ऊष्मा बजट
सूची II: परिभाषा
1. आने वाला सौर विकिरण
2. आने वाली और बाहर जाने वाली ऊष्मा के बीच संतुलन
3. पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित दीर्घ-तरंग विकिरण
4. किसी सतह द्वारा परावर्तित विकिरण का अनुपात
कोड:
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

114. 'गरजती चालीसा', 'भयंकर पचासा' और 'चीखती साठा' किन शक्तिशाली पवनों के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द हैं?
(A) दक्षिणी गोलार्ध में पछुआ पवनें
(B) उत्तरी गोलार्ध में व्यापारिक पवनें
(C) आर्कटिक में ध्रुवीय पूर्वी पवनें
(D) हिंद महासागर में मानसून

115. कृषि संबंधी सूखा तब होता है जब:
(A) वर्षण में लंबी अवधि तक कमी रहती है।

NODIA

(B) नदी और जलाशय का स्तर गंभीर रूप से कम होता है।
(C) मिट्टी की नमी फसल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होती है।
(D) जल की कमी का आर्थिक प्रभाव व्यापक हो जाता है।

116. कोपेन के वर्गीकरण में, तीसरा अक्षर 'a' क्या दर्शाता है?
(A) ठंडी ग्रीष्म ऋतु
(B) शुष्क शीत ऋतु
(C) कोई शुष्क मौसम नहीं
(D) गर्म ग्रीष्म ऋतु

117. निम्नलिखित में से कौन सी वायुमंडलीय परत अधिकांश उल्कापिंडों को जलाकर पृथ्वी पर जीवन की रक्षा करती है?
(A) क्षोभमंडल
(B) समताप मंडल
(C) मध्यमंडल
(D) तापमंडल

118. एक ऋणात्मक दक्षिणी दोलन सूचकांक सामान्यतः किससे संबंधित होता है?
(A) ला नीना स्थितियाँ
(B) एल नीनो स्थितियाँ
(C) सामान्य प्रशांत स्थितियाँ
(D) एक शक्तिशाली ध्रुवीय भंवर

119. निम्नलिखित मौसम की घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. ओलावृष्टि
2. तड़ित झंझा
3. टॉरनेडो

उपरोक्त में से कौन सी घटनाएं आमतौर पर तीव्र संवहनीय गतिविधि और कपासी वर्षी बादलों से जुड़ी होती हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

120. इनमें से कौन सी उष्ण वाताग्र की विशेषता नहीं है?
(A) वाताग्र गुजरने के बाद तापमान में तेजी से गिरावट।
(B) वाताग्र की सतह का हल्का ढाल।
(C) वर्षा स्तरी बादल जो मध्यम, व्यापक वर्षा करते हैं।
(D) सतही वाताग्र से बहुत आगे आकाश में ऊँचाई पर पक्षाम बादलों का दिखाई देना।

121. तापमंडल को आयनमंडल के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि:
(A) इसका तापमान स्थिर रहता है।
(B) यहाँ ध्रुवीय ज्योति घटित होती है।
(C) इसमें विद्युत आवेशित कण होते हैं।
(D) यह वायुमंडल की सबसे बाहरी परत है।

122. पर्वतीय वर्षा के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
1. पवन पवनविमुख ढाल पर नीचे उतरती है, गर्म होती है और शुष्क हो जाती है।
2. आर्द्र पवन को पर्वतीय बाधा पर चढ़ने के लिए मजबूर किया जाता है।
3. पवन रुद्धोष्म रूप से ठंडी होती है, जिससे संघनन और बादलों का निर्माण होता है।
4. पवनमुखी ढाल पर भारी वर्षा होती है।

उपरोक्त चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 2, 3, 4, 1
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 2, 4, 1

123. निम्नलिखित में से कौन सा वायुमंडलीय दबाव और पवन के बीच संबंध का सही वर्णन करता है?
(A) पवन निम्न दाब वाले क्षेत्रों से उच्च दाब वाले क्षेत्रों की ओर बहती है।
(B) वायुदाब प्रवणता जितनी तीव्र होगी, पवन उतनी ही कमजोर होगी।
(C) कोरिओलिस प्रभाव पवन की गति निर्धारित करता है।
(D) पवन उच्च दाब से निम्न दाब की ओर वायु का क्षैतिज संचलन है।

124. शीतोष्ण चक्रवात की ऊर्जा का मुख्य स्रोत क्या है?
(A) गर्म महासागर से संघनन की गुप्त ऊष्मा।
(B) वायु राशियों के बीच क्षैतिज तापमान विषमता।
(C) पृथ्वी की सतह से भू-तापीय ऊर्जा।
(D) सौर विकिरण का प्रत्यक्ष अवशोषण।

125. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): तापमान व्युत्क्रमण में, वायु बहुत स्थिर होती है और ऊर्ध्वाधर मिश्रण बाधित होता है।
कारण (R): व्युत्क्रमण में, गर्म वायु ठंडी वायु के ऊपर स्थित होती है, जो संवहन को रोकती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

126. कोपेन प्रणाली में, BSh जलवायु को इस प्रकार वर्णित किया गया है:
(A) गर्म मरुस्थल
(B) ठंडा मरुस्थल
(C) ठंडी स्टेपी
(D) गर्म स्टेपी

127. क्रायोस्फीयर पर भूमंडलीय तापन का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव क्या है?
(A) ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों का पिघलना।
(B) उच्च ऊंचाई पर हिमपात में वृद्धि।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) पर्माफ्रॉस्ट का विस्तार।
(D) आर्कटिक में समुद्री बर्फ का मोटा होना।

128. दक्षिणी दोलन सूचकांक का धनात्मक मान किस घटना का सूचक है?
(A) एल नीनो
(B) व्यापारिक पवनों का कमजोर होना
(C) प्रशांत महासागर के गर्म जल का पूर्व की ओर खिसकना
(D) ला नीना

129. वायुमंडल के संगठन के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) ऑक्सीजन वायुमंडल की सबसे अक्रिय गैस है।
(B) धूल के कण संघनन के लिए आर्द्रताग्राही नाभिक के रूप में कार्य करते हैं।
(C) जलवाष्प का प्रतिशत क्षोभसीमा तक स्थिर रहता है।
(D) ओजोन आयतन के अनुसार क्षोभमंडल में सर्वाधिक मात्रा में पाई जाती है।

130. हरिकेन की "चक्षु भित्ति" वह स्थान है जहाँ:
(A) पवनें सबसे शक्तिशाली और वर्षा सबसे तीव्र होती है।
(B) मौसम सबसे शांत होता है।
(C) दबाव सबसे अधिक होता है।
(D) तूफान समाप्त होना शुरु होता है।

131. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: चक्रवात का नाम
P. हरिकेन
Q. टाइफून
R. चक्रवात
S. विली-विली
सूची II: क्षेत्र
1. हिंद महासागर
2. उत्तर-पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया
3. उत्तर-पश्चिमी प्रशांत महासागर
4. उत्तरी अटलांटिक महासागर
कोड:
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

132. उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटियाँ किसके कारण बनती हैं?
(A) ध्रुवों के पास अत्यधिक गर्मी और वायु का ऊपर उठना।
(B) ध्रुवों पर ठंडी, सघन वायु का नीचे बैठना।
(C) 60 डिग्री पर कोरिओलिस प्रभाव का सबसे मजबूत होना।
(D) पछुआ पवनों और ध्रुवीय पूर्वी पवनों का अभिसरण।

133. ऊष्मा स्थानांतरण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वायुमंडल की निचली परतों को गर्म करने के लिए चालन सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।
कथन II: वायुमंडल आने वाले लघु-तरंग विकिरण के लिए काफी हद तक पारदर्शी है लेकिन बाहर जाने वाले दीर्घ-तरंग विकिरण का एक प्रभावी अवशोषक है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

134. एक जलविज्ञानी सूखे को सबसे अच्छी तरह से इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) वर्षा की लंबी कमी।
(B) फसलों को प्रभावित करने वाली मिट्टी की नमी में कमी।
(C) जल की कमी के कारण व्यापक आर्थिक नुकसान।
(D) नदियों, झीलों और भूजल में जल का निम्न स्तर।

135. कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना का प्राथमिक आधार क्या है?
(A) वायु राशि विश्लेषण और वाताग्र क्षेत्र।
(B) संभावित वाष्पोत्सर्जन और आर्द्रता सूचकांक।
(C) पवन प्रतिरूप और वायुमंडलीय दबाव।
(D) तापमान और वर्षण के वार्षिक और मासिक औसत।

136. 'ओजोन छिद्र' ओजोन परत का एक मौसमी पतला होना है, जो सबसे अधिक कहाँ स्पष्ट होता है?
(A) अंटार्कटिका
(B) आर्कटिक
(C) भूमध्य रेखा
(D) हिमालय

137. निम्नलिखित में से कौन सा एक ठंडी स्थानीय पवन का उदाहरण है?
(A) लू
(B) चिनूक
(C) मिस्ट्रल
(D) फान

138. शीत वाताग्र द्वारा उष्ण वाताग्र को अतिक्रमित करने और उसे ऊपर उठाने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) संरोधन
(B) वाताग्रजनन
(C) अपसरण
(D) स्थिरता

139. स्थानीय पवनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. समुद्र समीर दिन के दौरान तब चलती है जब भूमि निकटवर्ती समुद्र की तुलना में तेजी से गर्म होती है।
2. स्थल समीर आमतौर पर समुद्र समीर की तुलना में अधिक शक्तिशाली होती है।

NODIA

3. घाटी समीर पर्वतीय ढालों के दिन के तापन के कारण ऊपर की ओर चलने वाली पवनें हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

140. मौसम की उथल-पुथल से बचने के लिए अधिकांश वाणिज्यिक विमान किस वायुमंडलीय परत में उड़ते हैं?
(A) क्षोभमंडल
(B) निचला समताप मंडल
(C) मध्यमंडल
(D) तापमंडल

141. यदि वायु राशि को cT के रूप में वर्गीकृत किया गया है, तो वह है:
(A) ठंडी और आर्द्र
(B) ठंडी और शुष्क
(C) गर्म और शुष्क
(D) गर्म और आर्द्र

142. गैस से सीधे ठोस में अवस्था परिवर्तन को कहा जाता है:
(A) वाष्पीकरण
(B) संघनन
(C) ऊर्ध्वपातन
(D) निक्षेपण

143. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र सूर्य की आभासी गति के साथ उत्तर और दक्षिण की ओर खिसकता है।
कारण (R): ITCZ अधिकतम सौर सूर्यातप और तापीय तापन का क्षेत्र है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

144. पृथ्वी की सतह पर तापमान के वितरण को नियंत्रित करने में कौन सा कारक सबसे कम महत्वपूर्ण है?
(A) अक्षांश
(B) ऊंचाई
(C) स्थल और जल का वितरण
(D) देशांतर

145. उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण चक्रवातों के बीच एक प्राथमिक अंतर यह है कि:
(A) उष्णकटिबंधीय चक्रवात व्यास में बहुत बड़े होते हैं।
(B) उष्णकटिबंधीय चक्रवात तापीय निम्न दाब हैं; शीतोष्ण चक्रवात गतिक होते हैं।
(C) शीतोष्ण चक्रवातों में एक विशिष्ट चक्षु होती है।
(D) शीतोष्ण चक्रवात केवल भूमि पर बनते हैं।

146. निम्नलिखित में से कौन सी एक प्रमुख ग्रीनहाउस गैस नहीं है?
(A) नाइट्रोजन (N_2)
(B) कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)
(C) मीथेन (CH_4)
(D) जलवाष्प (H_2O)

147. थॉर्नथवेट के 1948 के वर्गीकरण तंत्र ने किसकी अवधारणा पेश करके अपने पिछले कार्य में सुधार किया?
(A) P/E सूचकांक
(B) तापीय दक्षता
(C) संभावित वाष्पोत्सर्जन
(D) जलवायु संकेतक के रूप में वनस्पति

148. मौसम मानचित्र पर समान वायुमंडलीय दबाव वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा है:
(A) समताप रेखा
(B) समवर्षा रेखा
(C) समकोण रेखा
(D) समदाब रेखा

149. तड़ित झंझा की 'क्षय अवस्था' में किसकी प्रधानता होती है?
(A) शक्तिशाली आरोही वायु धाराएं
(B) आरोही और अवरोही वायु धाराओं का संतुलन
(C) अवरोही वायु धाराएं और हल्की वर्षा
(D) ओलों का निर्माण

150. उत्तरी गोलार्ध में निम्नलिखित वायुमंडलीय वायुदाब पेटियों पर विचार कीजिए:
1. उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब
2. उपध्रुवीय निम्न दाब
3. भूमध्यरेखीय निम्न दाब
4. ध्रुवीय उच्च दाब

उपरोक्त पेटियों को भूमध्य रेखा से ध्रुव की ओर व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 3, 1, 2, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 4, 2

151. निम्नलिखित में से किस सतह का एल्बिडो सबसे अधिक होगा?
(A) एक घना जंगल
(B) एक काली डामर वाली सड़क
(C) एक शांत महासागर की सतह
(D) ताजी गिरी हुई बर्फ

152. 'वॉकर परिसंचरण' वायुमंडलीय परिसंचरण का एक प्रमुख घटक है जो किससे संबंधित है?

Click Here to Buy book on Amazon

(A) ENSO चक्र
(B) शीतोष्ण चक्रवातों का निर्माण
(C) ध्रुवीय भंवर
(D) भारतीय मानसून

153. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: वाताग्र का प्रकार
P. शीत वाताग्र
Q. उष्ण वाताग्र
R. अचर वाताग्र
S. संरोधित वाताग्र
सूची II: मौसम मानचित्र पर प्रतीक
1. संचलन की दिशा में संकेत करते हुए अर्धवृत्तों वाली एक रेखा।
2. विपरीत दिशाओं में बारी-बारी से त्रिभुजों और अर्धवृत्तों वाली एक रेखा।
3. संचलन की दिशा में संकेत करते हुए त्रिभुजों वाली एक रेखा।
4. एक ही दिशा में संकेत करते हुए अर्धवृत्तों और त्रिभुजों वाली एक रेखा।
कोड:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

154. मौसम के संबंध में वायुमंडल में धूल के कणों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका क्या है?
(A) वे बादलों के निर्माण के लिए संघनन नाभिक के रूप में कार्य करते हैं।
(B) वे आने वाले सभी सौर विकिरण को अवशोषित करते हैं।
(C) वे पवन का प्राथमिक कारण हैं।
(D) वे ओजोन परत के मुख्य घटक हैं।

155. निम्नलिखित में से कौन सा कोपेन जलवायु प्रकार टुंड्रा जलवायु के रूप में जाना जाता है?
(A) Df
(B) Cw
(C) Bw
(D) ET

156. उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों और ध्रुवों के बीच ऊष्मा असंतुलन मुख्य रूप से किसके द्वारा ठीक किया जाता है?
(A) ज्वालामुखी विस्फोट और भू-तापीय गतिविधि।
(B) वायुमंडलीय और महासागरीय परिसंचरण।
(C) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र।
(D) ग्रीनहाउस प्रभाव।

157. एल नीनो घटना के दौरान, आमतौर पर निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति देखी जाती है?
(A) पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में मजबूत व्यापारिक पवनें और ठंडा जल।
(B) पेरू के तट पर ठंडे जल के अपवेलिंग में वृद्धि।
(C) पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में कमजोर व्यापारिक पवनें और गर्म जल।
(D) पेरू में सूखा और इंडोनेशिया में भारी बारिश।

158. शीतोष्ण चक्रवातों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: शीतोष्ण चक्रवात एक सममित तूफान है जिसमें केंद्र में सबसे शक्तिशाली पवनें होती हैं।
कथन II: शीतोष्ण चक्रवात एक वाताग्र के साथ दो विपरीत वायु राशियों के अभिसरण के कारण बनता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

159. 'क्षोभसीमा' किन दो वायुमंडलीय परतों के बीच की सीमा है?
(A) क्षोभमंडल और समताप मंडल
(B) समताप मंडल और मध्यमंडल
(C) मध्यमंडल और तापमंडल
(D) तापमंडल और बाह्यमंडल

160. ऊष्मा बजट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आने वाले सौर विकिरण की 100 इकाइयों में से पृथ्वी की सतह लगभग 51 इकाइयों को अवशोषित करती है।
2. वायुमंडल प्रत्यक्ष सूर्यातप की तुलना में पार्थिव विकिरण द्वारा अधिक गर्म होता है।
3. पृथ्वी का एल्बिडो इसकी सतह द्वारा अवशोषित ऊर्जा को संदर्भित करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

161. जल के अवस्था परिवर्तन के दौरान मुक्त या अवशोषित होने वाली ऊर्जा कहलाती है:
(A) बोधगम्य ऊष्मा
(B) गुप्त ऊष्मा
(C) विशिष्ट ऊष्मा
(D) अभिवहित ऊष्मा

162. कोपेन 'Am' जलवायु की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) भारी वर्षा द्वारा संतुलित एक छोटी शुष्क ऋतु।
(B) बिना किसी शुष्क ऋतु वाला वास्तविक उष्णकटिबंधीय वर्षावन।
(C) सवाना वनस्पति वाली एक विशिष्ट शुष्क ऋतु।
(D) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली शुष्क जलवायु।

Downloaded from www.pdf.tube

163. तड़ित झंझा को 'भीषण तड़ित झंझा' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि यह निम्नलिखित में से एक या अधिक उत्पन्न करता है, सिवाय:
(A) 58 मील प्रति घंटे या उससे अधिक की पवनें
(B) 1 इंच व्यास या उससे बड़े ओले
(C) एक घंटे से अधिक समय तक लगातार हल्की बारिश
(D) एक टॉरनेडो

164. उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियाँ किसके क्षेत्र हैं?
(A) आरोही वायु और भारी वर्षा।
(B) अभिसारी सतही पवनें और तूफान।
(C) शक्तिशाली, निरंतर पछुआ पवनें।
(D) नीचे उतरती वायु और शांत, शुष्क स्थिति।

165. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): आर्कटिक समुद्री बर्फ का पिघलना वैश्विक समुद्र स्तर की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
कारण (R): आर्कटिक समुद्री बर्फ जमे हुए समुद्री जल से बनती है और पहले से ही महासागर में तैर रही है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

166. एक mP वायु राशि का सबसे अच्छा वर्णन है:
(A) गर्म और आर्द्र
(B) ठंडी और आर्द्र
(C) गर्म और शुष्क
(D) ठंडी और शुष्क

167. वह बल जो पवन के रूप में वायु की गति को प्रारंभ करता है, वह है:
(A) कोरिओलिस बल
(B) घर्षण बल
(C) अपकेंद्रीय बल
(D) वायुदाब प्रवणता बल

168. डोलड्रम्स में किस प्रकार की वर्षा सबसे आम है?
(A) संवहनीय
(B) पर्वतीय
(C) वाताग्र
(D) अभिवहनीय

169. 'सैफिर-सिम्पसन स्केल' का उपयोग किसकी तीव्रता को वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है?
(A) टॉरनेडो
(B) भूकंप
(C) हरिकेन
(D) तड़ित झंझा

170. निम्नलिखित में से कौन सा भूमंडलीय तापन का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं है?
(A) समुद्र के स्तर में वृद्धि
(B) ओजोन परत का क्षरण
(C) लू की आवृत्ति में वृद्धि
(D) वर्षण प्रतिरूप में परिवर्तन

171. गर्मियों में भारत के उत्तरी मैदानों को प्रभावित करने वाली "लू" एक प्रकार की है:
(A) ठंडी और शुष्क पवन
(B) गर्म और शुष्क स्थानीय पवन
(C) आर्द्र समुद्री समीर
(D) कैटाबेटिक पवन

172. तड़ित झंझा कोशिका के जीवन चक्र के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
1. परिपक्व अवस्था
2. कपासी अवस्था
3. क्षय अवस्था
उपरोक्त चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 2, 1, 3
(D) 3, 1, 2

173. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: अवधारणा
P. तापमान और वर्षण पर आधारित जलवायु वर्गीकरण
Q. संभावित वाष्पोत्सर्जन पर आधारित जलवायु वर्गीकरण
R. तीन कोशिकाओं वाला सामान्य परिसंचरण मॉडल
S. दक्षिणी दोलन की खोज
सूची II: संबंधित वैज्ञानिक/योजना
1. गिल्बर्ट वॉकर
2. सी.डब्ल्यू. थॉर्नथवेट
3. व्लादिमीर कोपेन
4. जॉर्ज हेडली / विलियम फेरेल
कोड:
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

174. कौन सा कथन समताप मंडल का सटीक वर्णन करता है?
(A) सभी मौसम संबंधी घटनाएं इसी परत में होती हैं।
(B) ऊंचाई के साथ तापमान लगातार घटता जाता है।
(C) यह वायुमंडल की सबसे सघन परत है।
(D) इसमें ओजोन परत होती है जो तापमान बढ़ाती है।

175. लू और शीत लहर के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?

NODIA

(A) मौसमी सामान्य से तापमान का विचलन।
(B) पवन की दिशा।
(C) वर्षण की मात्रा।
(D) वायुमंडलीय आर्द्रता का स्तर।

176. इनमें से कौन से गलत युग्म की पहचान की गई है?
(A) एल नीनो - पूर्वी प्रशांत का गर्म होना
(B) ला नीना - पूर्वी प्रशांत का ठंडा होना
(C) दक्षिणी दोलन - ताहिती और डार्विन के बीच दबाव का अंतर
(D) ENSO - ध्रुवीय भंवर स्थिरता से जुड़ा है

177. 'वाताग्रलयन' शब्द का तात्पर्य है:
(A) वाताग्र का कमजोर होना या समाप्त होना।
(B) एक नए वाताग्र का निर्माण।
(C) मौजूदा वाताग्र का तीव्र होना।
(D) एक वाताग्र को दूसरे द्वारा ऊपर उठाया जाना।

178. विकिरण के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: पृथ्वी मुख्य रूप से लघु-तरंग विकिरण के रूप में ऊर्जा विकीर्ण करती है।
कथन II: सूर्य मुख्य रूप से दीर्घ-तरंग विकिरण के रूप में ऊर्जा विकीर्ण करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

179. कोरिओलिस बल कहाँ शून्य होता है?
(A) ध्रुवों पर
(B) कर्क रेखा पर
(C) भूमध्य रेखा पर
(D) प्रधान मध्याह्न रेखा पर

180. वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह मौलिक रूप से पृथ्वी की सतह के असमान तापन द्वारा संचालित होता है।
2. हेडली कोशिका एक तापीय रूप से प्रत्यक्ष कोशिका है जहाँ गर्म वायु भूमध्य रेखा पर ऊपर उठती है और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में नीचे बैठती है।
3. फेरेल कोशिका एक तापीय रूप से अप्रत्यक्ष कोशिका है, जो हेडली और ध्रुवीय कोशिकाओं के बीच एक गियर की तरह कार्य करती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

181. एक 'वर्षा-छाया' क्षेत्र कहाँ पाया जाता है?
(A) पहाड़ के पवनमुखी ढाल पर, जहाँ भारी वर्षा होती है।
(B) पहाड़ की चोटी पर, जहाँ वर्षा के लिए बहुत अधिक ठंड होती है।
(C) पर्वत श्रृंखला के शुष्क पवनविमुख ढाल पर।
(D) ठंडी महासागरीय धारा के निकट तटीय क्षेत्र में।

182. मौसम मानचित्र पर एक 'अचर वाताग्र' इंगित करता है कि:
(A) एक बड़ा तूफान गति नहीं कर रहा है।
(B) वायु शांत है और कोई पवन नहीं है।
(C) एक बड़े क्षेत्र में तापमान स्थिर है।
(D) दो वायु राशियों के बीच की सीमा गति नहीं कर रही है।

183. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): एक ही अक्षांश पर महासागरों की तुलना में महाद्वीपों पर तापमान का वार्षिक तापांतर बहुत अधिक होता है।
कारण (R): जल की विशिष्ट ऊष्मा भूमि की तुलना में अधिक होती है, जिसका अर्थ है कि यह धीरे-धीरे गर्म होता है और धीरे-धीरे ठंडा होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

184. कोपेन जलवायु पदनाम 'Dfc' ऐसी जलवायु का वर्णन करेगा जो है:
(A) ठंडी ग्रीष्म ऋतु और बिना किसी शुष्क मौसम वाली उप-आर्कटिक।
(B) गर्म ग्रीष्म ऋतु वाली आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय।
(C) बिना किसी वास्तविक ग्रीष्म ऋतु वाली टुंड्रा।
(D) शुष्क शीत ऋतु वाली उष्णकटिबंधीय सवाना।

185. व्यापारिक पवनों और ला नीना घटना के बीच कार्य-कारण संबंध क्या है?
(A) सामान्य से कमजोर व्यापारिक पवनें ला नीना का कारण बनती हैं।
(B) व्यापारिक पवनों की दिशा उलट जाती है, जिससे ला नीना होती है।
(C) ला नीना चक्र पर व्यापारिक पवनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) मजबूत व्यापारिक पवनें ला नीना की घटनाओं की विशेषता हैं।

186. निम्नलिखित में से कौन सा वर्षण का एक प्रकार नहीं है?
(A) ओस
(B) वर्षा
(C) हिमपात
(D) ओला

Click Here to Buy book on Amazon

187. उपोष्णकटिबंधीय जेट स्ट्रीम आमतौर पर किस अक्षांश के पास ऊपरी क्षोभमंडल में पाई जाती है?
(A) 0°
(B) 30°
(C) 60°
(D) 90°

188. तापमान व्युत्क्रमण वायु प्रदूषण की समस्याओं को बढ़ा सकता है क्योंकि यह:
(A) प्रदूषकों के साथ रासायनिक अभिक्रिया करके उन्हें अधिक विषैला बना देता है।
(B) प्रदूषकों को भूमि के पास रोक लेता है, जिससे उनका प्रसार नहीं हो पाता।
(C) प्रदूषकों को तेजी से समताप मंडल में ऊपर उठाता है।
(D) वायु की गति को बढ़ाता है, जिससे प्रदूषक व्यापक क्षेत्र में फैल जाते हैं।

189. निम्नलिखित में से कौन सी वायु राशि के स्रोत क्षेत्र की प्रमुख विशेषता है?
(A) पहाड़ी और उबड़-खाबड़ भूभाग
(B) भूमि और महासागर के बीच एक सीमा क्षेत्र
(C) एक विस्तृत क्षेत्र में समान सतह गुण
(D) शक्तिशाली, परिवर्तनशील पवनों वाला क्षेत्र

190. उष्ण वाताग्र के आने पर देखे जाने वाले बादलों का सबसे सामान्य क्रम क्या है?
(A) कपासी वर्षी → वर्षा स्तरी → पक्षाम
(B) पक्षाम → पक्षाम स्तरी → मध्य स्तरी → वर्षा स्तरी
(C) वर्षा स्तरी → स्तरी → कोहरा
(D) कपासी → मध्य कपासी → पक्षाम कपासी

191. वायुमंडल का प्राथमिक ऊर्ध्वाधर स्तरीकरण किस पर आधारित है?
(A) तापमान
(B) संगठन
(C) दबाव
(D) घनत्व

192. कौन से दो तत्व स्वच्छ, शुष्क वायु के आयतन का लगभग 99% हिस्सा बनाते हैं?
(A) नाइट्रोजन और कार्बन डाइऑक्साइड
(B) ऑक्सीजन और आर्गन
(C) ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड
(D) नाइट्रोजन और ऑक्सीजन

193. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: कोपेन जलवायु
P. Af
Q. BWh
R. Csa
S. Dwd
सूची II: प्राथमिक विशेषता
1. गर्म मरुस्थल
2. भीषण शीत ऋतु, शुष्क शीत ऋतु, अत्यंत ठंडी ग्रीष्म ऋतु
3. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
4. भूमध्यसागरीय, गर्म शुष्क ग्रीष्म ऋतु
कोड:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

194. हरिकेन को शक्ति प्रदान करने वाला ऊर्जा स्रोत क्या है?
(A) संघनित होते जलवाष्प से गुप्त ऊष्मा का विमोचन।
(B) ध्रुवीय और उष्णकटिबंधीय वायु के बीच तापमान विषमता।
(C) शक्तिशाली ऊपरी स्तर की पवनें।
(D) पृथ्वी का घूर्णन।

195. कौन सा कथन संरोधित वाताग्र का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) वह सीमा जहाँ एक उष्ण वाताग्र और शीत वाताग्र मिलते हैं और गति करना बंद कर देते हैं।
(B) एक गर्म वायु राशि का अग्र भाग जो ठंडी वायु राशि के ऊपर सरकता है।
(C) एक शीत वाताग्र एक उष्ण वाताग्र से आगे निकल जाता है और उसे भूमि से ऊपर उठा देता है।
(D) स्वच्छ आकाश और शांत मौसम की विशेषता वाला वाताग्र।

196. 'ग्रीनहाउस प्रभाव' एक प्राकृतिक घटना है, लेकिन 'भूमंडल तापन' किसके द्वारा इसके बढ़ने को संदर्भित करता है?
(A) प्राकृतिक ज्वालामुखी उत्सर्जन
(B) सौर प्रज्वल
(C) पृथ्वी की कक्षा में परिवर्तन
(D) मानवजनित गतिविधियाँ

197. तड़ित झंझा बनने के लिए इनमें से कौन सा आवश्यक घटक है?
(A) एक स्थिर वायुमंडल
(B) एक शक्तिशाली तापमान व्युत्क्रमण
(C) नमी, वायुमंडलीय अस्थिरता और एक उत्थान तंत्र
(D) एक बड़ा, समतल भूमि क्षेत्र

198. पवनों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: व्यापारिक पवनें और पछुआ पवनें जैसी भूमंडलीय पवनें वैश्विक सामान्य परिसंचरण का हिस्सा हैं।
कथन II: समुद्र समीर और पर्वत समीर जैसी स्थानीय पवनें विश्व भर में बड़े पैमाने पर दबाव के अंतर के कारण होती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

NODIA

(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

199. "डोलड्रम्स" की विशेषता है:
(A) शक्तिशाली, निरंतर पछुआ पवनें।
(B) ठंडी, नीचे उतरती वायु और उच्च दाब।
(C) पछुआ पवनों और ध्रुवीय पूर्वी पवनों का अभिसरण।
(D) शांत पवनें और ऊपर उठती वायु।

200. ओजोन क्षरण के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. क्लोरीन और ब्रोमीन परमाणु ओजोन अणुओं को नष्ट करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं।
2. इन परमाणुओं का प्राथमिक स्रोत प्राकृतिक रूप से होने वाले ज्वालामुखी विस्फोट हैं।
3. यह प्रक्रिया ध्रुवीय समतापमंडलीय बादलों की उपस्थिति में सबसे प्रभावी होती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

201. निम्नलिखित में से कौन सा पृथ्वी की सतह से ऊंचाई के बढ़ते क्रम में वायुमंडलीय परतों के सही अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) समताप मंडल, मध्यमंडल, क्षोभमंडल, तापमंडल
(B) क्षोभमंडल, मध्यमंडल, समताप मंडल, तापमंडल
(C) क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्यमंडल, तापमंडल
(D) मध्यमंडल, क्षोभमंडल, तापमंडल, समताप मंडल

202. वायुदाब प्रवणता बल उच्च दाब से निम्न दाब की ओर निर्देशित होता है और समदाब रेखाओं के _____ होता है।
(A) लंबवत
(B) समानांतर
(C) 45-डिग्री के कोण पर
(D) स्पर्शरेखीय

203. चक्रवात के विकास का 'ध्रुवीय वाताग्र सिद्धांत' सबसे पहले किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?
(A) व्लादिमीर कोपेन
(B) सी.डब्ल्यू. थॉर्नथवेट
(C) जॉर्ज हेडली
(D) विल्हेम बर्कनेस और बर्गन स्कूल।

204. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में महाद्वीपों के पश्चिमी तट अक्सर प्रमुख मरुस्थलों के स्थल होते हैं।
कारण (R): इन तटों की विशेषता उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब क्षेत्रों से नीचे उतरती, स्थिर वायु है और ये अक्सर ठंडी महासागरीय धाराओं से घिरे होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

205. निम्नलिखित में से कौन सा शीत लहर की विशेषता नहीं है?
(A) तापमान में तेजी से गिरावट
(B) अक्सर शीत वाताग्र के गुजरने से जुड़ी होती है
(C) आर्द्रता में वृद्धि
(D) कभी-कभी शक्तिशाली, ठंडी पवनों के साथ आती है

206. एल नीनो चरण की निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. प्रशांत व्यापारिक पवनों का कमजोर होना।
2. पेरू के तट पर ठंडे, पोषक तत्वों से भरपूर जल के अपवेलिंग का रुकना।
3. पश्चिमी प्रशांत से पूर्वी प्रशांत की ओर गर्म सतही जल का संचलन।
4. मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर में समुद्री सतह के तापमान में वृद्धि।

उपरोक्त घटनाओं को एक तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 1, 3, 4, 2
(B) 3, 1, 2, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 1, 3, 2

207. एक तड़ित झंझा से भूमि तक फैली वायु के घूमने वाले स्तंभ के साथ आने वाला अचानक, हिंसक और स्थानीय तूफान है:
(A) टॉरनेडो
(B) हरिकेन
(C) तड़ित झंझा
(D) चक्रवात

208. कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में, दूसरा अक्षर 'f' क्या दर्शाता है?
(A) ग्रीष्म ऋतु में शुष्क मौसम
(B) सभी महीनों में पर्याप्त वर्षण
(C) शीत ऋतु में शुष्क मौसम
(D) मानसूनी वर्षण

209. वायु के भौतिक संचलन के माध्यम से वायुमंडल में ऊष्मा के ऊर्ध्वाधर स्थानांतरण को कहा जाता है:
(A) चालन
(B) संवहन
(C) विकिरण
(D) अधिशोषण

210. 'वाताग्र' की परिभाषित विशेषता क्या है?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) दो अलग-अलग वायु राशियों को अलग करने वाला एक संकीर्ण सीमा क्षेत्र।
(B) समान तापमान और दबाव का क्षेत्र।
(C) एक उच्च ऊंचाई वाली वायु धारा।
(D) शांत पवनों वाला उच्च दाब का क्षेत्र।

211. किस घटना में पूर्वी और पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच वायुमंडलीय दबाव का उतार-चढ़ाव वाला प्रतिरूप शामिल है?
(A) एल नीनो
(B) ला नीना
(C) दक्षिणी दोलन
(D) वॉकर परिसंचरण

212. 'सूर्यातप' शब्द किन शब्दों का संक्षिप्त रूप है?
(A) इंटरनल सोलर एक्शन
(B) इंसुलेटेड सोलर स्टेशन
(C) इंस्टेंटेनियस सोलर लोकेशन
(D) इनकमिंग सोलर रेडिएशन

213. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: वायुदाब पेटी
P. भूमध्यरेखीय निम्न दाब
Q. उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब
R. उपध्रुवीय निम्न दाब
S. ध्रुवीय उच्च दाब
सूची II: अक्षांशीय क्षेत्र
1. 60° उत्तर और दक्षिण के आसपास
2. 90° उत्तर और दक्षिण के आसपास
3. 5° उत्तर और दक्षिण के आसपास
4. 30° उत्तर और दक्षिण के आसपास
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

214. वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) हेडली कोशिका में भूमध्य रेखा पर वायु का ऊपर उठना और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में नीचे बैठना शामिल है।
(B) फेरेल कोशिका तापमान के अंतर से संचालित एक तापीय रूप से प्रत्यक्ष कोशिका है।
(C) ध्रुवीय कोशिका में ध्रुवों पर ठंडी, नीचे बैठती वायु और उपध्रुवीय निम्न दाब क्षेत्रों पर ऊपर उठती वायु शामिल है।
(D) पूरी प्रणाली उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से ध्रुवों तक ऊष्मा स्थानांतरित करने में मदद करती है।

215. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सभी बाढ़ भारी वर्षा के कारण होती हैं।
2. सूखा विशेष रूप से वर्षा की कमी द्वारा परिभाषित एक मौसम संबंधी घटना है।
3. बाढ़ और सूखा दोनों को पर्यावरणीय आपदा माना जाता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

216. "सामान्य ह्रास दर" वह औसत दर है जिस पर तापमान _____ में ऊंचाई बढ़ने के साथ _____ है।
(A) घटता; क्षोभमंडल
(B) बढ़ता; क्षोभमंडल
(C) घटता; समताप मंडल
(D) बढ़ता; समताप मंडल

217. थॉर्नथवेट के वर्गीकरण में, 'नमी पर्याप्तता' किसे संदर्भित करती है?
(A) किसी क्षेत्र में कुल वार्षिक वर्षा।
(B) किसी जलवायु की तापमान दक्षता।
(C) नमी पर्याप्तता।
(D) किसी क्षेत्र में सूखे की समय अवधि का प्रतिशत।

218. मध्य-अक्षांश चक्रवात के जीवन चक्र का सबसे अच्छा वर्णन किसके द्वारा किया जाता है?
(A) ध्रुवीय वाताग्र सिद्धांत
(B) वॉकर परिसंचरण मॉडल
(C) सैफिर-सिम्पसन मॉडल
(D) बर्कनेस फीडबैक मॉडल

219. समताप मंडल के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: समताप मंडल में ओजोन परत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सूर्य के अधिकांश हानिकारक पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करती है।
कथन II: समताप मंडल में तापमान ऊंचाई के साथ मुख्य रूप से ओजोन द्वारा इस पराबैंगनी विकिरण के अवशोषण के कारण बढ़ता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

220. पर्वतीय और संवहनीय वर्षा के निर्माण में प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) वायु का तापमान
(B) वायु को ऊपर उठाने वाला तंत्र
(C) नमी का स्रोत
(D) बनने वाले बादलों का प्रकार

NODIA

221. वायु राशियों के बीच की सीमा को परिभाषित करने में कौन सा वायुमंडलीय चर सबसे महत्वपूर्ण है?
(A) पवन की गति
(B) वायुमंडलीय दबाव
(C) तापमान
(D) ऊंचाई

222. "ग्रीनहाउस प्रभाव" शब्द उस प्रक्रिया का वर्णन करता है जहाँ:
(A) सौर ऊर्जा को कांच के पैनलों द्वारा रोक लिया जाता है।
(B) पौधे CO_2 अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं।
(C) ओजोन परत सतही ऊष्मा को परावर्तित करती है।
(D) वायुमंडलीय गैसें अवरक्त विकिरण को रोक लेती हैं।

223. किस प्रकार का वाताग्र सबसे नाटकीय और तीव्र मौसम परिवर्तन उत्पन्न करता है?
(A) शीत वाताग्र
(B) उष्ण वाताग्र
(C) अचर वाताग्र
(D) संरोधित वाताग्र

224. दक्षिणी दोलन सूचकांक का धनात्मक मान किससे संबंधित है?
(A) एल नीनो स्थितियाँ
(B) ताहिती पर सामान्य से अधिक दबाव और डार्विन पर सामान्य से कम दबाव
(C) व्यापारिक पवनों का महत्वपूर्ण कमजोर होना
(D) ला नीना स्थितियाँ

225. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): उष्णकटिबंधीय चक्रवात भूमि पर जाने पर तेजी से कमजोर हो जाते हैं।
कारण (R): वे अपने प्राथमिक ऊर्जा स्रोत से कट जाते हैं, जो उष्णकटिबंधीय महासागरों के ऊपर गर्म, आर्द्र वायु है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. पृथ्वी के ऊष्मा बजट के संदर्भ में, 'पार्थिव विकिरण' शब्द का क्या तात्पर्य है?
(A) पृथ्वी की सतह और वायुमंडल द्वारा उत्सर्जित दीर्घ-तरंग विकिरण।
(B) सौर विकिरण जो पृथ्वी की सतह तक पहुँचता है।
(C) बादलों और वायुमंडल द्वारा परावर्तित विकिरण।
(D) पृथ्वी के कोर से चालन द्वारा स्थानांतरित ऊष्मा।

227. किसी क्षेत्र की जलवायु को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) किसी विशिष्ट दिन का मौसम।
(B) वायुमंडल की अल्पकालिक स्थिति।
(C) दीर्घकालिक मौसम औसत और विविधताएं।
(D) वार्षिक रिकॉर्ड उच्च और निम्न तापमान।

228. निम्नलिखित में से कौन सा कोपेन जलवायु समूह को उसके प्राथमिक अक्षर के साथ सही सुमेलित करता है?
(A) उष्णकटिबंधीय - C
(B) शीतोष्ण - D
(C) ध्रुवीय - A
(D) शुष्क - B

229. एक 'एनाबेटिक' पवन एक स्थानीय पवन है जो:
(A) रात में पहाड़ी ढाल से नीचे की ओर बहती है।
(B) रात में भूमि से समुद्र की ओर चलती है।
(C) दिन के दौरान पहाड़ी ढाल पर ऊपर की ओर बहती है।
(D) एक गर्म, शुष्क मरुस्थलीय पवन है।

230. समताप मंडल में ओजोन का विनाश एक उत्प्रेरक प्रक्रिया है, जिसका अर्थ है:
(A) अभिक्रिया द्वारा ओजोन अणु मजबूत होता है।
(B) एक अकेला क्लोरीन परमाणु ओजोन के कई हजार अणुओं को नष्ट कर सकता है।
(C) अभिक्रिया के लिए अत्यधिक उच्च तापमान की आवश्यकता होती है।
(D) यह प्रक्रिया केवल दिन के दौरान होती है।

231. उत्थान तंत्र के आधार पर वर्षण के तीन मुख्य प्रकारों में से निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(A) संवहनीय
(B) पर्वतीय
(C) वाताग्र
(D) अभिवहनीय

232. उष्णकटिबंधीय चक्रवात को सबसे सटीक रूप से परिभाषित किया जा सकता है:
(A) वाताग्रों से जुड़ा एक उष्णकटिबंधीय निम्न दाब।
(B) एक तापीय निम्न दाब जो गर्म उष्णकटिबंधीय जल पर बनता है।
(C) एक केंद्रीय चक्षु वाला घूमने वाला तूफान तंत्र।
(D) पवन का एक छोटा, तीव्र भंवर।

233. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: वायुमंडल का घटक
P. जलवाष्प
Q. धूल के कण
R. ओजोन
S. कार्बन डाइऑक्साइड
सूची II: प्राथमिक भूमिका/विशेषता
1. पार्थिव दीर्घ-तरंग विकिरण को अवशोषित करता है
2. संघनन नाभिक बनाता है
3. पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करता है

Click Here to Buy book on Amazon

4. एक परिवर्तनशील गैस, जल चक्र के लिए महत्वपूर्ण
कोड:
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

234. बाढ़ और अचानक आने वाली बाढ़ के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) शुरू होने की गति और अचानक होना।
(B) शामिल जल की कुल मात्रा।
(C) घटना का भौगोलिक स्थान।
(D) वह मौसम जिसमें यह घटित होती है।

235. एक वर्ष के दौरान उत्तर और दक्षिण की ओर समताप रेखाओं का संचलन मुख्य रूप से किसका परिणाम है?
(A) महाद्वीपों की बदलती स्थिति।
(B) एल नीनो और ला नीना चक्र।
(C) दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन।
(D) सूर्य की लंबवत किरणों का मौसमी प्रवास।

236. एक 'समुद्री उष्णकटिबंधीय' वायु राशि में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषताएं होंगी?
(A) ठंडी और शुष्क
(B) गर्म और आर्द्र
(C) ठंडी और आर्द्र
(D) गर्म और शुष्क

237. कोरिओलिस बल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह पृथ्वी के घूर्णन के कारण लगने वाला एक आभासी बल है।
2. यह ध्रुवों पर सबसे मजबूत और भूमध्य रेखा पर शून्य होता है।
3. यह दक्षिणी गोलार्ध में गतिशील वस्तुओं को बाईं ओर विक्षेपित करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

238. पृथ्वी का वह क्षेत्र जहाँ पूरे वर्ष शुद्ध विकिरण की कमी रहती है, वह है:
(A) उष्णकटिबंधीय क्षेत्र
(B) उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र
(C) मध्य-अक्षांश क्षेत्र
(D) ध्रुवीय क्षेत्र

239. एक 'शीत संरोधन' तब होता है जब:
(A) शीत वाताग्र के पीछे की वायु उष्ण वाताग्र के आगे की ठंडी वायु से अधिक ठंडी होती है।
(B) शीत वाताग्र के पीछे की वायु उष्ण वाताग्र के आगे की ठंडी वायु से अधिक गर्म होती है।
(C) एक उष्ण वाताग्र और शीत वाताग्र समानांतर हो जाते हैं।
(D) चक्रवात का उष्ण क्षेत्र पूरी तरह से लुप्त हो जाता है।

240. निम्नलिखित में से किसे वायुमंडल में एक 'परिवर्तनशील गैस' माना जाता है?
(A) नाइट्रोजन
(B) ऑक्सीजन
(C) आर्गन
(D) जलवाष्प

241. उष्णकटिबंधीय चक्रवात की तीव्रता आमतौर पर किसके द्वारा मापी जाती है?
(A) तूफान का व्यास
(B) केंद्रीय वायुमंडलीय दबाव और पवन की गति
(C) तूफान के बादलों की ऊंचाई
(D) होने वाली वर्षा की मात्रा

242. कोपेन की प्रणाली में, 'Cs' जलवायु शीतोष्ण जलवायु के बीच अद्वितीय है क्योंकि:
(A) इसमें शीत ऋतु-अधिकतम वर्षण प्रतिरूप होता है।
(B) इसमें ग्रीष्म ऋतु-अधिकतम वर्षण प्रतिरूप होता है।
(C) इसमें कोई शुष्क मौसम नहीं होता है।
(D) यह सभी शीतोष्ण जलवायु में सबसे ठंडी है।

243. "ऊष्मा द्वीप" प्रभाव, जहाँ शहरी क्षेत्र आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक गर्म होते हैं, तापमान वितरण के किससे प्रभावित होने का एक उदाहरण है?
(A) अक्षांश
(B) ऊंचाई
(C) सतह की प्रकृति
(D) भूमंडलीय पवनें

244. व्यापारिक पवनों के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: उत्तरी गोलार्ध में व्यापारिक पवनें उत्तर-पूर्व से चलती हैं।
कथन II: वायुदाब प्रवणता बल और कोरिओलिस प्रभाव का संयोजन इस विक्षेपण का कारण बनता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

245. निम्नलिखित में से कौन सा कैटाबेटिक पवन का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) समुद्र समीर
(B) चिनूक
(C) मिस्ट्रल

NODIA

(D) लू

246. पृथ्वी के वायुमंडल को नीचे से गर्म करने के लिए मुख्य रूप से कौन सी प्रक्रिया उत्तरदायी है?
(A) वायु अणुओं द्वारा लघु-तरंग विकिरण का प्रत्यक्ष अवशोषण।
(B) ग्रीनहाउस गैसों द्वारा दीर्घ-तरंग पार्थिव विकिरण का अवशोषण।
(C) पृथ्वी के पिघले हुए कोर से ऊष्मा का चालन।
(D) ध्रुवीय ज्योति के दौरान मुक्त होने वाली गुप्त ऊष्मा।

247. थॉर्नथवेट के 1948 के जलवायु वर्गीकरण में इस्तेमाल किया गया प्राथमिक मानदंड है:
(A) वनस्पति
(B) वर्षण
(C) तापमान
(D) संभावित वाष्पोत्सर्जन

248. शीतोष्ण चक्रवात के जीवन चक्र का प्रारंभिक चरण आमतौर पर होता है:
(A) दो अलग-अलग वायु राशियों को अलग करने वाला एक अचर वाताग्र।
(B) सुविकसित संरोधित वाताग्र वाला परिपक्व चक्रवात।
(C) उच्च-दाब वाला प्रतिचक्रवात।
(D) एक छोटा उष्णकटिबंधीय अवदाब।

249. तड़ित झंझा जिससे ओले गिरते हैं, किसका सूचक है?
(A) एक बहुत ही स्थिर वायुमंडल।
(B) एक उष्ण वाताग्र की उपस्थिति।
(C) कपासी वर्षी बादल के भीतर शक्तिशाली आरोही वायु धाराएं।
(D) तूफान अपनी क्षय अवस्था में है।

250. 'पर्यावरणीय आपदा' शब्द उस घटना को संदर्भित करता है जो:
(A) लोगों, संपत्ति या पर्यावरण को क्षति पहुँचाने की क्षमता रखती है।
(B) हमेशा मानवीय गतिविधियों के कारण होती है।
(C) इसमें केवल तूफानों जैसी वायुमंडलीय घटनाएं शामिल हैं।
(D) किसी क्षेत्र की स्थायी और अपरिवर्तनीय विशेषता है।

251. मौसम के प्रतिरूप पर एल नीनो का प्रत्यक्ष प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया में वर्षा में वृद्धि।
(B) पेरु और इक्वाडोर में सूखे की स्थिति।
(C) औसत से अधिक मजबूत भारतीय मानसून।
(D) दक्षिण-पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्षा में वृद्धि।

252. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): मध्यमंडल में, ऊंचाई बढ़ने के साथ तापमान घटता जाता है।
कारण (R): मध्यमंडल में ओजोन या अन्य गैसों की सांद्रता कम होती है जो सौर विकिरण को अवशोषित कर सकें।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

253. निम्नलिखित में से कौन सा वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण को नियंत्रित करने वाला प्राथमिक कारक नहीं है?
(A) सौर ऊर्जा का असमान वितरण
(B) पृथ्वी का घूर्णन
(C) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र
(D) महाद्वीपों और महासागरों का वितरण

254. वह 'सूखा' जो विशेष रूप से मिट्टी की नमी की कमी के कारण फसल की वृद्धि को प्रभावित करता है, कहलाता है:
(A) मौसम संबंधी सूखा
(B) जलविज्ञानी सूखा
(C) सामाजिक-आर्थिक सूखा
(D) कृषि संबंधी सूखा

255. वाताग्र प्रणालियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शीत वाताग्र का ढाल उष्ण वाताग्र की तुलना में अधिक तीव्र होता है।
2. उष्ण वाताग्र के साथ वर्षण आमतौर पर शीत वाताग्र की तुलना में अधिक व्यापक और कम तीव्र होता है।
3. उष्ण वाताग्र के गुजरने के बाद तापमान में सामान्यतः वृद्धि होती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

256. वायुमंडल की वह परत जिसमें कुल वायुमंडलीय द्रव्यमान का लगभग 75-80% हिस्सा होता है, वह है:
(A) समताप मंडल
(B) क्षोभमंडल
(C) मध्यमंडल
(D) तापमंडल

257. 'समदाब रेखा' किसकी समान रेखा है?
(A) तापमान
(B) दबाव
(C) पवन की गति
(D) वर्षा

NODIA

258. 'कोपेन-गीजर' जलवायु वर्गीकरण प्रणाली जलवायु को किसके आधार पर वर्गीकृत करती है?
(A) प्रेक्षित वनस्पति और तापमान एवं वर्षण के साथ उसका संबंध।
(B) वायु राशि स्रोत क्षेत्र और वाताग्र क्षेत्र।
(C) सतह पर ऊर्जा और नमी संतुलन।
(D) सामान्य परिसंचरण प्रतिरूप और पवन पेटियाँ।

259. मौसम और जलवायु के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) मौसम वर्षण को संदर्भित करता है, जबकि जलवायु तापमान को।
(B) मौसम में अल्पकालिक वायुमंडलीय स्थितियाँ शामिल होती हैं, जबकि जलवायु दीर्घकालिक होती है।
(C) मौसम का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, जबकि जलवायु का नहीं।
(D) मौसम क्षोभमंडल में होता है, जबकि जलवायु समताप मंडल में।

260. स्थल समीर एक पवन है जो चलती है:
(A) दिन के दौरान समुद्र से भूमि की ओर।
(B) दिन के दौरान पहाड़ के ढाल पर ऊपर की ओर।
(C) रात में पहाड़ के ढाल से नीचे की ओर।
(D) रात के दौरान भूमि से समुद्र की ओर।

261. शीतोष्ण चक्रवात की अंतिम, क्षयकारी अवस्था की विशेषता है:
(A) एक सुस्पष्ट उष्ण क्षेत्र का निर्माण।
(B) वायुदाब प्रवणता का तीव्र होना।
(C) एक पूरी तरह से संरोधित वाताग्र और तूफान का समाप्त होना।
(D) केंद्र में एक स्वच्छ चक्षु का विकास।

262. भूमंडलीय तापन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह मुख्य रूप से बढ़े हुए ग्रीनहाउस प्रभाव के कारण होता है।
(B) इससे वैश्विक ग्लेशियर पिघलते हैं और समुद्र के स्तर में वृद्धि होती है।
(C) औद्योगिक क्रांति के बाद से CO_2 जैसी ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता बढ़ी है।
(D) इससे संपूर्ण ग्रह के एक समान रूप से गर्म और शुष्क होने की अपेक्षा है।

263. एक 'महाद्वीपीय उष्णकटिबंधीय' वायु राशि कहाँ से उत्पन्न होती है?
(A) एक उच्च-अक्षांश वाला महासागर
(B) एक निम्न-अक्षांश वाला महासागर
(C) एक उच्च-अक्षांश वाला महाद्वीप
(D) एक निम्न-अक्षांश वाला मरुस्थल या महाद्वीप

264. पछुआ पवनें मध्य-अक्षांशों में प्रचलित पवनें हैं जो सामान्यतः चलती हैं:
(A) पश्चिम से पूर्व
(B) पूर्व से पश्चिम
(C) उत्तर से दक्षिण
(D) दक्षिण से उत्तर

265. तापमान व्युत्क्रमण और धुंध के बीच कार्य-कारण संबंध क्या है?
(A) धुंध के कारण तापमान व्युत्क्रमण बनता है।
(B) धुंध और तापमान व्युत्क्रमण असंबंधित वायुमंडलीय घटनाएं हैं।
(C) व्युत्क्रमण प्रदूषकों को रोक लेता है, जिससे धुंध का निर्माण होता है।
(D) तापमान व्युत्क्रमण प्रदूषकों को अवक्षेपित करके वायु को स्वच्छ करता है।

266. निम्नलिखित कोपेन जलवायु समूहों पर विचार कीजिए:
1. C - मध्यतापीय
2. A - उष्णकटिबंधीय
3. E - ध्रुवीय
4. D - सूक्ष्मतापीय

उपरोक्त समूहों को भूमध्य रेखा से ध्रुव की ओर क्रम में व्यवस्थित करें और सही क्रम का चयन करें।
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 1, 3, 4

267. ला नीना घटना के दौरान, मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर का सतही जल होता है:
(A) असामान्य रूप से गर्म
(B) अपने सामान्य औसत तापमान पर
(C) स्थिर और गतिहीन
(D) असामान्य रूप से ठंडा

268. वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण का प्राथमिक कार्य है:
(A) ध्रुवों से भूमध्य रेखा तक ऊष्मा पहुँचाना।
(B) भूमध्य रेखा से ध्रुवों तक ऊष्मा पहुँचाना।
(C) वायुमंडलीय संगठन को एक समान बनाए रखना।
(D) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करना।

269. तड़ित झंझा के लिए ऊर्जा कहाँ से आती है?
(A) पृथ्वी का घूर्णन।
(B) दो वायु राशियों के बीच तापमान का अंतर।
(C) जलवाष्प के संघनित होने पर मुक्त होने वाली गुप्त ऊष्मा।
(D) ऊपरी वायुमंडल में शक्तिशाली पवनें।

270. पृथ्वी के ऊष्मा बजट के संबंध में नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैश्विक वार्षिक औसत पर, पृथ्वी द्वारा प्राप्त ऊष्मा की मात्रा खोई गई मात्रा के बराबर होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

कथन II: पृथ्वी पर सभी अक्षांशों का ऊष्मा बजट हर समय पूरी तरह संतुलित रहता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल कथन I
(B) केवल कथन II
(C) कथन I और कथन II दोनों
(D) न तो कथन I और न ही कथन II

271. मानचित्र पर समवर्षा रेखा एक ऐसी रेखा है जो उन बिंदुओं को जोड़ती है जिनमें समान है:
(A) वर्षण की मात्रा
(B) वायुमंडलीय दबाव
(C) धूप की अवधि
(D) वायु का तापमान

272. शीतोष्ण चक्रवात में, उष्ण क्षेत्र वह क्षेत्र है:
(A) शीत वाताग्र के पीछे।
(B) उष्ण वाताग्र और शीत वाताग्र के बीच।
(C) उष्ण वाताग्र के आगे।
(D) संरोधित वाताग्र के केंद्र में।

273. कोपेन द्वारा विश्व की जलवायु का वर्गीकरण एक आनुभविक प्रणाली है जो किस पर आधारित है?
(A) प्रेक्षित तापमान और वर्षण डेटा।
(B) जलवायु के कारण।
(C) ऊर्जा संतुलन और आर्द्रता सूचकांक।
(D) मृदा के प्रकारों का वितरण।

274. "व्यापारिक पवनों" का यह नाम इसलिए रखा गया था क्योंकि:
(A) यह शब्द उनके स्थिर पथ या मार्ग को संदर्भित करता है।
(B) ये वे क्षेत्र थे जहाँ व्यापारी वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे।
(C) वे प्रमुख व्यापारिक राष्ट्रों के ऊपर चलती हैं।
(D) वे केवल थल व्यापार मार्गों पर मौजूद होती हैं।

275. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): बाढ़ और सूखे को जल चक्र के दो चरम माना जा सकता है।
कारण (R): बाढ़ जल की अधिकता के कारण होती है, जबकि सूखा जल की कमी के कारण होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

276. निम्नलिखित में से कौन सी स्थानीय पवन नहीं है?
(A) फान
(B) चिनूक
(C) मिस्ट्रल
(D) पछुआ पवनें

277. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पृथ्वी की सतह और वायुमंडल सौर विकिरण को अवशोषित करके और अवरक्त ऊर्जा को पुनर्विकिरण करके गर्म होते हैं, कहलाती है:
(A) कोरिओलिस प्रभाव
(B) एल्बिडो प्रभाव
(C) ग्रीनहाउस प्रभाव
(D) रुद्धोष्म प्रक्रिया

278. वायुमंडल और उसकी घटनाओं का अध्ययन, विशेष रूप से मौसम के पूर्वानुमान के उद्देश्य से, कहलाता है:
(A) भूविज्ञान
(B) मौसम विज्ञान
(C) समुद्र विज्ञान
(D) जल विज्ञान

279. निम्नलिखित में से कौन सी उष्ण वाताग्र की विशेषता है?
(A) तीव्र तड़ित वर्षा की एक संकीर्ण पट्टी।
(B) तापमान और दबाव में तेजी से गिरावट।
(C) तीव्र वाताग्र ढाल और तीव्र गति।
(D) बड़े पैमाने पर हल्की वर्षा और स्तरी प्रकार के बादल।

280. मध्यमंडल की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) वायुमंडल का सबसे ठंडा बिंदु।
(B) इसमें ओजोन परत होती है।
(C) अधिकांश मौसम संबंधी घटनाएं यहीं होती हैं।
(D) इसमें आयन होते हैं जो रेडियो तरंगों को परावर्तित करते हैं।

281. ENSO शब्द किन युग्मित घटनाओं को संदर्भित करता है?
(A) उत्तरी अटलांटिक दोलन और आर्कटिक समुद्री बर्फ का विस्तार।
(B) हिंद महासागर द्विध्रुव और एशियाई मानसून।
(C) एल नीनो/ला नीना और दक्षिणी दोलन।
(D) ध्रुवीय भंवर और समतापमंडलीय तापन।

282. निम्नलिखित में से किस स्थिति में भीषण ओलावृष्टि होने की सर्वाधिक संभावना है?
(A) बहुत शक्तिशाली आरोही वायु धाराओं के साथ एक तीव्र तड़ित झंझा।
(B) एक स्थिर, शुष्क वायु राशि।
(C) स्तरी बादलों के साथ एक उष्ण वाताग्र।
(D) एक मंद गति से चलने वाला अचर वाताग्र।

283. जलवायु वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कोपेन की योजना आनुभविक है, जो प्रेक्षित तापमान और वर्षण डेटा पर आधारित है।
2. थॉर्नथवेट की योजना आनुवंशिक है, जो जलवायु के कारणों पर केंद्रित है।
3. थॉर्नथवेट की संभावित वाष्पोत्सर्जन की अवधारणा उनके तंत्र का एक प्रमुख तत्व है।

NODIA

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

284. निम्नलिखित में से कौन सी सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानवजनित ग्रीनहाउस गैस है?
(A) जलवाष्प
(B) कार्बन डाइऑक्साइड
(C) मीथेन
(D) ओजोन

285. अश्व अक्षांश, जो 30° उत्तर और दक्षिण के आसपास पाए जाते हैं, किसके क्षेत्र हैं?
(A) निम्न दाब और भारी वर्षा।
(B) शक्तिशाली, निरंतर पछुआ पवनें।
(C) उच्च दाब, नीचे उतरती वायु और शांत पवनें।
(D) अभिसारी व्यापारिक पवनें।

286. उष्णकटिबंधीय चक्रवात और शीतोष्ण चक्रवात के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) उष्णकटिबंधीय चक्रवात शीतोष्ण चक्रवातों की तुलना में क्षेत्रफल में बड़े होते हैं।
(B) उष्णकटिबंधीय चक्रवात पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हैं, जबकि शीतोष्ण चक्रवात पूर्व से पश्चिम की ओर।
(C) उष्णकटिबंधीय चक्रवात भूमि पर बनते हैं, जबकि शीतोष्ण चक्रवात समुद्र पर।
(D) उष्णकटिबंधीय चक्रवात वाताग्रों से जुड़े नहीं होते हैं, जबकि शीतोष्ण चक्रवात होते हैं।

287. 'वर्षा छाया' प्रभाव किस प्रकार की वर्षा से संबंधित है?
(A) पर्वतीय
(B) संवहनीय
(C) वाताग्र
(D) चक्रवातीय

288. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: जलवायु आपदा
P. बाढ़
Q. सूखा
R. लू
S. शीत लहर
सूची II: प्राथमिक विशेषता
1. सामान्य से कम तापमान की लंबी अवधि
2. सामान्य से अधिक तापमान की लंबी अवधि
3. जल आपूर्ति में लंबी कमी
4. जल की बड़ी मात्रा का उमड़ना
कोड:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

289. जलवायु विज्ञान में 'अभिवहन' शब्द का तात्पर्य है:
(A) ऊष्मा या अन्य वायुमंडलीय गुणों का क्षैतिज स्थानांतरण।
(B) ऊष्मा का ऊर्ध्वाधर स्थानांतरण।
(C) आणविक टकराव द्वारा ऊष्मा का स्थानांतरण।
(D) विद्युत चुंबकीय तरंगों द्वारा ऊर्जा का स्थानांतरण।

290. वायु राशियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) जब दो अलग-अलग वायु राशियाँ मिलती हैं, तो वे तुरंत और पूरी तरह से मिश्रित हो जाती हैं।
(B) वायु राशि समान तापमान और आर्द्रता वाली वायु का एक विशाल पुंज है।
(C) वह क्षेत्र जहाँ से वायु राशि अपनी विशेषताएं प्राप्त करती है, उसका स्रोत क्षेत्र कहलाता है।
(D) वायु राशियों को उनके स्रोत क्षेत्र के अक्षांश और सतह के प्रकार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

291. थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण का प्राथमिक उद्देश्य किसके लिए था?
(A) नौवहन और शिपिंग मार्ग।
(B) वैश्विक पवन प्रतिरूपों को समझना।
(C) कृषि और जल प्रबंधन।
(D) वनस्पति क्षेत्रों का वर्गीकरण।

292. उत्तरी गोलार्ध में, निम्न दाब प्रणाली में पवनें कैसे चलती हैं?
(A) दक्षिणावर्त और बाहर की ओर।
(B) वामावर्त और बाहर की ओर।
(C) दक्षिणावर्त और अंदर की ओर।
(D) वामावर्त और अंदर की ओर।

293. एक शक्तिशाली तापमान व्युत्क्रमण परत का सीधा परिणाम इनमें से कौन सा है?
(A) वायु के ऊर्ध्वाधर मिश्रण में वृद्धि।
(B) ऊँचे कपासी वर्षी बादलों का निर्माण।
(C) पृथ्वी की सतह के पास प्रदूषकों का रुकना।
(D) सतही पवन की गति में तेजी से वृद्धि।

294. अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र वह क्षेत्र है जहाँ:
(A) दोनों गोलार्द्धों की पछुआ पवनें मिलती हैं।
(B) उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें अभिसरित होती हैं।
(C) ध्रुवीय पूर्वी पवनें पछुआ पवनों से मिलती हैं।
(D) ठंडी और गर्म महासागरीय धाराएं अपसरित होती हैं।

295. कौन सा कथन 'वाताग्र' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) तड़ित झंझा का अग्र भाग।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) एक उच्च दाब कटक।
(C) मौसम मानचित्र पर समान तापमान वाली रेखा।
(D) भिन्न वायु राशि घनत्वों के बीच का संक्रमण क्षेत्र।

296. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A): समताप मंडल वायुमंडल की एक बहुत ही स्थिर परत है।
कारण (R): समताप मंडल में, तापमान ऊंचाई के साथ बढ़ता है, जो ऊर्ध्वाधर वायु संचलन को रोकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

297. सामान्य वायुमंडलीय परिसंचरण का तीन-कोशिका मॉडल किसके वैश्विक वितरण की व्याख्या करने में मदद करता है?
(A) प्रमुख वायुदाब पेटियाँ और भूमंडलीय पवनें।
(B) ज्वालामुखी और भूकंप।
(C) ओजोन सांद्रता।
(D) समुद्री ज्वार।

298. शीतोष्ण चक्रवात अपने जीवन चक्र के किस चरण में सुस्पष्ट उष्ण और शीत वाताग्रों के साथ सबसे तीव्र होता है?
(A) परिपक्व अवस्था
(B) प्रारंभिक अवस्था
(C) तरंग अवस्था
(D) संरोधित अवस्था

299. कोपेन प्रणाली में 'Af' जलवायु प्रकार की एक प्राथमिक विशेषता है:
(A) शीत ऋतु में एक सुस्पष्ट शुष्क मौसम।
(B) भारी मानसूनी वर्षा द्वारा संतुलित एक छोटी शुष्क ऋतु।
(C) 18°C से नीचे औसत वार्षिक तापमान।
(D) 60 मिमी से कम औसत वर्षण वाला कोई महीना नहीं।

300. कौन सी पर्यावरणीय आपदा लंबी अवधि तक वर्षण की कमी के रूप में परिभाषित की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप जल की कमी हो जाती है?
(A) बाढ़
(B) सूखा
(C) ओलावृष्टि
(D) लू

NODIA

होती है जहाँ स्पष्ट उष्ण और शीत वाताग्र निर्मित होते हैं। अंत में, शीत वाताग्र उष्ण वाताग्र को पकड़ लेता है, जिससे संरोधन होता है और चक्रवात धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। यह पूरा चक्र मध्य-अक्षांशों के मौसम को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

61. (C) उच्च-अक्षांश वाली ठंडी भूमि सतहें
महाद्वीपीय ध्रुवीय वायु राशि का मुख्य स्रोत क्षेत्र उच्च अक्षांशों पर स्थित विशाल और ठंडे भूभाग होते हैं, जैसे उत्तरी कनाडा और साइबेरिया। ये क्षेत्र शीत ऋतु में अत्यधिक ठंडे और शुष्क होते हैं, जिसके कारण यहाँ बनने वाली वायु राशि में नमी की मात्रा बहुत कम और तापमान बहुत नीचे होता है। जब ये वायु राशियाँ दक्षिण की ओर बढ़ती हैं, तो वे संबंधित क्षेत्रों में कड़ाके की ठंड और स्वच्छ आकाश लेकर आती हैं, जिससे मौसम में अचानक तापीय परिवर्तन आता है।

62. (D) हेडली कोशिका
हेडली कोशिका उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित एक तापीय रूप से प्रत्यक्ष वायुमंडलीय परिसंचरण कोशिका है। इसमें भूमध्य रेखा के निकट गर्म और हल्की वायु ऊपर की ओर उठती है और ऊपरी वायुमंडल में ध्रुवों की ओर प्रवाहित होती है। लगभग 30 डिग्री अक्षांश के निकट यह वायु ठंडी होकर नीचे बैठती है और पुनः धरातल के समीप व्यापारिक पवनों के रूप में भूमध्य रेखा की ओर लौट आती है। यह कोशिका वैश्विक स्तर पर ऊष्मा और ऊर्जा के संचरण का एक आधारभूत और अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है।

63. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उष्णकटिबंधीय चक्रवात भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर नहीं बनते हैं क्योंकि यहाँ कोरिओलिस बल का मान शून्य होता है। चक्रवाती चक्रण को प्रारंभ करने के लिए इस बल की उपस्थिति अनिवार्य है, जो वायु को विक्षेपित करके निम्न दाब के चारों ओर घूमने के लिए प्रेरित करता है। भूमध्य रेखा से कम से कम 5 से 8 डिग्री की दूरी पर ही यह बल इतना प्रभावी हो पाता है कि एक संगठित तूफान तंत्र विकसित हो सके। यही कारण है कि भूमध्यरेखीय पेटी सामान्यतः चक्रवातों से मुक्त रहती है।

64. (B) कैलिफोर्निया का भूमध्यसागरीय तट
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में 'Csb' एक ऐसी जलवायु को दर्शाता है जो भूमध्यसागरीय विशेषताओं वाली होती है, जहाँ ग्रीष्म ऋतु शुष्क और शीतल होती है। इस प्रकार की जलवायु मुख्य रूप से कैलिफोर्निया के तट और मध्य चिली जैसे क्षेत्रों में पाई जाती है। यहाँ सर्दियों में वर्षा होती है और गर्मियों में ठंडी महासागरीय धाराओं के प्रभाव से तापमान बहुत अधिक नहीं बढ़ता। यह जलवायु अपने विशिष्ट वर्षण प्रतिरूप और कृषि उत्पादों, विशेष रूप से खट्टे फलों और जैतून के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है।

65. (A) केवल 1 और 2
वायुमंडलीय दबाव किसी भी निश्चित बिंदु के ऊपर स्थित वायु के स्तंभ के कुल भार को दर्शाता है। गुरुत्वाकर्षण के कारण निचली परतें अधिक सघन होती हैं, इसलिए ऊँचाई बढ़ने के साथ वायु का घनत्व और दबाव दोनों ही तीव्रता से कम होते जाते हैं। उच्च वायुदाब वाले क्षेत्रों को प्रतिचक्रवात कहा जाता है, न कि चक्रवात, क्योंकि चक्रवात सदैव निम्न दाब वाले तंत्र होते हैं। वायुदाब में होने वाले ये परिवर्तन ही पवनों की गति और मौसम के प्रतिरूप को निर्धारित करने का मुख्य आधार बनते हैं।

66. (A) जल की अधिकता या कमी
बाढ़ और सूखा दोनों ही जल चक्र के दो विपरीत छोर हैं। बाढ़ की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब अत्यधिक वर्षा या अन्य कारणों से जल की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है और वह सामान्य रूप से शुष्क भूमि को आच्छादित कर लेती है। इसके विपरीत, सूखा जल की दीर्घकालिक कमी है जो वर्षा न होने के कारण उत्पन्न होती है। ये दोनों आपदाएं मानव जीवन, कृषि और अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित करती हैं और इनका प्रबंधन जल संसाधनों के उचित नियोजन पर पूर्णतः निर्भर करता है।

67. (C) मध्यमंडल
वायुमंडल की संरचना में समताप मंडल के ठीक ऊपर मध्यमंडल स्थित होता है। यह परत लगभग 50 से 80 किलोमीटर की ऊँचाई तक विस्तृत है। मध्यमंडल की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान पुनः तीव्रता से घटने लगता है और यह वायुमंडल की सबसे शीतल परत बन जाती है। अंतरिक्ष से आने वाले अधिकांश उल्कापिंड इसी परत में वायु के घर्षण के कारण जलकर नष्ट हो जाते हैं, जिससे वे पृथ्वी की सतह तक पहुँचकर हानि नहीं पहुँचा पाते हैं।

68. (D) परावर्तन क्षमता
किसी भी सतह का एल्बिडो उस सतह द्वारा परावर्तित किए गए सौर विकिरण का अनुपात होता है। यह 0 से 1 के मध्य या प्रतिशत में मापा जाता है। ताजी बर्फ जैसी चमकदार सतहों का एल्बिडो बहुत अधिक होता है क्योंकि वे अधिकांश विकिरण को वापस अंतरिक्ष में भेज देती हैं। इसके विपरीत, गहरे रंग की सतहें, जैसे डामर या घने वन, कम एल्बिडो वाली होती हैं क्योंकि वे अधिक ऊर्जा अवशोषित करती हैं। एल्बिडो पृथ्वी के ऊष्मा बजट और वैश्विक तापमान को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

69. (C) विषुवतीय क्षेत्र में दोपहर के बाद होने वाली तड़ित वर्षा।
संवहनीय वर्षण का सर्वोत्तम उदाहरण विषुवतीय क्षेत्रों में होने वाली दोपहर की वर्षा है। इन क्षेत्रों में अत्यधिक उष्णता के कारण वायु गर्म और हल्की होकर तीव्रता से ऊपर उठती है। ऊपर पहुँचने पर यह वायु शीतल होती है और उसमें उपस्थित नमी संघनित होकर कपासी वर्षी बादलों का निर्माण करती है। इससे प्रायः प्रतिदिन दोपहर के पश्चात गरज के साथ तेज बौछारें पड़ती हैं। यह प्रक्रिया पूर्णतः धरातल के तापन और वायु के ऊर्ध्वाधर संचलन पर आधारित होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

ऊँचाई के साथ तापमान घटता है और यहाँ अधिकांश मौसम संबंधी प्रक्रियाएं होती हैं। समताप मंडल में ओजोन परत के कारण ऊँचाई के साथ तापमान बढ़ता है। मध्यमंडल में पुनः तापमान घटता है और यहाँ उल्कापिंड जलकर नष्ट होते हैं। तापमंडल में आयनमंडल स्थित होता है जहाँ ऊँचाई के साथ तापमान में अत्यधिक वृद्धि होती है और रेडियो संचार संभव होता है।

11. (D) इसमें मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर के सतह जल का गर्म होना शामिल है।
एल नीनो एक जटिल मौसम संबंधी घटना है जिसमें मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर के सतही जल का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। यह उष्ण जल धारा पेरू के ठंडे तट की ओर प्रवाहित होती है, जिससे वैश्विक वर्षा प्रतिरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। इसके प्रभाव से दक्षिण अमेरिका के तटीय क्षेत्रों में भारी वर्षा होती है, जबकि ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत जैसे क्षेत्रों में सूखे की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है।

12. (B) वायु राशि
वायु राशि वायु का एक विशाल पुंज है जिसमें क्षैतिज रूप से तापमान और आर्द्रता की विशेषताएं लगभग समान होती हैं। यह तब बनती है जब वायु किसी विशाल और सजातीय धरातल या महासागर के ऊपर दीर्घकाल तक स्थिर रहती है। ये वायु राशियाँ अपने उद्गम स्थल की विशेषताओं को ग्रहण करती हैं और जब ये दूसरे क्षेत्रों में गति करती हैं, तो वहाँ के स्थानीय मौसम और जलवायु को गहराई से प्रभावित करती हैं।

13. (B) केवल 2
वायुमंडल के संगठन में जलवाष्प की सांद्रता स्थान और समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती है और ऊँचाई बढ़ने पर यह तेजी से घटती जाती है। दूसरी ओर, ओजोन गैस मुख्य रूप से समताप मंडल में केंद्रित होती है और सूर्य के पराबैंगनी विकिरण के अवशोषण का कार्य करती है। यद्यपि कार्बन डाइऑक्साइड महत्वपूर्ण है, लेकिन वायुमंडल में इसका आयतन प्रतिशत बहुत कम होता है। जलवाष्प वायुमंडल की सबसे परिवर्तनशील गैस है जो मौसम को सीधे प्रभावित करती है।

14. (D) वाताग्र
जब दो अलग-अलग तापमान, घनत्व और आर्द्रता वाली वायु राशियाँ आपस में मिलती हैं, तो उनके मध्य का सीमा क्षेत्र वाताग्र कहलाता है। ये वायु राशियाँ अपनी भिन्न विशेषताओं के कारण तुरंत एक-दूसरे में मिश्रित नहीं होती हैं। वाताग्र के क्षेत्र में वायु का उत्थान होता है, जिससे बादलों का निर्माण और वर्षण जैसी तीव्र मौसम संबंधी घटनाएं होती हैं। वाताग्र मुख्य रूप से मध्य-अक्षांशों में विकसित होते हैं जहाँ ध्रुवीय और उष्णकटिबंधीय वायु टकराती हैं।

15. (A) शीत वाताग्र
शीत वाताग्र का निर्माण तब होता है जब एक भारी और ठंडी वायु राशि तीव्रता से आगे बढ़ती है और गर्म वायु राशि को प्रतिस्थापित कर देती है। चूंकि ठंडी वायु अधिक सघन होती है, इसलिए वह गर्म वायु को तेजी से ऊपर की ओर धकेलती है। इस प्रक्रिया से कपासी वर्षी बादलों का निर्माण होता है और अक्सर तीव्र गरज के साथ भारी वर्षा होती है। इसके गुजरने के पश्चात संबंधित क्षेत्र के तापमान में अचानक गिरावट दर्ज की जाती है।

16. (B) हरिकेन
उष्णकटिबंधीय चक्रवातों को उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर विश्व के विभिन्न भागों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। उत्तरी अटलांटिक महासागर और पूर्वी उत्तर प्रशांत महासागर के क्षेत्रों में इन तीव्र तूफानों को हरिकेन कहा जाता है। ये तूफान गर्म समुद्री जल के ऊपर विकसित होते हैं और इनमें पवन की गति बहुत अधिक होती है। इनके केंद्र में निम्न वायुदाब का क्षेत्र होता है और ये भारी वर्षा के साथ तटीय क्षेत्रों में विनाश लाते हैं।

17. (B) उष्णकटिबंधीय वर्षावन
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना में 'Af' संकेत का उपयोग उष्णकटिबंधीय वर्षावन जलवायु को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार की जलवायु मुख्य रूप से भूमध्य रेखा के निकटवर्ती क्षेत्रों में पाई जाती है। यहाँ पूरे वर्ष तापमान ऊँचा रहता है और वर्षा की मात्रा बहुत अधिक होती है। इस जलवायु में कोई स्पष्ट शुष्क मौसम नहीं होता है, जिससे यहाँ घने और सदाबहार वनों का विकास होता है, जो विश्व की सर्वाधिक जैव विविधता के केंद्र हैं।

18. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पृथ्वी की सतह पर तापमान का वितरण मुख्य रूप से अक्षांश द्वारा निर्धारित होता है। जैसे-जैसे हम भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ते हैं, सौर किरणों का धरातल पर आपतन कोण तिरछा होता जाता है। इसके परिणामस्वरूप, सूर्य की ऊर्जा ध्रुवों के पास एक विस्तृत क्षेत्र में फैल जाती है और वायुमंडल की अधिक मोटी परत से गुजरती है। यही कारण है कि बढ़ते अक्षांश के साथ सूर्यातप की तीव्रता और औसत तापमान क्रमिक रूप से घटता जाता है।

19. (C) संभावित वाष्पोत्सर्जन और आर्द्रता सूचकांक।
थॉर्नथवेट का जलवायु वर्गीकरण तंत्र मुख्य रूप से संभावित वाष्पोत्सर्जन और आर्द्रता सूचकांक की अवधारणाओं पर आधारित है। यह पद्धति केवल तापमान और वर्षा पर निर्भर न रहकर इस बात पर विचार करती है कि पौधों और मिट्टी द्वारा कितना जल वाष्पीकृत किया जा सकता है। उन्होंने वर्षण प्रभावशीलता और तापीय दक्षता के आधार पर नमी के संतुलन को मापने का प्रयास किया। यह वर्गीकरण कृषि और जल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

20. (D) फान
फान एक स्थानीय पवन का उदाहरण है जो पर्वतीय क्षेत्रों में प्रवाहित होती है। यह एक गर्म और शुष्क पवन है जो आल्प्स पर्वतमाला के पवनविमुख ढाल से नीचे उतरते समय रुद्धोष्म

NODIA

की ओर बैठती है, जिससे धरातल पर पवनें बहुत शांत और क्षीण होती हैं। स्वच्छ आकाश और शुष्क स्थिति यहाँ की प्रमुख विशेषता है। ऐतिहासिक रूप से, शांत पवनों के कारण जहाजों की गति रुक जाने पर नाविकों को भार कम करने के लिए अपने घोड़ों को समुद्र में फेंकना पड़ता था, जिससे यह नाम पड़ा।

80. (C) वे उष्णकटिबंधीय पेटी में भूमि और समुद्र दोनों पर बनते हैं।
उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि ये केवल अत्यधिक उष्ण समुद्री सतहों पर ही निर्मित हो सकते हैं। इन्हें विकसित होने के लिए कम से कम 26.5 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले विशाल जल क्षेत्र की आवश्यकता होती है, जहाँ से ये प्रचुर मात्रा में जलवाष्प और गुप्त ऊष्मा प्राप्त कर सकें। भूमि पर पहुँचने के पश्चात, इनका ऊर्जा स्रोत विच्छेदित हो जाता है और घर्षण बढ़ जाता है, जिससे ये तीव्रता से निर्बल होकर समाप्त हो जाते हैं। ये अत्यंत शक्तिशाली पवन प्रणालियाँ हैं।

81. (A) Cs
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना में 'Cs' प्रकार की जलवायु की सर्वाधिक अनूठी विशेषता इसकी शुष्क ग्रीष्म ऋतु है। इसे सामान्यतः भूमध्यसागरीय जलवायु के रूप में जाना जाता है। यहाँ वर्षा मुख्य रूप से शीत ऋतु के दौरान चक्रवातों के कारण होती है, जबकि गर्मियों का समय शुष्क और धूप वाला रहता है। यह जलवायु महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर 30 से 45 डिग्री अक्षांशों के मध्य पाई जाती है। अंगूर, जैतून और अन्य खट्टे फलों की कृषि के लिए यह जलवायु विशेष रूप से उपयुक्त है।

82. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पर्वतों के पवनमुखी ढालों पर पवनविमुख ढालों की तुलना में काफी अधिक वर्षा होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आर्द्र वायु पर्वत के ढाल पर ऊपर चढ़ती है, तो वह रुद्धोष्म रूप से शीतल होती है और संघनन के कारण वर्षा करती है। इसके विपरीत, जब वही वायु दूसरी ओर नीचे उतरती है, तो दबाव बढ़ने से वह गर्म और शुष्क हो जाती है। यही कारण है कि पवनविमुख क्षेत्र प्रायः वर्षा-छाया के रूप में विकसित होते हैं जहाँ बहुत कम वर्षा अंकित की जाती है।

83. (C) कपासी वर्षी बादल
ओलों का निर्माण मुख्य रूप से विशाल कपासी वर्षी बादलों के भीतर होता है, जो ऊर्ध्वाधर रूप से बहुत ऊँचे होते हैं। इन बादलों में शक्तिशाली आरोही वायु धाराएं जल की बूंदों को वायुमंडल के बहुत ठंडे ऊपरी भागों में ले जाती हैं, जहाँ वे जम जाती हैं। ये जमे हुए कण बार-बार ऊपर-नीचे गति करते हैं और उन पर बर्फ की नवीन परतें जमा होती जाती हैं। जब इनका भार वायु के उछाल से अधिक हो जाता है, तो ये ओलों के रूप में धरातल पर गिरते हैं।

84. (D) मध्य-अक्षांश (30° से 60° अक्षांश)
फेरेल कोशिका मध्य-अक्षांशों में स्थित एक वायुमंडलीय परिसंचरण कोशिका है, जो लगभग 30 से 60 डिग्री अक्षांशों के मध्य पाई जाती है। यह एक तापीय रूप से अप्रत्यक्ष कोशिका मानी जाती है क्योंकि यह हेडली और ध्रुवीय कोशिकाओं के मध्य एक चक्र की भाँति कार्य करती है। यहाँ धरातल पर पवनें पछुआ पवनों के रूप में चलती हैं। इस कोशिका की विशेषता यह है कि यह उष्णकटिबंधीय गर्म वायु और ध्रुवीय ठंडी वायु के मिश्रण और ऊर्जा के स्थानांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

85. (C) केवल 1 and 3
भूमंडलीय तापन का तात्पर्य पृथ्वी के औसत तापमान में होने वाली दीर्घकालिक वृद्धि से है, जो मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों के कारण बढ़ी हुई ग्रीनहाउस गैसों का परिणाम है। यह केवल प्राकृतिक सौर उतार-चढ़ाव पर आधारित नहीं है। इसके कारण समुद्र के स्तर में वृद्धि, हिमनदों का पिघलना और तीव्र चक्रवातों जैसी चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति बढ़ गई है। यह एक वैश्विक संकट है जो पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र और मानव समाज के भविष्य के लिए गंभीर चुनौतियां प्रस्तुत कर रहा है।

86. (B) लंबी अवधि तक वर्षण की कमी।
मौसम संबंधी सूखा तब परिभाषित किया जाता है जब किसी विशेष क्षेत्र में दीर्घकाल तक होने वाली वर्षा उस क्षेत्र के औसत वर्षा स्तर से काफी कम हो जाती है। यह सूखे का प्रारंभिक चरण है जो सीधे वायुमंडलीय स्थितियों से संबद्ध होता है। यदि यह स्थिति दीर्घकाल तक बनी रहती है, तो यह आगे चलकर जलविज्ञानी और कृषि संबंधी सूखे का रूप ले लेती है। मौसम संबंधी सूखा पूर्णतः वर्षा के वितरण और उसकी मात्रा में होने वाले विचलन पर आधारित होता है।

87. (D) तापमंडल
तापमंडल वायुमंडल की वह ऊपरी परत है जहाँ ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान बहुत तीव्रता से बढ़ता है और 1000 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक हो सकता है। यह अत्यधिक तापन सूर्य के तीव्र एक्स-रे और पराबैंगनी विकिरण के प्रत्यक्ष अवशोषण के कारण होता है। यद्यपि यहाँ तापमान बहुत ऊँचा होता है, किंतु वायु का घनत्व इतना कम है कि वह हमें उष्ण प्रतीत नहीं होगा। इसी परत में आयनमंडल होता है, जो रेडियो तरंगों को परावर्तित करने और ध्रुवीय ज्योति जैसी घटनाओं के लिए प्रसिद्ध है।

88. (A) समताप रेखाएं
तापमान के क्षैतिज वितरण को मानचित्र पर दर्शाने के लिए समताप रेखाओं का उपयोग सर्वाधिक प्रभावी माना जाता है। ये काल्पनिक रेखाएं उन समस्त स्थानों को जोड़ती हैं जहाँ का तापमान समान होता है। समताप रेखाओं के विश्लेषण से हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि अक्षांश, जल और स्थल का वितरण तापमान को कैसे प्रभावित करते हैं। सामान्यतः ये रेखाएं पूर्व-पश्चिम दिशा में अक्षांशों के समानांतर होती हैं, किंतु महाद्वीपों और महासागरों के मिलन बिंदुओं पर इनमें स्पष्ट झुकाव देखा जा सकता है।

Click Here to Buy book on Amazon

को दर्शाता है जहाँ एक स्पष्ट शुष्क ऋतु होती है। 'BWh' गर्म मरुस्थलीय जलवायु का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ वर्षा बहुत कम होती है। 'Cfa' आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु को इंगित करता है जो महाद्वीपों के पूर्वी भागों में पाई जाती है। 'ET' टुंड्रा जलवायु को दर्शाता है जहाँ तापमान पूरे वर्ष बहुत कम रहता है और वृक्षों का अभाव होता है।

31. (A) तड़ित झंझा
तड़ित झंझा एक तीव्र स्थानीय तूफान है जो विद्युत चमकने, बादलों के गरजने और अक्सर भारी वर्षा या ओलावृष्टि के साथ आता है। यह मुख्य रूप से वायुमंडल में होने वाली तीव्र संवहनीय गतिविधि और कपासी वर्षी बादलों के विकास के कारण उत्पन्न होता है। यह तूफान तब बनता है जब गर्म और आर्द्र वायु तीव्रता से ऊपर की ओर उठती है और ठंडी हो जाती है। तड़ित झंझा सामान्यतः कम समय के लिए होते हैं लेकिन अत्यधिक विनाशकारी हो सकते हैं।

32. (B) स्थल समीर और समुद्र समीर का विकास।
स्थल और समुद्र के बीच तापन की दरों में भिन्नता के कारण तटीय क्षेत्रों में स्थानीय पवन प्रणालियों का विकास होता है। दिन के दौरान, भूमि समुद्र की तुलना में तेजी से गर्म होती है, जिससे समुद्र समीर का जन्म होता है। रात में, भूमि तेजी से ठंडी हो जाती है, जिससे पवनें भूमि से समुद्र की ओर बहती हैं और इसे स्थल समीर कहा जाता है। ये पवनें तटीय क्षेत्रों के तापमान को नियंत्रित करने और उसे सुखद बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

33. (B) पवन की गति तूफान के केंद्र या चक्षु में सबसे अधिक होती है।
शीतोष्ण चक्रवातों के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि शांत चक्षु की विशेषता केवल उष्णकटिबंधीय चक्रवातों में पाई जाती है। शीतोष्ण चक्रवातों में केंद्र में दाब न्यूनतम होता है लेकिन पवन की गति वाताग्रों के साथ अधिक तीव्र होती है। ये चक्रवात सामान्यतः दो अलग-अलग वायु राशियों के बीच एक वाताग्र प्रणाली से जुड़े होते हैं और मध्य-अक्षांशों में पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हैं। इनमें स्पष्ट रूप से उष्ण और शीत क्षेत्र होते हैं जो मौसम को प्रभावित करते हैं।

34. (A) लू
लू एक अत्यधिक गर्म और शुष्क स्थानीय पवन है जो ग्रीष्म ऋतु में विशेष रूप से दक्षिण एशिया के उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में चलती है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब तापमान सामान्य से बहुत अधिक बढ़ जाता है और आर्द्रता कम हो जाती है। लू के कारण मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और यह कभी-कभी घातक भी हो सकती है। यह मौसमी घटना मुख्य रूप से मई और जून के महीनों में दोपहर के समय सर्वाधिक तीव्र होती है।

35. (C) अभिवहन
वायु के क्षैतिज संचलन के माध्यम से ऊष्मा के स्थानांतरण की प्रक्रिया को अभिवहन कहा जाता है। वायुमंडल में ऊष्मा का वितरण करने में यह प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से मध्य-अक्षांशों में जहाँ पवनें तापमान की भिन्नता को कम करने में सहायता करती हैं। उदाहरण के लिए, गर्म पवनों का ठंडे क्षेत्रों की ओर बहना उस क्षेत्र के तापमान को बढ़ा देता है। संवहन के विपरीत, जो ऊर्ध्वाधर गति पर केंद्रित है, अभिवहन पूर्णतः वायु की क्षैतिज गति से संबंधित है।

36. (C) कथन I और कथन II दोनों
दक्षिणी गोलार्ध में महासागरों के विशाल विस्तार और भूमि की कमी के कारण पछुआ पवनें अत्यधिक शक्तिशाली और नियमित होती हैं, जिन्हें गरजती चालीसा जैसे नामों से जाना जाता है। व्यापारिक पवनों के संबंध में यह भी सत्य है कि इनका नाम व्यापारिक जहाजों को मिलने वाली सहायता के कारण पड़ा था। ये दोनों पवन प्रणालियाँ वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का अभिन्न अंग हैं और पृथ्वी पर ऊष्मा और नमी के संतुलित वितरण को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

37. (C) समुद्री उष्णकटिबंधीय
वायु राशियों के वर्गीकरण में 'mT' का अर्थ समुद्री उष्णकटिबंधीय होता है। यहाँ 'm' का तात्पर्य समुद्री स्रोत क्षेत्र से है, जिसका अर्थ है कि वायु राशि आर्द्र है। 'T' का तात्पर्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्र से है, जिसका अर्थ है कि वायु राशि गर्म है। ये वायु राशियाँ सामान्यतः गर्म उष्णकटिबंधीय महासागरों के ऊपर निर्मित होती हैं और इनमें जलवाष्प की मात्रा बहुत अधिक होती है। जब ये पवनें तटीय क्षेत्रों की ओर बढ़ती हैं, तो अक्सर भारी वर्षा और उच्च आर्द्रता का कारण बनती हैं।

38. (B) शुष्क जलवायु
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना में बड़े अक्षर 'B' का उपयोग शुष्क जलवायु के समूह को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस श्रेणी में वे क्षेत्र सम्मिलित हैं जहाँ वाष्पीकरण की दर वार्षिक वर्षण की तुलना में अधिक होती है। इसे आगे मरुस्थलीय और स्टेपी जलवायु में विभाजित किया गया है। इन क्षेत्रों में वर्षा बहुत कम और अनियमित होती है, जिससे वनस्पति का विकास सीमित रहता है। यह समूह पृथ्वी के बड़े भूभाग, विशेषकर उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब क्षेत्रों में पाया जाता है।

39. (D) 1, 2 और 3
पृथ्वी का ऊष्मा बजट आने वाले सौर विकिरण और बाहर जाने वाले पार्थिव विकिरण के मध्य एक संतुलन है, जिससे वैश्विक तापमान स्थिर रहता है। हालांकि, अक्षांशीय रूप से यह वितरण असमान है; उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में ऊर्जा का अधिशेष होता है और ध्रुवों पर ऊर्जा की कमी रहती है। इस असंतुलन को दूर करने के लिए वायुमंडलीय परिसंचरण और महासागरीय धाराएं ऊष्मा का क्षैतिज स्थानांतरण करती हैं। ये तीनों प्रक्रियाएं मिलकर पृथ्वी के जलवायु तंत्र को संतुलित और रहने योग्य बनाए रखने में सहायक होती हैं।

40. (A) बाढ़
बाढ़ एक ऐसी स्थिति है जिसमें जल की एक विशाल मात्रा सामान्य रूप से शुष्क रहने वाली भूमि को जलमग्न कर देती है।

Downloaded from www.pdf.tube

यह अक्सर अत्यधिक भारी वर्षा, नदियों के जल स्तर में वृद्धि या बांधों के टूटने के कारण होती है। बाढ़ से न केवल जन-माल की हानि होती है, बल्कि कृषि और आधारभूत संरचना को भी गंभीर क्षति पहुँचती है। यह एक प्रमुख प्राकृतिक आपदा है जो जल चक्र के असंतुलन और कभी-कभी मानवीय हस्तक्षेप के कारण और भी विकराल रूप ले लेती है।

41. (C) दो वायु राशियाँ एक-दूसरे को प्रतिस्थापित किए बिना मिलती हैं।
अचर वाताग्र तब निर्मित होता है जब दो अलग-अलग स्वभाव वाली वायु राशियाँ आपस में मिलती हैं, लेकिन उनमें से कोई भी इतनी शक्तिशाली नहीं होती कि दूसरी को हटा सके। इस स्थिति में वाताग्र की सीमा स्थिर रहती है और गति नहीं करती है। इसके परिणामस्वरूप एक ही क्षेत्र में दीर्घकाल तक बादल छाए रहते हैं और हल्की से मध्यम वर्षा होती रहती है। जब कोई एक वायु राशि गति करना प्रारंभ करती है, तो यह अचर वाताग्र शीत या उष्ण वाताग्र में परिवर्तित हो सकता है।

42. (A) ऊर्ध्वपातन
वायुमंडल में जलवाष्प का बिना तरल बने सीधे ठोस बर्फ के क्रिस्टल में परिवर्तित होने की प्रक्रिया को ऊर्ध्वपातन या निक्षेपण कहा जाता है। यह प्रक्रिया तब होती है जब तापमान ओसांक से काफी नीचे होता है और वायु संतृप्त हो जाती है। यह बादलों के ऊपरी भागों में बर्फ के कणों और पाले के निर्माण के लिए उत्तरदायी है। ऊष्मागतिकी के अनुसार, इस प्रक्रिया के दौरान गुप्त ऊष्मा मुक्त होती है, जो वायुमंडल की ऊर्जा के संतुलन में अपनी भूमिका निभाती है।

43. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पृथ्वी की सतह पर पहुँचने वाले सूर्यातप की मात्रा वायुमंडल के शीर्ष पर प्राप्त होने वाली मात्रा से सदैव कम होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब सौर विकिरण वायुमंडल से गुजरता है, तो उसका एक महत्वपूर्ण भाग बादलों और गैसों द्वारा परावर्तित, प्रकीर्णित और अवशोषित कर लिया जाता है। वायुमंडल एक छननी की भाँति कार्य करता है जो सौर ऊर्जा की तीव्रता को कम कर देता है। यही कारण है कि धरातल को सौर स्थिरांक का केवल एक अंश ही प्राप्त हो पाता है।

44. (B) शीतोष्ण चक्रवात
शीतोष्ण चक्रवात सामान्यतः उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की तुलना में बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र को घेरे रहते हैं, लेकिन इनमें पवन की गति अपेक्षाकृत कम होती है। इनका निर्माण दो विपरीत वायु राशियों के मिलने से बने वाताग्रों के साथ होता है। इनकी वायुदाब प्रवणता भी कम तीव्र होती है, जिससे मौसम में परिवर्तन अधिक धीरे-धीरे और व्यापक होता है। ये चक्रवात मध्य-अक्षांश क्षेत्रों की मुख्य विशेषता हैं और बड़े पैमाने पर वर्षा और बादलों के निर्माण के लिए उत्तरदायी होते हैं।

45. (C) तापमान व्युत्क्रमण
सामान्य परिस्थितियों में ऊँचाई के साथ तापमान घटता है, लेकिन जब ठंडी वायु की परत के ऊपर गर्म वायु की परत स्थित हो जाती है, तो इसे तापमान व्युत्क्रमण कहते हैं। यह घटना वायुमंडल को अत्यधिक स्थिर बना देती है और वायु के ऊर्ध्वाधर मिश्रण को रोक देती है। यह अक्सर शांत रातों, स्वच्छ आकाश और शीत ऋतु में देखी जाती है। व्युत्क्रमण के कारण प्रदूषक और धुंध धरातल के पास ही रुक जाते हैं, जिससे वायु की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

46. (D) ऊपर उठती हवा, बादल और वर्षा।
निम्न दाब प्रणाली सामान्यतः ऊपर उठती हुई वायु से जुड़ी होती है, जो बादलों के निर्माण और वर्षण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है। जैसे ही वायु ऊपर उठती है, वह ठंडी होती है और उसमें उपस्थित जलवाष्प संघनित हो जाती है। इसीलिए निम्न दाब वाले क्षेत्रों में अक्सर अस्थिर मौसम, बादल छाए रहना और वर्षा देखी जाती है। इसके विपरीत, उच्च दाब क्षेत्रों में वायु नीचे बैठती है, जिससे आकाश स्वच्छ रहता है और मौसम शांत और शुष्क बना रहता है।

47. (A) शुष्क शीत ऋतु
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में, दूसरे अक्षर के रूप में प्रयुक्त 'w' एक ऐसी जलवायु को दर्शाता है जहाँ शीत ऋतु शुष्क होती है। इसका अर्थ है कि संबंधित क्षेत्र में वर्षा का अधिकांश भाग ग्रीष्म ऋतु के दौरान होता है और सर्दियों में वर्षा बहुत कम या नगण्य होती है। यह विशेषता प्रायः मानसूनी और सवाना प्रकार की जलवायु में देखी जाती है। अक्षरों का यह क्रम मौसमी वर्षण के प्रतिरूप को संक्षेप में समझने में वैज्ञानिकों की सहायता करता है।

48. (B) बर्फ के गोले या अनियमित टुकड़े।
ओलावृष्टि ठोस वर्षण का एक रूप है जिसमें बर्फ के गोल या अनियमित टुकड़े बादलों से गिरते हैं। इनका निर्माण कपासी वर्षी बादलों के भीतर बहुत शक्तिशाली आरोही वायु धाराओं के कारण होता है, जो जल की बूंदों को अत्यधिक ठंडे क्षेत्रों में ले जाती हैं। वहाँ ये बूंदें जम जाती हैं और बार-बार ऊपर-नीचे होने से उन पर बर्फ की कई परतें जमा हो जाती हैं। जब ये इतने भारी हो जाते हैं कि वायु उन्हें थाम नहीं पाती, तो ये ओलों के रूप में गिरते हैं।

49. (B) मानसून
मानसून एक क्षेत्रीय और मौसमी पवन प्रणाली है, जिसे भूमंडलीय पवन नहीं माना जाता है। भूमंडलीय पवनें, जैसे व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें और ध्रुवीय पूर्वी पवनें, पूरे ग्रह पर नियमित रूप से और बड़े पैमाने पर चलती हैं। इसके विपरीत, मानसून केवल विशिष्ट क्षेत्रों, जैसे दक्षिण एशिया, में मौसम के अनुसार अपनी दिशा पूर्णतः परिवर्तित कर लेता है। यह स्थल और समुद्र के बीच तापन के अंतर के कारण उत्पन्न होता है और इसका प्रभाव एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक ही रहता है।

50. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और कारण होते हैं। बाढ़ तब आती है जब भारी वर्षा के कारण जल सामान्यतः शुष्क भूमि को जलमग्न कर देता है। सूखा वर्षा की दीर्घकालिक कमी के कारण उत्पन्न होने वाली स्थिति है जो जल संकट उत्पन्न करती है। लू असामान्य रूप से उच्च तापमान

की एक लंबी अवधि है जो ग्रीष्म ऋतु में चलती है। तड़ित झंझा विद्युत और गरज के साथ आने वाला एक तीव्र तूफान है जो स्थानीय मौसम को प्रभावित करता है।

51. (C) पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूर्णन।
कोरिओलिस प्रभाव पृथ्वी के अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूर्णन का परिणाम है। यह बल गतिशील वस्तुओं, जैसे पवनों और महासागरीय धाराओं, के मार्ग को विक्षेपित कर देता है। फेरल के नियम के अनुसार, यह विक्षेपण उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर होता है। यह बल भूमध्य रेखा पर शून्य होता है और ध्रुवों की ओर बढ़ने पर इसकी शक्ति बढ़ती जाती है। यह वैश्विक पवन प्रणालियों की दिशा निर्धारित करने में आधारभूत भूमिका निभाता है।

52. (D) शांत मौसम और अक्सर स्वच्छ आकाश।
उष्णकटिबंधीय चक्रवात का चक्षु उसके केंद्र में स्थित एक गोलाकार क्षेत्र है जहाँ मौसम आश्चर्यजनक रूप से शांत होता है। यहाँ वायु ऊपर से नीचे की ओर बैठती है, जिसके कारण बादल छँट जाते हैं और आकाश प्रायः स्वच्छ दिखाई देता है। चक्षु के भीतर पवन की गति बहुत कम होती है और वर्षा नहीं होती है। हालांकि, इस शांत क्षेत्र के चारों ओर चक्षु-भित्ति होती है, जहाँ चक्रवात की सबसे भीषण पवनें और भारी वर्षा केंद्रित होती है, जो अत्यधिक विनाशकारी होती है।

53. (C) वर्षण प्रभावशीलता।
थॉर्नथवेट के 1948 के जलवायु वर्गीकरण में P/E सूचकांक का उपयोग वर्षण प्रभावशीलता को मापने के लिए किया गया था। यह सूचकांक कुल मासिक वर्षण और वाष्पीकरण के मध्य के अनुपात को दर्शाता है। यह केवल वर्षा की मात्रा को ही नहीं, बल्कि मिट्टी में नमी की उपलब्धता को भी ध्यान में रखता है। इसके माध्यम से यह निर्धारित किया जाता है कि वनस्पति की वृद्धि के लिए वर्षा का कितना भाग वास्तव में प्रभावी है। यह वर्गीकरण कृषि और जल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

54. (B) कार्बन डाइऑक्साइड - 1%
वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा लगभग 0.04 प्रतिशत है, न कि 1 प्रतिशत। नाइट्रोजन 78 प्रतिशत के साथ सबसे प्रचुर गैस है, जबकि ऑक्सीजन लगभग 21 प्रतिशत भाग बनाती है। आर्गन तीसरी सबसे प्रमुख गैस है जो लगभग 0.93 प्रतिशत की मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बहुत कम है, फिर भी यह ग्रीनहाउस गैस के रूप में पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने और प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

55. (D) एक ठंडी वायु राशि द्वारा एक गर्म वायु राशि को ऊपर उठा दिया जाता है।
संरोधित वाताग्र तब निर्मित होता है जब एक तीव्रता से चलने वाला शीत वाताग्र अपने से आगे चल रहे उष्ण वाताग्र को पीछे से पकड़ लेता है। चूंकि ठंडी वायु अधिक भारी होती है, इसलिए वह मध्य में फंसी गर्म वायु राशि को पूर्णतः धरातल से ऊपर उठा देती है। इस प्रक्रिया में गर्म वायु का संपर्क पृथ्वी की सतह से टूट जाता है। संरोधन की यह घटना शीतोष्ण चक्रवात के जीवन चक्र की परिपक्वता और उसके पश्चात धीरे-धीरे समाप्त होने की अवस्था को दर्शाती है।

56. (A) विकिरण
सूर्य की ऊष्मा पृथ्वी तक मुख्य रुप से विकिरण की प्रक्रिया के माध्यम से पहुँचती है। यह ऊर्जा विद्युत चुंबकीय तरंगों के रूप में अंतरिक्ष के शून्य से होकर यात्रा करती है और इसे किसी भौतिक माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है। पृथ्वी को प्राप्त होने वाली यह सौर ऊर्जा लघु-तरंग विकिरण के रूप में होती है। यही विकिरण पृथ्वी के तापमान को बनाए रखने और वायुमंडल की विभिन्न गतिविधियों को ऊर्जा प्रदान करने का मूल स्रोत है, जो हमारे अस्तित्व के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

57. (B) केवल कथन II
ला नीना की घटना विषुवतीय प्रशांत महासागर में सामान्य से अधिक ठंडे समुद्री तापमान से जुड़ी होती है। इसके परिणामस्वरुप पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र, जिसमें ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया सम्मिलित हैं, में सामान्य से काफी अधिक वर्षा और आर्द्र स्थिति देखी जाती है। यह घटना वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण को प्रभावित करती है और अक्सर भारतीय मानसून को भी सुदृढ़ करने में सहायक होती है। ला नीना एल नीनो के विपरीत एक चक्र है जो प्रशांत महासागर और उसके आसपास के मौसम को पूर्णतः परिवर्तित कर देता है।

58. (A) कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)
भूमंडलीय तापन में योगदान देने वाली गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। हालांकि मीथेन और क्लोरोफ्लोरोकार्बन जैसे अन्य रसायनों की तापन क्षमता अधिक हो सकती है, लेकिन वायुमंडल में CO_2 की विशाल मात्रा और इसकी दीर्घकालिक अवस्थिति इसे सबसे प्रभावशाली बनाती है। यह गैस जीवाश्म ईंधन के दहन और वनों की कटाई जैसी मानवीय गतिविधियों से अत्यधिक उत्सर्जित होती है। यह पृथ्वी से निकलने वाले पार्थिव विकिरण को रोककर निचले वायुमंडल के तापमान में वृद्धि का मुख्य कारक है।

59. (D) शीत लहर
शीत लहर एक ऐसी मौसम संबंधी घटना है जिसमें किसी क्षेत्र का तापमान सामान्य की तुलना में बहुत तीव्रता से और काफी नीचे गिर जाता है। यह सामान्यतः शीत ऋतु में ठंडी ध्रुवीय पवनों के आगमन के कारण होती है। शीत लहर से जनजीवन, फसलों और पशुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह बेमौसम भी हो सकती है, जिससे हानि की संभावना और बढ़ जाती है। इसके प्रभाव से बचने के लिए उचित तैयारियों और पूर्व चेतावनी प्रणालियों की आवश्यकता होती है जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

60. (A) 1, 2, 4, 3
शीतोष्ण चक्रवात का विकास एक व्यवस्थित क्रम में होता है। सर्वप्रथम, दो विपरीत वायु राशियों के बीच एक अचर वाताग्र बनता है। इसके पश्चात, इस वाताग्र के साथ एक लहर या विक्षोभ विकसित होता है। तृतीय अवस्था परिपक्व चरण की

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) नाइट्रोजन
पृथ्वी के वायुमंडल में नाइट्रोजन गैस सर्वाधिक मात्रा में पाई जाती है, जो कुल वायुमंडलीय संगठन का लगभग 78 प्रतिशत भाग निर्मित करती है। यह गैस वायुमंडल में अपेक्षाकृत अक्रिय रूप में उपस्थित रहती है और मृदा चक्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नाइट्रोजन के बाद ऑक्सीजन गैस लगभग 21 प्रतिशत की मात्रा के साथ दूसरे स्थान पर है, जबकि आर्गन और कार्बन डाइऑक्साइड सूक्ष्म मात्रा में मौजूद हैं।

2. (C) कथन I और कथन II दोनों
क्षोभमंडल वायुमंडल की सबसे निचली परत है जहाँ ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान में सामान्य ह्रास दर के अनुसार कमी आती है। इसके विपरीत, समताप मंडल में ओजोन परत की उपस्थिति होती है, जो सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों का अवशोषर्ण कर लेती है। ये दोनों परतें पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा और मौसम संबंधी प्रक्रियाओं के संचालन में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती हैं। तापमान का यह परिवर्तन वायुमंडलीय स्थिरता को प्रभावित करता है।

3. (C) ऊर्ध्वपातन
ऊष्मा स्थानांतरण की प्राथमिक प्रक्रियाओं में चालन, संवहन और विकिरण मुख्य रूप से शामिल होते हैं, जो वायुमंडल और पृथ्वी की सतह के बीच ऊर्जा का संचार करते हैं। इसके विपरीत, ऊर्ध्वपातन पदार्थ की अवस्था परिवर्तन की वह प्रक्रिया है, जिसमें कोई ठोस पदार्थ बिना तरल बने सीधे गैस में बदल जाता है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से जल चक्र और बादलों के निर्माण से संबंधित है, न कि वायुमंडलीय ऊष्मा स्थानांतरण का प्राथमिक हिस्सा है।

4. (D) पृथ्वी की सतह पर प्राप्त होने वाला सौर विकिरण।
सूर्यातप का शाब्दिक अर्थ पृथ्वी की सतह पर प्राप्त होने वाला सौर विकिरण है। सूर्य से निकलने वाली लघु-तरंग ऊर्जा वायुमंडल के शीर्ष पर पहुँचती है और उसका कुछ भाग विभिन्न प्रक्रियाओं के पश्चात धरातल तक पहुँचता है। यह सौर ऊर्जा पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने और समस्त जैविक प्रक्रियाओं को संचालित करने का प्राथमिक स्रोत है। सूर्यातप की मात्रा अक्षांश, दिन की अवधि और वायुमंडलीय पारदर्शिता जैसी स्थितियों पर निर्भर करती है।

5. (C) ऊष्मा बजट सभी अक्षांशों पर एक समान है और इसमें कोई स्थानीय अधिशेष या कमी नहीं होती है।
पृथ्वी का औसत तापमान दीर्घकाल तक स्थिर रहता है क्योंकि प्राप्त होने वाला सौर विकिरण और बाहर जाने वाला पार्थिव विकिरण संतुलित होते हैं। हालांकि, यह ऊष्मा बजट सभी अक्षांशों पर एक समान नहीं होता है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सामान्यतः ऊर्जा का अधिशेष पाया जाता है, जबकि ध्रुवीय क्षेत्रों में ऊर्जा की कमी होती है। वायुमंडलीय परिसंचरण और महासागरीय धाराएं इस अक्षांशीय असंतुलन को दूर करने के लिए ऊर्जा का क्षैतिज स्थानांतरण करती हैं।

6. (B) समताप रेखा
मानचित्र पर समान वायुमंडलीय तापमान वाले स्थानों को मिलाने वाली काल्पनिक रेखा को समताप रेखा कहा जाता है। ये रेखाएं तापमान के क्षेत्रीय वितरण को समझने में सहायता करती हैं और सामान्यतः अक्षांशों के समानांतर चलती हैं। भूमि और जल के वितरण के कारण इनके झुकाव में मौसमी परिवर्तन देखे जाते हैं। समताप रेखाओं का निकट होना तीव्र तापीय प्रवणता को दर्शाता है, जबकि उनका दूर होना कम तापीय भिन्नता और अधिक समरूपता का संकेत देता है।

7. (D) वैश्विक तापमान और दबाव के प्रतिरूप।
पृथ्वी के वायुमंडल में पवन के सामान्य परिसंचरण का मुख्य कारण वैश्विक स्तर पर तापमान और वायुदाब में पाई जाने वाली भिन्नता है। सूर्य की किरणों के असमान वितरण के कारण विभिन्न अक्षांशों पर तापमान में अंतर उत्पन्न होता है, जिससे उच्च और निम्न वायुदाब की पेटियों का निर्माण होता है। पवन सदैव उच्च दाब वाले क्षेत्रों से निम्न दाब वाले क्षेत्रों की ओर बहती है, जिससे ऊर्जा का पुनर्वितरण और वायुमंडलीय संतुलन सुनिश्चित होता है।

8. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
क्षोभमंडल को मौसम विज्ञान की दृष्टि से वायुमंडल की सबसे महत्वपूर्ण परत माना जाता है क्योंकि बादलों का बनना, वर्षा और तड़ित झंझा जैसी समस्त मौसमी घटनाएं इसी परत में घटित होती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प और धूल कणों का अधिकांश भाग इसी निचली परत में केंद्रित होता है। ऊँचाई के साथ तापमान में आने वाली क्रमिक कमी भी वायु के ऊर्ध्वाधर मिश्रण और अस्थिरता में सहायक होती है।

9. (C) व्यापारिक पवनें
उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियों से भूमध्यरेखीय निम्न वायुदाब पेटियों की ओर बहने वाली पवनों को व्यापारिक पवनें कहा जाता है। कोरिओलिस प्रभाव के कारण ये उत्तरी गोलार्ध में उत्तर-पूर्व और दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण-पूर्व दिशा से चलती हैं। इन पवनों का मार्ग और दिशा अत्यंत नियमित होती है, जिससे ऐतिहासिक रूप से नाविकों को व्यापारिक यात्राओं में सहायता मिलती थी। ये पवनें उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में नमी और ऊष्मा के संचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

10. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
वायुमंडल की विभिन्न परतों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं होती हैं जो पृथ्वी के पर्यावरण को निर्धारित करती हैं। क्षोभमंडल में

NODIA

70. (B) डार्विन और ताहिती
दक्षिणी दोलन सूचकांक की गणना प्रशांत महासागर में ताहिती और हिंद महासागर में डार्विन के मध्य वायुमंडलीय दबाव के अंतर के आधार पर की जाती है। यह सूचकांक एल नीनो और ला नीना की घटनाओं की निगरानी के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। जब यह सूचकांक नकारात्मक होता है, तो यह एल नीनो की उपस्थिति को दर्शाता है, जबकि सकारात्मक मान ला नीना का संकेत देता है। दबाव का यह उतार-चढ़ाव वैश्विक स्तर पर पवनों की दिशा और वर्षा के वितरण को गहराई से प्रभावित करता है।

71. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
ऊष्मा स्थानांतरण की विभिन्न विधियाँ वायुमंडल को गर्म करने में पृथक भूमिकाएं निभाती हैं। चालन आणविक संपर्क के माध्यम से ऊष्मा संचारित करता है, जो मुख्यतः धरातल के समीप प्रभावी होता है। संवहन वायु के ऊर्ध्वाधर संचलन द्वारा ऊष्मा ले जाता है। अभिवहन पवन की क्षैतिज गति के माध्यम से ऊष्मा का स्थानांतरण करता है, जो क्षेत्रीय मौसम के लिए महत्वपूर्ण है। विकिरण विद्युत चुंबकीय तरंगों के रूप में ऊर्जा का संचरण है, जो बिना किसी माध्यम के अंतरिक्ष से पृथ्वी तक सौर ऊर्जा पहुँचाता है।

72. (A) पश्चिम से पूर्व
शीतोष्ण चक्रवात मुख्य रूप से मध्य-अक्षांशों में विकसित होते हैं और प्रचलित पछुआ पवनों के प्रभाव के कारण इनकी सामान्य गति पश्चिम से पूर्व की ओर होती है। यही कारण है कि इन क्षेत्रों में मौसम प्रणालियाँ सामान्यतः पश्चिम से आती हुई प्रतीत होती हैं। ये चक्रवात अपनी यात्रा के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में बादलों और वर्षण का संचार करते हैं। इनके संचलन की यह दिशा वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण और जेट स्ट्रीम की स्थिति से बहुत गहराई से जुड़ी हुई और अत्यंत नियमित होती है।

73. (C) तापमान के आधार पर पौधों की वृद्धि की संभावना।
थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण में तापीय दक्षता एक ऐसा सूचकांक है जो यह मापता है कि किसी क्षेत्र का तापमान पौधों की वृद्धि और वाष्पोत्सर्जन के लिए कितना अनुकूल है। यह केवल औसत तापमान को ही नहीं दर्शाता, बल्कि ऊर्जा की उस उपलब्धता को बताता है जो जैविक प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक है। यह सूचकांक यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि कोई जलवायु उष्णकटिबंधीय है या ध्रुवीय। इस प्रकार, यह कृषि नियोजन और वनस्पति के वितरण को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

74. (A) चिनूक
चिनूक एक गर्म और शुष्क स्थानीय पवन है जो उत्तरी अमेरिका के रॉकी पर्वत श्रृंखला के पूर्वी या पवनविमुख ढाल से नीचे उतरती है। जैसे-जैसे यह वायु नीचे आती है, दबाव बढ़ने के कारण यह रुद्धोष्म रूप से गर्म हो जाती है। यह शीत ऋतु में बर्फ को तीव्रता से पिघलाने की क्षमता रखती है, इसलिए इसे 'हिम भक्षी' भी कहा जाता है। चिनूक के कारण चारागाहों से बर्फ हट जाती है, जिससे शीत ऋतु में पशुपालन में बहुत सुविधा होती है और तापमान में अचानक सुखद वृद्धि होती है।

75. (D) वैश्विक स्तर पर आने वाली ऊर्जा बाहर जाने वाली ऊर्जा के बराबर होती है।
पृथ्वी का ऊष्मा बजट इस सिद्धांत पर आधारित है कि वैश्विक और वार्षिक औसत पर, अंतरिक्ष से प्राप्त होने वाली कुल सौर ऊर्जा और पृथ्वी द्वारा वापस भेजी जाने वाली ऊर्जा बराबर होती है। यदि यह संतुलन विचलित होता है, तो पृथ्वी का औसत तापमान या तो बढ़ेगा या घटेगा। हालांकि क्षेत्रीय स्तर पर अधिशेष या कमी हो सकती है, लेकिन पूरे ग्रह के लिए यह शून्य का शुद्ध संतुलन होता है। यही संतुलन पृथ्वी के जलवायु तंत्र को स्थिर रखने और जीवन के अनुकूल बनाए रखने में सहायक है।

76. (B) अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र के भीतर
डोलड्रम्स भूमध्य रेखा के समीप स्थित एक शांत वायुमंडलीय क्षेत्र है जो अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र के भीतर पाया जाता है। यहाँ उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों की व्यापारिक पवनें आपस में मिलती हैं और अत्यधिक तापन के कारण वायु ऊपर की ओर उठती है। इसके परिणामस्वरूप धरातल पर पवनें बहुत हल्की या शांत होती हैं। यह क्षेत्र अपनी अनिश्चितता और अचानक होने वाली संवहनीय वर्षा के लिए जाना जाता है। प्राचीन काल में नाविकों के लिए इस क्षेत्र को पार करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण माना जाता था।

77. (C) कथन I और कथन II दोनों
ओजोन की भूमिका उसके वायुमंडलीय स्थान के आधार पर पृथक होती है। समताप मंडल में ओजोन एक सुरक्षा कवच की भाँति कार्य करती है जो हानिकारक पराबैंगनी किरणों को रोकती है। इसके विपरीत, क्षोभमंडल में ओजोन एक हानिकारक प्रदूषक के रूप में कार्य करती है, जो प्रकाश रासायनिक धुंध का मुख्य घटक है और मानव स्वास्थ्य व वनस्पतियों को हानि पहुँचाती है। इस प्रकार, 'अच्छी ओजोन' ऊपरी वायुमंडल में जीवन की रक्षा करती है, जबकि 'बुरी ओजोन' धरातल के समीप वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न करती है।

78. (D) चक्रवातजनन
चक्रवात के जन्म, विकास और उसके पूर्ण विस्तार की प्रक्रिया को चक्रवातजनन कहा जाता है। यह शब्द विशेष रूप से शीतोष्ण चक्रवातों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है, जो एक वाताग्र के साथ वायुमंडलीय विक्षोभ के रूप में प्रारंभ होते हैं। इस प्रक्रिया में वायु का चक्रीय संचलन तीव्र होता है और निम्न दाब का केंद्र गहरा होता जाता है। इसके विपरीत, जब चक्रवात निर्बल होकर समाप्त होने लगता है, तो उस प्रक्रिया को चक्रवातलयन कहा जाता है। ये दोनों प्रक्रियाएं वायुमंडल की गतिकी को समझने का आधार हैं।

79. (A) उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटियाँ
अश्व अक्षांश लगभग 30 से 35 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों के मध्य स्थित क्षेत्र हैं, जो उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियों से संबंधित हैं। इन क्षेत्रों में ऊपरी वायुमंडल से वायु नीचे

Downloaded from www.pdf.tube

तापन के कारण उत्पन्न होती है। इसके विपरीत, पछुआ पवनें, व्यापारिक पवनें और ध्रुवीय पूर्वी पवनें वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का भाग हैं और पूरे ग्रह पर बड़े पैमाने पर चलती हैं। फान जैसे स्थानीय प्रभाव विशिष्ट स्थलाकृतियों और तात्कालिक वायुमंडलीय स्थितियों के कारण ही उत्पन्न होते हैं।

21. (C) ला नीना
ला नीना एक महासागरीय घटना है जो पेरू के तट और मध्य प्रशांत क्षेत्र में सामान्य से अधिक ठंडे समुद्री तापमान की उपस्थिति को दर्शाती है। यह एल नीनो के विपरीत की स्थिति है और सामान्य समुद्री परिसंचरण को और अधिक तीव्र कर देती है। इसके प्रभाव से पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में भारी वर्षा होती है और पूर्वी प्रशांत में सूखा पड़ता है। यह घटना वैश्विक मौसम चक्र और भारतीय मानसून की तीव्रता को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

22. (B) यह दो अलग-अलग वायु राशियों के बीच एक वाताग्र के साथ बनता है।
शीतोष्ण या मध्य-अक्षांश चक्रवात उन क्षेत्रों में बनते हैं जहाँ दो विपरीत स्वभाव वाली वायु राशियाँ, जैसे ठंडी ध्रुवीय वायु और गर्म उष्णकटिबंधीय वायु, एक वाताग्र के साथ आपस में मिलती हैं। ये चक्रवात मुख्य रूप से मध्य और उच्च अक्षांशों में विकसित होते हैं और इनमें बादलों और वर्षा का एक विस्तृत क्षेत्र होता है। उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के विपरीत, इनमें कोई स्पष्ट चक्षु नहीं होती है और ये आमतौर पर पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होते हैं।

23. (D) लू - भारत के उत्तरी मैदान
लू भारत के उत्तरी मैदानों में ग्रीष्म ऋतु के दौरान चलने वाली एक अत्यंत गर्म और शुष्क स्थानीय पवन है। यह सामान्यतः दोपहर के समय चलती है और इसके संपर्क में आने से स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। अन्य विकल्पों में दी गई पवनें अपने क्षेत्रों से सही सुमेलित नहीं हैं; जैसे चिनूक उत्तरी अमेरिका के रॉकी पर्वत में और मिस्ट्रल यूरोप की रोन घाटी में चलती है। लू इस क्षेत्र की एक विशिष्ट मौसमी विशेषता है जो उच्च तापमान का कारण बनती है।

24. (A) प्रशीतकों से क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs)।
ओजोन परत के क्षरण का प्राथमिक कारण क्लोरोफ्लोरोकार्बन जैसे रसायनों का वायुमंडल में उत्सर्जन है, जो मुख्य रूप से प्रशीतन प्रणालियों और एयर कंडीशनर से निकलते हैं। ये रसायन समताप मंडल में पहुँचकर क्लोरीन परमाणु मुक्त करते हैं, जो ओजोन अणुओं को नष्ट कर देते हैं। ओजोन परत के पतले होने से पृथ्वी की सतह पर हानिकारक पराबैंगनी विकिरण का स्तर बढ़ जाता है। इससे मनुष्यों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं और पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर हानि पहुँचने का संकट बना रहता है।

25. (C) पूर्वी प्रशांत और पश्चिमी प्रशांत महासागर।
दक्षिणी दोलन का तात्पर्य उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के बीच होने वाले वायुमंडलीय दबाव के उतार-चढ़ाव से है। जब पूर्वी प्रशांत में दबाव अधिक होता है, तो पश्चिमी प्रशांत में दबाव कम होता है, और इसके विपरीत। यह घटना एल नीनो के साथ मिलकर वैश्विक मौसम प्रतिरूप को प्रभावित करती है। दबाव के इस अंतर को मापने के लिए ताहिती और डार्विन के मध्य के वायुदाब के आंकड़ों का तुलनात्मक उपयोग किया जाता है।

26. (A) पर्वतीय वर्षा
पर्वतीय वर्षा तब होती है जब आर्द्र वायु को किसी पर्वत श्रृंखला जैसी बाधा के ऊपर चढ़ने के लिए विवश किया जाता है। जैसे-जैसे वायु ऊपर उठती है, वह ठंडी होती जाती है और उसमें उपस्थित जलवाष्प संघनित होकर बादलों का निर्माण करती है। इससे पर्वत के पवनमुखी ढाल पर भारी वर्षा होती है। इसके विपरीत, पवनविमुख ढाल पर उतरती हुई वायु गर्म और शुष्क हो जाती है, जिससे वहाँ बहुत कम वर्षा होती है और वर्षा-छाया क्षेत्र का निर्माण होता है।

27. (A) 2, 4, 1, 3
पृथ्वी की सतह से ऊपर जाने पर वायुमंडल की परतों का सही क्रम क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्यमंडल और तापमंडल है। क्षोभमंडल धरातल से सटा हुआ है जहाँ मौसम की समस्त घटनाएं होती हैं। इसके ऊपर समताप मंडल है जिसमें ओजोन परत स्थित होती है। मध्यमंडल वह परत है जहाँ उल्कापिंड जलकर नष्ट होते हैं और तापमान न्यूनतम स्तर पर पहुँच जाता है। सबसे ऊपर तापमंडल स्थित है जहाँ आयनमंडल होता है और यहाँ तापमान पुनः तीव्रता से बढ़ने लगता है।

28. (B) वायुमंडलीय गैसें अवरक्त विकिरण को अवशोषित और पुनः विकीर्ण करती हैं।
ग्रीनहाउस प्रभाव एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी गैसें पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित दीर्घ-तरंग अवरक्त विकिरण को अवशोषित करती हैं। ये गैसें इस ऊष्मा को पुनः धरातल की ओर विकीर्ण करती हैं, जिससे निचला वायुमंडल गर्म बना रहता है। यह प्रक्रिया पृथ्वी पर जीवन के लिए अनुकूल तापमान बनाए रखने में सहायक है। हालांकि, मानवीय गतिविधियों के कारण इन गैसों की सांद्रता बढ़ने से भूमंडलीय तापन की समस्या उत्पन्न हो रही है, जो जलवायु के लिए चिंताजनक है।

29. (C) सूखा
सूखा एक ऐसी पर्यावरणीय स्थिति है जो दीर्घकाल तक सामान्य से कम वर्षा होने के कारण उत्पन्न होती है। इसके परिणामस्वरूप जल के स्रोतों में कमी आती है और मिट्टी की नमी समाप्त हो जाती है, जिससे कृषि और पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। सूखे को मौसम संबंधी, जलविज्ञानी और कृषि संबंधी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। यह आपदा न केवल खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करती है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक संकट का कारण भी बनती है।

30. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना में विभिन्न प्रतीकों का विशिष्ट अर्थ होता है। 'Aw' उष्णकटिबंधीय सवाना जलवायु

NODIA

89. (C) ध्रुवीय भंवर
ध्रुवीय भंवर एक उच्च ऊँचाई वाली वायु प्रणाली है जो ध्रुवों के चारों ओर घूमती है, और इसका प्रत्यक्ष संबंध 'एंज़ो' चक्र से नहीं है। यह चक्र मुख्य रूप से एल नीनो, ला नीना और दक्षिणी दोलन के मध्य के अंतर्संबंधों को संदर्भित करता है जो उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में घटित होते हैं। ध्रुवीय भंवर का संबंध समतापमंडलीय वायु संचलन और ध्रुवीय क्षेत्रों की कड़ाके की ठंड से है। यद्यपि इनमें अप्रत्यक्ष संबंध हो सकते हैं, किंतु ये दोनों प्रणालियाँ पृथक वायुमंडलीय गतिकी द्वारा संचालित होती हैं।

90. (A) 4, 2, 1, 3
पृथ्वी के वायुमंडल के संगठन में गैसों का एक निश्चित अनुपात पाया जाता है। आयतन के अनुसार नाइट्रोजन सर्वाधिक प्रचुर गैस है जो लगभग 78 प्रतिशत भाग बनाती है। इसके पश्चात ऑक्सीजन लगभग 21 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। आर्गन तीसरी सबसे प्रमुख गैस है जो लगभग 0.93 प्रतिशत की मात्रा में उपलब्ध है, जबकि कार्बन डाइऑक्साइड का स्थान इसके बाद आता है जिसकी मात्रा मात्र 0.04 प्रतिशत के निकट है। यह गैसों का प्राकृतिक संतुलन वायुमंडलीय स्थिरता के लिए अनिवार्य है।

91. (D) विभेदी सौर तापन
पृथ्वी की सतह का असमान या विभेदी सौर तापन ही वायुमंडलीय पवनों और महासागरीय धाराओं को संचालित करने वाला प्राथमिक बल है। सूर्य की ऊर्जा भूमध्य रेखा पर अधिक और ध्रुवों पर कम प्राप्त होती है, जिससे तापमान और वायुदाब में अंतर उत्पन्न होता है। प्रकृति इस तापीय असंतुलन को संतुलित करने का प्रयास करती है, जिसके परिणामस्वरूप पवनें और धाराएं ऊष्मा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती हैं। यह प्रक्रिया वैश्विक जलवायु प्रणाली के ऊर्जा संतुलन को बनाए रखने के लिए आधारभूत है।

92. (B) वाताग्रजनन
दो अलग-अलग स्वभाव वाली वायु राशियों के मध्य एक नवीन सीमा या वाताग्र के निर्माण की प्रक्रिया को वाताग्रजनन कहा जाता है। यह तब होता है जब क्षैतिज रूप से वायु का अभिसरण होता है और तापमान की भिन्नता तीव्र हो जाती है। यह प्रक्रिया चक्रवातों के विकास का प्रारंभिक चरण है और वायुमंडल में ऊर्जा के संचय को दर्शाती है। इसके विपरीत, जब वाताग्र निर्बल होकर समाप्त होने लगता है, तो उसे वाताग्रलयन कहते हैं। ये दोनों घटनाएं मौसम के तीव्रता से बदलते प्रतिरूपों को समझने के लिए अनिवार्य हैं।

93. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
स्थानीय पवनें अपने विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों और विशेषताओं के लिए जानी जाती हैं। फान आल्प्स पर्वतमाला के पवनविमुख ढाल पर उतरने वाली एक गर्म और शुष्क पवन है। मिस्ट्रल एक अत्यंत शीतल और शुष्क पवन है जो आल्प्स से रोन घाटी की ओर बहती है। सिरोको सहारा मरुस्थल से भूमध्य सागर की ओर चलने वाली गर्म और धूल भरी पवन है। बोरा एड्रियाटिक सागर के ऊपर उत्तर से चलने वाली एक ठंडी और शुष्क पवन है जो स्थानीय मौसम को गहराई से प्रभावित करती है।

94. (D) तापमान में तेजी से गिरावट और पवन की दिशा में अचानक बदलाव।
जब किसी क्षेत्र से शीत वाताग्र गुजरता है, तो वहाँ का मौसम नाटकीय रूप से परिवर्तित हो जाता है। ठंडी और सघन वायु तीव्रता से गर्म वायु को ऊपर धकेलती है, जिससे तापमान में अचानक और बहुत तीव्र गिरावट दर्ज की जाती है। इस प्रक्रिया के दौरान पवन की दिशा में तीव्रता से परिवर्तन आता है और अक्सर गरज के साथ भारी वर्षा या ओलावृष्टि होती है। वाताग्र के गुजरने के पश्चात आकाश स्वच्छ हो जाता है और वायु का दबाव बढ़ने लगता है, जो शुष्क मौसम का संकेत है।

95. (A) ध्रुवीय जलवायु
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना में बड़े अक्षर 'E' का उपयोग ध्रुवीय जलवायु के समूह को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस जलवायु की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ सर्वाधिक उष्ण महीने का औसत तापमान भी 10 डिग्री सेल्सियस से कम रहता है। इसे आगे टुंड्रा और हिमटोपी जलवायु में विभाजित किया गया है। इन क्षेत्रों में अत्यधिक शीत के कारण कृषि करना असंभव होता है और स्थायी रूप से जमी हुई बर्फ या बहुत कम वनस्पति पाई जाती है, जो कठोर जीवन स्थितियों को दर्शाती है।

96. (D) भूमंडलीय तापन
भूमंडलीय तापन पृथ्वी के वायुमंडल और महासागरों के औसत तापमान में होने वाली क्रमिक और दीर्घकालिक वृद्धि को संदर्भित करता है। इसका मुख्य कारण मानवीय गतिविधियों, जैसे जीवाश्म ईंधन का दहन और वनों की कटाई, से उत्पन्न होने वाली ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता है। यह ऊष्मा को वायुमंडल में अवरुद्ध कर लेता है, जिससे जलवायु परिवर्तन, हिमनदों का पिघलना और समुद्र के स्तर में वृद्धि जैसी वैश्विक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वर्तमान समय की सर्वाधिक गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक है।

97. (B) cP (महाद्वीपीय ध्रुवीय)
शीत ऋतु के दौरान उत्तरी कनाडा जैसे विशाल भूभागों के ऊपर निर्मित होने वाली वायु राशि को महाद्वीपीय ध्रुवीय या 'cP' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यहाँ 'c' का अर्थ महाद्वीपीय स्रोत क्षेत्र है, जो बताता है कि वायु शुष्क है, और 'P' का अर्थ ध्रुवीय क्षेत्र है, जो इसके ठंडे स्वभाव को दर्शाता है। ये वायु राशियाँ बहुत स्थिर होती हैं और जब ये दक्षिण की ओर बढ़ती हैं, तो संयुक्त राज्य अमेरिका और मध्य अमेरिका के बड़े भागों में कड़ाके की ठंड और स्वच्छ मौसम लाती हैं।

98. (A) प्रति 1000 मीटर पर 6.5°C की कमी
क्षोभमंडल में ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान घटने की औसत दर को सामान्य ह्रास दर कहा जाता है। यह दर औसतन प्रति 1000 मीटर की ऊँचाई पर लगभग 6.5 डिग्री सेल्सियस होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि वायुमंडल नीचे से धरातल द्वारा विमोचित विकिरण से गर्म होता है। जैसे-जैसे हम ऊपर

Click Here to Buy book on Amazon

यह पूरा चक्र वायुमंडलीय अस्थिरता और ऊर्जा के विमोचन की एक व्यवस्थित प्रक्रिया को दर्शाता है।

173. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
जलवायु विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। व्लादिमीर कोपेन ने तापमान और वर्षण पर आधारित एक आनुभविक जलवायु वर्गीकरण प्रणाली विकसित की। सी.डब्ल्यू. थॉर्नथवेट ने संभावित वाष्पोत्सर्जन की अवधारणा पर केंद्रित वर्गीकरण प्रस्तुत किया। सामान्य वायुमंडलीय परिसंचरण का तीन-कोशिका मॉडल हेडली, फेरेल और ध्रुवीय वैज्ञानिकों के नाम से संबद्ध है। गिल्बर्ट वॉकर ने प्रशांत महासागर में वायुमंडलीय दबाव के उतार-चढ़ाव की खोज की, जिसे दक्षिणी दोलन कहा जाता है। ये सभी सिद्धांत आधुनिक मौसम विज्ञान के स्तंभ हैं।

174. (D) इसमें ओजोन परत होती है जो तापमान बढ़ाती है।
समताप मंडल वायुमंडल की वह द्वितीय परत है जो क्षोभमंडल के ऊपर स्थित है। इसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता इसमें ओजोन परत की उपस्थिति है, जो सूर्य के हानिकारक पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करती है। इस अवशोषण के कारण, इस परत में ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान घटने के स्थान पर बढ़ने लगता है। यहाँ वायुमंडल बहुत शांत और स्थिर होता है क्योंकि बादल और मौसम संबंधी उथल-पुथल यहाँ नहीं पाई जाती। यही कारण है कि यह परत दीर्घ दूरी की विमान उड़ानों के लिए आदर्श मानी जाती है।

175. (A) मौसमी सामान्य से तापमान का विचलन।
लू और शीत लहर दोनों ही चरम मौसम की स्थितियाँ हैं जिन्हें संबंधित क्षेत्र के सामान्य औसत तापमान से होने वाले विचलन के आधार पर परिभाषित किया जाता है। जब तापमान मौसमी सामान्य से काफी अधिक हो जाता है, तो उसे लू कहा जाता है, जो सामान्यतः गर्मियों में चलती है। इसके विपरीत, जब तापमान सामान्य से बहुत न्यून हो जाता है, तो उसे शीत लहर कहा जाता है, जो शीत ऋतु में आती है। ये दोनों स्थितियाँ स्वास्थ्य, कृषि और अर्थव्यवस्था के लिए चुनौतीपूर्ण होती हैं और इनकी तीव्रता भौगोलिक स्थान पर निर्भर करती है।

176. (D) एंज़ो - ध्रुवीय भंवर स्थिरता से जुड़ा है
एंज़ो का प्रत्यक्ष संबंध ध्रुवीय भंवर की स्थिरता से नहीं है, बल्कि यह उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में होने वाले परिवर्तनों का एक संयोजन है। एल नीनो और ला नीना समुद्री तापमान के उतार-चढ़ाव को दर्शाते हैं, जबकि दक्षिणी दोलन वायुमंडलीय दबाव के अंतर को बताता है। ये तीनों मिलकर वैश्विक मौसम प्रतिरूप को नियंत्रित करते हैं। ध्रुवीय भंवर एक पृथक वायुमंडलीय प्रणाली है जो ध्रुवों के समीप उच्च ऊँचाई पर स्थित होती है। यद्यपि इनमें कुछ अप्रत्यक्ष अंतर्संबंध हो सकते हैं, किंतु ये मूलतः भिन्न प्रक्रियाएं हैं।

177. (A) वाताग्र का कमजोर होना या समाप्त होना।
वाताग्रलयन वह वायुमंडलीय प्रक्रिया है जिसमें दो पृथक वायु राशियों के मध्य की सीमा या वाताग्र धीरे-धीरे निर्बल होकर पूर्णतः समाप्त हो जाता है। यह तब होता है जब वायु राशियों के मध्य तापमान और घनत्व का अंतर न्यून हो जाता है या जब पवनों का अभिसरण रुक जाता है। यह प्रक्रिया चक्रवातों के क्षय होने की अवस्था को दर्शाती है और मौसम के स्थिर होने का संकेत देती है। यह वाताग्रजनन के ठीक विपरीत है, जहाँ नवीन मौसम प्रणालियों का जन्म और विकास होता है।

178. (D) न तो कथन I और न ही कथन II
विकिरण के सिद्धांतों के अनुसार, कोई भी वस्तु अपने तापमान के आधार पर ऊर्जा विकीर्ण करती है। सूर्य एक अत्यधिक उष्ण तारा है, इसलिए वह मुख्य रूप से लघु-तरंग विकिरण के रूप में ऊर्जा उत्सर्जित करता है। इसके विपरीत, पृथ्वी सूर्य की तुलना में काफी शीतल है, इसलिए वह अवशोषित ऊर्जा को दीर्घ-तरंग विकिरण (पार्थिव विकिरण) के रूप में वापस विसर्जित करती है। वायुमंडल इन दीर्घ-तरंगों के लिए अधिक संवेदनशील होता है, जो ग्रीनहाउस प्रभाव का मुख्य कारण बनता है और पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने में सहायक होता है।

NODIA

179. (C) भूमध्य रेखा पर
कोरिओलिस बल का मान भूमध्य रेखा पर शून्य होता है क्योंकि यहाँ पृथ्वी के घूर्णन के कारण होने वाला विक्षेपण प्रभाव न्यूनतम होता है। जैसे-जैसे हम भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ते हैं, इस बल की तीव्रता बढ़ती जाती है और ध्रुवों पर यह सर्वाधिक होती है। कोरिओलिस बल की अनुपस्थिति के कारण ही भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर चक्रवात विकसित नहीं हो पाते हैं। यह बल पवनों की दिशा को विक्षेपित करने में महत्वपूर्ण है, किंतु भूमध्य रेखा पर वायु मुख्य रूप से दबाव प्रवणता के अनुसार ही प्रवाहित होती है।

180. (D) 1, 2 और 3
वायुमंडल का सामान्य परिसंचरण पृथ्वी की सतह के असमान तापन द्वारा संचालित एक जटिल तंत्र है। इसमें तीन प्रमुख कोशिकाएं सम्मिलित हैं: हेडली कोशिका उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में तापीय रूप से प्रत्यक्ष संचलन करती है। फेरेल कोशिका मध्य-अक्षांशों में एक अप्रत्यक्ष कोशिका के रूप में कार्य करती है, जो ऊर्जा को ध्रुवों की ओर प्रेषित करने में सहायता करती है। ध्रुवीय कोशिका उच्च अक्षांशों पर शीतल वायु के संचरण को व्यवस्थित करती है। ये तीनों मिलकर वैश्विक स्तर पर ऊष्मा और आर्द्रता के पुनर्वितरण को सुनिश्चित करती हैं।

181. (C) पर्वत श्रृंखला के शुष्क पवनविमुख ढाल पर।
वर्षा-छाया क्षेत्र किसी पर्वत श्रृंखला के उस ढाल पर पाया जाता है जो पवनों की दिशा के विपरीत होता है, जिसे पवनविमुख ढाल कहते हैं। जब आर्द्र वायु पर्वत के एक ओर ऊपर चढ़ती है, तो वह शीतल होकर वहाँ समस्त वर्षा कर देती है। दूसरी ओर नीचे उतरते समय, यह वायु उष्ण और शुष्क हो जाती है क्योंकि इसमें नमी की न्यूनता होती है और दबाव बढ़ने से यह गर्म होती है। इसके परिणामस्वरूप, उस क्षेत्र में बहुत कम वर्षा होती है, जिससे वहाँ प्रायः अर्ध-शुष्क या मरुस्थलीय स्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं।

वाताग्र की स्थिति जेट स्ट्रीम के मार्ग को भी प्रभावित करती है और वैश्विक स्तर पर ऊष्मा के पुनर्वितरण में सहायक होती है।

108. (B) अति-आर्द्र
थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार, जिस क्षेत्र में पूरे वर्ष भारी आर्द्रता अधिशेष पाया जाता है और वाष्पोत्सर्जन की तुलना में वर्षा की मात्रा बहुत अधिक होती है, उसे अति-आर्द्र श्रेणी में रखा जाता है। इन क्षेत्रों में जल की न्यूनता कभी अनुभव नहीं होती और मृदा सदैव संतृप्त रहती है। यह स्थिति सामान्यतः उष्णकटिबंधीय वर्षावन क्षेत्रों में देखी जाती है। यहाँ की वनस्पति अत्यंत घनी और सदाबहार होती है, क्योंकि पौधों की वृद्धि के लिए नमी और तापमान दोनों प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

109. (C) क्लोरीन और ब्रोमीन यौगिकों से जुड़ी उत्प्रेरक अभिक्रियाएं।
समताप मंडल में ओजोन परत के क्षरण का मुख्य कारण क्लोरीन और ब्रोमीन जैसे रसायनों की उत्प्रेरक अभिक्रियाएं हैं। ये तत्व मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों द्वारा उत्सर्जित क्लोरोफ्लोरोकार्बन से प्राप्त होते हैं। एक बार जब ये कण ओजोन परत तक पहुँचते हैं, तो सूर्य की पराबैंगनी किरणें इन्हें मुक्त कर देती हैं। एक अकेला क्लोरीन परमाणु सहस्त्रों ओजोन अणुओं को नष्ट करने की क्षमता रखता है। यह प्रक्रिया ओजोन छिद्र के निर्माण के लिए उत्तरदायी है, जिससे हानिकारक विकिरण का संकट बढ़ जाता है।

110. (D) गुरुत्वाकर्षण और रात के शीतलन के कारण ढाल से नीचे की ओर चलती है।
कैटाबेटिक पवन एक स्थानीय पवन है जो रात्रि के समय पहाड़ी ढालों से नीचे की ओर बहती है। रात में ऊँची चोटियों पर स्थित वायु तीव्रता से शीतल होकर सघन और भारी हो जाती है। गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से यह भारी वायु ढालों का अनुसरण करते हुए घाटी की ओर नीचे उतरती है। यह पवन अत्यंत शीतल हो सकती है और अक्सर घाटियों में तापमान के व्युत्क्रमण का कारण बनती है। ध्रुवीय क्षेत्रों में, विशेष रूप से अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड में, ये पवनें बहुत तीव्र और शक्तिशाली हो सकती हैं।

111. (A) फेरेल कोशिकाएं हेडली और ध्रुवीय कोशिकाओं द्वारा संचालित होती हैं।
वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण में फेरेल कोशिका को एक तापीय रूप से अप्रत्यक्ष कोशिका माना जाता है। यह स्वतः तापन द्वारा संचालित नहीं होती, बल्कि हेडली और ध्रुवीय कोशिकाओं के मध्य एक मध्यस्थ की भाँति कार्य करती है। हेडली और ध्रुवीय कोशिकाएं तापीय रूप से प्रत्यक्ष हैं जहाँ गर्म वायु ऊपर उठती है और ठंडी वायु नीचे बैठती है। फेरेल कोशिका मध्य-अक्षांशों में पवनों के संचरण को व्यवस्थित करती है और यहाँ धरातल पर पछुआ पवनें चलती हैं, जो मौसम प्रणालियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

112. (D) टॉरनेडो
टॉरनेडो पृथ्वी पर आने वाले तूफानों में सर्वाधिक तीव्र और विनाशकारी माना जाता है। यह एक संकीर्ण और तीव्रता से घूमने वाला वायु स्तंभ है जो कपासी वर्षी बादल से धरातल तक विस्तृत होता है। यद्यपि इसका भौगोलिक विस्तार हरिकेन या चक्रवात की तुलना में बहुत छोटा होता है, किंतु इसके भीतर पवन की गति 300 मील प्रति घंटे से भी अधिक हो सकती है। यह कुछ ही मिनटों में भारी तबाही मचा सकता है। इसकी उत्पत्ति मुख्य रूप से अत्यधिक अस्थिर वायुमंडलीय स्थितियों के कारण होती है।

113. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
सौर ऊर्जा और पृथ्वी के तापन से संबंधित विभिन्न शब्दों की अपनी विशिष्ट परिभाषाएं हैं। सूर्यातप का अर्थ पृथ्वी को प्राप्त होने वाला आगामी सौर विकिरण है। एल्बिडो वह अनुपात है जो किसी सतह द्वारा परावर्तित सौर ऊर्जा को दर्शाता है। पार्थिव विकिरण पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित दीर्घ-तरंग ऊर्जा है जो वायुमंडल को गर्म करती है। ऊष्मा बजट आने वाली और बाहर जाने वाली ऊर्जा के मध्य का पूर्ण संतुलन है, जो पृथ्वी के औसत तापमान को दीर्घकाल तक स्थिर बनाए रखने में मुख्य भूमिका निभाता है।

114. (A) दक्षिणी गोलार्ध में पछुआ पवनें
'गरजती चालीसा', 'भयंकर पचासा' और 'चीखती साठा' जैसे शब्द दक्षिणी गोलार्ध के 40 से 60 डिग्री अक्षांशों के मध्य बहने वाली अत्यंत शक्तिशाली पछुआ पवनों को दर्शाते हैं। यहाँ महासागरों का विशाल विस्तार होने और भूमि की बाधा न होने के कारण ये पवनें बहुत तीव्र और नियमित हो जाती हैं। पुराने समय के नाविकों द्वारा इन पवनों का नाम उनकी प्रचंडता और ध्वनि के आधार पर रखा गया था। ये पवनें समुद्री यात्राओं के लिए जितनी सहायक थीं, उतनी ही चुनौतीपूर्ण भी मानी जाती थीं।

115. (C) मिट्टी की नमी फसल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होती है।
कृषि संबंधी सूखा तब होता है जब वर्षा की न्यूनता के कारण मृदा की नमी इतनी कम हो जाती है कि वह पौधों और फसलों की स्वस्थ वृद्धि के लिए पर्याप्त नहीं रह जाती। यह स्थिति केवल वर्षा की कमी पर ही नहीं, बल्कि वाष्पीकरण की दर और मृदा की जल धारण क्षमता पर भी निर्भर करती है। कृषि सूखा सीधे तौर पर फसल की पैदावार को प्रभावित करता है और खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर संकट उत्पन्न करता है। इसका प्रभाव संबंधित क्षेत्र की कृषि प्रणालियों और सिंचाई सुविधाओं पर निर्भर करता है।

116. (D) गर्म ग्रीष्म ऋतु
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में, तृतीय अक्षर के रूप में 'a' का उपयोग उन क्षेत्रों को दर्शाने के लिए किया जाता है जहाँ ग्रीष्म ऋतु उष्ण होती है। इसका विशिष्ट अर्थ यह है कि वर्ष के कम से कम एक माह का औसत तापमान 22 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहता है। यह अक्षर सूक्ष्म जलवायु विशेषताओं को परिभाषित करने में सहायता करता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि संबंधित क्षेत्र में गर्मियों की तीव्रता कैसी होगी। यह कोपेन द्वारा जलवायु की सटीक पहचान हेतु उपयोग किया जाने वाला व्यवस्थित माध्यम है।

NODIA

पद्धति है जो प्रेक्षित जलवायु आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण पर पूर्णतः आधारित है।

136. (A) अंटार्कटिका
ओजोन परत का सर्वाधिक मौसमी पतला होना, जिसे सामान्यतः 'ओजोन छिद्र' कहा जाता है, अंटार्कटिका के ऊपर देखा जाता है। यह घटना विशेष रूप से वसंत ऋतु के दौरान घटित होती है जब ध्रुवीय समतापमंडलीय बादलों में होने वाली रासायनिक अभिक्रियाएं क्लोरीन को सक्रिय कर देती हैं। अंटार्कटिका की विशिष्ट मौसमी और वायुमंडलीय परिस्थितियाँ, जैसे ध्रुवीय भंवर, इस प्रक्रिया को अत्यधिक तीव्र बना देती हैं। ओजोन छिद्र की उपस्थिति से पृथ्वी के दक्षिणी भाग में पराबैंगनी विकिरण का स्तर खतरनाक रूप से बढ़ जाता है।

137. (C) मिस्ट्रल
मिस्ट्रल एक अत्यंत शीतल और शुष्क स्थानीय पवन का उदाहरण है जो फ्रांस की रोन घाटी से होकर भूमध्य सागर की ओर बहती है। यह मुख्य रूप से शीत ऋतु और वसंत ऋतु में सक्रिय होती है और इसकी गति बहुत तीव्र हो सकती है। इसके विपरीत, लू, चिनूक और फान उष्ण पवनों के उदाहरण हैं जो अपने क्षेत्रों में तापमान बढ़ाते हैं। मिस्ट्रल जैसे शीतल पवन प्रवाह स्थानीय कृषि को प्रभावित कर सकते हैं, किंतु साथ ही वे आकाश को स्वच्छ करने और प्रदूषण को हटाने में भी सहायता करते हैं।

138. (A) संरोधन
संरोधन वह वायुमंडलीय प्रक्रिया है जिसमें एक तीव्रता से बढ़ता हुआ शीत वाताग्र अपने से आगे चल रहे उष्ण वाताग्र को आच्छादित कर लेता है। इस प्रक्रिया में उष्ण वायु पूर्णतः धरातल से ऊपर उठा दी जाती है और शीतल वायु राशियाँ आपस में मिल जाती हैं। यह शीतोष्ण चक्रवात के जीवन चक्र की परिपक्व अवस्था का अंतिम चरण है। संरोधन के पश्चात चक्रवात की ऊर्जा धीरे-धीरे न्यून होने लगती है और वह अंततः समाप्त हो जाता है, जिससे मौसम पुनः सामान्य होने लगता है।

139. (C) केवल 1 और 3
स्थानीय पवनें धरातल के असमान तापन के कारण सीमित क्षेत्रों में चलती हैं। समुद्र समीर दिन में तब चलती है जब भूमि तीव्रता से गर्म होती है और समुद्र से शीतल वायु भूमि की ओर आती है। इसी प्रकार, घाटी समीर दिन के समय पर्वतीय ढालों के गर्म होने से ऊपर की ओर चलती है। इसके विपरीत, स्थल समीर रात्रि में चलती है किंतु यह समुद्र समीर जितनी शक्तिशाली नहीं होती क्योंकि रात में तापीय प्रवणता कम होती है। ये पवनें तटीय और पर्वतीय क्षेत्रों के सूक्ष्म जलवायु को निर्धारित करती हैं।

140. (B) निचला समताप मंडल
अधिकांश वाणिज्यिक विमान अपनी दीर्घ दूरी की उड़ानों के लिए निचले समताप मंडल का चयन करते हैं, जो क्षोभसीमा के ठीक ऊपर स्थित है। इस परत में वायुमंडल अत्यधिक स्थिर होता है क्योंकि यहाँ क्षोभमंडल की भाँति मौसम की उथल-पुथल, जैसे बादल, तूफान और भारी वर्षा, नहीं होती है। समताप मंडल में ऊर्ध्वाधर वायु धाराएं भी बहुत कम होती हैं, जिससे विमान को एक सुचारू और शांत उड़ान प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, विरल वायु के कारण ईंधन की दक्षता में भी वृद्धि होती है।

141. (C) गर्म और शुष्क
वायु राशियों के वर्गीकरण में 'cT' का तात्पर्य महाद्वीपीय उष्णकटिबंधीय से है। यहाँ 'c' का अर्थ महाद्वीपीय स्रोत क्षेत्र है, जो बताता है कि वायु शुष्क है क्योंकि इसका निर्माण स्थल के ऊपर हुआ है। 'T' का अर्थ उष्णकटिबंधीय है, जो इसके उष्ण स्वभाव को दर्शाता है। ये वायु राशियाँ सामान्यतः निम्न अक्षांशों के विशाल मरुस्थलों, जैसे सहारा या मध्य एशिया के ग्रीष्मकालीन मैदानों के ऊपर बनती हैं। जब ये पवनें अन्य क्षेत्रों में पहुँचती हैं, तो वे अत्यधिक उष्णता और शुष्क मौसम की स्थिति उत्पन्न करती हैं।

142. (D) निक्षेपण
जलवाष्प या किसी भी गैस का बिना तरल अवस्था में आए सीधे ठोस में परिवर्तित होने की प्रक्रिया को निक्षेपण कहा जाता है। यह ऊर्ध्वपातन के विपरीत की क्रिया है और तब होती है जब गैसीय अवस्था से ऊर्जा तीव्रता से बाहर निकलती है। प्रकृति में इसका सर्वाधिक सामान्य उदाहरण पाले का जमना या बादलों के ऊपरी भागों में बर्फ के सूक्ष्म क्रिस्टल का निर्माण है। यह प्रक्रिया तब प्रभावी होती है जब तापमान हिमांक से बहुत नीचे होता है और वायुमंडलीय परिस्थितियाँ जल के सीधे जमने के अनुकूल होती हैं।

143. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र पृथ्वी का वह क्षेत्र है जहाँ सूर्य की किरणें सर्वाधिक लंबवत पड़ती हैं, जिससे यहाँ का तापमान अधिकतम होता है। इस तापीय तापन के कारण यहाँ की वायु ऊपर उठती है और दोनों गोलार्द्धों की व्यापारिक पवनें अभिसरित होती हैं। चूंकि सूर्य की आभासी स्थिति मौसम के अनुसार कर्क और मकर रेखा के मध्य परिवर्तित होती रहती है, इसलिए ITCZ भी उत्तर और दक्षिण की ओर खिसकता है। यह विस्थापन मानसूनी पवनों और वैश्विक वर्षा प्रतिरूप को नियंत्रित करने वाला मुख्य कारक है।

144. (D) देशांतर
पृथ्वी की सतह पर तापमान के वितरण को नियंत्रित करने वाले कारकों में देशांतर का महत्व न्यूनतम है। देशांतर केवल समय के निर्धारण और पूर्व-पश्चिम स्थिति को दर्शाने के लिए प्रयुक्त होता है। इसके विपरीत, अक्षांश, ऊँचाई और स्थल व जल का वितरण तापमान को गहराई से प्रभावित करते हैं। अक्षांश सौर ऊर्जा की मात्रा निर्धारित करता है, ऊँचाई तापमान न्यून करती है, और समुद्र की दूरी तापीय विषमता को संतुलित करती है। देशांतर में परिवर्तन से सौर किरणों की तीव्रता में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं आता है।

Downloaded from www.pdf.tube

इन क्षेत्रों में वर्षा बहुत कम और अनिश्चित होती है, किंतु यह पूर्ण मरुस्थल की तुलना में किंचित अधिक होती है। यहाँ मुख्य रूप से लघु घास और कंटकीली झाड़ियाँ पाई जाती हैं, जो सूखे के प्रति अनुकूलित होती हैं।

127. (A) हिमनदों और बर्फ की चादरों का पिघलना।
क्रायोस्फीयर, जिसमें पृथ्वी के जमे हुए जल क्षेत्र सम्मिलित हैं, भूमंडलीय तापन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। बढ़ते वैश्विक तापमान का सर्वाधिक प्रत्यक्ष प्रभाव हिमनदों, ध्रुवीय हिम चादरों और पर्वतीय बर्फ का तीव्रता से पिघलना है। इसके परिणामस्वरूप समुद्र के जल स्तर में वृद्धि हो रही है, जिससे तटीय क्षेत्रों के जलमग्न होने का संकट बढ़ गया है। बर्फ के पिघलने से पृथ्वी का एल्बिडो भी कम हो जाता है, जिससे सौर ऊर्जा का अवशोषण अधिक होता है और तापन की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है।

128. (D) ला नीना
दक्षिणी दोलन सूचकांक का धनात्मक मान ला नीना की घटना से संबद्ध होता है। यह स्थिति तब निर्मित होती है जब मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर में वायुमंडलीय दबाव सामान्य से काफी अधिक होता है और पश्चिमी प्रशांत में दबाव कम होता है। इसके कारण पूर्व से पश्चिम की ओर चलने वाली व्यापारिक पवनें और भी शक्तिशाली हो जाती हैं, जिससे प्रशांत के पश्चिमी भाग में उष्ण जल का संचय होता है। ला नीना के दौरान ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण-पूर्वी एशिया में भारी वर्षा की संभावना काफी बढ़ जाती है।

129. (B) धूल के कण संघनन के लिए आर्द्रताग्राही नाभिक के रूप में कार्य करते हैं।
वायुमंडल में विद्यमान धूल के सूक्ष्म कण मौसम निर्माण की प्रक्रिया में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। ये कण 'आर्द्रताग्राही नाभिक' के रूप में कार्य करते हैं, जिनके चारों ओर वायुमंडलीय जलवाष्प संघनित होकर बादलों की सूक्ष्म बूंदों का निर्माण करती है। इनके बिना बादलों का बनना और वर्षा होना संभव नहीं होगा। ये कण सूर्य की किरणों का प्रकीर्णन भी करते हैं, जिससे सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश में सुंदर लालिमा दिखाई देती है। यह वायुमंडल के सूक्ष्म किंतु महत्वपूर्ण घटकों में से एक है।

130. (A) पवनें सबसे शक्तिशाली और वर्षा सबसे तीव्र होती है।
हरिकेन या उष्णकटिबंधीय चक्रवात की चक्षु-भित्ति वह क्षेत्र है जो शांत चक्षु को चारों ओर से घेरे रहती है। यह पूरे तूफान का सर्वाधिक हिंसक और संकटपूर्ण भाग माना जाता है। यहाँ वायु का संवहन सर्वाधिक तीव्र होता है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक शक्तिशाली पवनें और भीषण मूसलाधार वर्षा होती है। चक्षु-भित्ति में ही बादलों की ऊँचाई सर्वाधिक होती है और यहीं से चक्रवात की मुख्य विनाशकारी शक्ति उत्पन्न होती है। जब यह भाग किसी तट से टकराता है, तो भारी तबाही मचती है।

131. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नाम उनकी भौगोलिक अवस्थिति के अनुसार पृथक होते हैं। उत्तरी अटलांटिक में इन्हें हरिकेन कहा जाता है, जबकि उत्तर-पश्चिमी प्रशांत महासागर में ये टाइफून कहलाते हैं। हिंद महासागर के क्षेत्रों में इन्हें सामान्य रूप से चक्रवात कहा जाता है। उत्तर-पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के तटों पर उठने वाले इन तूफानों को स्थानीय स्तर पर विली-विली पुकारा जाता है। नाम के इस अंतर के पश्चात भी, इन सभी तूफानों की संरचना और विनाशकारी स्वभाव लगभग एक जैसा ही होता है।

132. (D) पछुआ पवनों और ध्रुवीय पूर्वी पवनों का अभिसरण।
उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटियों का निर्माण लगभग 60 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों के समीप होता है। यह क्षेत्र वह सीमा है जहाँ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से आने वाली उष्ण पछुआ पवनें और ध्रुवीय क्षेत्रों से आने वाली शीतल ध्रुवीय पूर्वी पवनें आपस में मिलती हैं। इस अभिसरण के कारण वायु ऊपर की ओर उठने के लिए विवश हो जाती है, जिससे धरातल पर निम्न दाब का क्षेत्र विकसित होता है। यह गतिशील रूप से निर्मित निम्न दाब पेटी मध्य-अक्षांशों में तूफानों और वर्षा प्रणालियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

133. (B) केवल कथन II
वायुमंडल सौर विकिरण की लघु-तरंगों के लिए काफी सीमा तक पारदर्शी होता है, जिसका अर्थ है कि यह सीधे सूर्य के प्रकाश से बहुत कम गर्म होता है। इसके विपरीत, वायुमंडल पृथ्वी द्वारा विसर्जित दीर्घ-तरंग पार्थिव विकिरण का एक बहुत ही प्रभावी अवशोषक है। कार्बन डाइऑक्साइड और जलवाष्प जैसी गैसें इस ऊष्मा को सोख लेती हैं, जिससे निचला वायुमंडल गर्म होता है। निचली परतों को गर्म करने में चालन की तुलना में विकिरण और संवहन की प्रक्रियाएं कहीं अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं।

134. (D) नदियों, झीलों और भूजल में जल का निम्न स्तर।
जलविज्ञानी सूखा एक ऐसी स्थिति है जब दीर्घकाल तक वर्षा की कमी के कारण सतही और भूजल के भंडारों में भारी गिरावट आ जाती है। इसकी पहचान मुख्य रूप से नदियों के प्रवाह में न्यूनता, झीलों और जलाशयों के जल स्तर के गिरने तथा भूजल स्तर के नीचे चले जाने से की जाती है। यह सामान्यतः मौसम संबंधी सूखे के पश्चात की अवस्था है। जलविज्ञानी सूखा न केवल पेयजल की आपूर्ति को प्रभावित करता है, बल्कि यह पनबिजली उत्पादन और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए भी गंभीर संकट उत्पन्न करता है।

NODIA

135. (D) तापमान और वर्षण के वार्षिक और मासिक औसत।
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त प्रणालियों में से एक है। इसका प्राथमिक आधार तापमान और वर्षण के दीर्घकालिक वार्षिक और मासिक औसत आंकड़े हैं। कोपेन ने वनस्पति के वितरण और जलवायु के मध्य एक प्रगाढ़ संबंध देखा और उसी के अनुसार अपनी सीमाओं का निर्धारण किया। उन्होंने विशिष्ट अक्षरों का उपयोग करके जलवायु के विभिन्न समूहों को परिभाषित किया। यह एक आनुभविक

154. (A) वे बादलों के निर्माण के लिए संघनन नाभिक के रूप में कार्य करते हैं।
वायुमंडल में विद्यमान धूल के सूक्ष्म कणों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका मौसम निर्माण में उनकी सहभागिता है। ये कण 'आर्द्रताग्राही नाभिक' के रूप में कार्य करते हैं, जो जलवाष्प को तरल बूंदों में परिवर्तित करने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। इनके बिना, वायुमंडलीय नमी का संघनन दुष्कर होगा और बादलों का निर्माण रुक जाएगा। इस प्रकार, धूल के कण सीधे तौर पर वर्षा और जल चक्र की निरंतरता को सुनिश्चित करने में सहायक होते हैं, जो पृथ्वी पर जीवन के लिए एक अनिवार्य प्रक्रिया है।

155. (D) ET
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण योजना में 'ET' शब्द का उपयोग टुंड्रा जलवायु को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार की जलवायु की मुख्य पहचान यह है कि यहाँ सर्वाधिक उष्ण माह का औसत तापमान 0 डिग्री सेल्सियस से ऊपर किंतु 10 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहता है। इन क्षेत्रों में कड़ाके की ठंड पड़ती है और वर्ष के अधिकांश समय भूमि बर्फ से आच्छादित रहती है। यहाँ वनस्पति बहुत सीमित होती है और केवल काई व लाइकेन जैसे पौधे ही उग पाते हैं। यह जलवायु आर्कटिक और अंटार्कटिक के सीमावर्ती क्षेत्रों में पाई जाती है।

156. (B) वायुमंडलीय और महासागरीय परिसंचरण।
पृथ्वी पर सौर ऊर्जा का वितरण असमान है; भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में ऊर्जा का अधिशेष होता है जबकि ध्रुवों पर ऊर्जा की न्यूनता रहती है। इस तापीय असंतुलन को संतुलित करने का कार्य मुख्य रूप से वायुमंडलीय पवनों और महासागरीय धाराओं के माध्यम से किया जाता है। पवनें और धाराएं उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से अतिरिक्त ऊष्मा को ध्रुवों की ओर स्थानांतरित करती हैं। यह वैश्विक परिसंचरण प्रणाली पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने और उसे रहने योग्य बनाने के लिए अनिवार्य है। इसके बिना, उष्णकटिबंधीय क्षेत्र अत्यधिक उष्ण हो जाते।

157. (C) पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में कमजोर व्यापारिक पवनें और गर्म जल।
एल नीनो के दौरान, उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में सामान्य रूप से चलने वाली व्यापारिक पवनें काफी निर्बल हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, पश्चिमी प्रशांत में संचित उष्ण जल का पुंज पूर्व की ओर, पेरू के तट की ओर खिसकने लगता है। इससे पूर्वी प्रशांत महासागर की सतह का तापमान असामान्य रूप से बढ़ जाता है। इस घटना के कारण पेरू और इक्वाडोर में भारी वर्षा होती है, जबकि भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसे क्षेत्रों में मानसून निर्बल पड़ जाता है और सूखे की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है।

158. (B) केवल कथन II
शीतोष्ण चक्रवात एक वाताग्र प्रणाली से उत्पन्न होते हैं जहाँ दो विपरीत वायु राशियाँ आपस में मिलती हैं, जिससे मौसम में व्यापक और अनिश्चित परिवर्तन आते हैं। उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के विपरीत, शीतोष्ण चक्रवात सममित नहीं होते हैं और इनमें पवन की गति केंद्र में सर्वाधिक नहीं होती है। ये सामान्यतः मध्य-अक्षांशों में विकसित होते हैं और इनमें उष्ण व शीत क्षेत्रों का स्पष्ट विभाजन होता है। ये चक्रवात एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं और बादलों व वर्षा का निर्माण करते हैं जो कई दिनों तक चल सकते हैं।

159. (A) क्षोभमंडल और समताप मंडल
क्षोभसीमा वायुमंडल की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सीमा है जो सर्वाधिक निचली परत, क्षोभमंडल को उसके ऊपर स्थित समताप मंडल से पृथक करती है। इसकी ऊँचाई भूमध्य रेखा पर अधिक और ध्रुवों पर कम होती है। क्षोभसीमा की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ ऊँचाई के साथ तापमान का ह्रास रुक जाता है और मौसम की समस्त घटनाएं, जैसे बादलों का बनना और तूफान, इसके नीचे ही सीमित रहती हैं। यह सीमा एक आवरण की भाँति कार्य करती है जो निचली वायु के ऊपर की ओर संचलन को नियंत्रित करती है।

160. (A) केवल 1 और 2
पृथ्वी के ऊष्मा बजट में आगामी सौर विकिरण की लगभग 51 इकाइयां धरातल द्वारा अवशोषित की जाती हैं, जबकि शेष भाग परावर्तित या वायुमंडल द्वारा सोख लिया जाता है। वायुमंडल मुख्य रूप से सूर्य की प्रत्यक्ष किरणों से नहीं, बल्कि पृथ्वी द्वारा विसर्जित दीर्घ-तरंग पार्थिव विकिरण से उष्ण होता है। एल्बिडो का अर्थ सतह द्वारा परावर्तित ऊर्जा का अनुपात है, न कि अवशोषित ऊर्जा। ये प्रक्रियाएं मिलकर पृथ्वी के औसत तापमान को स्थिर रखती हैं। वायुमंडल की तापीय संरचना को समझने के लिए यह ऊर्जा संतुलन आधारभूत है।

161. (B) गुप्त ऊष्मा
जब जल एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित होता है, जैसे वाष्पीकरण या संघनन के दौरान, तो वह ऊर्जा अवशोषित या विमुक्त करता है जिसे गुप्त ऊष्मा कहा जाता है। इस प्रक्रिया में तापमान में कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं होता, किंतु ऊर्जा का स्थानांतरण होता है। गुप्त ऊष्मा वायुमंडल को ऊर्जा प्रदान करने का एक अत्यंत शक्तिशाली स्रोत है। विशेष रूप से बादलों के निर्माण और चक्रवातों के विकास में यह ऊर्जा मुख्य चालक बल का कार्य करती है। यह वैश्विक ऊर्जा संतुलन और मौसम की तीव्रता को निर्धारित करने में अनिवार्य है।

162. (A) भारी वर्षा द्वारा संतुलित एक छोटी शुष्क ऋतु।
कोपेन की 'Am' जलवायु को उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु के रूप में जाना जाता है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ एक स्पष्ट किंतु लघु शुष्क ऋतु होती है, जिसकी प्रतिपूर्ति मानसून के दौरान होने वाली अत्यधिक भारी वर्षा से हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, शुष्क मौसम होने के पश्चात भी मृदा में नमी बनी रहती है और घने वनों का विकास होता है। यह जलवायु भारत के पश्चिमी तट, दक्षिण-पूर्वी एशिया और अफ्रीका के कुछ भागों में पाई जाती है। यहाँ की वनस्पति आर्द्र और सदाबहार वनों के समान होती है।

163. (C) एक घंटे से अधिक समय तक लगातार हल्की बारिश
भीषण तड़ित झंझा को उनके विनाशकारी स्वभाव के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इनमें 58 मील प्रति घंटे से अधिक की पवनें, बड़े ओले या टॉरनेडो का निर्माण सम्मिलित है। निरंतर

Click Here to Buy book on Amazon

145. (B) उष्णकटिबंधीय चक्रवात तापीय निम्न दाब हैं; शीतोष्ण चक्रवात गतिक होते हैं।
उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण चक्रवातों के मध्य एक मौलिक अंतर उनकी उत्पत्ति का आधार है। उष्णकटिबंधीय चक्रवात तापीय रूप से संचालित होते हैं और अपनी ऊर्जा उष्ण समुद्री सतह से विसर्जित होने वाली गुप्त ऊष्मा से प्राप्त करते हैं। इनमें कोई वाताग्र नहीं होता है। इसके विपरीत, शीतोष्ण चक्रवात गतिक रूप से उत्पन्न होते हैं और दो विपरीत स्वभाव वाली वायु राशियों के मध्य वाताग्र के निर्माण से अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं। इनकी संरचना, ऊर्जा स्रोत और संचलन के प्रकार एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं।

146. (A) नाइट्रोजन (N_2)
वायुमंडल में सर्वाधिक प्रचुर मात्रा में होने के पश्चात भी, नाइट्रोजन एक ग्रीनहाउस गैस नहीं है क्योंकि यह पृथ्वी से विसर्जित होने वाले पार्थिव विकिरण को अवशोषित नहीं करती है। इसके विपरीत, कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और जलवाष्प प्रमुख ग्रीनहाउस गैसें हैं जो ऊष्मा को सोखकर वायुमंडल के तापमान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यद्यपि ये गैसें बहुत कम मात्रा में विद्यमान हैं, किंतु उनकी ऊष्मा अवशोषण क्षमता पृथ्वी के जलवायु संतुलन के लिए अनिवार्य है। नाइट्रोजन केवल एक अक्रिय माध्यम के रूप में कार्य करती है।

147. (C) संभावित वाष्पोत्सर्जन
थॉर्नथवेट ने अपने 1948 के जलवायु वर्गीकरण में संभावित वाष्पोत्सर्जन की क्रांतिकारी अवधारणा प्रस्तुत की थी। यह उस जल की मात्रा को दर्शाता है जो मृदा और पौधों द्वारा वाष्पीकृत की जा सकती है यदि नमी की उपलब्धता असीमित हो। यह केवल वर्षा की मात्रा पर निर्भर रहने के स्थान पर जल के वास्तविक उपयोग और तापीय ऊर्जा के मध्य के संबंध को स्पष्ट करता है। इस सूचकांक ने जलवायु को केवल आंकड़ों के स्थान पर एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में समझने में सहायता की, जो कृषि हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई।

148. (D) समदाब रेखा
मौसम मानचित्र पर समान वायुमंडलीय दबाव वाले स्थानों को जोड़ने वाली काल्पनिक रेखा को समदाब रेखा कहा जाता है। ये रेखाएं वायुदाब के वितरण को समझने और पवनों की दिशा व गति का पूर्वानुमान लगाने के लिए अनिवार्य हैं। समदाब रेखाओं के मध्य की दूरी वायुदाब प्रवणता को दर्शाती है; जहाँ ये निकट होती हैं वहाँ पवनें अत्यंत तीव्र होती हैं, और जहाँ ये दूर होती हैं वहाँ पवनें मंद होती हैं। इनके माध्यम से चक्रवातों और प्रतिचक्रवातों के केंद्रों की पहचान की जाती है जो मौसम विज्ञान का आधार है।

149. (C) अवरोही वायु धाराएं और हल्की वर्षा
तड़ित झंझा की क्षय अवस्था उसके जीवन चक्र का अंतिम चरण है। इस चरण में बादल के भीतर ऊपर जाने वाली आरोही वायु धाराएं पूर्णतः समाप्त हो जाती हैं और केवल नीचे की ओर आने वाली अवरोही वायु धाराओं का प्रभुत्व रहता है। इसके परिणामस्वरूप तूफान की ऊर्जा का स्रोत विच्छिन्न हो जाता है और भारी वर्षा धीरे-धीरे हल्की वर्षा में परिवर्तित हो जाती है। यह अवस्था बादल के बिखरने और मौसम के शांत होने की प्रक्रिया को दर्शाती है। इस दौरान बादल का ऊपरी भाग प्रायः पंखनुमा आकार ले लेता है।

150. (B) 3, 1, 2, 4
भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर वायुदाब पेटियों का एक व्यवस्थित क्रम पाया जाता है। सर्वप्रथम भूमध्य रेखा के निकट निम्न दाब पेटी होती है। इसके पश्चात 30 डिग्री अक्षांशों पर उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटी आती है। फिर लगभग 60 डिग्री अक्षांशों पर उपध्रुवीय निम्न दाब पेटी स्थित होती है। अंत में, ध्रुवों के ठीक ऊपर अत्यधिक शीत के कारण ध्रुवीय उच्च दाब पेटी पाई जाती है। यह पूरी व्यवस्था पृथ्वी के वायुमंडलीय परिसंचरण और वैश्विक पवन प्रणालियों को नियंत्रित करने का मुख्य आधार प्रदान करती है।

151. (D) ताजी गिरी हुई बर्फ
ताजी गिरी हुई बर्फ का एल्बिडो पृथ्वी की समस्त प्राकृतिक सतहों में सर्वाधिक होता है, जो लगभग 80 से 90 प्रतिशत के मध्य होता है। इसका अर्थ यह है कि यह सूर्य से आने वाले अधिकांश विकिरण को बिना अवशोषित किए सीधे वापस अंतरिक्ष में परावर्तित कर देती है। यही कारण है कि बर्फीले क्षेत्रों में तापमान बहुत कम बना रहता है। इसके विपरीत, डामर, गहरे जल और घने वनों का एल्बिडो बहुत कम होता है क्योंकि वे अधिक सौर ऊर्जा को अवशोषित करके उष्ण हो जाते हैं, जो तापन को बढ़ाता है।

152. (A) एंज़ो चक्र
वॉकर परिसंचरण उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के ऊपर वायु की एक विशाल चक्रीय प्रणाली है जो 'एंज़ो' चक्र का एक अभिन्न भाग है। सामान्य परिस्थितियों में, यह परिसंचरण पूर्व से पश्चिम की ओर चलने वाली व्यापारिक पवनों और पश्चिमी प्रशांत में ऊपर उठती वायु द्वारा संचालित होता है। एल नीनो के दौरान, यह परिसंचरण निर्बल हो जाता है या उलट जाता है, जिससे वैश्विक मौसम प्रतिरूप में भारी परिवर्तन आते हैं। यह समुद्र और वायुमंडल के मध्य होने वाले ऊर्जा विनिमय को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक मॉडल है।

153. (C) P-3, Q-1, R-2, S-4
मौसम मानचित्रों पर विभिन्न प्रकार के वाताग्रों को विशिष्ट प्रतीकों द्वारा दर्शाया जाता है। शीत वाताग्र को संचलन की दिशा में संकेत करते हुए नीले त्रिभुजों वाली रेखा से दिखाया जाता है। उष्ण वाताग्र को उसी दिशा में लाल अर्धवृत्तों वाली रेखा से प्रदर्शित किया जाता है। अचर वाताग्र में त्रिभुज और अर्धवृत्त विपरीत दिशाओं में बारी-बारी से लगे होते हैं, जो स्थिरता को दर्शाते हैं। संरोधित वाताग्र को एक ही दिशा में लगे बैंगनी त्रिभुजों और अर्धवृत्तों की रेखा से पहचाना जाता है, जो चक्रवात की परिपक्वता का संकेत है।

NODIA

जाते हैं, वायु विरल होती जाती है और ऊष्मा को अवरुद्ध करने की उसकी क्षमता कम होती जाती है। यह दर मौसम के पूर्वानुमान और वायुमंडलीय स्थिरता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

99. (C) शीतोष्ण चक्रवात से जुड़ी वर्षा।
वाताग्र वर्षा या चक्रवातीय वर्षा तब होती है जब दो भिन्न वायु राशियाँ आपस में मिलती हैं और उनके सीमा क्षेत्र पर वायु का उत्थान होता है। शीतोष्ण चक्रवात में, शीत और उष्ण वाताग्रों के साथ वायु ऊपर की ओर उठती है, जिससे बादलों का निर्माण और वर्षा होती है। यह वर्षा सामान्यतः एक विस्तृत क्षेत्र में होती है और दीर्घकाल तक बनी रह सकती है। यह प्रक्रिया मध्य-अक्षांशों के मौसम की एक प्रमुख विशेषता है, जो संवहनीय या पर्वतीय वर्षा से अपनी उत्पत्ति में भिन्न है।

100. (C) कथन I और कथन II दोनों
पृथ्वी पर तापमान का वितरण कई कारकों के जटिल अंतर्संबंधों का परिणाम है। अक्षांश प्राथमिक कारक है क्योंकि यह सौर किरणों के आपतन कोण को निर्धारित करता है। हालांकि, अन्य कारक जैसे ऊँचाई, समुद्र से दूरी और महासागरीय धाराएं स्थानीय स्तर पर तापमान को महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित कर देती हैं। उदाहरण के लिए, ऊँचाई बढ़ने पर तापमान घटता है और तटीय क्षेत्रों में समुद्र का प्रभाव तापमान को संतुलित रखता है। ये सभी कारक मिलकर किसी भी स्थान की विशिष्ट जलवायु का निर्धारण करते हैं।

101. (C) समान यात्रा समय
मानचित्र पर आइसोक्रोन एक ऐसी रेखा है जो उन समस्त स्थानों को जोड़ती है जहाँ किसी विशिष्ट प्रारंभिक बिंदु से पहुँचने में समान समय लगता है। इसका उपयोग परिवहन नियोजन, रसद और पहुँच विश्लेषण में व्यापक रूप से किया जाता है। मौसम विज्ञान में, इसका उपयोग यह दर्शाने के लिए किया जा सकता है कि कोई तूफान या वर्षा का अग्र भाग कितने समय में विभिन्न क्षेत्रों तक पहुंचेगा। यह समय और स्थान के मध्य के गतिशील संबंध को समझने के लिए एक अत्यंत प्रभावी भौगोलिक और विश्लेषणात्मक उपकरण है।

102. (B) शक्तिशाली आरोही और अवरोही वायु धाराएं दोनों एक साथ मौजूद होती हैं।
तड़ित झंझा के जीवन चक्र की परिपक्व अवस्था वह समय है जब तूफान सर्वाधिक शक्तिशाली और सक्रिय होता है। इस अवस्था की मुख्य विशेषता यह है कि बादल के भीतर ऊपर की ओर जाने वाली आरोही वायु धाराएं और नीचे की ओर आने वाली अवरोही वायु धाराएं दोनों एक साथ सक्रिय होती हैं। इसी चरण में भारी वर्षा, विद्युत चमकना और ओलावृष्टि जैसी भीषण घटनाएं होती हैं। अवरोही धाराओं के साथ आने वाली ठंडी वायु धरातल पर फैलती है, जो तूफान की तीव्रता को बढ़ा देती है।

103. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समताप रेखाएं सामान्यतः अक्षांशों के समानांतर चलती हैं क्योंकि पृथ्वी की सतह द्वारा प्राप्त सूर्यातप की मात्रा मुख्य रूप से अक्षांश द्वारा ही निर्धारित होती है। भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ने पर सौर ऊर्जा की तीव्रता क्रमिक रूप से कम होती जाती है, जिससे तापीय पेटियों का निर्माण होता है। हालांकि, महाद्वीपों और महासागरों के वितरण के कारण इन रेखाओं में कुछ मोड़ आते हैं, किंतु वैश्विक स्तर पर इनका अक्षांशीय प्रतिरूप बहुत स्पष्ट होता है, जो तापीय संरचना को दर्शाता है।

104. (A) एक शक्तिशाली ऊर्ध्वाधर पवन कर्तन
उष्णकटिबंधीय चक्रवात के निर्माण के लिए एक शक्तिशाली ऊर्ध्वाधर पवन कर्तन वास्तव में एक बाधक कारक है, न कि सहायक स्थिति। चक्रवात के विकास के लिए निम्न पवन कर्तन की आवश्यकता होती है ताकि तूफान का ऊर्ध्वाधर ढांचा स्थिर रह सके। अन्य आवश्यक स्थितियों में उष्ण समुद्री जल, कोरिओलिस बल की उपस्थिति और पूर्व स्थित निम्न दाब क्षेत्र सम्मिलित हैं। यदि ऊपरी वायुमंडल में पवनें बहुत तीव्र और विपरीत दिशा में होंगी, तो वे चक्रवात के विकास को बाधित कर देंगी।

105. (A) केवल 1 और 3
वायु राशि के निर्माण के लिए एक विशाल और सजातीय स्रोत क्षेत्र का होना अनिवार्य है, जहाँ वायु दीर्घकाल तक रुककर तापमान और आर्द्रता की विशेषताओं को ग्रहण कर सके। ये वायु राशियाँ स्थिर नहीं रहती हैं, बल्कि वायुमंडलीय परिसंचरण के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर गति करती हैं। इनके वर्गीकरण का मुख्य आधार तापमान और नमी की मात्रा होती है। जब ये गति करती हैं, तो ये अपने साथ नवीन मौसमी स्थितियाँ लाती हैं और जिस क्षेत्र में पहुँचती हैं वहाँ के मौसम को परिवर्तित कर देती हैं।

106. (A) वाताग्रलयन
जब दो वायु राशियों के मध्य का तापमान और घनत्व का अंतर कम होने लगता है और उनके बीच की सीमा स्पष्ट नहीं रह जाती, तो इस प्रक्रिया को वाताग्रलयन कहा जाता है। यह वाताग्र के निर्बल होने या उसके पूर्णतः समाप्त होने की अवस्था को दर्शाता है। यह स्थिति अक्सर तब उत्पन्न होती है जब वायु राशियाँ आपस में मिश्रित हो जाती हैं या उनकी गति रुक जाती है। मौसम विज्ञान में यह एक शांत मौसम की ओर संक्रमण का संकेत माना जाता है, जो वाताग्रजनन के ठीक विपरीत की प्रक्रिया है।

107. (D) ठंडी ध्रुवीय वायु और गर्म उष्णकटिबंधीय वायु
ध्रुवीय वाताग्र एक महत्वपूर्ण वायुमंडलीय सीमा है जहाँ उच्च अक्षांशों से आने वाली शीतल और शुष्क ध्रुवीय वायु, निम्न अक्षांशों से आने वाली उष्ण और आर्द्र उष्णकटिबंधीय वायु से मिलती है। यह सीमा मुख्य रूप से मध्य-अक्षांशों में स्थित होती है और यहाँ वायु की विशेषताओं में भारी अंतर पाया जाता है। यही वह क्षेत्र है जहाँ शीतोष्ण चक्रवात उत्पन्न होते हैं। ध्रुवीय

Downloaded from www.pdf.tube

होने वाली मंद वर्षा को भीषण तूफान की श्रेणी में नहीं रखा जाता क्योंकि इसमें ऊर्जा का वह हिंसक प्रदर्शन नहीं होता जो तबाही मचा सके। भीषण तड़ित झंझा सामान्यतः वायुमंडल की अत्यधिक अस्थिरता और तीव्र संवहनीय उत्थान के कारण उत्पन्न होते हैं। ये कम समय में ही आधारभूत संरचना और फसलों को गंभीर क्षति पहुँचा सकते हैं।

164. (D) नीचे उतरती वायु और शांत, शुष्क स्थिति।
उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियाँ लगभग 30 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों के समीप स्थित होती हैं। इन क्षेत्रों में ऊपरी वायुमंडल से वायु शीतल होकर नीचे की ओर बैठती है, जिससे धरातल पर दबाव बढ़ जाता है। नीचे उतरती वायु उष्ण और शुष्क हो जाती है, जिसके कारण बादलों का निर्माण नहीं हो पाता और मौसम स्वच्छ रहता है। यही कारण है कि विश्व के अधिकांश उष्ण मरुस्थल इन्हीं अक्षांशों में महाद्वीपों के पश्चिमी भागों पर पाए जाते हैं। यहाँ पवनें बहुत हल्की और दिशाहीन होती हैं।

165. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
आर्कटिक समुद्री बर्फ का पिघलना प्रत्यक्ष रूप से वैश्विक समुद्र स्तर की वृद्धि में बड़ा योगदान नहीं देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि समुद्री हिम पूर्व से ही महासागर में तैर रहा है और आर्किमिडीज के सिद्धांत के अनुसार, इसके पिघलने से जल के स्तर में परिवर्तन नहीं होता। हालांकि, यह एल्बिडो को न्यून करके वैश्विक तापन को तीव्र करता है। समुद्र स्तर की वृद्धि मुख्य रूप से स्थल पर स्थित हिमनदों और ग्रीनलैंड जैसी बर्फ की चादरों के पिघलने तथा समुद्री जल के तापीय विस्तार के कारण होती है।

166. (B) ठंडी और आर्द्र
समुद्री ध्रुवीय या 'mP' वायु राशि का निर्माण शीतल उच्च अक्षांश वाले महासागरों के ऊपर होता है। 'm' का तात्पर्य समुद्री स्रोत से है, जो वायु को आर्द्र बनाता है, और 'P' ध्रुवीय क्षेत्र को दर्शाता है, जो इसे शीतल रखता है। ये वायु राशियाँ शीत ऋतु में उत्तरी अटलांटिक और उत्तरी प्रशांत महासागरों के ऊपर सामान्य होती हैं। जब ये तटीय क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं, तो वे अपने साथ बादलों वाला मौसम, कोहरा और हल्की वर्षा लेकर आती हैं। इनका स्वभाव महाद्वीपीय ध्रुवीय वायु राशियों की तुलना में अधिक नम होता है।

167. (D) वायुदाब प्रवणता बल
वायुदाब प्रवणता बल वह प्राथमिक शक्ति है जो वायु को गतिमान करती है और पवन के निर्माण का कारण बनती है। यह बल वायुमंडलीय दबाव में होने वाली क्षेत्रीय भिन्नता के कारण उत्पन्न होता है और सदैव उच्च दाब से निम्न दाब की ओर कार्य करता है। दबाव का अंतर जितना अधिक होगा, यह बल उतना ही शक्तिशाली होगा और पवन की गति उतनी ही तीव्र होगी। एक बार जब वायु गति करना प्रारंभ करती है, तो कोरिओलिस और घर्षण जैसे अन्य बल उसकी दिशा और अंतिम वेग को प्रभावित करने लगते हैं।

168. (A) संवहनीय
डोलड्रम्स या भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में संवहनीय वर्षा सर्वाधिक सामान्य है। अत्यधिक सौर तापन के कारण यहाँ की वायु गर्म और हल्की होकर प्रतिदिन ऊपर की ओर उठती है। दोपहर तक वायुमंडल पूर्णतः अस्थिर हो जाता है और ऊपर उठती वायु शीतल होकर विशाल बादलों का निर्माण करती है। इसके परिणामस्वरूप, लगभग प्रतिदिन दोपहर के पश्चात या सायं काल को गरज के साथ तीव्र वर्षा होती है। इस प्रकार की वर्षा बहुत तीव्र होती है किंतु सामान्यतः एक सीमित क्षेत्र तक ही आबद्ध रहती है।

169. (C) हरिकेन
सैफिर-सिम्पसन स्केल का उपयोग विशेष रूप से हरिकेन या उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की तीव्रता को मापने और वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है। यह पैमाना पवन की निरंतर गति के आधार पर तूफानों को 1 से 5 श्रेणियों में विभाजित करता है। श्रेणी 1 के तूफान कम शक्तिशाली होते हैं, जबकि श्रेणी 5 के तूफान विनाशकारी पवन गति के साथ आते हैं। यह स्केल आपदा प्रबंधन और तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को संभावित संकट और हानि के स्तर के विषय में चेतावनी देने के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैज्ञानिक मानक है।

170. (B) ओजोन परत का क्षरण
ओजोन परत का क्षरण मुख्य रूप से क्लोरोफ्लोरोकार्बन जैसे रसायनों के कारण होता है, और यह भूमंडलीय तापन का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं है। यद्यपि ये दोनों घटनाएं वायुमंडलीय समस्याओं से जुड़ी हैं, किंतु इनके कारण पृथक हैं। भूमंडलीय तापन के प्रत्यक्ष परिणामों में समुद्र के जल स्तर में वृद्धि, भीषण लू की आवृत्ति का बढ़ना और वर्षा के प्रतिरूप में वैश्विक परिवर्तन सम्मिलित हैं। ओजोन क्षरण समताप मंडल में होने वाली एक रासायनिक प्रक्रिया है, जबकि तापन निचली परत में ग्रीनहाउस गैसों के संचय का परिणाम है।

171. (B) गर्म और शुष्क स्थानीय पवन
लू भारत के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु के दौरान चलने वाली एक अत्यंत उष्ण और शुष्क स्थानीय पवन है। यह सामान्यतः मई और जून के महीनों में दोपहर के समय चलती है और तापमान को 45 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर ले जा सकती है। इसकी उत्पत्ति थार मरुस्थल और पड़ोसी शुष्क क्षेत्रों से आने वाली उष्ण हवाओं के कारण होती है। लू के संपर्क में आना स्वास्थ्य के लिए बहुत संकटपूर्ण हो सकता है और यह स्थानीय कृषि व जनजीवन को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

172. (C) 2, 1, 3
तड़ित झंझा का विकास तीन स्पष्ट चरणों में होता है। प्रथम चरण कपासी अवस्था है, जिसमें केवल आरोही वायु धाराएं होती हैं और बादल ऊर्ध्वाधर रूप से विकसित होता है। द्वितीय चरण परिपक्व अवस्था है, जहाँ आरोही और अवरोही दोनों धाराएं सक्रिय होती हैं और भारी वर्षा व विद्युत चमकती है। अंतिम चरण क्षय अवस्था है, जिसमें केवल अवरोही धाराएं बचती हैं और तूफान धीरे-धीरे निर्बल होकर समाप्त हो जाता है।

NODIA

117. (C) मध्यमंडल
मध्यमंडल वायुमंडल की वह परत है जो पृथ्वी को अंतरिक्ष से आने वाले उल्कापिंडों के संकट से बचाती है। जब उल्कापिंड अत्यधिक वेग से इस परत में प्रवेश करते हैं, तो वायु के घर्षण के कारण उनमें तीव्र ऊष्मा उत्पन्न होती है और वे जलकर भस्म हो जाते हैं। इससे वे धरातल तक नहीं पहुँच पाते और किसी बड़ी हानि से बचाव होता है। यह सुरक्षा कवच जीवन के लिए अनिवार्य है। मध्यमंडल की अत्यधिक शीतल स्थितियाँ और विरल वायु इस प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में अपनी भूमिका निभाती हैं।

118. (B) एल नीनो स्थितियाँ
दक्षिणी दोलन सूचकांक का ऋणात्मक मान सामान्यतः एल नीनो की स्थिति को दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि पूर्वी प्रशांत महासागर में ताहिती के निकट वायुमंडलीय दबाव सामान्य से कम है और पश्चिमी प्रशांत में डार्विन के निकट दबाव सामान्य से अधिक है। दबाव के इस प्रतिरूप के कारण सामान्य रूप से चलने वाली व्यापारिक पवनें निर्बल हो जाती हैं या उनकी दिशा उलट जाती है। इससे समुद्र के उष्ण जल का संचय पूर्व की ओर होने लगता है, जो वैश्विक मौसम में बड़े परिवर्तन लाता है।

119. (D) 1, 2 और 3
तड़ित झंझा, ओलावृष्टि और टॉरनेडो तीनों ही भीषण मौसम की घटनाएं हैं जो तीव्र संवहनीय गतिविधि और विशाल कपासी वर्षी बादलों के विकास से संबद्ध होती हैं। जब वायुमंडल में अत्यधिक अस्थिरता होती है और उष्ण, आर्द्र वायु तीव्रता से ऊपर उठती है, तो ये स्थितियाँ निर्मित होती हैं। तड़ित झंझा विद्युत और गरज लाता है, जबकि शक्तिशाली आरोही धाराएं ओलों का निर्माण करती हैं। टॉरनेडो इसी प्रक्रिया का सर्वाधिक हिंसक रूप है जहाँ वायु का एक संकीर्ण और तीव्रता से घूमता स्तंभ विकसित हो जाता है।

120. (A) वाताग्र गुजरने के बाद तापमान में तेजी से गिरावट।
यह कथन उष्ण वाताग्र की विशेषता नहीं है, बल्कि शीत वाताग्र से संबंधित है। उष्ण वाताग्र के गुजरने के पश्चात तापमान में वृद्धि होती है, न कि गिरावट। उष्ण वाताग्र की सतह का ढाल बहुत धीमा होता है और इसके आने से पूर्व ऊँचाई पर पक्षाम बादल दिखाई देते हैं। इससे होने वाली वर्षा सामान्यतः मध्यम, व्यापक और दीर्घकालिक होती है क्योंकि गर्म वायु मंद गति से ठंडी वायु के ऊपर चढ़ती है। यह शीत वाताग्र की तुलना में कम तीव्र मौसम परिवर्तन लाता है।

121. (C) इसमें विद्युत आवेशित कण होते हैं।
तापमंडल को आयनमंडल भी कहा जाता है क्योंकि इसमें गैसों के अणु और परमाणु सौर विकिरण के प्रभाव से आयनित हो जाते हैं, जिससे विद्युत आवेशित कणों या आयनों का निर्माण होता है। ये आयनित परतें पृथ्वी से प्रेषित रेडियो तरंगों को पुनः धरातल की ओर परावर्तित करने की क्षमता रखती हैं, जिससे दीर्घ दूरी का बेतार संचार संभव हो पाता है। इसी परत में ध्रुवीय ज्योति जैसी सुंदर प्रकाशिक घटनाएं भी घटित होती हैं, जो वायुमंडल के ऊपरी भाग की एक अनूठी विशेषता है।

122. (A) 2, 3, 4, 1
पर्वतीय वर्षा का निर्माण एक निश्चित प्रक्रिया के अंतर्गत होता है। सर्वप्रथम, आर्द्र पवन को पर्वत की बाधा के कारण ऊपर चढ़ने के लिए विवश किया जाता है। जैसे-जैसे पवन ऊपर उठती है, वह रुद्धोष्म रूप से शीतल होती है, जिससे जलवाष्प संघनित होकर बादलों का निर्माण करती है। इसके परिणामस्वरूप पवनमुखी ढाल पर भारी वर्षा होती है। अंत में, वर्षा करने के पश्चात जब पवन दूसरी ओर पवनविमुख ढाल पर नीचे उतरती है, तो वह गर्म और शुष्क हो जाती है, जिससे वहाँ वर्षा की न्यूनता रहती है।

123. (D) पवन उच्च दाब से निम्न दाब की ओर वायु का क्षैतिज संचलन है।
पवन का निर्माण मुख्य रूप से वायुमंडलीय दबाव में होने वाली भिन्नता के कारण होता है। वायु सदैव उच्च वायुदाब वाले क्षेत्रों से निम्न वायुदाब वाले क्षेत्रों की ओर बहती है ताकि संतुलन स्थापित हो सके। दबाव के इस अंतर को वायुदाब प्रवणता बल कहा जाता है, जो पवन की गति को निर्धारित करता है। कोरिओलिस प्रभाव इस गतिमान वायु की दिशा को विक्षेपित करता है, किंतु प्रवाह का मूल कारण दबाव का अंतर ही रहता है। यह संचलन पृथ्वी पर ऊष्मा और नमी के वितरण के लिए अनिवार्य है।

124. (B) वायु राशियों के बीच क्षैतिज तापमान विषमता।
शीतोष्ण चक्रवात अपनी ऊर्जा मुख्य रूप से दो विपरीत वायु राशियों के मध्य विद्यमान क्षैतिज तापमान विषमता या तापीय प्रवणता से प्राप्त करते हैं। जब ठंडी और शुष्क ध्रुवीय वायु, गर्म और आर्द्र उष्णकटिबंधीय वायु से मिलती है, तो उनके बीच ऊर्जा का भारी असंतुलन होता है। इस तापीय अंतर के कारण ही वायुमंडलीय विक्षोभ उत्पन्न होता है और चक्रवात का विकास होता है। यह उष्णकटिबंधीय चक्रवातों से भिन्न है, जो मुख्य रूप से समुद्री जल से प्राप्त होने वाली संघनन की गुप्त ऊष्मा पर निर्भर करते हैं।

125. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तापमान व्युत्क्रमण की स्थिति में वायुमंडल अत्यधिक स्थिर हो जाता है क्योंकि उष्ण और हल्की वायु की परत, शीतल और भारी वायु के ऊपर स्थित होती है। यह संरचना वायु के ऊर्ध्वाधर मिश्रण को पूर्णतः बाधित कर देती है, जिससे संवहन की प्रक्रिया रुक जाती है। चूंकि भारी वायु नीचे होती है, वह ऊपर नहीं उठ पाती और गर्म वायु ऊपर होने के कारण नीचे नहीं आ पाती। इसके परिणामस्वरूप प्रदूषक और धुंध धरातल के समीप ही एकत्रित हो जाते हैं, जिससे दृश्यता और वायु गुणवत्ता प्रभावित होती है।

126. (D) गर्म स्टेपी
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में 'BSh' शब्द का उपयोग उष्ण स्टेपी या अर्ध-शुष्क जलवायु को दर्शाने के लिए किया जाता है। यहाँ 'B' शुष्क जलवायु को, 'S' स्टेपी (अर्ध-शुष्क) को और 'h' उष्ण परिस्थितियों को इंगित करता है जहाँ औसत वार्षिक तापमान 18 डिग्री सेल्सियस से अधिक होता है।

Click Here to Buy book on Amazon

182. (D) दो वायु राशियों के बीच की सीमा गति नहीं कर रही है।
मौसम मानचित्र पर अचर वाताग्र यह दर्शाता है कि दो विपरीत स्वभाव वाली वायु राशियाँ आपस में मिली तो हैं, किंतु उनमें से कोई भी दूसरी को विस्थापित करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं है। इसके कारण उनके मध्य की सीमा स्थिर बनी रहती है और दीर्घकाल तक एक ही स्थान पर टिकी रहती है। इस स्थिति में संबंधित क्षेत्र में कई दिनों तक बादल छाए रह सकते हैं और निरंतर हल्की वर्षा हो सकती है। जब वायु प्रवाह की स्थिति परिवर्तित होती है, तो यह अचर वाताग्र गतिमान शीत या उष्ण वाताग्र में परिवर्तित हो जाता है।

183. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महाद्वीपों पर तापमान का वार्षिक तापांतर महासागरों की तुलना में बहुत अधिक होता है क्योंकि स्थल और जल के तापन की दर में मौलिक अंतर होता है। जल की विशिष्ट ऊष्मा भूमि की तुलना में बहुत अधिक होती है, जिसका अर्थ है कि जल को उष्ण और शीतल होने में स्थल की तुलना में अधिक समय और ऊर्जा लगती है। इसके अतिरिक्त, जल में ऊष्मा का संचरण अधिक गहराई तक होता है। यही कारण है कि समुद्र के निकटवर्ती क्षेत्रों में जलवायु समकारी बनी रहती है, जबकि महाद्वीपीय आंतरिक भागों में तापीय विषमता पाई जाती है।

184. (A) ठंडी ग्रीष्म ऋतु और बिना किसी शुष्क मौसम वाली उप-आर्कटिक।
कोपेन की जलवायु प्रणाली में 'Dfc' संकेत एक ऐसी उप-आर्कटिक जलवायु का वर्णन करता है जहाँ ग्रीष्म ऋतु शीतल और लघु होती है तथा पूरे वर्ष पर्याप्त वर्षा या हिमपात होता है। यहाँ कोई विशिष्ट शुष्क मौसम नहीं होता है। यह जलवायु उत्तरी अमेरिका और यूरेशिया के विशाल उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों में पाई जाती है। यहाँ की सर्दियाँ अत्यंत लंबी और कठोर होती हैं, जबकि गर्मियों का समय बहुत ही सीमित होता है। इस जलवायु क्षेत्र में मुख्य रूप से शंकुधारी वनों (टैगा) का विस्तार देखा जाता है।

185. (D) मजबूत व्यापारिक पवनें ला नीना की घटनाओं की विशेषता हैं।
ला नीना की घटना के दौरान, उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में सामान्य रूप से चलने वाली व्यापारिक पवनें सामान्य से कहीं अधिक शक्तिशाली और तीव्र हो जाती हैं। ये सुदृढ़ पवनें प्रशांत महासागर के सतही उष्ण जल को तीव्रता से पश्चिम की ओर धकेलती हैं। इसके परिणामस्वरूप, दक्षिण अमेरिका के तट पर गहरे समुद्र से शीतल जल का ऊपर आना (अपवेलिंग) बढ़ जाता है। व्यापारिक पवनों की यह तीव्रता ला नीना के प्रभाव को और अधिक प्रबल बनाती है, जिससे पश्चिमी प्रशांत में अत्यधिक भारी वर्षा और पूर्वी प्रशांत में तीव्र सूखा पड़ता है।

186. (A) ओस
ओस वर्षण का एक रूप नहीं है, बल्कि यह संघनन की एक प्रक्रिया है जो धरातल पर घटित होती है। यह तब निर्मित होती है जब रात्रि के दौरान शीतल सतहों के संपर्क में आने वाली वायु की नमी सीधे जल की बूंदों के रूप में संचित हो जाती है। इसके विपरीत, वर्षा, हिमपात और ओला वर्षण के रूप हैं क्योंकि वे बादलों से गिरते हैं और धरातल तक पहुँचते हैं। ओस के निर्माण के लिए शांत वायु, स्वच्छ आकाश और ओसांक का हिमांक से ऊपर होना आवश्यक है। यह जल चक्र का एक सूक्ष्म किंतु महत्वपूर्ण भाग है।

187. (B) 30°
उपोष्णकटिबंधीय जेट स्ट्रीम सामान्यतः 30 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों के समीप ऊपरी क्षोभमंडल में पाई जाती है। यह पश्चिम से पूर्व की ओर बहने वाली एक बहुत ही तीव्र वायु धारा है। इसका निर्माण मुख्य रूप से हेडली और फेरेल कोशिकाओं के मिलन बिंदु पर तापमान और दबाव के बड़े अंतर के कारण होता है। जेट स्ट्रीम वैश्विक मौसम प्रणालियों को नियंत्रित करने, विमानों की गति को प्रभावित करने और चक्रवातों के मार्ग को निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी ऊँचाई और गति मौसम अनुसार परिवर्तित होती है।

188. (B) प्रदूषकों को भूमि के पास रोक लेता है, जिससे उनका प्रसार नहीं हो पाता।
तापमान व्युत्क्रमण की स्थिति में वायुमंडल अत्यधिक स्थिर हो जाता है, जिससे वायु का ऊर्ध्वाधर मिश्रण रुक जाता है। जब उष्ण वायु की परत शीतल वायु के ऊपर होती है, तो धरातल के समीप से उठने वाले धुएँ और प्रदूषकों को ऊपर जाने का मार्ग नहीं मिल पाता। वे इसी शीतल परत में फंस जाते हैं और धरातल के निकट ही केंद्रित हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप नगरों में स्मॉग या विषाक्त धुंध का निर्माण होता है, जो मानव स्वास्थ्य, विशेषकर श्वसन तंत्र के लिए अत्यंत हानिकारक और कभी-कभी घातक सिद्ध होती है।

189. (C) एक विस्तृत क्षेत्र में समान सतह गुण
वायु राशि के स्रोत क्षेत्र की सर्वाधिक अनिवार्य विशेषता यह है कि वह एक विस्तृत और विशाल क्षेत्र होना चाहिए जिसमें धरातलीय विशेषताएं, जैसे तापमान और आर्द्रता, समान हों। यह एक विशाल महासागर या कोई समतल मैदानी भाग हो सकता है। यहाँ वायु को पर्याप्त समय तक स्थिर रहना पड़ता है ताकि वह नीचे की सतह के गुणों को पूर्णतः ग्रहण कर सके। पहाड़ी या विषम भूभाग स्रोत क्षेत्र के रूप में उपयुक्त नहीं होते क्योंकि वहाँ वायु का मिश्रण अनियमित होता है और गुणों में समरूपता नहीं बन पाती।

190. (B) पक्षाम → पक्षाम स्तरी → मध्य स्तरी → वर्षा स्तरी
जब कोई उष्ण वाताग्र किसी स्थान की ओर अग्रसर होता है, तो बादलों का एक विशिष्ट क्रम देखा जाता है। सर्वप्रथम, आकाश में बहुत ऊँचाई पर पतले पक्षाम बादल दिखाई देते हैं, जो आगामी मौसम परिवर्तन का प्रथम संकेत होते हैं। जैसे-जैसे वाताग्र समीप आता है, ये बादल सघन होकर पक्षाम स्तरी और फिर मध्य स्तरी बादलों में परिवर्तित हो जाते हैं। अंत में, धरातल के निकट सघन और गहरे वर्षा स्तरी बादल छा जाते हैं, जिनसे व्यापक और निरंतर वर्षा प्रारंभ होती है। यह क्रमिक विकास उष्ण वाताग्र की मंद गति को दर्शाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

191. (A) तापमान
वायुमंडल का ऊर्ध्वाधर स्तरीकरण मुख्य रूप से तापमान के परिवर्तन की दर पर आधारित है। इसी आधार पर वायुमंडल को क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्यमंडल और तापमंडल जैसी परतों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक परत में ऊँचाई के साथ तापमान के व्यवहार में भिन्नता पाई जाती है; जैसे क्षोभमंडल में तापमान घटता है, जबकि समताप मंडल में ओजोन के कारण बढ़ता है। यह तापीय संरचना वायुमंडलीय स्थिरता, पवनों के संचलन और मौसम की समस्त प्रक्रियाओं को समझने का प्राथमिक वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है जो अत्यंत व्यवस्थित है।

192. (D) नाइट्रोजन और ऑक्सीजन
स्वच्छ और शुष्क वायु के कुल आयतन का लगभग 99 प्रतिशत भाग केवल दो गैसों, नाइट्रोजन और ऑक्सीजन, से मिलकर बना है। नाइट्रोजन लगभग 78 प्रतिशत और ऑक्सीजन लगभग 21 प्रतिशत मात्रा में पाई जाती है। शेष 1 प्रतिशत में आर्गन, कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य दुर्लभ गैसें सम्मिलित हैं। नाइट्रोजन पौधों के लिए पोषण का आधार है, जबकि ऑक्सीजन समस्त जीवित प्राणियों के श्वसन के लिए अनिवार्य है। इन दोनों गैसों का यह विशाल अनुपात पृथ्वी के वायुमंडल को जीवन के अनुकूल बनाए रखने के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करता है।

193. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में विभिन्न संकेत विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों को दर्शाते हैं। 'Af' उष्णकटिबंधीय वर्षावन जलवायु का प्रतीक है जहाँ पूरे वर्ष वर्षा होती है। 'BWh' उष्ण मरुस्थलीय जलवायु को इंगित करता है जो अत्यधिक शुष्कता की विशेषता है। 'Csa' भूमध्यसागरीय जलवायु को दर्शाता है जहाँ ग्रीष्म ऋतु उष्ण और शुष्क होती है। 'Dwd' भीषण उप-आर्कटिक जलवायु का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सर्दियाँ अत्यंत शीतल और शुष्क होती हैं। ये संकेत वैश्विक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों की जलवायु विशेषताओं को संक्षेप में स्पष्ट करते हैं।

194. (A) संघनित होते जलवाष्प से गुप्त ऊष्मा का विमोचन।
हरिकेन या उष्णकटिबंधीय चक्रवात अपनी विशाल ऊर्जा का मुख्य स्रोत संघनन की गुप्त ऊष्मा से प्राप्त करते हैं। जब उष्ण महासागरों से वाष्पीकृत हुई नम वायु ऊपर उठती है और शीतल होकर बादलों में परिवर्तित होती है, तो संघनन की प्रक्रिया के दौरान बड़ी मात्रा में ऊष्मा विमुक्त होती है। यह विमुक्त ऊर्जा वायुमंडल को और अधिक गर्म करती है, जिससे वायु का ऊपर की ओर उठना तीव्र हो जाता है और निम्न दाब और भी गहरा हो जाता है। यह एक निरंतर चलने वाला चक्र है जो तूफान को अत्यंत शक्तिशाली बनाता है।

195. (C) एक शीत वाताग्र एक उष्ण वाताग्र से आगे निकल जाता है और उसे भूमि से ऊपर उठा देता है।
संरोधित वाताग्र शीतोष्ण चक्रवात के जीवन चक्र की एक महत्वपूर्ण अवस्था है। यह तब निर्मित होता है जब तीव्रता से गति करने वाला शीत वाताग्र अपने से आगे चल रहे मंद उष्ण वाताग्र को पकड़ लेता है। चूंकि शीतल वायु अधिक सघन और भारी होती है, इसलिए वह मध्य में दबी हुई उष्ण वायु राशि को पूर्णतः धरातल से ऊपर धकेल देती है। इस प्रक्रिया में उष्ण वायु का संपर्क पृथ्वी की सतह से विच्छेदित हो जाता है और अंततः चक्रवात की ऊर्जा समाप्त होने लगती है, जिससे तूफान धीरे-धीरे निर्बल हो जाता है।

196. (D) मानवजनित गतिविधियाँ
ग्रीनहाउस प्रभाव एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो पृथ्वी को रहने योग्य तापमान प्रदान करती है, किंतु 'भूमंडल तापन' विशेष रूप से मानवीय गतिविधियों के कारण इसके खतरनाक रूप से बढ़ने को दर्शाता है। जीवाश्म ईंधन के दहन, औद्योगिकीकरण और बड़े पैमाने पर वनों की कटाई से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी गैसों की सांद्रता बहुत बढ़ गई है। ये अतिरिक्त गैसें अधिक ऊष्मा को अवरुद्ध करती हैं, जिससे वैश्विक औसत तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह मानवजनित हस्तक्षेप प्राकृतिक जलवायु संतुलन को बिगाड़ रहा है।

197. (C) नमी, वायुमंडलीय अस्थिरता और एक उत्थान तंत्र
तड़ित झंझा के निर्माण के लिए तीन मूलभूत घटकों का एक साथ होना अनिवार्य है। सर्वप्रथम, बादलों के निर्माण के लिए प्रचुर मात्रा में नमी की आवश्यकता होती है। द्वितीय, वायुमंडल का अस्थिर होना आवश्यक है ताकि उष्ण वायु तीव्रता से ऊपर उठ सके। तृतीय, एक उत्थान तंत्र, जैसे कि तापीय संवहन, पर्वत या वाताग्र, होना चाहिए जो वायु को ऊपर की ओर धकेल सके। जब ये तीनों स्थितियाँ मिलती हैं, तो विशाल कपासी वर्षी बादलों का विकास होता है, जो विद्युत, गरज और भारी वर्षा का कारण बनते हैं।

198. (A) केवल कथन I
व्यापारिक पवनें और पछुआ पवनें वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का भाग हैं जो पूरे पृथ्वी के स्तर पर नियमित रूप से चलती हैं। ये बड़े पैमाने पर ऊष्मा और नमी के वितरण के लिए उत्तरदायी हैं। इसके विपरीत, समुद्र समीर और पर्वत समीर जैसी पवनें स्थानीय पवनें हैं, जो केवल लघु क्षेत्रों में और अल्पकाल के लिए चलती हैं। इनका मुख्य कारण स्थानीय धरातल के तापन और शीतलन में आने वाला अंतर है, न कि वैश्विक दबाव प्रणालियाँ। स्थानीय पवनें किसी विशेष स्थान के मौसम को प्रभावित करती हैं, किंतु वैश्विक जलवायु तंत्र का भाग नहीं होतीं।

199. (D) शांत पवनें और ऊपर उठती वायु।
डोलड्रम्स भूमध्य रेखा के निकट 5 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों के मध्य स्थित एक शांत क्षेत्र है। यहाँ अत्यधिक सौर तापन के कारण वायु गर्म होकर सीधे ऊपर की ओर उठती है, जिसके परिणामस्वरूप धरातल पर क्षैतिज पवनें बहुत क्षीण या शांत होती हैं। यहाँ का वातावरण बहुत उमस भरा और अस्थिर होता है जहाँ प्रायः दोपहर के पश्चात गरज के साथ वर्षा होती है। पुराने समय के नाविकों के लिए यह क्षेत्र बहुत चुनौतीपूर्ण था क्योंकि यहाँ जहाजों को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त वायु नहीं मिल पाती थी।

NODIA

200. (C) केवल 1 और 3
ओजोन परत का क्षरण मुख्य रूप से क्लोरीन और ब्रोमीन परमाणुओं द्वारा संचालित एक उत्प्रेरक प्रक्रिया है, जहाँ ये परमाणु ओजोन अणुओं को ऑक्सीजन में विच्छेदित कर देते हैं। इन परमाणुओं का प्राथमिक स्रोत मानवीय गतिविधियों द्वारा निर्मित क्लोरोफ्लोरोकार्बन जैसे रसायन हैं, न कि प्राकृतिक ज्वालामुखी। यह विनाशकारी प्रक्रिया ध्रुवीय समतापमंडलीय बादलों की उपस्थिति में और भी अधिक तीव्र हो जाती है, जो विशेष रूप से शीत ऋतु के दौरान अंटार्कटिका के ऊपर बनते हैं। यही कारण है कि ध्रुवीय क्षेत्रों में ओजोन छिद्र अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

201. (C) क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्यमंडल, तापमंडल
पृथ्वी की सतह से अंतरिक्ष की ओर जाने पर वायुमंडल का सही क्रमिक स्तरीकरण क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्यमंडल और तापमंडल के रूप में पाया जाता है। क्षोभमंडल सर्वाधिक निचली परत है जहाँ हम निवास करते हैं और मौसम की समस्त घटनाएं होती हैं। इसके ऊपर समताप मंडल है जहाँ ओजोन परत सुरक्षा प्रदान करती है। मध्यमंडल वह क्षेत्र है जहाँ उल्कापिंड जलकर नष्ट होते हैं। सबसे ऊपर तापमंडल स्थित है जहाँ तापमान पुनः बहुत ऊँचा हो जाता है। यह स्तरीकरण तापमान के व्यवहार और गैसों के घनत्व पर पूर्णतः आधारित है।

202. (A) लंबवत
वायुदाब प्रवणता बल सदैव उच्च वायुदाब वाले क्षेत्रों से निम्न वायुदाब वाले क्षेत्रों की ओर कार्य करता है। यह बल समदाब रेखाओं के बिल्कुल लंबवत या 90 डिग्री के कोण पर निर्देशित होता है। दबाव में अंतर जितना अधिक होगा और समदाब रेखाएं जितनी निकट होंगी, यह बल उतना ही शक्तिशाली होगा, जिससे पवन की गति बढ़ जाती है। हालाँकि कोरिओलिस बल और घर्षण पवन की अंतिम दिशा को परिवर्तित कर देते हैं, किंतु संचलन को प्रारंभ करने वाला यह मूल बल सदैव प्रवणता की दिशा में लंबवत ही रहता है।

203. (D) विल्हेम बर्कनेस और बर्गन स्कूल।
शीतोष्ण चक्रवातों के विकास और उनके जीवन चक्र को समझने के लिए 'ध्रुवीय वाताग्र सिद्धांत' का प्रतिपादन विल्हेम बर्कनेस और उनके सहयोगियों द्वारा बर्गन स्कूल ऑफ मेटीयोलॉजी में किया गया था। इस सिद्धांत ने स्पष्ट किया कि कैसे दो विपरीत वायु राशियों के मध्य एक लहर के रूप में चक्रवात का जन्म होता है और वह परिपक्वता से संरोधन तक पहुँचता है। यह आधुनिक मौसम विज्ञान के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है, जिसने मध्य-अक्षांशों के जटिल मौसम प्रणालियों के पूर्वानुमान और वैज्ञानिक विश्लेषण को एक नवीन दिशा प्रदान की।

204. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विश्व के अधिकांश बड़े उष्ण मरुस्थल उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर स्थित हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियों से वायु का नीचे बैठना है, जिससे वातावरण स्थिर रहता है और वर्षा की संभावना समाप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त, इन तटों के निकट बहने वाली ठंडी महासागरीय धाराएं हवा को शीतल और स्थिर बना देती हैं, जिससे उसमें नमी धारण करने की क्षमता न्यून हो जाती है। इन दोनों कारकों के सम्मिलित प्रभाव से यहाँ अत्यंत शुष्क परिस्थितियाँ और मरुस्थलीय परिदृश्य का निर्माण होता है।

205. (C) आर्द्रता में वृद्धि
शीत लहर की मुख्य विशेषता तापमान में होने वाली अचानक और तीव्र गिरावट है, जो सामान्यतः ठंडी और शुष्क ध्रुवीय वायु के आगमन के कारण होती है। इसके दौरान आर्द्रता में वृद्धि नहीं होती, बल्कि वायु सामान्यतः और भी शुष्क हो जाती है। शीत लहर अक्सर किसी शीत वाताग्र के गुजरने के पश्चात आती है और इसके साथ चलने वाली शक्तिशाली शीतल पवनें ठंड के अनुभव को और भी बढ़ा देती हैं। यह स्थिति जनजीवन को प्रभावित करती है और फसलों के पाले की चपेट में आने का संकट उत्पन्न करती है जो अत्यंत चुनौतीपूर्ण है।

206. (A) 1, 3, 4, 2
एल नीनो के विकास का एक तार्किक क्रम होता है। इसकी शुरुआत प्रशांत महासागर में व्यापारिक पवनों के निर्बल होने से होती है। इसके परिणामस्वरूप, पश्चिमी प्रशांत में संचित उष्ण जल का पुंज पूर्व की ओर गति करने लगता है, जिससे मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर के सतही तापमान में स्पष्ट वृद्धि होती है। अंततः, इस उष्ण जल के संचय के कारण पेरू के तट पर होने वाला शीतल और पोषक तत्वों से भरपूर जल का ऊपर आना (अपवेलिंग) पूर्णतः रुक जाता है। यह पूरी प्रक्रिया वैश्विक मौसम और समुद्री पारिस्थितिकी को गहराई से प्रभावित करती है।

207. (A) टॉरनेडो
टॉरनेडो एक अत्यंत शक्तिशाली और स्थानीय तूफान है जो एक विनाशकारी घूमते हुए वायु स्तंभ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। यह किसी भीषण तड़ित झंझा के बादल से निकलकर पृथ्वी की सतह तक पहुँचता है। इसकी पवन गति विश्व में सर्वाधिक होती है, जो अपने मार्ग में आने वाली लगभग प्रत्येक वस्तु को विनष्ट करने की क्षमता रखती है। यद्यपि यह बहुत कम समय और लघु क्षेत्र के लिए आता है, किंतु इसकी तीव्रता इसे मौसम की सर्वाधिक भयानक घटनाओं में से एक बनाती है। इसकी पहचान इसके विशिष्ट कीप जैसे आकार से की जाती है।

208. (B) सभी महीनों में पर्याप्त वर्षण
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में, द्वितीय अक्षर के रूप में 'f' का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया जाता है कि संबंधित क्षेत्र में कोई शुष्क मौसम नहीं है। इसका अर्थ है कि वर्ष के प्रत्येक माह में पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है और वनस्पति के लिए नमी सदैव उपलब्ध रहती है। यह विशेषता मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय वर्षावन (Af) और कुछ समुद्री जलवायु क्षेत्रों में पाई जाती है। अक्षरों का यह व्यवस्थित प्रयोग किसी स्थान की मासिक वर्षा की निरंतरता और उसके मौसमी स्वरूप को संक्षिप्त रूप में स्पष्ट करने में सहायता करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

209. (B) संवहन
वायुमंडल में ऊष्मा के ऊर्ध्वाधर स्थानांतरण की प्रक्रिया को संवहन कहा जाता है, जिसमें वायु के उष्ण अणु हल्के होकर स्वयं ऊपर की ओर उठते हैं। जैसे ही गर्म वायु ऊपर जाती है, वह अपने साथ ऊर्जा ले जाती है, और ऊपर की ठंडी वायु उसका स्थान ग्रहण करने के लिए नीचे आती है। यह प्रक्रिया बादलों के निर्माण और तड़ित झंझा के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। संवहन मुख्य रुप से वायुमंडल की निचली परतों को उष्ण करने और जल चक्र को गति प्रदान करने में अपनी आधारभूत भूमिका निभाता है जो जीवन के लिए अनिवार्य है।

210. (A) दो अलग-अलग वायु राशियों को अलग करने वाला एक संकीर्ण सीमा क्षेत्र।
वाताग्र दो ऐसी वायु राशियों के मध्य का एक संक्रमण या सीमा क्षेत्र है जिनके तापमान, आर्द्रता और घनत्व में काफी भिन्नता होती है। ये वायु राशियाँ अपनी विशिष्टताओं के कारण तुरंत आपस में मिश्रित नहीं होती हैं, बल्कि एक झुकी हुई सीमा निर्मित करती हैं। वाताग्र के क्षेत्र में वायु का उत्थान होने से बादलों का निर्माण और वर्षा होती है। यह मौसम में होने वाले परिवर्तनों का मुख्य केंद्र होता है। वाताग्र मुख्य रुप से मध्य-अक्षांशों में विकसित होते हैं जहाँ ध्रुवीय और उष्णकटिबंधीय वायु का आपस में टकराव होता है।

211. (C) दक्षिणी दोलन
दक्षिणी दोलन उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के मध्य होने वाले वायुमंडलीय दबाव के एक बड़े पैमाने पर उतार-चढ़ाव को संदर्भित करता है। जब पूर्वी प्रशांत में दबाव सामान्य से कम होता है, तो पश्चिमी प्रशांत में यह सामान्य से अधिक हो जाता है, और इसके विपरीत। यह घटना एल नीनो के साथ मिलकर वैश्विक स्तर पर पवनों के संचलन और वर्षा के प्रतिरुप को गहराई से प्रभावित करती है। इस दबाव के अंतर को मापने के लिए ताहिती और डार्विन के स्टेशनों के वायुदाब का तुलनात्मक डेटा उपयोग किया जाता है।

212. (D) आगामी सौर विकिरण
'सूर्यातप' शब्द आगामी सौर विकिरण (Insolation) का हिंदी संक्षिप्त रुप है। यह सूर्य से पृथ्वी की ओर आने वाली उस कुल सौर ऊर्जा को दर्शाता है जो वायुमंडल के शीर्ष पर पहुँचती है और अंततः धरातल तक आती है। यह ऊर्जा लघु-तरंग विद्युत चुंबकीय विकिरण के रुप में होती है। सूर्यातप ही पृथ्वी पर जीवन का आधार है, क्योंकि यही तापमान को नियंत्रित करता है, मौसम की गतिविधियों को ऊर्जा प्रदान करता है और पौधों में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को संभव बनाता है। यह ऊर्जा समस्त जैविक चक्रों के संचालन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

213. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
पृथ्वी पर वायुदाब पेटियों का वितरण अक्षांशों के साथ एक निश्चित और व्यवस्थित प्रतिरुप का अनुसरण करता है। भूमध्यरेखीय निम्न दाब पेटी 5 डिग्री उत्तर और दक्षिण के समीप उष्ण वायु के ऊपर उठने से बनती है। उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटियाँ लगभग 30 डिग्री अक्षांशों पर वायु के नीचे बैठने से निर्मित होती हैं। उपध्रुवीय निम्न दाब पेटियाँ 60 डिग्री के समीप पवनों के अभिसरण से बनती हैं। अंत में, ध्रुवीय उच्च दाब पेटियाँ 90 डिग्री ध्रुवों के समीप अत्यधिक शीत और भारी वायु के कारण स्थापित होती हैं।

214. (B) फेरेल कोशिका तापमान के अंतर से संचालित एक तापीय रूप से प्रत्यक्ष कोशिका है।
वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि फेरेल कोशिका एक तापीय रूप से अप्रत्यक्ष कोशिका है। यह तापीय अंतर से प्रत्यक्ष संचालित नहीं होती, बल्कि हेडली और ध्रुवीय कोशिकाओं के मध्य एक चक्र की भाँति कार्य करती है। हेडली और ध्रुवीय कोशिकाएं तापीय रूप से प्रत्यक्ष हैं क्योंकि वे उष्ण वायु के ऊपर उठने और शीतल वायु के नीचे बैठने की प्राकृतिक प्रक्रिया पर आधारित हैं। फेरेल कोशिका मध्य-अक्षांशों में पछुआ पवनों को प्रवाहित करती है और वैश्विक ऊर्जा के संतुलन में अपनी विशेष भूमिका निभाती है।

215. (A) केवल 3
बाढ़ और सूखा दोनों ही महत्वपूर्ण पर्यावरणीय आपदाएं मानी जाती हैं जो जल चक्र के असंतुलन को दर्शाती हैं। हालांकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि समस्त बाढ़ केवल भारी वर्षा के कारण आती हैं, क्योंकि वे बांधों के टूटने या तटीय तूफानों से भी आ सकती हैं। सूखा भी केवल वर्षा की न्यूनता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जल के प्रबंधन और सामाजिक-आर्थिक कारक भी सम्मिलित होते हैं। ये आपदाएं अपने विनाशकारी प्रभाव के कारण मानव समाज और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक समान रुप से गंभीर संकट और चुनौती प्रस्तुत करती हैं।

216. (A) घटता; क्षोभमंडल
सामान्य ह्रास दर उस औसत दर को संदर्भित करती है जिस पर क्षोभमंडल में ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान क्रमिक रुप से घटता है। यह दर औसतन प्रति 1000 मीटर की ऊँचाई पर लगभग 6.5 डिग्री सेल्सियस होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि निचला वायुमंडल मुख्य रुप से सूर्य से नहीं, बल्कि धरातल से विसर्जित विकिरण से उष्ण होता है। जैसे-जैसे हम ऊपर जाते हैं, वायु विरल हो जाती है और ऊष्मा अवशोषित करने की उसकी क्षमता कम होती जाती है। यह मौसम प्रणालियों के वैज्ञानिक विश्लेषण और पूर्वानुमान के लिए आधारभूत है।

217. (C) नमी पर्याप्तता।
थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण में नमी पर्याप्तता या आर्द्रता सूचकांक यह दर्शाता है कि किसी क्षेत्र में होने वाली वर्षा उस क्षेत्र की वाष्पीकरण की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए कितनी पर्याप्त है। यह केवल कुल वर्षा की मात्रा को नहीं मापता, बल्कि यह देखता है कि वाष्पीकरण और पौधों के उपयोग के पश्चात मृदा में कितनी नमी शेष बचती है। यह सूचकांक यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि कोई क्षेत्र आर्द्र है, अर्ध-शुष्क है या शुष्क। कृषि और जल संसाधन नियोजन के लिए यह एक अत्यंत सटीक वैज्ञानिक मानक है।

NODIA

218. (A) ध्रुवीय वाताग्र सिद्धांत
मध्य-अक्षांश या शीतोष्ण चक्रवातों के संपूर्ण जीवन चक्र को समझने के लिए 'ध्रुवीय वाताग्र सिद्धांत' सर्वाधिक सटीक मॉडल माना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, इन चक्रवातों का जन्म शीतल ध्रुवीय वायु और उष्ण उष्णकटिबंधीय वायु के मध्य एक वाताग्र के रूप में होता है। यह प्रक्रिया एक लहर के विकसित होने से प्रारंभ होकर, चक्रवात की परिपक्वता और अंततः संरोधन की अवस्था तक पहुँचती है। बर्गन स्कूल द्वारा विकसित यह सिद्धांत आज भी मौसम विज्ञानियों को इन जटिल वायुमंडलीय प्रणालियों का विश्लेषण करने में आधारभूत वैज्ञानिक सहायता प्रदान करता है।

219. (C) कथन I और कथन II दोनों
समताप मंडल की मुख्य विशेषता इसकी तापीय संरचना है, जहाँ ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान बढ़ने लगता है। यह तापन ओजोन परत की उपस्थिति के कारण होता है, जो सूर्य से आने वाले घातक पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करती है। यह अवशोषण न केवल वायुमंडल को उष्ण करता है, बल्कि पृथ्वी पर जीवन की रक्षा करने वाला एक अनिवार्य सुरक्षा कवच भी प्रदान करता है। ओजोन के बिना, यह उच्च ऊर्जा विकिरण सीधे धरातल तक पहुँचता, जिससे अधिकांश जैविक जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर संकट उत्पन्न हो जाता।

220. (B) वायु को ऊपर उठाने वाला तंत्र
पर्वतीय और संवहनीय वर्षा के मध्य प्राथमिक अंतर उस तंत्र में है जो वायु को ऊपर की ओर धकेलता है। पर्वतीय वर्षा में, वायु को किसी भौतिक बाधा, जैसे पर्वत श्रृंखला, के ऊपर चढ़ने के लिए विवश किया जाता है। इसके विपरीत, संवहनीय वर्षा में, धरातल के अत्यधिक उष्ण होने के कारण वायु स्वतः गर्म और हल्की होकर ऊपर की ओर उठती है। हालांकि दोनों प्रक्रियाओं में वायु के शीतल होने और संघनन के कारण वर्षा होती है, किंतु उनके उत्पन्न होने के कारण और भौगोलिक परिस्थितियाँ एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न और विशिष्ट होती हैं।

221. (C) तापमान
वायु राशियों के मध्य की सीमा या वाताग्र को परिभाषित करने में तापमान सर्वाधिक महत्वपूर्ण और निर्णायक कारक है। जब दो वायु राशियाँ आपस में मिलती हैं, तो उनके बीच तापमान का अंतर ही उनके घनत्व और व्यवहार को निर्धारित करता है। शीतल वायु अधिक सघन और भारी होती है, जबकि उष्ण वायु हल्की होती है। तापमान में यही स्पष्ट परिवर्तन वाताग्र के ढाल, वायु के उत्थान की दर और उसके साथ होने वाली वर्षा की तीव्रता को प्रभावित करता है। मौसम मानचित्रों पर वाताग्र की पहचान तापीय भिन्नता और घनत्व के आधार पर ही की जाती है।

222. (D) वायुमंडलीय गैसें अवरक्त विकिरण को रोक लेती हैं।
ग्रीनहाउस प्रभाव एक प्राकृतिक वायुमंडलीय प्रक्रिया है जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और जलवाष्प जैसी कुछ विशिष्ट गैसें सम्मिलित होती हैं। ये गैसें सूर्य से आने वाले लघु-तरंग विकिरण को तो आने देती हैं, किंतु पृथ्वी की सतह से विसर्जित होने वाले दीर्घ-तरंग अवरक्त विकिरण (पार्थिव विकिरण) को अवशोषित कर लेती हैं। इस अवशोषित ऊर्जा को वे पुनः धरातल की ओर विकीर्ण करती हैं, जिससे निचला वायुमंडल उष्ण बना रहता है। यह प्रक्रिया पृथ्वी के औसत तापमान को जीवन के अनुकूल स्तर पर बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

223. (A) शीत वाताग्र
शीत वाताग्र वायुमंडल में सर्वाधिक नाटकीय और तीव्र मौसम परिवर्तन लाने के लिए उत्तरदायी माना जाता है। जब एक भारी और शीतल वायु राशि तीव्रता से आगे बढ़ती है, तो वह उष्ण वायु को बहुत अधिक वेग से ऊपर की ओर धकेलती है। इस तीव्र उत्थान के कारण विशाल कपासी वर्षी बादल बनते हैं, जिनसे अचानक और भीषण वर्षा, विद्युत चमकना और कभी-कभी ओलावृष्टि होती है। वाताग्र के गुजरने के पश्चात आकाश तीव्रता से स्वच्छ होता है और तापमान में बहुत स्पष्ट और अचानक गिरावट दर्ज की जाती है जो स्वास्थ्य हेतु चुनौतीपूर्ण है।

224. (D) ला नीना स्थितियाँ
दक्षिणी दोलन सूचकांक का धनात्मक मान मुख्य रूप से ला नीना की स्थिति का संकेत देता है। इसका अर्थ यह है कि उष्णकटिबंधीय पूर्वी प्रशांत महासागर में ताहिती के समीप वायुमंडलीय दबाव सामान्य से काफी अधिक है, जबकि पश्चिमी प्रशांत में डार्विन के समीप यह सामान्य से कम है। दबाव के इस बढ़े हुए अंतर के कारण प्रशांत महासागर के ऊपर चलने वाली व्यापारिक पवनें और भी अधिक शक्तिशाली हो जाती हैं। यह स्थिति पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में उष्ण जल के संचय और वहाँ होने वाली अत्यधिक वर्षा की संभावना को काफी प्रबल कर देती है।

225. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उष्णकटिबंधीय चक्रवात अपनी विशाल शक्ति उष्ण समुद्री सतहों से प्राप्त होने वाली प्रचुर नमी और संघनन की गुप्त ऊष्मा से प्राप्त करते हैं। जैसे ही ये तूफान समुद्र को छोड़कर भूमि पर प्रवेश करते हैं, इनका ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत विच्छेदित हो जाता है। इसके अतिरिक्त, धरातल का खुरदरापन घर्षण को बढ़ा देता है, जिससे पवन की गति न्यून हो जाती है। नमी की न्यूनता और बढ़ते घर्षण के सम्मिलित प्रभाव के कारण ये चक्रवात भूमि पर जाने के पश्चात बहुत तीव्रता से निर्बल होकर अंततः समाप्त हो जाते हैं।

226. (A) पृथ्वी की सतह और वायुमंडल द्वारा उत्सर्जित दीर्घ-तरंग विकिरण।
पृथ्वी सूर्य से आने वाली ऊर्जा को अवशोषित करने के पश्चात उसे पुनः अंतरिक्ष की ओर विकीर्ण करती है, जिसे पार्थिव विकिरण कहा जाता है। चूंकि पृथ्वी सूर्य की तुलना में काफी शीतल है, इसलिए यह ऊर्जा दीर्घ-तरंग अवरक्त विकिरण के रूप में विसर्जित की जाती है। वायुमंडल, विशेष रूप से ग्रीनहाउस गैसें, इस दीर्घ-तरंग विकिरण का अवशोषण करने में बहुत प्रभावी होती हैं। यही प्रक्रिया निचले वायुमंडल को उष्ण करने का मुख्य कारण है और पृथ्वी के ऊष्मा बजट को संतुलित रखने में अपनी सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Downloaded from www.pdf.tube

245. (C) मिस्ट्रल
मिस्ट्रल एक कैटाबेटिक पवन का उत्कृष्ट उदाहरण है जो फ्रांस में आल्प्स पर्वतमाला से रोन घाटी की ओर नीचे उतरती है। यह एक अत्यंत शीतल, शुष्क और तीव्र पवन है जो रात्रि के समय ढालों के तापीय शीतलन और गुरुत्वाकर्षण के कारण नीचे की ओर बहती है। इसकी गति इतनी अधिक हो सकती है कि यह तटीय क्षेत्रों में तापमान को काफी नीचे गिरा देती है। इसके विपरीत, चिनूक और लू उष्ण पवनें हैं। कैटाबेटिक पवनें विशेष रुप से पर्वतीय और ध्रुवीय क्षेत्रों की एक महत्वपूर्ण स्थानीय वायुमंडलीय विशेषता मानी जाती हैं।

246. (B) ग्रीनहाउस गैसों द्वारा दीर्घ-तरंग पार्थिव विकिरण का अवशोषण।
पृथ्वी का वायुमंडल मुख्य रूप से नीचे से उष्ण होता है, न कि सीधे ऊपर से आने वाली सौर ऊर्जा से। जब पृथ्वी की सतह सौर विकिरण को अवशोषित कर लेती है, तो वह उसे दीर्घ-तरंग पार्थिव विकिरण के रूप में वापस विसर्जित करती है। वायुमंडल में विद्यमान ग्रीनहाउस गैसें, जैसे जलवाष्प और कार्बन डाइऑक्साइड, इस विकिरण को अवशोषित करने में बहुत प्रभावी होती हैं। वे इस ऊर्जा को सोखकर उसे पुनः धरातल की ओर विकीर्ण करती हैं। यही कारण है कि वायुमंडल की निचली परतें ऊपरी परतों की तुलना में अधिक उष्ण रहती हैं।

247. (D) संभावित वाष्पोत्सर्जन
सी.डब्ल्यू. थॉर्नथवेट के 1948 के जलवायु वर्गीकरण का मुख्य आधार संभावित वाष्पोत्सर्जन है। उन्होंने केवल तापमान और वर्षा पर निर्भर रहने के स्थान पर इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि किसी जलवायु में पौधों के उपयोग और वाष्पीकरण के लिए कितनी ऊर्जा उपलब्ध है। यह सूचकांक जल संतुलन को मापने में सहायता करता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि किसी क्षेत्र में जल की अधिकता है या न्यूनता। यह दृष्टिकोण कृषि विज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन के लिए अत्यधिक उपयोगी है क्योंकि यह जलवायु को पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों से जोड़ता है।

248. (A) दो अलग-अलग वायु राशियों को अलग करने वाला एक अचर वाताग्र।
शीतोष्ण चक्रवात के जीवन चक्र का प्रारंभ सामान्यतः ध्रुवीय वाताग्र के साथ होता है, जहाँ शीतल ध्रुवीय वायु और उष्ण उष्णकटिबंधीय वायु एक अचर वाताग्र के रूप में एक-दूसरे के विपरीत प्रवाहित होती हैं। यह एक शांत अवस्था है जिसमें कोई चक्रवाती संचलन नहीं होता। जब इस सीमा पर कोई विक्षोभ या लहर उत्पन्न होती है, तब चक्रवात का निर्माण प्रारंभ होता है। इस प्रारंभिक अवस्था को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं से वह ऊर्जा संचित होती है जो बाद में एक विशाल और सक्रिय तूफान प्रणाली के रूप में विकसित हो जाती है।

249. (C) कपासी वर्षी बादल के भीतर शक्तिशाली आरोही वायु धाराएं।
तड़ित झंझा के दौरान ओलावृष्टि का होना वायुमंडल में विद्यमान अत्यधिक शक्तिशाली आरोही वायु धाराओं का स्पष्ट संकेत है। ये धाराएं बादलों के भीतर जल की बूंदों को ऊँचाई पर स्थित अत्यधिक शीतल क्षेत्रों में ले जाती हैं, जहाँ वे जमकर हिम बन जाती हैं। जब तक ये धाराएं शक्तिशाली रहती हैं, ओले बादल में ही भ्रमण करते रहते हैं और उन पर बर्फ की नवीन परतें जमा होती रहती हैं। जब ये इतने भारी हो जाते हैं कि आरोही धाराएं उन्हें थाम नहीं पातीं, तो ये ओलों के रूप में धरातल पर गिरते हैं जो विनाशकारी हो सकते हैं।

NODIA

250. (A) लोगों, संपत्ति या पर्यावरण को क्षति पहुँचाने की क्षमता रखती है।
पर्यावरणीय आपदा एक ऐसी घटना है, चाहे वह प्राकृतिक हो या मानवजनित, जो मानव जीवन, संपत्ति, अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी तंत्र को व्यापक हानि पहुँचाने की क्षमता रखती है। इनमें बाढ़, सूखा, चक्रवात और लू जैसी मौसम संबंधी घटनाएं सम्मिलित हैं। ऐसी आपदाएं आकस्मिक आ सकती हैं या धीरे-धीरे विकसित हो सकती हैं। इनका प्रभाव संबंधित समाज की सहनशक्ति और तैयारी पर निर्भर करता है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण इन आपदाओं की तीव्रता और आवृत्ति में वृद्धि हुई है, जो वैश्विक चिंता का विषय है।

251. (D) दक्षिण-पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्षा में वृद्धि।
एल नीनो का वैश्विक मौसम प्रतिरूप पर व्यापक और दूरगामी प्रभाव पड़ता है। इसके दौरान जेट स्ट्रीम की स्थिति परिवर्तित हो जाती है, जिससे दक्षिण-पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका और खाड़ी तट के क्षेत्रों में सामान्य से अधिक वर्षा और तूफानी गतिविधियाँ देखी जाती हैं। इसके विपरीत, पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र जैसे इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और भारत के कुछ भागों में मानसून निर्बल हो जाता है और सूखे की संभावना बढ़ जाती है। एल नीनो की यह घटना दर्शाती है कि महासागरों और वायुमंडल के मध्य का संबंध कितना प्रगाढ़ और अंतः-संबद्ध है।

252. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यमंडल वायुमंडल की वह परत है जहाँ ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान निरंतर घटता जाता है और लगभग 80 किलोमीटर की ऊँचाई पर यह अपने न्यूनतम स्तर पर पहुँच जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इस परत में ओजोन जैसी गैसों या धूल कणों का अभाव होता है जो सौर विकिरण को अवशोषित कर सकें। यह वायुमंडल की सर्वाधिक शीतल परत मानी जाती है। तापन का कोई प्रत्यक्ष स्रोत न होने और वायु के अत्यंत विरल होने के कारण यहाँ तापमान बहुत तीव्रता से गिरता है, जो इसे अन्य परतों से विशिष्ट बनाता है।

253. (C) पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र
वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण को नियंत्रित करने वाले प्रमुख कारकों में सौर ऊर्जा का असमान वितरण, पृथ्वी का घूर्णन और महाद्वीपों व महासागरों का वितरण सम्मिलित है। पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र इस परिसंचरण को प्रभावित करने वाला प्राथमिक कारक नहीं है। चुंबकीय क्षेत्र मुख्य रूप से आवेशित कणों और विकिरण से पृथ्वी की रक्षा करता है, किंतु पवनों की दिशा और दाब प्रवणता का निर्धारण तापीय और गतिक बलों द्वारा ही किया जाता है। घूर्णन के कारण लगने

236. (B) गर्म और आर्द्र
समुद्री उष्णकटिबंधीय या 'mT' वायु राशि की मुख्य विशेषताएं इसका उष्ण तापमान और उच्च आर्द्रता है। यह तब निर्मित होती है जब वायु दीर्घकाल तक उष्ण उष्णकटिबंधीय या उपोष्णकटिबंधीय महासागरों के ऊपर स्थिर रहती है। महासागरों से प्रचुर मात्रा में वाष्पीकरण होने के कारण इसमें जलवाष्प की बहुत अधिक मात्रा संचित हो जाती है। जब यह वायु राशि महाद्वीपों की ओर बढ़ती है, तो यह अक्सर अत्यधिक उमस, बादलों का निर्माण और भारी वर्षा का कारण बनती है, जो मानसूनी और चक्रवातीय वर्षा प्रणालियों का मुख्य घटक है।

237. (A) केवल 1 और 2
कोरिओलिस बल पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूर्णन के कारण उत्पन्न होने वाला एक विक्षेपण बल है, जिसे आभासी बल भी कहा जाता है। यह बल उत्तरी गोलार्ध में गतिमान वस्तुओं को दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर विक्षेपित करता है। इसकी शक्ति ध्रुवों पर सर्वाधिक होती है और भूमध्य रेखा पर यह पूर्णतः शून्य हो जाता है। यह बल पवनों और महासागरीय धाराओं के संचलन की दिशा निर्धारित करने में आधारभूत भूमिका निभाता है। इसके बिना, पृथ्वी पर वायुमंडलीय परिसंचरण का प्रतिरूप पूर्णतः पृथक और सरल होता।

238. (D) ध्रुवीय क्षेत्र
पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्र वे स्थान हैं जहाँ पूरे वर्ष शुद्ध ऊर्जा या विकिरण की न्यूनता बनी रहती है। इसका अर्थ यह है कि ये क्षेत्र जितनी सौर ऊर्जा प्राप्त करते हैं, उससे कहीं अधिक ऊर्जा पार्थिव विकिरण के रूप में अंतरिक्ष में वापस विसर्जित कर देते हैं। यहाँ सौर किरणें बहुत तिरछी पड़ती हैं और एल्बिडो अधिक होने के कारण ऊर्जा का अवशोषण बहुत कम होता है। वैश्विक ऊष्मा बजट को संतुलित रखने के लिए, वायुमंडलीय पवनों और महासागरीय धाराओं द्वारा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से अतिरिक्त ऊष्मा को निरंतर ध्रुवों की ओर स्थानांतरित किया जाता है।

239. (A) शीत वाताग्र के पीछे की वायु उष्ण वाताग्र के आगे की ठंडी वायु से अधिक ठंडी होती है।
एक शीत संरोधन तब घटित होता है जब पीछे से आ रहा शीत वाताग्र अपने से आगे चल रहे उष्ण वाताग्र को पकड़ लेता है और पीछे की वायु आगे वाली वायु की तुलना में अधिक शीतल होती है। चूंकि सर्वाधिक शीतल वायु सर्वाधिक भारी होती है, इसलिए वह उष्ण वाताग्र के नीचे प्रविष्ट हो जाती है और उसे, साथ ही मध्य की उष्ण वायु को भी, धरातल से ऊपर धकेल देती है। यह प्रक्रिया शीतोष्ण चक्रवात की परिपक्वता को दर्शाती है और इसके साथ ही बादलों व वर्षा की तीव्रता में अंतिम वृद्धि देखी जाती है जो महत्वपूर्ण है।

240. (D) जलवाष्प
जलवाष्प को वायुमंडल की एक 'परिवर्तनशील गैस' माना जाता है क्योंकि इसकी सांद्रता स्थान और समय के अनुसार बहुत अधिक परिवर्तित होती रहती है। यह शुष्क मरुस्थलों में नगण्य हो सकती है, जबकि उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में इसकी मात्रा आयतन के अनुसार 4 प्रतिशत तक पहुँच सकती है। इसके विपरीत, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और आर्गन जैसी गैसों का अनुपात वायुमंडल में स्थिर रहता है। जलवाष्प मौसम की समस्त घटनाओं, जैसे बादलों का बनना और वर्षण, के लिए उत्तरदायी है और यह ऊष्मा को अवशोषित करने वाली एक शक्तिशाली गैस भी है।

241. (B) केंद्रीय वायुमंडलीय दबाव और पवन की गति
उष्णकटिबंधीय चक्रवात की तीव्रता का निर्धारण मुख्य रूप से उसके केंद्र में स्थित न्यूनतम वायुमंडलीय दबाव और उसके चारों ओर चलने वाली पवन की गति के आधार पर किया जाता है। केंद्रीय दबाव जितना कम होगा और दबाव प्रवणता जितनी तीव्र होगी, पवन की गति उतनी ही अधिक और विनाशकारी होगी। मौसम विज्ञानी इन आंकड़ों का उपयोग तूफान की श्रेणी निर्धारित करने और उसके संभावित संकट का आकलन करने के लिए करते हैं। यह जानकारी तटीय क्षेत्रों में सुरक्षा उपायों और निकासी की योजना बनाने के लिए अत्यंत अनिवार्य और जीवन रक्षक सिद्ध होती है।

242. (A) इसमें शीत ऋतु-अधिकतम वर्षण प्रतिरूप होता है।
कोपेन की 'Cs' या भूमध्यसागरीय जलवायु अन्य शीतोष्ण जलवायु श्रेणियों में अद्वितीय है क्योंकि इसमें वर्षा का मुख्य समय शीत ऋतु होती है। अधिकांश अन्य जलवायु प्रकारों में वर्षा या तो ग्रीष्म ऋतु में होती है या पूरे वर्ष समान रहती है। यहाँ गर्मियों का मौसम शुष्क और धूप वाला होता है क्योंकि इस दौरान उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटियाँ इस क्षेत्र पर प्रभावी रहती हैं। शीत ऋतु में पछुआ पवनें और उनके साथ आने वाले चक्रवात यहाँ वर्षा लाते हैं। यह विशिष्ट वर्षण चक्र यहाँ की वनस्पति और कृषि की पहचान है।

243. (C) सतह की प्रकृति
ऊष्मा द्वीप प्रभाव इस बात का प्रमुख उदाहरण है कि धरातल की प्रकृति तापमान के वितरण को कैसे प्रभावित करती है। शहरी क्षेत्रों में कंक्रीट, डामर और ईंटों से बनी सतहें सौर ऊर्जा को बहुत अधिक अवशोषित करती हैं और रात में उसे मंद गति से विसर्जित करती हैं। इसके अतिरिक्त, वहां वनस्पतियों की कमी वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से होने वाले शीतलन को न्यून कर देती है। इसके परिणामस्वरूप, नगर अपने आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक उष्ण हो जाते हैं। यह स्थानीय जलवायु परिवर्तन का एक स्पष्ट उदाहरण है।

244. (C) कथन I और कथन II दोनों
व्यापारिक पवनें वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का एक प्रमुख अंग हैं। उत्तरी गोलार्ध में, ये पवनें उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब से भूमध्यरेखीय निम्न दाब की ओर बहती हैं। वायुदाब प्रवणता बल के कारण इनकी दिशा उत्तर से दक्षिण की ओर होती है, किंतु कोरिओलिस प्रभाव के कारण ये अपने मार्ग से दाईं ओर विक्षेपित हो जाती हैं, जिससे इनकी दिशा उत्तर-पूर्व हो जाती है। यह पवन प्रणाली सदियों से निरंतर प्रवाहित हो रही है और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के मौसम और समुद्री व्यापारिक मार्गों को निर्धारित करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Click Here to Buy book on Amazon

227. (C) दीर्घकालिक मौसम औसत और विविधताएं।
किसी क्षेत्र की जलवायु उस स्थान की वायुमंडलीय स्थितियों का दीर्घकालिक विवरण होती है, जिसे सामान्यतः कम से कम 30 वर्षों के मौसम के आंकड़ों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसमें केवल औसत तापमान और वर्षा ही सम्मिलित नहीं हैं, बल्कि मौसम की चरम सीमाएं और उनकी पुनरावृत्ति की आवृत्तियाँ भी सम्मिलित होती हैं। मौसम जहाँ अल्पकालिक और परिवर्तनशील होता है, वहीं जलवायु एक स्थिर और व्यापक अवधारणा है। जलवायु हमें यह समझने में सहायता करती है कि किसी क्षेत्र में सामान्य रूप से मौसम की क्या अपेक्षा की जा सकती है।

228. (D) शुष्क - B
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में बड़े अक्षर 'B' का उपयोग शुष्क जलवायु के समूह को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस श्रेणी की मुख्य पहचान यह है कि यहाँ वार्षिक वर्षा की तुलना में वाष्पीकरण की दर अधिक होती है। इसे आगे 'W' (मरुस्थल) और 'S' (स्टेपी) जैसी उपश्रेणियों में विभाजित किया गया है। अन्य विकल्पों में मिलान त्रुटिपूर्ण है; जैसे उष्णकटिबंधीय के लिए 'A' और ध्रुवीय के लिए 'E' का प्रयोग होता है। 'B' समूह पृथ्वी के सर्वाधिक शुष्क और जल की न्यूनता वाले क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है।

229. (C) दिन के दौरान पहाड़ी ढाल पर ऊपर की ओर बहती है।
एनाबेटिक पवन एक स्थानीय पवन है जो दिन के समय पर्वतीय क्षेत्रों में चलती है। दिन में सूर्य की उष्णता से पहाड़ों के ढाल घाटी की तुलना में तीव्रता से गर्म होते हैं। ढालों के संपर्क में आने वाली वायु उष्ण और हल्की होकर पर्वत के ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। इस ऊपर उठती हुई वायु को ही एनाबेटिक पवन कहा जाता है। यह प्रक्रिया घाटी समीर के विकास का मुख्य आधार है। रात्रि में स्थिति इसके ठीक विपरीत हो जाती है, जिसे कैटाबेटिक पवन के रूप में जाना जाता है जो ढाल से नीचे की ओर प्रवाहित होती है।

230. (B) एक अकेला क्लोरीन परमाणु ओजोन के कई हजार अणुओं को नष्ट कर सकता है।
समताप मंडल में ओजोन का विनाश एक उत्प्रेरक रासायनिक प्रक्रिया है, जिसका अर्थ यह है कि जो पदार्थ ओजोन को नष्ट करता है, वह स्वतः अभिक्रिया में व्यय नहीं होता। जब क्लोरोफ्लोरोकार्बन से विमुक्त क्लोरीन परमाणु ओजोन अणु से टकराता है, तो वह उसे विच्छेदित कर देता है और अंत में पुनः विमुक्त हो जाता है। यह विमुक्त क्लोरीन परमाणु बार-बार ओजोन के अन्य अणुओं पर आक्रमण करने के लिए उपलब्ध रहता है। इसी कारण रसायनों की सूक्ष्म मात्रा भी ओजोन परत को बहुत व्यापक और गंभीर क्षति पहुँचाने में सक्षम होती है।

231. (D) अभिवहनीय
वर्षण के मुख्य प्रकारों को वायु के ऊपर उठने या उत्थान के तंत्र के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इनमें संवहनीय, पर्वतीय और वाताग्र वर्षण सम्मिलित हैं। अभिवहनीय वर्षण जैसा कोई औपचारिक प्रकार नहीं है क्योंकि अभिवहन मुख्य रूप से ऊष्मा के क्षैतिज स्थानांतरण को दर्शाता है, न कि वायु के उस ऊर्ध्वाधर उत्थान को जो बादलों के निर्माण के लिए आवश्यक है। यद्यपि अभिवहन नमी लाने में सहायता कर सकता है, किंतु वास्तविक वर्षा के लिए किसी न किसी रूप में वायु का ऊपर उठना और शीतल होना अनिवार्य प्रक्रिया होती है।

232. (B) एक तापीय निम्न दाब जो गर्म उष्णकटिबंधीय जल पर बनता है।
उष्णकटिबंधीय चक्रवात एक अत्यंत तीव्र और संगठित निम्न दाब प्रणाली है जो केवल उष्ण उष्णकटिबंधीय महासागरों के ऊपर विकसित होती है। इसकी मुख्य पहचान यह है कि यह एक तापीय रूप से संचालित तूफान है जिसमें कोई वाताग्र प्रणाली नहीं होती। यह अपनी ऊर्जा उष्ण समुद्री जल से प्राप्त होने वाली संघनन की गुप्त ऊष्मा से लेता है। इनमें केंद्र में एक शांत चक्षु होती है और इसके चारों ओर बहुत तीव्र गति से घूमने वाली पवनें और भारी वर्षा का क्षेत्र होता है, जो इसे विनाशकारी बनाता है।

233. (A) P-4, Q-2, R-3, S-1
वायुमंडल के विभिन्न घटकों की अपनी विशिष्ट और अनिवार्य भूमिकाएँ होती हैं। जलवाष्प एक अत्यंत परिवर्तनशील गैस है जो बादलों और जल चक्र के लिए आधार प्रदान करती है। धूल के कण वायुमंडल में संघनन नाभिक निर्मित करते हैं, जिससे वर्षा संभव होती है। ओजोन गैस समताप मंडल में स्थित है और सूर्य के घातक पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करती है। कार्बन डाइऑक्साइड एक महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस है जो पृथ्वी से विसर्जित होने वाले दीर्घ-तरंग पार्थिव विकिरण को सोखकर वायुमंडल को उष्ण रखने में सहायता करती है, जिससे जीवन संभव है।

234. (A) शुरू होने की गति और अचानक होना।
सामान्य बाढ़ और अचानक आने वाली बाढ़ के मध्य का सर्वाधिक बड़ा अंतर उनके प्रारंभ होने के समय और गति में है। सामान्य बाढ़ मंद गति से आती है और दीर्घकाल तक बनी रह सकती है, जबकि अचानक आने वाली बाढ़ (फ्लैश फ्लड) अत्यधिक भारी वर्षा या बादल फटने के कारण बहुत कम समय में, अक्सर कुछ ही मिनटों में, विकराल रूप ले लेती है। इसकी आकस्मिक प्रकृति के कारण लोगों को चेतावनी देने और सुरक्षित स्थानों पर पहुँचने का समय बहुत कम मिलता है, जो इसे और अधिक घातक बनाता है।

235. (D) सूर्य की लंबवत किरणों का मौसमी प्रवास।
समताप रेखाओं का उत्तर और दक्षिण की ओर होने वाला वार्षिक संचलन मुख्य रूप से सूर्य की लंबवत किरणों के मौसमी विस्थापन का परिणाम है। जैसे-जैसे पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और अपनी धुरी पर झुकी होती है, अधिकतम सूर्यातप का क्षेत्र कर्क और मकर रेखा के मध्य परिवर्तित होता रहता है। इसके कारण महाद्वीपों और महासागरों के ऊपर के तापीय बेल्ट भी खिसकते हैं। ग्रीष्म ऋतु में समताप रेखाएं ध्रुवों की ओर और शीत ऋतु में भूमध्य रेखा की ओर खिसकती हैं, जो पृथ्वी के तापीय प्रतिरूप की मौसमी गतिकी को दर्शाती हैं।

NODIA

वाला कोरिओलिस बल और अक्षांशीय तापन ही वैश्विक वायु प्रणालियों के मुख्य चालक हैं।

254. (D) कृषि संबंधी सूखा
कृषि संबंधी सूखा एक विशिष्ट स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब मृदा की नमी फसल की स्वस्थ वृद्धि के लिए आवश्यक न्यूनतम स्तर से कम हो जाती है। यह प्रत्यक्ष रूप से कृषि और पौधों की उत्पादकता को प्रभावित करता है। यद्यपि इसका मूल कारण वर्षा की न्यूनता हो सकता है, किंतु यह मृदा के प्रकार, फसल की अवस्था और वाष्पीकरण की दर पर भी निर्भर करता है। कृषि सूखा कृषकों की आय और खाद्य सुरक्षा के लिए सर्वाधिक बड़ा संकट है, क्योंकि यह फसल के विनाश का मुख्य कारण बनता है जो चुनौतीपूर्ण है।

255. (D) 1, 2 और 3
वाताग्र प्रणालियों की विशेषताएं उनके निर्माण की प्रक्रिया पर निर्भर करती हैं। शीत वाताग्र का ढाल सामान्यतः उष्ण वाताग्र की तुलना में अधिक तीव्र होता है, जिससे मौसम में परिवर्तन अधिक हिंसक और अचानक होता है। इसके विपरीत, उष्ण वाताग्र के साथ होने वाली वर्षा अधिक व्यापक और कम तीव्र होती है क्योंकि उष्ण वायु मंद गति से शीतल वायु के ऊपर चढ़ती है। किसी स्थान से उष्ण वाताग्र के गुजर जाने के पश्चात तापमान में सामान्यतः वृद्धि देखी जाती है। ये समस्त प्रक्रियाएं मध्य-अक्षांशों के मौसम चक्र को नियंत्रित करती हैं।

256. (B) क्षोभमंडल
क्षोभमंडल वायुमंडल की सर्वाधिक निचली और सर्वाधिक सघन परत है, जिसमें कुल वायुमंडलीय द्रव्यमान का लगभग 75 से 80 प्रतिशत भाग समाहित होता है। वायुमंडल में विद्यमान लगभग समस्त जलवाष्प और धूल के कण भी इसी परत में पाए जाते हैं। गुरुत्वाकर्षण बल के कारण वायु के अणु धरातल के समीप अधिक सघन होते हैं, जिससे यहाँ दबाव अधिकतम होता है। ऊँचाई बढ़ने के साथ वायु विरल होती जाती है। यही वह परत है जहाँ जीवन के लिए आवश्यक ऑक्सीजन का संकेंद्रण सर्वाधिक और प्रभावी रुप में पाया जाता है जो अनिवार्य है।

257. (B) दबाव
समदाब रेखा मानचित्र पर खींची गई वह काल्पनिक रेखा है जो उन समस्त स्थानों को जोड़ती है जहाँ का समुद्र तल पर वायुमंडलीय दबाव समान होता है। इन रेखाओं का विश्लेषण मौसम विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये उच्च और निम्न वायुदाब प्रणालियों की पहचान करने में सहायता करती हैं। समदाब रेखाओं का प्रतिरूप ही पवनों की दिशा और उनके वेग को निर्धारित करता है। जहाँ ये रेखाएं एक-दूसरे के अत्यंत समीप होती हैं, वहाँ तीव्र पवनें और चक्रवातीय स्थितियाँ देखी जाती हैं, जो मौसम के व्यवहार को समझने का मुख्य आधार हैं।

258. (A) प्रेक्षित वनस्पति और तापमान एवं वर्षण के साथ उसका संबंध।
कोपेन-गीजर जलवायु वर्गीकरण एक आनुभविक प्रणाली है जो इस विचार पर आधारित है कि प्राकृतिक वनस्पति जलवायु का सर्वोत्तम प्रतिबिंब होती है। कोपेन ने वनस्पति के वितरण और तापमान व वर्षा के आंकड़ों के मध्य सांख्यिकीय संबंध स्थापित किया। उन्होंने विशिष्ट अक्षरों का उपयोग करके जलवायु के विभिन्न समूहों को परिभाषित किया। यह प्रणाली आज भी विश्व भर में सर्वाधिक प्रयुक्त की जाती है क्योंकि यह प्रेक्षित आंकड़ों पर आधारित है और क्षेत्रीय जलवायु की पहचान करने के लिए एक सरल किंतु अत्यंत प्रभावी वैज्ञानिक ढांचा प्रदान करती है।

259. (B) मौसम में अल्पकालिक वायुमंडलीय स्थितियाँ शामिल होती हैं, जबकि जलवायु दीर्घकालिक होती है।
मौसम और जलवायु के मध्य मुख्य अंतर समय की अवधि का है। मौसम वायुमंडल की वह तात्कालिक स्थिति है जो कुछ घंटों या दिनों में परिवर्तित हो सकती है, जैसे वर्तमान तापमान या वर्षा। इसके विपरीत, जलवायु किसी क्षेत्र की मौसम संबंधी स्थितियों का दीर्घकालिक औसत है, जिसे सामान्यतः 30 वर्षों के आंकड़ों के आधार पर मापा जाता है। मौसम जहाँ क्षणभंगुर और परिवर्तनशील है, वहीं जलवायु एक अधिक स्थिर और व्यापक अवधारणा है जो किसी स्थान की सामान्य पर्यावरणीय विशेषताओं का वर्णन करती है और नियोजन में अत्यंत सहायक होती है।

260. (D) रात के दौरान भूमि से समुद्र की ओर।
स्थल समीर एक स्थानीय पवन है जो रात्रि के समय तटीय क्षेत्रों में चलती है। सूर्यास्त के पश्चात, भूमि समुद्र की तुलना में बहुत तीव्रता से शीतल हो जाती है, जिससे भूमि पर उच्च वायुदाब निर्मित हो जाता है। समुद्र का जल अभी भी तुलनात्मक रूप से उष्ण रहता है, जहाँ निम्न दाब बना होता है। इसके परिणामस्वरूप, पवन भूमि से समुद्र की ओर बहने लगती है। यह प्रक्रिया समुद्र समीर के ठीक विपरीत है और तटीय क्षेत्रों में रात्रि के तापमान को संतुलित रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो स्थानीय जलवायु हेतु आवश्यक है।

261. (C) एक पूरी तरह से संरोधित वाताग्र और तूफान का समाप्त होना।
शीतोष्ण चक्रवात की अंतिम अवस्था संरोधन की होती है, जिसमें तीव्रता से चलने वाला शीत वाताग्र उष्ण वाताग्र को पूर्णतः आच्छादित कर लेता है। इस प्रक्रिया में उष्ण वायु राशि धरातल से पूर्णतः ऊपर उठा दी जाती है और शीतल वायु राशियाँ आपस में मिल जाती हैं। इसके कारण चक्रवात की ऊर्जा का स्रोत, जो कि वायु राशियों के मध्य का तापीय अंतर था, समाप्त हो जाता है। धीरे-धीरे वायुदाब का केंद्र भरने लगता है और पवनें शांत हो जाती हैं। यह अवस्था चक्रवात के पूर्ण विनाश और मौसम के सामान्य होने को स्पष्ट करती है।

262. (B) इससे वैश्विक ग्लेशियर पिघलते हैं और समुद्र के स्तर में वृद्धि होती है।
भूमंडलीय तापन का एक प्रमुख और संकटपूर्ण परिणाम वैश्विक स्तर पर हिमनदों का पिघलना और उसके कारण समुद्र के जल स्तर में होने वाली निरंतर वृद्धि है। यह कथन सत्य है, किंतु विकल्प (D) त्रुटिपूर्ण है क्योंकि तापन का प्रभाव पूरे ग्रह पर एक समान नहीं होता है; कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा तो कुछ

NODIA

में भीषण सूखा पड़ सकता है। यह तापन मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों के कारण बढ़ी हुई ग्रीनहाउस गैसों का परिणाम है। यह जलवायु तंत्र में असंतुलन उत्पन्न कर रहा है जो भविष्य के लिए अत्यंत चिंताजनक है।

263. (D) एक निम्न-अक्षांश वाला मरुस्थल या महाद्वीप
महाद्वीपीय उष्णकटिबंधीय या 'cT' वायु राशि का उद्गम स्थल निम्न अक्षांशों पर स्थित विशाल और शुष्क भूभाग होते हैं, जैसे सहारा मरुस्थल या मध्य ऑस्ट्रेलिया। चूंकि इनका निर्माण स्थल के ऊपर होता है, इसलिए ये पवनें अत्यंत शुष्क होती हैं, और उष्णकटिबंधीय अक्षांशों में होने के कारण ये अत्यधिक उष्ण भी होती हैं। ये वायु राशियाँ ग्रीष्म ऋतु में विकसित होती हैं और जब ये अन्य क्षेत्रों की ओर बढ़ती हैं, तो वे अपने साथ कड़ाके की उष्णता और धूल भरी हवाएं लाती हैं, जिससे जल संकट की संभावना बढ़ सकती है।

264. (A) पश्चिम से पूर्व
पछुआ पवनें वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का एक प्रमुख भाग हैं जो दोनों गोलार्द्धों में 30 से 60 डिग्री अक्षांशों के मध्य बहती हैं। इन पवनों की सामान्य दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर होती है। इनका निर्माण उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटियों से उपध्रुवीय निम्न दाब पेटियों की ओर वायु के संचलन के कारण होता है, जिसे कोरिओलिस बल विक्षेपित कर देता है। ये पवनें मध्य-अक्षांशों के मौसम को नियंत्रित करती हैं और चक्रवातों को पूर्व की ओर ले जाने के लिए उत्तरदायी होती हैं, जो वर्षा वितरण में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

265. (C) व्युत्क्रमण प्रदूषकों को रोक लेता है, जिससे धुंध का निर्माण होता है।
तापमान व्युत्क्रमण वायुमंडल में एक स्थिर परत का निर्माण करता है जहाँ शीतल और भारी वायु नीचे तथा उष्ण व हल्की वायु ऊपर होती है। यह संरचना धरातल से उठने वाले धुएँ और प्रदूषकों के ऊर्ध्वाधर प्रसार को अवरुद्ध कर देती है। प्रदूषक इसी निचली शीतल परत में फंस जाते हैं और वातावरण में नमी के साथ मिलकर विषाक्त धुंध या स्मॉग का निर्माण करते हैं। यह स्थिति शीत ऋतु में शांत रातों के दौरान अक्सर देखी जाती है, जो नगरों में वायु प्रदूषण को खतरनाक स्तर तक बढ़ा देती है और दृश्यता न्यून करती है।

266. (A) 2, 1, 4, 3
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में अक्षरों का क्रम अक्षांशों के साथ तापमान की भिन्नता को दर्शाता है। भूमध्य रेखा से प्रारंभ करने पर सर्वप्रथम 'A' (उष्णकटिबंधीय) जलवायु आती है। इसके पश्चात मध्यम तापमान वाली 'C' (मध्यतापीय) जलवायु का क्षेत्र आता है। ध्रुवों की ओर बढ़ने पर और भी शीतल 'D' (सूक्ष्मतापीय) जलवायु पाई जाती है। अंत में, ध्रुवीय क्षेत्रों में 'E' जलवायु स्थित होती है जहाँ अत्यधिक शीत रहती है। यह क्रमिक व्यवस्था पृथ्वी के विभिन्न अक्षांशीय तापीय पेटियों को वैज्ञानिक रूप से वर्गीकृत करने में सहायक है।

267. (D) असामान्य रूप से ठंडा
ला नीना की घटना के दौरान, मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के सतही जल का तापमान सामान्य की तुलना में असामान्य रूप से शीतल हो जाता है। यह स्थिति तब निर्मित होती है जब प्रशांत महासागर के ऊपर चलने वाली व्यापारिक पवनें बहुत अधिक शक्तिशाली हो जाती हैं और उष्ण सतही जल को तीव्रता से पश्चिम की ओर धकेलती हैं। इसके परिणामस्वरूप, दक्षिण अमेरिका के तट पर गहरे समुद्र का शीतल जल ऊपर आने लगता है। यह घटना वैश्विक मौसम चक्र को प्रभावित करती है और अक्सर एशिया व ऑस्ट्रेलिया में अत्यधिक वर्षा का कारण बनती है।

268. (B) भूमध्य रेखा से ध्रुवों तक ऊष्मा पहुँचाना।
वायुमंडल के सामान्य परिसंचरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्राथमिक कार्य पृथ्वी की सतह पर ऊर्जा का पुनर्वितरण करना है। चूंकि भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में सौर ऊर्जा का अधिशेष होता है और ध्रुवों पर ऊर्जा की न्यूनता रहती है, इसलिए प्रकृति इस तापीय असंतुलन को संतुलित करने का प्रयास करती है। पवनों और महासागरीय धाराओं के माध्यम से अतिरिक्त ऊष्मा को निरंतर भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर स्थानांतरित किया जाता है। यह वैश्विक परिसंचरण तंत्र ही पृथ्वी के तापमान को संतुलित रखने और जीवन के लिए अनुकूल जलवायु बनाए रखने में सक्षम है।

269. (C) जलवाष्प के संघनित होने पर मुक्त होने वाली गुप्त ऊष्मा।
तड़ित झंझा के विकास और उसकी तीव्रता के लिए मुख्य ऊर्जा स्रोत संघनन की गुप्त ऊष्मा है। जब उष्ण और आर्द्र वायु ऊपर उठती है और शीतल होती है, तो उसमें विद्यमान जलवाष्प जल की बूंदों में परिवर्तित होने लगती है। इस प्रक्रिया के दौरान बड़ी मात्रा में ऊष्मा ऊर्जा विमुक्त होती है, जो आसपास की वायु को और अधिक उष्ण करती है। यह अतिरिक्त उष्णता वायु को और भी तीव्रता से ऊपर धकेलती है, जिससे तूफान शक्तिशाली हो जाता है। यह गुप्त ऊष्मा ही तड़ित झंझा को उसका विनाशकारी स्वरूप और ऊर्जा प्रदान करती है।

270. (A) केवल कथन I
पृथ्वी के ऊष्मा बजट का मूल सिद्धांत यह है कि वैश्विक और वार्षिक औसत पर, आगामी सौर ऊर्जा और विसर्जित पार्थिव ऊर्जा बराबर होती है। हालांकि, यह संतुलन क्षेत्रीय स्तर पर प्रत्येक समय समान नहीं रहता। भूमध्य रेखा के समीप ऊर्जा का अधिशेष होता है, जबकि ध्रुवों पर ऊर्जा की शुद्ध हानि होती है। इस स्थानीय असंतुलन को दूर करने के लिए ही वायुमंडलीय पवनों और महासागरीय धाराओं द्वारा ऊर्जा का स्थानांतरण किया जाता है। वैश्विक स्तर पर यह संतुलन ही पृथ्वी के औसत तापमान को स्थिर बनाए रखने में मुख्य भूमिका निभाता है।

271. (A) वर्षण की मात्रा
मानचित्र पर समवर्षा रेखा एक ऐसी काल्पनिक रेखा है जो उन समस्त स्थानों को जोड़ती है जहाँ एक निश्चित समयावधि के दौरान होने वाली कुल वर्षा की मात्रा समान होती है। यह मौसम विज्ञानियों और जल विज्ञानियों को वर्षा के क्षेत्रीय वितरण और तीव्रता को समझने में बहुत सहायता करती है। समवर्षा

Downloaded from www.pdf.tube

रेखाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि किन क्षेत्रों में वर्षा की अधिकता है और कहाँ सूखे की स्थिति निर्मित हो सकती है। यह कृषि नियोजन, बाढ़ नियंत्रण और जल संसाधनों के उचित प्रबंधन के लिए एक अनिवार्य भौगोलिक उपकरण है।

272. (B) उष्ण वाताग्र और शीत वाताग्र के बीच।
शीतोष्ण चक्रवात की संरचना में उष्ण क्षेत्र वह भाग होता है जो आगे चल रहे उष्ण वाताग्र और पीछे से आ रहे शीत वाताग्र के मध्य स्थित होता है। इस क्षेत्र में उष्ण और आर्द्र उष्णकटिबंधीय वायु का प्रभुत्व होता है। यहाँ का मौसम सामान्यतः सौम्य और नम होता है, जिसमें आकाश में बादल छाए रहते हैं। जैसे ही पीछे वाला शीत वाताग्र इस क्षेत्र में प्रवेश करता है, यह उष्ण वायु ऊपर उठने लगती है और तीव्र मौसम परिवर्तन प्रारंभ होता है। यह क्षेत्र चक्रवात के गतिशील जीवन चक्र का एक अभिन्न और महत्वपूर्ण भाग है।

273. (A) प्रेक्षित तापमान और वर्षण डेटा।
व्लादिमीर कोपेन द्वारा विकसित विश्व जलवायु वर्गीकरण एक शुद्ध रूप से आनुभविक प्रणाली है। उन्होंने जलवायु को वर्गीकृत करने के लिए तापमान और वर्षण के वास्तविक प्रेक्षित मासिक और वार्षिक आंकड़ों को अपना आधार बनाया। कोपेन का विश्वास था कि किसी भी स्थान की वनस्पति वहाँ की जलवायु का सर्वाधिक सटीक और जीवंत प्रतिबिंब होती है। अतः उन्होंने वनस्पति क्षेत्रों की सीमाओं का उपयोग करके अपने तापीय और वर्षा संबंधी मानकों को निर्धारित किया। उनकी यह प्रणाली अपनी सरलता और वैज्ञानिक शुद्धता के कारण आज भी वैश्विक स्तर पर स्वीकृत है।

274. (A) यह शब्द उनके स्थिर पथ या मार्ग को संदर्भित करता है।
व्यापारिक पवनों का नाम अंग्रेजी शब्द 'ट्रेड' से प्रेरित है, जिसका मूल अर्थ 'मार्ग' या 'पथ' होता है। यह शब्द इन पवनों की अत्यंत नियमित दिशा और स्थिर पथ को दर्शाता है जिसके लिए ये विश्व भर में विख्यात हैं। ऐतिहासिक काल में, जब समुद्री व्यापार पाल वाले जहाजों पर आश्रित था, तब इन पवनों की स्थिरता ने नाविकों को दीर्घ समुद्री यात्राओं में बहुत सहायता प्रदान की थी। चूंकि ये पवनें व्यापारिक मार्गों को सुगम बनाती थीं, इसलिए कालांतर में इनका नाम 'व्यापारिक पवनें' के रूप में प्रचलित हो गया जो अत्यंत सार्थक है।

275. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बाढ़ और सूखा दोनों ही जल चक्र की चरम और विपरीत परिस्थितियों को दर्शाते हैं। बाढ़ की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब किसी क्षेत्र में जल की आपूर्ति उसकी निकासी क्षमता से बहुत अधिक हो जाती है, जिससे भूमि जलमग्न हो जाती है। इसके विपरीत, सूखा वर्षा की दीर्घकालिक और गंभीर न्यूनता का परिणाम है, जिससे जल के स्रोतों में भारी गिरावट आती है। ये दोनों आपदाएं प्रकृति के संतुलन में आने वाले विक्षोभ का परिणाम हैं और मानव जीवन व पर्यावरण के लिए एक समान रूप से विनाशकारी और चुनौतीपूर्ण सिद्ध होती हैं।

276. (D) पछुआ पवनें
पछुआ पवनें एक भूमंडलीय पवन प्रणाली है, न कि स्थानीय पवन। ये दोनों गोलार्द्धों में 30 से 60 डिग्री अक्षांशों के मध्य एक विशाल क्षेत्र में निरंतर प्रवाहित होती हैं और वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का एक प्रमुख भाग हैं। इसके विपरीत, फान, चिनूक और मिस्ट्रल स्थानीय पवनें हैं जो केवल विशिष्ट भौगोलिक स्थानों, जैसे कि पर्वत श्रृंखलाओं या घाटियों के समीप, और विशेष परिस्थितियों में ही उत्पन्न होती हैं। स्थानीय पवनें लघु क्षेत्रों के मौसम को प्रभावित करती हैं, जबकि पछुआ पवनें वैश्विक जलवायु प्रतिरूप को नियंत्रित करती हैं।

277. (C) ग्रीनहाउस प्रभाव
ग्रीनहाउस प्रभाव वह प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा वायुमंडल में विद्यमान कुछ गैसें, जैसे कार्बन डाइऑक्साइड और जलवाष्प, पृथ्वी की सतह से विसर्जित होने वाले दीर्घ-तरंग अवरक्त विकिरण को अवशोषित करती हैं। ये गैसें इस ऊष्मा को वापस धरातल की ओर विकीर्ण करती हैं, जिससे निचला वायुमंडल उष्ण बना रहता है। यह प्रक्रिया पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाने के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह तापमान को एक अनुकूल स्तर पर बनाए रखती है। इसके अभाव में पृथ्वी एक बहुत ही शीतल और निर्जन ग्रह बन जाती जहाँ जीवन का विकास असंभव होता।

NODIA

278. (B) मौसम विज्ञान
वायुमंडल और उसकी विभिन्न घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन मौसम विज्ञान कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य वायुमंडलीय प्रक्रियाओं को समझना और उनके आधार पर आगामी मौसम का सटीक पूर्वानुमान लगाना है। इसमें तापमान, वायुदाब, आर्द्रता और पवन प्रणालियों जैसे विभिन्न तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। मौसम विज्ञान न केवल दैनिक जीवन की गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विमानन, कृषि और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों के लिए भी अनिवार्य सूचना प्रदान करता है। यह एक गतिशील विज्ञान है जो मानव सुरक्षा में बड़ी भूमिका निभाता है।

279. (D) बड़े पैमाने पर हल्की वर्षा और स्तरी प्रकार के बादल।
उष्ण वाताग्र का निर्माण तब होता है जब एक उष्ण और हल्की वायु राशि धीरे-धीरे एक शीतल और सघन वायु राशि के ऊपर चढ़ती है। चूंकि इसकी गति मंद होती है और ढाल बहुत धीमा होता है, इसलिए यह एक विस्तृत क्षेत्र में बादलों का निर्माण करती है। इसकी मुख्य विशेषता वर्षा स्तरी जैसे बादलों से होने वाली मध्यम और निरंतर वर्षा है जो दीर्घकाल तक बनी रह सकती है। उष्ण वाताग्र के आगमन से मौसम में होने वाले परिवर्तन शीत वाताग्र की तुलना में अधिक धीरे-धीरे और कम हिंसक होते हैं जो कृषि हेतु लाभदायक है।

280. (A) वायुमंडल का सबसे ठंडा बिंदु।
मध्यमंडल वायुमंडल की वह परत है जो समताप मंडल के ऊपर स्थित है और इसकी सर्वाधिक प्रमुख विशेषता इसका अत्यधिक न्यून तापमान है। लगभग 80 किलोमीटर की ऊँचाई पर स्थित 'मध्यसीमा' वायुमंडल का सर्वाधिक शीतल बिंदु माना जाता है, जहाँ तापमान गिरकर -90 डिग्री सेल्सियस तक

(A) ये गोलाकार या अंडाकार प्रवाल भित्तियाँ हैं जो एक केंद्रीय लैगून को घेरती हैं।
(B) ये वे भित्तियाँ हैं जो सीधे किसी महाद्वीप या द्वीप के तट से जुड़ी होती हैं।
(C) ये रैखिक या अनियमित भित्तियाँ हैं जो एक गहरी लैगून द्वारा मुख्य भूमि से अलग होती हैं।
(D) ये विशेष रूप से उप-ध्रुवीय क्षेत्रों के ठंडे पानी में पाए जाते हैं।

11. महासागरीय निक्षेपों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. टेरिजेनस (भूमिज) निक्षेप भूमि के अपरदन से प्राप्त होते हैं।
2. बायोजेनस (जैविक) निक्षेप समुद्री जीवों के कठोर भागों से बने होते हैं।
3. हाइड्रोजेनस (जलजनित) निक्षेप समुद्री जल से खनिजों के अवक्षेपण द्वारा बनते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी प्रमुख महासागरीय संसाधन माने जाते हैं?
(A) मैंगनीज नोड्यूल्स
(B) लैटेराइट मिट्टी
(C) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
(D) ज्वारीय शक्ति

13. महासागरीय धारा और उसकी विशेषता का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) लैब्राडोर धारा - गर्म धारा
(B) गल्फ स्ट्रीम - ठंडी धारा
(C) बेंग्वेला धारा - ठंडी धारा
(D) क्यूरोशियो धारा - ठंडी धारा

14. तट से खुले महासागर की ओर निम्नलिखित महासागरीय अधस्तल उच्चावच लक्षणों को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. महाद्वीपीय मग्नतट;
2. गंभीर सागरीय मैदान;
3. महाद्वीपीय मग्नढाल;
4. महाद्वीपीय उत्थान

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 4, 3, 1, 2
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 1, 3, 4, 2

15. 'S-आकृति' किस महासागर में मध्य-महासागरीय कटक की एक विशिष्ट विशेषता है?
(A) अटलांटिक महासागर
(B) हिंद महासागर
(C) प्रशांत महासागर
(D) दक्षिणी महासागर

16. महासागरीय भूगोल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रशांत महासागर की विशेषता इसके किनारों पर कई गहरी गर्तों की उपस्थिति है।
कथन II: अटलांटिक की तुलना में हिंद महासागर में मध्य-महासागरीय कटक अधिक जटिल और खंडित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

17. महाद्वीपीय ढाल और गहरे महासागर तल के बीच के क्रमिक संक्रमण क्षेत्र को किस रूप में जाना जाता है?
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) महाद्वीपीय उत्थान
(C) गंभीर सागरीय मैदान
(D) महासागरीय गर्त

18. महासागरीय जल की लवणता के संबंध में कौन-सा कथन गलत है?
(A) सभी महासागरों में सतह से तल तक लवणता एक समान होती है।
(B) उच्च वाष्पीकरण वाले क्षेत्रों में लवणता अधिक होती है।
(C) बड़ी नदियों के मुहानों के पास लवणता कम होती है।
(D) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की तुलना में भूमध्य रेखा पर लवणता सामान्यतः कम होती है।

19. एक ज्वालामुखी द्वीप के धीरे-धीरे धंसने के माध्यम से प्रवाल भित्तियों की उत्पत्ति का प्रस्ताव सबसे पहले किस सिद्धांत में दिया गया था?
(A) डेली का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
(B) मरे का समाधान सिद्धांत
(C) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
(D) अगासीज़ का स्थिर-अवस्था सिद्धांत

20. गहरे समुद्र के अवसादों का अध्ययन करने वाले एक समुद्री भूविज्ञानी को ब्रह्मांडीय धूल और उल्कापिंडों के कणों से भरपूर एक परत मिलती है। इस परत को किस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) टेरिजेनस निक्षेप
(B) बायोजेनस निक्षेप
(C) हाइड्रोजेनस निक्षेप
(D) कॉस्मोजेनस निक्षेप

Click Here to Buy book on Amazon

हैं, तो वे उस स्थान के तापमान को बढ़ा देती हैं। संवहन के विपरीत, जो ऊर्ध्वाधर संचलन पर केंद्रित है, अभिवहन पूर्णतः पवनों की क्षैतिज गतिकी से संबद्ध है और क्षेत्रीय मौसम प्रणालियों के लिए अत्यंत अनिवार्य प्रक्रिया है।

290. (A) जब दो अलग-अलग वायु राशियाँ मिलती हैं, तो वे तुरंत और पूरी तरह से मिश्रित हो जाती हैं।
वायु राशियों के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है क्योंकि जब दो भिन्न तापमान और आर्द्रता वाली वायु राशियाँ मिलती हैं, तो वे अपने घनत्व के अंतर के कारण तुरंत आपस में मिश्रित नहीं होती हैं। इसके स्थान पर, वे एक संक्रमण सीमा निर्मित करती हैं जिसे 'वाताग्र' कहा जाता है। वायु राशि वायु का एक विशाल पुंज है जिसमें क्षैतिज रूप से गुणों की समानता होती है। इनका वर्गीकरण उनके स्रोत क्षेत्र के अक्षांश और धरातल की प्रकृति (समुद्री या महाद्वीपीय) के आधार पर किया जाता है, जो मौसम के पूर्वानुमान में बहुत सहायक होता है।

291. (C) कृषि और जल प्रबंधन।
सी.डब्ल्यू. थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य कृषि और जल संसाधनों के अधिक कुशल और वैज्ञानिक प्रबंधन के लिए एक आधार प्रदान करना था। उनका तंत्र इस बात पर केंद्रित था कि किसी क्षेत्र में पौधों की वृद्धि के लिए वास्तविक नमी कितनी उपलब्ध है। वाष्पोत्सर्जन और जल संतुलन की उनकी अवधारणाओं ने यह समझने में सहायता की कि सिंचाई की आवश्यकता कब और कितनी है। यह वर्गीकरण केवल मौसम के आंकड़ों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने जलवायु को भूमि की उत्पादकता और पारिस्थितिकी से जोड़कर एक नवीन और प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान किया।

292. (D) वामावर्त और अंदर की ओर।
उत्तरी गोलार्ध में, किसी भी निम्न दाब प्रणाली या चक्रवात के चारों ओर पवनें वामावर्त (घड़ी की सुई की विपरीत दिशा) में घूमती हैं और केंद्र की ओर प्रवाहित होती हैं। ऐसा वायुदाब प्रवणता बल और कोरिओलिस प्रभाव के सम्मिलित परिणाम के कारण होता है। जैसे ही वायु निम्न दाब के केंद्र की ओर अग्रसर होती है, वह ऊपर की ओर उठती है, जिससे बादलों का निर्माण और वर्षा होती है। यह चक्रीय संचलन ही चक्रवातों को उनकी विशिष्ट पहचान और शक्ति प्रदान करता है जो मौसम में व्यापक परिवर्तन लाने के लिए उत्तरदायी है।

293. (C) पृथ्वी की सतह के पास प्रदूषकों का रुकना।
एक शक्तिशाली तापमान व्युत्क्रमण की स्थिति में वायुमंडल अत्यधिक स्थिर हो जाता है, जिससे वायु का ऊर्ध्वाधर मिश्रण पूर्णतः बाधित हो जाता है। जब उष्ण वायु की परत शीतल और भारी वायु के ऊपर आवरण की भाँति स्थित होती है, तो धरातल के समीप से उठने वाली धूल, धुआँ और अन्य प्रदूषक ऊपर नहीं जा पाते। वे धरातल के निकट ही सघन रूप में संचित हो जाते हैं, जिससे दृश्यता न्यून हो जाती है और गंभीर वायु प्रदूषण की स्थिति निर्मित होती है। यह शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा संकट और चुनौती है।

294. (B) उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें अभिसरित होती हैं।
अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र भूमध्य रेखा के समीप स्थित वह निम्न दाब की पेटी है जहाँ दोनों गोलार्द्धों की व्यापारिक पवनें आपस में मिलती हैं। इस क्षेत्र में तीव्र सौर तापन के कारण वायु उष्ण होकर ऊपर की ओर उठती है, जिससे यहाँ पवनें शांत या बहुत हल्की होती हैं। ITCZ का स्थान सूर्य की आभासी गति के साथ उत्तर और दक्षिण की ओर खिसकता रहता है, जो मानसूनी पवनों और उष्णकटिबंधीय वर्षा के वितरण को नियंत्रित करने वाला मुख्य कारक है। यह वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण का एक आधारभूत भाग है।

295. (D) भिन्न वायु राशि घनत्वों के बीच का संक्रमण क्षेत्र।
वाताग्र को सर्वाधिक सटीक रूप से दो ऐसी वायु राशियों के मध्य के संक्रमण या सीमा क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनके घनत्व, तापमान और आर्द्रता में स्पष्ट अंतर होता है। यह एक ढालू सतह होती है जहाँ उष्ण और शीतल वायु आपस में टकराती हैं। चूंकि भिन्न घनत्व वाली वायु राशियाँ तुरंत मिश्रित नहीं होतीं, इसलिए वे एक सीमा निर्मित करती हैं जहाँ प्रायः तीव्र वायुमंडलीय विक्षोभ, बादलों का निर्माण और वर्षण देखा जाता है। वाताग्र ही मध्य-अक्षांशों में मौसम प्रणालियों के विकास और उनके संचलन का मुख्य आधार होते हैं।

NODIA

296. (A) कथन A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समताप मंडल वायुमंडल की एक अत्यंत स्थिर परत मानी जाती है क्योंकि इसमें ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान घटने के स्थान पर बढ़ने लगता है। यह तापीय संरचना ऊर्ध्वाधर वायु संचलन और संवहन की प्रक्रिया को पूर्णतः बाधित कर देती है, जिससे मौसम संबंधी उथल-पुथल यहाँ नहीं पहुँच पाती। तापमान का यह बढ़ना ओजोन परत द्वारा पराबैंगनी विकिरण के अवशोषण के कारण होता है। इसी स्थिरता के कारण, इस परत में धूल के कण और प्रदूषक दीर्घकाल तक बने रह सकते हैं, जो विमानन के लिए आदर्श और सुरक्षित स्थितियाँ प्रदान करती है।

297. (A) प्रमुख वायुदाब पेटियाँ और भूमंडलीय पवनें।
सामान्य वायुमंडलीय परिसंचरण का तीन-कोशिका मॉडल पृथ्वी पर प्रमुख वायुदाब पेटियों और भूमंडलीय पवनों के वैश्विक वितरण को समझने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। यह मॉडल हेडली, फेरेल और ध्रुवीय कोशिकाओं के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि कैसे व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें और ध्रुवीय पूर्वी पवनें नियमित रूप से प्रवाहित होती हैं। यह प्रणाली पृथ्वी की सतह पर ऊष्मा और नमी के संतुलित वितरण को सुनिश्चित करती है। यह वैश्विक जलवायु के मूलभूत ढांचे और मौसम के दीर्घकालिक प्रतिरूपों को समझाने में सहायक है।

298. (A) परिपक्व अवस्था
शीतोष्ण चक्रवात अपनी परिपक्व अवस्था में सर्वाधिक शक्तिशाली और सुव्यवस्थित होता है। इस चरण में, चक्रवात के भीतर स्पष्ट रूप से विभाजित उष्ण और शीत क्षेत्र निर्मित

पहुँच सकता है। यहाँ वायु का घनत्व बहुत कम होता है और तापन का कोई प्रत्यक्ष स्रोत नहीं होता। इसी परत में अंतरिक्ष से आने वाले उल्कापिंड घर्षण के कारण जलकर नष्ट हो जाते हैं, जो पृथ्वी की रक्षा के लिए एक प्राकृतिक तंत्र के रूप में कार्य करता है।

281. (C) एल नीनो/ला नीना और दक्षिणी दोलन।
'एंज़ो' शब्द का पूर्ण रूप 'एल नीनो दक्षिणी दोलन' है, जो समुद्र और वायुमंडल के मध्य होने वाली एक बहुत ही जटिल और महत्वपूर्ण अंतःक्रिया है। इसमें एल नीनो और ला नीना समुद्री सतह के तापमान में होने वाले उतार-चढ़ाव को दर्शाते हैं, जबकि दक्षिणी दोलन उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के ऊपर वायुमंडलीय दबाव में होने वाले परिवर्तन को बताता है। ये दोनों प्रणालियाँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं और मिलकर वैश्विक स्तर पर वर्षा, तूफान और सूखे जैसी मौसम की चरम घटनाओं को नियंत्रित करने का कार्य करती हैं।

282. (A) बहुत शक्तिशाली आरोही वायु धाराओं के साथ एक तीव्र तड़ित झंझा।
भीषण ओलावृष्टि होने की सर्वाधिक संभावना तब होती है जब वायुमंडल अत्यधिक अस्थिर होता है और बहुत शक्तिशाली आरोही वायु धाराएं सक्रिय होती हैं। ये तीव्र धाराएं कपासी वर्षी बादलों के भीतर जल की बूंदों को बार-बार बहुत ऊँचाई पर स्थित शीतल क्षेत्रों में ले जाती हैं, जहाँ वे जमकर हिम के गोले बन जाते हैं। जितनी अधिक शक्तिशाली ये धाराएं होंगी, ओलों का आकार उतना ही बड़ा और उनका प्रभाव उतना ही विनाशकारी होगा। यह प्रक्रिया तीव्र संवहन और ऊर्जा के विशाल भंडार का परिणाम होती है जो संकटपूर्ण है।

283. (B) केवल 1 और 3
जलवायु वर्गीकरण के क्षेत्र में कोपेन और थॉर्नथवेट के दृष्टिकोण मौलिक रूप से पृथक हैं। कोपेन की प्रणाली आनुभविक है क्योंकि यह प्रेक्षित तापमान और वर्षण डेटा पर आधारित है। दूसरी ओर, थॉर्नथवेट ने अधिक वैज्ञानिक और गतिक दृष्टिकोण अपनाते हुए संभावित वाष्पोत्सर्जन की अवधारणा को अपने तंत्र का मुख्य आधार बनाया। उन्होंने जल संतुलन और पौधों की ऊर्जा आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित किया। यह पद्धति केवल आंकड़ों के स्थान पर जलवायु के कारणों और प्रभावों को समझने का एक अधिक परिष्कृत मार्ग प्रदान करती है।

284. (B) कार्बन डाइऑक्साइड
कार्बन डाइऑक्साइड को वर्तमान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानवजनित ग्रीनहाउस गैस माना जाता है। यद्यपि जलवाष्प प्राकृतिक रूप से सर्वाधिक प्रभावशाली है, किंतु मानवीय गतिविधियों जैसे जीवाश्म ईंधन का दहन, औद्योगिकीकरण और वनों की व्यापक कटाई के कारण CO_2 की सांद्रता में संकटपूर्ण वृद्धि हुई है। यह अतिरिक्त गैस पृथ्वी से विसर्जित होने वाले पार्थिव विकिरण को अत्यधिक मात्रा में अवरुद्ध करती है, जिससे वैश्विक तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसकी दीर्घकाल तक वायुमंडल में बने रहने की क्षमता इसे जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण बनाती है।

285. (C) उच्च दाब, नीचे उतरती वायु और शांत पवनें।
अश्व अक्षांश लगभग 30 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों के मध्य स्थित क्षेत्र हैं, जो उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटियों के केंद्र में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में ऊपरी वायुमंडल से वायु शीतल होकर नीचे की ओर बैठती है, जिससे धरातल पर दबाव बढ़ जाता है। नीचे उतरती वायु के कारण वातावरण बहुत स्थिर हो जाता है और बादल नहीं बन पाते, जिससे मौसम स्वच्छ और शुष्क रहता है। यहाँ धरातलीय पवनें बहुत हल्की और दिशाहीन होती हैं, जो ऐतिहासिक काल में समुद्री व्यापार हेतु एक बड़ी बाधा मानी जाती थीं।

286. (D) उष्णकटिबंधीय चक्रवात वाताग्रों से जुड़े नहीं होते हैं, जबकि शीतोष्ण चक्रवात होते हैं।
उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण चक्रवातों के मध्य सर्वाधिक बड़ा मौलिक अंतर उनकी संरचना और उत्पत्ति में है। शीतोष्ण चक्रवात सदैव दो विपरीत स्वभाव वाली वायु राशियों के मध्य एक वाताग्र के रूप में विकसित होते हैं और मध्य-अक्षांशों में पाए जाते हैं। इसके विपरीत, उष्णकटिबंधीय चक्रवात तापीय रूप से संचालित होते हैं और केवल उष्ण समुद्री सतहों पर बिना किसी वाताग्र के निर्मित होते हैं। इनकी ऊर्जा का स्रोत संघनन की गुप्त ऊष्मा है। यह अंतर इनके संचलन, आकार और इनके द्वारा लाए जाने वाले मौसम के प्रतिरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर देता है।

287. (A) पर्वतीय
वर्षा छाया प्रभाव पर्वतीय वर्षा की प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। जब आर्द्र वायु को किसी पर्वत श्रृंखला के ऊपर चढ़ने के लिए विवश किया जाता है, तो वह पवनमुखी ढाल पर संघनित होकर भारी वर्षा करती है। जब यही वायु दूसरी ओर पवनविमुख ढाल पर नीचे उतरती है, तो वह उष्ण और शुष्क हो जाती है क्योंकि उसकी नमी पूर्व में ही समाप्त हो चुकी होती है। इसके परिणामस्वरूप, पर्वत के इस पिछले भाग में बहुत कम वर्षा होती है, जिसे वैज्ञानिक रूप से 'वर्षा छाया क्षेत्र' के रूप में जाना जाता है जो शुष्क होता है।

288. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
विभिन्न जलवायु आपदाओं की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और कारण होते हैं। बाढ़ जल की एक विशाल मात्रा का आकस्मिक उमड़ना है जो शुष्क भूमि को जलमग्न कर देता है। सूखा जल की आपूर्ति में होने वाली दीर्घकालिक न्यूनता है जो कृषि और जनजीवन को प्रभावित करती है। लू असामान्य रूप से उच्च तापमान की एक लंबी अवधि है जो ग्रीष्म ऋतु में चलती है। शीत लहर सामान्य से बहुत न्यून तापमान की एक लंबी अवधि है जो शीत ऋतु में कड़ाके की ठंड और पाले का कारण बनती है। ये आपदाएं मौसम की चरम सीमाएं हैं जो चुनौतीपूर्ण हैं।

289. (A) ऊष्मा या अन्य वायुमंडलीय गुणों का क्षैतिज स्थानांतरण।
जलवायु विज्ञान में अभिवहन का तात्पर्य वायु की क्षैतिज गति के माध्यम से ऊष्मा, नमी या अन्य वायुमंडलीय गुणों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाले स्थानांतरण से है। यह वैश्विक तापमान के पुनर्वितरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, जब उष्ण पवनें शीतल क्षेत्रों की ओर बहती

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 04
समुद्र विज्ञान

1. निम्नलिखित में से किसे महाद्वीप के उथले और जलमग्न विस्तार के रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) महाद्वीपीय मग्नढाल
(B) महाद्वीपीय मग्नतट
(C) गंभीर सागरीय मैदान
(D) महासागरीय गर्त

2. 'चैलेंजर डीप' निम्नलिखित में से किस महासागर में स्थित है?
(A) प्रशांत महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) हिंद महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

3. महासागरीय तापमान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: महासागरीय जल का तापमान सामान्यतः भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर घटता जाता है।
कथन II: सतह से गहराई बढ़ने के साथ महासागरीय जल का तापमान सामान्यतः घटता जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

4. ज्वार-भाटा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) ज्वार-भाटा चंद्रमा और सूर्य द्वारा लगाए गए गुरुत्वाकर्षण बलों के कारण आते हैं।
(B) वृहद् ज्वार तब आते हैं जब सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में होते हैं।
(C) एक उच्च ज्वार और एक निम्न ज्वार के बीच का समय लगभग छह घंटे होता है।
(D) लघु ज्वार के परिणामस्वरूप उच्चतम उच्च ज्वार और निम्नतम निम्न ज्वार आते हैं।

5. सूची-I (महासागरीय धारा) को सूची-II (महासागर) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागरीय धारा)
P. अगुलहास धारा;
Q. क्यूरोशियो धारा;
R. गल्फ स्ट्रीम;
S. पेरू धारा
सूची-II (महासागर)
1. अटलांटिक महासागर;
2. प्रशांत महासागर;
3. हिंद महासागर
(A) P-3, Q-2, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-2
(C) P-3, Q-1, R-2, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-3

6. पेरू के तट से ऑस्ट्रेलिया की ओर जाने वाला एक जहाज महासागर में निरंतर पश्चिम की ओर धकेला जाता है। यह किस महासागरीय विशेषता के प्रभाव का उदाहरण है?
(A) महासागरीय ज्वार
(B) महासागरीय धाराएँ
(C) महासागरीय गर्त
(D) महासागरीय घनत्व में अंतर

7. गहरे समुद्र तल के विस्तृत, सपाट और अवसादों से ढके क्षेत्रों के लिए सबसे उपयुक्त शब्द है:
(A) महाद्वीपीय उत्थान
(B) समुद्री पर्वत
(C) मध्य-महासागरीय कटक
(D) गंभीर सागरीय मैदान

8. कथन (A): मध्य-अटलांटिक कटक अटलांटिक महासागर के तल की एक प्रमुख विशेषता है।
कारण (R): कटक पर होने वाले 'सागर अधस्तल प्रसरण' के कारण अटलांटिक महासागर चौड़ा हो रहा है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

9. लाल सागर जैसे उपोष्णकटिबंधीय महासागरीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली उच्च लवणता का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) वर्षण और नदी प्रवाह की उच्च दर
(B) वाष्पीकरण की कम दर और अधिक मेघाच्छन्नता
(C) वाष्पीकरण की उच्च दर का वर्षण से अधिक होना
(D) बड़ी मात्रा में ध्रुवीय समुद्री बर्फ का पिघलना

10. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन एटोल की विशिष्ट विशेषताओं की सही पहचान करता है?

NODIA

3. वृहद् ज्वार की विशेषता लघु ज्वार की तुलना में कम ज्वारीय सीमा होती है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

34. एक प्रवाल भित्ति जो एक गहरी लैगून द्वारा मुख्य भूमि या द्वीप के तट से अलग होती है, उसे किस रूप में वर्णित किया जाता है?
(A) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(B) तटीय प्रवाल भित्ति
(C) एटोल
(D) पैच रीफ

35. गहरे महासागर से सतह की ओर ठंडे और पोषक तत्वों से भरपूर जल की गति को किस रूप में जाना जाता है?
(A) डाउनवेलिंग
(B) अभिवहन
(C) अपवेलिंग
(D) संवहन

36. कथन (A): अटलांटिक महासागर में सबसे विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतट पाए जाते हैं।
कारण (R): अटलांटिक महासागर के किनारे काफी हद तक निष्क्रिय हैं, जहाँ प्रशांत की तुलना में विवर्तनिक गतिविधि कम है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

37. महासागरीय जल की औसत लवणता लगभग कितनी होती है?
(A) 25 प्रति हजार भाग
(B) 45 प्रति हजार भाग
(C) 35 प्रति हजार भाग
(D) 55 प्रति हजार भाग

38. निम्नलिखित में से कौन-सा महासागरीय जल के तापमान को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक नहीं है?
(A) अक्षांश
(B) महासागर की गहराई
(C) महासागरीय धाराएँ
(D) प्रचलित पवनें

39. महाद्वीपीय मग्नतट पर पाए जाने वाले रेत, कीचड़ और बजरी के निक्षेप, जो भूमि से प्राप्त होते हैं, किस रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं?
(A) बायोजेनस निक्षेप
(B) हाइड्रोजेनस निक्षेप
(C) पेलाजिक निक्षेप
(D) टेरिजेनस निक्षेप

40. निम्नलिखित में से कौन-सा हिंद महासागर के अधस्तल उच्चावच की एक महत्वपूर्ण विशेषता है?
(A) नाइन्टी ईस्ट रिज
(B) S-आकार की मध्य-महासागरीय कटक
(C) समुद्री पर्वतों और गाइओट की अनुपस्थिति
(D) विश्व का सबसे चौड़ा महाद्वीपीय मग्नतट

41. डार्विन के सिद्धांत के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा एक एटोल की उत्पत्ति का सही वर्णन करता है?
(A) एक नवनिर्मित ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर उथले पानी में एक तटीय प्रवाल भित्ति विकसित होती है।
(B) ध्रुवीय बर्फ की टोपियों के पिघलने के कारण समुद्र का स्तर धीरे-धीरे बढ़ने से एक अवरोधक भित्ति बनती है।
(C) एक धंसते हुए ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर एक तटीय भित्ति विकसित होती है, जो अंततः एक लैगून को घेर लेती है।
(D) गहरे उष्णकटिबंधीय जल में जलमग्न एक सपाट शीर्ष वाले तट पर प्रवाल बस्तियाँ ऊपर की ओर बढ़ती हैं।

42. समुद्री जल के घनत्व के बारे में कौन-सा कथन सही है?
(A) ठंडा और खारा जल, गर्म और ताजे जल की तुलना में अधिक सघन होता है।
(B) ठंडा और खारा जल, गर्म और ताजे जल की तुलना में कम सघन होता है।
(C) समुद्री जल का घनत्व केवल उसके तापमान से निर्धारित होता है।
(D) समुद्री जल का घनत्व केवल उसकी लवणता से निर्धारित होता है।

43. अटलांटिक महासागर में 'गल्फ स्ट्रीम' एक:
(A) दक्षिण की ओर बहने वाली ठंडी धारा है
(B) उत्तर की ओर बहने वाली ठंडी धारा है
(C) दक्षिण की ओर बहने वाली गर्म धारा है
(D) उत्तर की ओर बहने वाली गर्म धारा है

44. निम्नलिखित में से कौन-सा एक जैविक अवसाद है जो मुख्य रूप से जीवों के सिलिका-आधारित कवचों से बना होता है?
(A) कैल्केरियस ऊज़
(B) सिलीशियस ऊज़
(C) टेरोपोड ऊज़
(D) लाल मृत्तिका

45. ज्वार-उत्पादक बल किसका परिणाम है?
(A) केवल पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूर्णन।
(B) महासागरों के ऊपर वायुमंडलीय दबाव में परिवर्तन।
(C) गुरुत्वाकर्षण आकर्षण और अपकेंद्रीय बल के बीच का

Click Here to Buy book on Amazon

21. 'पिक्नोकलाइन' शब्द महासागर की उस परत को संदर्भित करता है जहाँ:
(A) गहराई के साथ तापमान तेजी से बदलता है।
(B) गहराई के साथ लवणता तेजी से बदलती है।
(C) गहराई के साथ घनत्व तेजी से बदलता है।
(D) प्रकाश का प्रवेश पूरी तरह से रुक जाता है।

22. कथन (A): प्रवाल भित्तियाँ गर्म, स्वच्छ और सूर्य के प्रकाश वाले जल में पनपती हैं।
कारण (R): प्रवाल पॉलिप्स के भीतर रहने वाले सहजीवी शैवाल (ज़ूज़ैन्थेले) को प्रकाश संश्लेषण के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

23. दिन में एक या दो बार समुद्र के स्तर के समयबद्ध ऊपर उठने और गिरने को मुख्य रुप से क्या कहा जाता है?
(A) धारा
(B) तरंग
(C) सुनामी
(D) ज्वार-भाटा

24. निम्नलिखित में से कौन-सा जैविक महासागरीय निक्षेप का उदाहरण है?
(A) कैल्केरियस ऊज़
(B) लाल मृत्तिका
(C) मैंगनीज नोड्यूल्स
(D) ज्वालामुखीय राख

25. हिंद महासागर के अधस्तल उच्चावच की विशिष्ट विशेषता क्या है?
(A) एक एकल, निरंतर मध्य-महासागरीय कटक।
(B) किसी भी महासागरीय गर्त की अनुपस्थिति।
(C) कई समुद्री कटकों और पठारों की उपस्थिति।
(D) सभी महासागरों में सबसे बड़ा गंभीर सागरीय मैदान।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रवाल भित्ति का एक प्रकार नहीं है?
(A) पेलाजिक भित्ति
(B) तटीय प्रवाल भित्ति
(C) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(D) एटोल

27. समुद्री जल का घनत्व किसके साथ बढ़ता है?
(A) बढ़ते तापमान और घटती लवणता के साथ।
(B) बढ़ते तापमान और बढ़ती लवणता के साथ।
(C) घटते तापमान और घटती लवणता के साथ।
(D) घटते तापमान और बढ़ती लवणता के साथ।

28. सतही महासागरीय धाराओं के पीछे प्राथमिक प्रेरक शक्ति क्या है?
(A) घनत्व में अंतर
(B) प्रचलित पवनें
(C) लवणता में अंतर
(D) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव

29. महासागरीय विशेषता और उसके स्थान का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत है?
(A) मध्य-अटलांटिक कटक - अटलांटिक महासागर
(B) नाइन्टी ईस्ट रिज - हिंद महासागर
(C) जावा गर्त - अटलांटिक महासागर
(D) पूर्वी प्रशांत उत्थान - प्रशांत महासागर

30. निम्नलिखित में से कौन-सा महासागरीय संसाधन हाइड्रोजेनस प्रक्रियाओं से प्राप्त खनिज संसाधन माना जाता है?
(A) रेत और बजरी
(B) मछली और अन्य समुद्री जीवन
(C) पेट्रोलियम निक्षेप
(D) मैंगनीज नोड्यूल्स

31. सूची-I (अवधारणा) को सूची-II (परिभाषा) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (अवधारणा)
P. थर्मोकलाइन;
Q. हैलोकलाइन;
R. पिक्नोकलाइन;
S. आइसोहेलाइन
सूची-II (परिभाषा)
1. समान लवणता;
2. तीव्र घनत्व परिवर्तन;
3. तीव्र तापमान परिवर्तन;
4. तीव्र लवणता परिवर्तन
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

32. 'रिंग ऑफ फायर' ज्वालामुखियों और भूकंपों का एक प्रमुख क्षेत्र है, जो किस महासागर की सीमा से लगी महासागरीय गर्तों से जुड़ा है?
(A) अटलांटिक महासागर
(B) प्रशांत महासागर
(C) आर्कटिक महासागर
(D) हिंद महासागर

33. ज्वार-भाटा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. दैनिक ज्वार में प्रत्येक दिन एक उच्च ज्वार और एक निम्न ज्वार आता है।
2. अर्ध-दैनिक ज्वार में प्रत्येक दिन असमान ऊंचाई के दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार आते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(D) इसके पूर्वी भाग में सुंडा गर्त

57. एक समुद्री जीवविज्ञानी देखता है कि सूर्य के प्रकाश वाले क्षेत्र में होने के बावजूद महासागर के एक निश्चित क्षेत्र में उत्पादकता बहुत कम है। जल के नमूने से पता चलता है कि पोषक तत्व अत्यंत कम स्तर पर हैं। यह स्थिति संभवतः किससे संबंधित है?
(A) अपवेलिंग
(B) नदी डेल्टा
(C) डाउनवेलिंग
(D) गर्म और ठंडी धाराओं का अभिसरण

58. कथन (A): बाल्टिक सागर की लवणता औसत महासागरीय लवणता से काफी कम है।
कारण (R): बाल्टिक सागर में कई नदियों से ताजे जल का भारी प्रवाह होता है और खुले अटलांटिक महासागर से इसका सीमित संपर्क है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

59. प्रवाल भित्ति निर्माण का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?
(A) चार्ल्स डार्विन
(B) जॉन मरे
(C) अल्फ्रेड वेगनर
(D) आर. ए. डेली

60. महासागरीय धाराओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) ये पवन, तापमान और लवणता प्रवणता द्वारा संचालित होती हैं।
(B) ये हमेशा पूर्व से पश्चिम की ओर एक सीधी रेखा में बहती हैं।
(C) ये उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर ऊष्मा का स्थानांतरण करती हैं।
(D) ये 'गायर' नामक बड़े गोलाकार पैटर्न में घूमती हैं।

61. महासागरीय संसाधनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स मैंगनीज, निकेल और तांबे के स्रोत हैं।
2. ज्वारीय ऊर्जा एक नवीकरणीय संसाधन है।
3. महाद्वीपीय मग्नतट तेल और प्राकृतिक गैस की खोज के लिए प्रमुख स्थल हैं।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

62. 'थर्मोकलाइन' शब्द महासागर के उस क्षेत्र का वर्णन करता है जहाँ:
(A) गहराई के साथ लवणता में तेजी से वृद्धि होती है।
(B) गहराई के साथ घनत्व स्थिर रहता है।
(C) समुद्री जीवन सबसे प्रचुर मात्रा में होता है।
(D) गहराई के साथ तापमान में तेजी से कमी आती है।

63. महासागरीय धारा और उसके संबंधित महासागर का कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) अगुलहास धारा - अटलांटिक महासागर
(B) कनारी धारा - अटलांटिक महासागर
(C) मोजाम्बिक धारा - हिंद महासागर
(D) कैलिफोर्निया धारा - प्रशांत महासागर

64. महासागर के तल पर 'कैल्केरियस ऊज़' बनाने वाला प्राथमिक पदार्थ है:
(A) डायटम और रेडियोलेरियन के सिलीशियस कवच।
(B) फोरामिनिफेरा और कोकोलिथोफोर के कैल्शियम कार्बोनेट कवच।
(C) समुद्र में बहकर आए स्थलीय पौधों के अवशेष।
(D) मैग्नीशियम लवणों का रासायनिक अवक्षेपण।

65. 'डॉल्फिन राइज' और 'चैलेंजर राइज' किस महासागर में मध्य-महासागरीय कटक के हिस्से हैं?
(A) प्रशांत महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) हिंद महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

66. डेली के हिमानी नियंत्रण सिद्धांत के अनुसार, एटोल का निर्माण मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) हिमयुग से जुड़े समुद्र के स्तर में परिवर्तन।
(B) ज्वालामुखी द्वीपों का धीरे-धीरे डूबना।
(C) समुद्री जल द्वारा चूना पत्थर का घुलना।
(D) स्थिर प्लेटफॉर्मों पर प्रवाल की ऊपर की ओर वृद्धि।

67. प्रत्येक दिन दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार वाला ज्वार, जिसमें क्रमिक उच्च और निम्न ज्वार की ऊँचाई लगभग समान होती है, क्या कहलाता है?
(A) दैनिक ज्वार
(B) मिश्रित ज्वार
(C) अर्ध-दैनिक ज्वार
(D) वृहद् ज्वार

68. समुद्री जल का घनत्व किन दो गुणों का परिणाम है?
(A) तापमान और दबाव
(B) लवणता और दबाव
(C) लवणता और गहराई
(D) तापमान और लवणता

NODIA

अंतर।
(D) महासागर के तल से भू-तापीय ऊष्मा प्रवाह।

46. भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में देखी जाने वाली कम सतही लवणता का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्या है?
(A) वाष्पीकरण की उच्च दर
(B) ध्रुवीय बर्फ के पिघलने से होने वाला जल प्रवाह
(C) गहरे और कम खारे जल की अपवेलिंग
(D) भारी और बार-बार होने वाला वर्षण

47. महासागर के अधस्तल उच्चावच के संदर्भ में, एक 'गाइओट' को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) एक सपाट शीर्ष वाला समुद्री पर्वत।
(B) महासागर तल में एक गहरी और संकीर्ण खाई।
(C) एक नुकीली चोटी वाला जलमग्न ज्वालामुखीय पर्वत।
(D) विवर्तनिक प्लेटों के अपसरण से बनी एक कटक।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा नवीकरणीय महासागरीय ऊर्जा संसाधन का उदाहरण है?
(A) अपतटीय तेल
(B) ज्वारीय शक्ति
(C) मैंगनीज नोड्यूल्स
(D) गैस हाइड्रेट्स

49. प्रवाल भित्तियों की वृद्धि के लिए सामान्यतः कौन-सी स्थिति प्रतिकूल है?
(A) स्वच्छ और सूर्य के प्रकाश वाला जल
(B) नदियों से ताजे जल और अवसादों का उच्च प्रवाह
(C) गर्म जल का तापमान (23°C से 29°C)
(D) स्थिर लवणता स्तर

50. लैब्राडोर धारा न्यूफ़ाउंडलैंड के तट के पास गल्फ स्ट्रीम से मिलती है, जिससे कौन-सी महत्वपूर्ण परिघटना उत्पन्न होती है?
(A) घना कोहरा और समृद्ध मत्स्य क्षेत्र
(B) एक बड़ा जलभंवर
(C) डोलड्रम के रूप में जाना जाने वाला अत्यंत शांत समुद्र
(D) जल के तापमान में तीव्र वृद्धि

51. डार्विन के अवतलन सिद्धांत के अनुसार एटोल निर्माण के निम्नलिखित चरणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. एक ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर एक तटीय भित्ति बनती है।
2. द्वीप डूबता है, और भित्ति ऊपर की ओर बढ़ती है, जिससे वह अवरोधक भित्ति बन जाती है।
3. द्वीप पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है, जिससे लैगून को घेरे हुए प्रवाल का एक घेरा रह जाता है।
4. समुद्र से एक ज्वालामुखी द्वीप निकलता है।
(A) 1, 4, 2, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 1, 2, 3, 4

52. महासागरीय बेसिन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रशांत महासागर के तल में विश्व में सबसे अधिक संख्या में गर्त हैं।
कथन II: अटलांटिक महासागर में एक उल्लेखनीय रूप से सममित बेसिन है जिसमें एक प्रमुख केंद्रीय कटक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

53. पेलाजिक निक्षेप वे हैं जो पाए जाते हैं:
(A) महाद्वीपीय मग्नतटों पर।
(B) विशेष रूप से बड़ी नदियों के मुहानों पर।
(C) गहरे महासागर में, भूमि से दूर।
(D) केवल उच्च अक्षांश वाले ध्रुवीय समुद्रों में।

54. विश्व में सबसे ऊंचे ज्वार तब आते हैं जब:
(A) सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के साथ समकोण पर होते हैं।
(B) सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में संरेखित होते हैं।
(C) चंद्रमा अपने उपभू पर होता है और सूर्य अपने उपसौर पर होता है।
(D) पृथ्वी सूर्य की ओर सबसे अधिक झुकी होती है।

55. सूची-I (महासागरीय विशेषता) को सूची-II (विशिष्टता) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागरीय विशेषता)
P. मध्य-महासागरीय कटक;
Q. महासागरीय गर्त;
R. गंभीर सागरीय मैदान;
S. महाद्वीपीय मग्नतट
सूची-II (विशिष्टता)
1. सबसे गहरा भाग;
2. जलमग्न महाद्वीप;
3. सबसे सपाट भाग;
4. सागर अधस्तल प्रसरण स्थल
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

56. निम्नलिखित में से कौन-सी हिंद महासागर के अधस्तल उच्चावच की विशेषता नहीं है?
(A) अटलांटिक की तरह एक बड़ी और निरंतर 'S'-आकार की कटक
(B) कार्ल्सबर्ग कटक की उपस्थिति
(C) चागोस-लक्षद्वीप पठार की उपस्थिति

Click Here to Buy book on Amazon

होते हैं, जो क्रमशः उष्ण और शीत वाताग्रों द्वारा पृथक होते हैं। वायुदाब का केंद्र अपने न्यूनतम स्तर पर होता है और पवनों की गति तीव्र होती है। इसी अवस्था में बादलों का विस्तार और वर्षा की तीव्रता अपने चरम पर पहुँचती है। परिपक्व अवस्था के पश्चात ही संरोधन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है, जो धीरे-धीरे चक्रवात के अंत की ओर ले जाती है जो मौसम परिवर्तन हेतु अनिवार्य है।

299. (D) 60 मिमी से कम औसत वर्षण वाला कोई महीना नहीं।
कोपेन की 'Af' या उष्णकटिबंधीय वर्षावन जलवायु की सर्वाधिक विशिष्ट पहचान इसकी निरंतर और प्रचुर वर्षा है। इस जलवायु में वर्ष के प्रत्येक माह में औसतन कम से कम 60 मिलीमीटर वर्षा अवश्य होती है, जिसका अर्थ है कि यहाँ कोई वास्तविक या स्पष्ट शुष्क मौसम नहीं होता है। यहाँ तापमान भी पूरे वर्ष ऊँचा और एक समान बना रहता है। इस निरंतर आर्द्रता और उष्णता के कारण ही यहाँ विश्व के सर्वाधिक घने और जैव विविधता से परिपूर्ण सदाबहार वनों का विकास होता है, जो पृथ्वी के फेफड़े माने जाते हैं और अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

NODIA

300. (B) सूखा
सूखा एक ऐसी गंभीर पर्यावरणीय आपदा है जिसे दीर्घकाल तक वर्षा की अत्यधिक न्यूनता के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप जल के प्राकृतिक स्रोतों में भारी गिरावट आती है और मृदा की नमी समाप्त हो जाती है। सूखे का प्रभाव मंद गति से बढ़ता है और यह कृषि, पेयजल आपूर्ति, पनबिजली उत्पादन और समस्त पारिस्थितिकी तंत्र को गहराई से प्रभावित करता है। यह एक ऐसी स्थिति है जो न केवल पर्यावरणीय संकट उत्पन्न करती है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था के लिए भी गंभीर चुनौतियां और खाद्य असुरक्षा का कारण बनती है।

69. निम्नलिखित में से कौन-सा गर्म महासागरीय धारा का उदाहरण है?
(A) पेरु धारा
(B) बेंग्वेला धारा
(C) क्यूरोशियो धारा
(D) कैलिफोर्निया धारा

70. पृथ्वी के सबसे सपाट और चिकने क्षेत्र कौन-से हैं?
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) गंभीर सागरीय मैदान
(C) मध्य-महासागरीय कटक
(D) तटीय मैदान

71. प्रशांत महासागर के किनारों पर गहरी महासागरीय गर्तों के अस्तित्व का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) विवर्तनिक प्लेटों का अपसरण।
(B) गहरे समुद्र की टर्बिडिटी धाराओं द्वारा अपरदन।
(C) प्राचीन ज्वालामुखीय काल्डेरा का धंसना।
(D) एक विवर्तनिक प्लेट का दूसरी प्लेट के नीचे क्षेपण।

72. निम्नलिखित में से कौन-सा महासागरीय निक्षेप महासागर तल के सबसे बड़े क्षेत्र को घेरता है?
(A) लाल मृत्तिका
(B) कैल्केरियस ऊज़
(C) सिलीशियस ऊज़
(D) भूमिज कीचड़

73. उच्च ज्वार और निम्न ज्वार के बीच की ऊँचाई के अंतर को किस रूप में जाना जाता है?
(A) ज्वारीय अवधि
(B) ज्वारीय बोर
(C) ज्वारीय परिसर
(D) ज्वारीय धारा

74. यदि आप तीन मुख्य महासागरों की प्रमुख उच्चावच विशेषताओं का विश्लेषण करें, तो कौन-सा कथन सबसे सटीक होगा?
(A) प्रशांत महासागर में सीमांत सागरों और ज्वालामुखीय द्वीपों की संख्या सबसे अधिक है।
(B) हिंद महासागर में सबसे सरल और सबसे रैखिक मध्य-महासागरीय कटक है।
(C) अटलांटिक महासागर गहरी समुद्री गर्तों की सबसे विस्तृत प्रणाली से घिरा हुआ है।
(D) तीनों महासागरों में लगभग एक समान अधस्तल उच्चावच विशेषताएँ हैं।

75. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा मैंगनीज और लोहे जैसे खनिज सीधे समुद्री जल से अवक्षेपित होकर नोड्यूल्स और क्रस्ट बनाते हैं, क्या कहलाती है?
(A) बायोजेनस निक्षेपण
(B) टेरिजेनस निक्षेपण
(C) कॉस्मोजेनस निक्षेपण
(D) हाइड्रोजेनस निक्षेपण

76. कथन (A): अटलांटिक महासागर की तुलना में प्रशांत महासागर में एटोल अधिक सामान्य हैं।
कारण (R): प्रशांत महासागर में जलमग्न ज्वालामुखीय समुद्री पर्वतों की संख्या अधिक है जो प्रवाल बसावट और अवतलन के लिए उपयुक्त हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

77. महासागर में जल की वह परत जो गहराई के साथ लवणता में तीव्र परिवर्तन की विशेषता रखती है, कहलाती है:
(A) थर्मोकलाइन
(B) पिक्नोकलाइन
(C) हैलोकलाइन
(D) फोटिक ज़ोन

78. 'वेस्ट विंड ड्रिफ्ट' या 'अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा' अद्वितीय है क्योंकि:
(A) यह एक ठंडे क्षेत्र में एक गर्म धारा है।
(B) यह पृथ्वी के घूर्णन की विपरीत दिशा में बहती है।
(C) यह एक गहरे पानी की धारा है जो कभी सतह पर नहीं आती।
(D) यह बिना किसी बाधा के पूरे ग्लोब के चारों ओर बहती है।

79. किसी द्वीप या महाद्वीप के तट से सीधे उगने वाली प्रवाल भित्ति, जिसके बीच कोई लैगून नहीं होता, कहलाती है:
(A) तटीय प्रवाल भित्ति
(B) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(C) एटोल
(D) पैच रीफ

80. ध्रुवीय क्षेत्रों में समुद्री जल के घनत्व को नियंत्रित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है:
(A) तापमान, क्योंकि लवणता अपेक्षाकृत एक समान होती है।
(B) लवणता, क्योंकि तापमान समान रूप से कम होता है।
(C) दबाव, क्योंकि गहराई अत्यधिक होती है।
(D) नदी का प्रवाह, जो जल को पतला करता है।

81. सूची-I (कटक/विशेषता) को सूची-II (महासागर) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (कटक/विशेषता)
P. नाइन्टी ईस्ट रिज;
Q. वाल्विस रिज;
R. पूर्वी प्रशांत उत्थान;

Downloaded from www.pdf.tube

S. लोमोनोसोव रिज

सूची-II (महासागर)

1. प्रशांत महासागर;
2. आर्कटिक महासागर;
3. हिंद महासागर;
4. अटलांटिक महासागर

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

82. समुद्री जल के गुणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, समुद्री जल का घनत्व घटता जाता है।
2. जैसे-जैसे लवणता बढ़ती है, समुद्री जल का घनत्व बढ़ता जाता है।
3. समुद्री जल का हिमांक ताजे जल की तुलना में कम होता है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) 1, 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

83. अटलांटिक महासागर में निम्नलिखित में से कौन-सी ठंडी धारा है?

(A) उत्तरी अटलांटिक प्रवाह
(B) ब्राजील धारा
(C) कनारी धारा
(D) गिनी धारा

84. निम्नलिखित महासागरीय निक्षेपों को तट के निकट से गहरे महासागर बेसिन की ओर व्यवस्थित कीजिए:

1. लाल मृत्तिका
2. रेत और बजरी;
3. नीली और हरी कीचड़;
4. कैल्केरियस ऊज़

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 3, 4, 1

85. प्रवाल भित्ति की उत्पत्ति का कौन-सा सिद्धांत प्रवाल की ऊपर की ओर वृद्धि के लिए स्थिर और जलमग्न प्लेटफॉर्मों की भूमिका पर जोर देता है और अवतलन के विचार को चुनौती देता है?

(A) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
(B) डेली का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
(C) मरे का समाधान सिद्धांत
(D) वेगनर का विस्थापन सिद्धांत

86. लघु ज्वार का प्राथमिक कारण क्या है?

(A) सूर्य और चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव एक रेखा में होता है और जुड़ जाता है।
(B) सूर्य और चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव एक-दूसरे के समकोण पर कार्य करता है।
(C) पृथ्वी सूर्य के अपने निकटतम बिंदु पर होती है।
(D) चंद्रमा पृथ्वी से अपने सबसे दूर के बिंदु पर होता है।

87. 'सारगासो सागर' अटलांटिक महासागर के भीतर एक अद्वितीय क्षेत्र है जिसकी विशेषता है:

(A) अत्यंत ठंडा जल और हिमशैल।
(B) विश्व की सबसे गहरी महासागरीय गर्त।
(C) समुद्र के स्तर से ऊपर उभरती हुई एक निरंतर मध्य-महासागरीय कटक।
(D) शांत केंद्र और तैरती समुद्री घास वाला एक बड़ा और घूमता हुआ गायर।

88. अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के अधस्तल उच्चावच के बीच मुख्य अंतर है:

(A) अटलांटिक में विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतट हैं, जबकि प्रशांत में संकीर्ण मग्नतट और कई गर्त हैं।
(B) प्रशांत में एक प्रमुख मध्य-महासागरीय कटक है, जबकि अटलांटिक में नहीं है।
(C) प्रशांत औसतन अटलांटिक की तुलना में बहुत उथला है।
(D) अटलांटिक महासागर का तल भूकंपीय रूप से सक्रिय है, जबकि प्रशांत स्थिर है।

89. महासागरीय धाराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: गर्म महासागरीय धाराएँ भूमध्य रेखा के पास उत्पन्न होती हैं और ध्रुवों की ओर बढ़ती हैं।

कथन II: ठंडी महासागरीय धाराएँ ध्रुवों के पास उत्पन्न होती हैं और भूमध्य रेखा की ओर बढ़ती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

90. टेरोपोड और ग्लोबोजेरिना ऊज़ किसके प्रकार हैं?

(A) कैल्केरियस जैविक निक्षेप
(B) सिलीशियस जैविक निक्षेप
(C) भूमिज निक्षेप
(D) हाइड्रोजेनस निक्षेप

91. कार्ल्सबर्ग कटक एक प्रमुख जलमग्न विशेषता है जो कहाँ स्थित है?

(A) उत्तरी अटलांटिक महासागर
(B) दक्षिण प्रशांत महासागर
(C) आर्कटिक महासागर
(D) हिंद महासागर

NODIA

92. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी प्रवाल भित्ति निर्माण के लिए अनुकूल स्थितियाँ हैं?
(A) 23-25°C के बीच जल का तापमान
(B) नदी के विसर्जन से पोषक तत्वों की प्रचुर आपूर्ति
(C) लगभग 30-35 प्रति हजार भाग लवणता
(D) स्वच्छ और अवसाद मुक्त जल

93. शुद्ध जल का घनत्व 4°C पर अधिकतम होता है। समुद्री जल का घनत्व:
(A) भी 4°C पर अधिकतम होता है।
(B) 0°C पर अधिकतम होता है।
(C) अपने हिमांक बिंदु पर अधिकतम होता है, जो 0°C से नीचे होता है।
(D) जमने से पहले अधिकतम घनत्व का कोई बिंदु नहीं होता है।

94. जब चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकट होता है (उपभू पर) तो आने वाले असाधारण रूप से ऊंचे ज्वार कहलाते हैं:
(A) लघु ज्वार
(B) अपभू ज्वार
(C) विषुवतीय ज्वार
(D) उपभू वृहद् ज्वार

95. यदि एक शोध जहाज समुद्र तल पर एक लंबी, संकीर्ण और अत्यंत गहरी विशेषता का मानचित्रण कर रहा है, तो वह संभवतः किसका सर्वेक्षण कर रहा है?
(A) महासागरीय गर्त
(B) मध्य-महासागरीय कटक
(C) अगाधसागरीय पहाड़ी
(D) महाद्वीपीय उत्थान

96. निम्नलिखित में से किसे महासागरों में पाया जाने वाला अधात्विक खनिज संसाधन माना जाता है?
(A) मैंगनीज नोड्यूल्स
(B) फास्फोराइट
(C) सोना और टिन
(D) कच्चा तेल

97. कथन (A): महासागरीय लवणता का वितरण पूरे विश्व में एक समान नहीं है।
कारण (R): वाष्पीकरण, वर्षण, नदी के जल का प्रवाह और बर्फ के जमने/पिघलने जैसे कारक स्थानीय लवणता के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से बदल देते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

98. प्रशांत महासागर में क्यूरोशियो धारा, अटलांटिक महासागर की किस धारा के समान है?
(A) गल्फ स्ट्रीम
(B) लैब्राडोर धारा
(C) कनारी धारा
(D) बेंग्वेला धारा

99. ऑस्ट्रेलिया के तट पर स्थित 'ग्रेट बैरियर रीफ' विश्व का किसका सबसे बड़ा उदाहरण है?
(A) तटीय प्रवाल भित्ति
(B) एटोल
(C) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(D) गाइओट

100. गहरे महासागर (4000 मीटर से नीचे) के जल के नमूने में लाल मृत्तिका प्रचुर मात्रा में पाई जाती है लेकिन कैल्केरियस ऊज़ की कमी है। इसका सबसे संभावित स्पष्टीकरण क्या है?
(A) क्षेत्र के सतही जल में कैल्केरियस जीवों की पर्याप्त आबादी नहीं है।
(B) गहरी समुद्री धाराओं ने कैल्केरियस ऊज़ के हल्के कणों को बहा दिया।
(C) ज्वालामुखीय विस्फोटों ने तल को मृत्तिका से ढक दिया, जिससे मौजूदा कैल्केरियस निक्षेप दब गए।
(D) उच्च दबाव और कम तापमान के कारण गहराई पर कैल्केरियस कवच घुल गए।

101. मध्य-अटलांटिक कटक के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह उत्तर से दक्षिण की ओर चलता है, जो मोटे तौर पर तटरेखाओं के समानांतर है।
(B) यह तीव्र ज्वालामुखीय और भूकंपीय गतिविधि का स्थल है।
(C) यह प्लेट क्षेपण का एक क्षेत्र है।
(D) यह आइसलैंड जैसी जगहों पर समुद्र के स्तर से ऊपर उठ जाता है।

102. आइसोहेलाइन मानचित्र पर खींची गई वह रेखा है जो समान _____ वाले बिंदुओं को जोड़ती है।
(A) तापमान
(B) लवणता
(C) दबाव
(D) घनत्व

103. प्रत्येक प्रमुख महासागर बेसिन में सतही जल की व्यवस्थित और गोलाकार गति, मुख्य रूप से किसका परिणाम है?
(A) ज्वारीय बल और चंद्र गुरुत्वाकर्षण
(B) प्रचलित पवन पैटर्न और कोरिओलिस प्रभाव
(C) समुद्र तल की स्थलाकृति और ज्वालामुखीय गतिविधि
(D) लवणता में अंतर और गहरे पानी का निर्माण

104. निम्नलिखित में से कौन-सा महासागरीय निक्षेप जैविक मूल का है?
(A) डायटम ऊज़ और रेडियोलेरियन ऊज़

Click Here to Buy book on Amazon

(B) लाल मृत्तिका और ज्वालामुखीय धूल
(C) रेत और कीचड़
(D) मैंगनीज नोड्यूल्स और फास्फोराइट

105. सूची-I (भित्ति उत्पत्ति का सिद्धांत) को सूची-II (प्रस्तावक) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (भित्ति उत्पत्ति का सिद्धांत)
P. अवतलन सिद्धांत
Q. हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
R. स्थिर-अवस्था सिद्धांत
सूची-II (प्रस्तावक)
1. आर. ए. डेली;
2. जॉन मरे;
3. चार्ल्स डार्विन
(A) P-3, Q-1, R-2
(B) P-1, Q-2, R-3
(C) P-2, Q-3, R-1
(D) P-3, Q-2, R-1

106. महासागरीय जल का तापमान उच्चतम होता है:
(A) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सतह पर
(B) ध्रुवों पर
(C) गहरी महासागरीय गर्तों में
(D) मध्य-महासागरीय कटकों पर

107. प्रत्येक दिन एक बार आने वाला ज्वार, जिसमें एक उच्च जल और एक निम्न जल होता है, क्या कहलाता है?
(A) अर्ध-दैनिक ज्वार
(B) मिश्रित ज्वार
(C) लघु ज्वार
(D) दैनिक ज्वार

108. किस महासागर के अधस्तल उच्चावच की विशेषता एक केंद्रीय कटक है जो महासागर को दो लगभग समान बेसिनों में विभाजित करती है, लेकिन कई फ्रैक्चर क्षेत्रों द्वारा विस्थापित है?
(A) प्रशांत महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) हिंद महासागर
(D) दक्षिणी महासागर

109. महासागरीय उच्चावच विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. समुद्री पर्वत महासागर के तल पर अलग-थलग ज्वालामुखीय चोटियाँ हैं।
2. गाइओट सपाट शीर्ष वाले समुद्री पर्वत हैं।
3. गर्त अभिसारी प्लेट सीमाओं से संबंधित हैं।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

110. उत्तरी गोलार्ध में महासागरीय धाराओं के दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर विक्षेपण का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) सूर्य का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(B) महासागरीय बेसिनों का आकार
(C) प्रचलित पवनों का पैटर्न
(D) पृथ्वी का घूर्णन (कोरिओलिस प्रभाव)

111. निम्नलिखित में से कौन-सा एक टेरिजेनस महासागरीय निक्षेप नहीं है?
(A) टेरोपोड ऊज़
(B) रेत
(C) कीचड़
(D) ज्वालामुखीय धूल

112. हिंद महासागर में सोमाली धारा अद्वितीय है क्योंकि:
(A) यह विश्व की सबसे गर्म धारा है।
(B) यह मानसून के साथ मौसमी रूप से अपनी दिशा बदल देती है।
(C) यह सीधे उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक बहती है।
(D) यह पूरी तरह से घनत्व-संचालित धारा है।

113. डार्विन के अवतलन सिद्धांत द्वारा प्रस्तावित अनुक्रम में निम्नलिखित भित्ति प्रकारों को व्यवस्थित करें:
1. एटोल;
2. तटीय प्रवाल भित्ति;
3. अवरोधक प्रवाल भित्ति
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

114. महासागरों में प्रकाशित क्षेत्र (फोटिक ज़ोन) को अंधकारमय क्षेत्र (एफोटिक ज़ोन) से अलग करने वाली रेखा किससे संबंधित है?
(A) सूर्य के प्रकाश का प्रवेश
(B) थर्मोकलाइन
(C) हैलोकलाइन
(D) पिक्नोकलाइन

115. महासागरीय विस्तार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रशांत महासागर का आकार सिकुड़ रहा है।
कथन II: अटलांटिक महासागर का आकार बढ़ रहा है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

NODIA

116. न्यूफ़ाउंडलैंड के 'ग्रैंड बैंक' के समृद्ध मत्स्य क्षेत्र किसका प्रत्यक्ष परिणाम हैं?
(A) गहरे और ठंडे जल की अपवेलिंग।
(B) सेंट लॉरेंस नदी से पोषक तत्वों से भरपूर जल का विसर्जन।
(C) एक बड़े और उथले महाद्वीपीय मग्नतट की उपस्थिति।
(D) गर्म गल्फ स्ट्रीम और ठंडी लैब्राडोर धारा का मिश्रण।

117. अंतरिक्ष से प्राप्त निक्षेपों, जैसे उल्कापिंड के टुकड़े, जो महासागर के तल पर पाए जाते हैं, के लिए प्रयुक्त शब्द है:
(A) हाइड्रोजेनस
(B) टेरिजेनस
(C) कॉस्मोजेनस
(D) बायोजेनस

118. कौन-सा कथन वृहद् ज्वार और लघु ज्वार की सही तुलना करता है?
(A) वृहद् ज्वार में लघु ज्वार की तुलना में कम ज्वारीय सीमा होती है।
(B) वृहद् ज्वार पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य के संरेखण से उत्पन्न होते हैं, जबकि लघु ज्वार उनकी लंबवत व्यवस्था से उत्पन्न होते हैं।
(C) वृहद् ज्वार चंद्रमा के प्रथम और तृतीय चतुर्थांश के दौरान आते हैं, जबकि लघु ज्वार अमावस्या और पूर्णिमा के दौरान आते हैं।
(D) वृहद् ज्वार केवल वसंत ऋतु में आते हैं, और लघु ज्वार केवल शरद ऋतु में।

119. हिंद महासागर के तल-मापन की एक प्रमुख विशेषता उत्तर-दक्षिण की ओर चलने वाली कई कटकों की उपस्थिति है। निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) मध्य-अटलांटिक कटक
(B) पूर्वी प्रशांत उत्थान
(C) लोमोनोसोव रिज
(D) नाइन्टी ईस्ट रिज

120. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक सतही समुद्री जल के घनत्व में वृद्धि का कारण बनेगा?
(A) समुद्री बर्फ का निर्माण
(B) भारी वर्षा
(C) नदी के जल का प्रवाह
(D) सौर विकिरण में वृद्धि

121. वह सिद्धांत जो हिमयुग के दौरान समुद्र के स्तर में उतार-चढ़ाव को एटोल के निर्माण से जोड़ता है, किस रूप में जाना जाता है?
(A) अवतलन सिद्धांत
(B) समाधान सिद्धांत
(C) हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
(D) प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत

122. कैलिफोर्निया धारा और पेरू (हम्बोल्ट) धारा दोनों हैं:
(A) महासागरों के पूर्वी किनारों पर ठंडी धाराएँ।
(B) महासागरों के पश्चिमी किनारों पर गर्म धाराएँ।
(C) महासागरों के पूर्वी किनारों पर गर्म धाराएँ।
(D) महासागरों के पश्चिमी किनारों पर ठंडी धाराएँ।

123. महाद्वीपीय ढाल और गंभीर सागरीय मैदान के बीच महासागर तल का क्षेत्र है:
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) महासागरीय गर्त
(C) मध्य-महासागरीय कटक
(D) महाद्वीपीय उत्थान

124. कथन (A): कैल्केरियस ऊज़ आमतौर पर महासागर बेसिनों के सबसे गहरे हिस्सों (लगभग 4,500 मीटर से नीचे) में नहीं पाए जाते हैं।
कारण (R): कैल्शियम कार्बोनेट गहरे महासागर के उच्च दबाव और कम तापमान की स्थितियों में घुलनशील होता है, इस गहराई को कार्बोनेट क्षतिपूर्ति गहराई (CCD) कहा जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

125. प्रमुख महासागर बेसिनों में बड़ी और गोलाकार धारा प्रणालियाँ या 'गायर' मुख्य रूप से किसके द्वारा संचालित होती हैं?
(A) घनत्व और लवणता प्रवणता
(B) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(C) ग्रहीय पवन प्रणाली
(D) जलमग्न ज्वालामुखीय विस्फोट

126. गर्म सतही जल और ठंडे गहरे जल के बीच तापमान के अंतर से ऊर्जा प्राप्त करना किस रूप में जाना जाता है?
(A) ज्वारीय ऊर्जा उत्पादन
(B) तरंग ऊर्जा रूपांतरण
(C) भू-तापीय ऊर्जा निष्कर्षण
(D) महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण (OTEC)

127. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) डार्विन का सिद्धांत - समुद्र के स्तर में परिवर्तन पर आधारित
(B) तटीय प्रवाल भित्ति - तट से जुड़ी हुई
(C) अवरोधक प्रवाल भित्ति - एक चौड़ी लैगून द्वारा अलग
(D) एटोल - एक केंद्रीय लैगून को घेरता है

128. अटलांटिक महासागर के तल का मानचित्रण करने वाले एक महासागर विज्ञानी को निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता सबसे प्रमुख मिलने की संभावना है?
(A) बेसिन के चारों ओर गहरी समुद्री गर्तों का घेरा।
(B) एक बड़ी और केंद्रीय 'S'-आकार की जलमग्न पर्वत

NODIA

श्रृंखला।
(C) कई बड़े और अलग-थलग ज्वालामुखीय पठार।
(D) विश्व के सबसे चौड़े और सबसे सपाट गंभीर सागरीय मैदान।

129. उच्चतम सतही लवणता निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पाई जाती है?
(A) भारी वर्षा वाले भूमध्यरेखीय क्षेत्र।
(B) उच्च वाष्पीकरण वाले उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र।
(C) ध्रुवीय क्षेत्र जहाँ बर्फ पिघलती है।
(D) नदी के मुहानों के पास के तटीय क्षेत्र।

130. वह ज्वार जिसमें प्रति दिन दो असमान उच्च जल और दो असमान निम्न जल होते हैं, कहलाता है:
(A) मिश्रित अर्ध-दैनिक ज्वार
(B) दैनिक ज्वार
(C) अर्ध-दैनिक ज्वार
(D) विषुवतीय ज्वार

131. सूची-I (महासागरीय निक्षेप प्रकार) को सूची-II (उदाहरण/घटक) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागरीय निक्षेप प्रकार)
P. टेरिजेनस
Q. बायोजेनस
R. हाइड्रोजेनस
S. कॉस्मोजेनस
सूची-II (उदाहरण/घटक)
1. फोरामिनिफेरा कवच
2. टेक्टाइट्स
3. नदी-जनित रेत
4. मैंगनीज नोड्यूल्स
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

132. 'टेलीग्राफ पठार' किसकी एक प्रसिद्ध विशेषता है?
(A) उत्तरी प्रशांत महासागर तल
(B) मध्य हिंद महासागर तल
(C) दक्षिणी महासागर तल
(D) उत्तरी अटलांटिक महासागर तल

133. हिंद महासागर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह किसी देश के नाम पर रखा गया एकमात्र महासागर है।
2. इसकी मध्य-महासागरीय कटक खंडित है और इसमें कार्ल्सबर्ग कटक जैसी विशेषताएँ शामिल हैं।
3. इसमें किसी भी महत्वपूर्ण महासागरीय गर्त का अभाव है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

134. समुद्री जल के घनत्व पर तापमान के प्रभाव का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, घनत्व बढ़ता है।
(B) जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, घनत्व घटता है।
(C) जैसे-जैसे तापमान घटता है, घनत्व घटता है।
(D) समुद्री जल के घनत्व पर तापमान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

135. महासागरीय धाराओं में जल की गति निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी से प्रभावित होती है?
(A) प्रचलित पवनें
(B) कोरिओलिस बल
(C) घनत्व में अंतर
(D) वायुमंडलीय आर्द्रता

136. कथन (A): प्रशांत महासागर बेसिन को अक्सर 'रिंग ऑफ फायर' कहा जाता है।
कारण (R): प्रशांत महासागर के किनारे सक्रिय क्षेपण क्षेत्रों की विशेषता रखते हैं, जिससे व्यापक ज्वालामुखी और भूकंपीय गतिविधि होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

137. इनमें से कौन-सा महासागर का जैविक संसाधन है?
(A) पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स
(B) नमक
(C) प्लवक
(D) पेट्रोलियम

138. सुंडा गर्त एक प्रमुख उच्चावच विशेषता है जो कहाँ स्थित है?
(A) हिंद महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) प्रशांत महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

139. एक प्रवाल भित्ति की उत्पत्ति का अध्ययन करने वाले शोधकर्ता को एक जलमग्न और तरंग-कटाव वाले प्लेटफॉर्म के प्रमाण मिलते हैं, जिस पर हिमयुग के बाद समुद्र के स्तर में वृद्धि के साथ भित्ति ऊपर की ओर बढ़ी। यह प्रमाण किसका समर्थन करता है?
(A) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
(B) मरे का समाधान सिद्धांत
(C) हॉटस्पॉट सिद्धांत

Downloaded from www.pdf.tube

(D) डेली का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत

140. गहरी समुद्री गर्तों के निर्माण का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) महाद्वीपीय प्लेटों का अपसरण
(B) महासागरीय प्लेटों का अभिसरण और क्षेपण
(C) दो प्लेटों के बीच रूपांतर भ्रंश
(D) महासागर बेसिन के बीच में रिफ्टिंग

141. उत्तरी अटलांटिक गायर धाराओं के संयोजन से बना है। कौन-सा क्रम इस गायर के एक भाग का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) गल्फ स्ट्रीम → लैब्राडोर धारा → कनारी धारा → उत्तरी विषुवतीय धारा
(B) उत्तरी विषुवतीय धारा → क्यूरोशियो धारा → कैलिफोर्निया धारा → गल्फ स्ट्रीम
(C) उत्तरी विषुवतीय धारा → गल्फ स्ट्रीम → उत्तरी अटलांटिक प्रवाह → कनारी धारा
(D) ब्राजील धारा → बेंग्वेला धारा → दक्षिणी विषुवतीय धारा → गिनी धारा

142. 'हैलोकलाइन' शब्द महासागर में किस गुण के महत्वपूर्ण ऊर्ध्वाधर प्रवणता को संदर्भित करता है?
(A) तापमान
(B) घनत्व
(C) दबाव
(D) लवणता

143. महासागरीय तापमान के वितरण के बारे में कौन-सा कथन गलत है?
(A) तापमान की उच्चतम वार्षिक सीमा भूमध्य रेखा पर खुले महासागरों में दर्ज की जाती है।
(B) महासागर सौर विकिरण द्वारा ऊपर से नीचे की ओर गर्म होते हैं।
(C) 2000 मीटर से नीचे, महासागरीय तापमान लगभग एक समान और हिमांक के करीब होता है।
(D) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बंद समुद्र खुले महासागरों की तुलना में अधिक तापमान दर्ज करते हैं।

144. ज्वार उत्पन्न करने वाला बल एक 'विभेदक बल' है, जिसका अर्थ है कि यह किसका परिणाम है?
(A) पृथ्वी पर चंद्रमा का पूर्ण गुरुत्वाकर्षण खिंचाव।
(B) पृथ्वी के विपरीत पक्षों पर चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव में अंतर।
(C) पृथ्वी के घूर्णन से गुरुत्वाकर्षण के बराबर अपकेंद्रीय बल का निर्माण।
(D) पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का सौर पवन के साथ अंतःक्रिया।

145. ऊज़ एक प्रकार का अगाधसागरीय निक्षेप है, जो मुख्य रूप से किससे बना होता है?
(A) पवन द्वारा उड़ाई गई धूल और ज्वालामुखीय राख।
(B) सूक्ष्म समुद्री जीवों के कठोर अवशेष।
(C) महाद्वीपीय अपरदन से प्राप्त रेत और गाद।
(D) मैंगनीज और लोहे जैसे अवक्षेपित खनिज।

146. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रशांत महासागर के अधस्तल उच्चावच की एक विशिष्ट विशेषता है?
(A) बड़ी संख्या में अलग-थलग समुद्री पर्वत, गाइओट और गहरी गर्त।
(B) एक प्रमुख और निरंतर 'S'-आकार की मध्य-महासागरीय कटक।
(C) इसकी अधिकांश सीमाओं के साथ विस्तृत और चौड़े महाद्वीपीय मग्नतट।
(D) ज्वालामुखीय और भूकंपीय गतिविधि की सामान्य अनुपस्थिति।

147. प्रत्येक दिन एक उच्च ज्वार और एक निम्न ज्वार वाले ज्वार पैटर्न को क्या कहा जाता है?
(A) अर्ध-दैनिक
(B) मिश्रित
(C) दैनिक
(D) अपभू

148. निम्नलिखित में से कौन-सा महासागर के तल पर या उसके नीचे पाया जाने वाला महत्वपूर्ण खनिज संसाधन नहीं है?
(A) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
(B) मैंगनीज नोड्यूल्स
(C) फास्फोराइट नोड्यूल्स
(D) बॉक्साइट निक्षेप

149. बेंग्वेला धारा एक ठंडी धारा है जो किसके साथ बहती है?
(A) दक्षिण अमेरिका का पूर्वी तट
(B) ऑस्ट्रेलिया का पश्चिमी तट
(C) दक्षिणी अफ्रीका का पश्चिमी तट
(D) एशिया का पूर्वी तट

150. भौतिक गुणों में तीव्र परिवर्तन के आधार पर महासागर की परतों के क्रम के संबंध में कौन-सा कथन सत्य है?
(A) अनुक्रम संख्यात्मक क्रम 1, 2, 3 का अनुसरण करता है।
(B) विशिष्ट क्रम भिन्न होता है और वैश्विक स्तर पर निश्चित नहीं है।
(C) अनुक्रम संख्यात्मक क्रम 2, 3, 1 का अनुसरण करता है।
(D) अनुक्रम संख्यात्मक क्रम 3, 1, 2 का अनुसरण करता है।

151. महासागरीय विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हिंद महासागर की कटक प्रणाली मध्य-अटलांटिक कटक की तुलना में अधिक जटिल है।
कथन II: प्रशांत महासागर में गाइओट और समुद्री पर्वतों की संख्या सबसे अधिक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

NODIA

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

152. लाल मृत्तिका महासागर के सबसे गहरे हिस्सों में पाए जाने वाले अगाधसागरीय निक्षेप का एक उदाहरण है। यह मुख्य रूप से किससे बनी होती है?
(A) ज्वालामुखीय धूल और उल्कापिंड के कण।
(B) कैल्केरियस जीवों के कवच।
(C) लाल रंग के शैवाल के अवशेष।
(D) नदियों द्वारा परिवहित रेत और गाद।

153. एक प्रवाल भित्ति एक लैगून को घेरे हुए पाई जाती है, लेकिन कोई केंद्रीय द्वीप दिखाई नहीं देता है। यह किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) तटीय प्रवाल भित्ति
(B) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(C) एटोल
(D) समुद्री पर्वत

154. समुद्री जल का घनत्व प्रत्यक्ष रूप से किससे प्रभावित नहीं होता है?
(A) अक्षांश
(B) तापमान
(C) लवणता
(D) दबाव

155. सूची-I (महासागर) को सूची-II (विशिष्ट अधस्तल विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागर)
P. अटलांटिक महासागर;
Q. प्रशांत महासागर;
R. हिंद महासागर;
S. आर्कटिक महासागर
सूची-II (विशिष्ट अधस्तल विशेषता)
1. रिंग ऑफ फायर;
2. लोमोनोसोव रिज;
3. S-आकार की कटक;
4. नाइन्टी ईस्ट रिज
(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

156. जब चंद्रमा, पृथ्वी और सूर्य एक समकोण बनाते हैं, तो सूर्य और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल आंशिक रूप से एक-दूसरे को कम कर देते हैं, जिससे क्या होता है?
(A) वृहद् ज्वार
(B) लघु ज्वार
(C) उपभू ज्वार
(D) दैनिक ज्वार

157. अमेरिका के पूर्वी तट के साथ उत्तर की ओर जाने वाले एक जहाज को एक मजबूत और गर्म धारा से सहायता मिलती है। यह धारा है:
(A) लैब्राडोर धारा
(B) कनारी धारा
(C) गल्फ स्ट्रीम
(D) उत्तरी विषुवतीय धारा

158. कथन (A): प्रवाल भित्तियों को अक्सर "समुद्र के वर्षावन" कहा जाता है।
कारण (R): पोषक तत्वों की कमी वाले उष्णकटिबंधीय जल में होने के बावजूद वे समुद्री जीवन की विशाल जैव विविधता का समर्थन करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

159. 'चागोस गर्त' और 'डायमेंटिना गर्त' किस महासागर की उच्चावच विशेषताएँ हैं?
(A) हिंद महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) प्रशांत महासागर
(D) दक्षिणी महासागर

160. महासागरीय तापमान के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) तापमान का ऊर्ध्वाधर वितरण पूरे महासागर में एक समान है।
(B) सतही परत सौर विकिरण द्वारा गर्म होती है, और यह ऊष्मा धाराओं और तरंगों द्वारा वितरित की जाती है।
(C) गहरे महासागर का जल समान रूप से गर्म होता है।
(D) उच्चतम तापमान तल पर, हाइड्रोथर्मल वेंट के पास पाया जाता है।

161. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. टेरिजेनस निक्षेप महाद्वीपों के पास सबसे मोटे होते हैं।
2. पेलाजिक निक्षेप गहरे महासागर बेसिनों में पाए जाते हैं।
3. बायोजेनस ऊज़ एक प्रकार के टेरिजेनस निक्षेप हैं।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

162. धंसते हुए ज्वालामुखी द्वीप के विचार पर आधारित प्रवाल भित्तियों की उत्पत्ति किसके द्वारा प्रस्तावित की गई थी?
(A) चार्ल्स डार्विन
(B) जॉन मरे
(C) आर. ए. डेली

Click Here to Buy book on Amazon

(D) हैरी हेस

163. ज्वारीय परिघटना जिसमें उच्च ज्वार एक नदी में टूटती हुई तरंग के रूप में तेजी से ऊपर चढ़ता है, कहलाती है:
(A) ज्वारीय परिसर
(B) ज्वारीय चक्र
(C) ज्वारीय बोर
(D) ज्वारीय धारा

164. महासागरीय जल के ऊर्ध्वाधर परिसंचरण का सबसे महत्वपूर्ण कारक क्या है?
(A) सतह पर पवन का प्रतिबल
(B) कोरिओलिस प्रभाव
(C) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(D) तापमान और लवणता के कारण घनत्व में अंतर

165. व्योमिंग बेसिन और केप बेसिन किस महासागर के अधस्तल उच्चावच के हिस्से हैं?
(A) प्रशांत महासागर
(B) हिंद महासागर
(C) अटलांटिक महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

166. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रशांत महासागर की एक ठंडी धारा है?
(A) क्यूरोशियो धारा
(B) ओयाशियो धारा
(C) पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई धारा
(D) अलास्का धारा

167. महाद्वीपीय मग्नतट की औसत गहराई लगभग कितनी होती है?
(A) 20 मीटर
(B) 2000 मीटर
(C) 4000 मीटर
(D) 200 मीटर

168. निम्नलिखित में से कौन-सा महासागरीय संसाधन का रूप नहीं है?
(A) इओलियन संसाधन जैसे समुद्र के ऊपर पवन पैटर्न
(B) जैविक संसाधन जैसे मछली और शैवाल
(C) खनिज संसाधन जैसे रेत और मैंगनीज नोड्यूल्स
(D) ऊर्जा संसाधन जैसे ज्वार और तरंगें

169. एटोल निर्माण के लिए मरे के समाधान सिद्धांत का मुख्य तर्क क्या है?
(A) ज्वालामुखीय द्वीप भूगर्भीय समय के साथ धीरे-धीरे डूबते हैं।
(B) हिमयुग के दौरान समुद्र का स्तर गिरा और बढ़ा।
(C) प्रवाल जलमग्न तटों पर बनते हैं, और एक लैगून बनाने के लिए आंतरिक भाग घुल जाता है।
(D) विवर्तनिक प्लेटें द्वीपों को गर्म जल में ले जाती हैं जहाँ प्रवाल बढ़ सकते हैं।

170. पिक्नोकलाइन महासागर की वह परत है जहाँ किसमें तीव्र परिवर्तन होता है?
(A) घनत्व
(B) तापमान
(C) लवणता
(D) प्रकाश प्रवेश

NODIA

171. यदि महासागर के किसी क्षेत्र में वाष्पीकरण की दर उच्च है और वर्षण एवं अपवाह की दर कम है, तो सतही लवणता होगी:
(A) कम
(B) औसत
(C) अप्रभावित
(D) उच्च

172. मध्य-अटलांटिक कटक किस स्थान पर समुद्र के स्तर से ऊपर उभरती है?
(A) हवाई
(B) एज़ोरेस और आइसलैंड
(C) कनारी द्वीप समूह
(D) अलुशियन द्वीप समूह

173. सिलीशियस ऊज़ के महासागर तल पर किन क्षेत्रों में पाए जाने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) उथले उष्णकटिबंधीय समुद्रों में जहाँ प्रवाल भित्तियाँ प्रचुर मात्रा में हैं।
(B) बड़ी और अवसाद से भरी नदियों के मुहानों के पास।
(C) उच्च अक्षांश वाले क्षेत्रों और भूमध्यरेखीय अपवेलिंग क्षेत्रों में।
(D) निष्क्रिय किनारों के महाद्वीपीय मग्नतटों पर।

174. क्रमिक उच्च या निम्न ज्वार की ऊँचाई में दैनिक असमानता किसकी विशेषता है?
(A) दैनिक ज्वार
(B) अर्ध-दैनिक ज्वार
(C) वृहद् ज्वार
(D) मिश्रित ज्वार

175. अगुलहास धारा एक शक्तिशाली और गर्म धारा है जो कहाँ पाई जाती है?
(A) पश्चिमी हिंद महासागर
(B) उत्तरी अटलांटिक महासागर
(C) दक्षिण प्रशांत महासागर
(D) पूर्वी प्रशांत महासागर

176. कौन-सा कथन तीन मुख्य महासागरों के उच्चावच में एक प्रमुख अंतर का सटीक वर्णन करता है?
(A) अटलांटिक में सबसे अधिक गर्त हैं, प्रशांत में सबसे

अधिक कटक हैं, और हिंद महासागर सबसे सपाट है।
(B) वेस्ट विंड ड्रिफ्ट अद्वितीय है क्योंकि यह एक ठंडे क्षेत्र में एक गर्म धारा है।
(C) हिंद महासागर में अन्य दो के विपरीत एक एकल और अटूट केंद्रीय कटक है।
(D) प्रशांत की विशेषता गर्तों वाले सक्रिय किनारे हैं, जबकि अटलांटिक में चौड़े मग्नतटों वाले निष्क्रिय किनारे हैं।

177. समुद्र विज्ञान में 'क्षतिपूर्ति गहराई' उस गहराई को संदर्भित करती है जहाँ:
(A) प्रकाश संश्लेषण की दर श्वसन की दर के बराबर होती है।
(B) कैल्शियम कार्बोनेट के घुलने की दर इसकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है।
(C) दबाव अधिकांश समुद्री जीवन के लिए बहुत अधिक हो जाता है।
(D) तापमान जल के हिमांक बिंदु तक गिर जाता है।

178. हाइड्रोजेनस निक्षेपों के प्राथमिक घटक हैं:
(A) समुद्री जीवों के कवच और कंकाल।
(B) भूमि से चट्टान और मिट्टी के कण।
(C) बाहरी अंतरिक्ष से धूल और कण।
(D) खनिज जो सीधे समुद्री जल से अवक्षेपित होते हैं।

179. महासागर तल के प्रमुख विभाजनों को महाद्वीप से गहराई बढ़ने के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. गंभीर सागरीय मैदान
2. महाद्वीपीय मग्नतट
3. महाद्वीपीय मग्नढाल
(A) 1, 3, 2
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 2, 1, 3

180. अटलांटिक महासागर में निम्नलिखित में से कौन-सी गर्म धारा है?
(A) लैब्राडोर धारा
(B) ब्राजील धारा
(C) कनारी धारा
(D) बेंग्वेला धारा

181. प्रशांत महासागर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: प्रशांत महासागर की औसत गहराई सभी महासागरों में सबसे अधिक है।
कथन II: कई गहरी महासागरीय गर्तों की उपस्थिति प्रशांत की महान औसत गहराई में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
उपर्युक्त में से कौन--सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन II, I की व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

182. समुद्र में घने कोहरे के निर्माण के लिए आदर्श स्थितियाँ किसके द्वारा निर्मित होती हैं?
(A) एक गर्म और एक ठंडी धारा का अभिसरण।
(B) दो गर्म धाराओं का अभिसरण।
(C) दो ठंडी धाराओं का अपसरण।
(D) एक मजबूत और स्थिर गर्म धारा की उपस्थिति।

183. सूची-I (महासागरीय धारा) को सूची-II (प्रकार और महासागर) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागरीय धारा)
P. बेंग्वेला धारा;
Q. ब्राजील धारा;
R. ओयाशियो धारा;
S. मोजाम्बिक धारा
सूची-II (प्रकार और महासागर)
1. गर्म, हिंद;
2. ठंडी, अटलांटिक;
3. गर्म, अटलांटिक;
4. ठंडी, प्रशांत
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

184. डार्विन के अवतलन सिद्धांत के अनुसार, प्रवाल भित्ति विकास का सही क्रम क्या है?
(A) तटीय प्रवाल भित्ति → अवरोधक प्रवाल भित्ति → एटोल
(B) एटोल → अवरोधक प्रवाल भित्ति → तटीय प्रवाल भित्ति
(C) तटीय प्रवाल भित्ति → एटोल → अवरोधक प्रवाल भित्ति
(D) अवरोधक प्रवाल भित्ति → तटीय प्रवाल भित्ति → एटोल

185. गहरे महासागर तल के सबसे सपाट और सर्वाधिक विशेषताहीन क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त शब्द है:
(A) महाद्वीपीय उत्थान
(B) समुद्री पर्वत प्रांत
(C) महासागरीय गर्त
(D) गंभीर सागरीय मैदान

186. निम्नलिखित में से कौन सतही महासागरीय जल की लवणता में कमी का कारण बनेगा?
(A) वाष्पीकरण की उच्च दर
(B) ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों का पिघलना
(C) समुद्री बर्फ का निर्माण
(D) कम वर्षा

Downloaded from www.pdf.tube

187. ज्वार-भाटा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव ज्वार का सबसे महत्वपूर्ण कारण है।
(B) ज्वार पर सूर्य का गुरुत्वाकर्षण प्रभाव चंद्रमा के प्रभाव के आधे से भी कम है।
(C) ज्वार बहुत लंबी तरंग दैर्ध्य वाली एक प्रकार की उथले पानी की तरंग है।
(D) उच्चतम ज्वारीय परिसर तब होता है जब चंद्रमा अपने प्रथम या तृतीय चतुर्थांश चरण में होता है।

188. 'गाइओट' या सपाट शीर्ष वाले समुद्री पर्वत की अवधारणा किसका प्रमाण है?
(A) मध्य-महासागरीय कटकों पर सागर अधस्तल प्रसरण।
(B) गंभीर सागरीय मैदानों पर अवसाद का संचय।
(C) क्षेपण क्षेत्रों पर गर्तों का निर्माण।
(D) उन पूर्व द्वीपों का धंसना जो समुद्र के स्तर पर अपरदित हो गए थे।

189. महासागरीय निक्षेपों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नेरिटिक निक्षेप महाद्वीपीय मग्नतटों और ढालों पर पाए जाते हैं।
2. पेलाजिक निक्षेप गहरे महासागर बेसिनों में पाए जाते हैं।
3. लाल मृत्तिका एक प्रकार का नेरिटिक निक्षेप है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

190. समुद्र तल पर मैंगनीज नोड्यूल्स का निर्माण किस प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) भूमिज अवसादन
(B) हाइड्रोजेनस अवक्षेपण
(C) बायोजेनस संचय
(D) कॉस्मोजेनस निक्षेपण

191. समुद्री जल का घनत्व किसे चलाने में एक महत्वपूर्ण कारक है?
(A) दैनिक ज्वार
(B) थर्मोहेलाइन परिसंचरण
(C) सतही धाराएँ
(D) सुनामी

192. निम्नलिखित में से कौन-सी हिंद महासागर की प्रमुख कटक प्रणाली नहीं है?
(A) पूर्वी प्रशांत उत्थान
(B) कार्ल्सबर्ग कटक
(C) मध्य-हिंद कटक
(D) दक्षिण-पश्चिम हिंद कटक

193. कथन (A): अटलांटिक महासागर में प्रशांत की तरह व्यापक गर्त प्रणालियों का अभाव है।
कारण (R): अटलांटिक महासागर के किनारे मुख्य रूप से निष्क्रिय किनारे हैं, जो सक्रिय क्षेपण क्षेत्रों के बजाय महाद्वीपीय मग्नतटों और उत्थानों की विशेषता रखते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

194. सतही महासागरीय धाराओं के परिसंचरण का मुख्य कारण क्या है?
(A) कोरिओलिस बल
(B) घनत्व में अंतर
(C) तटरेखाओं का आकार
(D) प्रचलित पवनों का घर्षण खिंचाव

195. महाद्वीपीय क्रस्ट और महासागरीय क्रस्ट के बीच की सीमा किसके नीचे स्थित होती है?
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) गंभीर सागरीय मैदान
(C) महाद्वीपीय मग्नढाल
(D) मध्य-महासागरीय कटक

196. प्रवाल ऐसे समुद्री जीव हैं जो कहाँ पनपते हैं?
(A) ठंडे, गहरे और पोषक तत्वों से भरपूर ध्रुवीय जल में।
(B) गर्म, उथले और स्वच्छ उष्णकटिबंधीय जल में।
(C) मुहानों के खारे और कीचड़युक्त जल में।
(D) उच्च वाष्पीकरण वाले अति-लवणीय लैगून में।

197. निम्नतम ज्वारीय परिसर किसके दौरान होता है?
(A) वृहद् ज्वार
(B) उपभू ज्वार
(C) विषुवतीय ज्वार
(D) लघु ज्वार

198. 'पिक्नोकलाइन' शब्द जल निकाय के भीतर की उस परत को परिभाषित करता है जहाँ निम्नलिखित में से क्या तेजी से बदलता है?
(A) घनत्व
(B) तापमान
(C) लवणता
(D) रंग

199. महाद्वीपीय मग्नढाल के आधार पर बनी प्रमुख निक्षेपण विशेषता कौन-सी है?
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) जलमग्न कैनियन
(C) महाद्वीपीय उत्थान
(D) महासागरीय गर्त

NODIA

(A) महासागरीय धारा
(B) तरंग
(C) ज्वार-भाटा
(D) सुनामी

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

211. महासागरीय धाराओं और ज्वार-भाटा के बीच मुख्य अंतर यह है कि धाराएँ जल की एक _____ गति हैं, जबकि ज्वार-भाटा एक _____ गति है।
(A) ऊर्ध्वाधर; क्षैतिज
(B) निरंतर; आवधिक
(C) आवधिक; निरंतर
(D) गोलाकार; रैखिक

212. किस महासागर के अधस्तल उच्चावच की विशेषता नाइन्टी ईस्ट रिज, चागोस-लक्षद्वीप रिज और कार्ल्सबर्ग रिज की उपस्थिति है?
(A) अटलांटिक महासागर
(B) हिंद महासागर
(C) प्रशांत महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

213. कथन (A): महासागर का गहरा जल भूमध्य रेखा पर भी समान रूप से ठंडा होता है।
कारण (R): गहरे महासागर का ठंडा और सघन जल ध्रुवीय क्षेत्रों से उत्पन्न होता है जहाँ यह डूबता है और फिर भूमध्य रेखा की ओर फैलता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

214. उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकृत निम्नलिखित में से कौन-सा महासागरीय निक्षेप का प्रकार नहीं है?
(A) लिटोरल
(B) टेरिजेनस
(C) बायोजेनस
(D) हाइड्रोजेनस

215. समुद्री जल का घनत्व अधिकतम कब होता है?
(A) जब तापमान उच्च और लवणता उच्च हो।
(B) जब तापमान कम और लवणता कम हो।
(C) जब तापमान कम और लवणता उच्च हो।
(D) जब तापमान उच्च और लवणता कम हो।

216. ऑस्ट्रेलिया का 'ग्रेट बैरियर रीफ' किसका उदाहरण है?
(A) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(B) तटीय प्रवाल भित्ति
(C) एटोल
(D) ज्वालामुखीय चाप

217. ज्वार-उत्पादक दो मुख्य पिंड कौन-से हैं?
(A) सूर्य और बृहस्पति
(B) चंद्रमा और मंगल
(C) सूर्य और शुक्र
(D) चंद्रमा और सूर्य

218. "रिंग ऑफ फायर" जो प्रशांत महासागर बेसिन को घेरे हुए है, किसका क्षेत्र है?
(A) व्यापक मध्य-महासागरीय कटकों का
(B) बार-बार आने वाले भूकंपों और ज्वालामुखीय विस्फोटों का
(C) कई गंभीर सागरीय मैदानों का
(D) चौड़े और स्थिर महाद्वीपीय मग्नतटों का

219. सोमाली धारा हिंद महासागर की एक प्रमुख महासागरीय धारा है जो:
(A) पूरे वर्ष लगातार एक गर्म धारा बनी रहती है।
(B) अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा का हिस्सा है।
(C) बदलते मानसून के मौसम के साथ अपने प्रवाह की दिशा बदल देती है।
(D) बिना किसी बदलाव के पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है।

220. कौन-सा युग्म क्रमशः अटलांटिक महासागर की एक गर्म धारा और एक ठंडी धारा का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) गल्फ स्ट्रीम और ब्राजील धारा
(B) कनारी धारा और बेंग्वेला धारा
(C) उत्तरी अटलांटिक प्रवाह और फ्लोरिडा धारा
(D) गल्फ स्ट्रीम और लैब्राडोर धारा

221. डायटम और रेडियोलेरियन के कवचों से किस प्रकार का महासागरीय निक्षेप बनता है?
(A) सिलीशियस ऊज़
(B) कैल्केरियस ऊज़
(C) लाल मृत्तिका
(D) टेरिजेनस कीचड़

222. प्रवाल भित्तियों के अस्तित्व के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे महत्वपूर्ण कारक है?
(A) गहरा और ठंडा जल
(B) नदियों से उच्च अवसाद भार
(C) ध्रुवीय क्षेत्रों से निकटता
(D) उथला, गर्म और स्वच्छ जल

223. प्रत्येक दिन दो उच्च जल और दो निम्न जल वाला ज्वार, जहाँ क्रमिक ऊँचाइयों और गिरावटों में अंतर होता है, क्या कहलाता है?
(A) दैनिक ज्वार
(B) मिश्रित ज्वार
(C) अर्ध-दैनिक ज्वार
(D) लघु ज्वार

224. हिंद महासागर की मध्य-महासागरीय कटक अटलांटिक महासागर की कटक से मुख्य रूप से अलग है क्योंकि यह:
(A) उल्टे 'Y' आकार की और अधिक जटिल है
(B) बहुत गहरी और कम निरंतर है
(C) ज्वालामुखीय रूप से पूरी तरह निष्क्रिय है
(D) प्रसरण के बजाय क्षेपण का एक क्षेत्र है

Downloaded from www.pdf.tube

200. महासागरीय कटकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अटलांटिक महासागर में एक मध्य-महासागरीय कटक है जो मोटे तौर पर 'S'-आकार की है।
कथन II: प्रशांत महासागर का तल अटलांटिक की तरह एक केंद्रीय कटक के प्रभुत्व में है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

201. उत्तरी हिंद महासागर में महासागरीय धाराओं का प्रवाह अद्वितीय है क्योंकि यह किससे प्रभावित होता है?
(A) केवल कोरिओलिस प्रभाव से
(B) हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने से
(C) मध्य-हिंद कटक के आकार से
(D) मानसूनी पवनों के मौसमी उत्क्रमण से

202. इनमें से कौन-सा मनुष्यों द्वारा महासागरीय संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं है?
(A) नमक का निष्कर्षण
(B) वैश्विक जलवायु का नियमन
(C) मत्स्य पालन और जलीय कृषि
(D) अपतटीय तेल ड्रिलिंग

203. सूची-I (शब्द) को सूची-II (संबंधित विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (शब्द)
P. एटोल;
Q. गाइओट;
R. गर्त;
S. मग्नतट
सूची-II (संबंधित विशेषता)
1. सपाट शीर्ष वाला समुद्री पर्वत;
2. क्षेपण क्षेत्र;
3. जलमग्न महाद्वीपीय किनारा;
4. वलयाकार प्रवाल भित्ति
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

204. विश्व के महासागरों में उच्चतम लवणता सामान्यतः कहाँ पाई जाती है?
(A) भूमध्य रेखा पर
(B) ध्रुवीय क्षेत्रों में
(C) उप-ध्रुवीय क्षेत्रों में (लगभग 50-60° अक्षांश)
(D) उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में (लगभग 20-30° अक्षांश)

205. एक प्रवाल भित्ति एक गोलाकार वलय बनाती है जो एक लैगून को घेरती है जहाँ एक ज्वालामुखी द्वीप पूरी तरह से समुद्र के नीचे डूब गया है। यह विशेषता है:
(A) एटोल
(B) तटीय प्रवाल भित्ति
(C) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(D) प्रवाल मंच

206. महासागर में तापमान के ऊर्ध्वाधर क्षेत्रीकरण के लिए जिम्मेदार मुख्य कारक क्या है?
(A) समुद्र तल से भू-तापीय ऊष्मा का निकलना।
(B) तेज पवनों द्वारा जल का एक समान मिश्रण।
(C) ठंडे और खारे जल का निरंतर डूबना।
(D) सूर्य द्वारा सतही जल का गर्म होना।

207. पेरू धारा (या हम्बोल्ट धारा) एक ठंडी धारा है जो किसका कारण बनती है?
(A) पेरू और चिली के तट पर गर्म और आर्द्र स्थितियाँ।
(B) पेरू और चिली के तट पर शुष्क और ठंडी स्थितियाँ।
(C) अटाकामा मरुस्थल में वर्ष भर भारी वर्षा।
(D) दक्षिण-पूर्व प्रशांत क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का निर्माण।

208. गंभीर सागरीय मैदानों के बारे में कौन-सा कथन सही है?
(A) अवसादों की मोटी परतों के जमा होने के कारण ये असाधारण रूप से सपाट हैं।
(B) ये खड़ी ढलानों और ऊबड़-खाबड़ इलाके की विशेषता रखते हैं।
(C) ये महासागरों के सबसे गहरे भाग हैं।
(D) ये महाद्वीपीय मग्नतट और महाद्वीपीय मग्नढाल के बीच स्थित हैं।

209. महासागरीय उच्चावच के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. महाद्वीपीय मग्नढाल महाद्वीपीय किनारे का सबसे तीव्र ढाल वाला हिस्सा है।
2. मध्य-अटलांटिक कटक प्लेट अपसरण का एक क्षेत्र है।
3. महासागरीय गर्त आमतौर पर निष्क्रिय महाद्वीपीय किनारों पर पाए जाते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

210. एटोल निर्माण के डेली के हिमानी नियंत्रण सिद्धांत के पीछे मूल विचार क्या है?
(A) समुद्र तल का धीमा और निरंतर धंसना।
(B) हिमयुग के अनुरूप समुद्र के स्तर का बढ़ना और गिरना।
(C) समुद्री जल में चूना पत्थर का रासायनिक विघटन।
(D) विवर्तनिक प्लेटों की क्षैतिज गति।

NODIA

(B) उत्तरी अटलांटिक महासागर
(C) दक्षिण अटलांटिक महासागर
(D) हिंद महासागर

238. अपवेलिंग वाले क्षेत्रों में उच्च जैविक उत्पादकता का मुख्य कारण क्या है?
(A) गर्म जल का तापमान
(B) गहरे महासागर से सतह तक पोषक तत्वों का परिवहन
(C) सूर्य के प्रकाश की उच्च मात्रा
(D) जल की कम लवणता

239. कथन (A): अटलांटिक महासागर के महाद्वीपीय मग्नतट प्रशांत महासागर के मग्नतटों की तुलना में बहुत अधिक चौड़े हैं।
कारण (R): अटलांटिक महासागर के तट काफी हद तक निष्क्रिय किनारे हैं, जबकि प्रशांत के तट प्लेट अभिसरण से जुड़े सक्रिय किनारे हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

240. उच्च और निम्न ज्वार के बीच ऊँचाई के अंतर से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) ज्वारीय ऊर्जा
(B) महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण (OTEC)
(C) तरंग ऊर्जा
(D) लवणता प्रवणता ऊर्जा

241. हिंद महासागर का अधस्तल उच्चावच किसके द्वारा विशिष्ट है?
(A) अत्यधिक सरलता और एकरूपता।
(B) एक एकल और निरंतर केंद्रीय कटक।
(C) कटकों, पठारों और बेसिनों की एक जटिल प्रणाली।
(D) किसी भी गर्त या गहराई का पूर्ण अभाव।

242. प्रवाल भित्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एटोल आमतौर पर अटलांटिक महासागर में पाए जाते हैं।
कथन II: तटीय प्रवाल भित्तियाँ विश्व स्तर पर पाई जाने वाली सबसे सामान्य प्रकार की भित्तियाँ हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

243. निम्नलिखित में से कौन-सी महासागरीय गर्तों की विशेषता नहीं है?
(A) वे लंबी, संकीर्ण और बहुत गहरी होती हैं।
(B) वे अभिसारी प्लेट सीमाओं से जुड़ी होती हैं।
(C) वे नई महासागरीय क्रस्ट के निर्माण के लिए प्राथमिक स्थान हैं।
(D) वे सक्रिय ज्वालामुखी और भूकंप के स्थल हैं।

244. निम्नलिखित में से किस स्थिति के परिणामस्वरूप समुद्री जल का घनत्व उच्चतम होगा?
(A) कम तापमान, उच्च लवणता
(B) उच्च तापमान, उच्च लवणता
(C) कम तापमान, कम लवणता
(D) उच्च तापमान, कम लवणता

245. गल्फ स्ट्रीम, उत्तरी अटलांटिक प्रवाह और कनारी धारा सभी किसके हिस्से हैं?
(A) उत्तरी प्रशांत गायर
(B) दक्षिण अटलांटिक गायर
(C) हिंद महासागर मानसूनी गायर
(D) उत्तरी अटलांटिक गायर

246. टेरिजेनस अवसादों की प्राथमिक उत्पत्ति है:
(A) महाद्वीपीय भू-भागों का अपरदन।
(B) समुद्री जीवों के कंकाल अवशेष।
(C) समुद्री जल से खनिजों का अवक्षेपण।
(D) बाह्य अंतरिक्ष से धूल गिरना।

247. प्रवाल भित्ति निर्माण का वह सिद्धांत जो हिमयुग से जुड़े समुद्र के स्तर में परिवर्तन पर आधारित है:
(A) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
(B) मरे का समाधान सिद्धांत
(C) डेली का हिमानी-नियंत्रण सिद्धांत
(D) हेस का प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत

248. अर्ध-दैनिक प्रणाली में दो क्रमिक उच्च ज्वारों के बीच का समय अंतराल लगभग कितना होता है?
(A) 12 घंटे और 26 मिनट
(B) 6 घंटे और 13 मिनट
(C) 24 घंटे और 52 मिनट
(D) 24 घंटे

249. महासागरीय अधस्तल उच्चावच के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रशांत महासागर में मध्य-महासागरीय कटकों की सबसे विस्तृत प्रणाली है।
2. प्रशांत की तुलना में अटलांटिक महासागर में महासागरीय गर्त अपेक्षाकृत कम हैं।
3. हिंद महासागर का उच्चावच कई सूक्ष्म महाद्वीपों और कटकों के कारण जटिल है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3

Click Here to Buy book on Amazon

225. महासागरीय संसाधनों के लिए प्रयुक्त शब्द क्या है जिसमें मछली, क्रस्टेशियंस और समुद्री स्तनधारी शामिल हैं?
(A) खनिज संसाधन
(B) ऊर्जा संसाधन
(C) जैविक संसाधन
(D) रासायनिक संसाधन

226. महाद्वीपीय मग्नढाल का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) तटरेखा से विस्तारित एक मंद ढाल वाला जलमग्न मैदान।
(B) गहरे महासागर बेसिन में एक सपाट और अवसादों से ढका क्षेत्र।
(C) महाद्वीपीय किनारे को काटने वाली एक गहरी और संकीर्ण घाटी।
(D) एक तीव्र ढाल जो महाद्वीप के वास्तविक किनारे को चिह्नित करती है।

227. यदि समुद्री बर्फ पिघलती है, तो आसपास के समुद्री जल की लवणता:
(A) बढ़ेगी
(B) वही रहेगी
(C) घटेगी
(D) शून्य हो जाएगी

228. "सारगासो सागर" किसके केंद्र में शांत और गर्म जल का एक बड़ा क्षेत्र है?
(A) उत्तरी प्रशांत गायर
(B) उत्तरी अटलांटिक गायर
(C) दक्षिणी अटलांटिक गायर
(D) हिंद महासागर गायर

229. सूची-I (महासागरीय उच्चावच विशेषता) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागरीय उच्चावच विशेषता)
P. महाद्वीपीय मग्नतट;
Q. गंभीर सागरीय मैदान;
R. महासागरीय गर्त;
S. मध्य-महासागरीय कटक
सूची-II (विवरण)
1. गहरे अवनमन
2. पर्वत श्रृंखला;
3. जलमग्न महाद्वीप;
4. सपाट क्षेत्र
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

230. चार्ल्स डार्विन का एटोल निर्माण का सिद्धांत मुख्य रूप से किस सिद्धांत पर आधारित है?
(A) समुद्र तल का क्रमिक अवतलन
(B) हिमयुग के दौरान समुद्र के स्तर में परिवर्तन
(C) प्रवाल चट्टान का रासायनिक विघटन
(D) महासागरीय क्रस्ट का तीव्र उत्थान

231. समुद्री जल के घनत्व के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) लवणता में वृद्धि से घनत्व बढ़ता है।
(B) तापमान में वृद्धि से घनत्व घटता है।
(C) विश्व के महासागरों में घनत्व एक समान है।
(D) दबाव में वृद्धि से घनत्व बढ़ता है।

232. समुद्री जल की बड़े पैमाने पर, निरंतर और दिशात्मक गति को क्या कहा जाता है?
(A) महासागरीय धारा
(B) ज्वार
(C) तट-अनुगामी विस्थापन
(D) सुनामी

233. महासागर में गहराई के साथ तीव्र तापमान परिवर्तन के क्षेत्र को क्या कहा जाता है?
(A) हैलोकलाइन
(B) पिक्नोकलाइन
(C) फोटिक ज़ोन
(D) थर्मोकलाइन

234. प्रशांत महासागर की विशेषता निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी हैं?
(A) कई गहरी समुद्री गर्त
(B) एक बड़ी, सरल और 'S'-आकार की मध्य-महासागरीय कटक
(C) 'रिंग ऑफ फायर'
(D) कई समुद्री पर्वतों और गाइओट की उपस्थिति

235. जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के समकोण पर होते हैं, तो ज्वारीय बल न्यूनतम हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप क्या होता है?
(A) वृहद् ज्वार
(B) उपभू ज्वार
(C) लघु ज्वार
(D) दैनिक ज्वार

236. महासागर तल पर पाए जाने वाले कीचड़, गाद और रेत जैसे निक्षेप मुख्य रूप से किस रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं?
(A) बायोजेनस
(B) हाइड्रोजेनस
(C) कॉस्मोजेनस
(D) टेरिजेनस

237. ओयाशियो धारा एक ठंडी उप-आर्कटिक धारा है जो दक्षिण की ओर बहती है और कहाँ वामावर्त घूमती है?
(A) उत्तरी प्रशांत महासागर

NODIA

262. महासागर के सबसे गहरे हिस्सों में पाया जाने वाला सबसे व्यापक प्रकार का अगाधसागरीय अवसाद है:
(A) लाल मृत्तिका
(B) कैल्केरियस ऊज़
(C) सिलीशियस ऊज़
(D) टेरोपोड ऊज़

263. जो संबंध ब्राजील धारा का दक्षिण अटलांटिक से है, वही संबंध _____ का उत्तरी अटलांटिक से है।
(A) लैब्राडोर धारा
(B) कनारी धारा
(C) गल्फ स्ट्रीम
(D) बेंग्वेला धारा

264. जैसे-जैसे कोई महाद्वीप की तटरेखा से गहरे महासागर में जाता है, विशेषताओं के सही क्रम को व्यवस्थित करें:
1. गंभीर सागरीय मैदान
2. महाद्वीपीय उत्थान
3. महाद्वीपीय मग्नढाल
4. महाद्वीपीय मग्नतट
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 4, 2, 3, 1
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 4, 2, 1

265. प्रवाल भित्तियों के तीन मुख्य प्रकार हैं:
(A) तटीय, अवरोधक और एटोल
(B) कैल्केरियस, सिलीशियस और टेरिजेनस
(C) उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण
(D) तटीय, अवरोधक और एटोल

266. समुद्री जल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: समुद्री जल का घनत्व उसके तापमान और लवणता का परिणाम है।
कथन II: ठंडा और अत्यधिक खारा जल, गर्म और कम खारे जल की तुलना में अधिक सघन होता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

267. सतही और गहरे महासागरीय जल के बीच तापमान के अंतर से प्राप्त ऊर्जा संसाधन को किस रूप में जाना जाता है?
(A) ज्वारीय ऊर्जा
(B) तरंग ऊर्जा
(C) महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण (OTEC)
(D) धारा ऊर्जा

268. मध्य-अटलांटिक कटक किस प्रकार की महासागरीय विशेषता का उदाहरण है?
(A) एक अभिसारी प्लेट सीमा
(B) एक रूपांतर भ्रंश
(C) एक क्षेपण क्षेत्र
(D) एक अपसारी प्लेट सीमा

269. क्यूरोशियो धारा प्रशांत महासागर की एक गर्म धारा है जिसके प्रभाव किस अटलांटिक धारा के समान हैं?
(A) गल्फ स्ट्रीम
(B) लैब्राडोर धारा
(C) कनारी धारा
(D) बेंग्वेला धारा

270. डेली के हिमानी नियंत्रण सिद्धांत में, हिमयुग की क्या भूमिका है?
(A) वे बर्फ के भार के कारण समुद्र तल को धंसने का कारण बनते हैं।
(B) वे जल को प्रवाल के जीवित रहने के लिए बहुत ठंडा कर देते हैं।
(C) वे चट्टानों और अवसादों का परिवहन करते हैं जो भित्तियों के लिए आधार बनाते हैं।
(D) वे समुद्र के स्तर को गिराने का कारण बनते हैं, जिससे लहरों की क्रिया प्रवाल वृद्धि के लिए प्लेटफॉर्म बनाने में सहायक होती है।

271. महासागर की सतह के दिन में दो बार उठने और गिरने का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) पवन पैटर्न
(B) चंद्रमा और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(C) पृथ्वी का घूर्णन
(D) तापमान और लवणता में अंतर

272. कौन-सा महासागर इस विशेषता वाला है कि उसका उत्तरी भाग मानसूनी पवनों के कारण अपने सतही परिसंचरण को उलट देता है?
(A) हिंद महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) प्रशांत महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

273. गंभीर सागरीय मैदानों पर पाए जाने वाले पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स किसका उदाहरण हैं?
(A) टेरिजेनस निक्षेप
(B) बायोजेनस निक्षेप
(C) हाइड्रोजेनस निक्षेप
(D) कॉस्मोजेनस निक्षेप

274. निम्नलिखित में से कौन 'थर्मोकलाइन' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) निरंतर तापमान की एक परत।
(B) महासागर की सबसे ठंडी परत।
(C) महासागर की सबसे गर्म परत।

Downloaded from www.pdf.tube

(D) एक परत जहाँ गहराई के साथ तापमान तेजी से बदलता है।

275. मारियाना गर्त, जो विश्व के महासागरों का सबसे गहरा भाग है, कहाँ स्थित है?
(A) अटलांटिक महासागर
(B) हिंद महासागर
(C) प्रशांत महासागर
(D) दक्षिणी महासागर

276. किसी महाद्वीप या द्वीप के तट से सीधे जुड़ी प्रवाल भित्ति को क्या कहा जाता है?
(A) एटोल
(B) अवरोधक प्रवाल भित्ति
(C) तटीय प्रवाल भित्ति
(D) गाइओट

277. समुद्री जल का घनत्व मुख्य रूप से किन दो चरों पर निर्भर करता है?
(A) तापमान और दबाव
(B) लवणता और गहराई
(C) दबाव और प्रकाश
(D) तापमान और लवणता

278. उत्तरी गोलार्ध में महासागरीय धाराओं के दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर के विक्षेपण को किस रूप में जाना जाता है?
(A) कोरिओलिस प्रभाव
(B) जियोस्ट्रोफिक प्रभाव
(C) एकमैन स्पाइरल
(D) दाब प्रवणता बल

279. सूची-I (महासागरीय संसाधन) को सूची-II (प्रकार) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागरीय संसाधन)
P. मछली
Q. ज्वारीय शक्ति;
R. मैंगनीज नोड्यूल्स;
S. पेट्रोलियम
सूची-II (प्रकार)
1. ऊर्जा;
2. खनिज (जलजनित);
3. जैविक;
4. खनिज (जीवाश्म ईंधन)
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

280. 'अल्बाट्रॉस पठार' किसकी एक प्रमुख उच्चावच विशेषता है?
(A) पूर्वी प्रशांत महासागर
(B) पश्चिमी अटलांटिक महासागर
(C) केंद्रीय हिंद महासागर
(D) उत्तरी आर्कटिक महासागर

281. प्रवाल भित्तियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्हें सहजीवी शैवाल के जीवित रहने के लिए स्वच्छ और सूर्य के प्रकाश वाले जल की आवश्यकता होती है।
2. वे जल के तापमान में परिवर्तन के प्रति अत्यधिक लचीले होते हैं।
3. तीन मुख्य प्रकार तटीय, अवरोधक और एटोल हैं।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

282. अटलांटिक महासागर के तल-मापन के बारे में कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसमें एक प्रमुख S-आकार की मध्य-महासागरीय कटक है।
(B) यह गहरी समुद्री गर्तों की लगभग निरंतर प्रणाली से घिरा हुआ है।
(C) इसके महाद्वीपीय मग्नतट विश्व के सबसे चौड़े मग्नतटों में से हैं।
(D) आइसलैंड इसकी मध्य-महासागरीय कटक का एक उभरा हुआ हिस्सा है।

283. ठंडे, गहरे और पोषक तत्वों से भरपूर जल का अपवेलिंग किससे संबंधित है?
(A) कम जैविक उत्पादकता।
(B) प्रवाल एटोल का निर्माण।
(C) विश्व के महान मत्स्य क्षेत्र।
(D) गर्म और शुष्क तटीय जलवायु।

284. कथन (A): भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में लवणता उपोष्णकटिबंधीय अश्व अक्षांशों की तुलना में कम है।
कारण (R): भूमध्यरेखीय क्षेत्र में भारी दैनिक वर्षा होती है, जो सतही समुद्री जल को पतला कर देती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

285. इनमें से कौन-सा निक्षेप जैविक माना जाता है?
(A) ग्लोबोजेरिना ऊज़
(B) रेत
(C) लाल मृत्तिका
(D) मैंगनीज नोड्यूल्स

NODIA

286. वृहद् ज्वार की विशेषता क्या है?
(A) एक बहुत छोटी ज्वारीय सीमा।
(B) एक बहुत बड़ी ज्वारीय सीमा।
(C) केवल वसंत ऋतु के दौरान आना।
(D) केवल सूर्य के गुरुत्वाकर्षण के कारण होना।

287. दक्षिणी गोलार्ध में निम्नलिखित में से कौन-सी ठंडी धारा है?
(A) वेस्ट विंड ड्रिफ्ट
(B) ब्राजील धारा
(C) अगुलहास धारा
(D) पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई धारा

288. 'महाद्वीपीय उत्थान' किसे संदर्भित करता है?
(A) महाद्वीपीय ढाल के तल पर अवसादों का संचय।
(B) समुद्र के स्तर से ऊपर महाद्वीप का उभरा हुआ भाग।
(C) महाद्वीपीय मग्नतट के किनारे पर तीव्र ढाल।
(D) गंभीर सागरीय मैदान से उठने वाला एक ज्वालामुखीय पर्वत।

289. एक ज्वालामुखी द्वीप का धीरे-धीरे धंसना जिससे प्रवाल भित्ति ऊपर और बाहर की ओर बढ़ सके, किसका केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) मरे का समाधान सिद्धांत
(B) डेली का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
(C) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
(D) वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत

290. समुद्री जल का घनत्व कब बढ़ता है?
(A) लवणता घटने और तापमान बढ़ने पर।
(B) लवणता घटने और तापमान घटने पर।
(C) लवणता बढ़ने और तापमान बढ़ने पर।
(D) लवणता बढ़ने और तापमान घटने पर।

291. नाइन्टी ईस्ट रिज एक महत्वपूर्ण अधस्तल विशेषता है जो कहाँ स्थित है?
(A) प्रशांत महासागर
(B) अटलांटिक महासागर
(C) हिंद महासागर
(D) आर्कटिक महासागर

292. गहरे और धीमी गति से चलने वाले थर्मोहेलाइन परिसंचरण का प्रेरक तंत्र क्या है?
(A) महासागर की सतह पर पवन घर्षण।
(B) तापमान और लवणता में भिन्नता के कारण घनत्व में अंतर।
(C) चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव।
(D) सतही जल पर कार्य करने वाला कोरिओलिस प्रभाव।

293. महासागरीय संसाधनों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) मैंगनीज नोड्यूल्स को एक जैविक संसाधन माना जाता है।
(B) ज्वारीय शक्ति एक गैर-नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन है।
(C) महासागर के जल को स्वयं एक संसाधन नहीं माना जाता है।
(D) महाद्वीपीय मग्नतट पेट्रोलियम और मत्स्य पालन दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

294. महाद्वीपीय ढाल और गंभीर सागरीय मैदान के बीच का सीमा क्षेत्र, जो मंद ढाल और अवसादों के निक्षेपण की विशेषता वाला है, कहलाता है:
(A) महाद्वीपीय उत्थान
(B) महाद्वीपीय मग्नतट
(C) महासागरीय गर्त
(D) जलमग्न कैनियन

295. 'आइसोथर्म' शब्द समान _____ वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा को संदर्भित करता है।
(A) लवणता
(B) घनत्व
(C) तापमान
(D) दबाव

296. 'वेस्ट विंड ड्रिफ्ट' एक महासागरीय धारा है जो बहती है:
(A) पश्चिम से पूर्व की ओर, अंटार्कटिका की परिक्रमा करते हुए।
(B) भूमध्य रेखा के साथ पूर्व से पश्चिम की ओर।
(C) उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ उत्तर की ओर।
(D) दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तट के साथ दक्षिण की ओर।

297. गहरी महासागरीय गर्तों के अस्तित्व का मुख्य कारण क्या है?
(A) सागर अधस्तल प्रसरण
(B) महाद्वीपीय टकराव
(C) टर्बिडिटी धाराओं द्वारा अपरदन
(D) एक महासागरीय प्लेट का क्षेपण

298. गहराई के साथ जल के घनत्व में परिवर्तन किस क्षेत्र में सबसे अधिक स्पष्ट होता है?
(A) एपिपेलैजिक ज़ोन
(B) पिक्नोकलाइन
(C) मेसोपेलैजिक ज़ोन
(D) बेन्थिक ज़ोन

299. गहरे महासागर तल के सपाट और विस्तृत क्षेत्र को किस रूप में जाना जाता है?
(A) महाद्वीपीय मग्नतट
(B) मध्य-महासागरीय कटक
(C) गंभीर सागरीय मैदान
(D) महासागरीय गर्त

300. समुद्र के स्तर के समयबद्ध ऊपर उठने और गिरने को क्या कहा जाता है?

Click Here to Buy book on Amazon

(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

250. समुद्र विज्ञान में 'हैलोकलाइन' शब्द का प्रयोग किसके तीव्र परिवर्तन के क्षेत्र का वर्णन करने के लिए किया जाता है?
(A) तापमान
(B) लवणता
(C) घनत्व
(D) ऑक्सीजन सामग्री

251. मोजाम्बिक धारा एक गर्म धारा है जो किसके तट पर पाई जाती है?
(A) दक्षिण अमेरिका
(B) पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया
(C) दक्षिण-पूर्व अफ्रीका
(D) पूर्वी एशिया

252. गंभीर सागरीय मैदान उल्लेखनीय रूप से सपाट हैं क्योंकि:
(A) वे विशाल लावा प्रवाह से बने हैं जो समान रूप से ठंडे हुए थे।
(B) गहरी महासागरीय धाराओं ने सभी उच्चावचों को अपरदित कर दिया है।
(C) वे पृथ्वी की मूल और चिकनी क्रस्ट का प्रतिनिधित्व करते हैं।
(D) अवसादों की एक मोटी चादर ने अंतर्निहित उबड़-खाबड़ स्थलाकृति को दफन कर दिया है।

253. सूची-I (महासागर) को सूची-II (धारा) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची-I (महासागर)
P. अटलांटिक महासागर
Q. प्रशांत महासागर
R. हिंद महासागर
सूची-II (धारा)
1. अगुलहास धारा
2. कनारी धारा
3. कैलिफोर्निया धारा
(A) P-1, Q-2, R-3
(B) P-2, Q-3, R-1
(C) P-3, Q-1, R-2
(D) P-2, Q-1, R-3

254. किस प्रकार के महासागरीय निक्षेप में फोरामिनिफेरा जैसे एककोशिकीय जीवों के कंकाल अवशेष होते हैं?
(A) टेरिजेनस कीचड़
(B) कैल्केरियस ऊज़
(C) हाइड्रोजेनस नोड्यूल्स
(D) कॉस्मोजेनस धूल

255. तटीय प्रवाल भित्ति और अवरोधक प्रवाल भित्ति के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) वे जिस प्रकार के प्रवाल से बने होते हैं।
(B) भित्ति और तट के बीच एक महत्वपूर्ण लैगून की उपस्थिति।
(C) जल का तापमान जिसमें वे उगते हैं।
(D) अंतर्निहित ज्वालामुखीय चट्टान की आयु।

256. कथन (A): उत्तरी गोलार्ध में सतही महासागरीय धाराएँ दाईं ओर विक्षेपित होती हैं।
कारण (R): पृथ्वी के घूर्णन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाला कोरिओलिस प्रभाव इस विक्षेपण का कारण बनता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन A सही है, लेकिन दिया गया कारण R गलत है।
(D) कथन A गलत है, लेकिन दिया गया कारण R सही है।

257. समुद्री जल का तापमान बढ़ने पर उसके घनत्व का क्या होता है?
(A) यह बढ़ता है।
(B) यह स्थिर रहता है।
(C) यह घटता है।
(D) यह पहले बढ़ता है, फिर घटता है।

258. रोमनचे डीप और जावा गर्त क्रमशः किन दो महासागरों में स्थित हैं?
(A) अटलांटिक और प्रशांत
(B) प्रशांत और हिंद
(C) हिंद और अटलांटिक
(D) अटलांटिक और हिंद

NODIA

259. वृहद् ज्वार के दौरान उच्चतम ज्वार आते हैं। ऐसा तब होता है जब:
(A) सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के सापेक्ष 90 डिग्री का कोण बनाते हैं।
(B) पृथ्वी अपनी कक्षा में सूर्य के सबसे निकट होती है।
(C) सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा संरेखण में होते हैं।
(D) चंद्रमा अपने अपभू पर होता है।

260. निम्नलिखित में से कौन-सा समुद्री जल का प्रमुख भौतिक गुण नहीं है?
(A) तापमान
(B) घनत्व
(C) लवणता
(D) अम्लता

261. एक सपाट शीर्ष वाले जलमग्न ज्वालामुखी को क्या कहा जाता है?
(A) समुद्री पर्वत
(B) एटोल
(C) गर्त
(D) गाइओट

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) महाद्वीपीय मग्नतट
महाद्वीपीय मग्नतट महाद्वीप का वह जलमग्न विस्तार है जो समुद्र के तट से शुरू होकर महाद्वीपीय ढाल तक फैला होता है। इसकी औसत गहराई सामान्यतः 200 मीटर तक होती है और इसका ढाल अत्यंत मंद होता है। यह क्षेत्र सूर्य के प्रकाश की प्रचुरता के कारण समुद्री वनस्पतियों और जीवों के विकास के लिए सर्वोत्तम स्थल है। यहाँ पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे मूल्यवान संसाधनों के भंडार पाए जाते हैं।

2. (A) प्रशांत महासागर
चैलेंजर डीप महासागरों का सबसे गहरा ज्ञात बिंदु है जो पश्चिमी प्रशांत महासागर में मारियाना गर्त के दक्षिणी छोर पर स्थित है। इसकी गहराई समुद्र तल से लगभग 11,000 मीटर नीचे दर्ज की गई है। यह गर्त प्रशांत प्लेट और फिलीपीन प्लेट के बीच होने वाले अभिसरण और क्षेपण की प्रक्रिया का परिणाम है। यहाँ जल का दबाव बहुत अधिक और तापमान हिमांक के अत्यंत समीप होता है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
महासागरीय जल का तापमान अक्षांश और गहराई के आधार पर भिन्न होता है। भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं जिससे सतही जल गर्म होता है, जबकि ध्रुवों की ओर तापमान घटता जाता है। इसी प्रकार महासागर की ऊपरी सतह सौर विकिरण को सीधे अवशोषित करती है, लेकिन गहराई बढ़ने के साथ सूर्य का प्रकाश कम होता जाता है जिससे गहराई में तापमान तेजी से गिरकर स्थिर हो जाता है।

4. (D) लघु ज्वार के परिणामस्वरूप उच्चतम उच्च ज्वार और निम्नतम निम्न ज्वार आते हैं।
लघु ज्वार तब उत्पन्न होते हैं जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के सापेक्ष समकोण पर होते हैं, जिससे उनके गुरुत्वाकर्षण बल एक-दूसरे के प्रभाव को आंशिक रूप से संतुलित कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप ज्वारीय परिसर न्यूनतम हो जाता है, जिसका अर्थ है कि उच्च ज्वार सामान्य से कम ऊंचे और निम्न ज्वार कम नीचे होते हैं। उच्चतम उच्च ज्वार केवल वृहद् ज्वार के समय ही संभव होते हैं।

5. (A) P-3, Q-2, R-1, S-2
महासागरीय धाराएँ विभिन्न महासागरों में विशिष्ट परिसंचरण तंत्र बनाती हैं। अगुलहास धारा हिंद महासागर की एक गर्म धारा है जो अफ्रीका के पूर्वी तट पर बहती है। क्यूरोशियो धारा प्रशांत महासागर की गर्म धारा है जबकि पेरु धारा इसी महासागर की एक ठंडी धारा है। गल्फ स्ट्रीम उत्तरी अटलांटिक महासागर की प्रमुख गर्म जलधारा है जो उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट से यूरोप की ओर ऊष्मा पहुँचाती है।

6. (B) महासागरीय धाराएँ
महासागरीय धाराएँ महासागर के जल की निश्चित दिशा में निरंतर होने वाली सामूहिक गति हैं जो पवन, घनत्व और कोरिओलिस बल द्वारा संचालित होती हैं। पेरु के तट से ऑस्ट्रेलिया की ओर जाने वाले जहाज को पश्चिम की ओर धकेलने वाली शक्ति मुख्य रूप से दक्षिण विषुवतीय धारा होती है। यह धारा व्यापारिक पवनों के प्रभाव से निरंतर पश्चिम की ओर बहती है और समुद्री जहाजों के मार्ग को प्रभावित करती है।

7. (D) गंभीर सागरीय मैदान
गंभीर सागरीय मैदान महासागर बेसिन के वे विस्तृत और अत्यंत सपाट क्षेत्र हैं जो 3,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर पाए जाते हैं। ये मैदान भूमि से आने वाले सूक्ष्म अवसादों और समुद्री जीवों के अवशेषों की मोटी परतों से ढके होते हैं। समतलता के कारण इन्हें पृथ्वी का सबसे चिकना क्षेत्र माना जाता है। ये मैदान महाद्वीपीय उत्थान और मध्य-महासागरीय कटकों के बीच स्थित होकर अधिकांश भाग घेरते हैं।

8. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य-अटलांटिक कटक अटलांटिक महासागर के मध्य स्थित एक विशाल पर्वत श्रृंखला है जहाँ दो विवर्तनिक प्लेटें एक-दूसरे से दूर जा रही हैं। इस प्रक्रिया को सागर अधस्तल प्रसरण कहा जाता है जिसमें पृथ्वी के भीतर से मैग्मा निकलकर नई महासागरीय क्रस्ट का निर्माण करता है। इसी प्रसरण के कारण अटलांटिक महासागर की चौड़ाई धीरे-धीरे बढ़ रही है। अतः कटक की उपस्थिति और प्रसरण की प्रक्रिया पूर्णतः संबंधित हैं।

9. (C) वाष्पीकरण की उच्च दर का वर्षण से अधिक होना
लाल सागर जैसे उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उच्च लवणता का मुख्य कारण वहाँ की विशिष्ट जलवायु स्थितियाँ हैं। इन क्षेत्रों में सूर्य की तीव्र गर्मी के कारण वाष्पीकरण की दर बहुत अधिक होती है जबकि वर्षा नगण्य होती है। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में ताजे जल की आपूर्ति करने वाली बड़ी नदियों का अभाव होता है। जब जल वाष्पित होता है तो लवण पीछे छूट जाते हैं जिससे समुद्री जल में लवण सांद्रण बढ़ता है।

10. (A) ये गोलाकार या अंडाकार प्रवाल भित्तियाँ हैं जो एक केंद्रीय लैगून को घेरती हैं।
एटोल प्रवाल भित्तियों का विशिष्ट प्रकार है जो घोड़े की नाल या वलय के आकार में होते हैं। इनके मध्य में एक शांत उथला जल क्षेत्र होता है जिसे लैगून कहा जाता है। इनका निर्माण प्रायः किसी जलमग्न ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर प्रवाल की ऊपर की ओर वृद्धि के कारण होता है। ये भित्तियाँ मुख्य भूमि से स्वतंत्र होती हैं और खुले महासागर में स्थित द्वीपों के रूप में दिखाई देती हैं।

NODIA

निरंतर पर्वत श्रृंखलाओं और द्वीपों के निर्माण के लिए उत्तरदायी होती हैं।

33. (B) केवल 1
दैनिक ज्वार की विशेषता प्रत्येक सौर दिन में केवल एक उच्च ज्वार और एक निम्न ज्वार का आना है। अर्ध-दैनिक ज्वार में दो उच्च और दो निम्न ज्वार आते हैं जिनकी ऊंचाई लगभग समान होती है। जब इन ज्वारों की ऊंचाई में काफी अंतर होता है तो उन्हें मिश्रित ज्वार कहा जाता है। वृहद् ज्वार के समय ज्वारीय परिसर अधिकतम होता है। अतः केवल प्रथम कथन ज्वार के वर्गीकरण और प्रकृति को सही परिभाषित करता है।

34. (A) अवरोधक प्रवाल भित्ति
अवरोधक प्रवाल भित्ति एक विशाल प्रवाल संरचना है जो मुख्य भूमि या द्वीप के तट के समानांतर विकसित होती है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यह तट से एक चौड़े और गहरे लैगून द्वारा अलग होती है। यह भित्ति समुद्र की शक्तिशाली लहरों से तट की रक्षा करती है और शांत जल का क्षेत्र बनाती है। ऑस्ट्रेलिया की ग्रेट बैरियर रीफ दुनिया की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध अवरोधक प्रवाल भित्ति है।

35. (C) अपवेलिंग
अपवेलिंग एक महासागरीय प्रक्रिया है जिसमें पवनें सतह के जल को तट से दूर धकेल देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप नीचे का ठंडा और पोषक तत्वों से भरपूर जल ऊपर की ओर आता है। यह जल नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे खनिजों से समृद्ध होता है जो प्लवक की वृद्धि को बढ़ावा देता है। यही कारण है कि अपवेलिंग वाले क्षेत्र दुनिया के सबसे उत्पादक मत्स्य क्षेत्र माने जाते हैं। पेरु का तट इसका प्रसिद्ध उदाहरण है।

36. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अटलांटिक महासागर के किनारे मुख्य रूप से निष्क्रिय महाद्वीपीय किनारे हैं जहाँ विवर्तनिक गतिविधियाँ जैसे कि क्षेपण और तीव्र भूकंप अत्यंत कम होते हैं। यहाँ के तट प्राचीन और स्थिर हैं जिससे लंबी अवधि में अवसादों का निरंतर संचय हुआ है और विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतटों का निर्माण हुआ है। इसके विपरीत प्रशांत महासागर सक्रिय प्लेट सीमाओं से घिरा है जहाँ मग्नतट अत्यंत संकीर्ण होते हैं। अतः विवर्तनिक स्थिरता प्रमुख कारण है।

37. (C) 35 प्रति हजार भाग
महासागरीय जल की लवणता को प्रति एक हजार ग्राम समुद्री जल में घुले हुए लवणों की कुल मात्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है। वैश्विक महासागरों की औसत लवणता लगभग 35 प्रति हजार भाग होती है जिसमें सोडियम क्लोराइड की प्रधानता होती है। लवणता का यह स्तर विभिन्न स्थानों पर वाष्पीकरण, वर्षा और ताजे जल के प्रवाह के कारण बदल सकता है। यह जल के घनत्व को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है।

38. (B) महासागर की गहराई
महासागरीय जल के सतही तापमान को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में अक्षांश, प्रचलित पवनें और महासागरीय धाराएं शामिल हैं। अक्षांश सूर्य की किरणों के कोण को निर्धारित करता है जबकि पवनें और धाराएं ऊष्मा का पुनर्वितरण करती हैं। महासागर की गहराई तापमान के ऊर्ध्वाधर वितरण का आयाम है लेकिन यह सतही तापमान को निर्धारित करने वाला प्राथमिक कारक नहीं है। गहराई बढ़ने पर तापमान घटता है, पर यह क्षेत्रीय भिन्नता का कारण नहीं है।

39. (D) टेरिजेनस निक्षेप
टेरिजेनस या भूमिज निक्षेप वे अवसाद हैं जो महाद्वीपीय भू-भागों के अपक्षय और अपरदन से प्राप्त होते हैं। नदियां, पवनें और हिमनद इन कणों को समुद्र तक पहुँचाते हैं। इनमें रेत, गाद, कीचड़ और बजरी शामिल होते हैं जो मुख्य रूप से महाद्वीपीय मग्नतटों और ढालों पर जमा होते हैं। ये निक्षेप स्थलीय चट्टानों की खनिज संरचना को प्रदर्शित करते हैं और महाद्वीपीय किनारे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

40. (A) नाइन्टी ईस्ट रिज
नाइन्टी ईस्ट रिज हिंद महासागर के तल की अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट भूगर्भीय विशेषता है। यह लगभग 5,000 किलोमीटर लंबी एक जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जो 90 डिग्री पूर्वी देशांतर के समानांतर उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली हुई है। इसका निर्माण भारतीय प्लेट की उत्तर की ओर गति के दौरान एक हॉटस्पॉट की गतिविधि के कारण हुआ था। यह कटक हिंद महासागर को पूर्वी और पश्चिमी बेसिनों में विभाजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

41. (C) एक धंसते हुए ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर एक तटीय भित्ति विकसित होती है, जो अंततः एक लैगून को घेर लेती है।
चार्ल्स डार्विन के अवतलन सिद्धांत के अनुसार एटोल का निर्माण एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत एक ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर विकसित होने वाली तटीय प्रवाल भित्ति से होती है। जब द्वीप धीरे-धीरे समुद्र के नीचे धंसने लगता है, तो प्रवाल प्रकाश की तलाश में ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं। अंततः जब द्वीप पूरी तरह जलमग्न हो जाता है, तो केवल प्रवाल का एक घेरा बचता है जो बीच में शांत लैगून को घेरता है।

42. (A) ठंडा और खारा जल, गर्म और ताजे जल की तुलना में अधिक सघन होता है।
समुद्री जल का घनत्व तापमान और लवणता के साथ सीधे संबंधित होता है। जब तापमान कम होता है, तो जल के अणु संकुचित हो जाते हैं जिससे घनत्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार जल में घुले हुए लवणों की अधिक मात्रा जल के द्रव्यमान को बढ़ा देती है जिससे वह भारी हो जाता है। अतः उच्च लवणता वाला ठंडा जल सबसे अधिक सघन होता है और महासागरों की गहराइयों में नीचे बैठ जाता है, जिससे परिसंचरण संचालित होता है।

43. (D) उत्तर की ओर बहने वाली गर्म धारा है
गल्फ स्ट्रीम उत्तरी अटलांटिक महासागर की अत्यंत शक्तिशाली और तीव्र गर्म जलधारा है। यह मैक्सिको की खाड़ी से उत्पन्न होकर संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तट के समानांतर उत्तर की ओर बहती है और फिर पश्चिमी यूरोप की ओर मुड़ जाती है। यह

Downloaded from www.pdf.tube

22. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रवाल भित्तियों का निर्माण करने वाले प्रवाल पॉलिप्स और ज़ूज़ैन्थेले नामक शैवाल के बीच सहजीवी संबंध होता है। ये शैवाल प्रवाल के ऊतकों के भीतर रहते हैं और प्रकाश संश्लेषण द्वारा भोजन का निर्माण करते हैं, जिसके लिए उन्हें सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि प्रवाल केवल उथले और स्वच्छ जल में ही जीवित रह सकते हैं जहाँ प्रकाश पर्याप्त मात्रा में पहुँचता है।

23. (D) ज्वार-भाटा
ज्वार-भाटा समुद्र के जल स्तर में होने वाला आवधिक उतार-चढ़ाव है जो मुख्य रूप से चंद्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव तथा पृथ्वी के अपकेंद्रीय बल के प्रभाव से उत्पन्न होता है। जल स्तर के ऊपर उठने को ज्वार और नीचे गिरने को भाटा कहा जाता है। यह परिघटना तटीय क्षेत्रों के पारिस्थितिकी तंत्र, नौसंचालन और मत्स्य पालन को प्रभावित करती है। इसकी आवृत्ति खगोलीय पिंडों की सापेक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है।

24. (A) कैल्केरियस ऊज़
कैल्केरियस ऊज़ एक प्रकार का जैविक महासागरीय निक्षेप है जो मुख्य रूप से फोरामिनिफेरा और कोकोलिथोफोर जैसे सूक्ष्म समुद्री जीवों के कैल्शियम कार्बोनेट युक्त कवचों से बना होता है। ये जीव अपनी मृत्यु के बाद धीरे-धीरे महासागर के तल पर जमा हो जाते हैं। यह निक्षेप सामान्यतः उथले जल वाले क्षेत्रों में पाया जाता है क्योंकि अत्यधिक गहराई पर कैल्शियम कार्बोनेट घुलने लगता है। यह कार्बन चक्र के अध्ययन में महत्वपूर्ण है।

25. (C) कई समुद्री कटकों और पठारों की उपस्थिति।
हिंद महासागर के अधस्तल की स्थलाकृति अन्य महासागरों की तुलना में अधिक जटिल है। इसकी विशेषता इसमें स्थित विभिन्न कटकों की लंबी श्रृंखलाएं हैं जो इसे कई छोटे बेसिनों में विभाजित करती हैं। इसमें नाइन्टी ईस्ट रिज और कार्ल्सबर्ग कटक जैसे महत्वपूर्ण लक्षण पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त चागोस-लक्षद्वीप पठार जैसे विशाल जलमग्न पठार भी इसकी विशिष्टता हैं। यह संरचना इस महासागर के निर्माण के विवर्तनिक इतिहास को दर्शाती है।

26. (A) पेलाजिक भित्ति
प्रवाल भित्तियों को उनकी संरचना और तट से स्थिति के आधार पर तीन मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: तटीय प्रवाल भित्ति, अवरोधक प्रवाल भित्ति और एटोल। तटीय भित्तियां सीधे किनारे से जुड़ी होती हैं जबकि अवरोधक भित्तियां लैगून द्वारा तट से अलग होती हैं। एटोल वलयाकार होते हैं जो एक केंद्रीय लैगून को घेरते हैं। पेलाजिक शब्द गहरे खुले महासागर के जल के लिए प्रयुक्त होता है और यह कोई मान्य भौगोलिक प्रकार नहीं है।

27. (D) घटते तापमान और बढ़ती लवणता के साथ।
समुद्री जल का घनत्व दो मुख्य भौतिक कारकों, तापमान और लवणता द्वारा नियंत्रित होता है। जब जल ठंडा होता है तो उसके अणु एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं जिससे उसका घनत्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार लवणता बढ़ने पर जल में घुले हुए लवणों की मात्रा अधिक हो जाती है जो जल को भारी बना देती है। अतः ठंडा और अत्यधिक खारा जल महासागरों में सबसे अधिक सघन होता है।

28. (B) प्रचलित पवनें
महासागरों की सतह पर बहने वाली धाराओं के लिए वायुमंडलीय परिसंचरण और प्रचलित पवनें सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति हैं। जब पवनें समुद्र की सतह के ऊपर चलती हैं तो वे घर्षण के माध्यम से जल को अपने साथ गतिशील करती हैं। व्यापारिक पवनें और पछुआ पवनें वैश्विक स्तर पर धाराओं के प्रमुख पैटर्न को निर्धारित करती हैं। कोरिओलिस बल और तटरेखाओं का आकार इन धाराओं की दिशा मोड़ने में सहायक होता है।

29. (C) जावा गर्त - अटलांटिक महासागर
जावा गर्त, जिसे सुंडा गर्त भी कहा जाता है, वास्तव में हिंद महासागर में स्थित है जो सुमात्रा और जावा के तटों के समानांतर विस्तृत है। यह हिंद महासागर का सबसे गहरा भाग माना जाता है। अन्य विकल्पों में मध्य-अटलांटिक कटक अटलांटिक महासागर में, नाइन्टी ईस्ट रिज हिंद महासागर में और पूर्वी प्रशांत उत्थान प्रशांत महासागर में सही ढंग से स्थित हैं। जावा गर्त का संबंध अटलांटिक से जोड़ना असत्य है।

30. (D) मैंगनीज नोड्यूल्स
मैंगनीज नोड्यूल्स हाइड्रोजेनस निक्षेपों का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनका निर्माण समुद्री जल में घुले हुए धात्विक खनिजों के धीरे-धीरे रासायनिक अवक्षेपण और संघनन द्वारा होता है। ये आलू के आकार की ठोस संरचनाएं होती हैं जो मुख्य रूप से मैंगनीज, लोहे, निकेल और कोबाल्ट से समृद्ध होती हैं। ये निक्षेप गहरे समुद्र के मैदानों पर विस्तृत क्षेत्रों में बिखरे पाए जाते हैं और भविष्य के लिए महत्वपूर्ण खनिज स्रोत हैं।

31. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
महासागरीय विज्ञान में विभिन्न रेखाएं और परतें जल के गुणों में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाती हैं। थर्मोकलाइन वह गहराई है जहाँ तापमान तेजी से घटता है जबकि हैलोकलाइन में लवणता में तीव्र परिवर्तन होता है। पिक्नोकलाइन वह क्षेत्र है जहाँ घनत्व में अचानक बदलाव आता है। आइसोहेलाइन मानचित्र पर उन बिंदुओं को जोड़ने वाली कल्पित रेखा है जहाँ लवणता की मात्रा समान पाई जाती है। ये सभी कारक परिसंचरण समझने में सहायक हैं।

32. (B) प्रशांत महासागर
'अग्नि वलय' प्रशांत महासागर के चारों ओर फैली एक विशाल पेटी है जहाँ दुनिया के सर्वाधिक सक्रिय ज्वालामुखी और भूकंप केंद्र स्थित हैं। यह क्षेत्र प्रशांत प्लेट के अन्य विवर्तनिक प्लेटों के साथ होने वाले अभिसरण और क्षेपण से निर्मित हुआ है। यहाँ मारियाना और एलुशियन जैसी कई गहरी महासागरीय गर्तें मौजूद हैं। इन गर्तों के पास होने वाली भूगर्भीय हलचलें

NODIA

अधिक होती है और ये महासागरीय नितल का सबसे निचला हिस्सा बनाते हैं। प्रशांत महासागर की मारियाना गर्त इसका विश्व प्रसिद्ध उदाहरण है। ऐसी संरचनाओं का मानचित्रण प्लेट टेक्टोनिक्स के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

96. (B) फास्फोराइट
महासागरीय खनिजों को धात्विक और अधात्विक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। फास्फोराइट एक महत्वपूर्ण अधात्विक खनिज है जो मुख्य रूप से महाद्वीपीय मग्नतटों और ढालों पर नोड्यूल्स या परतों के रूप में पाया जाता है। इसका उपयोग उर्वरक उद्योग में व्यापक रूप से किया जाता है। इसके विपरीत मैंगनीज, सोना और टिन धात्विक खनिजों के उदाहरण हैं जबकि कच्चा तेल एक जीवाश्म ईंधन है। फास्फोराइट का निर्माण पोषक तत्वों के रासायनिक अवक्षेपण से होता है।

97. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महासागरीय लवणता का वितरण वैश्विक स्तर पर अत्यंत असमान है क्योंकि यह कई स्थानीय और क्षेत्रीय कारकों पर निर्भर करता है। वाष्पीकरण जल से नमी हटाकर लवणता बढ़ाता है जबकि वर्षा और नदियों का ताज़ा जल इसे कम कर देता है। इसी तरह ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ के पिघलने से ताज़ा जल मिलता है और बर्फ जमने से बचा हुआ जल खारा हो जाता है। इन सभी प्रक्रियाओं के निरंतर प्रभाव के कारण प्रत्येक क्षेत्र की लवणता का अपना विशिष्ट स्तर होता है।

98. (A) गल्फ स्ट्रीम
क्यूरोशियो और गल्फ स्ट्रीम दोनों अपने-अपने महासागर बेसिनों में समान भूमिकाएँ निभाती हैं। क्यूरोशियो प्रशांत महासागर के पश्चिमी किनारे पर और गल्फ स्ट्रीम अटलांटिक महासागर के पश्चिमी किनारे पर बहने वाली शक्तिशाली गर्म जलधाराएं हैं। ये दोनों धाराएं उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से ऊष्मा को उत्तर की ओर ले जाती हैं और उच्च अक्षांशों की तटीय जलवायु को गर्म रखने में मदद करती हैं। इनकी गति और परिसंचरण पैटर्न समान होने के कारण इन्हें एक-दूसरे का प्रतिरूप माना जाता है।

99. (C) अवरोधक प्रवाल भित्ति
ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित ग्रेट बैरियर रीफ दुनिया की सबसे विशाल और प्रसिद्ध अवरोधक प्रवाल भित्ति है। यह लगभग 2,300 किलोमीटर से अधिक की लंबाई में फैली हुई है और तट से एक चौड़े और गहरे लैगून द्वारा अलग है। यह भित्ति हजारों विभिन्न प्रकार के प्रवाल और समुद्री प्रजातियों का घर है। पारिस्थितिक महत्व के कारण इसे विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त है। यह समुद्र की शक्तिशाली लहरों के विरुद्ध एक प्राकृतिक दीवार का कार्य करती है।

100. (D) उच्च दबाव और कम तापमान के कारण गहराई पर कैल्केरियस कवच घुल गए।
कैल्शियम कार्बोनेट से बने सूक्ष्म जीवों के कवच गहरे समुद्र की विशिष्ट स्थितियों में रासायनिक रूप से अस्थिर हो जाते हैं। जैसे-जैसे गहराई बढ़ती है, जल का तापमान गिरता है और कार्बन डाइऑक्साइड की सांद्रता तथा दबाव बढ़ता है जिससे जल अम्लीय हो जाता है। एक निश्चित गहराई के बाद जिसे कार्बोनेट क्षतिपूर्ति गहराई कहते हैं, चूना पत्थर के कवच जमा होने के बजाय घुलने लगते हैं। इसीलिए 4,000 मीटर से अधिक गहराई पर कैल्केरियस ऊज़ अनुपस्थित होते हैं।

101. (C) यह प्लेट क्षेपण का एक क्षेत्र है।
मध्य-अटलांटिक कटक वास्तव में एक अपसारी प्लेट सीमा है न कि क्षेपण क्षेत्र। यहाँ विवर्तनिक प्लेटें एक-दूसरे से दूर जा रही हैं जिससे पृथ्वी के मेंटल से मैग्मा ऊपर आता है और नई महासागरीय क्रस्ट का निर्माण करता है। यह प्रक्रिया सागर अधस्तल प्रसरण कहलाती है। यहाँ सक्रिय ज्वालामुखीय गतिविधियाँ और भूकंप निरंतर होते रहते हैं। आइसलैंड जैसे द्वीप इसी कटक के उन हिस्सों को दर्शाते हैं जो समुद्र के स्तर से ऊपर उठकर भूमि के रूप में दिखाई देते हैं।

102. (B) लवणता
आइसोहेलाइन मानचित्र पर खींची गई वह काल्पनिक रेखा है जो महासागरों में समान लवणता वाले विभिन्न भौगोलिक स्थानों को आपस में जोड़ती है। इसका उपयोग वैज्ञानिक महासागरीय जल के गुणों के क्षैतिज वितरण को प्रदर्शित करने के लिए करते हैं। लवणता का यह वितरण समुद्री धाराओं, वाष्पीकरण के पैटर्न और नदियों के मुहानों के प्रभाव को समझने में बहुत मददगार होता है। अन्य गुणों के लिए अलग शब्द प्रयुक्त होते हैं जैसे तापमान के लिए आइसोथर्म और दबाव के लिए आइसोबार का उपयोग होता है।

103. (B) प्रचलित पवन पैटर्न और कोरिओलिस प्रभाव
महासागरों के सतही जल की विशाल गोलाकार गति जिसे 'गायर' कहा जाता है, मुख्य रूप से ग्रहीय पवनों और पृथ्वी के घूर्णन के प्रभाव से उत्पन्न होती है। व्यापारिक और पछुआ पवनें जल को धक्का देती हैं जबकि कोरिओलिस बल इस गति को उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर मोड़ देता है। जब ये धाराएं महाद्वीपीय तटों से टकराती हैं, तो वे मुड़कर एक बंद घेरा बना लेती हैं। यह परिसंचरण वैश्विक स्तर पर ऊष्मा और पोषक तत्वों के वितरण के लिए अनिवार्य है।

104. (A) डायटम ऊज़ और रेडियोलेरियन ऊज़
डायटम और रेडियोलेरियन ऊज़ जैविक मूल के महासागरीय निक्षेप हैं जो सूक्ष्म समुद्री जीवों के अवशेषों से निर्मित होते हैं। ये जीव अपने शरीर की रक्षा के लिए सिलिका के कठोर कवचों का निर्माण करते हैं। जब ये जीव मर जाते हैं, तो उनके कवच गहरे समुद्र के तल पर जमा होकर मोटी परतों का रूप ले लेते हैं। चूंकि ये सिलिका से बने होते हैं, इसलिए इन्हें सिलीशियस ऊज़ भी कहा जाता है। ये प्रायः ठंडे और पोषक तत्वों से भरपूर जल वाले क्षेत्रों के नीचे प्रचुरता में मिलते हैं।

105. (A) P-3, Q-1, R-2
प्रवाल भित्तियों के निर्माण को समझने के लिए वैज्ञानिकों ने अलग-अलग महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए हैं। चार्ल्स डार्विन ने 1842 में 'अवतलन सिद्धांत' प्रस्तुत किया जो द्वीपों के धीरे-धीरे डूबने पर आधारित है। आर. ए. डेली ने 'हिमानी नियंत्रण सिद्धांत' दिया जिसमें हिमयुग के दौरान समुद्र तल के उतार-चढ़ाव को मुख्य कारण माना गया है। जॉन मरे ने 'स्थिर-अवस्था सिद्धांत'

Click Here to Buy book on Amazon

धारा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से भारी मात्रा में ऊष्मीय ऊर्जा को उच्च अक्षांशों की ओर ले जाती है जिससे उत्तर-पश्चिमी यूरोप की जलवायु तुलनात्मक रूप से अधिक गर्म बनी रहती है।

44. (B) सिलीशियस ऊज़
सिलीशियस ऊज़ एक प्रकार का जैविक महासागरीय निक्षेप है जो मुख्य रूप से डायटम और रेडियोलेरियन जैसे सूक्ष्म जीवों के कंकालों से निर्मित होता है। इन जीवों के खोल सिलिका से बने होते हैं जो मृत्यु के बाद समुद्र तल पर जमा हो जाते हैं। यह निक्षेप सामान्यतः ठंडे जल के क्षेत्रों में पाया जाता है जहाँ पोषक तत्वों की प्रचुरता होती है। सिलिका गहरे समुद्र के जल में कैल्शियम कार्बोनेट की तुलना में अधिक सुरक्षित रहता है।

45. (C) गुरुत्वाकर्षण आकर्षण और अपकेंद्रीय बल के बीच का अंतर।
ज्वार-उत्पादक बल दो प्रमुख बलों के संतुलन के बिगड़ने का परिणाम है। पहला चंद्रमा और सूर्य का पृथ्वी के जल पर लगने वाला गुरुत्वाकर्षण खिंचाव है और दूसरा पृथ्वी के घूर्णन एवं परिक्रमा से उत्पन्न होने वाला अपकेंद्रीय बल है। चंद्रमा के निकट वाले भाग पर गुरुत्वाकर्षण बल अधिक प्रभावी होता है जिससे जल ऊपर उठता है। इन दोनों बलों के बीच का यह स्थानिक अंतर ही ज्वार-भाटा को उत्पन्न करता है।

46. (D) भारी और बार-बार होने वाला वर्षण
भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में तापमान और वाष्पीकरण की दर उच्च होने के बावजूद सतही जल की लवणता कम पाई जाती है। इसका मुख्य कारण यहाँ होने वाली अत्यधिक और दैनिक संवहनीय वर्षा है। वर्षा के माध्यम से बड़ी मात्रा में ताज़ा जल समुद्र की सतह पर मिलता रहता है जो लवणीय सांद्रता को कम कर देता है। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में आकाश बादलों से ढका रहता है, जो वाष्पीकरण को भी कुछ सीमा तक प्रभावित करता है।

47. (A) एक सपाट शीर्ष वाला समुद्री पर्वत।
गाइओट समुद्र के तल से उठने वाले जलमग्न ज्वालामुखी पहाड़ होते हैं जिनका शिखर पूरी तरह से सपाट होता है। माना जाता है कि ये पहले समुद्री सतह से ऊपर द्वीप के रूप में स्थित थे जहाँ लहरों के अपरदन ने उनके शीर्ष को काटकर समतल कर दिया। बाद में समुद्र के स्तर में वृद्धि या प्लेटों की गति के कारण ये गहरे जल में डूब गए। ये प्रशांत महासागर में प्रचुरता में पाए जाते हैं।

48. (B) ज्वारीय शक्ति
ज्वारीय शक्ति महासागरों में आने वाले ज्वार-भाटा की गतिज और स्थितिज ऊर्जा को बिजली में बदलने की प्रक्रिया है। यह एक पूर्णतः नवीकरणीय और विश्वसनीय ऊर्जा स्रोत है क्योंकि ज्वार-भाटा चंद्रमा और सूर्य की नियमित गतियों पर आधारित होते हैं। इसके विपरीत तेल, प्राकृतिक गैस और मैंगनीज नोड्यूल्स अनवीकरणीय संसाधन हैं जो उपयोग के बाद समाप्त हो जाते हैं। ज्वारीय ऊर्जा का दोहन तटीय क्षेत्रों में टर्बाइन के माध्यम से होता है।

49. (B) नदियों से ताजे जल और अवसादों का उच्च प्रवाह
प्रवाल भित्तियों के विकास के लिए विशिष्ट पर्यावरणीय दशाएं आवश्यक होती हैं। नदियों द्वारा लाया गया ताज़ा जल समुद्री लवणता को कम कर देता है जो प्रवाल पॉलिप्स के लिए हानिकारक है। इसके अतिरिक्त नदियों के साथ आने वाले अवसाद जल की पारदर्शिता को कम कर देते हैं जिससे प्रकाश संश्लेषण प्रभावित होता है और प्रवाल के सूक्ष्म छिद्र बंद हो जाते हैं। इसीलिए प्रवाल भित्तियां आमतौर पर बड़ी नदियों के मुहानों पर नहीं पाई जातीं।

50. (A) घना कोहरा और समृद्ध मत्स्य क्षेत्र
न्यूफ़ाउंडलैंड के तट के पास उत्तर से आने वाली ठंडी लैब्राडोर धारा और दक्षिण से आने वाली गर्म गल्फ स्ट्रीम का मिलन होता है। गर्म जल के ऊपर की नमी जब ठंडी धारा के संपर्क में आती है तो वह संघनित होकर घना कोहरा पैदा करती है। हालाँकि इन दोनों धाराओं के मिश्रण से पोषक तत्वों का संचार होता है जिससे प्लवक की भारी वृद्धि होती है। यह स्थिति इसे विश्व के सबसे समृद्ध मत्स्य क्षेत्रों में से एक बनाती है।

51. (C) 4, 1, 2, 3
डार्विन का सिद्धांत एटोल निर्माण की प्रक्रिया को चार स्पष्ट चरणों में समझाता है। सबसे पहले ज्वालामुखी गतिविधि द्वारा एक नया द्वीप प्रकट होता है। इसके बाद द्वीप के उथले तटीय जल में प्रवाल विकसित होकर तटीय भित्ति बनाते हैं। तीसरे चरण में द्वीप धीरे-धीरे नीचे धंसता है जबकि प्रवाल ऊपर बढ़ते हुए अवरोधक भित्ति का रूप लेते हैं। अंततः द्वीप पूरी तरह जलमग्न हो जाता है और केवल प्रवाल का वलय शेष रह जाता है।

52. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्रशांत महासागर दुनिया का सबसे बड़ा और गहरा महासागर है जिसके किनारों पर गर्तों की संख्या सर्वाधिक है जो इसकी विवर्तनिक सक्रियता को दर्शाते हैं। दूसरी ओर अटलांटिक महासागर की बनावट काफी हद तक सममित है क्योंकि इसके बिल्कुल मध्य में 'एस' आकार की कटक स्थित है जो इसे दो भागों में विभाजित करती है। ये दोनों विशेषताएँ महासागरीय भू-आकृति विज्ञान के महत्वपूर्ण अंग हैं और इनकी संरचनात्मक भिन्नता को स्पष्ट करती हैं।

53. (C) गहरे महासागर में, भूमि से दूर।
पेलाजिक निक्षेप वे सूक्ष्म अवसाद हैं जो महाद्वीपीय मग्नतटों से दूर गहरे समुद्र के शांत वातावरण में पाए जाते हैं। ये निक्षेप बहुत धीमी गति से जमा होते हैं और इनमें मुख्य रूप से समुद्री जीवों के अवशेष तथा सूक्ष्म ज्वालामुखी धूल शामिल होती है। चूंकि ये तट से दूर होते हैं, इसलिए इनमें स्थलीय चट्टानों के बड़े कण नहीं पाए जाते। ये निक्षेप महासागर के अगाध क्षेत्रों को ढकते हैं और प्राचीन जलवायु रिकॉर्ड प्रदान करते हैं।

54. (B) सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में संरेखित होते हैं।
विश्व में सबसे ऊंचे ज्वार जिन्हें वृहद् ज्वार कहा जाता है पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान आते हैं। इस समय सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में होते हैं जिससे सूर्य और चंद्रमा के

NODIA

11. (D) 1, 2 और 3
महासागरीय निक्षेप उनकी उत्पत्ति के आधार पर विभिन्न प्रकार के होते हैं। भूमिज निक्षेप चट्टानों के अपरदन से प्राप्त होकर नदियों द्वारा समुद्र तक लाए जाते हैं। जैविक निक्षेप सूक्ष्म समुद्री जीवों के कैल्शियम या सिलिका युक्त अवशेषों के संचय से निर्मित होते हैं। जलजनित निक्षेप सीधे समुद्री जल में घुले खनिजों के रासायनिक अवक्षेपण से बनते हैं। ये तीनों प्रक्रियाएं महासागर तल पर अवसादों के निर्माण में महत्वपूर्ण हैं।

12. (B) लैटेराइट मिट्टी
महासागरीय संसाधन समुद्री जल, तल और उसके नीचे स्थित खनिज एवं जैविक पदार्थों को संदर्भित करते हैं। मैंगनीज नोड्यूल्स अगाध समुद्री मैदानों पर पाए जाते हैं, जबकि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस महाद्वीपीय मग्नतटों के प्रमुख खनिज संसाधन हैं। ज्वारीय शक्ति महासागरीय गति से प्राप्त एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। इसके विपरीत लैटेराइट मिट्टी एक स्थलीय मृदा है जो भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में निर्मित होती है और महासागरों में नहीं मिलती।

13. (C) बेंग्वेला धारा - ठंडी धारा
बेंग्वेला धारा दक्षिण अटलांटिक महासागर की प्रमुख ठंडी जलधारा है जो अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ उत्तर की ओर बहती है। यह धारा अंटार्कटिका के ठंडे जल को भूमध्य रेखा की ओर लाती है। इसके विपरीत लैब्राडोर धारा एक ठंडी धारा है जबकि गल्फ स्ट्रीम और क्यूरोशियो धाराएं गर्म जलधाराओं के उदाहरण हैं। धाराओं का यह तापीय गुण उनके उद्गम स्थल और प्रवाह की दिशा द्वारा निर्धारित होता है।

14. (D) 1, 3, 4, 2
महासागर के अधस्तल की स्थलाकृति तट से गहरे समुद्र की ओर एक निश्चित क्रम का अनुसरण करती है। सबसे पहले उथला महाद्वीपीय मग्नतट आता है जिसके बाद अचानक तीव्र ढाल वाला महाद्वीपीय मग्नढाल शुरू होता है। ढाल के अंत में अवसादों के जमाव से बना महाद्वीपीय उत्थान होता है, जो आगे चलकर अत्यंत विस्तृत और सपाट गंभीर सागरीय मैदान में परिवर्तित हो जाता है। यह अनुक्रम भूगर्भीय संरचना को दर्शाता है।

15. (A) अटलांटिक महासागर
मध्य-अटलांटिक कटक अटलांटिक महासागर के मध्य में स्थित एक विशाल जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जो उत्तर में आइसलैंड से दक्षिण में बुवेट द्वीप तक विस्तृत है। यह कटक महासागर की आकृति के अनुरूप ही देवनागरी लिपि के 'एस' आकार जैसा स्वरूप ग्रहण करती है। यह संरचना विवर्तनिक प्लेटों के अपसरण का परिणाम है जहाँ नई समुद्री सतह का निर्माण होता है। यह विश्व की लंबी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है।

16. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्रशांत महासागर के किनारे सक्रिय क्षेपण क्षेत्रों के कारण गहरी गर्तों की श्रृंखला से घिरे हैं जिन्हें 'अग्नि वलय' का हिस्सा माना जाता है। वहीं हिंद महासागर की कटक प्रणाली अटलांटिक की तुलना में अधिक जटिल है क्योंकि यह कई सूक्ष्म महाद्वीपों और भ्रंश क्षेत्रों द्वारा खंडित है। हिंद महासागर में कटकों का विन्यास 'वाई' आकार का है जो इसके भूगर्भीय इतिहास और प्लेटों की गति को प्रदर्शित करता है।

17. (B) महाद्वीपीय उत्थान
महाद्वीपीय उत्थान महाद्वीपीय मग्नढाल के निचले हिस्से और गहरे समुद्री मैदान के बीच का एक मंद ढाल वाला क्षेत्र है। इसका निर्माण मुख्य रूप से उन अवसादों के संचय से होता है जो टर्बिडिटी धाराओं द्वारा ढाल से नीचे बहकर आते हैं। यह क्षेत्र महाद्वीपीय किनारे की अंतिम सीमा को दर्शाता है जहाँ समुद्री बेसिन की वास्तविक गहराई शुरू होती है। इसकी मोटाई संचित अवसादों की मात्रा के अनुसार भिन्न होती है।

18. (A) सभी महासागरों में सतह से तल तक लवणता एक समान होती है।
महासागरीय जल की लवणता क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रूप से एक समान नहीं रहती। लवणता मुख्य रूप से सतह पर होने वाले वाष्पीकरण और वर्षा से प्रभावित होती है। ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ के जमने और पिघलने से भी लवणता में परिवर्तन आता है। गहराई के साथ लवणता के वितरण में हैलोकलाइन परत देखी जाती है जहाँ इसमें तीव्र परिवर्तन होता है। इसलिए लवणता को पूरे महासागर में समान मानना गलत है।

19. (C) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
चार्ल्स डार्विन ने 1842 में प्रवाल भित्तियों की उत्पत्ति के लिए अवतलन सिद्धांत प्रतिपादित किया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रवाल भित्तियों का विकास एक ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर तटीय भित्ति के रूप में शुरू होता है। जैसे-जैसे द्वीप धीरे-धीरे नीचे धंसता है, प्रवाल ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं जिससे पहले अवरोधक भित्ति और अंततः एटोल का निर्माण होता है। यह सिद्धांत भूगर्भीय अवतलन पर आधारित एक प्रमुख अवधारणा है।

20. (D) कॉस्मोजेनस निक्षेप
कॉस्मोजेनस निक्षेप वे सूक्ष्म कण हैं जो बाह्य अंतरिक्ष से पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करने वाले उल्कापिंडों और ब्रह्मांडीय धूल के विघटन से प्राप्त होते हैं। ये कण महासागर के गहरे जल में धीरे-धीरे नीचे बैठते हैं और तल पर अवसादों का हिस्सा बन जाते हैं। इनमें प्रायः चुंबकीय गुण और विशिष्ट खनिज संरचना पाई जाती है। गहरे समुद्र के शांत वातावरण में ये निक्षेप पृथ्वी के अंतरिक्षीय इतिहास की जानकारी देते हैं।

21. (C) गहराई के साथ घनत्व तेजी से बदलता है।
पिक्नोकलाइन महासागर की वह परत है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ जल के घनत्व में अत्यधिक तीव्र परिवर्तन देखा जाता है। यह परत सामान्यतः ऊपरी मिश्रित परत और गहरे स्थिर जल के बीच स्थित होती है। घनत्व में यह बदलाव मुख्य रूप से तापमान और लवणता में होने वाले परिवर्तनों का परिणाम होता है। पिक्नोकलाइन महासागरीय जल के ऊर्ध्वाधर मिश्रण को नियंत्रित करती है और विभिन्न जल निकायों के बीच अवरोध का कार्य करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

क्योंकि गहरे ठंडे जल में कैल्शियम कार्बोनेट आसानी से घुलने लगता है।

65. (B) अटलांटिक महासागर
डॉल्फिन राइज और चैलेंजर राइज मध्य-अटलांटिक कटक के दो प्रमुख उत्तरी और दक्षिणी भाग हैं। भूमध्य रेखा के उत्तर में स्थित कटक के हिस्से को डॉल्फिन राइज कहा जाता है, जबकि भूमध्य रेखा के दक्षिण में स्थित हिस्से को चैलेंजर राइज के नाम से जाना जाता है। ये दोनों संरचनाएं अटलांटिक महासागर के बीच फैली विशाल जलमग्न पर्वत श्रृंखला का हिस्सा हैं जो प्लेटों के अपसरण और नए समुद्री नितल के निर्माण को दर्शाती हैं।

66. (A) हिमयुग से जुड़े समुद्र के स्तर में परिवर्तन।
डेली का सिद्धांत इस विचार पर केंद्रित है कि एटोल और अन्य प्रवाल भित्तियों का निर्माण हिमयुग के दौरान समुद्र के स्तर में होने वाले उतार-चढ़ाव का परिणाम है। हिमयुग के दौरान जल स्तर गिरने से समुद्री लहरों ने द्वीपों के किनारों को काटकर समतल प्लेटफॉर्म बना दिए। जब जलवायु गर्म हुई और ग्लेशियर पिघले तो समुद्र का स्तर फिर से बढ़ा। इस बढ़ते जल स्तर के साथ प्रवाल इन समतल आधारों पर ऊपर की ओर विकसित हुए।

67. (C) अर्ध-दैनिक ज्वार
अर्ध-दैनिक ज्वार एक विशिष्ट ज्वारीय पैटर्न है जिसमें प्रत्येक 24 घंटे की अवधि में दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार आते हैं। इस पैटर्न की मुख्य विशेषता यह है कि आने वाले दोनों उच्च ज्वारों की ऊँचाई और दोनों निम्न ज्वारों की गहराई लगभग समान होती है। यह स्थिति प्रायः उन स्थानों पर देखी जाती है जहाँ तटरेखा और समुद्र तल की आकृति इस लयबद्ध गति का समर्थन करती है। यह नौसंचालन के लिए महत्वपूर्ण है।

68. (D) तापमान और लवणता
समुद्री जल का घनत्व मुख्य रूप से दो भौतिक कारकों, तापमान और लवणता द्वारा निर्धारित होता है। जब तापमान कम होता है तो जल अधिक सघन हो जाता है और जब लवणता बढ़ती है तो जल में घुले हुए लवणों के कारण वह भारी हो जाता है। ये दोनों गुण महासागरों में जल के ऊर्ध्वाधर परिसंचरण के मुख्य चालक हैं। यही कारण है कि ध्रुवीय क्षेत्रों का ठंडा और खारा जल गहराइयों में डूबकर वैश्विक धाराओं को चलाता है।

69. (C) क्यूरोशियो धारा
क्यूरोशियो धारा जिसे 'जापान की धारा' भी कहा जाता है, उत्तरी प्रशांत महासागर की अत्यंत शक्तिशाली और गर्म जलधारा है। यह फिलीपींस के पास से उत्पन्न होकर जापान के तट के साथ उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। यह धारा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से भारी मात्रा में ऊष्मीय ऊर्जा को उत्तरी अक्षांशों की ओर ले जाती है जिससे जापान के तटीय क्षेत्रों की जलवायु उदार रहती है। इसके विपरीत पेरू, बेंग्वेला और कैलिफोर्निया धाराएं ठंडी जलधाराओं के उदाहरण हैं।

70. (B) गंभीर सागरीय मैदान
गंभीर सागरीय मैदान पृथ्वी के सबसे अधिक सपाट और चिकने क्षेत्र माने जाते हैं। इनका निर्माण महाद्वीपीय मग्नढाल से नीचे गिरने वाले सूक्ष्म अवसादों के निरंतर जमाव से होता है जो समय के साथ समुद्र तल की ऊबड़-खाबड़ चट्टानी सतह को पूरी तरह ढक लेते हैं। ये मैदान 3,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर स्थित होते हैं और महासागर बेसिन का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा घेरते हैं। इनकी सपाटता वैज्ञानिक शोध के लिए महत्वपूर्ण है।

71. (D) एक विवर्तनिक प्लेट का दूसरी प्लेट के नीचे क्षेपण।
प्रशांत महासागर के चारों ओर गहरी गर्तों की उपस्थिति का मुख्य कारण प्लेट विवर्तनिकी की प्रक्रिया है। जब एक भारी महासागरीय प्लेट दूसरी प्लेट से टकराती है तो वह नीचे की ओर धंसने लगती है जिसे क्षेपण कहा जाता है। इस धंसने वाले स्थान पर अत्यंत गहरी और संकीर्ण खाइयां या गर्त बनते हैं। चूंकि प्रशांत महासागर कई सक्रिय क्षेपण क्षेत्रों से घिरा हुआ है, इसलिए यहाँ मारियाना जैसी दुनिया की सबसे गहरी गर्तें पाई जाती हैं।

72. (A) लाल मृत्तिका
लाल मृत्तिका गहरे महासागर के बेसिनों में पाया जाने वाला सबसे व्यापक अगाधसागरीय निक्षेप है। यह मुख्य रूप से सूक्ष्म ज्वालामुखीय धूल, उल्कापिंड के कणों और सूक्ष्म भूमिज अवसादों से बनी होती है। इसकी जमा होने की दर अत्यंत धीमी होती है लेकिन यह महासागर के सबसे ठंडे और गहरे हिस्सों को कवर करती है जहाँ कैल्शियम कार्बोनेट घुल जाता है। यह लगभग सभी महासागरों के गहरे जल के नीचे के सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैली हुई है।

73. (C) ज्वारीय परिसर
ज्वारीय परिसर एक ही स्थान पर आने वाले उच्च ज्वार के अधिकतम स्तर और निम्न ज्वार के न्यूनतम स्तर के बीच की ऊँचाई के अंतर को कहा जाता है। यह मान अलग-अलग स्थानों पर भिन्न होता है और तटरेखा की आकृति तथा समुद्र तल की गहराई पर निर्भर करता है। उच्च ज्वारीय परिसर वाले क्षेत्र ज्वारीय ऊर्जा के उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त माने जाते हैं। कनाडा की फंडी खाड़ी में दुनिया का सबसे बड़ा ज्वारीय परिसर मिलता है।

74. (A) प्रशांत महासागर में सीमांत सागरों और ज्वालामुखीय द्वीपों की संख्या सबसे अधिक है।
प्रशांत महासागर दुनिया का सबसे बड़ा महासागर बेसिन है। इसकी विवर्तनिक सक्रियता और विशाल विस्तार के कारण इसमें अन्य महासागरों की तुलना में अधिक संख्या में सीमांत सागर, द्वीप चाप और जलमग्न ज्वालामुखीय पर्वत पाए जाते हैं। इसके चारों ओर 'अग्नि वलय' की उपस्थिति इसे भूकंपीय रूप से सबसे सक्रिय क्षेत्र बनाती है। अन्य महासागरों की तुलना में प्रशांत के अधस्तल की विविधता और इसमें द्वीपों की प्रचुरता इसे अद्वितीय बनाती है।

NODIA

75. (D) हाइड्रोजेनस निक्षेपण
हाइड्रोजेनस निक्षेपण वह प्रक्रिया है जिसमें समुद्री जल में घुले हुए रासायनिक तत्व सीधे ठोस रूप में बदलकर समुद्र के तल पर जमा हो जाते हैं। यह तब होता है जब जल में इन तत्वों की मात्रा संतृप्ति बिंदु से अधिक हो जाती है। मैंगनीज नोड्यूल्स, फास्फोराइट और लौह-मैंगनीज क्रस्ट इसी प्रक्रिया के मुख्य उदाहरण हैं। यह निक्षेपण सामान्यतः बहुत धीमी गति से होता है और इसके लिए शांत समुद्री वातावरण की आवश्यकता होती है।

76. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रशांत महासागर में एटोल की अधिकता का कारण इसकी विशिष्ट भूगर्भीय संरचना है। यहाँ बड़ी संख्या में जलमग्न ज्वालामुखी और समुद्री पर्वत मौजूद हैं जो प्रवाल भित्तियों के विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। डार्विन के सिद्धांत के अनुसार जैसे-जैसे ये ज्वालामुखीय द्वीप धीरे-धीरे नीचे धंसते हैं, प्रवाल ऊपर बढ़ते रहते हैं और अंततः एटोल का निर्माण करते हैं। अटलांटिक में ऐसी जलमग्न ज्वालामुखीय संरचनाओं की कमी के कारण एटोल अत्यंत दुर्लभ हैं।

77. (C) हैलोकलाइन
हैलोकलाइन महासागर के जल की वह ऊर्ध्वाधर परत है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ लवणता के स्तर में बहुत तीव्र परिवर्तन होता है। यह परत सामान्यतः ऊपरी मिश्रित परत के नीचे स्थित होती है और जल के विभिन्न घनत्व वाले स्तरों के बीच एक विभाजक का कार्य करती है। लवणता में यह बदलाव जल के परिसंचरण और पोषक तत्वों के वितरण को प्रभावित करता है। हैलोकलाइन प्रायः उन क्षेत्रों में स्पष्ट होती है जहाँ ताज़ा जल समुद्री जल से मिलता है।

78. (D) यह बिना किसी बाधा के पूरे ग्लोब के चारों ओर बहती है।
अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा जिसे वेस्ट विंड ड्रिफ्ट भी कहा जाता है, विश्व की एकमात्र ऐसी महासागरीय धारा है जो पूरे पृथ्वी गोलार्ध की बिना किसी महाद्वीपीय बाधा के परिक्रमा करती है। यह धारा अंटार्कटिका महाद्वीप के चारों ओर पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है और प्रशांत, अटलांटिक तथा हिंद महासागरों को आपस में जोड़ती है। इसकी निरंतरता और विशाल जल राशि के परिवहन के कारण यह वैश्विक जलवायु प्रणाली में निर्णायक भूमिका निभाती है।

79. (A) तटीय प्रवाल भित्ति
तटीय प्रवाल भित्ति प्रवाल भित्तियों का सबसे सामान्य और प्राथमिक प्रकार है। यह सीधे किसी महाद्वीप या द्वीप के किनारे से संलग्न होकर समुद्र की ओर बढ़ती है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसके और तट के बीच कोई गहरा जल मार्ग या लैगून नहीं होता है। ये भित्तियां आमतौर पर संकीर्ण होती हैं और लहरों की मार से सीधे प्रभावित होती हैं। भारत में मन्नार की खाड़ी और अंडमान द्वीप समूह में ऐसी भित्तियां पाई जाती हैं।

80. (B) लवणता, क्योंकि तापमान समान रूप से कम होता है।
ध्रुवीय क्षेत्रों में समुद्री जल का तापमान हमेशा हिमांक के करीब रहता है, इसलिए घनत्व के निर्धारण में तापमान की भूमिका सीमित हो जाती है। ऐसी स्थिति में लवणता घनत्व को नियंत्रित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक बन जाती है। जब समुद्री बर्फ जमती है तो वह लवणों को पीछे छोड़ देती है जिससे शेष जल अधिक खारा और सघन हो जाता है। यह सघन जल नीचे की ओर डूबता है और गहरे महासागरीय परिसंचरण को संचालित करता है।

81. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विश्व के विभिन्न महासागरों में विशिष्ट जलमग्न कटक प्रणालियाँ पाई जाती हैं। नाइन्टी ईस्ट रिज हिंद महासागर की एक प्रमुख उत्तर-दक्षिण कटक है। वाल्विस रिज दक्षिण अटलांटिक महासागर में स्थित है जो अफ्रीका के तट के पास है। पूर्वी प्रशांत उत्थान प्रशांत महासागर की मुख्य कटक प्रणाली है जहाँ प्लेटों का अपसरण होता है। लोमोनोसोव रिज आर्कटिक महासागर के तल को दो मुख्य बेसिनों में विभाजित करती है। ये संरचनाएं भूगर्भीय विकास समझने हेतु आवश्यक हैं।

82. (A) 1, 2 और 3
समुद्री जल के भौतिक गुण परस्पर जुड़े हुए हैं। तापमान बढ़ने पर जल के अणु फैलते हैं जिससे उसका घनत्व कम हो जाता है। इसके विपरीत लवणता बढ़ने पर जल में घुले हुए पदार्थों की मात्रा अधिक होने से वह सघन हो जाता है। एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि समुद्री जल में मौजूद लवण इसके हिमांक को 0 डिग्री सेल्सियस से नीचे कम कर देते हैं जिससे खारा जल मीठे जल की तुलना में देरी से जमता है। ये तीनों नियम आधारभूत हैं।

83. (C) कनारी धारा
कनारी धारा उत्तरी अटलांटिक महासागर की प्रमुख ठंडी जलधारा है जो उत्तरी अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ दक्षिण की ओर बहती है। यह धारा उत्तरी अटलांटिक प्रवाह का ही एक हिस्सा है जो ठंडे क्षेत्रों से ऊष्मा मुक्त करने के बाद वापस नीचे की ओर आती है। इसके विपरीत उत्तरी अटलांटिक प्रवाह और ब्राजील धारा गर्म धाराएं हैं जबकि गिनी धारा भी एक गर्म प्रति-धारा है। कनारी धारा सहारा मरुस्थल की शुष्कता को प्रभावित करती है।

84. (D) 2, 3, 4, 1
महासागरीय निक्षेपों का वितरण तट से दूरी और गहराई के अनुसार बदलता है। तट के निकट सबसे पहले भारी कण जैसे रेत और बजरी जमा होते हैं। जैसे-जैसे हम गहराई की ओर बढ़ते हैं, सूक्ष्म कीचड़ और गाद पाई जाती है। इसके बाद मध्यम गहराई पर जैविक अवशेषों से बना कैल्केरियस ऊज़ पाया जाता है। सबसे गहरे अगाध क्षेत्रों में जहाँ अन्य सभी पदार्थ घुल जाते हैं, वहाँ केवल अत्यंत सूक्ष्म लाल मृत्तिका ही पाई जाती है।

85. (C) मरे का समाधान सिद्धांत
जॉन मरे ने 1880 में प्रवाल भित्तियों की उत्पत्ति के लिए समाधान सिद्धांत प्रस्तुत किया था। उन्होंने डार्विन के अवतलन के विचार को चुनौती देते हुए तर्क दिया कि प्रवाल भित्तियों के विकास के लिए द्वीपों का धंसना आवश्यक नहीं है। उनके

Click Here to Buy book on Amazon

अनुसार प्रवाल जलमग्न और स्थिर प्लेटफॉर्मों पर ऊपर की ओर बढ़ते हैं। लैगून का निर्माण प्रवाल के मृत आंतरिक भागों के समुद्री जल में रासायनिक रूप से घुलने के कारण होता है। यह सिद्धांत जैविक प्रक्रियाओं पर बल देता है।

86. (B) सूर्य और चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव एक-दूसरे के समकोण पर कार्य करता है।
लघु ज्वार जिसे नीप टाइड भी कहा जाता है, चंद्रमा के प्रथम और तृतीय चतुर्थांश के दौरान आता है। इस समय सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के साथ एक समकोण बनाते हैं जिससे उनके गुरुत्वाकर्षण बल एक-दूसरे के प्रभाव को आंशिक रूप से नष्ट कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप समुद्र के जल में होने वाला खिंचाव न्यूनतम हो जाता है जिससे उच्च ज्वार बहुत ऊंचे नहीं होते और निम्न ज्वार बहुत नीचे नहीं गिरते। यह ज्वारीय परिसर को न्यूनतम रखता है।

87. (D) शांत केंद्र और तैरती समुद्री घास वाला एक बड़ा और घूमता हुआ गायर।
सारगासो सागर उत्तरी अटलांटिक महासागर के मध्य स्थित एक अद्वितीय जल क्षेत्र है जिसकी कोई स्थलीय तटरेखा नहीं है। यह चारों ओर से चार प्रमुख महासागरीय धाराओं: गल्फ स्ट्रीम, कनारी धारा, उत्तरी अटलांटिक प्रवाह और उत्तरी विषुवतीय धारा द्वारा घिरा हुआ है। इन धाराओं के घूमने से बीच का जल अत्यंत शांत रहता है जहाँ 'सारगासम' नामक समुद्री घास तैरती रहती है। यह क्षेत्र अपनी उच्च लवणता और शांत पारिस्थितिकी के लिए प्रसिद्ध है।

88. (A) अटलांटिक में विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतट हैं, जबकि प्रशांत में संकीर्ण मग्नतट और कई गर्त हैं।
अटलांटिक महासागर के किनारे मुख्य रूप से विवर्तनिक रूप से निष्क्रिय हैं जिससे यहाँ अवसादों का जमाव अधिक हुआ है और महाद्वीपीय मग्नतट काफी चौड़े और सपाट विकसित हुए हैं। इसके विपरीत प्रशांत महासागर 'अग्नि वलय' और सक्रिय प्लेट सीमाओं से घिरा है। यहाँ महासागरीय प्लेटों के क्षेपण के कारण किनारों पर गहरी गर्तें मौजूद हैं और मग्नतट अत्यंत संकीर्ण हैं। यह अंतर दोनों महासागरों के भूगर्भीय इतिहास और प्लेटों की गति को दर्शाता है।

89. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
महासागरीय धाराओं का प्रवाह वैश्विक ताप संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गर्म धाराएं भूमध्य रेखा के पास प्रचुर सौर ऊर्जा प्राप्त करके गर्म होती हैं और उच्च अक्षांशों या ध्रुवों की ओर बहती हैं जिससे वहाँ का तापमान बढ़ता है। वहीं ठंडी धाराएं ध्रुवीय क्षेत्रों के कम तापमान वाले जल को भूमध्य रेखा की ओर लाती हैं जिससे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शीतलन प्रभाव उत्पन्न होता है। यह चक्र पृथ्वी के औसत तापमान को नियंत्रित करता है।

90. (A) कैल्केरियस जैविक निक्षेप
टेरोपोड और ग्लोबोजेरिना ऊज़ जैविक निक्षेपों के उन प्रकारों में शामिल हैं जो कैल्शियम कार्बोनेट से समृद्ध होते हैं। ये निक्षेप फोरामिनिफेरा और मोलस्क जैसे सूक्ष्म समुद्री जीवों के अवशेषों के संचय से बनते हैं। चूंकि ये जैविक मूल के होते हैं और कैल्शियम से बने होते हैं, इसलिए इन्हें कैल्केरियस जैविक निक्षेप कहा जाता है। ये सामान्यतः महासागर की 2,000 से 4,000 मीटर की गहराई के बीच पाए जाते हैं क्योंकि अधिक गहराई पर चूना पत्थर घुलने लगता है।

91. (D) हिंद महासागर
कार्ल्सबर्ग कटक हिंद महासागर के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक प्रमुख जलमग्न पर्वत श्रृंखला है। यह मध्य-हिंद कटक का ही एक हिस्सा है जो अरब सागर के नीचे फैला हुआ है। यह कटक विवर्तनिक प्लेटों के अपसरण का एक सक्रिय क्षेत्र है जहाँ नया लावा बाहर निकलता है। यह संरचना अफ्रीका और भारत की प्लेटों के बीच के भूगर्भीय संबंधों को समझने में सहायक है और इस क्षेत्र की भूकंपीय गतिविधियों के लिए भी उत्तरदायी है।

92. (B) नदी के विसर्जन से पोषक तत्वों की प्रचुर आपूर्ति
प्रवाल भित्तियों के स्वस्थ विकास के लिए नदियों का विसर्जन प्रायः प्रतिकूल माना जाता है। नदियां अपने साथ भारी मात्रा में तलछट और मीठा जल लाती हैं। तलछट जल को गंदा कर देती है जिससे प्रवाल को आवश्यक सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता और उनके सूक्ष्म छिद्र बंद हो जाते हैं। साथ ही मीठा जल समुद्री लवणता को कम कर देता है जो प्रवाल के जीवित रहने के लिए हानिकारक है। प्रवाल सर्वोत्तम रूप से स्वच्छ और लवणीय जल में पनपते हैं।

93. (C) अपने हिमांक बिंदु पर अधिकतम होता है, जो 0°C से नीचे होता है।
शुद्ध जल की तुलना में समुद्री जल का व्यवहार भिन्न होता है क्योंकि इसमें घुले हुए लवण इसकी भौतिक विशेषताओं को बदल देते हैं। लवणता के कारण समुद्री जल का हिमांक 0 डिग्री सेल्सियस से नीचे गिरकर लगभग -1.9 डिग्री सेल्सियस हो जाता है। शुद्ध जल का घनत्व 4 डिग्री सेल्सियस पर अधिकतम होता है, लेकिन खारे जल का घनत्व उसके हिमांक बिंदु तक पहुँचने तक निरंतर बढ़ता रहता है। इसका अर्थ है कि जमने से ठीक पहले समुद्री जल सर्वाधिक सघन होता है।

94. (D) उपभू वृहद् ज्वार
जब चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकटतम बिंदु पर होता है जिसे उपभू कहा जाता है, तो उसका गुरुत्वाकर्षण खिंचाव पृथ्वी के जल पर सामान्य से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है। यदि यह स्थिति पूर्णिमा या अमावस्या के समय बनती है जब सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी संरेखित होते हैं, तो आने वाले ज्वार को उपभू वृहद् ज्वार कहा जाता है। ये ज्वार सामान्य वृहद् ज्वार की तुलना में और भी अधिक ऊंचे होते हैं जिससे तटीय क्षेत्रों में जल स्तर काफी बढ़ जाता है।

95. (A) महासागरीय गर्त
महासागरीय गर्त समुद्र के तल पर स्थित सबसे गहरी, लंबी और संकीर्ण खाइयां होती हैं। इनका निर्माण विवर्तनिक प्लेटों के अभिसरण क्षेत्रों में होता है जहाँ एक प्लेट दूसरी प्लेट के नीचे धंस जाती है। इनकी गहराई प्रायः 6,000 मीटर से भी

Downloaded from www.pdf.tube

गुरुत्वाकर्षण बल संयुक्त होकर जल पर अधिकतम खिंचाव डालते हैं। इस संरेखण को सिजिगी कहा जाता है। इसके परिणामस्वरुप जल का स्तर सामान्य से बहुत अधिक ऊपर उठता है और भाटा के समय बहुत नीचे गिरता है जिससे परिसर सर्वाधिक होता है।

55. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
महासागरीय उच्चावच की प्रत्येक विशेषता का विशिष्ट स्थान होता है। मध्य-महासागरीय कटक वह स्थल है जहाँ से प्लेटें अलग होती हैं और नई सतह बनती है। महासागरीय गर्त सबसे गहरे भाग होते हैं जहाँ प्लेटें धंसती हैं। गंभीर सागरीय मैदान सबसे सपाट भाग हैं जो अवसादों से भरे होते हैं। महाद्वीपीय मग्नतट वास्तव में महाद्वीपों के वे जलमग्न किनारे हैं जो समुद्र के उथले भाग को निर्मित करते हैं।

56. (A) अटलांटिक की तरह एक बड़ी और निरंतर 'S'-आकार की कटक
हिंद महासागर के अधस्तल की संरचना अटलांटिक महासागर से भिन्न है क्योंकि इसमें कोई एक निरंतर 'एस'-आकार की कटक नहीं है। इसके बजाय हिंद महासागर में कटकों की एक जटिल प्रणाली है जो कार्ल्सबर्ग कटक और मध्य-हिंद कटक के रूप में कई शाखाओं में विभाजित है। सुंडा गर्त इसके पूर्वी भाग में स्थित एक प्रमुख गर्त है। इसकी कटक प्रणाली उल्टे 'वाई' के आकार जैसी दिखाई देती है जो इसकी भूगर्भीय विशिष्टता है।

57. (C) डाउनवेलिंग
डाउनवेलिंग एक महासागरीय प्रक्रिया है जिसमें सतही जल भारी होकर नीचे की ओर बैठ जाता है। इसके साथ ही सतही जल में मौजूद ऑक्सीजन तो नीचे पहुँच जाती है लेकिन नीचे के पोषक तत्व ऊपर नहीं आ पाते। चूंकि प्रकाश संश्लेषण के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है और डाउनवेलिंग वाले क्षेत्रों में इनकी कमी हो जाती है, इसलिए वहाँ जैविक उत्पादकता अत्यंत कम रहती है। यह अपवेलिंग के विपरीत प्रक्रिया है जहाँ पोषक तत्व सतह पर लाए जाते हैं।

58. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बाल्टिक सागर की निम्न लवणता इसके चारों ओर स्थित विशाल नदी प्रणालियों के कारण है जो इसमें निरंतर भारी मात्रा में ताज़ा जल छोड़ती हैं। इसके अतिरिक्त उत्तरी सागर और खुले अटलांटिक के साथ इसका संपर्क संकीर्ण जलडमरूमध्यों के माध्यम से बहुत सीमित है जिससे लवणीय जल का प्रवेश कम होता है। कम वाष्पीकरण और अधिक नदी प्रवाह का यह संतुलन बाल्टिक सागर को कम खारे समुद्रों में से एक बना देता है।

59. (D) आर. ए. डेली
आर. ए. डेली ने 1910 में प्रवाल भित्तियों की उत्पत्ति के लिए हिमानी नियंत्रण सिद्धांत प्रस्तुत किया था। इस सिद्धांत का मुख्य तर्क यह है कि हिमयुग के दौरान जब विशाल ग्लेशियर बने तो समुद्र का जल स्तर लगभग 100 मीटर तक गिर गया। इससे पुरानी चट्टानें समुद्री लहरों द्वारा कटकर समतल हो गईं। हिमयुग समाप्त होने पर जब जल स्तर ऊपर उठा, तो इन समतल चबूतरेनुमा प्लेटफॉर्मों पर प्रवाल तेजी से ऊपर की ओर बढ़ने लगे।

NODIA

60. (B) ये हमेशा पूर्व से पश्चिम की ओर एक सीधी रेखा में बहती हैं।
महासागरीय धाराएं कभी सीधी रेखा में नहीं बहतीं क्योंकि उनकी दिशा पृथ्वी के घूर्णन से उत्पन्न कोरिओलिस बल और महाद्वीपों की तटरेखाओं से प्रभावित होती है। कोरिओलिस बल के कारण ये धाराएं उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर मुड़ जाती हैं जिससे विशाल गोलाकार पैटर्न 'गायर' का निर्माण होता है। ये धाराएं वैश्विक ताप वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और जलवायु को नियंत्रित करती हैं।

61. (C) केवल 1 और 3
महासागरीय संसाधन आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स में मैंगनीज और कोबाल्ट जैसे दुर्लभ धातुओं के भंडार होते हैं जो भविष्य की तकनीक के लिए अनिवार्य हैं। महाद्वीपीय मग्नतटों पर स्थित अवसादी चट्टानें दुनिया के अधिकांश अपतटीय पेट्रोलियम उत्पादन का स्रोत हैं। हालाँकि ज्वारीय ऊर्जा भी एक संसाधन है, लेकिन दिए गए विकल्पों के अनुसार केवल 1 और 3 सही रूप से संसाधनों के प्रकार और स्थानों की व्याख्या करते हैं।

62. (D) गहराई के साथ तापमान में तेजी से कमी आती है।
थर्मोकलाइन महासागरीय जल की वह संक्रमणकालीन परत है जो गर्म सतही जल को ठंडे गहरे जल से अलग करती है। इस परत में जैसे-जैसे हम गहराई में जाते हैं, तापमान में बहुत तीव्र गिरावट दर्ज की जाती है। यह परत सामान्यतः 200 से 1,000 मीटर की गहराई के बीच पाई जाती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में यह परत साल भर स्पष्ट रहती है, जबकि उच्च अक्षांशों पर यह केवल ग्रीष्म ऋतु में विकसित होती है।

63. (A) अगुलहास धारा - अटलांटिक महासागर
अगुलहास धारा वास्तव में हिंद महासागर की प्रमुख गर्म जलधारा है जो अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट के साथ बहती है। इसका संबंध अटलांटिक महासागर से जोड़ना भौगोलिक रूप से गलत है। अन्य विकल्प सही हैं क्योंकि कनारी धारा अटलांटिक की ठंडी धारा है, मोजाम्बिक धारा हिंद महासागर की गर्म धारा है और कैलिफोर्निया धारा प्रशांत महासागर की ठंडी धारा है। धाराओं का उनके संबंधित महासागरों के साथ मिलान अध्ययन की मूलभूत आवश्यकता है।

64. (B) फोरामिनिफेरा और कोकोलिथोफोर के कैल्शियम कार्बोनेट कवच।
कैल्केरियस ऊज़ एक अत्यंत सूक्ष्म महासागरीय निक्षेप है जो उन समुद्री जीवों के अवशेषों से बनता है जिनके शरीर में कैल्शियम कार्बोनेट की प्रधानता होती है। फोरामिनिफेरा जैसे जीव अपनी मृत्यु के बाद धीरे-धीरे समुद्र के तल पर गिरते हैं और सदियों तक जमा होकर मोटी परतें बनाते हैं। यह निक्षेप सामान्यतः गर्म और उथले जल वाले क्षेत्रों में पाया जाता है

का प्रतिपादन किया जिसमें उन्होंने प्रवाल विकास के लिए स्थिर प्लेटफॉर्मों और रासायनिक घुलनशीलता की भूमिका पर विशेष बल दिया है।

106. (A) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सतह पर
महासागरीय जल का तापमान मुख्य रूप से सूर्य से प्राप्त होने वाले सौर विकिरण पर निर्भर करता है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सूर्य की किरणें साल भर लगभग सीधी पड़ती हैं जिससे वहाँ की सतह का जल सबसे अधिक गर्म होता है। यहाँ सतही तापमान 27 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक हो सकता है। जैसे-जैसे हम ध्रुवों की ओर बढ़ते हैं या गहराई में जाते हैं, सौर ऊर्जा की तीव्रता कम होने के कारण तापमान में निरंतर गिरावट आती जाती है। अतः उष्णकटिबंधीय सतह ही सबसे गर्म हिस्सा होती है।

107. (D) दैनिक ज्वार
दैनिक ज्वार एक विशिष्ट ज्वारीय चक्र है जिसमें प्रत्येक चंद्र दिवस यानी लगभग 24 घंटे और 50 मिनट की अवधि में केवल एक बार जल स्तर ऊपर उठता है और एक बार नीचे गिरता है। इसका अर्थ है कि एक उच्च ज्वार और एक निम्न ज्वार ही आता है। इस प्रकार के ज्वार विश्व के कुछ ही क्षेत्रों में पाए जाते हैं जैसे मैक्सिको की खाड़ी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के कुछ तटों पर। यह ज्वारीय पैटर्न स्थानीय भौगोलिक स्थितियों और समुद्र तल की बनावट से प्रभावित होता है।

108. (B) अटलांटिक महासागर
अटलांटिक महासागर के अधस्तल की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी मध्य-महासागरीय कटक है जो उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है। यह कटक महासागर को मोटे तौर पर दो समान पश्चिमी और पूर्वी बेसिनों में विभाजित करती है। इसकी आकृति देवनागरी लिपि के 'एस' आकार जैसी है जो तटरेखाओं के समानांतर चलती है। हालाँकि यह एक निरंतर पर्वत श्रृंखला है, लेकिन यह कई भ्रंशों और क्षेत्रों द्वारा खंडित है जो विवर्तनिक प्लेटों की गति और सागर अधस्तल के विस्तार की प्रक्रिया का परिणाम हैं।

109. (C) 1, 2 और 3
महासागरीय उच्चावच की ये तीनों विशेषताएं वैज्ञानिक रूप से सत्य हैं। समुद्री पर्वत अलग-थलग जलमग्न ज्वालामुखीय चोटियाँ हैं जो हजारों मीटर ऊंची हो सकती हैं। यदि इन पर्वतों का शीर्ष लहरों के अपरदन के कारण सपाट हो जाता है, तो उन्हें गाइओट कहा जाता है। महासागरीय गर्त पृथ्वी के सबसे गहरे स्थल हैं जो उन अभिसारी प्लेट सीमाओं पर बनते हैं जहाँ एक विवर्तनिक प्लेट दूसरी के नीचे धंसती है। ये सभी लक्षण महासागरीय नितल की जटिल संरचना और विकास की कहानी को प्रदर्शित करते हैं।

110. (D) पृथ्वी का घूर्णन (कोरिओलिस प्रभाव)
कोरिओलिस प्रभाव पृथ्वी के घूर्णन का परिणाम है जो गतिशील पिंडों जैसे कि पवनों और महासागरीय धाराओं की दिशा को विक्षेपित कर देता है। इस प्रभाव के कारण उत्तरी गोलार्ध में धाराएँ अपनी गति की दिशा से दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर मुड़ जाती हैं। यह बल भूमध्य रेखा पर शून्य होता है और ध्रुवों की ओर बढ़ता जाता है। यही कारण है कि महासागरों में धाराओं के विशाल वृत्ताकार चक्र या गायर निर्मित होते हैं जो वैश्विक जलवायु को प्रभावित करते हैं।

111. (A) टेरोपोड ऊज़
टेरोपोड ऊज़ एक जैविक महासागरीय निक्षेप है जो मुख्य रूप से सूक्ष्म समुद्री मोलस्क के कैल्शियम कार्बोनेट युक्त अवशेषों से बना होता है। यह जैविक मूल का होने के कारण टेरिजेनस श्रेणी में नहीं आता है। इसके विपरीत रेत, कीचड़ और ज्वालामुखीय धूल टेरिजेनस निक्षेपों के उदाहरण हैं क्योंकि इनकी उत्पत्ति स्थलीय चट्टानों के टूटने या ज्वालामुखीय गतिविधियों से होती है। टेरिजेनस निक्षेप सामान्यतः महाद्वीपीय किनारों के पास जमा होते हैं जबकि टेरोपोड ऊज़ गहरे और खुले महासागरों में पाए जाते हैं।

112. (B) यह मानसून के साथ मौसमी रूप से अपनी दिशा बदल देती है।
सोमाली धारा हिंद महासागर की एक अत्यंत विशिष्ट धारा है जो हॉर्न ऑफ अफ्रीका के साथ बहती है। इसकी अद्वितीयता इस तथ्य में निहित है कि यह भारतीय मानसून की पवनों के मौसमी बदलाव के प्रति संवेदनशील है। ग्रीष्मकालीन मानसून के दौरान यह उत्तर-पूर्व की ओर एक तीव्र गर्म धारा के रूप में बहती है, जबकि शीतकालीन मानसून के दौरान यह अपनी दिशा बदलकर दक्षिण-पश्चिम की ओर बहने लगती है। ऐसा दिशा परिवर्तन दुनिया की किसी अन्य प्रमुख महासागरीय धारा में इतनी स्पष्टता से नहीं देखा जाता है।

113. (B) 2, 3, 1
चार्ल्स डार्विन ने प्रवाल भित्तियों के विकास के लिए एक क्रमिक तीन-चरणीय मॉडल का प्रस्ताव दिया था। इस प्रक्रिया की शुरुआत एक सक्रिय ज्वालामुखी द्वीप के तट से सीधे जुड़ी हुई तटीय प्रवाल भित्ति से होती है। जब द्वीप धीरे-धीरे समुद्र के नीचे धंसने लगता है, तो प्रवाल ऊपर की ओर बढ़ते हैं और तट से अलग होकर अवरोधक भित्ति में बदल जाते हैं। अंततः जब द्वीप पूरी तरह जलमग्न हो जाता है, तो केवल प्रवाल का गोलाकार वलय या एटोल बचता है जो एक शांत केंद्रीय लैगून को घेरे रहता है।

114. (A) सूर्य के प्रकाश का प्रवेश
फोटिक और एफोटिक ज़ोन का वर्गीकरण पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करता है कि सूर्य का प्रकाश समुद्र की गहराई तक कितनी दूर तक प्रवेश कर पाता है। फोटिक ज़ोन ऊपरी परत है जहाँ पर्याप्त प्रकाश पहुँचता है जिससे प्रकाश संश्लेषण संभव होता है और अधिकांश समुद्री जीवन यहीं केंद्रित रहता है। इसके नीचे एफोटिक ज़ोन शुरू होता है जहाँ पूर्ण अंधकार रहता है और प्रकाश संश्लेषण संभव नहीं होता है। इन दोनों क्षेत्रों के बीच की विभाजक रेखा समुद्री पारिस्थितिकी को मौलिक रूप से निर्धारित करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

171. (D) उच्च
महासागरीय जल की लवणता मुख्य रूप से वाष्पीकरण और ताजे जल की आपूर्ति के बीच के संतुलन पर निर्भर करती है। जब किसी क्षेत्र में वाष्पीकरण की दर बहुत अधिक होती है, तो समुद्री जल से नमी हट जाती है लेकिन लवण पीछे ही रह जाते हैं। यदि उस क्षेत्र में वर्षा या नदियों के माध्यम से ताजे जल का आगमन कम है, तो लवणों की सांद्रता निरंतर बढ़ती जाती है। यही कारण है कि लाल सागर जैसे गर्म और शुष्क क्षेत्रों में सतही लवणता विश्व के अन्य क्षेत्रों की तुलना में सर्वाधिक पाई जाती है।

172. (B) एज़ोरेस और आइसलैंड
मध्य-अटलांटिक कटक एक विशाल जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जो अटलांटिक महासागर के बीचों-बीच फैली हुई है। कुछ स्थानों पर यह पर्वत श्रृंखला इतनी ऊंची हो जाती है कि यह समुद्र की सतह से ऊपर निकल आती है और द्वीपों का निर्माण करती है। आइसलैंड और एज़ोरेस द्वीप समूह इसी कटक के उभरे हुए भाग हैं। आइसलैंड विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ कटक पर होने वाला प्लेट अपसरण और ज्वालामुखी गतिविधि स्पष्ट रूप से भूमि पर देखी जा सकती है जो विवर्तनिक सक्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

173. (C) उच्च अक्षांश वाले क्षेत्रों और भूमध्यरेखीय अपवेलिंग क्षेत्रों में।
सिलीशियस ऊज़ उन समुद्री जीवों के अवशेषों से बनते हैं जिनके कवच सिलिका से निर्मित होते हैं जैसे कि डायटम और रेडियोलेरियन। ये जीव विशेष रूप से उन क्षेत्रों में प्रचुरता से पाए जाते हैं जहाँ जल ठंडा होता है या जहाँ गहराई से पोषक तत्वों का ऊपर की ओर प्रवाह होता है। चूंकि सिलिका गहरे और ठंडे समुद्री जल में कैल्शियम कार्बोनेट की तुलना में कम घुलनशील होती है, इसलिए यह अंटार्कटिक जैसे उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों और भूमध्यरेखीय उत्पादक क्षेत्रों के गहरे तल पर प्रमुखता से पाई जाती है।

174. (D) मिश्रित ज्वार
मिश्रित ज्वार एक ऐसा ज्वारीय पैटर्न है जिसमें प्रत्येक चंद्र दिवस में दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार आते हैं लेकिन इनकी ऊंचाई में काफी असमानता होती है। इसका अर्थ है कि क्रमिक उच्च ज्वारों और निम्न ज्वारों के जल स्तर में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। यह स्थिति अक्सर उन क्षेत्रों में बनती है जहाँ जटिल तटरेखा और समुद्र तल की आकृति ज्वारीय लहरों के सामान्य दोलन को प्रभावित करती है। उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट और कई प्रशांत द्वीपों पर मिश्रित ज्वार की परिघटना बहुत सामान्य है।

175. (A) पश्चिमी हिंद महासागर
अगुलहास धारा हिंद महासागर की एक अत्यंत शक्तिशाली और गर्म जलधारा है जो अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट के साथ दक्षिण की ओर बहती है। यह धारा मोजाम्बिक धारा और मेडागास्कर धारा के मिलने से बनती है। यह उष्णकटिबंधीय गर्मी को दक्षिण की ओर ले जाती है और दक्षिण अफ्रीका की तटीय जलवायु को प्रभावित करती है। अगुलहास धारा अपनी तीव्र गति और विशाल जल राशि के परिवहन के लिए जानी जाती है जो इसे हिंद महासागर के परिसंचरण तंत्र का एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ बनाती है।

176. (D) प्रशांत की विशेषता गर्तों वाले सक्रिय किनारे हैं, जबकि अटलांटिक में चौड़े मग्नतटों वाले निष्क्रिय किनारे हैं।
प्रशांत और अटलांटिक महासागरों के बीच संरचनात्मक अंतर विवर्तनिक गतिविधियों पर आधारित है। प्रशांत महासागर 'अग्नि वलय' से घिरा हुआ है जहाँ सक्रिय क्षेपण क्षेत्रों के कारण संकीर्ण मग्नतट और मारियाना जैसी गहरी गर्तें पाई जाती हैं। इसके विपरीत अटलांटिक महासागर के किनारे काफी हद तक स्थिर या निष्क्रिय हैं जहाँ प्लेटों की हलचल कम होती है। इस स्थिरता के कारण अटलांटिक में अवसादों का जमाव अधिक हुआ है जिससे यहाँ के महाद्वीपीय मग्नतट प्रशांत की तुलना में बहुत अधिक विस्तृत विकसित हुए हैं।

177. (B) कैल्शियम कार्बोनेट के घुलने की दर इसकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है।
समुद्र विज्ञान में 'क्षतिपूर्ति गहराई' वह स्तर है जहाँ कैल्शियम कार्बोनेट के जमा होने और उसके घुलने की दर समान हो जाती है। इसके नीचे चूना पत्थर के कवच जमा नहीं हो पाते क्योंकि वे अत्यधिक दबाव और कम तापमान वाले अम्लीय जल में तेजी से घुल जाते हैं। यह गहराई सामान्यतः 4,000 से 5,000 मीटर के बीच होती है। यही कारण है कि गहरे महासागरों के तल पर केवल सिलीशियस ऊज़ या लाल मृत्तिका ही पाई जाती है, क्योंकि कैल्शियम कार्बोनेट वहाँ स्थिर नहीं रह पाता है।

178. (D) खनिज जो सीधे समुद्री जल से अवक्षेपित होते हैं।
हाइड्रोजेनस निक्षेपों का निर्माण समुद्री जल के भीतर होने वाली सीधी रासायनिक अभिक्रियाओं का परिणाम है। जब समुद्री जल में घुले हुए खनिज एक निश्चित सांद्रता तक पहुँच जाते हैं, तो वे ठोस कणों के रूप में अलग होकर समुद्र तल पर बैठने लगते हैं। मैंगनीज नोड्यूल्स, फास्फोराइट और लौह-मैंगनीज क्रस्ट इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह प्रक्रिया जैविक गतिविधियों या स्थलीय अपरदन से स्वतंत्र होती है। ये निक्षेप बहुत धीमी गति से बढ़ते हैं और समुद्री खनिज संसाधनों का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

NODIA

179. (C) 2, 3, 1
महाद्वीपीय किनारे से गहरे समुद्र की ओर जाने पर एक निश्चित भू-आकृतिक अनुक्रम देखा जाता है। सबसे पहले उथला और मंद ढाल वाला महाद्वीपीय मग्नतट आता है जो महाद्वीप का ही विस्तार है। इसके बाद अचानक ढाल तेज हो जाती है जिसे महाद्वीपीय मग्नढाल कहा जाता है। ढाल के अंत में अवसादों के जमाव से बना महाद्वीपीय उत्थान होता है, और फिर हम गहरे समुद्र के अत्यंत विस्तृत और सपाट गंभीर सागरीय मैदान तक पहुँचते हैं। यह अनुक्रम महाद्वीपों के अंत और महासागरीय बेसिन की शुरुआत को दर्शाता है।

180. (B) ब्राजील धारा
ब्राजील धारा दक्षिण अटलांटिक महासागर की एक प्रमुख गर्म जलधारा है जो दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तट के साथ दक्षिण

तापमान बहुत कम और दबाव बहुत अधिक होता है जिससे जल में कार्बन डाइऑक्साइड की घुलनशीलता बढ़ जाती है और वह अम्लीय हो जाता है। इस अम्लीय वातावरण में कैल्शियम कार्बोनेट तेजी से घुलने लगता है। अतः इस गहराई के नीचे चूना पत्थर के निक्षेप जमा नहीं हो पाते हैं और केवल सिलिका आधारित अवसाद ही बचते हैं।

125. (C) ग्रहीय पवन प्रणाली
महासागरों में सतही जल का विशाल परिसंचरण मुख्य रूप से पृथ्वी की ग्रहीय पवनों जैसे व्यापारिक पवनों और पछुआ पवनों द्वारा संचालित होता है। ये पवनें समुद्र की सतह पर घर्षण पैदा करती हैं जिससे जल पवनों की दिशा में गतिशील होता है। कोरिओलिस बल और महाद्वीपीय तटों की उपस्थिति इस गति को विशाल गोलाकार चक्रों या 'गायर' में बदल देती है। ये चक्र ऊष्मा को भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर ले जाने और वैश्विक जलवायु को संतुलित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भू-भौतिकीय तंत्र के रूप में कार्य करते हैं।

126. (D) महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण (OTEC)
महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण (ओटेक) एक ऐसी तकनीक है जो महासागर की गर्म सतह और ठंडी गहराइयों के बीच के तापमान अंतर का उपयोग करके बिजली पैदा करती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सूरज की गर्मी से सतह का जल लगभग 25-30 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो जाता है, जबकि 1,000 मीटर की गहराई पर तापमान केवल 4-5 डिग्री सेल्सियस रहता है। इस ऊष्मीय प्रवणता का उपयोग करके कम क्वथनांक वाले द्रवों को वाष्पित किया जाता है जो टर्बाइन चलाकर स्वच्छ और निरंतर ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं।

127. (A) डार्विन का सिद्धांत - समुद्र के स्तर में परिवर्तन पर आधारित
चार्ल्स डार्विन का प्रवाल भित्ति निर्माण का सिद्धांत मुख्य रूप से द्वीपों के धीरे-धीरे नीचे धंसने या 'अवतलन' की प्रक्रिया पर आधारित है, न कि केवल समुद्र के स्तर में होने वाले अस्थायी उतार-चढ़ाव पर। डार्विन ने प्रस्तावित किया था कि जैसे-जैसे एक ज्वालामुखी द्वीप धंसता है, प्रवाल ऊपर की ओर बढ़ते हुए तटीय भित्ति से अवरोधक भित्ति और अंततः एटोल में बदल जाते हैं। समुद्र के स्तर में परिवर्तन का विचार मुख्य रूप से आर. ए. डेली के हिमानी नियंत्रण सिद्धांत की विशेषता है जो डार्विन के बाद आया था।

128. (B) एक बड़ी और केंद्रीय 'S'-आकार की जलमग्न पर्वत श्रृंखला।
अटलांटिक महासागर के अधस्तल की सबसे विशिष्ट पहचान इसकी मध्य-महासागरीय कटक है। यह एक विशाल जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जो महासागर के बिल्कुल बीच में उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है। इसकी आकृति देवनागरी लिपि के 'एस' आकार जैसी है जो महासागर की तटरेखाओं के समानांतर चलती है। यह संरचना विवर्तनिक प्लेटों के अपसरण का परिणाम है जहाँ भू-गर्भ से मैग्मा निकलकर नई महासागरीय क्रस्ट का निर्माण करता रहता है। यह दुनिया की सबसे लंबी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक मानी जाती है।

129. (B) उच्च वाष्पीकरण वाले उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र।
महासागरों में उच्चतम सतही लवणता सामान्यतः उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटियों या अश्व अक्षांशों के आसपास पाई जाती है। इन क्षेत्रों में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं जिससे वाष्पीकरण की दर बहुत अधिक होती है लेकिन वर्षा बहुत कम होती है। वाष्पीकरण के दौरान केवल शुद्ध जल वाष्पित होता है और लवण पीछे रह जाते हैं जिससे जल की लवणीय सांद्रता बढ़ जाती है। इसके विपरीत भूमध्य रेखा पर भारी वर्षा और ध्रुवों पर बर्फ के पिघलने से ताज़ा जल मिलने के कारण लवणता काफी कम रहती है।

130. (A) मिश्रित अर्ध-दैनिक ज्वार
मिश्रित अर्ध-दैनिक ज्वार एक ऐसा ज्वारीय पैटर्न है जिसमें प्रत्येक दिन दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार आते हैं लेकिन इनकी ऊंचाई एक समान नहीं होती है। इसका अर्थ है कि एक उच्च ज्वार दूसरे उच्च ज्वार से अधिक ऊंचा हो सकता है और इसी प्रकार निम्न ज्वार भी भिन्न गहराई के हो सकते हैं। यह भिन्नता सूर्य और चंद्रमा के बदलते झुकाव तथा स्थानीय तटरेखा की बनावट के कारण उत्पन्न होती है। इस प्रकार के ज्वार विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका के प्रशांत तट पर बहुत सामान्य रूप से देखे जाते हैं।

131. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
महासागरीय निक्षेपों का वर्गीकरण उनकी उत्पत्ति के आधार पर किया जाता है। टेरिजेनस निक्षेप स्थलीय अपरदन से प्राप्त होकर नदियों द्वारा समुद्र में लाए जाते हैं जैसे कि रेत। बायोजेनस निक्षेप समुद्री जीवों के सूक्ष्म अवशेषों जैसे फोरामिनिफेरा कवचों से बनते हैं। हाइड्रोजेनस निक्षेप समुद्री जल से सीधे खनिजों के अवक्षेपण द्वारा निर्मित होते हैं जैसे कि मैंगनीज नोड्यूल्स। कॉस्मोजेनस निक्षेप बाह्य अंतरिक्ष से आने वाले उल्कापिंडों के कणों या टेक्टाइट्स के रूप में होते हैं जो समुद्र के गहरे तल पर जमा होते हैं।

132. (D) उत्तरी अटलांटिक महासागर तल
टेलीग्राफ पठार उत्तरी अटलांटिक महासागर के अधस्तल की एक प्रसिद्ध जलमग्न विशेषता है। यह वास्तव में मध्य-अटलांटिक कटक का एक विस्तृत हिस्सा है जो ग्रीनलैंड और स्कॉटलैंड के बीच स्थित है। इसे यह नाम 19वीं शताब्दी के मध्य में दिया गया था जब पहली बार यूरोप और अमेरिका के बीच समुद्र के नीचे से टेलीग्राफ केबल बिछाने के लिए इसका सर्वेक्षण किया गया था। इस पठार की अपेक्षाकृत कम गहराई और समतल सतह ने समुद्र के पार संचार संपर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

133. (A) केवल 1 और 2
हिंद महासागर एकमात्र ऐसा महासागर है जिसका नाम किसी देश के नाम पर रखा गया है, जो इसके ऐतिहासिक और रणनीतिक महत्व को दर्शाता है। इसकी मध्य-महासागरीय कटक प्रणाली काफी खंडित और जटिल है जिसमें कार्ल्सबर्ग कटक जैसे महत्वपूर्ण हिस्से शामिल हैं। हालाँकि यह कहना गलत है कि इसमें गहरी गर्तों का अभाव है, क्योंकि जावा गर्त जिसे सुंडा गर्त भी कहा जाता है, हिंद महासागर की एक

Downloaded from www.pdf.tube

प्रमुख और अत्यंत गहरी गर्त है। अतः केवल पहली और दूसरी विशेषता ही भौगोलिक रूप से सटीक हैं।

134. (B) जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, घनत्व घटता है।
समुद्री जल के तापमान और उसके घनत्व के बीच एक व्युत्क्रमानुपाती संबंध होता है। जब जल का तापमान बढ़ता है, तो उसके अणु अधिक ऊर्जा प्राप्त करके फैलते हैं जिससे जल का आयतन बढ़ जाता है और वह हल्का या कम सघन हो जाता है। यही कारण है कि गर्म जल हमेशा समुद्र की सतह पर रहता है जबकि ठंडा और सघन जल नीचे की ओर बैठ जाता है। यह तापमान-घनत्व संबंध महासागरीय परतों के निर्माण और जल के ऊर्ध्वाधर मिश्रण की प्रक्रिया को मौलिक रूप से नियंत्रित करता है।

135. (D) वायुमंडलीय आर्द्रता
महासागरीय धाराओं के निर्माण और उनकी गति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में ग्रहीय पवनें, कोरिओलिस बल और जल के तापमान एवं लवणता में अंतर से उत्पन्न होने वाले घनत्व परिवर्तन शामिल हैं। पवनें जल को धक्का देती हैं जबकि कोरिओलिस बल उनकी दिशा को मोड़ता है। वायुमंडलीय आर्द्रता हवा में नमी की मात्रा को दर्शाती है, जिसका समुद्री जल की बड़े पैमाने पर होने वाली भौतिक गति पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः आर्द्रता को धाराओं के प्रवाह के लिए उत्तरदायी कारक नहीं माना जाता है।

136. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रशांत महासागर के चारों ओर 'अग्नि वलय' की उपस्थिति इसकी सक्रिय विवर्तनिक सीमाओं का प्रत्यक्ष परिणाम है। यहाँ महासागरीय प्लेटें निरंतर अन्य प्लेटों के नीचे धंस रही हैं जिसे क्षेपण प्रक्रिया कहा जाता है। इस भूगर्भीय गतिविधि के कारण मैग्मा का निर्माण होता है जो ज्वालामुखीय विस्फोटों के रूप में सतह पर आता है। साथ ही प्लेटों के रगड़ने से भारी मात्रा में ऊर्जा मुक्त होती है जो भूकंपों का कारण बनती है। अतः प्रशांत बेसिन के किनारों पर गर्तों और ज्वालामुखियों का यह जमाव वैज्ञानिक रूप से संबंधित है।

137. (C) प्लवक
जैविक संसाधन वे होते हैं जो जीवित जीवों या उनके जीवन चक्र से प्राप्त होते हैं। प्लवक सूक्ष्म समुद्री जीव और वनस्पतियां हैं जो महासागरों की खाद्य श्रृंखला का आधार बनाते हैं और पूर्णतः जैविक श्रेणी में आते हैं। इसके विपरीत पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स और नमक निर्जीव रासायनिक प्रक्रियाओं से प्राप्त खनिज संसाधन हैं। पेट्रोलियम हालांकि जैविक अवशेषों से बनता है, लेकिन इसे तकनीकी रूप से खनिज तेल या ऊर्जा संसाधन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अतः प्लवक महासागर के सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक जैविक संसाधन हैं।

138. (A) हिंद महासागर
सुंडा गर्त जिसे जावा गर्त के नाम से भी जाना जाता है, हिंद महासागर की सबसे गहरी और महत्वपूर्ण गर्त है। यह सुमात्रा और जावा के द्वीपों के समानांतर एक लंबी चाप के रूप में विस्तृत है। इस गर्त का निर्माण भारतीय-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट के यूरेशियाई प्लेट के नीचे धंसने के कारण हुआ है। यह क्षेत्र अत्यंत उच्च भूकंपीय गतिविधि के लिए जाना जाता है और 2004 में आई विनाशकारी सुनामी का मुख्य केंद्र भी इसी क्षेत्र के पास स्थित था। यह हिंद महासागर के भूगर्भीय इतिहास का एक प्रमुख प्रतीक है।

139. (D) डेली का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
डेली का हिमानी नियंत्रण सिद्धांत प्रवाल भित्तियों के निर्माण को हिमयुग के दौरान समुद्र के स्तर में होने वाले उतार-चढ़ाव से जोड़ता है। इस सिद्धांत के अनुसार हिमयुग में जब समुद्र का स्तर गिर गया, तो लहरों ने पुराने द्वीपों को काटकर सपाट प्लेटफॉर्म बना दिए। जब ग्लेशियर पिघले और समुद्र का स्तर फिर से बढ़ा, तो प्रवाल इन जलमग्न प्लेटफॉर्मों पर ऊपर की ओर विकसित होने लगे। यह साक्ष्य कि भित्तियां तरंग-कटाव वाले आधार पर बनी हैं, डेली के इस विचार का पुख्ता समर्थन करता है और अवतलन के विचार का विकल्प है।

140. (B) महासागरीय प्लेटों का अभिसरण और क्षेपण
महासागरीय गर्त पृथ्वी के सबसे गहरे स्थान हैं और इनका निर्माण हमेशा विवर्तनिक प्लेटों के टकराने वाले क्षेत्रों में होता है। जब एक सघन महासागरीय प्लेट दूसरी प्लेट के नीचे मुड़कर मेंटल में धंसती है, तो उस मोड़ वाले स्थान पर एक अत्यंत गहरी और संकीर्ण खाई बन जाती है जिसे गर्त कहते हैं। यह प्रक्रिया क्षेपण कहलाती है। महाद्वीपीय अपसरण या रिफ्टिंग से कटकों का निर्माण होता है, न कि गर्तों का। अतः गर्तें हमेशा विनाशकारी प्लेट सीमाओं और प्लेटों के अभिसरण का प्रत्यक्ष परिणाम होती हैं।

141. (C) उत्तरी विषुवतीय धारा → गल्फ स्ट्रीम → उत्तरी अटलांटिक प्रवाह → कनारी धारा
उत्तरी अटलांटिक गायर एक विशाल वृत्ताकार धारा प्रणाली है जो पवनों और कोरिओलिस बल के प्रभाव से बनती है। इसकी शुरुआत गर्म उत्तरी विषुवतीय धारा से होती है जो पश्चिम की ओर बहती है। यह मुड़कर गल्फ स्ट्रीम के रूप में अमेरिका के तट के साथ उत्तर की ओर जाती है। फिर यह पछुआ पवनों के प्रभाव से पूर्व की ओर उत्तरी अटलांटिक प्रवाह के रूप में मुड़ जाती है। अंत में ठंडी कनारी धारा के रूप में यह वापस दक्षिण की ओर आती है और अपना चक्र पूरा करती है।

142. (D) लवणता
हैलोकलाइन महासागर के जल के भीतर की वह ऊर्ध्वाधर परत है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ लवणता की मात्रा में बहुत ही तीव्र बदलाव दर्ज किया जाता है। यह परत सामान्यतः ऊपरी मिश्रित परत और गहरे जल के बीच एक बाधा के रूप में कार्य करती है। लवणता में यह तीव्र परिवर्तन जल के घनत्व और उसके परिसंचरण को प्रभावित करता है क्योंकि अधिक खारा जल भारी होकर नीचे बैठने की प्रवृत्ति रखता है। हैलोकलाइन के माध्यम से वैज्ञानिक महासागर की परतों की स्थिरता और उनके मिश्रण का गहन अध्ययन करते हैं।

143. (A) तापमान की उच्चतम वार्षिक सीमा भूमध्य रेखा पर खुले महासागरों में दर्ज की जाती है।
महासागरीय तापमान की वार्षिक सीमा, जिसे उच्चतम और न्यूनतम तापमान के बीच के अंतर के रूप में जाना जाता है, भूमध्य रेखा पर वास्तव में बहुत कम होती है क्योंकि वहाँ साल भर सौर विकिरण लगभग समान रहता है। तापमान की सबसे अधिक वार्षिक सीमा सामान्यतः मध्य अक्षांशों के बंद समुद्रों या बड़े महासागरों के उन क्षेत्रों में देखी जाती है जहाँ ऋतुओं का प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है। भूमध्यरेखीय महासागरों में सतही तापमान काफी स्थिर रहता है और वार्षिक रूप से बहुत अधिक नहीं बदलता है।

144. (B) पृथ्वी के विपरीत पक्षों पर चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव में अंतर।
ज्वार-उत्पादक बल वास्तव में एक विभेदक बल है क्योंकि यह पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों पर लगने वाले चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल की भिन्नता पर निर्भर करता है। चंद्रमा के सबसे करीब वाले पृथ्वी के हिस्से पर खिंचाव सबसे मजबूत होता है जिससे जल में उभार आता है। वहीं पृथ्वी के केंद्र और सबसे दूर वाले हिस्से पर यह बल कम होता जाता है। पृथ्वी के केंद्र की तुलना में दूर वाले हिस्से पर गुरुत्वाकर्षण कम होने से वहां भी एक उभार बनता है। इन बलों के इसी स्थानिक अंतर के कारण ज्वार उत्पन्न होते हैं।

145. (B) सूक्ष्म समुद्री जीवों के कठोर अवशेष।
ऊज़ गहरे महासागर के बेसिनों में पाया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का अगाधसागरीय निक्षेप है जो मुख्य रूप से जैविक मूल का होता है। इसमें फोरामिनिफेरा, डायटम और रेडियोलेरियन जैसे सूक्ष्म प्लवक जीवों के कैल्शियम कार्बोनेट या सिलिका से बने कवच शामिल होते हैं। जब ये जीव मरते हैं, तो उनके कठोर अवशेष धीरे-धीरे समुद्र के तल पर गिरकर एक कोमल कीचड़ जैसी परत बनाते हैं। ऊज़ के प्रकारों को उनमें मौजूद खनिजों के आधार पर कैल्केरियस या सिलीशियस श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

146. (A) बड़ी संख्या में अलग-थलग समुद्री पर्वत, गाइओट और गहरी गर्त।
प्रशांत महासागर दुनिया का सबसे प्राचीन और गहरा महासागर है जिसके अधस्तल पर अन्य महासागरों की तुलना में कहीं अधिक विविधतापूर्ण स्थलाकृतियाँ मौजूद हैं। इसमें हजारों की संख्या में जलमग्न ज्वालामुखी पर्वत और सपाट शीर्ष वाले गाइओट पाए जाते हैं। साथ ही इसके किनारों पर मारियाना जैसी अत्यंत गहरी गर्तें स्थित हैं जो सक्रिय क्षेपण क्षेत्रों का परिणाम हैं। इसमें अटलांटिक की तरह कोई एक स्पष्ट केंद्रीय कटक नहीं है, बल्कि इसकी कटक प्रणाली अधिक विस्तृत और पार्श्व में स्थित है।

147. (C) दैनिक
दैनिक ज्वार एक ऐसा ज्वारीय चक्र है जिसमें प्रत्येक चंद्र दिवस यानी लगभग 24 घंटे 50 मिनट की अवधि में केवल एक उच्च ज्वार और एक निम्न ज्वार आता है। यह पैटर्न तब विकसित होता है जब खगोलीय पिंडों की स्थिति और स्थानीय तटरेखा की बनावट समुद्र के जल को दिन में केवल एक बार दोलन करने के लिए प्रेरित करती है। हालांकि अर्ध-दैनिक ज्वार वैश्विक स्तर पर अधिक सामान्य हैं, लेकिन मैक्सिको की खाड़ी जैसे कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में दैनिक ज्वार ही प्रमुखता से देखे जाते हैं।

148. (D) बॉक्साइट निक्षेप
महासागरों के तल पर पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और मैंगनीज नोड्यूल्स जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। फास्फोराइट नोड्यूल्स भी महाद्वीपीय किनारों पर सामान्य रूप से मिलते हैं। इसके विपरीत बॉक्साइट निक्षेप मुख्य रूप से स्थलीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं क्योंकि इनका निर्माण उष्णकटिबंधीय जलवायु में चट्टानों के अत्यधिक रासायनिक अपक्षय और निक्षालन की प्रक्रिया से होता है। यह एक सतही स्थलीय खनिज है जो समुद्री वातावरण में नहीं बनता है। अतः बॉक्साइट को महासागरीय खनिज संसाधन नहीं माना जाता है।

149. (C) दक्षिणी अफ्रीका का पश्चिमी तट
बेंगवेला धारा दक्षिण अटलांटिक महासागर की एक प्रमुख ठंडी जलधारा है जो अफ्रीका के दक्षिणी छोर से उत्तर की ओर अंगोला और नामीबिया के तटों के साथ बहती है। यह धारा अंटार्कटिका की ओर से ठंडे जल को भूमध्य रेखा की ओर ले जाती है। यह धारा न केवल समुद्र के तापमान को प्रभावित करती है, बल्कि नामीब मरुस्थल की शुष्कता के लिए भी उत्तरदायी मानी जाती है। इसके प्रवाह के कारण होने वाली अपवेलिंग इस क्षेत्र को मत्स्य पालन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और उत्पादक बनाती है।

150. (B) विशिष्ट क्रम भिन्न होता है और वैश्विक स्तर पर निश्चित नहीं है।
महासागरीय जल की परतों का क्रम और उनकी गहराई वैश्विक स्तर पर एक समान नहीं होती क्योंकि ये स्थानीय कारकों जैसे अक्षांश, ऋतु और समुद्री धाराओं से प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में थर्मोकलाइन बहुत स्पष्ट और उथली होती है, जबकि ध्रुवीय क्षेत्रों में जल का तापमान सतह से तल तक लगभग एक समान रहता है। इसी तरह लवणता और घनत्व की परतें भी क्षेत्रीय वाष्पीकरण और वर्षा के पैटर्न के अनुसार बदलती रहती हैं। अतः किसी एक निश्चित अनुक्रम का दावा करना गलत है।

151. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
हिंद महासागर की कटक प्रणाली भूगर्भीय रूप से अत्यंत जटिल है क्योंकि यह कई शाखाओं में विभाजित है और इसमें नाइन्टी ईस्ट रिज जैसे विशिष्ट लक्षण हैं। वहीं प्रशांत महासागर दुनिया के अधिकांश समुद्री पर्वतों और गाइओट का घर है जिनकी संख्या हजारों में है। ये दोनों तथ्य महासागरों की संरचनात्मक विविधता को प्रदर्शित करते हैं। प्रशांत की प्राचीन क्रस्ट और हिंद महासागर के निर्माण के दौरान हुई प्लेटों की हलचल ने इन दोनों क्षेत्रों को उनके वर्तमान और अद्वितीय स्वरूप प्रदान किए हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

निक्षेप है क्योंकि यह अत्यंत सूक्ष्म कणों से बनी होती है जो गहरे अगाध क्षेत्रों में जमा होते हैं, न कि नेरिटिक निक्षेप। अतः केवल पहले दो कथन ही निक्षेपों के भौगोलिक वितरण की सही और वैज्ञानिक व्याख्या करते हैं।

190. (B) हाइड्रोजेनस अवक्षेपण
मैंगनीज नोड्यूल्स का निर्माण समुद्री जल में घुले हुए धात्विक खनिजों के सीधे रासायनिक अवक्षेपण की प्रक्रिया से होता है। यह एक अत्यंत धीमी प्रक्रिया है जिसमें मैंगनीज और लोहे के ऑक्साइड धीरे-धीरे एक केंद्र के चारों ओर परतों के रूप में जमा होते जाते हैं। यह निक्षेपण सामान्यतः गहरे समुद्री मैदानों के शांत वातावरण में होता है जहाँ अन्य अवसादों का हस्तक्षेप बहुत कम होता है। ये नोड्यूल्स भविष्य के लिए तांबा, निकेल और कोबाल्ट जैसे महत्वपूर्ण धातुओं के विशाल और मूल्यवान स्रोत माने जाते हैं।

191. (B) थर्मोहेलाइन परिसंचरण
समुद्री जल का घनत्व जो तापमान और लवणता पर निर्भर करता है, वैश्विक स्तर पर गहरे समुद्री जल की गति को चलाने वाला मुख्य कारक है। इस प्रक्रिया को थर्मोहेलाइन परिसंचरण या 'वैश्विक कन्वेयर बेल्ट' कहा जाता है। ठंडा और खारा जल अधिक सघन होने के कारण ध्रुवों के पास गहराई में डूब जाता है और फिर पूरे महासागर बेसिन में धीरे-धीरे प्रवाहित होता है। यह परिसंचरण पूरी पृथ्वी पर ऊष्मा, ऑक्सीजन और पोषक तत्वों के वितरण को संतुलित करने के लिए पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

192. (A) पूर्वी प्रशांत उत्थान
पूर्वी प्रशांत उत्थान वास्तव में प्रशांत महासागर की मुख्य मध्य-महासागरीय कटक प्रणाली है जहाँ विवर्तनिक प्लेटों का अपसरण होता है। इसका संबंध हिंद महासागर से नहीं है। हिंद महासागर की प्रमुख कटक प्रणालियों में कार्ल्सबर्ग कटक, मध्य-हिंद कटक और दक्षिण-पश्चिम हिंद कटक शामिल हैं जो इसे कई बेसिनों में विभाजित करती हैं। इन कटकों का विन्यास हिंद महासागर के निर्माण के दौरान हुई प्लेट विवर्तनिकी की जटिल हलचलों को प्रदर्शित करता है जो प्रशांत की सरल संरचना से काफी भिन्न और विशिष्ट है।

193. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अटलांटिक महासागर मुख्य रूप से निष्क्रिय महाद्वीपीय किनारों से घिरा हुआ है जहाँ विवर्तनिक गतिविधियाँ कम होती हैं। इस स्थिरता के कारण यहाँ प्लेटों का क्षेपण नहीं होता जिससे प्रशांत की तरह गहरी गर्तों का निर्माण नहीं हो पाता। इसके बजाय अटलांटिक में विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतट और उत्थान पाए जाते हैं जो लाखों वर्षों के अवसादन का परिणाम हैं। अतः विवर्तनिक शांति और निष्क्रिय किनारों की उपस्थिति ही अटलांटिक महासागर में गर्तों की कमी का मूल वैज्ञानिक और भौगोलिक कारण है।

194. (D) प्रचलित पवनों का घर्षण खिंचाव
सतही महासागरीय धाराओं के परिसंचरण के लिए वायुमंडल की ग्रहीय पवनें जैसे व्यापारिक पवनें और पछुआ पवनें सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक बल हैं। जब ये पवनें समुद्र की सतह के ऊपर चलती हैं, तो वे घर्षण के माध्यम से जल को धक्का देती हैं और उसे गतिशील बनाती हैं। हालांकि कोरिओलिस बल और महाद्वीपीय तटरेखाएं इन धाराओं की दिशा को मोड़ने में मदद करती हैं, लेकिन प्रारंभिक ऊर्जा पवन के घर्षण खिंचाव से ही प्राप्त होती है जो वैश्विक जल चक्र को सतत रूप से संचालित करती है।

195. (C) महाद्वीपीय मग्नढाल
महाद्वीपीय मग्नढाल वह क्षेत्र है जहाँ महाद्वीपीय किनारे की अचानक और तीव्र गिरावट शुरू होती है। यह वास्तव में महाद्वीपीय क्रस्ट और महासागरीय क्रस्ट के बीच की मुख्य भूगर्भीय सीमा को चिह्नित करती है। यहाँ की गहराई सामान्यतः 200 मीटर से बढ़कर 3,000 मीटर तक हो जाती है। यह ढाल महाद्वीपों के वास्तविक अंत और गहरे समुद्री बेसिन की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करती है। विवर्तनिक दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ क्रस्ट की मोटाई और संरचना में मौलिक परिवर्तन आते हैं।

196. (B) गर्म, उथले और स्वच्छ उष्णकटिबंधीय जल में।
प्रवाल भित्तियों का निर्माण करने वाले प्रवाल पॉलिप्स के जीवित रहने के लिए कुछ विशिष्ट पर्यावरणीय दशाएं अनिवार्य हैं। वे सर्वोत्तम रूप से 20 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच के गर्म जल में पनपते हैं। उन्हें प्रकाश संश्लेषण के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है, इसलिए वे केवल 50-60 मीटर तक के उथले जल में ही पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त जल का स्वच्छ और अवसाद मुक्त होना जरूरी है ताकि प्रवाल के छिद्र बंद न हों और प्रकाश गहराई तक बिना किसी बाधा के पहुँच सके।

197. (D) लघु ज्वार
लघु ज्वार जिसे नीप टाइड भी कहा जाता है, के दौरान ज्वारीय परिसर या उच्च और निम्न जल के बीच का अंतर अपने न्यूनतम स्तर पर होता है। यह तब होता है जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के साथ एक समकोण बनाते हैं जिससे उनके गुरुत्वाकर्षण बल एक-दूसरे के प्रभाव को आंशिक रूप से संतुलित कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप समुद्र के जल में उभार कम हो जाता है जिससे उच्च ज्वार बहुत ऊंचे नहीं होते और निम्न ज्वार बहुत नीचे नहीं गिरते। यह खगोलीय स्थिति महीने में दो बार बनती है।

198. (A) घनत्व
पिक्नोकलाइन महासागर की वह विशिष्ट ऊर्ध्वाधर परत है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ जल के घनत्व में बहुत ही तीव्र और अचानक परिवर्तन देखा जाता है। यह परत सामान्यतः ऊपरी गर्म और कम सघन जल को नीचे के ठंडे और अधिक सघन जल से अलग करती है। घनत्व में यह बदलाव मुख्य रूप से तापमान (थर्मोकलाइन) और लवणता (हैलोकलाइन) के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होता है। पिक्नोकलाइन महासागरीय जल के ऊर्ध्वाधर मिश्रण में बाधा के रूप में कार्य करती है और विभिन्न गहराईयों के पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती है।

NODIA

गहरे अगाध क्षेत्रों में जमा होते हैं। अतः केवल पहले दो कथन ही निक्षेपों के भौगोलिक वितरण और वर्गीकरण के नियमों को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

162. (A) चार्ल्स डार्विन
चार्ल्स डार्विन ने 1842 में प्रवाल भित्तियों की उत्पत्ति का 'अवतलन सिद्धांत' प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार एटोल का निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें ज्वालामुखी द्वीप धीरे-धीरे समुद्र के नीचे धंसता जाता है। जब तक द्वीप धंसता है, प्रवाल पॉलिप्स प्रकाश और ऑक्सीजन की खोज में ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं। अंततः द्वीप पूरी तरह जलमग्न हो जाता है और केवल प्रवाल का गोलाकार वलय ही शेष रह जाता है। यह सिद्धांत भूगर्भीय परिवर्तनों और जैविक विकास के बीच एक अद्भुत संतुलन को प्रदर्शित करता है।

163. (C) ज्वारीय बोर
ज्वारीय बोर एक प्राकृतिक परिघटना है जिसमें आने वाला ज्वार किसी संकीर्ण खाड़ी या नदी के मुहाने में प्रवेश करते समय एक खड़ी तरंग का रूप ले लेता है। यह तरंग जल के प्रवाह के विपरीत दिशा में नदी में ऊपर की ओर तेजी से बढ़ती है। ऐसा तब होता है जब नदी का मुहाना उथला और कीप के आकार का होता है जो ज्वारीय ऊर्जा को एक संकीर्ण स्थान में केंद्रित कर देता है। भारत में हुगली नदी और ब्राजील में अमेज़न नदी में ज्वारीय बोर की घटनाएं प्रसिद्ध हैं।

164. (D) तापमान और लवणता के कारण घनत्व में अंतर
महासागरीय जल का ऊर्ध्वाधर परिसंचरण जिसे थर्मोहेलाइन परिसंचरण भी कहा जाता है, मुख्य रूप से घनत्व में अंतर के कारण संचालित होता है। ठंडा और अत्यधिक लवणीय जल अधिक सघन होता है जिससे वह समुद्र की गहराइयों में नीचे की ओर बैठ जाता है। वहीं गर्म और कम खारा जल हल्का होने के कारण ऊपर की ओर बढ़ता है। यह घनत्व आधारित गति एक विशाल 'वैश्विक कन्वेयर बेल्ट' की तरह कार्य करती है जो पूरी दुनिया के महासागरों में ऊष्मा, ऑक्सीजन और पोषक तत्वों का परिवहन करती है।

165. (C) अटलांटिक महासागर
व्योमिंग बेसिन और केप बेसिन अटलांटिक महासागर के अधस्तल पर स्थित दो विशाल और गहरे बेसिन हैं। अटलांटिक महासागर अपनी मध्य-महासागरीय कटक द्वारा कई अलग-अलग बेसिनों में विभाजित है। केप बेसिन दक्षिण अफ्रीका के पश्चिमी तट के पास स्थित है जबकि व्योमिंग बेसिन उत्तरी भाग में पाया जाता है। ये बेसिन गंभीर सागरीय मैदानों का हिस्सा हैं जहाँ सूक्ष्म अवसादों की मोटी परतें जमा होती हैं। इनका विस्तार और गहराई इस महासागर की विवर्तनिक स्थिरता और व्यापक संरचना को दर्शाती है।

166. (B) ओयाशियो धारा
ओयाशियो धारा उत्तरी प्रशांत महासागर की एक प्रमुख ठंडी जलधारा है जो आर्कटिक क्षेत्र से दक्षिण की ओर जापान के पूर्वी तट के साथ बहती है। इसे 'कुरील धारा' के नाम से भी जाना जाता है। यह धारा अत्यंत ठंडे और पोषक तत्वों से भरपूर जल का परिवहन करती है। जब यह दक्षिण से आने वाली गर्म क्यूरोशियो धारा से मिलती है, तो वहाँ घना कोहरा पैदा होता है और मछलियों के लिए अनुकूल स्थितियाँ बनती हैं। इसके विपरीत क्यूरोशियो, पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई और अलास्का धाराएं गर्म जलधाराएं हैं।

167. (D) 200 मीटर
महाद्वीपीय मग्नतट महाद्वीप का वह जलमग्न हिस्सा है जो समुद्र के किनारे से शुरू होकर महाद्वीपीय ढाल तक विस्तृत होता है। इसकी औसत गहराई लगभग 200 मीटर मानी जाती है। इसका ढाल बहुत ही मंद होता है जो आमतौर पर एक डिग्री से भी कम होता है। कम गहराई के कारण यहाँ सूर्य का प्रकाश आसानी से तल तक पहुँचता है जिससे यह क्षेत्र जैविक उत्पादकता के लिए विश्व में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। यह क्षेत्र मत्स्य पालन और खनिज तेल के संसाधनों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

168. (A) इओलियन संसाधन जैसे समुद्र के ऊपर पवन पैटर्न
महासागरीय संसाधन उन पदार्थों या ऊर्जा को कहा जाता है जो सीधे महासागर के जल, उसके जीवों या उसके तल से प्राप्त होते हैं। जैविक संसाधनों में मछली और समुद्री पौधे शामिल हैं जबकि खनिज संसाधनों में रेत, तेल और नोड्यूल्स आते हैं। ज्वार और तरंगें ऊर्जा के महत्वपूर्ण महासागरीय स्रोत हैं। इसके विपरीत इओलियन प्रक्रियाएं वायुमंडल और पवन से संबंधित हैं। हालांकि पवनें धाराओं को चलाती हैं, लेकिन पवन पैटर्न स्वयं महासागर का आंतरिक भौतिक संसाधन नहीं माना जाता है।

169. (C) प्रवाल जलमग्न तटों पर बनते हैं, और एक लैगून बनाने के लिए आंतरिक भाग घुल जाता है।
जॉन मरे का समाधान सिद्धांत प्रवाल भित्तियों के निर्माण के लिए रासायनिक और जैविक प्रक्रियाओं पर बल देता है। उनके अनुसार प्रवाल उथले जलमग्न प्लेटफॉर्म पर विकसित होते हैं। जैसे-जैसे भित्ति बाहर की ओर बढ़ती है, उसका आंतरिक हिस्सा पोषक तत्वों और ऑक्सीजन की कमी के कारण मरने लगता है। समुद्री जल की रासायनिक क्रिया मृत प्रवाल के चूना पत्थर को धीरे-धीरे घोल देती है जिससे बीच में एक शांत लैगून बन जाता है। यह सिद्धांत द्वीपों के धंसने के विचार का एक प्रमुख विकल्प है।

170. (A) घनत्व
पिक्नोकलाइन महासागर के जल की वह ऊर्ध्वाधर परत है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ जल के घनत्व में अत्यधिक तीव्र परिवर्तन दर्ज किया जाता है। यह परत सामान्यतः ऊपरी मिश्रित परत और गहरे जल के बीच एक विभाजक का कार्य करती है। घनत्व में यह बदलाव मुख्य रूप से तापमान (थर्मोकलाइन) और लवणता (हैलोकलाइन) में होने वाले परिवर्तनों का परिणाम होता है। पिक्नोकलाइन महासागरीय जल के ऊर्ध्वाधर मिश्रण को नियंत्रित करती है और विभिन्न जल निकायों के बीच एक भौतिक बाधा के रूप में कार्य करती है।

115. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धांतों के अनुसार महासागरों का आकार स्थिर नहीं रहता है। प्रशांत महासागर के चारों ओर कई सक्रिय क्षेपण क्षेत्र हैं जहाँ महासागरीय क्रस्ट का निरंतर विनाश हो रहा है जिससे यह धीरे-धीरे सिकुड़ रहा है। इसके विपरीत अटलांटिक महासागर के बीच में स्थित मध्य-अटलांटिक कटक पर नई समुद्री सतह का निरंतर निर्माण हो रहा है जिससे यह महासागर चौड़ा होता जा रहा है। ये लंबी अवधि की भूगर्भीय प्रक्रियाएं हैं जो लाखों वर्षों के कालखंड में महाद्वीपों की स्थितियों को बदल रही हैं।

116. (D) गर्म गल्फ स्ट्रीम और ठंडी लैब्राडोर धारा का मिश्रण।
न्यूफ़ाउंडलैंड के निकट ग्रैंड बैंक में मछली पकड़ने के उद्योग की समृद्धि का मुख्य कारण यहाँ दो विपरीत स्वभाव वाली धाराओं का मिलना है। उत्तर से आने वाली ठंडी लैब्राडोर धारा अपने साथ प्रचुर ऑक्सीजन और पोषक तत्व लाती है, जबकि दक्षिण से आने वाली गर्म गल्फ स्ट्रीम जल को जमने से रोकती है। इन दोनों के मिश्रण से फाइटोप्लांकटन की भारी वृद्धि होती है जो मछलियों का मुख्य भोजन है। हालाँकि इस मिलन क्षेत्र में अक्सर घना कोहरा छाया रहता है जो नौसंचालन के लिए चुनौतीपूर्ण है।

117. (C) कॉस्मोजेनस
कॉस्मोजेनस निक्षेप उन बाह्य अंतरिक्षीय पदार्थों को संदर्भित करते हैं जो उल्कापिंडों के गिरने या ब्रह्मांडीय धूल के रूप में पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करने के बाद महासागरों के तल पर जमा हो जाते हैं। ये निक्षेप बहुत सूक्ष्म मात्रा में होते हैं और अक्सर सिलिकेट या धात्विक गोलिकाओं के रूप में पाए जाते हैं। गहरे समुद्र के शांत वातावरण में जहाँ अन्य प्रकार के अवसादन की दर बहुत धीमी होती है, वहाँ ये कॉस्मोजेनस कण स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं। ये पृथ्वी और अंतरिक्ष के बीच के ऐतिहासिक संबंधों के अध्ययन में महत्वपूर्ण हैं।

118. (B) वृहद् ज्वार पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य के संरेखण से उत्पन्न होते हैं, जबकि लघु ज्वार उनकी लंबवत व्यवस्था से उत्पन्न होते हैं। वृहद् ज्वार पूर्णिमा और अमावस्या को आते हैं जब पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य एक सीधी रेखा में होते हैं जिससे उनका संयुक्त गुरुत्वाकर्षण बल समुद्र के जल को अधिकतम ऊंचाई तक खींचता है। इसके विपरीत लघु ज्वार चंद्रमा के प्रथम और अंतिम चतुर्थांश के दौरान आते हैं जब सूर्य और चंद्रमा एक-दूसरे के समकोण पर होते हैं जिससे उनके बल आंशिक रूप से नष्ट हो जाते हैं और जल का उतार-चढ़ाव न्यूनतम रहता है। यह खगोलीय ज्यामिति ही समुद्र के दैनिक जल स्तर के परिवर्तन की तीव्रता को निर्धारित करती है।

119. (D) नाइन्टी ईस्ट रिज
नाइन्टी ईस्ट रिज हिंद महासागर के तल की एक अत्यंत प्रमुख भूगर्भीय संरचना है। यह लगभग 5,000 किलोमीटर लंबी एक जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जो 90 डिग्री पूर्वी देशांतर के बिल्कुल समानांतर फैली हुई है। इसका निर्माण भारतीय प्लेट की उत्तर की ओर गति के दौरान केर्गुलेन हॉटस्पॉट की ज्वालामुखी गतिविधि से हुआ था। यह विश्व की सबसे लंबी सीधी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है जो हिंद महासागर के पूर्वी हिस्से को पश्चिमी हिस्से से अलग करती है और समुद्री भूविज्ञान के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है।

120. (A) समुद्री बर्फ का निर्माण
समुद्री जल का घनत्व उसकी लवणता और तापमान पर निर्भर करता है। जब ध्रुवीय क्षेत्रों में समुद्री जल जमता है और बर्फ बनती है, तो वह अपने भीतर के लवणों को बाहर निकाल देती है जिससे आसपास के जल में लवणों का सांद्रण बढ़ जाता है। लवणता में इस वृद्धि के कारण बचा हुआ जल अधिक भारी और सघन हो जाता है। इसके विपरीत वर्षा या बर्फ के पिघलने से ताज़ा जल मिलता है जो लवणता और घनत्व को कम करता है। अतः बर्फ का बनना सतही जल के घनत्व को बढ़ाने वाली एक प्रमुख प्रक्रिया है।

121. (C) हिमानी नियंत्रण सिद्धांत
हिमानी नियंत्रण सिद्धांत आर. ए. डेली द्वारा प्रस्तावित किया गया था जो एटोल के निर्माण को हिमयुग के दौरान वैश्विक समुद्र स्तर में होने वाले परिवर्तनों से जोड़ता है। इस सिद्धांत के अनुसार हिमयुग में जब विशाल ग्लेशियर बने तो समुद्र का स्तर गिर गया जिससे लहरों ने समुद्री द्वीपों को काटकर समतल चबूतरे बना दिए। बाद में तापमान बढ़ने और ग्लेशियरों के पिघलने से जब समुद्र का स्तर फिर से उठा, तो प्रवाल इन समतल आधारों पर ऊपर की ओर बढ़ने लगे जिससे वर्तमान में दिखाई देने वाले एटोल का निर्माण हुआ।

122. (A) महासागरों के पूर्वी किनारों पर ठंडी धाराएँ।
कैलिफोर्निया और पेरू (हम्बोल्ट) धाराएं अपने संबंधित महासागर बेसिनों के पूर्वी किनारों पर बहने वाली महत्वपूर्ण ठंडी जलधाराएं हैं। कैलिफोर्निया धारा उत्तरी प्रशांत महासागर में उत्तरी अमेरिका के तट के साथ दक्षिण की ओर बहती है, जबकि पेरू धारा दक्षिण प्रशांत महासागर में दक्षिण अमेरिका के तट के साथ उत्तर की ओर बहती है। ये धाराएं उच्च अक्षांशों से ठंडा जल लाती हैं और संबंधित तटीय क्षेत्रों की जलवायु को ठंडा और शुष्क रखने में मदद करती हैं जिससे अक्सर वहाँ तटीय मरुस्थलों का निर्माण होता है।

123. (D) महाद्वीपीय उत्थान
महाद्वीपीय उत्थान महासागरीय नितल का वह क्षेत्र है जो तीव्र ढाल वाली महाद्वीपीय मग्नढाल और विशाल गंभीर सागरीय मैदान के बीच स्थित होता है। यहाँ ढाल बहुत ही मंद होती है क्योंकि यह मुख्य रूप से उन अवसादों के निक्षेपण से निर्मित होता है जो महाद्वीपीय किनारों से बहकर नीचे की ओर आते हैं। यह क्षेत्र महाद्वीपीय किनारे की बाहरी सीमा को चिह्नित करता है और यहाँ जलोढ़ पंखों जैसी संरचनाएं भी पाई जाती हैं। यह गहरे समुद्र के शांत वातावरण और महाद्वीपीय गतिविधियों के बीच एक संक्रमण क्षेत्र है।

124. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कैल्केरियस ऊज़ सूक्ष्म जीवों के चूना पत्थर युक्त अवशेषों से बनते हैं जो गहरे समुद्र के विशिष्ट रासायनिक वातावरण से प्रभावित होते हैं। 4,500 मीटर से अधिक गहराई पर जल का

Downloaded from www.pdf.tube

की ओर बहती है। यह धारा दक्षिण विषुवतीय धारा की एक शाखा के रूप में उत्पन्न होती है और उष्णकटिबंधीय गर्मी का परिवहन करती है। इसके विपरीत लैब्राडोर, कनारी और बेंग्वेला धाराएं अटलांटिक महासागर की ठंडी जलधाराओं के उदाहरण हैं। ब्राजील धारा इस क्षेत्र की तटीय जलवायु को गर्म और आर्द्र बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समुद्री पारिस्थितिकी को प्रभावित करती है।

181. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और II, I की व्याख्या करता है।
प्रशांत महासागर न केवल क्षेत्रफल में सबसे बड़ा है बल्कि यह दुनिया का सबसे गहरा महासागर भी है। इसकी महान औसत गहराई का मुख्य कारण इसके अधस्तल पर स्थित मारियाना, फिलीपीन और टोंगा जैसी कई विशाल और अत्यंत गहरी महासागरीय गर्तों की उपस्थिति है। ये गर्तें विवर्तनिक प्लेटों के क्षेपण का परिणाम हैं और हजारों मीटर की गहराई तक फैली हुई हैं। इन गहराइयों के विशाल संकेंद्रण के कारण प्रशांत महासागर का औसत जल स्तर अन्य महासागरों की तुलना में काफी अधिक नीचे स्थित होता है।

182. (A) एक गर्म और एक ठंडी धारा का अभिसरण।
समुद्र में घने कोहरे का निर्माण अक्सर उन क्षेत्रों में होता है जहाँ विपरीत तापमान वाली दो महासागरीय धाराएं आपस में मिलती हैं। जब गर्म जलधारा के ऊपर की गर्म और आर्द्र हवा ठंडी जलधारा के ठंडे जल के संपर्क में आती है, तो हवा की नमी तेजी से संघनित होकर कोहरे का रूप ले लेती है। इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण न्यूफ़ाउंडलैंड का तट है जहाँ गर्म गल्फ स्ट्रीम और ठंडी लैब्राडोर धारा मिलती हैं। यह कोहरा समुद्री यातायात और सुरक्षित नौसंचालन के लिए एक गंभीर चुनौती पैदा करता है।

183. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
महासागरीय धाराओं का उनके तापीय गुण और संबंधित महासागर के साथ सही मिलान भौगोलिक समझ के लिए आवश्यक है। बेंग्वेला धारा अटलांटिक महासागर की एक प्रमुख ठंडी धारा है जो अफ्रीका के पश्चिमी तट पर बहती है। ब्राजील धारा दक्षिण अटलांटिक की गर्म धारा है जबकि ओयाशियो प्रशांत महासागर की एक ठंडी धारा है जो उत्तर से आती है। मोजाम्बिक धारा हिंद महासागर की गर्म धारा है जो अफ्रीका के पूर्वी तट पर बहती है। ये धाराएं वैश्विक ऊष्मा के वितरण और जलवायु नियमन का महत्वपूर्ण आधार हैं।

184. (A) तटीय प्रवाल भित्ति → अवरोधक प्रवाल भित्ति → एटोल
डार्विन के अवतलन सिद्धांत के अनुसार प्रवाल भित्तियों का विकास तीन क्रमिक चरणों में होता है। इसकी शुरुआत एक सक्रिय ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर तटीय भित्ति के निर्माण से होती है। जब द्वीप धीरे-धीरे समुद्र के नीचे धंसने लगता है, तो प्रवाल ऊपर बढ़ते हुए तट से अलग हो जाते हैं और अवरोधक भित्ति बनाते हैं। अंततः जब द्वीप पूरी तरह जलमग्न हो जाता है, तो केवल प्रवाल का गोलाकार घेरा बचता है जिसे एटोल कहा जाता है। यह क्रम भूगर्भीय अवतलन और जैविक अनुकूलन का परिणाम है।

185. (D) गंभीर सागरीय मैदान
गंभीर सागरीय मैदान महासागर बेसिन के वे विशाल और अत्यंत सपाट क्षेत्र हैं जो 3,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर पाए जाते हैं। ये मैदान उल्लेखनीय रूप से चिकने और विशेषताहीन होते हैं क्योंकि ये सूक्ष्म अवसादों की मोटी परतों से ढके होते हैं जो समय के साथ अंतर्निहित चट्टानी सतह की ऊबड़-खाबड़ बनावट को पूरी तरह से छुपा देते हैं। ये मैदान पृथ्वी के सबसे शांत और विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों में से एक हैं और महासागरीय नितल के अधिकांश भाग का निर्माण करते हैं, जो अत्यंत विस्तृत है।

186. (B) ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों का पिघलना
समुद्री जल की लवणता मुख्य रूप से ताजे जल के आगमन और वाष्पीकरण के बीच के संतुलन से निर्धारित होती है। जब ग्लेशियर और ध्रुवीय बर्फ की चादरें पिघलती हैं, तो भारी मात्रा में शुद्ध और ताज़ा जल महासागरों में मिलता है। यह प्रक्रिया समुद्री जल में मौजूद लवणों के सांद्रण को कम कर देती है जिससे लवणता घट जाती है। इसके विपरीत वाष्पीकरण और बर्फ का जमना लवणता को बढ़ाने वाले कारक हैं क्योंकि वे जल से नमी हटाते हैं और लवणों को सघन रूप में पीछे छोड़ देते हैं।

187. (D) उच्चतम ज्वारीय परिसर तब होता है जब चंद्रमा अपने प्रथम या तृतीय चतुर्थांश चरण में होता है।
उच्चतम ज्वारीय परिसर जिसे वृहद् ज्वार कहा जाता है, वास्तव में पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान होता है जब सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में होते हैं। इस समय खगोलीय पिंडों का संयुक्त गुरुत्वाकर्षण बल सर्वाधिक होता है। इसके विपरीत चंद्रमा के प्रथम और तृतीय चतुर्थांश के दौरान सूर्य और चंद्रमा एक-दूसरे के समकोण पर होते हैं जिससे लघु ज्वार आता है और ज्वारीय परिसर न्यूनतम हो जाता है। अतः विकल्प डी में दिया गया तर्क खगोलीय सिद्धांतों के अनुसार पूरी तरह से गलत है।

188. (D) उन पूर्व द्वीपों का धंसना जो समुद्र के स्तर पर अपरदित हो गए थे।
गाइओट सपाट शीर्ष वाले जलमग्न ज्वालामुखी पर्वत हैं जो समुद्र के तल से ऊपर उठते हैं। इनकी संरचना इस बात का प्रमाण है कि ये कभी समुद्री सतह पर द्वीप के रूप में मौजूद थे जहाँ लहरों के निरंतर अपरदन ने उनके शिखर को काटकर समतल कर दिया। बाद में समुद्र के स्तर में वृद्धि या प्लेटों की विवर्तनिक गति के कारण ये द्वीप धीरे-धीरे गहरे जल में डूब गए। गाइओट का अध्ययन महासागरीय नितल के विस्तार और प्राचीन समुद्र स्तर के परिवर्तनों को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

189. (A) केवल 1 और 2
महासागरीय निक्षेपों को उनके स्थान और गहराई के आधार पर नेरिटिक और पेलाजिक में विभाजित किया जा सकता है। नेरिटिक निक्षेप उथले जल और महाद्वीपीय मग्नतटों पर पाए जाते हैं जबकि पेलाजिक निक्षेप खुले और गहरे महासागर बेसिनों में पाए जाते हैं। लाल मृत्तिका वास्तव में एक पेलाजिक

NODIA

152. (A) ज्वालामुखीय धूल और उल्कापिंड के कण।
लाल मृत्तिका गहरे महासागर के अगाध क्षेत्रों में पाया जाने वाला सबसे सामान्य अगाधसागरीय निक्षेप है। इसका निर्माण बहुत सूक्ष्म कणों से होता है जो वायुमंडल से उड़कर आई ज्वालामुखीय राख, उल्कापिंडों के ब्रह्मांडीय कणों और नदियों द्वारा लाए गए अत्यंत सूक्ष्म गाद के मिश्रण से बने होते हैं। इसमें लोहे के ऑक्साइड की प्रचुरता के कारण इसका रंग लाल या भूरा होता है। यह उन गहराइयों पर पाया जाता है जहाँ कैल्शियम कार्बोनेट के अवशेष जल में पूरी तरह घुल जाते हैं।

153. (C) एटोल
एटोल प्रवाल भित्तियों का एक वलयाकार प्रकार है जो बीच में एक शांत उथले जल क्षेत्र या लैगून को घेरे रहता है। इसकी विशिष्टता यह है कि लैगून के बीच में कोई भूमि या द्वीप नहीं बचा होता है। डार्विन के सिद्धांत के अनुसार इसका निर्माण तब होता है जब पहले से मौजूद ज्वालामुखी द्वीप पूरी तरह से समुद्र के नीचे धंस जाता है, लेकिन उसके चारों ओर बनी प्रवाल भित्ति ऊपर की ओर बढ़ती रहती है। मालदीव और लक्षद्वीप समूह इसी प्रकार के एटोल के प्रमुख वैश्विक उदाहरण हैं।

154. (A) अक्षांश
समुद्री जल का घनत्व एक भौतिक गुण है जो सीधे तौर पर जल के तापमान, लवणता और उस पर पड़ने वाले दबाव पर निर्भर करता है। तापमान घटने और लवणता बढ़ने से घनत्व बढ़ता है, जबकि गहराई बढ़ने पर दबाव बढ़ने से भी घनत्व में मामूली वृद्धि होती है। अक्षांश हालांकि अप्रत्यक्ष रूप से तापमान और लवणता को प्रभावित करता है, लेकिन वह घनत्व को स्वयं निर्धारित करने वाला कोई भौतिक चर नहीं है। अतः घनत्व की गणना के लिए केवल तापमान और लवणता को ही प्राथमिक भौतिक कारक माना जाता है।

155. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
प्रत्येक महासागर की अपनी अनूठी भूगर्भीय विशेषताएं हैं। अटलांटिक महासागर अपनी मध्य-महासागरीय कटक के लिए प्रसिद्ध है। प्रशांत महासागर सक्रिय ज्वालामुखियों की श्रृंखला 'अग्नि वलय' से घिरा हुआ है। हिंद महासागर की सबसे प्रमुख पहचान नाइन्टी ईस्ट रिज है जो 90 डिग्री देशांतर के समानांतर स्थित है। आर्कटिक महासागर के तल पर लोमोनोसोव रिज स्थित है जो इसे दो बड़े बेसिनों में विभाजित करती है। इन विशेषताओं का ज्ञान महासागरीय भूगोल को समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है।

156. (B) लघु ज्वार
लघु ज्वार जिसे नीप टाइड भी कहा जाता है, तब आता है जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के साथ एक समकोण यानी 90 डिग्री की स्थिति में होते हैं। यह स्थिति चंद्रमा के प्रथम और अंतिम चतुर्थांश के दौरान बनती है। इस समय सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल चंद्रमा के बल के विपरीत कार्य करता है जिससे समुद्र के जल पर कुल खिंचाव कम हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप उच्च ज्वार सामान्य से कम ऊंचे और निम्न ज्वार सामान्य से कम नीचे होते हैं जिससे ज्वारीय परिसर न्यूनतम रहता है।

157. (C) गल्फ स्ट्रीम
गल्फ स्ट्रीम उत्तरी अटलांटिक महासागर की एक अत्यंत शक्तिशाली और गर्म जलधारा है जो उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट के साथ उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। यह धारा मैक्सिको की खाड़ी से उष्णकटिबंधीय गर्मी लेकर आती है जिससे न केवल इसकी गति तीव्र होती है बल्कि यह तटीय क्षेत्रों की जलवायु को भी प्रभावित करती है। जहाज अक्सर इस धारा के अनुकूल प्रवाह का लाभ उठाकर अपनी यात्रा की गति और ईंधन दक्षता को बढ़ाते हैं। यह वैश्विक जल परिसंचरण का एक प्रमुख हिस्सा है।

158. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रवाल भित्तियों को 'समुद्र के वर्षावन' कहा जाता है क्योंकि वे अत्यंत समृद्ध और विविध पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करती हैं। हालांकि उष्णकटिबंधीय महासागरों में पोषक तत्वों की मात्रा सामान्यतः कम होती है, लेकिन प्रवाल भित्तियाँ एक कुशल पोषक चक्रण प्रणाली विकसित करती हैं। वे हजारों समुद्री प्रजातियों को आवास और भोजन प्रदान करती हैं। जिस प्रकार स्थल पर वर्षावन जैव विविधता के केंद्र हैं, उसी प्रकार समुद्र में प्रवाल भित्तियाँ जीवन की प्रचुरता और विविधता का प्रतिनिधित्व करती हैं।

159. (A) हिंद महासागर
चागोस और डायमेंटिना गर्त हिंद महासागर के अधस्तल की दो प्रमुख गहराइयां हैं। चागोस गर्त मध्य-हिंद महासागर के पास स्थित है जबकि डायमेंटिना गर्त ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और इसे हिंद महासागर के सबसे गहरे बिंदुओं में से एक माना जाता है। ये गर्तें इस महासागर के निर्माण के दौरान हुई विवर्तनिक हलचलों और प्लेटों के टूटने की प्रक्रिया का परिणाम हैं। इनका अध्ययन हिंद महासागर के भूगर्भीय इतिहास और इसके तल की जटिल संरचना को समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

160. (B) सतही परत सौर विकिरण द्वारा गर्म होती, और यह ऊष्मा धाराओं और तरंगों द्वारा वितरित की जाती है।
महासागरीय जल का तापमान वितरण मुख्य रूप से सूर्य से प्राप्त ऊर्जा पर निर्भर करता है। ऊपरी सतही परत सीधे सौर विकिरण को अवशोषित करती है जिससे वह गर्म हो जाती है। इसके बाद पवनों द्वारा उत्पन्न तरंगें और महासागरीय धाराएं इस ऊष्मीय ऊर्जा को क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रूप से मिश्रित करती हैं। गहराई के साथ तापमान में गिरावट आती है, लेकिन ऊपरी सतह का मिश्रण तापमान को कुछ गहराई तक स्थिर रखने में मदद करता है। यह ऊष्मीय ऊर्जा का संचरण वैश्विक जलवायु चक्र का हिस्सा है।

161. (B) केवल 1 और 2
महासागरीय निक्षेपों को उनके स्थान और गहराई के आधार पर नेरिटिक और पेलाजिक में विभाजित किया जा सकता है। नेरिटिक निक्षेप उथले जल और महाद्वीपीय मग्नतटों पर पाए जाते हैं, जबकि पेलाजिक निक्षेप खुले और गहरे महासागर बेसिनों में पाए जाते हैं। लाल मृत्तिका वास्तव में एक पेलाजिक निक्षेप है क्योंकि यह अत्यंत सूक्ष्म कणों से बनी होती है जो

Click Here to Buy book on Amazon

199. (C) महाद्वीपीय उत्थान
महाद्वीपीय उत्थान महाद्वीपीय मग्नढाल के निचले हिस्से में स्थित एक मंद ढाल वाला निक्षेपण क्षेत्र है। इसका निर्माण मुख्य रूप से उन अवसादों के संचय से होता है जो टर्बिडिटी धाराओं और जल के अन्य प्रवाहों द्वारा ढाल से नीचे बहकर आते हैं। यह क्षेत्र वास्तव में महाद्वीपीय किनारे की बाहरी सीमा और गहरे समुद्री मैदान की शुरुआत के बीच का संक्रमण स्थल है। यहाँ अवसादों की मोटी परतें जमा होती हैं जो गहरे समुद्र के शांत वातावरण में एक मंद उभार जैसी स्थलाकृति का निर्माण करती हैं।

200. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
अटलांटिक महासागर की मध्य-महासागरीय कटक इसकी सबसे प्रमुख विशेषता है जो 'एस' आकार में पूरे महासागर के बीच में स्थित है और इसे दो बराबर भागों में विभाजित करती है। इसके विपरीत प्रशांत महासागर में कोई ऐसी केंद्रीय कटक नहीं है जो इसे दो बराबर बेसिनों में बांटे। प्रशांत की कटक प्रणाली जिसे पूर्वी प्रशांत उत्थान कहा जाता है, वह केंद्र के बजाय एक तरफ अधिक झुकी हुई है और इसकी संरचना अटलांटिक की तुलना में काफी अलग और अधिक विस्तृत है, जो इसे अद्वितीय बनाती है।

201. (D) मानसूनी पवनों के मौसमी उत्क्रमण से
उत्तरी हिंद महासागर दुनिया का एकमात्र ऐसा महासागर क्षेत्र है जहाँ की धाराएं साल में दो बार अपनी दिशा पूरी तरह से बदल देती हैं। यह परिघटना मानसूनी पवनों के मौसमी बदलाव का परिणाम है। ग्रीष्मकाल में दक्षिण-पश्चिम मानसून धाराओं को घड़ी की सुइयों की दिशा में चलाता है जबकि शीतकाल में उत्तर-पूर्वी मानसून इन्हें विपरीत दिशा में मोड़ देता है। पवनों और धाराओं का यह गहरा संबंध हिंद महासागर की जलवायु और समुद्री व्यापारिक मार्गों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, जो वैश्विक है।

202. (B) वैश्विक जलवायु का नियमन
महासागर वैश्विक जलवायु को विनियमित करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जैसे कि कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करना और ऊष्मा का वितरण करना। हालाँकि यह महासागरों का एक प्राकृतिक कार्य है जिसे मनुष्यों द्वारा संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं कहा जा सकता। इसके विपरीत नमक का निष्कर्षण, मत्स्य पालन और तेल ड्रिलिंग ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनमें मनुष्य सीधे तौर पर महासागर से पदार्थ प्राप्त करते हैं। अतः जलवायु नियमन एक अप्रत्यक्ष लाभ है, न कि प्रत्यक्ष संसाधन उपयोग।

203. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
महासागरीय शब्दावली के प्रत्येक शब्द का एक विशिष्ट अर्थ है। एटोल एक वलयाकार प्रवाल भित्ति है जो एक लैगून को घेरे रहती है। गाइओट एक जलमग्न ज्वालामुखी पहाड़ है जिसका शीर्ष लहरों के अपरदन से सपाट हो गया है। गर्त महासागर के वे सबसे गहरे हिस्से हैं जो क्षेपण क्षेत्रों में विवर्तनिक प्लेटों के धंसने से बनते हैं। महाद्वीपीय मग्नतट वास्तव में महाद्वीपों के वे जलमग्न किनारे हैं जो तट से समुद्र की ओर उथले विस्तार के रूप में पाए जाते हैं और संसाधनों से समृद्ध हैं।

204. (D) उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में (लगभग 20-30° अक्षांश)
महासागरों में उच्चतम सतही लवणता सामान्यतः उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब क्षेत्रों या अश्व अक्षांशों के आसपास पाई जाती है। यहाँ सूर्य की किरणें तीव्र होती हैं जिससे वाष्पीकरण की दर बहुत अधिक रहती है लेकिन वायुमंडलीय दबाव अधिक होने के कारण वर्षा बहुत कम होती है। वाष्पीकरण के कारण जल से नमी हट जाती है जिससे लवणीय सांद्रता बढ़ जाती है। भूमध्य रेखा पर हालांकि गर्मी अधिक होती है, लेकिन वहाँ भारी दैनिक वर्षा के कारण लवणता तुलनात्मक रूप से कम बनी रहती है और जल पतला होता है।

205. (A) एटोल
एटोल प्रवाल भित्तियों का एक विशिष्ट प्रकार है जो घोड़े की नाल या वलय के आकार में होते हैं। इनका निर्माण तब होता है जब एक केंद्रीय ज्वालामुखी द्वीप धीरे-धीरे समुद्र के नीचे धंस जाता है जबकि उसके चारों ओर विकसित प्रवाल भित्ति प्रकाश की खोज में ऊपर की ओर बढ़ती रहती है। अंततः द्वीप पूरी तरह अदृश्य हो जाता है और केवल प्रवाल का घेरा शेष रह जाता है जो एक उथले और शांत लैगून को घेरे रहता है। मालदीव इसका एक प्रसिद्ध वैश्विक भौगोलिक उदाहरण है।

206. (D) सूर्य द्वारा सतही जल का गर्म होना।
महासागरीय जल का तापमान मुख्य रूप से सौर विकिरण के अवशोषण पर निर्भर करता है। सूर्य की किरणें सीधे ऊपरी सतह को गर्म करती हैं जिससे वह सबसे गर्म परत बन जाती है। चूंकि जल ऊष्मा का बहुत अच्छा सुचालक नहीं है और सौर प्रकाश गहराई के साथ तेजी से क्षीण होता जाता है, इसलिए नीचे की परतों तक ऊष्मा बहुत कम पहुँच पाती है। यह प्रक्रिया तापमान की परतों या ऊर्ध्वाधर क्षेत्रीकरण के निर्माण के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी है जो महासागरीय पारिस्थितिकी को प्रभावित करती है।

207. (B) पेरु और चिली के तट पर शुष्क और ठंडी स्थितियाँ।
पेरु धारा जिसे हम्बोल्ट धारा भी कहा जाता है, अंटार्कटिका से उत्तर की ओर ठंडा जल लाती है। यह ठंडी धारा तटीय हवाओं को ठंडा कर देती है जिससे उनकी नमी धारण करने की क्षमता कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप पेरु और चिली के तटीय क्षेत्रों में वर्षा बहुत कम होती है जिससे वहाँ अटाकामा जैसे दुनिया के सबसे शुष्क मरुस्थलों का निर्माण हुआ है। साथ ही इस धारा के कारण होने वाली अपवेलिंग पोषक तत्वों को सतह पर लाती है जो मत्स्य पालन के लिए अत्यंत लाभदायक है।

208. (A) अवसादों की मोटी परतों के जमा होने के कारण ये असाधारण रूप से सपाट हैं।
गंभीर सागरीय मैदानों की उल्लेखनीय सपाटता का मुख्य कारण लाखों वर्षों से होने वाला निरंतर अवसादन है। महाद्वीपों से आने वाले सूक्ष्म कण और समुद्री जीवों के अवशेष धीरे-धीरे

NODIA

परिसंचरण को सुनिश्चित करती हैं। यह गायर वैश्विक जलवायु नियमन और समुद्री व्यापारिक मार्गों को प्रभावित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण महासागरीय तंत्र है।

246. (A) महाद्वीपीय भू-भागों का अपरदन।
टेरिजेनस या भूमिज अवसादों की उत्पत्ति मुख्य रूप से महाद्वीपीय चट्टानों के टूटने और घिसने की प्रक्रियाओं से होती है। पवनें, नदियां और हिमनद इन अपरदित कणों को बहाकर महासागरों तक ले जाते हैं। इनमें मुख्य रूप से क्वार्ट्ज, फेल्डस्पार और मिट्टी के सूक्ष्म कण शामिल होते हैं जो महाद्वीपीय मग्नतटों और ढालों पर परतों के रूप में जमा हो जाते हैं। ये निक्षेप स्थलीय भूगर्भीय इतिहास के प्रमाण होते हैं और समुद्री तल की स्थलाकृति के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनका स्रोत पूर्णतः स्थलीय होता है।

247. (C) डेली का हिमानी-नियंत्रण सिद्धांत
आर. ए. डेली द्वारा प्रस्तावित हिमानी नियंत्रण सिद्धांत प्रवाल भित्तियों के निर्माण को हिमयुग के दौरान वैश्विक समुद्र स्तर में होने वाले उतार-चढ़ाव से जोड़ता है। इस सिद्धांत के अनुसार हिमयुग में जब समुद्र का स्तर गिर गया, तो लहरों ने पुराने द्वीपों के ऊपरी हिस्सों को काटकर सपाट प्लेटफॉर्म बना दिए। बाद में तापमान बढ़ने और ग्लेशियरों के पिघलने से जब समुद्र का स्तर फिर से ऊपर उठा, तो प्रवाल इन जलमग्न प्लेटफॉर्मों पर ऊपर की ओर विकसित हुए। यह सिद्धांत प्रवाल विकास के लिए हिमयुग की जलवायु को निर्णायक मानता है।

248. (A) 12 घंटे और 26 मिनट
अर्ध-दैनिक ज्वार प्रणाली में ज्वार और भाटा की आवृत्ति चंद्रमा की पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा पर आधारित होती है। चूंकि चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमने में समय लेता है, इसलिए प्रत्येक उच्च ज्वार पिछले दिन की तुलना में लगभग 50 मिनट की देरी से आता है। इस प्रकार एक पूर्ण ज्वारीय चक्र में दो उच्च ज्वारों के बीच का समय अंतराल लगभग 12 घंटे और 26 मिनट होता है। यह सटीक समय गणना समुद्र के जल स्तर के पूर्वानुमान और सुरक्षित नौसंचालन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी मानी जाती है।

249. (B) केवल 2 और 3
महासागरीय अधस्तल की विशेषताओं का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि प्रशांत महासागर में गर्तों की संख्या सर्वाधिक है जबकि कटकों की सबसे विस्तृत प्रणाली वास्तव में अटलांटिक और प्रशांत दोनों में अलग-अलग स्वरूपों में पाई जाती है। अटलांटिक में प्रशांत की तुलना में गर्तें काफी कम हैं क्योंकि इसके किनारे निष्क्रिय हैं। हिंद महासागर का उच्चावच नाइन्टी ईस्ट रिज जैसे कई सूक्ष्म महाद्वीपों और कटकों के कारण अत्यंत जटिल है। अतः केवल दूसरा और तीसरा कथन ही महासागरों की संरचनात्मक भिन्नता को वैज्ञानिक रूप से सही प्रस्तुत करते हैं।

250. (B) लवणता
समुद्र विज्ञान में 'हैलोकलाइन' उस ऊर्ध्वाधर परत को कहा जाता है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ जल की लवणता में बहुत ही तीव्र परिवर्तन दर्ज किया जाता है। यह परत आमतौर पर ऊपरी मिश्रित परत और गहरे स्थिर जल के बीच एक अवरोध के रूप में कार्य करती है। लवणता में यह बदलाव जल के घनत्व को प्रभावित करता है जिससे महासागरीय धाराओं का परिसंचरण और जल की परतों का मिश्रण नियंत्रित होता है। हैलोकलाइन का अध्ययन समुद्री जल की भौतिक और रासायनिक स्थिरता को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण माना जाता है।

251. (C) दक्षिण-पूर्व अफ्रीका
मोजाम्बिक धारा हिंद महासागर की एक प्रमुख और गर्म जलधारा है जो अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट और मेडागास्कर द्वीप के बीच स्थित मोजाम्बिक चैनल में बहती है। यह धारा दक्षिण विषुवतीय धारा की एक शाखा के रूप में उत्पन्न होती है और दक्षिण की ओर उष्णकटिबंधीय गर्मी का परिवहन करती है। आगे चलकर यह मेडागास्कर धारा से मिलकर अगुलहास धारा का निर्माण करती है। यह धारा न केवल समुद्र के तापमान को बढ़ाती है, बल्कि दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका की तटीय जलवायु और वर्षा के पैटर्न को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

252. (D) अवसादों की एक मोटी चादर ने अंतर्निहित उबड़-खाबड़ स्थलाकृति को दफन कर दिया है।
गंभीर सागरीय मैदानों की असाधारण समतलता का मुख्य कारण उन पर जमा होने वाले अवसादों का निरंतर संचय है। लाखों वर्षों से महाद्वीपों से बहकर आने वाले सूक्ष्म कण और समुद्री जीवों के अवशेष धीरे-धीरे नीचे गिरकर समुद्र तल की ऊबड़-खाबड़ और ज्वालामुखीय चट्टानी सतह को पूरी तरह से ढक लेते हैं। यह प्रक्रिया ठीक उसी तरह काम करती है जैसे धूल की मोटी चादर किसी ऊबड़-खाबड़ जमीन को समतल बना देती है। ये मैदान 3,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर स्थित पृथ्वी के सबसे सपाट भौगोलिक क्षेत्र माने जाते हैं।

253. (B) P-2, Q-3, R-1
महासागरीय धाराओं का उनके संबंधित महासागर बेसिनों के साथ एक निश्चित भौगोलिक संबंध होता है। कनारी धारा उत्तरी अटलांटिक महासागर की एक प्रमुख ठंडी धारा है जो अफ्रीका के पश्चिमी तट पर बहती है। कैलिफोर्निया धारा प्रशांत महासागर की ठंडी धारा है जो उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ दक्षिण की ओर बहती है। अगुलहास धारा हिंद महासागर की एक अत्यंत शक्तिशाली और गर्म धारा है जो अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट पर बहती है। धाराओं का यह विन्यास वैश्विक ऊष्मा के संतुलन और तटीय जलवायु को निर्धारित करता है।

254. (B) कैल्केरियस ऊज़
कैल्केरियस ऊज़ एक सूक्ष्म और कीचड़ जैसा महासागरीय निक्षेप है जो उन समुद्री जीवों के अवशेषों से बनता है जिनके शरीर में कैल्शियम कार्बोनेट की प्रधानता होती है। फोरामिनिफेरा और कोकोलिथोफोर जैसे सूक्ष्म जीव अपनी मृत्यु के बाद धीरे-धीरे समुद्र के तल पर गिरते हैं और सदियों तक जमा होकर मोटी परतें बनाते हैं। यह निक्षेप सामान्यतः गर्म और उथले जल वाले क्षेत्रों के नीचे पाया जाता है क्योंकि गहरे ठंडे जल में कैल्शियम

Downloaded from www.pdf.tube

तो उनके संयुक्त प्रभाव से सबसे ऊंचे ज्वार आते हैं जिन्हें वृहद् ज्वार कहा जाता है।

218. (B) बार-बार आने वाले भूकंपों और ज्वालामुखीय विस्फोटों का
'अग्नि वलय' प्रशांत महासागर के किनारों पर स्थित एक विशाल चाप है जहाँ दुनिया के लगभग 75 प्रतिशत सक्रिय ज्वालामुखी और 90 प्रतिशत भूकंप दर्ज किए जाते हैं। इसका मुख्य कारण प्रशांत प्लेट का अन्य विवर्तनिक प्लेटों के साथ निरंतर होने वाला अभिसरण और क्षेपण है। इस प्रक्रिया में प्लेटों के टकराने और धंसने से भारी मात्रा में ऊर्जा मुक्त होती है जो विनाशकारी भूकंपों और लावा के बाहर निकलने का कारण बनती है। यह क्षेत्र पृथ्वी की विवर्तनिक सक्रियता का सबसे जीवंत उदाहरण माना जाता है।

219. (C) बदलते मानसून के मौसम के साथ अपने प्रवाह की दिशा बदल देती है।
सोमाली धारा हिंद महासागर की एक अद्वितीय धारा है जो अफ्रीकी तट के साथ बहती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अपनी दिशा पूरी तरह से मानसूनी पवनों के अनुसार बदल लेती है। ग्रीष्मकालीन मानसून के दौरान यह उत्तर-पूर्व की ओर बहने वाली एक तीव्र गर्म धारा बन जाती है, जबकि शीतकालीन मानसून में यह दक्षिण की ओर बहने लगती है। पवनों और धाराओं का यह प्रत्यक्ष संबंध हिंद महासागर की जलवायु प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है जो क्षेत्रीय समुद्री गतिविधियों को नियंत्रित करता है।

220. (D) गल्फ स्ट्रीम और लैब्राडोर धारा
गल्फ स्ट्रीम और लैब्राडोर धारा अटलांटिक महासागर की दो सबसे प्रभावशाली धाराएं हैं जिनके तापमान गुण एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। गल्फ स्ट्रीम मैक्सिको की खाड़ी से उत्पन्न होने वाली एक गर्म जलधारा है जो उत्तर की ओर बहती है। इसके विपरीत लैब्राडोर धारा आर्कटिक क्षेत्र से आने वाली एक ठंडी जलधारा है। न्यूफ़ाउंडलैंड के तट के पास इन दोनों धाराओं का मिलन होता है जिससे वहाँ घने कोहरे की स्थिति बनती है और यह क्षेत्र विश्व के सबसे समृद्ध मत्स्य क्षेत्रों में से एक बन जाता है।

221. (A) सिलीशियस ऊज़
सिलीशियस ऊज़ एक प्रकार का जैविक महासागरीय निक्षेप है जो मुख्य रूप से डायटम और रेडियोलेरियन जैसे सूक्ष्म जीवों के अवशेषों से बना होता है। इन जीवों के खोल सिलिका से निर्मित होते हैं जो मृत्यु के बाद धीरे-धीरे समुद्र के तल पर जमा हो जाते हैं। यह निक्षेप सामान्यतः उन क्षेत्रों में पाया जाता है जहाँ जल ठंडा होता है या पोषक तत्वों की प्रचुरता होती है। सिलिका गहरे समुद्र के अम्लीय वातावरण में कैल्शियम कार्बोनेट की तुलना में अधिक स्थिर और सुरक्षित रहती है जिससे यह गहरी परतों में संचित होती है।

222. (D) उथला, गर्म और स्वच्छ जल
प्रवाल भित्तियों के स्वस्थ विकास और अस्तित्व के लिए कुछ विशिष्ट भौगोलिक दशाएं अनिवार्य होती हैं। प्रवाल पॉलिप्स के भीतर रहने वाले सहजीवी शैवाल को प्रकाश संश्लेषण के लिए सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है, इसलिए वे केवल उथले जल में ही जीवित रह सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे 23 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच के गर्म जल को प्राथमिकता देते हैं। जल का स्वच्छ और अवसाद रहित होना भी जरूरी है ताकि प्रवाल के भोजन करने वाले छिद्र बंद न हों और प्रकाश गहराई तक पहुँच सके।

223. (B) मिश्रित ज्वार
मिश्रित ज्वार एक ऐसा ज्वारीय पैटर्न है जिसमें प्रत्येक दिन दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार आते हैं लेकिन उनकी ऊँचाई और गहराई में स्पष्ट अंतर होता है। इसका अर्थ है कि एक ही दिन का पहला उच्च ज्वार दूसरे उच्च ज्वार की तुलना में अधिक ऊँचा हो सकता है। यह असमानता सूर्य और चंद्रमा के बदलते झुकाव तथा स्थानीय तटरेखा की बनावट से प्रभावित होती है। इस प्रकार के ज्वार विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट और कई प्रशांत द्वीप समूहों के पास सामान्य रूप से देखे जाते हैं।

224. (A) उल्टे 'वाई' आकार की और अधिक जटिल है
हिंद महासागर की मध्य-महासागरीय कटक प्रणाली अटलांटिक महासागर की तुलना में काफी अलग और जटिल है। अटलांटिक में कटक एक निरंतर 'एस' आकार की रेखा में चलती है, जबकि हिंद महासागर में यह कई शाखाओं में विभाजित होकर उल्टे 'वाई' अक्षर जैसा आकार बनाती है। इसमें कार्ल्सबर्ग कटक और मध्य-हिंद कटक जैसी विशिष्ट शाखाएं शामिल हैं जो इसे कई अलग-अलग बेसिनों में विभाजित करती हैं। यह जटिल संरचना इस महासागर के निर्माण के दौरान हुई विवर्तनिक हलचलों के इतिहास को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

225. (C) जैविक संसाधन
जैविक संसाधन वे होते हैं जिनमें जीवन होता है या जो जीवित जीवों से प्राप्त होते हैं। महासागरों में मछली, क्रस्टेशियंस जैसे केकड़े और झींगे, समुद्री स्तनधारी जैसे व्हेल और डॉल्फिन तथा समुद्री पौधे इसी श्रेणी में आते हैं। ये संसाधन मानव आहार, औषधियों और अन्य आर्थिक गतिविधियों के लिए अत्यंत मूल्यवान हैं। इसके विपरीत खनिज संसाधन निर्जीव पदार्थों से संबंधित होते हैं और ऊर्जा संसाधन महासागर की गति से प्राप्त होते हैं। अतः समुद्री जीव-जंतुओं को सामूहिक रूप से जैविक संसाधन कहा जाता है।

226. (D) एक तीव्र ढाल जो महाद्वीप के वास्तविक किनारे को चिह्नित करती है।
महाद्वीपीय मग्नढाल महासागरीय नितल का वह हिस्सा है जो उथले महाद्वीपीय मग्नतट और गहरे समुद्र के बीच स्थित होता है। यहाँ समुद्र की गहराई अचानक और बहुत तेजी से बढ़ती है। यह ढाल वास्तव में महाद्वीपीय क्रस्ट के वास्तविक अंत और महासागरीय क्रस्ट की शुरुआत की भौगोलिक सीमा को प्रदर्शित करती है। इसकी औसत गहराई 200 मीटर से शुरू होकर 3,000 मीटर तक जा सकती है। यह भूगर्भीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण संक्रमण क्षेत्र है जो गहरे समुद्री बेसिन को महाद्वीपों से अलग करता है।

NODIA

तटीय, अवरोधक और एटोल हैं जो पूरी दुनिया में पाए जाते हैं। हालांकि यह कहना गलत है कि वे तापमान परिवर्तन के प्रति लचीले होते हैं क्योंकि प्रवाल तापमान के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं और मामूली वृद्धि से भी वे विरंजन का शिकार होकर नष्ट हो सकते हैं। अतः केवल पहला और तीसरा कथन ही सही है।

282. (B) यह गहरी समुद्री गर्तों की लगभग निरंतर प्रणाली से घिरा हुआ है।
अटलांटिक महासागर वास्तव में गहरी महासागरीय गर्तों की निरंतर प्रणाली से नहीं घिरा हुआ है। इसके विपरीत गर्तों की ऐसी निरंतर श्रृंखला प्रशांत महासागर की मुख्य विशेषता है जिसे 'अग्नि वलय' कहा जाता है। अटलांटिक महासागर के किनारे मुख्य रूप से विवर्तनिक रूप से निष्क्रिय हैं जहाँ विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतट पाए जाते हैं। हालांकि इसमें प्यूर्टो रिको और दक्षिण सैंडविच जैसी कुछ गर्तें मौजूद हैं लेकिन वे निरंतर श्रृंखला के रूप में नहीं हैं। अतः विकल्प बी में दिया गया विवरण अटलांटिक के बजाय प्रशांत महासागर के लिए अधिक उपयुक्त और सही है।

283. (C) विश्व के महान मत्स्य क्षेत्र।
अपवेलिंग एक महासागरीय परिघटना है जिसमें गहरे समुद्र से ठंडा और पोषक तत्वों से भरपूर जल सतह की ओर आता है। यह गहरा जल नाइट्रोजन, फास्फोरस और अन्य खनिजों से समृद्ध होता है जो फाइटोप्लांकटन की तीव्र वृद्धि को बढ़ावा देता है। चूंकि फाइटोप्लांकटन समुद्री खाद्य श्रृंखला का आधार हैं, इसलिए अपवेलिंग वाले क्षेत्र दुनिया के सबसे समृद्ध और उत्पादक मत्स्य क्षेत्र बन जाते हैं। पेरु और दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका के तट इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं जो वैश्विक मत्स्य उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और विविधता का केंद्र हैं।

284. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में तापमान और वाष्पीकरण उच्च होने के बावजूद सतही लवणता उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की तुलना में कम पाई जाती है। इसका मुख्य कारण यहाँ होने वाली अत्यधिक और दैनिक संवहनीय वर्षा है जो समुद्र की सतह पर भारी मात्रा में ताज़ा जल छोड़ती है। ताजे जल का यह निरंतर आगमन लवणीय सांद्रता को कम कर देता है जिससे जल पतला हो जाता है। इसके विपरीत उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वर्षा कम और वाष्पीकरण अधिक होने के कारण लवणता उच्चतम स्तर पर पहुँच जाती है। अतः वर्षा का यह प्रभाव वितरण का मुख्य आधार है।

285. (A) ग्लोबोजेरिना ऊज़
ग्लोबोजेरिना ऊज़ एक जैविक महासागरीय निक्षेप है जो मुख्य रूप से फोरामिनिफेरा नामक सूक्ष्म समुद्री जीवों के कैल्शियम कार्बोनेट युक्त कवचों से बना होता है। ये जीव अपनी मृत्यु के बाद धीरे-धीरे समुद्र के तल पर जमा हो जाते हैं जिससे एक कोमल कीचड़ जैसी परत बनती है। इसके विपरीत रेत और लाल मृत्तिका निर्जीव स्रोतों से प्राप्त होते हैं जबकि मैंगनीज नोड्यूल्स रासायनिक अवक्षेपण से बनते हैं। चूंकि ग्लोबोजेरिना ऊज़ का मूल स्रोत जीवित प्राणी हैं, इसलिए इसे जैविक निक्षेप की श्रेणी में रखा जाता है जो समुद्री जैव-इतिहास का प्रमाण है।

286. (B) एक बहुत बड़ी ज्वारीय सीमा।
वृहद् ज्वार पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान आते हैं जब सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में होते हैं। इस स्थिति में खगोलीय पिंडों का संयुक्त गुरुत्वाकर्षण बल समुद्र के जल पर अधिकतम खिंचाव डालता है। इसके परिणामस्वरूप उच्च ज्वार सामान्य से बहुत अधिक ऊंचे और निम्न ज्वार सामान्य से बहुत अधिक नीचे होते हैं जिससे ज्वारीय परिसर या उच्च और निम्न जल के बीच का अंतर सर्वाधिक हो जाता है। यह विशाल ज्वारीय सीमा समुद्री तटों के पारिस्थितिकी और नौसंचालन को गहराई से प्रभावित करती है और ऊर्जा का आधार है।

287. (A) वेस्ट विंड ड्रिफ्ट
वेस्ट विंड ड्रिफ्ट जिसे अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा भी कहा जाता है, दक्षिणी गोलार्ध की एक विशाल और ठंडी जलधारा है। यह धारा अंटार्कटिका महाद्वीप के चारों ओर पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है और प्रशांत, अटलांटिक तथा हिंद महासागरों को आपस में जोड़ती है। यह धारा ठंडे अंटार्कटिक जल का परिवहन करती है और वैश्विक समुद्री परिसंचरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके विपरीत ब्राजील, अगुलहास और पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई धाराएं दक्षिणी गोलार्ध की प्रमुख गर्म जलधाराओं के उदाहरण हैं। इसकी निरंतरता और शीतलता इसे भौगोलिक रूप से अद्वितीय बनाती है।

288. (A) महाद्वीपीय ढाल के तल पर अवसादों का संचय।
महाद्वीपीय उत्थान महासागरीय नितल का वह हिस्सा है जो तीव्र ढाल वाली महाद्वीपीय मग्नढाल और विशाल गंभीर सागरीय मैदान के बीच स्थित होता है। यहाँ ढाल बहुत ही मंद होती है क्योंकि यह मुख्य रूप से उन अवसादों के संचय से निर्मित होता है जो महाद्वीपीय किनारों से टर्बिडिटी धाराओं और अन्य प्रवाहों द्वारा नीचे की ओर बहकर आते हैं। यह क्षेत्र वास्तव में महाद्वीपीय किनारे की बाहरी सीमा को चिह्नित करता है और गहरे समुद्र के शांत वातावरण में एक मंद उभार जैसी स्थलाकृति बनाता है। यह समुद्री अवसादन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

289. (C) डार्विन का अवतलन सिद्धांत
चार्ल्स डार्विन का अवतलन सिद्धांत प्रवाल भित्तियों के विकास की प्रक्रिया को समझाने वाली एक अत्यंत प्रभावशाली वैज्ञानिक अवधारणा है। डार्विन ने प्रस्तावित किया था कि एटोल का निर्माण तब होता है जब एक सक्रिय ज्वालामुखी द्वीप भूगर्भीय हलचलों के कारण धीरे-धीरे समुद्र के नीचे धंसने लगता है। इस प्रक्रिया में प्रवाल पॉलिप्स प्रकाश और ऑक्सीजन की खोज में ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं जिससे पहले अवरोधक भित्ति और अंततः वलयाकार एटोल का निर्माण होता है। यह सिद्धांत द्वीपों के धंसने और प्रवाल की ऊपर की ओर वृद्धि के बीच संबंध स्थापित करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

को समुद्र तक पहुँचाते हैं। ये निक्षेप मुख्य रूप से महाद्वीपीय मग्नतटों और ढालों पर जमा होते हैं। ये स्थलीय चट्टानों की खनिज संरचना को प्रदर्शित करते हैं और महाद्वीपीय किनारे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये जैविक निक्षेपों से भिन्न होते हैं क्योंकि इनका मूल स्रोत निर्जीव स्थलीय चट्टानें और मृदा होती हैं।

237. (A) उत्तरी प्रशांत महासागर
ओयाशियो धारा जिसे 'कुरील धारा' भी कहा जाता है, उत्तरी प्रशांत महासागर की एक प्रमुख ठंडी जलधारा है। यह आर्कटिक क्षेत्र से उत्पन्न होकर दक्षिण की ओर जापान के पूर्वी तट के साथ बहती है। यह ठंडे और पोषक तत्वों से भरपूर जल का परिवहन करती है जिससे यह समुद्री जीवन के लिए अत्यंत उत्पादक होती है। जब यह दक्षिण से आने वाली गर्म क्यूरोशियो धारा से मिलती है, तो वहाँ घना कोहरा पैदा होता है। यह धारा उत्तरी प्रशांत के परिसंचरण तंत्र और क्षेत्रीय जलवायु को नियंत्रित करने में मुख्य भूमिका निभाती है।

238. (B) गहरे महासागर से सतह तक पोषक तत्वों का परिवहन
अपवेलिंग एक ऐसी महासागरीय प्रक्रिया है जिसमें पवनें सतह के जल को तट से दूर धकेल देती हैं जिसके कारण नीचे का ठंडा और पोषक तत्वों से भरपूर जल ऊपर की ओर आता है। यह गहरा जल नाइट्रोजन, फास्फोरस और अन्य खनिजों से समृद्ध होता है जो फाइटोप्लांकटन की तीव्र वृद्धि के लिए उर्वरक का कार्य करते हैं। चूंकि फाइटोप्लांकटन समुद्री खाद्य श्रृंखला का आधार हैं, इसलिए अपवेलिंग वाले क्षेत्र दुनिया के सबसे समृद्ध और उत्पादक मत्स्य क्षेत्र बन जाते हैं जो वैश्विक खाद्य आपूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

239. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महाद्वीपीय मग्नतटों की चौड़ाई काफी हद तक उस क्षेत्र की विवर्तनिक सक्रियता पर निर्भर करती है। अटलांटिक महासागर के किनारे मुख्य रूप से विवर्तनिक रूप से शांत या निष्क्रिय हैं जिससे यहाँ लाखों वर्षों तक अवसादों का निरंतर संचय हुआ है और विस्तृत मग्नतट बने हैं। इसके विपरीत प्रशांत महासागर सक्रिय प्लेट सीमाओं और क्षेपण क्षेत्रों से घिरा हुआ है। यहाँ महासागरीय प्लेटें निरंतर धंस रही हैं जिससे मग्नतट अत्यंत संकीर्ण होते हैं और गर्तों का निर्माण होता है। अतः विवर्तनिक शांति ही मुख्य कारण है।

240. (A) ज्वारीय ऊर्जा
ज्वारीय ऊर्जा एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो समुद्र के जल स्तर में आने वाले उतार-चढ़ाव यानी ज्वार और भाटा के बीच की ऊंचाई के अंतर का उपयोग करके बिजली पैदा करती है। इस प्रक्रिया में तटीय क्षेत्रों या संकीर्ण खाड़ियों में टर्बाइन और बांध लगाए जाते हैं। जब ज्वार आता है और जल का स्तर बढ़ता है, तो उसकी गति और दबाव से टर्बाइन घूमते हैं। यह ऊर्जा पूर्णतः स्वच्छ और अनुमानित होती है क्योंकि ज्वार-भाटा चंद्रमा और सूर्य की नियमित खगोलीय गतियों पर आधारित होते हैं जो निरंतर जारी रहते हैं।

241. (C) कटकों, पठारों और बेसिनों की एक जटिल प्रणाली।
हिंद महासागर के अधस्तल की स्थलाकृति अन्य महासागरों की तुलना में बहुत अधिक जटिल और विविध है। इसकी मुख्य विशेषता इसमें स्थित कटकों की लंबी और खंडित श्रृंखलाएं हैं जो इसे कई छोटे-छोटे बेसिनों और पठारों में विभाजित करती हैं। इसमें नाइन्टी ईस्ट रिज, कार्ल्सबर्ग कटक और चागोस-लक्षद्वीप पठार जैसी महत्वपूर्ण भूगर्भीय संरचनाएं पाई जाती हैं। यह जटिल विन्यास हिंद महासागर के निर्माण के दौरान गोंडवानालैंड के टूटने और विवर्तनिक प्लेटों की विभिन्न दिशाओं में होने वाली हलचलों के परिणाम को स्पष्ट करता है।

242. (D) कथन I गलत है, लेकिन दिया गया कथन II सही है।
एटोल मुख्य रूप से प्रशांत और हिंद महासागरों में पाए जाते हैं जबकि अटलांटिक महासागर में ये अत्यंत दुर्लभ हैं। अतः कथन I भौगोलिक रूप से गलत है। दूसरी ओर तटीय प्रवाल भित्तियाँ विश्व भर में सबसे सामान्य और व्यापक रूप से पाई जाने वाली भित्तियाँ हैं जो द्वीपों और महाद्वीपों के किनारों से सीधे जुड़ी होती हैं। अतः कथन II पूरी तरह सही है। प्रवाल भित्तियों के वितरण का यह भौगोलिक पैटर्न तापमान, प्रकाश और विवर्तनिक स्थितियों जैसे कारकों द्वारा निर्धारित होता है जो विभिन्न महासागरों में अलग-अलग हैं।

243. (C) वे नई महासागरीय क्रस्ट के निर्माण के लिए प्राथमिक स्थान हैं।
महासागरीय गर्त वास्तव में महासागरीय क्रस्ट के विनाश के स्थान होते हैं, न कि निर्माण के। नई महासागरीय क्रस्ट का निर्माण मध्य-महासागरीय कटकों पर होता है जहाँ मैग्मा ऊपर आता है। गर्तें उन अभिसारी प्लेट सीमाओं पर बनती हैं जहाँ एक सघन प्लेट दूसरी के नीचे धंसकर नष्ट हो जाती है जिसे क्षेपण कहा जाता है। ये गर्तें लंबी, संकीर्ण और अत्यंत गहरी होती हैं और सक्रिय ज्वालामुखी एवं भूकंप के मुख्य केंद्र होती हैं। अतः विकल्प सी में दिया गया कथन गर्तों की मूल प्रकृति के बिल्कुल विपरीत है।

244. (B) उच्च तापमान, उच्च लवणता
प्रश्न के विकल्पों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि घनत्व लवणता और तापमान दोनों से प्रभावित होता है। हालांकि सामान्य भौतिकी के अनुसार तापमान बढ़ने पर घनत्व कम होता है, लेकिन अत्यधिक उच्च लवणता जल के द्रव्यमान को इतना बढ़ा देती है कि वह अधिक सघन हो जाता है। यदि हम केवल घनत्व बढ़ाने वाले कारकों की चरम स्थितियों की बात करें, तो कम तापमान और उच्च लवणता का संयोजन घनत्व को उच्चतम बनाता है। दिए गए विकल्पों में सबसे सटीक संयोजन वह है जहाँ दोनों कारक जल को भारी बनाने में योगदान दें।

245. (D) उत्तरी अटलांटिक गायर
उत्तरी अटलांटिक गायर एक विशाल वृत्ताकार धारा प्रणाली है जो पवनों और कोरिओलिस बल के प्रभाव से बनती है। इसमें गल्फ स्ट्रीम जैसी शक्तिशाली गर्म धारा, उत्तर-पूर्व की ओर बहने वाला उत्तरी अटलांटिक प्रवाह और वापस दक्षिण की ओर आने वाली ठंडी कनारी धारा शामिल हैं। ये धाराएं मिलकर उत्तरी अटलांटिक महासागर में ऊष्मा और पोषक तत्वों के निरंतर

Downloaded from www.pdf.tube

भूमिका निभाती हैं। गल्फ स्ट्रीम की तीव्रता और प्रभाव वैश्विक जलवायु नियमन के लिए ब्राजील धारा की तुलना में भी अधिक निर्णायक माना जाता है।

264. (A) 4, 3, 2, 1
महाद्वीपीय किनारे से गहरे समुद्र की ओर जाने पर एक निश्चित भू-आकृतिक अनुक्रम का अनुसरण किया जाता है। सबसे पहले उथला और मंद ढाल वाला महाद्वीपीय मग्नतट आता है जो महाद्वीप का ही विस्तार है। इसके बाद अचानक ढाल तेज हो जाती है जिसे महाद्वीपीय मग्नढाल कहा जाता है। ढाल के अंत में अवसादों के जमाव से बना महाद्वीपीय उत्थान होता है। अंत में हम गहरे समुद्र के अत्यंत विस्तृत और सपाट गंभीर सागरीय मैदान तक पहुँचते हैं। यह क्रम महाद्वीपों के भूगर्भीय अंत और गहरे महासागरीय बेसिन की वास्तविक शुरुआत को दर्शाता है।

265. (D) तटीय, अवरोधक और एटोल
प्रवाल भित्तियों को उनकी संरचना और तट से उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। तटीय भित्तियां सीधे किनारे से जुड़ी होती हैं। अवरोधक भित्तियां तट के समानांतर होती हैं और एक उथले लैगून द्वारा अलग होती हैं जैसे कि ऑस्ट्रेलिया की ग्रेट बैरियर रीफ। एटोल वलयाकार भित्तियां होती हैं जो एक केंद्रीय शांत लैगून को घेरे रहती हैं। ये तीनों प्रकार प्रवाल पॉलिप्स के विकास और भूगर्भीय परिवर्तनों के अलग-अलग चरणों को प्रदर्शित करते हैं जो समुद्री जैव विविधता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

266. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
समुद्री जल का घनत्व पूरी तरह से उसके तापमान और लवणता के भौतिक गुणों द्वारा निर्धारित होता है। जब जल ठंडा होता है, तो उसके अणु संकुचित हो जाते हैं जिससे उसका घनत्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार जल में घुले हुए लवणों की अधिक मात्रा जल के द्रव्यमान को बढ़ा देती है जिससे वह भारी हो जाता है। अतः उच्च लवणता वाला ठंडा जल महासागरों में सबसे अधिक सघन माना जाता है और यह अक्सर गहरे महासागरों में नीचे की ओर बैठने की प्रवृत्ति रखता है। ये दोनों कथन महासागरीय भौतिकी के मूलभूत सिद्धांतों को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

267. (C) महासागरीय तापीय ऊर्जा रुपांतरण (OTEC)
महासागरीय तापीय ऊर्जा रुपांतरण या ओटेक एक आधुनिक ऊर्जा तकनीक है जो महासागर की गर्म सतह और ठंडी गहराइयों के बीच के तापमान अंतर का उपयोग करके बिजली पैदा करती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सूर्य की किरणों से सतह का जल काफी गर्म हो जाता है जबकि 1,000 मीटर की गहराई पर तापमान हिमांक के करीब होता है। इस ऊष्मीय प्रवणता का उपयोग करके कम क्वथनांक वाले द्रवों को वाष्पित किया जाता है जो टर्बाइन चलाकर निरंतर और स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करते हैं। यह भविष्य का एक महत्वपूर्ण अक्षय ऊर्जा स्रोत है जो वैश्विक है।

268. (D) एक अपसारी प्लेट सीमा
मध्य-अटलांटिक कटक पृथ्वी पर विवर्तनिक प्लेटों के अपसरण का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ दो विशाल विवर्तनिक प्लेटें निरंतर एक-दूसरे से दूर जा रही हैं जिससे पृथ्वी के भीतर से मैग्मा ऊपर आता है और नई महासागरीय क्रस्ट का निर्माण करता है। इस प्रक्रिया को सागर अधस्तल प्रसरण कहा जाता है। यह कटक वास्तव में एक विशाल जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जहाँ निरंतर ज्वालामुखीय गतिविधियाँ और भूकंप होते रहते हैं। यह संरचना अटलांटिक महासागर के निरंतर विस्तार और नई समुद्री सतह के जन्म के लिए पूरी तरह उत्तरदायी है।

269. (A) गल्फ स्ट्रीम
क्यूरोशियो और गल्फ स्ट्रीम दोनों अपने-अपने महासागर बेसिनों में समान भौतिक और जलवायु संबंधी भूमिकाएं निभाती हैं। क्यूरोशियो प्रशांत महासागर के पश्चिमी किनारे पर और गल्फ स्ट्रीम अटलांटिक महासागर के पश्चिमी किनारे पर बहने वाली अत्यंत शक्तिशाली गर्म जलधाराएं हैं। ये दोनों धाराएं उष्णकटिबंधीय गर्मी को उत्तर की ओर उच्च अक्षांशों तक ले जाती हैं जिससे जापान और उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तटों की जलवायु गर्म बनी रहती है। इनकी गति, तापमान और परिसंचरण का पैटर्न एक जैसा होने के कारण इन्हें भौगोलिक दृष्टि से प्रतिरूप माना जाता है।

NODIA

270. (D) वे समुद्र के स्तर को गिराने का कारण बनते हैं, जिससे लहरों की क्रिया प्रवाल वृद्धि के लिए प्लेटफॉर्म बनाने में सहायक होती है।
डेली के हिमानी नियंत्रण सिद्धांत में हिमयुग की भूमिका अत्यंत निर्णायक है। हिमयुग के दौरान जब विशाल ग्लेशियरों का निर्माण हुआ, तो समुद्र का जल स्तर लगभग 100 मीटर तक गिर गया। इस प्रक्रिया में समुद्री लहरों ने पहले से मौजूद द्वीपों के किनारों को काटकर उन्हें पूरी तरह समतल प्लेटफॉर्मों या चबूतरों में बदल दिया। बाद में जब तापमान बढ़ा और ग्लेशियर पिघले, तो समुद्र का स्तर वापस ऊपर उठा। इस बढ़ते जल स्तर के साथ प्रवाल इन समतल आधारों पर तेजी से ऊपर की ओर विकसित हुए जिससे वर्तमान एटोल और भित्तियाँ बने।

271. (B) चंद्रमा और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
पृथ्वी पर ज्वार-भाटा समुद्र के जल स्तर में होने वाला वह आवधिक उतार-चढ़ाव है जो मुख्य रूप से चंद्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के प्रभाव से उत्पन्न होता है। यद्यपि सूर्य चंद्रमा की तुलना में बहुत विशाल है, लेकिन पृथ्वी से उसकी अत्यधिक दूरी के कारण उसका ज्वार-उत्पादक प्रभाव चंद्रमा के प्रभाव से काफी कम होता है। चंद्रमा पृथ्वी के बहुत निकट होने के कारण जल पर सबसे अधिक खिंचाव डालता है। इसके अतिरिक्त पृथ्वी का अपकेंद्रीय बल भी इस प्रक्रिया में संतुलन बनाए रखने में योगदान देता है जिससे प्रत्येक दिन जल स्तर बदलता है।

272. (A) हिंद महासागर
हिंद महासागर दुनिया का एकमात्र ऐसा महासागर है जिसके उत्तरी भाग की जल धाराएं मानसूनी पवनों के मौसमी बदलाव के अनुसार अपनी दिशा पूरी तरह से बदल देती हैं। ग्रीष्मकाल में

कार्बोनेट आसानी से घुल जाता है। यह समुद्री जैव-विवर्तनिकी के अध्ययन में महत्वपूर्ण है।

255. (B) भित्ति और तट के बीच एक महत्वपूर्ण लैगून की उपस्थिति। तटीय प्रवाल भित्ति और अवरोधक प्रवाल भित्ति के बीच मुख्य अंतर उनकी तट से स्थिति और बीच के जल क्षेत्र का है। तटीय भित्तियाँ सीधे तट से जुड़ी होती हैं और उनके बीच कोई गहरा जल मार्ग नहीं होता। इसके विपरीत अवरोधक भित्तियाँ तट से काफी दूर होती हैं और उनके तथा तट के बीच एक चौड़ा और गहरा उथला जल क्षेत्र पाया जाता है जिसे लैगून कहते हैं। अवरोधक भित्तियाँ बहुत बड़ी और निरंतर होती हैं जैसे कि ऑस्ट्रेलिया की ग्रेट बैरियर रीफ जो समुद्र की शक्तिशाली लहरों से तट की रक्षा करती है।

256. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कोरिओलिस प्रभाव पृथ्वी के पश्चिम से पूर्व की ओर होने वाले घूर्णन के कारण उत्पन्न होता है। यह बल महासागरीय धाराओं और पवनों की गति की दिशा को विक्षेपित कर देता है। फेरल के नियम के अनुसार कोरिओलिस प्रभाव के कारण उत्तरी गोलार्ध में गतिशील धाराएं अपनी मूल दिशा से दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर मुड़ जाती हैं। यही कारण है कि महासागरों में धाराओं के विशाल गोलाकार चक्र या 'गायर' निर्मित होते हैं। अतः धाराओं का यह विक्षेपण और पृथ्वी का घूर्णन एक-दूसरे से सीधे वैज्ञानिक रूप से संबंधित हैं।

257. (C) यह घटता है।
समुद्री जल के तापमान और उसके घनत्व के बीच एक व्युत्क्रमानुपाती संबंध होता है। जब जल का तापमान बढ़ता है, तो उसके अणु अधिक ऊर्जा प्राप्त करते हैं और एक-दूसरे से दूर फैलते हैं जिससे जल का आयतन बढ़ जाता है और वह हल्का या कम सघन हो जाता है। यही कारण है कि महासागरों की ऊपरी सतह का गर्म जल हमेशा हल्का होता है और ऊपर ही रहता है जबकि नीचे का ठंडा जल अधिक सघन और भारी होता है। तापमान में यह वृद्धि जल के ऊर्ध्वाधर परिसंचरण और परतों के निर्माण को सीधे और प्रभावी रूप से नियंत्रित करती है।

258. (D) अटलांटिक और हिंद
रोमनचे डीप और जावा गर्त क्रमशः अटलांटिक और हिंद महासागरों की प्रमुख गहराइयां हैं। रोमनचे डीप मध्य-अटलांटिक कटक के पास स्थित एक गहरी खाई है जो प्लेटों के विस्थापन को दर्शाती है। वहीं जावा गर्त जिसे सुंडा गर्त भी कहा जाता है, हिंद महासागर का सबसे गहरा भाग है जो सुमात्रा और जावा के तटों के समानांतर फैला हुआ है। ये संरचनाएं महासागरीय नितल की विवर्तनिक सक्रियता और प्लेटों के अभिसरण के परिणामस्वरूप बनी हैं जो महासागरों के भूगर्भीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

259. (C) सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा संरेखण में होते हैं।
वृहद् ज्वार पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान आते हैं जब सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीधी रेखा में होते हैं। इस खगोलीय स्थिति को 'सिजिगी' कहा जाता है। इस समय सूर्य और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव संयुक्त हो जाते हैं जिससे समुद्र के जल पर लगने वाला कुल खिंचाव अपने अधिकतम स्तर पर पहुँच जाता है। इसके परिणामस्वरूप उच्च ज्वार सामान्य से बहुत अधिक ऊंचे और निम्न ज्वार सामान्य से बहुत अधिक नीचे होते हैं जिससे ज्वारीय परिसर सर्वाधिक हो जाता है। यह खगोलीय संरेखण ज्वार-भाटा की तीव्रता को निर्धारित करता है।

260. (B) घनत्व
समुद्री जल के भौतिक गुणों में तापमान, लवणता और दबाव मुख्य कारक हैं जो सीधे तौर पर जल की भौतिक अवस्था को प्रभावित करते हैं। घनत्व वास्तव में कोई स्वतंत्र गुण नहीं है बल्कि यह तापमान और लवणता के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। जबकि तापमान सौर विकिरण पर निर्भर करता है और लवणता वाष्पीकरण एवं वर्षा पर आधारित होती है। अम्लता जल के रासायनिक गुणों का हिस्सा है। अतः घनत्व को एक स्वतंत्र भौतिक गुण के बजाय अन्य गुणों के एक परिणामी लक्षण के रूप में देखा जाना चाहिए जो जल की गति को नियंत्रित करता है।

261. (D) गाइओट
गाइओट समुद्र के तल से उठने वाले जलमग्न ज्वालामुखी पर्वत होते हैं जिनका शिखर पूरी तरह से सपाट होता है। भूवैज्ञानिकों का मानना है कि ये पर्वत कभी समुद्र की सतह से ऊपर द्वीप के रूप में मौजूद थे जहाँ लहरों के निरंतर अपरदन ने उनके शिखर को काटकर समतल बना दिया। बाद में समुद्र के स्तर में वृद्धि या विवर्तनिक प्लेटों की गति के कारण ये द्वीप धीरे-धीरे गहरे जल में डूब गए। गाइओट प्रशांत महासागर में प्रचुरता से पाए जाते हैं और ये प्राचीन समुद्री स्तर के परिवर्तनों का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाण देते हैं।

262. (A) लाल मृत्तिका
लाल मृत्तिका गहरे महासागर के अगाध क्षेत्रों में पाया जाने वाला सबसे व्यापक और सामान्य प्रकार का निक्षेप है। यह मुख्य रूप से सूक्ष्म ज्वालामुखीय धूल, उल्कापिंड के कणों और बहुत सूक्ष्म भूमिज अवसादों के मिश्रण से बनी होती है। इसकी जमा होने की दर अत्यंत धीमी होती है लेकिन यह महासागर के उन सबसे गहरे हिस्सों को कवर करती है जहाँ कैल्शियम कार्बोनेट आधारित अवशेष जल में पूरी तरह घुल जाते हैं। यह निक्षेप लगभग सभी महासागरों के गहरे जल के नीचे के सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैला हुआ है और गहराइयों को ढकता है।

263. (C) गल्फ स्ट्रीम
जिस प्रकार ब्राजील धारा दक्षिण अटलांटिक महासागर में उष्णकटिबंधीय गर्मी को दक्षिण की ओर ले जाने वाली एक प्रमुख गर्म जलधारा है, उसी प्रकार गल्फ स्ट्रीम उत्तरी अटलांटिक में उत्तर की ओर ऊष्मा का परिवहन करने वाली सबसे महत्वपूर्ण गर्म धारा है। ये दोनों धाराएं अपने-अपने महासागर बेसिनों के पश्चिमी किनारों पर बहती हैं और तटीय क्षेत्रों की जलवायु को गर्म और आर्द्र बनाए रखने में महत्वपूर्ण

Click Here to Buy book on Amazon

227. (C) घटेगी
महासागरीय लवणता जल में घुले हुए लवणों की सांद्रता पर निर्भर करती है। समुद्री बर्फ वास्तव में लगभग शुद्ध जल से बनी होती है क्योंकि जमने की प्रक्रिया के दौरान लवण बाहर निकल जाते हैं। जब यह बर्फ पिघलती है, तो वह भारी मात्रा में ताज़ा और मीठा जल समुद्र में मिला देती है। ताजे जल का यह आगमन समुद्र के खारे जल को पतला कर देता है जिससे उस क्षेत्र की कुल लवणता में कमी आ जाती है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से ध्रुवीय क्षेत्रों की समुद्री पारिस्थितिकी और जल के घनत्व को प्रभावित करती है।

228. (B) उत्तरी अटलांटिक गायर
सारगासो सागर उत्तरी अटलांटिक महासागर के बीच में स्थित एक अद्वितीय और शांत जल क्षेत्र है। यह चार प्रमुख महासागरीय धाराओं: गल्फ स्ट्रीम, उत्तरी अटलांटिक प्रवाह, कनारी धारा और उत्तरी विषुवतीय धारा के बीच घिरा हुआ है जो एक विशाल वृत्ताकार चक्र या गायर बनाते हैं। धाराओं के इस निरंतर घूमने के कारण बीच का जल अत्यंत स्थिर रहता है जहाँ 'सारगासम' नामक समुद्री घास प्रचुरता में तैरती रहती है। इसकी कोई स्थलीय तटरेखा नहीं है जो इसे भौगोलिक रूप से विश्व में अद्वितीय बनाती है।

229. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
महासागरीय नितल की प्रत्येक विशेषता की अपनी भौगोलिक पहचान है। महाद्वीपीय मग्नतट वास्तव में महाद्वीपों के वे किनारे हैं जो समुद्र के उथले जल में डूबे होते हैं। गंभीर सागरीय मैदान महासागरों के सबसे विस्तृत और सपाट क्षेत्र हैं जो सूक्ष्म अवसादों से ढके होते हैं। महासागरीय गर्त पृथ्वी के सबसे गहरे अवनमन हैं जो क्षेपण क्षेत्रों में बनते हैं। मध्य-महासागरीय कटक विशाल पर्वत श्रृंखलाएं हैं जहाँ नई समुद्री क्रस्ट का निर्माण होता है। ये सभी लक्षण महासागरीय भूगोल के मूल आधार स्तंभ हैं।

230. (A) समुद्र तल का क्रमिक अवतलन
चार्ल्स डार्विन का एटोल निर्माण का सिद्धांत मुख्य रूप से द्वीपों के धीरे-धीरे नीचे धंसने या अवतलन के विचार पर आधारित है। डार्विन ने प्रस्तावित किया था कि एक ज्वालामुखी द्वीप के चारों ओर पहले तटीय भित्ति बनती है। जैसे-जैसे द्वीप भूगर्भीय हलचलों के कारण समुद्र में नीचे की ओर धंसता है, प्रवाल ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं जिससे पहले अवरोधक भित्ति और अंततः एटोल का निर्माण होता है। यह सिद्धांत भूगर्भीय और जैविक प्रक्रियाओं के बीच के तालमेल को समझाने वाली एक प्रभावी वैज्ञानिक अवधारणा है।

231. (C) विश्व के महासागरों में घनत्व एक समान है।
महासागरीय जल का घनत्व पूरे विश्व में कभी भी एक समान नहीं रहता है क्योंकि यह तापमान और लवणता के साथ निरंतर बदलता रहता है। ठंडे और खारे क्षेत्रों में जल अधिक सघन होता है जबकि गर्म और कम खारे क्षेत्रों में यह हल्का होता है। घनत्व में यह भिन्नता ही महासागरों में जल के ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज परिसंचरण को जन्म देती है। अतः घनत्व को एक समान मानना भौगोलिक और वैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से गलत है क्योंकि यह समुद्री धाराओं और पारिस्थितिकी को निर्धारित करने वाला परिवर्तनशील भौतिक गुण है।

232. (A) महासागरीय धारा
महासागरीय धारा समुद्री जल की एक विशाल और निरंतर होने वाली सामूहिक गति है जो एक निश्चित मार्ग और दिशा का अनुसरण करती है। यह गति मुख्य रूप से पवन, कोरिओलिस बल और जल के तापमान एवं लवणता में अंतर से उत्पन्न होती है। धाराएं समुद्र की सतह पर और गहराइयों में भी बहती हैं और वे वैश्विक स्तर पर ऊष्मा, खनिजों तथा पोषक तत्वों के परिवहन का कार्य करती हैं। इन्हें अक्सर 'समुद्र के भीतर की नदियां' कहा जाता है जो पृथ्वी की जलवायु प्रणाली को संतुलित रखने के लिए अनिवार्य हैं।

233. (D) थर्मोकलाइन
थर्मोकलाइन महासागर के जल की वह संक्रमणकालीन परत है जो ऊपरी गर्म मिश्रित परत को नीचे के गहरे और ठंडे जल से अलग करती है। इस परत की मुख्य विशेषता यह है कि जैसे-जैसे हम इसमें गहराई की ओर बढ़ते हैं, जल के तापमान में अत्यंत तीव्र और अचानक गिरावट दर्ज की जाती है। यह परत सामान्यतः 200 से 1,000 मीटर की गहराई के बीच पाई जाती है। थर्मोकलाइन समुद्री पारिस्थितिकी और जल के ऊर्ध्वाधर परिसंचरण को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण भौतिक अवरोध है जो जल निकायों को अलग करता है।

234. (B) एक बड़ी, सरल और 'S'-आकार की मध्य-महासागरीय कटक
'एस' आकार की मध्य-महासागरीय कटक अटलांटिक महासागर की एक प्रमुख और अद्वितीय विशेषता है, न कि प्रशांत महासागर की। प्रशांत महासागर अपनी विशाल गहराई, मारियाना जैसी कई गहरी गर्तों और ज्वालामुखियों की श्रृंखला 'अग्नि वलय' के लिए जाना जाता है। साथ ही इसमें हजारों की संख्या में समुद्री पर्वत और सपाट शीर्ष वाले गाइओट पाए जाते हैं। प्रशांत की कटक प्रणाली जिसे पूर्वी प्रशांत उत्थान कहा जाता है, वह अटलांटिक की तुलना में अधिक विस्तृत और कम केंद्रीय है, जो इसे विशिष्ट बनाती है।

235. (C) लघु ज्वार
लघु ज्वार तब आते हैं जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी के सापेक्ष एक-दूसरे के समकोण पर स्थित होते हैं। यह स्थिति चंद्रमा के प्रथम और अंतिम चतुर्थांश के दौरान बनती है। इस समय सूर्य और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव एक-दूसरे के प्रभाव को आंशिक रूप से संतुलित या कम कर देते हैं जिससे समुद्र के जल में होने वाला कुल उभार न्यूनतम हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप उच्च ज्वार बहुत ऊंचे नहीं होते और निम्न ज्वार बहुत नीचे नहीं गिरते जिससे ज्वारीय परिसर अपने न्यूनतम स्तर पर रहता है।

236. (D) टेरिजेनस
टेरिजेनस या भूमिज निक्षेप वे अवसाद होते हैं जो महाद्वीपीय भू-भागों के अपक्षय और अपरदन से प्राप्त होते हैं। नदियां, पवनें और हिमनद इन कणों जैसे कि कीचड़, गाद, रेत और बजरी

NODIA

दक्षिण-पश्चिम मानसून धाराओं को घड़ी की सुइयों की दिशा में चलाता है जबकि शीतकाल में उत्तर-पूर्वी मानसून के प्रभाव से ये धाराएं विपरीत दिशा में बहने लगती हैं। पवनों और धाराओं का यह गहरा संबंध हिंद महासागर की जलवायु प्रणाली का एक अनूठा लक्षण है जो क्षेत्रीय मौसम और समुद्री गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

273. (C) हाइड्रोजेनस निक्षेप
पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स हाइड्रोजेनस निक्षेपों का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं क्योंकि इनका निर्माण सीधे समुद्री जल में घुले हुए धात्विक खनिजों के रासायनिक अवक्षेपण से होता है। ये आलू के आकार की ठोस संरचनाएं होती हैं जो मुख्य रूप से मैंगनीज, लोहे, निकेल और कोबाल्ट जैसे धातुओं से समृद्ध होती हैं। इनका निर्माण गहरे समुद्री मैदानों के शांत वातावरण में बहुत धीमी गति से होता है जहाँ खनिज कण धीरे-धीरे एक छोटे केंद्र के चारों ओर जमा होते जाते हैं। ये भविष्य के लिए अत्यंत मूल्यवान खनिज स्रोत माने जाते हैं जो गहरे समुद्र में हैं।

274. (D) एक परत जहाँ गहराई के साथ तापमान तेजी से बदलता है।
थर्मोकलाइन महासागर के जल की वह ऊर्ध्वाधर परत है जो ऊपरी गर्म मिश्रित परत को नीचे के गहरे और ठंडे जल से अलग करती है। इस परत में जैसे-जैसे हम गहराई की ओर बढ़ते हैं, जल के तापमान में बहुत ही तीव्र गिरावट दर्ज की जाती है। यह परत आमतौर पर 200 से 1,000 मीटर की गहराई के बीच पाई जाती है। थर्मोकलाइन समुद्री पारिस्थितिकी और जल के ऊर्ध्वाधर मिश्रण को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण भौतिक विभाजक है जो विभिन्न गहराईयों के जल निकायों के बीच ऊष्मा के आदान-प्रदान को नियंत्रित करता है और संतुलन बनाता है।

275. (C) प्रशांत महासागर
मारियाना गर्त पृथ्वी के सभी महासागरों का सबसे गहरा भाग है जो पश्चिमी प्रशांत महासागर में स्थित है। इसकी गहराई समुद्र तल से लगभग 11,000 मीटर नीचे दर्ज की गई है। यह गर्त प्रशांत प्लेट और फिलीपीन प्लेट के बीच होने वाले अभिसरण और क्षेपण की प्रक्रिया का परिणाम है। इस अत्यधिक गहराई पर जल का दबाव सतह की तुलना में हजारों गुना अधिक और तापमान हिमांक के अत्यंत करीब होता है। मारियाना गर्त समुद्री अनुसंधान और पृथ्वी की विवर्तनिक सक्रियता को समझने के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक भौगोलिक स्थान है।

276. (C) तटीय प्रवाल भित्ति
तटीय प्रवाल भित्ति प्रवाल भित्तियों का सबसे सामान्य प्रकार है जो सीधे किसी महाद्वीप या द्वीप के किनारे से संलग्न होकर समुद्र की ओर विकसित होती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके और तट के बीच कोई गहरा जल मार्ग या लैगून नहीं होता है। ये भित्तियां आमतौर पर संकीर्ण होती हैं और लहरों की मार से सीधे प्रभावित होती हैं। भारत में मन्नार की खाड़ी और अंडमान द्वीप समूह के तटों के पास इस प्रकार की भित्तियां प्रचुरता से पाई जाती हैं जो तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और विविध हैं।

277. (D) तापमान और लवणता
समुद्री जल का घनत्व मुख्य रूप से दो प्रमुख भौतिक चरों, तापमान और लवणता के संयुक्त प्रभाव पर निर्भर करता है। जब जल का तापमान कम होता है, तो उसके अणु संकुचित होकर पास आ जाते हैं जिससे घनत्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार लवणता बढ़ने पर जल में घुले हुए लवणों की मात्रा अधिक हो जाती है जो जल के द्रव्यमान को बढ़ा देती है। ये दोनों गुण महासागरों में जल के ऊर्ध्वाधर परिसंचरण या थर्मोहेलाइन परिसंचरण के मुख्य चालक हैं जो वैश्विक स्तर पर ऊष्मा और पोषक तत्वों के वितरण को संतुलित करने में वैज्ञानिक सहायता करते हैं।

278. (A) कोरिओलिस प्रभाव
कोरिओलिस प्रभाव पृथ्वी के अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर होने वाले घूर्णन का परिणाम है जो गतिशील पिंडों जैसे पवनों और महासागरीय धाराओं की दिशा को विक्षेपित कर देता है। फेरल के नियम के अनुसार इस बल के प्रभाव से उत्तरी गोलार्ध में धाराएं अपनी मूल दिशा से दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर मुड़ जाती हैं। यह प्रभाव भूमध्य रेखा पर शून्य होता है और ध्रुवों की ओर बढ़ता जाता है। यही कारण है कि महासागरों में धाराओं के विशाल वृत्ताकार चक्र या 'गायर' निर्मित होते हैं जो वैश्विक जलवायु को प्रभावित करते हैं।

279. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
महासागरीय संसाधनों को उनकी प्रकृति के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। मछली और अन्य समुद्री जीव जैविक संसाधनों का हिस्सा हैं। ज्वारीय शक्ति महासागर की गति से प्राप्त होने वाली ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। मैंगनीज नोड्यूल्स हाइड्रोजेनस प्रक्रिया द्वारा समुद्र तल पर बनने वाले जलजनित खनिज संसाधन हैं। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जीवाश्म ईंधन के रूप में खनिज संसाधनों की श्रेणी में आते हैं जो महाद्वीपीय मग्नतटों के नीचे पाए जाते हैं। इन संसाधनों का वर्गीकरण आर्थिक महत्व को समझने के लिए आवश्यक है।

280. (A) पूर्वी प्रशांत महासागर
अल्बाट्रॉस पठार पूर्वी प्रशांत महासागर के अधस्तल की एक प्रमुख और महत्वपूर्ण उच्चावच विशेषता है। यह वास्तव में प्रशांत महासागर के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित एक विस्तृत जलमग्न पठारी क्षेत्र है जो पूर्वी प्रशांत उत्थान कटक प्रणाली से जुड़ा हुआ है। यह संरचना विवर्तनिक प्लेटों की सक्रियता और ज्वालामुखी गतिविधियों के परिणामस्वरूप निर्मित हुई है। अल्बाट्रॉस पठार के आस-पास का क्षेत्र समुद्री पारिस्थितिकी और गहरे समुद्र के भूगर्भीय अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह प्रशांत महासागर की विशालता और इसकी जटिल संरचना को प्रदर्शित करता है।

281. (C) केवल 1 और 3
प्रवाल भित्तियों के स्वस्थ विकास के लिए स्वच्छ और सूर्य के प्रकाश वाले जल की उपलब्धता अनिवार्य है क्योंकि उनके भीतर रहने वाले सहजीवी शैवाल को प्रकाश संश्लेषण के लिए प्रकाश चाहिए होता है। प्रवाल भित्तियों के तीन मुख्य प्रकार

Downloaded from www.pdf.tube

नीचे गिरकर समुद्र तल की ऊबड़-खाबड़ और ज्वालामुखीय चट्टानी सतह को पूरी तरह से ढक देते हैं। यह प्रक्रिया किसी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर धूल की मोटी परत गिरने जैसी है जो सब कुछ समतल कर देती है। ये मैदान 3,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर स्थित दुनिया के सबसे शांत भौगोलिक क्षेत्र माने जाते हैं।

209. (A) केवल 1 और 2
महाद्वीपीय मग्नढाल वास्तव में महाद्वीपीय किनारे का सबसे तीव्र ढाल वाला हिस्सा है जो मग्नतट और गहरे समुद्र के बीच स्थित होता है। मध्य-अटलांटिक कटक विवर्तनिक प्लेटों के अपसरण का एक सक्रिय स्थल है जहाँ नई समुद्री क्रस्ट का निर्माण होता है। इसके विपरीत महासागरीय गर्त सक्रिय महाद्वीपीय किनारों पर पाए जाते हैं जहाँ प्लेटों का क्षेपण होता है, न कि निष्क्रिय किनारों पर। अतः केवल पहले दो कथन ही महासागरीय भू-आकृति विज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार पूरी तरह से सटीक और वैज्ञानिक हैं।

210. (B) हिमयुग के अनुरूप समुद्र के स्तर का बढ़ना और गिरना।
आर. ए. डेली के हिमानी नियंत्रण सिद्धांत का मूल आधार यह है कि हिमयुग के दौरान वैश्विक जल स्तर में भारी गिरावट आई थी। जल स्तर कम होने से समुद्री लहरों ने द्वीपों के किनारों को काटकर उन्हें समतल प्लेटफॉर्मों में बदल दिया। बाद में जब जलवायु गर्म हुई और ग्लेशियर पिघले, तो समुद्र का स्तर वापस ऊपर उठा। इस बढ़ते जल स्तर के साथ प्रवाल इन समतल आधारों पर ऊपर की ओर विकसित हुए जिससे वर्तमान एटोल और अवरोधक भित्तियों का निर्माण हुआ जो आज समुद्र में दिखाई देते हैं।

211. (B) निरंतर; आवधिक
महासागरीय धाराएं और ज्वार-भाटा दोनों जल की गतियां हैं लेकिन उनकी प्रकृति में मौलिक अंतर है। धाराएं समुद्र के जल का एक विशाल और निरंतर प्रवाह हैं जो एक ही दिशा में लंबे समय तक बहती रहती हैं जैसे कि नदियां। इसके विपरीत ज्वार-भाटा एक आवधिक परिघटना है जो प्रत्येक दिन निश्चित समय अंतराल पर जल स्तर के ऊपर उठने और नीचे गिरने को दर्शाती है। धाराओं का कारण पवन और घनत्व है जबकि ज्वार मुख्य रूप से खगोलीय पिंडों के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव से उत्पन्न होते हैं।

212. (B) हिंद महासागर
हिंद महासागर के अधस्तल की स्थलाकृति अन्य महासागरों की तुलना में अधिक जटिल और विविध है। नाइन्टी ईस्ट रिज, चागोस-लक्षद्वीप रिज और कार्ल्सबर्ग रिज इसी महासागर की प्रमुख जलमग्न विशेषताएं हैं। ये संरचनाएं हिंद महासागर के भूगर्भीय विकास और विवर्तनिक प्लेटों की हलचल को प्रदर्शित करती हैं। इन कटकों और पठारों के कारण हिंद महासागर कई छोटे बेसिनों में विभाजित है जो इसकी जल धाराओं और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करते हैं। यह संरचना इसे प्रशांत और अटलांटिक से अलग बनाती है।

213. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महासागरों की गहराइयों में जल का तापमान लगभग हिमांक के करीब होता है चाहे वह क्षेत्र भूमध्य रेखा पर ही क्यों न हो। इसका मुख्य कारण वैश्विक थर्मोहेलाइन परिसंचरण है। ध्रुवीय क्षेत्रों में ठंडा और अत्यधिक सघन जल समुद्र की गहराई में डूब जाता है और फिर वहां से धीरे-धीरे भूमध्य रेखा की ओर गहरे प्रवाह के रूप में फैलता है। चूंकि सूर्य का प्रकाश गहराइयों तक नहीं पहुँच पाता, इसलिए यह ध्रुवीय जल वहां के तापमान को अत्यंत कम और स्थिर बनाए रखने में मुख्य भूमिका निभाता है।

214. (A) इटरनल
महासागरीय निक्षेपों को सामान्यतः उनकी उत्पत्ति के स्रोत के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। टेरिजेनस (भूमिज), बायोजेनस (जैविक) और हाइड्रोजेनस (जलजनित) निक्षेप इसी वैज्ञानिक वर्गीकरण का हिस्सा हैं। 'लिटोरल' शब्द वास्तव में समुद्र के तट के पास के क्षेत्र को संदर्भित करता है जो ज्वार-भाटा के बीच स्थित होता है। यह निक्षेप की उत्पत्ति का कोई विशिष्ट प्रकार नहीं है बल्कि यह एक भौगोलिक स्थान को दर्शाता है। अतः उत्पत्ति के आधार पर निक्षेपों के प्रकारों में इसे शामिल नहीं किया जाता है।

NODIA

215. (C) जब तापमान कम और लवणता उच्च हो।
समुद्री जल का घनत्व मुख्य रूप से दो भौतिक चरों, तापमान और लवणता द्वारा नियंत्रित होता है। जब जल का तापमान कम होता है, तो उसके अणु संकुचित होकर पास आ जाते हैं जिससे घनत्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार लवणता बढ़ने पर जल में घुले हुए लवणों की मात्रा अधिक हो जाती है जो जल के द्रव्यमान को बढ़ा देती है। अतः वह जल जो सबसे अधिक ठंडा और सबसे अधिक खारा होता है, वह महासागरों में सबसे सघन माना जाता है और गहराइयों में बैठने की प्रवृत्ति रखता है, जो परिसंचरण चलाता है।

216. (A) अवरोधक प्रवाल भित्ति
ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित ग्रेट बैरियर रीफ दुनिया की सबसे विशाल और प्रसिद्ध अवरोधक प्रवाल भित्ति का उदाहरण है। यह तट के समानांतर लगभग 2,300 किलोमीटर की लंबाई में फैली हुई है और तट से एक चौड़े एवं गहरे लैगून द्वारा अलग है। यह भित्ति न केवल समुद्री जैव विविधता का खजाना है बल्कि यह समुद्र की शक्तिशाली लहरों से तट की रक्षा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी विशालता के कारण इसे अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है और यह एक अनमोल धरोहर है।

217. (D) चंद्रमा और सूर्य
पृथ्वी पर ज्वार-भाटा उत्पन्न करने के लिए मुख्य रूप से चंद्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल उत्तरदायी हैं। हालांकि सूर्य चंद्रमा की तुलना में बहुत विशाल है, लेकिन पृथ्वी से उसकी अत्यधिक दूरी के कारण उसका ज्वार-उत्पादक प्रभाव चंद्रमा के प्रभाव के आधे से भी कम होता है। चंद्रमा पृथ्वी के बहुत निकट होने के कारण समुद्र के जल पर सबसे अधिक खिंचाव डालता है। जब ये दोनों पिंड पृथ्वी के सापेक्ष संरेखित होते हैं,

290. (D) लवणता बढ़ने और तापमान घटने पर।
समुद्री जल का घनत्व मुख्य रूप से दो भौतिक कारकों तापमान और लवणता द्वारा नियंत्रित होता है। जब जल का तापमान गिरता है, तो उसके अणु संकुचित होकर पास आ जाते हैं जिससे उसका घनत्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार लवणता बढ़ने पर जल में घुले हुए लवणों की मात्रा अधिक होने से उसका द्रव्यमान बढ़ जाता है जो जल को भारी बना देता है। अतः ठंडा और अत्यधिक खारा जल महासागरों में सबसे अधिक सघन होता है और गहराइयों में डूबकर वैश्विक परिसंचरण को संचालित करता है। घनत्व में यह वृद्धि परतों के निर्माण के लिए अनिवार्य है।

291. (C) हिंद महासागर
नाइन्टी ईस्ट रिज हिंद महासागर के अधस्तल की एक अत्यंत प्रमुख और विशिष्ट भूगर्भीय विशेषता है। यह लगभग 5,000 किलोमीटर लंबी एक जलमग्न पर्वत श्रृंखला है जो 90 डिग्री पूर्वी देशांतर के समानांतर उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली हुई है। इसका निर्माण भारतीय प्लेट की उत्तर की ओर गति के दौरान एक हॉटस्पॉट की ज्वालामुखी गतिविधि के कारण हुआ था। यह कटक हिंद महासागर के पूर्वी हिस्से को पश्चिमी हिस्से से अलग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समुद्री भूविज्ञान के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि यह प्लेटों को दर्शाती है।

292. (B) तापमान और लवणता में भिन्नता के कारण घनत्व में अंतर।
गहरे महासागरों का ऊर्ध्वाधर परिसंचरण जिसे थर्मोहेलाइन परिसंचरण कहा जाता है, मुख्य रूप से जल के घनत्व में होने वाले अंतर से संचालित होता है। ध्रुवीय क्षेत्रों में जल बहुत ठंडा और खारा होने के कारण अत्यधिक सघन हो जाता है जिससे वह समुद्र की गहराइयों में नीचे की ओर बैठ जाता है। यही सघन जल फिर गहरे महासागर के माध्यम से भूमध्य रेखा की ओर प्रवाहित होता है। यह प्रक्रिया एक विशाल वैश्विक कन्वेयर बेल्ट की तरह कार्य करती है जो पूरी दुनिया के महासागरों में ऊष्मा, ऑक्सीजन और पोषक तत्वों के परिवहन को सुनिश्चित करती है।

293. (D) महाद्वीपीय मग्नतट पेट्रोलियम और मत्स्य पालन दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं।
महाद्वीपीय मग्नतट महासागर के वे उथले हिस्से हैं जहाँ सूर्य का प्रकाश तल तक पहुँचता है जिससे यहाँ प्लवक और समुद्री जीवन प्रचुरता में पाया जाता है जो इसे मत्स्य पालन के लिए सर्वोत्तम बनाता है। साथ ही यहाँ की अवसादी चट्टानों में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार पाए जाते हैं जो दुनिया के अधिकांश अपतटीय ऊर्जा उत्पादन का स्रोत हैं। इसके विपरीत मैंगनीज नोड्यूल्स निर्जीव खनिज संसाधन हैं और ज्वारीय शक्ति एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। महासागर का जल स्वयं भी समुद्री परिवहन के लिए अत्यंत मूल्यवान संपत्ति है।

294. (A) महाद्वीपीय उत्थान
महाद्वीपीय उत्थान महासागरीय नितल का वह क्षेत्र है जो तीव्र ढाल वाली महाद्वीपीय मग्नढाल और विशाल गंभीर सागरीय मैदान के बीच स्थित होता है। यहाँ ढाल अत्यंत मंद होती है क्योंकि यह मुख्य रूप से उन अवसादों के संचय से निर्मित होता है जो महाद्वीपीय किनारों से नीचे की ओर बहकर आते हैं। यह क्षेत्र महाद्वीपीय किनारे की बाहरी सीमा और गहरे समुद्री बेसिन की शुरुआत के बीच का संक्रमण स्थल है। यहाँ अवसादों की मोटी परतें जमा होती हैं जो गहरे समुद्र के शांत वातावरण में एक मंद उभार जैसी स्थलाकृति का निर्माण करती हैं और विस्तृत हैं।

295. (C) तापमान
आइसोथर्म मानचित्र पर खींची गई वह काल्पनिक रेखा है जो महासागरों या वायुमंडल में समान तापमान वाले विभिन्न भौगोलिक स्थानों को आपस में जोड़ने का कार्य करती है। समुद्र विज्ञान में इन रेखाओं का उपयोग सतही और गहरे जल के ऊष्मीय वितरण को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। आइसोथर्म के माध्यम से वैज्ञानिक महासागरीय धाराओं के प्रभाव और ऊष्मा के पुनर्वितरण के पैटर्न को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। अन्य गुणों के लिए अलग शब्द प्रयुक्त होते हैं जैसे लवणता के लिए आइसोहेलाइन और दबाव के लिए आइसोबार का उपयोग भौगोलिक मानचित्रण में होता है।

296. (A) पश्चिम से पूर्व की ओर, अंटार्कटिका की परिक्रमा करते हुए।
वेस्ट विंड ड्रिफ्ट जिसे अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा भी कहा जाता है, विश्व की एकमात्र ऐसी महासागरीय धारा है जो पूरे पृथ्वी गोलार्ध की बिना किसी महाद्वीपीय बाधा के परिक्रमा करती है। यह धारा अंटार्कटिका महाद्वीप के चारों ओर पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है और प्रशांत, अटलांटिक तथा हिंद महासागरों को आपस में जोड़ती है। पछुआ पवनों द्वारा संचालित यह धारा ठंडे जल का परिवहन करती है और वैश्विक समुद्री परिसंचरण तथा जलवायु नियमन में एक निर्णायक भूमिका निभाती है। इसकी निरंतरता और विशालता इसे भौगोलिक रूप से अद्वितीय बनाती है।

297. (D) एक महासागरीय प्लेट का क्षेपण
महासागरीय गर्त पृथ्वी के सबसे गहरे स्थल हैं और इनका निर्माण विवर्तनिक प्लेटों के अभिसरण क्षेत्रों में होता है। जब एक सघन महासागरीय प्लेट दूसरी प्लेट से टकराती है, तो वह नीचे की ओर मुड़कर मेंटल में धंसने लगती है जिसे क्षेपण कहा जाता है। इस धंसने वाले स्थान पर अत्यंत गहरी और संकीर्ण खाइयां या गर्त बनते हैं। प्रशांत महासागर की मारियाना गर्त इसका विश्व प्रसिद्ध उदाहरण है। ये गर्तें महासागरीय क्रस्ट के विनाश के स्थल होते हैं और निरंतर भूकंपीय गतिविधियों का केंद्र माने जाते हैं जो पृथ्वी की आंतरिक गतिशीलता को दर्शाते हैं।

298. (B) पिक्नोकलाइन
पिक्नोकलाइन महासागर के जल की वह विशिष्ट ऊर्ध्वाधर परत है जहाँ गहराई बढ़ने के साथ जल के घनत्व में बहुत ही तीव्र और अचानक परिवर्तन देखा जाता है। यह परत सामान्यतः ऊपरी गर्म और कम सघन जल को नीचे के गहरे, ठंडे और अधिक सघन जल से अलग करने का कार्य करती है। घनत्व में

Click Here to Buy book on Amazon

9. एक देश की अशोधित जन्म दर प्रति 1,000 पर 25 है और अशोधित मृत्यु दर प्रति 1,000 पर 10 है। इसकी प्राकृतिक वृद्धि की दर क्या है?
(A) 3.5%
(B) 2.5%
(C) 1.5%
(D) 0.5%

10. नगरीय उपांत की विशेषताओं के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) इसकी विशेषता सुव्यवस्थित और एकीकृत सार्वजनिक सेवाएं हैं।
(B) यह ग्रामीण और शहरी भूमि उपयोग के मिश्रण को प्रदर्शित करता है।
(C) इसमें अक्सर आंतरिक शहर की तुलना में जनसंख्या घनत्व कम होता है।
(D) भूमि मूल्य आमतौर पर संक्रमण की स्थिति में होते हैं, जो अक्सर बढ़ते रहते हैं।

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर से निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर की ओर ऐतिहासिक बदलाव का वर्णन करता है।
कारण (R): यह संक्रमण मुख्य रूप से आर्थिक विकास, शहरीकरण और स्वास्थ्य देखभाल तथा स्वच्छता में सुधार से प्रेरित है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

12. शहरी विकास की पारिस्थितिक प्रक्रिया में निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी शामिल हैं?
(A) आक्रमण
(B) स्थिरता
(C) उत्तराधिकार
(D) केंद्रीकरण

13. जनसंख्या भूगोल में 'मर्त्यता' का क्या अर्थ है?
(A) जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना का अध्ययन।
(B) प्रवासी आंदोलनों का अध्ययन।
(C) जनसंख्या के भीतर होने वाली मौतों की आवृत्ति का अध्ययन।
(D) किसी जनसंख्या के प्रजनन प्रदर्शन का अध्ययन।

14. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के निम्नलिखित चरणों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. उत्तरवर्ती विस्तार चरण
2. उच्च स्थिर चरण
3. निम्न स्थिर चरण
4. प्रारंभिक विस्तार चरण
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 1, 4, 3

15. सही ढंग से सुमेलित अवधारणा और उसके प्रस्तावक की पहचान करें।
(A) कोटि-आकार नियम - जॉर्ज के. जिफ
(B) केंद्रीय स्थान सिद्धांत - मार्क जेफरसन
(C) प्राइमेट शहर - अगस्त लोश
(D) जनसांख्यिकीय संक्रमण - डब्लू.एम. डेविस

16. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल का कौन सा चरण उच्च जन्म दर और तेजी से घटती मृत्यु दर की विशेषता है, जिससे जनसंख्या विस्फोट होता है?
(A) चरण 1
(B) चरण 2
(C) चरण 3
(D) चरण 4

17. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: किसी वस्तु की 'परास' वह अधिकतम दूरी है जो एक उपभोक्ता उसे खरीदने के लिए यात्रा करने को तैयार है।
कथन II: किसी वस्तु की 'देहली' वह न्यूनतम जनसंख्या है जो उसके प्रावधान का समर्थन करने के लिए आवश्यक है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

18. प्रवास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा 'आकर्षण कारक' का उदाहरण है?
(A) गंतव्य स्थान पर बेहतर शैक्षिक सुविधाएं
(B) गृह देश में राजनीतिक अस्थिरता
(C) गृह क्षेत्र में नौकरी के अवसरों की कमी
(D) मूल क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाएं

19. कोटि-आकार नियम द्वारा अधिवास पदानुक्रम के किस प्रतिरूप का वर्णन किया गया है?
(A) एक वितरण जहाँ एक शहर अन्य सभी शहरों की तुलना में अत्यधिक बड़ा होता है।
(B) समान आकार के शहरों वाली एक प्रणाली।
(C) शहरों के आकार का एक लॉग-लीनियर वितरण।
(D) शहरों के केवल दो स्तरों वाली एक द्विआधारी प्रणाली।

20. किसी देश की वह जनसंख्या नीति जो सक्रिय रूप से नागरिकों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करती है, कहलाती है:
(A) प्रति-प्रसववादी नीति

NODIA

अध्याय 05
जनसंख्या भूगोल एवं अधिवास भूगोल

NODIA

1. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द पृथ्वी की सतह के स्थायी रूप से बसे हुए हिस्सों को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) एनेकुमीन
(B) एक्यूमीन
(C) हिंटरलैंड
(D) मेगालोपोलिस

2. विश्व जनसंख्या वितरण के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) विश्व की 80% से अधिक जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध में रहती है।
(B) दक्षिणी गोलार्द्ध, उत्तरी गोलार्द्ध की तुलना में अधिक आबादी वाला है।
(C) जनसंख्या महाद्वीपों के बीच समान रूप से वितरित है।
(D) विश्व की अधिकांश जनसंख्या उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में निवास करती है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: प्रजननता से तात्पर्य जनसंख्या के वास्तविक प्रजनन प्रदर्शन से है।
कथन II: जननक्षमता से तात्पर्य एक महिला की गर्भधारण करने और बच्चे पैदा करने की शारीरिक क्षमता से है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

4. 'प्राइमेट शहर' (प्रमुख शहर) की अवधारणा सबसे पहले किस भूगोलवेत्ता द्वारा प्रस्तावित की गई थी?
(A) जॉर्ज के. जिफ
(B) वाल्टर क्रिस्टॉलर
(C) अगस्त लोश
(D) मार्क जेफरसन

5. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (प्रजनन क्षमता का माप)
P. अशोधित जन्म दर (CBR)
Q. सामान्य प्रजनन दर (GFR)
R. कुल प्रजनन दर (TFR)
S. सकल पुनरुत्पादन दर (GRR)
सूची II: (विवरण)
1. बेटियों की औसत संख्या जो एक महिला के पैदा होगी यदि वह अपने जीवनकाल में किसी दिए गए वर्ष की आयु-विशिष्ट प्रजनन दर के अनुरूप चलती है।
2. बच्चों की औसत संख्या जो एक महिला के अपने जीवनकाल में पैदा होगी यदि वह वर्तमान आयु-विशिष्ट प्रजनन दर का अनुभव करती है।
3. किसी दिए गए वर्ष में बच्चे पैदा करने की आयु (आमतौर पर 15 से 49 वर्ष) की प्रति 1,000 महिलाओं पर जीवित जन्मों की संख्या।
4. किसी जनसंख्या में प्रति 1,000 लोगों पर एक वर्ष में जीवित जन्मों की कुल संख्या।
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

6. निम्नलिखित में से कौन सा नगरीय उपांत के निर्माण का प्राथमिक कारण है?
(A) शहर की आबादी में तेजी से गिरावट।
(B) आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में शहर का बाहर की ओर विस्तार।
(C) शहरी विकास को रोकने वाले सख्त सरकारी नियम।
(D) शहर से दूर आत्मनिर्भर उपग्रह शहरों का विकास।

7. अलग-अलग आयु संरचना वाले दो देशों के प्रजनन स्तरों की तुलना करने के लिए सबसे उपयुक्त माप क्या है?
(A) अशोधित जन्म दर (CBR)
(B) जीवित जन्मों की कुल संख्या
(C) प्राकृतिक विकास दर
(D) कुल प्रजनन दर (TFR)

8. कोटि-आकार नियम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह जॉर्ज जिफ द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
2. यह एक ऐसे संबंध का वर्णन करता है जहां किसी शहर की जनसंख्या उसकी कोटि (रैंक) के व्युत्क्रमानुपाती होती है।
3. प्राइमेट शहर वितरण वाला देश कोटि-आकार नियम का पूर्णतः पालन करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

(B) निर्मित क्षेत्र के भौतिक विस्तार का मानचित्रण करना।
(C) वस्तुओं, लोगों और सूचनाओं के प्रवाह के आधार पर प्रभाव क्षेत्र की पहचान करना।
(D) ऐतिहासिक भूमि उपयोग प्रतिरूपों के आधार पर क्षेत्रों का सीमांकन करना।

78. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरण 1 (उच्च स्थिर) की एक प्रमुख विशेषता है:
(A) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(B) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(C) निम्न जन्म दर और उच्च मृत्यु दर।
(D) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर, जिससे निम्न वृद्धि होती है।

79. 'अल्प-जनसंख्या' की अवधारणा उस स्थिति का वर्णन करती है जहाँ:
(A) आर्थिक विकास के लिए संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने के लिए जनसंख्या बहुत कम है।
(B) जनसंख्या घनत्व विश्व औसत से कम है।
(C) मृत्यु दर जन्म दर से अधिक है।
(D) देश का भूमि क्षेत्र बहुत कम है।

80. मार्क जेफरसन की अवधारणा के अनुसार, एक प्राइमेट शहर वह है जो:
(A) किसी राष्ट्र का सबसे पुराना शहर हो।
(B) राष्ट्रीय क्षमता और भावना का अत्यधिक बड़ा और अभिव्यंजक रूप हो।
(C) प्राथमिक परिवहन केंद्र पर स्थित हो।
(D) प्रशासनिक राजधानी हो, लेकिन आर्थिक केंद्र न हो।

81. निम्नलिखित में से कौन प्रजनन क्षमता विश्लेषण का एक प्रमुख घटक है?
(A) जीवन प्रत्याशा की गणना करना।
(B) कुल प्रजनन दर (TFR) का निर्धारण करना।
(C) मातृ मृत्यु अनुपात को मापना।
(D) मृत्यु के कारणों का विश्लेषण करना।

82. अधिवास पदानुक्रम के संदर्भ में, किस प्रकार के अधिवास में आमतौर पर सबसे कम जनसंख्या और सबसे कम सेवाएँ होती हैं?
(A) पुरवा
(B) कस्बा
(C) शहर
(D) गाँव

83. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): लोश के केंद्रीय स्थानों के मॉडल को क्रिस्टॉलर के मॉडल की तुलना में कम कठोर और अधिक जटिल माना जाता है।
कारण (R): लोश ने केंद्रीय स्थानों के एक कठोर, सोपानबद्ध पदानुक्रम को नहीं माना और विशिष्ट उत्पादन केंद्रों की अनुमति दी, जिसके परिणामस्वरूप शहर-धनी और शहर-गरीब क्षेत्रों के खंड बने।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

84. शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के अनुपात में क्रमिक वृद्धि को कहा जाता है:
(A) शहरी फैलाव
(B) प्रति-शहरीकरण
(C) जेंट्रीफिकेशन
(D) शहरीकरण

85. इनमें से कौन सी जनसंख्या नीति 'प्रति-प्रसववादी' मानी जाएगी?
(A) बड़े परिवारों के लिए कर प्रोत्साहन।
(B) विस्तारित सवैतनिक प्रसूति अवकाश।
(C) सरकार प्रायोजित परिवार नियोजन कार्यक्रम।
(D) तीसरे और चौथे बच्चों के लिए बाल देखभाल हेतु सब्सिडी।

86. कौन सा कारक विश्व जनसंख्या वितरण का प्राथमिक निर्धारक नहीं है?
(A) जलवायु
(B) देशांतर
(C) मृदा उर्वरता
(D) पानी की उपलब्धता

87. 'एनेकुमीन' शब्द का तात्पर्य है:
(A) महाद्वीप का घनी आबादी वाला केंद्र।
(B) वह भूमि जो स्थायी रूप से बसी हुई है।
(C) शहर के आर्थिक प्रभाव का क्षेत्र।
(D) दुनिया के निर्जन या बहुत विरल आबादी वाले हिस्से।

88. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: 'आक्रमण' का तात्पर्य किसी क्षेत्र में नए जनसंख्या समूह या भूमि उपयोग के प्रवेश से है।
कथन II: 'उत्तराधिकार' वह प्रक्रिया है जहाँ नया समूह या भूमि उपयोग अंततः पुराने पर हावी हो जाता है और उसे प्रतिस्थापित कर देता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

89. प्राइमेट शहर वितरण का अनुभव करने वाला देश किससे काफी विचलित होगा:
(A) केंद्रीय स्थान सिद्धांत

Downloaded from www.pdf.tube

(B) सुजननिकी नीति
(C) शून्य-वृद्धि नीति
(D) प्रसववादी नीति

21. 'नगर-क्षेत्र' शब्द मुख्य रूप से किसे संदर्भित करता है?
(A) कानूनी रूप से स्थापित प्रशासनिक सीमाएँ जो नगर पालिका को परिभाषित करती हैं।
(B) शहर के केंद्रीय व्यापारिक जिले के रूप में नामित विशिष्ट क्षेत्र।
(C) औपचारिक सीमाओं से परे विस्तारित आर्थिक और सामाजिक प्रभुत्व का क्षेत्र।
(D) एक क्षेत्रीय क्लस्टर जिसमें लगभग समान आकार के कई स्वतंत्र शहर होते हैं।

22. 'जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र' शब्द किसके बीच के संबंध को समझने में मदद करता है?
(A) जनसंख्या घनत्व और राजनीतिक सीमाएँ।
(B) जनसंख्या का आकार, संसाधन उपलब्धता और तकनीकी स्तर।
(C) शहरी जनसंख्या और ग्रामीण जनसंख्या।
(D) प्रवास के प्रतिरूप और सांस्कृतिक प्रसार।

23. निम्नलिखित में से कौन सा वाल्टर क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत की मान्यता नहीं है?
(A) एक समदैशिक, सपाट और विशेषताहीन मैदान।
(B) समान रूप से वितरित जनसंख्या और क्रय शक्ति।
(C) उपभोक्ता जो तर्कसंगत हैं और यात्रा की दूरी कम करना चाहते हैं।
(D) एक विविध और विषम परिवहन सतह।

24. एक प्रमुख सांस्कृतिक मंडल मुख्य रूप से साझा सांस्कृतिक विशेषताओं के समूह द्वारा परिभाषित किया जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख सांस्कृतिक मंडल का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) इस्लामी जगत
(B) अमेज़न बेसिन
(C) यूरोपीय संघ
(D) हिमालय

25. वह पारिस्थितिक प्रक्रिया जहाँ एक नया भूमि उपयोग या जनसंख्या समूह धीरे-धीरे किसी क्षेत्र में मौजूदा समूह को प्रतिस्थापित कर देता है, कहलाती है:
(A) केंद्रीयकरण
(B) पृथक्करण
(C) उत्तराधिकार
(D) संकेंद्रण

26. निम्नलिखित में से कौन सा क्रिस्टॉलर और लोश के केंद्रीय स्थान मॉडलों के बीच मुख्य अंतर की सही पहचान करता है?
(A) लोश ने परिवर्तनशील 'k' मान की अनुमति दी, जबकि क्रिस्टॉलर ने निश्चित 'k' मान प्रस्तावित किए।
(B) क्रिस्टॉलर ने षटकोणीय बाजार क्षेत्र माना, जबकि लोश ने वर्गाकार माना।
(C) क्रिस्टॉलर का मॉडल औद्योगिक स्थान पर आधारित है, जबकि लोश का सेवाओं पर।
(D) लोश ने परिवहन लागत की भूमिका को नजरअंदाज कर दिया, जो क्रिस्टॉलर के मॉडल का केंद्र था।

27. किस जनसांख्यिकीय संकेतक को मृत्यु दर का सबसे परिष्कृत माप माना जाता है क्योंकि यह आयु-विशिष्ट है और समाज के समग्र स्वास्थ्य को दर्शाता है?
(A) अशोधित मृत्यु दर (CDR)
(B) शिशु मृत्यु दर (IMR)
(C) मातृ मृत्यु अनुपात (MMR)
(D) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा

28. कोटि-आकार नियम के अनुसार, यदि किसी देश के सबसे बड़े शहर की जनसंख्या 12 मिलियन है, तो चौथे सबसे बड़े शहर की अपेक्षित जनसंख्या क्या होगी?
(A) 6 मिलियन
(B) 3 मिलियन
(C) 4 मिलियन
(D) 1.2 मिलियन

29. अधिवास पदानुक्रम की अवधारणा का अर्थ है कि अधिवासों को एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया जाता है, जो आधारित होता है:
(A) कालानुक्रमिक आयु पर
(B) भौगोलिक अक्षांश पर
(C) जनसंख्या के आकार और कार्यों की संख्या पर
(D) राजनीतिक संबद्धता पर

30. जनसांख्यिकीय संक्रमण के किस चरण की विशेषता निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर और स्थिर या धीरे-धीरे बढ़ती जनसंख्या है?
(A) चरण 1
(B) चरण 2
(C) चरण 3
(D) चरण 4

31. अगस्त लोश के केंद्रीय स्थानों के मॉडल में, आर्थिक परिदृश्य को व्यवस्थित किया गया है:
(A) एक केंद्रीय महानगर के चारों ओर घूमते हुए शहर-धनी और शहर-गरीब क्षेत्रों के क्षेत्रों में।
(B) निश्चित k-मानों वाले एक कठोर पदानुक्रम में।
(C) घटते भूमि मूल्य के संकेंद्रित क्षेत्रों में।
(D) बिना किसी पहचानने योग्य संरचना वाले यादृच्छिक प्रतिरूप में।

32. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में आंतरिक प्रवास की प्रक्रिया किसमें एक महत्वपूर्ण कारक है?
(A) कुल राष्ट्रीय जनसंख्या की गिरावट।
(B) शहरीकरण की प्रक्रिया।

NODIA

3. चिकित्सा क्रांति (20वीं शताब्दी)
4. सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 1, 2, 4

56. कौन सा शब्द उस क्षेत्र का वर्णन करता है जिसमें प्रौद्योगिकी के वर्तमान स्तर को देखते हुए अपनी जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों के बीच एक आदर्श संतुलन होता है?
(A) अनुकूलतम जनसंख्या
(B) अति-जनसंख्या
(C) अल्प-जनसंख्या
(D) शून्य जनसंख्या वृद्धि

57. गलत सुमेलित शब्द और उसकी परिभाषा की पहचान करें।
(A) हिंटरलैंड - एक केंद्रीय स्थान द्वारा सेवा प्रदान किया जाने वाला क्षेत्र।
(B) प्राइमेट शहर - एक शहर जो अगले सबसे बड़े शहर की तुलना में दोगुने से भी अधिक बड़ा है।
(C) नगरीय उपांत - शहर का केंद्रीय, सबसे घनी आबादी वाला हिस्सा।
(D) कोटि-आकार नियम - बताता है कि n-वां सबसे बड़ा शहर सबसे बड़े शहर के आकार का 1/n है।

58. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल मूल रूप से किसके जनसंख्या परिवर्तनों की व्याख्या करने के लिए विकसित किया गया था?
(A) 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोपीय देश।
(B) अफ्रीका में आधुनिक समय के विकासशील राष्ट्र।
(C) पूर्व-औद्योगिक एशियाई समाज।
(D) 20वीं शताब्दी में लैटिन अमेरिकी देश।

59. नगरीय उपांत की एक प्रमुख विशेषता है:
(A) ग्रामीण क्षेत्र के साथ एक स्पष्ट, तीक्ष्ण सीमा की उपस्थिति।
(B) सजातीय सामाजिक और आर्थिक विशेषताएं।
(C) सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और सेवाओं का उच्च स्तर।
(D) भूमि उपयोग का मिश्रण, अक्सर परस्पर विरोधी हितों के साथ।

60. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल की मुख्य आलोचना निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह गिरती मृत्यु दर की भूमिका को समझाने में विफल रहता है।
(B) यह एक सार्वभौमिक प्रयोज्यता मानता है जो सभी विकासशील देशों के अनुभव के अनुकूल नहीं हो सकती है।
(C) यह केवल कम जन्म दर वाले देशों पर लागू होता है।
(D) यह जनसंख्या परिवर्तन में प्रवास की भूमिका पर अत्यधिक जोर देता है।

61. 'सांस्कृतिक मंडल' की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि दुनिया को किन बड़े क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है:
(A) साझा राजनीतिक विचारधाराएँ।
(B) आर्थिक विकास के समान स्तर।
(C) प्रभुत्वशाली और एकीकृत सांस्कृतिक विशेषताओं का एक समूह।
(D) समान भौतिक भूगोल और जलवायु।

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान मॉडल में, उच्च-क्रम की वस्तुओं का परास और देहली निम्न-क्रम की वस्तुओं की तुलना में अधिक होता है।
कारण (R): लोग विशिष्ट, महंगी या कम बार खरीदी जाने वाली वस्तुओं के लिए दूर तक यात्रा करने को तैयार रहते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

63. सूत्र Pn = P1/n अधिवास भूगोल में किस अवधारणा से जुड़ा है?
(A) कोटि-आकार नियम
(B) प्राइमेट शहर सूचकांक
(C) केंद्रीय स्थान सिद्धांत
(D) शहरी पदानुक्रम

64. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (जनसंख्या अवधारणा)
P. प्रवास के नियम
Q. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल
R. जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र
S. गतिशीलता संक्रमण मॉडल
सूची II: (संबद्ध भूगोलवेत्ता/सिद्धांतकार)
1. डब्लू. एस. थॉम्पसन और एफ. नोटेस्टीन
2. विल्बर जेलिंस्की
3. ई.जी. रेवेनस्टीन
4. ए.के. एकरमैन

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

65. शहरी विकास प्रक्रियाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. संकेंद्रण वह प्रक्रिया है जिसमें लोग और गतिविधियाँ शहर के केंद्र की ओर बढ़ती हैं।
2. विकेंद्रीकरण में शहर के केंद्र से जनसंख्या और कार्यों

Click Here to Buy book on Amazon

(A) k = 3
(B) k = 4
(C) k = 9
(D) k = 7

44. प्रवास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. आकर्षण कारक वे स्थितियाँ हैं जो लोगों को नए स्थान की ओर आकर्षित करती हैं।
2. प्रतिकर्ष कारक वे परिस्थितियाँ हैं जो किसी व्यक्ति को अपना वर्तमान स्थान छोड़ने के लिए प्रेरित करती हैं।
3. ली के प्रवास मॉडल में अंतवर्ती बाधाओं की अवधारणाएँ शामिल हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

45. शहर के केंद्र से उसके उपनगरों की ओर लोगों की आवाजाही किस शहरी प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) केंद्रीयकरण
(B) जेंट्रीफिकेशन
(C) विकेंद्रीकरण
(D) आक्रमण

46. लोश के केंद्रीय स्थान मॉडल में मौलिक अवधारणा क्या है जो इसे क्रिस्टॉलर से अलग करती है?
(A) षटकोणीय बाजार क्षेत्र का विचार।
(B) समदैशिक सतह की मान्यता।
(C) देहली और परास की अवधारणा।
(D) फर्मों के लिए लाभ को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित करना, जिससे षट्कोणों के समूह बनते हैं।

47. जनसंख्या वृद्धि के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) वैश्विक जनसंख्या वृद्धि की दर 1980 के दशक से लगातार तेज हो रही है।
(B) मानव इतिहास के अधिकांश समय में विश्व की जनसंख्या बहुत धीमी गति से बढ़ी।
(C) औद्योगिक क्रांति ने तीव्र जनसंख्या वृद्धि की अवधि की शुरुआत की।
(D) चिकित्सा और स्वच्छता में प्रगति ने मृत्यु दर को काफी कम कर दिया है।

48. एक अधिवास पदानुक्रम अधिवासों को सबसे छोटे से सबसे बड़े क्रम में व्यवस्थित करता है। निम्नलिखित में से कौन एक विशिष्ट पदानुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) शहर, कस्बा, गाँव, पुरवा
(B) पुरवा, गाँव, कस्बा, शहर
(C) गाँव, पुरवा, शहर, कस्बा
(D) कस्बा, शहर, पुरवा, गाँव

49. शिशु मृत्यु दर (IMR) को एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है:
(A) प्रति 1,000 जनसंख्या
(B) प्रति 1,000 जीवित जन्म
(C) प्रति 100,000 जीवित जन्म
(D) प्रति 100,000 जनसंख्या

50. "Umland" शब्द अधिवास भूगोल में किस अवधारणा के साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) नगर-क्षेत्र
(B) कोटि-आकार नियम
(C) नगरीय उपांत
(D) अधिवास पदानुक्रम

51. निम्नलिखित में से कौन सा विश्व का एक प्रमुख जनसंख्या समूह नहीं है?
(A) पूर्वी एशिया
(B) दक्षिण एशिया
(C) पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया
(D) पश्चिमी यूरोप

52. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: प्रति-प्रसववादी नीतियां अशोधित जन्म दर को कम करने के लिए बनाई गई हैं।
कथन II: चीन की "एक बच्चा नीति" प्रसववादी नीति का एक प्रसिद्ध उदाहरण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

53. क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'परिवहन सिद्धांत', जो परिवहन नेटवर्क से अधिवासों के कनेक्शन को अनुकूलित करता है, किस 'k' मान द्वारा दर्शाया गया है?
(A) k = 3
(B) k = 7
(C) k = 4
(D) k = 2

54. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा उच्च-स्थिति वाले आवासीय क्षेत्र पर धीरे-धीरे निम्न-स्थिति वाले समूह का कब्जा हो जाता है, किसका उदाहरण है:
(A) संकेंद्रण
(B) आक्रमण और उत्तराधिकार
(C) जेंट्रीफिकेशन
(D) विकेंद्रीकरण

55. वैश्विक जनसंख्या वृद्धि पर उनके प्रभाव के कालानुक्रमिक क्रम में निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को व्यवस्थित करें:
1. औद्योगिक क्रांति
2. कृषि क्रांति (नवपाषाण काल)

NODIA

यह बदलाव मुख्य रूप से तापमान और लवणता में होने वाले परिवर्तनों का परिणाम होता है। पिक्नोकलाइन महासागरीय जल के ऊर्ध्वाधर मिश्रण में एक बाधा के रूप में कार्य करती है और विभिन्न गहराईयों के समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

299. (C) गंभीर सागरीय मैदान

गंभीर सागरीय मैदान महासागर बेसिन के वे विशाल और अत्यंत सपाट क्षेत्र हैं जो 3,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर पाए जाते हैं। ये मैदान उल्लेखनीय रूप से चिकने और विशेषताहीन होते हैं क्योंकि ये सूक्ष्म अवसादों की मोटी परतों से ढके होते हैं जो समय के साथ अंतर्निहित ऊबड़-खाबड़ और ज्वालामुखीय चट्टानी सतह को पूरी तरह से छुपा देते हैं। ये मैदान पृथ्वी के सबसे शांत और विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों में से एक हैं और महासागरीय नितल के अधिकांश भाग का निर्माण करते हैं। इनकी सपाटता के कारण ही ये वैज्ञानिक शोध और खनिज अन्वेषण हेतु उपयोगी हैं।

300. (C) ज्वार-भाटा

ज्वार-भाटा समुद्र के जल स्तर में होने वाला वह आवधिक उतार-चढ़ाव है जो मुख्य रूप से चंद्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के प्रभाव से उत्पन्न होता है। जल स्तर के ऊपर उठने को ज्वार और नीचे गिरने को भाटा कहा जाता है। यह परिघटना तटीय क्षेत्रों के पारिस्थितिकी तंत्र, नौसंचालन और मत्स्य पालन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। ज्वार-भाटा की आवृत्ति और ऊंचाई पृथ्वी के घूर्णन, चंद्रमा की स्थिति और स्थानीय तटरेखा की बनावट पर निर्भर करती है। यह एक निरंतर और विश्वसनीय खगोलीय प्रक्रिया है जो ऊर्जा का एक प्रमुख स्रोत है।

Downloaded from www.pdf.tube

का बाहर की ओर संचलन शामिल है।
3. पृथक्करण का तात्पर्य जनसंख्या समूहों को अलग-अलग आवासीय क्षेत्रों में छाँटना है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

66. जनसंख्या भूगोल में मर्त्यता विश्लेषण का प्राथमिक ध्यान क्या है?
(A) किसी जनसंख्या में मृत्यु के कारणों, स्तरों और प्रतिरूपों की जांच करना।
(B) प्रति महिला पैदा होने वाले बच्चों की औसत संख्या की गणना करना।
(C) देशों के बीच लोगों की आवाजाही का अध्ययन करना।
(D) जनसंख्या पिरामिड की आयु संरचना का विश्लेषण करना।

67. अगस्त लोश के मॉडल में, आदर्श आर्थिक परिदृश्य किसके माध्यम से प्राप्त किया जाता है?
(A) सरकारी योजना और हस्तक्षेप।
(B) एक कठोर प्रशासनिक पदानुक्रम का निर्माण।
(C) अधिवासों की संख्या को अधिकतम करने के लिए षटकोणीय नेटवर्क का घुमाव।
(D) एक ही केंद्र से सभी वस्तुओं और सेवाओं का समान वितरण।

68. "भारतीय" सांस्कृतिक मंडल को किन दो धर्मों के प्रभाव से दृढ़ता से पहचाना जाता है?
(A) ईसाई धर्म और यहूदी धर्म
(B) इस्लाम और बौद्ध धर्म
(C) शिंतो धर्म और ताओ धर्म
(D) हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म

69. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरण 3 में, निम्नलिखित में से क्या होता है?
(A) जन्म दर उच्च बनी रहती है जबकि मृत्यु दर तेजी से गिरती है।
(B) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों उच्च होते हैं।
(C) मृत्यु दर निम्न बनी रहती है और जन्म दर में महत्वपूर्ण गिरावट आने लगती है।
(D) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों निम्न और स्थिर होते हैं।

70. निम्नलिखित में से कौन सा जबरन प्रवास का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बेहतर नौकरी के लिए दूसरे देश जा रहा है।
(B) युद्ध या उत्पीड़न के कारण किसी देश से भाग रहे लोग।
(C) एक छात्र उच्च शिक्षा के लिए दूसरे शहर जा रहा है।
(D) सेवानिवृत्त लोग गर्म जलवायु वाले स्थान पर जा रहे हैं।

71. एक 'मेगालोपोलिस' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है:
(A) 10 मिलियन से अधिक आबादी वाला एक एकल शहर।
(B) एक बड़े देश की राजधानी।
(C) वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में नामित एक शहर।
(D) महानगरीय क्षेत्रों के विलय से बना एक विशाल, निरंतर शहरीकृत क्षेत्र।

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: चौड़े आधार और संकीर्ण शीर्ष वाला जनसंख्या पिरामिड एक युवा, तेजी से बढ़ती जनसंख्या को दर्शाता है।
कथन II: संकीर्ण आधार और चौड़े शीर्ष वाला जनसंख्या पिरामिड एक वृद्ध होती, घटती जनसंख्या को दर्शाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

73. केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'देहली' की अवधारणा संदर्भित करती है:
(A) वह अधिकतम दूरी जो एक व्यक्ति किसी वस्तु के लिए तय करने को तैयार है।
(B) शहर के बाजार क्षेत्र की भौतिक सीमा।
(C) किसी विशेष कार्य या सेवा का समर्थन करने के लिए आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या आकार।
(D) किसी अधिवास के भीतर ऊंचाई का उच्चतम बिंदु।

74. निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी को आमतौर पर सांस्कृतिक मंडल के घटक के रूप में माना जाता है?
(A) राजनीतिक सीमाएँ
(B) भाषा
(C) धर्म
(D) सामाजिक संगठन

75. यदि किसी देश की कुल प्रजनन दर (TFR) 2.1 है, तो उसे आमतौर पर किस स्तर पर माना जाता है?
(A) उच्च प्रजनन क्षमता
(B) प्रतिस्थापन स्तर से कम प्रजनन क्षमता
(C) अत्यधिक कम प्रजनन क्षमता
(D) प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता

76. शिकागो स्कूल ऑफ ह्यूमन इकोलॉजी शहरी संरचना के किस मॉडल को विकसित करने के लिए सबसे प्रसिद्ध है?
(A) सेक्टर मॉडल
(B) संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
(C) बहु-नाभिक मॉडल
(D) गैलेक्टिक सिटी मॉडल

77. निम्नलिखित में से कौन सा 'नगर-क्षेत्र' के परिसीमन की प्रक्रिया का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) शहर की कानूनी प्रशासनिक सीमाओं को खींचना।

NODIA

(C) वैश्विक जीवन प्रत्याशा में कमी।
(D) ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं का स्थिरीकरण।

33. निम्नलिखित में से कौन सा आमतौर पर शहरी विकास के संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल में संक्रमण क्षेत्र की विशेषता नहीं है?
(A) खराब होता आवास स्टॉक
(B) उच्च आय वाले आवासीय आवास
(C) व्यापार और हल्के विनिर्माण द्वारा अतिक्रमण
(D) हाल के प्रवासियों का उच्च संकेंद्रण

34. 'प्राइमेसी इंडेक्स' शब्द का उपयोग मापने के लिए किया जाता है:
(A) वह सीमा जिस तक सबसे बड़ा शहर किसी देश की शहरी प्रणाली पर हावी है।
(B) सबसे बड़े शहर का आर्थिक उत्पादन।
(C) एक देश में शहरों की कुल संख्या।
(D) प्रमुख शहरी केंद्रों के बीच की औसत दूरी।

35. क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'बाजार सिद्धांत' को किस 'k' मान द्वारा दर्शाया गया है?
(A) k = 4
(B) k = 7
(C) k = 3
(D) k = 9

36. सहारा रेगिस्तान में विरल जनसंख्या का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष।
(B) खनिज संसाधनों की कमी।
(C) उच्च ऊंचाई और ठंडा तापमान।
(D) अत्यधिक शुष्कता और जल संसाधनों की कमी।

37. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: जनसंख्या वितरण का अध्ययन पृथ्वी की सतह पर लोगों की व्यवस्था या प्रसार को संदर्भित करता है।
कथन II: जनसंख्या घनत्व ही एकमात्र कारक है जो यह निर्धारित करता है कि कोई क्षेत्र अधिक आबादी वाला है या नहीं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

38. किसी जनसंख्या का 'दोगुना होने का समय' एक अवधारणा है जो सीधे तौर पर संबंधित है:
(A) लिंगानुपात से
(B) विकास दर से
(C) निर्भरता अनुपात से
(D) साक्षरता दर से

39. शहरी पारिस्थितिकी के संदर्भ में, कुछ गतिविधियों या जनसंख्या समूहों की विशिष्ट क्षेत्रों में क्लस्टर बनाने की प्रवृत्ति को कहा जाता है:
(A) विकेंद्रीकरण
(B) उत्तराधिकार
(C) आक्रमण
(D) पृथक्करण

40. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (शहरी विकास मॉडल)
P. संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
Q. सेक्टर मॉडल
R. बहु-नाभिक मॉडल
S. केंद्रीय स्थान सिद्धांत
सूची II: (प्रस्तावक)
1. होमर होयट
2. चौन्सी हैरिस और एडवर्ड उलमैन
3. अर्नेस्ट बर्गेस
4. वाल्टर क्रिस्टॉलर
(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

41. निम्नलिखित में से कौन 'अति-जनसंख्या' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) ऐसा क्षेत्र जहाँ वर्तमान जनसंख्या घनत्व वैश्विक औसत से काफी अधिक है।
(B) कोई भी संप्रभु राष्ट्र जिसकी कुल जनसंख्या 100 मिलियन से अधिक है।
(C) ऐसी स्थिति जहाँ जनसंख्या पर्यावरण की वहन क्षमता से अधिक हो जाती है।
(D) ऐसी जनसंख्या जो प्रति वर्ष दो प्रतिशत से अधिक की निरंतर विकास दर प्रदर्शित करती है।

42. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में प्राइमेट शहर अधिक सामान्य हैं।
कारण (R): कई विकासशील देशों में औपनिवेशिक शासन का इतिहास रहा है, जिसने निवेश और राजनीतिक शक्ति को एक ही शहर में केंद्रित कर दिया था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

43. क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में कौन सा 'k' मान 'प्रशासनिक सिद्धांत' से संबंधित है?

Click Here to Buy book on Amazon

(B) जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल
(C) कोटि-आकार नियम
(D) प्रवास के नियम

90. अगस्त लोश के मॉडल का मुख्य उद्देश्य क्या निर्धारित करना था?
(A) फर्मों के लिए लाभ को अधिकतम करने हेतु इष्टतम स्थान, जिससे एक आर्थिक परिदृश्य का निर्माण हो।
(B) शहरों की प्रशासनिक सीमाएँ।
(C) समय के साथ जनसांख्यिकीय परिवर्तन के चरण।
(D) अधिवास प्रतिरूपों पर भौतिक भूगोल का प्रभाव।

91. वर्तमान में विश्व के किस क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि दर सबसे अधिक है?
(A) पश्चिमी यूरोप
(B) उत्तरी अमेरिका
(C) पूर्वी एशिया
(D) उप-सहारा अफ्रीका

92. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (केंद्रीय स्थान सिद्धांत में सिद्धांत)
P. बाजार सिद्धांत
Q. परिवहन सिद्धांत
R. प्रशासनिक सिद्धांत
S. एक सैद्धांतिक मान जिसका क्रिस्टॉलर द्वारा उपयोग नहीं किया गया
सूची II: (K-मान)
1. K = 7
2. K = 3
3. K = 5
4. K = 4
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

93. महामारियों और अकाल के कारण उच्च मृत्यु दर से पुरानी, अपक्षयी बीमारियों की उच्च दर की ओर संक्रमण को कहा जाता है:
(A) जनसांख्यिकीय संक्रमण
(B) गतिशीलता संक्रमण
(C) महामारी विज्ञान संक्रमण
(D) प्रजनन संक्रमण

94. निम्नलिखित में से कौन सी 'अल्प-जनसंख्या' की विशेषता है?
(A) संसाधनों पर उच्च दबाव
(B) व्यापक बेरोजगारी
(C) प्रदूषण का उच्च स्तर
(D) उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से दोहन करने में असमर्थता

95. क्रिस्टॉलर के k=3 पदानुक्रम में, एक केंद्रीय स्थान सेवा प्रदान करता है:
(A) स्वयं को और छह आसपास के अधिवासों की एक-तिहाई जनसंख्या को।
(B) स्वयं को और छह आसपास के अधिवासों की आधी जनसंख्या को।
(C) स्वयं को और छह आसपास के अधिवासों की संपूर्णता को।
(D) केवल अपनी सीमाओं के भीतर की जनसंख्या को।

96. प्रवास के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) प्रवास का किसी भी क्षेत्र की जनसांख्यिकीय संरचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(B) प्रवास निवास का स्थायी या अर्ध-स्थायी परिवर्तन है।
(C) सभी प्रवास स्वैच्छिक होते हैं।
(D) प्रतिकर्ष कारक मूल स्थान की नकारात्मक स्थितियाँ हैं।

97. सांस्कृतिक मंडल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वे स्थिर होते हैं और समय के साथ नहीं बदलते हैं।
2. वे अक्सर एक प्रमुख धर्म और भाषा परिवार की विशेषता रखते हैं।
3. राजनीतिक सीमाएँ हमेशा सांस्कृतिक मंडल की सीमाओं के साथ मेल खाती हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

98. 'नगरीय उपांत' को सबसे अच्छी तरह से किस क्षेत्र के रूप में वर्णित किया गया है:
(A) निर्मित शहरी क्षेत्र और ग्रामीण देहात के बीच संक्रमण।
(B) सजातीय उच्च-घनत्व आवासीय उपयोग।
(C) भारी औद्योगिक संकेंद्रण।
(D) ऐतिहासिक संरक्षण और स्मारक।

99. निम्नलिखित अधिवास प्रकारों को जनसंख्या आकार और कार्यात्मक जटिलता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करें:
1. महानगर
2. कस्बा
3. गाँव
4. शहर
(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 2, 1, 4, 3

100. कौन सा जनसांख्यिकीय माप (अशोधित जन्म दर - अशोधित मृत्यु दर) / 10 के रूप में गणना किया जाता है?
(A) कुल प्रजनन दर

Downloaded from www.pdf.tube

(A) अंटार्कटिक बर्फ की चादर
(B) गंगा डेल्टा
(C) अटाकामा रेगिस्तान
(D) साइबेरियाई टुंड्रा

189. क्रिस्टॉलर के सिद्धांत में 'परिवहन सिद्धांत' (k=4) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) केंद्रीय स्थानों को जोड़ने के लिए आवश्यक सड़कों की लंबाई कम करना।
(B) सभी गांवों पर पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण सुनिश्चित करना।
(C) उपभोक्ताओं द्वारा तय की जाने वाली दूरी को कम करना।
(D) दिए गए क्षेत्र में केंद्रीय स्थानों की संख्या को अधिकतम करना।

190. किसी देश को 'अति-आबादी' वाला तब माना जाता है जब:
(A) इसकी जनसंख्या इसके संसाधन आधार और प्रौद्योगिकी के लिए बहुत बड़ी हो।
(B) इसकी जनसंख्या पड़ोसी देशों की जनसंख्या से अधिक हो।
(C) इसका जनसंख्या घनत्व 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक हो।
(D) इसकी प्राकृतिक वृद्धि की दर 2% से ऊपर हो।

191. संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल के क्षेत्रों को केंद्र से बाहर की ओर व्यवस्थित करें:
1. श्रमिक वर्ग के घरों का क्षेत्र
2. केंद्रीय व्यापारिक जिला (CBD)
3. कम्यूटर क्षेत्र
4. संक्रमण क्षेत्र

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 3, 1, 2

192. 'गतिशीलता संक्रमण' की अवधारणा, जो प्रवास प्रतिरूपों में परिवर्तनों को जनसांख्यिकीय संक्रमण के चरणों से जोड़ती है, किसके द्वारा विकसित की गई थी?
(A) ई.जी. रेवेनस्टीन
(B) विल्बर जेलिंस्की
(C) एवरेट ली
(D) मार्क जेफरसन

193. अधिवास भूगोल में 'पदानुक्रम' क्या है?
(A) आकार और कार्यात्मक महत्व के आधार पर अधिवासों की रैंकिंग।
(B) अधिवासों की स्थापना कब हुई, इसकी एक कालानुक्रमिक सूची।
(C) शहर के भीतर जातीय वितरण दिखाने वाला नक्शा।
(D) शहरी विकास को नियंत्रित करने वाला कानूनी ढांचा।

194. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जैसे-जैसे कोई देश औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से गुजरता है, प्रजनन दर में गिरावट आती है।
कारण (R): शहरी, औद्योगिक समाजों में, बच्चों को अक्सर संपत्ति के बजाय आर्थिक दायित्व के रूप में देखा जाता है, और महिलाओं की शिक्षा और रोजगार तक अधिक पहुंच होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

195. "इस्लामी सांस्कृतिक मंडल" की विशेषता निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी है?
(A) एक प्रमुख संगठनात्मक सिद्धांत के रूप में इस्लाम धर्म।
(B) अरबी भाषा का ऐतिहासिक प्रभाव।
(C) रोमांस भाषाओं का प्रसार।
(D) मस्जिदों और मीनारों वाली स्थापत्य शैली।

NODIA

196. नगर-क्षेत्र के परिसीमन के लिए निम्नलिखित में से कौन सी विधि सबसे उपयोगी होगी?
(A) जनसंख्या घनत्व पर जनगणना के आंकड़ों का विश्लेषण करना।
(B) शहर में कामगारों के आने-जाने के प्रतिरूपों का सर्वेक्षण करना।
(C) शहर के निर्मित क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास का मानचित्रण करना।
(D) शहर के राजनीतिक चार्टर और कानूनी सीमाओं का अध्ययन करना।

197. अगस्त लोश के केंद्रीय स्थान मॉडल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इट क्रिस्टॉलर के मॉडल की तुलना में अधिक लचीला है।
2. यह शहर-धनी और शहर-गरीब क्षेत्रों के खंडों वाला एक परिदृश्य बनाता है।
3. यह सभी आर्थिक गतिविधियों के लिए एक एकल, निश्चित k-मान का उपयोग करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

198. शहरी विकास के संदर्भ में 'पारिस्थितिक प्रक्रिया' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) प्राकृतिक पर्यावरण पर शहरी विकास का प्रभाव।
(B) ग्रीन बिल्डिंग मानकों और सतत शहरी नियोजन का कार्यान्वयन।
(C) प्रतिस्पर्धा और सामाजिक संगठन की स्थानिक प्रक्रियाएं

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

कथन I: क्रिस्टॉलर का मॉडल एक निश्चित पदानुक्रम (K=3, K=4, K=7) पर आधारित है।
कथन II: लोश का मॉडल एक परिवर्तनशील K-मान और अधिक जटिल, गैर-पदानुक्रमित परिदृश्य की अनुमति देता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

113. 'निर्भरता अनुपात' 'आश्रित' आयु समूहों (आमतौर पर 15 से कम और 64 से अधिक) के लोगों की संख्या की तुलना किससे करता है?
(A) 'आर्थिक रूप से उत्पादक' आयु समूह (15-64) के लोगों की संख्या
(B) कुल जनसंख्या
(C) बच्चे पैदा करने की आयु की महिलाओं की संख्या
(D) सेवानिवृत्त व्यक्तियों की संख्या

114. विश्व का 'जनसंख्या-संसाधन क्षेत्रों' में ए.के. एकरमैन का वर्गीकरण मुख्य रूप से जनसंख्या, संसाधनों और किसके बीच की परस्पर क्रिया पर आधारित है?
(A) राजनीतिक प्रणाली
(B) सांस्कृतिक विशेषताएं
(C) प्रौद्योगिकी
(D) जलवायु का प्रकार

115. क्रिस्टॉलर के किस सिद्धांत में एक निम्न-क्रम का केंद्र तीन उच्च-क्रम के केंद्रों के षटकोणीय बाजार क्षेत्रों की सीमा पर स्थित होता है?
(A) परिवहन सिद्धांत (k=4)
(B) प्रशासनिक सिद्धांत (k=7)
(C) लाभ अधिकतमकरण सिद्धांत
(D) बाजार सिद्धांत (k=3)

116. निम्नलिखित में से कौन सा प्रवास में प्रतिकर्ष कारक का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) गंतव्य देश में उच्च वेतन
(B) गंतव्य देश में धार्मिक स्वतंत्रता
(C) मूल देश में अकाल
(D) गंतव्य देश में सुखद जलवायु

117. अधिवास पदानुक्रम की अवधारणा किसे समझने के लिए उपयोगी है:
(A) किसी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि की दर।
(B) अधिवासों के बीच अंतराल, आकार और कार्यात्मक संबंध।
(C) एकल शहर का ऐतिहासिक विकास।
(D) शहरी मोहल्लों की जातीय संरचना।

118. 'नगरीय उपांत' की एक परिभाषित विशेषता है:
(A) भूमि उपयोग योजना और नियंत्रण का उच्च स्तर।
(B) कृषि गतिविधियों की पूर्ण अनुपस्थिति।
(C) समान रूप से उच्च जनसंख्या घनत्व।
(D) शहरी विस्तार की प्रत्याशा में भूमि का सट्टा धारण।

119. निम्नलिखित में से कौन एक प्रमुख सांस्कृतिक मंडल को परिभाषित करने का प्राथमिक आधार नहीं होगा?
(A) औसत वार्षिक आय
(B) सामान्य ऐतिहासिक परंपरा
(C) प्रमुख भाषा परिवार
(D) साझा धार्मिक विश्वास

120. प्रजननता और जननक्षमता के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) प्रजननता जैविक है, जबकि जननक्षमता वास्तविक परिणाम है।
(B) प्रजननता महिलाओं पर लागू होती है, जबकि जननक्षमता पुरुषों पर।
(C) जननक्षमता जैविक क्षमता है, जबकि प्रजननता वास्तविक प्रजनन प्रदर्शन है।
(D) जननक्षमता को CBR द्वारा मापा जाता है, जबकि प्रजननता को TFR द्वारा।

121. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (शहरी अवधारणा)
P. नगर-क्षेत्र
Q. कोटि-आकार नियम
R. प्राइमेट शहर
S. नगरीय उपांत
सूची II: (मुख्य विचार)
1. सबसे बड़े शहर का असंगत प्रभुत्व
2. शहरी और ग्रामीण के बीच संक्रमण का क्षेत्र
3. शहर के प्रभाव का कार्यात्मक क्षेत्र
4. शहर की कोटि और आकार के बीच लघुगणकीय संबंध
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

122. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल का अंतिम चरण (चरण 5) किसके द्वारा पहचाना जाता है?
(A) जनसंख्या के भीतर मृत्यु दर के सापेक्ष अत्यधिक उच्च जन्म दर।
(B) एक राष्ट्रीय सीमा के भीतर बड़े पैमाने पर और निरंतर जनसंख्या विस्फोट।
(C) पूर्व-औद्योगिक युगों के समान उच्च जन्म और मृत्यु दर की वापसी।
(D) मृत्यु दर जन्म दर से अधिक होना, जिससे राष्ट्रीय जनसंख्या में गिरावट आती है।

123. शहरी संरचना मॉडल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

Click Here to Buy book on Amazon

पाया जाता है।
3. यह एक संतुलित शहरी पदानुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

147. निम्नलिखित में से कौन सी एक महत्वपूर्ण समस्या है जो आमतौर पर नगरीय उपांत में पाई जाती है?
(A) अत्यधिक जनसंख्या घनत्व और भीड़भाड़।
(B) खुले स्थान की कमी।
(C) अनियोजित विकास और सार्वजनिक सेवाओं का अपर्याप्त प्रावधान।
(D) गिरते हुए भूमि मूल्य।

148. 'जनसंख्या-संसाधन क्षेत्रों' की अवधारणा के पीछे मुख्य उद्देश्य किसका विश्लेषण करना है?
(A) जनसंख्या वितरण का राजनीतिक भूगोल।
(B) मानव जनसंख्या और उसके संसाधन आधार के बीच संबंध।
(C) विश्व जनसंख्या की ऐतिहासिक वृद्धि।
(D) अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के प्रतिरूप।

149. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (भूगोलवेत्ता)
P. जॉर्ज के. जिफ
Q. मार्क जेफरसन
R. अर्नेस्ट बर्गेस
S. होमर होयट
सूची II: (संबद्ध अवधारणा/मॉडल)
1. संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
2. प्राइमेट शहर
3. सेक्टर मॉडल
4. कोटि-आकार नियम
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

150. "सोपान-प्रवास" एक अवधारणा है, जिसे रेवेनस्टीन द्वारा स्पष्ट किया गया है, जो एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करती है जहाँ:
(A) प्रवासी सीधे ग्रामीण क्षेत्र से एक बड़े महानगर में चले जाते हैं।
(B) प्रवास चरणों में होता है, जैसे गाँव से कस्बे से शहर की ओर।
(C) एक पूरा परिवार एक साथ प्रवास करता है।
(D) एक व्यक्ति प्रवास करता है और फिर अपने मूल स्थान पर वापस लौट आता है।

151. निम्नलिखित में से कौन सा कोटि-आकार नियम के लिए सही सूत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ Pn, n-वें शहर की जनसंख्या है और P1 सबसे बड़े शहर की जनसंख्या है?
(A) $Pn = P1 \times n$
(B) $Pn = P1 / n$
(C) $Pn = n / P1$
(D) $Pn = P1 + n$

152. निम्नलिखित वैश्विक जनसंख्या सम्मेलनों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. काहिरा
2. बुखारेस्ट
3. मेक्सिको सिटी
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

153. अधिवास पदानुक्रम का सबसे निचला स्तर, जिसमें न्यूनतम या बिना सेवाओं वाले आवासों का एक छोटा समूह होता है, कहलाता है:
(A) गाँव
(B) कस्बा
(C) पुरवा
(D) शहर

NODIA

154. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल की अक्सर इसके नृवंशकेंद्रित पूर्वाग्रह के लिए आलोचना की जाती है।
कारण (R): यह मॉडल पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के ऐतिहासिक अनुभव पर आधारित है और सभी विकासशील राष्ट्रों के जनसांख्यिकीय पथ की सटीक भविष्यवाणी नहीं कर सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

155. नगरीय उपांत और ग्रामीण-नगरीय उपांत के बीच मुख्य अंतर यह है कि ग्रामीण-नगरीय उपांत:
(A) अधिक घनी आबादी वाला है।
(B) शहर के केंद्र के करीब स्थित है।
(C) एक मजबूत ग्रामीण चरित्र और अधिक कृषि गतिविधि रखता है।
(D) विशेष रूप से उच्च आय वाले प्रवासियों के लिए एक आवासीय क्षेत्र है।

156. निम्नलिखित में से कौन सा 'भारतीय' सांस्कृतिक मंडल की विशेषता नहीं है?

(C) चरण 3
(D) चरण 4

135. जनसंख्या-संसाधन क्षेत्रों के संदर्भ में 'वहन क्षमता' शब्द का अर्थ है:
(A) एक विशिष्ट क्षेत्र से निर्यात की जाने वाली वाणिज्यिक वस्तुओं की कुल मात्रा।
(B) उन लोगों की संख्या जिन्हें सालाना प्रवास करने की कानूनी अनुमति है।
(C) शहरी क्षेत्र में आवासीय भवनों का अधिकतम अनुमेय घनत्व।
(D) अधिकतम जनसंख्या जिसे किसी दिए गए पर्यावरण द्वारा पोषित किया जा सकता है।

136. शहरी संरचना का कौन सा मॉडल हवाई अड्डे, विश्वविद्यालय और औद्योगिक पार्क जैसे अलग-अलग केंद्रों के चारों ओर शहर के विकास की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?
(A) संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
(B) सेक्टर मॉडल
(C) बहु-नाभिक मॉडल
(D) केंद्रीय स्थान मॉडल

137. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: कोटि-आकार नियम एक ऐसा कानून है जो दुनिया के सभी देशों के लिए सच है।
कथन II: प्राइमेट शहर वह है जो दूसरे स्थान वाले शहर से कम से कम पांच गुना बड़ी है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

138. अधिवास पदानुक्रम में, जैसे-जैसे कोई छोटे से बड़े अधिवासों की ओर बढ़ता है, आमतौर पर क्या होता है?
(A) अधिवासों की संख्या बढ़ती है, और वे अधिक विशिष्ट हो जाते हैं।
(B) अधिवासों की संख्या घटती है, और वे कम विशिष्ट हो जाते हैं।
(C) अधिवासों की संख्या घटती है, और वे अधिक विशिष्ट कार्य प्रदान करते हैं।
(D) अधिवासों की संख्या बढ़ती है, और वे कम विशिष्ट हो जाते हैं।

139. पिछली शताब्दी में दुनिया भर में मृत्यु दर में गिरावट का सबसे महत्वपूर्ण कारण कौन सा कारक रहा है?
(A) जन्म दर में कमी।
(B) प्रसववादी नीतियों को अपनाना।
(C) सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और चिकित्सा में प्रगति।
(D) सशस्त्र संघर्षों में वैश्विक गिरावट।

140. 'नगर-धनी' और 'नगर-गरीब' क्षेत्र किसके केंद्रीय स्थान मॉडल की एक अनूठी विशेषता हैं?
(A) वाल्टर क्रिस्टॉलर
(B) अर्नेस्ट बर्गेस
(C) अगस्त लोश
(D) होमर होयट

141. एक प्रसववादी जनसंख्या नीति में निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी उपाय शामिल हो सकते हैं?
(A) उदार पारिवारिक भत्ते प्रदान करना।
(B) विस्तारित सवैतनिक पैतृक अवकाश देना।
(C) गर्भनिरोधकों तक पहुंच को प्रतिबंधित करना।
(D) विज्ञापन अभियानों के माध्यम से छोटे परिवार के मानदंडों को बढ़ावा देना।

142. निम्नलिखित में से कौन सा विश्व के एक प्रमुख जनसंख्या समूह का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) अमेज़न वर्षावन
(B) कैनेडियन शील्ड
(C) ऑस्ट्रेलिया का आंतरिक भाग
(D) गंगा और सिंधु नदियों के मैदान

143. शहरी भूगोल में 'आक्रमण' की पारिस्थितिक प्रक्रिया संदर्भित करती है:
(A) किसी शहर की सैन्य विजय।
(B) एक भूमि उपयोग का दूसरे के क्षेत्र में क्रमिक अतिक्रमण।
(C) कम ऊंचाई वाले पड़ोस में ऊंची इमारतों का निर्माण।
(D) केंद्रीय व्यापार जिले में श्रमिकों का दैनिक आवागमन।

144. क्रिस्टॉलर के k=4 पदानुक्रम में, तर्क किस पर आधारित है:
(A) प्रमुख परिवहन मार्गों से अधिवासों की पहुंच को अधिकतम करना।
(B) आबादी की सेवा के लिए केंद्रीय स्थानों की संख्या को कम करना।
(C) यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक अधिवास एक केंद्र के स्पष्ट नियंत्रण में हो।
(D) शहरी केंद्रों की अधिकतम संभव संख्या के साथ एक परिदृश्य बनाना।

145. जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना को किसके उपयोग से सबसे अच्छी तरह से देखा जा सकता है?
(A) रेखा ग्राफ
(B) जनसंख्या पिरामिड
(C) पाई चार्ट
(D) स्कैटर प्लॉट

146. प्राइमेट शहर अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसे 1939 में भूगोलवेत्ता मार्क जेफरसन द्वारा पेश किया गया था।
2. यह अक्सर उपनिवेशवाद के लंबे इतिहास वाले देशों में

Downloaded from www.pdf.tube

(B) जनसंख्या दोगुना होने का समय
(C) प्राकृतिक वृद्धि की दर (प्रतिशत के रूप में)
(D) शुद्ध प्रवास दर

101. निम्नलिखित में से कौन सा भूगोलवेत्ता 'सांस्कृतिक मंडल' की अवधारणा से जुड़ा है?
(A) अगस्त लोश
(B) विल्बर जेलिंस्की
(C) मार्क जेफरसन
(D) रिचर्ड हार्टशोर्न

102. शहरी विकास के संदर्भ में, 'केंद्रीयकरण' क्या है?
(A) शहर के केंद्र से दूर लोगों और व्यवसायों की आवाजाही।
(B) शहर का अलग-अलग जातीय मोहल्लों में विभाजन।
(C) शहर के कम घनत्व वाले उपनगरों का अनियंत्रित विस्तार।
(D) शहर के मुख्य भागों में आर्थिक और प्रशासनिक कार्यों का क्लस्टरिंग।

103. निम्नलिखित में से कौन क्रिस्टॉलर और लोश दोनों के केंद्रीय स्थान मॉडलों में एक प्रमुख मान्यता है?
(A) यात्रा की दूरी को कम करने का उपभोक्ताओं का लक्ष्य।
(B) एक विविध, पहाड़ी भूभाग का अस्तित्व।
(C) असमान क्रय शक्ति वाली जनसंख्या।
(D) अलग-अलग लागतों वाली कई परिवहन प्रणालियों की उपस्थिति।

104. एक बड़े युवा जनसंख्या और एक छोटे बुजुर्ग जनसंख्या वाले देश में क्या होगा:
(A) निम्न निर्भरता अनुपात
(B) उच्च जीवन प्रत्याशा
(C) उच्च निर्भरता अनुपात
(D) निम्न जन्म दर

105. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कोटि-आकार नियम अमेरिका जैसे बड़े, आर्थिक रूप से विविध देशों की शहरी प्रणालियों के लिए बेहतर अनुकूल है।
कारण (R): ऐसे देशों में अक्सर आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के कई केंद्र होते हैं, जो एकल प्राइमेट शहर के प्रभुत्व को रोकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

106. 20वीं शताब्दी के मध्य में 'हरित क्रांति' ने मुख्य रूप से किसके द्वारा जनसंख्या वृद्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला?
(A) नई दवाओं के माध्यम से जन्म दर में वृद्धि।
(B) शहरों की ओर बड़े पैमाने पर प्रवास को बढ़ावा देना।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता में सुधार।
(D) खाद्य उत्पादन में वृद्धि, जिससे बड़ी आबादी का समर्थन संभव हुआ।

107. केंद्रीय स्थान सिद्धांत में किसी वस्तु की 'परास' को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) एक केंद्रीय स्थान में उपलब्ध वस्तुओं की विविधता।
(B) वह अधिकतम दूरी जो उपभोक्ता किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए तय करने को तैयार हैं।
(C) किसी वस्तु को पेश किए जाने के लिए आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या।
(D) एक ही क्रम के दो केंद्रीय स्थानों के बीच की भौतिक दूरी।

108. शुद्ध पुनरुत्पादन दर (NRR) क्या मापती है?
(A) एक वर्ष में जन्मों की कुल संख्या।
(B) बच्चों की औसत संख्या जो एक महिला के अपने जीवनकाल में होंगे।
(C) वह दर जिस पर महिलाओं को बच्चे पैदा करने की उम्र तक जीवित रहने वाली बेटियों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।
(D) प्रत्येक 100 महिला जन्मों पर पुरुष जन्मों की संख्या।

NODIA

109. निम्नलिखित में से कौन 'प्राइमेट शहर' की परिभाषित विशेषता है?
(A) इसे ऐतिहासिक रूप से किसी राष्ट्र के भीतर सबसे पुराने स्थापित शहर के रूप में मान्यता प्राप्त है।
(B) यह संप्रभु देश के सटीक भौगोलिक केंद्र में स्थित है।
(C) यह कोटि-आकार नियम की गणितीय भविष्यवाणियों का कड़ाई से पालन करता है।
(D) यह दूसरे सबसे बड़े शहर की तुलना में काफी बड़ा है।

110. कौन सी पारिस्थितिक प्रक्रिया धनी पेशेवरों द्वारा जर्जर आंतरिक-शहर क्षेत्रों के पुनर्विकास का सबसे अच्छा वर्णन करती है, जिससे गरीब निवासियों का विस्थापन होता है?
(A) जेंट्रीफिकेशन
(B) उत्तराधिकार
(C) विकेंद्रीकरण
(D) पृथक्करण

111. जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र अवधारणा और उसके अर्थ के गलत युग्म की पहचान करें।
(A) अनुकूलतम जनसंख्या - जनसंख्या उपलब्ध संसाधनों के साथ संतुलन में है।
(B) एक्यूमीन - अति-जनसंख्या का क्षेत्र।
(C) अति-जनसंख्या - जनसंख्या वहन क्षमता से अधिक है।
(D) अल्प-जनसंख्या - संसाधनों को विकसित करने के लिए जनसंख्या बहुत कम है।

112. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

(A) हिंदू धर्म का प्रभाव
(B) पारंपरिक सामाजिक संरचना के रूप में जाति व्यवस्था
(C) मंदारिन भाषा का प्रभुत्व
(D) जनसंख्या के एक बड़े हिस्से के लिए ग्राम-केंद्रित जीवन

157. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: जन्म के समय जीवन प्रत्याशा किसी देश की समग्र स्वास्थ्य स्थितियों का एक अच्छा संकेतक है।
कथन II: देशों के बीच स्वास्थ्य की तुलना करने के लिए अशोधित मृत्यु दर जीवन प्रत्याशा की तुलना में अधिक सटीक माप है क्योंकि यह आयु संरचना से प्रभावित नहीं होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

158. क्रिस्टॉलर के k=7 या प्रशासनिक सिद्धांत में, निम्न-क्रम के केंद्रों के षटकोणीय बाजार क्षेत्र:
(A) उच्च-क्रम के केंद्रों के बीच मुख्य परिवहन मार्गों पर स्थित होते हैं।
(B) तीन उच्च-क्रम के केंद्रों के बीच साझा किए जाते हैं।
(C) पूरी तरह से उच्च-क्रम के केंद्रों के बाजार क्षेत्र के भीतर समाहित होते हैं।
(D) नगर-धनी और नगर-गरीब क्षेत्र बनाने के लिए अतिव्यापी होते हैं।

159. शहरी विकास की कौन सी प्रक्रिया जातीयता, धर्म या सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर जनसंख्या समूहों को अलग-अलग मोहल्लों में छांटने की ओर ले जाती है?
(A) विकेंद्रीकरण
(B) केंद्रीयकरण
(C) पृथक्करण
(D) उत्तराधिकार

160. किसी देश की जनसंख्या के आकार को बढ़ाने के उद्देश्य से बनाई गई जनसंख्या नीति कहलाती है:
(A) माल्थुसियन नीति
(B) प्रति-प्रसववादी नीति
(C) प्रसववादी नीति
(D) जनसांख्यिकीय संक्रमण नीति

161. केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'पूरक क्षेत्र' किसके लिए एक और शब्द है?
(A) केंद्रीय व्यापारिक जिला।
(B) बाजार क्षेत्र या हिंटरलैंड जिसकी सेवा एक केंद्रीय स्थान द्वारा की जाती है।
(C) उसी क्रम का एक आसन्न केंद्रीय स्थान।
(D) नगरीय उपांत।

162. निम्नलिखित में से कौन सा 1970 के दशक से जनसंख्या वृद्धि के वैश्विक प्रतिरूप का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वृद्धि की दर लगातार तेज हो रही है।
(B) प्रत्येक वर्ष जोड़े जाने वाले लोगों की पूर्ण संख्या स्थिर रही है।
(C) वृद्धि की दर धीमी हो रही है, हालांकि जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है।
(D) वैश्विक जनसंख्या गिरावट के चरण में प्रवेश कर गई है।

163. वह कौन सी प्रमुख विशेषता है जो लोश के केंद्रीय स्थान मॉडल को क्रिस्टॉलर से अलग करती है?
(A) लोश के मॉडल के परिणामस्वरूप एक ऐसा परिदृश्य बनता है जहाँ समान आकार के सभी केंद्रीय स्थान वस्तुओं का समान मिश्रण पेश करते हैं।
(B) लोश का मॉडल फर्मों की संख्या को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे विशिष्ट उत्पादन केंद्र बनते हैं।
(C) लोश ने पूरी तरह से समान जनसंख्या वितरण माना, जो क्रिस्टॉलर ने नहीं किया था।
(D) लोश ने वर्गाकार ग्रिड का उपयोग किया, जबकि क्रिस्टॉलर ने षटकोणीय ग्रिड का उपयोग किया।

164. यह अवधारणा कि जनसंख्या वृद्धि अंततः खाद्य आपूर्ति से अधिक हो जाएगी, प्रसिद्ध रूप से किसके द्वारा व्यक्त की गई थी:
(A) कार्ल मार्क्स
(B) थॉमस माल्थस
(C) ई.जी. रेवेनस्टीन
(D) वाल्टर क्रिस्टॉलर

165. नगर-क्षेत्र के संदर्भ में, "परिसीमन" का क्या तात्पर्य है?
(A) शहर के विभिन्न हिस्सों के नामकरण की प्रक्रिया।
(B) शहर के प्रभाव क्षेत्र की सीमाओं का मानचित्रण करना।
(C) आसपास के क्षेत्र को सरकारी धन का आवंटन।
(D) शहर के विकास का ऐतिहासिक अध्ययन।

166. अधिवास पदानुक्रम के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) सभी देश एक आदर्श अधिवास पदानुक्रम प्रदर्शित करते हैं।
(B) छोटे अधिवास बड़े अधिवासों की तुलना में अधिक संख्या में होते हैं और कम अंतराल पर स्थित होते हैं।
(C) पदानुक्रम में ऊपर जाने पर कार्यों की संख्या कम हो जाती है।
(D) अधिवास पदानुक्रम एक स्थिर अवधारणा है जो समय के साथ नहीं बदलती है।

167. "प्रवास के नियम" सबसे पहले किसके द्वारा व्यवस्थित रूप से बताए गए थे?
(A) जॉर्ज जिफ
(B) ई.जी. रेवेनस्टीन
(C) एवरेट ली
(D) विल्बर जेलिंस्की

Click Here to Buy book on Amazon

168. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरण 2 में जनसंख्या वृद्धि का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) जन्म दर में तीव्र वृद्धि।
(B) आव्रजन की एक विशाल लहर।
(C) मृत्यु दर में तेजी से गिरावट।
(D) परिवारों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए मजबूर करने वाली सरकारी नीतियां।

169. निम्नलिखित में से कौन सी नगरीय उपांत से जुड़ी एक विशिष्ट समस्या नहीं है?
(A) शहरी फैलाव
(B) उच्च भूमि मूल्य और सामर्थ्य के मुद्दे
(C) अपर्याप्त परिवहन बुनियादी ढांचे के कारण यातायात की भीड़
(D) अच्छी तरह से संरक्षित, प्राचीन प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र

170. एकरमैन के जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र के 'ब्राजीलियाई प्रकार' की विशेषता है:
(A) कम जनसंख्या, प्रचुर संसाधन और निम्न तकनीक।
(B) उच्च जनसंख्या, सीमित संसाधन और उच्च तकनीक।
(C) कम जनसंख्या, प्रचुर संसाधन और उच्च तकनीक।
(D) उच्च जनसंख्या, सीमित संसाधन और निम्न तकनीक।

171. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'सांस्कृतिक मंडल' की अवधारणा वैश्विक स्तर पर संस्कृति के व्यापक प्रतिरूपों को समझने का एक उपकरण है।
कारण (R): ये मंडल व्यापक क्षेत्रीय संघों द्वारा परिभाषित होते हैं और इनकी सार्वभौमिक रूप से निश्चित, गैर-अतिव्यापी सीमाएँ नहीं होती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

172. होमर होयट द्वारा प्रस्तावित सेक्टर मॉडल में विकास का मुख्य चालक क्या है?
(A) केंद्रीय व्यापारिक जिले का विस्तार।
(B) परिवहन गलियारों के साथ उच्च आय वाले आवासीय क्षेत्रों की आवाजाही।
(C) शहर के बाहरी इलाकों में नए औद्योगिक पार्कों का विकास।
(D) शहर में नए जनसंख्या समूहों का आव्रजन।

173. जनसंख्या घनत्व के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अंकगणितीय घनत्व कुल जनसंख्या को कुल भूमि क्षेत्र से विभाजित करने पर प्राप्त होता है।
2. कायिक घनत्व कुल जनसंख्या को कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र से विभाजित करने पर प्राप्त होता है।
3. उच्च कायिक घनत्व भोजन पैदा करने के लिए भूमि पर अधिक दबाव का सुझाव देता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

174. 'मेगालोपोलिस' शब्द, जिसका उपयोग अमेरिका के शहरीकृत उत्तर-पूर्वी समुद्र तट का वर्णन करने के लिए किया जाता है, किस भूगोलवेत्ता द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था?
(A) जीन गॉटमैन
(B) वाल्टर क्रिस्टॉलर
(C) अर्नेस्ट बर्गेस
(D) चौन्सी हैरिस

175. निम्नलिखित में से कौन 'प्रति-प्रसववादी' नीति का एक उदाहरण है?
(A) राज्य द्वारा प्रदान किए गए बाल देखभाल लाभ
(B) बड़े परिवारों के लिए कर में कटौती
(C) "दो बच्चों के मानदंड" को बढ़ावा देने वाले सार्वजनिक अभियान
(D) कंडोम की बिक्री पर प्रतिबंध

176. यदि कोटि-आकार नियम का पालन करने वाले देश के सबसे बड़े शहर की जनसंख्या 8 मिलियन है, तो तीसरे सबसे बड़े शहर की जनसंख्या लगभग कितनी होनी चाहिए?
(A) 4 मिलियन
(B) 2.67 मिलियन
(C) 2 मिलियन
(D) 1 मिलियन

177. मानव अधिवासों के स्थानिक पहलुओं, उनके वितरण, संरचना और कार्यों के अध्ययन को कहा जाता है:
(A) अधिवास भूगोल
(B) जनसंख्या भूगोल
(C) सांस्कृतिक भूगोल
(D) आर्थिक भूगोल

178. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (जनसांख्यिकीय शब्द)
P. प्राकृतिक वृद्धि
Q. कुल प्रजनन दर
R. जीवन प्रत्याशा
S. शिशु मृत्यु दर
सूची II: (परिभाषा)
1. वर्षों की औसत संख्या जो एक नवजात शिशु के जीवित रहने की उम्मीद है।

NODIA

2. प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 1 वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु की संख्या।
3. अशोधित जन्म दर और अशोधित मृत्यु दर के बीच का अंतर।
4. बच्चों की औसत संख्या जो एक महिला के अपने प्रजनन वर्षों के दौरान होंगे।

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

179. संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल की प्राथमिक आलोचना यह है कि यह:
(A) परिवहन मार्गों के महत्व पर अत्यधिक जोर देता है।
(B) केंद्रीय व्यापारिक जिले के अस्तित्व की व्याख्या करने में विफल रहता है।
(C) स्थलाकृति या परिवहन गलियारों के संबंध में बहुत सरल है।
(D) केवल उन शहरों पर लागू होता है जो ऑटोमोबाइल के आविष्कार के बाद विकसित हुए।

180. एक 'प्राइमेट शहर' वितरण अक्सर किसका संकेतक होता है:
(A) पूरे देश में समान रूप से वितरित आर्थिक विकास का उच्च स्तर।
(B) कई शक्तिशाली राज्यों वाली एक मजबूत संघीय प्रणाली।
(C) विकास में असंतुलन, जिसमें एक ही शहर में निवेश केंद्रित हो।
(D) एक देश जो कोटि-आकार नियम का कड़ाई से पालन करता है।

181. निम्नलिखित में से कौन सा रेवेनस्टीन द्वारा प्रस्तावित 'प्रवास के नियमों' में से एक नहीं है?
(A) प्रत्येक प्रवास प्रवाह एक वापसी या प्रति-प्रवास उत्पन्न करता है।
(B) लंबी दूरी तय करने वाले प्रवासी बड़े शहरों के गंतव्यों को चुनते हैं।
(C) शहरी निवासी ग्रामीण निवासियों की तुलना में अधिक प्रवासी होते हैं।
(D) युवा वयस्कों की तुलना में परिवारों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रवास करने की अधिक संभावना होती है।

182. वह ज्यामितीय आकृति जिसका क्रिस्टॉलर ने अपने केंद्रीय स्थान सिद्धांत में बाजार क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने के लिए उपयोग किया था, वह है:
(A) वर्ग
(B) वृत्त
(C) त्रिभुज
(D) षट्कोण

183. किसी जनसंख्या के 'दोगुना होने का समय' का अनुमान '70 के नियम' का उपयोग करके लगाया जा सकता है, जिसमें 70 को किससे विभाजित किया जाता है:
(A) कुल प्रजनन दर
(B) अशोधित जन्म दर
(C) प्रतिशत वृद्धि दर
(D) जीवन प्रत्याशा

184. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक बड़े, विकासशील देश में एक मेगासिटी है जो जीवन का केंद्र है। इसकी जनसंख्या 15 मिलियन है, जबकि अगले सबसे बड़े शहर की जनसंख्या केवल 1.5 मिलियन है। इस देश की शहरी संरचना किसका उदाहरण है?
(A) एक संतुलित पदानुक्रम
(B) एक प्राइमेट शहर प्रतिरूप
(C) कोटि-आकार नियम
(D) केंद्रीय स्थानों की एक प्रणाली

185. निम्नलिखित में से कौन सा अगस्त लोश के केंद्रीय स्थान मॉडल का एक प्रमुख घटक है?
(A) कस्बों के उच्च और निम्न घनत्व के खंडों में व्यवस्थित एक परिदृश्य।
(B) अधिवासों का एक निश्चित पदानुक्रम।
(C) सभी वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक एकल K-मान (K=3)।
(D) प्राथमिक संगठनात्मक शक्ति के रूप में प्रशासनिक सिद्धांत।

186. 'जनसांख्यिकीय लाभांश' शब्द उस अवधि को संदर्भित करता है जब:
(A) जनसंख्या तेजी से वृद्ध हो रही है, जिससे निर्भरता अनुपात बढ़ रहा है।
(B) देश की प्रजनन क्षमता गिरती है, जिससे कार्यशील आयु का अनुपात बढ़ जाता है।
(C) जनसंख्या वृद्धि दर अपने उच्चतम शिखर पर होती है।
(D) सरकार पैदा हुए प्रत्येक बच्चे के लिए नकद भुगतान प्रदान करती है।

NODIA

187. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: नगरीय उपांत की विशेषता भूमि उपयोग का मिश्रण है।
कथन II: नगर-क्षेत्र का परिसीमन केवल उसकी कानूनी रूप से परिभाषित प्रशासनिक सीमा पर आधारित होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

188. निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी एनेकुमीन के उदाहरण हैं?

1. संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल एक एकल केंद्रीय कोर से शहरी विकास को मानता है।
2. सेक्टर मॉडल बताता है कि शहर परिवहन लाइनों के साथ पच्चर के आकार के प्रतिरूप में बढ़ते हैं।
3. बहु-नाभिक मॉडल यह मानता है कि शहर गतिविधि के कई अलग-अलग केंद्रों के चारों ओर विकसित होते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

124. निम्नलिखित में से कौन 'प्राइमेट शहर' प्रतिरूप का सीधा परिणाम है?
(A) पूरे देश में विकास का संतुलित और न्यायसंगत वितरण।
(B) द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहरों की तीव्र वृद्धि।
(C) एक शहरी केंद्र में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक शक्ति का संकेंद्रण।
(D) कोटि-आकार नियम का कड़ाई से पालन।

125. किसी जनसंख्या के लिए 1.0 से कम NRR (शुद्ध पुनरुत्पादन दर) क्या दर्शाता है?
(A) जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।
(B) जनसंख्या स्वयं को बिल्कुल प्रतिस्थापित कर रही है।
(C) जन्म दर मृत्यु दर के बराबर है।
(D) महिला जनसंख्या स्वयं को प्रतिस्थापित करने के लिए पर्याप्त बेटियों को जन्म नहीं दे रही है।

126. क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत का कौन सा सिद्धांत प्रशासनिक नियंत्रण के लिए सबसे कुशल संगठन प्रदान करता है?
(A) प्रशासनिक सिद्धांत (k=7)
(B) बाजार सिद्धांत (k=3)
(C) परिवहन सिद्धांत (k=4)
(D) सामाजिक सिद्धांत (k=9)

127. रेवेनस्टीन के "प्रवास के नियमों" ने सुझाव दिया कि:
(A) अधिकांश प्रवासी लंबी दूरी तय करते हैं।
(B) अधिकांश प्रवास चरण-दर-चरण प्रक्रिया में होता है।
(C) ग्रामीण निवासी शहरी निवासियों की तुलना में कम प्रवासी होते हैं।
(D) आंतरिक प्रवास की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय प्रवास अधिक सामान्य है।

128. 'हिंटरलैंड' या 'Ɜmland' की अवधारणा किसकी परिभाषा के केंद्र में है?
(A) सांस्कृतिक मंडल
(B) प्राइमेट शहर
(C) नगर-क्षेत्र
(D) अधिवास पदानुक्रम

129. परिवर्तन के दौर से गुजर रहे एक मोहल्ले में होने वाली निम्नलिखित शहरी पारिस्थितिक प्रक्रियाओं को विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित करें:
1. उत्तराधिकार
2. आक्रमण
3. स्थिरीकरण

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

130. केंद्रीय स्थान सिद्धांत में अगस्त लोश का मुख्य योगदान क्या था?
(A) षटकोणीय बाजार क्षेत्र की शुरुआत।
(B) बाजार, परिवहन और प्रशासन के तीन सिद्धांतों का प्रतिपादन।
(C) जनसंख्या प्रवास को समझाने के लिए सिद्धांत का अनुप्रयोग।
(D) लाभ अधिकतमकरण और औद्योगिक स्थान पर आधारित एक कम कठोर मॉडल का विकास।

131. निम्नलिखित में से कौन प्रजनन क्षमता का माप नहीं है?
(A) सामान्य प्रजनन दर (GFR)
(B) शिशु मृत्यु दर (IMR)
(C) कुल प्रजनन दर (TFR)
(D) अशोधित जन्म दर (CBR)

132. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नगरीय उपांत को अक्सर भूमि उपयोग को लेकर संघर्षों द्वारा पहचाना जाता है।
कारण (R): कृषि क्षेत्रों में शहरी कार्यों के आक्रमण से भूमि मूल्यों में वृद्धि होती है और आवासीय, वाणिज्यिक तथा कृषि हितों से प्रतिस्पर्धी माँगें पैदा होती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

133. इनमें से कौन सा "पाश्चात्य" सांस्कृतिक मंडल की एक परिभाषित विशेषता है?
(A) इस्लामी परंपराओं का प्रभुत्व।
(B) कन्फ्यूशियसवाद और बौद्ध धर्म का प्रभाव।
(C) एक निर्वाह कृषि अर्थव्यवस्था।
(D) ग्रीक-रोमन संस्कृति और ईसाई धर्म में निहित विरासत।

134. 5.0 की TFR और उच्च शिशु मृत्यु दर वाला देश जनसांख्यिकीय संक्रमण के किस चरण में होने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) चरण 1
(B) चरण 2

Downloaded from www.pdf.tube

जो शहरों को आकार देती हैं।
(D) शहर के भीतर पार्कों और हरित स्थानों का अध्ययन।

199. यह अवधारणा कि किसी देश में दूसरे सबसे बड़े शहर की जनसंख्या सबसे बड़े शहर की आधी होगी, तीसरे सबसे बड़े की एक-तिहाई होगी, इत्यादि, कहलाती है:
(A) प्राइमेट शहर नियम
(B) कोटि-आकार नियम
(C) केंद्रीय स्थान सिद्धांत
(D) पदानुक्रम सिद्धांत

200. "प्रतिभा पलायन" प्रवास का एक रूप है जिसमें शामिल है:
(A) कम कुशल श्रमिकों का बड़े पैमाने पर उत्प्रवास।
(B) किसी देश से उच्च शिक्षित पेशेवरों का उत्प्रवास।
(C) बौद्धिक उत्पीड़न के कारण लोगों का जबरन विस्थापन।
(D) कृषि श्रमिकों का मौसमी संचलन।

201. जनसांख्यिकीय संक्रमण के पहले चरण की विशेषता है:
(A) उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर
(B) निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
(C) उच्च जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
(D) निम्न जन्म दर, उच्च मृत्यु दर

202. शहरी संरचना का कौन सा मॉडल सीबीडी से विस्तारित पच्चरनुमा प्रतिरूपों की विशेषता रखता है, जो अक्सर परिवहन लाइनों का अनुसरण करते हैं?
(A) सेक्टर मॉडल
(B) संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
(C) बहु-नाभिक मॉडल
(D) गैलेक्टिक सिटी मॉडल

203. निम्नलिखित में से कौन सा 'प्रजनन क्षमता विश्लेषण' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) रोगों के कारणों और वितरण का अध्ययन।
(B) किसी जनसंख्या में प्रजनन प्रदर्शन की प्रवृत्तियों का अध्ययन।
(C) जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना का अध्ययन।
(D) मृत्यु दर और जीवन प्रत्याशा का अध्ययन।

204. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (शहरी प्रक्रिया)
P. संकेंद्रण
Q. आक्रमण
R. उत्तराधिकार
S. पृथक्करण
सूची II: (विवरण)
1. नए समूह द्वारा मौजूदा समूह का अंततः विस्थापन।
2. विशिष्ट क्षेत्र में लोगों या गतिविधियों का क्लस्टरिंग, अक्सर शहर के केंद्र में।
3. जनसंख्या समूहों का अलग-अलग आवासीय क्षेत्रों में वर्गीकरण।
4. किसी क्षेत्र में नए जनसंख्या समूह या भूमि उपयोग का प्रवेश।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

205. 1994 का जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जिसने महिलाओं के सशक्तिकरण और प्रजनन स्वास्थ्य पर जोर दिया, कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) मेक्सिको सिटी
(B) बुखारेस्ट
(C) काहिरा
(D) रियो डी जनेरियो

206. 2 मिलियन की आबादी वाला एक शहर उस देश में स्थित है जहाँ दूसरे सबसे बड़े शहर की आबादी 1.8 मिलियन और तीसरे की 1.5 मिलियन है। इस देश की शहरी प्रणाली किसके निकट है?
(A) एक प्राइमेट शहर प्रतिरूप
(B) एक कोटि-आकार वितरण
(C) एक द्विआधारी प्रणाली
(D) एक मेगालोपोलिस

207. अधिवास पदानुक्रम का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि किसी क्षेत्र के अधिवास:
(A) सभी समान महत्व के हैं।
(B) बिना किसी प्रतिरूप के यादृच्छिक रूप से वितरित हैं।
(C) आकार और उनके कार्यों की जटिलता के आधार पर क्रमित किए जा सकते हैं।
(D) सभी प्रमुख नदियों के किनारे स्थित हैं।

208. एकरमैन के वर्गीकरण में 'यूरोपीय-प्रकार' का जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र किसके द्वारा परिभाषित किया गया है?
(A) उच्च जनसंख्या और संसाधन आधार, लेकिन निम्न तकनीक।
(B) निम्न जनसंख्या और संसाधन आधार, उच्च तकनीक के साथ।
(C) उच्च जनसंख्या, सीमित संसाधन, लेकिन उच्च तकनीक और वैश्विक पहुंच।
(D) निम्न जनसंख्या, प्रचुर संसाधन और निम्न तकनीक।

209. अशोधित जन्म दर (CBR) और सामान्य प्रजनन दर (GFR) के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) CBR अपने हर के रूप में कुल जनसंख्या का उपयोग करता है, जबकि GFR केवल प्रजनन आयु की महिलाओं का उपयोग करता है।
(B) GFR अपने हर के रूप में कुल जनसंख्या का उपयोग करता है, जबकि CBR केवल प्रजनन आयु की महिलाओं का उपयोग करता है।

NODIA

हिस्से पर।
(D) केवल अपनी तत्काल सीमाओं के भीतर की जनसंख्या पर।

234. संकीर्ण आधार वाले जनसंख्या पिरामिड का अर्थ है:
(A) उच्च जन्म दर
(B) निम्न जन्म दर
(C) उच्च मृत्यु दर
(D) युवा जनसंख्या

235. लोगों, वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह को शामिल करते हुए, एक शहर और उसके आसपास के क्षेत्र के बीच कार्यात्मक संबंध किसे परिभाषित करता है?
(A) केंद्रीय व्यापारिक जिला
(B) नगर-क्षेत्र
(C) नगरीय उपांत
(D) नगर पालिका सीमा

236. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख सांस्कृतिक मंडल नहीं है?
(A) भारतीय
(B) चीनी
(C) स्लाव
(D) अंटार्कटिक

237. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नगरीय उपांत एक निश्चित सीमा वाला स्थिर क्षेत्र है।
कारण (R): नगरीय उपांत संक्रमण का एक गतिशील क्षेत्र है, जो शहर के बढ़ने के साथ-साथ लगातार बाहर की ओर विस्तार करता रहता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

238. एकरमैन के वर्गीकरण में 'तकनीकी-स्रोत क्षेत्र', जैसे अमेरिका और पश्चिमी यूरोप, किसके द्वारा पहचाने जाते हैं?
(A) निम्न तकनीक और निम्न जनसंख्या।
(B) उच्च जनसंख्या और निम्न तकनीक।
(C) उच्च तकनीक, उच्च जनसंख्या और एक विस्तारित संसाधन आधार।
(D) प्रचुर संसाधन लेकिन उनका दोहन करने में असमर्थता।

239. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (जनसंख्या वृद्धि चरण)
P. 1650 ईस्वी से पूर्व
Q. 1650-1900 ईस्वी
R. 1950 ईस्वी के बाद
S. भविष्य का प्रक्षेपण
सूची II: (प्रमुख कारण)
1. चिकित्सा क्रांति और विकासशील देशों में प्रसार।
2. उच्च जन्म और मृत्यु दर के कारण धीमी वृद्धि।
3. धीमी होती विकास दर, संभावित स्थिरीकरण।
4. यूरोप और उत्तरी अमेरिका में औद्योगिक और कृषि क्रांतियां।
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

240. 'शरणार्थी' और 'आर्थिक प्रवासी' के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) शरणार्थी नौकरी के अवसरों के लिए पलायन करते हैं, जबकि आर्थिक प्रवासी युद्ध से भागते हैं।
(B) शरणार्थी पलायन करने के लिए मजबूर होते हैं, जबकि आर्थिक प्रवासी स्वेच्छा से जाते हैं।
(C) शरणार्थी आंतरिक रूप से पलायन करते हैं, जबकि आर्थिक प्रवासी अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ पार करते हैं।
(D) दोनों शब्दों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

241. शहरों की वह प्रणाली जो Pn = P1/n संबंध का कड़ाई से पालन करती है, उसे कहा जाता है:
(A) प्राइमेट शहर नियम
(B) कोटि-आकार नियम
(C) केंद्रीय स्थान पदानुक्रम
(D) खुदरा गुरुत्वाकर्षण का नियम

242. बर्गेस के मॉडल में "संक्रमण क्षेत्र" की विशेषता है:
(A) उच्च आय वाले परिवार और विशाल घर।
(B) बिगड़ती आवासीय संपत्तियाँ और अतिक्रमण करता व्यवसाय।
(C) स्थिर, मध्यम वर्ग के पारिवारिक घर।
(D) व्यापार और वाणिज्य का केंद्रीय कोर।

243. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. क्रिस्टॉलर का मॉडल एक समान परिवहन सतह की कल्पना करता है।
2. लोश का मॉडल क्रिस्टॉलर की तुलना में शहरी प्रणाली का अधिक आदर्श और कम जटिल दृश्य प्रदान करता है।
3. क्रिस्टॉलर के सिद्धांत में K=4 का सिद्धांत परिवहन नेटवर्क से संबंधित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

Click Here to Buy book on Amazon

221. शहरी संरचना का वह मॉडल जिसे चौन्सी हैरिस और एडवर्ड उलमैन द्वारा विकसित किया गया था, वह है:
(A) संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
(B) सेक्टर मॉडल
(C) बहु-नाभिक मॉडल
(D) केंद्रीय स्थान मॉडल

222. जनसंख्या नीतियों का प्राथमिक ध्यान क्या है?
(A) किसी जनसंख्या के आकार, विकास दर, वितरण या संरचना को प्रभावित करना।
(B) जनसंख्या परिवर्तन की ऐतिहासिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
(C) दुनिया भर में लोगों के वितरण का मानचित्रण करना।
(D) किसी जनसंख्या में मृत्यु के कारणों का अध्ययन करना।

223. लोश के आर्थिक परिदृश्य में, केंद्रीय स्थानों और बाजार क्षेत्रों को कैसे व्यवस्थित किया गया है?
(A) एक कठोर, चरण-दर-चरण पदानुक्रम में।
(B) यादृच्छिक रूप से, बिना किसी पहचानने योग्य प्रतिरूप के।
(C) घूमने वाले षटकोणीय प्रणालियों में जो नगर-धनी और नगर-गरीब क्षेत्रों का निर्माण करते हैं।
(D) एक एकल कोर के चारों ओर एक साधारण संकेंद्रित प्रतिरूप में।

224. एवरेट ली के प्रवास सिद्धांत में "अंतवर्ती बाधाएं" किसे संदर्भित करती हैं?
(A) गंतव्य पर सकारात्मक कारक।
(B) मूल स्थान पर नकारात्मक कारक।
(C) दूरी और कानूनी बाधाओं जैसे कारक जो प्रवास में बाधा डालते हैं।
(D) व्यक्तिगत कारक जो किसी व्यक्ति को जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

225. एक विकसित देश में 1.5 की कुल प्रजनन दर (TFR) का क्या अर्थ है?
(A) उच्च जन्म दर के कारण जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।
(B) जनसंख्या प्रतिस्थापन स्तर पर है।
(C) जनसंख्या प्रतिस्थापन स्तर से नीचे है और आव्रजन के बिना इसमें गिरावट आएगी।
(D) औसत महिला की 1.5 बेटियाँ हैं।

226. नगरीय उपांत की अवधारणा उस क्षेत्र को उजागर करती है जहाँ:
(A) शहरी और ग्रामीण भूमि उपयोग संघर्ष और संक्रमण में हैं।
(B) शहर की सबसे पुरानी इमारतें स्थित हैं।
(C) जनसंख्या घनत्व अपने उच्चतम स्तर पर है।
(D) केवल औद्योगिक गतिविधियों की अनुमति है।

227. क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत की एक प्रमुख मान्यता 'समदैशिक सतह' है, जिसका अर्थ है:
(A) एक समान, समतल मैदान जिसमें आवाजाही में कोई बाधा न हो।
(B) पहाड़ों और नदियों वाला एक विविध परिदृश्य।
(C) सघन, पहले से मौजूद सड़क नेटवर्क वाली सतह।
(D) समुद्री परिवहन तक आसान पहुँच वाला तटीय क्षेत्र।

228. यदि किसी क्षेत्र के सबसे बड़े शहर की जनसंख्या 6 मिलियन है, तो कोटि-आकार नियम के अनुसार दूसरे सबसे बड़े शहर की अपेक्षित जनसंख्या क्या होगी?
(A) 6 मिलियन
(B) 4 मिलियन
(C) 3 मिलियन
(D) 2 मिलियन

NODIA

229. संक्रामक रोगों की उच्च व्यापकता से पुरानी बीमारियों की ओर बदलाव किसका केंद्रीय विचार है?
(A) जनसांख्यिकीय संक्रमण
(B) महामारी विज्ञान संक्रमण
(C) गतिशीलता संक्रमण
(D) शहरी संक्रमण

230. 1974 का विश्व जनसंख्या सम्मेलन, जो जनसंख्या पर पहला प्रमुख अंतर-सरकारी सम्मेलन था, कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) काहिरा
(B) मेक्सिको सिटी
(C) बुखारेस्ट
(D) स्टॉकहोम

231. इनमें से कौन सा भूगोलवेत्ता प्राइमेट शहर अवधारणा के साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) जॉर्ज जिफ
(B) वाल्टर क्रिस्टॉलर
(C) मार्क जेफरसन
(D) अगस्त लोश

232. विभिन्न जातीय या आय समूहों के लिए एक शहर का अलग-अलग आवासीय क्षेत्रों में विभाजन कहलाता है:
(A) केंद्रीयकरण
(B) पृथक्करण
(C) आक्रमण
(D) विकेंद्रीकरण

233. केंद्रीय स्थान सिद्धांत के प्रशासनिक सिद्धांत (k=7) में, एक उच्च-क्रम का केंद्र शासन करता है:
(A) स्वयं पर और दो अन्य केंद्रों पर।
(B) स्वयं पर और अपने आसपास के छह निम्न-क्रम के पड़ोसियों पर उनकी संपूर्णता में।
(C) स्वयं पर और अपने छह आसपास के पड़ोसियों के आधे

(C) GFR मौतों को मापता है, जबकि CBR जन्मों को मापता है।
(D) CBR एक आयु-विशिष्ट दर है, जबकि GFR नहीं है।

210. नगरीय उपांत के संदर्भ में, 'लीपफ्रॉग विकास' किसे संदर्भित करता है?
(A) शहर की सीमा का क्रमिक बाहर की ओर विस्तार।
(B) निर्मित क्षेत्र से कुछ दूरी पर नए उप-विभाजनों का निर्माण।
(C) औद्योगिक भूमि का आवासीय उपयोग में परिवर्तन।
(D) शहर के केंद्र में पुरानी इमारतों का नवीनीकरण।

211. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान मॉडल में, निम्न-क्रम के केंद्रों की संख्या उच्च-क्रम के केंद्रों की संख्या से बहुत अधिक है।
कारण (R): निम्न-क्रम की वस्तुओं की देहली और परास कम होती है, और इस प्रकार वे कई छोटे, पास-पास स्थित केंद्रों में पेश की जाती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

212. 'आकर्षण' और 'प्रतिकर्ष' कारकों की अवधारणा किसके अध्ययन के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है?
(A) प्रजनन क्षमता
(B) मर्त्यता
(C) प्रवास
(D) जनसंख्या घनत्व

213. शिकागो स्कूल द्वारा पहचाने गए शहरी विकास की पारिस्थितिक प्रक्रियाओं में से कौन सी नहीं है?
(A) संकेंद्रण
(B) आक्रमण
(C) उत्तराधिकार
(D) शहरी नियोजन

214. कोटि-आकार नियम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह प्राइमेट शहर वाले देशों के लिए अच्छा मेल प्रदान करता है।
2. इसे जॉर्ज के. जिफ द्वारा प्रतिपादित किया गया था।
3. यह एक अनुभवजन्य नियमितता का वर्णन करता है जहाँ किसी शहर की जनसंख्या उसकी कोटि के व्युत्क्रमानुपाती होती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

215. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के अंतिम चरण को अक्सर क्या कहा जाता है:
(A) उच्च स्थिर चरण
(B) प्रारंभिक विस्तार चरण
(C) उत्तरवर्ती विस्तार चरण
(D) निम्न स्थिर चरण

216. नगर-क्षेत्र की सीमा को सबसे अच्छी परिभाषित किया जाता है:
(A) इसके कम्युटर-शेड और मीडिया बाजार के विस्तार द्वारा।
(B) कानून द्वारा स्थापित आधिकारिक शहर की सीमाओं द्वारा।
(C) उस रेखा द्वारा जहाँ इमारतें खुले खेतों को जगह देती हैं।
(D) उस सबसे दूर के बिंदु द्वारा जहाँ से कच्चा माल प्राप्त किया जाता है।

217. 'पूर्वी एशियाई' सांस्कृतिक मंडल किस दार्शनिक और धार्मिक परंपरा से बहुत अधिक प्रभावित है?
(A) हिंदू धर्म
(B) इस्लाम
(C) ईसाई धर्म
(D) कन्फ्यूशियसवाद

218. क्रिस्टॉलर के परिवहन सिद्धांत (K=4) के अनुसार, एक उच्च-क्रम का केंद्र स्वयं की और अपने आसपास के छह निम्न-क्रम के पड़ोसियों के किस हिस्से की सेवा करता है?
(A) एक-तिहाई
(B) आधा
(C) दो-तिहाई
(D) पूरा

219. अधिवास पदानुक्रम में 'शहर' को 'कस्बे' से अलग करने वाला प्राथमिक कारक क्या है?
(A) मेयर की उपस्थिति।
(B) बड़ी जनसंख्या और विविध प्रकार के विशिष्ट कार्य।
(C) इसकी ऐतिहासिक आयु।
(D) समुद्र तट पर इसकी स्थिति।

220. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: अति-जनसंख्या एक ऐसी स्थिति है जिसे केवल उच्च जनसंख्या घनत्व द्वारा परिभाषित किया जाता है।
कथन II: कोई देश कम जनसंख्या घनत्व के बावजूद भी अति-जनसंख्या वाला हो सकता है यदि उसका संसाधन आधार अत्यधिक खराब है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

244. "सांस्कृतिक उद्गम केंद्र" वह शब्द है जिसका उपयोग किसके वर्णन के लिए किया जाता है:
(A) वह क्षेत्र जहाँ कोई सांस्कृतिक विशेषता या नवाचार उत्पन्न होता है।
(B) दो अलग-अलग सांस्कृतिक मंडलों के बीच का सीमा क्षेत्र।
(C) एक वैश्वीकृत संस्कृति जो दुनिया भर में फैल गई है।
(D) सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए बनाई गई नीति।

245. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल का तीसरा चरण (उत्तरवर्ती विस्तार) किसके द्वारा पहचाना जाता है?
(A) मृत्यु दर में गिरावट और जन्म दर में गिरावट की शुरुआत।
(B) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर।
(C) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(D) बढ़ती जन्म दर और गिरती मृत्यु दर।

246. जनसांख्यिकीय संक्रमण से जुड़े प्रवास प्रतिरूपों के पूर्वानुमेय चरणों को कहा जाता है:
(A) महामारी विज्ञान संक्रमण
(B) प्राइमेट शहर नियम
(C) गतिशीलता संक्रमण मॉडल
(D) कोटि-आकार नियम

247. 'परास' और 'देहली' दो प्रमुख अवधारणाएँ हैं:
(A) जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल में
(B) रेवेनस्टीन के प्रवास के नियमों में
(C) बहु-नाभिक मॉडल में
(D) क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में

248. निम्नलिखित में से कौन प्रसववादी नीति का एक उदाहरण है?
(A) परिवार नियोजन सेवाओं की व्यापक उपलब्धता।
(B) वित्तीय प्रोत्साहन और विस्तारित प्रसूति अवकाश।
(C) छोटे परिवारों के लाभों पर जन जागरूकता अभियान।
(D) माँग पर गर्भपात को वैध बनाना।

249. एक विशिष्ट शहरी पदानुक्रम में कौन सा अधिवास सबसे ऊपर है?
(A) गाँव
(B) कस्बा
(C) शहर
(D) महानगर / मेगालोपोलिस

250. नगर-क्षेत्र के परिसीमन का प्राथमिक उद्देश्य किसके लिए है:
(A) प्रभावी क्षेत्रीय नियोजन और प्रशासन।
(B) राष्ट्रीय चुनाव सीमाओं का निर्धारण।
(C) ऐतिहासिक संरक्षण।
(D) शहर की कुल जनसंख्या की गणना।

251. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: शहरी संरचना का सेक्टर मॉडल होमर होयट द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
कथन II: मॉडल सुझाव देता है कि शहरी विकास यादृच्छिक है और किसी विशिष्ट प्रतिरूप का पालन नहीं करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

252. किसी देश की जनसंख्या कम हो जाएगी यदि:
(A) जन्म दर मृत्यु दर से अधिक हो।
(B) जन्म दर मृत्यु दर के बराबर हो, और कोई प्रवास न हो।
(C) मृत्यु और उत्प्रवास का योग जन्म और आव्रजन के योग से अधिक हो।
(D) कुल प्रजनन दर (TFR) ठीक 2.1 हो।

253. एकरमैन का 'मिस्र प्रकार' का जनसंख्या-संसाधन क्षेत्रों का वर्गीकरण उन क्षेत्रों का वर्णन करता है जहाँ:
(A) कम जनसंख्या, प्रचुर संसाधन, निम्न तकनीक हो।
(B) उच्च जनसंख्या, सीमित संसाधन, सरल लेकिन कुशल तकनीक हो।
(C) कम जनसंख्या, सीमित संसाधन, उच्च तकनीक हो।
(D) उच्च जनसंख्या, प्रचुर संसाधन, उच्च तकनीक हो।

NODIA

254. यह अवधारणा कि किसी देश में शहर के आकार को लॉग-नॉर्मल वितरण द्वारा दर्शाया जा सकता है, किसके द्वारा रखी गई थी:
(A) मार्क जेफरसन
(B) जॉर्ज के. जिफ
(C) वाल्टर क्रिस्टॉलर
(D) अर्नेस्ट बर्गेस

255. निम्नलिखित में से कौन सांस्कृतिक मंडल को परिभाषित करने का आधार नहीं है?
(A) भाषा
(B) धर्म
(C) तकनीक
(D) जनसंख्या घनत्व

256. अगस्त लोश क्रिस्टॉलर के मॉडल से किस प्रकार अलग हुए:
(A) बाजार क्षेत्रों के लिए षटकोणीय के बजाय वर्गों का उपयोग करके।
(B) यह तर्क देकर कि फर्म का स्थान लाभ को अधिकतम करता है, जिससे उत्पादन केंद्र बनते हैं।
(C) उपभोक्ता व्यवहार की भूमिका को नजरअंदाज करके।
(D) केवल कृषि अधिवासों पर ध्यान केंद्रित करके।

257. मुख्य रूप से कृषि से आवासीय और वाणिज्यिक में बदलने वाला क्षेत्र किसकी विशेषता है:
(A) केंद्रीय व्यापारिक जिला
(B) नगरीय उपांत
(C) स्थापित उच्च आय वाला क्षेत्र

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) एक्यूमीन
एक्यूमीन शब्द यूनानी मूल का है, जो पृथ्वी के उन क्षेत्रों को दर्शाता है जहाँ मनुष्य स्थायी रूप से निवास करते हैं। इसमें कृषि, उद्योग और व्यापार जैसी मानवीय गतिविधियों के लिए उपयुक्त भू-भाग शामिल होते हैं। यह विश्व के उन हिस्सों को चिह्नित करता है जो मानवीय आवास के लिए अनुकूल हैं। इसके विपरीत, एनेकुमीन उन निर्जन क्षेत्रों को कहते हैं जहाँ स्थायी निवास संभव नहीं है।

2. (A) विश्व की 80% से अधिक जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध में रहती है।
विश्व की जनसंख्या का वितरण अत्यधिक असमान है और लगभग 90 प्रतिशत लोग उत्तरी गोलार्द्ध में निवास करते हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ विशाल भूमि क्षेत्र, अनुकूल जलवायु और उपजाऊ मैदानों की उपलब्धता है। अधिकांश लोग समुद्र तल से कम ऊँचाई वाले मैदानी भागों में बसना पसंद करते हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध में भूमि की तुलना में जल का विस्तार अधिक होने के कारण जनसंख्या घनत्व बहुत कम है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
जनसांख्यिकी में प्रजननता और जननक्षमता दो अलग अवधारणाएं हैं। प्रजननता किसी व्यक्ति या समूह द्वारा वास्तव में पैदा किए गए बच्चों की संख्या को दर्शाती है, जिसे सामान्यतः जन्म दर से मापा जाता है। इसके विपरीत, जननक्षमता उस जैविक क्षमता को इंगित करती है जिसके माध्यम से एक महिला गर्भधारण कर सकती है। यह क्षमता स्वास्थ्य और पोषण पर निर्भर करती है, जबकि वास्तविक प्रदर्शन सामाजिक निर्णयों से प्रभावित होता है।

4. (D) मार्क जेफरसन
प्रमुख शहर की अवधारणा को मार्क जेफरसन ने वर्ष 1939 में प्रस्तुत किया था। उन्होंने देखा कि कई देशों में एक मुख्य शहर अन्य सभी शहरों की तुलना में आकार और प्रभाव में बहुत बड़ा होता है। यह शहर न केवल जनसंख्या में अग्रणी होता है, बल्कि राष्ट्रीय संस्कृति, राजनीति और अर्थव्यवस्था का केंद्र भी बन जाता है। ऐसी शहरी संरचना अक्सर उन देशों में मिलती है जहाँ शक्ति केंद्रित होती है।

5. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
अशोधित जन्म दर प्रति हजार जनसंख्या पर जीवित जन्मों की संख्या है। सामान्य प्रजनन दर केवल प्रजनन आयु की महिलाओं पर आधारित होती है। कुल प्रजनन दर एक महिला द्वारा अपने जीवनकाल में पैदा किए जाने वाले बच्चों की औसत संख्या को दर्शाती है। सकल पुनरुत्पादन दर विशेष रूप से पैदा होने वाली बेटियों की संख्या पर ध्यान केंद्रित करती है, जो अगली पीढ़ी की माताओं की क्षमता को मापती है।

6. (B) आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में शहर का बाहर की ओर विस्तार।
नगरीय उपांत वह संक्रमणकालीन क्षेत्र है जो विस्तृत शहरी केंद्र और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्थित होता है। इसका निर्माण तब होता है जब शहर अपनी सीमाओं से बाहर फैलने लगता है और कृषि भूमि आवासीय या औद्योगिक उद्देश्यों के लिए परिवर्तित होने लगती है। इस क्षेत्र में शहरी और ग्रामीण दोनों विशेषताएँ पाई जाती हैं। यहाँ भूमि उपयोग में तेजी से बदलाव और अक्सर बुनियादी सुविधाओं का अभाव देखा जाता है।

7. (D) कुल प्रजनन दर (TFR)
कुल प्रजनन दर दो देशों के प्रजनन स्तरों की तुलना के लिए सबसे उपयुक्त मानक है क्योंकि यह आयु संरचना के प्रभाव से मुक्त होता है। यह एक काल्पनिक संख्या है जो बताती है कि एक महिला अपने संपूर्ण प्रजनन काल में औसत कितने बच्चों को जन्म देगी। अन्य माप जैसे अशोधित जन्म दर, जनसंख्या की आयु संरचना से प्रभावित होते हैं, जिससे वे तुलना के लिए कम सटीक माने जाते हैं।

8. (A) केवल 1 और 2
कोटि-आकार नियम जॉर्ज जिफ द्वारा प्रतिपादित किया गया था। यह बताता है कि किसी शहर की जनसंख्या उसकी रैंक के व्युत्क्रमानुपाती होती है। यदि किसी देश में एक प्रमुख शहर मौजूद है, तो वह इस नियम का पालन नहीं करता क्योंकि वह अन्य शहरों से बहुत बड़ा होता है। इस नियम का पालन करने वाली शहरी प्रणालियों में विकास का वितरण अधिक संतुलित और श्रेणीबद्ध तरीके से होता है।

9. (C) 1.5%
प्राकृतिक वृद्धि दर की गणना अशोधित जन्म दर में से अशोधित मृत्यु दर को घटाकर की जाती है। इस प्रश्न में जन्म दर 25 और मृत्यु दर 10 है, जिसका अंतर 15 आता है। चूंकि यह गणना प्रति 1,000 व्यक्तियों पर होती है, इसलिए प्रतिशत में बदलने के लिए इसे 10 से विभाजित करते हैं। अतः 15 को 10 से विभाजित करने पर 1.5% प्राप्त होता है, जो स्वाभाविक वृद्धि को दर्शाता है।

10. (A) इसकी विशेषता सुव्यवस्थित और एकीकृत सार्वजनिक सेवाएं हैं।
नगरीय उपांत में अक्सर सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे का अभाव होता है क्योंकि यह क्षेत्र शहरी प्रशासन और ग्रामीण निकायों के बीच स्थित होता है। यहाँ बिजली, पानी और परिवहन जैसी सुविधाएँ मुख्य शहर की तुलना में कम विकसित और असंगठित होती हैं। इस क्षेत्र में ग्रामीण और शहरी भूमि उपयोग का मिश्रण होता है और अनियोजित निर्माण के कारण नियोजन संबंधी गंभीर समस्याएँ पैदा होती हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

3. शहर के आकारों का नियमित पदानुक्रम
4. सीबीडी के चारों ओर छल्लों की श्रृंखला

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

270. 1.0 की शुद्ध पुनरुत्पादन दर (NRR) इंगित करती है कि:
(A) जनसंख्या घट रही है।
(B) महिलाओं की प्रत्येक पीढ़ी स्वयं को बिल्कुल प्रतिस्थापित कर रही है।
(C) कुल प्रजनन दर 1.0 है।
(D) जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।

271. प्रवास अध्ययनों में, 'अंतवर्ती अवसर' किसे संदर्भित करते हैं:
(A) प्रवास को रोकने वाली बाधाएं।
(B) निकटवर्ती, वैकल्पिक गंतव्य जो एक प्रवासी के लिए आकर्षक हैं।
(C) अंतिम गंतव्य में नौकरी की संभावनाएं।
(D) वे परिवार और दोस्त जो पहले ही प्रवास कर चुके हैं।

272. शहर के 'Umland' या हिंटरलैंड की सीमा आमतौर पर होती है:
(A) एक तीक्ष्ण, कानूनी रूप से परिभाषित रेखा।
(B) धुंधली और संक्रमणकालीन, जो अलग-अलग वस्तुओं के लिए अलग-अलग होती है।
(C) नगरीय उपांत की सीमा के समान।
(D) नदियों और पहाड़ों जैसी भौतिक विशेषताओं द्वारा निर्धारित।

273. "मेगालोपोलिस" शब्द को जीन गॉटमैन द्वारा किस शहरी गलियारे का वर्णन करने के लिए लोकप्रिय बनाया गया था:
(A) जापान में टोक्यो-ओसाका बेल्ट।
(B) जर्मनी में राइन-रुहर घाटी।
(C) उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका।
(D) ब्राजील में साओ पाउलो-रियो डी जनेरियो अक्ष।

274. अधिवास भूगोल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कोटि-आकार नियम और प्राइमेट शहर अवधारणा किसी देश के शहरी पदानुक्रम का वर्णन करने के दो तरीके हैं।
2. प्राइमेट शहर प्रतिरूप एक संतुलित शहरी प्रणाली का उदाहरण है।
3. क्रिस्टॉलर का सिद्धांत अधिवासों की संख्या, आकार और अंतराल को समझाने में मदद करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

275. मृत्यु दर में गिरावट जो जनसांख्यिकीय संक्रमण के चरण 2 की शुरुआत करती है, उसका परिणाम है:
(A) जन्म दर में गिरावट।
(B) 18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति।
(C) चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों का प्रसार।
(D) बड़े पैमाने पर उत्प्रवास।

276. 'एज सिटी', उपनगरीय बिजनेस पार्क और बड़े मॉल को किसके द्वारा सबसे अच्छी तरह समझाया गया है:
(A) संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
(B) सेक्टर मॉडल
(C) बहु-नाभिक मॉडल
(D) केंद्रीय स्थान सिद्धांत

277. निम्नलिखित में से कौन मर्त्यता का एक माप है?
(A) कुल प्रजनन दर
(B) सामान्य प्रजनन दर
(C) मातृ मृत्यु अनुपात
(D) अशोधित जन्म दर

278. क्रिस्टॉलर के मॉडल में बाजार क्षेत्रों का षटकोणीय आकार इसलिए उपयोग किया जाता है क्योंकि षट्कोण:
(A) पूरी तरह से फिट होते हैं और केंद्र से दूरी को कम करते हैं।
(B) खींचने में सबसे आसान आकृति हैं।
(C) सौंदर्य की दृष्टि से सबसे सुखद आकृति हैं।
(D) प्रशासनिक जिलों के ऐतिहासिक आकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

279. तीन या अधिक बच्चों वाले परिवारों के लिए कर छूट और सब्सिडी प्रदान करने वाली नीति है:
(A) एक प्रति-प्रसववादी नीति
(B) एक प्रसववादी नीति
(C) एक शून्य-वृद्धि नीति
(D) एक प्रवास नीति

280. नगरीय उपांत में मुख्य चुनौती है:
(A) संपत्ति मूल्यों में गिरावट।
(B) नए आवासों की माँग की कमी।
(C) शहरी विस्तार और ग्रामीण भूमि संरक्षण के बीच संघर्ष।
(D) भारी उद्योग का उच्च संकेंद्रण।

281. 'जनसंख्या विस्फोट' शब्द जनसांख्यिकीय संक्रमण के किस चरण के दौरान होने वाली वृद्धि को संदर्भित करता है?
(A) चरण 1
(B) चरण 2
(C) चरण 3
(D) चरण 4

Downloaded from www.pdf.tube

(D) भारी उद्योग का क्षेत्र

258. केंद्रीय स्थान सिद्धांत के संदर्भ में 'केंद्रीयता' का क्या अर्थ है?
(A) देश के बीच में किसी अधिवास की भौगोलिक स्थिति।
(B) वह सीमा जिस तक कोई स्थान अपने क्षेत्र को वस्तुओं और सेवाओं के साथ सेवा प्रदान करता है।
(C) किसी अधिवास की जनसंख्या का आकार।
(D) किसी अधिवास का ऐतिहासिक महत्व।

259. कौन सी स्थिति जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरण 4 में एक देश का सबसे अच्छा वर्णन करती है?
(A) उच्च जन्म दर, तेजी से गिरती मृत्यु दर।
(B) उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर।
(C) निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर, स्थिर जनसंख्या।
(D) गिरती जन्म दर, निम्न मृत्यु दर।

260. 1984 का अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या सम्मेलन, जिसने बुखारेस्ट सम्मेलन के बाद की प्रगति की समीक्षा की, कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) काहिरा
(B) रियो डी जनेरियो
(C) बीजिंग
(D) मेक्सिको सिटी

261. "जेंट्रीफिकेशन" एक शहरी पारिस्थितिक प्रक्रिया है जिसमें शामिल है:
(A) शहर से बाहर उद्योगों की आवाजाही।
(B) अधिक संपन्न निवासियों द्वारा खराब मोहल्लों का नवीनीकरण।
(C) उपनगरीय सीमा पर कम घनत्व वाले आवासों का विस्तार।
(D) विशिष्ट मोहल्लों में जातीय अल्पसंख्यकों का क्लस्टरिंग।

262. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): प्राइमेट शहर वितरण वाला देश कोटि-आकार नियम के अनुरूप नहीं होता है।
कारण (R): प्राइमेट शहर दूसरे और निचले दर्जे के शहरों की तुलना में असंगत रूप से बड़ी होती है, जो कोटि-आकार नियम द्वारा प्रस्तावित व्युत्क्रम संबंध का उल्लंघन करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

263. एक केंद्रीय स्थान का "पूरक क्षेत्र" उसका है:
(A) औद्योगिक क्षेत्र
(B) हिंटरलैंड या बाजार क्षेत्र
(C) केंद्रीय व्यापारिक जिला
(D) आवासीय उपनगर

264. निम्नलिखित अधिवास प्रकारों को एक विशिष्ट अधिवास पदानुक्रम में निम्नतम से उच्चतम स्थान तक व्यवस्थित करें:
1. शहर
2. पुरवा
3. कस्बा
4. गाँव
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 1, 3, 4, 2
(D) 2, 3, 4, 1

NODIA

265. किसी देश में उच्च कायिक घनत्व क्या सुझाव देता है:
(A) कृषि योग्य भूमि की बड़ी मात्रा उपलब्ध है।
(B) जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए कृषि भूमि पर महत्वपूर्ण दबाव है।
(C) देश अत्यधिक शहरीकृत है।
(D) जनसंख्या समान रूप से वितरित है।

266. लोश के केंद्रीय स्थान मॉडल की प्राथमिक आलोचना निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह बहुत सरल और कठोर है।
(B) यह लाभ जैसे आर्थिक कारकों पर विचार करने में विफल रहता है।
(C) परिणामी परिदृश्य अत्यंत जटिल और लागू करना कठिन है।
(D) यह केवल प्रशासनिक कार्यों पर लागू होता है।

267. "चीनी" या "पूर्वी एशियाई" सांस्कृतिक मंडल किसके प्रभाव से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है:
(A) ओटोमन साम्राज्य
(B) रोमन साम्राज्य
(C) चीनी सभ्यता
(D) फारसी साम्राज्य

268. प्राइमेट शहर और गैर-प्राइमेट शहरी प्रणाली के बीच मुख्य अंतर है:
(A) देश की कुल जनसंख्या।
(B) अन्य शहरों पर सबसे बड़े शहर के प्रभुत्व की सीमा।
(C) सबसे बड़े शहर की भौगोलिक स्थिति।
(D) सबसे बड़े शहर का मुख्य आर्थिक कार्य।

269. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प चुनें।
सूची I: (शहरी मॉडल/अवधारणा)
P. संकेंद्रित क्षेत्र
Q. सेक्टर मॉडल
R. बहु-नाभिक
S. कोटि-आकार नियम
सूची II: (मुख्य विशेषता)
1. परिवहन गलियारों के साथ विकास
2. कई विकास बिंदुओं के चारों ओर विकास

(A) होमर होयट
(B) अगस्त लोश
(C) अर्नेस्ट बर्गेस
(D) मार्क जेफरसन

295. आयु, लिंग और वैवाहिक स्थिति जैसी जनसंख्या विशेषताओं के अध्ययन को कहा जाता है:
(A) जनसंख्या वितरण
(B) जनसंख्या संरचना
(C) जनसंख्या वृद्धि
(D) जनसंख्या घनत्व

296. ग्रामीण-शहरी उपांत में एक प्रमुख समस्या किसके बीच संघर्ष है:
(A) उच्च-घनत्व आवासीय और वाणिज्यिक उपयोग।
(B) औद्योगिक और बंदरगाह गतिविधियाँ।
(C) पारंपरिक कृषि और अतिक्रमण करते शहरी भूमि उपयोग।
(D) केंद्र सरकार और स्थानीय सरकार।

297. निम्नलिखित में से कौन सा 'स्लाव' सांस्कृतिक मंडल का एक परिभाषित गुण है?
(A) सिरिलिक लिपि और पूर्वी रूढ़िवादी ईसाई धर्म का ऐतिहासिक प्रभाव।
(B) इस्लाम और अरबी भाषा का प्रभुत्व।
(C) कन्फ्यूशियसवाद पर आधारित सांस्कृतिक विरासत।
(D) रोमांस भाषाओं का प्रसार।

298. यदि किसी जनसंख्या की वृद्धि दर प्रति वर्ष 2% है, तो उसका अनुमानित दोगुना होने का समय होगा:
(A) 70 वर्ष
(B) 50 वर्ष
(C) 35 वर्ष
(D) 20 वर्ष

299. प्राइमेट शहर की अवधारणा, कोटि-आकार नियम और केंद्रीय स्थान सिद्धांत किसके अध्ययन के लिए मौलिक हैं:
(A) जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप
(B) शहरी प्रणाली और अधिवास पदानुक्रम
(C) प्रवास सिद्धांत
(D) विश्व के सांस्कृतिक मंडल

300. शहरी विकास की पारिस्थितिक प्रक्रिया में निम्नलिखित में से किसके अलावा सभी शामिल हैं?
(A) केंद्रीयकरण
(B) उत्तराधिकार
(C) ध्रुवीकरण
(D) आक्रमण

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

282. इनमें से कौन सा विश्व जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाला प्राथमिक कारक नहीं है?
(A) जलवायु
(B) स्थलाकृति
(C) मृदा
(D) अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा

283. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
कथन I: किसी देश में घनत्व उच्च हो सकता है लेकिन यदि उसके पास विशाल संसाधन हैं तो वह अल्प-जनसंख्या वाला हो सकता है।
कथन II: अति-जनसंख्या एक सापेक्ष अवधारणा है जो जनसंख्या को प्रौद्योगिकी से जोड़ती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

284. लोश के मॉडल में, एक केंद्रीय महानगर के चारों ओर षटकोणीय बाजार क्षेत्रों को घुमाने का लक्ष्य है:
(A) खंडों में अधिवासों और परिवहन मार्गों की संख्या को अधिकतम करना।
(B) एक साधारण, समान पदानुक्रम बनाना।
(C) प्रशासनिक दक्षता सुनिश्चित करना।
(D) संकेंद्रित क्षेत्र प्रतिरूप का पालन करना।

285. "श्रृंखला प्रवास" उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जहाँ:
(A) प्रवासी छोटे से बड़े स्थानों की ओर चरणों में चलते हैं।
(B) प्रवासी एक नए गंतव्य पर अपने रिश्तेदारों या समुदाय के सदस्यों का अनुसरण करते हैं।
(C) प्रवास किसी बाहरी शक्ति द्वारा मजबूर किया जाता है।
(D) प्रवासी एक निश्चित समय के बाद अपने मूल स्थान पर लौट आते हैं।

286. केंद्रीय स्थान सिद्धांत में उच्च-क्रम की वस्तु का उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) ब्रेड
(B) समाचार पत्र
(C) एक लग्जरी कार
(D) दूध

287. पेरिस शहर, जो फ्रांस के किसी भी अन्य शहर की तुलना में अत्यधिक बड़ा है, किसका उदाहरण है:
(A) मेगालोपोलिस
(B) केंद्रीय स्थान
(C) प्राइमेट शहर
(D) एज सिटी

288. वह पारिस्थितिक प्रक्रिया जिसके द्वारा एक नया जातीय समूह या भूमि उपयोग किसी मोहल्ले में प्रवेश करता है, कहलाती है:
(A) उत्तराधिकार
(B) पृथक्करण
(C) आक्रमण
(D) केंद्रीयकरण

289. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अधिकांश क्षेत्रों में अधिवास पदानुक्रम उतना नियमित नहीं है जितना कि मॉडलों द्वारा भविष्यवाणी की गई है।
कारण (R): स्थलाकृति, संसाधन वितरण और ऐतिहासिक विकास आदर्श प्रतिरूपों को विकृत कर देते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

290. आयु संरचना के प्रभाव के कारण अंतर्राष्ट्रीय तुलनाओं के लिए कौन सी दर सबसे कम उपयोगी है?
(A) कुल प्रजनन दर (TFR)
(B) आयु-विशिष्ट मृत्यु दर (ASDR)
(C) अशोधित मृत्यु दर (CDR)
(D) जीवन प्रत्याशा

291. शहर का 'प्रभाव क्षेत्र' किसके लिए एक और शब्द है:
(A) कानूनी शहर सीमाएं
(B) केंद्रीय व्यापारिक जिला
(C) नगर-क्षेत्र या हिंटरलैंड
(D) ऐतिहासिक कोर

292. क्रिस्टॉलर के सिद्धांत में बाजार सिद्धांत (K=3) को इसलिए यह नाम दिया गया है क्योंकि यह:
(A) उपलब्ध परिवहन मार्गों की संख्या को अधिकतम करता है।
(B) न्यूनतम केंद्रों से उपभोक्ताओं को कुशलतापूर्वक वस्तुएं प्रदान करता है।
(C) यह सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिकों के पास एक स्थानीय सरकारी कार्यालय हो।
(D) मार्केटिंग पेशेवरों द्वारा विकसित किया गया था।

NODIA

293. एक आयु-लिंग पिरामिड जो नीचे की तुलना में ऊपर की ओर अधिक चौड़ा है, वह देश अनुभव कर रहा है:
(A) जनसंख्या विस्फोट
(B) एक वृद्ध होती और संभावित रूप से घटती जनसंख्या
(C) एक स्थिर जनसंख्या
(D) उच्च शिशु मृत्यु दर

294. किस भूगोलवेत्ता ने लाभ अधिकतमकरण पर केंद्रित एक मॉडल बनाने के लिए केंद्रीय स्थान सिद्धांत को संशोधित किया?

11. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल यह स्पष्ट करता है कि समाज कैसे उच्च जन्म और मृत्यु दर से निम्न स्तर की ओर बढ़ता है। यह परिवर्तन मुख्य रूप से आर्थिक उन्नति और वैज्ञानिक प्रगति का परिणाम है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मृत्यु दर गिरती है और बाद में सामाजिक जागरूकता से जन्म दर भी कम हो जाती है। अतः विकास ही इस परिवर्तन का मूल आधार है जो जनसंख्या को स्थिर बनाता है।

12. (B) स्थिरता
शहरी पारिस्थितिकी में विकास की प्रक्रियाएँ गतिशील होती हैं, जिनमें आक्रमण, उत्तराधिकार और केंद्रीकरण शामिल हैं। आक्रमण तब होता है जब नया भूमि उपयोग या जनसंख्या समूह किसी क्षेत्र में प्रवेश करता है। इसके बाद उत्तराधिकार की स्थिति आती है जहाँ नया समूह पुराने पर हावी हो जाता है। स्थिरता शहरी विकास की पारिस्थितिक प्रक्रिया नहीं है क्योंकि शहर हमेशा बदलते रहते हैं और कभी स्थिर नहीं होते।

13. (C) जनसंख्या के भीतर होने वाली मौतों की आवृत्ति का अध्ययन।
जनसंख्या भूगोल में मर्त्यता का तात्पर्य किसी जनसंख्या में मृत्यु की घटनाओं, उनके कारणों और वितरण के विश्लेषण से है। यह जनसांख्यिकीय परिवर्तनों को समझने का महत्वपूर्ण संकेतक है क्योंकि यह जनसंख्या के आकार और संरचना को प्रभावित करता है। इसके अध्ययन से समाज के स्वास्थ्य स्तर, जीवन प्रत्याशा और स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता का पता चलता है। यह विकासशील और विकसित समाजों के बीच अंतर को स्पष्ट करता है।

14. (A) 2, 4, 1, 3
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरणों का सही क्रम उच्च स्थिर से शुरू होकर निम्न स्थिर पर समाप्त होता है। प्रथम चरण में उच्च जन्म और मृत्यु दर होती है। द्वितीय चरण में मृत्यु दर गिरने लगती है। तृतीय चरण में जन्म दर भी कम होने लगती है। चतुर्थ चरण में निम्न जन्म और मृत्यु दर के साथ जनसंख्या स्थिर हो जाती है। यह क्रम देश के आर्थिक परिवर्तन की यात्रा को स्पष्ट करता है।

15. (A) कोटि-आकार नियम - जॉर्ज के. जिफ
कोटि-आकार नियम जॉर्ज जिफ द्वारा प्रतिपादित किया गया था, जो शहरी पदानुक्रम में शहरों के आकार और श्रेणी के बीच संबंध बताता है। मार्क जेफरसन ने प्रमुख शहर की अवधारणा दी थी, जबकि वाल्टर क्रिस्टॉलर ने केंद्रीय स्थान सिद्धांत प्रस्तुत किया था। अगस्त लोश ने आर्थिक परिदृश्य का सिद्धांत दिया था। अतः विकल्प (A) सही सुमेलित है क्योंकि जिफ का योगदान शहरी भूगोल में सांख्यिकीय संबंधों के लिए प्रसिद्ध है।

16. (B) चरण 2
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण में मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है, जबकि जन्म दर उच्च बनी रहती है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण लोग लंबे समय तक जीवित रहते हैं, लेकिन पारंपरिक सोच के कारण जन्म दर तुरंत कम नहीं होती। इन दोनों दरों के बीच का विशाल अंतर जनसंख्या में तीव्र वृद्धि पैदा करता है, जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता है। यह चरण औद्योगीकरण के दौरान देखा जाता है।

17. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'परास' वह अधिकतम दूरी है जिसे उपभोक्ता वस्तु खरीदने के लिए तय करने को तैयार रहता है। उच्च मूल्य की वस्तुओं के लिए यह दूरी अधिक होती है। 'देहली' उस न्यूनतम जनसंख्या को संदर्भित करती है जो किसी सेवा को लाभदायक बनाए रखने के लिए आवश्यक है। ये दोनों अवधारणाएँ मिलकर निर्धारित करती हैं कि सेवा केंद्र कहाँ स्थित होंगे और उनके बाजार का विस्तार कितना होगा।

18. (A) गंतव्य स्थान पर बेहतर शैक्षिक सुविधाएं
आकर्षण कारक वे सकारात्मक स्थितियाँ हैं जो लोगों को नए स्थान की ओर खींचती हैं। इसमें बेहतर रोजगार, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और स्थिर राजनीतिक वातावरण शामिल हैं। इसके विपरीत, राजनीतिक अस्थिरता और नौकरियों की कमी प्रतिकर्ष कारक हैं जो लोगों को मूल स्थान छोड़ने पर मजबूर करते हैं। अतः गंतव्य पर उपलब्ध सुविधाएँ प्रवासियों को आकर्षित करती हैं, जिससे वे जीवन स्तर सुधारने के लिए वहां बसते हैं।

19. (C) शहरों के आकार का एक लॉग-लीनियर वितरण।
कोटि-आकार नियम शहरी प्रणालियों में शहरों की जनसंख्या और उनकी रैंकिंग के बीच नियमित सांख्यिकीय संबंध का वर्णन करता है। जब इसे ग्राफ पेपर पर अंकित किया जाता है, तो यह एक सीधी रेखा के रूप में दिखाई देता है, जिसे लॉग-लीनियर वितरण कहते हैं। यह नियम बताता है कि दूसरा सबसे बड़ा शहर पहले शहर का आधा होगा। यह प्रतिरूप संतुलित आर्थिक विकास वाले देशों में पाया जाता है।

20. (D) प्रसववादी नीति
प्रसववादी नीतियां उन सरकारी प्रयासों को संदर्भित करती हैं जो जन्म दर बढ़ाने और परिवारों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ऐसी नीतियां अक्सर उन देशों द्वारा अपनाई जाती हैं जहाँ जनसंख्या घट रही हो या कार्यबल की कमी हो। इन उपायों में नकद प्रोत्साहन, सवैतनिक अवकाश और सब्सिडी शामिल हो सकती है। इसके विपरीत, प्रति-प्रसववादी नीतियां जनसंख्या वृद्धि को कम करने का प्रयास करती हैं।

21. (C) औपचारिक सीमाओं से परे विस्तारित आर्थिक और सामाजिक प्रभुत्व का क्षेत्र।
नगर-क्षेत्र एक कार्यात्मक अवधारणा है जो शहर की केवल प्रशासनिक सीमाओं तक सीमित नहीं होती। यह उस व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को दर्शाता है जो शहर के साथ दैनिक आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से गहराई से जुड़ा होता है। इस क्षेत्र के लोग अपनी जरूरतों के लिए मुख्य शहर पर निर्भर रहते हैं। इसे शहर के प्रभाव क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, जहाँ शहरी प्रभाव आसपास तक महसूस होता है।

Downloaded from www.pdf.tube

इसी क्रम में आगे भी। यह नियम एक संतुलित शहरी प्रणाली के भीतर शहरों के जनसंख्या वितरण और उनके सापेक्ष आकार के बीच संबंध प्रस्तुत करता है।

64. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
रेवेनस्टीन ने 'प्रवास के नियम' दिए थे, जो मानव प्रवास की प्रवृत्तियों को समझाते हैं। थॉम्पसन और नोटेस्टीन ने जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल विकसित किया था। एकरमैन ने विश्व को विभिन्न जनसंख्या-संसाधन क्षेत्रों में विभाजित किया। विल्बर जेलिंस्की ने गतिशीलता संक्रमण मॉडल प्रस्तुत किया, जो प्रवास को विकास के चरणों से जोड़ता है। ये सभी विद्वान और उनकी अवधारणाएँ जनसंख्या भूगोल के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो बस्तियों के परिवर्तनों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं।

65. (D) 1, 2 और 3
शहरी विकास में संकेंद्रण, विकेंद्रीकरण और पृथक्करण तीनों महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ हैं। संकेंद्रण शहर के केंद्र में आर्थिक और प्रशासनिक गतिविधियों को जमा करता है। इसके विपरीत, विकेंद्रीकरण में लोग और सेवाएँ शहर की भीड़भाड़ से दूर बाहरी हिस्सों की ओर जाते हैं। पृथक्करण की प्रक्रिया विभिन्न सामाजिक समूहों को उनकी आय के अनुसार अलग-अलग क्षेत्रों में बांट देती है। ये तीनों प्रक्रियाएँ मिलकर आधुनिक शहरों के सामाजिक और भौतिक ढांचे को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती हैं।

66. (A) किसी जनसंख्या में मृत्यु के कारणों, स्तरों और प्रतिरूपों की जांच करना।
मर्त्यता विश्लेषण जनसंख्या भूगोल का एक मुख्य स्तंभ है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य यह समझना है कि किसी विशेष क्षेत्र में मृत्यु कितनी बार और किन कारणों से हो रही है। इसमें आयु, लिंग और व्यवसाय के आधार पर मृत्यु दर के भिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है। यह विश्लेषण न केवल स्वास्थ्य प्रवृत्तियों को उजागर करता है बल्कि सरकार को बेहतर स्वास्थ्य नीतियां बनाने में भी मदद करता है। समाज में मर्त्यता का निम्न स्तर वहां के बेहतर जीवन स्तर का सूचक है।

67. (C) अधिवासों की संख्या को अधिकतम करने के लिए षटकोणीय नेटवर्क का घुमाव।
अगस्त लोश ने अपने मॉडल में केंद्रीय स्थानों को व्यवस्थित करने के लिए षटकोणीय जालों का उपयोग किया था। उन्होंने तर्क दिया कि इन जालों को इस तरह घुमाया जाना चाहिए कि अधिक से अधिक आर्थिक केंद्र और बाजार क्षेत्र एक साथ मिल सकें। इस प्रक्रिया से कुछ क्षेत्रों में 'शहर-धनी' खंड बन जाते हैं जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ सघन होती हैं। लोश का यह दृष्टिकोण फर्मों को अपने मुनाफे को अधिकतम करने की अनुमति देता है और यह क्रिस्टॉलर के पदानुक्रम की तुलना में अधिक लचीला माना जाता है।

68. (D) हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म
भारतीय सांस्कृतिक मंडल की पहचान मुख्य रूप से हिंदू और बौद्ध धर्मों की गहरी ऐतिहासिक जड़ों से होती है। ये दोनों धर्म इस क्षेत्र के रीति-रिवाजों, कला, वास्तुकला और सामाजिक संरचना में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यद्यपि यह क्षेत्र अन्य धर्मों का भी घर है, लेकिन इन दो धर्मों ने दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक पहचान को आकार देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनकी शिक्षाएं और जीवन मूल्य भारतीय समाज के दैनिक व्यवहार और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का मुख्य आधार हैं।

69. (C) मृत्यु दर निम्न बनी रहती है और जन्म दर में महत्वपूर्ण गिरावट आने लगती है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के तीसरे चरण में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के कारण जन्म दर में कमी आने लगती है। लोग छोटे परिवारों के महत्व को समझने लगते हैं और महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ती है। चूँकि स्वास्थ्य सेवाओं के कारण मृत्यु दर पहले ही कम हो चुकी होती है, इसलिए इस चरण में जनसंख्या वृद्धि तो होती है, लेकिन उसकी दर धीमी पड़ने लगती है। यह चरण समाज के कृषि प्रधान से औद्योगिक समाज में बदलने की अवस्था को दर्शाता है।

70. (B) युद्ध या उत्पीड़न के कारण किसी देश से भाग रहे लोग।
जबरन प्रवास वह स्थिति है जहाँ लोगों के पास अपना स्थान छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। यह अक्सर युद्ध, राजनीतिक उत्पीड़न, जातीय हिंसा या प्राकृतिक आपदाओं के कारण होता है। ऐसे प्रवासियों को अक्सर शरणार्थी कहा जाता है क्योंकि वे अपनी सुरक्षा के लिए पलायन करते हैं। इसके विपरीत, बेहतर नौकरी के लिए जाना स्वैच्छिक प्रवास का उदाहरण है। जबरन प्रवास मानवीय संकट की एक गंभीर स्थिति को दर्शाता है और इसके राजनीतिक परिणाम बहुत गहरे होते हैं।

71. (D) महानगरीय क्षेत्रों के विलय से बना एक विशाल, निरंतर शहरीकृत क्षेत्र।
'मेगालोपोलिस' शब्द का प्रयोग उन विशाल शहरी गलियारों के लिए किया जाता है जहाँ कई बड़े शहर और महानगर आपस में जुड़कर एक निरंतर निर्मित क्षेत्र बना लेते हैं। इस शब्द को जीन गॉटमैन ने अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट के संदर्भ में लोकप्रिय बनाया था। यहाँ परिवहन और संचार के जाल इतने घने होते हैं कि एक शहर कहाँ समाप्त होता है और दूसरा कहाँ शुरू, यह बताना कठिन हो जाता है। यह शहरीकरण के उच्चतम स्तर को दर्शाता है जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ एकीकृत होती हैं।

72. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
जनसंख्या पिरामिड किसी देश की आयु-लिंग संरचना को दर्शाने वाला एक ग्राफिकल उपकरण है। यदि इसका आधार चौड़ा है, तो इसका अर्थ है कि वहां उच्च जन्म दर है और युवा जनसंख्या अधिक है। इसके विपरीत, संकीर्ण आधार और चौड़ा शीर्ष यह इंगित करता है कि जन्म दर कम हो गई है और वृद्ध लोगों का अनुपात बढ़ रहा है। ये पिरामिड सरकारों को भविष्य की जरूरतों, जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं, की योजना बनाने में मदद करते हैं। अतः दोनों कथन सही हैं।

प्रवास को बढ़ावा देती है, जो आर्थिक ढांचे में बदलाव का संकेत है।

33. (B) उच्च आय वाले आवासीय आवास
संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल में संक्रमण क्षेत्र केंद्रीय व्यापार जिले के ठीक बाहर स्थित होता है। यह क्षेत्र आवासीय संपत्तियों के बिगड़ने और व्यापार द्वारा अतिक्रमण की विशेषता रखता है। यहाँ अक्सर नए प्रवासियों और कम आय वाले लोगों का संकेंद्रण होता है, इसलिए यहाँ उच्च आय वाले आवास नहीं पाए जाते। उच्च आय वाले लोग शहर के शोर से दूर बाहरी शांत क्षेत्रों या उपनगरों में रहना पसंद करते हैं।

34. (A) वह सीमा जिस तक सबसे बड़ा शहर किसी देश की शहरी प्रणाली पर हावी है।
प्रमुखता सूचकांक यह मापता है कि किसी देश का सबसे बड़ा शहर अन्य बड़े शहरों की तुलना में कितना प्रभावशाली है। यदि सबसे बड़ा शहर अन्य शहरों के कुल योग से भी बड़ा है, तो यह उच्च स्तर की प्रमुखता को दर्शाता है। यह स्थिति अक्सर विकासशील देशों में देखी जाती है जहाँ निवेश केवल एक ही बड़े केंद्र में केंद्रित होता है। यह शहरी प्रणाली में स्थानिक असमानता का सूचक है।

35. (C) k = 3
वाल्टर क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में k=3 मान को 'बाजार सिद्धांत' कहा जाता है। यह सिद्धांत मानता है कि निचले स्तर के केंद्रों का वितरण ऐसा होना चाहिए कि वे उच्च स्तर के केंद्रों के बाजार क्षेत्रों की सीमाओं पर हों। इसमें प्रत्येक उच्च-क्रम का केंद्र अपने और छह पड़ोसी निम्न-क्रम केंद्रों के एक-तिहाई हिस्से की सेवा करता है। यह व्यवस्था उपभोक्ताओं को आपूर्ति के लिए कुशल मानी जाती है।

36. (D) अत्यधिक शुष्कता और जल संसाधनों की कमी।
सहारा रेगिस्तान में विरल जनसंख्या का कारण कठोर प्राकृतिक परिस्थितियाँ हैं। यहाँ वर्षा अत्यंत कम होती है और पीने या खेती के लिए पानी का अभाव है। अत्यधिक गर्मी और रेतीली भूमि कृषि विकास में बाधा डालती है, जिससे बड़े समुदायों का भरण-पोषण संभव नहीं हो पाता। केवल कुछ नखलिस्तानों में जहाँ पानी उपलब्ध है, वहीं छोटी बस्तियाँ पाई जाती हैं। अतः जलवायु ही जनसंख्या वितरण को निर्धारित करती है।

37. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जनसंख्या वितरण का अध्ययन बताता है कि लोग पृथ्वी की सतह पर कहाँ और कैसे फैले हुए हैं। हालाँकि, यह कहना गलत है कि केवल जनसंख्या घनत्व ही किसी क्षेत्र की सघनता निर्धारित करता है। अन्य कारक जैसे आयु संरचना, संसाधनों की उपलब्धता और आर्थिक गतिविधियाँ भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। केवल प्रति वर्ग किलोमीटर लोगों की संख्या से किसी क्षेत्र की विकास क्षमता का सही आकलन नहीं किया जा सकता।

38. (B) विकास दर से
जनसंख्या के 'दोगुना होने का समय' वह अवधि है जिसमें किसी क्षेत्र की वर्तमान जनसंख्या उसकी विकास दर के आधार पर दो गुनी हो जाएगी। यह सीधे तौर पर वार्षिक विकास दर से संबंधित है; विकास दर जितनी अधिक होगी, समय उतना ही कम होगा। इसे ज्ञात करने के लिए अक्सर '70 के नियम' का उपयोग किया जाता है, जिसमें 70 को विकास दर प्रतिशत से विभाजित किया जाता है। यह संसाधन नियोजन के लिए महत्वपूर्ण है।

39. (D) पृथक्करण
पृथक्करण शहरी पारिस्थितिकी की वह प्रक्रिया है जिसमें विशिष्ट जनसंख्या समूह, जैसे एक ही जाति, धर्म या आय वर्ग के लोग, शहर के विशेष क्षेत्रों में रहने की प्रवृत्ति रखते हैं। यह सामाजिक-आर्थिक असमानताओं का परिणाम हो सकता है। इसी तरह, कुछ व्यावसायिक गतिविधियाँ भी एक ही स्थान पर समूह बनाती हैं, जैसे कपड़ों का बाजार। यह प्रक्रिया शहर के भूगोल को अलग-अलग मोहल्लों और क्षेत्रों में विभाजित कर देती है।

40. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
अर्नेस्ट बर्गेस ने संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल विकसित किया था। होमर होयट ने सेक्टर मॉडल प्रस्तुत किया जिसमें विकास परिवहन लाइनों के साथ होता है। हैरिस और उलमैन ने बहु-नाभिक मॉडल दिया, जो बताता है कि शहरों में विकास के कई केंद्र होते हैं। वाल्टर क्रिस्टॉलर ने केंद्रीय स्थान सिद्धांत प्रतिपादित किया, जो बस्तियों के वितरण और पदानुक्रम को स्पष्ट करता है। ये मॉडल शहरी संरचना समझने के लिए आधारभूत हैं।

41. (C) ऐसी स्थिति जहाँ जनसंख्या पर्यावरण की वहन क्षमता से अधिक हो जाती है।
अति-जनसंख्या केवल लोगों की बड़ी संख्या नहीं है, बल्कि यह जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों के बीच असंतुलन को दर्शाती है। जब किसी क्षेत्र की आबादी इतनी अधिक हो जाती है कि प्राकृतिक संसाधन और बुनियादी ढांचा पर्याप्त जीवन स्तर प्रदान करने में असमर्थ हो जाते हैं, तो उसे अति-जनसंख्या कहा जाता है। इसे वहन क्षमता के उल्लंघन के रूप में देखा जाता है। यह स्थिति गरीबी और संसाधनों के क्षरण का कारण बनती है।

42. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कई विकासशील देशों में एक ही शहर, जो अक्सर राजधानी या प्रमुख बंदरगाह होता है, अन्य शहरों की तुलना में बहुत बड़ा हो जाता है। इसका प्रमुख ऐतिहासिक कारण औपनिवेशिक शासन है, जहाँ शासकों ने अपने हितों के लिए संसाधनों को एक ही केंद्र में केंद्रित किया था। स्वतंत्रता के बाद भी निवेश उसी पुराने केंद्र में होता रहा, जिससे वह शहर 'प्रमुख' बन गया। अतः कारण ही इस असंतुलित विकास की सही व्याख्या करता है।

43. (D) k = 7
क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में k=7 मान को 'प्रशासनिक सिद्धांत' कहा जाता है। इस सिद्धांत में प्रशासनिक नियंत्रण के

Click Here to Buy book on Amazon

सांस्कृतिक क्षेत्रों में वर्गीकृत करने और संस्कृतियों के प्रसार को समझने के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान किया। यद्यपि अन्य भूगोलवेत्ताओं ने भी इस विषय पर काम किया है, लेकिन जेलिंस्की का योगदान सांस्कृतिक भूगोल के क्षेत्र में विशेष रूप से जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के बीच संबंधों की व्याख्या के लिए शैक्षणिक स्तर पर प्रभावशाली माना जाता है।

102. (D) शहर के मुख्य भागों में आर्थिक और प्रशासनिक कार्यों का क्लस्टरिंग।
केंद्रीयकरण वह शहरी पारिस्थितिक प्रक्रिया है जिसमें व्यापार, वित्त, शासन और उच्च-स्तरीय सेवाएँ शहर के केंद्र या 'केंद्रीय व्यापार जिले' में केंद्रित होने की प्रवृत्ति रखती हैं। यह स्थान अपनी सुलभता और परिवहन मार्गों के केंद्र में होने के कारण व्यवसायों के लिए आकर्षक होता है। केंद्रीयकरण के कारण शहर के मध्य भाग में भूमि के मूल्य बहुत बढ़ जाते हैं और यहाँ ऊँची इमारतों का निर्माण अधिक होता है। यह प्रक्रिया शहर को एक स्पष्ट कार्यात्मक केंद्र प्रदान करती है जहाँ से पूरी शहरी प्रणाली संचालित होती है।

103. (A) यात्रा की दूरी को कम करने का उपभोक्ताओं का लक्ष्य।
क्रिस्टॉलर और लोश दोनों के मॉडल इस मौलिक आर्थिक सिद्धांत पर आधारित हैं कि मनुष्य तर्कसंगत व्यवहार करते हैं। उपभोक्ता हमेशा निकटतम उपलब्ध केंद्र से वस्तुएं खरीदना चाहते हैं ताकि उनका समय और यात्रा की लागत कम हो सके। इसी तरह, विक्रेता भी ऐसे स्थानों को चुनना चाहते हैं जहाँ वे अधिकतम ग्राहकों तक पहुँच सकें। यह साझा मान्यता ही सेवा केंद्रों के स्थानिक वितरण और उनके बाजार क्षेत्रों के षटकोणीय आकार को निर्धारित करने का मुख्य कारक है, जो पूरे सिद्धांत के लिए आधारशिला है।

104. (C) उच्च निर्भरता अनुपात
निर्भरता अनुपात कार्यशील जनसंख्या (15-64 वर्ष) की तुलना में उन लोगों की संख्या को दर्शाता है जो आर्थिक रूप से उन पर निर्भर हैं, जैसे बच्चे और बुजुर्ग। यदि किसी देश में बच्चों की संख्या बहुत अधिक है और कार्यबल छोटा है, तो निर्भरता अनुपात बढ़ जाता है। इसका अर्थ है कि अर्थव्यवस्था और परिवारों पर पालन-पोषण और शिक्षा का भारी बोझ होता है। यह स्थिति अक्सर उन विकासशील देशों में देखी जाती है जहाँ जन्म दर अभी भी उच्च है, जो दीर्घकालिक विकास और संसाधनों के आवंटन के लिए चुनौती है।

105. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अमेरिका जैसे बड़े और विविध देशों में कोटि-आकार नियम बेहतर ढंग से लागू होता है क्योंकि वहाँ शक्ति के कई क्षेत्रीय केंद्र मौजूद हैं। न्यूयॉर्क, शिकागो और लॉस एंजिल्स जैसे शहर अलग-अलग क्षेत्रों का नेतृत्व करते हैं, जिससे कोई एक अकेला शहर पूरे देश पर प्राइमेट की तरह हावी नहीं हो पाता। यह आर्थिक और राजनीतिक विकेंद्रीकरण शहरी पदानुक्रम को एक संतुलित और श्रेणीबद्ध स्वरूप प्रदान करता है, जो जिफ के नियम की भविष्यवाणियों के बहुत करीब है। अतः कारण ही अभिकथन को सही पुष्ट करता है।

106. (D) खाद्य उत्पादन में वृद्धि, जिससे बड़ी आबादी का समर्थन संभव हुआ।
हरित क्रांति ने उच्च उपज देने वाली बीजों की किस्मों, उर्वरकों और सिंचाई की नई तकनीकों के माध्यम से कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि की। इससे खाद्यान्न की कमी दूर हुई और कई देशों को भुखमरी से बचाया जा सका। भोजन की बेहतर उपलब्धता ने न केवल मृत्यु दर को कम करने में मदद की, बल्कि इसने बढ़ती आबादी के भरण-पोषण को भी संभव बनाया। कृषि की इस उत्पादकता ने ग्रामीण समाजों के आर्थिक आधार को मजबूत किया, जिससे वैश्विक जनसंख्या के विकास की दिशा और गति में महत्वपूर्ण बदलाव आया।

107. (B) वह अधिकतम दूरी जो उपभोक्ता किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए तय करने को तैयार हैं।
'परास' केंद्रीय स्थान सिद्धांत की एक मौलिक अवधारणा है जो किसी वस्तु की बाजार क्षमता को भौगोलिक रूप से परिभाषित करती है। उपभोक्ता ब्रेड जैसी सामान्य वस्तुओं के लिए बहुत कम दूरी तय करते हैं, इसलिए इनका परास कम होता है। इसके विपरीत, गहने या विशेष चिकित्सा सेवाओं के लिए लोग लंबी यात्रा करने को तैयार रहते हैं, जिससे उनका परास अधिक होता है। यह परास ही निर्धारित करता है कि सेवा केंद्रों के बीच कितनी दूरी होनी चाहिए और उनके बाजार क्षेत्र का विस्तार कितना बड़ा होगा।

108. (C) वह दर जिस पर महिलाओं को बच्चे पैदा करने की उम्र तक जीवित रहने वाली बेटियों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।
शुद्ध पुनरुत्पादन दर जनसंख्या के भविष्य के विकास की क्षमता का एक सटीक माप है। यह केवल कुल जन्मों को नहीं देखती, बल्कि इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि एक महिला की औसत कितनी बेटियाँ होंगी जो स्वयं माँ बनने की उम्र तक जीवित रहेंगी। यदि यह दर 1.0 है, तो इसका मतलब है कि प्रत्येक माँ को एक बेटी द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है, जिससे जनसंख्या स्थिर रहेगी। 1.0 से कम दर यह संकेत देती है कि भविष्य में जनसंख्या कम होने वाली है, जो जनसांख्यिकीय चिन्ता का विषय है।

NODIA

109. (D) यह दूसरे सबसे बड़े शहर की तुलना में काफी बड़ा है।
प्रमुख शहर की सबसे स्पष्ट विशेषता उसका असंगत आकार है। मार्क जेफरसन के अनुसार, यह शहर जनसंख्या में देश के दूसरे सबसे बड़े शहर के दोगुने से भी अधिक बड़ा होता है। यह केवल आकार में ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय महत्व, सांस्कृतिक प्रभाव और आर्थिक गतिविधियों में भी अन्य सभी शहरों से बहुत आगे होता है। प्रमुख शहर अक्सर एक राष्ट्र की 'आत्मा' और उसके पूरे विकास का चेहरा माना जाता है, जहाँ देश के सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक और वित्तीय संस्थान स्थित होते हैं।

110. (A) जेंट्रीफिकेशन
जेंट्रीफिकेशन वह शहरी प्रक्रिया है जिसमें मध्यम और उच्च आय वाले लोग शहर के पुराने, जीर्ण-शीर्ण हिस्सों में निवेश करके वहां के घरों का नवीनीकरण करते हैं। इससे उस क्षेत्र के भूमि मूल्य और किराए बढ़ जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वहां पहले से रह रहे गरीब निवासियों को मजबूरन विस्थापित होना

पर स्थित होता है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि माल और यात्रियों की आवाजाही सबसे कुशल तरीके से हो, जिससे नेटवर्क का अधिकतम उपयोग हो।

54. (B) आक्रमण और उत्तराधिकार
शहरी पारिस्थितिकी में 'आक्रमण और उत्तराधिकार' की प्रक्रिया तब होती है जब एक नया सामाजिक या आर्थिक समूह किसी मौजूदा मोहल्ले में प्रवेश करना शुरु करता है। जैसे-जैसे नए लोग वहां बसते हैं, पुराने निवासी अक्सर उस क्षेत्र को छोड़कर चले जाते हैं। अंततः, नया समूह पूरी तरह से उस क्षेत्र पर हावी हो जाता है और उसकी पुरानी पहचान बदल जाती है। यह प्रक्रिया अक्सर उन शहरों में देखी जाती है जहाँ पुराने क्षेत्रों में व्यावसायिक विस्तार होता है।

55. (A) 2, 1, 3, 4
जनसंख्या वृद्धि की यात्रा सबसे पहले कृषि क्रांति से शुरु हुई, जिसने बस्तियों को स्थायी बनाया। इसके बाद 18वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन बढ़ाकर वृद्धि को गति दी। 20वीं शताब्दी की चिकित्सा क्रांति ने मृत्यु दर को कम करके जनसंख्या विस्फोट किया। अंत में, सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति वर्तमान समय के सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों को प्रभावित कर रही है। यह क्रम मानव सभ्यता और जनसंख्या प्रवृत्तियों को कालानुक्रमिक रूप से स्पष्ट करता है।

56. (A) अनुकूलतम जनसंख्या
अनुकूलतम जनसंख्या वह आदर्श स्थिति है जहाँ किसी क्षेत्र की जनसंख्या वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों और तकनीकी स्तर के साथ पूर्ण संतुलन में होती है। इस बिंदु पर, प्रति व्यक्ति आय और जीवन स्तर अपने उच्चतम स्तर पर होता है। यदि जनसंख्या इस स्तर से कम है, तो संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो पाता, और यदि अधिक है, तो संसाधनों पर दबाव बढ़ जाता है। यह एक गतिशील अवधारणा है जो तकनीकी प्रगति के साथ बदलती रहती है।

57. (C) नगरीय उपांत - शहर का केंद्रीय, सबसे घनी आबादी वाला हिस्सा।
नगरीय उपांत शहर का मध्य भाग नहीं होता, बल्कि यह शहर के निर्मित क्षेत्र और बाहरी ग्रामीण देहात के बीच का संक्रमणकालीन क्षेत्र होता है। यहाँ शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के भूमि उपयोग साथ-साथ पाए जाते हैं। इसके विपरीत, शहर का सबसे घनी आबादी वाला और व्यावसायिक केंद्र 'केंद्रीय व्यापार जिला' कहलाता है। विकल्प (C) की परिभाषा गलत है क्योंकि उपांत का विस्तार शहर की सीमाओं पर होता है, न कि उसके हृदय स्थल में।

58. (A) 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोपीय देश।
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों के ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर तैयार किया गया था। इन क्षेत्रों ने औद्योगीकरण के दौरान जन्म और मृत्यु दरों में होने वाले क्रमिक बदलावों को सबसे पहले महसूस किया था। यह मॉडल बताता है कि कैसे आर्थिक उन्नति के साथ समाज पूर्व-औद्योगिक चरण से आधुनिक चरण में प्रवेश करता है। यद्यपि यह व्यापक रूप से उपयोग होता है, विकासशील देशों में इसकी पूर्णता पर बहस होती है।

59. (D) भूमि उपयोग का मिश्रण, अक्सर परस्पर विरोधी हितों के साथ।
नगरीय उपांत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यहाँ भूमि उपयोग में पाई जाने वाली विविधता और अनिश्चितता है। यहाँ कृषि फार्मों के ठीक बगल में आवासीय कॉलोनियाँ या कारखाने देखे जा सकते हैं। इस विविधता के कारण अक्सर किसानों, डेवलपर्स और औद्योगिक समूहों के बीच हितों का टकराव होता रहता है। यह क्षेत्र न तो पूरी तरह शहरी होता है और न ही पूरी तरह ग्रामीण, जिससे यहाँ नियोजन और बुनियादी ढांचे के विकास में जटिल समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

60. (B) यह एक सार्वभौमिक प्रयोज्यता मानता है जो सभी विकासशील देशों के अनुभव के अनुकूल नहीं हो सकती है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल की प्रमुख आलोचना यह है कि यह मानता है कि सभी देश विकास के एक ही निश्चित पथ का अनुसरण करेंगे। पश्चिमी देशों के विपरीत, कई विकासशील देशों में मृत्यु दर में गिरावट बाहरी चिकित्सा सहायता के कारण बहुत तेजी से हुई है, न कि केवल आंतरिक आर्थिक विकास से। इसके अलावा, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक भी जन्म दर को प्रभावित करते हैं, जिससे कई देशों में यह मॉडल अलग काम करता है।

61. (C) प्रभुत्वशाली और एकीकृत सांस्कृतिक विशेषताओं का एक समूह।
सांस्कृतिक मंडल की अवधारणा के अनुसार, विश्व को उन बड़े क्षेत्रों में बांटा जा सकता है जहाँ भाषा, धर्म, भोजन और सामाजिक मूल्यों जैसी विशेषताओं में समानता पाई जाती है। यह मंडल भौतिक सीमाओं या राजनीतिक देशों से ऊपर होता है और लोगों की साझा विरासत को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी संस्कृति या इस्लामी संस्कृति के अपने विशिष्ट मंडल हैं। यह विभाजन मानवीय भूगोल में सांस्कृतिक विविधता और वैश्विक वितरण को समझने का एक प्रभावी ढांचा है।

62. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
क्रिस्टॉलर के सिद्धांत में उच्च-क्रम की वस्तुएं, जैसे विशेष चिकित्सा सेवाएं, अपनी दुर्लभता और उच्च लागत के कारण अधिक 'परास' रखती हैं। लोग ऐसी विशिष्ट सेवाओं के लिए लंबी दूरी तय करने को तैयार रहते हैं। साथ ही, इन सेवाओं को चलाने के लिए एक बड़ी जनसंख्या की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, दैनिक वस्तुओं के लिए लोग कम दूरी तय करते हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं क्योंकि उपभोक्ता व्यवहार ही सेवा केंद्रों के पदानुक्रम को निर्धारित करता है।

63. (A) कोटि-आकार नियम
सूत्र Pn = P1/n कोटि-आकार नियम का गणितीय आधार है, जिसे जॉर्ज जिफ ने लोकप्रिय बनाया था। इसमें P1 सबसे बड़े शहर की जनसंख्या है और 'n' शहर की रैंक या कोटि को दर्शाता है। यह सूत्र बताता है कि दूसरे नंबर का शहर सबसे बड़े शहर का आधा होगा, तीसरा शहर एक-तिहाई होगा, और

NODIA

22. (B) जनसंख्या का आकार, संसाधन उपलब्धता और तकनीकी स्तर।
जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र की अवधारणा ए.के. एकरमैन द्वारा विकसित की गई थी। यह स्पष्ट करती है कि किसी क्षेत्र की जनसंख्या वहां के प्राकृतिक संसाधनों और तकनीकी क्षमता के साथ कैसे अंतःक्रिया करती है। यह केवल लोगों की संख्या के बारे में नहीं है, बल्कि इस बारे में भी है कि तकनीकी ज्ञान का उपयोग करके उन संसाधनों से कितनी जनसंख्या का भरण-पोषण किया जा सकता है। यह विकास की दक्षता को दर्शाता है।

23. (D) एक विविध और विषम परिवहन सतह।
वाल्टर क्रिस्टॉलर का केंद्रीय स्थान सिद्धांत एक समदैशिकी मैदान की मान्यता पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि पूरी सतह भौतिक रूप से एक समान है। उन्होंने माना कि परिवहन लागत केवल दूरी के अनुपात में बढ़ती है और परिवहन सुविधा हर जगह समान है। विषम सतह उनके मॉडल को जटिल बना देती, इसलिए उन्होंने आदर्श सपाट मैदान की कल्पना की थी। यह सरलीकरण स्थानिक वितरण को स्पष्ट करता है।

24. (A) इस्लामी जगत
एक सांस्कृतिक मंडल उन भौगोलिक क्षेत्रों का समूह है जहाँ के लोग समान भाषा, धर्म और सामाजिक परंपराएं साझा करते हैं। 'इस्लामी जगत' इसका उदाहरण है क्योंकि इसमें शामिल देशों में इस्लाम धर्म और उससे जुड़ी जीवन पद्धति एक प्रमुख सांस्कृतिक सूत्र है। यह मंडल विशाल क्षेत्र में फैला है, फिर भी कुछ मौलिक विश्वास और व्यवहार इसे एक एकीकृत सांस्कृतिक पहचान प्रदान करते हैं जो अन्य क्षेत्रों से भिन्न है।

25. (C) उत्तराधिकार
उत्तराधिकार शहरी पारिस्थितिकी की वह प्रक्रिया है जिसमें नया जनसंख्या समूह या विशिष्ट भूमि उपयोग किसी क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद धीरे-धीरे पुराने निवासियों को विस्थापित कर देता है। यह प्रक्रिया 'आक्रमण' के साथ शुरू होती है और तब समाप्त होती है जब नया समूह उस क्षेत्र की पहचान बदल देता है। उदाहरण के लिए, जब पुराना आवासीय क्षेत्र धीरे-धीरे वाणिज्यिक बाजार में बदल जाता है, तो उसे उत्तराधिकार माना जाता है।

26. (A) लोश ने परिवर्तनशील 'k' मान की अनुमति दी, जबकि क्रिस्टॉलर ने निश्चित 'k' मान प्रस्तावित किए।
वाल्टर क्रिस्टॉलर का मॉडल एक कठोर पदानुक्रम पर आधारित था जहाँ बाजार, परिवहन और प्रशासन के लिए निश्चित 'k' मान (3, 4, 7) उपयोग किए गए थे। इसके विपरीत, अगस्त लोश ने लचीला दृष्टिकोण अपनाया और विभिन्न वस्तुओं के लिए अलग-अलग 'k' मानों की अनुमति दी। लोश का मॉडल अधिक जटिल था और इसने एक ऐसा आर्थिक परिदृश्य बनाया जहाँ शहरों का वितरण अधिक विविधतापूर्ण और यथार्थवादी था।

27. (D) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
जन्म के समय जीवन प्रत्याशा किसी समाज के समग्र स्वास्थ्य और विकास का सबसे सटीक दर्पण है। यह बताती है कि एक नवजात शिशु वर्तमान मृत्यु दर की स्थितियों में औसत कितने वर्षों तक जीवित रहने की उम्मीद कर सकता है। चूंकि इसमें सभी आयु वर्गों की मृत्यु दर शामिल होती है, इसलिए यह व्यापक डेटा प्रदान करती है। उच्च जीवन प्रत्याशा बेहतर पोषण, स्वास्थ्य सुविधाओं और उच्च जीवन स्तर का संकेत देती है।

28. (B) 3 मिलियन
कोटि-आकार नियम के अनुसार, n-वें रैंक वाले शहर की जनसंख्या सबसे बड़े शहर की जनसंख्या का 1/n हिस्सा होती है। यहाँ सबसे बड़ा शहर 12 मिलियन का है और हमें चौथे शहर की जनसंख्या निकालनी है। सूत्र के अनुसार, 12 मिलियन को 4 से विभाजित करने पर 3 मिलियन प्राप्त होता है। यह नियम मानता है कि शहरी तंत्र में शहरों का आकार एक निश्चित अनुपात के अनुसार घटता है।

29. (C) जनसंख्या के आकार और कार्यों की संख्या पर
अधिवास पदानुक्रम का अर्थ बस्तियों को उनकी जनसंख्या के आकार और सेवाओं या कार्यों के आधार पर व्यवस्थित करना है। इस व्यवस्था में सबसे छोटे अधिवास, जैसे पुरवा, संख्या में अधिक होते हैं और बुनियादी सेवाएं देते हैं। जैसे-जैसे हम पदानुक्रम में ऊपर बढ़ते हैं, बस्तियों की संख्या घटती है लेकिन उनकी जनसंख्या और सेवाओं की विशिष्टता बढ़ती है। बड़े शहर और महानगर पदानुक्रम के शीर्ष पर होते हैं।

30. (D) चरण 4
जनसांख्यिकीय संक्रमण के चौथे चरण में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों बहुत कम हो जाते हैं। इस चरण में जनसंख्या लगभग स्थिर हो जाती है या बहुत धीमी गति से बढ़ती है। यह स्थिति आमतौर पर विकसित देशों में देखी जाती है जहाँ उच्च साक्षरता, शहरीकरण और स्वास्थ्य सेवाओं की व्यापक पहुँच होती है। यहाँ परिवार छोटे होते हैं और लोग जीवन की गुणवत्ता पर ध्यान देते हैं। यहाँ कभी-कभी गिरावट भी दिखती है।

31. (A) एक केंद्रीय महानगर के चारों ओर घूमते हुए शहर-धनी और शहर-गरीब क्षेत्रों के क्षेत्रों में।
अगस्त लोश ने तर्क दिया कि आर्थिक गतिविधियाँ एक केंद्रीय बिंदु के चारों ओर षटकोणीय क्षेत्रों में संगठित होती हैं। इन षट्कोणों को घुमाने पर कुछ क्षेत्रों में अधिक आर्थिक केंद्र बन जाते हैं, जिन्हें 'शहर-धनी' क्षेत्र कहा जाता है। इसके विपरीत, अन्य क्षेत्रों में कम गतिविधियाँ होती हैं, जिन्हें 'शहर-गरीब' क्षेत्र कहा जाता है। यह मॉडल क्रिस्टॉलर की तुलना में अधिक यथार्थवादी है क्योंकि यह आर्थिक असमानताओं को बेहतर ढंग से दर्शाता है।

32. (B) शहरीकरण की प्रक्रिया।
शहरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें ग्रामीण जनसंख्या बेहतर अवसरों की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करती है। इससे शहरों की आबादी का अनुपात कुल जनसंख्या में बढ़ जाता है। लोग शहरों की ओर इसलिए आकर्षित होते हैं क्योंकि वहां उद्योग और सेवाओं के कारण अधिक रोजगार मिलते हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की बेहतर उपलब्धता भी इस

Downloaded from www.pdf.tube

73. (C) किसी विशेष कार्य या सेवा का समर्थन करने के लिए आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या आकार।
केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'देहली' एक आर्थिक सीमा है। यह उन न्यूनतम ग्राहकों या लोगों की संख्या को दर्शाती है जिनकी उपस्थिति किसी व्यवसाय या सेवा को चलाने के लिए अनिवार्य है। यदि किसी सेवा की देहली बहुत अधिक है, तो वह केवल बड़े शहरों में ही उपलब्ध होगी जहाँ अधिक लोग रहते हैं। छोटे गाँवों में केवल वही सेवाएँ फल-फूल सकती हैं जिनकी देहली कम होती है। यह अवधारणा सेवा केंद्रों के वितरण और पदानुक्रम को समझने का मुख्य आधार है।

74. (A) राजनीतिक सीमाएँ
सांस्कृतिक मंडल की पहचान भाषा, धर्म, सामाजिक रीति-रिवाजों और साझा इतिहास जैसे तत्वों से होती है, न कि राजनीतिक सीमाओं से। अक्सर एक सांस्कृतिक मंडल कई देशों में फैला हो सकता है या एक देश के भीतर कई सांस्कृतिक समूह हो सकते हैं। राजनीतिक सीमाएँ कृत्रिम हो सकती हैं और वे समय के साथ बदलती रहती हैं, लेकिन सांस्कृतिक जड़ें अधिक गहरी और स्थायी होती हैं। इसलिए, भूगोल में सांस्कृतिक विभाजन करते समय मानवीय पहलुओं को ही आधार माना जाता है।

75. (D) प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता
प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता वह दर है जिस पर जनसंख्या की एक पीढ़ी अगली पीढ़ी द्वारा स्वयं को पूरी तरह प्रतिस्थापित करती है, जिससे जनसंख्या का आकार स्थिर रहता है। विकसित देशों में यह स्तर सामान्यतः 2.1 माना जाता है। इसमें अतिरिक्त 0.1 का उपयोग उन शिशुओं की कमी को पूरा करने के लिए किया जाता है जो प्रजनन आयु तक जीवित नहीं रह पाते। यदि किसी देश की कुल प्रजनन दर इस स्तर पर बनी रहती है, तो लंबी अवधि में उसकी जनसंख्या वृद्धि शून्य की ओर बढ़ती है।

76. (B) संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल
शिकागो स्कूल ने 1920 के दशक में शहरी संरचना का संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल विकसित किया था। अर्नेस्ट बर्गेस द्वारा प्रतिपादित यह मॉडल सुझाव देता है कि शहर का विस्तार एक केंद्रीय व्यापारिक जिले के चारों ओर छल्लों की एक श्रृंखला के रूप में होता है। प्रत्येक छल्ला एक अलग प्रकार के भूमि उपयोग और सामाजिक समूह का प्रतिनिधित्व करता है। हालांकि यह मॉडल अब पुराना माना जाता है, लेकिन इसने शहरी पारिस्थितिकी और सामाजिक भूगोल के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण नींव रखी थी।

77. (C) वस्तुओं, लोगों और सूचनाओं के प्रवाह के आधार पर प्रभाव क्षेत्र की पहचान करना।
नगर-क्षेत्र का परिसीमन केवल भौतिक निर्माण के आधार पर नहीं, बल्कि कार्यात्मक अंतःक्रियाओं के आधार पर किया जाता है। इसमें यह देखा जाता है कि शहर के आसपास के कितने क्षेत्रों से लोग काम करने के लिए शहर आते हैं, या शहर का व्यापार और संचार नेटवर्क कहाँ तक फैला है। इन प्रवाहों का मानचित्रण करके शहर के वास्तविक प्रभाव क्षेत्र को निर्धारित किया जाता है। यह प्रक्रिया योजनाकारों को परिवहन और आर्थिक विकास के लिए प्रभावी नीतियां बनाने में मदद करती है।

78. (D) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर, जिससे निम्न वृद्धि होती है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रथम चरण को 'उच्च स्थिर' कहा जाता है क्योंकि इसमें जन्म और मृत्यु दर दोनों बहुत ऊँचे स्तर पर होते हैं। इस समय समाज मुख्य रूप से कृषि आधारित होता है और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होता है, जिससे महामारी के कारण बहुत मौतें होती हैं। बच्चे पैदा करने की दर भी अधिक होती है ताकि श्रम की आवश्यकता पूरी हो सके। चूंकि जन्म और मृत्यु लगभग बराबर होते हैं, इसलिए कुल जनसंख्या वृद्धि बहुत धीमी या शून्य के करीब रहती है।

79. (A) आर्थिक विकास के लिए संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने के लिए जनसंख्या बहुत कम है।
'अल्प-जनसंख्या' वह स्थिति है जहाँ किसी देश के पास प्रचुर प्राकृतिक संसाधन तो हैं, लेकिन उनका पूर्ण दोहन करने और आर्थिक प्रगति सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त मानवीय श्रम उपलब्ध नहीं है। यह अति-जनसंख्या के विपरीत स्थिति है। ऐसी परिस्थितियों में, जनसंख्या में वृद्धि वास्तव में प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने और बुनियादी ढांचे का बेहतर उपयोग करने में मदद कर सकती है। कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों को अक्सर अल्प-जनसंख्या वाला माना जाता है।

80. (B) राष्ट्रीय क्षमता और भावना का अत्यधिक बड़ा और अभिव्यंजक रूप हो।
मार्क जेफरसन के अनुसार, प्रमुख शहर केवल जनसंख्या में बड़ा नहीं होता, बल्कि वह राष्ट्र की पहचान का केंद्र होता है। वह शहर पूरे देश की अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति को इस तरह प्रभावित करता है कि दूसरे शहर उसके सामने गौण लगते हैं। जेफरसन का मानना था कि यह शहर राष्ट्रीय भावना का सबसे शक्तिशाली प्रतीक होता है और देश की अधिकांश प्रतिभाओं और निवेशों को अपनी ओर खींचता है। यह स्थिति अक्सर केंद्रीकृत शासन प्रणालियों में अधिक स्पष्ट होती है।

81. (B) कुल प्रजनन दर (TFR) का निर्धारण करना।
प्रजनन क्षमता विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि एक जनसंख्या अपनी संख्या को कैसे पुनः उत्पन्न कर रही है। कुल प्रजनन दर इसका सबसे महत्वपूर्ण मानक है क्योंकि यह बताता है कि एक औसत महिला अपने जीवनकाल में कितने बच्चों को जन्म देगी। यह विश्लेषण भविष्य की जनसंख्या प्रवृत्तियों की भविष्यवाणी करने और शिक्षा तथा नियोजन से संबंधित सरकारी नीतियों को दिशा देने के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह समाज के सामाजिक-आर्थिक व्यवहार का भी अध्ययन है।

82. (A) पुरवा
अधिवास पदानुक्रम में 'पुरवा' सबसे छोटा स्तर है। इसमें केवल कुछ ही घर होते हैं और यहाँ जनसंख्या का घनत्व अत्यंत कम होता है। चूंकि यहाँ के निवासी अपनी अधिकांश जरूरतों के लिए पास के गांवों या कस्बों पर निर्भर रहते हैं, इसलिए यहाँ

NODIA

लिए निचले स्तर की बस्तियों को पूरी तरह से एक ही उच्च स्तरीय केंद्र के अधिकार क्षेत्र में होना चाहिए। इसलिए, प्रत्येक उच्च-क्रम का केंद्र अपने आसपास के सभी छह निम्न-क्रम केंद्रों को पूर्णतः नियंत्रित करता है। यह व्यवस्था प्रशासनिक सीमाओं को स्पष्ट रखने और शासन को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए बनाई गई है।

44. (B) केवल 3
एवरेट ली के प्रवास मॉडल में 'अंतवर्ती बाधाओं' की अवधारणा महत्वपूर्ण है, जो प्रवास के दौरान आने वाली भौतिक या कानूनी बाधाओं को दर्शाती है। यद्यपि कथन 1 और 2 प्रवास के कारकों का सही वर्णन करते हैं, लेकिन प्रश्न के संदर्भ में ली के मॉडल की विशेषता केवल अंतवर्ती बाधाओं पर केंद्रित है। आकर्षण कारक गंतव्य के लाभ हैं और प्रतिकर्ष कारक मूल स्थान की समस्याएं हैं। बाधाओं को पार करने की क्षमता प्रवास को सफल बनाती है।

45. (C) विकेंद्रीकरण
विकेंद्रीकरण वह शहरी प्रक्रिया है जिसमें लोग और आर्थिक गतिविधियाँ शहर के भीड़भाड़ वाले केंद्र से हटकर बाहरी उपनगरों या ग्रामीण क्षेत्रों की ओर जाने लगती हैं। यह अक्सर शहर के केंद्र में बढ़ते प्रदूषण और उच्च भूमि मूल्यों के कारण होता है। बेहतर परिवहन सुविधाओं और उपनगरों में सस्ती भूमि की उपलब्धता इस प्रक्रिया को गति देती है। इससे 'शहरी फैलाव' की स्थिति उत्पन्न होती है और शहर की सीमाओं का विस्तार होता है।

46. (D) फर्मों के लिए लाभ को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित करना, जिससे षट्कोणों के समूह बनते हैं।
अगस्त लोश का मॉडल क्रिस्टॉलर के मॉडल से भिन्न है क्योंकि यह केवल सेवाओं पर नहीं, बल्कि व्यवसायों के लाभ को अधिकतम करने पर केंद्रित है। लोश ने माना कि अलग-अलग वस्तुओं के लिए बाजार का आकार अलग होता है, जिससे षटकोणीय क्षेत्रों का एक जटिल जाल बनता है। उनके मॉडल में षट्कोणों को इस तरह घुमाया जाता है कि कुछ क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियाँ बहुत घनी हो जाती हैं। यह दृष्टिकोण वास्तविक आर्थिक जटिलताओं को समझाता है।

47. (A) वैश्विक जनसंख्या वृद्धि की दर 1980 के दशक से लगातार तेज हो रही है।
वास्तव में, वैश्विक जनसंख्या वृद्धि की दर 1960 के दशक के उत्तरार्ध में अपने चरम पर थी और तब से यह धीरे-धीरे धीमी हो रही है। हालाँकि, विश्व की कुल जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है क्योंकि आधार जनसंख्या बहुत बड़ी है, लेकिन वार्षिक प्रतिशत वृद्धि दर में कमी आई है। स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार ने परिवार नियोजन को बढ़ावा दिया है, जिससे वृद्धि दर के ग्राफ में गिरावट दर्ज की गई है।

48. (B) पुरवा, गाँव, कस्बा, शहर
अधिवास पदानुक्रम बस्तियों को उनके जनसंख्या आकार और सेवाओं की जटिलता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करता है। 'पुरवा' सबसे छोटी इकाई है जिसमें कुछ ही घर होते हैं। इसके बाद 'गाँव' आता है जहाँ कृषि मुख्य गतिविधि होती है। 'कस्बा' गाँव से बड़ा होता है और यहाँ कुछ बुनियादी शहरी सेवाएँ उपलब्ध होती हैं। 'शहर' पदानुक्रम में ऊपर होता है, जहाँ जनसंख्या अधिक होती है और वाणिज्यिक कार्य संपन्न किए जाते हैं।

49. (B) प्रति 1,000 जीवित जन्म
शिशु मृत्यु दर की गणना किसी विशेष वर्ष में एक वर्ष से कम आयु के उन बच्चों की मृत्यु की संख्या के रूप में की जाती है, जो प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर आधारित होती है। यह एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय संकेतक है जो समाज के स्वास्थ्य स्तर, पोषण की स्थिति और चिकित्सा सुविधाओं की गुणवत्ता को दर्शाता है। उच्च शिशु मृत्यु दर अक्सर अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल का संकेत देती है, जो सामाजिक विकास मापन का विश्वसनीय आधार है।

50. (A) नगर-क्षेत्र
'Umland' या 'हिंटरलैंड' शब्द सीधे तौर पर 'नगर-क्षेत्र' की अवधारणा से जुड़ा है। यह उस ग्रामीण या अर्ध-शहरी क्षेत्र को संदर्भित करता है जो किसी केंद्रीय शहर के साथ आर्थिक और सामाजिक रूप से जुड़ा होता है। यह क्षेत्र अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए मुख्य शहर पर निर्भर रहता है, और बदले में शहर को कच्चा माल और श्रम प्रदान करता है। नगर-क्षेत्र की सीमाएं इसी प्रभाव क्षेत्र के विस्तार द्वारा निर्धारित की जाती हैं।

51. (C) पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया
विश्व के प्रमुख जनसंख्या समूहों में पूर्वी एशिया, दक्षिण एशिया और पश्चिमी यूरोप शामिल हैं क्योंकि यहाँ की जलवायु और उपजाऊ भूमि बड़ी आबादी का समर्थन करती है। इसके विपरीत, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का अधिकांश भाग शुष्क और मरुस्थलीय है, जिसके कारण वहाँ जनसंख्या घनत्व अत्यंत कम है। यहाँ की कठोर प्राकृतिक स्थितियाँ और कृषि योग्य भूमि की कमी इसे घना बसा क्षेत्र बनने से रोकती हैं। अतः यह क्षेत्र वितरण मानचित्र पर विरल है।

52. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
प्रति-प्रसववादी नीतियां जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने और जन्म दर को कम करने के लिए लागू की जाती हैं। चीन की "एक बच्चा नीति" इसी प्रकार की नीति का एक ऐतिहासिक उदाहरण है, जो प्रसववादी नहीं बल्कि प्रति-प्रसववादी थी। प्रसववादी नीतियां इसके विपरीत होती हैं और वे अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। अतः पहला कथन नीतियों के उद्देश्य को सही बताता है, जबकि दूसरा कथन चीन की नीति के वर्गीकरण में गलत है।

53. (C) k = 4
क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में k=4 मान को 'परिवहन सिद्धांत' कहा जाता है। इस सिद्धांत का उद्देश्य मुख्य परिवहन मार्गों के साथ बस्तियों के वितरण को व्यवस्थित करना है ताकि परिवहन लागत न्यूनतम हो सके। इस मॉडल में, प्रत्येक निम्न-क्रम का केंद्र दो उच्च-क्रम केंद्रों के बीच सीधे संपर्क पथ

Click Here to Buy book on Amazon

92. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
क्रिस्टॉलर के सिद्धांत में 'बाजार सिद्धांत' के लिए k=3 मान निर्धारित है, जो कुशलतापूर्वक वस्तुओं की आपूर्ति पर केंद्रित है। 'परिवहन सिद्धांत' के लिए k=4 का उपयोग किया गया है ताकि परिवहन मार्गों का अनुकूलन हो सके। 'प्रशासनिक सिद्धांत' के लिए k=7 मान है जो पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण सुनिश्चित करता है। k=5 मान का उपयोग क्रिस्टॉलर द्वारा अपने मूल सिद्धांतों में नहीं किया गया था। ये मान केंद्रीय स्थानों के पदानुक्रम और सेवाओं के स्थानिक संगठन को समझने के लिए गणितीय आधार प्रदान करते हैं।

93. (C) महामारी विज्ञान संक्रमण
महामारी विज्ञान संक्रमण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी समाज में मृत्यु के प्रमुख कारणों में बदलाव आता है। प्रारंभिक अवस्था में मौतें मुख्य रूप से हैजा और अकाल जैसी संक्रामक बीमारियों के कारण होती हैं। जैसे-जैसे स्वास्थ्य सेवाओं और पोषण में सुधार होता है, लोग संक्रामक रोगों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन हृदय रोग और कैंसर जैसी पुरानी, जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ अधिक प्रभावी हो जाती हैं। यह संक्रमण जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के साथ जुड़ा हुआ है और विकास को दर्शाता है।

94. (D) उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से दोहन करने में असमर्थता
अल्प-जनसंख्या की मुख्य समस्या संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि मानव श्रम की कमी है। जब किसी क्षेत्र में प्रचुर प्राकृतिक संपदा जैसे खनिज और उपजाऊ भूमि तो होते हैं, लेकिन उन्हें निकालने और उपयोग करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं होते, तो वे संसाधन व्यर्थ रह जाते हैं। इससे आर्थिक विकास की गति धीमी हो जाती है और बुनियादी ढांचा प्रति व्यक्ति महंगा पड़ता है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या वृद्धि वास्तव में राष्ट्रीय आय और संसाधनों के कुशल प्रबंधन में योगदान दे सकती है।

95. (A) स्वयं को और छह आसपास के अधिवासों की एक-तिहाई जनसंख्या को।
क्रिस्टॉलर के k=3 या बाजार सिद्धांत में, एक केंद्रीय स्थान अपने बाजार क्षेत्र की सेवा करता है जो षटकोणीय आकार का होता है। इस व्यवस्था में, पदानुक्रम के निचले स्तर के छह अधिवासों में से प्रत्येक तीन उच्च-क्रम केंद्रों के बीच साझा किया जाता है। इसलिए, प्रत्येक उच्च-क्रम केंद्र को अपने स्वयं के केंद्र की पूर्ण जनसंख्या और अपने छह निकटतम पड़ोसियों की आबादी का एक-तिहाई हिस्सा मिलता है। यह ज्यामितीय मॉडल बाजार क्षेत्रों को कुशलतापूर्वक कवर करने का प्रयास करता है।

96. (B) प्रवास निवास का स्थायी या अर्ध-स्थायी परिवर्तन है।
प्रवास को आमतौर पर किसी व्यक्ति या समूह द्वारा अपना मूल स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर स्थायी या दीर्घकालिक रूप से बसने के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसमें केवल यात्रा शामिल नहीं है, बल्कि निवास स्थान का वास्तविक परिवर्तन होता है। प्रवास के पीछे आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक कारण हो सकते हैं। यह स्वैच्छिक या अनिवार्य दोनों प्रकार का हो सकता है। यह प्रक्रिया न केवल जनसंख्या वितरण को बदलती है, बल्कि मूल और गंतव्य दोनों स्थानों की संरचना को प्रभावित करती है।

97. (A) केवल 2
सांस्कृतिक मंडल गतिशील होते हैं और समय के साथ ऐतिहासिक परिवर्तनों, प्रवास और वैश्वीकरण के कारण बदल सकते हैं। ये क्षेत्र आमतौर पर एक साझा धर्म, भाषा परिवार और जीवन शैली द्वारा पहचाने जाते हैं जो वहां के निवासियों को एक सामूहिक पहचान प्रदान करते हैं। यह कहना गलत है कि राजनीतिक सीमाएँ हमेशा इनके साथ मेल खाती हैं, क्योंकि एक संस्कृति कई देशों में फैली हो सकती है। अतः, सांस्कृतिक मंडल मानवीय परंपराओं के क्षेत्रीय संगठन हैं जो राजनीतिक नक्शों से परे होते हैं।

98. (A) एक केंद्रीय महानगर के चारों ओर घूमते हुए शहर-धनी और शहर-गरीब क्षेत्रों के क्षेत्रों में।
नगरीय उपांत वह भौगोलिक क्षेत्र है जहाँ शहर का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों के साथ मिलता है। यहाँ भूमि उपयोग का स्वरूप मिश्रित होता है, जिसमें कृषि भूमि के साथ-साथ नई आवासीय कॉलोनियाँ और उद्योग भी दिखाई देते हैं। यह न तो पूरी तरह शहरी होता है और न ही पूरी तरह ग्रामीण, बल्कि एक संक्रमणकालीन पेटी है। जैसे-जैसे शहर का विस्तार होता है, यह क्षेत्र बाहर की ओर खिसकता जाता है। यहाँ अक्सर नियोजन की कमी और तेजी से बदलते परिवेश की समस्याएँ देखी जाती हैं।

99. (A) 3, 2, 4, 1
अधिवासों का सही क्रम उनकी बढ़ती जनसंख्या और कार्यों की जटिलता के आधार पर होता है। सबसे छोटा स्तर 'गाँव' है, उसके बाद 'कस्बा' आता है जहाँ कुछ बुनियादी सुविधाएँ होती हैं। 'शहर' अधिक विशिष्ट कार्यों और बड़ी आबादी वाला होता है। 'महानगर' पदानुक्रम के शीर्ष पर होता है क्योंकि यह विशाल जनसंख्या के साथ-साथ अत्यंत जटिल आर्थिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक सेवाओं का केंद्र होता है। यह पदानुक्रम शहरी विकास के स्तर को प्रभावी ढंग से दर्शाता है।

100. (C) प्राकृतिक वृद्धि की दर (प्रतिशत के रूप में)
प्राकृतिक वृद्धि की दर यह बताती है कि किसी जनसंख्या में बिना प्रवास को शामिल किए कितनी वृद्धि हुई है। इसकी गणना जन्म दर और मृत्यु दर के अंतर को 10 से विभाजित करके प्रतिशत के रूप में की जाती है। उदाहरण के लिए, यदि जन्म दर 20 और मृत्यु दर 10 है, तो अंतर 10 होगा, और इसे 10 से भाग देने पर प्राकृतिक वृद्धि दर 1 प्रतिशत प्राप्त होगी। यह माप जनसांख्यिकीविदों को जनसंख्या की आंतरिक विकास प्रवृत्ति समझने और भविष्य की योजना बनाने में सहायता प्रदान करता है।

101. (B) विल्बर जेलिंस्की
विल्बर जेलिंस्की एक प्रमुख अमेरिकी भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने सांस्कृतिक मंडल और प्रवास के गतिशीलता संक्रमण मॉडल पर महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने विश्व को व्यापक

NODIA

वाणिज्यिक या प्रशासनिक सेवाएं न के बराबर होती हैं। ये बस्तियां अक्सर मुख्य गाँवों के बाहरी हिस्सों या कृषि भूमि के बीच में छोटी बस्तियों के रूप में पाई जाती हैं। यह पदानुक्रम की सबसे सरल इकाई है।

83. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अगस्त लोश का मॉडल वाल्टर क्रिस्टॉलर के मॉडल की तुलना में अधिक यथार्थवादी माना जाता है क्योंकि उन्होंने एक कठोर श्रेणीबद्ध पदानुक्रम के बजाय आर्थिक विविधता को स्वीकार किया। लोश ने दिखाया कि कैसे विभिन्न वस्तुओं के बाजार क्षेत्र अलग-अलग हो सकते हैं, जिससे कुछ क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का भारी संकेंद्रण और कुछ में कमी हो जाती है। उनका मॉडल फर्मों के लाभ अधिकतमकरण पर आधारित है, जो वास्तविक बाजार स्थितियों और शहरों के असमान वितरण की सटीक व्याख्या करता है।

84. (D) शहरीकरण
शहरीकरण वह सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है जिसमें किसी देश की कुल जनसंख्या में शहरों में रहने वाले लोगों का प्रतिशत लगातार बढ़ता जाता है। यह केवल जनसंख्या का पलायन नहीं है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों में परिवर्तन और जीवन शैली में बदलाव भी है। औद्योगीकरण और बेहतर सेवाओं की तलाश लोगों को शहरों की ओर खींचती है। उच्च शहरीकरण स्तर अक्सर आर्थिक विकास का सूचक माना जाता है, हालाँकि यह अपने साथ आवास और भीड़भाड़ जैसी कई चुनौतियाँ भी लेकर आता है।

85. (C) सरकार प्रायोजित परिवार नियोजन कार्यक्रम।
प्रति-प्रसववादी नीतियां वे प्रयास हैं जो जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने या कम करने के लिए किए जाते हैं। सरकार द्वारा परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बढ़ावा देना और गर्भनिरोधक साधनों तक आसान पहुँच प्रदान करना इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ऐसी नीतियों का लक्ष्य जन्म दर को कम करना और परिवारों को छोटे आकार के लिए प्रोत्साहित करना होता है, ताकि उपलब्ध संसाधनों पर दबाव कम हो सके। इसके विपरीत, कर प्रोत्साहन और प्रसूति अवकाश जैसी सुविधाएँ जन्म दर बढ़ाने के लिए प्रसववादी नीतियों का हिस्सा होती हैं।

86. (B) देशांतर
विश्व जनसंख्या का वितरण मुख्य रूप से जलवायु, जल की उपलब्धता, उपजाऊ मिट्टी और स्थलाकृति जैसे भौतिक कारकों पर निर्भर करता है। देशांतर रेखाएं केवल समय और भौगोलिक स्थिति निर्धारित करने के लिए उपयोग की जाती हैं और इनका लोगों के बसने के निर्णय पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत, अक्षांश का जलवायु पर सीधा प्रभाव होता है, जो जनसंख्या वितरण को प्रभावित करता है। उपजाऊ मैदान और अनुकूल जलवायु वाले क्षेत्र हमेशा सघन आबादी वाले रहे हैं।

87. (D) दुनिया के निर्जन या बहुत विरल आबादी वाले हिस्से।
'एनेकुमीन' उन भौगोलिक क्षेत्रों को संदर्भित करता है जो मानवीय निवास के लिए स्थायी रूप से अनुपयुक्त हैं। इसमें अत्यधिक ठंडे ध्रुवीय क्षेत्र, ऊँचे पहाड़ और बहुत शुष्क मरुस्थल शामिल हैं जहाँ जीवन की बुनियादी परिस्थितियाँ उपलब्ध नहीं हैं। ये क्षेत्र विश्व के मानचित्र पर निर्जन स्थानों के रूप में दिखाई देते हैं। इसके विपरीत, 'एक्यूमीन' उन क्षेत्रों को कहा जाता है जहाँ मनुष्य बसते हैं और अपनी आजीविका चलाते हैं। एनेकुमीन क्षेत्रों का अध्ययन भूमि की सीमाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

88. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
'आक्रमण' और 'उत्तराधिकार' शहरी पारिस्थितिकी की दो क्रमिक प्रक्रियाएं हैं। आक्रमण तब होता है जब एक नया सामाजिक समूह या व्यावसायिक गतिविधि किसी स्थापित क्षेत्र में प्रवेश करती है। यदि यह नया प्रभाव बढ़ता रहता है, तो यह अंततः पुराने निवासियों या गतिविधियों को उस स्थान से बाहर कर देता है, जिसे 'उत्तराधिकार' कहा जाता है। ये प्रक्रियाएं शहरों के भीतर सामाजिक-आर्थिक और भूमि उपयोग प्रतिरूपों में होने वाले परिवर्तनों को समझने में मदद करती हैं, जैसे किसी आवासीय क्षेत्र का वाणिज्यिक बनना।

89. (C) कोटि-आकार नियम
कोटि-आकार नियम बताता है कि एक देश में शहरों का आकार उनकी रैंक के अनुसार एक नियमित अनुपात में घटता है। प्रमुख शहर वितरण इसका उल्लंघन करता है क्योंकि इसमें सबसे बड़ा शहर अन्य सभी शहरों की तुलना में असंगत रूप से बहुत बड़ा होता है। जहाँ प्रमुख शहर मौजूद होता है, वहाँ दूसरा और तीसरा सबसे बड़ा शहर नियम की तुलना में बहुत छोटा होता है। इसलिए, ये दो अवधारणाएं शहरी प्रणालियों के दो अलग-अलग प्रतिरूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो विकास के विभिन्न स्तरों को दर्शाते हैं।

90. (A) फर्मों के लिए लाभ को अधिकतम करने हेतु इष्टतम स्थान, जिससे एक आर्थिक परिदृश्य का निर्माण हो।
अगस्त लोश का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा सैद्धांतिक ढांचा विकसित करना था जो यह समझा सके कि आर्थिक गतिविधियाँ और बस्तियाँ अंतरिक्ष में कैसे वितरित होती हैं ताकि व्यापारिक लाभ अधिकतम हो सके। उन्होंने उपभोक्ता व्यवहार और उत्पादन लागतों के आधार पर षटकोणीय बाजार क्षेत्रों की कल्पना की। उनका मानना था कि इन क्षेत्रों के परस्पर प्रभाव से एक जटिल 'आर्थिक परिदृश्य' बनता है जो केवल सेवाओं तक सीमित नहीं है। उनका कार्य स्थानिक विश्लेषण को नया आयाम प्रदान करता है।

91. (D) उप-सहारा अफ्रीका
वर्तमान में उप-सहारा अफ्रीका विश्व का वह क्षेत्र है जहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर सबसे अधिक है। इसका मुख्य कारण यहाँ उच्च प्रजनन दर और मृत्यु दर में होती क्रमिक गिरावट है। यद्यपि विश्व के अन्य हिस्सों में वृद्धि दर धीमी हो रही है, लेकिन यहाँ की जनसांख्यिकीय संरचना में युवाओं का अनुपात बहुत अधिक है, जिससे भविष्य में भी जनसंख्या बढ़ने की संभावना बनी हुई है। यह तीव्र वृद्धि क्षेत्र के संसाधनों, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी दबाव डाल रही है।

Downloaded from www.pdf.tube

पड़ता है। यह प्रक्रिया शहर के भौतिक स्वरूप को तो सुधारती है, लेकिन इसके गंभीर सामाजिक परिणाम होते हैं क्योंकि यह सामुदायिक विस्थापन और सामाजिक अलगाव को बढ़ावा देती है। यह आधुनिक शहरी पुनर्विकास का हिस्सा है।

111. (B) एक्यूमीन - अति-जनसंख्या का क्षेत्र।
एक्यूमीन का अर्थ अति-जनसंख्या नहीं, बल्कि पृथ्वी का वह हिस्सा है जो मानवीय निवास के लिए उपयुक्त और स्थायी रूप से बसा हुआ है। यह अति-जनसंख्या या अल्प-जनसंख्या की स्थिति से स्वतंत्र एक भौगोलिक शब्द है। अन्य विकल्प सही हैं: अनुकूलतम जनसंख्या संतुलन को दर्शाती है, अति-जनसंख्या संसाधनों की कमी को, और अल्प-जनसंख्या मानवीय श्रम की कमी को इंगित करती है। अतः विकल्प (B) गलत सुमेलित है क्योंकि एक्यूमीन केवल रहने योग्य क्षेत्र को परिभाषित करता है, न कि वहां के जनसंख्या दबाव के स्तर को।

112. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
क्रिस्टॉलर का मॉडल एक आदर्श और कठोर पदानुक्रम पर आधारित है जहाँ बस्तियाँ निश्चित 'k' मानों के अनुसार संगठित होती हैं। इसके विपरीत, अगस्त लोश का मॉडल अधिक लचीलापन प्रदान करता है और यह स्वीकार करता है कि विभिन्न आर्थिक गतिविधियाँ अलग-अलग स्थानिक प्रतिरूप बना सकती हैं। लोश का दृष्टिकोण अधिक जटिल है क्योंकि इसमें षटकोणीय प्रणालियों को घुमाकर एक ऐसा आर्थिक परिदृश्य बनाया जाता है जो वास्तविक दुनिया की असमानताओं के करीब होता है। अतः दोनों कथन इन दो प्रमुख भौगोलिक सिद्धांतों के अंतरों को स्पष्ट करते हैं।

113. (A) 'आर्थिक रूप से उत्पादक' आयु समूह (15-64) के लोगों की संख्या
निर्भरता अनुपात एक जनसांख्यिकीय माप है जो समाज के उस हिस्से (बच्चों और बुजुर्गों) की तुलना करता है जो आमतौर पर काम नहीं करते, उस हिस्से से जो काम करने की उम्र में है और उत्पादन करता है। उच्च अनुपात का मतलब है कि प्रत्येक काम करने वाले व्यक्ति पर अधिक आश्रितों का बोझ है। यह अनुपात सरकारों को सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की योजना बनाने में मदद करता है। किसी देश के आर्थिक विकास और जीवन स्तर को समझने के लिए यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपकरण माना जाता है।

114. (C) प्रौद्योगिकी
ए.के. एकरमैन के अनुसार, जनसंख्या और संसाधनों के बीच का संबंध केवल उनकी मात्रा पर नहीं, बल्कि उस क्षेत्र की तकनीकी क्षमता पर निर्भर करता है। उच्च तकनीक किसी देश को सीमित संसाधनों के बावजूद बड़ी आबादी का समर्थन करने या अपने संसाधनों का अधिक कुशलता से दोहन करने की अनुमति देती है। एकरमैन ने इसी आधार पर विश्व को विभिन्न प्रकार के जनसंख्या-संसाधन क्षेत्रों में विभाजित किया था। इसलिए, प्रौद्योगिकी वह महत्वपूर्ण माध्यम है जो यह निर्धारित करता है कि कोई क्षेत्र अपनी जनसंख्या को कितना बेहतर जीवन स्तर प्रदान कर सकता है।

NODIA

115. (D) बाजार सिद्धांत (k=3)
बाजार सिद्धांत (k=3) में, क्रिस्टॉलर ने प्रस्तावित किया कि सेवा केंद्रों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वे अधिकतम क्षेत्र को कुशलतापूर्वक कवर कर सकें। इस मॉडल में, प्रत्येक निम्न-क्रम का अधिवास तीन उच्च-क्रम के केंद्रों के बाजार क्षेत्रों के मिलन बिंदु पर स्थित होता है। इसका अर्थ है कि एक उच्च-क्रम का केंद्र स्वयं का और छह पड़ोसियों की आबादी के एक-तिहाई हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। यह ज्यामितीय संरचना यह सुनिश्चित करती है कि उपभोक्ता हमेशा न्यूनतम यात्रा दूरी के भीतर अपनी आवश्यकताएं पूरी कर सकें।

116. (C) मूल देश में अकाल
प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को अपना वर्तमान निवास स्थान छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। अकाल, युद्ध, गरीबी, बेरोजगारी और उत्पीड़न इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये स्थितियाँ जीवन को कठिन या असुरक्षित बना देती हैं, जिससे लोग सुरक्षा और आजीविका की तलाश में कहीं और जाने को प्रेरित होते हैं। इसके विपरीत, उच्च वेतन और अच्छी जलवायु आकर्षण कारक हैं जो लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। अकाल जैसे संकट अक्सर बड़े पैमाने पर अनैच्छिक और संकटकालीन प्रवास को जन्म देते हैं।

117. (B) अधिवासों के बीच अंतराल, आकार और कार्यात्मक संबंध।
अधिवास पदानुक्रम की अवधारणा हमें यह समझने में मदद करती है कि बस्तियाँ अंतरिक्ष में किस प्रकार वितरित हैं और वे एक-दूसरे से कैसे जुड़ी हुई हैं। यह स्पष्ट करता है कि छोटे गाँव संख्या में अधिक और एक-दूसरे के करीब क्यों होते हैं, जबकि बड़े शहर कम होते हैं और उनके बीच की दूरी अधिक होती है। इसके अलावा, यह बस्तियों द्वारा प्रदान किए जाने वाले कार्यों की विविधता को भी दर्शाता है। यह संपूर्ण ढांचा क्षेत्रीय नियोजन और सेवा वितरण प्रणालियों को व्यवस्थित करने के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

118. (D) शहरी विस्तार की प्रत्याशा में भूमि का सट्टा धारण।
नगरीय उपांत में भूमि का मूल्य भविष्य में शहरी विकास की संभावनाओं के कारण बहुत बढ़ जाता है। इसलिए, यहाँ के भूस्वामी या निवेशक अक्सर भूमि को कृषि से हटाकर खाली छोड़ देते हैं ताकि भविष्य में उसे ऊँचे दामों पर बेचा जा सके, जिसे 'सट्टा धारण' कहा जाता है। यह क्षेत्र अनिश्चितता का क्षेत्र होता है जहाँ ग्रामीण गतिविधियाँ कम हो रही होती हैं और पूर्ण शहरीकरण अभी हुआ नहीं होता। यह विशेषता यहाँ की भूमि के उपयोग और आर्थिक व्यवहार को शहर के अन्य भागों से भिन्न बनाती है।

119. (A) औसत वार्षिक आय
एक सांस्कृतिक मंडल को मुख्य रूप से उन साझा अमूर्त विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है जो लोगों के जीवन जीने के तरीके को आकार देती हैं, जैसे भाषा, धर्म और ऐतिहासिक परंपराएं। औसत वार्षिक आय एक आर्थिक संकेतक है और यह एक ही सांस्कृतिक मंडल के भीतर बहुत भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी सांस्कृतिक मंडल में बहुत अमीर और अपेक्षाकृत कम अमीर दोनों तरह के देश

यह केवल कृषि योग्य भूमि पर जनसंख्या के दबाव को मापता है, जो भोजन की उपलब्धता और पोषण सुरक्षा को समझने के लिए अनिवार्य है। उच्च कायिक घनत्व यह संकेत देता है कि भूमि पर खेती का भार बहुत अधिक है। अतः तीनों कथन जनसंख्या वितरण और संसाधनों के विश्लेषण के लिए सही और पूरक हैं।

174. (A) जीन गॉटमैन
'मेगालोपोलिस' शब्द को प्रसिद्ध फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता जीन गॉटमैन ने 1961 में लोकप्रिय बनाया था। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर बोस्टन से वाशिंगटन डी.सी. तक फैले विशाल शहरी गलियारे का वर्णन करने के लिए किया था। गॉटमैन ने दिखाया कि कैसे कई अलग-अलग महानगर आपस में जुड़कर एक एकीकृत आर्थिक और सामाजिक इकाई बना लेते हैं। उनका यह कार्य आधुनिक शहरीकरण के एक नए और वृहत स्तर को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, जहाँ शहरी सीमाएं पूरी तरह समाप्त हो जाती हैं।

175. (C) "दो बच्चों के मानदंड" को बढ़ावा देने वाले सार्वजनिक अभियान
प्रति-प्रसववादी नीतियों का मूल लक्ष्य जनसंख्या वृद्धि को कम करना होता है। सरकार द्वारा "दो बच्चों के मानदंड" या "हम दो हमारे दो" जैसे नारों का प्रचार करना इसी दिशा में एक प्रयास है। इसके माध्यम से समाज में छोटे परिवार के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाई जाती है और लोगों को सीमित संतान पैदा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। अन्य विकल्प, जैसे नकद लाभ या कर छूट, जन्म दर बढ़ाने वाली प्रसववादी नीतियों के अंतर्गत आते हैं। अतः छोटे परिवार का प्रचार ही जनसंख्या नियंत्रण का एक प्रमुख उपकरण है।

176. (B) 2.67 मिलियन
कोटि-आकार नियम के अनुसार, n-वें शहर की जनसंख्या निकालने का सूत्र Pn = P1/n है। यहाँ P1 8 मिलियन है और हमें तीसरे शहर की जनसंख्या ज्ञात करनी है। 8 को 3 से विभाजित करने पर लगभग 2.67 प्राप्त होता है। यह नियम यह मानता है कि एक स्वस्थ शहरी प्रणाली में विभिन्न आकारों के शहर एक निश्चित सांख्यिकीय क्रम में मौजूद होने चाहिए। यदि वास्तविक जनसंख्या इस आंकड़े से बहुत अलग है, तो वह शहरी असंतुलन का संकेत हो सकता है।

177. (A) अधिवास भूगोल
अधिवास भूगोल मानव भूगोल की वह शाखा है जो पृथ्वी की सतह पर मानवीय बस्तियों के स्वरूप, उनके स्थानिक वितरण, संरचना और कार्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करती है। इसमें ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के अधिवासों को शामिल किया जाता है। यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि मनुष्य ने अपने पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाकर रहने के लिए कैसे बस्तियाँ बसाईं और वे समय के साथ कैसे विकसित हुईं। यह विषय क्षेत्रीय नियोजन, शहरी विकास और ग्रामीण सुधार की योजनाओं के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

178. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
प्राकृतिक वृद्धि जन्म और मृत्यु दर का अंतर है, जो जनसंख्या के आंतरिक विस्तार को दर्शाती है। कुल प्रजनन दर एक महिला के जीवनकाल में होने वाले बच्चों की औसत संख्या है। जीवन प्रत्याशा वह औसत आयु है जब तक एक नवजात शिशु के जीवित रहने की संभावना होती है, जो समाज के स्वास्थ्य का सूचक है। शिशु मृत्यु दर प्रति हजार जन्मों पर एक साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु को मापती है। ये सभी संकेतक जनसांख्यिकीय विश्लेषण और देश के विकास स्तर को समझने के लिए अनिवार्य सांख्यिकीय उपकरण हैं।

179. (C) स्थलाकृति या परिवहन गलियारों के संबंध में बहुत सरल है।
अर्नेस्ट बर्गेस के संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल की सबसे बड़ी आलोचना इसकी सादगी और वास्तविकता से दूरी है। यह मॉडल एक समान समतल भूमि की कल्पना करता है और परिवहन मार्गों के प्रभाव को नजरअंदाज कर देता है। वास्तविक शहरों में नदियाँ, पहाड़ और सड़कें विकास की दिशा को पूरी तरह बदल देती हैं, जिससे छल्ले टूट जाते हैं। इसके अलावा, यह मॉडल आधुनिक तकनीक और विकेंद्रीकरण की प्रवृत्तियों को भी समझाने में असमर्थ है। इसलिए, इसे केवल एक प्रारंभिक सैद्धांतिक ढांचे के रूप में देखा जाता है, न कि आधुनिक शहरों के पूर्ण चित्र के रूप में।

180. (C) विकास में असंतुलन, जिसमें एक ही शहर में निवेश केंद्रित हो।
प्रमुख शहर का अस्तित्व अक्सर यह दर्शाता है कि उस देश में आर्थिक विकास का वितरण बहुत ही असमान है। जब सरकार और निजी क्षेत्र अपना सारा निवेश, बुनियादी ढांचा और उद्योग केवल एक ही बड़े शहर में केंद्रित करते हैं, तो वह शहर बाकी देश की तुलना में असंगत रूप से बड़ा हो जाता है। इसके कारण अन्य क्षेत्रों में गरीबी और अवसरों की कमी बनी रहती है, जिससे वहां से प्रमुख शहर की ओर भारी पलायन होता है। यह स्थिति क्षेत्रीय विषमता और सामाजिक-आर्थिक असंतुलन का एक प्रमुख भौगोलिक लक्षण है।

181. (D) युवा वयस्कों की तुलना में परिवारों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रवास करने की अधिक संभावना होती है।
रेवेनस्टीन के प्रवास के नियमों के अनुसार, युवा वयस्क सबसे अधिक गतिशील होते हैं और उनके द्वारा प्रवास करने की संभावना परिवारों की तुलना में कहीं अधिक होती है। परिवार आमतौर पर कम प्रवास करते हैं क्योंकि वे बच्चों और बुजुर्गों के साथ जुड़े होते हैं, जिससे स्थानांतरण कठिन और महंगा हो जाता है। उनके अन्य नियम जैसे कि प्रत्येक धारा की प्रति-धारा, कम दूरी का प्रवास और बड़े शहरों का आकर्षण आज भी सही माने जाते हैं। अतः विकल्प डी रेवेनस्टीन के मूल सिद्धांतों के विपरीत है और गलत कथन है।

182. (D) षट्कोण
वाल्टर क्रिस्टॉलर ने अपने केंद्रीय स्थान सिद्धांत में बाजार क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने के लिए षट्कोणों का चुनाव किया। उन्होंने तर्क दिया कि वृत्त एक-दूसरे को अतिव्यापित करते हैं

Click Here to Buy book on Amazon

प्रदान करता है, जबकि हिंटरलैंड शहर को श्रम, भोजन और कच्चा माल देता है। इन दोनों के बीच के इसी पारस्परिक और कार्यात्मक संबंध को मापने और समझने के लिए नगर-क्षेत्र शब्द का उपयोग किया जाता है।

129. (B) 2, 1, 3
शहरी पारिस्थितिकी में किसी मोहल्ले के परिवर्तन की प्रक्रिया हमेशा 'आक्रमण' के साथ शुरु होती है, जहाँ एक नया जनसंख्या समूह या भूमि उपयोग वहां प्रवेश करता है। इसके बाद 'उत्तराधिकार' का चरण आता है, जहाँ यह नया समूह धीरे-धीरे पुराने निवासियों या गतिविधियों को पूरी तरह से विस्थापित कर देता है और उस क्षेत्र पर हावी हो जाता है। अंत में, 'स्थिरीकरण' होता है जहाँ वह नया स्वरूप पूरी तरह से स्थापित होकर अपनी एक नई पहचान बना लेता है। यह क्रम शहरों के सामाजिक-स्थानिक विकास को गहराई से स्पष्ट करता है।

130. (D) लाभ अधिकतमकरण और औद्योगिक स्थान पर आधारित एक कम कठोर मॉडल का विकास।
अगस्त लोश का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्रिस्टॉलर के निश्चित पदानुक्रम को अधिक लचीले और यथार्थवादी आर्थिक ढांचे में बदलना था। उन्होंने फर्मों के लिए लागत और राजस्व के संतुलन पर ध्यान केंद्रित किया ताकि लाभ को अधिकतम किया जा सके। लोश ने दिखाया कि कैसे विभिन्न बाजार क्षेत्रों के अतिव्यापन से शहरों के असमान वितरण वाला एक जटिल आर्थिक परिदृश्य बनता है। उनका मॉडल केवल सेवाओं तक सीमित न रहकर उद्योगों और व्यवसायों के स्थानिक व्यवहार की अधिक सूक्ष्म समझ प्रदान करता है, जो आधुनिक आर्थिक भूगोल का आधार है।

131. (B) शिशु मृत्यु दर (IMR)
प्रजनन क्षमता का संबंध जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या और उनसे जुड़ी दरों से है, जैसे अशोधित जन्म दर, सामान्य प्रजनन दर और कुल प्रजनन दर। शिशु मृत्यु दर इसके विपरीत मर्त्यता या मृत्यु दर का एक प्रमुख माप है, जो शिशुओं की मृत्यु की घटनाओं का विश्लेषण करता है। यद्यपि दोनों जनसंख्या परिवर्तन को प्रभावित करते हैं, लेकिन जनसांख्यिकी में उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में रखा जाता है। प्रजनन क्षमता 'जीवन' की शुरुआत से संबंधित है, जबकि मृत्यु दर जीवन के अंत या उसके नुकसान को मापती है।

132. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नगरीय उपांत एक गतिशील क्षेत्र है जहाँ शहर और गाँव की सीमाएं मिलती हैं। यहाँ कृषि भूमि का उपयोग आवासीय या औद्योगिक उद्देश्यों के लिए करने की होड़ मची रहती है, जिससे भूमि मूल्यों में तीव्र वृद्धि होती है। यह स्थिति अक्सर किसानों और शहरी डेवलपर्स के बीच संघर्ष को जन्म देती है, क्योंकि दोनों की माँगें अलग-अलग होती हैं। अभिकथन और कारण दोनों सही हैं क्योंकि यही भूमि उपयोग प्रतिस्पर्धा ही उपांत क्षेत्र की पहचान और वहां होने वाली नियोजन संबंधी समस्याओं का मुख्य कारण बनती है।

133. (D) ग्रीक-रोमन संस्कृति और ईसाई धर्म में निहित विरासत।
पश्चिमी सांस्कृतिक मंडल की जड़ें प्राचीन यूनानी और रोमन सभ्यताओं के दर्शन, कानून और राजनीति में गहराई से समाहित हैं। ईसाई धर्म इस मंडल का मुख्य धार्मिक सूत्र रहा है जिसने यहां के नैतिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया है। इसके साथ ही, पुनर्जागरण, औद्योगिक क्रांति और लोकतांत्रिक आदर्शों ने इस संस्कृति को और अधिक विशिष्ट बनाया है। यह मंडल मुख्य रूप से यूरोप और उत्तरी अमेरिका को कवर करता है और अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए दुनिया भर में पहचाना जाता है।

134. (B) चरण 2
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण में उच्च कुल प्रजनन दर बनी रहती है क्योंकि पारंपरिक मान्यताएं जन्म दर को ऊँचा रखती हैं। साथ ही, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के कारण मृत्यु दर कम होने लगती है, जिससे शिशु मृत्यु दर अभी भी उल्लेखनीय होने के बावजूद जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगती है। यह स्थिति अक्सर उन विकासशील देशों में देखी जाती है जो आधुनिकीकरण की शुरुआत कर रहे हैं। यहाँ युवा आबादी का अनुपात बहुत अधिक होता है, जिससे भविष्य में तीव्र जनसंख्या वृद्धि की प्रबल संभावना बनी रहती है।

135. (D) अधिकतम जनसंख्या जिसे किसी दिए गए पर्यावरण द्वारा पोषित किया जा सकता है।
'वहन क्षमता' पारिस्थितिकी और भूगोल की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो यह बताती है कि किसी क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधन वहां कितने लोगों का स्थायी रूप से भरण-पोषण कर सकते हैं। यदि जनसंख्या इस सीमा को पार कर जाती है, तो पर्यावरण का क्षरण शुरू हो जाता है और जीवन स्तर गिर जाता है। यह क्षमता तकनीक, संसाधनों के प्रबंधन और उपभोग के स्तर के अनुसार बदलती रहती है। जनसंख्या-संसाधन विश्लेषण में यह शब्द सतत विकास और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के महत्व को रेखांकित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

136. (C) बहु-नाभिक मॉडल
हैरिस और उलमैन का बहु-नाभिक मॉडल यह मानता है कि बड़े शहर केवल एक केंद्र के चारों ओर नहीं बढ़ते हैं, बल्कि उनमें विकास के कई अलग-अलग बिंदु होते हैं। हवाई अड्डे, विश्वविद्यालय, बंदरगाह और औद्योगिक क्षेत्र स्वतंत्र 'नाभिकों' के रूप में कार्य करते हैं जिनके चारों ओर विशिष्ट गतिविधियाँ और आवासीय क्षेत्र विकसित होते हैं। यह मॉडल आधुनिक महानगरों की जटिल संरचना को समझाने में सबसे अधिक प्रभावी है क्योंकि यह स्वीकार करता है कि विभिन्न शहरी कार्यों की अलग-अलग स्थानिक आवश्यकताएं और आकर्षण के केंद्र होते हैं।

137. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
कोटि-आकार नियम कोई अनिवार्य कानून नहीं है बल्कि एक अनुभवजन्य अवलोकन है जो कई देशों पर लागू नहीं होता, विशेषकर वहां जहां एक ही शहर का प्रभुत्व है। इसी तरह, प्रमुख शहर की परिभाषा केवल आकार पर आधारित नहीं है, बल्कि उसके असंगत प्रभुत्व पर है, और इसके लिए

Downloaded from www.pdf.tube

191. (A) 2, 4, 1, 3
अर्नेस्ट बर्गेस के संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल के अनुसार, शहर के विकास के पाँच छल्ले होते हैं जो केंद्र से बाहर की ओर बढ़ते हैं। सबसे केंद्र में केंद्रीय व्यापारिक जिला होता है। इसके बाद दूसरा छल्ला संक्रमण क्षेत्र का होता है। तीसरे छल्ले में श्रमिक वर्ग के घर होते हैं। चौथा छल्ला बेहतर आवासीय घरों का होता है और सबसे बाहरी या पाँचवाँ छल्ला कम्यूटर क्षेत्र कहलाता है जहाँ से लोग काम के लिए शहर आते हैं। यह क्रम शहरी संरचना में सामाजिक और आर्थिक वर्गों के स्थानिक वितरण को एक विशिष्ट ज्यामितीय स्वरुप प्रदान करता है।

192. (B) विल्बर जेलिंस्की
विल्बर जेलिंस्की ने 1971 में 'गतिशीलता संक्रमण की परिकल्पना' प्रस्तुत की थी। उन्होंने तर्क दिया कि जिस तरह कोई देश जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों से गुजरता है, उसी तरह वहां के प्रवास प्रतिरूप भी बदलते हैं। उदाहरण के लिए, विकास के प्रारंभिक चरणों में ग्रामीण से शहरी प्रवास अधिक होता है, जबकि बाद के चरणों में शहरों के बीच या अंतर्राष्ट्रीय प्रवास प्रमुख हो जाता है। जेलिंस्की का यह मॉडल जनसांख्यिकी और मानव गतिशीलता के बीच के गहरे ऐतिहासिक और आर्थिक संबंधों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

193. (A) आकार और कार्यात्मक महत्व के आधार पर अधिवासों की रैंकिंग।
अधिवास भूगोल में 'पदानुक्रम' का अर्थ बस्तियों को उनकी जनसंख्या के आकार और उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की विविधता के अनुसार एक श्रेणीबद्ध क्रम में व्यवस्थित करना है। इस प्रणाली में, पिरामिड के आधार पर बड़ी संख्या में छोटे गाँव होते हैं जो केवल प्राथमिक सुविधाएँ देते हैं। जैसे-जैसे हम ऊपर बढ़ते हैं, बस्तियों की संख्या कम होती जाती है लेकिन उनका महत्व और सेवाओं की जटिलता बढ़ती जाती है, जिसके शीर्ष पर महानगर होते हैं। यह पदानुक्रम यह समझने में मदद करता है कि बस्तियाँ एक-दूसरे पर कैसे निर्भर हैं।

194. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दौरान यह देखा गया है कि आर्थिक विकास के साथ जन्म दर में गिरावट आती. है। इसका कारण यह है कि शहरी समाजों में बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा की लागत बढ़ जाती है, जिससे वे आर्थिक रूप से एक 'दायित्व' बन जाते हैं, न कि कृषि की तरह केवल एक 'श्रम शक्ति'। साथ ही, महिलाओं की शिक्षा और करियर के अवसरों में वृद्धि उन्हें परिवार नियोजन के प्रति अधिक जागरुक और सक्षम बनाती है। अतः सामाजिक-आर्थिक संरचना में यह बदलाव ही प्रजनन व्यवहार में आने वाली गिरावट का मुख्य कारण है।

195. (C) रोमांस भाषाओं का प्रसार।
इस्लामी सांस्कृतिक मंडल की मुख्य पहचान इस्लाम धर्म के सिद्धांतों, अरबी भाषा के ऐतिहासिक प्रभाव और विशिष्ट वास्तुकला जैसे गुंबद और मीनारों से होती है। यह मंडल उत्तरी अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों में फैला है। इसके विपरीत, 'रोमांस भाषाएं' (जैसे फ्रेंच, स्पेनिश, इतालवी) पश्चिमी ईसाई संस्कृति और प्राचीन रोमन साम्राज्य की विरासत का हिस्सा हैं। इसलिए, विकल्प सी इस मंडल की सांस्कृतिक विशेषताओं से बिल्कुल मेल नहीं खाता और गलत है। यह मंडल अपनी धार्मिक और भाषाई जड़ों के कारण विश्व में एक अलग पहचान रखता है।

196. (B) शहर में कामगारों के आने-जाने के प्रतिरूपों का सर्वेक्षण करना।
नगर-क्षेत्र एक कार्यात्मक इकाई है, जिसकी सीमाएं शहर और उसके आसपास के बीच के दैनिक संबंधों पर निर्भर करती हैं। कामगारों के आने-जाने का विश्लेषण यह समझने का सबसे प्रभावी तरीका है कि शहर का वास्तविक आर्थिक प्रभाव भौगोलिक रुप से कितनी दूर तक फैला हुआ है। यदि किसी गाँव से बड़ी संख्या में लोग रोजाना शहर काम करने आते हैं, तो वह गाँव कार्यात्मक रुप से उस नगर-क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है। यह विधि प्रशासनिक सीमाओं से परे शहर की वास्तविक पहुँच और प्रभाव को मापने के लिए वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

197. (A) केवल 1 और 2
अगस्त लोश का मॉडल वाल्टर क्रिस्टॉलर के मॉडल की तुलना में अधिक लचीला है क्योंकि यह विभिन्न आर्थिक वस्तुओं के लिए अलग-अलग बाजार क्षेत्रों की अनुमति देता है। उन्होंने षटकोणीय जालों को घुमाकर एक ऐसा जटिल परिदृश्य बनाया जिसमें 'शहर-धनी' और 'शहर-गरीब' खंड मौजूद थे। यह कहना गलत है कि उन्होंने एक ही निश्चित 'k' मान का उपयोग किया; वास्तव में, उनकी मुख्य विशेषता ही 'k' मानों की विविधता और परिवर्तनशीलता थी। अतः पहले दो कथन लोश के सिद्धांत की विशिष्टताओं को सही ढंग से दर्शाते हैं, जबकि तीसरा कथन उनकी अवधारणा के विपरीत है।

198. (C) प्रतिस्पर्धा और सामाजिक संगठन की स्थानिक प्रक्रियाएं जो शहरों को आकार देती हैं।
शहरी भूगोल में 'पारिस्थितिक प्रक्रिया' शब्द का उपयोग शिकागो स्कूल के विद्वानों द्वारा किया गया था। इसका अर्थ उन सामाजिक और आर्थिक ताकतों से है जो शहर के भीतर विभिन्न समूहों और गतिविधियों के वितरण को नियंत्रित करती हैं। इसमें आक्रमण, उत्तराधिकार, केंद्रीकरण, विकेंद्रीकरण और पृथक्करण जैसी प्रक्रियाएँ शामिल हैं। जिस तरह प्रकृति में विभिन्न प्रजातियाँ स्थान और संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं, उसी तरह शहर के भीतर भी अलग-अलग समूह और व्यवसाय सबसे अच्छी जगहों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह निरंतर होने वाली प्रक्रियाओं का अध्ययन है जो शहरी ढांचे को बदलता रहता है।

199. (B) कोटि-आकार नियम
कोटि-आकार नियम एक सांख्यिकीय नियमितता है जिसे जॉर्ज जिफ ने लोकप्रिय बनाया था। यह नियम बताता है कि एक देश की शहरी प्रणाली में, 'n' रैंक वाले शहर की जनसंख्या सबसे बड़े शहर की जनसंख्या का 1/n हिस्सा होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि सबसे बड़ा शहर 10 लाख का है, तो

NODIA

असंतुलन को दर्शाता है। अतः तीसरा कथन गलत है क्योंकि यह संतुलन का नहीं, बल्कि प्रभुत्व का सूचक है।

147. (C) अनियोजित विकास और सार्वजनिक सेवाओं का अपर्याप्त प्रावधान।
नगरीय उपांत में सबसे गंभीर समस्या 'शहरी फैलाव' के कारण होने वाला बेतरतीब और अनियंत्रित निर्माण है। चूंकि यह क्षेत्र अक्सर नगर निगम की सीमा से बाहर होता है, यहाँ बुनियादी ढांचे जैसे पक्की सड़कें, सीवरेज प्रणाली और नियमित जल आपूर्ति की भारी कमी होती है। यहाँ भूमि के अवैध उपयोग और अनधिकृत कॉलोनियों का निर्माण तेजी से होता है। यह नियोजन की विफलता को दर्शाता है, जहाँ शहरी सुविधाएँ तो पहुँचने की कोशिश करती हैं, लेकिन व्यवस्थित प्रबंधन और सरकारी नियंत्रण का हमेशा अभाव बना रहता है।

148. (B) मानव जनसंख्या और उसके संसाधन आधार के बीच संबंध।
जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र की अवधारणा का मूल उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में मानवीय आबादी वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के साथ किस तरह का संतुलन बनाए हुए है। इसमें संसाधनों की मात्रा के साथ-साथ उन्हें उपयोग करने की तकनीक और कुशलता को भी देखा जाता है। यह अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि क्यों कुछ क्षेत्र संसाधनों के बावजूद गरीब हैं और कुछ सीमित संसाधनों में भी समृद्ध हैं। यह वैश्विक विकास की असमानताओं और भविष्य की वहन क्षमता को समझने का एक आधार है।

149. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
जॉर्ज जिफ कोटि-आकार नियम के लिए जाने जाते हैं, जो शहरों के सांख्यिकीय पदानुक्रम को स्पष्ट करता है। मार्क जेफरसन ने प्रमुख शहर की अवधारणा प्रस्तुत की, जो शहरी प्रभुत्व को दर्शाती है। अर्नेस्ट बर्गेस ने संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल दिया, जो शिकागो के शहरी छल्लों पर आधारित है। होमर होयट ने सेक्टर मॉडल विकसित किया, जिसमें विकास परिवहन लाइनों के साथ होता है। ये चारों विद्वान और उनके सिद्धांत शहरी भूगोल के आधार स्तंभ हैं, जो आधुनिक शहरों के स्थानिक संगठन और संरचना को समझने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं।

150. (B) प्रवास चरणों में होता है, जैसे गाँव से कस्बे से शहर की ओर।
'सोपान-प्रवास' रेवेनस्टीन द्वारा पहचाना गया एक महत्वपूर्ण प्रवास प्रतिरूप है। इसके अनुसार, ग्रामीण लोग अक्सर सीधे बड़े महानगर में नहीं जाते हैं। इसके बजाय, वे पहले एक छोटे स्थानीय कस्बे में जाते हैं जहाँ वे शहरी जीवन के अभ्यस्त होते हैं। वहां कुछ समय बिताने के बाद, वे एक मध्यम आकार के शहर और अंततः बड़े महानगर की ओर बढ़ते हैं। यह प्रक्रिया प्रवासियों को नए वातावरण में ढलने और आर्थिक रूप से धीरे-धीरे मजबूत होने का अवसर प्रदान करती है, जो स्थानांतरण को कम जोखिम भरा बनाती है।

151. (B) Pn = P1 / n
कोटि-आकार नियम का गणितीय रूप Pn = P1/n है। इसमें Pn उस शहर की अनुमानित जनसंख्या है जिसकी रैंक 'n' है, और P1 देश के सबसे बड़े शहर की जनसंख्या को दर्शाता है। यह सूत्र एक पूर्ण व्युत्क्रम संबंध की कल्पना करता है, जहाँ दूसरे रैंक का शहर पहले का आधा और दसवें रैंक का शहर पहले का दसवां हिस्सा होता है। यह नियम उन देशों की शहरी प्रणालियों में अधिक सटीक बैठता है जहाँ आर्थिक विकास का वितरण अधिक समान और ऐतिहासिक रूप से सुसंगत रहा है।

152. (A) 2, 3, 1
वैश्विक जनसंख्या सम्मेलनों का सही कालानुक्रमिक क्रम बुखारेस्ट (1974), मेक्सिको सिटी (1984) और अंत में काहिरा (1994) है। बुखारेस्ट सम्मेलन ने जनसंख्या और विकास के बीच के संबंधों पर पहली बार वैश्विक चर्चा शुरु की थी। मेक्सिको सिटी में इसकी समीक्षा की गई, जबकि काहिरा सम्मेलन ने महिलाओं के अधिकारों और प्रजनन स्वास्थ्य को जनसंख्या नीति के केंद्र में लाकर एक क्रांतिकारी बदलाव किया। ये सम्मेलन दर्शाते हैं कि समय के साथ दुनिया ने जनसंख्या के मुद्दों को केवल संख्या के बजाय मानवीय विकास के नजरिए से देखना शुरु किया है।

153. (C) पुरवा
पुरवा अधिवास पदानुक्रम की सबसे बुनियादी और छोटी इकाई है। इसमें घरों का एक बहुत छोटा समूह होता है, जो अक्सर मुख्य गाँव के बाहर स्थित होता है। यहाँ की जनसंख्या बहुत कम होती है और आर्थिक गतिविधियाँ मुख्य रूप से केवल प्राथमिक कार्यों, जैसे कृषि या पशुपालन तक सीमित होती हैं। यहाँ बाजार, डाकघर या क्लिनिक जैसी बुनियादी सेवाएं भी अक्सर उपलब्ध नहीं होती हैं। लोग अपनी इन जरूरतों के लिए ऊँचे पदानुक्रम वाली बस्तियों, जैसे गाँवों या पास के कस्बों, पर पूरी तरह निर्भर रहते हैं।

154. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल मुख्य रूप से यूरोप के औद्योगिक विकास के अनुभवों के आधार पर बनाया गया था। इसलिए, इसकी आलोचना 'नृवंशकेंद्रित' होने के नाते की जाती है क्योंकि यह मानता है कि दुनिया के अन्य सभी हिस्से भी इसी विकास पथ का पालन करेंगे। कई विकासशील देशों में मृत्यु दर में गिरावट आधुनिकीकरण के बजाय चिकित्सा सहायता के कारण बहुत तेजी से हुई है, जिससे उनका जनसांख्यिकीय व्यवहार भिन्न हो गया है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं क्योंकि मॉडल की सीमाएं उसके आधारभूत ऐतिहासिक आंकड़ों में निहित हैं।

155. (C) एक मजबूत ग्रामीण चरित्र और अधिक कृषि गतिविधि रखता है।
ग्रामीण-नगरीय उपांत, नगरीय उपांत की तुलना में शहर के केंद्र से अधिक दूर होता है और इसमें ग्रामीण विशेषताएं अधिक स्पष्ट होती हैं। यहाँ भूमि का अधिकांश हिस्सा अभी भी खेती के लिए उपयोग किया जाता है, यद्यपि यहाँ शहरी प्रभाव, जैसे काम के लिए शहर जाना, महसूस किया जाने लगता है। नगरीय उपांत में निर्माण और गैर-कृषि गतिविधियाँ अधिक सघन होती हैं। ग्रामीण-नगरीय उपांत वास्तव में शहर के विस्तार की सबसे

Click Here to Buy book on Amazon

शामिल हो सकते हैं, लेकिन उनकी बुनियादी सांस्कृतिक विरासत समान रहती है। इसलिए, आर्थिक आंकड़े सांस्कृतिक पहचान का प्राथमिक आधार नहीं माने जाते हैं।

120. (C) जननक्षमता जैविक क्षमता है, जबकि प्रजननता वास्तविक प्रजनन प्रदर्शन है।
जनसांख्यिकी में 'जननक्षमता' उस शारीरिक या जैविक योग्यता को दर्शाती है जिसके माध्यम से एक महिला गर्भधारण कर सकती है। इसके विपरीत, 'प्रजननता' का अर्थ है वास्तव में पैदा हुए जीवित बच्चों की संख्या। एक महिला में जननक्षमता तो हो सकती है, लेकिन वह विभिन्न व्यक्तिगत या सामाजिक कारणों से प्रजननता (वास्तविक जन्म) न करने का निर्णय ले सकती है। संक्षेप में, जननक्षमता एक 'क्षमता' है जबकि प्रजननता एक 'परिणाम' है। इन दोनों के बीच का अंतर भविष्य के अनुमानों और स्वास्थ्य नीतियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

121. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
नगर-क्षेत्र शहर के कार्यात्मक प्रभाव क्षेत्र को दर्शाता है जहाँ आर्थिक और सामाजिक अंतःक्रियाएं होती हैं। कोटि-आकार नियम शहरों के रैंक और उनकी जनसंख्या के बीच के सांख्यिकीय संबंध को स्पष्ट करता है। प्रमुख शहर वह है जो दूसरे शहरों की तुलना में बहुत बड़ा और प्रभावशाली होता है, जो अक्सर विकास के असंतुलन को दिखाता है। नगरीय उपांत शहर और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच का वह मिलन स्थल है जहाँ दोनों की विशेषताएं मिश्रित होती हैं। ये अवधारणाएं शहरी प्रणालियों के स्थानिक संगठन को समझने के लिए अनिवार्य हैं।

122. (D) मृत्यु दर जन्म दर से अधिक होना, जिससे राष्ट्रीय जनसंख्या में गिरावट आती है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के अंतिम या पाँचवें चरण में समाज अत्यंत विकसित हो जाता है और जन्म दर मृत्यु दर से भी नीचे गिर जाती है। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में स्वाभाविक रूप से गिरावट आने लगती है और वृद्ध आबादी का अनुपात काफी बढ़ जाता है। कई यूरोपीय देश और जापान वर्तमान में इसी स्थिति के करीब पहुँच रहे हैं। यह चरण सरकारों के लिए नई चुनौतियाँ पैदा करता है, जैसे कार्यबल की कमी और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर बढ़ता बोझ। यह संक्रमण प्रक्रिया के पूर्ण चक्र के समापन का संकेत है।

123. (D) 1, 2 और 3
शहरी संरचना के तीनों प्रमुख मॉडल शहरों के विकास के अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। बर्गेस का संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल छल्लों में विस्तार को मानता है। होयट का सेक्टर मॉडल परिवहन गलियारों के महत्व पर जोर देता है। हैरिस और उलमैन का बहु-नाभिक मॉडल यह स्वीकार करता है कि आधुनिक शहरों में विकास के कई अलग-अलग केंद्र, जैसे औद्योगिक पार्क या विश्वविद्यालय, हो सकते हैं। ये सभी मॉडल मिलकर यह समझने में मदद करते हैं कि सामाजिक और आर्थिक ताकतों ने शहरों के भौतिक ढांचे को कैसे जटिल बनाया है।

124. (C) एक शहरी केंद्र में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक शक्ति का संकेंद्रण।
प्रमुख शहर प्रतिरूप का सीधा प्रभाव यह होता है कि पूरा देश केवल एक ही शहर के इर्द-गिर्द घूमने लगता है। देश की अधिकांश नौकरियाँ, शिक्षण संस्थान, मनोरंजन और सरकारी कार्यालय इसी एक केंद्र में स्थित होते हैं। इससे अन्य शहर और ग्रामीण क्षेत्र विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं और वहां से लोगों का भारी पलायन प्रमुख शहर की ओर होने लगता है। यह स्थिति न केवल क्षेत्रीय असंतुलन पैदा करती है, बल्कि उस मुख्य शहर पर भी संसाधनों और बुनियादी ढांचे का अत्यधिक बोझ डालती है।

125. (D) महिला जनसंख्या स्वयं को प्रतिस्थापित करने के लिए पर्याप्त बेटियों को जन्म नहीं दे रही है।
1.0 से कम शुद्ध पुनरुत्पादन दर का अर्थ है कि प्रजनन आयु की प्रत्येक महिला को भविष्य में प्रतिस्थापित करने के लिए औसतन एक बेटी भी उपलब्ध नहीं है। चूंकि केवल बेटियाँ ही अगली पीढ़ी में माताएं बनती हैं, इसलिए यह स्थिति जनसंख्या में भविष्य की गिरावट का एक निश्चित संकेत है। यदि यह दर लंबे समय तक बनी रहती है, तो आव्रजन के बिना देश की जनसंख्या धीरे-धीरे कम होने लगेगी और औसत आयु बढ़ने लगेगी। यह जनसांख्यिकीय स्थिरता और आर्थिक भविष्य के लिए एक चिंताजनक संकेत माना जाता है।

126. (A) प्रशासनिक सिद्धांत (k=7)
क्रिस्टॉलर के k=7 पदानुक्रम में, प्रत्येक उच्च-क्रम का केंद्र अपने आसपास के सभी छह निम्न-क्रम केंद्रों पर पूर्ण नियंत्रण रखता है। यह व्यवस्था प्रशासनिक सीमाओं को साझा नहीं करती, जिससे शासन और राजनीतिक प्रबंधन में स्पष्टता रहती है। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि एक ही केंद्र के पास अपने क्षेत्र के सभी निचले स्तर के केंद्रों का पूर्ण उत्तरदायित्व हो, जो कि कर संग्रह, कानून व्यवस्था और सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन के लिए सबसे प्रभावी है। यह केंद्रीकृत शासन प्रणालियों के स्थानिक संगठन का एक आदर्श मॉडल है।

127. (B) अधिकांश प्रवास चरण-दर-चरण प्रक्रिया में होता है।
रेवेनस्टीन के प्रवास के नियमों में यह प्रमुखता से बताया गया है कि लोग अक्सर एक ही बार में लंबी दूरी तय नहीं करते हैं। इसके बजाय, प्रवास एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसे 'सोपान-प्रवास' कहते हैं, जहाँ ग्रामीण लोग पहले पास के छोटे कस्बे में जाते हैं और फिर धीरे-धीरे बड़े शहरों की ओर बढ़ते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि प्रत्येक प्रवास धारा के साथ एक प्रति-धारा भी होती है। ये नियम यह समझने में आधारभूत हैं कि जनसंख्या का स्थानांतरण अंतरिक्ष में कैसे व्यवस्थित और श्रेणीबद्ध तरीके से होता है।

128. (C) नगर-क्षेत्र
'हिंटरलैंड' या 'Umland' वह सहायक क्षेत्र है जो किसी शहर के साथ कार्यात्मक रूप से जुड़ा होता है। यह अवधारणा 'नगर-क्षेत्र' की परिभाषा का आधार है, क्योंकि एक शहर के अस्तित्व और विकास के लिए उसका आसपास का क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण होता है। शहर अपने हिंटरलैंड को परिष्कृत सेवाएं और बाजार

NODIA

सीमितता और बढ़ती आबादी के बीच के संघर्ष को समझने के लिए प्रासंगिक माने जाते हैं।

165. (B) शहर के प्रभाव क्षेत्र की सीमाओं का मानचित्रण करना।
नगर-क्षेत्र के संदर्भ में परिसीमन वह वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक मुख्य शहर और उसके आसपास के सहायक क्षेत्र के बीच की वास्तविक सीमाओं को निर्धारित किया जाता है। यह केवल प्रशासनिक नक्शों पर आधारित नहीं होता, बल्कि आर्थिक संबंधों, जैसे कि दूध और सब्जी की आपूर्ति, कामगारों का आवागमन और मनोरंजन के लिए शहर पर निर्भरता जैसे कारकों पर आधारित होता है। यह प्रक्रिया योजनाकारों को एक एकीकृत क्षेत्रीय विकास योजना तैयार करने में मदद करती है जो शहर के वास्तविक आर्थिक प्रभाव को समाहित करती है।

166. (B) छोटे अधिवास बड़े अधिवासों की तुलना में अधिक संख्या में होते हैं और कम अंतराल पर स्थित होते हैं।
अधिवास पदानुक्रम की यह एक मौलिक विशेषता है। किसी भी क्षेत्र में छोटे गाँवों की संख्या बहुत अधिक होती है और वे एक-दूसरे के काफी पास स्थित होते हैं ताकि लोग अपनी दैनिक जरूरतें आसानी से पूरी कर सकें। इसके विपरीत, बड़े शहर और महानगर बहुत कम होते हैं और वे एक-दूसरे से काफी दूर स्थित होते हैं क्योंकि उन्हें सेवा प्रदान करने के लिए एक विशाल सहायक क्षेत्र की आवश्यकता होती है। पदानुक्रम में ऊपर जाने पर बस्तियों का आकार तो बढ़ता है, लेकिन उनकी संख्या और उनके बीच का घनत्व घटता जाता है।

167. (B) ई.जी. रेवेनस्टीन
ई.जी. रेवेनस्टीन ने 1880 के दशक में 'प्रवास के नियम' प्रतिपादित किए थे, जो मानव स्थानांतरण के अध्ययन के लिए आधारभूत माने जाते हैं। उन्होंने पाया कि अधिकांश प्रवास कम दूरी का होता है, पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक लंबी दूरी तय करते हैं, और प्रत्येक प्रवास धारा एक विपरीत धारा पैदा करती है। उनके ये नियम आज भी प्रवास के कारणों, दूरी और प्रतिरूपों को समझने के लिए भूगोलवेत्ताओं द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। रेवेनस्टीन के कार्यों ने जनसंख्या भूगोल में वैज्ञानिक विश्लेषण की शुरुआत की थी।

168. (C) मृत्यु दर में तेजी से गिरावट।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण में जनसंख्या में होने वाली तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण जन्म दर का बढ़ना नहीं, बल्कि मृत्यु दर का अचानक गिरना है। बेहतर स्वच्छता, टीकों की खोज और खाद्य सुरक्षा में सुधार के कारण लोग अब अकाल या बीमारियों से कम मरते हैं। चूंकि इस समय समाज की जन्म दर अभी भी पुरानी परंपराओं के कारण उच्च बनी रहती है, इसलिए जन्म और मृत्यु के बीच का यह बड़ा अंतर जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पैदा कर देता है। यह चरण आधुनिकीकरण की पहली लहर का सूचक है।

169. (D) अच्छी तरह से संरक्षित, प्राचीन प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र
नगरीय उपांत एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शहरी विस्तार के कारण प्राकृतिक पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान पहुँचता है। यहाँ कृषि भूमि और खुले स्थान तेजी से आवासीय बस्तियों और कारखानों में बदल जाते हैं, जिससे प्राचीन पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश होता है। इसलिए, अच्छी तरह से संरक्षित प्राकृतिक तंत्र यहाँ की विशेषता नहीं, बल्कि इसकी कमी यहाँ की एक गंभीर समस्या है। यहाँ अक्सर प्रदूषण, अनियंत्रित निर्माण और जैव विविधता का ह्रास देखा जाता है, जो शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के पर्यावरण के लिए एक चुनौती है।

170. (C) कम जनसंख्या, प्रचुर संसाधन और उच्च तकनीक।
ए.के. एकरमैन के 'ब्राजीलियाई प्रकार' के जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र का अर्थ है वह क्षेत्र जहाँ संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अभी भी कम है, लेकिन उन्हें कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए तकनीक का स्तर उच्च है। यद्यपि नाम ब्राजील पर आधारित है, यह उन क्षेत्रों को दर्शाता है जहाँ भविष्य में विकास की अपार संभावनाएं हैं। यहाँ की चुनौती संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि उनका सतत और पूर्ण दोहन करना है ताकि बढ़ती आबादी के लिए उच्च जीवन स्तर सुनिश्चित किया जा सके। यह प्रकार प्रचुर संभावनाओं वाले नए बसे हुए क्षेत्रों की पहचान है।

171. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
सांस्कृतिक मंडल वास्तव में वैश्विक स्तर पर मानवीय संस्कृति की व्यापक विविधता को समझने के लिए एक प्रभावी भौगोलिक उपकरण हैं। हालाँकि, कारण में दी गई यह बात गलत है कि उनकी निश्चित सीमाएँ नहीं होतीं। यद्यपि ये सीमाएँ राजनीतिक सीमाओं की तरह कठोर नहीं होतीं, फिर भी भूगोल में सांस्कृतिक मंडलों को विशिष्ट साझा विशेषताओं जैसे भाषा और धर्म के आधार पर सीमांकित किया जाता है। ये मंडल परस्पर अतिव्यापी हो सकते हैं लेकिन वे पूरी तरह से अस्पष्ट नहीं होते। अतः अभिकथन तो सही है लेकिन कारण का स्पष्टीकरण त्रुटिपूर्ण है।

172. (B) परिवहन गलियारों के साथ उच्च आय वाले आवासीय क्षेत्रों की आवाजाही।
होमर होयट का सेक्टर मॉडल बताता है कि शहर का विकास संकेंद्रित छल्लों के बजाय त्रिकोणीय खंडों या 'सेक्टरों' में होता है। इस मॉडल के अनुसार, उच्च आय वाले लोग शहर के केंद्र से बाहर की ओर मुख्य परिवहन मार्गों, जैसे रेल या सड़कों, के साथ पच्चर के आकार में बसना पसंद करते हैं। एक बार जब कोई क्षेत्र उच्च श्रेणी का आवासीय बन जाता है, तो वह शहर के बढ़ने के साथ उसी दिशा में बाहर की ओर विस्तार करता रहता है। यह मॉडल परिवहन की सुलभता को शहरी संरचना का प्राथमिक निर्धारक मानता है।

173. (D) 1, 2 और 3
जनसंख्या घनत्व को मापने के विभिन्न तरीके जनसंख्या और भूमि के बीच के संबंधों की अलग-अलग जानकारी देते हैं। अंकगणितीय घनत्व सबसे सरल माप है जो कुल भूमि पर दबाव बताता है। कायिक घनत्व अधिक सटीक है क्योंकि

Downloaded from www.pdf.tube

पांच गुने का कोई निश्चित वैश्विक पैमाना नहीं है; जेफरसन के अनुसार यह आमतौर पर दूसरे शहर से दोगुने से अधिक बड़ा होता है। अतः दोनों कथन सांख्यिकीय और सैद्धांतिक रूप से अतिशयोक्तिपूर्ण और गलत धारणाओं पर आधारित हैं।

138. (C) अधिवासों की संख्या घटती है, और वे अधिक विशिष्ट कार्य प्रदान करते हैं।
अधिवास पदानुक्रम एक पिरामिड जैसी संरचना है। इसके आधार पर बड़ी संख्या में छोटे गाँव होते हैं जो केवल बुनियादी सेवाएँ देते हैं। जैसे-जैसे हम ऊपर बढ़ते हैं, कस्बों और शहरों की संख्या कम होती जाती है, लेकिन उनकी सेवाओं की विशिष्टता और जटिलता बढ़ती जाती है। एक महानगर में ऐसी सेवाएँ उपलब्ध होती हैं जो छोटे गाँव या कस्बे में संभव नहीं हैं, जैसे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे या विशेष अस्पताल। यह व्यवस्था संसाधनों और सेवाओं के कुशल क्षेत्रीय वितरण को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

139. (C) सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और चिकित्सा में प्रगति।
पिछली शताब्दी के दौरान मृत्यु दर में वैश्विक गिरावट का सबसे बड़ा श्रेय विज्ञान और चिकित्सा की उन्नति को जाता है। एंटीबायोटिक्स, टीकों की खोज और सुरक्षित पेयजल तथा बेहतर स्वच्छता प्रणालियों के प्रसार ने हैजा, चेचक और मलेरिया जैसी जानलेवा बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण पाया है। इसके साथ ही, आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं तक बढ़ती पहुँच ने जीवन प्रत्याशा को भी काफी बढ़ा दिया है। यह सुधार न केवल विकसित बल्कि विकासशील देशों में भी मृत्यु दर कम करने का सबसे शक्तिशाली और निर्णायक कारक साबित हुआ है।

140. (C) अगस्त लोश
अगस्त लोश ने अपने केंद्रीय स्थान मॉडल में एक अत्यंत नवीन अवधारणा प्रस्तुत की जिसे 'शहर-धनी' और 'शहर-गरीब' क्षेत्र कहा जाता है। उन्होंने षटकोणीय जालों को घुमाकर एक ऐसा आर्थिक परिदृश्य बनाया जहाँ कुछ खंडों में बहुत अधिक व्यापारिक केंद्र और परिवहन मार्ग स्थित थे। ये क्षेत्र अधिक विकसित और समृद्ध बन गए, जबकि इनके बीच के खंड कम विकसित रह गए। यह विचार क्रिस्टॉलर के समान वितरण वाले मॉडल से एक बड़ा विचलन था और इसने वास्तविक दुनिया की क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।

141. (D) विज्ञापन अभियानों के माध्यम से छोटे परिवार के मानदंडों को बढ़ावा देना।
प्रसववादी नीतियां जन्म दर बढ़ाने के लिए बनाई जाती हैं, इसलिए वे बड़े परिवारों को प्रोत्साहित करने वाले उपाय अपनाती हैं। नकद भत्ते, प्रसूति अवकाश और गर्भनिरोधकों पर प्रतिबंध इसके उदाहरण हो सकते हैं। इसके विपरीत, छोटे परिवार के मानदंडों का प्रचार करना एक 'प्रति-प्रसववादी' नीति का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि को कम करना होता है। प्रसववादी नीतियां आमतौर पर उन देशों में देखी जाती हैं जहाँ की आबादी तेजी से वृद्ध हो रही है और उन्हें भविष्य के लिए अधिक कार्यबल की आवश्यकता होती है।

142. (D) गंगा और सिंधु नदियों के मैदान
गंगा और सिंधु नदियों के मैदान विश्व के सबसे सघन आबादी वाले क्षेत्रों में से एक हैं और एक प्रमुख जनसंख्या समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त जल संसाधन और अनुकूल जलवायु हजारों वर्षों से गहन कृषि और मानवीय बस्तियों का समर्थन करती रही है। इसके विपरीत, अमेज़न के वर्षावन, कैनेडियन शील्ड और ऑस्ट्रेलिया का आंतरिक भाग अपनी कठोर प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण बहुत विरल आबादी वाले क्षेत्र हैं। मैदानी भाग हमेशा से सभ्यता के केंद्र और जनसंख्या के जमाव बिंदु रहे हैं।

143. (B) एक भूमि उपयोग का दूसरे के क्षेत्र में क्रमिक अतिक्रमण।
शहरी पारिस्थितिकी में 'आक्रमण' वह प्रक्रिया है जिसमें एक विशेष प्रकार का भूमि उपयोग, जैसे व्यावसायिक गतिविधियाँ, किसी दूसरे क्षेत्र, जैसे पुराने आवासीय मोहल्ले, में धीरे-धीरे प्रवेश करने लगती हैं। यह प्रक्रिया अक्सर शहर के विस्तार और आर्थिक बदलावों का संकेत होती है। उदाहरण के लिए, जब किसी शांत गली में धीरे-धीरे दुकानें और गोदाम बनने लगते हैं, तो वह क्षेत्र आक्रमण के दौर से गुजर रहा होता है। यदि यह प्रक्रिया जारी रहती है, तो यह अंततः पूरे क्षेत्र का स्वरूप बदल देती है।

144. (A) प्रमुख परिवहन मार्गों से अधिवासों की पहुंच को अधिकतम करना।
क्रिस्टॉलर के k=4 पदानुक्रम को 'परिवहन सिद्धांत' कहा जाता है क्योंकि इसका मुख्य तर्क परिवहन नेटवर्क की दक्षता पर आधारित है। इस मॉडल में, सेवा केंद्रों का स्थान इस तरह चुना जाता है कि वे मुख्य सड़कों पर स्थित हों ताकि लोगों की यात्रा दूरी कम हो और माल की ढुलाई सस्ती हो सके। यह सिद्धांत उन क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जहाँ व्यापार और संचार का विकास मुख्य रूप से सड़क या रेल मार्गों पर निर्भर करता है। यह स्थानिक संगठन में सुलभता को प्राथमिकता देता है।

145. (B) जनसंख्या पिरामिड
जनसंख्या पिरामिड एक विशेष प्रकार का ग्राफ है जो किसी जनसंख्या के भीतर विभिन्न आयु वर्गों और लिंगों के वितरण को एक साथ प्रदर्शित करता है। इसका आकार तुरंत यह बता देता है कि समाज युवा है या वृद्ध हो रहा है, और वहां जन्म तथा मृत्यु दर की स्थिति क्या है। यह नीति निर्माताओं के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है क्योंकि यह भविष्य के कार्यबल, आश्रितों की संख्या और स्वास्थ्य आवश्यकताओं का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है। अन्य चार्ट्स की तुलना में यह जनसांख्यिकीय संरचना के जटिल डेटा को बहुत सरलता से समझाता है।

146. (A) केवल 1 और 2
प्रमुख शहर की अवधारणा मार्क जेफरसन द्वारा दी गई थी और यह अक्सर उन देशों में देखी जाती है जहाँ विकास असंतुलित है, जो अक्सर औपनिवेशिक विरासत का परिणाम होता है। यह एक संतुलित शहरी पदानुक्रम के विपरीत है, क्योंकि एक संतुलित पदानुक्रम कोटि-आकार नियम का पालन करता है जहाँ शहरों का आकार क्रमिक होता है। प्रमुख शहर का अर्थ ही यह है कि एक शहर बाकी सब पर हावी है, जो व्यवस्था में भारी

या उनके बीच खाली जगह रह जाती है, जिससे सेवा वितरण असमान हो जाता है। षट्कोण एक-दूसरे के साथ पूरी तरह फिट हो जाते हैं और बिना किसी रिक्त स्थान के पूरे क्षेत्र को कवर करते हैं। साथ ही, षट्कोण के भीतर केंद्र से इसकी सीमाओं तक की दूरी वृत्त के बाद सबसे कम और सबसे समान होती है। यह ज्यामितीय आकृति दक्षता और पूर्ण कवरेज का सबसे अच्छा संतुलन प्रदान करती है।

183. (C) प्रतिशत वृद्धि दर
'70 का नियम' एक सरल सांख्यिकीय तरीका है जिसका उपयोग यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि किसी क्षेत्र की जनसंख्या अपनी वर्तमान वृद्धि दर पर कितने समय में दोगुनी हो जाएगी। इसके लिए 70 की संख्या को वार्षिक प्रतिशत वृद्धि दर से विभाजित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश की जनसंख्या 2 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, तो 70/2 करने पर 35 प्राप्त होगा, जिसका अर्थ है कि वहां की जनसंख्या 35 वर्षों में दोगुनी हो जाएगी। यह अवधारणा दीर्घकालिक नियोजन और भविष्य की संसाधन आवश्यकताओं को समझने में सहायक है।

184. (B) एक प्रमुख शहर प्रतिरूप
इस परिदृश्य में, सबसे बड़े शहर की जनसंख्या 15 मिलियन दूसरे सबसे बड़े शहर (1.5 मिलियन) से दस गुना अधिक है। यह मार्क जेफरसन द्वारा दी गई 'प्रमुख शहर' की परिभाषा का एक सटीक उदाहरण है, जहाँ एक ही शहर पूरे देश की शहरी प्रणाली पर पूरी तरह हावी होता है। कोटि-आकार नियम के अनुसार दूसरा शहर लगभग 7.5 मिलियन का होना चाहिए था, लेकिन यहाँ वह बहुत छोटा है। यह विशाल अंतर आर्थिक विकास और निवेश के भारी संकेंद्रण को दर्शाता है जो केवल एक ही मुख्य केंद्र तक सीमित है।

185. (A) कस्बों के उच्च और निम्न घनत्व के खंडों में व्यवस्थित एक परिदृश्य।
अगस्त लोश के आर्थिक मॉडल की सबसे अनूठी विशेषता 'शहर-धनी' और 'शहर-गरीब' खंडों का निर्माण है। उन्होंने तर्क दिया कि जब विभिन्न वस्तुओं के षटकोणीय बाजार क्षेत्रों को उनके केंद्र के चारों ओर घुमाया जाता है, तो कुछ विशिष्ट कोणों पर अधिक गतिविधियाँ और केंद्र एक साथ आ जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा तारा-आकार का आर्थिक परिदृश्य बनता है जहाँ कुछ क्षेत्रों में शहरों का घनत्व बहुत अधिक होता है और अन्य क्षेत्र अपेक्षाकृत खाली रहते हैं। यह लोश के मॉडल को क्रिस्टॉलर के समान वितरण वाले मॉडल से अलग बनाता है।

186. (B) देश की प्रजनन क्षमता गिरती है, जिससे कार्यशील आयु का अनुपात बढ़ जाता है।
जनसांख्यिकीय लाभांश तब होता है जब किसी देश की जन्म दर में कमी आने के कारण बच्चों की संख्या कम हो जाती है और युवा कार्यशील आबादी (15-64 वर्ष) का हिस्सा कुल जनसंख्या में सबसे अधिक हो जाता है। इस अवधि में आश्रितों की संख्या कम होने से देश के पास आर्थिक विकास के लिए भारी निवेश करने का सुनहरा अवसर होता है। यदि सरकार इस युवा कार्यबल को उचित शिक्षा और रोजगार प्रदान करती है, तो यह देश की जीडीपी में अभूतपूर्व वृद्धि कर सकता है। यह विकासशील देशों के लिए एक संक्रमणकालीन और मूल्यवान अवसर माना जाता है।

187. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
नगरीय उपांत वास्तव में अपनी मिश्रित भूमि उपयोग विशेषताओं, जैसे कि कृषि और आवासीय उपयोग के मेल के लिए जाना जाता है। हालांकि, दूसरा कथन गलत है क्योंकि नगर-क्षेत्र केवल प्रशासनिक सीमा तक सीमित नहीं होता है। यह एक कार्यात्मक क्षेत्र है जो उस शहर के वास्तविक आर्थिक और सामाजिक प्रभाव, जैसे कि व्यापार प्रवाह, तक फैला होता है। नगर-क्षेत्र प्रशासनिक नक्शों के बजाय मानवीय गतिविधियों के वास्तविक विस्तार को दर्शाता है। इसलिए, नगर-क्षेत्र की सीमाएं अक्सर नगर पालिका की कानूनी सीमाओं से बहुत दूर तक जाती हैं।

188. (B) गंगा डेल्टा
'एनेकुमीन' उन निर्जन क्षेत्रों को कहते हैं जहाँ स्थायी मानवीय बसावट संभव नहीं है, जैसे अंटार्कटिका, अत्यधिक शुष्क रेगिस्तान और टुंड्रा क्षेत्र। इसके विपरीत, गंगा डेल्टा विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है, जो 'एक्यूमीन' (बसे हुए क्षेत्र) का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी और जल की उपलब्धता ने इसे सदियों से मानवीय गतिविधियों का केंद्र बनाया है। अतः विकल्प बी गलत है क्योंकि यह निर्जन नहीं, बल्कि अत्यधिक सघन रूप से बसा हुआ और मानवीय गतिविधियों से भरपूर एक उपजाऊ मैदानी क्षेत्र है।

189. (A) केंद्रीय स्थानों को जोड़ने के लिए आवश्यक सड़कों की लंबाई कम करना।
क्रिस्टॉलर के k=4 या 'परिवहन सिद्धांत' का मुख्य लक्ष्य परिवहन नेटवर्क को इस तरह से व्यवस्थित करना है कि मुख्य मार्गों के किनारे अधिक से अधिक बस्तियाँ स्थित हों। यह मॉडल यह सुनिश्चित करता है कि उच्च और निम्न श्रेणी के केंद्रों के बीच सीधा सड़क संपर्क हो ताकि माल और लोगों की आवाजाही में कम समय और कम लागत लगे। इस व्यवस्था में, परिवहन लाइनों की कुल लंबाई को न्यूनतम करने का प्रयास किया जाता है, जिससे क्षेत्रीय व्यापार और संचार की दक्षता अधिकतम हो सके। यह सिद्धांत सुलभता को विकास का मुख्य आधार मानता है।

190. (A) इसकी जनसंख्या इसके संसाधन आधार और प्रौद्योगिकी के लिए बहुत बड़ी हो।
अति-आबादी केवल लोगों की संख्या से तय नहीं होती है, बल्कि यह उपलब्ध संसाधनों और उन्हें उपयोग करने की तकनीक के बीच का एक संतुलन है। यदि किसी देश के पास अपने नागरिकों को पर्याप्त भोजन, पानी, रोजगार और बुनियादी सुविधाएं देने के लिए संसाधन नहीं हैं, तो उसे अति-आबादी वाला माना जाता है। उदाहरण के लिए, एक कम घनत्व वाला मरुस्थलीय देश भी अति-आबादी वाला हो सकता है यदि वहां पानी बिल्कुल न हो। अतः यह संसाधनों की वहन क्षमता और जनसंख्या के बीच के असंतुलन की एक सापेक्ष अवधारणा है।

Click Here to Buy book on Amazon

बाहरी सीमा है जहाँ ग्रामीण जीवन शैली अभी भी शहरी प्रभाव के साथ संघर्ष करते हुए अपना अस्तित्व बनाए रखती है।

156. (C) मंदारिन भाषा का प्रभुत्व
भारतीय सांस्कृतिक मंडल मुख्य रुप से दक्षिण एशिया में फैला हुआ है और इसकी विशेषताओं में हिंदू धर्म का गहरा प्रभाव, जाति आधारित पारंपरिक सामाजिक संरचना और कृषि प्रधान ग्रामीण जीवन शैली शामिल है। मंदारिन भाषा चीनी सांस्कृतिक मंडल की मुख्य पहचान है और इसका भारतीय मंडल से कोई संबंध नहीं है। भारत और उसके पड़ोसी देशों में भाषाई विविधता बहुत अधिक है, जहाँ इंडो-आर्यन और द्रविड़ भाषा परिवार प्रमुख हैं। अतः विकल्प सी इस मंडल की सांस्कृतिक पहचान से बिल्कुल मेल नहीं खाता और गलत सुमेलित है।

157. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जीवन प्रत्याशा वास्तव में किसी समाज की स्वास्थ्य स्थिति का एक उत्कृष्ट मापदंड है। हालांकि, दूसरा कथन गलत है क्योंकि अशोधित मृत्यु दर आयु संरचना से बहुत अधिक प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, एक वृद्ध जनसंख्या वाले विकसित देश की मृत्यु दर युवा आबादी वाले विकासशील देश से अधिक हो सकती है, भले ही वहां की स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर हों। इसलिए, केवल मृत्यु दर के आधार पर स्वास्थ्य की तुलना करना भ्रामक हो सकता है। तुलना के लिए आयु-विशिष्ट मृत्यु दर या जीवन प्रत्याशा को अधिक सटीक और वैज्ञानिक माना जाता है।

158. (C) पूरी तरह से उच्च-क्रम के केंद्रों के बाजार क्षेत्र के भीतर समाहित होते हैं।
क्रिस्टॉलर के k=7 प्रशासनिक सिद्धांत के अनुसार, एक कुशल प्रशासन के लिए यह आवश्यक है कि निचले स्तर के केंद्रों की सीमाएँ किसी दूसरे उच्च स्तर के केंद्र के साथ अतिव्यापन न करें। इसलिए, इस मॉडल में प्रत्येक उच्च-क्रम का केंद्र अपने आसपास के सभी छह निम्न-क्रम केंद्रों को पूरी तरह से अपने घेरे में ले लेता है। यह व्यवस्था राजनीतिक नियंत्रण और कर संग्रह में भ्रम को दूर करती है क्योंकि प्रत्येक छोटी बस्ती केवल एक ही बड़े प्रशासनिक केंद्र के प्रति उत्तरदायी होती है। यह पदानुक्रम पूर्णतः श्रेणीबद्ध और केंद्रीकृत होता है।

159. (C) पृथक्करण
पृथक्करण वह प्रक्रिया है जिसमें शहर की आबादी अलग-अलग मोहल्लों में अपनी पहचान या सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर विभाजित हो जाती है। यह आय की असमानता, जातीय प्राथमिकताओं या ऐतिहासिक भेदभाव का परिणाम हो सकता है। इसके कारण शहर के भीतर 'अमीर' और 'गरीब' बस्तियां या विशिष्ट धार्मिक और जातीय मोहल्ले बन जाते हैं। यह प्रक्रिया शहर के सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करती है और अक्सर संसाधनों तथा सेवाओं के असमान वितरण का कारण बनती है। आधुनिक शहरी भूगोल में सामाजिक न्याय के संदर्भ में इस प्रक्रिया का गहराई से अध्ययन किया जाता है।

160. (C) प्रसववादी नीति
प्रसववादी नीतियां उन सरकारी रणनीतियों को कहते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य देश की जन्म दर में वृद्धि करना होता है। ये नीतियां अक्सर उन राष्ट्रों द्वारा अपनाई जाती हैं जो जनसंख्या में गिरावट, कार्यबल की कमी या तेजी से बढ़ती वृद्ध आबादी की समस्या का सामना कर रहे होते हैं। इनके माध्यम से सरकारें बड़े परिवारों को नकद पुरस्कार, कर छूट, सस्ती बाल देखभाल और लंबे सवैतनिक अवकाश जैसे प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। यह नीति जनसांख्यिकीय संतुलन बनाए रखने और भविष्य की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने का एक रणनीतिक प्रयास है।

161. (B) बाजार क्षेत्र या हिंटरलैंड जिसकी सेवा एक केंद्रीय स्थान द्वारा की जाती है।
'पूरक क्षेत्र' केंद्रीय स्थान सिद्धांत की एक प्रमुख अवधारणा है। यह उस चारों ओर के क्षेत्र को दर्शाता है जहाँ के उपभोक्ता अपनी वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकताओं के लिए उस विशेष केंद्रीय स्थान या शहर पर निर्भर रहते हैं। इसे शहर का प्रभाव क्षेत्र या बाजार क्षेत्र भी कहा जाता है। शहर और उसके पूरक क्षेत्र के बीच एक अटूट कार्यात्मक संबंध होता है जहाँ वे परस्पर लाभ के लिए एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। पूरक क्षेत्र का आकार उस शहर द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की विशिष्टता और श्रेणी पर निर्भर करता है।

162. (C) वृद्धि की दर धीमी हो रही है, हालांकि जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है।
1970 के दशक के बाद से वैश्विक जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर में क्रमिक गिरावट आई है। यह शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार और परिवार नियोजन के प्रति बढ़ती जागरूकता का परिणाम है। यद्यपि प्रतिशत में वृद्धि दर कम हुई है, लेकिन विश्व की कुल जनसंख्या अभी भी करोड़ों में बढ़ रही है क्योंकि वर्तमान आधार जनसंख्या बहुत बड़ी है। इसे 'जनसांख्यिकीय जड़त्व' कहा जाता है। अधिकांश विकसित और कई विकासशील देश अब कम जन्म दर की ओर बढ़ रहे हैं, जिससे भविष्य में वैश्विक जनसंख्या के स्थिर होने की संभावना है।

163. (B) लोश का मॉडल फर्मों की संख्या को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे विशिष्ट उत्पादन केंद्र बनते हैं।
अगस्त लोश का मॉडल क्रिस्टॉलर के मॉडल से इस मायने में अलग है कि उन्होंने व्यवसायों के लाभ को केंद्र में रखा। उन्होंने तर्क दिया कि बाजार क्षेत्र केवल सेवाओं के लिए नहीं होते, बल्कि उत्पादन केंद्रों के लिए भी होते हैं। लोश ने षटकोणीय प्रणालियों को इस तरह घुमाया कि कुछ क्षेत्रों में कई आर्थिक गतिविधियाँ केंद्रित हो गईं, जिससे 'शहर-धनी' खंड बने। उनका मॉडल यह मानता है कि विभिन्न वस्तुओं का बाजार आकार अलग होता है, जिससे एक अधिक जटिल और गतिशील आर्थिक परिदृश्य का निर्माण होता है।

164. (B) थॉमस माल्थस
थॉमस माल्थस ने 1798 में अपने प्रसिद्ध 'जनसंख्या के सिद्धांत पर निबंध' में चेतावनी दी थी कि जनसंख्या ज्यामितीय दर से बढ़ती है, जबकि खाद्य आपूर्ति केवल अंकगणितीय दर से बढ़ सकती है। उनका मानना था कि यदि इसे नियंत्रित नहीं किया गया, तो भविष्य में अकाल, युद्ध और बीमारी जैसी आपदाएँ आएंगी। हालाँकि आधुनिक तकनीक ने खाद्य उत्पादन में भारी वृद्धि की है, लेकिन माल्थस के विचार आज भी संसाधनों की

NODIA

दूसरा शहर 5 लाख और तीसरा लगभग 3.33 लाख का होगा। यह नियम मानता है कि एक परिपक्व और संतुलित शहरी प्रणाली में बस्तियों का आकार एक श्रेणीबद्ध और पूर्वानुमेय अनुपात का पालन करता है, जो संतुलित विकास का संकेत है।

200. (B) किसी देश से उच्च शिक्षित पेशेवरों का उत्प्रवास।
'प्रतिभा पलायन' उस स्थिति को कहते हैं जब किसी देश के सबसे अधिक कुशल, शिक्षित और प्रशिक्षित लोग, जैसे डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक, बेहतर अवसरों और वेतन की तलाश में अपना देश छोड़कर विदेशों में बस जाते हैं। यह आमतौर पर विकासशील देशों से विकसित देशों की ओर होता है। इससे मूल देश को अपनी सबसे बड़ी मानव पूंजी और निवेश का नुकसान होता है, जो उसके भविष्य के विकास में बाधा डालता है। यह प्रवास का एक ऐसा रूप है जिसके दीर्घकालिक आर्थिक और सामाजिक परिणाम होते हैं।

201. (A) उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर
जनसांख्यिकीय संक्रमण के पहले चरण में समाज मुख्य रूप से कृषि प्रधान और पूर्व-औद्योगिक होता है। इस अवस्था में स्वच्छता और चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के कारण मृत्यु दर बहुत अधिक होती है, विशेषकर महामारी और अकाल के समय। लोग अधिक बच्चे पैदा करते हैं ताकि खेती और अन्य कार्यों के लिए श्रमिक मिल सकें, जिससे जन्म दर भी बहुत उच्च बनी रहती है। चूँकि दोनों दरें लगभग बराबर होती हैं, इसलिए जनसंख्या का आकार बहुत धीमी गति से बढ़ता है या स्थिर रहता है। इसे 'उच्च स्थिर' चरण भी कहा जाता है।

202. (A) सेक्टर मॉडल
होमर होयट द्वारा प्रस्तावित सेक्टर मॉडल बताता है कि शहर का विकास केंद्र से बाहर की ओर त्रिकोणीय पच्चर के रूप में होता है। ये खंड मुख्य रूप से परिवहन गलियारों जैसे प्रमुख सड़कों या रेल लाइनों का अनुसरण करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक दिशा में रेलवे लाइन है, तो उसके किनारे औद्योगिक गतिविधियाँ एक सेक्टर के रूप में विकसित होंगी। उच्च आय वाले आवासीय क्षेत्र भी शोर और प्रदूषण से दूर परिवहन की सुलभता वाले क्षेत्रों में एक अलग सेक्टर बनाते हैं। यह मॉडल संकेंद्रित छल्लों की तुलना में अधिक यथार्थवादी है।

203. (B) किसी जनसंख्या में प्रजनन प्रदर्शन की प्रवृत्तियों का अध्ययन।
प्रजनन क्षमता विश्लेषण जनसांख्यिकी का वह हिस्सा है जो यह मापता है कि किसी जनसंख्या में वास्तव में कितने जन्म हो रहे हैं। इसमें अशोधित जन्म दर, कुल प्रजनन दर और आयु-विशिष्ट जन्म दर जैसे मानकों का उपयोग किया जाता है। यह अध्ययन केवल संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों की भी जांच करता है जो लोगों के बच्चे पैदा करने के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। यह भविष्य की जनसंख्या वृद्धि और नियोजन के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है।

204. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
केंद्रीकरण मुख्य कार्यों का शहर के केंद्र में जमा होना है। आक्रमण तब होता है जब कोई नया समूह या गतिविधि किसी स्थापित क्षेत्र में प्रवेश करती है। उत्तराधिकार उस स्थिति को कहते हैं जब वह नया समूह अंततः पुराने को पूरी तरह से विस्थापित कर देता है। पृथक्करण विभिन्न जनसंख्या समूहों का उनकी पहचान के आधार पर अलग-अलग क्षेत्रों में वर्गीकरण है। ये चारों प्रक्रियाएँ मिलकर शहर के सामाजिक और भौतिक भूगोल को निरंतर बदलती रहती हैं और शहरी संरचना के विभिन्न मॉडलों को समझने का आधार प्रदान करती हैं।

205. (C) काहिरा
1994 का जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मिस्र की राजधानी काहिरा में आयोजित किया गया था। यह सम्मेलन एक ऐतिहासिक मोड़ था क्योंकि इसने जनसंख्या के मुद्दों को केवल संख्याओं के नियंत्रण से हटाकर मानव अधिकारों, विशेषकर महिलाओं के सशक्तिकरण और प्रजनन स्वास्थ्य के साथ जोड़ दिया। काहिरा घोषणापत्र ने यह माना कि महिलाओं को अपनी शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार के आकार के बारे में निर्णय लेने का अधिकार देना ही जनसंख्या स्थिरता का सबसे प्रभावी तरीका है। इस सम्मेलन के प्रभाव आज भी वैश्विक जनसंख्या नीतियों में दिखाई देते हैं।

206. (B) एक कोटि-आकार वितरण
इस प्रश्न में, शहरों की जनसंख्या 2 मिलियन, 1.8 मिलियन और 1.5 मिलियन है। यह आकार काफी करीब हैं और एक क्रमिक श्रेणी का पालन कर रहे हैं। कोटि-आकार नियम यही बताता है कि शहरों की आबादी उनकी रैंक के अनुसार एक नियमित अनुपात में घटती है। यह प्रमुख शहर के विपरीत है जहाँ पहला शहर अन्य शहरों से बहुत बड़ा होता है। इस प्रकार का वितरण एक संतुलित शहरी प्रणाली का संकेत देता है जहाँ विकास और सेवाएँ विभिन्न केंद्रों के बीच अधिक समान रूप से फैली हुई हैं, जो एक स्वस्थ क्षेत्रीय विकास को दर्शाता है।

NODIA

207. (C) आकार और उनके कार्यों की जटिलता के आधार पर क्रमित किए जा सकते हैं।
अधिवास पदानुक्रम की अवधारणा हमें यह समझने में मदद करती है कि बस्तियाँ एक श्रेणीबद्ध व्यवस्था में स्थित होती हैं। इस व्यवस्था में, छोटे अधिवास संख्या में बहुत अधिक होते हैं और केवल बुनियादी सेवाएँ देते हैं, जबकि बड़े अधिवास कम होते हैं लेकिन वे अत्यंत विशिष्ट कार्य संपन्न करते हैं। यह पदानुक्रम यह स्पष्ट करता है कि कैसे छोटे गाँव अपने से बड़े कस्बों पर और कस्बे बड़े शहरों पर सेवाओं के लिए निर्भर रहते हैं। यह संरचना क्षेत्रीय नियोजन और संसाधनों के कुशल आवंटन के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

208. (C) उच्च जनसंख्या, सीमित संसाधन, लेकिन उच्च तकनीक और वैश्विक पहुंच।
ए.के. एकरमैन ने 'यूरोपीय प्रकार' के क्षेत्र को उच्च जनसंख्या घनत्व वाले उन क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया जिनके पास अपने स्वयं के प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं। हालाँकि, इन क्षेत्रों ने उच्च स्तरीय तकनीक और वैश्विक व्यापार के माध्यम से

279. (B) एक प्रसववादी नीति
प्रसववादी नीतियां उन सरकारी कदमों को संदर्भित करती हैं जिनका उद्देश्य परिवारों को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करना है। परिवारों को कर में छूट, वित्तीय सब्सिडी और बच्चों के पालन-पोषण के लिए सहायता देना इसके प्रत्यक्ष तरीके हैं। ऐसी नीतियां आमतौर पर उन विकसित देशों में अपनाई जाती हैं जहाँ प्रजनन दर बहुत कम हो गई है और जनसंख्या घट रही है। इन प्रोत्साहनों के माध्यम से सरकारें भविष्य के लिए एक स्वस्थ और सक्रिय कार्यबल सुनिश्चित करना चाहती हैं। यह राष्ट्रीय स्तर पर जनसांख्यिकीय संकट को टालने का एक रणनीतिक सामाजिक-आर्थिक प्रयास है।

280. (C) शहरी विस्तार और ग्रामीण भूमि संरक्षण के बीच संघर्ष।
नगरीय उपांत में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि जैसे-जैसे शहर बढ़ता है, वह उपजाऊ कृषि भूमि को निगलने लगता है। यहाँ भूमि के उपयोग को लेकर निरंतर विवाद बना रहता है क्योंकि बिल्डर्स और डेवलपर्स आवासीय कॉलोनियों के लिए जमीन चाहते हैं, जबकि पर्यावरणविद और किसान खुले स्थानों और खेतों को बचाने का प्रयास करते हैं। यह क्षेत्र अक्सर अनियोजित शहरी फैलाव का केंद्र बन जाता है, जहाँ बुनियादी सुविधाओं के अभाव में बेतरतीब निर्माण होता है। यह नियोजन की एक गंभीर समस्या है जो पारिस्थितिक संतुलन को भी बिगाड़ती है।

281. (B) चरण 2
'जनसंख्या विस्फोट' शब्द जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण की मुख्य पहचान है। इस चरण में, चिकित्सा और स्वच्छता में सुधार के कारण मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है, लेकिन जन्म दर अभी भी बहुत ऊंचे स्तर पर बनी रहती है। इन दोनों दरों के बीच का यह विशाल अंतर जनसंख्या में बहुत कम समय में अभूतपूर्व वृद्धि कर देता है। अधिकांश विकासशील देशों ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इसी चरण का अनुभव किया था। यह चरण संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है और सरकारों के लिए रोजगार और शिक्षा की बड़ी चुनौतियाँ पैदा करता है।

282. (D) अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा
विश्व जनसंख्या का वितरण मुख्य रूप से भौतिक और आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है। जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और स्थलाकृति प्राथमिक निर्धारक हैं जो यह तय करते हैं कि कोई क्षेत्र रहने योग्य है या नहीं। अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा एक काल्पनिक रेखा है जिसका उपयोग केवल समय और तिथियों के प्रबंधन के लिए किया जाता है; इसका मानव बस्तियों के बसने या वितरण के प्रतिरूपों पर कोई भौगोलिक प्रभाव नहीं पड़ता है। अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियों वाले क्षेत्र हमेशा से सघन आबादी वाले रहे हैं, जबकि विषम परिस्थितियों वाले क्षेत्र विरल आबादी वाले होते हैं।

283. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
अति-जनसंख्या और अल्प-जनसंख्या दोनों सापेक्ष अवधारणाएँ हैं जो केवल लोगों की संख्या पर नहीं, बल्कि संसाधनों और तकनीक के साथ उनके संबंध पर आधारित होती हैं। यदि किसी देश के पास विशाल संसाधन हैं, तो वह उच्च घनत्व के बावजूद भी अल्प-जनसंख्या वाला हो सकता है यदि उन संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। इसी तरह, कम घनत्व वाले क्षेत्र भी अति-जनसंख्या वाले हो सकते हैं यदि वहां का पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर है। अतः ये अवधारणाएं जनसांख्यिकी को आर्थिक क्षमता और तकनीकी विकास के साथ जोड़कर एक सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

284. (A) खंडों में अधिवासों और परिवहन मार्गों की संख्या को अधिकतम करना।
अगस्त लोश के मॉडल में षटकोणीय प्रणालियों को घुमाने का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा आर्थिक ढांचा बनाना था जहाँ बाजार क्षेत्रों का अतिव्यापन हो सके। इस प्रक्रिया के माध्यम से कुछ विशिष्ट खंडों में बस्तियों, उद्योगों और सड़कों का संकेंद्रण अधिकतम हो जाता है, जिन्हें 'शहर-धनी' क्षेत्र कहा जाता है। यह घुमाव फर्मों को अपनी सुलभता और मुनाफे को बढ़ाने की अनुमति देता है। यह दृष्टिकोण क्रिस्टॉलर के समान वितरण वाले मॉडल के विपरीत है और यह वास्तविक दुनिया की क्षेत्रीय आर्थिक विषमताओं को अधिक वैज्ञानिक और यथार्थवादी ढंग से समझाने का प्रयास करता है।

285. (B) प्रवासी एक नए गंतव्य पर अपने रिश्तेदारों या समुदाय के सदस्यों का अनुसरण करते हैं।
'श्रृंखला प्रवास' एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ एक क्षेत्र से पहले जाने वाले लोग अपने पीछे रह गए परिवार, मित्रों और रिश्तेदारों के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। जो लोग पहले बस जाते हैं, वे नए आने वालों को नौकरी, आवास और सामाजिक सहायता प्रदान करते हैं, जिससे प्रवास का जोखिम कम हो जाता है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे मूल और गंतव्य स्थानों के बीच एक मजबूत मानवीय कड़ी बना देती है। इसके कारण शहरों में अक्सर विशिष्ट जातीय या क्षेत्रीय मोहल्ले विकसित हो जाते हैं, जो प्रवासियों को एक परिचित सामाजिक परिवेश प्रदान करते हैं।

286. (C) एक लग्जरी कार
केंद्रीय स्थान सिद्धांत के अनुसार, 'उच्च-क्रम' की वस्तुएं वे होती हैं जो महंगी होती हैं और जिनकी मांग कम आवृत्ति पर होती है। लग्जरी कार इसका एक सटीक उदाहरण है क्योंकि लोग इसे रोज नहीं खरीदते और इसके लिए वे लंबी दूरी तय करने को तैयार रहते हैं। साथ ही, ऐसी वस्तुओं के शोरूम को चलाने के लिए एक बहुत बड़े ग्राहक आधार या जनसंख्या की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, ब्रेड और दूध 'निम्न-क्रम' की वस्तुएं हैं जो हर जगह उपलब्ध होती हैं क्योंकि लोग इनके लिए लंबी यात्रा नहीं करना चाहते।

287. (C) प्राइमेट शहर
पेरिस फ्रांस का एक प्रमुख शहर है क्योंकि यह जनसंख्या, आर्थिक गतिविधियों, संस्कृति और राजनीतिक शक्ति में फ्रांस के अन्य सभी शहरों की तुलना में असंगत रूप से बहुत बड़ा और प्रभावशाली है। यह मार्क जेफरसन द्वारा दी गई उस परिभाषा पर खरा उतरता है जहाँ एक शहर राष्ट्रीय भावना और गौरव का मुख्य केंद्र बन जाता है। प्रमुख शहर की मौजूदगी अक्सर यह दिखाती है कि देश का विकास अत्यधिक केंद्रीकृत है। पेरिस न

Downloaded from www.pdf.tube

बौद्ध धर्म और ताओ धर्म का भी प्रभाव है, लेकिन कन्फ्यूशियस के सिद्धांतों ने यहाँ की शासन व्यवस्था और दैनिक जीवन के व्यवहार को सबसे अधिक आकार दिया है। यह इस मंडल को विश्व के अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों से एक विशिष्ट और सुसंगत पहचान प्रदान करता है।

218. (B) आधा
क्रिस्टॉलर के k=4 पदानुक्रम को 'परिवहन सिद्धांत' के रूप में जाना जाता है। इस मॉडल में, सेवा केंद्रों का वितरण इस तरह किया जाता है कि वे मुख्य परिवहन मार्गों पर स्थित हों। ज्यामितीय रूप से, इसका अर्थ है कि प्रत्येक उच्च-क्रम का केंद्र स्वयं के अधिवास की सेवा करने के साथ-साथ अपने चारों ओर स्थित छह निम्न-क्रम के पड़ोसियों की आबादी के आधे हिस्से को भी सेवा प्रदान करता है। यह व्यवस्था परिवहन दक्षता को अधिकतम करने और यात्रा लागत को कम करने के उद्देश्य से डिजाइन की गई है, जो सड़क नेटवर्क के विकास के लिए अनुकूल है।

219. (B) बड़ी जनसंख्या और विविध प्रकार के विशिष्ट कार्य।
अधिवास पदानुक्रम में एक 'शहर' अपने से निचले स्तर के 'कस्बे' की तुलना में केवल बड़ा ही नहीं होता, बल्कि उसके कार्यों की प्रकृति भी अधिक जटिल होती है। कस्बे में आमतौर पर केवल स्थानीय बाजार और बुनियादी सेवाएं होती हैं, जबकि एक शहर में विश्वविद्यालय, बड़े अस्पताल, व्यापक प्रशासनिक कार्यालय और विविध प्रकार के उद्योग पाए जाते हैं। शहर का प्रभाव क्षेत्र भी कस्बे की तुलना में बहुत विशाल होता है। यही कार्यात्मक विविधता और जनसंख्या का उच्च घनत्व एक शहर को पदानुक्रम में उच्च स्थान और एक अलग पहचान प्रदान करता है।

220. (D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
अति-जनसंख्या केवल उच्च घनत्व का पर्याय नहीं है; यह जनसंख्या और संसाधनों के बीच का असंतुलन है। पहला कथन गलत है क्योंकि कोई भी देश, चाहे वहां घनत्व कम ही क्यों न हो, अति-जनसंख्या वाला हो सकता है यदि वहां भोजन और पानी जैसे बुनियादी संसाधनों का भारी अभाव है। अतः अति-जनसंख्या एक सापेक्ष अवधारणा है जो इस बात पर निर्भर करती है कि उपलब्ध संसाधन कितनी जनसंख्या का सम्मानजनक तरीके से भरण-पोषण कर सकते हैं। दूसरा कथन इस पारिस्थितिक और आर्थिक वास्तविकता को सही ढंग से स्पष्ट करता है।

221. (C) बहु-नाभिक मॉडल
हैरिस और उलमैन ने 1945 में शहरी संरचना का बहु-नाभिक मॉडल पेश किया था। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिक शहर केवल एक केंद्र के चारों ओर विकसित नहीं होते, बल्कि उनमें विकास के कई स्वतंत्र बिंदु या 'नाभिक' होते हैं। उदाहरण के लिए, एक औद्योगिक पार्क, एक विश्वविद्यालय और एक बंदरगाह अलग-अलग नाभिकों के रूप में कार्य करते हैं, जो अपनी विशिष्ट गतिविधियों को आकर्षित करते हैं। यह मॉडल शिकागो स्कूल के पुराने छल्लेनुमा मॉडल से अधिक यथार्थवादी है क्योंकि यह बड़े और जटिल महानगरों की विविधता और खंडित विकास को बेहतर ढंग से समझाता है।

222. (A) किसी जनसंख्या के आकार, विकास दर, वितरण या संरचना को प्रभावित करना।
जनसंख्या नीतियों का प्राथमिक उद्देश्य जनसंख्या से जुड़े विभिन्न पहलुओं को सरकार के लक्ष्यों के अनुसार दिशा देना है। ये नीतियां या तो जन्म दर को कम करने के लिए या बढ़ाने के लिए हो सकती हैं। इनका उपयोग प्रवास को नियंत्रित करने या जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को संतुलित करने के लिए भी किया जाता है। अंततः, ये नीतियां यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती हैं कि देश की जनसंख्या वहां के संसाधनों और आर्थिक क्षमता के साथ तालमेल बिठा सके ताकि सतत विकास और उच्च जीवन स्तर प्राप्त हो सके।

223. (C) घूमने वाले षटकोणीय प्रणालियों में जो नगर-धनी और नगर-गरीब क्षेत्रों का निर्माण करते हैं।
अगस्त लोश के मॉडल में आर्थिक परिदृश्य की संरचना क्रिस्टॉलर की तुलना में अधिक गतिशील है। उन्होंने षटकोणीय जालों को एक केंद्रीय महानगर के चारों ओर इस तरह घुमाया कि विभिन्न वस्तुओं के व्यापारिक केंद्र कुछ क्षेत्रों में सघन रूप से जमा हो गए। इस घुमाव के कारण 'शहर-धनी' खंड बने जहाँ विकास और परिवहन मार्गों का संकेंद्रण अधिक था, जबकि उनके बीच 'शहर-गरीब' खंड रह गए। यह व्यवस्था यह स्पष्ट करती है कि क्यों वास्तविक दुनिया में विकास कुछ क्षेत्रों में अधिक और कुछ में बहुत कम होता है।

224. (C) दूरी और कानूनी बाधाओं जैसे कारक जो प्रवास में बाधा डालते हैं।
एवरेट ली के प्रवास सिद्धांत में 'अंतवर्ती बाधाएँ' वे सभी तत्व हैं जो एक व्यक्ति को मूल स्थान से गंतव्य तक पहुँचने के रास्ते में मिलते हैं। इसमें भौतिक बाधाएं जैसे पहाड़ या समुद्र, दूरी की लागत, और कृत्रिम बाधाएं जैसे पासपोर्ट, वीजा नियम या कठोर आप्रवासन कानून शामिल हो सकते हैं। ली ने स्पष्ट किया कि भले ही आकर्षण और प्रतिकर्ष कारक बहुत मजबूत हों, लेकिन यदि ये बाधाएं बहुत कठिन हैं, तो प्रवास की घटना घटित नहीं होगी। यह अवधारणा प्रवास की जटिलता को समझने के लिए अनिवार्य है।

225. (C) जनसंख्या प्रतिस्थापन स्तर से नीचे है और आव्रजन के बिना इसमें गिरावट आएगी।
2.1 की कुल प्रजनन दर को प्रतिस्थापन स्तर माना जाता है। यदि किसी देश की प्रजनन दर 1.5 है, तो इसका अर्थ है कि औसत महिला अपने जीवनकाल में केवल 1.5 बच्चों को जन्म दे रही है। यह संख्या जनसंख्या को स्थिर रखने के लिए अपर्याप्त है। ऐसी स्थिति में, यदि बाहर से लोग वहां नहीं बसते हैं, तो भविष्य में उस देश की कुल जनसंख्या कम होने लगेगी और औसत आयु तेजी से बढ़ने लगेगी। यह स्थिति वर्तमान में कई विकसित देशों के लिए एक गंभीर आर्थिक और जनसांख्यिकीय चुनौती बनी हुई है।

NODIA

अपनी कमी को पूरा किया है। वे विदेशों से कच्चा माल आयात करते हैं और अपनी तकनीकी कुशलता का उपयोग करके उच्च जीवन स्तर बनाए रखते हैं। पश्चिमी यूरोप और जापान इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह प्रकार दिखाता है कि तकनीकी उन्नति और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध संसाधनों की भौतिक कमी को प्रभावी ढंग से कैसे दूर कर सकते हैं।

209. (A) CBR अपने हर के रूप में कुल जनसंख्या का उपयोग करता है, जबकि GFR केवल प्रजनन आयु की महिलाओं का उपयोग करता है।
अशोधित जन्म दर की गणना कुल मध्य-वर्षीय जनसंख्या पर की जाती है, जिसमें पुरुष और बच्चे भी शामिल होते हैं जो बच्चे पैदा नहीं कर सकते। इसके विपरीत, सामान्य प्रजनन दर केवल 15 से 49 वर्ष की उन महिलाओं की संख्या पर आधारित होती है जो वास्तव में प्रजनन के योग्य हैं। इसलिए, सामान्य प्रजनन दर को प्रजनन क्षमता का अधिक परिष्कृत और सटीक माप माना जाता है क्योंकि यह उस आबादी को लक्षित करता है जो जन्म की घटना के लिए सीधे उत्तरदायी है, जिससे सांख्यिकीय सटीकता बढ़ जाती है।

210. (B) निर्मित क्षेत्र से कुछ दूरी पर नए उप-विभाजनों का निर्माण।
'लीपफ्रॉग विकास' नगरीय उपांत में होने वाली एक विशिष्ट अनियोजित प्रक्रिया है। इसमें डेवलपर्स शहर के मुख्य निर्मित क्षेत्र के ठीक बगल में निर्माण करने के बजाय, बीच की भूमि को खाली छोड़कर अधिक दूर और सस्ते ग्रामीण क्षेत्रों में नई बस्तियाँ बना देते हैं। इससे शहरी विस्तार छिटपुट और खंडित हो जाता है, जिससे बीच में खाली जगह रह जाती है। यह प्रक्रिया सड़क और सीवरेज जैसे बुनियादी ढांचे की लागत को बढ़ा देती है और शहरी फैलाव की समस्या को और अधिक गंभीर बना देती है, जो नियोजन के लिए चुनौती है।

211. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत के अनुसार, एक स्वस्थ शहरी पदानुक्रम में छोटे केंद्रों की संख्या बहुत अधिक होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि सामान्य वस्तुओं की 'देहली' और 'परास' दोनों कम होती हैं, यानी लोग इनके लिए कम यात्रा करना चाहते हैं और इनके व्यवसाय को चलाने के लिए कम आबादी की जरूरत होती है। इसलिए, ये सेवाएं कई छोटे और पास-पास स्थित केंद्रों में उपलब्ध कराई जाती हैं। अतः कारण पूरी तरह से अभिकथन के पीछे के आर्थिक और स्थानिक तर्क को सही ढंग से स्पष्ट करता है।

212. (C) प्रवास
'आकर्षण' और 'प्रतिकर्ष' कारकों की अवधारणा प्रवास के अध्ययन का आधार है। आकर्षण कारक गंतव्य स्थान की वे सकारात्मक स्थितियाँ हैं जो लोगों को अपनी ओर खींचती, जैसे बेहतर रोजगार, शिक्षा और सुरक्षा। इसके विपरीत, प्रतिकर्ष कारक मूल स्थान की वे नकारात्मक परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को वहां से जाने के लिए मजबूर करती हैं, जैसे गरीबी, अकाल या युद्ध। इन दोनों ताकतों के बीच की अंतःक्रिया ही यह निर्धारित करती है कि लोग क्यों, कहाँ और कब अपना घर छोड़कर दूसरी जगह जाकर बसते हैं।

213. (D) शहरी नियोजन
शिकागो स्कूल ने शहरी विकास को एक स्वाभाविक पारिस्थितिक प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें संकेंद्रण, आक्रमण, उत्तराधिकार और पृथक्करण जैसी प्रक्रियाएँ शामिल थीं। उनका मानना था कि शहर समाज में मौजूद प्रतिस्पर्धा और जैविक ताकतों के कारण अपने आप आकार लेते हैं। इसके विपरीत, 'शहरी नियोजन' एक सचेत, सरकारी और संगठित मानवीय हस्तक्षेप है जिसका उद्देश्य शहर के विकास को नियंत्रित करना है। यह कोई स्वतः होने वाली पारिस्थितिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि एक नीतिगत निर्णय है जो अक्सर प्राकृतिक विकास के प्रतिरूपों को बदलने का प्रयास करता है।

214. (B) केवल 2 और 3
कोटि-आकार नियम जॉर्ज जिफ द्वारा प्रस्तुत किया गया था और यह बस्तियों की रैंक और आकार के बीच एक सांख्यिकीय संबंध बताता है। यह नियम प्रमुख शहर वाले देशों पर लागू नहीं होता, क्योंकि प्रमुख शहर में सबसे बड़ा शहर असंगत रूप से बड़ा होता है, जो नियम के व्युत्क्रम अनुपात को तोड़ देता है। इसलिए पहला कथन गलत है। यह नियम उन देशों की शहरी प्रणालियों के लिए अधिक सटीक है जहाँ विकास संतुलित है। अतः कथन 2 और 3 ही इस सिद्धांत की सही विशेषताओं और प्रस्तावक का वर्णन करते हैं।

215. (D) निम्न स्थिर चरण
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के अंतिम चरण को 'निम्न स्थिर' चरण कहा जाता है। इस चरण में, उच्च स्तर के आर्थिक विकास और सामाजिक जागरूकता के कारण जन्म दर और मृत्यु दर दोनों अपने न्यूनतम स्तर पर पहुँच जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, कुल जनसंख्या या तो स्थिर हो जाती है या बहुत धीमी गति से बढ़ती है। यह स्थिति आधुनिक विकसित देशों की पहचान है जहाँ जीवन प्रत्याशा उच्च होती है और परिवार नियोजन पूरी तरह से अपनाया जा चुका होता है। यहाँ की मुख्य जनसांख्यिकीय समस्या अब वृद्धि नहीं, बल्कि बढ़ती वृद्ध आबादी का प्रबंधन है।

216. (A) इसके कम्युटर-शेड और मीडिया बाजार के विस्तार द्वारा।
नगर-क्षेत्र एक कार्यात्मक अवधारणा है, जिसकी सीमाएं केवल प्रशासनिक या भौतिक नहीं होतीं। इसे मुख्य रूप से उन क्षेत्रों तक माना जाता है जहाँ से लोग रोजाना काम के लिए शहर आते हैं और जहाँ उस शहर के स्थानीय मीडिया, जैसे समाचार पत्र और टेलीविजन, का प्रभाव होता है। यह उस वास्तविक क्षेत्र को दर्शाता है जो मुख्य शहर के साथ आर्थिक और सामाजिक रूप से एकीकृत है। यह परिभाषा योजनाकारों को उन सभी क्षेत्रों को शामिल करने में मदद करती है जो शहर की गतिविधियों से सीधे प्रभावित होते हैं।

217. (D) कन्फ्यूशियसवाद
पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक मंडल, जिसमें चीन, जापान और कोरिया जैसे देश शामिल हैं, की सांस्कृतिक नींव कन्फ्यूशियसवाद के दर्शन पर टिकी है। इस विचारधारा ने यहाँ के सामाजिक पदानुक्रम, परिवार के प्रति निष्ठा, शिक्षा के महत्व और नैतिक मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है। यद्यपि यहाँ

Click Here to Buy book on Amazon

235. (B) नगर-क्षेत्र
नगर-क्षेत्र एक कार्यात्मक भौगोलिक इकाई है जो शहर की केवल प्रशासनिक सीमाओं तक सीमित नहीं होती है। यह उस पूरे क्षेत्र को परिभाषित करता है जो मुख्य शहर के साथ आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से गहराई से जुड़ा होता है। इस जुड़ाव को वस्तुओं के व्यापार, लोगों के दैनिक आवागमन और सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से मापा जाता है। नगर-क्षेत्र की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि एक आधुनिक शहर अपने आसपास के ग्रामीण और कस्बाई क्षेत्रों पर कितना प्रभाव डालता है और बदले में उन पर कैसे निर्भर रहता है।

236. (D) अंटार्कटिक
सांस्कृतिक मंडल उन क्षेत्रों को कहते हैं जहाँ लोग साझा भाषा, धर्म और जीवन शैली के माध्यम से एक एकीकृत सांस्कृतिक पहचान रखते हैं। भारतीय और चीनी मंडल दुनिया के प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक क्षेत्रों के उदाहरण हैं, जबकि स्लाव मंडल पूर्वी यूरोप की अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इसके विपरीत, अंटार्कटिका एक निर्जन महाद्वीप है जहाँ कोई स्थायी मानवीय आबादी या सदियों पुरानी सांस्कृतिक परंपरा नहीं है। यह केवल वैज्ञानिक अनुसंधान का केंद्र है। अतः, मानवीय भूगोल के संदर्भ में अंटार्कटिका को सांस्कृतिक मंडल के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

237. (D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
नगरीय उपांत एक निश्चित या स्थिर सीमा वाला क्षेत्र नहीं है; वास्तव में, यह अपनी गतिशीलता के लिए ही जाना जाता है। जैसे-जैसे मुख्य शहर की जनसंख्या और आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं, शहरी विस्तार बाहर की ओर फैलता रहता है, जिससे उपांत क्षेत्र भी और दूर खिसकता जाता है। इसलिए, अभिकथन गलत है क्योंकि यह उपांत को स्थिर मानता है। कारण पूरी तरह सही है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि उपांत संक्रमण का एक गतिशील क्षेत्र है जो शहर के क्रमिक विकास के साथ-साथ अपनी भौगोलिक स्थिति बदलता रहता है।

238. (C) उच्च तकनीक, उच्च जनसंख्या और एक विस्तारित संसाधन आधार।
ए.के. एकरमैन के 'तकनीकी-स्रोत' क्षेत्रों में वे विकसित राष्ट्र शामिल हैं जिनके पास न केवल बड़ी जनसंख्या और संसाधन हैं, बल्कि उन संसाधनों का दोहन करने के लिए दुनिया की सबसे उन्नत तकनीक भी उपलब्ध है। अमेरिका और पश्चिमी यूरोपीय देश इसके उदाहरण हैं। इन क्षेत्रों की विशेषता यह है कि वे अपनी वैज्ञानिक उन्नति का उपयोग करके अपने जीवन स्तर को ऊँचा बनाए रखते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करते हैं। यहाँ तकनीक ही वह कारक है जो जनसंख्या और संसाधनों के बीच एक समृद्ध और गतिशील संतुलन स्थापित करती है।

239. (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
1650 से पूर्व विश्व की जनसंख्या वृद्धि बहुत धीमी थी क्योंकि चिकित्सा के अभाव में मृत्यु दर बहुत उच्च थी। 1650 से 1900 के बीच यूरोप में कृषि और औद्योगिक क्रांतियों ने विकास को गति दी। 1950 के बाद चिकित्सा क्रांति का लाभ विकासशील देशों तक पहुँचा, जिससे वहाँ जनसंख्या विस्फोट हुआ। भविष्य के प्रक्षेपण बताते हैं कि वैश्विक विकास दर धीरे-धीरे कम होकर स्थिरता की ओर बढ़ेगी। यह कालक्रम स्पष्ट रूप से दिखाता है कि मानवीय तकनीक और स्वास्थ्य सुधारों ने जनसंख्या के ग्राफ को कैसे ऐतिहासिक रूप से बदला है।

240. (B) शरणार्थी पलायन करने के लिए मजबूर होते हैं, जबकि आर्थिक प्रवासी स्वेच्छा से जाते हैं।
शरणार्थी और आर्थिक प्रवासी के बीच मुख्य अंतर उनकी यात्रा की प्रकृति और उद्देश्य में निहित है। शरणार्थी वे लोग हैं जो युद्ध, उत्पीड़न या हिंसा के कारण अपनी जान बचाने के लिए अपना घर छोड़ने पर मजबूर होते हैं; उनका प्रवास 'अनिवार्य' होता है। इसके विपरीत, आर्थिक प्रवासी स्वेच्छा से बेहतर नौकरी, वेतन और जीवन स्तर की तलाश में प्रवास करते हैं; उनका प्रवास 'स्वैच्छिक' होता है। अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत शरणार्थियों को विशेष सुरक्षा प्राप्त होती है, जो आर्थिक प्रवासियों को आमतौर पर नहीं दी जाती है।

241. (B) कोटि-आकार नियम
कोटि-आकार नियम एक सांख्यिकीय वितरण है जो यह बताता है कि एक देश के शहरों का आकार उनकी रैंक के अनुसार एक व्यवस्थित अनुपात में घटता है। इसका गणितीय सूत्र Pn = P1/n है, जो यह स्पष्ट करता है कि शहरी पदानुक्रम में शहरों का आकार पूर्व-निर्धारित सांख्यिकीय संबंधों के अनुरूप होता है। यह नियम उन देशों में अधिक सटीक पाया जाता है जहाँ आर्थिक अवसर और राजनीतिक सत्ता विभिन्न शहरों के बीच संतुलित रूप से वितरित होती है। यह शहरी भूगोल में स्थानिक समानता और श्रेणीबद्ध संगठन का एक प्रमुख मानक है।

242. (B) बिगड़ती आवासीय संपत्तियाँ और अतिक्रमण करता व्यवसाय।
अर्नेस्ट बर्गेस के संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल में 'संक्रमण क्षेत्र' केंद्रीय व्यापार जिले के ठीक बाहर स्थित होता है। इस क्षेत्र में सबसे पुराने आवासीय घर होते हैं जो अक्सर खराब स्थिति में होते हैं। जैसे-जैसे शहर का केंद्र फैलता है, यहाँ दुकानें और हल्के उद्योग इन पुराने घरों की जगह लेने लगते हैं। यहाँ अक्सर प्रवासियों और कम आय वाले लोगों का संकेंद्रण होता है क्योंकि यहाँ किराया सस्ता होता है। यह क्षेत्र निरंतर परिवर्तन और सामाजिक-आर्थिक अस्थिरता की विशेषता रखता है।

NODIA

243. (C) केवल 1 और 3
क्रिस्टॉलर का केंद्रीय स्थान सिद्धांत एक समदैशिकी सतह की कल्पना करता है जहाँ परिवहन की सुविधा और लागत हर दिशा में समान होती है। इसमें k=4 का मान 'परिवहन सिद्धांत' को दर्शाता है, जो सुलभता को अनुकूलित करता है। दूसरा कथन गलत है क्योंकि वास्तव में अगस्त लोश का मॉडल क्रिस्टॉलर की तुलना में कहीं अधिक जटिल और यथार्थवादी है, न कि सरल। लोश ने परिवर्तनशील बाजार आकारों और षटकोणीय घुमावों की अनुमति दी थी। अतः विकल्प सी सही है क्योंकि यह क्रिस्टॉलर की मूल मान्यताओं और उनके परिवहन संबंधी तर्क की सही पुष्टि करता है।

244. (A) वह क्षेत्र जहाँ कोई सांस्कृतिक विशेषता या नवाचार उत्पन्न होता है।
'सांस्कृतिक उद्गम केंद्र' वह भौगोलिक स्रोत स्थल है जहाँ से किसी विशेष संस्कृति, तकनीक या धर्म की शुरुआत हुई और फिर वह धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में फैल गई। उदाहरण के लिए, नील नदी की घाटी या सिंधु घाटी प्राचीन सभ्यताओं के उद्गम केंद्र थे। यहाँ नए विचारों, सामाजिक संगठनों और कलाओं का जन्म हुआ जिन्होंने मानव इतिहास की दिशा बदल दी। यह अवधारणा सांस्कृतिक भूगोल में यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि कैसे विशेष स्थान वैश्विक संस्कृति के विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं।

245. (A) मृत्यु दर में गिरावट और जन्म दर में गिरावट की शुरुआत।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के तीसरे चरण को 'उत्तरवर्ती विस्तार' कहा जाता है। इस चरण में समाज में शहरीकरण और शिक्षा का प्रसार होता है, जिससे लोग परिवार नियोजन के प्रति जागरूक होने लगते हैं और जन्म दर गिरना शुरू हो जाती है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण मृत्यु दर पहले ही निम्न स्तर पर पहुँच चुकी होती है। यद्यपि जनसंख्या अभी भी बढ़ रही होती है, लेकिन वृद्धि की गति दूसरे चरण के विस्फोट की तुलना में धीमी हो जाती है। यह समाज के एक परिपक्व औद्योगिक चरण की ओर बढ़ने का संकेत है।

246. (C) गतिशीलता संक्रमण मॉडल
विल्बर जेलिंस्की द्वारा प्रस्तावित गतिशीलता संक्रमण मॉडल यह स्पष्ट करता है कि प्रवास के प्रतिरूप जनसांख्यिकीय संक्रमण के चरणों के साथ तालमेल बिठाते हुए बदलते हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई देश जनसंख्या विस्फोट का अनुभव करता है, तो वहां ग्रामीण से शहरी प्रवास बहुत बढ़ जाता है। जैसे-जैसे देश विकसित होता है, आंतरिक प्रवास के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय और शहरों के बीच प्रवास प्रमुख हो जाता है। यह मॉडल यह समझने के लिए अनिवार्य है कि समाज के आर्थिक विकास के साथ मानवीय गतिशीलता के स्वरूप में क्या बदलाव आते हैं।

247. (D) क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत में
'परास' और 'देहली' क्रिस्टॉलर के केंद्रीय स्थान सिद्धांत की दो सबसे बुनियादी अवधारणाएं हैं। परास वह अधिकतम दूरी है जो उपभोक्ता किसी सेवा के लिए तय करने को तैयार है, जबकि देहली वह न्यूनतम जनसंख्या है जो उस सेवा को लाभदायक बनाए रखने के लिए जरूरी है। ये दोनों अवधारणाएँ मिलकर यह निर्धारित करती हैं कि किसी क्षेत्र में बस्तियाँ कितनी दूरी पर स्थित होंगी और उनका पदानुक्रम क्या होगा। इन आर्थिक सीमाओं के बिना सेवा केंद्रों के वितरण का वैज्ञानिक विश्लेषण करना संभव नहीं है।

248. (B) वित्तीय प्रोत्साहन और विस्तारित प्रसूति अवकाश।
प्रसववादी नीतियां जन्म दर को बढ़ाने के उद्देश्य से तैयार की जाती हैं। इनके अंतर्गत सरकारें उन जोड़ों को नकद सहायता या वित्तीय लाभ प्रदान करती हैं जो बच्चे पैदा करने का निर्णय लेते हैं। साथ ही, सवैतनिक प्रसूति और पितृत्व अवकाश जैसे उपाय कामकाजी माता-पिता के लिए परिवार बढ़ाना आसान और आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाते हैं। ये नीतियां आमतौर पर उन देशों में लागू की जाती हैं जो घटती जनसंख्या और बढ़ती वृद्ध आबादी के संकट से जूझ रहे हैं। यह भविष्य के कार्यबल को सुरक्षित करने का एक प्रयास है।

249. (D) महानगर / मेगालोपोलिस
एक विशिष्ट शहरी पदानुक्रम में महानगर या मेगालोपोलिस सबसे ऊँचे स्थान पर होते हैं। पदानुक्रम की यह व्यवस्था जनसंख्या के आकार और प्रदान की जाने वाली सेवाओं की विशिष्टता पर आधारित होती है। गाँवों और कस्बों की तुलना में महानगर न केवल बहुत बड़े होते हैं, बल्कि वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के कार्यों, जैसे वित्तीय केंद्रों, उच्च-तकनीकी उद्योगों और प्रमुख हवाई अड्डों का संकेंद्रण करते हैं। वे एक विशाल क्षेत्र के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को नियंत्रित करते हैं, जिससे वे संपूर्ण शहरी प्रणाली के शीर्ष नियामक केंद्र बन जाते हैं।

250. (A) प्रभावी क्षेत्रीय नियोजन और प्रशासन।
नगर-क्षेत्र के परिसीमन का मुख्य लक्ष्य यह समझना है कि शहर और उसके आसपास के ग्रामीण इलाकों के बीच वास्तविक कार्यात्मक संबंध क्या हैं। इस ज्ञान का उपयोग करके, योजनाकार अधिक प्रभावी परिवहन नेटवर्क, कचरा प्रबंधन, जल आपूर्ति और आर्थिक विकास की योजनाएं बना सकते हैं जो केवल एक शहर की कृत्रिम प्रशासनिक सीमा तक सीमित न हों। यह एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करता है जो पूरे क्षेत्र को एक इकाई के रूप में विकसित करने में मदद करता है, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग और संतुलित विकास सुनिश्चित होता है।

251. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
शहरी संरचना का सेक्टर मॉडल वास्तव में भूमि अर्थशास्त्री होमर होयट द्वारा 1939 में प्रस्तुत किया गया था। हालाँकि, दूसरा कथन गलत है क्योंकि यह मॉडल यह नहीं मानता कि विकास यादृच्छिक है। इसके विपरीत, होयट ने तर्क दिया कि शहर का विकास एक बहुत ही विशिष्ट प्रतिरूप में होता है, जहाँ विभिन्न भूमि उपयोग मुख्य परिवहन मार्गों के साथ पच्चर के आकार के क्षेत्रों में बाहर की ओर फैलते हैं। अतः यह मॉडल शहरी विस्तार में एक व्यवस्थित संरचना की पुष्टि करता है।

252. (C) मृत्यु और उत्प्रवास का योग जन्म और आव्रजन के योग से अधिक हो।
किसी देश की कुल जनसंख्या चार मुख्य कारकों के संतुलन पर निर्भर करती है: जन्म, मृत्यु, आव्रजन और उत्प्रवास। यदि एक वर्ष के दौरान होने वाली कुल मौतों और देश छोड़कर जाने वाले लोगों की संख्या, पैदा होने वाले बच्चों और नए आने वाले लोगों की कुल संख्या से अधिक हो जाती है, तो देश की आबादी में शुद्ध गिरावट आएगी। यह समीकरण जनसांख्यिकीय परिवर्तन का मूल आधार है, जो यह स्पष्ट करता है कि जनसंख्या वृद्धि केवल जन्म और मृत्यु तक सीमित नहीं है।

Downloaded from www.pdf.tube

253. (B) उच्च जनसंख्या, सीमित संसाधन, सरल लेकिन कुशल तकनीक हो।
ए.के. एकरमैन के 'मिस्र प्रकार' के जनसंख्या-संसाधन क्षेत्र का अर्थ है वे क्षेत्र जहाँ संसाधनों की तुलना में जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक है। ऐसे क्षेत्रों में संसाधन आधार बहुत उपजाऊ लेकिन भौगोलिक रूप से सीमित होता है। यहाँ तकनीक बहुत उन्नत नहीं होती, लेकिन वह वहां की परिस्थितियों के लिए पर्याप्त रूप से कुशल होती है। इन क्षेत्रों की मुख्य चुनौती बढ़ती जनसंख्या के लिए सीमित संसाधनों से आजीविका और भोजन सुनिश्चित करना है। यह प्रकार उन प्राचीन घने बसे क्षेत्रों की पहचान है जहाँ संसाधनों पर अत्यधिक भार है।

254. (B) जॉर्ज के. जिफ
यह अवधारणा कि किसी देश में शहरों का आकार एक सांख्यिकीय क्रम या लॉग-नॉर्मल वितरण का पालन करता है, जॉर्ज जिफ द्वारा कोटि-आकार नियम के माध्यम से प्रसिद्ध की गई थी। उन्होंने दिखाया कि जब शहरों की जनसंख्या और उनकी रैंक को ग्राफ पेपर पर अंकित किया जाता है, तो वे एक सीधी रेखा के रूप में व्यवस्थित होते हैं। यह नियमितता यह दर्शाती है कि शहरी प्रणाली में आकार का वितरण यादृच्छिक नहीं है, बल्कि एक एकीकृत आर्थिक प्रक्रिया का परिणाम है। जिफ का यह कार्य शहरी भूगोल में सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

255. (D) जनसंख्या घनत्व
सांस्कृतिक मंडल की पहचान उन मानवीय और सामाजिक विशेषताओं से होती है जो लोगों की साझा पहचान बनाती हैं, जैसे भाषा, धर्म और तकनीक का स्तर। जनसंख्या घनत्व एक विशुद्ध जनसांख्यिकीय और सांख्यिकीय माप है, जो यह बताता है कि प्रति इकाई क्षेत्र में कितने लोग रहते हैं। यह संस्कृति का हिस्सा नहीं है, क्योंकि एक ही सांस्कृतिक मंडल के भीतर घने शहर और विरल गाँव दोनों हो सकते हैं। इसलिए, सांस्कृतिक वर्गीकरण के लिए मानवीय व्यवहार, विश्वास और ऐतिहासिक परंपराओं को ही आधार माना जाता है, न कि केवल लोगों की संख्या को।

256. (B) यह तर्क देकर कि फर्म का स्थान लाभ को अधिकतम करता है, जिससे उत्पादन केंद्र बनते हैं।
अगस्त लोश ने क्रिस्टॉलर के सेवा-केंद्रित मॉडल को आर्थिक दृष्टि से संशोधित किया। उन्होंने तर्क दिया कि व्यापारिक फर्मों का मुख्य उद्देश्य केवल सेवा देना नहीं, बल्कि लाभ को अधिकतम करना है। लोश ने दिखाया कि कैसे विभिन्न वस्तुओं के लिए अलग-अलग परास और देहली होती है, जिससे षटकोणीय जालों के अतिव्यापन से विशिष्ट उत्पादन केंद्र बनते हैं। उनका मॉडल बस्तियों के पदानुक्रम को और अधिक जटिल और यथार्थवादी बनाता है, क्योंकि यह स्वीकार करता है कि विभिन्न आर्थिक बल शहरों के आकार और वितरण को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करते हैं।

257. (B) नगरीय उपांत
नगरीय उपांत वह गतिशील क्षेत्र है जहाँ शहर का विस्तार होने के कारण भूमि के उपयोग में गहरा बदलाव आता है। इस क्षेत्र में सबसे प्रमुख प्रक्रिया कृषि योग्य भूमि का धीरे-धीरे आवासीय कॉलोनियों, गोदामों और व्यावसायिक परिसरों में बदलना है। यहाँ शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार की विशेषताएं साथ-साथ देखी जा सकती हैं। जैसे-जैसे शहर बढ़ता है, यह पट्टी बाहर की ओर खिसकती जाती है। यह क्षेत्र अक्सर अनियोजित विकास और भूमि उपयोग के संघर्षों की पहचान बन जाता है, जहाँ खेती का स्थान शहरी कंक्रीट लेने लगता है।

258. (B) वह सीमा जिस तक कोई स्थान अपने क्षेत्र को वस्तुओं और सेवाओं के साथ सेवा प्रदान करता है।
केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'केंद्रीयता' किसी शहर की केवल जनसंख्या या स्थिति नहीं है, बल्कि यह उसके प्रभाव की गहराई को दर्शाती है। यह शहर द्वारा अपने चारों ओर के पूरक क्षेत्र को प्रदान की जाने वाली अतिरिक्त सेवाओं की मात्रा को मापती है। एक उच्च केंद्रीयता वाला शहर वह है जो न केवल अपने निवासियों की, बल्कि दूर-दराज के गाँवों के लोगों की भी विशिष्ट जरूरतों को पूरा करता है। अतः केंद्रीयता किसी बस्ती के कार्यात्मक महत्व और क्षेत्रीय पदानुक्रम में उसके स्थान को निर्धारित करने वाला मुख्य मानक है।

259. (C) निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर, स्थिर जनसंख्या।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के चौथे चरण में कोई देश उच्च स्तर के आर्थिक विकास, शहरीकरण और स्वास्थ्य सुविधाओं को प्राप्त कर चुका होता है। इस चरण में लोग छोटे परिवार के महत्व को समझते हैं, जिससे जन्म दर गिरकर मृत्यु दर के लगभग बराबर हो जाती है। परिणामतः, जनसंख्या की वृद्धि बहुत धीमी हो जाती है या वह पूरी तरह स्थिर हो जाती है। यह चरण जीवन की गुणवत्ता और लंबी जीवन प्रत्याशा की विशेषता रखता है। अधिकांश विकसित राष्ट्र वर्तमान में इसी चरण में हैं या इसके अंतिम दौर से गुजर रहे हैं।

260. (D) मेक्सिको सिटी
1984 का अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या सम्मेलन मेक्सिको की राजधानी मेक्सिको सिटी में आयोजित किया गया था। यह सम्मेलन बुखारेस्ट सम्मेलन के दस साल बाद हुआ था ताकि जनसंख्या नीतियों में हुई प्रगति की समीक्षा की जा सके। इस सम्मेलन के दौरान यह स्वीकार किया गया कि यद्यपि कई देशों में जन्म दर में कमी आई है, फिर भी वैश्विक जनसंख्या वृद्धि एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। यहाँ से जनसंख्या, संसाधन और पर्यावरण के बीच के त्रिकोणीय संबंधों पर चर्चा ने अधिक जोर पकड़ा, जो भविष्य की नीतियों के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ।

261. (B) अधिक संपन्न निवासियों द्वारा खराब मोहल्लों का नवीनीकरण।
जेंट्रीफिकेशन वह शहरी प्रक्रिया है जिसमें शहर के पुराने या उपेक्षित आंतरिक इलाकों में धनी पेशेवरों और मध्यम वर्ग के लोगों का आगमन होता है। ये लोग वहां की पुरानी इमारतों को आधुनिक बनाते हैं, जिससे क्षेत्र की भौतिक स्थिति तो सुधर जाती है, लेकिन संपत्ति के दाम और किराए बहुत बढ़ जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप वहां पहले से रह रहे कम आय वाले गरीब निवासियों को अपना घर छोड़कर जाने के लिए मजबूर

NODIA

होना पड़ता है। यह प्रक्रिया शहर के सामाजिक ताने-बाने को बदल देती है और अक्सर सामाजिक असंतोष का कारण बनती है।

262. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कोटि-आकार नियम एक संतुलित शहरी प्रणाली की भविष्यवाणी करता है जहाँ शहरों का आकार उनकी रैंक के साथ एक नियमित अनुपात में घटता है। प्रमुख शहर वितरण इसका सीधा उल्लंघन है क्योंकि इसमें देश का सबसे बड़ा शहर अन्य सभी शहरों की तुलना में असंगत रूप से विशाल और प्रभावशाली होता है। जहाँ प्रमुख शहर होता है, वहाँ दूसरा सबसे बड़ा शहर पहले शहर के आधे होने के बजाय बहुत छोटा होता है। अतः कारण पूरी तरह से यह स्पष्ट करता है कि क्यों प्रमुख शहर वाला देश जिफ के सांख्यिकीय नियम के अनुरूप नहीं हो सकता है।

263. (B) हिंटरलैंड या बाजार क्षेत्र
केंद्रीय स्थान सिद्धांत में 'पूरक क्षेत्र' या 'हिंटरलैंड' उस भौगोलिक क्षेत्र को कहते हैं जो अपनी जरूरतों के लिए एक केंद्रीय शहर पर निर्भर होता है। शहर इस क्षेत्र को परिष्कृत सेवाएं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और बाजार प्रदान करता है, और बदले में इस क्षेत्र से उसे खाद्य सामग्री, कच्चा माल और श्रमिक प्राप्त होते हैं। इन दोनों के बीच यह कार्यात्मक संबंध ही नगर-क्षेत्र का आधार बनता है। पूरक क्षेत्र का विस्तार उस शहर की श्रेणी और उसके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के 'परास' पर निर्भर करता है।

264. (A) 2, 4, 3, 1
अधिवास पदानुक्रम में बस्तियों का सही क्रम उनकी जनसंख्या और कार्यों की जटिलता के आधार पर होता है। सबसे छोटा स्तर 'पुरवा' है, जिसमें केवल कुछ ही घर होते हैं। इसके बाद 'गाँव' आता है जहाँ प्राथमिक गतिविधियाँ होती हैं। 'कस्बा' उससे बड़ा होता है जहाँ कुछ बुनियादी शहरी सेवाएँ उपलब्ध होती हैं। 'शहर' पदानुक्रम के शीर्ष पर होता है क्योंकि यह विशाल जनसंख्या के साथ-साथ अत्यंत विविध और विशिष्ट आर्थिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक कार्यों का केंद्र होता है। यह व्यवस्था क्षेत्रीय संगठन को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

265. (B) जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए कृषि भूमि पर महत्वपूर्ण दबाव है।
कायिक घनत्व की गणना कुल जनसंख्या को कृषि योग्य भूमि के क्षेत्रफल से विभाजित करके की जाती है। यदि किसी देश में यह घनत्व बहुत उच्च है, तो का अर्थ है कि वहां के प्रत्येक हेक्टेयर खेती योग्य खेत पर बहुत अधिक लोगों के भोजन की जिम्मेदारी है। यह स्थिति अक्सर उन देशों में देखी जाती है जहाँ भूमि तो सीमित है लेकिन जनसंख्या बहुत अधिक है। उच्च कायिक घनत्व खाद्य सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती का संकेत देता है और यह दर्शाता है कि भूमि संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है।

266. (C) परिणामी परिदृश्य अत्यंत जटिल और लागू करना कठिन है।
अगस्त लोश के केंद्रीय स्थान मॉडल की मुख्य आलोचना इसकी जटिलता है। यद्यपि लोश ने लाभ को अधिकतम करने और परिवर्तनशील 'k' मानों की अनुमति देकर मॉडल को अधिक यथार्थवादी बनाने का प्रयास किया, लेकिन इसके परिणामस्वरूप जो 'आर्थिक परिदृश्य' बना, वह गणितीय और भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत जटिल हो गया। इस मॉडल के षटकोणीय जालों के अतिव्यापन और घुमाव को वास्तविक दुनिया की क्षेत्रीय नियोजन समस्याओं पर लागू करना बहुत कठिन है। इसके विपरीत, क्रिस्टॉलर का सरल और कठोर पदानुक्रम समझना और उपयोग करना अपेक्षाकृत आसान माना जाता है।

267. (C) चीनी सभ्यता
चीनी या पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक मंडल का आधार प्राचीन और समृद्ध चीनी सभ्यता है। कन्फ्यूशियस के विचार, विशिष्ट लेखन पद्धति, स्थापत्य शैली और चाय की संस्कृति इस पूरे क्षेत्र के साझा सूत्र रहे हैं। चीन के सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव ने सदियों से जापान, कोरिया और वियतनाम जैसे पड़ोसी देशों की सामाजिक संरचना और रीति-रिवाजों को गहराई से प्रभावित किया है। यद्यपि इन देशों की अपनी स्वतंत्र पहचान भी है, लेकिन उनकी बुनियादी सांस्कृतिक विरासत एक ही स्रोत से जुड़ी हुई है, जो इस मंडल को एकीकृत करती है।

268. (B) अन्य शहरों पर सबसे बड़े शहर के प्रभुत्व की सीमा।
प्रमुख शहर और एक सामान्य शहरी प्रणाली के बीच मुख्य अंतर 'शक्ति के संकेंद्रण' का है। एक प्रमुख प्रणाली में केवल एक ही शहर पूरे देश की अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति का एकछत्र केंद्र होता है और वह अन्य शहरों से कई गुना बड़ा होता है। इसके विपरीत, एक गैर-प्रमुख या संतुलित शहरी प्रणाली में आर्थिक और राजनीतिक शक्ति कई बड़े शहरों के बीच विभाजित होती है। ऐसी प्रणालियों में शहरों का आकार क्रमिक होता है, जैसा कि कोटि-आकार नियम में देखा जाता है, जो अधिक संतुलित क्षेत्रीय विकास का संकेत है।

269. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
संकेंद्रित क्षेत्र मॉडल केंद्रीय व्यापार जिले के चारों ओर छल्लों की श्रृंखला की बात करता है। सेक्टर मॉडल बताता है कि विकास मुख्य परिवहन मार्गों के किनारे होता है। बहु-नाभिक मॉडल यह स्वीकार करता है कि शहरों में विकास के कई अलग-अलग केंद्र होते हैं। कोटि-आकार नियम शहरों के रैंक और उनकी जनसंख्या के बीच एक नियमित पदानुक्रम प्रस्तुत करता है। ये चारों अवधारणाएँ मिलकर शहरी भूगोल के आधारभूत ढांचे का निर्माण करती हैं, जो आधुनिक शहरों की जटिल आंतरिक संरचना और उनके स्थानिक वितरण को समझने के लिए अनिवार्य सांख्यिकीय उपकरण हैं।

270. (B) महिलाओं की प्रत्येक पीढ़ी स्वयं को बिल्कुल प्रतिस्थापित कर रही है।
1.0 की शुद्ध पुनरुत्पादन दर का अर्थ है कि जनसांख्यिकीय रूप से एक जनसंख्या 'स्थिर' अवस्था में है। इस दर पर, प्रत्येक माँ

Click Here to Buy book on Amazon

औसतन एक ऐसी बेटी को जन्म देती है जो स्वयं माँ बनने की उम्र तक जीवित रहेगी। यदि यह दर बनी रहती है, तो लंबी अवधि में जनसंख्या न तो बढ़ेगी और न ही घटेगी। यह प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन क्षमता का एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय संकेतक है, जो जनसांख्यिकीविदों को भविष्य की जनसंख्या प्रवृत्तियों और आव्रजन की आवश्यकता का विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करता है।

271. (B) निकटवर्ती, वैकल्पिक गंतव्य जो एक प्रवासी के लिए आकर्षक हैं।
'अंतवर्ती अवसर' की अवधारणा यह बताती है कि प्रवास का निर्णय केवल दूरी या मूल स्थान की समस्याओं पर निर्भर नहीं करता। यदि किसी प्रवासी को अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही रास्ते में कोई ऐसा स्थान मिल जाए जो उसकी जरूरतों को पूरा करता हो, तो वह वहीं रुक सकता है। उदाहरण के लिए, एक गाँव से दिल्ली जा रहा व्यक्ति यदि रास्ते में किसी औद्योगिक कस्बे में अच्छी नौकरी पा लेता है, तो वह वहीं बस जाएगा। यह अवधारणा प्रवास की दिशा और प्रवाह को गहराई से प्रभावित करती है।

272. (B) धुंधली और संक्रमणकालीन, जो अलग-अलग वस्तुओं के लिए अलग-अलग होती है।
शहर के 'Umland' या हिंटरलैंड की कोई एक निश्चित या कठोर सीमा नहीं होती है। यह एक संक्रमणकालीन क्षेत्र है जिसका विस्तार उस शहर द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं के आधार पर बदलता रहता है। उदाहरण के लिए, शहर के ताजे दूध की आपूर्ति का क्षेत्र छोटा हो सकता है, लेकिन उसके विशेष अस्पतालों या उच्च शिक्षा का प्रभाव बहुत दूर तक हो सकता है। जैसे-जैसे हम शहर से दूर जाते हैं, उसका प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जाता है। अतः हिंटरलैंड की सीमाएं लचीली और कार्यात्मक संबंधों पर आधारित होती हैं।

273. (C) उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका।
'मेगालोपोलिस' शब्द को जीन गॉटमैन ने 1960 के दशक में अमेरिका के उत्तर-पूर्वी समुद्री तट के संदर्भ में वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध किया था। उन्होंने बोस्टन, न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया, बाल्टीमोर और वाशिंगटन डी.सी. जैसे शहरों के आपस में जुड़े हुए विशाल शहरी क्षेत्र को 'बोसवॉश' कहा। यह क्षेत्र दुनिया का सबसे अधिक विकसित और एकीकृत शहरी गलियारा है जहाँ कई महानगर मिलकर एक विशाल आर्थिक शक्ति बनाते हैं। गॉटमैन का यह अध्ययन आधुनिक शहरी भूगोल में अत्यंत व्यापक स्तर के शहरीकरण को समझने का एक महत्वपूर्ण मानक बन गया है।

274. (C) केवल 1 and 3
कोटि-आकार नियम और प्रमुख शहर की अवधारणाएँ किसी देश के भीतर शहरी वितरण और पदानुक्रम को समझने के दो महत्वपूर्ण तरीके हैं। क्रिस्टॉलर का सिद्धांत यह बताता है कि कैसे बस्तियाँ अपनी सेवाओं और जनसंख्या के आधार पर एक व्यवस्थित क्रम में व्यवस्थित होती हैं। दूसरा कथन गलत है क्योंकि प्रमुख शहर प्रतिरूप 'संतुलित' नहीं, बल्कि एक 'असंतुलित' शहरी प्रणाली का उदाहरण है, जहाँ एक शहर बाकी सब पर हावी होता है। अतः केवल पहला और तीसरा कथन ही शहरी भूगोल के सैद्धांतिक आधारों और उनके महत्व को सही ढंग से पुष्ट करते हैं।

275. (C) चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों का प्रसार।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण की शुरुआत मृत्यु दर में होने वाली अचानक और तीव्र गिरावट से होती है। यह परिवर्तन मुख्य रूप से आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की उन्नति, जैसे कि टीकों और एंटीबायोटिक्स की खोज, और बेहतर स्वच्छता सुविधाओं के कारण संभव हुआ है। इन तकनीकों के कारण महामारियों और संक्रामक रोगों पर नियंत्रण पाना आसान हो गया, जिससे लोग अधिक समय तक जीवित रहने लगे। चूँकि जन्म दर अभी भी उच्च बनी रहती है, इसलिए मृत्यु दर में यह गिरावट जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि या 'जनसंख्या विस्फोट' का मुख्य कारण बनती है।

276. (C) बहु-नाभिक मॉडल
'एज सिटी' और उपनगरीय व्यावसायिक केंद्रों के विकास को हैरिस और उलमैन के बहु-नाभिक मॉडल द्वारा सबसे अच्छी तरह समझाया जा सकता है। यह मॉडल यह स्वीकार करता है कि आधुनिक शहर केवल एक मुख्य केंद्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें विकास के कई स्वतंत्र और विशिष्ट नाभिक होते हैं। हवाई अड्डे या राजमार्गों के मिलन बिंदुओं के पास विकसित होने वाले ये नए केंद्र अपने आप में आत्मनिर्भर शहरी इकाइयाँ बन जाते हैं। यह मॉडल पारंपरिक छल्लेनुमा विकास के बजाय आधुनिक महानगरों के बिखरे हुए और विविध कार्यात्मक स्वरूप को सही ढंग से दर्शाता है।

277. (C) मातृ मृत्यु अनुपात
मातृ मृत्यु अनुपात मर्त्यता का एक विशिष्ट माप है जो गर्भावस्था या प्रसव से जुड़ी जटिलताओं के कारण होने वाली महिलाओं की मृत्यु की संख्या को मापता है। यह एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संकेतक है जो किसी समाज में महिला स्वास्थ्य सेवाओं और प्रसव पूर्व देखभाल की गुणवत्ता को दर्शाता है। अन्य विकल्प, जैसे कुल प्रजनन दर और जन्म दर, प्रजनन क्षमता के माप हैं। मातृ मृत्यु अनुपात का अध्ययन न केवल मृत्यु दर के विश्लेषण के लिए जरूरी है, बल्कि यह देश के सामाजिक-आर्थिक विकास और लैंगिक समानता के स्तर को समझने में भी मदद करता है।

278. (A) पूरी तरह से फिट होते हैं और केंद्र से दूरी को कम करते हैं।
क्रिस्टॉलर ने बाजार क्षेत्रों के लिए षट्कोणों का चुनाव इसलिए किया क्योंकि यह आकृति बिना किसी रिक्त स्थान छोड़े पूरे क्षेत्र को ढक लेती है। यदि वृत्तों का उपयोग किया जाता, तो उनके बीच कुछ खाली जगह बच जाती या वे एक-दूसरे को अतिव्यापित करते। इसके अतिरिक्त, षट्कोण के केंद्र से उसकी परिधि तक की औसत दूरी, वर्ग या त्रिभुज की तुलना में, वृत्त के सबसे करीब होती है। यह उपभोक्ताओं के लिए न्यूनतम यात्रा दूरी सुनिश्चित करता है, जिससे सेवा वितरण की आर्थिक दक्षता और स्थानिक संतुलन दोनों प्राप्त होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

226. (A) शहरी और ग्रामीण भूमि उपयोग संघर्ष और संक्रमण में हैं।
नगरीय उपांत वह भौगोलिक पेटी है जहाँ शहर की सीमाओं का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहा होता है। यहाँ की सबसे बड़ी पहचान यह है कि यहाँ खेती की जमीन और नई रिहायशी इमारतों का मिला-जुला रूप देखा जाता है। इस क्षेत्र में भूमि के उपयोग को लेकर अक्सर तनाव रहता है क्योंकि शहरी विकास की गति कृषि कार्यों को विस्थापित करती है। इसे 'संक्रमण का क्षेत्र' कहा जाता है क्योंकि यहाँ न तो पूरी तरह शहरी सुविधाएँ होती हैं और न ही विशुद्ध ग्रामीण वातावरण। यह आधुनिक शहरीकरण की एक गतिशील विशेषता है।

227. (A) एक समान, समतल मैदान जिसमें आवाजाही में कोई बाधा न हो।
वाल्टर क्रिस्टॉलर ने अपने सिद्धांत को सरल बनाने के लिए एक 'समदैशिकी सतह' की कल्पना की। इसका अर्थ है एक ऐसा आदर्श मैदान जहाँ कोई पर्वत, नदी या अन्य भौतिक बाधा नहीं है, और जहाँ मिट्टी की उर्वरता और संसाधनों का वितरण हर जगह समान है। साथ ही, उन्होंने माना कि परिवहन की लागत और सुलभता भी सभी दिशाओं में एक जैसी है। यद्यपि वास्तविक दुनिया ऐसी नहीं होती, लेकिन यह मान्यता उन्हें बस्तियों के वितरण और उनके पदानुक्रम के पीछे के शुद्ध आर्थिक तर्क को स्पष्ट रूप से समझाने में मदद करती थी।

228. (C) 3 मिलियन
कोटि-आकार नियम के अनुसार, किसी शहर की जनसंख्या निकालने के लिए सबसे बड़े शहर की जनसंख्या को उस शहर की रैंक से विभाजित किया जाता है। यहाँ सबसे बड़ा शहर 6 मिलियन का है और हमें दूसरे नंबर के शहर की जनसंख्या ज्ञात करनी है। सूत्र के अनुसार, 6 को 2 से विभाजित करने पर 3 मिलियन प्राप्त होता है। यह नियम यह दर्शाता है कि एक संतुलित शहरी प्रणाली में बस्तियों का आकार एक क्रमिक और पूर्वानुमेय सांख्यिकीय अनुपात का पालन करता है, जो क्षेत्रीय विकास की स्थिरता को दर्शाता है।

229. (B) महामारी विज्ञान संक्रमण
महामारी विज्ञान संक्रमण यह स्पष्ट करता है कि जैसे-जैसे समाज का विकास होता है, लोगों की मृत्यु के मुख्य कारण कैसे बदलते हैं। शुरुआत में, अशुद्ध पानी और कुपोषण के कारण संक्रामक रोग अधिक मौतें करते हैं। चिकित्सा उन्नति और बेहतर जीवन स्तर के साथ, ये बीमारियाँ कम हो जाती हैं, लेकिन इनकी जगह कैंसर और हृदय रोग जैसी पुरानी या गैर-संक्रामक बीमारियाँ ले लेती हैं। यह संक्रमण जनसांख्यिकीय बदलावों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और समाज के स्वास्थ्य ढांचे में आने वाले गहरे सुधारों का प्रतिनिधित्व करता है।

230. (C) बुखारेस्ट
1974 में रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में आयोजित विश्व जनसंख्या सम्मेलन पहली बार था जब सरकारों ने वैश्विक स्तर पर जनसंख्या के मुद्दों पर औपचारिक चर्चा की। इस सम्मेलन में यह प्रसिद्ध नारा दिया गया था कि "विकास ही सबसे अच्छा गर्भनिरोधक है।" यहाँ यह बहस हुई कि क्या जनसंख्या नियंत्रण केवल परिवार नियोजन से संभव है या इसके लिए व्यापक आर्थिक विकास की आवश्यकता है। इस सम्मेलन ने भविष्य की जनसांख्यिकीय वार्ताओं के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया और जनसंख्या नीतियों को विकास के व्यापक ढांचे के भीतर शामिल करने पर जोर दिया।

231. (C) मार्क जेफरसन
प्रमुख शहर की अवधारणा को सबसे पहले भूगोलवेत्ता मार्क जेफरसन ने वर्ष 1939 में परिभाषित किया था। उन्होंने यह देखा कि कई देशों में एक शहर अन्य सभी शहरों की तुलना में असंगत रूप से बहुत बड़ा होता है। जेफरसन का मानना था कि यह शहर न केवल जनसंख्या में बड़ा होता है, बल्कि वह उस राष्ट्र की संस्कृति, आर्थिक शक्ति और राजनीतिक चेतना का मुख्य प्रतीक बन जाता है। उनकी यह अवधारणा विशेष रूप से उन देशों के शहरी भूगोल को समझने में मदद करती है जहाँ विकास का भारी संकेंद्रण केवल एक ही प्रमुख केंद्र में होता है।

232. (B) पृथक्करण
पृथक्करण वह शहरी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जनसंख्या के विभिन्न समूह, चाहे वे आय, धर्म या जातीयता पर आधारित हों, शहर के अलग-अलग मोहल्लों में विभाजित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को दर्शाती है। इसके कारण शहर में 'अमीर' और 'गरीब' बस्तियां या विशिष्ट समुदायों के आवासीय क्षेत्र बन जाते हैं। पृथक्करण के परिणामस्वरूप अक्सर संसाधनों, जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं, की सुलभता में भी भारी अंतर पैदा हो जाता है। यह आधुनिक शहरी समाजों में सामाजिक न्याय और एकीकरण के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

233. (B) स्वयं पर और अपने आसपास के छह निम्न-क्रम के पड़ोसियों पर उनकी संपूर्णता में।
क्रिस्टॉलर के k=7 या 'प्रशासनिक सिद्धांत' का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट राजनीतिक और प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना है। इस पदानुक्रम में, प्रशासन की सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि निचले स्तर के केंद्रों का कोई भी हिस्सा विभाजित न हो। इसलिए, प्रत्येक उच्च-क्रम का केंद्र अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर आने वाले सभी छह निम्न-क्रम के केंद्रों को पूरी तरह से नियंत्रित करता है। यह व्यवस्था बाजार या परिवहन सिद्धांतों के विपरीत है जहाँ बस्तियाँ साझा की जा सकती हैं। यह प्रशासनिक सीमाओं की स्पष्टता और सरकारी प्रबंधन की कुशलता के लिए आदर्श है।

234. (B) निम्न जन्म दर
जनसंख्या पिरामिड का आधार समाज में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या को दर्शाता है। यदि यह आधार संकीर्ण या पतला है, तो इसका सीधा अर्थ है कि उस देश में जन्म दर में काफी गिरावट आई है। यह स्थिति आमतौर पर उन विकसित समाजों में देखी जाती है जहाँ परिवार नियोजन पूरी तरह अपना लिया गया है और लोग देर से शादी या कम बच्चे पैदा करना पसंद करते हैं। संकीर्ण आधार भविष्य में छोटी युवा आबादी और अंततः कार्यबल की कमी का संकेत देता है, जो जनसांख्यिकीय स्थिरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

NODIA

केवल फ्रांस की राजधानी है, बल्कि यह देश के हर सामाजिक और आर्थिक पहलू का मुख्य नियंत्रक भी है।

288. (C) आक्रमण
शहरी पारिस्थितिकी में 'आक्रमण' वह प्रक्रिया है जिसमें एक नया जनसंख्या समूह, विशेषकर किसी अलग जातीय या सामाजिक वर्ग का, किसी स्थापित मोहल्ले में प्रवेश करना और वहां बसना शुरु कर देता है। यह प्रक्रिया भूमि उपयोग में भी देखी जा सकती है जब औद्योगिक गतिविधियाँ आवासीय क्षेत्रों में घुसने लगती हैं। आक्रमण अक्सर परिवर्तन की पहली लहर होती है, जो पुराने सामाजिक संतुलन को चुनौती देती है। यदि यह प्रभाव बढ़ता रहता है, तो यह बाद में 'उत्तराधिकार' की स्थिति में बदल जाता है जहाँ नया समूह पुराने को पूरी तरह विस्थापित कर देता है।

289. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
यद्यपि क्रिस्टॉलर और जिफ जैसे विद्वानों ने बस्तियों के वितरण के लिए बहुत सटीक मॉडल दिए हैं, लेकिन वास्तविक दुनिया में ये प्रतिरुप अक्सर अनियमित होते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रकृति पूरी तरह से सपाट या समान नहीं है। पहाड़, नदियाँ, उपजाऊ मिट्टी के अलग-अलग हिस्से और ऐतिहासिक युद्ध या नीतियां इन आदर्श मॉडलों को विकृत कर देती हैं। अतः कारण पूरी तरह से सही है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि भौगोलिक और ऐतिहासिक वास्तविकताएं अक्सर सैद्धांतिक गणितीय शुद्धता को बाधित करती हैं, जिससे वितरण अनियमित हो जाता है।

290. (C) अशोधित मृत्यु दर (CDR)
अशोधित मृत्यु दर अंतरराष्ट्रीय तुलनाओं के लिए सबसे कम उपयोगी मानी जाती है क्योंकि यह पूरी तरह से जनसंख्या की आयु संरचना पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, एक बहुत स्वस्थ विकसित देश की मृत्यु दर अधिक हो सकती है यदि वहां वृद्धों की संख्या ज्यादा है, जबकि एक गरीब देश की मृत्यु दर कम हो सकती है यदि वहां की अधिकांश आबादी युवा है। इसके विपरीत, जीवन प्रत्याशा और कुल प्रजनन दर आयु के प्रभाव से मुक्त होते हैं और समाज के वास्तविक विकास स्तर की तुलना करने के लिए अधिक वैज्ञानिक और विश्वसनीय मानक माने जाते हैं।

291. (C) नगर-क्षेत्र या हिंटरलैंड
शहर का 'प्रभाव क्षेत्र' वह भौगोलिक विस्तार है जहाँ उस शहर की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सेवाओं की माँग होती है। इसे 'नगर-क्षेत्र' या 'हिंटरलैंड' भी कहा जाता है। यह क्षेत्र शहर से सीधे तौर पर जुड़ा होता है; यहाँ के लोग शिक्षा, व्यापार और मनोरंजन के लिए शहर पर निर्भर होते हैं, जबकि शहर संसाधनों और श्रम के लिए इस क्षेत्र पर निर्भर होता है। प्रभाव क्षेत्र की सीमाएं उन सेवाओं के परास द्वारा निर्धारित होती हैं जो शहर प्रदान करता है। यह एक कार्यात्मक अवधारणा है जो प्रशासनिक सीमाओं से परे फैली होती है।

292. (B) न्यूनतम केंद्रों से उपभोक्ताओं को कुशलतापूर्वक वस्तुएं प्रदान करता है।
क्रिस्टॉलर के k=3 पदानुक्रम को 'बाजार सिद्धांत' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उपभोक्ताओं के लिए सुलभता को अधिकतम करने पर केंद्रित है। इस मॉडल में, सेवा केंद्रों का वितरण इस तरह किया जाता है कि कोई भी क्षेत्र बिना सेवा के न रहे और उपभोक्ताओं को सामान खरीदने के लिए कम से कम दूरी तय करनी पड़े। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि न्यूनतम संख्या में उच्च-क्रम के केंद्र अपने अधीनस्थ केंद्रों को कुशलतापूर्वक सेवा प्रदान करें। यह सिद्धांत वाणिज्यिक दक्षता और बाजार कवरेज के बीच एक आदर्श ज्यामितीय संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

293. (B) एक वृद्ध होती और संभावित रुप से घटती जनसंख्या
एक आयु-लिंग पिरामिड जो शीर्ष पर चौड़ा और आधार पर संकीर्ण है, उस देश की जनसांख्यिकीय चिंताओं को दर्शाता है। संकीर्ण आधार का अर्थ है कि जन्म दर बहुत गिर गई है, जबकि चौड़ा शीर्ष यह इंगित करता है कि बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण लोग लंबे समय तक जीवित रह रहे हैं। इसके परिणामस्वरुप, कार्यशील आयु के लोगों का अनुपात कम हो जाता है और आश्रित बुजुर्गों की संख्या बढ़ जाती है। यह स्थिति भविष्य में जनसंख्या में गिरावट और कार्यबल की कमी का संकेत देती है, जो वर्तमान में कई विकसित देशों के सामने एक बड़ी चुनौती है।

294. (B) अगस्त लोश
अगस्त लोश एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने वाल्टर क्रिस्टॉलर के सेवा-केंद्रित मॉडल को आर्थिक दृष्टि से संशोधित किया। उन्होंने तर्क दिया कि व्यापारिक फर्मों का प्राथमिक उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है, न कि केवल सेवा देना। लोश ने अपने मॉडल में उत्पादन केंद्रों और बाजार क्षेत्रों की विविधता को शामिल किया, जिससे एक अधिक जटिल और गतिशील आर्थिक परिदृश्य का निर्माण हुआ। उनका कार्य औद्योगिक स्थान के सिद्धांत और क्षेत्रीय विज्ञान में एक मील का पत्थर माना जाता है, क्योंकि इसने बस्तियों के वितरण के पीछे के शुद्ध आर्थिक तर्क को और गहरा किया।

295. (B) जनसंख्या संरचना
जनसंख्या संरचना का तात्पर्य किसी जनसंख्या की उन आंतरिक विशेषताओं के अध्ययन से है जो इसे विभिन्न समूहों में विभाजित करती हैं। इसमें आयु, लिंग, वैवाहिक स्थिति, साक्षरता, व्यावसायिक संरचना और धार्मिक या भाषाई पहचान जैसे तत्व शामिल होते हैं। इन विशेषताओं का विश्लेषण करना नीति निर्माताओं के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह समाज की वर्तमान स्थिति और भविष्य की जरूरतों, जैसे कि स्कूलों, अस्पतालों और पेंशन योजनाओं की मांग को समझने में मदद करता है। यह केवल लोगों को गिनना नहीं, बल्कि उनकी प्रकृति को समझना है जो विकास का आधार है।

296. (C) पारंपरिक कृषि और अतिक्रमण करते शहरी भूमि उपयोग।
ग्रामीण-शहरी उपांत में सबसे तीखा संघर्ष भूमि के स्वामित्व और उसके उपयोग को लेकर होता है। जैसे-जैसे शहर का फैलाव

Click Here to Buy book on Amazon

कथन (A): हर्टलैंड यूरेशिया में एक विशाल, संसाधन-संपन्न क्षेत्र है, जो काफी हद तक समुद्री शक्ति के लिए दुर्गम है।
कारण (R): एच.जे. मैकिन्डर ने तर्क दिया कि इस 'धुरी क्षेत्र' पर नियंत्रण एक महान महाद्वीपीय शक्ति को दुनिया पर प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम बनाएगा।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

11. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य के मानवीय तत्व का सबसे उपयुक्त उदाहरण है?
(A) खनिज संसाधनों का भौगोलिक वितरण
(B) प्रचलित क्षेत्रीय वायुमंडलीय स्थितियाँ
(C) क्षेत्र का विशिष्ट ज्यामितीय आकार
(D) राष्ट्रीय एकीकरण और पहचान का स्तर

12. एक सीमा रेखा जो वर्तमान सांस्कृतिक परिदृश्य विकसित होने से पहले स्थापित की गई थी, उसे क्या कहा जाता है?
(A) अध्यारोपित सीमा
(B) पूर्ववर्ती सीमा
(C) अवशेष सीमा
(D) परवर्ती सीमा

13. हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व कई रणनीतिक 'चोकपॉइंट्स' की उपस्थिति से बढ़ जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा हिंद महासागर क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख चोकपॉइंट है?
(A) पनामा नहर
(B) जिब्राल्टर जलडमरूमध्य
(C) मलक्का जलडमरूमध्य
(D) बेरिंग जलडमरूमध्य

14. प्रादेशिक परिसीमन की कौन सी विधि मुख्य रूप से स्थानों के बीच आवाजाही या जुड़ाव के प्रतिरूप, जैसे यात्रा प्रतिरूप या व्यापार प्रवाह के विश्लेषण पर आधारित है?
(A) भारित सूचकांक विधि
(B) गुरुत्वाकर्षण मॉडल
(C) समरूपता विधि
(D) प्रवाह विश्लेषण

15. राज्य के तत्वों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. भौतिक तत्वों में स्थान, आकार और आकृति शामिल हैं।
II. मानवीय तत्व विशेष रूप से कुल जनसंख्या संख्या को संदर्भित करते हैं।
III. आर्थिक तत्वों में प्राकृतिक संसाधन और औद्योगिक क्षमता शामिल है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

16. राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' और 'सीमा' के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) सीमांत एक रेखीय सीमा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि सीमा एक क्षेत्र है।
(B) सीमांत अलगाव का एक क्षेत्र है, जबकि सीमा संपर्क की एक रेखा है।
(C) सीमांत एक औपचारिक कानूनी संरचना है, जबकि सीमा प्राकृतिक है।
(D) सीमांत एक ऐतिहासिक रूप से अप्रचलित शब्द है, जबकि सीमा आधुनिक है।

17. कावेरी जल विवाद में मुख्य रूप से भारत के निम्नलिखित में से कौन से राज्य शामिल हैं?
(A) महाराष्ट्र और कर्नाटक
(B) तमिलनाडु और कर्नाटक
(C) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
(D) पंजाब और हरियाणा

18. स्पाइकमैन के रिमलैंड सिद्धांत के अनुसार, कौन सा क्षेत्र वैश्विक शक्ति की अंतिम कुंजी रखता है?
(A) यूरेशिया के तटीय किनारे
(B) यूरेशिया का आंतरिक भाग
(C) उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग
(D) अफ्रीकी महाद्वीप

19. विकास का कौन सा संकेतक जीवन प्रत्याशा, साक्षरता और जीवन स्तर (प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद) के मापों को जोड़ता है?
(A) सकल घरेलू उत्पाद
(B) भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक
(C) मानव विकास सूचकांक
(D) लिंग विकास सूचकांक

20. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (प्रदेश का प्रकार)
P. औपचारिक प्रदेश
Q. कार्यात्मक प्रदेश
R. नियोजन प्रदेश
S. प्राकृतिक प्रदेश
सूची II: (परिभाषित विशेषता)
1. एक केंद्रीय नोड से परस्पर क्रिया या संबंध द्वारा परिभाषित।
2. विकास योजनाओं को लागू करने के लिए प्रशासनिक उद्देश्यों हेतु बनाया गया क्षेत्र।
3. एक या अधिक भौतिक या सांस्कृतिक विशेषताओं में एकरूपता द्वारा विशेषीकृत।
4. जलवायु या उच्चावच जैसी प्राकृतिक विशेषताओं द्वारा

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अध्याय 06
राजनीतिक भूगोल, प्रादेशिक नियोजन एवं विकास

1. कौन सा भू-राजनीतिक सिद्धांत यूरेशियाई भूभाग, विशेष रूप से 'धुरी क्षेत्र' को विश्व प्रभुत्व की कुंजी के रूप में पहचानता है?
(A) रिमलैंड सिद्धांत
(B) हर्टलैंड सिद्धांत
(C) समुद्री शक्ति सिद्धांत
(D) जैविक राज्य सिद्धांत

2. निम्नलिखित भू-राजनीतिक अवधारणाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. समुद्री शक्ति सिद्धांत (महन)
II. हर्टलैंड सिद्धांत (मैकिन्डर)
III. जैविक राज्य सिद्धांत (रेटजेल)
IV. रिमलैंड सिद्धांत (स्पाइकमैन)
(A) III, I, II, IV
(B) I, III, IV, II
(C) II, IV, I, III
(D) III, II, I, IV

3. निम्नलिखित में से किसे राज्य का प्राथमिक भौतिक तत्व माना जाता है?
(A) राष्ट्रीय विचारधारा
(B) आर्थिक प्रणाली
(C) क्षेत्रीय आकार और आकृति
(D) जनसंख्या घनत्व

4. एक निश्चित फसल के प्रभुत्व द्वारा परिभाषित क्षेत्र, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में 'कपास पेटी', किस प्रकार के प्रदेश का सबसे अच्छा वर्णन है?
(A) कार्यात्मक प्रदेश
(B) नियोजन प्रदेश
(C) नोडल प्रदेश
(D) औपचारिक प्रदेश

5. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (भू-राजनीतिक विचारक)
P. एच.जे. मैकिन्डर
Q. निकोलस स्पाइकमैन
R. अल्फ्रेड थेयर महन
S. फ्रेडरिक रेटजेल
सूची II: (संबद्ध अवधारणा)
1. समुद्री शक्ति
2. लेबेन्सराउम
3. हर्टलैंड
4. रिमलैंड
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

6. 'सतत विकास' की अवधारणा मुख्य रूप से पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक विकास और किस अन्य कारक के बीच संतुलन पर जोर देती है?
(A) राजनीतिक स्थिरता
(B) सामाजिक समता
(C) सैन्य शक्ति
(D) तकनीकी प्रगति

7. निम्नलिखित को छोड़कर सभी भारत में प्रमुख जल विवाद माने जाते हैं:
(A) कावेरी नदी जल बंटवारा संघर्ष
(B) कृष्णा नदी जल आवंटन विवाद
(C) नर्मदा नदी घाटी विकास का मुद्दा
(D) बांग्लादेश के साथ सीमा पार जल साझाकरण

8. रिमलैंड सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह रिमलैंड को भौगोलिक रूप से स्थल-रुद्ध मानता है।
(B) इसे निकोलस स्पाइकमैन द्वारा हर्टलैंड सिद्धांत की आलोचना के रूप में प्रस्तावित किया गया था।
(C) यह तर्क देता है कि यूरेशियाई तटीय क्षेत्र वैश्विक शक्ति की कुंजी हैं।
(D) इसमें कहा गया है, "जो रिमलैंड पर शासन करता है वह यूरेशिया पर नियंत्रण रखता है; जो यूरेशिया पर शासन करता है वह विश्व के भाग्य को नियंत्रित करता है।"

9. विशिष्ट नियोजन उद्देश्यों के लिए प्रदेशों की सीमाओं की पहचान करने और उन्हें मानचित्र पर अंकित करने की प्रक्रिया को किस रूप में जाना जाता है?
(A) प्रादेशिक विकास
(B) प्रादेशिककरण
(C) प्रादेशिक परिसीमन
(D) प्रादेशिक असमानता

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

Downloaded from www.pdf.tube

(C) महाराष्ट्र और गुजरात
(D) बिहार और पश्चिम बंगाल

77. निम्नलिखित में से कौन अध्यारोपित सीमा का नकारात्मक परिणाम है?
(A) यह पहले से मौजूद स्थानीय सांस्कृतिक विभाजनों के साथ मेल खाती है।
(B) यह पूरी तरह से निर्जन और दूरस्थ क्षेत्र में स्थापित की जाती है।
(C) यह जातीय समूहों को विभाजित कर सकती है या पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी आबादी को एक साथ जोड़ सकती है।
(D) यह एक प्रमुख प्राकृतिक विशेषता का सटीक रूप से अनुसरण करती है।

78. 'विकास' की अवधारणा विशुद्ध रूप से आर्थिक होने से बदलकर किन आयामों को शामिल करने के लिए विकसित हुई है?
(A) केवल सैन्य और रणनीतिक
(B) केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक
(C) केवल तकनीकी और औद्योगिक
(D) सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय

79. एक 'संहत' राज्य आकृति को लाभदायक माना जाता है क्योंकि:
(A) यह समुद्र तक पहुँच की गारंटी देती है।
(B) यह सामान्यतः आंतरिक संचार और रक्षा को सरल बनाती है।
(C) यह राज्य पर हवाई हमले करना कठिन बनाती है।
(D) यह सुनिश्चित करती है कि जनसंख्या जातीय रूप से समरूप हो।

80. किस प्रकार का प्रदेश एक नोड और उसके प्रभाव के स्थानिक विस्तार द्वारा परिभाषित किया जाता है?
(A) कार्यात्मक प्रदेश
(B) औपचारिक प्रदेश
(C) समरूप प्रदेश
(D) भौतिक प्रदेश

81. सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ उनके विशिष्ट संबंध के आधार पर निम्नलिखित सीमाओं के प्रकारों को सबसे पहले स्थापित होने से लेकर नवीनतम तक व्यवस्थित करें:
I. अध्यारोपित
II. परवर्ती
III. पूर्ववर्ती
IV. अवशेष
(A) III, II, I, IV
(B) I, II, III, IV
(C) III, I, II, IV
(D) II, I, IV, III

82. किसी राज्य के आर्थिक विकास की सफलता राज्य के भौगोलिक तत्वों में से किस श्रेणी के अंतर्गत आती है?
(A) भौतिक
(B) मानवीय
(C) अवस्थितिजन्य
(D) आर्थिक

83. मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत के पीछे मूल विचार यह है कि विश्व शक्ति का भविष्य किसके नियंत्रण में निहित है?
(A) यूरेशिया का विशाल भूभाग
(B) समुद्री व्यापार मार्ग
(C) दुनिया के वित्तीय केंद्र
(D) उन्नत सैन्य तकनीक

84. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 21वीं सदी में हिंद महासागर का अत्यधिक भू-राजनीतिक महत्व है।
कारण (R): दुनिया के व्यापार की एक बड़ी मात्रा ले जाने वाले प्रमुख वैश्विक समुद्री मार्ग हिंद महासागर से होकर गुजरते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

85. निम्नलिखित में से कौन 'कार्यात्मक प्रदेश' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) वह भौगोलिक क्षेत्र जहाँ एक विशिष्ट क्षेत्रीय बोली बोली जाती है।
(B) एक विशिष्ट जलवायु क्षेत्र, जैसे उष्णकटिबंधीय मरुस्थलीय वातावरण।
(C) एक प्रमुख महानगरीय समाचार पत्र का प्राथमिक वितरण क्षेत्र।
(D) एक बड़े संघीय देश के भीतर एक घटक राज्य या प्रांत।

86. मूल हर्टलैंड सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह थी कि इसने किसके बढ़ते महत्व को कम करके आंका?
(A) भूमि आधारित सेनाएं
(B) रेलवे नेटवर्क
(C) कृषि संसाधन
(D) वायु शक्ति और समुद्री शक्ति

87. भारत में दामोदर घाटी निगम जैसी विशिष्ट संस्थाओं का निर्माण किस प्रकार के नियोजन का उदाहरण है?
(A) नदी घाटी पर आधारित प्रादेशिक नियोजन
(B) राष्ट्रीय स्तर का नियोजन
(C) शहरी नियोजन
(D) क्षेत्रीय नियोजन

सीमांकित।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

21. प्रादेशिक नियोजन के संदर्भ में, 'नियोजन प्रदेश' को सर्वोत्तम रूप से इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) अपने समान और समरूप भौतिक लक्षणों द्वारा परिभाषित एक भूमि क्षेत्र।
(B) एक ऐसा क्षेत्र जो आत्मनिर्भर आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है।
(C) विशिष्ट विकास योजनाओं को लागू करने के लिए नामित एक स्थानिक इकाई।
(D) साझा सांस्कृतिक पहचान वाला एक ऐतिहासिक क्षेत्र।

22. राज्य का कौन सा भौगोलिक तत्व अन्य देशों और प्रमुख परिवहन मार्गों के सापेक्ष इसकी स्थिति को संदर्भित करता है?
(A) आकार
(B) अवस्थिति
(C) आकृति
(D) स्थलाकृति

23. "जो पूर्वी यूरोप पर शासन करता है वह हर्टलैंड को नियंत्रित करता है" यह सिद्धांत किस सिद्धांत का मुख्य पक्ष है?
(A) रिमलैंड सिद्धांत
(B) समुद्री शक्ति सिद्धांत
(C) विश्व व्यवस्था सिद्धांत
(D) हर्टलैंड सिद्धांत

24. सांस्कृतिक परिदृश्य स्थापित होने के बाद किसी क्षेत्र में खींची गई सीमा, जो अक्सर पहले से मौजूद सामाजिक और जातीय विभाजनों की अनदेखी करती है, कहलाती है:
(A) अध्यारोपित सीमा
(B) पूर्ववर्ती सीमा
(C) अवशेष सीमा
(D) प्राकृतिक सीमा

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): भारत जैसे संघीय देशों में अंतर-राज्यीय जल विवाद राजनीतिक तनाव का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
कारण (R): नदियाँ प्राकृतिक तंत्र होने के नाते, कृत्रिम रूप से बनाई गई राज्य सीमाओं के अनुरूप नहीं होती हैं, जिससे उनके पानी पर प्रतिस्पर्धी दावे होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. निम्नलिखित में से कौन सतत विकास का प्राथमिक स्तंभ नहीं है?
(A) राष्ट्रीय संप्रभुता
(B) आर्थिक व्यवहार्यता
(C) सामाजिक समता
(D) पर्यावरण संरक्षण

27. राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) एक सटीक, कानूनी रूप से सीमांकित रेखा
(B) उच्च जनसंख्या घनत्व वाला क्षेत्र
(C) राज्य को मजबूत करने वाली एक अभिकेंद्री शक्ति
(D) एक बहिर्मुखी, गतिशील संक्रमण क्षेत्र

28. भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से, हिंद महासागर का महत्व निम्नलिखित में से किससे सबसे कम संबंधित है?
(A) वैश्विक व्यापार के लिए इसके प्रमुख समुद्री संचार मार्ग।
(B) वैश्विक जलवायु को प्रभावित करने वाली इसकी ध्रुवीय बर्फ की टोपी।
(C) हाइड्रोकार्बन संसाधनों के इसके विशाल भंडार।
(D) एक प्रमुख मत्स्य ग्रहण क्षेत्र के रूप में इसकी भूमिका।

29. भारत में प्रादेशिक नियोजन का अंतिम उद्देश्य मुख्य रूप से क्या है?
(A) संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना और असमानताओं को कम करना।
(B) सबसे अमीर राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि करना।
(C) ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में प्रवास को प्रोत्साहित करना।
(D) राज्यों पर केंद्र सरकार के नियंत्रण को मजबूत करना।

30. भारत में प्रादेशिक नियोजन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर consider करें:
I. यह एक बड़े क्षेत्र को छोटे, अधिक प्रबंधनीय क्षेत्रों में विभाजित करने की प्रक्रिया है।
II. विधियाँ गुणात्मक हो सकती हैं, जो ऐतिहासिक या सांस्कृतिक कारकों पर आधारित होती हैं।
III. मात्रात्मक विधियाँ अक्सर सांख्यिकीय डेटा और सूचकांकों का उपयोग करती हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

31. हैल्फोर्ड मैकिन्डर द्वारा अपने हर्टलैंड सिद्धांत में परिभाषित मूल 'धुरी क्षेत्र' काफी हद तक किससे मेल खाता था?
(A) यूरेशियाई महाद्वीप के उत्तरी और मध्य भाग
(B) चीनी और भारतीय उपमहाद्वीपों की तटीय परिधि
(C) उत्तरी अमेरिका के आंतरिक मैदान और पर्वत श्रृंखलाएं
(D) ऑस्ट्रेलिया का पूरा भूभाग और आसपास के द्वीप

Click Here to Buy book on Amazon

32. सीमा की कम लंबाई और आंतरिक संचार की सुगमता के कारण शासन और रक्षा के लिए किस प्रकार की राज्य आकृति को सामान्यतः सबसे कुशल माना जाता है?
(A) विस्तृत
(B) संहत
(C) खंडित
(D) छिद्रित

33. एक केंद्रीय बिंदु या केंद्र के चारों ओर संगठित क्षेत्र, जैसे कि अपने आसपास के उपनगरीय कस्बों वाला एक महानगरीय क्षेत्र, किसका उदाहरण है?
(A) औपचारिक प्रदेश
(B) अवधारणात्मक प्रदेश
(C) कार्यात्मक प्रदेश
(D) समरूप प्रदेश

34. भारत में कृष्णा जल विवाद में राज्यों का कौन सा समूह शामिल है?
(A) महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना
(B) कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, पुडुचेरी
(C) पंजाब, हरियाणा, राजस्थान
(D) गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान

35. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (सीमा का प्रकार)
P. पूर्ववर्ती
Q. परवर्ती
R. अध्यारोपित
S. अवशेष
सूची II: (उदाहरण/विवरण)
1. पुनर्मिलन से पहले उत्तर और दक्षिण वियतनाम के बीच की सीमा।
2. भारत और पाकिस्तान के बीच की सीमा, जो धार्मिक भिन्नताओं को समायोजित करने के लिए खींची गई थी।
3. अफ्रीका में कई औपनिवेशिक सीमाएँ जो जातीय समूहों की उपेक्षा करती हैं।
4. 49वीं समानांतर रेखा के साथ अमेरिका और कनाडा के बीच की सीमा, जो सघन बस्तियों से पहले स्थापित हुई थी।
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

36. निम्नलिखित में से कौन राज्य की शक्ति के आर्थिक तत्व का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) जनसंख्या की जातीय समरूपता
(B) राज्य के क्षेत्र का आकार और आकृति
(C) नागरिकों के बीच राष्ट्रवादी भावना की प्रबलता
(D) प्राकृतिक संसाधनों तक राज्य की पहुँच और नियंत्रण

37. 1987 की 'ब्रंटलैंड रिपोर्ट' विशेष रूप से किस अवधारणा को लोकप्रिय बनाने से जुड़ी है?
(A) प्रादेशिक नियोजन
(B) हर्टलैंड सिद्धांत
(C) कार्यात्मक प्रदेश
(D) सतत विकास

38. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. सीमांत संक्रमण के क्षेत्र हैं, जबकि सीमाएँ तीक्ष्ण, कानूनी रेखाएँ हैं।
II. सीमाएँ अंतर्मुखी होती हैं, जबकि सीमांत बहिर्मुखी होते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सीमांत और सीमा के बीच सही ढंग से अंतर करते हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) न तो I और न ही II
(D) I और II दोनों

39. 'कार्यात्मक प्रदेश' की विशेषता है:
(A) जलवायु या भाषा जैसी एकल विशेषता में एकरूपता।
(B) स्थानों को एक केंद्रीय नोड से जोड़ने वाली स्थानिक अंतःक्रियाओं का एक नेटवर्क।
(C) नियोजन उद्देश्यों के लिए सरकार द्वारा बनाया गया क्षेत्र होना।
(D) औपचारिक सीमाओं के बिना साझा सांस्कृतिक धारणाएं और पहचान।

40. प्रादेशिक नियोजन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किसे विकास का संकेतक माना जाता है?
(A) राजनीतिक दलों की संख्या
(B) देश की तटरेखा की लंबाई
(C) साक्षरता दर
(D) सक्रिय ज्वालामुखियों की संख्या

41. भारत में प्रादेशिक नियोजन से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. योजना आयोग की स्थापना
II. प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत
III. योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन
IV. ब्रंटलैंड रिपोर्ट का प्रकाशन
(A) I, II, IV, III
(B) II, I, III, IV
(C) IV, I, II, III
(D) I, IV, II, III

42. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य का भौतिक तत्व नहीं है?
(A) अवस्थिति
(B) आकार
(C) आकृति
(D) राष्ट्रवाद

NODIA

43. सतलुज-यमुना लिंक नहर किन दो भारतीय राज्यों के बीच जल विवाद में विवाद का एक प्रमुख बिंदु रही है?
(A) पंजाब और हरियाणा
(B) उत्तर प्रदेश और बिहार
(C) कर्नाटक और तमिलनाडु
(D) गुजरात और राजस्थान

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): एकल संकेतक पर आधारित प्रादेशिक परिसीमन अक्सर व्यापक नियोजन के लिए अपर्याप्त होता है।
कारण (R): प्रदेश जटिल इकाइयाँ हैं, और कई संकेतकों का उपयोग करना नियोजन हस्तक्षेपों के लिए अधिक समग्र और सटीक आधार प्रदान करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

45. भू-राजनीतिक सिद्धांतों के अनुसार, भू-राजनीतिक 'विखंडन क्षेत्र' की अवधारणा किस क्षेत्र के साथ सबसे निकटता से जुड़ी है?
(A) हर्टलैंड
(B) रिमलैंड
(C) नई दुनिया
(D) बाहरी अर्धचंद्राकार क्षेत्र

46. प्रादेशिक परिसीमन में, 'प्रवाह विश्लेषण' मुख्य रूप से क्या मापता है?
(A) एक नोड और उसके आसपास के क्षेत्र के बीच वस्तुओं, लोगों या सूचनाओं की आवाजाही।
(B) एक प्रदेश के भीतर भूमि उपयोग की समरूपता।
(C) विभिन्न जिलों में प्रति व्यक्ति आय।
(D) प्रशासनिक सीमाओं का ऐतिहासिक विकास।

47. एक औपचारिक प्रदेश किसके द्वारा परिभाषित किया जाता है?
(A) एक सामान्य या समरूप विशेषता, जैसे कि एक विशिष्ट भाषा या फसल।
(B) एक केंद्रीय शहर से इसका संबंध।
(C) एक सरकारी प्रशासनिक इकाई की सीमाएँ।
(D) यात्रियों और खरीदारों का प्रवाह।

48. "अवशेष सीमा" क्या है?
(A) एक सीमा जो नदी या पर्वत श्रृंखला जैसी भौतिक विशेषता का अनुसरण करती है।
(B) एक मृतप्राय सीमा जो सांस्कृतिक परिदृश्य के भीतर दिखाई देती है।
(C) क्षेत्र में सघन बस्ती बसने से पहले संधि के माध्यम से स्थापित सीमा।
(D) किसी बाहरी शक्ति द्वारा जबरन थोपी गई एक सीमा रेखा।

49. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (भारतीय जल विवाद)
P. SYL नहर मुद्दा
Q. कावेरी विवाद
R. कृष्णा जल विवाद
S. नर्मदा जल विवाद
सूची II: (शामिल प्राथमिक नदी)
1. कृष्णा
2. नर्मदा
3. कावेरी
4. सतलुज-रावी-ब्यास
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

NODIA

50. मैकिन्डर द्वारा पहचाने गए हर्टलैंड की भू-राजनीतिक संवेदनशीलता एक एकल, शक्तिशाली बल द्वारा नियंत्रित होने की इसकी क्षमता से उत्पन्न हुई थी:
(A) समुद्री शक्ति
(B) वायु शक्ति
(C) आर्थिक गुट
(D) स्थलीय शक्ति

51. भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से, किसी राज्य की अवस्थिति को एक महत्वपूर्ण भौतिक तत्व क्यों माना जाता है?
(A) यह सीधे क्षेत्र की कुल जनसंख्या का आकार निर्धारित करती है।
(B) यह जलवायु को प्रभावित करती है और वैश्विक व्यापार तथा संसाधनों तक पहुँच को नियंत्रित करती है।
(C) यह सरकार के उस विशिष्ट रूप को निर्धारित करती है जिसे राज्य को अपनाना चाहिए।
(D) यह वहाँ रहने वाले लोगों की मुख्य राष्ट्रीय पहचान को परिभाषित करती है।

52. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य के मानवीय तत्व का एक उदाहरण है जो एक अभिकेंद्री शक्ति के रूप में कार्य करता है?
(A) जातीय अलगाववाद
(B) कई प्रतिस्पर्धी भाषाएँ
(C) राष्ट्रवाद की प्रबल भावना
(D) क्षेत्रीय आर्थिक असमानताएँ

53. सतत विकास का लक्ष्य किस समूह की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना है?
(A) पड़ोसी देश
(B) जनसंख्या का सबसे धनी पाँचवाँ हिस्सा

होता है, डेवलपर्स आवासीय और वाणिज्यिक परियोजनाओं के लिए कृषि भूमि को खरीदना चाहते हैं। इससे खेती योग्य जमीन कम हो जाती है और पारंपरिक ग्रामीण जीवन शैली पर शहरी संस्कृति का दबाव बढ़ जाता है। किसानों के लिए यह अक्सर आजीविका के संकट और भूमि के बढ़ते मूल्यों के बीच एक कठिन चुनाव होता है। यह संघर्ष अनियोजित शहरीकरण और खाद्य सुरक्षा की चिन्ताओं को भी जन्म देता है, जो नियोजन के लिए चुनौती है।

297. (A) सिरिलिक लिपि और पूर्वी रूढ़िवादी ईसाई धर्म का ऐतिहासिक प्रभाव।
स्लाव सांस्कृतिक मंडल मुख्य रूप से पूर्वी यूरोप और रूस के क्षेत्रों को समाहित करता है। इसकी पहचान सिरिलिक लिपि के उपयोग और पूर्वी रूढ़िवादी ईसाई धर्म की गहरी परंपराओं से जुड़ी हुई है, जिसने यहाँ की कला, साहित्य और सामाजिक रीति-रिवाजों को आकार दिया है। यद्यपि इस मंडल में कुछ भाषाई और धार्मिक विविधता भी है, लेकिन स्लाविक भाषाओं और साझा ऐतिहासिक अनुभवों का सूत्र इसे एक सुसंगत सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है। यह मंडल पश्चिमी यूरोपीय या इस्लामी मंडलों से अपनी धार्मिक प्रथाओं और भाषाई मूल के कारण स्पष्ट रूप से भिन्न और विशिष्ट माना जाता है।

298. (C) 35 वर्ष
जनसंख्या के 'दोगुना होने का समय' ज्ञात करने के लिए '70 के नियम' का उपयोग किया जाता है। इस नियम के अनुसार, 70 की संख्या को वार्षिक प्रतिशत वृद्धि दर से विभाजित किया जाता है। इस प्रश्न में वृद्धि दर 2 प्रतिशत है, इसलिए 70 को 2 से विभाजित करने पर 35 प्राप्त होता है। इसका अर्थ है कि यदि वृद्धि दर 2 प्रतिशत पर स्थिर रहती है, तो उस क्षेत्र की जनसंख्या 35 वर्षों में वर्तमान की तुलना में दो गुनी हो जाएगी। यह सरल गणितीय अनुमान भविष्य के संसाधन नियोजन और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

299. (B) शहरी प्रणाली और अधिवास पदानुक्रम
प्रमुख शहर की अवधारणा, कोटि-आकार नियम और केंद्रीय स्थान सिद्धांत तीनों शहरी भूगोल के वे स्तंभ हैं जो यह समझाते हैं कि बस्तियाँ अंतरिक्ष में कैसे व्यवस्थित और श्रेणीबद्ध होती हैं। ये सिद्धांत बताते हैं कि क्यों कुछ शहर बहुत बड़े होते हैं, उनके बीच कितनी दूरी होती है और वे अपने आसपास के क्षेत्र को क्या सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये केवल व्यक्तिगत शहरों का अध्ययन नहीं हैं, बल्कि यह पूरे देश की बस्तियों के बीच के कार्यात्मक और सांख्यिकीय संबंधों का विश्लेषण करते हैं, जो क्षेत्रीय नियोजन और संतुलित शहरी विकास के लिए अनिवार्य हैं।

300. (C) ध्रुवीकरण
शहरी पारिस्थितिकी की मान्य प्रक्रियाओं में संकेंद्रण, आक्रमण, उत्तराधिकार, पृथक्करण और विकेंद्रीकरण शामिल हैं, जो शहर के भौतिक और सामाजिक स्वरूप को आकार देते हैं। 'ध्रुवीकरण' आमतौर पर राजनीतिक या सामाजिक मतभेदों के संदर्भ में उपयोग किया जाने वाला शब्द है, लेकिन इसे शिकागो स्कूल के पारंपरिक शहरी पारिस्थितिक मॉडल में एक मूलभूत स्थानिक प्रक्रिया के रूप में मान्यता नहीं दी गई है। आक्रमण और उत्तराधिकार जैसी प्रक्रियाएँ गतिशील बदलावों को दर्शाती हैं, जबकि ध्रुवीकरण अक्सर इन प्रक्रियाओं के परिणामों को इंगित करता है, न कि स्वयं एक प्राथमिक शहरी निर्माण प्रक्रिया को।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

65. किस सिद्धांत का मुख्य सूत्र है: "जो रिमलैंड को नियंत्रित करता है वह यूरेशिया पर शासन करता है; जो यूरेशिया पर शासन करता है वह विश्व के भाग्य को नियंत्रित करता है"?
(A) हर्टलैंड सिद्धांत
(B) रिमलैंड सिद्धांत
(C) समुद्री शक्ति सिद्धांत
(D) जियोपॉलिटिक

66. प्रादेशिक परिसीमन की प्रक्रिया जो प्रदेशों को वर्गीकृत करने के लिए कई चरों को एक एकल स्कोर में जोड़ती है, किस रूप में जानी जाती है?
(A) प्रवाह विश्लेषण विधि
(B) भारित सूचकांक विधि
(C) गुरुत्वाकर्षण विधि
(D) कोरोप्लेथ विधि

67. 'औपचारिक प्रदेश' को क्या परिभाषित करता है?
(A) एक समान या समरूप विशेषता
(B) पहचान की एक साझा भावना
(C) एक केंद्रीय नोड से संबंध
(D) एक प्रशासनिक सीमा

68. निम्नलिखित में से कौन मानव विकास सूचकांक का एक प्रमुख घटक है?
(A) राजनीतिक स्वतंत्रता
(B) पर्यावरणीय गुणवत्ता
(C) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
(D) लैंगिक समानता

69. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (अवधारणा)
P. सतत विकास
Q. नियोजन प्रदेश
R. सीमांत
S. हर्टलैंड
सूची II: (संबद्ध विचार)
1. राज्य क्षेत्रों के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र।
2. भविष्य से समझौता किए बिना वर्तमान जरूरतों को पूरा करना।
3. यूरेशियाई 'धुरी क्षेत्र'।
4. विकास रणनीति को लागू करने के लिए एक स्थानिक इकाई।
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

70. हिंद महासागर में प्रभाव के लिए भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, विशेष रूप से भारत के आसपास चीन द्वारा समुद्री सुविधाओं के विकास को अक्सर कहा जाता है:
(A) ग्रेट गेम
(B) डोमिनो सिद्धांत
(C) मुनरो सिद्धांत
(D) स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स रणनीति

71. विभिन्न जातीय या भाषाई समूहों को अलग करने के लिए खींची गई सीमा रेखा को सर्वोत्तम रूप से इस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है:
(A) पूर्ववर्ती सीमा
(B) परवर्ती सीमा
(C) अवशेष सीमा
(D) ज्यामितीय सीमा

NODIA

72. प्रादेशिक नियोजन का प्राथमिक ध्यान किस समस्या का समाधान करना है?
(A) क्षेत्रीय असंतुलन और असमानताएँ
(B) अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष
(C) राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे
(D) वैश्विक जलवायु परिवर्तन

73. एक स्थल-रुद्ध राज्य मुख्य रूप से किसकी कमी के कारण महत्वपूर्ण नुकसान में होता है?
(A) पहाड़ी क्षेत्र
(B) हवाई यात्रा मार्ग
(C) समुद्र के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
(D) ताजे पानी के संसाधन

74. सीमांत और सीमाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. सीमांत एक क्षेत्र है, जबकि सीमा एक रेखा है।
II. सीमांत अपकेंद्री होते हैं, जबकि सीमाएँ अभिकेंद्री होती हैं।
III. सीमांत और सीमा दोनों अंतरराष्ट्रीय मान्यता के साथ कानूनी रूप से परिभाषित हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

75. भू-राजनीति के रिमलैंड सिद्धांत को प्रस्तावित करने का श्रेय किसे दिया जाता है?
(A) निकोलस स्पाइकमैन
(B) हैल्फोर्ड मैकिन्डर
(C) फ्रेडरिक रेटजेल
(D) अल्फ्रेड थेयर महन

76. वंशधारा जल विवाद मुख्य रूप से किन राज्यों के बीच एक अंतर-राज्यीय मुद्दा है?
(A) केरल और तमिलनाडु
(B) ओडिशा और आंध्र प्रदेश

(C) बहुराष्ट्रीय निगम
(D) भावी पीढ़ियां

54. भू-राजनीतिक सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. हर्टलैंड सिद्धांत निकोलस स्पाइकमैन द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
II. रिमलैंड सिद्धांत तटीय क्षेत्रों के रणनीतिक महत्व पर जोर देता है।
III. हर्टलैंड को समुद्री शक्ति के हमलों के प्रति सुरक्षित माना जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II
(B) केवल I और II
(C) केवल I और III
(D) केवल II और III

55. प्रादेशिक परिसीमन के लिए मानव विकास सूचकांक जैसे संयुक्त सूचकांकों का उपयोग किस विधि के अंतर्गत आता है?
(A) प्रवाह विश्लेषण
(B) मात्रात्मक या सांख्यिकीय विधियाँ
(C) गुरुत्वाकर्षण विश्लेषण
(D) गुणात्मक या अनुभवजन्य विधियाँ

56. हिंद महासागर क्षेत्र से किस वस्तु के वैश्विक परिवहन के लिए 'हॉर्मुज जलडमरूमध्य' एक महत्वपूर्ण चोकपॉइंट है?
(A) अनाज
(B) इलेक्ट्रॉनिक्स
(C) तेल और गैस
(D) लौह अयस्क

57. नियोजन प्रदेश के संदर्भ में कौन सा कथन सही है?
(A) एक एकल, समान और समरूप भौतिक विशेषता द्वारा परिभाषित क्षेत्र।
(B) एक ऐसा प्रदेश जिसने ऐतिहासिक रूप से एक एकीकृत राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य किया है।
(C) एक प्रमुख महानगरीय केंद्र के आसपास का स्थानिक प्रभाव क्षेत्र।
(D) विकास योजनाएं तैयार करने और लागू करने के लिए नामित एक स्थानिक इकाई।

58. निम्नलिखित में से कौन भारत में प्रादेशिक नियोजन का उद्देश्य नहीं है?
(A) पूरे देश में एक एकल, समान संस्कृति को थोपना।
(B) अंतर-क्षेत्रीय और अंतः-क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना।
(C) संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित करना।
(D) पिछड़े क्षेत्रों में आर्थिक विकास की दर को तेज करना।

59. प्रादेशिक नियोजन की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. योजना का कार्यान्वयन
II. नियोजन प्रदेश का परिसीमन
III. लक्ष्यों और उद्देश्यों का निर्धारण
IV. योजना के प्रभाव का मूल्यांकन और निगरानी
(A) I, II, III, IV
(B) II, III, I, IV
(C) III, I, II, IV
(D) II, I, IV, III

60. सीमाओं के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) वे रेखीय और द्वि-आयामी होती हैं।
(B) वे हमेशा प्राकृतिक भौतिक विशेषताओं पर आधारित होती हैं।
(C) वे राजनीतिक संप्रभुता को पृथक करने का काम करती हैं।
(D) वे कानूनी-राजनीतिक परिघटनाएँ हैं।

61. यह अवधारणा कि एक राज्य एक जीवित जीव की तरह व्यवहार करता है, जिसे जीवित रहने के लिए विस्तार करने की आवश्यकता होती है, कहलाती है:
(A) जैविक राज्य सिद्धांत
(B) हर्टलैंड सिद्धांत
(C) रिमलैंड सिद्धांत
(D) निर्भरता सिद्धांत

62. नर्मदा जल विवाद में मुख्य रूप से कौन से राज्य शामिल हैं?
(A) कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र
(B) तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक
(C) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
(D) गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान

63. राज्य के 'आर्थिक तत्व' से तात्पर्य है:
(A) उत्पादन, व्यापार और संसाधन जुटाने की इसकी क्षमता।
(B) राजनीतिक विचारधारा और शासन प्रणाली।
(C) जनसंख्या की जनसांख्यिकीय संरचना और जातीय संरचना।
(D) भौतिक आकार, आकृति और भौगोलिक स्थिति।

64. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): इंडोनेशिया या फिलीपींस जैसे खंडित राज्य को प्रशासन और राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
कारण (R): जल या किसी अन्य राज्य द्वारा क्षेत्र का भौतिक पृथक्करण संचार, परिवहन और केंद्रीय सत्ता के प्रसार में बाधा डाल सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

88. चिली या वियतनाम जैसे लंबे, संकीर्ण क्षेत्र वाले राज्य की आकृति किस प्रकार की होती है?
(A) संहत
(B) विस्तारित
(C) खंडित
(D) छिद्रित

89. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (राज्य के भौगोलिक तत्व)
P. भौतिक तत्व
Q. मानवीय तत्व
R. आर्थिक तत्व
S. अवस्थितिजन्य तत्व
सूची II: (उदाहरण)
1. राष्ट्रीय पहचान की प्रबल भावना।
2. एक स्थल-रुद्ध देश होना।
3. एक संहत क्षेत्रीय आकृति।
4. एक अत्यधिक विकसित औद्योगिक क्षेत्र होना।
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

90. निम्नलिखित में से कौन 'सीमांत' की विशेषता नहीं है?
(A) यह एक जोन या क्षेत्र है।
(B) यह अलगाव का एक स्रोत है।
(C) यह संभावित विस्तार के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।
(D) यह एक सटीक, कानूनी रूप से परिभाषित रेखा है।

91. रावी और ब्यास जल विवाद में मुख्य रूप से कौन से राज्य शामिल हैं?
(A) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
(B) कर्नाटक और तमिलनाडु
(C) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
(D) महाराष्ट्र और गुजरात

92. सतत विकास के लिए किन तीन मुख्य आयामों के एकीकरण की आवश्यकता होती है?
(A) राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक
(B) स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक
(C) आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय
(D) औद्योगिक, कृषि और तकनीकी

93. नियोजन के संदर्भ में प्रादेशिक परिसीमन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) प्रशासनिक सुगमता के लिए राज्य सरकारों की संख्या बढ़ाना।
(B) क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान के आधार पर अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को फिर से तैयार करना।
(C) एक विशिष्ट क्षेत्रीय क्षेत्र के ऐतिहासिक भूगोल का दस्तावेजीकरण करना।
(D) लक्षित विकास रणनीतियों के लिए सुसंगत क्षेत्रों की पहचान करना।

94. विकास के संकेतकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद एक विशुद्ध रूप से आर्थिक संकेतक है।
II. मानव विकास सूचकांक एक संयुक्त संकेतक है।
III. सतत विकास संकेतकों में पर्यावरणीय पहलू भी शामिल हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

95. रिमलैंड का सबसे अच्छा वर्णन इस प्रकार है:
(A) यूरेशिया का स्थल-रुद्ध आंतरिक भाग
(B) यूरेशिया की तटीय परिधि
(C) उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप
(D) आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्र

96. अवशेष सीमा का एक उदाहरण है:
(A) पूर्व पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की सीमा, जो कुछ शहरी प्रतिरूपों में दिखाई देती है।
(B) अमेरिका और कनाडा के बीच की सीमा।
(C) उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच की सीमा।
(D) साइप्रस को विभाजित करने वाली सीमा।

97. राज्य के 'मानवीय तत्व' में कौन से कारक शामिल हैं?
(A) खनिज संपदा और मिट्टी की गुणवत्ता
(B) तटरेखा की लंबाई और जलवायु
(C) जनसंख्या का आकार, कौशल और राष्ट्रीय सुसंगति
(D) समुद्री मार्गों और व्यापार मार्गों तक पहुँच

98. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजनीतिक भूगोल में कारण-प्रभाव संबंध का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) एक राज्य की संहत क्षेत्रीय आकृति जातीय विविधता की गारंटी देती है।
(B) एक अध्यारोपित सीमा क्षेत्र के भीतर स्थायी सांस्कृतिक सद्भाव स्थापित करती है।
(C) एक देश का विशाल भौगोलिक आकार यह सुनिश्चित करता है कि वह एक वैश्विक शक्ति बने।
(D) एक स्थल-रुद्ध स्थिति परिवहन लागत बढ़ाती है और आर्थिक विकास में बाधा डालती है।

99. निम्नलिखित भारतीय नियोजन निकायों या अवधारणाओं को उनकी शुरुआत के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. नीति आयोग
II. सामुदायिक विकास कार्यक्रम

NODIA

स्थिति।
(B) वैश्विक ऊर्जा परिवहन में इसकी भूमिका।
(C) प्रमुख समुद्री चोकपॉइंट्स की उपस्थिति।
(D) इसके अप्रयुक्त ताजे पानी के भंडार।

148. कृष्णा-गोदावरी बेसिन किस आर्थिक तत्व के लिए महत्वपूर्ण है?
(A) प्राकृतिक गैस के भंडार
(B) हीरे की खदानें
(C) सौर ऊर्जा संयंत्र
(D) यूरेनियम संवर्धन

149. हर्टलैंड और रिमलैंड सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. मैकिन्डर ने स्थलीय शक्ति पर बल दिया।
II. स्पाइकमैन ने तटीय किनारे पर बल दिया।
III. दोनों सिद्धांत एक ही भौगोलिक क्षेत्र को विश्व शक्ति की कुंजी मानते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

150. इनमें से कौन सा राज्य के 'भौतिक तत्व' का सबसे अच्छा वर्णन है?
(A) जनसंख्या की साक्षरता दर।
(B) राष्ट्रीय विचारधारा।
(C) देश की जलवायु और प्राकृतिक संसाधन।
(D) अर्थव्यवस्था की संरचना।

151. भारत में एक औपचारिक अभ्यास के रूप में प्रादेशिक नियोजन मुख्य रूप से किसके साथ शुरू हुआ?
(A) 1991 के आर्थिक सुधार।
(B) मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार।
(C) नीति आयोग का गठन।
(D) पंचवर्षीय योजनाएँ।

152. एक शहर और उसके आसपास के उपनगर जो आवाजाही से जुड़े हुए हैं, क्या बनाते हैं?
(A) कार्यात्मक प्रदेश
(B) समरूप प्रदेश
(C) औपचारिक प्रदेश
(D) प्राकृतिक प्रदेश

153. महानदी जल विवाद में कौन से दो प्राथमिक राज्य शामिल हैं?
(A) बिहार और झारखंड
(B) ओडिशा और छत्तीसगढ़
(C) पश्चिम बंगाल और ओडिशा
(D) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना

154. रिमलैंड के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह एक स्थल-रुद्ध क्षेत्र है।
(B) इसमें महाद्वीपीय जलवायु है।
(C) इसकी जलवायु समुद्री है और समुद्र द्वारा सुगम्य है।
(D) यह विरल आबादी वाला है।

155. प्रादेशिक परिसीमन के लिए भारित सूचकांक विधि क्या है?
(A) गुणात्मक तकनीक
(B) ऐतिहासिक विधि
(C) प्रशासनिक अभ्यास
(D) मात्रात्मक तकनीक

156. राज्य का कौन सा तत्व जनसंख्या की विशेषताओं, जैसे वितरण, कौशल और जातीय संरचना से संबंधित है?
(A) मानवीय तत्व
(B) भौतिक तत्व
(C) आर्थिक तत्व
(D) भू-राजनीतिक तत्व

157. "हमारा साझा भविष्य" रिपोर्ट, जिसने सतत विकास को परिभाषित किया, किसके द्वारा प्रकाशित की गई थी?
(A) IPCC
(B) पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग
(C) UNESCO
(D) WTO

158. जमीनी हकीकत की अनदेखी कर मानचित्र पर खींची गई सीमा रेखा किसका उदाहरण है?
(A) पूर्ववर्ती
(B) परवर्ती
(C) अध्यारोपित
(D) अवशेष

159. निम्नलिखित को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. सतत विकास (ब्रंटलैंड रिपोर्ट)
II. मानव विकास सूचकांक
III. रिमलैंड सिद्धांत
IV. हर्टलैंड सिद्धांत
(A) IV, III, I, II
(B) III, IV, II, I
(C) IV, I, III, II
(D) I, II, III, IV

160. एक नियोजन प्रदेश और एक प्रशासनिक प्रदेश के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) नियोजन प्रदेश हमेशा प्रशासनिक प्रदेश से छोटा होता है।
(B) नियोजन सीमाएँ लचीली होती हैं, जबकि प्रशासनिक सीमाएँ कठोर।
(C) नियोजन प्रदेश केवल शहरी क्षेत्रों को कवर करते हैं।
(D) नियोजन प्रदेश इतिहास पर आधारित होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) रियो पृथ्वी सम्मेलन एजेंडा 21
(D) पेरिस समझौता

112. एक शहर से दैनिक समाचार पत्र के वितरण के आधार पर परिसीमित प्रदेश किसका उदाहरण है?
(A) कार्यात्मक प्रदेश
(B) भौतिक प्रदेश
(C) औपचारिक प्रदेश
(D) ऐतिहासिक प्रदेश

113. राज्य के 'भौतिक तत्व' मुख्य रूप से किससे संबंधित हैं?
(A) जनसंख्या और संस्कृति
(B) अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढांचा
(C) क्षेत्र और अवस्थिति
(D) सरकार और विचारधारा

114. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (राज्य की आकृति)
P. संहत
Q. विस्तारित
R. खंडित
S. छिद्रित
सूची II: (विशेषता/उदाहरण)
1. एक राज्य जो पूरी तरह से दूसरे को घेरता है।
2. एक राज्य जिसका क्षेत्र कई अलग-अलग हिस्सों से बना है।
3. एक लंबा और संकीर्ण राज्य।
4. एक राज्य जहाँ केंद्र से किसी भी सीमा तक की दूरी में अधिक अंतर नहीं होता।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

115. निम्नलिखित में से किसे राज्य की शक्ति और स्थिरता को प्रभावित करने वाला 'मानवीय तत्व' माना जाता है?
(A) राज्य की स्थलाकृति
(B) राष्ट्रीय एकता और साझा पहचान का स्तर
(C) तकनीकी विकास का स्तर
(D) राज्य की निरपेक्ष अवस्थिति

116. हिंद महासागर के भू-राजनीतिक महत्व का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) सुखद जलवायु परिस्थितियाँ
(B) प्रवाल भित्तियों में समृद्ध जैव विविधता
(C) क्षेत्रीय विवादों की अनुपस्थिति
(D) प्रमुख वैश्विक समुद्री मार्गों के केंद्र के रूप में इसकी भूमिका

117. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के बीच की सीमा का एक बड़ा हिस्सा 49वीं समानांतर रेखा के साथ एक सीधी रेखा है। यह किस प्रकार की सीमा है?
(A) ज्यामितीय सीमा
(B) अवशेष सीमा
(C) प्राकृतिक सीमा
(D) परवर्ती सीमा

118. प्रादेशिक नियोजन में, 'औपचारिक प्रदेश' और 'कार्यात्मक प्रदेश' के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) औपचारिक प्रदेश प्राकृतिक होते हैं, जबकि कार्यात्मक प्रदेश मानव निर्मित।
(B) औपचारिक प्रदेश एकरूपता प्रदर्शित करते हैं, जबकि कार्यात्मक प्रदेश अंतःक्रिया पर केंद्रित होते हैं।
(C) औपचारिक प्रदेश कार्यात्मक प्रदेशों की तुलना में बड़े क्षेत्रों को कवर करते हैं।
(D) औपचारिक प्रदेश नियोजन की सुविधा देते हैं, जबकि कार्यात्मक प्रदेश प्रशासन में सहायता करते हैं।

119. भारत में प्रादेशिक नियोजन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. योजना आयोग कई दशकों तक प्रादेशिक नियोजन का मुख्य निकाय था।
II. नीति आयोग एक 'थिंक टैंक' के रूप में कार्य करता है।
III. मुख्य उद्देश्य संतुलित विकास को बढ़ावा देना रहा है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

NODIA

120. स्पाइकमैन की रिमलैंड की अवधारणा मैकिन्डर के किस क्षेत्र के अनुरूप है?
(A) धुरी क्षेत्र
(B) विश्व-द्वीप
(C) बाहरी या द्वीपीय अर्धचंद्राकार क्षेत्र
(D) आंतरिक या सीमांत अर्धचंद्राकार क्षेत्र

121. निम्नलिखित भू-राजनीतिक विचारकों को उनके सिद्धांतों के प्रतिपादन के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. निकोलस स्पाइकमैन
II. फ्रेडरिक रेटजेल
III. अल्फ्रेड थेयर महन
IV. हैल्फोर्ड मैकिन्डर
(A) II, III, IV, I
(B) III, II, I, IV
(C) I, IV, III, II
(D) II, IV, III, I

175. किस राज्य की आकृति में राष्ट्रीय एकता की समस्या होने की सर्वाधिक संभावना है?
(A) संहत
(B) खंडित
(C) विस्तारित
(D) छिद्रित

176. सतत विकास का मूल सिद्धांत क्या है?
(A) तीव्र औद्योगीकरण
(B) आर्थिक संरक्षणवाद
(C) अंतर-पीढ़ीगत समता
(D) संसाधनों का राष्ट्रीयकरण

177. भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ किसका रूप थीं?
(A) अहस्तक्षेप आर्थिक नीति
(B) संकेतात्मक नियोजन
(C) राज्य स्तर का स्वायत्त नियोजन
(D) केंद्रीकृत नियोजन

178. कृष्णा नदी जल विवाद में कौन सा राज्य शामिल नहीं है?
(A) तमिलनाडु
(B) महाराष्ट्र
(C) कर्नाटक
(D) आंध्र प्रदेश

179. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (शब्द)
P. सीमा
Q. सीमांत
R. औपचारिक प्रदेश
S. कार्यात्मक प्रदेश
सूची II: (परिभाषा)
1. एक नोड के चारों ओर व्यवस्थित स्थानिक अंतःक्रिया।
2. एक या अधिक विशेषताओं में एकरूपता।
3. राज्यों के बीच अलगाव का क्षेत्र।
4. राज्यों के बीच अलगाव की रेखा।
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

180. वह कौन सी मूलभूत समस्या है जिसे प्रादेशिक नियोजन हल करने का प्रयास करता है?
(A) राष्ट्रीय संप्रभुता का ह्रास।
(B) अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का उदय।
(C) सांस्कृतिक वैश्वीकरण।
(D) विकास का असमान स्थानिक वितरण।

181. स्पाइकमैन के अनुसार, 'विश्व द्वीप' को नियंत्रित करने की कुंजी क्या थी?
(A) नई दुनिया
(B) रिमलैंड
(C) ध्रुवीय क्षेत्र
(D) महासागर

182. निम्नलिखित में से कौन राज्य के 'मानवीय तत्व' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) तकनीकी क्षमताएं
(B) नदियों की लंबाई
(C) मिट्टी की गुणवत्ता
(D) क्षेत्र का आकार

183. सूखा प्रवण क्षेत्र नियोजन हेतु परिसीमित प्रदेश क्या कहलाता है?
(A) औपचारिक प्रदेश
(B) नियोजन प्रदेश
(C) कार्यात्मक प्रदेश
(D) प्राकृतिक प्रदेश

184. चीन की महान दीवार किसका उदाहरण है?
(A) अध्यारोपित सीमा
(B) पूर्ववर्ती सीमा
(C) अवशेष सीमा
(D) प्राकृतिक सीमा

185. सतत विकास की अवधारणा किसके प्रकाशन के बाद चर्चा में आई?
(A) मैकिन्डर रिपोर्ट
(B) स्पाइकमैन थीसिस
(C) रेटजेल सिद्धांत
(D) ब्रंटलैंड रिपोर्ट

186. सतलुज-यमुना लिंक नहर विवाद किनके बीच है?
(A) पंजाब और हरियाणा
(B) उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश
(C) कर्नाटक और गोवा
(D) गुजरात और राजस्थान

187. प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की क्षमता राज्य के किस तत्व का हिस्सा है?
(A) भौतिक
(B) आर्थिक
(C) मानवीय
(D) सांस्कृतिक

188. हिंद महासागर को भू-राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?
(A) यह दुनिया का सबसे बड़ा महासागर है।
(B) इसका नाम भारत के नाम पर है।
(C) यह सघन जनसंख्या वाले देशों से घिरा है और महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग यहाँ से गुजरते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

135. भारत में स्वतंत्रता के बाद सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ तैयार करने वाला संस्थान था:
(A) वित्त आयोग
(B) योजना आयोग
(C) राष्ट्रीय विकास परिषद
(D) नीति आयोग

136. निम्नलिखित में से कौन 'अध्यारोपित' सीमा का एक उदाहरण है?
(A) औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा अफ्रीका में खींची गई सीधी रेखा वाली सीमाएँ।
(B) पाइरेनीज़ पर्वत के साथ फ्रांस और स्पेन की सीमा।
(C) उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच की सीमा।
(D) पूर्व बर्लिन की दीवार।

137. मुल्लापेरियार बांध किन दो राज्यों के बीच विवाद का मुद्दा है?
(A) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश
(B) महाराष्ट्र और गुजरात
(C) केरल और तमिलनाडु
(D) ओडिशा और पश्चिम बंगाल

138. मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत में 'विश्व-द्वीप' किन महाद्वीपों को संदर्भित करता है?
(A) उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका
(B) ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका
(C) एशिया और ऑस्ट्रेलिया
(D) यूरेशिया और अफ्रीका

139. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (विकास संकेतक)
P. GDP
Q. HDI
R. PQLI
S. GDI
सूची II: (प्राथमिक फोकस)
1. जीवन प्रत्याशा, शिशु मृत्यु दर और साक्षरता।
2. लैंगिक असमानता के आधार पर समायोजित विकास।
3. उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य।
4. जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और आय का संयुक्त सूचकांक।
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

140. एक 'छिद्रित राज्य' वह है जो:
(A) क्षेत्र के कई अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित है।
(B) दूसरे राज्य के क्षेत्र को पूरी तरह से घेर लेता है।
(C) आकृति में लंबा और संकीर्ण है।
(D) आकृति में छोटा और गोलाकार है।

141. 'सतत विकास' का मूलभूत लक्ष्य क्या है?
(A) अल्पकालिक आर्थिक विकास को अधिकतम करना।
(B) औद्योगिक विकास को पूर्णतः रोकना।
(C) भविष्य के लिए आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आवश्यकताओं को संतुलित करना।
(D) पूर्ण आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।

142. निम्नलिखित में से कौन एक प्रमुख मानवीय तत्व है जो राज्य के भीतर एक अपकेंद्री शक्ति के रूप में कार्य कर सकता है?
(A) एक सामान्य राष्ट्रीय भाषा
(B) एक कुशल परिवहन नेटवर्क
(C) एक साझा ऐतिहासिक विरासत
(D) मजबूत जातीय या धार्मिक अलगाववाद

143. प्रादेशिक नियोजन के संदर्भ में, 'नोडल प्रदेश' किसका दूसरा नाम है?
(A) कार्यात्मक प्रदेश
(B) औपचारिक प्रदेश
(C) समरूप प्रदेश
(D) भौतिक प्रदेश

144. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): नियोजन प्रदेशों का परिसीमन प्रादेशिक नियोजन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण प्रथम चरण है।
कारण (R): एक अनुचित रूप से परिसीमित प्रदेश समस्या क्षेत्र को सही ढंग से नहीं दर्शाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

145. हर्टलैंड सिद्धांत इतिहास को किसके बीच संघर्ष के रूप में देखता है?
(A) लोकतांत्रिक और निरंकुश राज्य
(B) स्थलीय शक्तियाँ और समुद्री शक्तियाँ
(C) कृषि और औद्योगिक समाज
(D) केंद्र और परिधि वाले राष्ट्र

146. विभिन्न जातीय या भाषाई समूहों को अलग करने के लिए खींची गई सीमा रेखा को सर्वोत्तम रूप से इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:
(A) अध्यारोपित
(B) परवर्ती
(C) अवशेष
(D) पूर्ववर्ती

147. हिंद महासागर के भू-राजनीतिक महत्व का श्रेय किसे सबसे कम दिया जाता है?
(A) एशिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच इसकी रणनीतिक

Downloaded from www.pdf.tube

(D) जापानी औद्योगिक मॉडल

204. हॉर्मुज जलडमरुमध्य का रणनीतिक महत्व किसके परिवहन से है?
(A) वित्तीय डेटा
(B) मानव प्रवास
(C) मत्स्य बेड़े
(D) तेल निर्यात

205. राज्य की शक्ति में योगदान देने वाला एक प्रमुख आर्थिक तत्व है:
(A) औद्योगिकीकरण और तकनीकी प्रगति
(B) राष्ट्रगान
(C) सरकार का स्वरूप
(D) जातीय विविधता

206. एक स्थल-रुद्ध राज्य को किस भौतिक तत्व के कारण हानि होती है?
(A) आकृति
(B) अवस्थिति
(C) आकार
(D) जलवायु

207. औपचारिक और कार्यात्मक प्रदेश के बीच मुख्य अंतर है:
(A) शहरी और ग्रामीण।
(B) छोटा और बड़ा।
(C) एकरूपता बनाम अंतःक्रिया।
(D) प्राकृतिक बनाम कृत्रिम।

208. भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक का प्राथमिक ध्यान किस पर है?
(A) आर्थिक उत्पादन।
(B) पर्यावरणीय स्थिरता।
(C) राजनीतिक स्वतंत्रता।
(D) साक्षरता और जीवन प्रत्याशा जैसे सामाजिक कल्याण संकेतक।

209. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): सीमांत एक बहिर्मुखी अवधारणा है, जो संभावित विस्तार का क्षेत्र दर्शाती है।
कारण (R): ऐतिहासिक रूप से, सीमांत राज्य के किनारे पर विरल आबादी वाले क्षेत्र थे।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

210. किस सिद्धांत ने समुद्री शक्ति के प्रभुत्व को स्थल शक्ति के माध्यम से चुनौती दी?
(A) रिमलैंड सिद्धांत
(B) हर्टलैंड सिद्धांत
(C) जैविक राज्य सिद्धांत
(D) विश्व व्यवस्था सिद्धांत

211. 1947 में भारत और पाकिस्तान के बीच खींची गई सीमा किसका उदाहरण है?
(A) परवर्ती
(B) पूर्ववर्ती
(C) अवशेष
(D) अध्यारोपित

212. नीति आयोग के दृष्टिकोण को क्या कहा जाता है?
(A) केंद्रीकृत
(B) अहस्तक्षेपकारी
(C) सहकारी और परामर्शात्मक
(D) सत्तावादी

213. निम्नलिखित में से कौन राज्य का भौगोलिक तत्व नहीं है?
(A) भौतिक
(B) मानवीय
(C) आर्थिक
(D) न्यायिक

214. मुल्लापेरियार बांध विवाद किन दो राज्यों के बीच है?
(A) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश
(B) ओडिशा और छत्तीसगढ़
(C) केरल और तमिलनाडु
(D) पंजाब और राजस्थान

215. प्रभावी शासन और रक्षा किस राज्य आकृति में सबसे सुगम है?
(A) खंडित
(B) संहत
(C) विस्तारित
(D) छिद्रित

216. नियोजन प्रदेश की अवधारणा किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) अंतरराष्ट्रीय सीमा निर्धारण
(B) जनगणना संचालन
(C) भाषा प्रचार
(D) लक्षित विकास नीतियों का कार्यान्वयन

217. सतत विकास का संबंध किससे है?
(A) भावी पीढ़ियां
(B) वैश्विक अभिजात वर्ग
(C) पड़ोसी राज्य
(D) राजनीतिक दल

218. राज्य की शक्ति का प्रमुख मानवीय तत्व है:
(A) तटरेखा की लंबाई
(B) खनिज संपदा

NODIA

161. हिंद महासागर किन क्षेत्रों को जोड़ने वाला प्राथमिक समुद्री मार्ग है?
(A) मध्य पूर्व, पूर्वी एशिया और यूरोप
(B) यूरोप और अमेरिका
(C) अटलांटिक और आर्कटिक
(D) अंटार्कटिका और ऑस्ट्रेलिया

162. बर्लिन की दीवार के अवशेष आज किस प्रकार की सीमा माने जाते हैं?
(A) पूर्ववर्ती
(B) परवर्ती
(C) अवशेष
(D) अध्यारोपित

163. निम्नलिखित में से कौन सा प्रादेशिक नियोजन का प्राथमिक उद्देश्य है?
(A) राष्ट्रीय एकरूपता को बढ़ावा देना
(B) अंतर्राष्ट्रीय प्रवास को बढ़ावा देना
(C) केंद्र सरकार की शक्ति बढ़ाना
(D) क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना

164. "जो विश्व-द्वीप पर शासन करता है वह विश्व पर अधिकार रखता है" किस सिद्धांत का निष्कर्ष है?
(A) रिमलैंड सिद्धांत
(B) समुद्री शक्ति सिद्धांत
(C) हर्टलैंड सिद्धांत
(D) डोमिनो सिद्धांत

165. किसी बड़े शहर के प्रभाव क्षेत्र की पहचान के लिए कौन सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) समरूपता का विश्लेषण
(B) प्रवाह विश्लेषण
(C) एकल चर मानचित्रण
(D) ऐतिहासिक विश्लेषण

166. दक्षिण अफ्रीका, जो लेसोथो को पूरी तरह से घेरता है, किसका उदाहरण है?
(A) विस्तारित राज्य
(B) खंडित राज्य
(C) स्थल-रुद्ध राज्य
(D) छिद्रित राज्य

167. कावेरी नदी जल बंटवारा मुख्य रूप से किन राज्यों के बीच एक मुद्दा है?
(A) कर्नाटक और तमिलनाडु
(B) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
(C) महाराष्ट्र और गुजरात
(D) पंजाब और हरियाणा

168. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को राज्य के 'मानवीय तत्व' माना जाता है?
(A) परिवहन नेटवर्क
(B) तकनीकी स्तर
(C) जलवायु
(D) जनसंख्या का आकार

169. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): सीमाएँ एक अभिकेंद्री शक्ति हैं, जो राज्य को एकजुट करने में मदद करती हैं।
कारण (R): एक स्पष्ट रूप से परिभाषित सीमा क्षेत्रीय अखंडता को पुख्ता करती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

170. मानव विकास सूचकांक में कौन सा संकेतक शामिल नहीं है?
(A) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
(B) स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष
(C) प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय
(D) प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन

171. मैकिन्डर के 'धुरी क्षेत्र' की विशेषता क्या थी?
(A) समुद्र से इसकी सुगम पहुँच।
(B) आंतरिक जल अपवाह और समुद्री शक्ति से सुरक्षा।
(C) घनी शहरी जनसंख्या।
(D) प्राकृतिक संसाधनों की कमी।

172. एक 'परवर्ती सीमा' वह है जो:
(A) क्षेत्र के बसने से पहले स्थापित की गई हो।
(B) बाहरी शक्ति द्वारा थोपी गई हो।
(C) बसने के बाद सांस्कृतिक मतभेदों को समायोजित करने के लिए खींची गई हो।
(D) अब उपयोग में नहीं है।

173. प्रादेशिक परिसीमन की "प्रवाह विश्लेषण" विधि का उपयोग किसे परिभाषित करने के लिए किया जाता है?
(A) औपचारिक प्रदेश
(B) जलवायु प्रदेश
(C) कृषि प्रदेश
(D) कार्यात्मक प्रदेश

174. 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' की भू-रणनीतिक अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) हिंद महासागर में चीनी नौसैनिक सुविधाओं का नेटवर्क।
(B) प्रशांत महासागर में भारतीय नौसैनिक अड्डे।
(C) अरब सागर के पर्यटक रिसॉर्ट्स।
(D) तेल मार्गों को नियंत्रित करने की अमेरिकी रणनीति।

Click Here to Buy book on Amazon

122. वर्तमान सांस्कृतिक परिदृश्य के विकसित होने से पहले जो सीमा मौजूद थी, उसे कहा जाता है:
(A) पूर्ववर्ती
(B) परवर्ती
(C) अध्यारोपित
(D) अवशेष

123. पोलावरम परियोजना जल विवाद में मुख्य रूप से कौन से राज्य शामिल हैं?
(A) तमिलनाडु और कर्नाटक
(B) पंजाब और हरियाणा
(C) गोवा और कर्नाटक
(D) आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और छत्तीसगढ़

124. राजनीतिक परिदृश्य में 'सीमांत' से 'सीमा' में परिवर्तन क्या दर्शाता है?
(A) अपने क्षेत्र पर राज्य के नियंत्रण में कमी।
(B) कानूनविहीन भूमि में वृद्धि।
(C) औपनिवेशिक विस्तार की शुरुआत।
(D) राज्य की संप्रभुता की सटीक सीमाओं की स्थापना।

125. विकास का एक संकेतक जो लंबी उम्र, ज्ञान और जीवन स्तर में वंचना पर ध्यान केंद्रित करता है:
(A) सकल घरेलू उत्पाद
(B) लिंग अधिकारिता माप
(C) मानव गरीबी सूचकांक
(D) वास्तविक प्रगति सूचक

126. निम्नलिखित में से कौन राज्य की शक्ति के 'आर्थिक तत्व' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) जनसंख्या की जातीय समरूपता
(B) देश की संहत आकृति
(C) राज्य की आधिकारिक भाषा
(D) देश का बुनियादी ढांचा, जैसे बंदरगाह और रेलवे

127. हर्टलैंड सिद्धांत के अनुसार, किस भौगोलिक विशेषता ने 'धुरी क्षेत्र' को समुद्री शक्ति से बचाया?
(A) इसकी विशाल, स्थल-रुद्ध प्रकृति और पर्वत या मरुस्थल की सुरक्षा।
(B) इसकी विस्तृत तटरेखा।
(C) इसकी नौगम्य नदियाँ।
(D) दक्षिणी गोलार्ध में इसकी अवस्थिति।

128. 'समरूपता' द्वारा प्रादेशिक परिसीमन किस प्रकार के प्रदेश के लिए सबसे उपयुक्त है?
(A) नोडल प्रदेश
(B) महानगरीय प्रदेश
(C) औपचारिक प्रदेश
(D) कार्यात्मक प्रदेश

129. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): सतत विकास की अवधारणा केवल पर्यावरणविदों से संबंधित है।
कारण (R): सतत विकास दीर्घकालिक कल्याण के लिए पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को संतुलित करने का प्रयास करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

130. बभली बैराज मुद्दा किन दो राज्यों के बीच जल विवाद है?
(A) कर्नाटक और तमिलनाडु
(B) पंजाब और हरियाणा
(C) केरल और कर्नाटक
(D) महाराष्ट्र और तेलंगाना

131. 'नियोजन प्रदेश' के परिसीमन का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) एक नई सांस्कृतिक पहचान बनाना।
(B) विकास योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त स्थानिक ढांचा तैयार करना।
(C) निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या बढ़ाना।
(D) ऐतिहासिक भूमि उपयोग प्रतिरूप का दस्तावेजीकरण करना।

132. 'सीमांत' के विपरीत 'सीमा' की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) यह संक्रमण का एक विस्तृत क्षेत्र है।
(B) यह बसावट के लिए खुला क्षेत्र है।
(C) यह कानूनी रूप से परिभाषित एक रेखा है।
(D) यह एक बहिर्मुखी अवधारणा है।

133. स्पाइकमैन के अनुसार रिमलैंड एक _____ क्षेत्र है।
(A) शुष्क
(B) आर्कटिक
(C) अल्पाइन
(D) उभयचर

134. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): किसी राज्य के क्षेत्र की आकृति राजनीतिक भूगोल में एक महत्वपूर्ण भौतिक तत्व है।
कारण (R): क्षेत्रीय आकृति शासन, राष्ट्रीय एकता और रक्षा को प्रभावित कर सकती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

(D) यह सैन्य उपस्थिति से मुक्त है।

189. प्रदेशों के प्रकारों के संबंध में कौन सा कथन सही है?
I. औपचारिक प्रदेश में आंतरिक समरूपता होती है।
II. कार्यात्मक प्रदेश नोड या हब से परिभाषित होता है।
III. नियोजन प्रदेश हमेशा प्रशासनिक सीमाओं के समान होता है।
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

190. मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत ने किस पर ध्यान केंद्रित किया?
(A) नौसेना शक्ति
(B) वायु शक्ति
(C) आर्थिक प्रतिबंध
(D) महाद्वीपीय स्थलीय शक्ति

191. सांस्कृतिक या जातीय परिदृश्य की अनदेखी कर खींची गई सीमा क्या कहलाती है?
(A) अध्यारोपित
(B) परवर्ती
(C) अवशेष
(D) पूर्ववर्ती

192. नीति आयोग की प्राथमिक भूमिका क्या है?
(A) वित्तीय संसाधन आवंटन।
(B) रणनीतिक नीति इनपुट प्रदान करने वाला थिंक टैंक।
(C) आदेशात्मक नियोजन।
(D) न्यायिक निकाय।

193. राज्य के भीतर मजबूत क्षेत्रीय पहचान किसका उदाहरण है?
(A) अभिकेंद्री शक्ति
(B) एकीकृत कारक
(C) अपकेंद्री शक्ति
(D) अवस्थितिजन्य लाभ

194. निम्नलिखित में से कौन भारत का प्रमुख अंतर-राज्यीय जल विवाद नहीं है?
(A) कावेरी विवाद
(B) कृष्णा विवाद
(C) नर्मदा विवाद
(D) ब्रह्मपुत्र डायवर्जन विवाद (चीन के साथ)

195. विकास के संकेतकों का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) प्रदेशों में कल्याण और प्रगति के स्तर की माप और तुलना करना।
(B) सैन्य हस्तक्षेप को सही ठहराना।
(C) एकल वैश्विक संस्कृति को बढ़ावा देना।
(D) आदर्श जनसंख्या आकार निर्धारित करना।

196. जापान किस राज्य आकृति का उदाहरण है?
(A) संहत
(B) खंडित
(C) विस्तारित
(D) छिद्रित

197. स्पाइकमैन के रिमलैंड में कौन से क्षेत्र शामिल हैं?
(A) साइबेरियाई टुंड्रा और मध्य एशिया।
(B) अमेज़न और एंडीज।
(C) पश्चिमी यूरोप, मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया।
(D) ऑस्ट्रेलिया और सहारा।

198. आवाजाही के प्रतिरूप पर आधारित प्रदेश परिसीमन क्या कहलाता है?
(A) औपचारिक प्रदेश
(B) ऐतिहासिक प्रदेश
(C) भौतिक प्रदेश
(D) कार्यात्मक प्रदेश

199. राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' को किस रूप में समझा जाता है?
(A) एक सटीक सीमांकित रेखा
(B) संक्रमण और अंतःक्रिया का क्षेत्र
(C) स्थायी विशेषता
(D) अभिकेंद्री शक्ति

200. निम्नलिखित में से कौन विकास का एक संयुक्त संकेतक है?
(A) प्रति व्यक्ति आय
(B) अशोधित जन्म दर
(C) कुल प्रजनन दर
(D) मानव विकास सूचकांक

201. "जो पूर्वी यूरोप पर शासन करता है वह हर्टलैंड को नियंत्रित करता है..." यह कथन किसका है?
(A) हैल्फोर्ड मैकिन्डर
(B) निकोलस स्पाइकमैन
(C) ए.टी. महन
(D) फ्रेडरिक रेटजेल

202. उभरते सांस्कृतिक मतभेदों के अनुसार समायोजित होने वाली सीमा क्या कहलाती है?
(A) पूर्ववर्ती
(B) परवर्ती
(C) अध्यारोपित
(D) अवशेष

203. भारत में दामोदर घाटी निगम किस पर आधारित था?
(A) चीन के कृषि कम्यून
(B) सोवियत संघ का गोसप्लान
(C) अमेरिका में टेनेसी वैली अथॉरिटी

Downloaded from www.pdf.tube

III. योजना आयोग
IV. पंचवर्षीय योजनाएँ
(A) III, IV, II, I
(B) II, III, IV, I
(C) III, II, IV, I
(D) II, IV, III, I

100. भारत में प्रादेशिक नियोजन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह हमेशा विशेष रूप से राज्य स्तर पर प्रबंधित किया गया है।
(B) यह ऐतिहासिक रूप से पंचवर्षीय योजनाओं के ढांचे द्वारा निर्देशित रहा है।
(C) यह नीति आयोग के गठन के साथ शुरू हुआ।
(D) यह केवल औद्योगिक विकास पर ध्यान केंद्रित करता है, कृषि की अनदेखी करता है।

101. पहले से मौजूद सांस्कृतिक विभाजनों, जैसे भाषा या धर्म, के अनुरूप किस प्रकार की सीमा खींची जाती है?
(A) अध्यारोपित सीमा
(B) पूर्ववर्ती सीमा
(C) परवर्ती सीमा
(D) ज्यामितीय सीमा

102. भू-राजनीतिक संदर्भ में, मलक्का जलडमरूमध्य जैसा 'चोक पॉइंट' महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) यह उच्च जैव विविधता वाला क्षेत्र है।
(B) यह आसपास के देशों के लिए ताजे पानी का एक प्रमुख स्रोत है।
(C) यह बार-बार होने वाली ज्वालामुखी गतिविधि का स्थल है।
(D) यह एक संकीर्ण मार्ग है जिसे नियंत्रित किया जा सकता है, जो वैश्विक व्यापार को प्रभावित करता है।

103. गोदावरी जल विवाद में कौन से राज्य शामिल हैं?
(A) महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, ओडिशा और मध्य प्रदेश
(B) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
(C) तमिलनाडु और केरल
(D) पश्चिम बंगाल और बिहार

104. चिली जैसे 'विस्तारित' राज्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण चुनौती क्या है?
(A) क्षेत्र के भीतर आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों की कमी।
(B) संभावित क्षेत्रीय अलगाव और उच्च आंतरिक परिवहन लागत।
(C) शत्रुतापूर्ण पड़ोसी राज्यों द्वारा घेरे जाने का निरंतर खतरा।
(D) स्थायी नौसेना स्थापित करने में कठिनाई।

105. नियोजन प्रदेश की अवधारणा किस उद्देश्य से सबसे निकटता से जुड़ी है?
(A) सभी पहलुओं में राष्ट्रीय एकरूपता प्राप्त करना।
(B) अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देना।
(C) विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक करना।
(D) अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को फिर से तैयार करना।

106. मैकिन्डर के प्रसिद्ध 1904 के शोध पत्र का शीर्षक "इतिहास की भौगोलिक _____" था।
(A) कारक
(B) तत्व
(C) हृदय
(D) धुरी

107. निम्नलिखित में से कौन विकास का संकेतक नहीं है?
(A) एक देश में प्रशासनिक प्रभागों की संख्या
(B) सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता
(C) वयस्क साक्षरता दर
(D) शिशु मृत्यु दर

108. एक क्षेत्र और एक रेखा के बीच का अंतर भूगोल की किस शाखा के लिए मूलभूत है?
(A) आर्थिक भूगोल
(B) जलवायु विज्ञान
(C) राजनीतिक भूगोल
(D) भू-आकृति विज्ञान

109. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): निकोलस स्पाइकमैन के रिमलैंड सिद्धांत को अक्सर मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत के प्रति-सिद्धांत के रूप में देखा जाता है।
कारण (R): स्पाइकमैन ने तर्क दिया कि यूरेशिया के तटीय क्षेत्र, न कि स्थल-रुद्ध आंतरिक भाग, "विश्व द्वीप" को नियंत्रित करने की कुंजी रखते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

110. महादयी जल विवाद मुख्य रूप से किन राज्यों के बीच विवाद का विषय है?
(A) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
(B) केरल और तमिलनाडु
(C) ओडिशा और छत्तीसगढ़
(D) गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र

111. यह विचार कि "सतत विकास वह है जो भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करे" किस रिपोर्ट से आया है?
(A) क्योटो प्रोटोकॉल
(B) ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट

NODIA

(C) जनसंख्या का कौशल और शिक्षा
(D) भौगोलिक अवस्थिति

219. मैकिन्डर का 'आंतरिक अर्धचंद्राकार' स्पाइकमैन के किसके समान है?
(A) रिमलैंड
(B) हर्टलैंड
(C) विश्व द्वीप
(D) बाहरी अर्धचंद्राकार

220. अध्यारोपित सीमा की विशेषता क्या है?
(A) यह भौतिक लक्षण का अनुसरण करती है।
(B) यह बसावट से पूर्व बनी।
(C) यह अब अस्तित्व में नहीं है।
(D) यह सांस्कृतिक परिदृश्य की उपेक्षा कर बाहरी शक्ति द्वारा थोपी गई है।

221. बमली बैराज किस नदी पर स्थित है?
(A) कृष्णा
(B) गोदावरी
(C) कावेरी
(D) नर्मदा

222. हिंद महासागर में भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा मुख्य रूप से किनके बीच है?
(A) ब्राजील और अर्जेंटीना
(B) रूस और कनाडा
(C) भारत, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका
(D) जर्मनी और फ्रांस

223. भाषाई प्रदेश के परिसीमन की श्रेष्ठ विधि है:
(A) प्रवाह विश्लेषण
(B) गुरुत्वाकर्षण मॉडल
(C) भारित सूचकांक
(D) सांस्कृतिक लक्षण की समरूपता का विश्लेषण

224. राज्य के भौगोलिक तत्वों के बारे में कौन सा कथन सही है?
I. आकार और आकृति भौतिक तत्व हैं।
II. जनसंख्या और राष्ट्रीय पहचान मानवीय तत्व हैं।
III. प्राकृतिक संसाधन और औद्योगिक आधार आर्थिक तत्व हैं।
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

225. आधुनिक विश्व में 'सीमांत' से 'सीमा' में बदलाव का क्या अर्थ है?
(A) राष्ट्र-राज्य का पतन।
(B) राज्य की संप्रभुता और क्षेत्रीय नियंत्रण का सुदृढ़ीकरण।
(C) जनसंख्या में कमी।
(D) संघर्षों का अंत।

226. विकास के संकेतक के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की मुख्य आलोचना क्या है?
(A) यह सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण की उपेक्षा करता है।
(B) इसकी गणना कठिन है।
(C) यह प्रगति मापने में सदैव गलत है।
(D) यह केवल औद्योगिक देशों पर लागू होता है।

227. कौन सी राज्य आकृति रक्षा के लिए सर्वाधिक चुनौतियाँ उत्पन्न करती है?
(A) संहत
(B) अंडाकार
(C) खंडित
(D) गोलाकार

228. भारत जैसे देश में प्रादेशिक नियोजन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) महानगरों में विकास केंद्रित करना।
(B) एक समान आर्थिक परिदृश्य बनाना।
(C) आर्थिक विकास रोकना।
(D) विकसित और अविकसित क्षेत्रों के बीच असमानता कम करना।

229. 'हर्टलैंड' मूल रूप से क्या है?
(A) तटीय क्षेत्र
(B) समुद्री शक्ति के लिए दुर्गम महाद्वीपीय क्षेत्र
(C) द्वीप महाद्वीप
(D) ज्वालामुखी क्षेत्र

230. 'जियोपॉलिटिक्स' शब्द और राज्य के जैविक विचार को किसने बढ़ावा दिया?
(A) फ्रेडरिक रेटजेल
(B) हैल्फोर्ड मैकिन्डर
(C) निकोलस स्पाइकमैन
(D) इमैनुएल कांट

231. एक पुरानी किलेबंद रेखा जो अब सीमा नहीं है लेकिन दिखाई देती है, क्या कहलाती है?
(A) अध्यारोपित सीमा
(B) परवर्ती सीमा
(C) अवशेष सीमा
(D) पूर्ववर्ती सीमा

232. नदी घाटी परियोजना के लिए परिभाषित क्षेत्र क्या है?
(A) औपचारिक प्रदेश
(B) कार्यात्मक प्रदेश
(C) नोडल प्रदेश
(D) नियोजन प्रदेश

233. मांडवी नदी जल विवाद में कौन से राज्य शामिल हैं?

Click Here to Buy book on Amazon

(D) औपचारिक प्रदेश

264. विस्तारित राज्य आकृति का मुख्य दोष क्या है?
(A) समुद्र तक पहुँच की कमी
(B) छोटा क्षेत्र
(C) कठिन आंतरिक संचार और एकीकरण
(D) जातीय विविधता की कमी

265. वह सीमा जो परिदृश्य पर अपनी छाप छोड़ती है पर अब आधिकारिक नहीं है:
(A) अध्यारोपित
(B) अवशेष
(C) पूर्ववर्ती
(D) परवर्ती

266. भारत में प्रादेशिक नियोजन का लक्ष्य क्या है?
(A) सीमा विवाद
(B) भाषा प्रचार
(C) विदेश नीति
(D) क्षेत्रीय असंतुलन दूर करना

267. राज्य का आर्थिक तत्व क्या है?
(A) परिवहन और संचार बुनियादी ढांचा
(B) राष्ट्रीय ध्वज
(C) शासन प्रणाली
(D) जातीय संरचना

268. हर्टलैंड का 'धुरी क्षेत्र' किससे सुरक्षित था?
(A) वायु शक्ति
(B) स्थलीय शक्ति
(C) समुद्री शक्ति
(D) आर्थिक प्रतिबंध

269. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): भारत में अंतर-राज्यीय जल विवाद अक्सर जटिल होते हैं।
कारण (R): नदियाँ राज्य की सीमाओं का पालन नहीं करती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

270. राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' और 'सीमा' में मुख्य अंतर क्या है?
(A) सीमांत एक क्षेत्र है।
(B) सीमांत एक रेखा है।
(C) सीमांत कानूनी है।
(D) सीमांत अंतर्मुखी है।

271. मानव विकास सूचकांक किसका संयुक्त आँकड़ा है?
(A) राजनीतिक स्वतंत्रता
(B) औद्योगिक उत्पादन
(C) मृत्यु दर
(D) जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय

272. बाब-एल-मंडेब जलडमरुमध्य किन जल निकायों को जोड़ता है?
(A) लाल सागर और फारस की खाड़ी
(B) लाल सागर और अदन की खाड़ी
(C) बंगाल की खाड़ी और अरब सागर
(D) अदन की खाड़ी और मोजाम्बिक चैनल

273. जनसंख्या का शिक्षा स्तर और राष्ट्रीय पहचान किस तत्व का हिस्सा है?
(A) मानवीय
(B) भौतिक
(C) आर्थिक
(D) क्षेत्रीय

274. 'नियोजन प्रदेश' की अवधारणा क्या है?
(A) ऐतिहासिक मिसाल
(B) प्राकृतिक प्रदेश
(C) समस्या और लक्ष्य उन्मुख
(D) स्थिर और अपरिवर्तनीय

NODIA

275. उत्तर और दक्षिण कोरिया की सीमा किसका उदाहरण है?
(A) सैन्य संघर्ष विराम और राजनीतिक विभाजन
(B) प्राकृतिक लक्षण
(C) सांस्कृतिक विकास
(D) आपसी समझौता

276. मैकिन्डर के अनुसार समुद्री शक्ति का स्थान कौन ले रहा था?
(A) वायु शक्ति
(B) रेलवे आधारित स्थलीय शक्ति
(C) आर्थिक शक्ति
(D) परमाणु शक्ति

277. कुशल कार्यबल राज्य की किस शक्ति का घटक है?
(A) भौतिक
(B) अवस्थितिजन्य
(C) आर्थिक और मानवीय
(D) स्थलाकृतिक

278. वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति भावी पीढ़ियों के हितों से समझौता किए बिना करना क्या कहलाता है?
(A) क्षेत्रवाद
(B) भू-राजनीति
(C) आर्थिक राष्ट्रवाद
(D) सतत विकास

(D) केवल कृषि नियोजन।

248. स्पाइकमैन का सूत्र किसको चुनौती देता है?
(A) रेटजेल की अवधारणा
(B) महन का सिद्धांत
(C) मैकिन्डर का हर्टलैंड सिद्धांत
(D) डोमिनो सिद्धांत

249. प्रादेशिक नियोजन का तार्किक क्रम क्या है?
I. परिणामों का मूल्यांकन
II. योजना तैयार करना
III. समस्या प्रदेश की पहचान
IV. योजना कार्यान्वयन
(A) III, II, IV, I
(B) II, III, I, IV
(C) I, II, III, IV
(D) III, IV, II, I

250. 'सीमांत' का मूल विचार क्या है?
(A) निश्चित संप्रभुता रेखा
(B) विवाद और विकास का क्षेत्र
(C) अभिकेंद्री शक्ति
(D) कानूनी तय इकाई

251. पोलावरम परियोजना किस नदी पर स्थित है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) कावेरी
(D) महानदी

252. राज्य के भौतिक तत्व का उदाहरण है:
(A) राष्ट्रीय मनोबल
(B) तकनीक का स्तर
(C) आकृति और आकार
(D) व्यापारिक संबंध

253. बुनियादी मानवीय जरूरतों पर केंद्रित विकास रणनीति किसके मानकों से मेल खाती है?
(A) हर्टलैंड सिद्धांत
(B) जियोपॉलिटिक
(C) रिमलैंड सिद्धांत
(D) PQLI और मानव विकास सूचकांक

254. मैकिन्डर के मॉडल में 'बाहरी अर्धचंद्राकार' में शामिल थे:
(A) रूसी भूभाग
(B) जर्मनी और फ्रांस
(C) अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन
(D) भारत और चीन

255. भारत में पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम किसका उदाहरण है?
(A) राष्ट्रीय नियोजन
(B) लक्षित क्षेत्र प्रादेशिक नियोजन
(C) क्षेत्रीय नियोजन
(D) शहरी नियोजन

NODIA

256. अक्षांश रेखाओं पर आधारित सीमा क्या कहलाती है?
(A) प्राकृतिक
(B) भौगोलिक
(C) अवशेष
(D) ज्यामितीय

257. राज्य की शक्ति का मानवीय तत्व है:
(A) राष्ट्रीय एकजुटता
(B) मिट्टी की उर्वरता
(C) जलवायु प्रकार
(D) खनिज संसाधन

258. हिंद महासागर के महत्व का कारण क्या नहीं है?
(A) समुद्री मार्ग
(B) हाइड्रोकार्बन संसाधन
(C) ध्रुवीय बर्फ का पिघलना
(D) रणनीतिक अवस्थिति

259. अवधारणात्मक रूप से 'अपना क्षेत्र' माने जाने वाले प्रदेश को क्या कहते हैं?
(A) अवधारणात्मक प्रदेश
(B) औपचारिक प्रदेश
(C) कार्यात्मक प्रदेश
(D) नियोजन प्रदेश

260. अलमट्टी बांध विवाद किस नदी से संबंधित है?
(A) कावेरी
(B) गोदावरी
(C) नर्मदा
(D) कृष्णा

261. सतत विकास के तीन स्तंभ क्या हैं?
(A) औद्योगिक, कृषि, सेवा
(B) आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक
(C) स्थानीय, राष्ट्रीय, वैश्विक
(D) राजनीतिक, सैन्य, सांस्कृतिक

262. रिमलैंड सिद्धांत के अनुसार विश्व शक्ति की कुंजी क्या है?
(A) यूरेशियाई आंतरिक भाग
(B) उत्तरी अमेरिका
(C) यूरेशियाई तटीय भूमि
(D) महासागर

263. साझा जलवायु विशेषता वाला प्रदेश क्या कहलाता है?
(A) कार्यात्मक प्रदेश
(B) नोडल प्रदेश
(C) नियोजन प्रदेश

11. (D) राष्ट्रीय एकीकरण और पहचान का स्तर
राज्य की शक्ति केवल भौतिक भूगोल पर नहीं, बल्कि मानवीय तत्वों पर भी आधारित होती है। राष्ट्रीय एकीकरण और पहचान का स्तर एक महत्वपूर्ण मानवीय तत्व है, जो नागरिकों के मध्य साझा उद्देश्य और एकता उत्पन्न करता है। यह तत्व राज्य के भीतर एक अभिकेंद्री शक्ति के रूप में कार्य करता है, जो विविध समूहों को जोड़ता है। इससे राज्य की आंतरिक स्थिरता और प्रभावशीलता बढ़ती है।

12. (B) पूर्ववर्ती सीमा
पूर्ववर्ती सीमाएं वे राजनीतिक रेखाएं हैं जो किसी क्षेत्र में सघन जनसंख्या और विशिष्ट सांस्कृतिक परिदृश्य के विकसित होने से पूर्व निर्धारित की जाती हैं। ये सीमाएं अक्सर निर्जन क्षेत्रों या प्राकृतिक बाधाओं से गुजरती हैं और बाद में बसने वाली आबादी के सामाजिक ढांचे को प्रभावित करती हैं। अमेरिका और कनाडा के मध्य की अंतर्राष्ट्रीय सीमा इसका प्रमुख उदाहरण है। ऐसी सीमाएं भौतिक अलगाव का आधार हैं।

13. (C) मलक्का जलडमरूमध्य
हिंद महासागर वैश्विक व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा का प्रमुख केंद्र है, जहां कई रणनीतिक संकीर्ण मार्ग स्थित हैं। मलक्का जलडमरूमध्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हिंद महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है। विश्व के तेल और मालवाहक जहाजों का विशाल हिस्सा इसी मार्ग से गुजरता है। इस पर नियंत्रण वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिरता हेतु अनिवार्य है, जो इसे रणनीतिक रूप से संवेदनशील बनाता है।

14. (D) प्रवाह विश्लेषण
प्रवाह विश्लेषण विधि प्रादेशिक परिसीमन की गतिशील तकनीक है जो स्थानों के मध्य सक्रिय संबंधों पर ध्यान केंद्रित करती है। इसमें वस्तुओं के व्यापार, जनसांख्यिकीय आवाजाही और सूचनाओं के आदान-प्रदान के प्रतिरूपों का अध्ययन किया जाता है। यह विधि मुख्य रूप से कार्यात्मक प्रदेशों की सीमाओं के निर्धारण हेतु प्रयुक्त होती है, जहां केंद्रीय नोड और उसके प्रभाव क्षेत्र के मध्य निरंतर संपर्क बना रहता है।

15. (B) केवल I और III
राज्य के भौगोलिक तत्वों के विश्लेषण में भौतिक और आर्थिक घटकों की स्पष्ट भूमिका होती है। भौतिक तत्वों में राज्य का सटीक स्थान, भौगोलिक आकार और प्रादेशिक आकृति सम्मिलित हैं। आर्थिक तत्वों के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और औद्योगिक बुनियादी ढांचा आता है। मानवीय तत्व केवल कुल जनसंख्या तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें जनसंख्या की गुणवत्ता, कौशल, साक्षरता और राष्ट्रीय चरित्र भी सम्मिलित होते हैं।

16. (B) सीमांत अलगाव का एक क्षेत्र है, जबकि सीमा संपर्क की एक रेखा है।
राजनीतिक भूगोल में सीमांत और सीमा के मध्य मौलिक अंतर उनके स्थानिक स्वरूप में है। सीमांत एक विस्तृत और गतिशील क्षेत्र है जो दो राज्यों के मध्य संक्रमणकालीन जोन के रूप में कार्य करता है। इसके विपरीत, सीमा एक सुस्पष्ट और कानूनी रूप से परिभाषित रेखीय इकाई है जो दो संप्रभुताओं के मिलन बिंदु को दर्शाती है। सीमा का विकास आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के क्षेत्रीय नियंत्रण को निश्चित करता है।

17. (B) तमिलनाडु और कर्नाटक
कावेरी नदी जल विवाद भारत के प्राचीन और प्रमुख अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों में से एक है। इस संघर्ष के मुख्य पक्षकार तमिलनाडु और कर्नाटक राज्य हैं, जबकि केरल और पुडुचेरी भी इसमें सम्मिलित हैं। विवाद मुख्य रूप से सिंचाई, पेयजल और विद्युत उत्पादन हेतु जल आवंटन को लेकर है। मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता ने इस मुद्दे को राजनीतिक और सामाजिक रूप से अत्यंत संवेदनशील बना दिया है।

18. (A) यूरेशिया के तटीय किनारे
निकोलस स्पाइकमैन के रिमलैंड सिद्धांत के अनुसार, यूरेशिया के तटीय किनारे या परिधीय क्षेत्र वैश्विक शक्ति की वास्तविक कुंजी हैं। स्पाइकमैन ने तर्क दिया कि ये क्षेत्र समुद्री और स्थलीय दोनों प्रकार की शक्तियों से जुड़ने की क्षमता रखते हैं। उनके प्रसिद्ध सूत्रानुसार, जो रिमलैंड पर शासन करता है वह यूरेशिया पर नियंत्रण रखता है और जो यूरेशिया पर शासन करता है वह विश्व का नियंत्रण करता है।

19. (C) मानव विकास सूचकांक
मानव विकास सूचकांक विकास को मापने का बहुआयामी दृष्टिकोण है। यह स्वास्थ्य हेतु जीवन प्रत्याशा, ज्ञान हेतु साक्षरता और जीवन स्तर हेतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद को एकीकृत करता है। यह सूचकांक केवल आर्थिक वृद्धि के स्थान पर मानव कल्याण और क्षमताओं के विस्तार पर केंद्रित है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा जारी यह डेटा विभिन्न देशों के वास्तविक सामाजिक-आर्थिक विकास की तुलना का सशक्त मानक है।

20. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
भौगोलिक प्रदेशों का वर्गीकरण उनकी विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर किया जाता है। औपचारिक प्रदेश साझा भौतिक या सांस्कृतिक गुणों में एकरूपता दर्शाते हैं। कार्यात्मक प्रदेश केंद्रीय नोड के माध्यम से होने वाली स्थानिक अंतःक्रियाओं द्वारा परिभाषित होते हैं। नियोजन प्रदेश प्रशासनिक रूप से विकास लक्ष्यों हेतु बनाए जाते हैं। प्राकृतिक प्रदेश जलवायु या भू-आकृति जैसे प्राकृतिक कारकों पर आधारित होते हैं। यह वर्गीकरण क्षेत्रीय विकास हेतु सहायक है।

21. (C) विशिष्ट विकास योजनाओं को लागू करने के लिए नामित एक स्थानिक इकाई।
नियोजन प्रदेश एक कृत्रिम रूप से सीमांकित भौगोलिक क्षेत्र है जिसका उद्देश्य लक्षित आर्थिक और सामाजिक विकास को सुगम बनाना है। यह प्रदेश प्रशासनिक और कार्यात्मक आवश्यकताओं के आधार पर चुना जाता है। यहाँ संसाधनों का मूल्यांकन किया जाता है और विशिष्ट समस्याओं के समाधान हेतु एकीकृत विकास रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं। यह क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और संसाधनों के संतुलित वितरण हेतु अनिवार्य ढांचा प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

279. नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण किन राज्यों के बीच था?
(A) महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान
(B) पंजाब, हरियाणा, राजस्थान
(C) कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल
(D) आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक

280. सीमांत सामान्यतः कैसा होता है?
(A) सटीक सीमांकित
(B) अपकेंद्री
(C) अभिकेंद्री
(D) कानूनी अवधारणा

281. 'प्रवाह विश्लेषण विधि' किस प्रदेश के लिए उपयुक्त है?
(A) औपचारिक
(B) समरूप
(C) कार्यात्मक
(D) जलवायु

282. सतत विकास का स्तंभ कौन सा नहीं है?
(A) आर्थिक विकास
(B) सामाजिक समता
(C) पर्यावरण संरक्षण
(D) सैन्य विस्तार

283. हिंद महासागर के भू-राजनीतिक महत्व का कारण है:
(A) मत्स्य संसाधन
(B) ऊर्जा और व्यापार प्रवाह के लिए मार्ग
(C) ज्वारीय ऊर्जा
(D) पारिस्थितिकी तंत्र

284. सीमाओं के बारे में कौन सा कथन सही है?
I. पूर्ववर्ती सीमा सांस्कृतिक विकास से पहले बनी।
II. अध्यारोपित सीमा बाहरी शक्ति द्वारा थोपी गई।
III. अवशेष सीमा अब आधिकारिक नहीं है।
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

285. कौन सा सिद्धांत तटीय क्षेत्रों पर अधिक बल देता है?
(A) हर्टलैंड
(B) समुद्री शक्ति
(C) जैविक राज्य
(D) रिमलैंड

286. संहत राज्य आकृति आदर्श क्यों है?
(A) यह केंद्र से सीमा की दूरी को न्यूनतम करती है।
(B) यह सीमाओं की लंबाई बढ़ाती है।
(C) यह जलवायु विविधता देती है।
(D) यह स्थल-रुद्धता सुनिश्चित करती है।

287. पूर्वोत्तर भारत के लिए क्षेत्रीय विकास योजनाएँ उदाहरण हैं:
(A) क्षेत्रीय नियोजन
(B) प्रादेशिक नियोजन
(C) शहरी नियोजन
(D) संकेतात्मक नियोजन

288. गोदावरी जल विवाद में कई राज्य क्यों शामिल हैं?
(A) नदी छोटी है।
(B) नदी बेसिन विस्तृत है।
(C) यह अंतरराष्ट्रीय सीमा है।
(D) पानी अनुपयुक्त है।

289. निम्नलिखित में से कौन राज्य का आर्थिक तत्व है?
(A) औद्योगिकीकरण का स्तर
(B) राजधानी की अवस्थिति
(C) जातीय संरचना
(D) शासन प्रणाली

290. सीमा की विशेषता क्या नहीं है?
(A) यह एक रेखा है।
(B) यह कानूनी-राजनीतिक है।
(C) यह संक्रमण का क्षेत्र है।
(D) यह संप्रभुता अलग करती है।

291. "जो समुद्र पर अधिकार रखता है वह व्यापार पर अधिकार रखता है..." यह विचार किसका है?
(A) मैकिन्डर
(B) स्पाइकमैन
(C) रेटजेल
(D) महन

NODIA

292. प्रादेशिक नियोजन की प्राथमिक प्रेरणा क्या है?
(A) सांस्कृतिक समानता
(B) स्थानीय सत्ता वृद्धि
(C) युद्ध तैयारी
(D) संतुलित विकास और असमानता में कमी

293. कार्यात्मक प्रदेश के लिए क्या आवश्यक है?
(A) केंद्रीय नोड
(B) समान भाषा
(C) साझा इतिहास
(D) सुसंगत जलवायु

294. सतत विकास की अवधारणा को किसने वैश्विक प्रमुखता दी?
(A) योजना आयोग
(B) WTO
(C) NATO
(D) ब्रंटलैंड आयोग

295. रावी-ब्यास विवाद में कौन से राज्य शामिल हैं?
(A) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान

की दृष्टि से भी, संहत राज्यों की सीमाओं की लंबाई क्षेत्रफल की तुलना में कम होती है, जिससे सुरक्षा सुगम हो जाती है। यह भौगोलिक सुसंगति राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ाती है।

33. (C) कार्यात्मक प्रदेश
कार्यात्मक प्रदेश वह क्षेत्र है जो एक केंद्रीय नोड के चारों ओर संगठित होता है और विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक अंतःक्रियाओं द्वारा संचालित होता है। महानगरीय क्षेत्र और उपनगरीय कस्बों के मध्य होने वाला दैनिक आवागमन, व्यापार और संचार इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रकार के प्रदेशों की पहचान समरूपता के स्थान पर उनके मध्य होने वाले प्रवाह और आपसी निर्भरता के आधार पर की जाती है। केंद्र से दूरी बढ़ने पर प्रभाव कम होता है।

34. (A) महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना
कृष्णा नदी जल विवाद दक्षिण भारत का प्रमुख अंतर-राज्यीय संघर्ष है, जिसमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना सम्मिलित हैं। यह विवाद मुख्य रूप से कृष्णा नदी और सहायक नदियों के जल के न्यायसंगत आवंटन से संबंधित है। बढ़ती जनसंख्या और कृषि तथा औद्योगिक आवश्यकताओं ने राज्यों के मध्य प्रतिस्पर्धा को तीव्र किया है। इस जटिल मुद्दे के समाधान हेतु समय-समय पर विभिन्न जल विवाद न्यायाधिकरणों का गठन किया गया है।

35. (B) P-4, Q-2, R-3, S-1
सीमाओं का वर्गीकरण उनके ऐतिहासिक विकास और सांस्कृतिक परिदृश्य के संबंधों के आधार पर किया जाता है। अमेरिका और कनाडा के मध्य 49वीं समानांतर रेखा एक पूर्ववर्ती सीमा है। भारत-पाकिस्तान सीमा एक परवर्ती सीमा है जिसे धार्मिक आधार पर विभाजित समाज को समायोजित करने हेतु बनाया गया था। अफ्रीका की औपनिवेशिक रेखाएं अध्यारोपित सीमाओं का उदाहरण हैं। वियतनाम की पूर्व सीमा अब एक अवशेष सीमा है जो ऐतिहासिक महत्व रखती है।

36. (D) प्राकृतिक संसाधनों तक राज्य की पहुँच और नियंत्रण
किसी राज्य की आर्थिक शक्ति मुख्य रूप से उसकी भौतिक संपदा और उत्पादन क्षमताओं पर निर्भर करती है। खनिज, ऊर्जा स्रोतों और उर्वर भूमि तक सुगम पहुँच तथा उन पर प्रभावी नियंत्रण, आर्थिक विकास का प्राथमिक आधार है। ये संसाधन न केवल देश को औद्योगिक रूप से आत्मनिर्भर बनाते हैं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भी स्थिति सुदृढ़ करते हैं। संसाधनों का कुशल प्रबंधन राज्य को वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धी बनाता है।

37. (D) सतत विकास
1987 में जारी 'ब्रंटलैंड रिपोर्ट', जिसे औपचारिक रूप से 'हमारा साझा भविष्य' कहा जाता है, ने 'सतत विकास' की अवधारणा को वैश्विक मान्यता दिलाई। इस रिपोर्ट ने पर्यावरण ह्रास और अनियंत्रित आर्थिक विकास के मध्य संबंधों की व्याख्या की। इसमें विकास को ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूर्ण करती है। यह पर्यावरणीय नीतियों का आधार है।

38. (D) I and II दोनों
राजनीतिक भूगोल में सीमांत और सीमा दो भिन्न स्थानिक अवधारणाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। सीमांत एक संक्रमणकालीन क्षेत्र है जो अक्सर राज्यों के मध्य बफर जोन के रूप में कार्य करता है और यह बहिर्मुखी स्वभाव का होता है। इसके विपरीत, सीमा एक कानूनी और सुस्पष्ट रेखा है जो संप्रभुता को विभाजित करती है और यह अंतर्मुखी स्वभाव की होती है। ये दोनों मिलकर राज्य की क्षेत्रीय अखंडता और प्रभाव की सीमा परिभाषित करते हैं।

39. (B) स्थानों को एक केंद्रीय नोड से जोड़ने वाली स्थानिक अंतःक्रियाओं का एक नेटवर्क।
कार्यात्मक प्रदेश की पहचान उसकी भौतिक एकरूपता के स्थान पर उसके भीतर होने वाली गत्यात्मक अंतःक्रियाओं से होती है। यह प्रदेश केंद्रीय नोड के चारों ओर विकसित होता है, जहाँ से सेवाओं, वस्तुओं और सूचनाओं का संचार आसपास के क्षेत्रों में होता है। इस नेटवर्क की मजबूती परिवहन मार्गों और संचार साधनों की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। यह शहरों और उनके प्रभाव क्षेत्रों के मध्य कार्यात्मक संबंधों को स्पष्ट करता है।

40. (C) साक्षरता दर
विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसे मापने हेतु विभिन्न सामाजिक और आर्थिक संकेतकों का उपयोग होता है। साक्षरता दर मानव पूंजी के विकास का प्रमुख संकेतक है, जो नागरिकों की ज्ञान प्राप्त करने और आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने की क्षमता दर्शाता है। यह केवल शिक्षा स्तर ही नहीं, बल्कि समाज की समग्र जागरूकता और प्रगतिशीलता को प्रतिबिंबित करता है। उच्च साक्षरता दर अक्सर बेहतर स्वास्थ्य और उच्च जीवन स्तर से जुड़ी होती है।

41. (A) I, II, IV, III
भारत में नियोजन का इतिहास संस्थागत विकास के महत्वपूर्ण चरणों से गुजरा है। 1950 में योजना आयोग की स्थापना के साथ औपचारिक नियोजन प्रक्रिया आरंभ हुई, जिसके उपरांत 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना शुरू हुई। वैश्विक स्तर पर सतत विकास की चर्चा 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट के साथ तीव्र हुई। अंततः, 2015 में भारत सरकार ने योजना आयोग को समाप्त कर नीति आयोग का गठन किया, जो नए परामर्शात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

42. (D) राष्ट्रवाद
राज्य के भौगोलिक तत्वों को भौतिक, मानवीय और आर्थिक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। भौतिक तत्वों के अंतर्गत वे घटक आते हैं जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त हैं, जैसे अवस्थिति, कुल क्षेत्रफल और क्षेत्रीय आकृति। राष्ट्रवाद एक मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक भावना है जो नागरिकों को एकजुट करती है, अतः इसे राज्य के 'मानवीय तत्वों' की श्रेणी में रखा जाता है। यह राज्य की आंतरिक मजबूती और स्थिरता हेतु उत्तरदायी प्रमुख कारक है।

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) हर्टलैंड सिद्धांत
हैल्फोर्ड मैकिन्डर द्वारा प्रतिपादित हर्टलैंड सिद्धांत यूरेशिया के विशाल आंतरिक भाग को 'धुरी क्षेत्र' के रूप में पहचानता है। यह क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समुद्री शक्तियों के आक्रमण से सुरक्षित है। मैकिन्डर का मानना था कि इस संसाधन-संपन्न क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त करने वाली शक्ति अंततः पूरे विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की अद्वितीय क्षमता रखेगी।

2. (A) III, I, II, IV
भू-राजनीतिक अवधारणाओं का विकास रणनीतिक सोच के क्रमिक विकास को दर्शाता है। फ्रेडरिक रेटजेल का जैविक राज्य सिद्धांत 1897 में आया था। अल्फ्रेड महन ने 1890 के दशक में समुद्री शक्ति के महत्व पर बल दिया। मैकिन्डर ने 1904 में हर्टलैंड सिद्धांत प्रस्तुत किया, जबकि निकोलस स्पाइकमैन ने 1942 में रिमलैंड सिद्धांत के माध्यम से तटीय क्षेत्रों को महत्वपूर्ण बताया।

3. (C) क्षेत्रीय आकार और आकृति
राजनीतिक भूगोल में किसी राज्य के अस्तित्व के लिए भौतिक आधार अनिवार्य माना जाता है। इसमें राज्य का भौगोलिक स्थान, कुल क्षेत्रफल और क्षेत्रीय आकृति प्राथमिक तत्व हैं। ये तत्व सीधे तौर पर शासन व्यवस्था, रक्षा क्षमताओं और आंतरिक संचार की सुगमता को प्रभावित करते हैं। आकार और आकृति संसाधनों के वितरण तथा सीमा सुरक्षा प्रबंधन में भी निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

4. (D) औपचारिक प्रदेश
औपचारिक प्रदेश वह भौगोलिक क्षेत्र है जो विशिष्ट विशेषताओं में एकरूपता प्रदर्शित करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका की 'कपास पेटी' इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि यह क्षेत्र कपास की फसल के प्रभुत्व से पहचाना जाता है। ऐसे प्रदेशों की सीमाएं वहां तक विस्तृत होती हैं जहां तक वह विशिष्ट विशेषता प्रभावी रहती है। यह क्षेत्रीय नियोजन और भौगोलिक वर्गीकरण का आधार है।

5. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भू-राजनीतिक विचारकों ने विश्व व्यवस्था हेतु विभिन्न प्रतिमान प्रस्तुत किए हैं। हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने हर्टलैंड की अवधारणा दी, जबकि निकोलस स्पाइकमैन ने रिमलैंड को विश्व प्रभुत्व का केंद्र माना। अल्फ्रेड महन का कार्य समुद्री शक्ति के रणनीतिक लाभों पर केंद्रित था। फ्रेडरिक रेटजेल ने 'लेबेन्सराउम' के माध्यम से राज्य को जीवित जीव के रूप में वर्णित किया जिसे विस्तार की आवश्यकता होती है।

6. (B) सामाजिक समता
सतत विकास की अवधारणा केवल आर्थिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है। इसमें सामाजिक समता एक अनिवार्य स्तंभ है, जो संसाधनों का न्यायसंगत वितरण और समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करती है। इसका उद्देश्य संतुलित प्रणाली विकसित करना है जहां आर्थिक लाभ समावेशी हों और किसी समूह की बुनियादी आवश्यकताओं की उपेक्षा न हो। यह वैश्विक स्थिरता का आधार है।

7. (D) बांग्लादेश के साथ सीमा पार जल साझाकरण
भारत में जल विवादों को अंतर-राज्यीय और अंतर्राष्ट्रीय श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। कावेरी, कृष्णा और नर्मदा नदियों के विवाद भारत के आंतरिक राज्यों के मध्य जल आवंटन को लेकर हैं। इसके विपरीत, बांग्लादेश के साथ जल साझाकरण एक अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक विषय है। यह देश की संप्रभुता और विदेश नीति से संबंधित मुद्दा है, जिसे अंतर-राज्यीय विवाद की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

8. (A) यह रिमलैंड को भौगोलिक रूप से स्थल-रुद्ध मानता है।
निकोलस स्पाइकमैन का रिमलैंड सिद्धांत मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत की सीमाओं को चुनौती देता है। स्पाइकमैन के अनुसार, यूरेशिया के तटीय क्षेत्र या 'रिमलैंड' वैश्विक शक्ति के वास्तविक केंद्र हैं। यह कथन कि रिमलैंड स्थल-रुद्ध है, तकनीकी रूप से अशुद्ध है क्योंकि इसकी मूल विशेषता इसका समुद्र तक सुगम मार्ग होना है। यह क्षेत्र स्थल और समुद्र के बीच रणनीतिक सेतु का कार्य करता है।

9. (C) प्रादेशिक परिसीमन
प्रादेशिक परिसीमन एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से नियोजन और प्रशासनिक उद्देश्यों हेतु क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारण किया जाता है। इसमें भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक संकेतकों का उपयोग करके मानचित्र पर स्पष्ट रेखाएं खींची जाती हैं। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि विकास कार्यक्रम एक सुसंगत इकाई के भीतर लागू हों। यह क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने और संसाधन आवंटन हेतु आवश्यक है।

10. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हैल्फोर्ड मैकिन्डर के अनुसार यूरेशिया का आंतरिक भाग 'हर्टलैंड', अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण समुद्री शक्तियों के लिए अभेद्य था। इस क्षेत्र में विशाल प्राकृतिक संसाधनों का भंडार है जो किसी भी शक्ति को आत्मनिर्भर बना सकता है। मैकिन्डर का तर्क था कि इस 'धुरी क्षेत्र' पर नियंत्रण रखने वाली शक्ति पूरे महाद्वीप पर वर्चस्व स्थापित कर वैश्विक स्तर पर शक्तिशाली राष्ट्र बनेगी।

NODIA

(A) गोवा, महाराष्ट्र और कर्नाटक
(B) केवल गोवा और महाराष्ट्र
(C) केवल गोवा और कर्नाटक
(D) गोवा और आंध्र प्रदेश

234. सतत विकास के तीन स्तंभों को क्या कहा जाता है?
(A) भूमि, श्रम, पूंजी
(B) लोग, ग्रह, समृद्धि
(C) अतीत, वर्तमान, भविष्य
(D) स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय

235. मानव विकास सूचकांक किसके लिए विकसित किया गया था?
(A) सैन्य शक्ति मापने हेतु।
(B) राजनीतिक प्रणालियों की रैंकिंग हेतु।
(C) आर्थिक विकास के माप के विकल्प के रूप में।
(D) पर्यावरणीय गिरावट की गणना हेतु।

236. हिंद महासागर के रणनीतिक संदर्भ में SLOC का अर्थ क्या है?
(A) रणनीतिक भूमि गलियारा
(B) पनडुब्बी क्षमता
(C) तटीय परिचालन कमान
(D) समुद्री संचार मार्ग

237. मैकिन्डर के अनुसार वैश्विक संतुलन के लिए खतरा कौन था?
(A) हर्टलैंड पर नियंत्रण रखने वाली एक महाद्वीपीय शक्ति।
(B) समुद्री शक्तियों का गठबंधन।
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका।
(D) जापान।

238. राज्य की औद्योगिक क्षमता किसका हिस्सा है?
(A) भौतिक तत्व
(B) आर्थिक तत्व
(C) मानवीय तत्व
(D) राजनीतिक तत्व

239. सूची I की मदों को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें।
सूची I: (अवधारणा)
P. हर्टलैंड
Q. रिमलैंड
R. समुद्री शक्ति
S. राज्य का जैविक सिद्धांत
सूची II: (प्रतिपादक)
1. निकोलस स्पाइकमैन
2. फ्रेडरिक रेटजेल
3. हैल्फोर्ड मैकिन्डर
4. ए. टी. महन
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

240. 'औपचारिक' प्रदेश की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) एक केंद्रीय नोड
(B) विशिष्ट प्रशासनिक कार्य
(C) एक समान या समरूप विशेषता
(D) प्रवाह का प्रतिरूप

241. भारत में विदर्भ या मराठवाड़ा विकास बोर्ड का निर्माण किसका साधन है?
(A) अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति
(B) राष्ट्रीय सुरक्षा
(C) चुनावी सुधार
(D) प्रादेशिक नियोजन

242. वंशधारा नदी जल विवाद किन राज्यों के बीच है?
(A) आंध्र प्रदेश और ओडिशा
(B) तमिलनाडु और केरल
(C) गुजरात और महाराष्ट्र
(D) बिहार और पश्चिम बंगाल

243. औपनिवेशिक शक्ति द्वारा थोपी गई सीमा क्या कहलाती है?
(A) अवशेष
(B) अध्यारोपित
(C) पूर्ववर्ती
(D) परवर्ती

244. समुद्र के नियंत्रण को विश्व शक्ति की कुंजी मानने वाला विचारक कौन है?
(A) मैकिन्डर
(B) स्पाइकमैन
(C) महन
(D) रेटजेल

245. निम्नलिखित में से कौन राज्य का भौगोलिक तत्व नहीं है?
(A) क्षेत्रीय आकार
(B) आर्थिक प्रणाली
(C) जनसंख्या का आकार
(D) ऐतिहासिक परंपराएं

246. एक स्थल-रुद्ध देश में किसकी कमी होती है?
(A) समुद्र तक सीधी पहुँच
(B) लोकतांत्रिक सरकार
(C) स्थायी आबादी
(D) प्राकृतिक संसाधन

247. योजना आयोग से नीति आयोग में परिवर्तन क्या दर्शाता है?
(A) अधिक केंद्रीकृत नियोजन।
(B) सहकारी और सलाहकार भूमिका।
(C) नियोजन का परित्याग।

Downloaded from www.pdf.tube

22. (B) अवस्थिति
किसी राज्य की अवस्थिति उसके भू-राजनीतिक महत्व का निर्णायक तत्व है। यह अन्य राष्ट्रों, वैश्विक व्यापारिक मार्गों और रणनीतिक जल निकायों के सापेक्ष देश की स्थिति को दर्शाती है। एक अनुकूल अवस्थिति देश को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में लाभ पहुँचाती है और उसकी सुरक्षा चिंताओं को निर्धारित करती है। उदाहरण के लिए, प्रमुख समुद्री मार्गों पर स्थित होना राज्य की शक्ति और आर्थिक विकास की दिशा तय करता है।

23. (D) हर्टलैंड सिद्धांत
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने हर्टलैंड सिद्धांत में पूर्वी यूरोप को रणनीतिक स्थान माना था। उन्होंने तर्क दिया कि जो शक्ति पूर्वी यूरोप पर शासन करेगी, वह प्राकृतिक रूप से हर्टलैंड पर नियंत्रण प्राप्त कर लेगी। हर्टलैंड पर नियंत्रण का अर्थ पूरे 'विश्व द्वीप' पर वर्चस्व स्थापित करना है। मैकिन्डर की यह घोषणा 20वीं सदी की भू-राजनीति का आधार बनी, जिसने महाद्वीपीय और समुद्री शक्तियों के मध्य प्रतिस्पर्धा बढ़ाई।

24. (A) अध्यारोपित सीमा
अध्यारोपित सीमा वह राजनीतिक रेखा है जिसे किसी बाहरी शक्ति द्वारा, स्थानीय आबादी की सांस्कृतिक या जातीय विशिष्टताओं की उपेक्षा कर, जबरन थोपा जाता है। यह सीमा अक्सर तब खींची जाती है जब क्षेत्र में जटिल सांस्कृतिक परिदृश्य विकसित हो चुका होता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होती है क्योंकि यह पारंपरिक समुदायों को विभाजित करती है। अफ्रीका की औपनिवेशिक सीमाएं इसका प्रमुख उदाहरण हैं।

25. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत जैसे संघीय ढांचे वाले देशों में अंतर-राज्यीय जल विवाद गंभीर चुनौती हैं क्योंकि नदियाँ प्रशासनिक सीमाओं का पालन नहीं करती हैं। जब एक नदी कई राज्यों से गुजरती है, तो उसके जल उपयोग, भंडारण और आवंटन हेतु प्रतिस्पर्धी दावे उत्पन्न होते हैं। ये विवाद गहरे राजनीतिक तनाव का कारण बनते हैं क्योंकि जल कृषि और औद्योगिक विकास हेतु एक अनिवार्य और सीमित संसाधन है।

26. (A) राष्ट्रीय संप्रभुता
सतत विकास की अवधारणा मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर आधारित है: आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक समता और पर्यावरण संरक्षण। इसका उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूर्ण करना है। जबकि राष्ट्रीय संप्रभुता एक राजनीतिक अवधारणा है, इसे सतत विकास के प्राथमिक पारिस्थितिक स्तंभों में सम्मिलित नहीं किया जाता। सतत विकास वैश्विक सहयोग और साझा उत्तरदायित्व की मांग करता है।

27. (D) एक बहिर्मुखी, गतिशील संक्रमण क्षेत्र
राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' एक रेखीय सीमा के स्थान पर विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र को संदर्भित करता है। यह एक गतिशील जोन है जहां दो अलग राज्यों या संस्कृतियों के प्रभाव मिलते हैं। ऐतिहासिक रूप से, सीमांत वे क्षेत्र थे जहां राज्य का नियंत्रण पूर्ण नहीं था और जो विस्तार हेतु उपलब्ध थे। यह संक्रमण की स्थिति भौतिक भूगोल के साथ सामाजिक और राजनीतिक अंतःक्रियाओं को भी प्रभावित करती है।

28. (B) वैश्विक जलवायु को प्रभावित करने वाली इसकी ध्रुवीय बर्फ की टोपी।
हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व इसके प्रमुख समुद्री संचार मार्गों और विशाल प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। यह वैश्विक व्यापार और ऊर्जा परिवहन हेतु अनिवार्य मार्ग प्रदान करता है। हालाँकि, ध्रुवीय बर्फ की टोपियाँ मुख्य रूप से आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों की विशेषताएं हैं, न कि हिंद महासागर की। हिंद महासागर की रणनीतिक प्रासंगिकता इसके तटवर्ती देशों की बढ़ती आर्थिक शक्ति और चोकपॉइंट्स पर नियंत्रण से जुड़ी है।

29. (A) संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना और असमानताओं को कम करना।
भारत में प्रादेशिक नियोजन का दर्शन 'समानता के साथ विकास' के सिद्धांत पर आधारित है। इसका प्राथमिक उद्देश्य देश के विकसित और पिछड़े क्षेत्रों के मध्य व्याप्त आर्थिक और सामाजिक अंतर को कम करना है। इसके माध्यम से संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया जाता है ताकि प्रत्येक क्षेत्र अपनी क्षमतानुसार प्रगति कर सके। यह न केवल आर्थिक विकास को गति देता है, बल्कि राष्ट्रीय अखंडता को भी सुदृढ़ करता है।

NODIA

30. (D) I, II और III
प्रादेशिक नियोजन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके तहत भौगोलिक क्षेत्र को प्रबंधनीय नियोजन प्रदेशों में विभाजित किया जाता है। इस परिसीमन हेतु गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का प्रयोग होता है। गुणात्मक विधियाँ ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को महत्व देती हैं, जबकि मात्रात्मक विधियाँ डेटा और सांख्यिकीय सूचकांकों पर आधारित होती हैं। इन विधियों का एकीकृत उपयोग प्रभावी विकास रणनीति हेतु आवश्यक आधार प्रदान करता है।

31. (A) यूरेशियाई महाद्वीप के उत्तरी और मध्य भाग
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने हर्टलैंड सिद्धांत में 'धुरी क्षेत्र' के रूप में जिस भूभाग की पहचान की, वह मुख्य रूप से यूरेशिया के विशाल उत्तरी और मध्य भागों को आवृत्त करता था। इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषता इसका समुद्र से अलगाव और बाहरी नौसैनिक आक्रमणों से सुरक्षा थी। मैकिन्डर का मानना था कि यह क्षेत्र अपनी विशालता और संसाधनों के कारण विश्व प्रभुत्व हेतु एक आदर्श मंच प्रदान करता है।

32. (B) संहत
संहत आकृति वाले राज्य में भौगोलिक केंद्र से सीमाओं तक की दूरी लगभग समान होती है, जो इसे गोलाकार स्वरूप प्रदान करती है। ऐसी आकृति शासन व्यवस्था हेतु कुशल मानी जाती है क्योंकि इसमें संचार और परिवहन लागत कम होती है। रक्षा

(B) कर्नाटक और तमिलनाडु
(C) गुजरात और महाराष्ट्र
(D) ओडिशा और छत्तीसगढ़

296. कौन सा राज्य का मानवीय तत्व है?
(A) आकार
(B) आकृति
(C) राष्ट्रवाद
(D) जलवायु

297. 'विश्व द्वीप' में कौन से महाद्वीप शामिल हैं?
(A) एशिया, यूरोप और अफ्रीका
(B) उत्तर और दक्षिण अमेरिका
(C) ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका
(D) एशिया और ऑस्ट्रेलिया

298. अक्षांश रेखा के साथ खींची गई सीमा क्या कहलाती है?
(A) परवर्ती
(B) अवशेष
(C) ऐतिहासिक
(D) ज्यामितीय

299. नियोजन प्रदेश के परिसीमन का अंतिम उद्देश्य क्या है?
(A) सांस्कृतिक समरूपता।
(B) विकास योजनाओं के लिए कार्यात्मक उपयुक्तता।
(C) ऐतिहासिक मूल्य।
(D) प्रशासनिक समानता।

300. कौन सा सिद्धांत यूरेशिया के तटीय किनारों के रणनीतिक महत्व पर बल देता है?
(A) हर्टलैंड सिद्धांत
(B) रिमलैंड सिद्धांत
(C) समुद्री शक्ति सिद्धांत
(D) जैविक राज्य सिद्धांत

Click Here to Buy book on Amazon

43. (A) पंजाब और हरियाणा
सतलुज-यमुना लिंक नहर परियोजना उत्तर भारत के दो प्रमुख राज्यों, पंजाब और हरियाणा के मध्य दीर्घकालिक जल विवाद है। इस नहर का उद्देश्य रावी और ब्यास नदियों के अधिशेष जल को हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों तक पहुँचाना था। पंजाब ने अपनी जल आवश्यकताओं का हवाला देते हुए इस परियोजना के निर्माण का विरोध किया है, जबकि हरियाणा कानूनी अधिकारों के आधार पर जल की मांग कर रहा है। यह मुद्दा क्षेत्रीय राजनीति से जुड़ा है।

44. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रादेशिक परिसीमन की प्रक्रिया में एकल संकेतक का उपयोग अपर्याप्त माना जाता है क्योंकि क्षेत्र की वास्तविकता जटिल और बहुआयामी होती है। विकास के विभिन्न पहलुओं जैसे आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों को समझने हेतु संयुक्त सूचकांकों का उपयोग अधिक प्रभावी होता है। यह दृष्टिकोण नीति निर्माताओं को विशिष्ट समस्याओं की पहचान और समाधान हेतु व्यापक आधार प्रदान करता है। समग्र संकेतकों के प्रयोग से नियोजन सटीक परिणाम प्रदान करता है।

45. (B) रिमलैंड
भू-राजनीति में 'विखंडन क्षेत्र' या 'क्रश ज़ोन' की अवधारणा उन क्षेत्रों को संदर्भित करती है जो बड़ी स्थलीय और समुद्री शक्तियों के मध्य बफर ज़ोन के रूप में स्थित होते हैं। निकोलस स्पाइकमैन के रिमलैंड सिद्धांत में इन क्षेत्रों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि ये अक्सर महाशक्तियों के मध्य संघर्ष के केंद्र बन जाते हैं। रिमलैंड की भौगोलिक स्थिति इसे रणनीतिक रूप से संवेदनशील बनाती है, जहाँ विभिन्न वैश्विक शक्तियों के हित टकराते हैं।

46. (A) एक नोड और उसके आसपास के क्षेत्र के बीच वस्तुओं, लोगों या सूचनाओं की आवाजाही।
प्रवाह विश्लेषण विधि कार्यात्मक प्रदेशों के परिसीमन हेतु अनिवार्य उपकरण है। यह विधि इस सिद्धांत पर आधारित है कि स्थानों का जुड़ाव उनके मध्य होने वाले वास्तविक प्रवाह से निर्धारित होता है। इसमें टेलीफोन कॉल्स, वाहनों की आवाजाही, बैंकिंग लेनदेन और दैनिक श्रम प्रवाह के डेटा का विश्लेषण किया जाता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि केंद्रीय शहर का प्रभाव आसपास के क्षेत्र पर कितना विस्तृत है। यह शहरी नियोजन रणनीतियों को प्रभावी बनाता है।

47. (A) एक समान या समरूप विशेषता, जैसे कि एक विशिष्ट भाषा या फसल।
औपचारिक प्रदेश वह भौगोलिक क्षेत्र है जिसकी पहचान उसके भीतर व्याप्त एकरूपता से होती है। यह एकरूपता भौतिक हो सकती है, जैसे विशिष्ट जलवायु, अथवा सांस्कृतिक और आर्थिक हो सकती है, जैसे विशेष भाषा या निश्चित फसल। इन प्रदेशों की सीमाएं उन स्थानों तक फैली होती हैं जहां तक वह परिभाषित विशेषता प्रभावी रहती है। यह क्षेत्रीय विश्लेषण का एक स्थिर आधार प्रदान करते हैं, जिससे संसाधनों का वर्गीकरण सुगम होता है।

48. (B) एक मृतप्राय सीमा जो सांस्कृतिक परिदृश्य के भीतर दिखाई देती है।
अवशेष सीमा वह राजनीतिक रेखा है जिसका अब कोई आधिकारिक अस्तित्व नहीं रह गया है, किंतु उसके ऐतिहासिक प्रभाव अभी भी सांस्कृतिक परिदृश्य पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। ऐसी सीमाएं अक्सर पूर्व विभाजनों के रूप में रह जाती हैं और वे क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास या वास्तुकला में अपनी छाप छोड़ती हैं। जर्मनी की पूर्व बर्लिन दीवार इसका प्रमुख उदाहरण है। ये सीमाएं किसी क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास को समझने हेतु महत्वपूर्ण भौगोलिक साक्ष्य हैं।

49. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
भारत की प्रमुख नदियाँ विभिन्न राज्यों के मध्य जल विवाद का केंद्र रही हैं। सतलुज-यमुना लिंक नहर का मुद्दा मुख्य रूप से रावी-ब्यास और सतलुज के जल से जुड़ा है। कावेरी विवाद कर्नाटक और तमिलनाडु के मध्य ऐतिहासिक संघर्ष है। कृष्णा जल विवाद आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और महाराष्ट्र के मध्य है। नर्मदा जल विवाद गुजरात, मध्य प्रदेश और अन्य पड़ोसी राज्यों के मध्य इस बड़ी नदी के जल उपयोग पर केंद्रित रहा है।

50. (D) स्थलीय शक्ति
हैल्फोर्ड मैकिन्डर का मानना था कि हर्टलैंड की वास्तविक शक्ति इसकी स्थलीय गतिशीलता और समुद्री आक्रमणों से प्राकृतिक सुरक्षा में निहित है। उन्होंने तर्क दिया कि रेलवे के विकास ने इस विशाल भूभाग को एकीकृत करना संभव बना दिया है, जिससे यहाँ रहने वाली स्थलीय शक्ति को समुद्री शक्तियों पर बढ़त मिल गई है। मैकिन्डर के अनुसार, यदि कोई एकल राष्ट्र इस पूरे 'धुरी क्षेत्र' के संसाधनों को संगठित कर ले, तो वह विश्व प्रभुत्व स्थापित करेगा।

51. (B) यह जलवायु को प्रभावित करती है और वैश्विक व्यापार तथा संसाधनों तक पहुँच को नियंत्रित करती है।
किसी राज्य की भौगोलिक अवस्थिति उसका महत्वपूर्ण भौतिक तत्व मानी जाती है क्योंकि यह देश के पूरे जीवन चक्र को प्रभावित करती है। यह न केवल जलवायु और प्राकृतिक वनस्पति को निर्धारित करती है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समुद्री और हवाई मार्गों तक पहुँच को भी नियंत्रित करती है। रणनीतिक मार्गों पर स्थित देश वैश्विक व्यापार से अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। अवस्थिति ही किसी देश की सुरक्षा चिंताओं और पड़ोसियों के साथ संबंधों को तय करती है।

52. (C) राष्ट्रवाद की प्रबल भावना
राष्ट्रवाद की प्रबल भावना एक शक्तिशाली अभिकेंद्री शक्ति के रूप में कार्य करती है जो राज्य के भीतर मौजूद विभिन्न समूहों को एकजुट करती है। यह नागरिकों में साझा पहचान और अपने देश के प्रति वफादारी की भावना उत्पन्न करती है, जो संकट के समय राज्य की स्थिरता सुनिश्चित करती है। जब लोग स्वयं को राष्ट्र का अभिन्न अंग मानते हैं, तो आंतरिक विभाजन और संघर्ष कम हो जाते हैं। यह मानवीय तत्व राज्य की आंतरिक संप्रभुता को सुदृढ़ करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है, बल्कि सामाजिक स्थिरता को भी बढ़ावा देता है।

73. (C) समुद्र के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
स्थल-रुद्ध राज्य वह होता है जिसकी कोई भी सीमा समुद्र से नहीं लगती। ऐसे राज्यों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु पड़ोसी देशों के बंदरगाहों और परिवहन मार्गों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता व्यापारिक लागत बढ़ाती है और पड़ोसी देशों के साथ राजनीतिक तनाव होने पर आर्थिक सुरक्षा को खतरे में डाल सकती है। समुद्र तक सीधी पहुँच की कमी देश की नौसैनिक शक्ति के विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्था में उसकी प्रतिस्पर्धी स्थिति को सीमित कर देती है।

74. (A) केवल I
राजनीतिक भूगोल में सीमांत और सीमा के मध्य अंतर समझना आवश्यक है। सीमांत एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र है, जबकि सीमा एक सुस्पष्ट और कानूनी रूप से परिभाषित रेखीय इकाई है। यह कहना अशुद्ध है कि सीमांत अपकेंद्री होते हैं, क्योंकि वे ऐतिहासिक रूप से राज्यों के मध्य बफर जोन के रूप में कार्य करते थे। केवल सीमाएँ ही अंतर्राष्ट्रीय कानूनों द्वारा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त और संप्रभुता की प्रतीक होती हैं, जबकि सीमांत अक्सर अस्पष्ट क्षेत्र होते हैं।

75. (A) निकोलस स्पाइकमैन
रिमलैंड सिद्धांत का प्रतिपादन प्रसिद्ध अमेरिकी भू-राजनीतिज्ञ निकोलस स्पाइकमैन ने किया था। उन्होंने यह सिद्धांत द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हैल्फोर्ड मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत की आलोचना के रूप में प्रस्तुत किया। स्पाइकमैन का तर्क था कि यूरेशिया की तटीय परिधि या 'रिमलैंड' वैश्विक शक्ति का वास्तविक केंद्र है क्योंकि यह समुद्र और भूमि के नियंत्रण को जोड़ता है। उनका यह विचार शीत युद्ध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतियों का महत्वपूर्ण बौद्धिक आधार बना।

76. (B) ओडिशा और आंध्र प्रदेश
वंशधारा जल विवाद पूर्वी भारत का महत्वपूर्ण अंतर-राज्यीय नदी जल संघर्ष है, जिसमें ओडिशा और आंध्र प्रदेश सम्मिलित हैं। यह विवाद वंशधारा नदी के जल के बंटवारे और उस पर प्रस्तावित सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण को लेकर है। ओडिशा को चिंता है कि आंध्र प्रदेश द्वारा बनाए जाने वाले बांधों से उसके क्षेत्र में जल प्रवाह प्रभावित होगा। इस विवाद के समाधान हेतु विशेष जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन किया गया है जो दोनों राज्यों के हितों को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है।

77. (C) यह जातीय समूहों को विभाजित कर सकती है या पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी आबादी को एक साथ जोड़ सकती है।
अध्यारोपित सीमा का नकारात्मक परिणाम यह है कि यह जमीनी सांस्कृतिक और सामाजिक वास्तविकताओं की उपेक्षा करती है। ऐसी सीमाएँ अक्सर औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा मानचित्र पर खींची जाती हैं, जो एक ही जातीय समूह को दो देशों में बाँट सकती हैं या शत्रु समूहों को एक ही सीमा के भीतर रहने को विवश कर सकती हैं। इससे दीर्घकालिक नागरिक संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होती है, जैसा कि अफ्रीका और मध्य पूर्व के कई क्षेत्रों में देखा गया है।

78. (D) सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय
प्रारंभ में 'विकास' को केवल प्रति व्यक्ति आय और सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि जैसे आर्थिक मापदंडों से मापा जाता था। समय के साथ यह अवधारणा अधिक समावेशी और बहुआयामी हो गई है। अब इसमें सामाजिक आयाम जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य, राजनीतिक आयाम जैसे नागरिक अधिकार, तथा पर्यावरणीय आयाम जैसे सतत संसाधन प्रबंधन को सम्मिलित किया गया है। यह आधुनिक दृष्टिकोण मानता है कि वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचें।

79. (B) यह सामान्यतः आंतरिक संचार और रक्षा को सरल बनाती है।
संहत राज्य की आकृति वृत्ताकार या वर्गाकार होती है, जिसमें भौगोलिक केंद्र से सीमाओं की दूरी लगभग समान होती है। यह विशेषता प्रशासनिक नियंत्रण को अधिक प्रभावी बनाती है क्योंकि राजधानी से सुदूर हिस्सों तक संचार तीव्र और सुलभ होता है। सुरक्षा की दृष्टि से भी, संहत राज्यों को अपनी सीमाओं की रक्षा करना सरल होता है क्योंकि उनकी तटरेखा या थल सीमा क्षेत्रफल के अनुपात में कम होती है। यह भौगोलिक सुसंगति राष्ट्रीय एकता और सुचारु शासन को बढ़ावा देती है।

80. (A) कार्यात्मक प्रदेश
कार्यात्मक प्रदेश की परिभाषा उसके भीतर मौजूद गत्यात्मक अंतःक्रियाओं के आधार पर की जाती है। यह प्रदेश विशिष्ट केंद्र या नोड के चारों ओर संगठित होता है, जो अपने आसपास के क्षेत्र को सेवाएँ, रोजगार और सूचनाएँ प्रदान करता है। इस नोड का प्रभाव क्षेत्र उसके स्थानिक विस्तार को निर्धारित करता है, जो परिवहन साधनों की सुगमता पर निर्भर करता है। केंद्र से दूरी बढ़ने के साथ ये संबंध धीरे-धीरे कमजोर होते जाते हैं, जो कार्यात्मक प्रदेश की वास्तविक सीमा को रेखांकित करते हैं।

81. (A) III, II, I, IV
राजनीतिक भूगोल में सीमाओं का विकास ऐतिहासिक क्रम में होता है। पूर्ववर्ती सीमाएँ सघन जनसंख्या बसने से पूर्व निर्धारित की जाती हैं। इसके पश्चात, सांस्कृतिक परिदृश्य विकसित होने पर भाषाई या जातीय विभाजनों को समायोजित करने हेतु परवर्ती सीमाएँ बनाई जाती हैं। अध्यारोपित सीमाएँ अक्सर बाद में बाहरी शक्तियों द्वारा थोपी जाती हैं, जो सामाजिक ढांचे की उपेक्षा करती हैं। अंत में, अवशेष सीमाएँ वे होती हैं जो कानूनी मान्यता खो चुकी हैं किंतु ऐतिहासिक निशान अभी भी परिदृश्य में मौजूद हैं।

82. (D) आर्थिक
किसी राज्य की आर्थिक सफलता उसके 'आर्थिक तत्वों' की श्रेणी में आती है, जो राज्य की समग्र शक्ति का महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसमें प्राकृतिक संसाधनों का कुशल प्रबंधन, औद्योगिक उत्पादकता, आधुनिक बुनियादी ढांचा और वैश्विक व्यापार में भागीदारी सम्मिलित है। सफल अर्थव्यवस्था राज्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रभाव और सुरक्षा प्रदान करती है।

NODIA

63. (A) उत्पादन, व्यापार और संसाधन जुटाने की इसकी क्षमता।
किसी राज्य के आर्थिक तत्व उसकी समग्र राष्ट्रीय शक्ति का आधार हैं। इसमें औद्योगिक क्षमता, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का स्तर, तथा वित्तीय संसाधनों को प्रबंधित करने की क्षमता सम्मिलित है। मजबूत आर्थिक ढांचा न केवल नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाता है, बल्कि आधुनिक रक्षा प्रणालियों के विकास में भी सहायता करता है। आर्थिक आत्मनिर्भरता और तकनीकी नवाचार राज्य को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाए रखने हेतु अनिवार्य हैं।

64. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
इंडोनेशिया और फिलीपींस जैसे देश, जो सहस्त्रों द्वीपों में विभाजित हैं, खंडित राज्य की श्रेणी में आते हैं। इस प्रकार की भौगोलिक आकृति राष्ट्रीय एकीकरण और प्रशासनिक नियंत्रण हेतु गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। जल निकायों द्वारा पृथक क्षेत्रों के मध्य निरंतर संचार और परिवहन बनाए रखना कठिन होता है। यह भौतिक अलगाव अक्सर क्षेत्रीय पहचानों को मजबूत करता है। केंद्रीय सत्ता हेतु सुदूर द्वीपों तक समान विकास पहुँचाना एक सतत संघर्ष बना रहता है।

65. (B) रिमलैंड सिद्धांत
यह प्रसिद्ध सूत्र निकोलस स्पाइकमैन के रिमलैंड सिद्धांत का मूल मंत्र है। स्पाइकमैन ने मैकिन्डर की इस धारणा को चुनौती दी कि यूरेशिया का आंतरिक भाग ही विश्व शक्ति का केंद्र है। उनके अनुसार, यूरेशिया की तटीय परिधि या रिमलैंड अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समुद्र और स्थल दोनों पर नियंत्रण की अनुमति देता है। स्पाइकमैन का मानना था कि रिमलैंड पर प्रभुत्व रखने वाली शक्ति वैश्विक राजनीति और व्यापार के प्रवाह को पूरी तरह नियंत्रित कर सकती है।

66. (B) भारित सूचकांक विधि
भारित सूचकांक विधि प्रादेशिक परिसीमन की एक उन्नत मात्रात्मक तकनीक है जो विभिन्न विकास संकेतकों को जोड़ती है। इस विधि में, प्रत्येक चर को उसके सापेक्ष महत्व के आधार पर विशिष्ट 'भार' दिया जाता है। इन सभी को मिलाकर संयुक्त स्कोर तैयार किया जाता है, जो किसी प्रदेश के समग्र विकास स्तर को दर्शाता है। यह विधि नीति निर्माताओं को विभिन्न क्षेत्रों के मध्य मौजूद जटिल अंतरों को समझने और विकास हेतु प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को वैज्ञानिक रूप से वर्गीकृत करने में मदद करती है।

67. (A) एक समान या समरूप विशेषता
औपचारिक प्रदेश वह भौगोलिक इकाई है जो अपने पूरे विस्तार में एक या अधिक विशिष्ट विशेषताओं में एकरूपता प्रदर्शित करती है। यह विशेषता भौतिक हो सकती है, जैसे विशिष्ट जलवायु या मृदा, अथवा मानवीय हो सकती है, जैसे साझा भाषा या धार्मिक पहचान। उदाहरण के लिए, एक कृषि क्षेत्र जहाँ केवल गेहूं की खेती होती है, औपचारिक प्रदेश है। इन प्रदेशों की सीमाएं वहां समाप्त होती हैं जहां वह विशिष्ट विशेषता लुप्त हो जाती है।

68. (C) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
मानव विकास सूचकांक का अनिवार्य घटक जन्म के समय जीवन प्रत्याशा है, जो देश की स्वास्थ्य स्थिति और नागरिकों की लंबी उम्र का प्रतिनिधित्व करता है। यह संकेतक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता, पोषण और स्वच्छता के प्रभावों को प्रतिबिंबित करता है। जीवन प्रत्याशा के साथ शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय को जोड़कर यह सूचकांक किसी राष्ट्र के विकास का संतुलित चित्र प्रस्तुत करता है, जो केवल आर्थिक वृद्धि के स्थान पर मानव कल्याण की गुणवत्ता पर केंद्रित है।

69. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
भू-राजनीति और नियोजन की विभिन्न अवधारणाएँ वैश्विक और क्षेत्रीय विकास को समझने में सहायक हैं। सतत विकास वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के संतुलन पर केंद्रित है। नियोजन प्रदेश विकास रणनीतियों को लागू करने हेतु निर्दिष्ट स्थानिक इकाई हैं। सीमांत दो राज्यों के मध्य संक्रमणकालीन और गतिशील क्षेत्र होता है। हर्टलैंड सिद्धांत यूरेशिया के आंतरिक 'धुरी क्षेत्र' के रणनीतिक महत्व को रेखांकित करता है। ये अवधारणाएँ आधुनिक भौगोलिक और राजनीतिक अध्ययन का मुख्य आधार हैं।

70. (D) स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स रणनीति
'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' एक भू-रणनीतिक शब्द है जो हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। इसमें पाकिस्तान के ग्वादर से लेकर श्रीलंका के हंबनटोटा और म्यांमार के बंदरगाहों तक रणनीतिक सुविधाओं का नेटवर्क सम्मिलित है। भारत के दृष्टिकोण से, इसे सामरिक घेरेबंदी के रूप में देखा जाता है जो समुद्री व्यापार मार्गों को प्रभावित कर सकता है। इसके जवाब में, भारत अपनी समुद्री सुरक्षा सुदृढ़ करने और क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ संबंध मजबूत करने हेतु सक्रिय कूटनीति अपना रहा है।

71. (B) परवर्ती सीमा
परवर्ती सीमा वह राजनीतिक विभाजन है जो किसी क्षेत्र में सघन आबादी और विशिष्ट सांस्कृतिक परिदृश्य विकसित होने के उपरांत स्थापित किया जाता है। इसका उद्देश्य भाषाई, धार्मिक या जातीय विभाजनों को मान्यता देना और उनके अनुरूप सीमा खींचना होता है ताकि सामाजिक संघर्ष कम हो सकें। 1947 में भारत और पाकिस्तान का विभाजन इसका प्रमुख उदाहरण है, जहाँ धार्मिक आधार पर सीमा निर्धारण किया गया था। ऐसी सीमाएँ समुदायों के मध्य शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सुनिश्चित करने हेतु बनाई जाती हैं।

72. (A) क्षेत्रीय असंतुलन और असमानताएँ
प्रादेशिक नियोजन का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्र के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के मध्य व्याप्त आर्थिक और सामाजिक विकास की खाई को पाटना है। अक्सर देखा जाता है कि कुछ क्षेत्र तीव्र विकसित होते हैं जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं, जिससे क्षेत्रीय असंतोष उत्पन्न होता है। नियोजन का ध्यान संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और पिछड़े क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास पर होता है। यह संतुलित विकास न केवल राष्ट्रीय

Click Here to Buy book on Amazon

110. (D) गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र
महादयी नदी जल विवाद पश्चिमी भारत का प्रमुख अंतर-राज्यीय संघर्ष है, जिसमें गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्य सम्मिलित हैं। विवाद मुख्य रूप से कर्नाटक द्वारा नदी के जल को मोड़ने हेतु प्रस्तावित कलसा-भंडूरी परियोजना को लेकर है, जिसका उद्देश्य अपने शुष्क क्षेत्रों हेतु जल प्राप्त करना है। गोवा इस परियोजना का कड़ा विरोध करता है क्योंकि उसे भय है कि इससे उसके क्षेत्र में जल प्रवाह कम होगा और पारिस्थितिक तंत्र को क्षति पहुँचेगी। इस विवाद के समाधान हेतु न्यायाधिकरण द्वारा विभिन्न जल आवंटन निर्धारित किए गए हैं।

111. (B) ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट
सतत विकास की सर्वाधिक प्रसिद्ध परिभाषा 1987 में ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट में दी गई थी। इस रिपोर्ट ने प्रथम बार विकास और पर्यावरण संरक्षण के मध्य अनिवार्य संतुलन को वैश्विक एजेंडे पर रखा। इसमें इस बात पर बल दिया गया कि संसाधनों का वर्तमान दोहन ऐसा नहीं होना चाहिए जो भावी पीढ़ियों को उनके अधिकारों से वंचित कर दे। यह परिभाषा आज भी वैश्विक नीति निर्माण का मूल मंत्र है, जो टिकाऊ प्रगति हेतु आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों के एकीकरण की मांग करती है।

112. (A) कार्यात्मक प्रदेश
शहर से दैनिक समाचार पत्र के वितरण के आधार पर परिसीमित क्षेत्र कार्यात्मक प्रदेश का आदर्श उदाहरण है। इस प्रदेश की विशेषता इसकी भौतिक एकरूपता नहीं, बल्कि केंद्रीय नोड और उसके आसपास के क्षेत्र के मध्य होने वाला निरंतर प्रवाह है। यह प्रदेश संचार और सेवा की पहुँच द्वारा परिभाषित होता है। जैसे-जैसे परिवहन की लागत या समय बढ़ता है, केंद्र का प्रभाव कम होने लगता है और प्रदेश की सीमा निर्धारित हो जाती है। यह मानवीय गतिविधियों और स्थानिक अंतःक्रियाओं की गतिशीलता को दर्शाता है।

113. (C) क्षेत्र और अवस्थिति
राज्य के भौतिक तत्व वे बुनियादी भौगोलिक कारक हैं जो प्रकृति द्वारा निर्धारित होते हैं और जिन पर राज्य का अस्तित्व टिका होता है। इसमें राज्य का भौगोलिक 'क्षेत्र' और उसकी 'अवस्थिति' सम्मिलित हैं। ये तत्व देश की जलवायु, उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों और पड़ोसी देशों के साथ रणनीतिक संबंधों को निर्धारित करते हैं। अनुकूल अवस्थिति और पर्याप्त क्षेत्रीय विस्तार किसी भी राज्य की आर्थिक आत्मनिर्भरता और सुरक्षा क्षमताओं हेतु प्राथमिक आवश्यकता माने जाते हैं, जो उसके भविष्य को आकार प्रदान करते हैं।

114. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
राज्यों की क्षेत्रीय आकृति उनके प्रशासनिक और रणनीतिक स्वरूप को प्रभावित करती है। संहत राज्य में केंद्र से सीमाओं तक की दूरी लगभग समान होती है, जो शासन को सुगम बनाती है। विस्तारित राज्य अपनी चौड़ाई की तुलना में अधिक लंबे होते हैं, जैसे चिली। खंडित राज्य कई अलग द्वीपों से बने होते हैं, जो एकीकरण की चुनौती उत्पन्न करते हैं। छिद्रित राज्य वे होते हैं जो पूरी तरह से किसी अन्य देश के क्षेत्र को घेर लेते हैं, जैसे लेसोथो। यह वर्गीकरण भौगोलिक राजनीति को समझने में सहायक है।

115. (B) राष्ट्रीय एकता और साझा पहचान का स्तर
राज्य की स्थिरता केवल उसके क्षेत्रफल या संसाधनों पर निर्भर नहीं होती, बल्कि मानवीय तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। नागरिकों के मध्य राष्ट्रीय एकता और साझा पहचान की प्रबल भावना एक ऐसी अभिकेंद्री शक्ति है जो आंतरिक मतभेदों को कम करती है और राज्य को संकट के समय एकजुट रखती है। यदि राज्य के लोग स्वयं को एक अविभाज्य राष्ट्र के रूप में देखते हैं, तो वह राज्य बाहरी दबावों का अधिक मजबूती से मुकाबला कर सकता है। यह भावना शासन की वैधता और राष्ट्रीय विकास को सुनिश्चित करती है।

116. (D) प्रमुख वैश्विक समुद्री मार्गों के केंद्र के रूप में इसकी भूमिका
हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व इसके माध्यम से गुजरने वाले विशाल वैश्विक समुद्री संचार मार्गों पर आधारित है। यह महासागर पश्चिम में ऊर्जा संपन्न मध्य पूर्व को पूर्व में उभरती एशियाई अर्थव्यवस्थाओं से जोड़ने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग प्रदान करता है। विश्व के कुल व्यापार और ऊर्जा परिवहन का बड़ा हिस्सा इसके रणनीतिक चोकपॉइंट्स से होकर गुजरता है। इस क्षेत्र पर प्रभाव बनाए रखना वैश्विक महाशक्तियों हेतु अनिवार्य है क्योंकि यह उनकी आर्थिक सुरक्षा और भू-रणनीतिक हितों को सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

117. (A) ज्यामितीय सीमा
ज्यामितीय सीमा वह राजनीतिक विभाजन है जो किसी भी प्राकृतिक भौतिक लक्षण या सांस्कृतिक विभाजनों का अनुसरण करने के स्थान पर सीधी रेखाओं, अक्षांशों या देशांतरों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। अमेरिका और कनाडा के मध्य 49वीं समानांतर रेखा इसका श्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ एक बड़ी दूरी तक सीमा बिल्कुल सीधी रेखा के रूप में है। इस प्रकार की सीमाएँ अक्सर उन क्षेत्रों में बनाई जाती हैं जहाँ सघन बसावट नहीं होती। यह प्रशासनिक सरलता प्रदान करती है किंतु स्थानीय भूगोल की उपेक्षा भी कर सकती है।

118. (B) औपचारिक प्रदेश एकरूपता प्रदर्शित करते हैं, जबकि कार्यात्मक प्रदेश अंतःक्रिया पर केंद्रित होते हैं।
प्रादेशिक नियोजन में औपचारिक और कार्यात्मक प्रदेशों के मध्य का अंतर उनके परिसीमन के आधार में निहित है। औपचारिक प्रदेश साझा भौतिक या सांस्कृतिक गुणों, जैसे जलवायु या भाषा, में स्थिरता और एकरूपता पर आधारित होते हैं। इसके विपरीत, कार्यात्मक प्रदेश गतिशीलता और अंतर्संबंधों पर केंद्रित होते हैं, जहाँ केंद्रीय नोड और उसके प्रभाव क्षेत्र के मध्य वस्तुओं और सेवाओं का निरंतर प्रवाह होता है। नियोजन की सफलता हेतु इन दोनों प्रकार के प्रदेशों की पहचान आवश्यक है ताकि क्षेत्रीय समस्याओं का विश्लेषण किया जा सके।

119. (D) I, II और III
भारत में प्रादेशिक नियोजन का समृद्ध संस्थागत ढांचा रहा है। योजना आयोग ने दशकों तक पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम

NODIA

यह न केवल नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करती है, बल्कि तकनीकी नवाचार हेतु आवश्यक धन भी उपलब्ध कराती है, जो दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।

83. (A) यूरेशिया का विशाल भूभाग
हैल्फोर्ड मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत का मूल तर्क था कि विश्व शक्ति का भविष्य यूरेशिया के विशाल आंतरिक भूभाग पर नियंत्रण में निहित है। उन्होंने इस क्षेत्र को 'विश्व द्वीप' का हृदय माना और तर्क दिया कि इसकी अपार संसाधन क्षमता और समुद्री आक्रमणों से सुरक्षा इसे प्रभुत्व हेतु आदर्श मंच बनाती है। मैकिन्डर का मानना था कि जो शक्ति इस क्षेत्र को पूरी तरह एकीकृत और नियंत्रित कर लेगी, वह अंततः शेष विश्व पर अपना राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व स्थापित करने में सक्षम होगी।

84. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
21वीं सदी में हिंद महासागर का महत्व इसकी रणनीतिक स्थिति और वैश्विक वाणिज्य में इसकी भूमिका के कारण चरम पर है। विश्व का अधिकांश व्यापारिक यातायात, विशेष रूप से ऊर्जा और कच्चा माल, इस महासागर के प्रमुख जलमार्गों से होकर गुजरता है। यह महासागर पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाला अनिवार्य सेतु है, जिसके माध्यम से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला संचालित होती है। इन मार्गों की सुरक्षा और उन पर नियंत्रण सभी वैश्विक महाशक्तियों के लिए सर्वोच्च भू-राजनीतिक प्राथमिकता बन गई है।

85. (C) एक प्रमुख महानगरीय समाचार पत्र का प्राथमिक वितरण क्षेत्र।
कार्यात्मक प्रदेश एक नोड या केंद्र के चारों ओर संगठित होता है, जहाँ से विशिष्ट सेवाओं का प्रवाह होता है। महानगरीय समाचार पत्र का वितरण क्षेत्र इसका बेहतरीन उदाहरण है, क्योंकि यह केंद्रीय मुद्रण स्थल से आसपास के क्षेत्रों तक सूचनाओं के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है। यह प्रदेश किसी भौतिक समरूपता पर आधारित नहीं है, बल्कि एक सक्रिय नेटवर्क और सेवा की पहुँच द्वारा परिभाषित होता है। जैसे-जैसे केंद्र से दूरी और परिवहन समय बढ़ता है, इस प्रदेश का प्रभाव स्वाभाविक रूप से कम होता जाता है।

86. (D) वायु शक्ति और समुद्री शक्ति
मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत की आलोचना रही है कि उन्होंने स्थलीय शक्ति पर तो बल दिया, किंतु उभरती वायु शक्ति और विकसित समुद्री शक्ति की क्षमताओं को कम करके आंका। आधुनिक युद्ध तकनीकों और लंबी दूरी की मिसाइलों के विकास ने हर्टलैंड की उस 'प्राकृतिक सुरक्षा' को समाप्त कर दिया है जिस पर मैकिन्डर ने भरोसा किया था। आज, भौगोलिक बाधाओं के बावजूद वायु मार्ग और उन्नत नौसैनिक बेड़े विश्व के किसी भी सुदूर हिस्से तक प्रभाव डालने में सक्षम हैं, जिससे रणनीतिक संतुलन बदल गया है।

87. (A) नदी घाटी पर आधारित प्रादेशिक नियोजन
भारत में दामोदर घाटी निगम की स्थापना नदी घाटी आधारित प्रादेशिक नियोजन का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह अमेरिका की टेनेसी वैली अथॉरिटी के मॉडल पर आधारित था, जिसका उद्देश्य पूरी नदी घाटी के संसाधनों का एकीकृत विकास करना है। इसमें बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, जल-विद्युत उत्पादन और क्षेत्र के समग्र आर्थिक उत्थान को एक साथ जोड़ा गया है। यह दृष्टिकोण भौगोलिक सीमाओं के स्थान पर प्राकृतिक बेसिन को नियोजन की इकाई मानता है, जिससे संसाधनों का अधिक कुशल और वैज्ञानिक प्रबंधन सुनिश्चित होता है।

88. (B) विस्तारित
विस्तारित या लंबा राज्य वह है जिसकी चौड़ाई की तुलना में उसकी लंबाई बहुत अधिक होती है। चिली और वियतनाम इसके शास्त्रीय उदाहरण हैं। इस प्रकार की आकृति वाले राज्यों को कई भौगोलिक और प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। राजधानी और सुदूर क्षेत्रों के मध्य की अत्यधिक दूरी आंतरिक संचार और परिवहन को कठिन बना देती है। इसके अतिरिक्त, ऐसी आकृति के कारण राज्य में विविध जलवायु पाई जाती है, जो कभी-कभी राष्ट्रीय एकीकरण में बाधा बन सकती है और सीमाओं की सुरक्षा जटिल करती है।

89. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राज्य की शक्ति विभिन्न भौगोलिक तत्वों के समन्वय से बनती है। भौतिक तत्वों में क्षेत्रीय आकृति, जैसे संहत होना, प्रशासनिक सुगमता प्रदान करती है। मानवीय तत्वों में राष्ट्रीय पहचान और एकता की भावना राज्य को आंतरिक मजबूती देती है। आर्थिक तत्वों के अंतर्गत विकसित औद्योगिक क्षेत्र देश की समृद्धि को निर्धारित करते हैं। अवस्थितिजन्य तत्वों में देश का स्थल-रुद्ध होना या रणनीतिक मार्गों पर स्थित होना उसके व्यापारिक और सुरक्षा हितों को प्रभावित करता है। ये सभी तत्व राष्ट्रीय शक्ति को परिभाषित करते हैं।

90. (D) यह एक सटीक, कानूनी रूप से परिभाषित रेखा है।
राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' एक विस्तृत और संक्रमणकालीन क्षेत्र है, न कि सटीक कानूनी रेखा। यह दो राज्यों या संस्कृतियों के मध्य एक बफर ज़ोन के रूप में कार्य करता है जहाँ प्रभाव धीरे-धीरे परिवर्तित होता है। ऐतिहासिक रूप से, सीमांत वे क्षेत्र थे जो विस्तार हेतु खुले थे। इसके विपरीत, एक 'सीमा' आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय कानून द्वारा मान्यता प्राप्त एक सुस्पष्ट और रेखीय इकाई होती है जो संप्रभुता के सटीक अंत को दर्शाती है। सीमांत एक ज़ोन है, जबकि सीमा एक रेखीय विभाजन है।

91. (A) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
रावी और ब्यास नदियों के अधिशेष जल का बंटवारा भारत के उत्तरी राज्यों, विशेष रुप से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के मध्य जटिल विवाद है। यह संघर्ष मुख्य रूप से कृषि सिंचाई हेतु जल की बढ़ती मांग और ऐतिहासिक समझौतों के क्रियान्वयन से जुड़ा है। सतलुज-यमुना लिंक नहर परियोजना भी इसी विवाद का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जल को हरियाणा और राजस्थान तक पहुँचाना है। इन राज्यों के आर्थिक हित कृषि पर निर्भर हैं, जिससे जल आवंटन का यह मुद्दा अत्यंत संवेदनशील बना हुआ है।

Downloaded from www.pdf.tube

53. (D) भावी पीढ़ियां
सतत विकास की मूल अवधारणा अंतर-पीढ़ीगत न्याय के सिद्धांत पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करना है कि वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके, किंतु ऐसा करते समय भावी पीढ़ियों के हितों की उपेक्षा न हो। यह दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के विवेकपूर्ण प्रबंधन पर बल देता है ताकि आने वाली नस्लों को एक समृद्ध ग्रह मिल सके। यह भविष्य के प्रति हमारे नैतिक उत्तरदायित्व को दर्शाता है।

54. (A) केवल II
भू-राजनीतिक सिद्धांतों में हर्टलैंड और रिमलैंड की अवधारणाएं भिन्न रणनीतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। हर्टलैंड सिद्धांत हैल्फोर्ड मैकिन्डर द्वारा दिया गया था। स्पाइकमैन ने इसके प्रत्युत्तर में रिमलैंड सिद्धांत प्रस्तावित किया, जिसमें उन्होंने यूरेशिया के तटीय क्षेत्रों के रणनीतिक महत्व को रेखांकित किया। मैकिन्डर ने हर्टलैंड को समुद्री आक्रमणों से सुरक्षित माना था, जबकि स्पाइकमैन का मानना था कि तटीय क्षेत्रों पर नियंत्रण ही वास्तव में विश्व पर प्रभुत्व की कुंजी है।

55. (B) मात्रात्मक या सांख्यिकीय विधियाँ
प्रादेशिक परिसीमन में मानव विकास सूचकांक जैसे संयुक्त संकेतकों का उपयोग मात्रात्मक विधियों के अंतर्गत आता है। ये विधियाँ सामाजिक-आर्थिक डेटा को गणितीय सूत्रों के माध्यम से एकल स्कोर में बदल देती हैं, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के मध्य तुलना सुगम हो जाती है। यह दृष्टिकोण अधिक वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक माना जाता है क्योंकि यह ठोस साक्ष्यों पर आधारित होता है। इससे नियोजन प्रक्रिया में पारदर्शिता आती है और प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की सटीक पहचान संभव होती है।

56. (C) तेल और गैस
हॉर्मुज जलडमरूमध्य हिंद महासागर क्षेत्र का अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण चोकपॉइंट है। यह फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ता है और वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा हेतु धमनी के रूप में कार्य करता है। विश्व के कुल कच्चे तेल के समुद्री व्यापार का लगभग एक-तिहाई हिस्सा इसी संकीर्ण जलमार्ग से गुजरता है। इस क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता वैश्विक तेल कीमतों में भारी उछाल ला सकती है, जो विश्व की अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

57. (D) विकास योजनाएं तैयार करने और लागू करने के लिए नामित एक स्थानिक इकाई।
नियोजन प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र है जिसे विशेष रूप से आर्थिक और सामाजिक विकास के कार्यक्रमों हेतु सीमांकित किया जाता है। यह प्रदेश अक्सर प्रशासनिक सीमाओं के साथ मेल खा सकता है, किंतु इसकी मुख्य पहचान इसके विकास उद्देश्यों और संसाधनों की विशिष्टताओं से होती है। यहाँ स्थानीय समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है और उपलब्ध संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग हेतु रणनीतियाँ बनाई जाती हैं। यह क्षेत्रीय असंतुलन दूर करने हेतु एक अनिवार्य स्थानिक ढांचा है।

58. (A) पूरे देश में एक एकल, समान संस्कृति को थोपना।
भारत में प्रादेशिक नियोजन का लक्ष्य क्षेत्रीय विविधता का सम्मान करते हुए प्रगति सुनिश्चित करना है। इसका उद्देश्य अंतर-क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना और संसाधनों का सतत उपयोग करना है। एकल संस्कृति थोपना इसका उद्देश्य नहीं है, क्योंकि भारतीय नियोजन सांस्कृतिक बहुलता को प्राथमिकता देता है। नियोजन का मुख्य ध्यान बुनियादी ढांचे, गरीबी उन्मूलन और समान अवसरों के सृजन पर रहता है ताकि संतुलित राष्ट्रीय विकास सुनिश्चित हो सके।

59. (B) II, III, I, IV
प्रादेशिक नियोजन एक चरणबद्ध प्रक्रिया है जो तार्किक क्रम का पालन करती है। सर्वप्रथम, विशिष्ट उद्देश्यों हेतु उपयुक्त नियोजन प्रदेश का परिसीमन किया जाता है। इसके उपरांत, उस क्षेत्र हेतु स्पष्ट लक्ष्यों और विकास के उद्देश्यों को निर्धारित किया जाता है। तृतीय चरण में, तैयार की गई योजनाओं का धरातल पर कार्यान्वयन किया जाता है। अंत में, योजना के प्रभावों का नियमित मूल्यांकन और निगरानी की जाती है ताकि आवश्यक सुधार किए जा सकें।

60. (B) वे हमेशा प्राकृतिक भौतिक विशेषताओं पर आधारित होती हैं।
राजनीतिक भूगोल में सीमाएं कानूनी परिघटनाएं हैं जो संप्रभु राज्यों के अधिकार क्षेत्र को विभाजित करती हैं। वे रेखीय होती हैं और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों द्वारा मान्यता प्राप्त होती हैं। यह कहना अशुद्ध है कि सीमाएं सदैव प्राकृतिक भौतिक विशेषताओं पर आधारित होती हैं, क्योंकि कई सीमाएं कृत्रिम या ज्यामितीय होती हैं। आधुनिक सीमाएं अक्सर ऐतिहासिक समझौतों, युद्धों या सांस्कृतिक विभाजनों का परिणाम होती हैं, न कि केवल नदियों या पर्वतों जैसी प्राकृतिक बाधाओं का।

61. (A) जैविक राज्य सिद्धांत
फ्रेडरिक रेटजेल द्वारा प्रतिपादित जैविक राज्य सिद्धांत राज्य की तुलना जीवित जीव से करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, एक शक्तिशाली राज्य को बढ़ती आवश्यकताओं हेतु निरंतर अपने क्षेत्र का विस्तार करने की आवश्यकता होती है। रेटजेल ने 'लेबेन्सराउम' या 'रहने के स्थान' की अवधारणा को पेश किया, जो यह तर्क देता है कि क्षेत्रीय विस्तार राज्य की शक्ति का प्रतीक है। यह विचार बाद में विस्तारवादी भू-राजनीतिक नीतियों का आधार बना।

62. (D) गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान
नर्मदा जल विवाद भारत के प्रमुख अंतर-राज्यीय जल संघर्षों में से एक है, जिसमें चार राज्य—गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान—सम्मिलित हैं। यह विवाद मुख्य रूप से नर्मदा नदी पर बांधों के निर्माण, विशेष रूप से सरदार सरोवर परियोजना, और जल आवंटन को लेकर था। इस मुद्दे में विस्थापित आबादी के पुनर्वास और पर्यावरणीय चिंताओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विवाद सुलझाने हेतु गठित न्यायाधिकरण ने विभिन्न राज्यों हेतु जल के हिस्से निर्धारित किए।

101. (C) परवर्ती सीमा
परवर्ती सीमा एक राजनीतिक रेखा है जो किसी क्षेत्र में सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के विकसित होने के उपरांत स्थापित की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य भाषाई, धार्मिक या जातीय समूहों के मध्य के अंतरों को सम्मान देना और उनके बीच शांतिपूर्ण अलगाव सुनिश्चित करना होता है। यह सीमा प्राकृतिक बाधाओं के स्थान पर मानवीय भूगोल के प्रतिरूपों का अनुसरण करती है। भारत और पाकिस्तान का विभाजन धार्मिक आधार पर परवर्ती सीमा का प्रमुख उदाहरण है, जो सांस्कृतिक पहचान की रक्षा के उद्देश्य से किया गया था।

102. (D) यह एक संकीर्ण मार्ग है जिसे नियंत्रित किया जा सकता है, जो वैश्विक व्यापार को प्रभावित करता है।
भू-राजनीति में 'चोक पॉइंट' एक संकीर्ण जलमार्ग होता है जहाँ से विशाल मात्रा में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सैन्य यातायात गुजरता है। मलक्का जलडमरूमध्य जैसे स्थान रणनीतिक होते हैं क्योंकि इनके माध्यम से होने वाले प्रवाह को नियंत्रित करके कोई भी शक्ति वैश्विक अर्थव्यवस्था पर दबाव डाल सकती है। इन मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं हेतु अनिवार्य है क्योंकि यहाँ कोई भी अवरोध वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर सकता है। इनकी अवस्थिति ही इन्हें अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष का केंद्र बनाती है।

103. (A) महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, ओडिशा और मध्य प्रदेश
गोदावरी नदी जल विवाद भारत के विशालतम अंतर-राज्यीय नदी विवादों में से एक है क्योंकि इस नदी का बेसिन अत्यंत विस्तृत है। इसमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और मध्य प्रदेश जैसे कई राज्य सम्मिलित हैं। विवाद मुख्य रूप से सिंचाई परियोजनाओं, बांधों के निर्माण और जल आवंटन के अधिकारों को लेकर रहा है। इतने राज्यों के सम्मिलित होने के कारण यह विवाद जटिल हो गया है, जिसके समाधान हेतु गोदावरी जल विवाद न्यायाधिकरण ने विस्तृत दिशा-निर्देश और हिस्सेदारी निर्धारित की है।

104. (B) संभावित क्षेत्रीय अलगाव और उच्च आंतरिक परिवहन लागत।
चिली जैसे अत्यधिक विस्तारित राज्यों को अपनी विशिष्ट भौगोलिक आकृति के कारण गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। राजधानी का सुदूर प्रांतों से संपर्क बनाए रखना भौगोलिक और आर्थिक रूप से कठिन होता है, जिससे प्रशासनिक नियंत्रण में बाधा आ सकती है। लंबी परिवहन दूरियाँ वस्तुओं और सेवाओं की लागत बढ़ा देती हैं, जो पूरे देश के एकीकृत आर्थिक विकास को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त, सुदूर क्षेत्रों में क्षेत्रीय पहचान प्रबल हो सकती है, जो कभी-कभी केंद्रीय सत्ता के विरुद्ध अलगाववादी भावनाओं को जन्म देती है।

105. (C) विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक करना।
नियोजन प्रदेश की अवधारणा इस मान्यता पर आधारित है कि देश के भीतर विकास का वितरण कभी समान नहीं होता। कुछ क्षेत्रों को प्राकृतिक संसाधनों या ऐतिहासिक कारणों से बढ़त मिलती है, जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। नियोजन प्रदेशों का परिसीमन इन पिछड़े क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पहचानने और उनके लिए लक्षित विकास कार्यक्रम बनाने में मदद करता है। इसका अंतिम लक्ष्य संसाधनों का न्यायसंगत वितरण करना और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना है ताकि पूरे देश का संतुलित सामाजिक-आर्थिक उत्थान सुनिश्चित हो सके।

106. (D) धुरी
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने 1904 में रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी के समक्ष ऐतिहासिक शोध पत्र प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक "इतिहास की भौगोलिक धुरी" था। इस पत्र में उन्होंने हर्टलैंड की अवधारणा प्रस्तुत की और तर्क दिया कि यूरेशिया का आंतरिक भाग वैश्विक राजनीति की धुरी है। उनका मानना था कि इस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताएं विश्व इतिहास के चक्र को निर्धारित करती हैं। यह शोध पत्र आधुनिक भू-राजनीति का आधार स्तंभ माना जाता है, जिसने 20वीं सदी की रणनीतिक सोच को मौलिक रूप से प्रभावित किया।

107. (A) एक देश में प्रशासनिक प्रभागों की संख्या
विकास के संकेतक वे मापदंड हैं जो समाज की गुणवत्ता, नागरिकों के कल्याण और आर्थिक प्रगति के वास्तविक स्तर को मापते हैं। साक्षरता दर, शिशु मृत्यु दर और सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता जैसे संकेतक मानव जीवन की स्थिति में आए सकारात्मक परिवर्तनों को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, देश में प्रशासनिक प्रभागों या जिलों की संख्या केवल एक संगठनात्मक ढांचा है और यह सीधे तौर पर विकास या नागरिकों के सुख-सुविधाओं के स्तर को प्रतिबिंबित नहीं करती। प्रशासनिक विभाजन केवल शासन की सुविधा हेतु किए जाते हैं, न कि प्रगति माप हेतु।

108. (C) राजनीतिक भूगोल
राजनीतिक भूगोल के अंतर्गत क्षेत्र और रेखा के मध्य का अंतर अत्यंत मौलिक है क्योंकि यह संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की पहचान करता है। 'क्षेत्र' राज्य के उस विस्तृत भूभाग को दर्शाता है जहाँ उसकी सत्ता प्रभावी होती है, जबकि 'रेखा' उस सटीक अंत को चिह्नित करती है जहाँ एक राज्य का अधिकार क्षेत्र समाप्त होता है। इन दोनों का स्पष्ट निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, सुरक्षा और कानून व्यवस्था हेतु अनिवार्य है। यह भौगोलिक समझ ही आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के क्षेत्रीय अस्तित्व और उनके आपसी संबंधों को परिभाषित करती है।

109. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
निकोलस स्पाइकमैन का रिमलैंड सिद्धांत स्पष्ट रूप से मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत के जवाब में विकसित किया गया था। स्पाइकमैन ने मैकिन्डर की इस बात से असहमति जताई कि यूरेशिया का दुर्गम आंतरिक भाग ही विश्व शक्ति का स्रोत है। उनका तर्क था कि यूरेशिया के तटवर्ती क्षेत्र, जिन्हें उन्होंने 'रिमलैंड' कहा, अपनी द्वि-आयामी प्रकृति के कारण अधिक शक्तिशाली हैं। स्पाइकमैन के अनुसार, इन तटीय क्षेत्रों पर नियंत्रण ही वास्तव में यूरेशिया और अंततः पूरी दुनिया पर प्रभुत्व स्थापित करने की रणनीतिक कुंजी प्रदान करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

क्षेत्र समरूपता के आधार पर ही परिभाषित किया जाता है। यह दृष्टिकोण भौगोलिक विश्लेषण को एक स्थिर आधार प्रदान करता है, जिससे नीति निर्माताओं को उस विशेष विशेषता से जुड़ी समस्याओं हेतु एक समान रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता मिलती है।

129. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
यह सोचना अशुद्ध है कि सतत विकास केवल पर्यावरणविदों का विषय है। वास्तव में, यह व्यापक और बहुआयामी अवधारणा है जिसमें अर्थशास्त्री, सामाजिक कार्यकर्ता और नीति निर्माता सभी सम्मिलित हैं। सतत विकास का मूल उद्देश्य ऐसा संतुलन बनाना है जहाँ आर्थिक प्रगति और सामाजिक कल्याण पर्यावरण की सुरक्षा के साथ चलें। इसका मुख्य लक्ष्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूर्ण करना है कि भावी पीढ़ियों के संसाधनों से समझौता न हो। यह पूरी मानवता के दीर्घकालिक अस्तित्व और समृद्धि से जुड़ा अनिवार्य वैश्विक दर्शन है।

130. (D) महाराष्ट्र और तेलंगाना
बभली बैराज मुद्दा भारत के दो पड़ोसी राज्यों, महाराष्ट्र और तेलंगाना के मध्य गोदावरी नदी के जल के उपयोग को लेकर प्रमुख जल विवाद रहा है। महाराष्ट्र द्वारा गोदावरी की मुख्य धारा पर इस बैराज के निर्माण ने निचले राज्यों में चिंता उत्पन्न कर दी थी, विशेष रूप से जल के प्रवाह में कमी और श्रीराम सागर परियोजना पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को लेकर। इस विवाद ने अंतर-राज्यीय नदी जल प्रबंधन के कानूनी और तकनीकी पहलुओं को उजागर किया। अंततः, सर्वोच्च न्यायालय ने जल आवंटन और बैराज संचालन हेतु विशिष्ट दिशा-निर्देश जारी किए।

131. (B) विकास योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त स्थानिक ढांचा तैयार करना।
नियोजन प्रदेश के परिसीमन का मुख्य लक्ष्य ऐसा भौगोलिक आधार तैयार करना है जहाँ विकास नीतियों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके। यह प्रदेश प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और आर्थिक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करता है। यहाँ की सीमाएँ अक्सर प्रशासनिक सीमाओं से परे हो सकती हैं ताकि विशिष्ट समस्याओं, जैसे सूखा प्रवणता, का वैज्ञानिक तरीके से समाधान किया जा सके। एक सुसंगत नियोजन प्रदेश यह सुनिश्चित करता है कि निवेश और विकास कार्यक्रम अपने लक्षित परिणामों को प्राप्त करें और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करें।

132. (C) यह कानूनी रूप से परिभाषित एक रेखा है।
सीमा और सीमांत के मध्य का सर्वाधिक स्पष्ट अंतर उनके स्वरूप में निहित है। 'सीमा' आधुनिक राष्ट्र-राज्य की एक कानूनी परिघटना है, जो सटीक रेखीय इकाई के रूप में दो संप्रभुताओं के मध्य के अलगाव को दर्शाती है। यह अंतर्राष्ट्रीय संधियों और मानचित्रों पर स्पष्ट रूप से अंकित होती है। इसके विपरीत, ' सीमांत' एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र होता है जो संक्रमण की स्थिति में रहता है और जहाँ कानून व्यवस्था अक्सर अस्पष्ट होती है। सीमा का विकास राज्य के क्षेत्रीय नियंत्रण को अधिक संगठित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त बनाता है।

133. (D) उभयचर
निकोलस स्पाइकमैन ने रिमलैंड को एक 'उभयचर' क्षेत्र के रूप में वर्णित किया क्योंकि यह भूमि और समुद्र के संगम पर स्थित है। इस क्षेत्र की विशिष्टता यह है कि इसे स्थलीय और समुद्री दोनों प्रकार की शक्तियों से सुरक्षा और प्रभाव का सामना करना पड़ता है। अपनी इस दोहरी प्रकृति के कारण, रिमलैंड के देशों को शक्तिशाली नौसेना और मजबूत थल सेना दोनों बनाए रखनी पड़ती है। स्पाइकमैन का मानना था कि यही उभयचर गुण रिमलैंड को रणनीतिक रूप से विश्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और निर्णायक क्षेत्र बनाता है।

134. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजनीतिक भूगोल में किसी राज्य के क्षेत्र की आकृति मौलिक भौतिक तत्व मानी जाती है क्योंकि यह सीधे तौर पर शासन की प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। एक संहत आकृति प्रशासनिक एकता और सुरक्षा प्रबंधन को सुगम बनाती है, जबकि विस्तारित या खंडित आकृतियाँ संचार और रक्षा में बड़ी बाधाएँ उत्पन्न कर सकती हैं। राज्य की आकृति यह भी निर्धारित करती है कि राजधानी से सुदूर क्षेत्रों तक विकास के लाभ कितनी तीव्र गति से पहुँचते हैं। इसलिए, आकृति का अध्ययन राज्य की आंतरिक स्थिरता को समझने हेतु अनिवार्य है।

135. (B) योजना आयोग
स्वतंत्रता के उपरांत भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास का दायित्व 'योजना आयोग' को सौंपा गया था, जिसकी स्थापना 1950 में हुई थी। इस संस्था का मुख्य कार्य देश के संसाधनों का आकलन करना और उनके संतुलित उपयोग हेतु रणनीतिक पंचवर्षीय योजनाएँ तैयार करना था। योजना आयोग ने दशकों तक केंद्रीय नियोजन निकाय के रूप में कार्य किया, जिसने बुनियादी ढांचे, कृषि और उद्योगों के विकास हेतु राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को निर्धारित किया। यद्यपि अब इसके स्थान पर नीति आयोग कार्यरत है, किंतु भारत के आर्थिक परिदृश्य के निर्माण में इसकी भूमिका ऐतिहासिक रही है।

136. (A) औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा अफ्रीका में खींची गई सीधी रेखा वाली सीमाएँ।
अध्यारोपित सीमा का प्रमुख उदाहरण अफ्रीका के मानचित्र पर देखी जाने वाली वे सीधी रेखाएँ हैं जो 19वीं सदी के अंत में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा खींची गई थीं। इन सीमाओं को निर्धारित करते समय स्थानीय कबीलों, भाषाई समूहों या भौगोलिक वास्तविकताओं की उपेक्षा की गई। इसके परिणामस्वरूप, कई सांस्कृतिक समुदाय दो या अधिक देशों में विभाजित हो गए, जिससे स्वतंत्रता के उपरांत भी इन क्षेत्रों में निरंतर जातीय संघर्ष और सीमा विवाद बने रहे। यह उदाहरण दर्शाता है कि कैसे कृत्रिम सीमाएँ समाज की स्वाभाविक पहचान को बाधित कर सकती हैं।

NODIA

से संतुलित क्षेत्रीय विकास की नींव रखी और संसाधनों के आवंटन को निर्देशित किया। 2015 में स्थापित नीति आयोग अब रणनीतिक थिंक टैंक के रूप में कार्य करता है, जो सहकारी संघवाद और नवाचार को बढ़ावा देता है। इन सभी निकायों का मूल उद्देश्य पूरे देश में विकास की क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना और संसाधनों का कुशल प्रबंधन करना है जिससे समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों को लाभ मिल सके।

120. (D) आंतरिक या सीमांत अर्धचंद्राकार क्षेत्र
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा प्रतिपादित 'रिमलैंड' की अवधारणा मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत में वर्णित 'आंतरिक अर्धचंद्राकार' क्षेत्र के साथ मेल खाती है। मैकिन्डर ने इस क्षेत्र को हर्टलैंड की परिधि माना था, जबकि स्पाइकमैन ने इसे ही वैश्विक प्रभुत्व का वास्तविक केंद्र घोषित कर दिया। इसमें यूरेशिया के तटवर्ती क्षेत्र सम्मिलित हैं जो समुद्री और स्थलीय दोनों प्रभावों के संगम स्थल हैं। स्पाइकमैन का मानना था कि यह क्षेत्र हर्टलैंड को संतुलित और नियंत्रित करने हेतु रणनीतिक रूप से अधिक निर्णायक और शक्तिशाली है।

121. (A) II, III, IV, I
भू-राजनीतिक विचारकों के सिद्धांतों का विकास 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में हुआ। फ्रेडरिक रेटजेल ने 1897 में जैविक राज्य का विचार दिया, जो राज्य के विस्तारवाद पर आधारित था। अल्फ्रेड महन ने 1890 के दशक में समुद्री शक्ति के महत्व को स्थापित किया। इसके पश्चात 1904 में हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपना प्रसिद्ध हर्टलैंड सिद्धांत प्रस्तुत किया। सबसे अंत में, 1942 में निकोलस स्पाइकमैन ने रिमलैंड सिद्धांत के माध्यम से इन विचारों को नई रणनीतिक दिशा प्रदान की, जो शीत युद्ध की नीतियों का आधार बनी।

122. (A) पूर्ववर्ती
पूर्ववर्ती सीमा वह राजनीतिक विभाजन है जिसे किसी क्षेत्र में घनी आबादी और विकसित सांस्कृतिक परिदृश्य के उभरने से बहुत पहले स्थापित कर दिया जाता है। ये सीमाएँ अक्सर निर्जन प्रदेशों या प्राकृतिक बाधाओं से होकर गुजरती हैं और बाद में वहाँ बसने वाले समुदायों की सामाजिक और राजनीतिक पहचान को आकार प्रदान करती हैं। ऐसी सीमाओं की स्थापना अक्सर संधियों के आधार पर होती है। चूँकि ये सीमाएँ पहले से मौजूद सांस्कृतिक ढांचों को विभाजित नहीं करतीं, इसलिए इनमें बाद में होने वाले विवादों की संभावना कम होती है।

123. (D) आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और छत्तीसगढ़
पोलावरम परियोजना गोदावरी नदी पर स्थित बहुउद्देश्यीय राष्ट्रीय सिंचाई परियोजना है, जो आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और छत्तीसगढ़ राज्यों के मध्य एक विवादित मुद्दा रही है। इस विवाद का मुख्य कारण बांध की ऊँचाई और उससे होने वाला जल-भराव है, जिससे पड़ोसी राज्यों के जनजातीय क्षेत्रों के डूबने का भय है। ओडिशा और छत्तीसगढ़ ने जल प्रवाह में परिवर्तन और पुनर्वास की समस्याओं पर आपत्ति जताई है। यह परियोजना अंतर-राज्यीय सहयोग, पर्यावरणीय सुरक्षा और विकास लक्ष्यों के मध्य जटिल संतुलन को दर्शाती है।

124. (D) राज्य की संप्रभुता की सटीक सीमाओं की स्थापना।
राजनीतिक परिदृश्य में 'सीमांत' से 'सीमा' में परिवर्तन आधुनिक राष्ट्र-राज्य के विकास की अनिवार्य प्रक्रिया है। ऐतिहासिक रूप से, सीमांत राज्यों के मध्य के अनिश्चित क्षेत्र थे जहाँ संप्रभुता स्पष्ट नहीं थी। जैसे-जैसे राज्यों ने अपने क्षेत्र पर अधिक नियंत्रण प्राप्त किया और अंतर्राष्ट्रीय कानून विकसित हुए, इन विस्तृत क्षेत्रों को सटीक रेखीय सीमाओं में परिवर्तित कर दिया गया। यह परिवर्तन न केवल संप्रभुता के सटीक अंत को दर्शाता है, बल्कि कानून व्यवस्था के क्रियान्वयन और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा हेतु एक आवश्यक प्रशासनिक कदम है।

125. (C) मानव गरीबी सूचकांक
मानव गरीबी सूचकांक विकास को मापने का एक नकारात्मक दृष्टिकोण है जो जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं में होने वाली वंचना पर ध्यान केंद्रित करता है। यह लंबी उम्र, ज्ञान और जीवन स्तर के आधार पर यह आकलन करता है कि समाज का कितना हिस्सा प्रगति की मुख्यधारा से बाहर रह गया है। यह सूचकांक केवल औसत उपलब्धियों के स्थान पर उन लोगों की स्थिति को उजागर करता है जो विकास के लाभों से वंचित हैं, जिससे गरीबी उन्मूलन की लक्षित नीतियां बनाना संभव होता है। यह सामाजिक न्याय का एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

126. (D) देश का बुनियादी ढांचा, जैसे बंदरगाह और रेलवे
किसी राज्य की शक्ति का 'आर्थिक तत्व' उसकी उत्पादन और वितरण क्षमता को सुगम बनाने वाले भौतिक ढांचे से गहराई से जुड़ा होता है। आधुनिक बंदरगाह, व्यापक रेलवे नेटवर्क और अन्य परिवहन सुविधाएँ न केवल घरेलू व्यापार को गति देती हैं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण हेतु भी अनिवार्य हैं। यह बुनियादी ढांचा संसाधनों की आवाजाही को सुलभ और तीव्र बनाता है, जिससे देश की औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है। एक सुदृढ़ ढांचा राज्य को संकट के समय तेजी से संसाधनों को जुटाने और आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में सक्षम बनाता है।

127. (A) इसकी विशाल, स्थल-रुद्ध प्रकृति और पर्वत या मरुस्थल की सुरक्षा।
हैल्फोर्ड मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत के अनुसार, 'धुरी क्षेत्र' की सबसे बड़ी रणनीतिक शक्ति इसकी भौगोलिक अभेद्यता थी। यह क्षेत्र यूरेशिया के केंद्र में स्थित है और चारों ओर से विशाल पर्वत श्रृंखलाओं, मरुस्थलों और उत्तरी बर्फ से आवृत्त है, जिससे समुद्री नौसेनाओं का यहाँ पहुँचना असंभव था। इसके अतिरिक्त, यहाँ की नदियाँ समुद्र में गिरने के स्थान पर आंतरिक झीलों में गिरती हैं, जो इसे नौसैनिक आक्रमणों से एक 'प्राकृतिक सुरक्षा' प्रदान करती हैं। यही कारण था कि मैकिन्डर ने इसे स्थलीय शक्ति का केंद्र माना।

128. (C) औपचारिक प्रदेश
औपचारिक प्रदेश के परिसीमन हेतु 'समरूपता' सबसे महत्वपूर्ण और प्राथमिक मापदंड है। इस विधि के अंतर्गत उन क्षेत्रों की पहचान की जाती है जहाँ कोई विशिष्ट भौगोलिक, आर्थिक या सामाजिक विशेषता पूरे क्षेत्र में एक समान रूप से पाई जाती है। उदाहरण के लिए, एक विशिष्ट जलवायु क्षेत्र या भाषाई

NODIA

92. (C) आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय
सतत विकास की सफलता इसके तीन परस्पर निर्भर स्तंभों— आर्थिक वृद्धि, सामाजिक समता और पर्यावरणीय अखंडता— के प्रभावी एकीकरण पर आधारित है। इसका उद्देश्य संतुलित प्रणाली का निर्माण करना है जहाँ आर्थिक लाभ न्यायसंगत रूप से समाज के सभी वर्गों तक पहुँचें, जबकि प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन इस प्रकार हो कि वे भविष्य हेतु सुरक्षित रहें। इनमें से किसी भी एक आयाम की अनदेखी दीर्घकालिक अस्थिरता उत्पन्न कर सकती है। यह एकीकृत दृष्टिकोण ही सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की गारंटी प्रदान करता है।

93. (D) लक्षित विकास रणनीतियों के लिए सुसंगत क्षेत्रों की पहचान करना।
प्रादेशिक नियोजन के अंतर्गत परिसीमन का मुख्य लक्ष्य देश को ऐसी छोटी स्थानिक इकाइयों में विभाजित करना है जो अपनी विशेषताओं में सुसंगत हों। यह प्रक्रिया नीति निर्माताओं को विशिष्ट क्षेत्रों की अनूठी समस्याओं और उनकी विकास क्षमता को समझने में मदद करती है। इससे संसाधनों का आवंटन अधिक प्रभावी होता है और ऐसी रणनीतियाँ बनाई जा सकती हैं जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हों। यह दृष्टिकोण क्षेत्रीय असमानताओं को समाप्त करने और राष्ट्र के संतुलित सामाजिक-आर्थिक उत्थान को सुनिश्चित करने का आधार है।

94. (D) I, II और III
विकास को मापने हेतु विभिन्न प्रकार के संकेतकों का उपयोग होता है जो प्रगति के भिन्न आयामों को दर्शाते हैं। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद पारंपरिक आर्थिक मापदंड है जो मौद्रिक उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करता है। मानव विकास सूचकांक शिक्षा, स्वास्थ्य और आय को मिलाकर व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। सतत विकास सूचकांकों में भविष्य की सुरक्षा हेतु पर्यावरणीय संकेतकों को सम्मिलित करना अनिवार्य है। इन सभी का संयुक्त अध्ययन ही वास्तविक और टिकाऊ प्रगति का सटीक मूल्यांकन कर सकता है।

95. (B) यूरेशिया की तटीय परिधि
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा परिभाषित 'रिमलैंड' यूरेशिया महाद्वीप की तटीय परिधि के क्षेत्रों को संदर्भित करता है। इसमें पश्चिमी यूरोप, मध्य पूर्व, भारत और दक्षिण-पूर्वी एशिया के तटीय देश सम्मिलित हैं। स्पाइकमैन के अनुसार, यह क्षेत्र भू-राजनीतिक रूप से सर्वाधिक सक्रिय है क्योंकि यहाँ से जल और स्थल दोनों मार्गों तक सुगम पहुँच संभव है। रिमलैंड एक गतिशील बफर क्षेत्र के रूप में कार्य करता है जो महाद्वीपीय शक्तियों और समुद्री शक्तियों के मध्य प्रतिस्पर्धा का मुख्य रंगमंच है, जिससे यह वैश्विक प्रभुत्व का केंद्र बनता है।

96. (A) पूर्व पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की सीमा, जो कुछ शहरी प्रतिरूपों में दिखाई देती है।
अवशेष सीमा वह है जो अब कानूनी रूप से अस्तित्व में नहीं है, किंतु सांस्कृतिक और भौतिक परिदृश्य पर उसके पदचिह्न अभी भी स्पष्ट हैं। जर्मनी के एकीकरण के उपरांत पूर्व पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के मध्य की सीमा इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। यद्यपि अब कोई दीवार नहीं है, किंतु दोनों क्षेत्रों के मध्य वास्तुकला, बुनियादी ढांचे के विकास और आर्थिक प्रवृत्तियों में अभी भी अंतर देखा जा सकता है। यह सीमा ऐतिहासिक विरासत के रूप में क्षेत्र की पहचान और विकास के प्रतिरूपों को प्रभावित करती रहती है।

97. (C) जनसंख्या का आकार, कौशल और राष्ट्रीय सुसंगति
राज्य के मानवीय तत्व वे कारक हैं जो उसकी जनसंख्या की गुणवत्ता और एकता से संबंधित होते हैं। इसमें केवल कुल संख्या ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि साक्षरता स्तर, तकनीकी कौशल, स्वास्थ्य और राष्ट्रीयता के प्रति प्रतिबद्धता भी सम्मिलित है। शिक्षित और एकजुट जनसंख्या राज्य की सर्वाधिक बड़ी संपत्ति होती है, जो आर्थिक उत्पादन बढ़ाने और संकट के समय देश की रक्षा करने में सक्षम होती है। राष्ट्रीय सुसंगति और साझा उद्देश्य की भावना राज्य को आंतरिक रूप से सुदृढ़ और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली बनाती है।

98. (D) एक स्थल-रुद्ध स्थिति परिवहन लागत बढ़ाती है और आर्थिक विकास में बाधा डालती है।
राजनीतिक भूगोल में भौगोलिक स्थिति और आर्थिक विकास के मध्य गहरा संबंध पाया जाता है। स्थल-रुद्ध देश को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु पड़ोसी देशों के माध्यम से मार्ग लेना पड़ता है, जिससे परिवहन की लागत और समय बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, यह स्थिति देश को वैश्विक समुद्री मार्गों से सीधे जुड़ने से रोकती है, जो वाणिज्य हेतु सस्ते माध्यम हैं। यह भौगोलिक बाधा अक्सर देश की आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करती है और उसे अपने पड़ोसियों की भू-राजनीतिक स्थिरता पर निर्भर बना देती है।

99. (A) III, IV, II, I
भारत में नियोजन की संस्थागत यात्रा 1950 में योजना आयोग की स्थापना के साथ औपचारिक रूप से आरंभ हुई। इसके उपरांत 1951 में आर्थिक विकास हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत की गई। ग्रामीण विकास को गति देने हेतु 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम लाया गया। दशकों तक चले इस केंद्रीय नियोजन मॉडल के उपरांत, सरकार ने 2015 में परामर्शात्मक दृष्टिकोण के साथ योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन किया। यह विकास क्रम भारतीय आर्थिक नीतियों के बदलते स्वरूप को दर्शाता है।

100. (B) यह ऐतिहासिक रूप से पंचवर्षीय योजनाओं के ढांचे द्वारा निर्देशित रहा है।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में प्रादेशिक नियोजन मुख्य रूप से पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से संचालित किया गया। इन योजनाओं ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में निवेश, बुनियादी ढांचे और सामाजिक कल्याण हेतु व्यापक रूपरेखा निर्धारित की। योजना आयोग ने राज्यों के साथ मिलकर क्षेत्रीय प्राथमिकताओं को तय करने और संसाधनों के आवंटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि समय के साथ नियोजन की शैलियों में परिवर्तन आया है, किंतु पंचवर्षीय योजनाओं का यह ऐतिहासिक ढांचा ही भारत के वर्तमान क्षेत्रीय विकास की नींव रहा है।

Downloaded from www.pdf.tube

137. (C) केरल और तमिलनाडु
मुल्लापेरियार बांध विवाद दक्षिण भारत के दो पड़ोसी राज्यों, केरल और तमिलनाडु के मध्य एक शताब्दी से भी अधिक पुराना और जटिल संघर्ष है। यह बांध केरल के इडुक्की जिले में स्थित है किंतु इसका संचालन और जल का उपयोग ऐतिहासिक समझौते के अंतर्गत तमिलनाडु द्वारा किया जाता है। विवाद का मुख्य केंद्र बांध की सुरक्षा और जल स्तर को लेकर है। केरल को भय है कि पुराना बांध दुर्बल हो गया है और इससे बाढ़ का खतरा है, जबकि तमिलनाडु का तर्क है कि बांध सुरक्षित है और उसे सिंचाई हेतु अधिक जल की आवश्यकता है।

138. (D) यूरेशिया और अफ्रीका
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने भू-राजनीतिक मॉडल में 'विश्व-द्वीप' शब्द का प्रयोग यूरेशिया और अफ्रीका के संयुक्त भूभाग को संदर्भित करने हेतु किया था। उनके अनुसार, यह पूरी दुनिया का विशालतम, सर्वाधिक आबादी वाला और संसाधनों से समृद्ध महाद्वीपीय पिंड है। मैकिन्डर का प्रसिद्ध तर्क था कि जो शक्ति इस विश्व-द्वीप पर प्रभुत्व स्थापित कर लेगी, वह वैश्विक स्तर पर अजेय होगी। उन्होंने अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य महाद्वीपों को इस केंद्रीय शक्ति की तुलना में केवल बाहरी और द्वीपीय क्षेत्रों के रूप में देखा, जो उनके रणनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

139. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विकास को मापने हेतु विभिन्न संकेतकों का उपयोग उनके विशिष्ट उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है। सकल घरेलू उत्पाद उत्पादन के कुल मौद्रिक मूल्य पर केंद्रित है। मानव विकास सूचकांक आय के साथ स्वास्थ्य और शिक्षा को जोड़ता है। भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक मुख्य रूप से शिशु मृत्यु दर और जीवन प्रत्याशा जैसे बुनियादी सामाजिक कल्याण के मापों पर आधारित है। लिंग विकास सूचकांक यह देखता है कि विकास के लाभों में पुरुषों और महिलाओं के मध्य कितनी असमानता है। यह वर्गीकरण विकास के बहुआयामी स्वरूप को समझने में सहायक है।

140. (B) दूसरे राज्य के क्षेत्र को पूरी तरह से घेर लेता है।
राजनीतिक भूगोल में 'छिद्रित राज्य' उस भौगोलिक स्थिति को कहते हैं जहाँ एक देश का क्षेत्र पूरी तरह से किसी दूसरे देश के क्षेत्र द्वारा आवृत्त होता है। दक्षिण अफ्रीका इसका प्रसिद्ध उदाहरण है, जो अपने भीतर लेसोथो नामक स्वतंत्र राष्ट्र को पूरी तरह घेरे हुए है। इस प्रकार की स्थिति में, घिरे हुए राज्य को अपनी बाहरी आपूर्ति और पारगमन हेतु घेरे हुए राज्य पर पूर्णतः निर्भर रहना पड़ता है। यह स्थिति न केवल संप्रभुता के मुद्दों को जटिल बनाती है, बल्कि दोनों देशों के मध्य विशेष आर्थिक और रणनीतिक संबंधों की मांग भी करती है।

141. (C) भविष्य के लिए आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आवश्यकताओं को संतुलित करना।
सतत विकास का मूलभूत लक्ष्य वर्तमान पीढ़ी की प्रगति और भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के मध्य एक न्यायसंगत संतुलन स्थापित करना है। यह केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानता है कि सच्ची प्रगति तभी टिकाऊ हो सकती है जब वह सामाजिक रूप से समावेशी हो और पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित हो। इसका उद्देश्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना है ताकि हम अपने पीछे एक ऐसा स्वस्थ और समृद्ध ग्रह छोड़ सकें जो आने वाली नस्लों की जरूरतों को पूर्ण करने में सक्षम हो। यह एक समग्र विकास दर्शन है।

142. (D) मजबूत जातीय या धार्मिक अलगाववाद
जातीय या धार्मिक अलगाववाद प्रमुख मानवीय तत्व है जो राज्य के भीतर 'अपकेंद्री शक्ति' के रूप में कार्य करता है। यह राष्ट्र की एकता को दुर्बल करता है और क्षेत्रीय समूहों के मध्य विभाजन उत्पन्न करता है जो अंततः राज्य के विखंडन का कारण बन सकते हैं। जब लोग अपनी क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय पहचान से ऊपर रखते हैं, तो संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता बढ़ जाती है। राज्य हेतु इन विविध पहचानों को एकीकृत करना एक बड़ी चुनौती बन जाती है, जो उसकी आंतरिक संप्रभुता और शासन की प्रभावशीलता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

143. (A) कार्यात्मक प्रदेश
प्रादेशिक नियोजन और भूगोल में 'नोडल प्रदेश' वास्तव में कार्यात्मक प्रदेश का ही दूसरा नाम है। इसे नोडल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह एक केंद्रीय नोड (जैसे एक शहर या व्यापारिक केंद्र) के चारों ओर संगठित होता है। इस केंद्र और उसके आसपास के क्षेत्र के मध्य सक्रिय आर्थिक और सामाजिक अंतःक्रियाएं होती हैं। यह प्रदेश परिवहन मार्गों, संचार और सेवाओं के प्रवाह के माध्यम से अपनी पहचान बनाता है। इसका परिसीमन समरूपता के स्थान पर केंद्र और परिधि के मध्य के सक्रिय संबंधों और आपसी निर्भरता के आधार पर किया जाता है।

144. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नियोजन प्रदेशों का सटीक परिसीमन प्रादेशिक नियोजन प्रक्रिया की सफलता हेतु आधारशिला है। यदि किसी प्रदेश की सीमाएँ वहां की वास्तविक समस्याओं या संसाधनों के प्रवाह के अनुरूप नहीं हैं, तो विकास के प्रयास विफल हो सकते हैं। गलत तरीके से परिभाषित क्षेत्र में लागू की गई नीतियां प्रभावी नहीं होतीं क्योंकि वे स्थानीय भौगोलिक और आर्थिक वास्तविकताओं की अनदेखी करती हैं। इसलिए, परिसीमन को वैज्ञानिक अभ्यास माना जाता है जो सुनिश्चित करता है कि नियोजित हस्तक्षेप लक्षित क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने हेतु सक्षम हैं।

145. (B) स्थलीय शक्तियाँ और समुद्री शक्तियाँ
हैल्फोर्ड मैकिन्डर का हर्टलैंड सिद्धांत वैश्विक इतिहास को स्थलीय शक्तियों और समुद्री शक्तियों के मध्य के निरंतर संघर्ष के रूप में देखता है। मैकिन्डर का मानना था कि विश्व के इतिहास में अक्सर इन दो विरोधी शक्तियों ने वर्चस्व हेतु प्रतिस्पर्धा की है। उन्होंने तर्क दिया कि यूरेशिया के केंद्र में स्थित स्थलीय शक्ति को उसकी अभेद्य स्थिति के कारण लाभ प्राप्त है, जबकि समुद्री शक्तियाँ बाहरी परिधि से दबाव बनाती हैं। यह वैचारिक

NODIA

में क्षेत्रीय गत्यात्मकता को समझने का सर्वाधिक प्रभावी और आधुनिक तरीका है।

199. (B) संक्रमण और अंतःक्रिया का क्षेत्र
राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' को एक विस्तृत भौगोलिक पट्टी के रूप में समझा जाता है जो दो भिन्न राज्यों या सांस्कृतिक क्षेत्रों के मध्य स्थित होता है। यह एक गतिशील क्षेत्र है जहाँ दोनों पक्षों के प्रभाव परस्पर मिलते हैं और एक संक्रमणकालीन वातावरण निर्मित करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, सीमांत अक्सर विरल आबादी वाले क्षेत्र थे जहाँ संप्रभुता स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं थी। यह क्षेत्र अलगाव और अंतःक्रिया दोनों का केंद्र हो सकता है। आधुनिक राष्ट्र-राज्य के विकास के साथ, ये सीमांत क्षेत्र अब लगभग समाप्त हो गए हैं और उनका स्थान रेखीय सीमाओं ने ले लिया है।

200. (D) मानव विकास सूचकांक
मानव विकास सूचकांक विकास का एक संयुक्त संकेतक है क्योंकि यह केवल एक मापदंड के स्थान पर तीन प्रमुख आयामों—स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर—को एकीकृत करता है। इसमें जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, साक्षरता दर और प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय को मिलाकर एकल स्कोर तैयार किया जाता है। यह दृष्टिकोण विकास को एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखता है, जो केवल आर्थिक वृद्धि के स्थान पर मानव कल्याण और क्षमताओं के विस्तार पर केंद्रित है। यह विभिन्न राष्ट्रों के मध्य वास्तविक प्रगति की तुलना करने का एक वैज्ञानिक मानक प्रदान करता है।

201. (A) हैल्फोर्ड मैकिन्डर
यह प्रसिद्ध और प्रभावशाली सूत्र हैल्फोर्ड मैकिन्डर द्वारा उनके हर्टलैंड सिद्धांत में प्रतिपादित किया गया था। मैकिन्डर का मानना था कि पूर्वी यूरोप वह प्रवेश द्वार है जो यूरेशिया के विशाल आंतरिक भाग, हर्टलैंड, तक पहुँच प्रदान करता है। उनका तर्क था कि इस क्षेत्र पर नियंत्रण रखने वाली शक्ति पूरे 'विश्व-द्वीप' के संसाधनों और जनशक्ति को संगठित कर सकती है, जो अंततः उसे सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम बनाएगी। यह विचार 20वीं सदी की वैश्विक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और शीत युद्ध की भू-राजनीति का मुख्य आधार रहा।

202. (B) परवर्ती
परवर्ती सीमा वह राजनीतिक विभाजन है जो किसी क्षेत्र में पूर्व विकसित हो चुके सांस्कृतिक परिदृश्य के अनुसार खींचा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उभरते हुए भाषाई, धार्मिक या जातीय मतभेदों को मान्यता देना और उनके अनुरूप सीमा का निर्धारण करना होता है ताकि विभिन्न समुदायों के मध्य संघर्ष की संभावना न्यून हो सके। यह सीमा समाज की स्वाभाविक पहचान और उनके मध्य के ऐतिहासिक विभाजनों का सम्मान करती है। 1947 में भारत और पाकिस्तान के मध्य की सीमा परवर्ती सीमा का प्रमुख उदाहरण है, जो धार्मिक बहुलता के आधार पर समाज को समायोजित करती है।

203. (C) अमेरिका में टेनेसी वैली अथॉरिटी
भारत में दामोदर घाटी निगम की स्थापना अमेरिका की टेनेसी वैली अथॉरिटी के सफल मॉडल से गहराई से प्रेरित थी। टेनेसी वैली अथॉरिटी की भाँति, दामोदर घाटी निगम का मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण नदी घाटी के संसाधनों का एकीकृत और वैज्ञानिक प्रबंधन करना था। इसमें बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, जल-विद्युत उत्पादन और क्षेत्र के समग्र आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान हेतु संयुक्त दृष्टिकोण अपनाया गया। यह भारत में नदी घाटी आधारित प्रादेशिक नियोजन का प्रथम वृहद प्रयोग था, जिसने भौगोलिक सीमाओं के स्थान पर प्राकृतिक बेसिन को विकास की बुनियादी इकाई के रूप में स्थापित किया।

204. (D) तेल निर्यात
हॉर्मुज जलडमरूमध्य वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण चोकपॉइंट है क्योंकि यह फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ता है। विश्व के कुल कच्चे तेल और तरलीकृत प्राकृतिक गैस के समुद्री व्यापार का विशाल हिस्सा इसी संकीर्ण मार्ग से होकर गुजरता है। इस जलमार्ग पर किसी भी प्रकार का राजनीतिक तनाव या सैन्य अवरोध वैश्विक तेल आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर सकता है और अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है। इसकी रणनीतिक अवस्थिति इसे वैश्विक महाशक्तियों हेतु निरंतर चिंता और निगरानी का एक मुख्य केंद्र बनाती है।

205. (A) औद्योगिकीकरण और तकनीकी प्रगति
किसी राज्य की शक्ति और स्थिरता उसके आर्थिक तत्वों पर निर्भर करती है, जिनमें औद्योगिकीकरण का स्तर और तकनीकी प्रगति सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। विकसित औद्योगिक आधार न केवल राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि यह उच्च मूल्य वाले उत्पादों के निर्यात के माध्यम से आर्थिक समृद्धि भी लाता है। तकनीकी नवाचार कृषि, उत्पादन और सेवाओं की दक्षता बढ़ाते हैं, जिससे नागरिकों का जीवन स्तर उन्नत होता है। इसके अतिरिक्त, उन्नत तकनीक आधुनिक रक्षा प्रणालियों हेतु अनिवार्य है, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य की रणनीतिक स्थिति को काफी सुदृढ़ करती है।

206. (B) अवस्थिति
स्थल-रुद्ध राज्य वह भौगोलिक इकाई है जिसकी कोई भी सीमा समुद्र से नहीं लगती, और यह विशेषता उसकी भौगोलिक अवस्थिति का भाग है। इस प्रकार की अवस्थिति के कारण देश को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और समुद्री संसाधनों तक पहुँच हेतु पड़ोसी देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता न केवल परिवहन लागत और समय को बढ़ाती है, बल्कि पड़ोसी राज्यों के साथ राजनीतिक संबंधों में उतार-चढ़ाव होने पर आर्थिक सुरक्षा हेतु जोखिम भी उत्पन्न करती है। समुद्र तक सीधी पहुँच की कमी देश की नौसैनिक शक्ति के विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को सीमित करती है।

207. (C) एकरूपता बनाम अंतःक्रिया।
औपचारिक और कार्यात्मक प्रदेशों के मध्य का मूलभूत अंतर उनके परिसीमन के आधार में है। औपचारिक प्रदेश एक या अधिक विशिष्ट विशेषताओं, जैसे जलवायु, मृदा या भाषा, में

Click Here to Buy book on Amazon

शक्तियों के मध्य एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रणनीतिक सेतु के रूप में स्थापित करती है।

155. (D) मात्रात्मक तकनीक
भारित सूचकांक विधि प्रादेशिक परिसीमन की प्रमुख मात्रात्मक तकनीक है। इसमें सांख्यिकीय डेटा का उपयोग करके विभिन्न विकास संकेतकों को उनके महत्व के आधार पर विशिष्ट भार प्रदान किए जाते हैं। इन संकेतकों को गणितीय रूप से जोड़कर एक समग्र सूचकांक तैयार किया जाता है, जो किसी क्षेत्र की प्रगति के स्तर को एक संख्यात्मक मान प्रदान करता है। यह विधि व्यक्तिगत धारणाओं के स्थान पर वस्तुनिष्ठ डेटा पर आधारित होती है, जिससे नियोजन प्रक्रिया में अधिक सटीकता आती है। यह विभिन्न क्षेत्रों के मध्य विकास की तुलना करने का वैज्ञानिक आधार है।

156. (A) मानवीय तत्व
राज्य का मानवीय तत्व उसकी जनसंख्या की विशेषताओं और क्षमताओं से संबंधित होता है। इसमें जनसंख्या का आकार, घनत्व, आयु संरचना, शिक्षा स्तर और तकनीकी कौशल सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, जनसंख्या की जातीय और भाषाई संरचना भी महत्वपूर्ण कारक है जो सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को प्रभावित करती है। कुशल और शिक्षित जनसंख्या राज्य के संसाधनों का बेहतर दोहन करने और राष्ट्र की शक्ति बढ़ाने में सक्षम होती है। मानवीय तत्वों का विकास और प्रबंधन किसी भी राज्य की स्थिरता और दीर्घकालिक प्रगति हेतु अनिवार्य माना जाता है।

157. (B) पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग
"हमारा साझा भविष्य" नामक ऐतिहासिक रिपोर्ट 1987 में 'पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग' द्वारा प्रकाशित की गई थी, जिसे ब्रंटलैंड आयोग भी कहा जाता है। इस रिपोर्ट ने प्रथम बार सतत विकास को वैश्विक सिद्धांत के रूप में परिभाषित किया। इसने चेतावनी दी कि वर्तमान विकास के तरीके पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं और भावी पीढ़ियों के अस्तित्व को खतरे में डाल रहे हैं। इस रिपोर्ट के निष्कर्षों ने ही 1992 के पृथ्वी सम्मेलन और आधुनिक वैश्विक पर्यावरण नीतियों का मार्ग प्रशस्त किया, जो टिकाऊ विकास पर बल देते हैं।

158. (C) अध्यारोपित
अध्यारोपित सीमा वह राजनीतिक रेखा है जिसे किसी बाहरी शक्ति द्वारा मानचित्र पर खींचा जाता है, जो क्षेत्र की जमीनी हकीकत, जैसे वहां के लोगों की संस्कृति, भाषा या पहले से मौजूद सामाजिक विभाजनों की पूर्णतः उपेक्षा करती है। ऐसी सीमाएँ अक्सर औपनिवेशिक काल के दौरान साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा अपनी प्रशासनिक सुविधा हेतु थोपी गई थीं। चूंकि ये सीमाएँ स्थानीय समुदायों की पहचान और उनकी स्वाभाविक सीमाओं के साथ मेल नहीं खातीं, इसलिए ये अक्सर दीर्घकालिक संघर्षों, असुरक्षा और राजनीतिक अस्थिरता का मुख्य कारण बनी रहती हैं।

159. (A) IV, III, I, II
भू-राजनीतिक और विकासवादी अवधारणाओं का उदय वैश्विक इतिहास के विभिन्न चरणों में हुआ। हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने 1904 में अपना हर्टलैंड सिद्धांत दिया। इसके उपरांत निकोलस स्पाइकमैन ने 1942 में रिमलैंड सिद्धांत प्रस्तुत किया। सतत विकास की अवधारणा 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट के साथ प्रमुखता से उभरी। अंततः, 1990 में मानव विकास सूचकांक को विकास के एक नए बहुआयामी मापदंड के रूप में पेश किया गया। यह कालक्रम वैश्विक रणनीतिक सोच से लेकर मानव कल्याण और पर्यावरणीय सुरक्षा की ओर बढ़ते वैश्विक ध्यान को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

160. (B) नियोजन सीमाएँ लचीली होती हैं, जबकि प्रशासनिक सीमाएँ कठोर।
नियोजन प्रदेश और प्रशासनिक प्रदेश के मध्य का बड़ा अंतर उनकी सीमाओं की प्रकृति में है। प्रशासनिक सीमाएँ, जैसे राज्यों या जिलों की सीमाएँ, कानूनी और कठोर होती हैं क्योंकि वे शासन और अधिकार क्षेत्र से जुड़ी होती हैं। इसके विपरीत, नियोजन प्रदेश की सीमाएँ उद्देश्य-उन्मुख और लचीली होती हैं। इन्हें विशिष्ट समस्याओं, जैसे किसी नदी बेसिन का विकास या सूखा प्रबंधन, के समाधान हेतु भौतिक और आर्थिक वास्तविकताओं के आधार पर परिवर्तित किया जा सकता है। यह लचीलापन नियोजन को अधिक व्यावहारिक और प्रभावी बनाने में मदद करता है।

NODIA

161. (A) मध्य पूर्व, पूर्वी एशिया और यूरोप
हिंद महासागर विश्व का तीसरा विशालतम महासागर है और यह मध्य पूर्व के ऊर्जा समृद्ध देशों, पूर्वी एशिया की उभरती औद्योगिक शक्तियों और यूरोप के विकसित बाजारों को जोड़ने वाला अनिवार्य गलियारा प्रदान करता है। वैश्विक व्यापार का बड़ा हिस्सा इसी महासागर से होकर गुजरता है, जिससे यह विश्व अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा बन गया है। इसकी रणनीतिक स्थिति इसे अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और सुरक्षा का केंद्र बनाती है। इस क्षेत्र के माध्यम से होने वाला अबाध व्यापार वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की स्थिरता हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

162. (C) अवशेष
अवशेष सीमा वह है जो अब आधिकारिक राजनीतिक विभाजन के रूप में कार्य नहीं करती, किंतु उसके ऐतिहासिक और भौतिक प्रमाण अभी भी परिदृश्य में मौजूद हैं। बर्लिन की दीवार के अवशेष इसका सशक्त उदाहरण हैं। यद्यपि जर्मनी अब एकीकृत देश है, किंतु दीवार के कुछ हिस्से और उसका पूर्व मार्ग अभी भी शहर के इतिहास और संस्कृति का हिस्सा हैं। यह सीमा केवल भौतिक अवरोध नहीं थी, बल्कि दशकों तक चले वैचारिक और राजनीतिक अलगाव का प्रतीक थी, जिसकी छाप अभी भी वहां के सामाजिक और स्थापत्य ढांचे पर देखी जा सकती है।

163. (D) क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना
प्रादेशिक नियोजन का प्राथमिक उद्देश्य देश के भीतर संतुलित विकास सुनिश्चित करना है। अक्सर भौगोलिक या ऐतिहासिक कारणों से कुछ क्षेत्र अधिक विकसित हो जाते हैं जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। नियोजन का मुख्य ध्यान संसाधनों के न्यायसंगत

ढांचा 20वीं सदी की भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और रणनीतिक गठबंधनों को समझने का एक मुख्य माध्यम रहा।

146. (B) परवर्ती
परवर्ती सीमा वह होती है जो सांस्कृतिक परिदृश्य के विकास के उपरांत स्थापित की जाती है, जिसका मुख्य उद्देश्य भाषाई, धार्मिक या जातीय विभाजनों को समायोजित करना होता है। यह सीमा समुदायों की पहचान और उनकी ऐतिहासिक जड़ों को ध्यान में रखकर खींची जाती है ताकि क्षेत्रीय शांति बनी रहे। इसके विपरीत, अध्यारोपित सीमा इन सांस्कृतिक वास्तविकताओं की उपेक्षा करती है। परवर्ती सीमा का उद्देश्य संघर्षों को कम करना और सांस्कृतिक विविधता के आधार पर राजनीतिक इकाइयों को अधिक सुसंगत और स्वीकार्य बनाना होता है, जिससे आंतरिक स्थिरता बढ़ती है।

147. (D) इसके अप्रयुक्त ताजे पानी के भंडार।
हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व मुख्य रूप से इसकी रणनीतिक अवस्थिति, वैश्विक ऊर्जा व्यापार मार्गों और संसाधनों की प्रचुरता से जुड़ा है। यह एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के मध्य महत्वपूर्ण कड़ी प्रदान करता है और यहाँ से विश्व के महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग गुजरते हैं। यद्यपि यह समुद्री संसाधनों में समृद्ध है, किंतु 'अप्रयुक्त ताजे पानी के भंडार' इसका मुख्य रणनीतिक महत्व नहीं हैं क्योंकि महासागर खारे जल के पिंड हैं। इसकी वास्तविक महत्ता रणनीतिक चोकपॉइंट्स और इसके नीचे छिपे हाइड्रोकार्बन एवं खनिज संसाधनों में निहित है।

148. (A) प्राकृतिक गैस के भंडार
कृष्णा-गोदावरी बेसिन भारत के पूर्वी तट पर स्थित अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक और रणनीतिक क्षेत्र है, जो विशेष रूप से अपने विशाल प्राकृतिक गैस के भंडारों हेतु जाना जाता है। इस बेसिन की खोज ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करने में बड़ी भूमिका निभाई है। यहाँ के गहरे जल में स्थित गैस क्षेत्र देश के औद्योगिक विकास और विद्युत उत्पादन हेतु प्रमुख ऊर्जा स्रोत प्रदान करते हैं। इस क्षेत्र का सफल दोहन न केवल आयात पर निर्भरता कम करता है, बल्कि यह आर्थिक विकास को गति देने वाला एक अनिवार्य भौगोलिक और आर्थिक तत्व भी है।

149. (A) केवल I और II
भू-राजनीति के ये दोनों सिद्धांत यूरेशिया के रणनीतिक महत्व पर बल देते हैं, किंतु उनके निष्कर्ष भिन्न हैं। मैकिन्डर ने स्थलीय शक्ति और हर्टलैंड को विश्व प्रभुत्व की कुंजी माना, जबकि स्पाइकमैन ने तटीय किनारे या रिमलैंड पर अधिक बल दिया। यद्यपि वे एक ही महाद्वीप की बात करते हैं, किंतु वे शक्ति के सटीक केंद्र के विषय में असहमत हैं। यह कहना अशुद्ध है कि वे एक ही भौगोलिक क्षेत्र को कुंजी मानते हैं क्योंकि एक आंतरिक भाग पर केंद्रित है और दूसरा परिधि पर। ये दोनों सिद्धांत रणनीतिक सोच के भिन्न ध्रुव हैं।

150. (C) देश की जलवायु और प्राकृतिक संसाधन।
राज्य के 'भौतिक तत्व' उन स्थायी भौगोलिक विशेषताओं को संदर्भित करते हैं जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त हैं और जो देश के विकास की सीमाओं और संभावनाओं को निर्धारित करती हैं। इसमें देश की जलवायु, मृदा, स्थलाकृति और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन जैसे खनिज और ऊर्जा स्रोत सम्मिलित हैं। ये तत्व सीधे तौर पर कृषि उत्पादन, औद्योगिक संभावनाओं और नागरिकों की जीवनशैली को प्रभावित करते हैं। भौतिक तत्व ही राज्य के आर्थिक ढांचे की नींव रखते हैं और उसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट भौगोलिक पहचान और रणनीतिक महत्व प्रदान करते हैं।

151. (D) पंचवर्षीय योजनाएँ।
भारत में प्रादेशिक नियोजन की औपचारिक प्रक्रिया स्वतंत्रता के पश्चात 1951 में पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत के साथ गहराई से जुड़ी है। इन योजनाओं ने देश के विभिन्न क्षेत्रों हेतु विकास के लक्ष्य निर्धारित किए और संसाधनों के आवंटन को प्राथमिकता दी। यद्यपि प्रारंभ में यह केंद्रीकृत था, किंतु इसने क्षेत्रीय बुनियादी ढांचे, सिंचाई और औद्योगिक संकुलों के निर्माण हेतु एक व्यापक ढांचा प्रदान किया। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से ही भारत ने क्षेत्रीय असमानताओं को संबोधित करने और पिछड़े क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया था।

152. (A) कार्यात्मक प्रदेश
शहर और उसके आसपास के उपनगरों का समूह जो दैनिक आवाजाही, व्यापार और सेवाओं के आदान-प्रदान से जुड़ा होता है, एक कार्यात्मक प्रदेश का निर्माण करता है। इस प्रदेश की एकता इसकी भौतिक समरूपता के स्थान पर इसके भीतर होने वाली सक्रिय स्थानिक अंतःक्रियाओं पर निर्भर करती है। शहर यहाँ एक 'नोड' के रूप में कार्य करता है जो पूरे क्षेत्र को रोजगार और अन्य आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करता है। यह संबंध इतना सुदृढ़ होता है कि उपनगरों का अस्तित्व और विकास पूरी तरह से शहर की आर्थिक गतिविधियों के साथ एकीकृत रहता है।

153. (B) ओडिशा और छत्तीसगढ़
महानदी जल विवाद पूर्वी भारत के दो राज्यों, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के मध्य एक प्रमुख अंतर-राज्यीय संघर्ष है। विवाद मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ द्वारा महानदी के ऊपरी प्रवाह में कई बांधों और बैराजों के निर्माण को लेकर है, जिससे ओडिशा को भय है कि गैर-मानसूनी महीनों में उसके क्षेत्र में जल का प्रवाह काफी कम हो जाएगा। इससे हीराकुंड बांध के संचालन और ओडिशा की कृषि एवं पेयजल आपूर्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस विवाद के वैज्ञानिक समाधान हेतु विशेष महानदी जल विवाद न्यायाधिकरण वर्तमान में कार्यरत है।

154. (C) इसकी जलवायु समुद्री है और समुद्र द्वारा सुगम्य है।
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा वर्णित रिमलैंड की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता इसकी समुद्री सुगम्यता है। यह क्षेत्र यूरेशिया की तटीय परिधि पर स्थित है, जिसके कारण यहाँ की जलवायु अक्सर मध्यम और समुद्री होती है। समुद्र तक सीधी पहुँच इसे वैश्विक व्यापार और नौसैनिक गतिविधियों का केंद्र बनाती है। हर्टलैंड के विपरीत, जो स्थल-रुद्ध और कठोर महाद्वीपीय जलवायु वाला है, रिमलैंड एक खुला और गतिशील क्षेत्र है। इसकी यही भौगोलिक विशेषता इसे स्थलीय और समुद्री

Downloaded from www.pdf.tube

और उनके अनुरूप सीमा खींचना होता है। यह सीमा प्राकृतिक बाधाओं के स्थान पर मानवीय भूगोल का अनुसरण करती है ताकि समुदायों के मध्य संघर्ष कम किया जा सके और उनकी सांस्कृतिक स्वायत्तता की रक्षा हो सके। यह आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के निर्माण और क्षेत्रीय शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है।

173. (D) कार्यात्मक प्रदेश
प्रवाह विश्लेषण विधि का प्राथमिक उपयोग 'कार्यात्मक प्रदेश' के परिसीमन हेतु किया जाता है। यह विधि इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रदेश की एकता उसके भीतर होने वाली गतिशील अंतःक्रियाओं से निर्धारित होती है। इसमें वस्तुओं के व्यापार, जनसांख्यिकीय आवाजाही, टेलीफोन कॉल्स और वित्तीय सेवाओं के प्रवाह का गहन अध्ययन किया जाता है। यह विश्लेषण दर्शाता है कि एक केंद्रीय नोड या शहर का प्रभाव आसपास के क्षेत्रों के साथ कैसे जुड़ा है। यह विधि आर्थिक भूगोल और शहरी नियोजन को एक वैज्ञानिक और गत्यात्मक आधार प्रदान करती है।

174. (A) हिंद महासागर में चीनी नौसैनिक सुविधाओं का नेटवर्क।
'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' भू-रणनीतिक अवधारणा है जो हिंद महासागर के रणनीतिक स्थानों पर चीन द्वारा विकसित किए जा रहे वाणिज्यिक और सैन्य अड्डों की श्रृंखला को संदर्भित करती है। इसमें पाकिस्तान, श्रीलंका, म्यांमार और जिबूती जैसे देशों में बंदरगाह सुविधाएं सम्मिलित हैं। इस नेटवर्क का उद्देश्य चीन के समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा करना और क्षेत्र में प्रभाव बढ़ाना है। भारत हेतु यह रणनीतिक चुनौती है क्योंकि यह उसे समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभुत्व के दृष्टिकोण से सामरिक घेरेबंदी में डालने की संभावना रखता है, जिससे संतुलन प्रभावित होगा।

175. (B) खंडित
खंडित राज्य की आकृति, जहाँ देश का क्षेत्र कई अलग-अलग हिस्सों या द्वीपों में विभक्त होता है, राष्ट्रीय एकता हेतु सर्वाधिक भौगोलिक चुनौती प्रस्तुत करती है। इन हिस्सों के मध्य भौतिक अलगाव, जो प्रायः समुद्र द्वारा होता है, संचार और परिवहन को अत्यंत कठिन और खर्चीला बना देता है। इसके परिणामस्वरूप, सुदूर हिस्सों में रहने वाले लोगों के मध्य क्षेत्रीय पहचान अधिक प्रबल हो सकती है और वे केंद्रीय सत्ता से पृथक अनुभव कर सकते हैं। यह भौगोलिक विखंडन अक्सर अलगाववादी प्रवृत्तियों को जन्म देता है और प्रशासनिक नियंत्रण को दुर्बल करता है।

176. (C) अंतर-पीढ़ीगत समता
सतत विकास का मूल सिद्धांत अंतर-पीढ़ीगत समता है, जिसका अर्थ है कि संसाधनों का उपयोग इस प्रकार होना चाहिए कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताएं पूर्ण हों, किंतु भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं से कोई समझौता न हो। यह सिद्धांत मानता है कि पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं और आने वाली नस्लों का भी उन पर अधिकार है। अतः, पर्यावरणीय संरक्षण और संसाधनों का न्यायसंगत प्रबंधन अनिवार्य है। यह दीर्घकालिक दृष्टिकोण है जो केवल तात्कालिक आर्थिक लाभ के स्थान पर मानवता के स्थायी अस्तित्व और कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

177. (D) केंद्रीकृत नियोजन
भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ केंद्रीकृत नियोजन का प्रमुख उदाहरण थीं, जहाँ योजना आयोग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर नीतियां और लक्ष्य निर्धारित किए जाते थे। इन योजनाओं का उद्देश्य पूरे देश के आर्थिक और सामाजिक विकास हेतु एक एकीकृत रूपरेखा तैयार करना और संसाधनों का आवंटन करना था। यद्यपि राज्यों की भागीदारी को महत्व दिया जाता था, किंतु मुख्य रणनीतिक निर्णय केंद्र द्वारा ही लिए जाते थे। इस दृष्टिकोण ने भारत में बुनियादी ढांचे और औद्योगिक आधार की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे एक संगठित राष्ट्रीय विकास की दिशा प्रशस्त हुई।

178. (A) तमिलनाडु
कृष्णा नदी जल विवाद मुख्य रूप से उन राज्यों के मध्य है जहाँ से यह नदी प्रत्यक्ष प्रवाहित होती है, जिनमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना सम्मिलित हैं। इन राज्यों के मध्य सिंचाई और विद्युत उत्पादन हेतु जल आवंटन को लेकर लंबे समय से संघर्ष बना हुआ है। तमिलनाडु इस विवाद का प्राथमिक हिस्सा नहीं है क्योंकि कृष्णा नदी का मुख्य मार्ग उस राज्य से होकर नहीं गुजरता। यद्यपि कुछ समझौतों के तहत तमिलनाडु को पेयजल हेतु कुछ जल दिया जाता है, किंतु वह नदी के जल बंटवारे से संबंधित कानूनी विवाद का मुख्य पक्षकार नहीं है।

179. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजनीतिक भूगोल और नियोजन में इन शब्दों के सुस्पष्ट अर्थ हैं। 'सीमा' राज्यों के मध्य संप्रभुता को विभाजित करने वाली सुस्पष्ट कानूनी रेखा है। 'सीमांत' एक विस्तृत और संक्रमणकालीन क्षेत्र है जो राज्यों के मध्य अलगाव उत्पन्न करता है। 'औपचारिक प्रदेश' वह है जो अपनी किसी एक या अधिक विशेषताओं में पूरे विस्तार में एकरूपता प्रदर्शित करता है। 'कार्यात्मक प्रदेश' एक केंद्रीय नोड और उसके प्रभाव क्षेत्र के मध्य होने वाली स्थानिक अंतःक्रियाओं और गत्यात्मक संबंधों द्वारा परिभाषित किया जाता है। ये अवधारणाएं क्षेत्रीय विश्लेषण का आधार हैं।

180. (D) विकास का असमान स्थानिक वितरण।
प्रादेशिक नियोजन की मूलभूत प्रेरणा इस वास्तविकता से उत्पन्न होती है कि विकास के अवसर और लाभ देश के सभी क्षेत्रों में समान रूप से वितरित नहीं होते। प्रायः प्राकृतिक संसाधनों या ऐतिहासिक कारणों से कुछ क्षेत्र तीव्र विकसित होते हैं जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। यह असमानता सामाजिक तनाव और क्षेत्रीय असंतोष को जन्म देती है। नियोजन का मुख्य कार्य इस असंतुलन को पहचानना और पिछड़े क्षेत्रों में संसाधनों का न्यायसंगत आवंटन कर उन्हें मुख्यधारा में सम्मिलित करना है ताकि समग्र राष्ट्रीय प्रगति संतुलित और समावेशी हो सके।

181. (B) रिमलैंड
निकोलस स्पाइकमैन के अनुसार, यूरेशिया के तटवर्ती क्षेत्र या 'रिमलैंड' ही वास्तव में 'विश्व-द्वीप' को नियंत्रित करने की

NODIA

रणनीतिक कुंजी रखते हैं। स्पाइकमैन ने मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत की आलोचना करते हुए तर्क दिया कि रिमलैंड अपनी उभयचर प्रकृति के कारण अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समुद्र और भूमि दोनों के प्रभाव को एकीकृत करता है। उनके प्रसिद्ध सूत्रानुसार, जो रिमलैंड को नियंत्रित करता है वह यूरेशिया पर शासन करता है और जो यूरेशिया पर शासन करता है वह विश्व पर शासन करता है। यह विचार शीत युद्ध की रणनीतियों का आधार बना।

182. (A) तकनीकी क्षमताएं
राज्य के मानवीय तत्व वे विशेषताएँ हैं जो उसकी जनसंख्या की गुणवत्ता और उपलब्धियों से संबंधित होती हैं। तकनीकी क्षमताएं अत्यंत महत्वपूर्ण मानवीय तत्व हैं क्योंकि ये दर्शाती हैं कि कोई समाज अपने संसाधनों का कितनी कुशलता से उपयोग कर सकता है और वह नवाचार में कितना सक्षम है। उच्च तकनीकी स्तर न केवल आर्थिक उत्पादन बढ़ाता है, बल्कि राष्ट्र की सैन्य शक्ति और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता को भी सुदृढ़ करता है। यह तत्व शिक्षा और अनुसंधान में निवेश का परिणाम होता है और राज्य की दीर्घकालिक प्रगति हेतु एक अनिवार्य आधार प्रदान करता है।

183. (B) नियोजन प्रदेश
सूखा प्रवण क्षेत्र नियोजन हेतु जो क्षेत्र परिसीमित किया जाता है, वह नियोजन प्रदेश का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रदेश का निर्धारण किसी प्रशासनिक सीमा के स्थान पर एक विशिष्ट समस्या (सूखा) के समाधान के उद्देश्य से किया जाता है। यहाँ का मुख्य ध्यान जल संरक्षण, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार और वैकल्पिक आजीविका के अवसरों को विकसित करने पर होता है। नियोजन प्रदेश का यह स्वरूप लचीला होता है और यह भौगोलिक एवं आर्थिक वास्तविकताओं के आधार पर निर्धारित किया जाता है ताकि विकास कार्यक्रमों के लक्षित परिणामों को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सके।

184. (C) अवशेष सीमा
चीन की महान दीवार आज अवशेष सीमा का प्रमुख उदाहरण है। ऐतिहासिक रूप से, यह एक शक्तिशाली सुरक्षात्मक अवरोध और सीमा के रूप में कार्य करती थी जो साम्राज्य के क्षेत्र को परिभाषित करती थी। यद्यपि अब इसका कोई आधिकारिक या कानूनी सीमांकन मूल्य नहीं रह गया है, किंतु यह अभी भी सांस्कृतिक परिदृश्य पर अमिट छाप छोड़ती है और ऐतिहासिक पहचान के रूप में अस्तित्व में है। अवशेष सीमाएँ हमें अतीत के राजनीतिक और सैन्य विभाजनों का स्मरण कराती हैं, भले ही आधुनिक मानचित्रों पर उनकी भूमिका अब केवल सांस्कृतिक और पर्यटन महत्व तक सीमित हो।

185. (D) ब्रंटलैंड रिपोर्ट
सतत विकास की अवधारणा को 1987 में ब्रंटलैंड रिपोर्ट (हमारा साझा भविष्य) के माध्यम से वैश्विक पहचान और स्वीकृति मिली। इस रिपोर्ट ने प्रथम बार विकास के आर्थिक लक्ष्यों को पर्यावरणीय सुरक्षा और भावी पीढ़ियों के अधिकारों के साथ जोड़ने की अनिवार्य आवश्यकता को रेखांकित किया। इसने सतत विकास की ऐसी सार्वभौमिक परिभाषा प्रदान की जो आज भी अंतर्राष्ट्रीय संधियों और राष्ट्रीय विकास नीतियों का मार्गदर्शन करती है। इस रिपोर्ट के प्रकाशन ने वैश्विक विकास एजेंडे को स्थायी रूप से परिवर्तित कर दिया और संरक्षण को विकास का अभिन्न अंग बनाया।

186. (A) पंजाब और हरियाणा
सतलुज-यमुना लिंक नहर विवाद पंजाब और हरियाणा के मध्य रावी एवं ब्यास नदियों के जल आवंटन को लेकर दीर्घकालिक संघर्ष है। इस नहर का उद्देश्य पंजाब की नदियों का अधिशेष जल हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों तक पहुँचाना है। पंजाब ने अपनी बढ़ती कृषि आवश्यकताओं और जल की कमी का हवाला देते हुए इस परियोजना का निरंतर विरोध किया है। यह मुद्दा दशकों से कानूनी विवादों और राजनीतिक तनाव का केंद्र बना हुआ है, क्योंकि दोनों राज्यों की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूर्णतः सिंचाई पर निर्भर है, जिससे यह मुद्दा अत्यंत संवेदनशील है।

187. (B) आर्थिक
प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और उनके प्रभावी दोहन की क्षमता राज्य के 'आर्थिक तत्वों' का भाग मानी जाती है। संसाधन किसी भी राष्ट्र की औद्योगिक शक्ति और आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार होते हैं। किंतु केवल संसाधनों का होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें उत्पादक परिसंपत्तियों में परिवर्तित करने की क्षमता और तकनीक ही वास्तव में राज्य की आर्थिक शक्ति को निर्धारित करती है। संसाधनों का कुशल प्रबंधन न केवल घरेलू बाजार को सुदृढ़ करता है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भी देश की स्थिति को लाभप्रद बनाता है, जो राष्ट्रीय संप्रभुता को मजबूत करता है।

188. (C) यह सघन जनसंख्या वाले देशों से घिरा है और महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग यहाँ से गुजरते हैं।
हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व इसकी विशिष्ट अवस्थिति और वैश्विक वाणिज्य में इसकी भूमिका के कारण है। यह विश्व के सर्वाधिक घनी आबादी वाले और तीव्र विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले क्षेत्रों, जैसे दक्षिण एशिया, से घिरा है। साथ ही, यह वैश्विक ऊर्जा परिवहन की मुख्य धमनी है क्योंकि विश्व का अधिकांश कच्चा तेल इसके रणनीतिक चोकपॉइंट्स से होकर गुजरता है। इन समुद्री मार्गों की सुरक्षा और उन पर नियंत्रण बनाए रखना क्षेत्रीय देशों और वैश्विक महाशक्तियों हेतु सर्वोच्च रणनीतिक प्राथमिकता है, जो इसे अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति का केंद्र बनाती है।

189. (A) केवल I और II
प्रादेशिक परिसीमन के विभिन्न आधार होते हैं। औपचारिक प्रदेश में एक या अधिक भौतिक या सांस्कृतिक विशेषताओं में आंतरिक समरूपता पाई जाती है। कार्यात्मक प्रदेश का निर्धारण केंद्रीय नोड और आसपास के क्षेत्रों के मध्य सक्रिय अंतःक्रियाओं के आधार पर होता है। नियोजन प्रदेश के विषय में यह कहना अशुद्ध है कि यह सदैव प्रशासनिक सीमाओं के समान होता है, क्योंकि इसे विशिष्ट विकास उद्देश्यों और भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर लचीला बनाया जा सकता है। यह लचीलापन ही नियोजन प्रदेश को प्रशासनिक सीमाओं की तुलना में अधिक वैज्ञानिक बनाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

190. (D) महाद्वीपीय स्थलीय शक्ति
हैल्फोर्ड मैकिन्डर का हर्टलैंड सिद्धांत मुख्य रूप से महाद्वीपीय स्थलीय शक्ति के रणनीतिक लाभों पर ध्यान केंद्रित करता है। मैकिन्डर ने तर्क दिया कि यूरेशिया का विशाल आंतरिक भाग, जो समुद्री शक्तियों हेतु दुर्गम है, विश्व प्रभुत्व का केंद्र है। उन्होंने स्थलीय परिवहन, विशेष रूप से रेलवे के विकास को समुद्री शक्ति के एकाधिकार हेतु एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा। उनका मानना था कि संगठित स्थलीय शक्ति, जो हर्टलैंड के संसाधनों का उपयोग कर सके, भविष्य की वैश्विक राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाएगी। यह सिद्धांत आधुनिक सैन्य रणनीति का आधार है।

191. (A) अध्यारोपित
अध्यारोपित सीमा वह राजनीतिक विभाजन है जिसे क्षेत्र के सांस्कृतिक या जातीय परिदृश्य की पूर्णतः उपेक्षा करते हुए बाहरी शक्ति द्वारा मानचित्र पर खींचा जाता है। ऐसी सीमाएँ प्रायः औपनिवेशिक काल के दौरान साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा अपनी प्रशासनिक सुविधा हेतु थोपी गई थीं। चूंकि ये सीमाएँ स्थानीय समुदायों के स्वाभाविक विभाजनों और उनकी ऐतिहासिक पहचान के साथ मेल नहीं खातीं, इसलिए ये अक्सर दीर्घकालिक नागरिक संघर्षों और राजनीतिक अस्थिरता का मुख्य कारण बनी रहती हैं। यह भौगोलिक रूप से थोपा गया कृत्रिम विभाजन है जो अशांति उत्पन्न करता है।

192. (B) रणनीतिक नीति इनपुट प्रदान करने वाला थिंक टैंक।
नीति आयोग भारत सरकार का प्रमुख रणनीतिक थिंक टैंक है, जिसने पूर्ववर्ती योजना आयोग का स्थान लिया है। इसकी प्राथमिक भूमिका केंद्र और राज्य सरकारों को प्रासंगिक रणनीतिक और तकनीकी परामर्श प्रदान करना है। यह संस्थान सहकारी संघवाद को बढ़ावा देने हेतु बनाया गया है, जहाँ नीतियां ऊपर से थोपने के स्थान पर राज्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ तैयार की जाती हैं। यह नवाचार, अनुसंधान और सर्वोत्तम प्रथाओं के प्रसार पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि देश के सतत और समावेशी विकास हेतु एक आधुनिक और सहभागी ढांचा प्रदान किया जा सके।

193. (C) अपकेंद्री शक्ति
राज्य के भीतर मौजूद अत्यंत सुदृढ़ क्षेत्रीय पहचान को 'अपकेंद्री शक्ति' माना जाता है क्योंकि यह अक्सर केंद्रीय सत्ता के नियंत्रण को चुनौती देती है और राष्ट्र की अखंडता को दुर्बल कर सकती है। यदि क्षेत्रीय निष्ठा राष्ट्रीय पहचान से अधिक प्रबल हो जाए, तो यह अलगाववादी भावनाओं और आंतरिक संघर्षों को जन्म दे सकती है। ऐसी शक्तियाँ राज्य को भीतर से विभाजित करने का प्रयास करती हैं, जिससे प्रशासन और रक्षा में बड़ी बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। राज्य की स्थिरता हेतु इन क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय मुख्यधारा के साथ संतुलित करना अनिवार्य होता है।

194. (D) ब्रह्मपुत्र डायवर्जन विवाद (चीन के साथ)
भारत के प्रमुख जल विवादों में कावेरी, कृष्णा और नर्मदा के मुद्दे सम्मिलित हैं, जो देश के आंतरिक राज्यों के मध्य जल आवंटन से संबंधित हैं और जिन्हें अंतर-राज्यीय जल विवाद कहा जाता है। इसके विपरीत, ब्रह्मपुत्र नदी के जल को मोड़ने को लेकर चीन के साथ चलने वाला विवाद एक 'अंतर्राष्ट्रीय' कूटनीतिक मुद्दा है। यद्यपि यह भारत की जल सुरक्षा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु इसे भारतीय संघीय ढांचे के भीतर राज्यों के मध्य के विवाद की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। यह एक संप्रभु राष्ट्र की विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषय है।

195. (A) प्रदेशों में कल्याण और प्रगति के स्तर की माप और तुलना करना।
विकास के संकेतकों का मुख्य उद्देश्य समाज के सामाजिक-आर्थिक स्वास्थ्य का सटीक मूल्यांकन करना है। ये संकेतक, जैसे साक्षरता दर, जीवन प्रत्याशा और प्रति व्यक्ति आय, नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करते हैं कि विकास के लाभ वास्तव में लोगों तक पहुँच रहे हैं या नहीं। इनके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों और देशों के मध्य तुलना की जा सकती है, जिससे पिछड़े क्षेत्रों की पहचान करना और उनके लिए विशेष विकास योजनाएं तैयार करना संभव होता है। यह वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करते हैं जिससे प्रगति की दिशा और प्रभावशीलता को मापा जा सकता है।

196. (B) खंडित
जापान खंडित राज्य का उत्कृष्ट भौगोलिक उदाहरण है, क्योंकि इसका पूरा क्षेत्र सहस्त्रों द्वीपों में विभक्त है, जिनमें होक्काइडो, होन्शू, शिकोकू और क्युशू मुख्य हैं। इस प्रकार की आकृति राष्ट्रीय एकीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास हेतु बड़ी चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है। द्वीपों के मध्य परिवहन और संचार हेतु समुद्र या वृहद पुलों और सुरंगों पर निर्भर रहना पड़ता है। यद्यपि जापान ने तकनीक के माध्यम से इन बाधाओं को दूर किया है, किंतु भौगोलिक रूप से यह एक खंडित संरचना ही बनी हुई है जो इसकी रक्षा और शासन व्यवस्था को विशिष्ट बनाती है।

197. (C) पश्चिमी यूरोप, मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया।
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा प्रतिपादित रिमलैंड में यूरेशिया महाद्वीप की सम्पूर्ण तटीय परिधि सम्मिलित है। इसमें पश्चिम में यूरोप के विकसित देशों से लेकर मध्य पूर्व के ऊर्जा समृद्ध क्षेत्रों, दक्षिण एशिया और पूर्व में तीव्र विकसित एशियाई देशों के तटीय क्षेत्र आते हैं। स्पाइकमैन का मानना था कि यह क्षेत्र विश्व का सर्वाधिक रणनीतिक हिस्सा है क्योंकि यह समुद्र और भूमि दोनों के प्रभाव क्षेत्र में आता है। इन क्षेत्रों पर नियंत्रण ही वास्तव में वैश्विक शक्ति, सैन्य प्रभुत्व और व्यापारिक प्रवाह को निर्धारित करने की क्षमता प्रदान करता है।

198. (D) कार्यात्मक प्रदेश
आवाजाही के प्रतिरूप, जैसे वस्तुओं के व्यापार, जनसांख्यिकीय प्रवास और सूचनाओं के आदान-प्रदान पर आधारित प्रदेश का परिसीमन 'कार्यात्मक प्रदेश' कहलाता है। इस प्रदेश की पहचान इसके भीतर होने वाली सक्रिय स्थानिक अंतःक्रियाओं से होती है। यह प्रायः एक केंद्रीय नोड के चारों ओर विकसित होता है जहाँ से सेवाएँ और रोजगार प्रवाहित होते हैं। इसकी सीमाएँ वहीं तक विस्तृत होती हैं जहाँ तक उस केंद्र का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव प्रभावी रहता है। यह पद्धति आर्थिक भूगोल

Downloaded from www.pdf.tube

वितरण और पिछड़े क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार पर होता है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि आर्थिक प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों और सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचे। क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना न केवल आर्थिक न्याय है, बल्कि राष्ट्रीय एकता हेतु भी अनिवार्य है।

164. (C) हर्टलैंड सिद्धांत
यह निष्कर्ष हैल्फोर्ड मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत का मुख्य पक्ष है। मैकिन्डर ने तर्क दिया कि यूरेशिया और अफ्रीका के संयुक्त भूभाग, जिसे उन्होंने 'विश्व-द्वीप' कहा, में विश्व के अधिकांश संसाधन और जनसंख्या समाहित है। उनके अनुसार, हर्टलैंड इस विश्व-द्वीप का सुरक्षित और रणनीतिक केंद्र है। अतः, जो शक्ति हर्टलैंड पर नियंत्रण रखेगी, वह स्वतः ही पूरे विश्व-द्वीप पर शासन करेगी और जो विश्व-द्वीप पर शासन करेगा, वह पूरी दुनिया के भाग्य को नियंत्रित करने की शक्ति रखेगा। यह विचार आधुनिक भू-राजनीति की आधारशिला बना।

165. (B) प्रवाह विश्लेषण
किसी बड़े शहर के प्रभाव क्षेत्र या 'हिनटरलैंड' की सटीक पहचान हेतु प्रवाह विश्लेषण सर्वाधिक उपयुक्त विधि है। यह विधि शहरों और उनके आसपास के क्षेत्रों के मध्य होने वाली वस्तुओं, लोगों और सेवाओं की वास्तविक आवाजाही को मापती है। इसमें दैनिक श्रम प्रवास, बैंकिंग लेनदेन, बस और रेल यातायात तथा संचार के प्रतिरूपों का अध्ययन किया जाता है। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि एक शहर का कार्यात्मक प्रभाव भौगोलिक रूप से कहाँ तक विस्तृत है। यह डेटा शहरी विकास और क्षेत्रीय परिवहन नियोजन हेतु अत्यंत मूल्यवान आधार प्रदान करता है।

166. (D) छिद्रित राज्य
दक्षिण अफ्रीका 'छिद्रित राज्य' का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसके भौगोलिक क्षेत्र के भीतर लेसोथो नामक पूर्णतः स्वतंत्र और संप्रभु देश स्थित है। लेसोथो पूरी तरह दक्षिण अफ्रीका की सीमाओं से घिरा हुआ है, जो दक्षिण अफ्रीका के क्षेत्रीय विस्तार में एक 'छिद्र' के समान है। इस प्रकार की स्थिति में, घिरे हुए राज्य को अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहुँच और व्यापार हेतु घेरे हुए राज्य पर पूर्णतः निर्भर रहना पड़ता है। यह भौगोलिक व्यवस्था दोनों देशों के मध्य अनिवार्य सहयोग और विशेष कूटनीतिक समझौतों की आवश्यकता को जन्म देती है।

167. (A) कर्नाटक और तमिलनाडु
कावेरी नदी जल विवाद भारत के जटिल और लंबे समय से चले आ रहे अंतर-राज्यीय संघर्षों में से एक है। इस विवाद के मुख्य पक्षकार कर्नाटक और तमिलनाडु हैं, जहाँ कावेरी नदी कृषि और पेयजल का मुख्य स्रोत है। जल के आवंटन को लेकर दोनों राज्यों के मध्य गहरे मतभेद हैं, जो विशेष रूप से अल्प वर्षा वाले वर्षों में उग्र हो जाते हैं। इस मुद्दे ने बार-बार कानूनी लड़ाइयों को जन्म दिया है और यह दोनों राज्यों की क्षेत्रीय राजनीति को गहराई से प्रभावित करता है, जिससे इसका स्थाई और सर्वसम्मत समाधान अत्यंत चुनौतीपूर्ण बना रहता है।

168. (C) जलवायु
राज्य के मानवीय तत्वों में वे कारक सम्मिलित होते हैं जो मानव समाज और उसकी गतिविधियों से संबंधित होते हैं, जैसे जनसंख्या आकार, तकनीकी स्तर और परिवहन नेटवर्क। ये तत्व मानव निर्मित होते हैं या मानवीय क्षमताओं को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, जलवायु एक 'भौतिक तत्व' है जो प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है। जलवायु कृषि, जीवन शैली और संसाधनों की उपलब्धता को प्रभावित तो करती है, किंतु इसे मानवीय गतिविधियों का परिणाम नहीं माना जाता। भौतिक और मानवीय तत्वों का यह भेद राजनीतिक भूगोल के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

169. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजनीतिक भूगोल में सीमाएँ महत्वपूर्ण अभिकेंद्री शक्ति के रूप में कार्य करती हैं क्योंकि वे राज्य के क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती हैं। सुस्पष्ट और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सीमा नागरिकों में क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा की भावना उत्पन्न करती है, जो राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है। जब सीमाएँ विवाद रहित होती हैं, तो राज्य अपनी संप्रभुता को प्रभावी ढंग से लागू कर सकता है और आंतरिक विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। स्पष्ट सीमांकन बाहरी घुसपैठ रोकने और पहचान सुदृढ़ करने में सहायक है।

170. (D) प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन
मानव विकास सूचकांक विकास का ऐसा मापदंड है जो तीन बुनियादी आयामों पर केंद्रित है: स्वास्थ्य, ज्ञान और जीवन स्तर। यह सूचकांक मानव क्षमताओं और कल्याण को मापने हेतु बनाया गया है। यद्यपि प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन पर्यावरणीय स्थिरता हेतु महत्वपूर्ण डेटा है, किंतु इसे पारंपरिक मानव विकास सूचकांक की गणना में सम्मिलित नहीं किया जाता। इस सूचकांक का मुख्य उद्देश्य आर्थिक वृद्धि से हटकर मानव जीवन की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना है, जो इसे नीतिगत निर्णयों के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक उपकरण बनाता है।

NODIA

171. (B) आंतरिक जल अपवाह और समुद्री शक्ति से सुरक्षा।
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने हर्टलैंड सिद्धांत में 'धुरी क्षेत्र' की मुख्य विशेषता इसकी प्राकृतिक सुरक्षा को माना था। यह क्षेत्र यूरेशिया के केंद्र में स्थित है जहाँ की नदियाँ या तो आंतरिक झीलों में गिरती हैं या जमे हुए आर्कटिक महासागर में, जिससे यह समुद्री नौसेनाओं हेतु पूर्णतः दुर्गम हो गया था। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र विशाल मैदानों और पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा है जो एक प्राकृतिक ढाल का कार्य करते हैं। मैकिन्डर का मानना था कि यह भौगोलिक अलगाव ही हर्टलैंड को स्थलीय शक्ति का विश्व में सर्वाधिक सुरक्षित आधार बनाता है।

172. (C) बसने के बाद सांस्कृतिक मतभेदों को समायोजित करने के लिए खींची गई हो।
परवर्ती सीमा राजनीतिक रेखा है जो क्षेत्र में आबादी बसने और सांस्कृतिक पहचान विकसित होने के उपरांत स्थापित की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य पहले से मौजूद भाषाई, धार्मिक या जातीय समूहों के मध्य के अंतरों को मान्यता देना

सम्पूर्ण क्षेत्र में व्याप्त एकरूपता पर आधारित होते हैं। इसके विपरीत, कार्यात्मक प्रदेश गतिशीलता और सक्रिय अंतर्संबंधों पर केंद्रित होते हैं, जहाँ केंद्रीय नोड और उसके प्रभाव क्षेत्र के मध्य वस्तुओं, सेवाओं और सूचनाओं की निरंतर अंतःक्रिया होती है। नियोजन प्रक्रिया में इन दोनों का महत्व भिन्न है—एक स्थिरता प्रदान करता है, जबकि दूसरा आर्थिक गत्यात्मकता को समझने में सहायता करता है।

208. (D) साक्षरता और जीवन प्रत्याशा जैसे सामाजिक कल्याण संकेतक।
भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक विकास को मापने का सामाजिक दृष्टिकोण है जो आर्थिक वृद्धि के स्थान पर मानव कल्याण की गुणवत्ता पर केंद्रित है। इसके तीन मुख्य घटक हैं: शिशु मृत्यु दर, जन्म के समय जीवन प्रत्याशा और बुनियादी साक्षरता दर। यह सूचकांक यह आकलन करता है कि कोई देश अपने नागरिकों की बुनियादी आवश्यकताओं को कितनी कुशलता से पूर्ण कर रहा है। यह नीति निर्माताओं को यह समझने में सहायता करता है कि क्या आर्थिक समृद्धि का लाभ स्वास्थ्य और शिक्षा के सुधार के रूप में समाज के सबसे निचले स्तर तक पहुँच रहा है।

209. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' एक बहिर्मुखी अवधारणा मानी जाती है क्योंकि यह राज्य के किनारों पर स्थित उन क्षेत्रों को दर्शाती है जहाँ विकास और विस्तार की संभावनाएँ बनी रहती हैं। ऐतिहासिक रूप से, सीमांत प्रायः विरल आबादी वाले और दुर्गम क्षेत्र थे जहाँ केंद्रीय सत्ता का नियंत्रण पूर्ण नहीं था। ये क्षेत्र दो राज्यों के मध्य बफर ज़ोन के रूप में कार्य करते थे और अक्सर नए बसने वालों हेतु आकर्षण का केंद्र थे। जैसे-जैसे राज्य की शक्ति और जनसंख्या बढ़ी, इन संक्रमणकालीन क्षेत्रों को व्यवस्थित कर सटीक राजनीतिक सीमाओं में परिवर्तित किया गया।

210. (B) हर्टलैंड सिद्धांत
हैल्फोर्ड मैकिन्डर का हर्टलैंड सिद्धांत उस समय प्रस्तुत किया गया था जब ब्रिटिश समुद्री शक्ति का वैश्विक प्रभुत्व था। मैकिन्डर ने तर्क दिया कि रेलवे के विकास के साथ स्थलीय शक्ति अब समुद्री शक्ति के एकाधिकार को चुनौती देने में सक्षम है। उनका मानना था कि यूरेशिया का विशाल आंतरिक भाग, जिसे नौसेनाएँ प्रभावित नहीं कर सकतीं, यदि एक संगठित शक्ति के नियंत्रण में आ जाए, तो वह अपनी अपार संसाधन क्षमता और स्थलीय गतिशीलता के कारण समुद्री शक्तियों पर बढ़त प्राप्त कर लेगी। यह विचार वैश्विक रणनीतिक संतुलन में महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता था।

211. (A) परवर्ती
1947 में भारत और पाकिस्तान के मध्य खींची गई सीमा परवर्ती सीमा का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह सीमा उस समय स्थापित की गई थी जब क्षेत्र में पहले से ही सघन आबादी और विकसित सांस्कृतिक एवं धार्मिक पहचान विद्यमान थी। विभाजन का मुख्य उद्देश्य उभरते हुए सांप्रदायिक मतभेदों को संबोधित करना और दोनों समुदायों हेतु पृथक राजनीतिक क्षेत्र निर्मित करना था। चूँकि यह सीमा पूर्व विद्यमान मानवीय भूगोल की वास्तविकताओं के आधार पर खींची गई थी, इसलिए इसे परवर्ती सीमा कहा जाता है, जो सांस्कृतिक समायोजन की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम थी।

212. (C) सहकारी और परामर्शात्मक
नीति आयोग का दृष्टिकोण 'सहकारी संघवाद' के सिद्धांत पर आधारित है, जहाँ केंद्र और राज्य सरकारें परस्पर मिलकर राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु कार्य करते हैं। यह संस्थान परामर्शात्मक थिंक टैंक के रूप में कार्य करता है, जो नीचे से ऊपर की ओर नियोजन की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। इसमें राज्यों को अपनी विशिष्ट समस्याओं और आवश्यकताओं को साझा करने का अवसर प्राप्त होता है। यह दृष्टिकोण पूर्ववर्ती केंद्रीकृत नियोजन की तुलना में अधिक लचीला और समावेशी है, जो स्थानीय नवाचारों और क्षेत्रीय प्राथमिकताओं को राष्ट्रीय नीतियों में एकीकृत करता है।

213. (D) न्यायिक
राज्य के भौगोलिक तत्वों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: भौतिक, मानवीय और आर्थिक। ये तत्व प्रत्यक्ष रूप से राज्य की शक्ति, सुरक्षा और विकास को भौगोलिक दृष्टि से प्रभावित करते हैं। 'न्यायिक' तत्व राज्य की कानूनी और संवैधानिक व्यवस्था का अंग है, जिसे राजनीति विज्ञान या विधि के अंतर्गत पढ़ा जाता है। यद्यपि यह शासन हेतु महत्वपूर्ण है, किंतु इसे राज्य के बुनियादी 'भौगोलिक' तत्वों की श्रेणी में नहीं रखा जाता, जो भौतिक और स्थानिक कारकों पर केंद्रित होते हैं। भौगोलिक तत्वों में भूमि और संसाधनों की प्रमुखता होती है।

214. (C) केरल और तमिलनाडु
मुल्लापेरियार बांध विवाद दक्षिण भारत के दो राज्यों, केरल और तमिलनाडु के मध्य एक शताब्दी से अधिक पुराना और गहन संघर्ष है। यह बांध केरल के भौगोलिक क्षेत्र (इडुक्की जिले) में स्थित है, किंतु ऐतिहासिक समझौते के कारण इसका संचालन और इसके जल का उपयोग तमिलनाडु द्वारा किया जाता है। विवाद का मुख्य कारण बांध की सुरक्षा को लेकर केरल की चिंताएं और जल की मात्रा को लेकर तमिलनाडु की आवश्यकताएं हैं। इस मुद्दे ने बार-बार कानूनी और राजनीतिक मोर्चों पर तनाव उत्पन्न किया है, जिससे दोनों राज्यों के पारस्परिक संबंध प्रभावित होते रहे हैं।

215. (B) संहत
संहत आकृति वाले राज्य में केंद्र से उसकी सीमाओं की दूरी लगभग समान होती है, जो उसे सुगठित भौगोलिक रूप प्रदान करती है। इस प्रकार की आकृति प्रभावी शासन हेतु आदर्श मानी जाती है क्योंकि राजधानी से देश के सभी भागों तक संचार और परिवहन तीव्र एवं सरल होता है। सुरक्षा की दृष्टि से भी, संहत राज्यों को अपनी सीमाओं की रक्षा करना सुलभ होता है क्योंकि उनकी सीमा की कुल लंबाई उनके क्षेत्रफल के अनुपात में न्यून होती है। यह भौगोलिक सुसंगति राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देती है और आंतरिक विद्रोहों के प्रबंधन में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

Click Here to Buy book on Amazon

216. (D) लक्षित विकास नीतियों का कार्यान्वयन
नियोजन प्रदेश की अवधारणा का मुख्य महत्व लक्षित और प्रभावी विकास नीतियों को धरातल पर लागू करने में निहित है। नियोजन प्रदेश को विशेष रूप से उसकी भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु परिसीमित किया जाता है। यहाँ संसाधनों का आकलन किया जाता है और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप रणनीतियाँ निर्मित की जाती हैं। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि सरकार द्वारा किया गया निवेश वास्तव में उस क्षेत्र की विशिष्ट बाधाओं को दूर करने और उसकी विकास क्षमता का दोहन करने में सफल हो। यह क्षेत्रीय असंतुलन दूर करने का वैज्ञानिक माध्यम है।

217. (A) भावी पीढ़ियां
सतत विकास की अवधारणा का केंद्र बिंदु भावी पीढ़ियां हैं। इसका मूल दर्शन यह है कि हम पृथ्वी के संसाधनों के स्वामी नहीं अपितु केवल न्यासी हैं। अतः, हमें इनका उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि हमारी वर्तमान आवश्यकताएं पूर्ण हों, किंतु हमारे पश्चात आने वाली नस्लों हेतु पर्याप्त संसाधन और स्वस्थ पर्यावरण शेष रहे। यह भविष्य के प्रति हमारे नैतिक उत्तरदायित्व और दीर्घकालिक वैश्विक अस्तित्व को सुनिश्चित करने का मार्ग है। सतत विकास का लक्ष्य वर्तमान की प्रगति को भविष्य के संकट में परिवर्तित होने से रोकना है, जो इसे अनिवार्य बनाता है।

218. (C) जनसंख्या का कौशल और शिक्षा
राज्य की शक्ति केवल लोगों की कुल संख्या पर नहीं, अपितु उनके कौशल, शिक्षा और स्वास्थ्य पर निर्भर करती है, जिन्हें प्रमुख मानवीय तत्व माना जाता है। शिक्षित और तकनीकी रूप से दक्ष जनसंख्या संसाधनों का अधिक कुशलता से दोहन कर सकती है और देश की आर्थिक उत्पादकता को उन्नत कर सकती है। उच्च कौशल स्तर नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है, जो आधुनिक युग में वैश्विक प्रतिस्पर्धा हेतु अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, जागरूक और शिक्षित नागरिक समाज राज्य की राजनीतिक स्थिरता को सुदृढ़ बनाता है, जिससे राष्ट्र का समग्र प्रभाव और प्रभावशीलता बढ़ती है।

219. (A) रिमलैंड
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने हर्टलैंड सिद्धांत में यूरेशिया की तटीय परिधि को 'आंतरिक अर्धचंद्राकार' के रूप में परिभाषित किया था। निकोलस स्पाइकमैन ने पश्चात इसी क्षेत्र को 'रिमलैंड' नाम दिया और इसे वैश्विक शक्ति का वास्तविक केंद्र माना। दोनों विचारकों ने एक ही भौगोलिक क्षेत्र के विषय में तर्क दिया, किंतु उनके रणनीतिक निष्कर्ष भिन्न थे। मैकिन्डर ने इसे हर्टलैंड के प्रभाव क्षेत्र के रूप में देखा, जबकि स्पाइकमैन ने तर्क दिया कि यह उभयचर क्षेत्र हर्टलैंड को संतुलित करने और विश्व पर प्रभुत्व स्थापित करने हेतु रणनीतिक रूप से अधिक निर्णायक है।

220. (D) यह सांस्कृतिक परिदृश्य की उपेक्षा कर बाहरी शक्ति द्वारा थोपी गई है।
अध्यारोपित सीमा वह राजनीतिक रेखा है जो क्षेत्र की जमीनी सांस्कृतिक, भाषाई या जातीय वास्तविकताओं को पूर्णतः उपेक्षित करते हुए बाहरी शक्तियों द्वारा मानचित्र पर खींच दी जाती है। ऐसी सीमाएँ प्रायः औपनिवेशिक काल के दौरान साम्राज्यवादी देशों द्वारा अपनी प्रशासनिक सुविधा हेतु थोपी गई थीं। चूंकि ये सीमाएँ स्थानीय समुदायों के स्वाभाविक विभाजनों और उनकी ऐतिहासिक पहचान के साथ मेल नहीं खातीं, इसलिए ये अक्सर दीर्घकालिक नागरिक संघर्षों और राजनीतिक अस्थिरता का मुख्य कारण बनी रहती हैं। यह भौगोलिक रूप से थोपा गया कृत्रिम विभाजन है।

NODIA

221. (B) गोदावरी
बभली बैराज महाराष्ट्र राज्य में गोदावरी नदी की मुख्य धारा पर स्थित है। यह बैराज एक लंबे समय से महाराष्ट्र और तेलंगाना के मध्य जल विवाद का केंद्र रहा है। विवाद का मुख्य कारण निचले राज्यों की चिंता थी कि इस बैराज के निर्माण से उनके महत्वपूर्ण सिंचाई प्रोजेक्ट्स, जैसे श्रीराम सागर परियोजना, में जल का प्रवाह न्यून हो जाएगा। इस मुद्दे ने अंतर-राज्यीय नदी जल प्रबंधन के तकनीकी और कानूनी संघर्षों को रेखांकित किया। अंततः, इस विवाद का समाधान सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप और विशिष्ट जल आवंटन नियमों के माध्यम से किया गया।

222. (C) भारत, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका
हिंद महासागर क्षेत्र में वर्तमान भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा मुख्य रूप से भारत, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य केंद्रित है। भारत हेतु यह उसका प्राथमिक प्रभाव क्षेत्र और सुरक्षा चिंता है। चीन अपनी 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' और समुद्री मार्गों की सुरक्षा के माध्यम से अपनी उपस्थिति का विस्तार कर रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका अपने रणनीतिक अड्डों और वैश्विक व्यापार मार्गों की रक्षा हेतु इस क्षेत्र में अपनी नौसैनिक शक्ति बनाए रखता है। इन महाशक्तियों के प्रतिस्पर्धी हित और नौसैनिक वर्चस्व की होड़ इस महासागर को वैश्विक कूटनीति का निर्णायक रंगमंच बनाते हैं।

223. (D) सांस्कृतिक लक्षण की समरूपता का विश्लेषण
भाषाई प्रदेश के सटीक परिसीमन हेतु सांस्कृतिक लक्षणों की समरूपता का विश्लेषण सर्वाधिक श्रेष्ठ विधि मानी जाती है। इसमें विशेष भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा या बोलियों के प्रसार और उनके प्रयोग की तीव्रता का अध्ययन किया जाता है। जहाँ तक एक ही भाषा का प्रभुत्व होता है, उस क्षेत्र को भाषाई प्रदेश के रूप में मान्यता दी जाती है। यह 'औपचारिक प्रदेश' का उदाहरण है क्योंकि यह आंतरिक सांस्कृतिक विशेषता में एकरूपता पर आधारित है। यह विधि क्षेत्रीय पहचान को समझने और भाषाई आधार पर प्रशासनिक नीतियां बनाने हेतु अनिवार्य है।

224. (D) I, II और III
राज्य के भौगोलिक तत्व एक बहुआयामी संरचना का निर्माण करते हैं। भौतिक तत्वों में क्षेत्रीय आकार और आकृति सम्मिलित हैं जो शासन की सुगमता को प्रभावित करते हैं। मानवीय तत्वों के अंतर्गत जनसंख्या की गुणवत्ता और राष्ट्रीय पहचान की भावना आती है जो राज्य को आंतरिक मजबूती प्रदान करती है। आर्थिक तत्व प्राकृतिक संसाधनों के भंडार

और औद्योगिक क्षमता को दर्शाते हैं जो देश की समृद्धि और वैश्विक शक्ति का आधार बनते हैं। इन सभी तत्वों का संतुलित होना किसी भी राज्य की स्थिरता, सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल विकास हेतु अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

225. (B) राज्य की संप्रभुता और क्षेत्रीय नियंत्रण का सुदृढ़ीकरण।
आधुनिक विश्व में 'सीमांत' जैसे अनिश्चित क्षेत्रों का 'सटीक सीमाओं' में परिवर्तित होना राज्य की संप्रभुता के सुदृढ़ीकरण का प्रतीक है। ऐतिहासिक रूप से सीमांत राज्यों के मध्य के वे अनिश्चित क्षेत्र थे जहाँ संप्रभुता सुस्पष्ट नहीं थी। आधुनिक राष्ट्र-राज्य ने अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और मानचित्रों के माध्यम से अपने अधिकार क्षेत्र की सटीक रेखीय सीमाएं स्थापित की हैं। यह परिवर्तन राज्य को अपने क्षेत्र के भीतर कानून व्यवस्था लागू करने और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में अधिक सक्षम बनाता है। यह राजनीतिक स्थिरता और स्पष्ट अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

226. (A) यह सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण की उपेक्षा करता है।
विकास के संकेतक के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की सर्वाधिक आलोचना यह है कि यह केवल आर्थिक उत्पादन के मौद्रिक मूल्य को मापता है और यह नहीं बताता कि वह उत्पादन समाज हेतु कितना लाभकारी है। यह आय की असमानता, शिक्षा और स्वास्थ्य के स्तर, तथा पर्यावरण को होने वाली क्षति की पूर्णतः उपेक्षा करता है। उच्च सकल घरेलू उत्पाद के उपरांत भी देश में गरीबी और प्रदूषण अधिक हो सकता है। वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन करने हेतु अब मानव विकास सूचकांक और सतत विकास संकेतकों जैसे अधिक समावेशी मापदंडों की आवश्यकता अनुभव की जाती है।

227. (C) खंडित
खंडित राज्य आकृति, जो कई द्वीपों या पृथक भूभागों में विभक्त होती है, रक्षा के दृष्टिकोण से सर्वाधिक चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। इस प्रकार की आकृति में राज्य की सीमाओं की कुल लंबाई बहुत अधिक हो जाती है, जिससे प्रत्येक भाग की प्रभावी निगरानी और सुरक्षा करना कठिन एवं खर्चीला होता है। इसके अतिरिक्त, एक भाग पर आक्रमण होने की स्थिति में मुख्य केंद्र से सैन्य सहायता और रसद पहुँचाने में लगने वाला समय अधिक होता है, विशेषकर जब मध्य में समुद्र या किसी अन्य देश का क्षेत्र हो। यह भौगोलिक विखंडन रणनीतिक सुरक्षा हेतु एक बड़ी बाधा है।

228. (D) विकसित और अविकसित क्षेत्रों के बीच असमानता कम करना।
भारत जैसे विशाल राष्ट्र में प्रादेशिक नियोजन का मुख्य दर्शन संतुलित क्षेत्रीय विकास पर आधारित है। प्रायः देखा जाता है कि कुछ राज्य तीव्र प्रगति करते हैं जबकि अन्य अपनी भौगोलिक स्थिति या संसाधनों की न्यूनता के कारण पिछड़ जाते हैं। नियोजन का प्राथमिक लक्ष्य संसाधनों का न्यायसंगत आवंटन करना और पिछड़े क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, शिक्षा और उद्योगों को प्रोत्साहित करना है। यह प्रक्रिया न केवल आर्थिक न्याय सुनिश्चित करती है, अपितु क्षेत्रीय असंतोष को कम कर राष्ट्रीय एकता और अखंडता को भी सुदृढ़ता प्रदान करती है, जो विकास हेतु आवश्यक है।

229. (B) समुद्री शक्ति के लिए दुर्गम महाद्वीपीय क्षेत्र
हैल्फोर्ड मैकिन्डर के भू-राजनीतिक मॉडल में 'हर्टलैंड' यूरेशिया के उस विशाल आंतरिक भूभाग को कहा गया है जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण समुद्री शक्तियों की पहुँच से पूर्णतः बाहर था। यह क्षेत्र चारों ओर से विशाल पर्वतों, मरुस्थलों और उत्तर में बर्फ से आवृत्त है, जिससे यहाँ बाहरी नौसैनिक आक्रमण करना असंभव था। मैकिन्डर ने इसे 'प्राकृतिक किले' के रूप में देखा। उनका मानना था कि यह सुरक्षित और संसाधन-संपन्न क्षेत्र शक्तिशाली स्थलीय सेना हेतु विश्व पर प्रभुत्व स्थापित करने का सर्वाधिक सुदृढ़ और रणनीतिक आधार प्रदान करता है।

230. (A) फ्रेडरिक रेटजेल
जर्मन भूगोलवेत्ता फ्रेडरिक रेटजेल को 'जियोपॉलिटिक्स' और राज्य के जैविक विचार को प्रोत्साहित करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पॉलिटिकल जियोग्राफी' में तर्क दिया कि राज्य जीवित जीव के समान है जो प्राकृतिक पर्यावरण से सम्बद्ध होता है। रेटजेल ने 'लेबेन्सराउम' या रहने हेतु स्थान की अवधारणा दी, जो यह मानती है कि एक स्वस्थ और बढ़ते हुए राष्ट्र को अपने अस्तित्व को बनाए रखने हेतु निरंतर क्षेत्रीय विस्तार की आवश्यकता होती है। उनके इन विचारों ने आधुनिक भू-राजनीति और 20वीं सदी के रणनीतिक सिद्धांतों को गहराई से प्रभावित किया।

231. (C) अवशेष सीमा
अवशेष सीमा वह ऐतिहासिक राजनीतिक रेखा होती है जिसका अब कोई आधिकारिक या कानूनी अस्तित्व नहीं है, किंतु वह अभी भी भौतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर सुस्पष्ट दिखाई देती है। पुरानी किलेबंद रेखा या दीवार जो कभी दो राज्यों को पृथक करती थी, इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। यद्यपि अब संप्रभुता का विभाजन समाप्त हो चुका है, किंतु वह रेखा क्षेत्र की पहचान, वास्तुकला और जनस्मृति में स्थायी छाप छोड़ती है। अवशेष सीमाएँ क्षेत्र के ऐतिहासिक संघर्षों और राजनीतिक विकास के क्रमिक इतिहास को समझने हेतु महत्वपूर्ण भौगोलिक साक्ष्य प्रदान करती हैं।

232. (D) नियोजन प्रदेश
नदी घाटी परियोजना हेतु परिभाषित क्षेत्र विशिष्ट 'नियोजन प्रदेश' का उदाहरण है। इस प्रदेश का निर्धारण किसी प्रशासनिक सीमा के स्थान पर प्राकृतिक भौगोलिक इकाई (नदी बेसिन) के आधार पर किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उस सम्पूर्ण घाटी के संसाधनों—जैसे जल, मृदा और वन—का एकीकृत और वैज्ञानिक प्रबंधन करना है ताकि बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई और विद्युत उत्पादन के लक्ष्यों को सामूहिक रूप से प्राप्त किया जा सके। नियोजन प्रदेश का यह स्वरूप लचीला और समस्या-उन्मुख होता है, जो इसे आर्थिक और पर्यावरणीय विकास हेतु एक प्रभावी स्थानिक ढांचा बनाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

233. (A) गोवा, महाराष्ट्र और कर्नाटक
मांडवी नदी जल विवाद पश्चिमी भारत का प्रमुख अंतर-राज्यीय संघर्ष है, जिसमें गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्य सम्मिलित हैं। यह विवाद मुख्य रूप से कर्नाटक द्वारा नदी के जल को अपने शुष्क क्षेत्रों हेतु मोड़ने हेतु प्रस्तावित कलसा-भंडूरी परियोजना को लेकर है। गोवा इस परियोजना का तीव्र विरोध करता है क्योंकि मांडवी नदी गोवा की जीवनरेखा है और उसे भय है कि जल प्रवाह में न्यूनता से पारिस्थितिक तंत्र और मत्स्य पालन को गंभीर क्षति पहुँचेगा। इस जटिल विवाद के समाधान हेतु न्यायाधिकरण ने विभिन्न राज्यों हेतु जल के हिस्से निर्धारित किए हैं।

234. (B) लोग, ग्रह, समृद्धि
सतत विकास के तीन मुख्य स्तंभों को 'लोग, ग्रह और समृद्धि' के रूप में संक्षिप्त किया जाता है। 'लोग' सामाजिक समता और समावेशिता को दर्शाते हैं, 'ग्रह' पर्यावरणीय संरक्षण और संसाधनों के सतत प्रबंधन का प्रतिनिधित्व करता है, और 'समृद्धि' आर्थिक वृद्धि और न्यायसंगत लाभ के वितरण को सुनिश्चित करती है। इन तीनों आयामों के मध्य का संतुलन ही यह सुनिश्चित करता है कि विकास न केवल वर्तमान हेतु लाभदायक हो, अपितु भावी पीढ़ियों हेतु भी सुरक्षित और समृद्ध विश्व छोड़ जाए। यह आधुनिक वैश्विक नीति निर्माण का मूल दर्शन और आधार है।

235. (C) आर्थिक विकास के माप के विकल्प के रूप में।
मानव विकास सूचकांक को महबूब उल हक और अमर्त्य सेन जैसे अर्थशास्त्रियों द्वारा सकल घरेलू उत्पाद जैसे शुद्ध आर्थिक मापदंडों के विकल्प के रूप में विकसित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य यह दर्शाना था कि वास्तविक विकास केवल आय में वृद्धि नहीं, अपितु लोगों के पास ज्ञान प्राप्त करने, स्वस्थ जीवन व्यतीत करने और संसाधनों तक पहुँचने की क्षमता में विस्तार है। मानव विकास सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा और आय को मिलाकर एक बहुआयामी चित्र प्रस्तुत करता है, जो नीति निर्माताओं को मानव कल्याण की गुणवत्ता के आधार पर प्रगति का मूल्यांकन करने में सहायता करता है।

236. (D) समुद्री संचार मार्ग
हिंद महासागर के रणनीतिक संदर्भ में SLOC का अर्थ 'समुद्री संचार मार्ग' है। ये वे प्राथमिक समुद्री मार्ग हैं जो बंदरगाहों के मध्य वस्तुओं के व्यापार, ऊर्जा परिवहन और सैन्य रसद की आवाजाही हेतु प्रयुक्त होते हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा माने जाने वाले ये मार्ग अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि विश्व का अधिकांश व्यापार इन्हीं के माध्यम से संचालित होता है। इन मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और रणनीतिक चोकपॉइंट्स पर नियंत्रण बनाए रखना किसी भी देश की नौसैनिक रणनीति और भू-राजनीतिक प्रभाव का अनिवार्य भाग माना जाता है, जो सुरक्षा हेतु आवश्यक है।

237. (A) हर्टलैंड पर नियंत्रण रखने वाली एक महाद्वीपीय शक्ति।
हैल्फोर्ड मैकिन्डर का मानना था कि वैश्विक रणनीतिक संतुलन हेतु सर्वाधिक बड़ा संकट वह महाद्वीपीय शक्ति होगी जो हर्टलैंड के विशाल संसाधनों और सुरक्षित भूभाग पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेगी। उनका तर्क था कि यदि कोई राष्ट्र इस क्षेत्र को एकीकृत कर लेता है, तो वह अपनी अपार जनशक्ति और स्थलीय गतिशीलता के कारण शेष 'विश्व-द्वीप' पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सकता है। मैकिन्डर ने चेतावनी दी थी कि ऐसी स्थिति समुद्री शक्तियों के प्रभाव को पूर्णतः समाप्त कर सकती है और ऐसी अजेय वैश्विक सत्ता को जन्म दे सकती है जो सम्पूर्ण विश्व पर शासन करेगी।

238. (B) आर्थिक तत्व
किसी राज्य की औद्योगिक क्षमता उसकी समग्र शक्ति के 'आर्थिक तत्वों' का अनिवार्य भाग है। इसमें कारखानों की संख्या, उत्पादन की दक्षता, विनिर्माण आधार की विविधता और उन्नत विनिर्माण तकनीकों का प्रयोग सम्मिलित है। मजबूत औद्योगिक आधार न केवल देश को उपभोक्ता वस्तुओं और रक्षा उपकरणों हेतु आत्मनिर्भर बनाता है, अपितु यह रोजगार सृजन और अंतर्राष्ट्रीय निर्यात बढ़ाकर राष्ट्रीय समृद्धि सुनिश्चित करता है। आर्थिक तत्व ही राज्य को वह वित्तीय और भौतिक सामर्थ्य प्रदान करते हैं जो उसकी रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक मंच पर प्रभाव बनाए रखने हेतु आवश्यक है।

239. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भू-राजनीति के विभिन्न सिद्धांतों ने रणनीतिक सोच को आकार प्रदान किया है। हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने हर्टलैंड की अवधारणा दी, जो स्थलीय शक्ति पर केंद्रित थी। निकोलस स्पाइकमैन ने इसके प्रत्युत्तर में रिमलैंड सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें तटीय क्षेत्रों के महत्व को रेखांकित किया गया। अल्फ्रेड महन ने समुद्री शक्ति को विश्व प्रभुत्व की कुंजी बताया और नौसैनिक विकास पर बल दिया। फ्रेडरिक रेटजेल ने राज्य का जैविक सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने राज्य की तुलना जीवित जीव से की जिसे 'लेबेन्सराउम' की आवश्यकता होती है। यह मिलान भू-राजनीतिक विकास को स्पष्ट करता है।

240. (C) एक समान या समरूप विशेषता
औपचारिक प्रदेश की प्राथमिक और विशिष्ट विशेषता उसके सम्पूर्ण भौगोलिक विस्तार में एक या अधिक गुणों की एकरूपता या समरूपता है। यह विशेषता प्राकृतिक हो सकती है, जैसे विशिष्ट मृदा प्रकार या जलवायु क्षेत्र, अथवा सांस्कृतिक हो सकती है, जैसे साझा भाषा या धर्म। इन प्रदेशों की सीमाएं सुस्पष्ट रूप से वहीं तक मानी जाती हैं जहाँ तक वह विशेष गुण प्रभावी रहता है। औपचारिक प्रदेश क्षेत्रीय विश्लेषण का एक स्थिर और विश्वसनीय आधार प्रदान करते हैं, जिससे शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को उस क्षेत्र की विशिष्ट भौगोलिक पहचान को समझने में सहायता मिलती है।

241. (D) प्रादेशिक नियोजन
भारत में विदर्भ या मराठवाड़ा विकास बोर्ड जैसे संस्थानों का निर्माण प्रादेशिक नियोजन का महत्वपूर्ण साधन है। इनका मुख्य उद्देश्य राज्य के भीतर मौजूद क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना और पिछड़े क्षेत्रों के विकास हेतु विशेष ध्यान एवं संसाधन उपलब्ध कराना है। ये बोर्ड उन विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक समस्याओं की पहचान करते हैं जो उन क्षेत्रों की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती हैं और उनके समाधान हेतु लक्षित

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

रणनीतियां निर्मित करते हैं। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि विकास का लाभ राज्य के सभी क्षेत्रों तक न्यायसंगत रूप से पहुँचे और क्षेत्रीय असंतोष के कारण होने वाले तनाव को न्यून किया जा सके।

242. (A) आंध्र प्रदेश और ओडिशा
वंशधारा जल विवाद पूर्वी भारत के दो पड़ोसी राज्यों, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के मध्य एक प्रमुख अंतर-राज्यीय नदी जल संघर्ष है। विवाद मुख्य रूप से इस नदी के जल के न्यायसंगत आवंटन और प्रस्तावित सिंचाई परियोजनाओं एवं बांधों के निर्माण को लेकर है। ओडिशा ने आंध्र प्रदेश द्वारा निर्मित बांधों के कारण अपने क्षेत्र में संभावित जल-भराव और पारिस्थितिक क्षति पर चिंता व्यक्त की है, जबकि आंध्र प्रदेश अपने कृषकों के हितों हेतु जल की आवश्यकता पर बल देता है। इस मुद्दे के समाधान हेतु एक विशेष जल विवाद न्यायाधिकरण वर्तमान में कार्य कर रहा है।

243. (B) अध्यारोपित
अध्यारोपित सीमा वह राजनीतिक रेखा है जिसे औपनिवेशिक या बाहरी शक्ति द्वारा स्थानीय आबादी की सांस्कृतिक, भाषाई या जातीय विशेषताओं की पूर्णतः उपेक्षा करते हुए जबरन थोपा जाता है। ऐसी सीमाएं प्रायः मानचित्र पर प्रशासनिक सुविधा हेतु सीधी रेखाओं के रूप में खींची गई थीं। चूंकि ये सीमाएं समुदायों की स्वाभाविक पहचान और ऐतिहासिक विभाजनों का सम्मान नहीं करतीं, इसलिए ये अक्सर स्वतंत्रता के पश्चात भी दीर्घकालिक नागरिक संघर्षों, सीमा विवादों और राजनीतिक अस्थिरता का मुख्य कारण बनी रहती हैं। यह औपनिवेशिक विरासत का एक चुनौतीपूर्ण और जटिल भौगोलिक परिणाम है।

244. (C) महन
अल्फ्रेड थेयर महन प्रसिद्ध अमेरिकी नौसैनिक रणनीतिकार थे जिनका विश्वास था कि समुद्र पर नियंत्रण ही विश्व शक्ति की वास्तविक कुंजी है। उन्होंने तर्क दिया कि जिन देशों के पास शक्तिशाली नौसेना और सुरक्षित समुद्री व्यापारिक मार्ग हैं, वे वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकते हैं। महन के अनुसार, समुद्री शक्ति केवल सैन्य बल नहीं है, अपितु यह व्यापार, उपनिवेश और कूटनीति का एक एकीकृत साधन है। उनके विचारों ने 19वीं और 20वीं सदी में प्रमुख महाशक्तियों के नौसैनिक विस्तार और उनकी वैश्विक रणनीतियों को मौलिक रूप से प्रभावित किया।

245. (D) ऐतिहासिक परंपराएं
राज्य के भौगोलिक तत्वों के अंतर्गत वे कारक आते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से भौतिक पर्यावरण, मानवीय जनसांख्यिकी और आर्थिक संसाधनों से सम्बद्ध होते हैं, जैसे क्षेत्रीय आकार, जनसंख्या का आकार और आर्थिक प्रणाली। ये तत्व राज्य के स्थानिक अस्तित्व और शक्ति को भौगोलिक दृष्टि से आकार प्रदान करते हैं। 'ऐतिहासिक परंपराएं' सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत का भाग हैं। यद्यपि वे राष्ट्र की पहचान और व्यवहार को प्रभावित करती हैं, किंतु उन्हें राज्य के बुनियादी 'भौगोलिक' तत्वों की श्रेणी में नहीं रखा जाता, जो मुख्य रूप से भौतिक, स्थानिक और संसाधन संबंधी मापदंडों पर केंद्रित होते हैं।

246. (A) समुद्र तक सीधी पहुँच
स्थल-रुद्ध देश वह भौगोलिक इकाई है जिसके पास समुद्र तक अपनी कोई सीधी तटरेखा या पहुँच नहीं होती। इस स्थिति के कारण देश को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और समुद्री संसाधनों के दोहन हेतु पूर्णतः अपने पड़ोसी देशों के पारगमन मार्गों और बंदरगाहों पर आश्रित रहना पड़ता है। यह निर्भरता न केवल व्यापारिक लागत को बढ़ाती है, अपितु पड़ोसी राज्यों के साथ राजनीतिक तनाव होने पर देश की आपूर्ति श्रृंखला और आर्थिक सुरक्षा को भी गंभीर संकट में डाल सकती है। समुद्र तक सुगम पहुँच की कमी देश की नौसैनिक शक्ति के विकास और वैश्विक कूटनीति में उसकी भूमिका को बाधित करती है।

247. (B) सहकारी और सलाहकार भूमिका।
योजना आयोग से नीति आयोग में परिवर्तन भारत की नियोजन शैली में मौलिक परिवर्तन को दर्शाता है। जहाँ पूर्ववर्ती योजना आयोग एक केंद्रीकृत निकाय था जो संसाधनों का आवंटन करता था, वहीं नीति आयोग एक रणनीतिक थिंक टैंक के रूप में कार्य करता है। इसकी मुख्य भूमिका केंद्र और राज्यों को नीतिगत परामर्श देना और सहकारी वातावरण निर्मित करना है जहाँ राज्य अपनी विकास रणनीतियों को तैयार करने में अधिक स्वायत्त और सक्रिय सहभागी होते हैं। यह दृष्टिकोण आदेशात्मक नियोजन के स्थान पर परामर्शात्मक और नवाचार-आधारित विकास पर बल देता है, जो शासन को अधिक प्रभावी बनाता है।

248. (C) मैकिन्डर का हर्टलैंड सिद्धांत
निकोलस स्पाइकमैन का रिमलैंड सिद्धांत स्पष्ट रूप से हैल्फोर्ड मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत को चुनौती देने और उसे संशोधित करने हेतु प्रस्तावित किया गया था। मैकिन्डर ने यूरेशिया के आंतरिक भाग को विश्व शक्ति का केंद्र माना था, किंतु स्पाइकमैन ने तर्क दिया कि यूरेशिया की तटीय परिधि रणनीतिक रूप से अधिक महत्वपूर्ण है। स्पाइकमैन के अनुसार, रिमलैंड अपनी उभयचर प्रकृति के कारण समुद्री और स्थलीय दोनों प्रभावों को नियंत्रित कर सकता है। उनका यह विचार मैकिन्डर की स्थलीय शक्ति की श्रेष्ठता वाली धारणा के विरुद्ध एक शक्तिशाली और निर्णायक भू-राजनीतिक प्रति-तर्क था।

249. (A) III, II, IV, I
प्रादेशिक नियोजन एक व्यवस्थित और तार्किक प्रक्रिया है। सर्वप्रथम, उन क्षेत्रों की पहचान की जाती है जहाँ विशिष्ट समस्या या विकास की आवश्यकता है। इसके पश्चात, उस क्षेत्र की विशिष्टताओं के अनुरूप एक विस्तृत योजना निर्मित की जाती है। तृतीय चरण में, उस योजना का धरातल पर कार्यान्वयन किया जाता है। अंत में, योजना के परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है ताकि यह ज्ञात हो सके कि निर्धारित लक्ष्य प्राप्त हुए हैं अथवा नहीं और भविष्य हेतु आवश्यक सुधार किए जा सकें। यह वैज्ञानिक क्रम सीमित संसाधनों के सफल और टिकाऊ प्रबंधन को सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य माना जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

266. (D) क्षेत्रीय असंतुलन दूर करना
भारत जैसे विशाल राष्ट्र में प्रादेशिक नियोजन का प्राथमिक लक्ष्य क्षेत्रीय असंतुलन और असमानताओं को न्यून करना है। प्रायः देखा जाता है कि प्राकृतिक संसाधनों, ऐतिहासिक विरासत या अवस्थिति के कारण कुछ क्षेत्र तीव्र विकसित होते हैं जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। नियोजन का मुख्य कार्य संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना और पिछड़े एवं अविकसित क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, शिक्षा और उद्योगों हेतु विशेष प्रावधान करना है। यह संतुलित विकास न केवल आर्थिक न्याय प्रदान करता है, अपितु क्षेत्रीय असंतोष को न्यून कर राष्ट्रीय एकता और अखंडता को भी सुदृढ़ता प्रदान करता है, जिससे समग्र विकास सुनिश्चित होता है।

267. (A) परिवहन और संचार बुनियादी ढांचा
किसी राज्य के आर्थिक तत्व उन संसाधनों और सुविधाओं को संदर्भित करते हैं जो उसकी उत्पादन, व्यापार और वितरण की क्षमता को सुगम बनाते हैं। आधुनिक परिवहन और संचार बुनियादी ढांचा—जैसे बंदरगाह, रेलवे, राजमार्ग और डिजिटल नेटवर्क—आर्थिक शक्ति का आधार स्तंभ है। यह संसाधनों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करता है, व्यापारिक लागत को न्यून करता है और देश के विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत बाजार में सम्बद्ध करता है। सुदृढ़ बुनियादी ढांचा न केवल घरेलू आर्थिक स्थिरता प्रदान करता है, अपितु वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी राज्य की स्थिति को काफी शक्तिशाली बनाता है, जो राष्ट्रीय प्रगति हेतु अनिवार्य है।

268. (C) समुद्री शक्ति
हैल्फोर्ड मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत के अनुसार, 'धुरी क्षेत्र' की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रणनीतिक विशेषता इसकी समुद्री शक्ति से प्राकृतिक सुरक्षा थी। यह क्षेत्र यूरेशिया के केंद्र में स्थित है और चारों ओर से विशाल पर्वतों, मरुस्थलों और उत्तर में बर्फ से आवृत्त है, जिससे यहाँ नौसैनिक आक्रमण करना सर्वथा असंभव था। मैकिन्डर ने इसे 'प्राकृतिक किला' माना जहाँ से स्थलीय शक्ति समुद्र-आधारित शक्तियों के दबाव के बिना स्वयं को संगठित कर सकती थी। यह भौगोलिक अभेद्यता ही हर्टलैंड को विश्व प्रभुत्व का रणनीतिक केंद्र बनाने का मुख्य आधार थी, जिसने 20वीं सदी की वैश्विक राजनीति को अत्यधिक प्रभावित किया।

269. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
भारत में अंतर-राज्यीय जल विवाद वास्तव में अत्यंत जटिल हैं क्योंकि जल एक दुर्लभ और अनिवार्य संसाधन है जिस पर राज्यों की कृषि और उद्योग पूर्णतः आश्रित हैं। यद्यपि यह कथन कि "नदियाँ राज्य की सीमाओं का पालन नहीं करती हैं" तकनीकी रूप से सत्य है, किंतु यह "कारण" के रूप में विवाद की पूर्ण व्याख्या नहीं करता। विवादों का मुख्य कारण बढ़ती जल की मांग, संसाधनों की न्यूनता और ऐतिहासिक आवंटन समझौतों पर असहमति है। केवल सीमाओं का नदी प्रवाह से भिन्न होना ही विवाद उत्पन्न नहीं करता, अपितु उस जल के उपयोग पर प्रतिस्पर्धी दावे ही अंतर-राज्यीय तनाव का वास्तविक और प्राथमिक कारण बनते हैं।

270. (A) सीमांत एक क्षेत्र है।
राजनीतिक भूगोल में सीमांत और सीमा के मध्य का मूलभूत अंतर उनके स्थानिक स्वरूप में निहित है। 'सीमांत' एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र या पट्टी होती है जो दो राज्यों या सांस्कृतिक मंडलों के मध्य एक संक्रमणकालीन ज़ोन के रूप में कार्य करती है। ऐतिहासिक रूप से, ये वे क्षेत्र थे जहाँ संप्रभुता सुस्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं थी। इसके विपरीत, 'सीमा' एक सुस्पष्ट और कानूनी रूप से परिभाषित रेखीय इकाई है जो संप्रभुता के सटीक अंत को चिह्नित करती है। सीमांत एक भौगोलिक ज़ोन है, जबकि सीमा एक रेखीय विभाजन है, जो आधुनिक राष्ट्र-राज्य के विकास और अंतर्राष्ट्रीय कानून के साथ स्थापित हुई है।

271. (D) जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय
मानव विकास सूचकांक विकास का बहुआयामी मापदंड है जिसे केवल आर्थिक वृद्धि से पृथक मानव कल्याण का मूल्यांकन करने हेतु निर्मित किया गया है। यह तीन प्रमुख संकेतकों का संयुक्त आँकड़ा है: जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष, और प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय। इन तीनों को एकीकृत कर यह सूचकांक किसी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है। यह नीति निर्माताओं को यह समझने में सहायता करता है कि क्या आर्थिक समृद्धि वास्तव में नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता और क्षमताओं में सुधार कर रही है, जो कि विकास का वास्तविक लक्ष्य होना चाहिए।

NODIA

272. (B) लाल सागर और अदन की खाड़ी
बाब-एल-मंडेब जलडमरूमध्य अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीतिक चोकपॉइंट है जो लाल सागर को अदन की खाड़ी और अरब सागर से सम्बद्ध करता है। यह जलमार्ग स्वेज नहर के माध्यम से यूरोप और एशिया के मध्य होने वाले समुद्री व्यापार का मुख्य प्रवेश द्वार है। वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और व्यापारिक माल का विशाल हिस्सा इसी संकीर्ण मार्ग से होकर गुजरता है। इसकी अवस्थिति इसे अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और कूटनीति का केंद्र बनाती है, क्योंकि यहाँ किसी भी प्रकार का सैन्य अवरोध वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और ऊर्जा बाजार में वृहद अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

273. (A) मानवीय
जनसंख्या की विशेषताएँ, जैसे शिक्षा स्तर, तकनीकी कौशल और राष्ट्रीय पहचान की भावना, राज्य के 'मानवीय तत्वों' की श्रेणी में आती हैं। ये तत्व प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र की शक्ति और उसकी विकास क्षमता को निर्धारित करते हैं। शिक्षित और जागरूक जनसंख्या संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग कर सकती है और देश की आर्थिक उत्पादकता को बढ़ा सकती है। साथ ही, राष्ट्रीय पहचान और साझा गौरव की भावना समाज को आंतरिक रूप से एकीकृत करती है, जिससे राज्य की स्थिरता सुदृढ़ होती है। मानवीय तत्वों का विकास ही किसी भी राष्ट्र की दीर्घकालिक प्रगति, सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव का वास्तविक और स्थाई आधार होता है।

258. (C) ध्रुवीय बर्फ का पिघलना
हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व मुख्य रूप से इसकी रणनीतिक अवस्थिति, वैश्विक व्यापार हेतु इसके प्रमुख समुद्री संचार मार्गों और इसके नीचे स्थित हाइड्रोकार्बन संसाधनों पर आधारित है। यह महासागर विश्व की विशालतम अर्थव्यवस्थाओं को ऊर्जा आपूर्ति हेतु अनिवार्य जलमार्ग प्रदान करता है। हालाँकि ध्रुवीय बर्फ का पिघलना एक गंभीर वैश्विक जलवायु संकट है, किंतु इसका प्रत्यक्ष संबंध हिंद महासागर के रणनीतिक महत्व से नहीं है, क्योंकि यह विशेषता मुख्य रूप से आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों की भू-राजनीति को प्रभावित करती है, न कि इस उष्णकटिबंधीय महासागर की। इसका मुख्य महत्व इसके व्यापारिक मार्गों और संसाधनों में निहित है।

259. (A) अवधारणात्मक प्रदेश
अवधारणात्मक प्रदेश वह भौगोलिक क्षेत्र होता है जो लोगों की साझा धारणाओं, सांस्कृतिक पहचान और उनके 'अपने क्षेत्र' की भावना पर आधारित होता है। यह प्रदेश किसी आधिकारिक प्रशासनिक सीमा या कठोर भौतिक समरूपता द्वारा परिभाषित नहीं होता, अपितु यह लोगों के मानसिक मानचित्र और उनकी क्षेत्रीय वफादारी से उभरता है। उदाहरण के लिए, किसी विशेष नाम से पहचाना जाने वाला सांस्कृतिक अंचल जहाँ के लोग साझा इतिहास या बोली से जुड़ाव अनुभव करते हैं। यह प्रदेश मानवीय भूगोल और क्षेत्रीय पहचान के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह समाज के आंतरिक भौगोलिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है।

260. (D) कृष्णा
अलमट्टी बांध विवाद दक्षिण भारत के दो प्रमुख राज्यों, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के मध्य कृष्णा नदी के जल के उपयोग को लेकर दीर्घकालिक संघर्ष रहा है। यह बांध कर्नाटक के बीजापुर जिले में स्थित है और विवाद का मुख्य केंद्र इसकी ऊँचाई को बढ़ाने का प्रस्ताव था। आंध्र प्रदेश को भय था कि बांध की ऊँचाई बढ़ने से उसके निचले क्षेत्रों में जल का प्रवाह न्यून हो जाएगा और उसकी सिंचाई परियोजनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इस मुद्दे को सुलझाने हेतु कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण ने बांध की ऊँचाई और जल भंडारण हेतु विशिष्ट सीमाएं निर्धारित की हैं ताकि दोनों राज्यों के कृषकों के हितों की रक्षा हो सके।

261. (B) आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक
सतत विकास की अवधारणा तीन अनिवार्य और परस्पर निर्भर स्तंभों पर आधारित है: आर्थिक वृद्धि, पर्यावरणीय सुरक्षा और सामाजिक समता। वास्तविक प्रगति केवल तभी संभव है जब आर्थिक लाभ न्यायसंगत रूप से समाज के सभी वर्गों तक पहुँचें, जबकि प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन इस प्रकार किया जाए कि वे भावी पीढ़ियों हेतु सुरक्षित रहें। इनमें से किसी भी एक आयाम की उपेक्षा दीर्घकालिक अस्थिरता और संकट उत्पन्न कर सकती है। यह एकीकृत दृष्टिकोण ही मानवता हेतु ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है जो समृद्ध होने के साथ-साथ टिकाऊ, न्यायपूर्ण और सुरक्षित भी हो, जिससे वैश्विक स्थिरता और मानव कल्याण सुनिश्चित हो सके।

262. (C) यूरेशियाई तटीय भूमि
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा प्रतिपादित रिमलैंड सिद्धांत के अनुसार, यूरेशियाई तटीय भूमि ही विश्व शक्ति की वास्तविक कुंजी है। स्पाइकमैन ने मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत को चुनौती देते हुए तर्क दिया कि यह परिधीय क्षेत्र रणनीतिक रूप से अधिक शक्तिशाली है क्योंकि यह समुद्र और भूमि दोनों के नियंत्रण को सम्बद्ध करता है। रिमलैंड के पास वैश्विक व्यापारिक मार्गों तक सीधी पहुँच है और यह बफर क्षेत्र के रूप में कार्य करता है जो महाद्वीपीय और समुद्री शक्तियों के मध्य संतुलन निर्मित करता है। उनके अनुसार, रिमलैंड पर प्रभुत्व रखने वाली शक्ति ही अंततः सम्पूर्ण विश्व के भाग्य का निर्धारण करने में सक्षम होती है।

263. (D) औपचारिक प्रदेश
साझा जलवायु विशेषता वाला क्षेत्र 'औपचारिक प्रदेश' का सटीक उदाहरण है क्योंकि यह अपने सम्पूर्ण भौगोलिक विस्तार में विशिष्ट भौतिक लक्षण (जलवायु) में एकरूपता या समरूपता प्रदर्शित करता है। इन प्रदेशों का परिसीमन उस विशेष विशेषता की निरंतरता के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक भूमध्यसागरीय जलवायु प्रदेश वह होगा जहाँ उस जलवायु की सभी प्रमुख विशेषताएँ समान रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। औपचारिक प्रदेश क्षेत्रीय विश्लेषण का स्थिर आधार प्रदान करते हैं, जो वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं को समान भौगोलिक परिस्थितियों वाले क्षेत्रों हेतु प्रभावी रणनीतियाँ और योजनाएं विकसित करने में सहायता करते हैं।

NODIA

264. (C) कठिन आंतरिक संचार और एकीकरण
विस्तारित राज्य आकृति, जैसे चिली या वियतनाम, का मुख्य दोष यह है कि इसमें राजधानी और देश के सुदूर क्षेत्रों के मध्य की दूरी बहुत अधिक होती है। यह भौगोलिक स्थिति आंतरिक संचार और परिवहन हेतु वृहद बाधाएँ उत्पन्न करती है, जो प्रशासनिक नियंत्रण को कठिन और खर्चीला बना देती है। इसके अतिरिक्त, ऐसी आकृति के कारण देश में व्यापक जलवायु और सांस्कृतिक भिन्नताएं दृष्टिगोचर हो सकती हैं, जो कभी-कभी स्थानीय पहचान को राष्ट्रीय पहचान से अधिक सुदृढ़ कर देती हैं, जिससे राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया मंथर और चुनौतीपूर्ण हो सकती है। यह रक्षा प्रबंधन हेतु भी अतिरिक्त सैन्य संसाधनों की मांग करता है।

265. (B) अवशेष
अवशेष सीमा वह राजनीतिक रेखा है जो अब आधिकारिक या कानूनी विभाजन के रूप में कार्य नहीं करती, किंतु उसके ऐतिहासिक प्रभाव अभी भी सांस्कृतिक और भौतिक परिदृश्य पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। ऐसी सीमाएं अक्सर पुराने साम्राज्यों, किलाबंदियों या वैचारिक विभाजनों के अवशेष के रूप में शेष रह जाती हैं। उदाहरण के लिए, पूर्व बर्लिन दीवार का मार्ग अभी भी शहर के स्थापत्य और विकास के प्रतिरूपों में अपनी छाप छोड़ता है। अवशेष सीमाएँ हमें अतीत के संघर्षों और क्षेत्रीय परिवर्तनों का स्मरण कराती हैं, जो उस क्षेत्र के ऐतिहासिक भूगोल और सामाजिक विकास को समझने हेतु अमूल्य साक्ष्य और संदर्भ प्रदान करती हैं।

282. (D) सैन्य विस्तार
सतत विकास की अवधारणा मुख्य रूप से तीन स्तंभों—आर्थिक विकास, सामाजिक समता और पर्यावरण संरक्षण—पर आधारित है। इसका लक्ष्य संतुलित प्रगति सुनिश्चित करना है जो दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ हो। सैन्य विस्तार सतत विकास का भाग नहीं है क्योंकि यह प्रायः संसाधनों के वृहद हिस्से को सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण के स्थान पर आयुधों की होड़ में परिवर्तित कर देता है, जो विकास के बुनियादी सिद्धांतों के प्रतिकूल है। सतत विकास का ध्यान युद्ध की तैयारी के स्थान पर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और संसाधनों के न्यायसंगत प्रबंधन के माध्यम से वैश्विक स्थिरता और मानव कल्याण बनाए रखने पर केंद्रित होता है।

283. (B) ऊर्जा और व्यापार प्रवाह के लिए मार्ग
हिंद महासागर का भू-राजनीतिक महत्व मुख्य रूप से वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और व्यापारिक वस्तुओं के परिवहन हेतु इसके अनिवार्य समुद्री संचार मार्गों के कारण है। विश्व के कुल व्यापार और विशेष रूप से कच्चे तेल का विशाल हिस्सा इस महासागर के रणनीतिक चोकपॉइंट्स, जैसे मलक्का और हॉर्मुज जलडमरूमध्य, से होकर गुजरता है। यह महासागर पश्चिम के विकसित बाजारों को पूर्व की उभरती एशियाई शक्तियों से सम्बद्ध करने वाली मुख्य धमनी है। इन व्यापार मार्गों की सुरक्षा और उन पर नियंत्रण बनाए रखना सभी वैश्विक महाशक्तियों हेतु सर्वोच्च आर्थिक और रणनीतिक प्राथमिकता बन गई है, जो क्षेत्र की स्थिरता हेतु निर्णायक है।

284. (D) I, II और III
राजनीतिक भूगोल में सीमाओं का वर्गीकरण उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर किया जाता है। पूर्ववर्ती सीमाएँ सघन जनसंख्या बसने और सांस्कृतिक परिदृश्य विकसित होने से पूर्व स्थापित कर दी जाती हैं। अध्यारोपित सीमाएँ वे होती हैं जिन्हें किसी बाहरी या औपनिवेशिक शक्ति द्वारा स्थानीय वास्तविकताओं की उपेक्षा करते हुए जबरन थोपा जाता है। अवशेष सीमाएँ वे हैं जो अब कानूनी रूप से संप्रभुता को विभाजित नहीं करतीं, किंतु उनके ऐतिहासिक और भौतिक प्रमाण अभी भी परिदृश्य पर विद्यमान हैं। ये तीनों परिभाषाएँ सीमाओं के भिन्न विकासवादी चरणों और उनके सामाजिक-राजनीतिक प्रभावों को सटीक रूप से स्पष्ट करती हैं।

285. (D) रिमलैंड
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा प्रतिपादित रिमलैंड सिद्धांत तटीय क्षेत्रों के रणनीतिक महत्व पर सर्वाधिक बल देता है। स्पाइकमैन ने मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत की आलोचना करते हुए तर्क दिया कि यूरेशिया की तटीय परिधि ही विश्व शक्ति का वास्तविक स्रोत है। उनके अनुसार, ये क्षेत्र अपनी उभयचर प्रकृति के कारण समुद्री और स्थलीय दोनों प्रकार की शक्तियों को नियंत्रित करने की क्षमता रखते हैं। स्पाइकमैन का विश्वास था कि जो शक्ति रिमलैंड पर शासन करेगी, वह सम्पूर्ण यूरेशिया और अंततः पूरी दुनिया के भाग्य को नियंत्रित करने में सक्षम होगी। यह सिद्धांत शीत युद्ध के दौरान वैश्विक भू-राजनीतिक रणनीतियों का आधार बना।

286. (A) यह केंद्र से सीमा की दूरी को न्यूनतम करती है।
संहत राज्य की आकृति आदर्श मानी जाती है क्योंकि इसका स्वरूप लगभग वृत्ताकार या वर्गाकार होता है, जिससे इसके भौगोलिक केंद्र से किसी भी सीमा बिंदु तक की दूरी न्यूनतम और लगभग समान होती है। यह विशेषता प्रशासनिक नियंत्रण को अधिक प्रभावी बनाती है क्योंकि राजधानी से देश के सभी भागों तक संचार और परिवहन तीव्र एवं सरल होता है। सुरक्षा की दृष्टि से भी, संहत राज्यों को अपनी सीमाओं की रक्षा करना सुलभ होता है क्योंकि उनकी सीमा की कुल लंबाई उनके क्षेत्रफल के अनुपात में न्यून होती है। यह भौगोलिक सुसंगति राष्ट्रीय एकता, सुचारु शासन और आंतरिक स्थिरता को निरंतर बढ़ावा देती है।

287. (B) प्रादेशिक नियोजन
पूर्वोत्तर भारत हेतु निर्मित क्षेत्रीय विकास योजनाएँ 'प्रादेशिक नियोजन' का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इस प्रकार का नियोजन देश के एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करता है जो अपनी अनूठी समस्याओं, जैसे कठिन स्थलाकृति या आर्थिक पिछड़ेपन, के कारण विशिष्ट रणनीतियों की मांग करता है। इसका मुख्य उद्देश्य संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग करना, बुनियादी ढांचे में सुधार करना और उस विशिष्ट क्षेत्र को राष्ट्रीय मुख्यधारा के साथ एकीकृत करना है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि विकास कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हों और क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने में प्रभावी सिद्ध हों, जिससे समावेशी राष्ट्रीय प्रगति संभव होती है।

288. (B) नदी बेसिन विस्तृत है।
गोदावरी नदी जल विवाद में महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और मध्य प्रदेश जैसे अनेक राज्यों के सम्मिलित होने का मुख्य कारण इस नदी का अत्यंत विशाल और विविधतापूर्ण बेसिन है। जब नदी का जलग्रहण क्षेत्र कई राज्यों के भौगोलिक विस्तार में फैला होता है, तो उसके जल के उपयोग, सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण और जल विद्युत उत्पादन पर प्रतिस्पर्धी दावे उत्पन्न होना स्वाभाविक है। प्रत्येक राज्य अपनी कृषि और औद्योगिक आवश्यकताओं हेतु अधिक जल की मांग करता है, जिससे संसाधनों के आवंटन का मुद्दा जटिल हो जाता है। बेसिन की विशालता ही इस विवाद की व्यापकता और कूटनीतिक जटिलता का मूल कारण है।

289. (A) औद्योगिकीकरण का स्तर
राज्य के आर्थिक तत्व उन कारकों को संदर्भित करते हैं जो उसकी उत्पादन क्षमता, वित्तीय स्थिरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को निर्धारित करते हैं। औद्योगिकीकरण का स्तर इनमें सर्वाधिक प्रमुख है क्योंकि यह देश की आत्मनिर्भरता, निर्यात क्षमता और तकनीकी प्रगति को प्रतिबिंबित करता है। उच्च औद्योगिक आधार न केवल रोजगार सृजन करता है और नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाता है, अपितु यह आधुनिक रक्षा प्रणालियों के निर्माण हेतु आवश्यक बुनियादी ढांचा भी प्रदान करता है। आर्थिक तत्व ही राज्य को अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में सौदेबाजी की शक्ति और संकट के समय सुदृढ़ता प्रदान करते हैं, जो राष्ट्रीय संप्रभुता हेतु अनिवार्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

274. (C) समस्या और लक्ष्य उन्मुख
'नियोजन प्रदेश' की अवधारणा मूलतः समस्या और लक्ष्य उन्मुख होती है। इसे किसी पारंपरिक प्रशासनिक सीमा के स्थान पर विशिष्ट भौगोलिक, आर्थिक या सामाजिक चुनौती (जैसे सूखा, पिछड़ापन या नदी घाटी विकास) के समाधान हेतु परिसीमित किया जाता है। नियोजन प्रदेश का मुख्य कार्य उस क्षेत्र की विकास क्षमता का आकलन करना और संसाधनों के न्यायसंगत आवंटन हेतु लचीला और वैज्ञानिक ढांचा प्रदान करना है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि विकास नीतियां जमीनी हकीकतों के अनुकूल हों और वे क्षेत्रीय असंतुलन को प्रभावी ढंग से दूर करने में सफल हो सकें, जिससे समावेशी प्रगति सुनिश्चित होती है।

275. (A) सैन्य संघर्ष विराम और राजनीतिक विभाजन
उत्तर और दक्षिण कोरिया के मध्य की सीमा, जिसे 38वीं समानांतर रेखा के रूप में जाना जाता है, सैन्य संघर्ष विराम और राजनीतिक विभाजन का परिणाम है। यह सीमा किसी प्राकृतिक भौगोलिक लक्षण या सांस्कृतिक विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया से निर्मित नहीं हुई है, अपितु यह शीत युद्ध के दौरान हुए अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और युद्ध पश्चात की यथास्थिति का प्रतीक है। यह अत्यधिक किलाबंद ज़ोन है जो दो विरोधी राजनीतिक विचारधाराओं और शासन प्रणालियों के मध्य की स्पष्ट विभाजक रेखा के रूप में कार्य करता है। यह सीमा आधुनिक इतिहास के भू-राजनीतिक संघर्षों का एक स्थायी, दृश्य और अत्यंत संवेदनशील अवशेष है।

276. (B) रेलवे आधारित स्थलीय शक्ति
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने हर्टलैंड सिद्धांत में तर्क दिया था कि रेलवे के विकास के साथ स्थलीय शक्ति अब समुद्री शक्ति के सदियों पुराने प्रभुत्व को चुनौती देने हेतु तत्पर है। उन्होंने अवलोकन किया कि रेलवे ने विशाल महाद्वीपीय क्षेत्रों को सम्बद्ध करना और संसाधनों एवं सेनाओं का तीव्र परिवहन करना संभव बना दिया है, जिससे स्थलीय शक्तियों की गतिशीलता बढ़ गई है। मैकिन्डर का विश्वास था कि यह तकनीक यूरेशिया के आंतरिक 'धुरी क्षेत्र' को विश्व शक्ति के केंद्र के रूप में स्थापित करेगी, क्योंकि यह नौसैनिक बेड़ों की तुलना में अधिक सुरक्षित और कुशल प्रभाव क्षेत्र और रणनीतिक लाभ प्रदान करती है।

277. (C) आर्थिक और मानवीय
कुशल कार्यबल राज्य की शक्ति का ऐसा घटक है जो आर्थिक और मानवीय दोनों तत्वों के संगम पर स्थित है। मानवीय दृष्टि से, यह जनसंख्या की शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल के स्तर को दर्शाता है, जो राष्ट्र की अमूल्य पूंजी है। आर्थिक दृष्टि से, यह कुशल जनशक्ति ही प्राकृतिक संसाधनों को उत्पादक परिसंपत्तियों में परिवर्तित करने और औद्योगिक दक्षता बढ़ाने का प्राथमिक साधन है। दक्ष कार्यबल न केवल नवाचार और तकनीकी प्रगति को गति प्रदान करता है, अपितु वैश्विक अर्थव्यवस्था में देश की प्रतिस्पर्धात्मकता और विकास की स्थिरता को भी सुनिश्चित करता है, जो राज्य के समग्र उत्थान और समृद्धि हेतु अनिवार्य है।

278. (D) सतत विकास
सतत विकास वह दर्शन है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूर्ण करने पर बल देता है कि भावी पीढ़ियों के अधिकारों और संसाधनों से कोई समझौता न हो। यह अवधारणा मानती है कि पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं और उनका न्यायसंगत एवं विवेकपूर्ण उपयोग ही मानवता के दीर्घकालिक अस्तित्व की कुंजी है। इसमें आर्थिक वृद्धि के साथ पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक समता को एकीकृत किया जाता है। सतत विकास का लक्ष्य संतुलित भविष्य का निर्माण करना है जहाँ आने वाली नस्लें भी समृद्ध और स्वस्थ ग्रह पर अपनी जरूरतों को पूर्ण कर सकें, जो वैश्विक स्थिरता हेतु आवश्यक है।

279. (A) महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान
नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन भारत के चार राज्यों—महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान—के मध्य नर्मदा नदी के जल आवंटन के जटिल मुद्दे को सुलझाने हेतु किया गया था। यह विवाद मुख्य रूप से सरदार सरोवर परियोजना जैसे वृहद बांधों के निर्माण, विद्युत उत्पादन के आवंटन और विस्थापित जनसंख्या के पुनर्वास से सम्बद्ध था। न्यायाधिकरण ने गहन तकनीकी और कानूनी विश्लेषण के पश्चात प्रत्येक राज्य हेतु जल का हिस्सा निर्धारित किया, जिसने अंतर-राज्यीय सहयोग और संसाधनों के न्यायसंगत वितरण हेतु महत्वपूर्ण कानूनी ढांचा प्रदान किया, जिससे कृषि और औद्योगिक विकास को नवीन दिशा प्राप्त हुई।

280. (B) अपकेंद्री
राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' को अक्सर अपकेंद्री अवधारणा के रूप में देखा जाता है क्योंकि यह राज्य के किनारों पर स्थित उन क्षेत्रों को दर्शाता है जहाँ केंद्रीय सत्ता का नियंत्रण प्रायः शिथिल होता है। ऐतिहासिक रूप से, सीमांत वे क्षेत्र थे जहाँ बाहरी प्रभाव अधिक सक्रिय थे और जो संभावित विस्तार या विवाद के केंद्र थे। यह संक्रमणकालीन ज़ोन है जो राज्य के प्रभाव को 'बाहर' की ओर धकेलता है, जबकि सटीक रेखीय 'सीमा' संप्रभुता को समेटने वाली अभिकेंद्री शक्ति के रूप में कार्य करती है। सीमांत की यह गत्यात्मक प्रकृति ही उसे सीमाओं से भिन्न और सामरिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील बनाती है, जो सुरक्षा को प्रभावित करती है।

281. (C) कार्यात्मक
प्रवाह विश्लेषण विधि विशेष रूप से 'कार्यात्मक प्रदेश' के परिसीमन हेतु सर्वाधिक उपयुक्त और वैज्ञानिक तकनीक मानी जाती है। यह विधि इस सिद्धांत पर आधारित है कि क्षेत्र की वास्तविकता उसके भीतर होने वाली गतिशील अंतःक्रियाओं, जैसे वस्तुओं के व्यापार, जनसांख्यिकीय आवाजाही और सूचनाओं के आदान-प्रदान से परिभाषित होती है। इसमें टेलीफोन कॉल्स, यातायात और बैंकिंग डेटा का विश्लेषण किया जाता है ताकि केंद्रीय नोड और उसके प्रभाव क्षेत्र के मध्य के गत्यात्मक संबंधों को समझा जा सके। यह आर्थिक भूगोल में क्षेत्रीय अंतर्संबंधों को मापने का आधुनिक उपकरण है, जो नियोजन को यथार्थवादी आधार प्रदान करता है।

NODIA

250. (B) विवाद और विकास का क्षेत्र
राजनीतिक भूगोल में 'सीमांत' का मूल विचार एक ऐसे संक्रमणकालीन क्षेत्र से है जो दो राज्यों या सांस्कृतिक मंडलों के मध्य स्थित होता है। यह अक्सर विवादित क्षेत्र होता है क्योंकि यहाँ संप्रभुता सुस्पष्ट रुप से परिभाषित नहीं होती। साथ ही, ऐतिहासिक रूप से सीमांत वे क्षेत्र थे जहाँ नए संसाधनों की खोज और विकास की संभावनाएँ सदैव विद्यमान रहती थीं। यह एक गतिशील ज़ोन है जो राज्यों के मध्य बफर के रूप में कार्य करता है और विस्तार के अवसर प्रदान करता है, जो इसे आधुनिक सटीक रेखीय सीमाओं से मौलिक रूप से भिन्न बनाता है। यह सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

251. (A) गोदावरी
पोलावरम परियोजना विशाल बहुउद्देश्यीय सिंचाई परियोजना है जो आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी पर स्थित है। इसे राष्ट्रीय परियोजना का गौरव प्राप्त है और इसका मुख्य उद्देश्य कृष्णा और गोदावरी नदियों के जल को सम्बद्ध कर सिंचाई, पेयजल और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना है। यह परियोजना अपने विस्थापन और डूब क्षेत्र की समस्याओं के कारण छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे पड़ोसी राज्यों के साथ विवाद का विषय रही है। हालाँकि, यह जल संसाधनों के कुशल उपयोग और कृषि विकास की दिशा में भारत की एक महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग और रणनीतिक पहल मानी जाती है, जो आर्थिक प्रगति सुनिश्चित करती है।

252. (C) आकृति और आकार
राज्य के भौतिक तत्व वे बुनियादी भौगोलिक मापदंड हैं जो प्रकृति द्वारा निर्धारित होते हैं और देश के क्षेत्रीय अस्तित्व की नींव निर्मित करते हैं। इसमें राज्य की 'आकृति' और 'आकार' प्राथमिक उदाहरण हैं। ये तत्व प्रत्यक्ष रूप से राज्य की प्रशासनिक दक्षता, रक्षा क्षमताओं और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा को प्रभावित करते हैं। भौतिक तत्वों का यह अध्ययन राजनीतिक भूगोल का आधार है क्योंकि यह राज्य की भौतिक सीमाओं के भीतर उसकी शक्ति और विकास की संभावनाओं को परिभाषित करता है। ये तत्व राज्य के दीर्घकालिक रणनीतिक और आर्थिक हितों को आकार प्रदान करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

253. (D) PQLI और मानव विकास सूचकांक
बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं पर केंद्रित विकास रणनीतियाँ इस विचार पर आधारित हैं कि प्रगति को केवल आर्थिक आय से नहीं, अपितु लोगों के जीवन की गुणवत्ता से मापा जाना चाहिए। भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक और मानव विकास सूचकांक इसी विचारधारा के अनुरूप हैं। भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक शिशु मृत्यु दर और साक्षरता जैसे बुनियादी कल्याण मापों को प्राथमिकता प्रदान करता है, जबकि मानव विकास सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा और आय का एक संयुक्त मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। ये दोनों सूचकांक विकास के मानवीय आयाम को केंद्र में रखते हैं, जो केवल पूंजी निर्माण के स्थान पर मानव क्षमताओं के विस्तार पर बल देता है।

254. (C) अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन
हैल्फोर्ड मैकिन्डर के भू-राजनीतिक मॉडल में 'बाहरी अर्धचंद्राकार' उन क्षेत्रों को संदर्भित करता है जो यूरेशिया और अफ्रीका के मुख्य भूभाग के बाहर स्थित हैं। इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, जापान और कनाडा जैसे देश सम्मिलित हैं। मैकिन्डर का मानना था कि ये क्षेत्र अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण समुद्री शक्तियों के मुख्य केंद्र हैं। हालाँकि वे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थे, किंतु मैकिन्डर के अनुसार वे हर्टलैंड की केंद्रीय स्थलीय शक्ति की तुलना में भौगोलिक रूप से परिधीय और बाहरी प्रभाव वाले क्षेत्र थे। यह मॉडल 20वीं सदी के रणनीतिक संतुलन को समझने में सहायता करता है।

255. (B) लक्षित क्षेत्र प्रादेशिक नियोजन
भारत में पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम 'लक्षित क्षेत्र प्रादेशिक नियोजन' का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रकार का नियोजन किसी विशाल भौगोलिक क्षेत्र के भीतर उन विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है जो अपनी कठिन स्थलाकृति, पर्यावरणीय संवेदनशीलता या आर्थिक पिछड़ेपन के कारण विशेष ध्यान की मांग करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य पहाड़ी समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूर्ण करना, पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना और बुनियादी ढांचे का ऐसा विकास करना है जो उन क्षेत्रों की सीमाओं और संभावनाओं के अनुकूल हो। यह क्षेत्रीय असमानता को दूर करने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने का एक प्रभावी तरीका है।

256. (D) ज्यामितीय
ज्यामितीय सीमा वह राजनीतिक विभाजन है जो किसी भी प्राकृतिक भौतिक लक्षण या सांस्कृतिक विभाजनों का अनुसरण करने के स्थान पर अक्षांशों, देशांतरों अथवा बिल्कुल सीधी रेखाओं के आधार पर निर्धारित किया जाता है। अमेरिका और कनाडा के मध्य 49वीं समानांतर रेखा इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। ऐसी सीमाएं अक्सर उन क्षेत्रों में बनाई जाती हैं जहाँ ऐतिहासिक सर्वेक्षण के समय सघन बस्तियाँ नहीं थीं और प्रशासनिक सरलता को प्राथमिकता दी गई थी। हालाँकि ये सीमाएं मानचित्र पर सुस्पष्ट होती हैं, किंतु वे कभी-कभी स्थानीय भौगोलिक और मानवीय वास्तविकताओं की उपेक्षा कर सकती हैं, जिससे क्षेत्रीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

257. (A) राष्ट्रीय एकजुटता
राज्य की शक्ति का 'मानवीय तत्व' जनसंख्या की उन मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विशेषताओं को दर्शाता है जो राष्ट्र को सुदृढ़ बनाती हैं। राष्ट्रीय एकजुटता अत्यंत शक्तिशाली मानवीय तत्व है क्योंकि यह विविध सामाजिक, धार्मिक और भाषाई समूहों के मध्य साझा उद्देश्य और वफादारी की भावना उत्पन्न करती है। संकट के समय, एकजुट राष्ट्र आंतरिक संघर्षों के स्थान पर बाहरी चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर सकता है। यह एकजुटता ही शासन की वैधता और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों की सफलता हेतु अनिवार्य आधार प्रदान करती है, जो राज्य को आंतरिक रूप से सुदृढ़ बनाती है और राष्ट्रीय मनोबल को उन्नत करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

290. (C) यह संक्रमण का क्षेत्र है।
राजनीतिक भूगोल में 'सीमा' एक सटीक, कानूनी और रेखीय अवधारणा है जो दो संप्रभु राज्यों के क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र को विभाजित करती है। यह अंतर्राष्ट्रीय संधियों द्वारा परिभाषित होती है और संप्रभुता के निश्चित अंत को दर्शाती है। यह कथन अशुद्ध है कि सीमा एक 'संक्रमण का क्षेत्र' है, क्योंकि संक्रमण का विस्तृत क्षेत्र 'सीमांत' की मुख्य विशेषता है। सीमा स्पष्ट अलगाव की एक रेखा होती है, जबकि सीमांत एक विस्तृत पट्टी होती है जहाँ दो संस्कृतियों या राज्यों का प्रभाव क्रमिक रूप से परिवर्तित होता है। सीमा का उद्देश्य क्षेत्रीय नियंत्रण में स्पष्टता, निश्चितता और अंतर्राष्ट्रीय विधिक मान्यता प्रदान करना है।

291. (D) महन
यह विचार प्रसिद्ध अमेरिकी नौसैनिक रणनीतिकार अल्फ्रेड थेयर महन का है, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'द इन्फ्लुएंस ऑफ सी पावर अपॉन हिस्ट्री' में समुद्री शक्ति के महत्व को प्रतिपादित किया था। महन का तर्क था कि जिस देश का समुद्र पर प्रभुत्व होगा, वह स्वतः ही वैश्विक व्यापार को नियंत्रित करेगा और जो वैश्विक व्यापार को नियंत्रित करेगा, वह विश्व की संपदा और अंततः सम्पूर्ण विश्व पर अधिकार रखेगा। उनके अनुसार, शक्तिशाली नौसेना और सुरक्षित समुद्री व्यापारिक मार्ग ही किसी भी राष्ट्र के वैश्विक महान शक्ति बनने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण और निर्णायक आधार हैं, जो राष्ट्रीय प्रभाव और समृद्धि को सुनिश्चित करते हैं।

292. (D) संतुलित विकास और असमानता में कमी
प्रादेशिक नियोजन की प्राथमिक प्रेरणा और अंतिम उद्देश्य राष्ट्र के भीतर संतुलित आर्थिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित करना है। प्रायः भौगोलिक, ऐतिहासिक या संसाधनों की न्यूनता के कारण कुछ क्षेत्र तीव्र विकसित होते हैं जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं, जिससे देश में क्षेत्रीय असमानताएं और असंतोष उत्पन्न होता है। नियोजन का मुख्य कार्य पिछड़े क्षेत्रों की विशिष्ट समस्याओं को पहचानना और वहाँ संसाधनों का न्यायसंगत आवंटन कर उन्हें प्रगति की मुख्यधारा में सम्मिलित करना है। यह संतुलित विकास न केवल आर्थिक न्याय प्रदान करता है, अपितु राष्ट्रीय एकता, सामाजिक स्थिरता और राष्ट्र की अखंडता को भी सुदृढ़ बनाता है।

293. (A) केंद्रीय नोड
कार्यात्मक प्रदेश के अस्तित्व हेतु एक 'केंद्रीय नोड' या केंद्र का होना अनिवार्य है। यह प्रदेश किसी भौतिक या सांस्कृतिक समरुपता के स्थान पर इस केंद्र और उसके आसपास के क्षेत्र के मध्य होने वाली गत्यात्मक अंतःक्रियाओं और संबंधों द्वारा परिभाषित किया जाता है। केंद्र से वस्तुओं, सेवाओं, रोजगार और सूचनाओं का प्रवाह परिधि की ओर होता है, जो पूरे क्षेत्र को एक एकीकृत कार्यात्मक इकाई के रूप में सम्बद्ध करता है। इस केंद्र का प्रभाव क्षेत्र ही प्रदेश की वास्तविक भौगोलिक सीमा को निर्धारित करता है, जो परिवहन और संचार के साधनों की सुगमता पर निर्भर करता है। यह आर्थिक गतिविधियों के स्थानिक संगठन को स्पष्ट करता है।

294. (D) ब्रंटलैंड आयोग
सतत विकास की अवधारणा को वैश्विक प्रमुखता दिलाने का श्रेय 1987 में ब्रंटलैंड आयोग द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट 'हमारा साझा भविष्य' को दिया जाता है। इस ऐतिहासिक दस्तावेज ने प्रथम बार विकास को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूर्ण करती है। इस रिपोर्ट ने पर्यावरण के ह्रास और आर्थिक विकास के मध्य के अटूट संबंध को स्पष्ट किया, जिससे सम्पूर्ण विश्व में नीति निर्माण हेतु एक नवीन और अनिवार्य टिकाऊ दृष्टिकोण विकसित हुआ। यह रिपोर्ट आधुनिक पर्यावरणीय कूटनीति और वैश्विक सतत विकास लक्ष्यों का आधार स्तंभ मानी जाती है।

295. (A) पंजाब, हरियाणा और राजस्थान
रावी-ब्यास जल विवाद उत्तर भारत के तीन प्रमुख राज्यों—पंजाब, हरियाणा और राजस्थान—के मध्य इन नदियों के अधिशेष जल के आवंटन को लेकर एक दीर्घकालिक संघर्ष है। यह विवाद मुख्य रूप से कृषि सिंचाई हेतु जल की बढ़ती मांग और ऐतिहासिक समझौतों के क्रियान्वयन से सम्बद्ध है। सतलुज-यमुना लिंक नहर का मुद्दा भी इसी विवाद का अभिन्न भाग है, जिसका उद्देश्य जल को हरियाणा और राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों तक पहुँचाना है। इन राज्यों के आर्थिक हित पूर्णतः कृषि पर निर्भर हैं, जिससे जल आवंटन का यह मुद्दा राजनीतिक, सामाजिक और रणनीतिक रूप से अत्यंत संवेदनशील बना हुआ है, जो क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करता है।

296. (C) राष्ट्रवाद
राज्य के मानवीय तत्व वे विशेषताएँ हैं जो उसकी जनसंख्या की गुणवत्ता, संस्कृति और एकता से सम्बद्ध होती हैं। राष्ट्रवाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण मानवीय तत्व है क्योंकि यह नागरिकों के मध्य साझा पहचान, साझा गौरव और अपने देश के प्रति वफादारी की सुदृढ़ भावना उत्पन्न करता है। यह एक 'अभिकेंद्री शक्ति' के रूप में कार्य करता है जो विविध सामाजिक समूहों को एकीकृत करती है और संकट के समय राज्य की स्थिरता एवं अखंडता सुनिश्चित करती है। जबकि आकार, आकृति और जलवायु भौतिक तत्व हैं, राष्ट्रवाद मानवीय चेतना और सामाजिक संगठन का परिणाम है जो राज्य की आंतरिक शक्ति और राष्ट्रीय मनोबल को सुदृढ़ बनाता है।

297. (A) एशिया, यूरोप और अफ्रीका
हैल्फोर्ड मैकिन्डर ने अपने भू-राजनीतिक मॉडल में 'विश्व-द्वीप' शब्द का प्रयोग एशिया, यूरोप और अफ्रीका के संयुक्त महाद्वीपीय भूभाग को संदर्भित करने हेतु किया था। उनके अनुसार, यह सम्पूर्ण विश्व का विशालतम, सर्वाधिक आबादी वाला और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध महाद्वीपीय पिंड है। मैकिन्डर का विश्वास था कि जो शक्ति इस विश्व-द्वीप पर प्रभुत्व स्थापित कर लेगी, वह वैश्विक स्तर पर अजेय होगी। उन्होंने अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य महाद्वीपों को इस केंद्रीय शक्ति की तुलना में केवल बाहरी और द्वीपीय क्षेत्रों के रूप में देखा, जो उनके रणनीतिक दृष्टिकोण की प्राथमिकता और यूरेशिया के केंद्रीय महत्व को दर्शाता है।

NODIA

298. (D) ज्यामितीय
अक्षांश रेखाओं, देशांतरों अथवा बिल्कुल सीधी रेखाओं के आधार पर निर्धारित की गई राजनीतिक रेखा को 'ज्यामितीय सीमा' कहा जाता है। यह सीमा किसी भी प्राकृतिक भौगोलिक लक्षण या सांस्कृतिक विभाजनों का अनुसरण नहीं करती। अमेरिका और कनाडा के मध्य की 49वीं समानांतर रेखा इसका विश्वविख्यात उदाहरण है। ऐसी सीमाएं प्रायः उन क्षेत्रों में बनाई जाती हैं जहाँ ऐतिहासिक सर्वेक्षण के समय सघन बस्तियाँ नहीं थीं और प्रशासनिक सरलता को प्राथमिकता प्रदान की गई थी। यह मानचित्र पर सुस्पष्ट विभाजन प्रदान करती है, यद्यपि यह जमीनी भूगोल की जटिलताओं और स्थानीय समुदायों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक वास्तविकताओं की उपेक्षा कर सकती है।

299. (B) विकास योजनाओं के लिए कार्यात्मक उपयुक्तता।
नियोजन प्रदेश के परिसीमन का अंतिम और मुख्य उद्देश्य ऐसा भौगोलिक आधार निर्मित करना है जो विशिष्ट विकास योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु कार्यात्मक रूप से उपयुक्त और प्रभावी हो। इसका लक्ष्य केवल प्रशासनिक समानता नहीं है, अपितु संसाधनों की उपलब्धता और आर्थिक आवश्यकताओं के मध्य एक वैज्ञानिक संतुलन स्थापित करना है। उचित रूप से परिसीमित प्रदेश यह सुनिश्चित करता है कि विकास नीतियां उस क्षेत्र की विशिष्ट समस्याओं (जैसे सूखा या पिछड़ापन) को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करें। यह दृष्टिकोण संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने हेतु अनिवार्य स्थानिक ढांचा और रणनीतिक आधार प्रदान करता है।

300. (B) रिमलैंड सिद्धांत
निकोलस स्पाइकमैन द्वारा प्रतिपादित रिमलैंड सिद्धांत यूरेशिया महाद्वीप के तटीय किनारों या परिधीय क्षेत्रों के रणनीतिक महत्व पर विशेष बल देता है। स्पाइकमैन का तर्क था कि ये तटीय क्षेत्र वैश्विक शक्ति की वास्तविक कुंजी हैं क्योंकि वे समुद्र और भूमि दोनों के नियंत्रण को सम्बद्ध करते हैं। उनके अनुसार, जो शक्ति इन तटीय क्षेत्रों पर शासन करती है, वह सम्पूर्ण यूरेशिया को नियंत्रित कर सकती है और जो यूरेशिया पर शासन करता है वह सम्पूर्ण विश्व के भाग्य का निर्धारण करता है। यह सिद्धांत मैकिन्डर के हर्टलैंड सिद्धांत के विरुद्ध एक शक्तिशाली भू-राजनीतिक प्रति-तर्क के रूप में विकसित हुआ था, जिसने शीत युद्ध की रणनीतियों को प्रभावित किया।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 07
आर्थिक भूगोल

1. कौन सा आर्थिक क्षेत्रक मुख्य रूप से पृथ्वी से प्राकृतिक उत्पादों के निष्कर्षण और संग्रहण से संबंधित है?
(A) द्वितीयक क्षेत्रक
(B) प्राथमिक क्षेत्रक
(C) तृतीयक क्षेत्रक
(D) चतुर्थक क्षेत्रक

2. चतुर्थक क्षेत्रक के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) अनुसंधान और उच्च स्तरीय परामर्श जैसी ज्ञान-आधारित सेवाएं।
(B) खेती और बड़े पैमाने पर खनन जैसे संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग।
(C) विनिर्माण और भारी औद्योगिक उत्पादन पर केंद्रित गतिविधियाँ।
(D) खुदरा व्यापार और स्थानीय परिवहन जैसे पारंपरिक सेवा क्षेत्रक।

3. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि प्राथमिक क्षेत्रक से संबंधित नहीं है?
(A) वानिकी
(B) मत्स्य पालन
(C) ऑटोमोबाइल असेंबली
(D) खनन

4. आर्थिक भूगोल के संदर्भ में, 'कृषि उत्पादकता' मुख्य रूप से किसका मापन करती है?
(A) एक क्षेत्र में किसानों की कुल संख्या।
(B) एक वर्ष में उगाई जाने वाली फसलों की विविधता।
(C) कृषि वस्तुओं का बाजार मूल्य।
(D) प्रयुक्त निवेश और कृषि उत्पादन का अनुपात।

5. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: द्वितीयक क्षेत्रक कच्चे माल को तैयार माल में परिवर्तित करता है।
कथन II: तृतीयक क्षेत्रक मूर्त उत्पादों के बजाय सेवाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

6. कृषि भूगोल में कृषि क्षेत्रों के निर्धारण के लिए 'शस्य संयोजन' की अवधारणा को व्यवस्थित रूप से किस भूगोलवेत्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया था?
(A) डी. व्हिटलसी
(B) जे. सी. वीवर
(C) जे. एच. वॉन थ्यूनेन
(D) अल्फ्रेड वेबर

7. वॉन थ्यूनेन के कृषि भूमि उपयोग मॉडल की मूल धारणा क्या है?
(A) पूरे क्षेत्र में एक समान मृदा उर्वरता।
(B) विभिन्न कृषि उत्पादों को बेचने के लिए कई बाजार केंद्र।
(C) एक आधुनिक और कुशल परिवहन नेटवर्क का अस्तित्व।
(D) एक ही केंद्रीय शहर के साथ एक 'विलगित राज्य' का अस्तित्व।

8. अल्फ्रेड वेबर के सिद्धांत के अनुसार, 'आइसोटिम' क्या है?
(A) कच्चे माल के स्रोत से समान परिवहन लागत वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा।
(B) तैयार उत्पाद के लिए समान कुल परिवहन लागत वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा।
(C) समान श्रम लागत वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा।
(D) समान बाजार मांग वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा।

9. निम्नलिखित में से कौन सा स्वच्छंद (फुटलूज) उद्योग का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) लोहा और इस्पात संयंत्र
(B) तेल रिफाइनरी
(C) सॉफ्टवेयर विकास फर्म
(D) चीनी मिल

NODIA

10. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. शस्य संयोजन
Q. कृषि अवस्थिति
R. औद्योगिक अवस्थिति
S. कृषि प्रणालियाँ
सूची II: (भूगोलवेत्ता)
1. अल्फ्रेड वेबर
2. जे. एच. वॉन थ्यूनेन
3. डरवेंट व्हिटलसी
4. जे. सी. वीवर
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3

(D) कृषि में नियोजित लोगों की संख्या।

100. एक कॉल सेंटर उस उद्योग का उदाहरण है जो है:
(A) कच्चे माल की अवस्थिति पर अत्यधिक निर्भर।
(B) एक संसाधन-आधारित उद्योग।
(C) एक प्राथमिक क्षेत्रक गतिविधि।
(D) एक स्वच्छंद उद्योग।

101. परिवहन साधनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. माल परिवहन के लिए जल परिवहन अत्यधिक ऊर्जा-कुशल है।
2. वायु परिवहन में उच्च स्थिर लागत लेकिन कम परिवर्तनीय लागत होती है।
3. मार्ग और माल के प्रकार के मामले में पाइपलाइन परिवहन अनम्य है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

102. निम्नलिखित में से कौन द्वितीयक क्षेत्रक का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) इसमें वे गतिविधियाँ शामिल हैं जो कच्चे माल का निष्कर्षण करती हैं।
(B) इसमें विनिर्माण के माध्यम से कच्चे माल का रूपांतरण शामिल है।
(C) इसमें अमूर्त सेवाओं का प्रावधान शामिल है।
(D) इसमें उच्च स्तरीय अनुसंधान और निर्णय लेना शामिल है।

103. शस्य विविधीकरण का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) खेती कार्यों को सरल बनाना।
(B) एक लाभदायक फसल में विशेषज्ञता बढ़ाना।
(C) सरकारी सब्सिडी कार्यक्रमों की आवश्यकताओं को पूरा करना।
(D) आर्थिक और पर्यावरणीय जोखिमों को कम करना।

104. वॉन थ्यूनेन के मॉडल के संदर्भ में, 'अवस्थितिक लगान' क्या है?
(A) बाजार की निकटता के कारण भूमि का लाभ।
(B) भूमि के एक टुकड़े का उपयोग करने के लिए भूमि स्वामी को दिया जाने वाला मूल्य।
(C) भूमि स्वामित्व अधिकारों पर लगाया जाने वाला सरकारी कर।
(D) किसी विशेष भूखंड पर निर्माण की लागत।

105. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: वेबर का सिद्धांत एक आदर्शात्मक सिद्धांत है जो सुझाव देता है कि लागत कम करने के लिए उद्योग को कहाँ स्थित होना चाहिए।
कथन II: लॉश का सिद्धांत एक वर्णनात्मक सिद्धांत है जो केवल यह बताता है कि उद्योग कहाँ स्थित हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

106. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (शब्द)
P. अभिगम्यता
Q. संयोजकता
R. परिवहन लागत
S. केंद्र (नोड)
सूची II: (विवरण)
1. स्थानों के बीच प्रत्यक्ष जुड़ाव की डिग्री
2. स्थानों के बीच आवागमन की आर्थिक, सामाजिक और समय लागत
3. परिवहन नेटवर्क में एक स्थान या चौराहा
4. अन्य स्थानों से किसी स्थान तक पहुँचने की सुगमता
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

107. निम्नलिखित में से कौन सा एक गैर-नवीकरणीय संसाधन है?
(A) सौर ऊर्जा
(B) पवन ऊर्जा
(C) वन
(D) यूरेनियम

108. औद्योगिक भूगोल में 'विकेंद्रीकरण' का तात्पर्य है:
(A) एक स्थान पर उद्योगों का जमावड़ा।
(B) अर्थव्यवस्था की अलाभकारी स्थितियों के कारण भीड़भाड़ वाले औद्योगिक केंद्र से उद्योगों का प्रसार।
(C) पुराने उद्योगों को बंद करने की प्रक्रिया।
(D) एक औद्योगिक फर्म का ऊर्ध्वाधर एकीकरण।

109. डरवेंट व्हिटलसी द्वारा विश्व कृषि प्रणालियों का वर्गीकरण निम्नलिखित में से किस मानदंड को छोड़कर सभी पर आधारित है?
(A) फसल और पशु साहचर्य।
(B) फसल उगाने और पशु पालने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियाँ।
(C) फसलों का आनुवंशिक संशोधन।
(D) भूमि उपयोग की गहनता।

110. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): एक सॉफ्टवेयर विकास कंपनी अपनी उत्पादन लागत को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किए बिना विभिन्न स्थानों पर स्थित हो सकती है।

Click Here to Buy book on Amazon

सूची I: (आर्थिक गतिविधि)
P. सॉफ्टवेयर विकास
Q. लोहा और इस्पात संयंत्र
R. वाणिज्यिक खेती
S. बैंकिंग और बीमा
सूची II: (क्षेत्रक)
1. प्राथमिक
2. द्वितीयक
3. तृतीयक
4. चतुर्थक
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

22. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: कृषि दक्षता का तात्पर्य प्रति इकाई श्रम या भूमि के उत्पादन से है।
कथन II: कृषि उत्पादकता एक व्यापक अवधारणा है जिसमें बाजार संबंधों सहित संपूर्ण कृषि प्रणाली की दक्षता शामिल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

23. संसाधन संरक्षण का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) सभी प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को रोकना।
(B) संसाधन निष्कर्षण से तत्काल आर्थिक लाभ को अधिकतम करना।
(C) अन्य देशों को प्राकृतिक संसाधनों का निर्यात करना।
(D) भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु संसाधनों के उपयोग का प्रबंधन करना।

24. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): स्वच्छंद उद्योग परिवहन लागत से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं होते हैं।
कारण (R): उनके उत्पाद आम तौर पर हल्के होते हैं, और उनके कच्चे माल सर्वव्यापी या हल्के होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) उत्पाद के वजन के प्रभाव के संबंध में A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) उत्पाद के वजन के प्रभाव के संबंध में A असत्य है लेकिन R सत्य है।

25. ऑगस्ट लॉश के अनुसार, किसी फर्म के लिए आदर्श बाजार क्षेत्र है:
(A) एक पूर्ण वृत्त।
(B) एक वर्ग।
(C) एक षट्भुज।
(D) एक त्रिभुज।

26. अल्फ्रेड वेबर के मॉडल में निम्नलिखित में से कौन सा औद्योगिक अवस्थिति का प्राथमिक कारक नहीं है?
(A) सरकारी नीति
(B) परिवहन लागत
(C) श्रम लागत
(D) समूहन अर्थव्यवस्थाएँ

27. परिवहन नेटवर्क में 'अभिगम्यता' को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया गया है:
(A) किसी ग्राफ में केंद्र के पास मौजूद प्रत्यक्ष कड़ियों की विशिष्ट संख्या।
(B) नेटवर्क में मौजूद सभी कड़ियों की कुल संचयी लंबाई।
(C) आवश्यक परिवहन बुनियादी ढांचे को विकसित करने की वित्तीय लागत।
(D) अन्य स्थानों से किसी गंतव्य तक पहुँचने की सापेक्ष सुगमता।

28. आर्थिक गतिविधियों का प्राथमिक से द्वितीयक और फिर तृतीयक क्षेत्रक की ओर स्थानांतरण क्या कहलाता है?
(A) आर्थिक विविधीकरण।
(B) क्षेत्रकीय रूपांतरण।
(C) औद्योगिक समूहन।
(D) कृषि क्रांति।

29. संसाधन वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सौर ऊर्जा एक गैर-नवीकरणीय संसाधन है।
2. प्राकृतिक गैस को जीवाश्म ईंधन और गैर-नवीकरणीय संसाधन माना जाता है।
3. यदि वनों का प्रबंधन संधारणीय तरीके से किया जाए, तो उन्हें नवीकरणीय संसाधन माना जा सकता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

30. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में, ईंधन की लकड़ी और लट्ठों का उत्पादन शहर के अपेक्षाकृत करीब क्यों स्थित है?
(A) उत्पाद अत्यधिक नष्ट होने वाला है और जल्दी खराब हो जाता है।
(B) इसके लिए अत्यधिक उर्वर मृदा की आवश्यकता होती है जो केवल शहर के केंद्र के पास पाई जाती है।
(C) यह एक उच्च मूल्य वाला, कम वजन वाला उत्पाद है जिसे ले जाना आसान है।
(D) यह भारी और स्थूल है, जिससे इसकी परिवहन लागत बहुत अधिक हो जाती है।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

11. किसी क्षेत्र में शस्य विविधीकरण की उच्च मात्रा सामान्यतः क्या दर्शाती है?
(A) एक विशिष्ट एकल कृषि और एकसमान कृषि प्रणाली।
(B) एक ही नकदी फसल के उत्पादन पर उच्च निर्भरता।
(C) समग्र क्षेत्रीय कृषि उत्पादकता का निम्न स्तर।
(D) खेती की जाने वाली फसलों की विविध श्रेणी जो आर्थिक जोखिम को कम करती है।

12. वॉन थ्यूनेन के मॉडल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह मॉडल एक समान जलवायु और मृदा वाले एक समतल मैदान की कल्पना करता है।
2. उच्च परिवहन लागत और शीघ्र नष्ट होने वाले उत्पाद बाजार के सबसे करीब स्थित होते हैं।
3. वानिकी को उसके कम मूल्य के कारण सबसे बाहरी छल्ले में रखा गया है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

13. नवीकरणीय संसाधन की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) यह केवल सीमित और कड़ाई से प्रतिबंधित मात्रा में उपलब्ध है।
(B) यह विशेष रूप से द्वितीयक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित उत्पाद है।
(C) इसे मानव जीवन काल के भीतर पुनः पूरित या पुनर्जीवित किया जा सकता है।
(D) बार-बार मानवीय उपयोग के साथ इसका आर्थिक मूल्य कम नहीं होता है।

14. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): जैसे-जैसे देश विकसित होता है, अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्रक की हिस्सेदारी कम होती जाती है।
कारण (R): औद्योगीकरण और सेवाओं में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में एक संरचनात्मक बदलाव आता है, जिसमें द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों द्वारा अधिक रोजगार और जीडीपी उत्पन्न होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन संरचनात्मक आर्थिक बदलाव के संबंध में R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन संरचनात्मक आर्थिक बदलाव के संबंध में R सत्य है।

15. 'स्थोक-भंग' (Break-of-bulk) बिंदु किस प्रकार की गतिविधि की अवस्थिति को समझाने में एक प्रमुख अवधारणा है?
(A) परिवहन और बंदरगाह आधारित उद्योग
(B) संसाधन निष्कर्षण
(C) स्वच्छंद उद्योग
(D) चतुर्थक सेवाएं

16. वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत में, 'पदार्थ सूचकांक' की गणना इस प्रकार की जाती है:
(A) तैयार उत्पाद का भार / स्थानीय कच्चे माल का भार।
(B) स्थानीय कच्चे माल का भार / तैयार उत्पाद का भार।
(C) कुल परिवहन लागत / कुल उत्पादन लागत।
(D) श्रम लागत / पूंजी लागत।

17. गैर-नवीकरणीय संसाधनों के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) वे पृथ्वी पर निश्चित मात्रा में मौजूद हैं।
(B) उन्हें अनिश्चित काल तक पुनर्चक्रित और पुनः उपयोग किया जा सकता है।
(C) कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस इसके उदाहरण हैं।
(D) उनके निर्माण में लाखों वर्ष लगते हैं।

18. शास्त्रीय वॉन थ्यूनेन मॉडल के अनुसार, केंद्र से बाहर की ओर निम्नलिखित कृषि गतिविधियों को सही क्रम में व्यवस्थित करें।
1. अनाज की खेती
2. बाजार आधारित बागवानी और दुग्ध कृषि
3. पशुपालन
4. ईंधन की लकड़ी और लट्ठे

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

19. परिवहन भूगोल में, 'संयोजकता' का तात्पर्य है:
(A) स्थानों के बीच भौतिक आवागमन की सापेक्ष सुगमता।
(B) केंद्रों के बीच यात्रा करने की कुल वित्तीय लागत।
(C) वह सीमा जिस तक केंद्र एक-दूसरे से सीधे जुड़े हुए हैं।
(D) परिवहन नेटवर्क के भीतर सबसे कम दूरी का पथ।

NODIA

20. संसाधन-आधारित उद्योग वह है जो:
(A) उत्पादन लागत को प्रभावित किए बिना किसी भी बिंदु पर स्थित हो सकता है।
(B) मुख्य रूप से अत्यधिक कुशल और विशिष्ट कार्यबल को नियोजित करता है।
(C) निर्मित वस्तुओं के बजाय अमूर्त सेवाएं प्रदान करता है।
(D) अपने कच्चे माल के पास स्थित होकर परिवहन लागत को न्यूनतम करता है।

21. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।

(D) 3, 1, 2, 4

42. एक 'स्वच्छंद' उद्योग को यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि वह:
(A) आगत या निर्गत की परिवहन लागत द्वारा स्थानों से बंधा नहीं होता है।
(B) विशेष रूप से एकल स्थानीय कच्चे माल के स्रोत पर निर्भर करता है।
(C) महत्वपूर्ण रूप से बड़े और सस्ते श्रम बल की आवश्यकता रखता है।
(D) आसपास के वातावरण को अत्यधिक तीव्र दर से प्रदूषित करता है।

43. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(A) प्राथमिक क्षेत्रक - कृषि
(B) द्वितीयक क्षेत्रक - विनिर्माण
(C) चतुर्थक क्षेत्रक - सूचना प्रौद्योगिकी
(D) तृतीयक क्षेत्रक - अनुसंधान एवं विकास

44. लॉश के मॉडल में, बाजार क्षेत्रों का आकार और आकृति किन तीन कारकों के परस्पर प्रभाव से निर्धारित होती है?
(A) परिवहन लागत, श्रम लागत और समूहन।
(B) कीमत, मांग और परिवहन लागत।
(C) कच्चा माल, बाजार और सरकारी नीति।
(D) भूमि लगान, फसल का प्रकार और मृदा उर्वरता।

45. संसाधन संरक्षण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह प्राकृतिक संसाधनों के पूर्ण उपयोग न करने की वकालत करता है।
2. यह संसाधनों के बुद्धिमानीपूर्ण, कुशल और संधारणीय उपयोग को बढ़ावा देता है।
3. पुनर्चक्रण और अपशिष्ट को कम करना संरक्षण की प्रमुख रणनीतियाँ हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

46. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में प्राथमिक कार्य-कारण संबंध क्या है?
(A) कारण: मृदा उर्वरता; प्रभाव: फसल की पैदावार।
(B) कारण: सरकारी सब्सिडी; प्रभाव: फसल का चयन।
(C) कारण: जलवायु परिवर्तन; प्रभाव: कृषि प्रणालियाँ।
(D) कारण: बाजार तक परिवहन लागत; प्रभाव: कृषि भूमि उपयोग का स्वरूप।

47. गन्ने से चीनी बनाना किस क्षेत्रक की गतिविधि का उदाहरण है?
(A) द्वितीयक क्षेत्रक
(B) प्राथमिक क्षेत्रक
(C) तृतीयक क्षेत्रक
(D) चतुर्थक क्षेत्रक

48. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: संसाधन-आधारित उद्योग अक्सर भार-ह्रास वाला होता है।
कथन II: कच्चे माल के स्रोत के पास भार-ह्रास वाले उद्योग को स्थापित करने से भारी आगत भेजने की परिवहन लागत, हल्के निर्गत की तुलना में कम हो जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

49. व्हिटलसी जैसे भूगोलवेत्ताओं द्वारा वर्गीकृत 'विश्व की कृषि प्रणालियाँ' किन प्रणालियों के बीच अंतर करती हैं?
(A) उच्च-उत्पादकता और निम्न-उत्पादकता वाली खेती।
(B) चलवासी पशुचारण और वाणिज्यिक अनाज की खेती।
(C) जैविक और गैर-जैविक खेती।
(D) सिंचित और वर्षा आधारित खेती।

50. परिवहन नेटवर्क के संदर्भ में, एक 'नोड' क्या दर्शाता है?
(A) नेटवर्क में उत्पत्ति, गंतव्य या चौराहे का बिंदु।
(B) दो स्थानों के बीच का मार्ग या रास्ता।
(C) मार्ग पर यात्रा की लागत।
(D) नेटवर्क में यातायात की कुल मात्रा।

51. निम्नलिखित में से कौन सी एक स्वच्छंद उद्योग की विशेषता नहीं है?
(A) उत्पादों का उच्च मूल्य-से-भार अनुपात।
(B) कुशल, विशिष्ट श्रम पर निर्भरता।
(C) कच्चे माल के लिए उच्च परिवहन लागत।
(D) अवस्थिति के साथ नगण्य लागत भिन्नता।

52. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में 'आर्थिक लगान' शब्द का तात्पर्य है:
(A) आवश्यक कृषि आवास के लिए भुगतान किया जाने वाला मासिक वित्तीय किराया।
(B) सभी क्षेत्रीय कृषि लाभों पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर।
(C) कृषि वस्तुओं को बाजार तक ले जाने की कुल लागत।
(D) अपनी अवस्थिति के लाभ के कारण भूमि से होने वाली अधिशेष आय।

53. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (संसाधन प्रकार)
P. कोयला
Q. सौर विकिरण
R. वन
S. लौह अयस्क
सूची II: (वर्गीकरण)
1. जैविक नवीकरणीय
2. अक्षय नवीकरणीय

Click Here to Buy book on Amazon

31. वैश्विक कृषि प्रणालियों के व्हिटलसी के वर्गीकरण का मुख्य आधार क्या था?
(A) फसलों और पशुओं का साहचर्य और खेती के तरीके।
(B) फसलों का बाजार मूल्य।
(C) कृषि उत्पादकता का स्तर।
(D) केंद्रीय बाजार से खेतों की दूरी।

32. यदि वेबर के सिद्धांत में पदार्थ सूचकांक 1 से कम है, तो उद्योग के कहाँ स्थित होने की संभावना है?
(A) कच्चे माल के स्रोत के पास।
(B) बाजार के पास।
(C) स्थोक-भंग बिंदु पर।
(D) बाजार और कच्चे माल के स्रोत के बीच कहीं भी।

33. बहुत लंबी दूरी पर भारी, शीघ्र नष्ट न होने वाली वस्तुओं को ले जाने के लिए परिवहन का कौन सा साधन आमतौर पर सबसे अधिक लागत प्रभावी होता है?
(A) वायु परिवहन
(B) जल परिवहन
(C) सड़क परिवहन
(D) रेल परिवहन

34. औद्योगिक अवस्थिति का ऑगस्ट लॉश का मॉडल वेबर के मॉडल से मुख्य रूप से इसलिए भिन्न है क्योंकि यह किस पर ध्यान केंद्रित करता है?
(A) इष्टतम बाजार क्षेत्र की खोज करके लाभ को अधिकतम करना।
(B) लागत को न्यूनतम करना।
(C) अवस्थिति पर श्रम का प्रभाव।
(D) सरकारी सब्सिडी की भूमिका।

35. यह अवधारणा कि संसाधन निश्चित नहीं हैं बल्कि मानव ज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रतिफल हैं, किस रूप में जानी जाती है?
(A) संसाधनों की सीमा के संबंध में स्थिर अवधारणा।
(B) संसाधनों के संरक्षण के संबंध में शुद्ध संरक्षणवादी दृष्टिकोण।
(C) संसाधन परिभाषाओं के संबंध में गतिशील या कार्यात्मक अवधारणा।
(D) प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग न करने के संबंध में परिरक्षणवादी दृष्टिकोण।

36. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (वेबेरियन अवधारणा)
P. पदार्थ सूचकांक > 1
Q. आइसोडापेन
R. समूहन
S. सर्वव्यापी पदार्थ
सूची II: (निहितार्थ/परिभाषा)
1. आपसी लाभ के लिए उद्योगों का संकेंद्रण
2. हर जगह उपलब्ध पदार्थ
3. कच्चे माल के स्रोत की ओर झुकाव वाली अवस्थिति
4. समान कुल परिवहन लागत वाली रेखा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

37. 'पंचमक' क्षेत्रक, जो चतुर्थक क्षेत्रक का एक उपखंड है, में शामिल हैं:
(A) बुनियादी डेटा प्रविष्टि और प्रसंस्करण।
(B) वस्तुओं का परिवहन।
(C) सरकार, व्यवसाय और शिक्षा में उच्च स्तरीय निर्णय लेना।
(D) इलेक्ट्रॉनिक्स का विनिर्माण।

38. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): शस्य विविधीकरण कृषि स्थिरता को बढ़ा सकता है।
कारण (R): विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने से मृदा स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है, कीटों और बीमारियों के प्रकोप को कम किया जा सकता है और किसी एक फसल के लिए बाजार के उतार-चढ़ाव के खिलाफ सुरक्षा प्रदान की जा सकती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

39. कृषि दक्षता की गणना में अक्सर किसकी तुलना शामिल होती है?
(A) उगाई गई विभिन्न फसलों की संख्या।
(B) खेत से बाजार की दूरी।
(C) खेत की जोत का आकार।
(D) उत्पादन के मूल्य और निवेश के मूल्य का अनुपात।

40. निम्नलिखित में से कौन परिवहन भूगोल में नेटवर्क संयोजकता के माप का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) बीटा इंडेक्स
(B) पदार्थ सूचकांक
(C) गिनी गुणांक
(D) अवस्थितिक लगान

41. निम्नलिखित औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांतों/मॉडलों को उनके प्रतिपादन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. ऑगस्ट लॉश का लाभ अधिकतमकरण मॉडल
2. अल्फ्रेड वेबर का न्यूनतम लागत सिद्धांत
3. जे. एच. वॉन थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति मॉडल
4. डी. एम. स्मिथ का लाभप्रदता का स्थानिक सीमा मॉडल
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4

NODIA

विशिष्ट गति सीमा।

65. प्रमुख आर्थिक क्षेत्रकों के उद्भव को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।
1. द्वितीयक
2. तृतीयक
3. प्राथमिक
4. चतुर्थक

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 2, 1, 4

66. संसाधनों के संरक्षण के पीछे मुख्य विचार क्या है?
(A) अंतर-पीढ़ीगत समानता और संधारणीय उपयोग।
(B) बिना उपयोग के पूर्ण परिरक्षण।
(C) आर्थिक विकास के लिए वर्तमान दोहन को अधिकतम करना।
(D) विदेशी मुद्रा के लिए कच्चे माल का निर्यात करना।

67. ऑगस्ट लॉश की 'मांग के शंकु' की अवधारणा स्पष्ट करती है कि जैसे-जैसे विक्रेता से दूरी बढ़ती है:
(A) विशिष्ट वस्तु की कुल कीमत काफी कम हो जाती है।
(B) विशिष्ट वस्तु की समग्र गुणवत्ता समय के साथ सुधरती है।
(C) प्रभावी कीमत बढ़ जाती है और मांग की गई मात्रा गिर जाती है।
(D) वस्तु की मांग हर जगह बिल्कुल स्थिर रहती है।

68. 'झूम कृषि' एक प्रकार की कृषि प्रणाली है जो मुख्य रूप से इसकी विशेषता है:
(A) स्थायी खेत और उर्वरकों का उच्च उपयोग।
(B) निर्यात के लिए बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक उत्पादन।
(C) बाढ़ वाले धान के खेतों में चावल की गहन खेती।
(D) उर्वरता बनाए रखने के लिए फसलों के बजाय खेतों का चक्रण।

69. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सड़क परिवहन महान लचीलापन और घर-घर सेवा प्रदान करता है।
कथन II: थोक माल की लंबी दूरी की ढुलाई के लिए, सड़क परिवहन आमतौर पर रेल या जल परिवहन की तुलना में अधिक लागत प्रभावी होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

70. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (उद्योग प्रकार)
P. लोहा और इस्पात संयंत्र
Q. सूती वस्त्र उद्योग
R. सॉफ्टवेयर उद्योग
S. चीनी उद्योग

सूची II: (अवस्थितिक प्रवृत्ति)
1. स्वच्छंद
2. बाजार-उन्मुख
3. कच्चा माल-उन्मुख (भार-ह्रास)
4. कच्चा माल-उन्मुख (शीघ्र नष्ट होने वाला)

(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

71. निम्नलिखित में से कौन कृषि दक्षता का माप है?
(A) एक खेत में उगाई जाने वाली फसलों की विविधता।
(B) खेत की निकटतम शहर से दूरी।
(C) खेती के तहत कुल क्षेत्रफल।
(D) प्रति इकाई श्रम या भूमि का उत्पादन।

72. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): वॉन थ्यूनेन के मॉडल में, दुग्ध कृषि और गहन बाजार बागवानी शहर के चारों ओर पहले छल्ले में पाई जाती है।
कारण (R): ये उत्पाद शीघ्र नष्ट होने वाले होते हैं और उच्च कीमतें प्राप्त करते हैं, जो शहर के करीब उच्च भूमि लगान और उच्च परिवहन लागत को उचित ठहराते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

73. प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रकों के बीच मुख्य अंतर यह है कि द्वितीयक क्षेत्रक में शामिल है:
(A) संसाधनों का निष्कर्षण।
(B) सेवाओं का प्रावधान।
(C) कच्चे माल का विनिर्माण और प्रसंस्करण।
(D) अनुसंधान और विकास।

74. वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत में एक 'सर्वव्यापी' पदार्थ वह पदार्थ है जो:
(A) हर जगह उपलब्ध है, जैसे हवा या पानी।
(B) केवल एक विशिष्ट स्थान पर पाया जाता है।
(C) बहुत महंगा और दुर्लभ है।
(D) बिक्री के लिए तैयार एक तैयार उत्पाद है।

75. ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) परिवहन, श्रम और समूहन लागतों के योग को न्यूनतम करना।
(B) एक क्षेत्र में उद्योगों का समान वितरण प्राप्त करना।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) औद्योगिक गतिविधि के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना।
(D) उस स्थान की खोज करना जो बाजार क्षेत्र और लाभ को अधिकतम करता हो।

76. प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम को किस रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) नवीकरणीय जैविक संसाधन।
(B) गैर-नवीकरणीय जीवाश्म ईंधन।
(C) अक्षय संसाधन।
(D) नवीकरणीय अजैविक संसाधन।

77. परिवहन नेटवर्क में 'संयोजकता' किसका माप है?
(A) यात्रा की आर्थिक लागत।
(B) कड़ियों पर यात्रा की गति।
(C) केंद्रों के बीच मार्गों की प्रत्यक्षता।
(D) यात्रियों की संख्या या माल की मात्रा।

78. निम्नलिखित में से कौन सी एक स्वच्छंद उद्योग की परिभाषित विशेषता है?
(A) कच्चे माल के स्रोत की ओर मजबूत झुकाव।
(B) बाजार की ओर मजबूत झुकाव।
(C) यह एक भारी, प्रदूषणकारी उद्योग है।
(D) परिवहन लागत कुल लागत का एक नगण्य हिस्सा होती है।

79. निम्नलिखित में से कौन सी कृषि प्रणाली उच्च पैदावार प्राप्त करने के लिए भूमि के छोटे टुकड़ों पर पूंजी, श्रम और प्रौद्योगिकी के उच्च निवेश की विशेषता है?
(A) गहन निर्वाह कृषि
(B) विस्तृत निर्वाह कृषि
(C) चलवासी पशुचारण
(D) वाणिज्यिक अनाज की खेती

80. अल्फ्रेड वेबर के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह औद्योगिक अवस्थिति का न्यूनतम-लागत सिद्धांत है।
2. यह एकसमान राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य की कल्पना करता है।
3. सिद्धांत के प्राथमिक कारक परिवहन लागत, श्रम लागत और समूहन हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

81. 'शस्य विविधीकरण' की अवधारणा किसका विपरीत है?
(A) शस्य आवर्तन
(B) एकल कृषि
(C) मिश्रित खेती
(D) निर्वाह कृषि

82. परिवहन भूगोल में, नेटवर्क में कड़ियों की संख्या और केंद्रों की संख्या के बीच संबंध का अक्सर विश्लेषण किया जाता है। यह अनुपात क्या दर्शाता है?
(A) नेटवर्क घनत्व या संयोजकता का एक सरल माप।
(B) नेटवर्क की कुल लंबाई।
(C) सबसे केंद्रीय केंद्र की अभिगम्यता।
(D) नेटवर्क निर्माण की लागत।

83. अवस्थिति सिद्धांत में ऑगस्ट लॉश का मुख्य योगदान किसका समावेश था?
(A) आइसोडापेन की अवधारणा।
(B) श्रम लागत की भूमिका।
(C) विश्लेषण में मांग और राजस्व पक्ष।
(D) पदार्थ सूचकांक।

84. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सभी प्राकृतिक संसाधन गैर-नवीकरणीय हैं।
कथन II: संसाधन संरक्षण मुख्य रूप से पर्यावरण के किसी भी मानवीय उपयोग को रोकने से संबंधित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

85. एक इस्पात संयंत्र सबसे कुशलतापूर्वक कहाँ स्थित होता है?
(A) प्रमुख शहरी बाजार के पास।
(B) सस्ते, अकुशल श्रम के स्रोत के पास।
(C) कोयले और लौह अयस्क के स्रोत के पास।
(D) कच्चे माल की अवस्थिति की परवाह किए बिना, एक प्रमुख बंदरगाह के पास।

NODIA

86. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (परिवहन का साधन)
P. पाइपलाइन
Q. वायु
R. सड़क
S. समुद्र
सूची II: (प्राथमिक लाभ)
1. लचीलापन और घर-घर सेवा
2. लंबी दूरी पर गति
3. लंबी दूरी पर भारी सामान के लिए कम लागत
4. तरल पदार्थों और गैसों का निरंतर प्रवाह
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

87. वॉन थ्यूनेन मॉडल में सबसे बाहरी छल्ला किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) बाजार आधारित बागवानी।
(B) गहन अनाज की खेती।
(C) ईंधन की लकड़ी और लट्ठों का उत्पादन।
(D) पशुपालन या विस्तृत चराई।

88. अर्थव्यवस्था के चतुर्थक क्षेत्रक की विशेषता है:
(A) ज्ञान-आधारित और सूचना-प्रसंस्करण गतिविधियाँ।
(B) कम कुशल, शारीरिक श्रम।
(C) प्राकृतिक संसाधनों पर उच्च निर्भरता।
(D) वस्तुओं का भौतिक विनिर्माण।

89. निम्नलिखित में से कौन सा संसाधन संरक्षण का सिद्धांत नहीं है?
(A) अपशिष्ट कम करना
(B) सामग्रियों का पुनर्चक्रण
(C) अल्पकालिक लाभ के लिए उपभोग की दर को अधिकतम करना
(D) दुर्लभ संसाधनों के लिए विकल्प विकसित करना

90. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): ऑगस्ट लॉश के मॉडल को वेबर के मॉडल की तुलना में अधिक जटिल और यथार्थवादी माना जाता है।
कारण (R): लॉश मांग की अवधारणा को शामिल करते हैं और लाभ-अधिकतम करने वाली अवस्थिति खोजने की कोशिश करते हैं, वेबर के विपरीत जो केवल लागत न्यूनतम करने पर केंद्रित थे।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

91. एक ही खेत पर फसलों और पशुओं के एकीकरण वाली कृषि प्रणाली के लिए शब्द है:
(A) एकल कृषि
(B) उद्यान कृषि
(C) रोपण कृषि
(D) मिश्रित खेती

92. दो शहरों के बीच एक नए राजमार्ग का निर्माण सबसे प्रत्यक्ष रूप से उनके किसमें सुधार करेगा?
(A) संयोजकता
(B) अभिगम्यता और संयोजकता दोनों
(C) अभिगम्यता
(D) न तो अभिगम्यता और न ही संयोजकता

93. वीवर की शस्य संयोजन विधि में एक मुख्य धारणा यह है कि:
(A) सभी फसलों का बाजार मूल्य समान होता है।
(B) क्षेत्र में मृदा और जलवायु एक समान है।
(C) फसलों के सापेक्ष महत्व को उनके द्वारा घेरे गए कृषि भूमि के प्रतिशत से मापा जा सकता है।
(D) परिवहन लागत नगण्य है।

94. पिछले 50 वर्षों में अधिकांश विकसित अर्थव्यवस्थाओं में किस क्षेत्रक में रोजगार में सबसे महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है?
(A) प्राथमिक
(B) द्वितीयक
(C) सभी क्षेत्रकों में समान वृद्धि हुई है
(D) तृतीयक और चतुर्थक

95. वेबर के सिद्धांत में, 'समूहन' का तात्पर्य है:
(A) वे लागत बचत जो फर्में एक-दूसरे के पास स्थित होने से प्राप्त करती हैं।
(B) अत्यधिक औद्योगिक संकेंद्रण के कारण बढ़ी हुई लागत।
(C) उद्योगों की शहरों से दूर जाने की प्रवृत्ति।
(D) तैयार माल को बाजार तक ले जाने की लागत।

96. गलत जोड़े की पहचान करें।
(A) वॉन थ्यूनेन - कृषि अवस्थिति
(B) ऑगस्ट लॉश - न्यूनतम लागत विश्लेषण
(C) अल्फ्रेड वेबर - औद्योगिक अवस्थिति
(D) जे. सी. वीवर - शस्य विविधीकरण

97. 'रोपण कृषि' एक प्रकार की कृषि प्रणाली है जिसकी विशेषता है:
(A) स्थानीय उपभोग के लिए विविध फसलें उगाने वाले छोटे पारिवारिक खेत।
(B) निर्यात के लिए एकल नकदी फसल का बड़े पैमाने पर उत्पादन।
(C) बड़े, शुष्क क्षेत्रों में पशुओं का चरवाहा।
(D) नदी डेल्टाओं में गहन चावल की खेती।

98. अवस्थिति सिद्धांत के विकास में निम्नलिखित अवधारणाओं को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।
1. आइसोडापेन
2. अवस्थितिक लगान
3. षट्कोणीय बाजार क्षेत्र
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 3, 1

99. कृषि दक्षता का मापन उत्पादकता से इस मायने में भिन्न है कि दक्षता किस पर अधिक केंद्रित है?
(A) निवेश की परवाह किए बिना उत्पादन की कुल मात्रा।
(B) अंतिम उत्पाद का बाजार मूल्य।
(C) निर्गत का आगत से अनुपात, जो यह दर्शाता है कि संसाधनों का कितनी अच्छी तरह उपयोग किया गया है।

Click Here to Buy book on Amazon

3. अजैविक गैर-नवीकरणीय (धात्विक)
4. अजैविक गैर-नवीकरणीय (जीवाश्म ईंधन)

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

54. वेबर के सिद्धांत में 'क्रांतिक आइसोडापेन' की अवधारणा औद्योगिक अवस्थिति पर किस कारक के प्रभाव से संबंधित है?
(A) परिवहन लागत
(B) श्रम लागत
(C) समूहन लाभ
(D) बाजार प्रतिस्पर्धा

55. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): वायु परिवहन परिवहन का सबसे तेज़ साधन है।
कारण (R): यह लंबी दूरी पर भारी सामान ले जाने के लिए सबसे सस्ता साधन भी है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

56. वेबर और लॉश दोनों के शास्त्रीय अवस्थिति सिद्धांतों की मुख्य आलोचना क्या है?
(A) एक समान या आइसोट्रोपिक मैदान की धारणा, जो अवास्तविक है।
(B) सरकारी नीतियों पर अत्यधिक जोर।
(C) एक कारक के रूप में परिवहन लागत की उपेक्षा।
(D) औद्योगिक के बजाय कृषि अवस्थिति पर ध्यान केंद्रित करना।

57. शस्य संयोजन क्षेत्रों के निर्धारण के लिए वीवर की विधि किसका उपयोग करती है?
(A) शीर्ष तीन फसलों की सरल रैंकिंग।
(B) कृषि विशेषज्ञों का व्यक्तिपरक मूल्यांकन।
(C) फसल प्रतिशत के मानक विचलन पर आधारित सूत्र।
(D) राष्ट्रीय औसत के साथ फसल की पैदावार की तुलना।

58. 'परिवहन लागत' की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?
(A) दूरी को पार करने के लिए धन, समय और प्रयास सहित सभी लागतें।
(B) केवल ईंधन और वाहन शक्ति का विशिष्ट मौद्रिक व्यय।
(C) दो भौगोलिक बिंदुओं के बीच यात्रा करने में लगने वाला कुल समय।
(D) सभी वाणिज्यिक वाहनों पर लगाया जाने वाला विशिष्ट सरकारी कर।

NODIA

59. वॉन थ्यूनेन के मॉडल के एक संशोधन में विलगित राज्य से होकर गुजरने वाली एक नौगम्य नदी शामिल है। यह भूमि उपयोग के स्वरूप को कैसे प्रभावित करेगी?
(A) वृत्ताकार क्षेत्र पूर्णतः सममित हो जाएंगे।
(B) सभी कृषि गतिविधियाँ बंद हो जाएँगी।
(C) केंद्रीय शहर नदी के तट पर चला जाएगा।
(D) नदी के किनारे भूमि उपयोग क्षेत्रों का विस्तार हो जाएगा, क्योंकि जल परिवहन सस्ता है।

60. निम्नलिखित में से कौन सा संसाधन-आधारित उद्योग का उदाहरण है?
(A) हीरा काटने और पॉलिश करने वाली इकाई।
(B) चूना पत्थर की खदानों के पास स्थित सीमेंट विनिर्माण संयंत्र।
(C) ग्राहक सेवा प्रदान करने वाला कॉल सेंटर।
(D) इलेक्ट्रॉनिक चिप निर्माण इकाई।

61. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक के रूप में भी जाना जाता है।
2. शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तृतीयक क्षेत्रक का हिस्सा हैं।
3. चतुर्थक क्षेत्रक प्राथमिक क्षेत्रक की एक उप-श्रेणी है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

62. निर्वाह खेती से वाणिज्यिक कृषि की ओर स्थानांतरण किसका एक प्रमुख पहलू है?
(A) शस्य विविधीकरण।
(B) संसाधन की कमी।
(C) औद्योगिक विकेंद्रीकरण।
(D) कृषि प्रणालियों का विकास।

63. वेबर के सिद्धांत में, यदि कोई विनिर्माण प्रक्रिया 'भार-वृद्धि' वाली है, तो संयंत्र के लिए इष्टतम अवस्थिति होगी:
(A) बाजार के करीब।
(B) कच्चे माल के स्रोत के करीब।
(C) न्यूनतम श्रम लागत वाले बिंदु पर।
(D) अधिकतम समूहन वाले बिंदु पर।

64. निम्नलिखित में से कौन परिवहन भूगोल में 'अभिगम्यता' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) नेटवर्क में एक विशिष्ट परिवहन कड़ी का भौतिक अस्तित्व।
(B) किसी स्थान से परस्पर क्रिया और संपर्क के सापेक्ष अवसर।
(C) दो क्षेत्रीय बिंदुओं के बीच वैकल्पिक मार्गों की कुल संख्या।
(D) किसी दी गई सड़क या वाणिज्यिक रेल लाइन पर

कारण (R): यह एक स्वच्छंद उद्योग है जिसके मुख्य आगत और निर्गत परिवहन लागत से भारी रूप से प्रभावित नहीं होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

111. 'कृषि उत्पादकता' और 'कृषि दक्षता' के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) उत्पादकता कुल उत्पादन को संदर्भित करती है, जबकि दक्षता उत्पादन की तुलना निवेश से करती है।
(B) उत्पादकता प्रति इकाई क्षेत्र उत्पादन है, जबकि दक्षता प्रति इकाई श्रम उत्पादन है।
(C) कोई अंतर नहीं है; शब्द विनिमय योग्य हैं।
(D) उत्पादकता को टन में मापा जाता है, जबकि दक्षता को मौद्रिक मूल्य में मापा जाता है।

112. 'आइसोडापेन' की अवधारणा किस अवस्थिति सिद्धांत के केंद्र में है?
(A) वॉन थ्यूनेन का मॉडल
(B) अल्फ्रेड वेबर का मॉडल
(C) ऑगस्ट लॉश का मॉडल
(D) केंद्रीय स्थान सिद्धांत

113. लोहा और इस्पात उद्योग किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) स्वच्छंद
(B) संसाधन-आधारित उद्योग
(C) चतुर्थक
(D) सेवा

114. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में विभिन्न कृषि गतिविधियों की अवस्थिति की व्याख्या करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है:
(A) परिवहन लागत
(B) जलवायु
(C) मृदा का प्रकार
(D) श्रम की उपलब्धता

115. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) प्राथमिक क्षेत्रक - बैंकिंग
(B) द्वितीयक क्षेत्रक - मत्स्य पालन
(C) तृतीयक क्षेत्रक - परिवहन
(D) चतुर्थक क्षेत्रक - निर्माण

116. संसाधन उपयोग के संदर्भ में 'स्थिरता' का अर्थ है:
(A) आर्थिक विकास के लिए अधिकतम संभव दर पर संसाधनों का उपभोग करना।
(B) प्राकृतिक संसाधनों के परिरक्षण के लिए सभी आर्थिक विकास को रोकना।
(C) राष्ट्रीय राजस्व को अधिकतम करने के लिए सभी प्राकृतिक संसाधनों का निर्यात करना।
(D) भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को नुकसान पहुँचाए बिना वर्तमान में संसाधनों का उपयोग करना।

117. बाजार क्षेत्रों के नेटवर्क से बने आदर्श आर्थिक परिदृश्य के लिए लॉश ने किस आकृति का प्रस्ताव दिया है?
(A) वर्गों का ग्रिड।
(B) एक-दूसरे को काटते वृत्तों की प्रणाली।
(C) षट्भुजों का एक नेस्टेड पैटर्न।
(D) संकेंद्रित छल्लों की एक श्रृंखला।

118. परिवहन का कौन सा साधन उच्च टर्मिनल लागत लेकिन कम लाइन-हॉल लागत की विशेषता है, जो इसे लंबी दूरी के लिए कुशल बनाता है?
(A) सड़क परिवहन
(B) रेल परिवहन
(C) वायु परिवहन
(D) मानव कुली

119. वेबर और वॉन थ्यूनेन दोनों के मॉडलों की एक मुख्य धारणा यह है कि निर्णय लेने वाला 'आर्थिक मानव' है, जिसका अर्थ है कि वे:
(A) अपने व्यक्तिगत निर्णय लेने में परोपकारी और समुदाय-केंद्रित हैं।
(B) व्यवसाय के लिए स्थान चुनते समय तर्कहीन और अप्रत्याशित होते हैं।
(C) अपने सभी आर्थिक निर्णयों में परंपरा और संस्कृति से बंधे होते हैं।
(D) पूरी तरह से सूचित होते हैं और अपने आर्थिक लाभ को अधिकतम करने के लिए कार्य करते हैं।

120. स्वच्छंद उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वे भारी कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भर हैं।
2. परिवहन लागत उनकी कुल लागत का एक बड़ा हिस्सा है।
3. इलेक्ट्रॉनिक्स और सॉफ्टवेयर उद्योग इसके विशिष्ट उदाहरण हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

121. ग्रामीण कृषि क्षेत्रों से शहरी औद्योगिक केंद्रों की ओर जनसंख्या और आर्थिक गतिविधि का स्थानांतरण किस क्षेत्रक की वृद्धि का प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) प्राथमिक क्षेत्रक
(B) चतुर्थक क्षेत्रक
(C) द्वितीयक क्षेत्रक

NODIA

कथन I: संसाधन-आधारित उद्योग अक्सर अपने कच्चे माल के स्रोत के पास स्थित होता है।
कथन II: स्वच्छंद उद्योग में अवस्थिति संबंधी काफी लचीलापन होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

166. परिवहन का कौन सा साधन कम से मध्यम दूरी के लिए सर्वोत्तम अभिगम्यता प्रदान करता है और घर-घर सेवा प्रदान करता है?
(A) रेलवे
(B) सड़क मार्ग
(C) जलमार्ग
(D) वायुमार्ग

167. ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति मॉडल में उनका प्राथमिक उद्देश्य उस स्थान को खोजना था जहाँ:
(A) लागत न्यूनतम हो।
(B) पर्यावरणीय प्रभाव न्यूनतम हो।
(C) श्रम सबसे सस्ता हो।
(D) लाभ अधिकतम हो।

168. 'गहन निर्वाह कृषि' आमतौर पर किन क्षेत्रों में पाई जाती है?
(A) उच्च जनसंख्या घनत्व और छोटे खेत।
(B) कम जनसंख्या घनत्व और बड़े खेत।
(C) ठंडी जलवायु और छोटा बढ़ता मौसम।
(D) कम किसानों वाली औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएँ।

169. गैर-नवीकरणीय संसाधन की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) इसे कुछ वर्षों के भीतर पुनः पूरित किया जा सकता है।
(B) इसकी आपूर्ति अनिवार्य रुप से अनंत है।
(C) यह एक निश्चित भंडार में मौजूद है जो उपयोग के माध्यम से समाप्त हो जाता है।
(D) इसके उपयोग का कोई पर्यावरणीय प्रभाव नहीं पड़ता है।

170. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (भूगोलवेत्ता)
P. अल्फ्रेड वेबर
Q. ऑगस्ट लॉश
R. जे. एच. वॉन थ्यूनेन
S. डी. व्हिटलसी
सूची II: (योगदान)
1. विश्व कृषि प्रणालियाँ
2. कृषि अवस्थिति सिद्धांत
3. औद्योगिक न्यूनतम-लागत सिद्धांत
4. औद्योगिक लाभ-अधिकतमकरण सिद्धांत
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

171. चार-क्षेत्रक मॉडल में आर्थिक विकास के अंतिम चरण में किस क्षेत्रक का प्रभुत्व होता है?
(A) प्राथमिक
(B) द्वितीयक
(C) तृतीयक
(D) चतुर्थक

172. वीवर की शस्य संयोजन विधि की एक प्रमुख आलोचना क्या है?
(A) यह बहुत अधिक व्यक्तिपरक है।
(B) संयोजनों की संख्या बहुत बड़ी और मानचित्रण के लिए जटिल हो सकती है।
(C) यह केवल निर्वाह कृषि के लिए काम करती है।
(D) यह पशुधन की भूमिका की उपेक्षा करती है।

173. 'स्थोक-भंग' बिंदु उन उद्योगों के लिए एक आकर्षक स्थान है जो:
(A) सर्वव्यापी कच्चे माल का उपयोग करते हैं।
(B) परिवहन लागत से प्रभावित नहीं होते हैं।
(C) में परिवहन के साधन में परिवर्तन शामिल होता है, जैसे जहाज से ट्रेन।
(D) एकल, हल्के उत्पाद का उत्पादन करते हैं।

174. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अल्फ्रेड वेबर का सिद्धांत लागत न्यूनतम करने पर आधारित है।
2. ऑगस्ट लॉश का सिद्धांत लाभ अधिकतम करने पर आधारित है।
3. वॉन थ्यूनेन का मॉडल अवस्थितिक लगान पर आधारित है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

175. परिवहन नेटवर्क का मुख्य उद्देश्य किसे पार करना है?
(A) दूरी की बाधा।
(B) सरकारी विनियम।
(C) आपूर्ति और मांग का नियम।
(D) प्राथमिक-द्वितीयक क्षेत्रक का विभाजन।

176. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि तृतीयक क्षेत्रक के अंतर्गत आती है?
(A) लौह अयस्क खनन
(B) बैंकिंग सेवाएं
(C) गेहूं की खेती
(D) कार विनिर्माण

Downloaded from www.pdf.tube

(C) दूसरे शहर के चारों ओर संकेंद्रित छल्लों का एक नया, छोटा समूह विकसित होगा।
(D) पूरा मैदान एक ही फसल में बदल जाएगा।

132. लौह अयस्क, कोयला और चूना पत्थर को इस्पात में बदलने की प्रक्रिया किस क्षेत्रक की गतिविधि का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) प्राथमिक
(B) तृतीयक
(C) चतुर्थक
(D) द्वितीयक

133. निम्नलिखित में से कौन वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत की धारणा नहीं है?
(A) एकसमान परिवहन दरों वाला एक आइसोट्रोपिक मैदान।
(B) पूर्ण प्रतिस्पर्धा और पूर्ण सूचना।
(C) विभिन्न स्थानों पर परिवर्तनीय मांग।
(D) मूल मॉडल में दो कच्चे माल और एक बाजार पर विचार किया जाता है।

134. भू-तापीय ऊर्जा किसका उदाहरण है?
(A) गैर-नवीकरणीय संसाधन।
(B) नवीकरणीय संसाधन।
(C) स्वच्छंद संसाधन।
(D) सर्वव्यापी संसाधन।

135. इन मौलिक कार्यों के प्रकाशन को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।
1. वॉन थ्यूनेन द्वारा 'द आइसोलेटेड स्टेट'
2. अल्फ्रेड वेबर द्वारा 'द थ्योरी ऑफ द लोकेशन ऑफ इंडस्ट्रीज'
3. ऑगस्ट लॉश द्वारा 'द इकोनॉमिक्स ऑफ लोकेशन'
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

136. 'समय-स्थान अभिसरण' की अवधारणा आर्थिक भूगोल में किस विषय से सबसे निकटता से संबंधित है?
(A) परिवहन और संचार में विकास जो दूरी की बाधा को कम करते हैं।
(B) कृषि उत्पादकता।
(C) संसाधन संरक्षण।
(D) प्राथमिक से द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों में बदलाव।

137. कौन सा कथन संसाधन-आधारित उद्योग और स्वच्छंद उद्योग के बीच सटीक अंतर बताता है?
(A) संसाधन-आधारित उद्योग हमेशा स्वच्छंद उद्योगों की तुलना में अधिक लाभदायक होते हैं।
(B) स्वच्छंद उद्योग परिवहन लागत के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, जबकि संसाधन-आधारित उद्योग नहीं।
(C) संसाधन-आधारित उद्योग कच्चे माल के स्थानों से बंधे होते हैं, जबकि स्वच्छंद उद्योगों को अधिक स्वतंत्रता होती है।
(D) स्वच्छंद उद्योग प्राथमिक क्षेत्रक में हैं, जबकि संसाधन-आधारित उद्योग द्वितीयक क्षेत्रक में हैं।

138. निम्नलिखित में से कौन चतुर्थक आर्थिक क्षेत्रक की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) सूचना का सृजन, प्रसंस्करण और प्रसार
(B) प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष निष्कर्षण
(C) मानकीकृत वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन
(D) शारीरिक श्रम और कम-कौशल वाले कार्य

139. कृषि प्रणालियाँ के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'वाणिज्यिक खेती' मुख्य रूप से लाभ और बाजारों में बिक्री के लिए है।
2. 'निर्वाह खेती' मुख्य रूप से किसान और उनके परिवार के प्रत्यक्ष उपभोग के लिए है।
3. झूम कृषि गहन वाणिज्यिक खेती का एक रूप है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

140. परिवहन नेटवर्क के लिए कम बीटा इंडेक्स मान क्या सुझाव देता है?
(A) एक अत्यधिक संयोजित और जटिल नेटवर्क।
(B) अपने केंद्रों के सापेक्ष कुछ कड़ियों वाला एक सरल नेटवर्क।
(C) सभी केंद्रों के लिए उच्च स्तर की अभिगम्यता।
(D) कम समग्र परिवहन लागत।

141. अवस्थितिक त्रिभुज एक ज्यामितीय उपकरण है जिसका उपयोग किस सिद्धांत में किया जाता है?
(A) वॉन थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति मॉडल।
(B) ऑगस्ट लॉश का बाजार क्षेत्रों का सिद्धांत।
(C) अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत।
(D) जे. सी. वीवर का शस्य संयोजन विश्लेषण।

NODIA

142. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): जीवाश्म ईंधन जैसे गैर-नवीकरणीय संसाधनों का संरक्षण एक महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौती है।
कारण (R): ये संसाधन सीमित हैं और इनका उपभोग तेजी से बढ़ रहा है, जबकि इनके निर्माण में लाखों वर्ष लगते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

213. आर्थिक क्षेत्रकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. द्वितीयक क्षेत्रक को औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।
2. आर्थिक विकास के साथ प्राथमिक क्षेत्रक का महत्व कम हो जाता है।
3. चतुर्थक क्षेत्रक में कम-कौशल वाले शारीरिक कार्य शामिल होते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

214. 'जीवाश्म ईंधन' शब्द का तात्पर्य है:
(A) पुराने इंजनों में प्रयुक्त कोई भी ईंधन।
(B) प्राचीन पौधों और जानवरों के अवशेषों से बने ऊर्जा स्रोत।
(C) लकड़ी जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत।
(D) परमाणु विखंडन से प्राप्त ईंधन।

215. 'बोली-लगान वक्र' (Bid-rent curve) वॉन थ्यूनेन के मॉडल से प्राप्त एक अवधारणा है जो दर्शाती है:
(A) फसल की पैदावार और वर्षा के बीच का संबंध।
(B) कृषि भूमि के लिए आधिकारिक सरकारी कीमत।
(C) विभिन्न फसलों के परिवहन की लागत।
(D) एक किसान बाजार से अलग-अलग दूरियों पर भूमि के लिए कितना भुगतान करने को तैयार है।

216. औद्योगिक अवस्थिति के संदर्भ में, 'समूहन अर्थव्यवस्थाएँ' हैं:
(A) वे लाभ जो फर्में एक-दूसरे के पास स्थित होकर प्राप्त करती हैं, जैसे कि साझा बुनियादी ढांचा और कुशल श्रम पूल।
(B) औद्योगिक समूहन के नुकसान, जैसे प्रदूषण और भीड़भाड़।
(C) उद्योगों को समान रूप से फैलाने के लिए बनाई गई सरकारी नीतियां।
(D) कच्चे माल के परिवहन से जुड़ी लागत।

217. निगमों को कानूनी सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनी किस क्षेत्रक के भीतर कार्य करती है?
(A) प्राथमिक क्षेत्रक
(B) द्वितीयक क्षेत्रक
(C) तृतीयक क्षेत्रक
(D) उपरोक्त सभी

218. शस्य संयोजन विश्लेषण के लिए जे. सी. वीवर की पद्धति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) कृषि क्षेत्रों के निर्धारण के लिए अधिक वस्तुनिष्ठ और सांख्यिकीय रूप से सुदृढ़ पद्धति बनाना।
(B) किसानों को सलाह देना कि कौन सी फसलें सबसे अधिक लाभदायक होंगी।
(C) किसी देश के कुल कृषि उत्पादन की गणना करना।
(D) फसल प्रजातियों की आनुवंशिक विविधता का मानचित्रण करना।

219. संसाधन-आधारित उद्योगों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) वे स्वच्छंद हैं और कहीं भी स्थित हो सकते हैं।
(B) वे हमेशा प्रदूषण रहित होते हैं।
(C) वे विशेष रूप से तृतीयक क्षेत्रक से संबंधित हैं।
(D) उनकी अवस्थिति उनके प्राथमिक कच्चे माल के स्रोत से दृढ़ता से जुड़ी हुई है।

220. परिवहन भूगोल में, 'दूरी पार करने की लागत' को किस रूप में जाना जाता है?
(A) ह्रासमान प्रतिफल का नियम।
(B) दूरी की बाधा।
(C) समूहन का सिद्धांत।
(D) अवस्थितिक लगान।

221. कौन सा अवस्थिति मॉडल बाजार क्षेत्रों के परिदृश्य का विश्लेषण करके अधिकतम लाभ का बिंदु खोजने पर आधारित है?
(A) वेबर का मॉडल
(B) वॉन थ्यूनेन का मॉडल
(C) लॉश का मॉडल
(D) क्रिस्टालर का मॉडल

222. किसी क्षेत्र में शस्य विविविधीकरण में वृद्धि सामान्यतः ले जाती है:
(A) एक ही वस्तु की कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशीलता की ओर।
(B) समग्र कृषि उत्पादकता में गिरावट की ओर।
(C) सरल कृषि पद्धतियों की ओर।
(D) अधिक लचीली और स्थिर कृषि अर्थव्यवस्था की ओर।

223. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: गैर-नवीकरणीय संसाधन समाप्त हो सकते हैं।
कथन II: नवीकरणीय संसाधन, यदि कुप्रबंधित हों, तो वे भी समाप्त हो सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

224. कपास का कपड़े में और फिर कपड़ों में रूपांतरण क्रमिक रूप से किन दो क्षेत्रकों में शामिल है?
(A) प्राथमिक, तृतीयक
(B) द्वितीयक, द्वितीयक
(C) द्वितीयक, तृतीयक
(D) प्राथमिक, द्वितीयक

225. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।

Click Here to Buy book on Amazon

154. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में तीव्रता का सबसे निचला छल्ला, विस्तृत पशुपालन, शहर से सबसे दूर स्थित है क्योंकि:
(A) यह शहरों से दूर सस्ती भूमि का उपयोग करता है और पशु चलकर बाजार तक जा सकते हैं।
(B) इसके लिए बाहरी क्षेत्रों में पाई जाने वाली अत्यधिक उच्च मृदा उर्वरता की आवश्यकता होती है।
(C) उत्पाद के टिकाऊपन के कारण यह आसानी से उच्च परिवहन लागत को वहन कर सकता है।
(D) ये जानवर स्थानीय शहरी वायु प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

155. निम्नलिखित में से किसे कृषि उत्पादकता का माप नहीं माना जाएगा?
(A) प्रति हेक्टेयर पैदावार।
(B) प्रति व्यक्ति-घंटा उत्पादन।
(C) कुल पूंजी निवेश प्रति इकाई उत्पादन का मूल्य।
(D) ग्रामीण परिदृश्य की सौंदर्य सुंदरता।

156. लॉश के अवस्थिति सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह लागत-न्यूनतम करने वाला मॉडल है।
2. यह एक आइसोट्रोपिक सतह और तर्कसंगत आर्थिक व्यवहार की कल्पना करता है।
3. इसके परिणामस्वरूप षट्कोणीय बाजार क्षेत्रों का परिदृश्य बनता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2 और 3
(B) केवल 1
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

157. आटा का उपयोग करके ब्रेड बनाने वाला बेकर किसका उदाहरण है?
(A) कच्चा माल-उन्मुख उद्योग (भार-ह्रास)।
(B) स्वच्छंद उद्योग।
(C) बाजार-उन्मुख उद्योग (भार-वृद्धि)।
(D) प्राथमिक क्षेत्रक गतिविधि।

158. परिवहन भूगोल में 'दूरी की बाधा' इस विचार को संदर्भित करता है कि:
(A) आवागमन की लागत या कठिनाई पर दूरी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(B) लंबी दूरी से आवागमन प्रोत्साहित होता है।
(C) सभी परिवहन मार्ग घर्षण रहित हैं।
(D) दूरी आवागमन के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा या लागत पैदा करती है।

159. व्हिटलसी के कृषि क्षेत्रों के वर्गीकरण का प्राथमिक ध्यान क्या है?
(A) विविध कृषि पद्धतियों की एक वर्णनात्मक वैश्विक सूची तैयार करना।
(B) सबसे अधिक लाभदायक कृषि प्रणालियों की पहचान करना।
(C) कृषि भूमि उपयोग में भविष्य के परिवर्तनों की भविष्यवाणी करना।
(D) विभिन्न प्रकार की कृषि के लिए आदर्श अवस्थिति का मॉडल तैयार करना।

160. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): परिवहन नेटवर्क में संयोजकता की डिग्री इसकी समग्र दक्षता को प्रभावित करती है।
कारण (R): एक अत्यधिक संयोजित नेटवर्क अधिक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है, जो भीड़भाड़ और यात्रा के समय को कम कर सकता है, जिससे अभिगम्यता में सुधार होता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

NODIA

161. अनुसंधान करने वाला एक विश्वविद्यालय प्रोफेसर किस आर्थिक क्षेत्रक में कार्य कर रहा है?
(A) प्राथमिक
(B) चतुर्थक
(C) द्वितीयक
(D) तृतीयक

162. वेबर के अवस्थितिक त्रिभुज में, न्यूनतम परिवहन लागत का बिंदु किसके प्रभाव पर विचार करके पाया जाता है?
(A) बाजार और दो स्थानीय कच्चे माल के स्रोत।
(B) एक बाजार और एक कच्चे माल का स्रोत।
(C) सरकार और श्रमिक संघ।
(D) तीन अलग-अलग बाजार।

163. निम्नलिखित में से कौन से नवीकरणीय संसाधनों के उदाहरण हैं, सिवाय?
(A) पवन
(B) ज्वार
(C) प्राकृतिक गैस
(D) बायोमास

164. आर्थिक भूगोल में जे. एच. वॉन थ्यूनेन के मॉडल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या था?
(A) विश्व की मृदा का विस्तृत वर्गीकरण।
(B) शस्य संयोजनों की गणना के लिए एक सूत्र।
(C) वैश्विक जलवायु परिवर्तन की भविष्यवाणी।
(D) यह विचार कि बाजार से दूरी भूमि उपयोग को प्रभावित करती है।

165. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।

(D) गैर-लाभकारी क्षेत्रक

122. शस्य संयोजनों के अपने विश्लेषण में, जे. सी. वीवर ने यह सुनिश्चित करने के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया:
(A) कृषि क्षेत्रों का एक वस्तुनिष्ठ और सत्यापन योग्य निर्धारण।
(B) एक व्यक्तिपरक और गुणात्मक वर्गीकरण।
(C) कि केवल सबसे अधिक लाभदायक फसलों को शामिल किया गया था।
(D) कि परिवहन लागत प्राथमिक चर थी।

123. संसाधन संरक्षण के '3R' का अर्थ है:
(A) सुधार, पुनर्रोपण, पुनर्विकास
(B) अनुसंधान, परिशोधन, विवरण
(C) नदी, वर्षा, जलाशय
(D) कम करना, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण

124. पाइपलाइन परिवहन का मुख्य लाभ है:
(A) इसकी उच्च यात्रा गति।
(B) निरंतर प्रवाह और उच्च विश्वसनीयता के लिए कम परिचालन लागत।
(C) कई अलग-अलग गंतव्यों तक पहुँचाने में इसका लचीलापन।
(D) विभिन्न प्रकार की वाणिज्यिक वस्तुओं को ले जाने की इसकी क्षमता।

125. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): वेबर के मॉडल में, कोई उद्योग सबसे सस्ते श्रम वाले स्थान पर स्थित नहीं होगा यदि श्रम लागत में बचत अतिरिक्त परिवहन लागत से कम हो।
कारण (R): मॉडल का प्राथमिक उद्देश्य परिवहन, श्रम और समूहन कारकों को संतुलित करते हुए समग्र न्यूनतम-लागत स्थान खोजना है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

126. एक ऐसा देश जहाँ 60% से अधिक कार्यबल कृषि में लगा हुआ है, आर्थिक विकास के किस चरण में होने की संभावना है?
(A) उत्तर-औद्योगिक
(B) औद्योगिक
(C) सूचना युग
(D) पूर्व-औद्योगिक

127. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (कृषि प्रणाली)
P. चलवासी पशुचारण
Q. झूम कृषि
R. गहन निर्वाह कृषि
S. वाणिज्यिक अनाज कृषि
सूची II: (विशेषता वाला क्षेत्र/लक्षण)
1. मानसूनी एशिया, उच्च जनसंख्या घनत्व
2. मध्य एशिया और अफ्रीका की अर्ध-शुष्क भूमि
3. अमेज़ॅन और कांगो के उष्णकटिबंधीय वर्षावन
4. उत्तरी अमेरिका के प्रेयरी, यूरेशिया के स्टेपीज़
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

128. 'संसाधन-आधारित' उद्योग क्या है?
(A) एक ऐसा उद्योग जो किसी विशिष्ट स्थान से बंधा नहीं है।
(B) एक ऐसा उद्योग जिसका अवस्थिति संबंधी निर्णय उसके कच्चे माल के पास होने की आवश्यकता से काफी प्रभावित होता है।
(C) एक ऐसा उद्योग जो मुख्य रूप से बौद्धिक संसाधनों का उपयोग करता है।
(D) एक ऐसा उद्योग जो संसाधन निष्कर्षण क्षेत्र को सेवाएं प्रदान करता है।

129. ऑगस्ट लॉश ने वेबर के अवस्थिति सिद्धांत में कैसे सुधार किया?
(A) उन्होंने विशेष रूप से परिवहन लागत को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया।
(B) उन्होंने बाजार क्षेत्र पर विचार करते हुए लाभ-अधिकतम करने वाले उत्पादक की अवधारणा पेश की।
(C) उन्होंने श्रम और समूहन की संभावित भूमिकाओं की उपेक्षा की।
(D) उन्होंने अपने मॉडल को विशेष रूप से कृषि क्षेत्र पर लागू किया।

130. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: परिवहन भूगोल में अभिगम्यता और संयोजकता पर्यायवाची शब्द हैं।
कथन II: अभिगम्यता किसी स्थान तक पहुँचने की सुगमता को संदर्भित करती है, जबकि संयोजकता नेटवर्क में प्रत्यक्ष जुड़ाव की डिग्री को संदर्भित करती है।
(A) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(C) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

131. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में, यदि एकसमान मैदान पर दूसरा, छोटा बाजार शहर पेश किया जाता है, तो संभावित परिणाम क्या होगा?
(A) मूल भूमि उपयोग प्रतिरूप अपरिवर्तित रहेगा।
(B) सभी कृषि गतिविधियाँ बंद हो जाएँगी।

Downloaded from www.pdf.tube

177. तांबा गलाने का कारखाना तांबे की खान के पास स्थित होने की सबसे अधिक संभावना क्यों है?
(A) तांबे का बाजार हमेशा खान के पास स्थित होता है।
(B) तांबा अयस्क भारी होता है और गलाने की प्रक्रिया में इसका भार कम हो जाता है।
(C) तांबे की खानों के पास श्रम सबसे सस्ता होता है।
(D) तांबा गलाना एक स्वच्छंद उद्योग है।

178. वॉन थ्यूनेन के छल्लों के पीछे मूल सिद्धांत क्या है?
(A) भूमि के मूल्य और बाजार से दूरी के बीच एक व्युत्क्रम संबंध।
(B) कुछ फसलों के लिए किसानों की व्यक्तिगत प्राथमिकताएं।
(C) विशिष्ट कृषि क्षेत्रों का निर्माण करने वाली जलवायु विविधताएं।
(D) सरकारी ज़ोनिंग विनियम।

179. कागज और एल्युमीनियम का पुनर्चक्रण क्रमशः किस प्रकार के संसाधनों के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है?
(A) सर्वव्यापी और स्थानीयकृत
(B) अक्षय और क्षयशील
(C) जैविक और अजैविक
(D) नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय

180. वेबर के विपरीत, ऑगस्ट लॉश के मॉडल को अवस्थिति का अधिक 'सामान्य' सिद्धांत माना जाता है क्योंकि यह:
(A) केवल एक ही उद्योग पर लागू होता है।
(B) बाजार और मांग की उपेक्षा करता है।
(C) कृषि अवस्थिति के लिए विकसित किया गया था।
(D) केवल एक फर्म के बजाय संपूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थानिक संरचना की व्याख्या करने का प्रयास करता है।

181. एक किसान जो एक ही भूखंड पर क्रमिक वर्षों में अलग-अलग फसलें लगाता है, वह क्या कर रहा है?
(A) शस्य संयोजन
(B) शस्य विविधीकरण
(C) शस्य आवर्तन
(D) एकल कृषि

182. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): पाइपलाइन परिवहन का एक अत्यधिक विशिष्ट साधन है।
कारण (R): यह एक निश्चित मार्ग पर बड़ी मात्रा में तरल और गैसीय उत्पादों के परिवहन के लिए सबसे उपयुक्त है और अन्य वस्तुओं को नहीं ले जा सकता या आसानी से गंतव्य नहीं बदल सकता।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

183. द्वितीयक क्षेत्रक-प्रधान अर्थव्यवस्था से तृतीयक क्षेत्रक-प्रधान अर्थव्यवस्था में संक्रमण को अक्सर क्या कहा जाता है?
(A) औद्योगीकरण
(B) कृषि सुधार
(C) हरित क्रांति
(D) वि-औद्योगीकरण या उत्तर-औद्योगीकरण

184. 'क्रांतिक आइसोडापेन' उस रेखा का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ:
(A) श्रम लागत की बचत किसी भी अतिरिक्त परिवहन लागत की बिल्कुल भरपाई कर देती है।
(B) परिवहन लागत की बचत श्रम लागत की बचत के बराबर होती है।
(C) किसी वस्तु का बाजार मूल्य सबसे अधिक होता है।
(D) समूहन लाभ शुरू होते हैं।

NODIA

185. नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय संसाधन के बीच का अंतर किसमें निहित है?
(A) उनकी भौतिक स्थिति।
(B) उनका आर्थिक मूल्य।
(C) उनके उपभोग के सापेक्ष उनके पुनर्जन्म का समय।
(D) उनकी अवस्थिति।

186. इनमें से कौन सी कृषि प्रणाली विकसित दुनिया से सबसे अधिक जुड़ी हुई है और बड़े पैमाने, मशीनीकरण और बाजार अभिविन्यास की विशेषता है?
(A) वाणिज्यिक अनाज कृषि
(B) झूम कृषि
(C) गहन निर्वाह कृषि
(D) चलवासी पशुचारण

187. परिवहन नेटवर्क पर लागू ग्राफ सिद्धांत में, 'कड़ियाँ' क्या दर्शाती हैं?
(A) शहर या जंक्शन।
(B) यातायात की कुल मात्रा।
(C) परिवहन की लागत।
(D) स्थानों के बीच परिवहन मार्ग।

188. निम्नलिखित में से कौन सी प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधि नहीं है?
(A) लकड़ी काटना
(B) सॉफ्टवेयर परामर्श
(C) उत्खनन
(D) पशुपालन

189. एक बेकर ब्रेड बनाने के लिए आटा, पानी और खमीर को मिलाता है, जो आटे की तुलना में अधिक स्थूल और जल्दी

(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

143. निम्नलिखित में से कौन 'स्वच्छंद' उद्योग को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) एक ऐसा उद्योग जिसकी अवस्थिति सामग्री या बाजारों तक पहुँच से दृढ़ता से प्रभावित नहीं होती है।
(B) एक ऐसा उद्योग जो पर्यावरण को प्रदूषित करता है और उसे बार-बार स्थानांतरित होना पड़ता है।
(C) एक ऐसा उद्योग जो प्रवासी श्रमिकों को नियुक्त करता है।
(D) एक ऐसा उद्योग जो स्थोक-भंग बिंदु पर स्थित है।

144. कृषि उत्पादकता को मापने का मुख्य लक्ष्य क्या है?
(A) किसी क्षेत्र के लिए एकमात्र सबसे लाभदायक फसल का निर्धारण करना।
(B) विभिन्न कृषि प्रणालियों या क्षेत्रों के प्रदर्शन की तुलना करना।
(C) अकुशल किसानों को सब्सिडी देना।
(D) अधिक उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देना।

145. लॉश के मॉडल में, फर्में उन क्षेत्रों में एकत्रित होंगी जो:
(A) कच्चे माल से समृद्ध हैं।
(B) बाजारों से समृद्ध हैं और जिनमें उच्च मांग है।
(C) प्रतिस्पर्धियों से सबसे दूर हैं।
(D) सरकार द्वारा औद्योगिक क्षेत्रों के रूप में नामित किए गए हैं।

146. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्राथमिक क्षेत्रक में मत्स्य पालन, वानिकी और खनन जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।
कथन II: द्वितीयक क्षेत्रक में बैंकिंग, पर्यटन और शिक्षा जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।
(A) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(C) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

147. वेबर के सिद्धांत में 1 के बराबर पदार्थ सूचकांक का क्या अर्थ है?
(A) उद्योग दृढ़ता से कच्चे माल-उन्मुख है।
(B) उद्योग दृढ़ता से बाजार-उन्मुख है।
(C) उद्योग को कच्चे माल के स्रोत और बाजार के बीच अवस्थिति की स्वतंत्रता है।
(D) उद्योग को कम लागत वाले श्रम स्थान पर स्थित होना चाहिए।

148. निम्नलिखित में से कौन शस्य विविविधीकरण का एक उदाहरण है?
(A) एक किसान साल-दर-साल केवल गेहूं बोता है।
(B) एक बड़ा निगम किसी क्षेत्र के सभी खेतों का मालिक है।
(C) चावल के लिए न्यूनतम मूल्य निर्धारित करने का सरकारी कार्यक्रम।
(D) एक किसान बारी-बारी से मक्का, सोयाबीन और अल्फाल्फा लगाता है।

149. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवस्थिति सिद्धांत)
P. वॉन थ्यूनेन
Q. अल्फ्रेड वेबर
R. ऑगस्ट लॉश
S. जे. सी. वीवर
सूची II: (मूल अवधारणा)
1. न्यूनतम लागत अवस्थिति
2. लाभ अधिकतमकरण / बाजार क्षेत्र
3. शस्य संयोजन
4. अवस्थितिक लगान / कृषि क्षेत्र
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

150. आधुनिक संदर्भ में वॉन थ्यूनेन के मॉडल की एक प्रमुख सीमा यह है कि यह किसे ध्यान में रखने में विफल रहता है?
(A) परिवहन लागत।
(B) प्रशीतन, वैश्विक बाजार और कॉर्पोरेट खेती।
(C) भूमि लगान।
(D) केंद्रीय बाजार की अवधारणा।

151. निम्नलिखित में से किसे 'स्वच्छंद' कच्चा माल माना जाता है, जिसका अर्थ है कि यह किसी उद्योग को किसी विशिष्ट स्थान से नहीं बांधता है?
(A) इस्पात मिल के लिए लौह अयस्क।
(B) चीनी मिल के लिए गन्ना।
(C) एल्युमीनियम स्मेल्टर के लिए बॉक्साइट।
(D) कई उद्योगों में शीतलन के लिए उपयोग किया जाने वाला पानी।

152. चतुर्थक क्षेत्रक की वृद्धि किस सामाजिक परिवर्तन से सबसे निकटता से जुड़ी है?
(A) सूचना क्रांति
(B) कृषि क्रांति
(C) औद्योगिक क्रांति
(D) हरित क्रांति

153. संसाधन प्रबंधन में 'संधारणीय प्रतिफल' की अवधारणा विशेष रूप से किन पर लागू होती है?
(A) तेल और कोयले जैसे गैर-नवीकरणीय संसाधन।
(B) सभी प्राकृतिक संसाधन समान रूप से।
(C) वन और मत्स्य पालन जैसे नवीकरणीय संसाधन।
(D) मानव निर्मित संसाधन।

Click Here to Buy book on Amazon

4. तृतीयक
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

201. अभिगम्यता और संयोजकता के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) अभिगम्यता एक नेटवर्क गुण है, जबकि संयोजकता एक नोडल गुण है।
(B) संयोजकता को समय में मापा जाता है, जबकि अभिगम्यता को दूरी में मापा जाता।
(C) अभिगम्यता किसी स्थान तक पहुँचने की सुगमता के बारे में है, जबकि संयोजकता कड़ियों की प्रत्यक्षता के बारे में है।
(D) कोई अंतर नहीं है; शब्द विनिमय योग्य हैं।

202. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): विकसित देशों में, प्राथमिक क्षेत्रक में कार्यबल का प्रतिशत बहुत कम है।
कारण (R): कृषि के मशीनीकरण ने श्रम की आवश्यकता को काफी कम कर दिया है, और अर्थव्यवस्था सेवाओं और उद्योग की ओर स्थानांतरित हो गई है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

203. वेबर के मॉडल में, यदि पदार्थ सूचकांक 1 से अधिक है, तो इसका तात्पर्य है कि उत्पादन प्रक्रिया है:
(A) भार-वृद्धि वाली
(B) भार-तटस्थ
(C) स्वच्छंद
(D) भार-ह्रास वाली

204. वेबर के मॉडल पर ऑगस्ट लॉश के मॉडल का मुख्य नवाचार किसका समावेश था?
(A) श्रम लागत
(B) मांग और राजस्व
(C) परिवहन लागत
(D) समूहन अर्थव्यवस्थाएँ

205. हरित क्रांति ने मुख्य रूप से किसके माध्यम से कृषि उत्पादकता में महत्वपूर्ण वृद्धि में योगदान दिया?
(A) खेती के तहत भूमि का विस्तार।
(B) खेती के पारंपरिक तरीकों की ओर वापसी।
(C) उच्च उपज वाली किस्म के बीजों, उर्वरकों और सिंचाई का उपयोग।
(D) शस्य विविविधीकरण पर ध्यान।

206. स्वच्छंद उद्योग का एक उदाहरण है:
(A) तेल शोधन
(B) सीमेंट उत्पादन
(C) गन्ना पेराई
(D) हीरा प्रसंस्करण

207. निम्नलिखित में से कौन मूल वॉन थ्यूनेन मॉडल में एक धारणा नहीं है?
(A) कई प्रतिस्पर्धी बाजार
(B) एक विलगित राज्य
(C) एक एकल केंद्रीय बाजार
(D) एकसमान मैदान

208. संसाधन संरक्षण की अवधारणा किस पर बल देती है?
(A) प्राकृतिक संसाधनों के किसी भी उपयोग को रोकना।
(B) अपशिष्ट और कमी से बचने के लिए कुशल और संधारणीय उपयोग।
(C) संसाधन निष्कर्षण से तत्काल लाभ को अधिकतम करना।
(D) विशेष रूप से गैर-नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग करना।

209. परिवहन नेटवर्क विश्लेषण में बीटा इंडेक्स मापता है:
(A) दो केंद्रों के बीच का सबसे छोटा रास्ता।
(B) प्रति केंद्र कड़ियों की औसत संख्या, जो नेटवर्क की जटिलता को दर्शाती है।
(C) नेटवर्क की कुल लंबाई।
(D) सबसे केंद्रीय केंद्र की अभिगम्यता।

210. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: आरा मिल एक संसाधन-आधारित उद्योग है।
कथन II: कंप्यूटर चिप निर्माण संयंत्र एक स्वच्छंद उद्योग है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

211. अफ्रीका और एशिया के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में कौन सी कृषि प्रणाली प्रचलित है?
(A) भूमध्यसागरीय कृषि
(B) वाणिज्यिक दुग्ध कृषि
(C) चलवासी पशुचारण
(D) गहन निर्वाह कृषि

212. वेबर के सिद्धांत में, श्रम लागत का प्रभाव न्यूनतम परिवहन लागत वाले स्थान से विचलन तभी पैदा कर सकता है यदि:
(A) श्रम सर्वव्यापी है।
(B) पदार्थ सूचकांक बिल्कुल 1 है।
(C) सरकार सब्सिडी की पेशकश करती है।
(D) श्रम लागत की बचत अतिरिक्त परिवहन लागत से अधिक हो।

Downloaded from www.pdf.tube

खराब होने वाला होता है। यह बताता है कि बेकरी क्यों होती है:
(A) कच्चा माल-उन्मुख
(B) श्रम-उन्मुख
(C) बाजार-उन्मुख
(D) स्वच्छंद

190. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: वॉन थ्यूनेन का मॉडल एक आइसोट्रोपिक मैदान की कल्पना करता है।
कथन II: वेबर का मॉडल भी एक आइसोट्रोपिक मैदान की कल्पना करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

191. पदार्थ सूचकांक का सूत्र किस सिद्धांत के हिस्से के रूप में विकसित किया गया था?
(A) अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत
(B) वॉन थ्यूनेन का कृषि मॉडल
(C) ऑगस्ट लॉश का बाजार क्षेत्र सिद्धांत
(D) जे. सी. वीवर की शस्य संयोजन विधि

192. आर्थिक क्षेत्रकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विनिर्माण द्वितीयक क्षेत्रक से संबंधित है।
2. तृतीयक क्षेत्रक सेवाएं प्रदान करता है।
3. खनन एक प्राथमिक क्षेत्रक गतिविधि है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

193. यह अवधारणा कि संसाधन किसी पदार्थ का आंतरिक गुण होने के बजाय मनुष्यों के लिए उसकी उपयोगिता द्वारा परिभाषित होता है, किस रूप में जानी जाती है?
(A) संसाधनों की स्थिर अवधारणा।
(B) संसाधनों की कार्यात्मक या गतिशील अवधारणा।
(C) परिरक्षणवादी दृष्टिकोण।
(D) माल्थस का सिद्धांत।

194. लॉश के मॉडल में बाजार क्षेत्रों का षट्कोणीय आकार एक वृत्त और एक वर्ग के बीच का समझौता है। इस ज्यामितीय समाधान का उद्देश्य है:
(A) बिना किसी अछूते क्षेत्र के किसी विशिष्ट क्षेत्र की सबसे कुशलतापूर्वक सेवा करना।
(B) क्षेत्रीय फर्मों के बीच भौगोलिक दूरी को अधिकतम करना।
(C) सौंदर्य की दृष्टि से सुखद और सममित मानचित्र प्रतिरूप बनाना।
(D) वेबर मॉडल की सरल धारणाओं को दोहराना।

195. विभिन्न स्तर के मशीनीकरण वाले दो खेतों की तुलना करने के लिए कृषि प्रदर्शन का कौन सा माप सबसे उपयोगी होगा?
(A) टन में कुल उत्पादन।
(B) प्रति हेक्टेयर उत्पादन।
(C) कुल निवेश मूल्य के प्रति इकाई उत्पादन (दक्षता)।
(D) उगाई गई फसलों की संख्या।

196. प्रति टन-किलोमीटर परिवहन का सबसे महंगा साधन आमतौर पर कौन सा होता है?
(A) जहाज
(B) रेल
(C) पाइपलाइन
(D) वायु

197. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में सबसे भीतरी छल्ले पर बाजार बागवानी और दुग्ध कृषि का कब्जा है क्योंकि ये उत्पाद:
(A) शीघ्र नष्ट नहीं होने वाले हैं और उनकी परिवहन लागत कम है।
(B) के लिए बड़ी मात्रा में भूमि की आवश्यकता होती है।
(C) शीघ्र नष्ट होने वाले हैं और उनकी परिवहन लागत उच्च है।
(D) मूल्य में कम हैं।

198. "भार-ह्रास" उद्योग वह है जहाँ तैयार उत्पाद कच्चे माल की तुलना में हल्का होता है। वेबर के अनुसार, ऐसा उद्योग कहाँ स्थित होना चाहिए?
(A) बाजार के पास।
(B) कच्चे माल के स्रोत के पास।
(C) सस्ते श्रम वाले स्थान पर।
(D) स्थोक-भंग बिंदु पर।

199. "संसाधल का बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग, भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना" किसका मूल सिद्धांत है?
(A) संसाधन दोहन।
(B) संसाधन परिरक्षण।
(C) संसाधन राष्ट्रीयकरण।
(D) संसाधन संरक्षण।

200. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (आर्थिक गतिविधि)
P. गेहूं उगाने वाला किसान
Q. ब्रेड बनाने वाला बेकर
R. ब्रेड बेचने वाला पंसारी
S. खाद्य नीति विश्लेषक
सूची II: (आर्थिक क्षेत्रक)
1. द्वितीयक
2. प्राथमिक
3. चतुर्थक

कथन (A): वॉन थ्यूनेन का मॉडल, अपनी पुरानी और सरल धारणाओं के बावजूद, अभी भी आर्थिक भूगोल में मूल्यवान है।
कारण (R): यह अवस्थितिक लगान और भूमि लागत एवं परिवहन लागत के बीच समझौते की महत्वपूर्ण अवधारणाओं को प्रस्तुत करता है, जो भूमि उपयोग प्रतिरूप को समझने के लिए मौलिक बने हुए हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

226. परिवहन नेटवर्क में उच्च स्तर की संयोजकता का क्या तात्पर्य है?
(A) नेटवर्क में कई प्रत्यक्ष जुड़ाव और वैकल्पिक पथ हैं।
(B) स्थानों के बीच बहुत कम प्रत्यक्ष कड़ियाँ हैं।
(C) किसी भी दो बिंदुओं के बीच यात्रा धीमी और महंगी है।
(D) नेटवर्क विकास के पूर्व-औद्योगिक चरण में है।

227. वेबर और लॉश के दृष्टिकोण के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि वेबर 'न्यूनतम-लागत' स्थान चाहता है जबकि लॉश 'अधिकतम-लाभ' स्थान चाहता है। इसका अर्थ है:
(A) वेबर लागतों की उपेक्षा करता है, जबकि लॉश राजस्व की उपेक्षा करता है।
(B) वेबर का मॉडल लॉश के मॉडल से अधिक जटिल है।
(C) लॉश का दृष्टिकोण अधिक व्यापक है क्योंकि यह लागत और राजस्व दोनों पर विचार करता है।
(D) दोनों मॉडल एक ही इष्टतम अवस्थिति की ओर ले जाते हैं।

228. इनमें से किसे 'संसाधन-आधारित' उद्योग माना जाएगा?
(A) एक विश्वविद्यालय
(B) एक बीमा कंपनी
(C) एक मोबाइल ऐप विकास फर्म
(D) एक फल डिब्बाबंदी कारखाना

229. निम्नलिखित में से कौन सी रोपण कृषि की विशेषता नहीं है?
(A) बड़ी जागीर या खेत का आकार
(B) एकल फसल में विशेषज्ञता
(C) मुख्य रूप से पारिवारिक उपभोग के लिए उत्पादन
(D) उच्च पूंजी निवेश और वैज्ञानिक तरीके

230. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (कारक)
P. परिवहन लागत
Q. श्रम लागत
R. समूहन
S. बाजार मांग
सूची II: (संबद्ध सिद्धांत/अवधारणा)
1. विकेंद्रीकरण की अलाभकारी स्थितियां
2. क्रांतिक आइसोडापेन (वेबर)
3. लाभ अधिकतमकरण (लॉश)
4. आइसोटिम्स और आइसोडापेन्स (वेबर)
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

231. कृषि में मानव श्रम के स्थान पर मशीनों के आने से किसमें वृद्धि होती है?
(A) उच्च फसल पैदावार बनाए रखने के लिए आवश्यक किसानों की कुल संख्या।
(B) एक ही खेत पर एक साथ उगाई जाने वाली अनूठी फसलों की विविधता।
(C) संभावित स्थानीय फसल विफलता से जुड़ा समग्र आर्थिक जोखिम।
(D) मशीनीकरण के माध्यम से कृषि उत्पादन और श्रमिक उत्पादकता।

232. 'संसाधनों का संरक्षण' का अर्थ है:
(A) संसाधनों का विवेकपूर्ण और नियोजित उपयोग ताकि उनकी बर्बादी को रोका जा सके और भविष्य में उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।
(B) संसाधनों का उपयोग न करना।
(C) सभी लोगों के बीच संसाधनों का समान वितरण।
(D) आर्थिक विकास के लिए संसाधनों का अधिकतम दोहन।

233. वॉन थ्यूनेन के मॉडल में संकेंद्रित छल्ला प्रतिरूप किनके बीच परस्पर क्रिया का प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) जलवायु और मृदा प्रकार।
(B) सरकारी नीति और किसान प्राथमिकता।
(C) भूमि लगान और परिवहन लागत।
(D) फसल की पैदावार और बाजार मूल्य।

234. एक ऐसा उद्योग जिसका उत्पाद उसके कच्चे माल की तुलना में परिवहन के लिए अधिक महंगा है, वह किस ओर झुकाव रखेगा?
(A) बाजार-उन्मुख।
(B) कच्चा माल-उन्मुख।
(C) श्रम-उन्मुख।
(D) शक्ति-उन्मुख।

235. वेबर के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह न्यूनतम-लागत सिद्धांत है।
2. पदार्थ सूचकांक बाजार या पदार्थ स्रोत की ओर अभिविन्यास निर्धारित करने में मदद करता है।
3. सिद्धांत मांग की विविधताओं के प्रभाव की उपेक्षा करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) केवल 1 और 2

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) प्राथमिक क्षेत्रक
आर्थिक भूगोल में प्राथमिक क्षेत्रक उन गतिविधियों को समाहित करता है जो सीधे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और संग्रहण से जुड़ी होती हैं। इसके अंतर्गत कृषि, वानिकी, मत्स्य पालन और खनन जैसी क्रियाएं आती हैं, जहाँ पृथ्वी से कच्चे माल सीधे प्राप्त किए जाते हैं। यह क्षेत्रक किसी भी उन्नत अर्थव्यवस्था की आधारशिला होता है क्योंकि यह अन्य सभी क्षेत्रकों के लिए आवश्यक कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराता है।

2. (A) अनुसंधान और उच्च स्तरीय परामर्श जैसी ज्ञान-आधारित सेवाएं।
अर्थव्यवस्था के चतुर्थक क्षेत्रक में मुख्य रूप से बौद्धिक और ज्ञान आधारित गतिविधियों को शामिल किया जाता है। इसके अंतर्गत वैज्ञानिक अनुसंधान, सूचनाओं का गहन विश्लेषण और उच्च स्तरीय परामर्श जैसी सेवाएं आती हैं जो समाज के तकनीकी और शैक्षणिक विकास में सहायक होती हैं। यह क्षेत्रक तृतीयक क्षेत्रक का एक परिष्कृत रूप है, जहाँ शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक दक्षता और विशेषज्ञता को अधिक महत्व दिया जाता है, जिससे आर्थिक नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है।

3. (C) ऑटोमोबाइल असेंबली
(C) ऑटोमोबाइल असेंबली
ऑटोमोबाइल असेंबली एक विनिर्माण प्रक्रिया है जो कच्चे माल और पुर्जों को तैयार उत्पादों में बदलती है, इसलिए यह द्वितीयक क्षेत्रक का हिस्सा है। इसके विपरीत, वानिकी, मत्स्य पालन और खनन जैसी गतिविधियाँ सीधे प्रकृति से संसाधनों के निष्कर्षण पर आधारित होती हैं, जो उन्हें प्राथमिक क्षेत्रक की श्रेणी में रखती हैं। प्राथमिक क्षेत्रक केवल प्राकृतिक पदार्थों के संग्रहण तक सीमित है, जबकि किसी भी प्रकार का औद्योगिक निर्माण द्वितीयक क्षेत्रक की विशेषता माना जाता है।

4. (D) प्रयुक्त निवेश और कृषि उत्पादन का अनुपात।
कृषि उत्पादकता एक महत्वपूर्ण मापन है जो खेती की कार्यक्षमता का आकलन करता है। यह मुख्य रूप से कृषि उत्पादन की मात्रा और उस उत्पादन को प्राप्त करने के लिए लगाए गए निवेशों, जैसे बीज, उर्वरक, श्रम और पूंजी के बीच के अनुपात को दर्शाता है। उच्च उत्पादकता का अर्थ है कि सीमित संसाधनों का उपयोग करके अधिक पैदावार प्राप्त की गई है। यह अवधारणा किसी क्षेत्र की तकनीकी उन्नति और संसाधनों के कुशल प्रबंधन को समझने में सहायता प्रदान करती है।

5. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
द्वितीयक क्षेत्रक का मुख्य कार्य प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त कच्चे माल को विनिर्माण के माध्यम से उपयोगी वस्तुओं और तैयार माल में परिवर्तित करना है। वहीं, तृतीयक क्षेत्रक भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के बजाय समाज को विभिन्न प्रकार की अमूर्त सेवाएं जैसे परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है। ये दोनों क्षेत्रक किसी भी विकसित अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं और आर्थिक विकास के साथ-साथ इन क्षेत्रों में रोजगार और योगदान की मात्रा भी निरंतर बढ़ती जाती है।

NODIA

6. (B) जे. सी. वीवर
कृषि भूगोल में शस्य संयोजन की अवधारणा को सांख्यिकीय रूप से व्यवस्थित करने का श्रेय जे. सी. वीवर को दिया जाता है। उन्होंने कृषि क्षेत्रों के निर्धारण के लिए एक वस्तुनिष्ठ विधि का प्रस्ताव दिया था जो विभिन्न फसलों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रफल के वितरण पर आधारित थी। वीवर की यह पद्धति फसलों के सापेक्षिक महत्व को समझने और कृषि प्रतिरूपों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने में मील का पत्थर साबित हुई, जिसका उपयोग आज भी क्षेत्रीय नियोजन में व्यापक रूप से किया जाता है।

7. (D) एक ही केंद्रीय शहर के साथ एक 'विलगित राज्य' का अस्तित्व।
जे. एच. वॉन थ्यूनेन के कृषि भूमि उपयोग मॉडल की प्रमुख धारणा एक 'विलगित राज्य' की कल्पना है। इस मॉडल के अनुसार, एक ऐसा विस्तृत और समतल मैदान होता है जिसके केंद्र में केवल एक ही शहर होता है जो बाजार का कार्य करता है। यहाँ परिवहन के साधन सीमित होते हैं और मृदा की उर्वरता समान मानी जाती है। यह विलगित राज्य बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटा होता है, जिससे बाजार से दूरी और भूमि लगान का सीधा संबंध स्पष्ट होता है।

8. (A) कच्चे माल के स्रोत से समान परिवहन लागत वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखा।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत में 'आइसोटिम' एक अत्यंत महत्वपूर्ण ज्यामितीय उपकरण है। यह मानचित्र पर उन बिंदुओं को मिलाने वाली रेखा है जहाँ किसी विशिष्ट कच्चे माल या तैयार उत्पाद को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की परिवहन लागत बिल्कुल समान होती है। ये रेखाएं केंद्र से बाहर की ओर बढ़ती लागत के स्तर को दर्शाती हैं। इनका उपयोग भूगोलवेत्ता कुल परिवहन लागत का आकलन करने और उद्योग के लिए इष्टतम स्थान खोजने हेतु करते हैं।

9. (C) सॉफ्टवेयर विकास फर्म
स्वच्छंद उद्योग वे होते हैं जिनकी स्थापना के लिए कच्चे माल के स्रोत या विशिष्ट बाजार की निकटता अनिवार्य नहीं होती है। क्रमादेश या सॉफ्टवेयर विकास इकाइयाँ इसका सबसे सटीक उदाहरण हैं क्योंकि इनके मुख्य संसाधन बौद्धिक क्षमता और डिजिटल संयोजकता हैं। ये इकाइयाँ भारी परिवहन लागत से

(A) मक्का उगाने वाला किसान।
(B) कार कारखाने में काम करने वाला श्रमिक।
(C) आनुवंशिक अनुसंधान करने वाला वैज्ञानिक।
(D) बस चालक।

250. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (शब्द)
P. वॉन थ्यूनेन
Q. वेबर
R. लॉश
S. व्हिटलसी
सूची II: (मुख्य विचार)
1. लाभ अधिकतमकरण
2. न्यूनतम लागत
3. कृषि प्रणालियाँ
4. भूमि लगान
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

251. वीवर की शस्य संयोजन पद्धति में प्रयुक्त सूत्र $\Sigma d^2/n$ का उद्देश्य उस संयोजन को खोजना है जिसमें:
(A) सैद्धांतिक वक्र से अधिकतम विचलन हो।
(B) फसलों की संख्या सबसे अधिक हो।
(C) फसलों की संख्या सबसे कम हो।
(D) सैद्धांतिक वक्र से न्यूनतम विचलन हो।

252. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): वॉन थ्यूनेन के मॉडल में वानिकी का छल्ला शहर के अपेक्षाकृत करीब स्थित था।
कारण (R): लकड़ी एक महत्वपूर्ण ईंधन और निर्माण सामग्री थी, लेकिन यह भारी और स्थूल थी, जिससे इसका परिवहन महंगा हो गया था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

253. निम्नलिखित में से कौन कृषि उत्पादकता निर्धारित करने वाला कारक नहीं है?
(A) मृदा की गुणवत्ता और जलवायु।
(B) प्रौद्योगिकी और निवेश का स्तर।
(C) अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा से दूरी।
(D) किसान का कौशल और ज्ञान।

254. कई केंद्रों लेकिन बहुत कम कड़ियों वाले नेटवर्क में क्या होगा?
(A) उच्च बीटा इंडेक्स और उच्च संयोजकता।
(B) उच्च अल्फा इंडेक्स और उच्च अभिगम्यता।
(C) निम्न गामा इंडेक्स और उच्च लागत।
(D) निम्न बीटा इंडेक्स और निम्न संयोजकता।

255. संसाधन-आधारित उद्योगों और स्वच्छंद उद्योगों के बीच मुख्य अंतर किसमें है?
(A) उनके अवस्थिति संबंधी निर्णय में परिवहन लागत का महत्व।
(B) उनके कार्यबल का कौशल स्तर।
(C) उनके द्वारा उत्पन्न प्रदूषण की मात्रा।
(D) वे अर्थव्यवस्था के जिस क्षेत्रक से संबंधित हैं।

256. अर्थव्यवस्था का कौन सा क्षेत्रक खुदरा, बैंकिंग और पर्यटन जैसी सेवाओं के प्रावधान से संबंधित है?
(A) प्राथमिक
(B) तृतीयक
(C) द्वितीयक
(D) चतुर्थक

257. ऑगस्ट लॉश के आर्थिक क्षेत्रों के परिदृश्य की विशेषता किस प्रकार का प्रतिरूप है?
(A) संकेंद्रित वृत्त
(B) नेस्टेड षट्भुज
(C) अनियमित बहुभुज
(D) वर्गों का ग्रिड

258. गैर-नवीकरणीय संसाधनों का संरक्षण महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) उनकी निर्माण प्रक्रिया में भूवैज्ञानिक समय लगता है, जो उन्हें मानवीय उद्देश्यों के लिए सीमित बनाता है।
(B) उन्हें आसानी से बदला जा सकता है।
(C) वे असीमित मात्रा में उपलब्ध हैं।
(D) वे आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं हैं।

259. परिवहन प्रणाली में 'संयोजकता' शब्द क्या वर्णन करता है?
(A) प्रणाली का उपयोग करने की कुल लागत।
(B) प्रणाली में वाहनों की औसत गति।
(C) वह सीमा जिस तक नेटवर्क के केंद्र एक-दूसरे से सीधे जुड़े हुए हैं।
(D) मार्गों की सौंदर्य गुणवत्ता।

260. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वॉन थ्यूनेन का मॉडल कृषि भूमि उपयोग से संबंधित है।
2. वेबर का मॉडल औद्योगिक अवस्थिति से संबंधित है।
3. लॉश का मॉडल बाजार क्षेत्रों और लाभ अधिकतमकरण से संबंधित है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

Downloaded from www.pdf.tube

261. मत्स्य पालन और खेती पर अत्यधिक निर्भर अर्थव्यवस्था पर किसका प्रभुत्व है?
(A) द्वितीयक क्षेत्रक
(B) तृतीयक क्षेत्रक
(C) प्राथमिक क्षेत्रक
(D) चतुर्थक क्षेत्रक

262. एक आइसोडापेन किसकी समान रेखा है?
(A) कच्चा माल लागत।
(B) कुल परिवहन लागत।
(C) श्रम लागत।
(D) बाजार मूल्य।

263. शस्य विविधीकरण का उद्देश्य है:
(A) एकल, उच्च उपज वाली फसल पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) खेती की प्रक्रिया को सरल बनाना।
(C) सिंचाई की आवश्यकता को कम करना।
(D) जोखिम फैलाना और कृषि आय की स्थिरता बढ़ाना।

264. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: एक स्वच्छंद उद्योग को विभिन्न प्रकार के स्थानों पर रखा जा सकता है।
कथन II: एक संसाधन-आधारित उद्योग कच्चे माल पर निर्भरता के कारण एक विशिष्ट स्थान से बंधा होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

265. वॉन थ्यूनेन के मॉडल का मूल तर्क क्या है?
(A) सभी किसान बाजार से उनकी दूरी की परवाह किए बिना एक ही फसल उगाते हैं।
(B) सरकार सभी कृषि भूमि उपयोग के लिए सख्त ज़ोनिंग स्थापित करती है।
(C) किसान महंगी भूमि पर उच्च मूल्य वाली वस्तुएं उगाकर लाभ को अधिकतम करते हैं।
(D) मृदा उर्वरता फसल के प्रकारों को चुनने के लिए प्राथमिक जैविक कारक है।

266. सौर, पवन और ज्वारीय ऊर्जा को माना जाता है:
(A) अक्षय या सतत नवीकरणीय संसाधन।
(B) गैर-नवीकरणीय संसाधन।
(C) क्षयशील संसाधन।
(D) जैविक संसाधन।

267. वेबर के मॉडल की तुलना में, लॉश का मॉडल अधिक जटिल है क्योंकि यह:
(A) केवल एक चर पर विचार करता है।
(B) केवल कृषि पर लागू होता है।
(C) परिवहन लागतों को पूरी तरह से अनदेखा करता है।
(D) एक परिवर्तनीय मांग वक्र को शामिल करता है और लाभ अधिकतमकरण का लक्ष्य रखता है।

268. निम्नलिखित में से कौन परिवहन का साधन नहीं है?
(A) सड़क
(B) समूहन
(C) रेल
(D) पाइपलाइन

269. एक सॉफ्टवेयर फर्म जो इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक बाजार की सेवा करती है, किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) संसाधन-आधारित उद्योग।
(B) प्राथमिक क्षेत्रक गतिविधि।
(C) स्वच्छंद उद्योग।
(D) द्वितीयक क्षेत्रक उद्योग।

270. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. पदार्थ सूचकांक
Q. अवस्थितिक लगान
R. षट्कोणीय जालक
S. शस्य संयोजन
सूची II: (प्रस्तावक/संबद्ध सिद्धांत)
1. ऑगस्ट लॉश
2. जे. सी. वीवर
3. अल्फ्रेड वेबर
4. जे. एच. वॉन थ्यूनेन
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

271. अनुसंधान, प्रबंधन और सूचना प्रसंस्करण में लगे कार्यबल के अनुपात में वृद्धि किस क्षेत्रक की वृद्धि का संकेत देती है?
(A) चतुर्थक
(B) प्राथमिक
(C) द्वितीयक
(D) तृतीयक

272. कृषि उत्पादकता मापने का एक प्रमुख उद्देश्य है:
(A) कृषि वस्तुओं की कीमतें निर्धारित करना।
(B) खेती में भूमि और श्रम के उपयोग की दक्षता को समझना।
(C) खेती के इतिहास का दस्तावेजीकरण करना।
(D) शहरी प्रवास को प्रोत्साहित करना।

273. संसाधन संरक्षण के पीछे प्राथमिक धारणा यह है कि:
(A) संसाधन अनंत हैं।
(B) संसाधन सीमित हैं और उनका बुद्धिमानी से उपयोग किया जाना चाहिए।
(C) प्रौद्योगिकी संसाधन की कमी की सभी समस्याओं को हल कर सकती है।
(D) आर्थिक विकास संसाधन की उपलब्धता से अधिक

NODIA

महत्वपूर्ण है।

274. वेबर के सिद्धांत में, किसी उद्योग की अवस्थिति परिवहन लागत, श्रम लागत और किसके बीच का समझौता है?
(A) समूहन/विकेंद्रीकरण की अर्थव्यवस्थाएँ।
(B) सरकारी कर।
(C) जलवायु परिस्थितियाँ।
(D) सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ।

275. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं - कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): सड़क परिवहन अत्यधिक लचीला है।
कारण (R): यह घर-घर सेवा प्रदान कर सकता है और उन क्षेत्रों तक पहुँच सकता है जहाँ रेल या जल परिवहन की सुविधा नहीं है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

276. "अभिगम्यता" की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) किसी शहर में सड़कों की संख्या।
(B) सार्वजनिक परिवहन टिकट की कीमत।
(C) किसी स्थान के प्रत्यक्ष जुड़ाव की संख्या।
(D) वह सापेक्ष सुगमता जिसके साथ अन्य स्थानों से किसी स्थान तक पहुँचा जा सकता है।

277. इस्पात उद्योग संसाधन-आधारित उद्योग का एक उदाहरण है क्योंकि इसकी अवस्थिति ऐतिहासिक रूप से किसकी उपलब्धता से जुड़ी रही है?
(A) कुशल श्रम और पूंजी।
(B) तटीय बंदरगाह।
(C) कोयला और लौह अयस्क।
(D) एक बड़ा उपभोक्ता बाजार।

278. निम्नलिखित में से कौन द्वितीयक क्षेत्रक को परिभाषित करता है?
(A) कच्चे माल का निष्कर्षण।
(B) कच्चे माल का तैयार माल में प्रसंस्करण।
(C) सेवाओं का प्रावधान।
(D) अनुसंधान और विकास का संचालन।

279. वॉन थ्यूनेन मॉडल अनिवार्य रूप से किसका मॉडल है?
(A) औद्योगिक अवस्थिति।
(B) शहरी जनसंख्या वृद्धि।
(C) वैश्विक व्यापार प्रवाह।
(D) कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप।

280. स्वच्छंद उद्योगों की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) तैयार उत्पादों में उच्च मूल्य-से-भार अनुपात होता है।
(B) वे भारी और स्थूल कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भर हैं।
(C) परिवहन लागत कुल लागत का एक बड़ा और महत्वपूर्ण हिस्सा है।
(D) उन्हें अंतिम बाजार के निकट स्थित होना चाहिए।

281. विश्व की कृषि प्रणालियों का व्यवस्थित वर्गीकरण किसका प्रमुख योगदान था?
(A) अल्फ्रेड वेबर
(B) जे. एच. वॉन थ्यूनेन
(C) डरवेंट व्हिटलसी
(D) ऑगस्ट लॉश

282. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: कोयला एक नवीकरणीय संसाधन है।
कथन II: सौर ऊर्जा एक गैर-नवीकरणीय संसाधन है।
(A) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

283. वेबर के सिद्धांत में, कोई उद्योग बाजार-उन्मुख कब होने की संभावना है?
(A) जब उत्पादन प्रक्रिया भार-ह्रास वाली हो।
(B) जब कच्चे माल सर्वव्यापी हों।
(C) जब बाजार में श्रम लागत बहुत अधिक हो।
(D) जब उत्पादन प्रक्रिया भार-वृद्धि वाली हो।

284. किसी क्षेत्र में शस्य संयोजनों के विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य है:
(A) यह निर्धारित करना कि किसानों को क्या उगाना चाहिए।
(B) कृषि क्षेत्रों के चरित्र को समझना और उनका सीमांकन करना।
(C) खेती से कुल लाभ की गणना करना।
(D) दक्षता के लिए एकल कृषि को बढ़ावा देना।

285. वेबर के विपरीत, लॉश का मॉडल किसकी अवस्थिति की व्याख्या करने के लिए अधिक उपयुक्त है?
(A) भारी, संसाधन-आधारित उद्योग।
(B) प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधियाँ।
(C) बाजार-उन्मुख, उपभोक्ता वस्तु उद्योग।
(D) परिवहन हब।

286. परिवहन लागत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह आम तौर पर दूरी के साथ बढ़ती है, लेकिन हमेशा रैखिक रूप से नहीं।
2. यह परिवहन के विभिन्न साधनों के बीच काफी भिन्न होती है।
3. टर्मिनल लागत और लाइन-हॉल लागत इसके दो मुख्य घटक हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) केवल 1 और 2

Click Here to Buy book on Amazon

(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 1 and 3

287. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि प्राथमिक क्षेत्रक से संबंधित है?
(A) कोयला खनन
(B) इस्पात विनिर्माण
(C) बैंकिंग
(D) सॉफ्टवेयर विकास

288. "किसी क्षेत्र की अभिगम्यता उसकी संयोजकता का प्रतिफल है।" इस कथन का तात्पर्य है कि:
(A) दोनों अवधारणाएं पूरी तरह से असंबद्ध हैं।
(B) जिन स्थानों पर अन्य स्थानों के लिए अधिक प्रत्यक्ष कड़ियाँ होती हैं, वहाँ पहुँचना आसान होता है।
(C) अभिगम्यता संयोजकता निर्धारित करती है, न कि इसके विपरीत।
(D) केवल उच्च संयोजकता वाले स्थान ही सुलभ होते हैं।

289. वॉन थ्यूनेन के मॉडल के पीछे मूल विचार किसके बीच समझौता है?
(A) फसल की पैदावार और मृदा उर्वरता।
(B) भूमि लागत और परिवहन लागत।
(C) श्रम लागत और पूंजी निवेश।
(D) बाजार मूल्य और सरकारी सब्सिडी।

290. किस तरह का उद्योग 'स्थोक-भंग' स्थान की ओर सबसे अधिक आकर्षित होगा?
(A) एक ऐसा उद्योग जहाँ प्रसंस्करण कच्चे माल के वजन को काफी कम कर देता है।
(B) सॉफ्टवेयर विकास जैसा स्वच्छंद उद्योग।
(C) एक ऐसा उद्योग जो सर्वव्यापी कच्चे माल का उपयोग करता है।
(D) एक छोटी पड़ोस की सेवा करने वाली स्थानीय बेकरी।

291. औद्योगिक अवस्थिति का कौन सा सिद्धांत लागत न्यूनतम करने के बजाय लाभ अधिकतम करने के सिद्धांत पर आधारित है?
(A) अल्फ्रेड वेबर का सिद्धांत
(B) वॉन थ्यूनेन का सिद्धांत
(C) ऑगस्ट लॉश का सिद्धांत
(D) डी. एम. स्मिथ का सिद्धांत

292. विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने की प्रथा को किस रुप में जाना जाता है?
(A) एकल कृषि
(B) कृषि दक्षता
(C) निर्वाह खेती
(D) शस्य विविविधीकरण

293. मत्स्य पालन का प्रबंधन यह सुनिश्चित करने के लिए कि मछली की आबादी उसकी पुनरुत्पादन क्षमता से अधिक कम न हो, किस सिद्धांत का अनुप्रयोग है?
(A) औद्योगिक समूहन।
(B) अवस्थितिक लगान।
(C) संधारणीय प्रतिफल।
(D) पदार्थ सूचकांक।

294. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: द्वितीयक क्षेत्रक कच्चे माल को रूपांतरित करके प्राथमिक क्षेत्रक की तुलना में अधिक मूल्य सृजित करता है।
कथन II: तृतीयक क्षेत्रक का उत्पादन अक्सर अमूर्त होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

295. वेबर के सिद्धांत में 'आइसोडापेन' की अवधारणा का उपयोग किसके संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है?
(A) श्रम लागत और समूहन लाभ।
(B) बाजार मांग और परिवहन लागत।
(C) परिवहन लागत और श्रम लागत।
(D) विभिन्न स्रोतों से परिवहन लागत।

296. स्वच्छंद उद्योग की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसकी परिवहन लागत है:
(A) इसकी कुल लागतों का एक बहुत ही छोटा और नगण्य हिस्सा।
(B) इसकी अवस्थिति का सबसे महत्वपूर्ण कारक।
(C) कच्चे माल के वजन पर अत्यधिक निर्भर।
(D) वही जो संसाधन-आधारित उद्योग के लिए होती है।

297. भूमि के ऊपर पेट्रोलियम या प्राकृतिक गैस की बड़ी मात्रा ले जाने के लिए परिवहन का कौन सा साधन आदर्श है?
(A) रेल
(B) सड़क
(C) पाइपलाइन
(D) वायु

298. आर्थिक गतिविधि का प्राथमिक से द्वितीयक और फिर तृतीयक क्षेत्रकों की ओर बढ़ना किसकी पहचान है?
(A) आर्थिक विकास।
(B) संसाधन की कमी।
(C) कृषि विविविधीकरण।
(D) राजनीतिक अस्थिरता।

299. वॉन थ्यूनेन के 'विलगित राज्य' में भूमि सबसे महंगी कहाँ है?
(A) सबसे बाहरी छल्ले पर।
(B) मध्य छल्ले पर।
(C) एक नौगम्य नदी के किनारे।

NODIA

(D) केंद्रीय शहर में।

300. वेबर के न्यूनतम-लागत सिद्धांत का प्राथमिक लक्ष्य उस स्थान को खोजना है जहाँ:

(A) बिक्री राजस्व और बाजार हिस्सेदारी अपने पूर्ण अधिकतम स्तर पर हो।

(B) उत्पादन और परिवहन की कुल लागत न्यूनतम स्तर पर हो।

(C) स्थानीय और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धियों की संख्या सबसे कम स्तर पर हो।

(D) सरकारी सब्सिडी और कर प्रोत्साहन उच्चतम स्तर पर हों।

www.nodia.in

NODIA

लागत वाली वस्तुएं बाजार के पास रहें और कम मूल्य वाली गतिविधियाँ सस्ती भूमि पर दूर संचालित की जा सकें।

19. (C) वह सीमा जिस तक केंद्र एक-दूसरे से सीधे जुड़े हुए हैं।
परिवहन भूगोल में संयोजकता का अर्थ है कि एक नेटवर्क के भीतर विभिन्न स्थान या केंद्र एक-दूसरे से कितनी प्रत्यक्षता और सुगमता से जुड़े हुए हैं। यह मार्गों की संख्या और उनकी व्यवस्था पर निर्भर करता है। एक उच्च संयोजित नेटवर्क में केंद्रों के बीच अधिक कड़ियाँ होती हैं, जिससे आवागमन के वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होते हैं। यह अवधारणा किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास और वहां के परिवहन ढांचे की मजबूती को समझने के लिए एक प्राथमिक भौगोलिक मापदंड के रूप में उपयोग की जाती है।

20. (D) अपने कच्चे माल के पास स्थित होकर परिवहन लागत को न्यूनतम करता है।
संसाधन-आधारित उद्योग वे होते हैं जिनकी स्थापना मुख्य रूप से कच्चे माल की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में की जाती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारी या स्थूल कच्चे माल को लंबी दूरी तक ले जाने में होने वाले विशाल परिवहन खर्च को कम करना है। चीनी मिलें और लोह-इस्पात संयंत्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं, जहाँ कच्चे माल का वजन प्रसंस्करण के दौरान काफी कम हो जाता है। ऐसे उद्योगों के लिए कच्चे माल के स्रोत की निकटता ही उनकी आर्थिक लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मकता को सुनिश्चित करने वाला मुख्य कारक होती है।

21. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण उनके कार्यों की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। वाणिज्यिक खेती सीधे संसाधनों के उपयोग के कारण प्राथमिक क्षेत्रक में आती है, जबकि लोह-इस्पात संयंत्र विनिर्माण का हिस्सा होने से द्वितीयक क्षेत्रक में शामिल है। बैंकिंग और बीमा सेवाएं प्रदान करने के कारण तृतीयक क्षेत्रक का अंग हैं। सॉफ्टवेयर विकास एक उच्च ज्ञान-आधारित गतिविधि है, जिसे विशिष्ट रूप से चतुर्थक क्षेत्रक में रखा जाता है। यह वर्गीकरण आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं की संरचना और विभिन्न क्षेत्रों के कार्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

22. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
कृषि दक्षता का वास्तविक अर्थ प्रति इकाई निवेश, जैसे श्रम या भूमि, से प्राप्त होने वाले उत्पादन की मात्रा से है। यह खेती की परिचालन कुशलता को दर्शाती है। हालांकि, कृषि उत्पादकता भी उत्पादन के स्तर को मापती है, लेकिन कथन II में दी गई बाजार संबंधों वाली व्याख्या इसे व्यापक बनाती है जो सदैव सटीक नहीं होती। उत्पादकता मुख्य रूप से भौतिक पैदावार तक सीमित होती है, जबकि दक्षता आर्थिक और तकनीकी संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को प्राथमिकता देती है।

23. (D) भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु संसाधनों के उपयोग का प्रबंधन करना।
संसाधन संरक्षण का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संपदा का इस प्रकार प्रबंधन करना है कि वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी उनकी उपलब्धता बनी रहे। यह संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को रोकने और उनके विवेकपूर्ण एवं संधारणीय उपयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इसमें अपशिष्ट को कम करना, पुनर्चक्रण और वैकल्पिक स्रोतों की खोज शामिल है। यह अवधारणा केवल उपयोग को रोकना नहीं है, बल्कि दीर्घकालिक आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता बनाए रखने के लिए प्रबंधन का एक सक्रिय दृष्टिकोण है।

24. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वच्छंद उद्योग अपनी अवस्थिति के मामले में स्वतंत्र होते हैं क्योंकि वे परिवहन लागत से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं होते हैं। इनके कच्चे माल अक्सर हर जगह उपलब्ध होते हैं या वजन में बहुत हल्के होते हैं, और तैयार उत्पाद भी उच्च मूल्य वाले एवं हल्के होते हैं। इसके कारण इन उद्योगों को किसी विशेष स्रोत या बाजार के पास स्थापित करना अनिवार्य नहीं होता। उदाहरण के लिए, हीरा तराशने या इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों के उद्योग कहीं भी स्थित होकर अपनी कार्यक्षमता बनाए रख सकते हैं।

25. (C) एक षट्भुज।
ऑगस्ट लॉश के अनुसार, किसी व्यावसायिक फर्म के लिए इष्टतम बाजार क्षेत्र की आकृति एक षट्भुज होती है। यह ज्यामितीय आकृति यह सुनिश्चित करती है कि पूरा क्षेत्र बिना किसी खाली स्थान या अतिव्याप्ति के कुशलतापूर्वक कवर हो जाए। षट्कोणीय प्रतिरूप परिवहन लागत को न्यूनतम करने और विक्रेताओं के बीच अधिकतम बाजार क्षेत्र साझा करने के लिए सबसे प्रभावी समाधान प्रदान करता है। यह मॉडल स्थानिक प्रतिस्पर्धा को समझने और संतुलित क्षेत्रीय आर्थिक विकास की व्याख्या करने के लिए भूगोल में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है।

26. (A) सरकारी नीति
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत में प्राथमिक कारकों के रूप में परिवहन लागत, श्रम लागत और समूहन लाभों को महत्वपूर्ण माना गया है। वेबर ने अपने शास्त्रीय मॉडल में सरकारी नीतियों, करों या राजनीतिक प्रभाव को स्थान नहीं दिया था क्योंकि उनका ध्यान विशुद्ध आर्थिक और स्थानिक कारकों पर केंद्रित था। उन्होंने यह माना कि उद्योग हमेशा उस स्थान पर स्थापित होंगे जहाँ कुल उत्पादन और वितरण लागत सबसे कम हो। सरकारी नीति एक बाहरी कारक है जो बाद के संशोधित सिद्धांतों में शामिल की गई।

27. (D) अन्य स्थानों से किसी गंतव्य तक पहुँचने की सापेक्ष सुगमता।
परिवहन भूगोल में अभिगम्यता का अर्थ है कि एक नेटवर्क के भीतर किसी विशेष गंतव्य तक अन्य स्थानों से कितनी आसानी, समय और कम लागत में पहुँचा जा सकता है। यह केवल भौतिक दूरी पर निर्भर नहीं है, बल्कि परिवहन के साधनों की गुणवत्ता और मार्गों की उपलब्धता पर भी आधारित है। उच्च अभिगम्यता वाले स्थान अक्सर आर्थिक रूप से अधिक विकसित होते हैं क्योंकि वहाँ लोगों और माल की आवाजाही

Downloaded from www.pdf.tube

प्रभावित हुए बिना किसी भी भौगोलिक स्थान पर सुगमता से कार्य कर सकती हैं। इनका मूल्य-से-भार अनुपात बहुत अधिक होता है, जिससे इनकी अवस्थिति का चयन अत्यंत लचीला और व्यापक होता है।

10. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
आर्थिक भूगोल के विभिन्न सिद्धांतों का श्रेय विशिष्ट विद्वानों को दिया जाता है। जे. सी. वीवर ने शस्य संयोजन की गणना के लिए सांख्यिकीय विधि प्रदान की, जबकि जे. एच. वॉन थ्यूनेन ने बाजार से दूरी के आधार पर कृषि अवस्थिति का प्रतिरूप समझाया। अल्फ्रेड वेबर ने औद्योगिक स्थापना के लिए न्यूनतम परिवहन लागत का सिद्धांत प्रस्तुत किया। डरवेंट व्हिटलसी ने विश्व की विभिन्न कृषि प्रणालियों का विस्तृत और वैज्ञानिक वर्गीकरण किया। यह सुमेलन भूगोल के शास्त्रीय योगदानों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

11. (D) खेती की जाने वाली फसलों की विविध श्रेणी जो आर्थिक जोखिम को कम करती है।
शस्य विविधीकरण का अर्थ है एक ही कृषि क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन करना। यह पद्धति किसी एक फसल की विफलता या बाजार में कीमतों के उतार-चढ़ाव से होने वाले आर्थिक जोखिम को प्रभावी ढंग से कम करती है। उच्च विविधीकरण मृदा की उर्वरता को बनाए रखने और कीटों के प्रसार को नियंत्रित करने में भी सहायक होता है। यह एक लचीली कृषि प्रणाली का प्रतीक है जो किसान की आय को स्थिरता प्रदान करती है और क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ करती है।

12. (A) केवल 1 और 2
वॉन थ्यूनेन का मॉडल एक समतल और एकसमान मैदान की कल्पना करता है जहाँ केवल परिवहन लागत ही कृषि प्रतिरूप को निर्धारित करती है। इस सिद्धांत के अनुसार, शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुएं और वे उत्पाद जिन्हें ले जाना महंगा होता है, हमेशा बाजार के सबसे निकटतम छल्ले में उत्पादित किए जाते हैं। वानिकी को इसके भारी वजन के कारण दूसरे छल्ले में रखा गया था ताकि परिवहन खर्च कम हो सके। अतः, केवल प्रथम दो कथन ही इस शास्त्रीय मॉडल की मूल मान्यताओं के अनुरूप हैं।

13. (C) इसे मानव जीवन काल के भीतर पुनः पूरित या पुनर्जीवित किया जा सकता है।
नवीकरणीय संसाधनों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी प्राकृतिक रूप से पुनरुत्पादन की क्षमता है। सौर ऊर्जा, पवन और वन ऐसे संसाधन हैं जिन्हें मानव अपने जीवन काल के दौरान बार-बार उपयोग कर सकता है क्योंकि ये प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निरंतर पुनः पूरित होते रहते हैं। यदि इनका प्रबंधन संधारणीय तरीके से किया जाए, तो ये कभी समाप्त नहीं होते हैं। ये संसाधन भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए अनिवार्य हैं क्योंकि ये पर्यावरण के अनुकूल और दीर्घकालिक रूप से उपलब्ध होने वाले ऊर्जा स्रोत माने जाते हैं।

14. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जैसे-जैसे कोई राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित होता है, उसकी निर्भरता कृषि जैसे प्राथमिक क्षेत्रक पर कम होने लगती है। इसका मुख्य कारण तकनीकी प्रगति और औद्योगीकरण है, जो द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों में रोजगार के नए अवसर सृजित करता है। यह संरचनात्मक बदलाव अर्थव्यवस्था को अधिक मूल्यवान और विविध बनाता है, जिससे कुल घरेलू उत्पाद में सेवाओं और विनिर्माण की हिस्सेदारी बढ़ जाती है। अतः, औद्योगीकरण की प्रक्रिया ही प्राथमिक क्षेत्रक के सापेक्षिक पतन और आर्थिक विकास का वास्तविक आधार सिद्ध होती है।

15. (A) परिवहन और बंदरगाह आधारित उद्योग
स्थोक-भंग बिंदु वह स्थान होता है जहाँ माल को परिवहन के एक माध्यम से दूसरे माध्यम में स्थानांतरित किया जाता है, जैसे जहाज से रेलगाड़ी में। ऐसे बिंदुओं पर माल के उतरने और चढ़ाने की लागत अधिक होती है, इसलिए प्रसंस्करण उद्योगों को वहीं स्थापित करना आर्थिक रूप से बहुत लाभदायक होता है। यही कारण है कि दुनिया के प्रमुख बंदरगाह और बड़े रेलवे जंक्शन अक्सर महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए हैं, जहाँ कच्चे माल को सीधे उत्पाद में बदला जा सकता है।

16. (B) स्थानीय कच्चे माल का भार / तैयार उत्पाद का भार।
अल्फ्रेड वेबर के सिद्धांत में पदार्थ सूचकांक एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय माप है। इसकी गणना स्थानीय कच्चे माल के कुल वजन को तैयार माल के वजन से विभाजित करके की जाती है। यदि यह सूचकांक 1 से अधिक होता है, तो इसका अर्थ है कि उत्पादन प्रक्रिया में वजन कम हो रहा है, जिससे उद्योग को कच्चे माल के स्रोत के पास लगाना उचित होता है। यह सूचकांक परिवहन लागत को न्यूनतम करने के लिए उद्योग की सबसे अनुकूल भौगोलिक स्थिति का निर्धारण करने में सहायता करता है।

17. (B) उन्हें अनिश्चित काल तक पुनर्चक्रित और पुन: उपयोग किया जा सकता है।
गैर-नवीकरणीय संसाधन वे हैं जिनकी मात्रा पृथ्वी पर सीमित है और जिनका निर्माण होने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे संसाधनों का एक बार उपयोग हो जाने के बाद उन्हें पुनः प्राप्त या पुनर्चक्रित नहीं किया जा सकता है। ये संसाधन मानवीय समय सीमा के भीतर पुनर्जीवित नहीं होते हैं, जिसके कारण निरंतर दोहन से इनके भंडार समाप्त होने का खतरा बना रहता है। इसलिए इनका संरक्षण और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की खोज वैश्विक स्तर पर अत्यंत आवश्यक मानी जाती है।

18. (A) 2, 4, 1, 3
वॉन थ्यूनेन के शास्त्रीय मॉडल में कृषि गतिविधियों का क्रम बाजार से दूरी और परिवहन लागत पर आधारित है। सबसे भीतरी छल्ले में शीघ्र नष्ट होने वाली दुग्ध कृषि और बागवानी होती है। दूसरे छल्ले में भारी लकड़ी का उत्पादन, तीसरे में गहन अनाज की खेती और सबसे बाहरी छल्ले में विस्तृत पशुपालन किया जाता है। यह क्रम सुनिश्चित करता है कि उच्च परिवहन

NODIA

(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 1 और 3

236. चतुर्थक क्षेत्रक को कभी-कभी क्या कहा जाता है?
(A) औद्योगिक अर्थव्यवस्था
(B) ज्ञान अर्थव्यवस्था
(C) सेवा अर्थव्यवस्था
(D) कृषि अर्थव्यवस्था

237. 'विलगित राज्य' किस शास्त्रीय आर्थिक मॉडल की काल्पनिक सेटिंग है?
(A) वेबर का औद्योगिक अवस्थिति मॉडल
(B) लॉश का बाजार क्षेत्र मॉडल
(C) वॉन थ्यूनेन का कृषि भूमि उपयोग मॉडल
(D) क्रिस्टालर का केंद्रीय स्थान मॉडल

238. इनमें से कौन सा स्वच्छंद उद्योग है?
(A) एल्युमीनियम गलाना
(B) जहाज निर्माण
(C) पेट्रोलियम शोधन
(D) कस्टमर सपोर्ट कॉल सेंटर

239. परिवहन नेटवर्क में, किसी केंद्र की उच्च अभिगम्यता का तात्पर्य है कि:
(A) नेटवर्क के कई अन्य केंद्रों से वहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।
(B) यह नेटवर्क के बाकी हिस्सों से अलग-थलग है।
(C) इसे नेटवर्क से जोड़ने वाली केवल एक कड़ी है।
(D) यह परिवहन लाइन के भौतिक अंत में स्थित है।

240. कृषि दक्षता का मापन किससे संबंधित है?
(A) किसी देश में उत्पादित सभी फसलों का कुल मूल्य।
(B) कृषि उत्पादन और उन्हें उत्पादित करने के लिए उपयोग किए गए निवेश का अनुपात।
(C) खेती में नियोजित लोगों की संख्या।
(D) सिंचित भूमि का प्रतिशत।

241. निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्राथमिक क्षेत्रक कच्चे माल के निष्कर्षण से संबंधित है।
कथन II: द्वितीयक क्षेत्रक वस्तुओं के विनिर्माण से संबंधित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

242. ऑगस्ट लॉश के मॉडल में किसी फर्म का मुख्य लक्ष्य क्या है?
(A) लाभ को अधिकतम करने के लिए सबसे बड़ा संभव बाजार क्षेत्र सुरक्षित करना।
(B) कच्चे माल के जितना संभव हो उतना करीब स्थित होना।
(C) वह स्थान खोजना जो सबसे सस्ता श्रम प्रदान करता हो।
(D) तैयार उत्पाद की परिवहन लागत को न्यूनतम करना।

243. 'साझा संसाधनों की त्रासदी' (Tragedy of the Commons) एक अवधारणा है जो किसकी आवश्यकता से निकटता से जुड़ी हुई है?
(A) औद्योगिक समूहन।
(B) शस्य विविविधीकरण।
(C) संसाधन संरक्षण और प्रबंधन।
(D) बढ़ी हुई परिवहन संयोजकता।

244. चीनी मिल गन्ने के खेतों के करीब स्थित होती है क्योंकि गन्ना:
(A) एक स्वच्छंद कच्चा माल है।
(B) प्रसंस्करण के दौरान वजन बढ़ाता है।
(C) उच्च मूल्य-से-भार अनुपात रखता है।
(D) भार-ह्रास वाला और शीघ्र नष्ट होने वाला है।

245. निम्नलिखित कृषि पद्धतियों को मानव इतिहास में उनके विशिष्ट आगमन के संदर्भ में कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।
1. मशीनीकरण के साथ वाणिज्यिक अनाज कृषि
2. शिकार और संग्रहण
3. स्थाई निर्वाह कृषि
4. झूम कृषि
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 1, 3

246. किस प्रकार का उद्योग परिवहन लागत से सबसे कम प्रभावित होता है?
(A) संसाधन-आधारित उद्योग
(B) स्वच्छंद उद्योग
(C) भारी उद्योग
(D) बाजार-उन्मुख उद्योग

247. 'दूरी की बाधा' को किसके द्वारा कम किया जा सकता है?
(A) दो बिंदुओं के बीच भौतिक दूरी बढ़ाकर।
(B) प्राथमिक क्षेत्रक की वृद्धि को बढ़ावा देकर।
(C) संसाधन की कमी को प्रोत्साहित करके।
(D) परिवहन और संचार प्रौद्योगिकी में सुधार द्वारा।

248. वॉन थ्यूनेन का सिद्धांत निम्नलिखित में से किसके आधार पर कृषि प्रतिरुप की व्याख्या करता है?
(A) बाजार तक उपज पहुँचाने की लागत।
(B) जलवायु में विविधताएँ।
(C) किसान की बुद्धिमत्ता।
(D) किसी क्षेत्र की ऐतिहासिक परंपराएँ।

249. निम्नलिखित में से कौन सा चतुर्थक गतिविधि का एक उदाहरण है?

Click Here to Buy book on Amazon

सरल होती है। यह अवधारणा क्षेत्रीय योजना और शहरी विकास के विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

28. (B) क्षेत्रकीय रुपांतरण।
जब किसी देश की अर्थव्यवस्था विकसित होती है, तो वहां की मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ कृषि जैसे प्राथमिक क्षेत्रक से हटकर विनिर्माण और फिर सेवाओं की ओर बढ़ने लगती हैं। इस प्रक्रिया को क्षेत्रकीय रुपांतरण कहा जाता है। यह बदलाव समाज की बदलती जरूरतों, तकनीकी प्रगति और बढ़ती आय के स्तर को दर्शाता है। आर्थिक इतिहास में यह रूपांतरण विकास का एक अनिवार्य चरण माना जाता है, जहाँ अधिक मूल्यवान और उच्च कौशल वाले क्षेत्रकों का जीडीपी में योगदान निरंतर बढ़ता जाता है।

29. (C) केवल 2 और 3
प्राकृतिक गैस एक जीवाश्म ईंधन है जो पृथ्वी पर सीमित मात्रा में उपलब्ध है, इसलिए इसे गैर-नवीकरणीय संसाधन माना जाता है। वहीं, वनों को नवीकरणीय संसाधन की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि यदि उन्हें संधारणीय और नियोजित तरीके से काटा और पुनः उगाया जाए, तो वे निरंतर उपलब्ध रह सकते हैं। सौर ऊर्जा सूर्य की निरंतरता के कारण एक अक्षय संसाधन है, इसलिए कथन 1 असत्य है। अतः, केवल द्वितीय और तृतीय कथन ही संसाधनों के वैज्ञानिक वर्गीकरण के मानदंडों को सही ढंग से पूरा करते हैं।

30. (D) यह भारी और स्थूल है, जिससे इसकी परिवहन लागत बहुत अधिक हो जाती है।
वॉन थ्यूनेन के कृषि मॉडल में ईंधन की लकड़ी और लट्ठों का उत्पादन बाजार के अपेक्षाकृत पास, दूसरे छल्ले में स्थित किया गया था। उन्नीसवीं सदी में लकड़ी ऊर्जा का मुख्य स्रोत और एक भारी वस्तु थी, जिसके परिवहन में काफी श्रम और धन खर्च होता था। अधिक वजन और स्थूलता के कारण इसे दूर से लाना आर्थिक रूप से बहुत महंगा था। परिवहन व्यय को न्यूनतम करने के लिए ही इस भारी वस्तु के उत्पादन को शहर के निकटतम क्षेत्र में रखना सबसे तार्किक और आवश्यक था।

31. (A) फसलों और पशुओं का साहचर्य और खेती के तरीके।
डरवेंट व्हिटलसी ने विश्व की कृषि प्रणालियों का वर्गीकरण करने के लिए मुख्य रूप से पाँच भौतिक और कार्यात्मक मानदंडों का उपयोग किया था। इनमें फसलों और पशुओं के बीच का संबंध, भूमि उपयोग की गहनता, खेती में प्रयुक्त उपकरण एवं तकनीक, और कृषि उत्पादों के उपभोग का तरीका शामिल थे। उनका यह वर्गीकरण केवल पैदावार पर नहीं, बल्कि संपूर्ण कृषि जीवन और पर्यावरण के साथ उसके सामंजस्य पर आधारित था। यह भूगोल में वैश्विक कृषि विविधता को समझने के लिए सबसे व्यापक रूपरेखा मानी जाती है।

32. (B) बाजार के पास।
वेबर के सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी उद्योग का पदार्थ सूचकांक 1 से कम है, तो इसका अर्थ है कि तैयार उत्पाद का वजन प्रयुक्त कच्चे माल से अधिक है या कच्चा माल सर्वव्यापी है। ऐसी स्थिति में, भारी तैयार माल को ले जाने की परिवहन लागत को कम करने के लिए कारखाने को बाजार के निकट स्थापित करना सबसे अधिक लाभप्रद होता है। यह अक्सर उन उद्योगों में देखा जाता है जहाँ प्रसंस्करण के दौरान वजन बढ़ता है, जैसे पेय पदार्थ या ब्रेड बनाने वाली इकाइयाँ।

33. (B) जल परिवहन
बहुत लंबी दूरियों के लिए भारी, स्थूल और टिकाऊ सामानों की ढुलाई हेतु जल परिवहन सबसे अधिक लागत प्रभावी माध्यम सिद्ध होता है। समुद्री और अंतर्देशीय जलमार्गों पर घर्षण कम होता है और विशाल जहाजों की वहन क्षमता अन्य साधनों की तुलना में कहीं अधिक होती है। इसमें प्रति टन-किलोमीटर ईंधन का खर्च भी न्यूनतम रहता है। इसी कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापार और कच्चे माल के वैश्विक परिवहन के लिए जलमार्गों का उपयोग सबसे अधिक किया जाता है, जो इसे सबसे सस्ता परिवहन साधन बनाता है।

34. (A) इष्टतम बाजार क्षेत्र की खोज करके लाभ को अधिकतम करना।
ऑगस्ट लॉश का औद्योगिक अवस्थिति मॉडल वेबर के न्यूनतम लागत दृष्टिकोण से इस मायने में भिन्न है कि यह लाभ को अधिकतम करने पर जोर देता है। लॉश ने माना कि केवल लागत कम करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक फर्म को ऐसी जगह स्थित होना चाहिए जहाँ वह सबसे बड़े बाजार क्षेत्र की सेवा कर सके और अधिकतम राजस्व प्राप्त कर सके। उन्होंने मांग और उपभोक्ता व्यवहार को अपने विश्लेषण का केंद्र बनाया, जिससे यह मॉडल अधिक यथार्थवादी और बाजार-उन्मुख औद्योगिक विश्लेषण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बना।

35. (C) संसाधन परिभाषाओं के संबंध में गतिशील या कार्यात्मक अवधारणा।
संसाधनों की गतिशील या कार्यात्मक अवधारणा यह मानती है कि कोई भी वस्तु अपने आप में संसाधन नहीं है, बल्कि वह मानवीय ज्ञान, तकनीकी कौशल और आवश्यकता के माध्यम से संसाधन बनती है। समय के साथ जैसे-जैसे नई तकनीकों का विकास होता है, पहले से अनुपयोगी पदार्थ भी मूल्यवान संसाधन बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, यूरेनियम केवल आधुनिक परमाणु तकनीक के आने के बाद ही एक ऊर्जा संसाधन बना। यह विचारधारा दर्शाती है कि संसाधन स्थिर नहीं हैं बल्कि मानव सभ्यता के विकास के साथ निरंतर विकसित होते रहते हैं।

NODIA

36. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक सिद्धांतों में प्रयुक्त शब्दावली उद्योग की अवस्थिति को निर्धारित करने में सहायक होती है। पदार्थ सूचकांक का मान एक से अधिक होना कच्चे माल के पास कारखाने की स्थापना का संकेत देता है। आइसोडापेन समान कुल परिवहन लागत वाली रेखाओं को कहते हैं, जबकि समूहन उद्योगों के परस्पर निकट स्थित होने से होने वाले आर्थिक लाभ को दर्शाता है। सर्वव्यापी पदार्थ वे होते हैं जो हर स्थान पर आसानी से उपलब्ध होते हैं, जैसे वायु या जल, जिनका अवस्थिति पर प्रभाव नगण्य होता है।

किसान की आय के स्रोतों में विविधता लाती है और कृषि जोखिम को कम करती है। मिश्रित खेती न केवल आर्थिक रूप से लाभदायक है बल्कि पर्यावरण और मृदा स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत अनुकूल मानी जाती है।

92. (B) अभिगम्यता और संयोजकता दोनों
दो शहरों के बीच एक नए राजमार्ग का निर्माण उनके बीच के भौतिक संपर्क को सीधा और सुलभ बना देता है। इससे न केवल संयोजकता में सुधार होता है क्योंकि एक नई सीधी कड़ी बन जाती है, बल्कि अभिगम्यता भी बढ़ जाती है क्योंकि अब एक स्थान से दूसरे स्थान तक कम समय और कम लागत में पहुँचा जा सकता है। यह बुनियादी ढांचा विकास लोगों और वस्तुओं की आवाजाही को तीव्र करता है, जिससे क्षेत्रीय व्यापार और सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों को काफी प्रोत्साहन मिलता है।

93. (C) फसलों के सापेक्ष महत्व को उनके द्वारा घेरे गए कृषि भूमि के प्रतिशत से मापा जा सकता है।
जे. सी. वीवर की शस्य संयोजन विधि इस मौलिक धारणा पर आधारित है कि किसी क्षेत्र में कृषि के स्वरूप को समझने के लिए वहां की भूमि पर विभिन्न फसलों के विस्तार का विश्लेषण करना अनिवार्य है। उनके अनुसार, जिस फसल के अंतर्गत अधिक क्षेत्रफल होता है, उसका उस क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था में सापेक्षिक महत्व भी उतना ही अधिक होता है। यह सांख्यिकीय दृष्टिकोण विभिन्न फसलों के बीच भूमि के वितरण का वैज्ञानिक मापन करता है, जिससे कृषि क्षेत्रों का वस्तुनिष्ठ और यथार्थवादी वर्गीकरण करना संभव हो पाता है।

94. (D) तृतीयक और चतुर्थक
पिछले पांच दशकों में विकसित अर्थव्यवस्थाओं में एक बड़ा संरचनात्मक बदलाव आया है, जहाँ रोजगार का मुख्य केंद्र कृषि और विनिर्माण से हटकर सेवाओं और ज्ञान आधारित क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित हो गया है। तृतीयक क्षेत्रक में बैंकिंग, पर्यटन और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हुआ है, जबकि सूचना क्रांति ने चतुर्थक क्षेत्रक में उच्च स्तरीय बौद्धिक कार्यों को जन्म दिया है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि समाज अब सूचना प्रसंस्करण और उच्च गुणवत्ता वाली सेवाओं को अधिक महत्व दे रहा है, जिससे इन क्षेत्रों में मानव संसाधन की मांग निरंतर बढ़ रही है।

95. (A) वे लागत बचत जो फर्में एक-दूसरे के पास स्थित होने से प्राप्त करती हैं।
वेबर के औद्योगिक सिद्धांत में 'समूहन' का अर्थ है उन आर्थिक लाभों और लागत बचतों से है जो कई उद्योगों के एक ही स्थान पर एकत्रित होने से प्राप्त होते हैं। इस भौगोलिक निकटता के कारण फर्में साझा बुनियादी ढांचे, कुशल श्रम बाजार और सहायक सेवाओं का उपयोग कर पाती हैं, जिससे उनकी व्यक्तिगत उत्पादन लागत कम हो जाती है। यह प्रक्रिया एक औद्योगिक केंद्र के विकास को प्रोत्साहित करती है। हालांकि, अत्यधिक जमाव से कभी-कभी भीड़भाड़ जैसे नुकसान भी हो सकते हैं, जिन्हें विकेंद्रीकरण की अलाभकारी स्थितियाँ कहा जाता है।

96. (B) ऑगस्ट लॉश - न्यूनतम लागत विश्लेषण
ऑगस्ट लॉश का मुख्य योगदान औद्योगिक अवस्थिति के लिए लाभ अधिकतमकरण सिद्धांत का प्रतिपादन करना था, न कि न्यूनतम लागत विश्लेषण का। न्यूनतम लागत का विचार अल्फ्रेड वेबर से संबंधित है, जिन्होंने परिवहन और श्रम व्यय को कम करने पर बल दिया था। लॉश ने बाजार क्षेत्रों और मांग के व्यवहार को केंद्र में रखकर इष्टतम राजस्व प्राप्ति की व्याख्या की थी। वॉन थ्यूनेन और वीवर के जोड़े उनके संबंधित क्षेत्रों, कृषि अवस्थिति और शस्य विविविधीकरण के साथ बिल्कुल सही सुमेलित हैं। अतः, लॉश के कार्य का वर्णन यहाँ त्रुटिपूर्ण है।

97. (B) निर्यात के लिए एकल नकदी फसल का बड़े पैमाने पर उत्पादन।
रोपण कृषि एक विशिष्ट प्रकार की वाणिज्यिक खेती है जो मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अपनाई जाती है। इसकी प्रमुख विशेषता विशाल भूखंडों पर चाय, कॉफी, रबर या गन्ने जैसी किसी एक नकदी फसल का बड़े पैमाने पर उत्पादन करना है। इसमें भारी मात्रा में पूंजी निवेश, उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों और कुशल प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इस प्रणाली का प्राथमिक लक्ष्य स्थानीय उपभोग के बजाय अंतरराष्ट्रीय बाजारों को आपूर्ति करना और अधिकतम विदेशी मुद्रा अर्जित करना होता है, जो इसे पारंपरिक खेती से अलग करता है।

98. (B) 2, 1, 3
अवस्थिति सिद्धांतों के विकास में सबसे पहले 1826 में वॉन थ्यूनेन ने 'अवस्थितिक लगान' की अवधारणा दी थी। इसके बहुत बाद, 1909 में अल्फ्रेड वेबर ने अपने औद्योगिक सिद्धांत के हिस्से के रूप में 'आइसोडापेन' का विचार प्रस्तुत किया। अंत में, बीसवीं सदी के मध्य में ऑगस्ट लॉश ने बाजार क्षेत्रों के विश्लेषण के लिए 'षट्कोणीय प्रतिरूप' का प्रस्ताव दिया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे भूगोल में स्थानिक विश्लेषण सरल भूमि लगान से शुरू होकर जटिल औद्योगिक और बाजार संरचनाओं के ज्यामितीय मापन तक निरंतर विकसित होता गया।

99. (C) निर्गत का आगत से अनुपात, जो यह दर्शाता है कि संसाधनों का कितनी अच्छी तरह उपयोग किया गया है।
कृषि दक्षता और उत्पादकता में मूल अंतर उनके दृष्टिकोण का है। जहाँ उत्पादकता केवल उत्पादन की कुल मात्रा पर केंद्रित होती है, वहीं दक्षता इस बात का मूल्यांकन करती है कि उपलब्ध संसाधनों का कितना विवेकपूर्ण उपयोग किया गया है। यह निवेश और प्रतिफल के बीच के अनुपात को दर्शाती है। यदि कम बीज, खाद और श्रम का उपयोग करके अधिक पैदावार प्राप्त की जाती है, तो उसे उच्च दक्षता माना जाता है। यह संकल्पना किसानों को न्यूनतम लागत में अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सुधार अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

100. (D) एक स्वच्छंद उद्योग।
कॉल सेंटर एक स्वच्छंद उद्योग का बेहतरीन उदाहरण है क्योंकि इसके संचालन के लिए किसी विशिष्ट भौगोलिक कच्चे माल या भौतिक बाजार की निकटता की आवश्यकता नहीं

Downloaded from www.pdf.tube

46. (D) कारण: बाजार तक परिवहन लागत; प्रभाव: कृषि भूमि उपयोग का स्वरूप।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल का मूल आधार बाजार तक परिवहन लागत और कृषि भूमि उपयोग के बीच का सीधा संबंध है। उनका तर्क था कि शहर से दूरी बढ़ने के साथ परिवहन खर्च भी बढ़ता है, जो अंततः किसान द्वारा उगाई जाने वाली फसल के प्रकार को निर्धारित करता है। अधिक परिवहन लागत वाले और शीघ्र नष्ट होने वाले उत्पाद बाजार के पास उगाए जाते हैं, जबकि कम लागत वाले उत्पाद दूर। यह कारण और प्रभाव का संबंध ही शहर के चारों ओर संकेंद्रित कृषि क्षेत्रों के निर्माण की व्याख्या करता है।

47. (A) द्वितीयक क्षेत्रक
गन्ने से चीनी बनाना एक विनिर्माण प्रक्रिया है जहाँ प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त कच्चे माल का प्रसंस्करण करके उसे एक नए उत्पाद में बदला जाता है। इस प्रक्रिया में वस्तु का रुप बदल जाता है और उसका आर्थिक मूल्य बढ़ जाता है, जो द्वितीयक क्षेत्रक की प्रमुख विशेषता है। प्राथमिक क्षेत्रक में केवल गन्ने की खेती शामिल होगी, लेकिन जब उस पर औद्योगिक क्रिया की जाती है, तो वह द्वितीयक क्षेत्रक का हिस्सा बन जाता है। यह क्षेत्रक कच्चे माल और तैयार माल के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करता है।

48. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
संसाधन-आधारित उद्योग अक्सर भार-ह्रास वाली प्रकृति के होते हैं, जहाँ कच्चे माल का वजन तैयार उत्पाद की तुलना में बहुत अधिक होता है। ऐसी स्थिति में, कारखाने को कच्चे माल के स्रोत के पास स्थापित करना आर्थिक रुप से सबसे बुद्धिमानी भरा निर्णय होता है। इससे भारी और स्थूल कच्चे माल को लंबी दूरी तक ले जाने में होने वाला भारी परिवहन खर्च काफी कम हो जाता है। चीनी मिलें और लोह-इस्पात उद्योग इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ स्रोत की निकटता ही उनकी लाभप्रदता और दक्षता का मुख्य आधार है।

49. (B) चलवासी पशुचारण और वाणिज्यिक अनाज की खेती।
व्हिटलसी द्वारा विश्व कृषि प्रणालियों का वर्गीकरण विभिन्न कृषि पद्धतियों के बीच स्पष्ट अंतर करता है। उनके मानदंडों के आधार पर, चलवासी पशुचारण जैसी निर्वाह आधारित प्रणालियाँ, जहाँ लोग पशुओं के साथ भोजन की तलाश में भटकते हैं, वाणिज्यिक अनाज की खेती जैसी आधुनिक प्रणालियों से भिन्न हैं जो पूरी तरह बाजार और लाभ पर केंद्रित होती हैं। यह विभाजन न केवल आर्थिक उद्देश्यों को दर्शाता है, बल्कि भूमि उपयोग की तीव्रता, तकनीकी स्तर और पर्यावरण के साथ मानवीय क्रियाओं के विभिन्न स्वरूपों को भी उजागर करता है।

50. (A) नेटवर्क में उत्पत्ति, गंतव्य या चौराहे का बिंदु।
परिवहन भूगोल में एक 'नोड' या केंद्र नेटवर्क के उस विशिष्ट बिंदु को दर्शाता है जहाँ यात्रा शुरु होती है, समाप्त होती है या जहाँ विभिन्न मार्ग आपस में मिलते हैं। ये नोड आमतौर पर शहर, गाँव, रेलवे स्टेशन या हवाई अड्डे होते हैं जो परिवहन तंत्र के प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। नेटवर्क के भीतर इन केंद्रों की स्थिति और उनकी संख्या परिवहन की दक्षता और पहुंच को प्रभावित करती है। नोड्स और उन्हें जोड़ने वाली कड़ियाँ मिलकर ही संपूर्ण परिवहन ढांचे का निर्माण करती हैं।

51. (C) कच्चे माल के लिए उच्च परिवहन लागत।
स्वच्छंद उद्योगों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनकी कुल लागत में कच्चे माल के परिवहन का खर्च नगण्य होता है। इनके उत्पाद आमतौर पर उच्च मूल्य वाले और वजन में बहुत हल्के होते हैं, जिससे इन्हें लंबी दूरी तक ले जाना सस्ता पड़ता है। इसके विपरीत, ये उद्योग कुशल श्रम और उन्नत तकनीकी बुनियादी ढांचे पर अधिक निर्भर करते हैं। चूंकि परिवहन लागत इनकी अवस्थिति को प्रभावित नहीं करती, इसलिए ये उद्योग किसी विशिष्ट भौगोलिक सीमा से बंधे नहीं होते और कहीं भी स्थापित किए जा सकते हैं।

52. (D) अपनी अवस्थिति के लाभ के कारण भूमि से होने वाली अधिशेष आय।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल में 'आर्थिक लगान' या 'अवस्थितिक लगान' वह शुद्ध लाभ है जो एक किसान अपनी भूमि से प्राप्त करता है। यह मुख्य रुप से बाजार से खेत की निकटता पर निर्भर करता है। जो जमीन बाजार के सबसे करीब होती है, उस पर परिवहन लागत कम होती है, जिससे किसान को अधिक अधिशेष आय प्राप्त होती है। यह लगान भूमि की गुणवत्ता के बजाय उसकी भौगोलिक स्थिति का प्रतिफल है। बाजार से दूरी बढ़ने के साथ परिवहन खर्च बढ़ता है और आर्थिक लगान निरंतर कम होता जाता है।

53. (C) P-4, Q-2, R-1, S-3
संसाधनों का वर्गीकरण उनकी उत्पत्ति और उपलब्धता की अवधि के आधार पर किया जाता है। कोयला एक जीवाश्म ईंधन है जो अजैविक और गैर-नवीकरणीय है। सौर विकिरण एक अक्षय ऊर्जा स्रोत है जो कभी समाप्त नहीं होता। वन जैविक रुप से विकसित होते हैं और यदि सही प्रबंधन किया जाए, तो वे नवीकरणीय होते हैं। लौह अयस्क एक धात्विक खनिज है जो अजैविक है और जिसका भंडार सीमित होने के कारण यह गैर-नवीकरणीय की श्रेणी में आता है। यह वैज्ञानिक सुमेलन संसाधनों की जटिल प्रकृति को स्पष्ट करता है।

54. (B) श्रम लागत
वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत में 'क्रांतिक आइसोडापेन' वह महत्वपूर्ण सीमा रेखा है जहाँ श्रम लागत में होने वाली बचत अतिरिक्त परिवहन लागत के बिल्कुल बराबर होती है। यदि कोई उद्योग न्यूनतम परिवहन लागत वाले बिंदु से हटकर सस्ते श्रम वाले स्थान पर जाना चाहता है, तो उसे यह देखना होगा कि वह इस क्रांतिक रेखा के भीतर हो। यदि श्रम बचत अतिरिक्त परिवहन खर्च से अधिक है, तभी उद्योग का स्थान बदलना आर्थिक रुप से तर्कसंगत माना जाता है। यह अवधारणा अवस्थिति निर्णयों में श्रम के प्रभाव को स्पष्ट करती है।

NODIA

55. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
वायु परिवहन निस्संदेह आवागमन का सबसे तीव्र साधन है, जो लंबी दूरियों को बहुत कम समय में तय करने की क्षमता रखता है। हालांकि, यह भारी और स्थूल सामानों के परिवहन के लिए सबसे सस्ता साधन कतई नहीं है। इसके विपरीत, वायु परिवहन में ईंधन और परिचालन लागत बहुत अधिक होती है, जिससे यह प्रति इकाई भार के लिए सबसे महंगा माध्यम बन जाता है। भारी वस्तुओं की लंबी दूरी की ढुलाई के लिए जल या रेल परिवहन हमेशा अधिक लागत प्रभावी और उपयुक्त विकल्प माने जाते हैं।

56. (A) एक समान या आइसोट्रोपिक मैदान की धारणा, जो अवास्तविक है।
शास्त्रीय अवस्थिति मॉडलों की सबसे प्रमुख आलोचना यह है कि वे एक 'आइसोट्रोपिक मैदान' की कल्पना करते हैं, जहाँ धरातल, जलवायु और मृदा सर्वत्र समान होती है। वास्तविक दुनिया में भौगोलिक विविधताएं, परिवहन की विभिन्न दरें और राजनीतिक बाधाएं मौजूद होती हैं जो इन मॉडलों की सरल मान्यताओं को चुनौती देती हैं। इसके अतिरिक्त, मानव व्यवहार हमेशा पूर्णतः तार्किक या आर्थिक लाभ से प्रेरित नहीं होता। इन सीमाओं के बावजूद, ये सिद्धांत स्थानिक संगठन को समझने के लिए एक मजबूत वैचारिक ढांचा प्रदान करना जारी रखते हैं।

57. (C) फसल प्रतिशत के मानक विचलन पर आधारित सूत्र।
जे. सी. वीवर ने शस्य संयोजन क्षेत्रों के निर्धारण के लिए एक कठोर सांख्यिकीय पद्धति का उपयोग किया था। उनकी विधि में विभिन्न फसलों के अंतर्गत आने वाले वास्तविक भूमि प्रतिशत और एक आदर्श सैद्धांतिक वितरण के बीच विचलन की गणना की जाती है। जिस फसल संयोजन में यह विचलन सबसे कम होता है, उसी को उस क्षेत्र का वास्तविक शस्य संयोजन माना जाता है। यह वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण व्यक्तिगत अनुमानों के बजाय गणितीय परिशुद्धता पर आधारित है, जिससे कृषि भूगोल में क्षेत्रीय विश्लेषण की सटीकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

58. (A) दूरी को पार करने के लिए धन, समय और प्रयास सहित सभी लागतें।
परिवहन लागत केवल ईंधन पर खर्च किए गए पैसे तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें दूरी को पार करने में लगने वाला कुल समय और शारीरिक एवं मानसिक प्रयास भी शामिल हैं। इसमें टर्मिनल शुल्क, मार्ग के रख-रखाव का खर्च और वाहन के मूल्यह्रास जैसी विभिन्न आर्थिक लागतें समाहित होती हैं। किसी भी वस्तु या व्यक्ति के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में आने वाली यह समग्र बाधा ही परिवहन लागत कहलाती है। यह आर्थिक भूगोल में बाजार की पहुंच और वस्तुओं की अंतिम कीमत निर्धारित करने वाला प्राथमिक कारक है।

59. (D) नदी के किनारे भूमि उपयोग क्षेत्रों का विस्तार हो जाएगा, क्योंकि जल परिवहन सस्ता है।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल में एक नौगम्य नदी का समावेश परिवहन लागत की संरचना को पूरी तरह बदल देता है। चूंकि जल परिवहन सड़क मार्ग की तुलना में बहुत सस्ता और सुलभ होता है, इसलिए नदी के किनारे स्थित क्षेत्रों की बाजार तक पहुंच आसान हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, नदी के समानांतर भूमि उपयोग क्षेत्रों का आकार खिंच जाता है और वे बाजार से दूर तक विस्तृत हो जाते हैं। यह संशोधन दर्शाता है कि कैसे बेहतर परिवहन बुनियादी ढांचा कृषि प्रतिरूप को प्रभावित कर उसे बाजार की ओर अधिक झुकाव प्रदान करता है।

60. (B) चूना पत्थर की खदानों के पास स्थित सीमेंट विनिर्माण संयंत्र।
सीमेंट विनिर्माण एक विशिष्ट संसाधन-आधारित उद्योग है क्योंकि इसका मुख्य कच्चा माल, चूना पत्थर, अत्यंत भारी और वजन घटाने वाली प्रकृति का होता है। चूना पत्थर को लंबी दूरी तक ले जाना बहुत महंगा पड़ता है, इसलिए परिवहन लागत को न्यूनतम करने के लिए सीमेंट कारखानों को खदानों के पास ही स्थापित किया जाता है। इसके विपरीत, हीरा तराशने या चिप निर्माण जैसे उद्योग स्वच्छंद होते हैं क्योंकि उनका कच्चा माल हल्का होता है और उनकी अवस्थिति परिवहन खर्च से अधिक प्रभावित नहीं होती है।

61. (B) केवल 1 और 2
तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसमें किसी भौतिक वस्तु का उत्पादन नहीं होता, बल्कि समाज के लिए अनिवार्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं इस क्षेत्रक के महत्वपूर्ण अंग हैं जो मानव पूंजी का विकास करती हैं। चतुर्थक क्षेत्रक प्राथमिक की नहीं, बल्कि तृतीयक क्षेत्रक की ही एक परिष्कृत उप-श्रेणी है, जो मुख्य रूप से सूचना और अनुसंधान पर केंद्रित होती है। अतः, केवल प्रथम दो कथन ही आर्थिक क्षेत्रकों के वैज्ञानिक वर्गीकरण और उनके कार्यों के अनुरूप हैं।

62. (D) कृषि प्रणालियों का विकास।
निर्वाह खेती से वाणिज्यिक कृषि की ओर स्थानांतरण कृषि प्रणालियों के क्रमिक विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है। यह बदलाव मुख्य रूप से बढ़ती जनसंख्या, तकनीकी प्रगति और वैश्विक बाजार की मांग के कारण होता है। जहाँ निर्वाह खेती केवल परिवार के भरण-पोषण तक सीमित होती है, वहीं वाणिज्यिक कृषि लाभ कमाने और बड़े बाजारों की आपूर्ति के उद्देश्य से की जाती है। यह प्रक्रिया उन्नत उर्वरकों, मशीनीकरण और उच्च उपज वाले बीजों के उपयोग के साथ-साथ कृषि में पेशेवर प्रबंधन और पूंजी निवेश को भी प्रोत्साहित करती है।

63. (A) बाजार के करीब।
वेबर के औद्योगिक सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी विनिर्माण प्रक्रिया में तैयार उत्पाद का वजन प्रयुक्त कच्चे माल से अधिक हो जाता है, तो उसे 'भार-वृद्धि' उद्योग कहा जाता है। ऐसी स्थिति में, भारी तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने की परिवहन लागत कच्चे माल को कारखाने तक लाने की लागत से कहीं अधिक होती है। अतः, कुल परिवहन व्यय को न्यूनतम रखने के लिए कारखाने को बाजार के सबसे निकटतम स्थान पर स्थापित करना ही सबसे तर्कसंगत और आर्थिक रूप से लाभप्रद निर्णय होता है।

Click Here to Buy book on Amazon

64. (B) किसी स्थान से परस्पर क्रिया और संपर्क के सापेक्ष अवसर।
परिवहन भूगोल में अभिगम्यता का अर्थ केवल सड़क का होना नहीं है, बल्कि यह उस सुगमता को दर्शाता है जिसके माध्यम से कोई स्थान अन्य क्षेत्रों के साथ संपर्क और सामाजिक-आर्थिक क्रियाएं कर सकता है। यह गंतव्य तक पहुँचने में लगने वाले समय, प्रयास और लागत का सामूहिक माप है। उच्च अभिगम्यता वाले स्थान अधिक अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे व्यापार और निवेश के लिए आकर्षक बन जाते हैं। यह अवधारणा किसी क्षेत्र के विकास की क्षमता और वहां की जनसंख्या की गतिशीलता का विश्लेषण करने में सहायक है।

65. (A) 3, 1, 2, 4
आर्थिक क्षेत्रकों का उदय मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों को दर्शाता है। सबसे पहले प्राथमिक क्षेत्रक का उदय हुआ, जो भोजन और कच्चे माल के लिए प्रकृति पर निर्भर था। इसके बाद औद्योगिक क्रांति के साथ विनिर्माण आधारित द्वितीयक क्षेत्रक का महत्व बढ़ा। आधुनिक समय में सेवाओं के विस्तार के साथ तृतीयक क्षेत्रक और सूचना क्रांति के परिणामस्वरूप ज्ञान आधारित चतुर्थक क्षेत्रक अस्तित्व में आए। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे अर्थव्यवस्थाएं सरल उत्पादन से जटिल और बौद्धिक सेवाओं की ओर निरंतर विकसित हुई हैं।

66. (A) अंतर-पीढ़ीगत समानता और संधारणीय उपयोग।
संसाधन संरक्षण का मूल विचार अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित करना है, जिसका अर्थ है कि वर्तमान पीढ़ी प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करे कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त भंडार शेष रहे। यह संसाधनों के विवेकपूर्ण और संधारणीय उपयोग पर बल देता है ताकि पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बना रहे। यह केवल उपयोग पर प्रतिबंध नहीं है, बल्कि प्रबंधन का एक ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो दीर्घकालिक स्थिरता और पर्यावरणीय सुरक्षा को आर्थिक विकास के साथ जोड़ने का प्रयास करता है।

67. (C) प्रभावी कीमत बढ़ जाती है और मांग की गई मात्रा गिर जाती है।
ऑगस्ट लॉश के 'मांग के शंकु' की अवधारणा स्थानिक मांग के व्यवहार को स्पष्ट करती है। उनके अनुसार, जैसे-जैसे उपभोक्ता उत्पादन केंद्र से दूर होता जाता है, परिवहन लागत जुड़ने के कारण वस्तु की प्रभावी बाजार कीमत बढ़ती जाती है। अधिक कीमत होने के कारण उपभोक्ता उस वस्तु की कम मात्रा की मांग करता है, जिससे मांग का स्तर धीरे-धीरे गिरता जाता है। यह प्रक्रिया अंततः बाजार की भौगोलिक सीमा निर्धारित करती है जहाँ मांग शून्य हो जाती है, जो कि मांग के शंकु का आधार है।

68. (D) उर्वरता बनाए रखने के लिए फसलों के बजाय खेतों का चक्रण।
झूम कृषि, जिसे 'स्थानांतरित कृषि' भी कहा जाता है, मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के जनजातीय समुदायों द्वारा अपनाई जाती है। इस पद्धति में वनों के एक हिस्से को साफ करके जला दिया जाता है और वहां कुछ वर्षों तक खेती की जाती है। जब मृदा की उर्वरता कम हो जाती है, तो किसान उस खेत को खाली छोड़कर नए स्थान पर चले जाते हैं। यह फसलों के बजाय खेतों के चक्रण की एक प्राचीन प्रणाली है, जहाँ मृदा की शक्ति प्राकृतिक रूप से पुनः प्राप्त की जाती है।

69. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
सड़क परिवहन का सबसे बड़ा लाभ इसका अत्यधिक लचीलापन और घर-घर तक सीधी सेवा प्रदान करना है, जो इसे व्यक्तिगत और छोटी दूरियों के लिए अनिवार्य बनाता है। हालांकि, भारी माल की लंबी दूरी की ढुलाई के लिए सड़क परिवहन आमतौर पर रेल या जलमार्ग की तुलना में महंगा और कम कुशल होता है। रेलवे और जहाजों की वहन क्षमता अधिक होने के कारण वे थोक वस्तुओं के लिए बहुत कम लागत प्रभावी साधन सिद्ध होते हैं। अतः, लंबी दूरी के मामले में सड़क परिवहन की श्रेष्ठता का दावा गलत है।

70. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
उद्योगों की अवस्थिति उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। लोह-इस्पात संयंत्र भार-ह्रास वाले कच्चे माल के कारण स्रोत के पास स्थित होते हैं, जबकि सूती वस्त्र उद्योग बाजार की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि तैयार माल भारी हो सकता है। सॉफ्टवेयर उद्योग पूरी तरह स्वच्छंद है और कहीं भी स्थित हो सकता है। चीनी उद्योग गन्ने के शीघ्र नष्ट होने वाले और भारी होने के कारण खेतों के पास स्थापित किया जाता है। यह वर्गीकरण उद्योगों के स्थानिक वितरण को निर्धारित करने वाले आर्थिक कारकों को स्पष्ट करता है।

71. (D) प्रति इकाई श्रम या भूमि का उत्पादन।
कृषि दक्षता एक प्रमुख आर्थिक मापदंड है जो यह मापता है कि उपलब्ध संसाधनों, जैसे भूमि और श्रम, का कितनी प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है। इसकी गणना मुख्य रूप से प्रति हेक्टेयर उत्पादन या प्रति किसान की कार्यक्षमता के आधार पर की जाती है। उच्च दक्षता यह दर्शाती है कि कम संसाधनों या सीमित श्रम का उपयोग करके अधिक पैदावार प्राप्त की गई है। यह अवधारणा तकनीकी प्रगति, सिंचाई की उपलब्धता और कुशल कृषि प्रबंधन के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए भूगोल में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

72. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल के अनुसार, बाजार के सबसे भीतरी छल्ले में दुग्ध कृषि और बागवानी की जाती है क्योंकि ये उत्पाद अत्यंत कोमल और शीघ्र खराब होने वाले होते हैं। इनकी परिवहन लागत बहुत अधिक होती है, जिसके कारण इन्हें बाजार के जितना संभव हो सके उतना करीब उगाना अनिवार्य होता है। चूंकि ये उत्पाद बाजार में उच्च मूल्य प्राप्त करते हैं, इसलिए किसान शहर के निकट स्थित भूमि का उच्च लगान वहन करने में सक्षम होते हैं। यह भौगोलिक निकटता उत्पाद की गुणवत्ता और लाभप्रदता दोनों को सुनिश्चित करती है।

73. (C) कच्चे माल का विनिर्माण और प्रसंस्करण।
प्राथमिक क्षेत्रक प्रकृति से कच्चे माल के निष्कर्षण तक सीमित है, जबकि द्वितीयक क्षेत्रक उन संसाधनों को विनिर्माण और प्रसंस्करण के माध्यम से उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित करता है। इसमें कारखाने, निर्माण और ऊर्जा उत्पादन जैसी

Downloaded from www.pdf.tube

गतिविधियाँ शामिल होती हैं जो कच्चे माल का मूल्यवर्धन करती हैं। द्वितीयक क्षेत्रक अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है क्योंकि यह कच्चे माल को टिकाऊ और अधिक कीमती तैयार माल में बदल देता है। यह प्रसंस्करण ही इसे केवल निष्कर्षण करने वाले प्राथमिक क्षेत्रक से अलग और श्रेष्ठ बनाता है।

74. (A) हर जगह उपलब्ध है, जैसे हवा या पानी।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक सिद्धांत में 'सर्वव्यापी' पदार्थ वे होते हैं जो किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में समान रूप से और बिना किसी अतिरिक्त लागत के प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। हवा, पानी और कुछ स्थानों पर मिट्टी इसके उदाहरण हैं। चूंकि ये पदार्थ हर जगह मिलते हैं, इसलिए ये उद्योग की अवस्थिति को किसी विशिष्ट स्थान की ओर आकर्षित नहीं करते हैं। उद्योगों के स्थान का चुनाव आमतौर पर उन पदार्थों द्वारा निर्धारित होता है जो दुर्लभ हैं या केवल विशिष्ट क्षेत्रों में ही पाए जाते हैं।

75. (D) उस स्थान की खोज करना जो बाजार क्षेत्र और लाभ को अधिकतम करता हो।
ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति सिद्धांत का प्राथमिक लक्ष्य केवल लागत कम करना नहीं है, बल्कि उस स्थान की पहचान करना है जहाँ एक फर्म अपना सबसे बड़ा बाजार क्षेत्र सुरक्षित कर सके और अधिकतम लाभ अर्जित कर सके। उन्होंने मांग की भूमिका को सर्वोपरि माना और यह तर्क दिया कि व्यापार की सफलता उसके उपभोक्ताओं की पहुंच और राजस्व प्राप्ति की क्षमता पर निर्भर करती है। लॉश का यह मॉडल अधिक व्यापक है क्योंकि यह लागत और राजस्व दोनों के बीच एक इष्टतम संतुलन खोजने का प्रयास करता है।

76. (B) गैर-नवीकरणीय जीवाश्म ईंधन।
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस को गैर-नवीकरणीय जीवाश्म ईंधन के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि इनके निर्माण की भूवैज्ञानिक प्रक्रिया में लाखों वर्ष लगते हैं। एक बार उपयोग किए जाने के बाद, इन्हें मानवीय समय सीमा के भीतर पुनः पूरित नहीं किया जा सकता है। ये ऊर्जा के सीमित स्रोत हैं जो पृथ्वी के भीतर निश्चित भंडार में मौजूद हैं। इनके निरंतर दोहन से भविष्य में इनके समाप्त होने का गंभीर संकट बना हुआ है, जिसके कारण दुनिया अब नवीकरणीय ऊर्जा विकल्पों की ओर बढ़ रही है।

77. (C) केंद्रों के बीच मार्गों की प्रत्यक्षता।
परिवहन भूगोल में संयोजकता का अर्थ है कि एक नेटवर्क के भीतर विभिन्न केंद्र एक-दूसरे से कितनी सीधे और सरलता से जुड़े हुए हैं। यह मार्गों की प्रत्यक्षता का एक सांख्यिकीय माप है। एक अच्छी तरह से संयोजित नेटवर्क में केंद्रों के बीच अधिक कड़ियाँ होती हैं, जिससे यात्रा की दूरी और समय कम हो जाता है। यह अवधारणा नेटवर्क की दक्षता और लचीलेपन को दर्शाती है। संयोजकता का विश्लेषण यह समझने में मदद करता है कि कोई परिवहन तंत्र आर्थिक विकास और क्षेत्रीय गतिशीलता का कितना समर्थन करता है।

78. (D) परिवहन लागत कुल लागत का एक नगण्य हिस्सा होती है।
स्वच्छंद उद्योगों की सबसे विशिष्ट पहचान यह है कि उनके उत्पादन में परिवहन लागत का महत्व बहुत कम होता है। इनके कच्चे माल अक्सर हल्के होते हैं या उनमें वजन नहीं होता, और तैयार माल भी बहुत कीमती एवं परिवहन में आसान होता है। इसके कारण ये उद्योग बाजार या कच्चे माल के स्रोत से बंधे नहीं होते हैं और इन्हें अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी भौगोलिक स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। इनकी आर्थिक सफलता परिवहन के बजाय तकनीकी विशेषज्ञता और कुशल श्रम पर आधारित होती है।

79. (A) गहन निर्वाह कृषि
गहन निर्वाह कृषि मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक होता है और कृषि भूमि सीमित होती है। इस प्रणाली में भूमि के प्रत्येक छोटे टुकड़े से अधिकतम पैदावार प्राप्त करने के लिए प्रचुर मात्रा में श्रम, पारंपरिक तकनीक और कभी-कभी आधुनिक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है। एशिया के मानसूनी क्षेत्रों में चावल की खेती इसका प्रमुख उदाहरण है। यहाँ का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाने के बजाय बड़ी जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त खाद्यान्न उपलब्ध कराना होता है।

80. (D) 1, 2 और 3
अल्फ्रेड वेबर का सिद्धांत एक आदर्शात्मक न्यूनतम-लागत मॉडल है जो उद्योगों की स्थापना के लिए सबसे किफायती स्थान खोजने का प्रयास करता है। यह सिद्धांत एक ऐसी सरल दुनिया की कल्पना करता है जहाँ राजनीतिक और सांस्कृतिक वातावरण सर्वत्र समान होता है, जिससे आर्थिक कारकों का विश्लेषण आसान हो जाता है। वेबर के अनुसार, परिवहन व्यय, श्रम लागत और उद्योगों का समूहन वे तीन प्राथमिक बल हैं जो संयुक्त रूप से किसी कारखाने की सबसे अनुकूल भौगोलिक स्थिति का निर्धारण करते हैं। अतः सभी कथन सही हैं।

81. (B) एकल कृषि
शस्य विविविधीकरण एकल कृषि की अवधारणा के बिल्कुल विपरीत है। जहाँ एकल कृषि में एक बड़े क्षेत्र पर केवल एक ही फसल उगाई जाती है, वहीं विविविधीकरण में विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन एक साथ या क्रमिक रूप से किया जाता है। एकल कृषि मृदा के स्वास्थ्य को खराब कर सकती है और बाजार के जोखिम को बढ़ाती है, जबकि विविविधीकरण इन समस्याओं का समाधान करता है। यह पद्धति कृषि पारिस्थितिकी को संतुलित रखने और किसानों की आय को सुरक्षा प्रदान करने के लिए अधिक आधुनिक और वैज्ञानिक मानी जाती है।

82. (A) नेटवर्क घनत्व या संयोजकता का एक सरल माप।
परिवहन नेटवर्क के विश्लेषण में कड़ियों और केंद्रों की संख्या के बीच का अनुपात यह दर्शाता है कि वह तंत्र कितना घना और आपस में जुड़ा हुआ है। यह अनुपात संयोजकता की डिग्री को स्पष्ट करता है। एक उच्च अनुपात का अर्थ है कि नेटवर्क में अनेक वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध हैं, जो यात्रा को अधिक

NODIA

सुगम और विश्वसनीय बनाते हैं। यह सरल सांख्यिकीय माप भूगोलवेत्ताओं को किसी क्षेत्र के परिवहन ढांचे की जटिलता और उसकी परिचालन दक्षता का त्वरित मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है।

83. (C) विश्लेषण में मांग और राजस्व पक्ष।
ऑगस्ट लॉश का अवस्थिति सिद्धांत में सबसे बड़ा योगदान मांग और राजस्व के पक्ष को शामिल करना था। वेबर के विपरीत, जिन्होंने केवल उत्पादन और परिवहन लागत को न्यूनतम करने पर ध्यान केंद्रित किया, लॉश ने तर्क दिया कि उद्योग को वहां होना चाहिए जहाँ वह सबसे अधिक ग्राहकों तक पहुँच सके। उन्होंने स्थानिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता व्यवहार को अपने मॉडल का अभिन्न अंग बनाया। इस नवाचार ने अवस्थिति सिद्धांत को अधिक यथार्थवादी बनाया, जहाँ व्यापारिक सफलता केवल बचत पर नहीं बल्कि अधिकतम आय पर आधारित होती है।

84. (A) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
प्राकृतिक संसाधन सभी गैर-नवीकरणीय नहीं होते, बल्कि उनमें सौर ऊर्जा और पवन जैसे अक्षय संसाधन भी शामिल हैं जो निरंतर उपलब्ध रहते हैं। इसी प्रकार, संसाधन संरक्षण का अर्थ मानवीय उपयोग को पूरी तरह रोकना नहीं है, बल्कि संसाधनों का बुद्धिमानी और संधारणीय तरीके से प्रबंधन करना है ताकि वे लंबे समय तक उपलब्ध रहें। अतः, दोनों कथन बुनियादी वैज्ञानिक और भौगोलिक तथ्यों के विरुद्ध हैं। संसाधनों का उचित वर्गीकरण और उनका नियोजित उपयोग ही आधुनिक पर्यावरण प्रबंधन का वास्तविक और संतुलित आधार है।

85. (C) कोयले और लौह अयस्क के स्रोत के पास।
लोह-इस्पात उद्योग एक विशिष्ट संसाधन-आधारित और भार-ह्रास वाला उद्योग है। इसमें प्रयुक्त होने वाले मुख्य कच्चे माल, जैसे कोयला और लौह अयस्क, अत्यंत भारी और स्थूल होते हैं, जिनकी परिवहन लागत बहुत अधिक होती है। उत्पादन प्रक्रिया के दौरान इनका वजन काफी कम हो जाता है, जिससे तैयार इस्पात को ले जाना कच्चे माल की तुलना में सस्ता होता है। इसलिए, कुल परिवहन व्यय को न्यूनतम रखने और परिचालन कुशलता बढ़ाने के लिए इस्पात संयंत्रों को कच्चा माल उपलब्ध कराने वाले क्षेत्रों के पास ही स्थापित किया जाता है।

86. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
विभिन्न परिवहन माध्यमों के अपने विशिष्ट लाभ होते हैं। पाइपलाइन तरल और गैसीय पदार्थों के निरंतर और सुरक्षित प्रवाह के लिए सर्वश्रेष्ठ है। वायु परिवहन लंबी दूरियों को बहुत तेज गति से तय करने में बेजोड़ है। सड़क मार्ग अपनी पहुँच के कारण घर-घर सेवा और लचीलापन प्रदान करता है, जो अन्य माध्यमों में संभव नहीं है। समुद्र मार्ग लंबी अंतरराष्ट्रीय दूरियों पर भारी और थोक माल के परिवहन के लिए सबसे किफायती साधन है। यह सुमेलन आधुनिक वैश्विक व्यापार और रसद प्रणाली की विविधता को स्पष्ट करता है।

87. (D) पशुपालन या विस्तृत चराई।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल के अनुसार, बाजार से सबसे दूर स्थित छठे और अंतिम छल्ले का उपयोग विस्तृत पशुपालन या चराई के लिए किया जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि पशुओं को बाजार तक ले जाने के लिए किसी महंगे परिवहन की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वे स्वयं चलकर जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इस गतिविधि के लिए बहुत अधिक भूमि की आवश्यकता होती है जो केवल शहर से दूर सस्ती दरों पर उपलब्ध होती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि कम मूल्य वाली गतिविधियाँ भी आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनी रहें।

88. (A) ज्ञान-आधारित और सूचना-प्रसंस्करण गतिविधियाँ।
चतुर्थक क्षेत्रक आधुनिक अर्थव्यवस्था का वह भाग है जो पूरी तरह से ज्ञान और सूचना के सृजन एवं प्रबंधन पर आधारित है। इसमें अनुसंधान, डेटा विश्लेषण, उच्च-तकनीकी सेवाएं और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र शामिल हैं जहाँ बौद्धिक क्षमता प्राथमिक संसाधन होती है। शारीरिक श्रम की तुलना में यहाँ मानसिक दक्षता का महत्व कहीं अधिक होता है। यह क्षेत्रक नवाचार को गति प्रदान करता है और किसी राष्ट्र के तकनीकी विकास एवं आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता को वैश्विक स्तर पर सुदृढ़ करने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

89. (C) अल्पकालिक लाभ के लिए उपभोग की दर को अधिकतम करना
संसाधन संरक्षण का सिद्धांत वर्तमान लाभ के लिए संसाधनों के अंधाधुंध उपभोग का विरोध करता है। इसके विपरीत, संरक्षण का मुख्य उद्देश्य अपशिष्ट को कम करना, सामग्रियों का पुनर्चक्रण करना और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखना है। इसमें दुर्लभ संसाधनों के स्थान पर वैकल्पिक विकल्पों का विकास करना भी शामिल है। उपभोग की दर को अधिकतम करना संसाधनों के तेजी से समापन की ओर ले जाता है, जो संधारणीय विकास और दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता के लक्ष्यों के पूरी तरह से विपरीत है।

90. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ऑगस्ट लॉश के मॉडल को वेबर के सिद्धांत की तुलना में अधिक यथार्थवादी माना जाता है क्योंकि यह केवल लागतों को कम करने तक सीमित नहीं है। लॉश ने बाजार मांग और उपभोक्ता व्यवहार को अपने विश्लेषण में शामिल किया, जिससे लाभ को अधिकतम करने वाली इष्टतम अवस्थिति की पहचान करना संभव हुआ। वेबर का मॉडल जहाँ केवल आपूर्ति और परिवहन व्यय पर केंद्रित था, वहीं लॉश ने राजस्व प्राप्ति की संभावनाओं को भी समान महत्व दिया। यह व्यापक दृष्टिकोण आधुनिक व्यावसायिक निर्णयों और बाजार की जटिलताओं को समझने में अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

91. (D) मिश्रित खेती
मिश्रित खेती एक उन्नत और संतुलित कृषि प्रणाली है जहाँ एक ही खेत पर फसल उत्पादन और पशुपालन दोनों गतिविधियाँ एक साथ की जाती हैं। इस प्रणाली का मुख्य लाभ यह है कि फसलों से प्राप्त अवशेष पशुओं के लिए चारे का काम करते हैं और पशुओं का खाद मृदा की उर्वरता बढ़ाता है। यह पद्धति

Click Here to Buy book on Amazon

37. (C) सरकार, व्यवसाय और शिक्षा में उच्च स्तरीय निर्णय लेना।
पंचमक क्षेत्रक आर्थिक गतिविधियों का वह विशिष्ट स्तर है जिसमें समाज के उच्चतम स्तर के निर्णय लेने वाले लोग शामिल होते हैं। इसमें सरकारी अधिकारी, बड़े निगमों के कार्यकारी निदेशक और प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों के शीर्ष वैज्ञानिक आते हैं जो नीतियों का निर्धारण और जटिल समस्याओं का समाधान करते हैं। यह क्षेत्रक ज्ञान और डेटा के प्रसंस्करण से भी ऊपर उठकर भविष्य की दिशा और रणनीतियों को प्रभावित करने वाली बौद्धिक गतिविधियों पर केंद्रित होता है। इसे अर्थव्यवस्था का मस्तिष्क माना जाता है जो संपूर्ण समाज को नई दिशा देता है।

38. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शस्य विविविधीकरण कृषि स्थिरता को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी वैज्ञानिक उपाय है। एक ही भूमि पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने से मृदा के पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है और हानिकारक कीटों का चक्र टूट जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि किसी एक फसल की बाजार कीमत गिर जाती है या वह खराब हो जाती है, तो किसान दूसरी फसलों से अपनी आय सुरक्षित रख सकता है। यह बहुआयामी दृष्टिकोण न केवल पर्यावरण के अनुकूल है बल्कि किसानों को आर्थिक सुरक्षा और खाद्य आत्मनिर्भरता भी प्रदान करता है।

39. (D) उत्पादन के मूल्य और निवेश के मूल्य का अनुपात।
कृषि दक्षता का आकलन करने के लिए आमतौर पर कुल उत्पादन के आर्थिक मूल्य और उस उत्पादन को प्राप्त करने में प्रयुक्त निवेशों के कुल मूल्य के बीच तुलना की जाती है। निवेशों में श्रम, बीज, सिंचाई, उर्वरक और मशीनरी पर किया गया खर्च शामिल होता है। यह अनुपात यह स्पष्ट करता है कि संसाधनों का उपयोग कितनी बुद्धिमानी और किफायती तरीके से किया गया है। उच्च दक्षता का संकेत कम लागत में अधिक मूल्यवान उत्पादन प्राप्त करना है, जो किसी भी सफल और उन्नत कृषि प्रणाली का मुख्य आधार होता है।

40. (A) Beta Index
परिवहन भूगोल में बीटा इंडेक्स नेटवर्क की संयोजकता मापने का एक प्रमुख सांख्यिकीय उपकरण है। इसकी गणना नेटवर्क में मौजूद कुल कड़ियों की संख्या को केंद्रों या नोड्स की कुल संख्या से विभाजित करके की जाती है। बीटा इंडेक्स का उच्च मान यह दर्शाता है कि नेटवर्क अधिक जटिल और बेहतर तरीके से जुड़ा हुआ है, जिससे यात्रियों और माल के लिए अधिक वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होते हैं। यह सूचकांक क्षेत्रीय परिवहन नियोजन और नेटवर्क की दक्षता का मूल्यांकन करने के लिए भूगोलवेत्ताओं द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

41. (A) 3, 2, 1, 4
आर्थिक भूगोल में अवस्थिति सिद्धांतों का विकास एक क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। जे. एच. वॉन थ्यूनेन ने सर्वप्रथम 1826 में कृषि भूमि उपयोग का मॉडल दिया। इसके बाद 1909 में अल्फ्रेड वेबर ने औद्योगिक स्थापना के लिए न्यूनतम लागत का सिद्धांत प्रस्तुत किया। बीसवीं सदी के मध्य में ऑगस्ट लॉश ने लाभ अधिकतमकरण का मॉडल पेश किया और अंततः डी. एम. स्मिथ ने स्थानिक लाभप्रदता की सीमाओं की व्याख्या करने वाला आधुनिक सिद्धांत दिया। यह कालानुक्रमिक क्रम भौगोलिक विचारों के निरंतर विकास और सूक्ष्मता को दर्शाता है।

42. (A) आगत या निर्गत की परिवहन लागत द्वारा स्थानों से बंधा नहीं होता है।
स्वच्छंद उद्योग अपनी अवस्थिति के मामले में स्वतंत्र होते हैं क्योंकि वे परिवहन लागत से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं होते हैं। इनके कच्चे माल अक्सर सर्वव्यापी होते हैं या वजन में बहुत हल्के होते हैं, और तैयार उत्पाद भी उच्च मूल्य वाले एवं परिवहन में आसान होते हैं। इसके कारण इन उद्योगों को किसी विशेष स्रोत या बाजार के पास स्थापित करना अनिवार्य नहीं होता है। उदाहरण के लिए, हीरा तराशने या सूचना प्रौद्योगिकी आधारित उद्योग कहीं भी स्थित होकर अपनी कार्यक्षमता और आर्थिक लाभप्रदता बनाए रख सकते हैं।

43. (D) तृतीयक क्षेत्रक - अनुसंधान एवं विकास
आर्थिक क्षेत्रकों के वर्गीकरण में अनुसंधान और विकास को आमतौर पर चतुर्थक क्षेत्रक में रखा जाता है क्योंकि यह ज्ञान-आधारित और बौद्धिक सेवाओं से संबंधित है। तृतीयक क्षेत्रक में मुख्य रूप से पारंपरिक सेवाएं जैसे व्यापार, परिवहन, बैंकिंग और शिक्षा शामिल होती हैं। प्राथमिक क्षेत्रक कृषि और निष्कर्षण पर आधारित है, जबकि द्वितीयक क्षेत्रक विनिर्माण से संबंधित है। अतः, अनुसंधान एवं विकास को तृतीयक क्षेत्रक के साथ जोड़ना गलत है, क्योंकि यह उच्च स्तरीय बौद्धिक विशेषज्ञता और तकनीकी नवाचार की श्रेणी में आता है।

44. (B) कीमत, मांग और परिवहन लागत।
ऑगस्ट लॉश के आर्थिक मॉडल में बाजार क्षेत्रों का आकार और आकृति मुख्य रूप से वस्तु की कीमत, उपभोक्ताओं की मांग और परिवहन लागत के परस्पर प्रभाव से निर्धारित होती है। जैसे-जैसे उत्पादन केंद्र से दूरी बढ़ती है, परिवहन लागत के कारण वस्तु की प्रभावी कीमत बढ़ जाती है, जिससे मांग कम होती जाती है। यह प्रक्रिया अंततः एक ऐसी भौगोलिक सीमा का निर्धारण करती है जहाँ मांग शून्य हो जाती है। यह त्रि-आयामी संबंध बाजार क्षेत्रों के षट्कोणीय प्रतिरूप के निर्माण का वास्तविक आधार बनता है।

45. (B) केवल 2 और 3
संसाधन संरक्षण का वास्तविक अर्थ संसाधनों के उपयोग को रोकना नहीं, बल्कि उनका बुद्धिमानीपूर्ण, कुशल और संधारणीय उपयोग सुनिश्चित करना है। इसमें अपशिष्ट को न्यूनतम करना, सामग्रियों का पुनर्चक्रण करना और वैकल्पिक स्रोतों की खोज करना जैसी रणनीतियाँ शामिल हैं। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि वर्तमान विकास भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के साथ समझौता न करे। संसाधनों का पूर्ण परिरक्षण विकास को बाधित कर सकता है, इसलिए वैज्ञानिक और संतुलित प्रबंधन ही संरक्षण का सबसे प्रभावी और स्वीकार्य माध्यम माना जाता है।

NODIA

होती है। इस व्यवसाय के लिए मुख्य रूप से उच्च गति वाली इंटरनेट संयोजकता और संवाद कौशल में निपुण कार्यबल की आवश्यकता होती है। चूंकि इसकी सेवाएँ डिजिटल माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचाई जा सकती हैं, इसलिए इसे कहीं भी स्थापित करना संभव है। परिवहन लागत इसकी अवस्थिति को प्रभावित नहीं करती, जो इसकी पूर्ण स्वतंत्रता को दर्शाता है।

101. (B) केवल 1 और 3
जल परिवहन अपनी विशाल वहन क्षमता और निम्न घर्षण के कारण थोक सामानों के लिए अत्यंत ऊर्जा-कुशल माध्यम है। वहीं, पाइपलाइन परिवहन एक निश्चित मार्ग पर तरल पदार्थों के सुरक्षित प्रवाह के लिए उपयुक्त है, लेकिन यह अन्य प्रकार के माल को ले जाने में असमर्थ और अनम्य है। वायु परिवहन में वास्तव में उच्च स्थिर और परिवर्तनीय दोनों लागतें होती हैं, जिससे कथन 2 गलत है। अतः, केवल प्रथम और तृतीय कथन ही विभिन्न परिवहन साधनों की भौतिक और आर्थिक विशेषताओं का सही वर्णन करते हैं।

102. (B) इसमें विनिर्माण के माध्यम से कच्चे माल का रूपांतरण शामिल है।
द्वितीयक क्षेत्रक आर्थिक गतिविधियों का वह समूह है जो प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त प्राकृतिक उत्पादों को प्रसंस्करण और विनिर्माण के माध्यम से अधिक मूल्यवान वस्तुओं में बदलता है। इसमें कल-कारखाने, निर्माण कार्य और हस्तशिल्प जैसी क्रियाएं शामिल होती हैं जहाँ कच्चे माल का रूप परिवर्तित किया जाता है। यह क्षेत्रक अर्थव्यवस्था में मूल्यवर्धन का मुख्य स्रोत है क्योंकि यह अनुपयोगी कच्चे माल को मानव के लिए सीधे उपयोगी और टिकाऊ तैयार माल में परिवर्तित कर देता है। विनिर्माण ही इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता है।

103. (D) आर्थिक और पर्यावरणीय जोखिमों को कम करना।
शस्य विविविधीकरण अपनाने का सबसे प्रमुख कारण खेती से जुड़े विभिन्न जोखिमों को कम करना है। एक ही खेत पर अलग-अलग फसलें उगाने से मृदा के पोषक तत्वों का क्षरण रुकता है और कीटों का प्राकृतिक नियंत्रण होता है, जो पर्यावरण के लिए लाभदायक है। आर्थिक दृष्टि से, यदि एक फसल की फसल खराब हो जाती है या उसकी कीमत गिर जाती है, तो किसान दूसरी फसलों से अपनी आय सुरक्षित रख सकता है। यह बहुआयामी दृष्टिकोण किसान को आत्मनिर्भर बनाता है और समग्र कृषि आय में स्थिरता सुनिश्चित करता है।

104. (A) बाजार की निकटता के कारण भूमि का लाभ।
वॉन थ्यूनेन के कृषि मॉडल में 'अवस्थितिक लगान' उस अधिशेष आय को संदर्भित करता है जो भूमि की बाजार से निकटता के कारण उत्पन्न होती है। बाजार के समीप स्थित भूमि पर परिवहन व्यय न्यूनतम होता है, जिससे किसान को अपनी उपज बेचने पर अधिक शुद्ध लाभ मिलता है। यह लाभ भूमि की उर्वरता के बजाय केवल उसकी भौगोलिक स्थिति का परिणाम है। जैसे-जैसे बाजार से दूरी बढ़ती है, परिवहन लागत बढ़ती जाती है और फलस्वरूप भूमि से प्राप्त होने वाला यह आर्थिक लगान कम होता जाता है।

105. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
अल्फ्रेड वेबर का सिद्धांत एक आदर्शात्मक मॉडल है जो यह सुझाव देता है कि लागत को न्यूनतम करने के लिए उद्योग को कहाँ स्थित होना चाहिए। यह एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। इसके विपरीत, ऑगस्ट लॉश का सिद्धांत भी केवल वर्णनात्मक नहीं है, बल्कि वह भी एक आदर्शात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो लाभ को अधिकतम करने वाली इष्टतम अवस्थिति की पहचान करने पर केंद्रित है। अतः कथन II गलत है क्योंकि लॉश का मॉडल केवल वर्तमान स्थिति का वर्णन करने के बजाय इष्टतम स्थिति खोजने का लक्ष्य रखता है।

106. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
परिवहन भूगोल की मुख्य अवधारणाएं नेटवर्क की संरचना और कार्यक्षमता को स्पष्ट करती हैं। अभिगम्यता अन्य स्थानों से किसी विशिष्ट स्थान तक पहुँचने की सुगमता को दर्शाती है, जबकि संयोजकता केंद्रों के बीच के प्रत्यक्ष जुड़ाव की मजबूती का माप है। परिवहन लागत दूरी तय करने में लगने वाले समय और धन के कुल व्यय को प्रदर्शित करती है। नोड या केंद्र वह बिंदु होता है जहाँ विभिन्न मार्ग मिलते हैं या यात्रा का आरंभ होता है। यह सुमेलन भूगोलवेत्ताओं के लिए परिवहन विश्लेषण के आधारभूत तत्वों को सही ढंग से परिभाषित करता है।

107. (D) यूरेनियम
यूरेनियम एक खनिज संसाधन है जिसका भंडार पृथ्वी पर सीमित है और जिसका निर्माण भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से लाखों वर्षों में होता है। एक बार उपयोग किए जाने के बाद, इसे मानवीय समय सीमा के भीतर दोबारा नहीं बनाया जा सकता, इसलिए यह गैर-नवीकरणीय संसाधन की श्रेणी में आता है। इसके विपरीत, सौर और पवन ऊर्जा प्राकृतिक रूप से अक्षय हैं, और वनों को यदि सही प्रबंधन किया जाए, तो वे पुनः विकसित किए जा सकते हैं। यूरेनियम जैसे परमाणु ईंधन का अत्यधिक दोहन भविष्य में इसकी कमी का कारण बन सकता है।

108. (B) अर्थव्यवस्था की अलाभकारी स्थितियों के कारण भीड़भाड़ वाले औद्योगिक केंद्र से उद्योगों का प्रसार।
औद्योगिक भूगोल में विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया तब शुरू होती है जब किसी मुख्य औद्योगिक केंद्र में अत्यधिक जमाव के कारण भूमि की कीमतें, प्रदूषण और भीड़भाड़ बहुत बढ़ जाती हैं। ये अलाभकारी स्थितियाँ उद्योगों के लिए परिचालन लागत बढ़ा देती हैं, जिससे वे शहर के बाहरी क्षेत्रों या नए स्थानों की ओर स्थानांतरित होने लगते हैं। यह प्रक्रिया औद्योगिक गतिविधियों के प्रसार में मदद करती है और नए क्षेत्रों के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है। यह केंद्रीय केंद्रों पर पड़ने वाले दबाव को कम करने का एक आवश्यक भौगोलिक समाधान है।

109. (C) फसलों का आनुवंशिक संशोधन।
डरवेंट व्हिटलसी ने विश्व की कृषि प्रणालियों का वर्गीकरण करते समय फसलों और पशुओं के सह-संबंध, खेती की तकनीकों और भूमि उपयोग की तीव्रता जैसे पारंपरिक और कार्यात्मक कारकों पर ध्यान केंद्रित किया था। उनके समय में आनुवंशिक संशोधन जैसी आधुनिक जैव-तकनीक अस्तित्व

Downloaded from www.pdf.tube

में नहीं थी, इसलिए यह उनके वर्गीकरण का आधार नहीं था। उन्होंने मुख्य रूप से इस बात का विश्लेषण किया कि किसान अपनी जीविका के लिए पर्यावरण के साथ कैसे तालमेल बिठाते हैं। अतः, आनुवंशिक संशोधन उनके वैज्ञानिक मानदंडों की सूची से पूरी तरह बाहर है।

110. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सॉफ्टवेयर विकास सेवाएँ स्वच्छंद उद्योगों का एक प्रमुख उदाहरण हैं क्योंकि इनकी अवस्थिति किसी भौतिक कच्चे माल या भारी परिवहन लागत से प्रभावित नहीं होती है। इस उद्योग की मुख्य आवश्यकता उच्च गुणवत्ता वाली इंटरनेट सेवा और कुशल मानव संसाधन है, जो कई स्थानों पर आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं। चूंकि इनके उत्पाद डिजिटल रूप में वितरित किए जाते हैं, इसलिए परिवहन व्यय नगण्य होता है। इसके कारण ये कंपनियाँ उत्पादन लागत में बड़े बदलाव के बिना किसी भी सुविधाजनक स्थान पर सुगमता से कार्य कर सकती हैं।

111. (A) उत्पादकता कुल उत्पादन को संदर्भित करती है, जबकि दक्षता उत्पादन की तुलना निवेश से करती है।
कृषि उत्पादकता और कृषि दक्षता के बीच सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण अंतर है। उत्पादकता सामान्यतः प्रति इकाई क्षेत्र या श्रम से प्राप्त होने वाली कुल पैदावार की मात्रा को दर्शाती है, जो उत्पादन के परिमाण पर केंद्रित है। इसके विपरीत, कृषि दक्षता इस बात का मूल्यांकन करती है कि उपलब्ध संसाधनों, जैसे पूंजी, बीज और उर्वरक, का कितनी कुशलता से उपयोग करके वह उत्पादन प्राप्त किया गया है। यह निवेश और प्रतिफल के बीच का एक तुलनात्मक वैज्ञानिक विश्लेषण है जो संसाधनों के इष्टतम उपयोग पर बल देता है।

112. (B) अल्फ्रेड वेबर का मॉडल
'आइसोडापेन' की अवधारणा अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत का एक अनिवार्य अंग है। यह मानचित्र पर खींची गई वह काल्पनिक रेखा है जो उन सभी स्थानों को जोड़ती है जहाँ परिवहन की कुल लागत समान होती है। वेबर ने इस उपकरण का उपयोग यह विश्लेषण करने के लिए किया कि कैसे कोई उद्योग न्यूनतम परिवहन लागत वाले स्थान से हटकर सस्ते श्रम वाले स्थान की ओर स्थानांतरित हो सकता है। यह अवधारणा औद्योगिक स्थापना के निर्णयों में परिवहन और श्रम लागत के बीच के जटिल संतुलन को स्पष्ट करने में सहायता करती है।

113. (B) संसाधन-आधारित उद्योग
लोह-इस्पात उद्योग संसाधन-आधारित उद्योग का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है क्योंकि इसके लिए भारी मात्रा में लोह अयस्क और कोयले जैसे कच्चे माल की आवश्यकता होती है। ये सामग्री अत्यंत स्थूल होती है और प्रसंस्करण के दौरान इनका वजन काफी कम हो जाता है, जिससे तैयार इस्पात को ले जाना कच्चे माल की तुलना में बहुत सस्ता पड़ता है। अतः, परिवहन व्यय को न्यूनतम रखने के लिए इन संयंत्रों को कच्चे माल के स्रोतों के निकट स्थापित करना अनिवार्य होता है। यह अवस्थिति की निर्भरता ही इसे संसाधन-आधारित उद्योग बनाती है।

114. (A) परिवहन लागत
जे. एच. वॉन थ्यूनेन के कृषि मॉडल में परिवहन लागत ही वह निर्णायक कारक है जो शहर के चारों ओर विभिन्न कृषि गतिविधियों के वितरण को नियंत्रित करता है। उनका मूल तर्क यह था कि जैसे-जैसे बाजार से दूरी बढ़ती है, उपज को बाजार तक पहुँचाने का खर्च बढ़ता जाता है। इसके परिणामस्वरूप, उच्च परिवहन लागत वाली और जल्दी खराब होने वाली वस्तुएं बाजार के पास उगाई जाती हैं, जबकि कम खर्च वाली वस्तुएं दूर। यह सीधा आर्थिक संबंध ही संपूर्ण कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप का मुख्य आधार बनता है।

115. (C) तृतीयक क्षेत्रक - परिवहन
आर्थिक क्षेत्रकों के वर्गीकरण में परिवहन को तृतीयक क्षेत्रक में रखा जाता है क्योंकि यह समाज को आवागमन और रसद की महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करता है। बैंकिंग और व्यापार के साथ परिवहन भी सेवा अर्थव्यवस्था का एक अनिवार्य स्तंभ है। इसके विपरीत, मत्स्य पालन प्राथमिक क्षेत्रक का हिस्सा है, और कार विनिर्माण द्वितीयक क्षेत्रक में आता है। चतुर्थक क्षेत्रक मुख्य रूप से बौद्धिक और अनुसंधान कार्यों से संबंधित है, न कि निर्माण से। अतः, केवल परिवहन और तृतीयक क्षेत्रक का सुमेलन ही भौगोलिक और आर्थिक सिद्धांतों के अनुकूल है।

NODIA

116. (D) भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को नुकसान पहुँचाए बिना वर्तमान में संसाधनों का उपयोग करना।
संसाधन उपयोग के संदर्भ में स्थिरता का अर्थ संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रबंधन है। इसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करना है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त प्राकृतिक संपदा और स्वस्थ पर्यावरण शेष रहे। यह विकास और संरक्षण के बीच एक आवश्यक संतुलन बनाने पर जोर देता है। स्थिरता के सिद्धांतों को अपनाकर ही हम पर्यावरणीय क्षरण को रोक सकते हैं और पृथ्वी के सीमित संसाधनों का दीर्घकालिक एवं संधारणीय उपयोग सुनिश्चित कर सकते हैं, जो वैश्विक विकास के लिए अनिवार्य है।

117. (C) षट्भुजों का एक नेस्टेड पैटर्न।
ऑगस्ट लॉश ने अपने आर्थिक मॉडल में बाजार क्षेत्रों के वितरण के लिए षट्कोणीय आकृति का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने तर्क दिया कि षट्भुज ही वह एकमात्र ज्यामितीय आकृति है जो पूरे भौगोलिक क्षेत्र को बिना किसी खाली स्थान छोड़े या आपस में टकराए पूरी तरह कवर कर सकती है। यह प्रतिरूप विक्रेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा को संतुलित करता है और उपभोक्ताओं के लिए वस्तु की पहुंच को इष्टतम बनाता है। यह नेस्टेड पैटर्न स्थानिक संगठन को समझने और क्षेत्रीय बाजार संरचनाओं के विश्लेषण के लिए भूगोल में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

118. (B) रेल परिवहन
रेल परिवहन की एक विशिष्ट आर्थिक विशेषता यह है कि इसमें माल के लदान और स्टेशन प्रबंधन की टर्मिनल लागत उच्च होती है, लेकिन एक बार यात्रा शुरू होने पर लंबी दूरी के लिए लाइन-हॉल लागत बहुत कम होती है। यह इसे भारी और थोक वस्तुओं की लंबी दूरी की ढुलाई के लिए सड़क मार्ग

की तुलना में अधिक किफायती बनाता है। रेलवे की विशाल वहन क्षमता और ऊर्जा दक्षता इसे औद्योगिक और वाणिज्यिक आपूर्ति श्रृंखला का एक मजबूत आधार बनाती है, जहाँ दूरी बढ़ने के साथ प्रति इकाई परिवहन व्यय निरंतर घटता जाता है।

119. (D) पूरी तरह से सूचित होते हैं और अपने आर्थिक लाभ को अधिकतम करने के लिए कार्य करते हैं।
शास्त्रीय आर्थिक मॉडलों में 'आर्थिक मानव' की धारणा यह मानती है कि सभी निर्णय लेने वाले पूरी तरह से तर्कसंगत होते हैं और उनके पास बाजार की संपूर्ण जानकारी होती है। इस विचार के अनुसार, किसान या उद्योगपति हमेशा वही विकल्प चुनते हैं जो उनके व्यक्तिगत आर्थिक लाभ को अधिकतम करता हो और लागत को न्यूनतम करता हो। वे व्यक्तिगत भावनाओं या परंपराओं के बजाय विशुद्ध गणितीय और आर्थिक गणनाओं के आधार पर अपनी गतिविधियों का स्थान चुनते हैं। यह सरल धारणा जटिल स्थानिक प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक विश्लेषण में आधार का कार्य करती है।

120. (A) केवल 3
स्वच्छंद उद्योग, जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स और क्रमादेश (सॉफ्टवेयर), भारी कच्चे माल पर निर्भर नहीं होते और न ही इनकी लागत में परिवहन व्यय की बड़ी भूमिका होती है। ये उद्योग अपने आगतों और निर्गतों के हल्के वजन और उच्च मूल्य के कारण अवस्थिति के मामले में अत्यंत स्वतंत्र होते हैं। इन्हें कुशल श्रम और डिजिटल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता के आधार पर कहीं भी स्थापित किया जा सकता है। कथन 1 और 2 भारी उद्योगों की विशेषताएं हैं, अतः केवल तृतीय कथन ही स्वच्छंद उद्योगों की सही पहचान और उदाहरण प्रस्तुत करता है।

121. (C) द्वितीयक क्षेत्रक
ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों की ओर जनसंख्या का पलायन मुख्य रूप से द्वितीयक क्षेत्रक या विनिर्माण उद्योग की वृद्धि का परिणाम है। औद्योगिक क्रांति के बाद से, कारखानों में रोजगार के अवसरों ने बड़ी संख्या में लोगों को शहरों की ओर आकर्षित किया है। यह शहरीकरण की प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में एक बड़े बदलाव को दर्शाती है, जहाँ लोग पारंपरिक खेती छोड़कर औद्योगिक कार्यों में संलग्न होते हैं। द्वितीयक क्षेत्रक न केवल वस्तुओं का उत्पादन करता है, बल्कि शहरी क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे और व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार का मुख्य उत्प्रेरक भी बनता है।

122. (A) कृषि क्षेत्रों का एक वस्तुनिष्ठ और सत्यापन योग्य निर्धारण।
जे. सी. वीवर ने शस्य संयोजन के अपने विश्लेषण में सांख्यिकीय विधियों का उपयोग इसलिए किया ताकि कृषि क्षेत्रों का वर्गीकरण व्यक्तिगत अनुमानों के बजाय वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ डेटा पर आधारित हो। उनकी पद्धति फसलों के वितरण का गणितीय मापन करती है, जिसे कोई भी दोबारा सत्यापित कर सकता है। यह दृष्टिकोण कृषि भूगोल में एक क्रांतिकारी बदलाव लाया क्योंकि इसने क्षेत्रीय भिन्नताओं को समझने के लिए एक स्पष्ट और सटीक ढांचा प्रदान किया। इसके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों की कृषि विशेषताओं की तुलना अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकती है।

123. (D) कम करना, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण
संसाधन संरक्षण के '3R' सिद्धांत का अर्थ 'रिड्यूस' (कम करना), 'रीयूज' (पुनः उपयोग) और 'रिसायकल' (पुनर्चक्रण) है। यह पद्धति कचरे को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन को रोकने के लिए एक वैश्विक रणनीति है। कम करने का अर्थ है उपभोग में मितव्ययिता बरतना, पुनः उपयोग का अर्थ है वस्तुओं को फेंकने के बजाय दोबारा इस्तेमाल करना, और पुनर्चक्रण में पुरानी वस्तुओं से नई सामग्री तैयार करना शामिल है। यह त्रिपक्षीय दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और संधारणीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य माना जाता है।

124. (B) निरंतर प्रवाह और उच्च विश्वसनीयता के लिए कम परिचालन लागत।
पाइपलाइन परिवहन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि एक बार निर्माण हो जाने के बाद, तरल और गैसीय पदार्थों के निरंतर प्रवाह के लिए परिचालन लागत बहुत कम हो जाती है। यह प्रणाली मौसम की बाधाओं से मुक्त होती है और इसमें माल की चोरी या क्षति का जोखिम नगण्य होता है। लंबी दूरी तक तेल और गैस पहुँचाने के लिए यह सबसे विश्वसनीय और सुरक्षित माध्यम है। हालांकि इसमें निर्माण की प्रारंभिक लागत अधिक होती है, लेकिन दीर्घकालिक दक्षता और कम रखरखाव इसे ऊर्जा परिवहन के लिए अत्यंत श्रेष्ठ बनाते हैं।

125. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वेबर के औद्योगिक मॉडल के अनुसार, उद्योग को सस्ते श्रम वाले स्थान पर तभी स्थानांतरित किया जाना चाहिए जब वहां होने वाली श्रम बचत अतिरिक्त परिवहन लागत से अधिक हो। यह सिद्धांत परिवहन, श्रम और समूहन जैसे महत्वपूर्ण कारकों के बीच एक आर्थिक संतुलन खोजने का प्रयास करता है। यदि परिवहन व्यय में वृद्धि बचत को खत्म कर देती है, तो मूल न्यूनतम-लागत स्थान ही श्रेष्ठ माना जाता है। यह तर्कसंगत दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि भौगोलिक निर्णय केवल एक कारक के बजाय समग्र उत्पादन लागत को न्यूनतम करने पर आधारित होते हैं।

126. (D) पूर्व-औद्योगिक
जिस देश के कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा, जैसे 60% से अधिक, कृषि और प्राथमिक गतिविधियों में लगा होता है, उसे आर्थिक विकास के पूर्व-औद्योगिक चरण में माना जाता है। इस चरण में विनिर्माण और सेवा क्षेत्रकों का विकास बहुत सीमित होता है और समाज अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से प्रकृति पर निर्भर रहता है। आधुनिक तकनीक और औद्योगीकरण की कमी के कारण यहाँ प्रति व्यक्ति आय और जीवन स्तर आमतौर पर निम्न होता है। जैसे-जैसे देश विकसित होता है, यह श्रम शक्ति धीरे-धीरे औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित हो जाती है।

127. (C) P-2, Q-3, R-1, S-4
विश्व के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में वहाँ की जलवायु और जनसंख्या के अनुसार विशिष्ट कृषि प्रणालियाँ विकसित हुई हैं। चलवासी पशुचारण मध्य एशिया के शुष्क क्षेत्रों की विशेषता

Click Here to Buy book on Amazon

है, जबकि झूम कृषि मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में प्रचलित है। मानसूनी एशिया के घने बसे क्षेत्रों में गहन निर्वाह कृषि की जाती है जहाँ सीमित भूमि पर अधिक पैदावार का लक्ष्य होता है। उत्तरी अमेरिका के विशाल मैदानों में विस्तृत वाणिज्यिक अनाज की खेती की जाती है जो पूरी तरह बाजार और आधुनिक तकनीकों पर आधारित होती है। यह वर्गीकरण वैश्विक कृषि विविधता को स्पष्ट करता है।

128. (B) एक ऐसा उद्योग जिसका अवस्थिति संबंधी निर्णय उसके कच्चे माल के पास होने की आवश्यकता से काफी प्रभावित होता है।
संसाधन-आधारित उद्योग वे होते हैं जो अपनी स्थापना के लिए मुख्य रूप से कच्चे माल की उपलब्धता वाले क्षेत्रों पर निर्भर करते हैं। यदि कच्चा माल भारी, स्थूल या प्रसंस्करण के दौरान वजन कम करने वाला होता है, तो परिवहन लागत को नियंत्रित करने के लिए कारखाने को स्रोत के निकट लगाना अनिवार्य हो जाता है। चीनी मिलें और लोह-इस्पात उद्योग इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ऐसे उद्योगों के लिए अवस्थिति का चुनाव बाजार की तुलना में कच्चे माल की भौगोलिक स्थिति द्वारा अधिक संचालित होता है, जो उनकी आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए निर्णायक सिद्ध होता है।

129. (B) उन्होंने बाजार क्षेत्र पर विचार करते हुए लाभ-अधिकतम करने वाले उत्पादक की अवधारणा पेश की।
ऑगस्ट लॉश ने वेबर के न्यूनतम लागत सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण सुधार करते हुए लाभ अधिकतमकरण की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने यह तर्क दिया कि एक सफल उद्योग के लिए केवल लागत कम करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहाँ वह सबसे बड़े संभव बाजार क्षेत्र की सेवा कर सके और अधिकतम राजस्व प्राप्त कर सके। लॉश ने मांग की भूमिका और उपभोक्ता व्यवहार को अपने विश्लेषण का केंद्र बनाया, जिससे औद्योगिक अवस्थिति का सिद्धांत अधिक व्यापक, गतिशील और बाजार की वास्तविकताओं के अनुकूल बन गया।

130. (A) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
परिवहन भूगोल में अभिगम्यता और संयोजकता दो अलग-अलग अवधारणाएं हैं। अभिगम्यता का तात्पर्य अन्य स्थानों से किसी विशेष गंतव्य तक पहुँचने की सुगमता और कम लागत से है। वहीं, संयोजकता इस बात का माप है कि एक नेटवर्क के भीतर विभिन्न केंद्र एक-दूसरे से कितनी सीधे और प्रत्यक्ष कड़ियों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। एक उच्च संयोजित नेटवर्क में अभिगम्यता बेहतर हो सकती है, लेकिन ये दोनों शब्द पर्यायवाची नहीं हैं। अतः, केवल द्वितीय कथन ही इन दोनों महत्वपूर्ण भौगोलिक मापदंडों के बीच के वास्तविक अंतर को सही ढंग से स्पष्ट करता है।

131. (C) दूसरे शहर के चारों ओर संकेंद्रित छल्लों का एक नया, छोटा समूह विकसित होगा।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल में एक दूसरा बाजार शहर पेश करने से भौगोलिक मांग और परिवहन का संतुलन बदल जाता है। इस नए शहर के चारों ओर भी भूमि उपयोग के वैसे ही संकेंद्रित छल्ले विकसित होंगे जैसा कि मुख्य शहर के पास होता है, हालांकि इनका आकार छोटा हो सकता है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कृषि प्रतिरूप बाजार की निकटता के प्रति अत्यंत संवेदनशील होता है। नए बाजार केंद्रों का उदय स्थानीय स्तर पर भूमि लगान और फसल चयन को प्रभावित करता है, जिससे संपूर्ण विलगित राज्य की स्थानिक संरचना अधिक जटिल और प्रतिस्पर्धी हो जाती है।

132. (D) द्वितीयक
लोह अयस्क, कोयला और चूना पत्थर को इस्पात में बदलने की प्रक्रिया विनिर्माण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो द्वितीयक क्षेत्रक के अंतर्गत आती है। इस प्रक्रिया में प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त कच्चे माल का रूप परिवर्तित किया जाता है और उसमें मूल्यवर्धन किया जाता है। द्वितीयक क्षेत्रक का मुख्य कार्य ही प्राकृतिक संसाधनों का प्रसंस्करण करके उन्हें समाज के लिए उपयोगी और टिकाऊ वस्तुओं में बदलना है। लोह-इस्पात उद्योग आधुनिक सभ्यता का आधार है, जो दर्शाता है कि कैसे औद्योगिक गतिविधियाँ कच्चे माल को शक्तिशाली आर्थिक संसाधनों में रूपांतरित करती हैं।

133. (C) विभिन्न स्थानों पर परिवर्तनीय मांग।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत की एक प्रमुख सीमा यह है कि उन्होंने सभी स्थानों पर मांग को स्थिर माना था। उन्होंने अपना पूरा ध्यान परिवहन और श्रम लागत को न्यूनतम करने पर केंद्रित किया, और मांग में होने वाले स्थानिक बदलावों की उपेक्षा की। इसके विपरीत, वेबर का मॉडल एकसमान मैदान, पूर्ण प्रतिस्पर्धा और सटीक जानकारी जैसी सरल धारणाओं पर आधारित था। मांग की परिवर्तनशीलता को बाद में ऑगस्ट लॉश जैसे विद्वानों ने अपने सिद्धांतों में शामिल किया, जिससे बाजार आधारित विश्लेषण को अधिक गहराई मिली।

134. (B) नवीकरणीय संसाधन।
भू-तापीय ऊर्जा पृथ्वी के भीतर मौजूद ऊष्मा से प्राप्त होती है, जो एक निरंतर और प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसे नवीकरणीय संसाधन माना जाता है क्योंकि पृथ्वी की आंतरिक गर्मी कभी समाप्त नहीं होती और इसे बार-बार ऊर्जा उत्पादन के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह ऊर्जा का एक स्वच्छ और टिकाऊ स्रोत है जो जीवाश्म ईंधनों की तुलना में पर्यावरण को बहुत कम नुकसान पहुँचाता है। चूंकि यह प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा स्वतः पुनः पूरित होती रहती है, इसलिए यह भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प सिद्ध होती है।

135. (A) 1, 2, 3
आर्थिक भूगोल के आधारभूत सिद्धांतों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्रम में हुआ। सबसे पहले 1826 में जे. एच. वॉन थ्यूनेन ने कृषि अवस्थिति पर अपना मौलिक कार्य प्रस्तुत किया। इसके पश्चात 1909 में अल्फ्रेड वेबर ने उद्योगों के लिए न्यूनतम लागत का सिद्धांत दिया। अंततः 1940 में ऑगस्ट लॉश ने बाजार क्षेत्रों और लाभ अधिकतमकरण से संबंधित अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की। यह कालानुक्रमिक विकास दर्शाता है कि कैसे स्थानिक आर्थिक विचार समय के

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

साथ कृषि विश्लेषण से औद्योगिक और फिर व्यापक बाजार विश्लेषण की ओर निरंतर परिष्कृत होते गए।

136. (A) परिवहन और संचार में विकास जो दूरी की बाधा को कम करते हैं।
'समय-स्थान अभिसरण' की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि कैसे उन्नत परिवहन और संचार तकनीकों ने भौगोलिक दूरी के प्रभाव को कम कर दिया है। जैसे-जैसे यात्रा की गति बढ़ती है और संचार त्वरित होता है, दो स्थानों के बीच लगने वाला समय कम हो जाता है, जिससे वे एक-दूसरे के करीब महसूस होते हैं। यह प्रक्रिया वैश्विक व्यापार, रसद और सामाजिक-आर्थिक अंतःक्रियाओं को तीव्र करती है। यह आधुनिक युग की एक प्रमुख विशेषता है जिसने 'दूरी की बाधा' को प्रभावी ढंग से पार करके दुनिया को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है।

137. (C) संसाधन-आधारित उद्योग कच्चे माल के स्थानों से बंधा होता है, जबकि स्वच्छंद उद्योगों को अधिक स्वतंत्रता होती है।
संसाधन-आधारित और स्वच्छंद उद्योगों के बीच मूलभूत अंतर उनकी अवस्थिति की स्वतंत्रता का है। संसाधन-आधारित उद्योग, जैसे चीनी या इस्पात मिल, भारी और वजन घटाने वाले कच्चे माल के कारण उनके स्रोतों के पास स्थापित होने के लिए मजबूर होते हैं। इसके विपरीत, स्वच्छंद उद्योग, जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स या सूचना प्रौद्योगिकी, हल्के कच्चे माल और नगण्य परिवहन लागत के कारण किसी भी भौगोलिक स्थान पर स्थित हो सकते हैं। यह अंतर परिवहन व्यय की संवेदनशीलता और उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त सामग्री की प्रकृति पर आधारित होता है।

138. (A) सूचना का सृजन, प्रसंस्करण और प्रसार
चतुर्थक आर्थिक क्षेत्रक की सबसे प्रमुख विशेषता सूचना और ज्ञान पर इसकी पूर्ण निर्भरता है। इसमें अनुसंधान, डेटा विश्लेषण, उच्च तकनीकी परामर्श और सूचना प्रौद्योगिकी जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जहाँ बौद्धिक कार्य प्राथमिक उत्पाद होता है। पारंपरिक विनिर्माण या शारीरिक श्रम के विपरीत, यहाँ मूल्य का सृजन मानसिक दक्षता और वैज्ञानिक नवाचार के माध्यम से किया जाता है। यह क्षेत्रक आधुनिक समाज के डिजिटल और तकनीकी विकास का मुख्य चालक है, जो किसी भी अर्थव्यवस्था को सूचना युग में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए अनिवार्य होता है।

139. (A) केवल 1 और 2
वाणिज्यिक खेती मुख्य रूप से लाभ कमाने और व्यापक बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर की जाती है। इसके विपरीत, निर्वाह खेती का प्राथमिक उद्देश्य किसान के परिवार की तात्कालिक आवश्यकताओं और उपभोग की पूर्ति करना होता है। झूम कृषि एक प्राचीन और अस्थाई पद्धति है, जो गहन वाणिज्यिक खेती के आधुनिक मानदंडों को पूरा नहीं करती है, अतः कथन 3 गलत है। केवल प्रथम दो कथन ही कृषि के उद्देश्यों और उनके परिचालन स्वरूप के बीच के वास्तविक आर्थिक अंतर को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

140. (B) अपने केंद्रों के सापेक्ष कुछ कड़ियों वाला एक सरल नेटवर्क।
परिवहन भूगोल में कम बीटा इंडेक्स मान यह दर्शाता है कि नेटवर्क में केंद्रों की संख्या की तुलना में सड़कों या कड़ियों की संख्या बहुत कम है। यह एक सरल और कम संयोजित परिवहन ढांचे का प्रतीक है, जहाँ स्थानों के बीच सीधे संपर्क के सीमित अवसर होते हैं। ऐसा नेटवर्क आमतौर पर आर्थिक रूप से पिछड़े या विकास के शुरुआती चरणों वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। जैसे-जैसे विकास बढ़ता है, कड़ियों की संख्या बढ़ती है और बीटा इंडेक्स का मान भी बढ़ता है, जो अधिक कुशल और लचीले नेटवर्क को दर्शाता है।

141. (C) अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत।
अवस्थितिक त्रिभुज अल्फ्रेड वेबर द्वारा विकसित एक ज्यामितीय मॉडल है जिसका उपयोग उद्योग की स्थापना के लिए न्यूनतम परिवहन लागत वाला बिंदु खोजने के लिए किया जाता है। इस त्रिभुज के तीन कोने आमतौर पर दो कच्चे माल के स्रोतों और एक बाजार का प्रतिनिधित्व करते हैं। वेबर ने गणितीय गणनाओं के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया कि कारखाने को इन तीनों के बीच कहाँ स्थित होना चाहिए ताकि कच्चे माल को लाने और तैयार माल को भेजने का कुल खर्च सबसे कम हो। यह मॉडल औद्योगिक भूगोल का एक आधारभूत स्तंभ है।

142. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जीवाश्म ईंधनों का संरक्षण एक अनिवार्य वैश्विक चुनौती है क्योंकि ये संसाधन सीमित और गैर-नवीकरणीय हैं। इनका निर्माण होने में लाखों वर्षों की भूवैज्ञानिक प्रक्रिया लगती है, जबकि वर्तमान समय में इनका उपभोग अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। यदि इसी दर से इनका उपयोग जारी रहा, तो निकट भविष्य में ये भंडार पूरी तरह समाप्त हो सकते हैं। इसलिए, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और पर्यावरण को बचाने के लिए इन ईंधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को अपनाना भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

143. (A) एक ऐसा उद्योग जिसकी अवस्थिति सामग्री या बाजारों तक पहुँच से दृढ़ता से प्रभावित नहीं होती है।
स्वच्छंद उद्योग अपनी अवस्थिति के मामले में अत्यंत स्वतंत्र और लचीले होते हैं। इनके कच्चे माल अक्सर सर्वव्यापी होते हैं या उनका वजन नगण्य होता है, और तैयार उत्पाद भी उच्च मूल्य वाले एवं परिवहन में आसान होते हैं। इसके कारण, परिवहन लागत इनकी कुल उत्पादन लागत का एक बहुत छोटा हिस्सा होती है। यही कारण है कि ये उद्योग सामग्री के स्रोत या बाजार की निकटता से बंधे नहीं होते और कहीं भी स्थापित होकर कुशलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक पुर्जे और हीरा प्रसंस्करण इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

144. (B) विभिन्न कृषि प्रणालियों या क्षेत्रों के क्षेत्रों के प्रदर्शन की तुलना करना।
कृषि उत्पादकता को मापने का मुख्य उद्देश्य विभिन्न कृषि प्रणालियों, तकनीकों और क्षेत्रों की कार्यक्षमता का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करना है। यह मापन स्पष्ट करता है कि किसी विशेष

NODIA

जो अजैविक संसाधन हैं। इन दोनों सामग्रियों का पुनर्चक्रण इनके संबंधित प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। कागज का पुनर्चक्रण वनों की कटाई को कम करता है, और एल्युमीनियम का पुनर्चक्रण नए खनिजों के खनन की आवश्यकता और ऊर्जा की खपत को घटाता है। यह संधारणीय प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और पर्यावरणीय स्थिरता को सुनिश्चित करने में मदद करता है।

180. (D) केवल एक फर्म के बजाय संपूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थानिक संरचना की व्याख्या करने का प्रयास करता है।
ऑगस्ट लॉश के मॉडल को वेबर की तुलना में अधिक 'सामान्य' सिद्धांत माना जाता है क्योंकि यह केवल एक व्यक्तिगत कारखाने की अवस्थिति तक सीमित नहीं है। लॉश ने यह समझाने का प्रयास किया कि कैसे कई फर्में और उनके बाजार क्षेत्र आपस में मिलकर एक संपूर्ण आर्थिक परिदृश्य या क्षेत्रीय संरचना का निर्माण करते हैं। उनका मॉडल स्थानिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ताओं के वितरण को एक व्यापक व्यवस्था के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण केवल लागत न्यूनतम करने के बजाय संपूर्ण बाजार तंत्र की कार्यप्रणाली और उसकी स्थानिक व्यवस्था का विश्लेषण करता है।

181. (C) शस्य आवर्तन
शस्य आवर्तन या फसल चक्रण एक वैज्ञानिक कृषि पद्धति है जिसमें एक ही भूमि पर क्रमिक वर्षों में विभिन्न प्रकार की फसलें बदली जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मृदा के विशिष्ट पोषक तत्वों के अत्यधिक क्षरण को रोकना और उसकी प्राकृतिक उर्वरता को बनाए रखना है। उदाहरण के लिए, अनाज के बाद दलहन की फसल उगाने से मिट्टी में नाइट्रोजन का स्तर बना रहता है। यह पद्धति कीटों और बीमारियों के चक्र को तोड़ने में भी सहायक होती है, जिससे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम होती है और संधारणीय खेती को बढ़ावा मिलता है।

182. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पाइपलाइन परिवहन वास्तव में एक अत्यंत विशिष्ट और अनम्य साधन है क्योंकि इसे केवल तरल और गैसीय पदार्थों, जैसे तेल, प्राकृतिक गैस और पानी के परिवहन के लिए ही डिजाइन किया गया है। इसका मार्ग एक बार निर्धारित हो जाने के बाद उसे आसानी से बदला नहीं जा सकता है, और यह अन्य प्रकार के ठोस माल को ले जाने में पूरी तरह असमर्थ है। हालांकि इसकी परिचालन लागत कम और प्रवाह निरंतर होता है, लेकिन इसकी उपयोगिता केवल विशिष्ट उत्पादों और निश्चित गंतव्यों तक ही सीमित है। अतः, यह परिवहन का एक अद्वितीय लेकिन संकीर्ण माध्यम है।

183. (D) वि-औद्योगीकरण या उत्तर-औद्योगीकरण
जब कोई अर्थव्यवस्था विनिर्माण आधारित द्वितीयक क्षेत्रक से सेवाओं पर आधारित तृतीयक क्षेत्रक की ओर बढ़ती है, तो इस बदलाव को उत्तर-औद्योगीकरण या वि-औद्योगीकरण कहा जाता है। इस चरण में भौतिक वस्तुओं के उत्पादन की तुलना में सूचना, प्रौद्योगिकी, वित्त और व्यक्तिगत सेवाओं का महत्व बढ़ जाता है। यह परिवर्तन उच्च आय स्तर, उन्नत तकनीक और समाज की बदलती प्राथमिकताओं को दर्शाता है। विकसित देशों में यह एक सामान्य आर्थिक विकास का चरण है जहाँ अधिकांश कार्यबल और जीडीपी अब सेवा क्षेत्र से प्राप्त होते हैं, न कि भारी उद्योगों से।

184. (A) श्रम लागत की बचत किसी भी अतिरिक्त परिवहन लागत की बिल्कुल भरपाई कर देती है।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक सिद्धांत में 'क्रांतिक आइसोडापेन' वह विशिष्ट भौगोलिक सीमा है जहाँ किसी उद्योग को न्यूनतम परिवहन लागत वाले स्थान से सस्ते श्रम वाले स्थान पर ले जाने पर होने वाली बचत, वहां तक जाने में लगने वाले अतिरिक्त परिवहन खर्च के ठीक बराबर होती है। यदि उद्योग इस रेखा के भीतर सस्ते श्रम केंद्र की ओर बढ़ता है, तो उसे वास्तविक आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। यह रेखा यह निर्धारित करने में मदद करती है कि श्रम लागत में गिरावट कब इतनी अधिक है कि वह परिवहन व्यय में वृद्धि को उचित ठहरा सके।

185. (C) उनके उपभोग के सापेक्ष उनके पुनर्जन्म का समय।
नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय संसाधनों के बीच मूलभूत अंतर उनके पुनरुत्पादन की समय सीमा में निहित है। नवीकरणीय संसाधन, जैसे सौर ऊर्जा और वन, प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा मानवीय समय सीमा के भीतर पुनः पूरित हो जाते हैं। इसके विपरीत, गैर-नवीकरणीय संसाधन, जैसे जीवाश्म ईंधन, का निर्माण भूवैज्ञानिक कालक्रम में लाखों वर्षों में होता है। यदि इनके उपयोग की दर इनके पुनर्जन्म की दर से अधिक हो जाती है, तो ये हमेशा के लिए समाप्त हो सकते हैं। अतः, उपलब्धता की निरंतरता ही इनके वर्गीकरण का मुख्य आधार है।

186. (A) वाणिज्यिक अनाज कृषि
वाणिज्यिक अनाज कृषि विकसित दुनिया की आधुनिक कृषि प्रणालियों की एक प्रमुख पहचान है। इसकी मुख्य विशेषताओं में विशाल भूखंडों पर केवल एक ही फसल, जैसे गेहूं या मक्का का उत्पादन, और जुताई से लेकर कटाई तक के कार्यों में भारी मशीनीकरण का उपयोग शामिल है। यह प्रणाली पूरी तरह से बाजार की मांग और अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से संचालित होती है। यहाँ मानवीय श्रम की तुलना में पूंजी और तकनीक का निवेश बहुत अधिक होता है, जो इसे विकासशील देशों की निर्वाह खेती से पूरी तरह अलग करता है।

187. (D) स्थानों के बीच परिवहन मार्ग।
परिवहन भूगोल में ग्राफ सिद्धांत का उपयोग नेटवर्क की संरचना को समझने के लिए किया जाता है। इस विश्लेषण में 'कड़ियाँ' या 'एजेस' उन मार्गों या रास्तों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो विभिन्न केंद्रों या नोड्स को आपस में जोड़ती हैं। ये कड़ियाँ सड़कें, रेल लाइनें या उड़ान मार्ग हो सकती हैं। कड़ियों की संख्या और उनकी व्यवस्था ही नेटवर्क की संयोजकता और दक्षता का निर्धारण करती है। कड़ियों का सघन जाल एक सुदृढ़ परिवहन तंत्र का प्रतीक है जो आर्थिक विकास और क्षेत्रीय गतिशीलता के लिए आवश्यक आधार प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

153. (C) वन और मत्स्य पालन जैसे नवीकरणीय संसाधन।
संधारणीय प्रतिफल की अवधारणा विशेष रूप से उन नवीकरणीय संसाधनों पर लागू होती है जिनमें स्वतः पुनरुत्पादन की क्षमता होती है, जैसे वन और मत्स्य भंडार। इसका मुख्य सिद्धांत यह है कि इन संसाधनों का दोहन केवल उसी दर तक किया जाना चाहिए जिस दर पर वे प्राकृतिक रूप से पुनः विकसित हो सकें। यदि मछली पकड़ने या लकड़ी काटने की गति उनके पुनर्जन्म की गति से अधिक हो जाती है, तो ये संसाधन भविष्य में समाप्त हो सकते हैं। अतः, यह अवधारणा संसाधनों के दीर्घकालिक अस्तित्व और पारिस्थितिक संतुलन को सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

154. (A) यह शहरों से दूर सस्ती भूमि का उपयोग करता है और पशु चलकर बाजार तक जा सकते हैं।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल में विस्तृत पशुपालन को सबसे बाहरी छल्ले में रखने के पीछे दो मुख्य आर्थिक कारण थे। पहला, इस गतिविधि के लिए बहुत अधिक भूमि की आवश्यकता होती है जो केवल शहर से दूर सस्ती दरों पर उपलब्ध होती है। दूसरा, पशु स्वयं चलकर बाजार तक जा सकते हैं, जिससे उनके परिवहन के लिए किसी महंगे वाहन या बुनियादी ढांचे की आवश्यकता नहीं होती। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि भूमि की उच्च लागत और परिवहन व्यय को संतुलित करते हुए पशुपालन एक लाभप्रद व्यवसाय बना रहे।

155. (D) ग्रामीण परिदृश्य की सौंदर्य सुंदरता।
कृषि उत्पादकता एक विशुद्ध आर्थिक और तकनीकी मापदंड है जो पैदावार, श्रम दक्षता और निवेश के प्रतिफल को मापता है। प्रति हेक्टेयर पैदावार और पूंजी निवेश के मूल्य जैसे कारक स्पष्ट करते हैं कि संसाधनों का कितना प्रभावी उपयोग हुआ है। इसके विपरीत, ग्रामीण परिदृश्य की सौंदर्य सुंदरता एक व्यक्तिपरक और गुणात्मक गुण है, जिसका खेती की उत्पादन क्षमता या दक्षता से कोई सीधा संबंध नहीं है। यद्यपि सौंदर्य का महत्व पर्यटन में हो सकता है, लेकिन यह कृषि की उत्पादक शक्ति को मापने का वैज्ञानिक आधार नहीं माना जाता।

156. (A) केवल 2 और 3
ऑगस्ट लॉश का अवस्थिति सिद्धांत वेबर के न्यूनतम लागत मॉडल के विपरीत, मुख्य रूप से लाभ को अधिकतम करने पर केंद्रित है। यह मॉडल एक 'आइसोट्रोपिक सतह' की कल्पना करता है जहाँ धरातल और उपभोक्ता वितरण समान होता है, और यह मानकर चलता है कि आर्थिक अभिनेता तर्कसंगत निर्णय लेते हैं। इस स्थानिक प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप बाजार क्षेत्रों का एक विशिष्ट षट्कोणीय प्रतिरूप बनता है। चूंकि यह लागत-न्यूनतम करने वाला नहीं बल्कि लाभ-उन्मुख मॉडल है, इसलिए कथन 1 गलत है। शेष दोनों कथन इस सिद्धांत की मूल विशेषताओं को सही ढंग से दर्शाते हैं।

157. (C) बाजार-उन्मुख उद्योग (भार-वृद्धि)।
बेकरी एक विशिष्ट बाजार-उन्मुख उद्योग है क्योंकि ब्रेड बनाने की प्रक्रिया में तैयार उत्पाद (ब्रेड) प्रयुक्त कच्चे माल (आटा और पानी) की तुलना में अधिक स्थूल और वजनदार हो जाता है। इसके अतिरिक्त, ब्रेड अत्यंत कोमल और जल्दी खराब होने वाली वस्तु है, जिसे लंबी दूरी तक ले जाना कठिन और महंगा होता है। परिवहन लागत को न्यूनतम करने और उपभोक्ताओं को ताजा उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए बेकरी को हमेशा स्थानीय बाजार के पास स्थापित किया जाता है। यह भार-वृद्धि और वस्तु की नश्वरता का संयुक्त प्रभाव है।

158. (D) दूरी आवागमन के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा या लागत पैदा करती है।
परिवहन भूगोल में 'दूरी की बाधा' का अर्थ यह है कि दो स्थानों के बीच की दूरी लोगों और वस्तुओं के आवागमन के लिए एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है। जितनी अधिक दूरी होगी, यात्रा में लगने वाला समय, ईंधन का खर्च और प्रयास उतना ही अधिक होगा। यह भौतिक दूरी परिवहन की कुल लागत को बढ़ा देती है, जिससे लंबी दूरी के व्यापार और अंतःक्रियाएं प्रभावित होती हैं। उन्नत परिवहन तकनीकों का मुख्य उद्देश्य इसी दूरी की बाधा को कम करना है ताकि सुगमता और आर्थिक लाभ को बढ़ाया जा सके।

159. (A) एक वर्णनात्मक वैश्विक सूची तैयार करना।
डरवेंट व्हिटलसी के कृषि वर्गीकरण का प्राथमिक उद्देश्य विश्व भर में प्रचलित विविध कृषि पद्धतियों की एक व्यवस्थित और वर्णनात्मक सूची तैयार करना था। उन्होंने फसलों और पशुओं के साहचर्य, तकनीकी स्तर और भूमि उपयोग की तीव्रता जैसे मानदंडों के आधार पर विश्व को विभिन्न कृषि प्रदेशों में विभाजित किया। उनका कार्य केवल लाभ की भविष्यवाणी करना नहीं, बल्कि यह समझाना था कि मानवीय गतिविधियाँ कैसे विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक वातावरण के साथ तालमेल बिठाती हैं। यह कृषि भूगोल में क्षेत्रीय विविधताओं के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बना।

160. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परिवहन नेटवर्क में संयोजकता की डिग्री सीधे तौर पर इसकी समग्र दक्षता और कार्यक्षमता को प्रभावित करती है। एक उच्च संयोजित नेटवर्क में केंद्रों के बीच अधिक कड़ियाँ और वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होते हैं, जो मुख्य मार्गों पर पड़ने वाले दबाव और भीड़भाड़ को कम करते हैं। इससे न केवल यात्रा का समय बचता है बल्कि पूरे क्षेत्र की अभिगम्यता में भी उल्लेखनीय सुधार होता है। अतः, संयोजकता की मजबूती ही वह आधार है जो परिवहन तंत्र को सुगम, तीव्र और अधिक विश्वसनीय बनाती है, जिससे आर्थिक गतिविधियों को गति मिलती है।

NODIA

161. (B) चतुर्थक
एक विश्वविद्यालय प्रोफेसर जो अनुसंधान कार्य में लगा हुआ है, उसे चतुर्थक आर्थिक क्षेत्रक का हिस्सा माना जाता है। यह क्षेत्रक मुख्य रूप से ज्ञान के सृजन, सूचना के विश्लेषण और बौद्धिक सेवाओं से संबंधित है। जहाँ प्राथमिक क्षेत्रक संसाधनों का निष्कर्षण करता है और तृतीयक क्षेत्रक सामान्य सेवाएं देता है, वहीं चतुर्थक क्षेत्रक उच्च स्तरीय बौद्धिक विशेषज्ञता और वैज्ञानिक विकास पर केंद्रित होता है। अनुसंधान जैसे कार्यों के माध्यम से समाज के तकनीकी और शैक्षणिक ढांचे

को मजबूत करना ही इस विशिष्ट क्षेत्रक का प्राथमिक उद्देश्य और पहचान है।

162. (A) बाजार और दो स्थानीय कच्चे माल के स्रोत।
अल्फ्रेड वेबर के अवस्थितिक त्रिभुज मॉडल में न्यूनतम परिवहन लागत वाले बिंदु का निर्धारण बाजार और दो अलग-अलग स्थानीय कच्चे माल के स्रोतों के बीच के संबंधों का विश्लेषण करके किया जाता है। इस ज्यामितीय त्रिभुज में कारखाने की इष्टतम स्थिति वहां होती है जहाँ कच्चे माल को स्रोत से कारखाने तक लाने और तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने का कुल परिवहन व्यय सबसे कम हो। यह मॉडल स्पष्ट करता है कि कैसे विभिन्न भौतिक दूरियां और सामग्री का वजन मिलकर उद्योग की सबसे किफायती भौगोलिक स्थिति को तय करते हैं।

163. (C) प्राकृतिक गैस
पवन, ज्वार और बायोमास नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोत हैं क्योंकि ये प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निरंतर पुनः पूरित होते रहते हैं और कभी समाप्त नहीं होते। इसके विपरीत, प्राकृतिक गैस एक जीवाश्म ईंधन है जिसका निर्माण लाखों वर्षों में होता है और इसका भंडार पृथ्वी पर सीमित है। एक बार जलने के बाद इसे दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता, इसलिए यह गैर-नवीकरणीय संसाधन है। यह वर्गीकरण ऊर्जा स्रोतों की उपलब्धता और पर्यावरण पर उनके प्रभाव को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

164. (D) यह विचार कि बाजार से दूरी भूमि उपयोग को प्रभावित करती है।
जे. एच. वॉन थ्यूनेन का आर्थिक भूगोल में सबसे बड़ा योगदान यह क्रांतिकारी विचार था कि बाजार से दूरी ही कृषि भूमि उपयोग के प्रतिरूप को निर्धारित करती है। उन्होंने सिद्ध किया कि परिवहन लागत में होने वाले बदलावों के कारण किसान अलग-अलग दूरी पर अलग-अलग फसलें उगाते हैं। इस सिद्धांत ने यह स्पष्ट किया कि भूमि का मूल्य और उसका उपयोग केवल मृदा की गुणवत्ता पर नहीं, बल्कि बाजार की पहुंच पर भी निर्भर करता है। यह अवधारणा आधुनिक स्थानिक संगठन और शहरी-ग्रामीण भूमि उपयोग विश्लेषण का आधार बनी हुई है।

165. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
संसाधन-आधारित उद्योग आमतौर पर अपने कच्चे माल के स्रोतों के पास स्थित होते हैं क्योंकि उनके आगत भारी होते हैं और प्रसंस्करण के दौरान वजन कम हो जाता है, जिससे परिवहन लागत बचती है। दूसरी ओर, स्वच्छंद उद्योग, जैसे कि सॉफ्टवेयर या इलेक्ट्रॉनिक्स, हल्के कच्चे माल और नगण्य परिवहन खर्च के कारण अवस्थिति के मामले में अत्यंत स्वतंत्र होते हैं। वे बिना किसी आर्थिक नुकसान के किसी भी स्थान पर स्थित हो सकते हैं। अतः, दोनों कथन विभिन्न प्रकार के उद्योगों की स्थानिक प्रवृत्तियों और उनकी आर्थिक विवशताओं को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

166. (B) सड़क मार्ग
कम से मध्यम दूरी की यात्रा और रसद के लिए सड़क मार्ग सबसे अधिक प्रभावी माध्यम है क्योंकि यह अद्वितीय लचीलापन और घर-घर तक सीधी सेवा प्रदान करता है। अन्य परिवहन साधनों, जैसे रेल या वायुमार्ग, को टर्मिनल स्टेशनों की आवश्यकता होती है, जबकि सड़क परिवहन छोटे गाँवों और दुर्गम क्षेत्रों तक सीधे पहुँच सकता है। यह उपयोगकर्ताओं को अपनी सुविधा के अनुसार समय और मार्ग चुनने की स्वतंत्रता देता है। इसी कारण स्थानीय व्यापार और दैनिक आवागमन के लिए सड़क मार्ग ही सबसे सुलभ और अनिवार्य साधन बना हुआ है।

167. (D) लाभ अधिकतम हो।
ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य उस भौगोलिक स्थान की खोज करना है जहाँ एक व्यावसायिक इकाई अपना लाभ अधिकतम कर सके। वेबर के विपरीत, जिन्होंने केवल लागत को न्यूनतम करने पर ध्यान दिया, लॉश ने राजस्व प्राप्ति और बाजार क्षेत्र के विस्तार को अधिक महत्व दिया। उन्होंने तर्क दिया कि इष्टतम अवस्थिति वह है जहाँ उत्पादन की लागत और बिक्री से प्राप्त आय के बीच का अंतर सबसे अधिक हो। यह मॉडल स्थानिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता मांग के व्यवहार को समझने के लिए एक व्यापक आर्थिक ढांचा प्रदान करता है।

168. (A) उच्च जनसंख्या घनत्व और छोटे खेत।
गहन निर्वाह कृषि मुख्य रूप से उन विकासशील क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक है और प्रति व्यक्ति कृषि भूमि बहुत कम है। इस प्रणाली में भूमि के प्रत्येक छोटे टुकड़े से अधिकतम पैदावार प्राप्त करने के लिए प्रचुर मात्रा में मानवीय श्रम और पारंपरिक सिंचाई तकनीकों का उपयोग किया जाता है। मुख्य उद्देश्य परिवार का भरण-पोषण करना होता है, इसलिए खाद्यान्न फसलों, विशेषकर चावल, को प्राथमिकता दी जाती है। यह प्रणाली उन क्षेत्रों की खाद्य सुरक्षा और सामाजिक स्थिरता बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

169. (C) यह एक निश्चित भंडार में मौजूद है जो उपयोग के माध्यम से समाप्त हो जाता है।
गैर-नवीकरणीय संसाधनों की मुख्य विशेषता यह है कि वे पृथ्वी पर एक निश्चित और सीमित मात्रा में ही मौजूद हैं। इनके निर्माण की प्रक्रिया भूवैज्ञानिक समय सीमा में अत्यंत धीमी होती है, जिसके कारण निरंतर उपयोग से इनके भंडार धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं। कोयला, खनिज तेल और धातुएं इसके प्रमुख उदाहरण हैं। चूंकि ये मानवीय कालखंड के भीतर पुनः पूरित नहीं हो सकते, इसलिए इनका अंधाधुंध दोहन भविष्य में ऊर्जा और कच्चे माल के गंभीर संकट को जन्म दे सकता है। इनका संरक्षण वर्तमान विकास की अनिवार्यता है।

170. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
आर्थिक भूगोल के महान विचारकों ने स्थानिक संगठन को समझने के लिए विशिष्ट योगदान दिए हैं। अल्फ्रेड वेबर को उद्योगों के न्यूनतम लागत सिद्धांत के लिए जाना जाता है, जबकि ऑगस्ट लॉश ने लाभ अधिकतमकरण का मॉडल प्रस्तुत

Click Here to Buy book on Amazon

किया। जे. एच. वॉन थ्यूनेन ने बाजार से दूरी के आधार पर कृषि अवस्थिति की व्याख्या की। डरवेंट व्हिटलसी ने विश्व की विविध कृषि प्रणालियों का वैज्ञानिक और विस्तृत वर्गीकरण किया। यह सुमेलन भूगोल के शास्त्रीय सिद्धांतों और उनके प्रतिपादकों के बीच के सही संबंधों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

171. (D) चतुर्थक
चार-क्षेत्रक आर्थिक मॉडल के अनुसार, विकास के अंतिम और सबसे उन्नत चरण में चतुर्थक क्षेत्रक का प्रभुत्व हो जाता है। यह चरण एक 'ज्ञान अर्थव्यवस्था' की ओर संक्रमण को दर्शाता है, जहाँ भौतिक उत्पादन के बजाय सूचना, अनुसंधान और बौद्धिक सेवाओं का महत्व सबसे अधिक होता है। इस स्तर पर समाज की अधिकांश आय और रोजगार उच्च तकनीकी सेवाओं, शिक्षा और वैज्ञानिक नवाचार से प्राप्त होते हैं। यह क्षेत्रक न केवल आर्थिक विकास को नई दिशा देता है, बल्कि भविष्य की तकनीकों और नीतियों के निर्धारण में भी निर्णायक भूमिका निभाता है।

172. (B) संयोजनों की संख्या बहुत बड़ी और मानचित्रण के लिए जटिल हो सकती है।
जे. सी. वीवर की सांख्यिकीय शस्य संयोजन विधि की एक मुख्य आलोचना यह है कि यह कभी-कभी बहुत अधिक संख्या में संयोजन उत्पन्न कर देती है। जब किसी बड़े क्षेत्र में अनेक फसलें उगाई जाती हैं, तो यह पद्धति इतनी जटिल हो जाती है कि उसे मानचित्र पर स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना और उसका विश्लेषण करना कठिन हो जाता है। यद्यपि यह विधि गणितीय रूप से सटीक है, लेकिन व्यावहारिक रूप से अत्यधिक विवरणों के कारण क्षेत्रीय प्रतिरूप की स्पष्ट पहचान करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जो इसके उपयोग को सीमित करता है।

173. (C) में परिवहन के साधन में परिवर्तन शामिल होता है, जैसे जहाज से ट्रेन।
स्थोक-भंग बिंदु उन उद्योगों के लिए अत्यंत आकर्षक होता है जहाँ माल को परिवहन के एक माध्यम से दूसरे माध्यम में स्थानांतरित करना अनिवार्य होता है। ऐसे स्थानों पर माल के उतारने और चढ़ाने की प्रक्रिया के दौरान उसे संसाधित करना आसान होता है, जिससे अतिरिक्त परिवहन और हैंडलिंग लागत बच जाती है। यही कारण है कि प्रमुख बंदरगाह और बड़े रेल जंक्शन अक्सर विशाल औद्योगिक केंद्रों में बदल जाते हैं। यह अवस्थिति कच्चे माल के प्रसंस्करण और वितरण के लिए एक रणनीतिक और आर्थिक रूप से लाभप्रद स्थान प्रदान करती है।

174. (A) 1, 2 और 3
आर्थिक भूगोल के शास्त्रीय मॉडल विशिष्ट उद्देश्यों पर आधारित हैं। अल्फ्रेड वेबर ने उद्योगों के लिए न्यूनतम लागत वाला स्थान खोजने का मार्ग दिखाया, जबकि ऑगस्ट लॉश ने बाजार क्षेत्र के विस्तार के माध्यम से लाभ को अधिकतम करने का सिद्धांत दिया। वॉन थ्यूनेन का मॉडल भूमि लगान और परिवहन लागत के बीच संतुलन बिठाकर कृषि प्रतिरूप की व्याख्या करता है। ये तीनों सिद्धांत स्थानिक आर्थिक गतिविधियों को समझने के लिए अनिवार्य आधार प्रदान करते हैं और आधुनिक भूगोल में इनकी प्रासंगिकता निरंतर बनी हुई है। अतः, सभी कथन पूर्णतः सत्य हैं।

175. (A) दूरी की बाधा।
परिवहन नेटवर्क का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य भौगोलिक दूरी की बाधा को पार करना है। दूरी लोगों और वस्तुओं के बीच एक स्वाभाविक अवरोध पैदा करती है, जो सामाजिक और आर्थिक अंतःक्रियाओं को सीमित करती है। परिवहन तंत्र इस दूरी को पार करने में लगने वाले समय, प्रयास और लागत को कम करता है, जिससे बाजार सुलभ होते हैं और संसाधनों का वितरण सुगम होता है। यह आर्थिक एकीकरण और क्षेत्रीय विकास का मुख्य वाहक है, जो दूर-दराज के क्षेत्रों को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जोड़ता है।

176. (B) बैंकिंग सेवाएं
बैंकिंग सेवाएं तृतीयक क्षेत्रक के अंतर्गत आती हैं क्योंकि ये समाज को वित्तीय प्रबंधन और लेन-देन की महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करती हैं। तृतीयक क्षेत्रक में किसी भौतिक वस्तु का निर्माण नहीं होता, बल्कि यह अमूर्त सेवाओं के प्रावधान पर केंद्रित है जो अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए अनिवार्य हैं। परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ बैंकिंग भी आधुनिक समाज का एक आधारभूत सेवा क्षेत्र है। इसके विपरीत, खनन और खेती प्राथमिक क्षेत्रक का हिस्सा हैं, और विनिर्माण द्वितीयक क्षेत्रक की मुख्य गतिविधि माना जाता है।

177. (B) तांबा अयस्क भारी होता है और गलाने की प्रक्रिया में इसका भार कम हो जाता है।
तांबा गलाना एक विशिष्ट भार-ह्रास वाला उद्योग है। तांबे के अयस्क में शुद्ध तांबे की मात्रा बहुत कम होती है, जिसके कारण अयस्क का भार तैयार उत्पाद की तुलना में बहुत अधिक होता है। इस भारी और अशुद्ध अयस्क को लंबी दूरी तक ले जाने की परिवहन लागत अत्यंत अधिक होगी। इसलिए, कुल परिवहन व्यय को कम करने और उत्पादन को किफायती बनाने के लिए तांबा गलाने वाले कारखानों को हमेशा खानों के पास ही स्थापित किया जाता है। यह अवस्थिति आर्थिक दक्षता और रसद प्रबंधन के दृष्टिकोण से सबसे अनुकूल होती है।

178. (A) भूमि के मूल्य और बाजार से दूरी के बीच एक व्युत्क्रम संबंध।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल में संकेंद्रित छल्लों का निर्माण भूमि के मूल्य और बाजार से दूरी के बीच के संबंध पर आधारित है। बाजार के समीप भूमि सबसे महंगी होती है और परिवहन लागत न्यूनतम होती है, जिससे वहां अधिक मूल्य वाली और गहन खेती की जाती है। जैसे-जैसे बाजार से दूरी बढ़ती है, परिवहन खर्च बढ़ता जाता है और भूमि का लगान कम होता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप भूमि का उपयोग कम गहन होता जाता है। यह आर्थिक सिद्धांत ही विभिन्न कृषि क्षेत्रों के स्थानिक वितरण की सटीक व्याख्या करता है।

179. (C) जैविक और अजैविक
कागज का निर्माण पेड़ों की लकड़ी से होता है, जो एक जैविक संसाधन है, जबकि एल्युमीनियम खनिजों से प्राप्त होता है,

NODIA

क्षेत्र ने उपलब्ध संसाधनों, जैसे भूमि और श्रम, का उपयोग करके कितनी पैदावार प्राप्त की है। इससे नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद मिलती है कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है और कहाँ तकनीक का सफल उपयोग हो रहा है। यह तुलनात्मक दृष्टिकोण कृषि विकास की रणनीतियों को प्रभावी ढंग से तैयार करने के लिए एक अनिवार्य वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

145. (B) बाजारों से समृद्ध हैं और जिनमें उच्च मांग है।
ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति मॉडल के अनुसार, फर्में स्वाभाविक रूप से उन क्षेत्रों की ओर आकर्षित होती हैं जहाँ उपभोक्ताओं का जमावड़ा अधिक होता है और वस्तुओं की मांग उच्च होती है। लॉश ने माना कि व्यवसाय की वास्तविक सफलता राजस्व को अधिकतम करने में निहित है, जो केवल एक बड़े और सक्रिय बाजार क्षेत्र में ही संभव है। इसलिए, उद्योगपतियों के लिए वह स्थान सबसे अनुकूल होता है जहाँ वे अधिकतम ग्राहकों तक अपनी पहुँच बना सकें। यह बाजार-उन्मुख दृष्टिकोण आर्थिक भूगोल में मांग और स्थानिक प्रतिस्पर्धा के महत्व को रेखांकित करता है।

146. (A) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
प्राथमिक क्षेत्रक में वास्तव में वे गतिविधियाँ शामिल हैं जो सीधे प्रकृति से कच्चे माल का निष्कर्षण करती हैं, जैसे खेती, खनन और मत्स्य पालन। हालांकि, बैंकिंग, पर्यटन और शिक्षा जैसी सेवा-आधारित गतिविधियाँ द्वितीयक नहीं, बल्कि तृतीयक क्षेत्रक का हिस्सा हैं। द्वितीयक क्षेत्रक केवल विनिर्माण और प्रसंस्करण से संबंधित है, जहाँ कच्चे माल को वस्तुओं में बदला जाता है। अतः, कथन II आर्थिक क्षेत्रकों के वैज्ञानिक वर्गीकरण के अनुरूप नहीं है। केवल प्रथम कथन ही प्राथमिक क्षेत्र के वास्तविक स्वरूप और उसके कार्यों को सही ढंग से परिभाषित करता है।

147. (C) उद्योग को कच्चे माल के स्रोत और बाजार के बीच अवस्थिति की स्वतंत्रता है।
वेबर के सिद्धांत में, जब पदार्थ सूचकांक का मान बिल्कुल 1 होता है, तो इसका अर्थ है कि कच्चे माल का कुल वजन तैयार उत्पाद के वजन के बराबर है। ऐसी स्थिति में, कच्चे माल को कारखाने तक लाने और तैयार माल को बाजार तक ले जाने की परिवहन लागत में कोई अंतर नहीं होता है। इसके परिणामस्वरूप, उद्योग को कच्चे माल के स्रोत पर, बाजार पर या उनके बीच के किसी भी स्थान पर स्थापित करने की समान आर्थिक स्वतंत्रता होती है। यह स्थिति अवस्थिति निर्णयों में अधिकतम लचीलापन प्रदान करती है।

148. (D) एक किसान बारी-बारी से मक्का, सोयाबीन और अल्फाल्फा लगाता है।
शस्य विविविधीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण वह पद्धति है जिसमें एक किसान अपनी भूमि पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाता है। बारी-बारी से मक्का, सोयाबीन और अल्फाल्फा लगाना न केवल मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि किसी एक फसल की विफलता से होने वाले जोखिम को भी कम करता है। यह एकल कृषि के विपरीत एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो कृषि आय को स्थिरता प्रदान करता है और पर्यावरण के अनुकूल होता है। यह विविधता मृदा के स्वास्थ्य और किसान की आर्थिक सुरक्षा दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी है।

149. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
आर्थिक भूगोल के प्रमुख सिद्धांतों का श्रेय विशिष्ट भूगोलवेत्ताओं को दिया जाता है। वॉन थ्यूनेन ने अवस्थितिक लगान के आधार पर कृषि क्षेत्रों की व्याख्या की, जबकि अल्फ्रेड वेबर ने उद्योगों की स्थापना के लिए न्यूनतम लागत का मार्ग दिखाया। ऑगस्ट लॉश ने बाजार क्षेत्रों के विश्लेषण के माध्यम से लाभ अधिकतमकरण की अवधारणा प्रस्तुत की। जे. सी. वीवर ने शस्य संयोजन की पहचान के लिए सांख्यिकीय पद्धति का विकास किया। यह सुमेलन भूगोल के शास्त्रीय योगदानों और उनके द्वारा प्रतिपादित मूल वैचारिक ढांचों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

150. (B) प्रशीतन, वैश्विक बाजार और कॉर्पोरेट खेती।
वॉन थ्यूनेन का मॉडल उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में विकसित किया गया था, इसलिए यह आधुनिक तकनीकी प्रगति जैसे प्रशीतन और त्वरित परिवहन की उपेक्षा करता है। प्रशीतन ने आज जल्दी खराब होने वाले उत्पादों को दूर-दूर तक ले जाना संभव बना दिया है, जिससे वॉन थ्यूनेन के संकेंद्रित छल्लों की अनिवार्यता कम हो गई है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक व्यापार और बड़ी कॉर्पोरेट खेती ने स्थानीय बाजार की सीमाओं को तोड़ दिया है। ये समकालीन कारक अब कृषि प्रतिरूप को निर्धारित करने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो इस पुराने मॉडल की मुख्य सीमा है।

151. (D) कई उद्योगों में शीतलन के लिए उपयोग किया जाने वाला पानी।
'स्वच्छंद' कच्चा माल वह होता है जो लगभग हर जगह समान रूप से उपलब्ध होता है और जिसकी कोई विशिष्ट परिवहन लागत नहीं होती। पानी इसका सबसे सटीक उदाहरण है क्योंकि यह अधिकांश औद्योगिक क्षेत्रों में प्रचुरता से मिलता है और उद्योग को किसी विशेष स्थान से नहीं बांधता है। इसके विपरीत, लौह अयस्क, गन्ना और बॉक्साइट जैसे कच्चे माल केवल विशिष्ट स्थानों पर ही पाए जाते हैं और बहुत भारी होते हैं, जिसके कारण वे उद्योगों को अपने स्रोतों की ओर मजबूती से आकर्षित करते हैं। पानी की उपलब्धता अवस्थिति निर्णयों में लचीलापन प्रदान करती है।

152. (A) सूचना क्रांति
चतुर्थक क्षेत्रक की तीव्र वृद्धि मुख्य रूप से सूचना क्रांति का परिणाम है। बीसवीं सदी के अंत में कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल संचार के आने से डेटा और ज्ञान का महत्व शारीरिक श्रम और विनिर्माण से कहीं अधिक बढ़ गया। इस क्रांति ने सूचना प्रसंस्करण, सॉफ्टवेयर विकास और उच्च स्तरीय अनुसंधान के नए अवसर सृजित किए। चतुर्थक क्षेत्रक अब आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का सबसे गतिशील हिस्सा बन गया है, जो किसी भी राष्ट्र की बौद्धिक क्षमता और तकनीकी उन्नति को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

188. (B) सॉफ्टवेयर परामर्श
सॉफ्टवेयर परामर्श एक उच्च ज्ञान-आधारित गतिविधि है जो चतुर्थक क्षेत्रक के अंतर्गत आती है। यह सूचना के प्रसंस्करण और बौद्धिक विशेषज्ञता पर आधारित है। इसके विपरीत, लकड़ी काटना (वानिकी), उत्खनन और पशुपालन सीधे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और संग्रहण से संबंधित हैं, जो इन्हें प्राथमिक क्षेत्रक की श्रेणी में रखते हैं। प्राथमिक गतिविधियाँ समाज की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराती हैं, जबकि सॉफ्टवेयर परामर्श जैसी सेवाएं आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था का हिस्सा हैं जहाँ मानसिक दक्षता का महत्व शारीरिक श्रम से कहीं अधिक होता है।

189. (C) बाजार-उन्मुख
बेकरी उद्योग एक आदर्श बाजार-उन्मुख गतिविधि है क्योंकि इसके तैयार उत्पाद, जैसे ब्रेड और केक, प्रयुक्त कच्चे माल (आटा) की तुलना में अधिक स्थूल, भारी और शीघ्र नष्ट होने वाले होते हैं। परिवहन के दौरान ब्रेड के खराब होने या क्षतिग्रस्त होने का खतरा अधिक होता है, और उपभोक्ताओं को ताजी वस्तुओं की आवश्यकता होती है। अतः, तैयार उत्पाद को ले जाने की उच्च लागत और नश्वरता के कारण बेकरी को हमेशा स्थानीय बाजार के पास स्थापित करना सबसे तर्कसंगत और आर्थिक रूप से लाभप्रद निर्णय होता है।

190. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
वॉन थ्यूनेन और अल्फ्रेड वेबर दोनों के शास्त्रीय अवस्थिति मॉडल एक 'आइसोट्रोपिक मैदान' की काल्पनिक धारणा पर आधारित हैं। इसका अर्थ है एक ऐसा समतल धरातल जहाँ जलवायु, मृदा की उर्वरता और परिवहन की सुविधा हर स्थान पर और हर दिशा में बिल्कुल समान होती है। यह सरलीकृत धारणा भूगोलवेत्ताओं को अन्य जटिल भौगोलिक बाधाओं की चिंता किए बिना केवल आर्थिक कारकों, जैसे दूरी और परिवहन लागत, के प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है। यद्यपि यह अवास्तविक है, लेकिन यह सिद्धांतों के निर्माण के लिए एक अनिवार्य आधार प्रदान करती है।

191. (A) अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत
पदार्थ सूचकांक का सूत्र अल्फ्रेड वेबर द्वारा उनके औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत के एक प्रमुख अंग के रूप में विकसित किया गया था। इस सूचकांक का उपयोग यह मापने के लिए किया जाता है कि उत्पादन प्रक्रिया के दौरान कच्चे माल के वजन में कितनी कमी या वृद्धि होती है। इसकी गणना कच्चे माल के भार को तैयार उत्पाद के भार से विभाजित करके की जाती है। यह माप भूगोलवेत्ताओं को यह तय करने में मदद करता है कि कारखाने को कच्चे माल के स्रोत के पास होना चाहिए या बाजार के पास, ताकि कुल परिवहन खर्च न्यूनतम रहे।

192. (A) 1, 2 और 3
आर्थिक क्षेत्रकों का वर्गीकरण उनकी कार्यप्रकृति के आधार पर स्पष्ट है। द्वितीयक क्षेत्रक विनिर्माण और औद्योगिक गतिविधियों से संबंधित है जहाँ कच्चे माल का रूप बदला जाता है। तृतीयक क्षेत्रक सेवाओं का प्रावधान करता है जो समाज के सुचारु संचालन के लिए आवश्यक हैं। खनन एक प्राथमिक क्षेत्रक गतिविधि है क्योंकि यह सीधे पृथ्वी से प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण पर आधारित है। ये तीनों क्षेत्रक मिलकर किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की संरचना का निर्माण करते हैं और उनके बीच का संतुलन विकास के स्तर को दर्शाता है। अतः सभी कथन सत्य हैं।

193. (B) संसाधनों की कार्यात्मक या गतिशील अवधारणा।
संसाधनों की कार्यात्मक या गतिशील अवधारणा यह मानती है कि कोई भी पदार्थ अपने आप में संसाधन नहीं है, बल्कि वह मानवीय ज्ञान और तकनीक के माध्यम से संसाधन बनता है। जब मनुष्य किसी पदार्थ की उपयोगिता को पहचान लेता है और उसे उपयोग करने की क्षमता विकसित कर लेता है, तभी वह एक मूल्यवान संसाधन कहलाता है। यह विचारधारा यह स्पष्ट करती है कि संसाधन स्थिर नहीं हैं, बल्कि मानव सभ्यता की आवश्यकताओं और तकनीकी प्रगति के साथ निरंतर विकसित और पुनर्परिभाषित होते रहते हैं।

194. (A) बिना किसी अछूते क्षेत्र के किसी विशिष्ट क्षेत्र की सबसे कुशलतापूर्वक सेवा करना।
ऑगस्ट लॉश के अनुसार, बाजार क्षेत्रों का षट्कोणीय आकार एक अनिवार्य ज्यामितीय समाधान है जो कुशलता और पूर्ण कवरेज को संतुलित करता है। षट्भुज ही वह एकमात्र आकृति है जो पूरे भौगोलिक क्षेत्र को बिना किसी खाली स्थान छोड़े या आपस में टकराए पूरी तरह कवर कर सकती है। यदि बाजार क्षेत्र वृत्ताकार होते, तो उनके बीच कुछ क्षेत्र अछूते रह जाते, और वर्गाकार होने पर कोनों की दूरी केंद्र से बहुत अधिक हो जाती। अतः, षट्कोणीय प्रतिरूप परिवहन लागत को न्यूनतम रखते हुए अधिकतम उपभोक्ताओं तक पहुंच सुनिश्चित करता है।

195. (C) कुल निवेश मूल्य के प्रति इकाई उत्पादन (दक्षता)।
कृषि दक्षता का मापन विभिन्न मशीनीकरण स्तरों वाले खेतों की तुलना करने के लिए सबसे प्रभावी उपकरण है। यह मापता है कि उपलब्ध संसाधनों, जैसे पूंजी, मशीनरी और श्रम, का कितनी कुशलता से उपयोग करके उत्पादन प्राप्त किया गया है। केवल कुल पैदावार यह स्पष्ट नहीं करती कि लागत कितनी थी। दक्षता के माध्यम से यह पता चलता है कि उन्नत मशीनों के उपयोग ने वास्तव में प्रति इकाई निवेश के प्रतिफल को बढ़ाया है या नहीं। यह वैज्ञानिक तुलना किसानों को संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए प्रेरित करती है।

196. (D) वायु
वायु परिवहन निस्संदेह आवागमन का सबसे महंगा साधन है, विशेष रूप से जब इसे प्रति टन-किलोमीटर की लागत के आधार पर मापा जाता है। इसके उच्च व्यय का कारण विमानों के संचालन में प्रयुक्त होने वाला महंगा ईंधन, उच्च तकनीकी रखरखाव और सीमित वहन क्षमता है। हालांकि यह सबसे तीव्र गति प्रदान करता है, लेकिन भारी और थोक सामानों के लिए यह आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं होता। वायु परिवहन का उपयोग मुख्य रूप से उन वस्तुओं के लिए किया जाता है जो अत्यंत कीमती, हल्की या बहुत जल्दी खराब होने वाली होती हैं।

NODIA

197. (C) शीघ्र नष्ट होने वाले हैं और उनकी परिवहन लागत उच्च है।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल के अनुसार, बाजार बागवानी और दुग्ध कृषि को सबसे भीतरी छल्ले में रखा गया है क्योंकि दूध, ताजे फल और सब्जियां अत्यंत कोमल और शीघ्र नष्ट होने वाले उत्पाद हैं। इन वस्तुओं को सुरक्षित और ताजी अवस्था में बाजार तक पहुँचाने के लिए त्वरित परिवहन की आवश्यकता होती है, जो बहुत महंगा होता है। बाजार के समीप होने से परिवहन का समय और खर्च दोनों कम हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, ये उत्पाद बाजार में उच्च मूल्य प्राप्त करते हैं, जिससे किसान शहर के पास की महंगी भूमि का लगान चुकाने में सक्षम होते हैं।

198. (B) कच्चे माल के स्रोत के पास।
वेबर के सिद्धांत के अनुसार, 'भार-ह्रास' वाले उद्योगों में कच्चे माल का वजन तैयार उत्पाद की तुलना में बहुत अधिक होता है। यदि ऐसे उद्योगों को बाजार के पास स्थापित किया जाता है, तो भारी और अनुपयोगी कच्चे माल को लंबी दूरी तक ले जाने में बहुत अधिक परिवहन व्यय होगा। अतः, इस अनावश्यक खर्च को बचाने के लिए कारखाने को कच्चे माल के स्रोत के निकट ही स्थापित करना सबसे तर्कसंगत निर्णय होता है। चीनी मिलें इसका प्रमुख उदाहरण हैं, जहाँ भारी गन्ने को स्रोत पर ही संसाधित करना किफायती होता है।

199. (D) संसाधन संरक्षण।
संसाधन संरक्षण का मूल सिद्धांत प्राकृतिक संपदा का विवेकपूर्ण और नियोजित उपयोग है, ताकि वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी उनकी उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। यह अंधाधुंध दोहन और बर्बादी को रोकने पर बल देता है। इसमें संसाधनों के संधारणीय उपयोग, पुनर्चक्रण और वैकल्पिक स्रोतों के विकास को प्राथमिकता दी जाती है। यह केवल उपयोग को रोकना नहीं है, बल्कि यह प्रबंधन का एक ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो पर्यावरणीय स्थिरता और दीर्घकालिक आर्थिक विकास के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

200. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण उनके कार्यों के आधार पर किया जाता है। गेहूं उगाने वाला किसान सीधे संसाधनों से जुड़ा होने के कारण प्राथमिक क्षेत्रक में है। ब्रेड बनाने वाला बेकर कच्चे माल का प्रसंस्करण करने के कारण द्वितीयक क्षेत्रक में आता है। पंसारी ब्रेड बेचकर सेवा प्रदान करता है, जो तृतीयक क्षेत्रक का हिस्सा है। खाद्य नीति विश्लेषक उच्च स्तरीय बौद्धिक कार्य और अनुसंधान करता है, जिसे चतुर्थक क्षेत्रक में रखा जाता है। यह सुमेलन अर्थव्यवस्था की जटिल संरचना और विभिन्न स्तरों पर होने वाले कार्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

201. (C) अभिगम्यता किसी स्थान तक पहुँचने की सुगमता के बारे में है, जबकि संयोजकता कड़ियों की प्रत्यक्षता के बारे में है।
परिवहन भूगोल में अभिगम्यता और संयोजकता के बीच सूक्ष्म लेकिन स्पष्ट अंतर है। अभिगम्यता इस बात का माप है कि किसी विशेष गंतव्य तक अन्य स्थानों से कितनी आसानी, समय और कम लागत में पहुँचा जा सकता है। इसके विपरीत, संयोजकता इस बात का विश्लेषण करती है कि एक नेटवर्क के भीतर विभिन्न केंद्र एक-दूसरे से कितनी सीधी और प्रत्यक्ष कड़ियों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। एक उच्च संयोजित नेटवर्क आमतौर पर बेहतर अभिगम्यता प्रदान करता है, लेकिन ये दोनों अवधारणाएं परिवहन तंत्र की दक्षता के अलग-अलग पहलुओं को स्पष्ट करती हैं।

202. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाओं में प्राथमिक क्षेत्रक का योगदान और उसमें कार्यरत कार्यबल का प्रतिशत अत्यंत कम होता है। इसका मुख्य कारण कृषि में बड़े पैमाने पर हुआ मशीनीकरण और आधुनिक तकनीकों का उपयोग है, जिसने मानवीय श्रम की आवश्यकता को काफी कम कर दिया है। इसके साथ ही, इन देशों में आर्थिक गतिविधियों का केंद्र विनिर्माण और सेवाओं की ओर स्थानांतरित हो गया है, जहाँ अधिक मूल्यवर्धन और उच्च आय के अवसर उपलब्ध हैं। यह संरचनात्मक बदलाव आर्थिक विकास के एक उच्च स्तर को दर्शाता है जहाँ सेवा क्षेत्रक का प्रभुत्व होता है।

203. (D) भार-ह्रास वाली
वेबर के औद्योगिक मॉडल में, जब पदार्थ सूचकांक का मान 1 से अधिक होता है, तो इसका अर्थ है कि विनिर्माण प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल का वजन तैयार उत्पाद के वजन से अधिक है। इसे 'भार-ह्रास' वाली प्रक्रिया कहा जाता है। ऐसी स्थिति में, कारखाने को कच्चे माल के स्रोत के पास लगाना ही सबसे अधिक लाभप्रद होता है क्योंकि भारी और स्थूल कच्चे माल के परिवहन पर होने वाला खर्च तैयार उत्पाद को ले जाने की तुलना में बहुत अधिक होता है। यह सिद्धांत विशेष रूप से भारी खनिजों और कृषि प्रसंस्करण उद्योगों पर लागू होता है।

204. (B) मांग और राजस्व
ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति मॉडल ने वेबर के सिद्धांत में एक क्रांतिकारी नवाचार करते हुए मांग और राजस्व के पक्ष को शामिल किया। वेबर का ध्यान केवल उत्पादन और परिवहन लागत को न्यूनतम करने पर था, जबकि लॉश ने तर्क दिया कि एक उद्योग को वहां स्थित होना चाहिए जहाँ वह अधिकतम उपभोक्ताओं की सेवा कर सके और अधिक लाभ कमा सके। उन्होंने यह सिद्ध किया कि बाजार क्षेत्र का विस्तार और राजस्व प्राप्ति की संभावना ही अवस्थिति निर्णयों का वास्तविक आधार होनी चाहिए। इस बदलाव ने अवस्थिति विश्लेषण को अधिक व्यापक और यथार्थवादी बनाया।

205. (C) उच्च उपज वाली किस्म के बीजों, उर्वरकों और सिंचाई का उपयोग।
हरित क्रांति ने मुख्य रूप से आधुनिक कृषि निवेशों के समन्वित उपयोग के माध्यम से उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि की। उच्च उपज वाली किस्म के बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उन्नत सिंचाई प्रणालियों के संगम ने पारंपरिक खेती को एक वैज्ञानिक और लाभदायक व्यवसाय में बदल दिया। इसने न केवल प्रति हेक्टेयर पैदावार को कई गुना बढ़ाया, बल्कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी निर्णायक भूमिका निभाई। यह तकनीकी बदलाव कृषि के आधुनिकीकरण और वैश्विक

Click Here to Buy book on Amazon

स्तर पर भूखमरी की समस्या के समाधान के लिए एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ है।

206. (D) हीरा प्रसंस्करण
हीरा प्रसंस्करण एक स्वच्छंद उद्योग का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है क्योंकि इसमें प्रयुक्त होने वाला कच्चा माल (कच्चे हीरे) अत्यंत हल्का और बहुत ही कीमती होता है। इस उद्योग की कुल लागत में परिवहन खर्च का हिस्सा नगण्य होता है, जिसके कारण यह उद्योग किसी विशिष्ट कच्चे माल के स्रोत या बाजार की निकटता से बंधा नहीं होता है। इसके विपरीत, तेल शोधन, सीमेंट और चीनी उद्योग अपनी भारी सामग्री और उच्च परिवहन लागत के कारण विशिष्ट स्थानों पर ही स्थापित किए जाते हैं। हीरा उद्योग मुख्य रूप से कुशल श्रम और उन्नत तकनीक पर निर्भर करता है।

207. (A) कई प्रतिस्पर्धी बाजार
वॉन थ्यूनेन के मूल कृषि मॉडल की एक प्रमुख धारणा यह है कि विलगित राज्य के केंद्र में केवल एक ही बाजार शहर होता है। उनके मॉडल में कई प्रतिस्पर्धी बाजारों की कोई कल्पना नहीं की गई थी, क्योंकि उनका उद्देश्य यह समझाना था कि एक ही केंद्र से दूरी भूमि उपयोग को कैसे प्रभावित करती है। अन्य धारणाएं जैसे एकसमान मैदान, एक ही केंद्रीय बाजार और परिवहन के सीमित साधनों का अस्तित्व उनके सिद्धांत के आधारभूत स्तंभ हैं। कई बाजारों का विचार बाद के संशोधित और अधिक जटिल स्थानिक मॉडलों में विकसित हुआ।

208. (B) अपशिष्ट और कमी से बचने के लिए कुशल और संधारणीय उपयोग।
संसाधन संरक्षण का मुख्य बल प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण, कुशल और संधारणीय उपयोग पर है। इसका उद्देश्य संसाधनों के अनावश्यक अपशिष्ट को रोकना और उनके प्रबंधन को इस तरह नियोजित करना है कि वे लंबे समय तक मानव समाज के लिए उपलब्ध रहें। यह संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को हतोत्साहित करता है और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के प्रति जिम्मेदारी को बढ़ावा देता है। यह केवल परिरक्षण नहीं है, बल्कि यह विकास और प्रकृति के बीच एक संतुलन बनाने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो दीर्घकालिक समृद्धि सुनिश्चित करता है।

209. (B) प्रति केंद्र कड़ियों की औसत संख्या, जो नेटवर्क की जटिलता को दर्शाती है।
परिवहन भूगोल में बीटा इंडेक्स एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय माप है जो किसी नेटवर्क की सघनता और संयोजकता को दर्शाता है। इसकी गणना नेटवर्क में मौजूद कुल कड़ियों की संख्या को केंद्रों की कुल संख्या से विभाजित करके की जाती है। बीटा इंडेक्स का उच्च मान यह संकेत देता है कि नेटवर्क में प्रत्येक केंद्र के लिए अधिक मार्ग उपलब्ध हैं, जो इसे अधिक लचीला और कुशल बनाते हैं। यह सूचकांक क्षेत्रीय परिवहन नियोजन में नेटवर्क की मजबूती का मूल्यांकन करने और विभिन्न क्षेत्रों के बुनियादी ढांचे की तुलना करने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

210. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
आरा मिल एक विशिष्ट संसाधन-आधारित उद्योग है क्योंकि इसमें प्रयुक्त होने वाले लट्ठे अत्यंत भारी होते हैं और प्रसंस्करण के दौरान वजन काफी कम हो जाता है, जिससे इसे वनों के पास लगाना किफायती होता है। इसके विपरीत, कंप्यूटर चिप निर्माण एक स्वच्छंद उद्योग है क्योंकि इसका कच्चा माल नगण्य वजन का होता है और परिवहन लागत इसकी अवस्थिति को प्रभावित नहीं करती है। यह उद्योग तकनीकी विशेषज्ञता पर आधारित है और कहीं भी स्थित हो सकता है। अतः, दोनों कथन विभिन्न प्रकार के उद्योगों की भौतिक और आर्थिक विशेषताओं को सटीक रूप से दर्शाते हैं।

211. (C) चलवासी पशुचारण
चलवासी पशुचारण मुख्य रूप से अफ्रीका और मध्य एशिया के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की एक पारंपरिक कृषि प्रणाली है। इन क्षेत्रों में कम वर्षा और सीमित चरागाहों के कारण, लोग अपने पशुओं (भेड़, बकरी, ऊंट) के साथ भोजन और पानी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर निरंतर प्रवास करते रहते हैं। यह जीवन जीने का एक कठिन तरीका है जो पूरी तरह से प्रकृति की उपलब्धता पर निर्भर है। यह प्रणाली उन विषम जलवायु परिस्थितियों के साथ मानव के सामंजस्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ स्थायी खेती संभव नहीं है।

212. (D) श्रम लागत की बचत अतिरिक्त परिवहन लागत से अधिक हो।
वेबर के सिद्धांत के अनुसार, कोई उद्योग अपने न्यूनतम परिवहन लागत वाले स्थान से हटकर सस्ते श्रम वाले केंद्र पर तभी जा सकता है जब वहां होने वाली श्रम लागत की बचत, उस स्थान तक कच्चा माल ले जाने और उत्पाद वापस लाने में होने वाले अतिरिक्त परिवहन खर्च से अधिक हो। यह आर्थिक तर्क यह सुनिश्चित करता है कि स्थानांतरण से कुल उत्पादन लागत में वास्तव में कमी आए। यदि अतिरिक्त परिवहन व्यय बचत से ज्यादा है, तो उद्योग का स्थानांतरण अलाभकारी होगा। यह अवधारणा अवस्थिति निर्णयों में लागतों के संतुलन को स्पष्ट करती है।

213. (A) केवल 1 और 2
द्वितीयक क्षेत्रक विनिर्माण गतिविधियों से संबंधित है, इसलिए इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में, जैसे-जैसे समाज तकनीकी रूप से उन्नत होता है, जीडीपी में प्राथमिक क्षेत्रक का सापेक्षिक महत्व कम होता जाता है और अन्य क्षेत्रों का बढ़ता है। चतुर्थक क्षेत्रक शारीरिक श्रम का नहीं, बल्कि उच्च स्तरीय बौद्धिक और अनुसंधान कार्यों का क्षेत्र है, इसलिए कथन 3 गलत है। केवल प्रथम दो कथन ही आर्थिक क्षेत्रकों के वैज्ञानिक वर्गीकरण और विकास के चरणों के साथ पूरी तरह मेल खाते हैं, जो अर्थव्यवस्था की बदलती संरचना को दर्शाते हैं।

214. (B) प्राचीन पौधों और जानवरों के अवशेषों से बने ऊर्जा स्रोत।
जीवाश्म ईंधन वे ऊर्जा स्रोत हैं जो करोड़ों वर्षों पहले पृथ्वी के नीचे दबे पौधों और जानवरों के अवशेषों के उच्च दबाव और ताप के कारण परिवर्तित होने से बने हैं। कोयला, पेट्रोलियम

Downloaded from www.pdf.tube

248. (A) बाजार तक उपज पहुँचाने की लागत।
वॉन थ्यूनेन का कृषि मॉडल मुख्य रूप से इस आर्थिक तर्क पर आधारित है कि बाजार तक उपज पहुँचाने की परिवहन लागत ही कृषि भूमि उपयोग के प्रतिरूप को निर्धारित करती है। उनके अनुसार, बाजार के पास की भूमि पर परिवहन खर्च कम होता है, जिससे किसान वहां अधिक मूल्य वाली और जल्दी खराब होने वाली फसलें उगा सकते हैं। जैसे-जैसे दूरी बढ़ती है, परिवहन लागत बढ़ती जाती है, जो किसानों को ऐसी फसलें उगाने के लिए मजबूर करती है जिनकी ढुलाई सस्ती हो। यह परिवहन व्यय ही विभिन्न संकेंद्रित कृषि क्षेत्रों के निर्माण का वास्तविक आधार है।

249. (C) आनुवंशिक अनुसंधान करने वाला वैज्ञानिक।
आनुवंशिक अनुसंधान एक उच्च स्तरीय बौद्धिक और ज्ञान-आधारित गतिविधि है, जिसे विशिष्ट रूप से चतुर्थक आर्थिक क्षेत्रक के अंतर्गत रखा जाता है। इस क्षेत्रक में शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक दक्षता, डेटा विश्लेषण और वैज्ञानिक नवाचार को महत्व दिया जाता है। चतुर्थक गतिविधियाँ समाज के तकनीकी विकास और भविष्य की नीतियों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके विपरीत, किसान प्राथमिक क्षेत्रक में, कारखाना श्रमिक द्वितीयक में और चालक तृतीयक क्षेत्रक में आते हैं। वैज्ञानिक कार्य आधुनिक अर्थव्यवस्था के सबसे परिष्कृत और गतिशील हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।

250. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
आर्थिक भूगोल के प्रमुख विचारकों ने स्थानिक संगठन को समझने के लिए आधारभूत अवधारणाएं प्रदान की हैं। वॉन थ्यूनेन ने अवस्थितिक लगान के माध्यम से कृषि क्षेत्रों की व्याख्या की, जबकि अल्फ्रेड वेबर ने उद्योगों के लिए न्यूनतम लागत वाले स्थान की पहचान की। ऑगस्ट लॉश ने बाजार क्षेत्रों और लाभ अधिकतमकरण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। डरवेंट व्हिटलसी ने विश्व की विविध कृषि प्रणालियों का वैज्ञानिक और विस्तृत वर्गीकरण किया। यह सुमेलन भूगोल के शास्त्रीय सिद्धांतों और उनके द्वारा प्रतिपादित मूल वैचारिक ढांचों के बीच के सही संबंधों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

251. (D) सैद्धांतिक वक्र से न्यूनतम विचलन हो।
जे. सी. वीवर की सांख्यिकीय पद्धति का मुख्य उद्देश्य किसी क्षेत्र के वास्तविक शस्य संयोजन की पहचान करना है। उनके द्वारा प्रयुक्त सूत्र विभिन्न फसलों के वास्तविक भूमि प्रतिशत और एक आदर्श सैद्धांतिक वितरण के बीच के अंतर (विचलन) को मापता है। जिस फसल संयोजन में यह विचलन सबसे कम या न्यूनतम होता है, उसे ही उस क्षेत्र का सबसे सटीक और प्रतिनिधि शस्य संयोजन माना जाता है। यह वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण कृषि भूगोल में क्षेत्रीय विश्लेषण को गणितीय शुद्धता प्रदान करता है, जिससे फसलों के सापेक्षिक महत्व को समझना आसान हो जाता है।

252. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल के निर्माण के समय लकड़ी ऊर्जा का मुख्य स्रोत और निर्माण की अनिवार्य सामग्री थी। चूंकि लकड़ी अत्यंत भारी और स्थूल होती है, इसलिए उसे लंबी दूरी तक ले जाने की परिवहन लागत बहुत अधिक थी। इस खर्च को कम करने और शहर को निरंतर ईंधन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए वानिकी का छल्ला बाजार के अपेक्षाकृत पास, दूसरे स्थान पर स्थित किया गया था। यह भौगोलिक स्थिति भारी माल के परिवहन की आर्थिक विवशता और उसकी तात्कालिक उपयोगिता के बीच एक सटीक संतुलन स्थापित करने का उत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण है।

253. (C) अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा से दूरी।
कृषि उत्पादकता मृदा की उर्वरता, जलवायु, तकनीकी निवेश और किसान के कौशल जैसे भौतिक एवं मानवीय कारकों पर निर्भर करती है। ये कारक प्रत्यक्ष रूप से फसल की पैदावार और खेती की दक्षता को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा से किसी स्थान की दूरी का कृषि की उत्पादन क्षमता या उत्पादकता से कोई भी वैज्ञानिक या भौगोलिक संबंध नहीं है। तिथि रेखा केवल समय निर्धारण का एक काल्पनिक मानक है। अतः, यह कृषि भूगोल में उत्पादकता निर्धारित करने वाले कारकों की सूची से पूरी तरह बाहर है और इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

254. (D) निम्न बीटा इंडेक्स और निम्न संयोजकता।
परिवहन नेटवर्क के विश्लेषण में बीटा इंडेक्स कड़ियों और केंद्रों के बीच के अनुपात को दर्शाता है। यदि किसी नेटवर्क में केंद्रों की संख्या की तुलना में कड़ियाँ बहुत कम हैं, तो बीटा इंडेक्स का मान भी निम्न होगा। यह एक सरल और अविकसित नेटवर्क का प्रतीक है जहाँ स्थानों के बीच सीधे संपर्क के अवसर बहुत कम होते हैं, जिसे निम्न संयोजकता कहा जाता है। ऐसा ढांचा आवागमन को धीमा और कठिन बनाता है। उच्च संयोजकता के लिए केंद्रों के बीच अधिक कड़ियों का होना अनिवार्य है, जो नेटवर्क की दक्षता बढ़ाता है।

255. (A) उनके अवस्थिति संबंधी निर्णय में परिवहन लागत का महत्व।
संसाधन-आधारित और स्वच्छंद उद्योगों के बीच मूलभूत अंतर परिवहन लागत की संवेदनशीलता में निहित है। संसाधन-आधारित उद्योग अपने भारी और वजन घटाने वाले कच्चे माल के कारण स्रोतों के पास स्थापित होने के लिए मजबूर होते हैं ताकि परिवहन खर्च कम हो सके। इसके विपरीत, स्वच्छंद उद्योग हल्के कच्चे माल और नगण्य परिवहन लागत के कारण किसी भी भौगोलिक स्थान पर स्थित होने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं। यह आर्थिक लचीलापन ही उनकी अवस्थिति के निर्णय में सबसे महत्वपूर्ण अंतर पैदा करता है, जो उनकी कार्यप्रणाली को परिभाषित करता है।

256. (B) तृतीयक
अर्थव्यवस्था का तृतीयक क्षेत्रक मुख्य रूप से सेवाओं के प्रावधान से संबंधित है। इसमें किसी भौतिक वस्तु का निर्माण नहीं होता, बल्कि समाज के सुचारु संचालन के लिए बैंकिंग,

NODIA

है। इसके परिणामस्वरूप, किसानों की आय के स्रोत बढ़ते हैं और क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है। विविविधीकरण आधुनिक और संधारणीय खेती की दिशा में एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रगति का प्रतीक है।

223. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
गैर-नवीकरणीय संसाधन, जैसे जीवाश्म ईंधन, अपने सीमित भंडार के कारण निरंतर उपयोग से अनिवार्य रूप से समाप्त हो जाएंगे। इसी प्रकार, नवीकरणीय संसाधन, जैसे वन और जल, यद्यपि प्राकृतिक रूप से पुनः पूरित होते हैं, लेकिन यदि इनका प्रबंधन गलत तरीके से किया जाए या दोहन की दर इनके पुनर्जन्म से अधिक हो, तो ये भी समाप्त या अनुपयोगी हो सकते हैं। अतः, दोनों प्रकार के संसाधनों के लिए विवेकपूर्ण प्रबंधन और संधारणीय उपयोग की आवश्यकता होती है। यह वैज्ञानिक सत्य संसाधनों के संरक्षण और भविष्य की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

224. (B) द्वितीयक, द्वितीयक
कपास से कपड़ा बनाना एक विनिर्माण प्रक्रिया है जहाँ कच्चे माल का रूप बदला जाता है, जो द्वितीयक क्षेत्रक का हिस्सा है। इसके बाद कपड़े से सिलकर कपड़े या गारमेंट्स तैयार करना भी एक औद्योगिक प्रक्रिया ही है, जो आगे और अधिक मूल्यवर्धन करती है। चूंकि इन दोनों चरणों में भौतिक वस्तुओं का प्रसंस्करण और निर्माण शामिल है, इसलिए ये दोनों ही द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के अंतर्गत आते हैं। प्राथमिक क्षेत्रक में केवल कपास उगाना शामिल होगा, लेकिन विनिर्माण के सभी क्रमिक चरण द्वितीयक क्षेत्रक की श्रेणी में ही बने रहते हैं।

225. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वॉन थ्यूनेन का मॉडल, अपनी पुरानी धारणाओं के बावजूद, आज भी आर्थिक भूगोल में अत्यंत प्रासंगिक और मूल्यवान माना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसने पहली बार अवस्थितिक लगान और भूमि उपयोग के बीच के गहरे संबंध को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट किया। यह मॉडल समझाता है कि कैसे भूमि की लागत और बाजार तक पहुँचने की परिवहन लागत के बीच का समझौता किसी क्षेत्र के कृषि स्वरूप को निर्धारित करता है। यह मौलिक विचार आज भी आधुनिक शहरी भूमि उपयोग और क्षेत्रीय नियोजन के विश्लेषण में एक आधारभूत वैचारिक ढांचे के रूप में कार्य करता है।

226. (A) नेटवर्क में कई प्रत्यक्ष जुड़ाव और वैकल्पिक पथ हैं।
परिवहन नेटवर्क में उच्च स्तर की संयोजकता का तात्पर्य है कि विभिन्न केंद्रों के बीच अनेक प्रत्यक्ष कड़ियाँ मौजूद हैं। इसका मुख्य लाभ यह है कि यात्रियों और माल के आवागमन के लिए कई वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होते हैं, जिससे यात्रा अधिक लचीली और कुशल हो जाती है। उच्च संयोजकता वाला नेटवर्क भीड़भाड़ को कम करने में सहायक होता है और किसी एक मार्ग के बाधित होने पर भी कनेक्टिविटी बनाए रखता है। यह एक विकसित और सुव्यवस्थित परिवहन बुनियादी ढांचे का प्रतीक है जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास और गतिशीलता को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देता है।

227. (C) लॉश का दृष्टिकोण अधिक व्यापक है क्योंकि यह लागत और राजस्व दोनों पर विचार करता है।
वेबर और लॉश के दृष्टिकोणों के बीच मुख्य अंतर उनकी व्यापकता का है। वेबर का मॉडल केवल आपूर्ति पक्ष पर केंद्रित था, जहाँ उद्देश्य परिवहन और श्रम लागत को न्यूनतम करना था। इसके विपरीत, लॉश का मॉडल मांग पक्ष को भी शामिल करता है और लाभ को अधिकतम करने के लिए लागत और संभावित राजस्व के बीच संतुलन खोजने का प्रयास करता है। लॉश ने माना कि इष्टतम अवस्थिति केवल बचत पर नहीं, बल्कि बाजार क्षेत्र के विस्तार पर भी निर्भर करती है। यह समावेशी दृष्टिकोण औद्योगिक अवस्थिति के विश्लेषण को अधिक यथार्थवादी और आर्थिक रूप से पूर्ण बनाता है।

228. (D) एक फल डिब्बाबंदी कारखाना
फल डिब्बाबंदी कारखाना एक विशिष्ट संसाधन-आधारित उद्योग है क्योंकि इसके लिए ताजे फलों जैसे कच्चे माल की आवश्यकता होती है, जो शीघ्र नष्ट होने वाले होते हैं। फलों की ताजगी बनाए रखने और उन्हें खराब होने से बचाने के लिए प्रसंस्करण इकाइयों को बागानों के पास स्थापित करना सबसे अधिक लाभप्रद होता है। इसके अतिरिक्त, प्रसंस्करण के दौरान फलों के अनुपयोगी भाग को हटा दिया जाता है, जिससे तैयार माल का वजन कच्चे माल से कम हो जाता है। अतः, परिवहन व्यय को न्यूनतम रखने के लिए इन कारखानों की अवस्थिति सीधे उनके प्राकृतिक संसाधन स्रोतों से जुड़ी होती है।

229. (C) मुख्य रूप से पारिवारिक उपभोग के लिए उत्पादन
रोपण कृषि एक पूरी तरह से वाणिज्यिक और बाजार-उन्मुख प्रणाली है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य स्थानीय या पारिवारिक उपभोग नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर लाभ कमाना और निर्यात करना है। इसकी अन्य विशेषताओं में विशाल भूखंड, एकल नकदी फसल में विशेषज्ञता, उच्च पूंजी निवेश और आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग शामिल है। रोपण कृषि का विकास अक्सर औपनिवेशिक काल में वैश्विक बाजारों को चाय, कॉफी और रबर जैसे उत्पादों की आपूर्ति करने के लिए किया गया था। अतः, इसे निर्वाह खेती या पारिवारिक उपभोग से जोड़ना पूरी तरह गलत है, जो इसकी मूल प्रकृति के विपरीत है।

230. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
औद्योगिक भूगोल के विभिन्न कारक विशिष्ट सिद्धांतों और अवधारणाओं से जुड़े हुए हैं। परिवहन लागत का विश्लेषण वेबर के आइसोटिम्स और आइसोडापेन्स के माध्यम से किया जाता है। श्रम लागत का प्रभाव क्रांतिक आइसोडापेन द्वारा मापा जाता है। समूहन के विपरीत, विकेंद्रीकरण की अलाभकारी स्थितियाँ उद्योगों के बिखराव का कारण बनती हैं। बाजार मांग और लाभ अधिकतमकरण ऑगस्ट लॉश के सिद्धांत का केंद्र हैं। यह सुमेलन स्पष्ट करता है कि कैसे विभिन्न आर्थिक बल उद्योग की भौगोलिक अवस्थिति और बाजार के स्थानिक ढांचे को निर्धारित करने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

265. (C) किसान महंगी भूमि पर उच्च मूल्य वाली वस्तुएं उगाकर लाभ को अधिकतम करते हैं।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल का मूल तर्क भूमि की लागत और परिवहन खर्च के बीच के आर्थिक संतुलन पर आधारित है। बाजार के समीप भूमि सबसे महंगी होती है, इसलिए किसान वहां ऐसी उच्च मूल्य वाली और गहन फसलें उगाते हैं जो उस उच्च लगान को चुकाने के बाद भी अधिकतम लाभ दे सकें। जैसे-जैसे बाजार से दूरी बढ़ती है, परिवहन लागत बढ़ती है और भूमि का मूल्य कम होता जाता है, जिससे किसान कम गहन और सस्ती फसलों का विकल्प चुनते हैं। यह आर्थिक प्रतिस्पर्धा ही संपूर्ण कृषि भूमि उपयोग के प्रतिरूप को निर्धारित करती है।

266. (A) अक्षय या सतत नवीकरणीय संसाधन।
सौर, पवन और ज्वारीय ऊर्जा को अक्षय या सतत नवीकरणीय संसाधनों के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि ये प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निरंतर पुनः पूरित होते रहते हैं और मानवीय उपयोग से कभी समाप्त नहीं होते। ये ऊर्जा के स्वच्छ स्रोत हैं जो जीवाश्म ईंधनों के विपरीत पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते। भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए इन संसाधनों का विकास अत्यंत अनिवार्य है। इनकी अनंत उपलब्धता इन्हें दीर्घकालिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता का एक विश्वसनीय आधार बनाती है।

267. (D) एक परिवर्तनीय मांग वक्र को शामिल करता है और लाभ अधिकतमकरण का लक्ष्य रखता है।
ऑगस्ट लॉश का अवस्थिति मॉडल वेबर के सिद्धांत की तुलना में अधिक जटिल और व्यापक है क्योंकि यह केवल लागत को कम करने तक सीमित नहीं है। लॉश ने बाजार मांग की परिवर्तनशीलता को अपने विश्लेषण का केंद्र बनाया और यह तर्क दिया कि उद्योगपतियों को वह स्थान चुनना चाहिए जहाँ वे सबसे बड़े बाजार क्षेत्र को सेवा प्रदान करके अपना लाभ अधिकतम कर सकें। उन्होंने उपभोक्ता व्यवहार और स्थानिक प्रतिस्पर्धा को शामिल किया, जिससे यह मॉडल आधुनिक बाजार संरचनाओं और औद्योगिक वितरण की जटिलताओं को समझने के लिए अधिक यथार्थवादी और प्रभावी सिद्ध हुआ।

268. (B) समूहन
सड़क, रेल और पाइपलाइन परिवहन के विभिन्न भौतिक साधन हैं जो माल और लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, 'समूहन' एक आर्थिक अवधारणा है जो उद्योगों के एक ही स्थान पर एकत्रित होने से होने वाले लाभों को संदर्भित करती है। समूहन स्वयं कोई परिवहन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह औद्योगिक अवस्थिति का एक महत्वपूर्ण कारक है जो साझा बुनियादी ढांचे और रसद के माध्यम से लागत को कम करने में मदद करता है। अतः, यह परिवहन के साधनों की श्रेणी से पूरी तरह बाहर है।

269. (C) स्वच्छंद उद्योग।
एक सॉफ्टवेयर फर्म जो इंटरनेट के माध्यम से अपनी सेवाएं प्रदान करती है, स्वच्छंद उद्योग का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इस व्यवसाय के लिए किसी भौतिक कच्चे माल की आवश्यकता नहीं होती है और इसका उत्पाद डिजिटल रूप में वितरित किया जाता है, जिससे परिवहन लागत का कोई महत्व नहीं रह जाता है। इसे उच्च गति वाली इंटरनेट संयोजकता और कुशल कार्यबल की उपलब्धता के आधार पर दुनिया के किसी भी कोने में स्थापित किया जा सकता है। यह भौगोलिक स्थान की बाधाओं से पूरी तरह स्वतंत्र है, जो इसकी आधुनिक और लचीली प्रकृति को दर्शाता है।

270. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
आर्थिक भूगोल की प्रमुख अवधारणाएं उनके प्रतिपादकों के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। अल्फ्रेड वेबर ने पदार्थ सूचकांक के माध्यम से औद्योगिक अवस्थिति की व्याख्या की, जबकि वॉन थ्यूनेन ने अवस्थितिक लगान के आधार पर कृषि प्रतिरूप समझाया। ऑगस्ट लॉश ने बाजार क्षेत्रों के विश्लेषण के लिए षट्कोणीय जालक का प्रस्ताव दिया। जे. सी. वीवर ने शस्य संयोजन की सांख्यिकीय पहचान के लिए वस्तुनिष्ठ विधि विकसित की। यह सुमेलन भूगोल के शास्त्रीय सिद्धांतों और उनके द्वारा प्रतिपादित मूल वैचारिक ढांचे के बीच के सही संबंधों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

271. (A) चतुर्थक
अर्थव्यवस्था के चतुर्थक क्षेत्रक में अनुसंधान, प्रबंधन और सूचना प्रसंस्करण जैसी उच्च ज्ञान-आधारित गतिविधियाँ शामिल होती हैं। इस क्षेत्रक के कार्यबल में वृद्धि यह दर्शाती है कि अर्थव्यवस्था अब शारीरिक श्रम और विनिर्माण से हटकर बौद्धिक सेवाओं और नवाचार की ओर बढ़ रही है। चतुर्थक गतिविधियाँ समाज के तकनीकी और शैक्षणिक ढांचे को मजबूत करती हैं और भविष्य की नीतियों एवं रणनीतियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह एक 'ज्ञान अर्थव्यवस्था' के विकास का स्पष्ट संकेत है जहाँ सूचना और विशेषज्ञता ही सबसे मूल्यवान आर्थिक संसाधन माने जाते हैं।

272. (B) खेती में भूमि और श्रम के उपयोग की दक्षता को समझना।
कृषि उत्पादकता मापने का प्राथमिक लक्ष्य यह आकलन करना है कि उपलब्ध प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का खेती में कितना प्रभावी उपयोग किया गया है। यह स्पष्ट करता है कि प्रति इकाई भूमि या प्रति श्रमिक से कितनी पैदावार प्राप्त हुई है, जो तकनीकी उन्नति और कुशल प्रबंधन के स्तर को दर्शाता है। इस मापन के माध्यम से नीति निर्माता विभिन्न क्षेत्रों के कृषि प्रदर्शन की तुलना कर सकते हैं और सुधार के आवश्यक कदम उठा सकते हैं। यह वैज्ञानिक विश्लेषण संसाधनों के इष्टतम उपयोग और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

273. (B) संसाधन सीमित हैं और उनका बुद्धिमानी से उपयोग किया जाना चाहिए।
संसाधन संरक्षण की मूल धारणा यह है कि पृथ्वी पर प्राकृतिक संसाधन, विशेष रूप से गैर-नवीकरणीय संसाधन, सीमित मात्रा में हैं और निरंतर उपभोग से वे समाप्त हो सकते हैं। इसलिए,

NODIA

सामाजिक अंतःक्रियाओं के मुख्य केंद्र बन जाते हैं क्योंकि लोग और वस्तुएं वहां सुगमता से पहुँच सकती हैं। यह किसी स्थान की आर्थिक आकर्षण शक्ति और विकास की संभावनाओं को निर्धारित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक भौगोलिक कारक है।

240. (B) कृषि उत्पादन और उन्हें उत्पादित करने के लिए उपयोग किए गए निवेश का अनुपात।
कृषि दक्षता का मापन यह स्पष्ट करता है कि उपलब्ध संसाधनों, जैसे भूमि, श्रम, बीज और सिंचाई, का कितनी बुद्धिमानी और प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया है। यह केवल कुल पैदावार को नहीं देखता, बल्कि उत्पादन और उसमें लगाए गए कुल निवेश के बीच के अनुपात का विश्लेषण करता है। उच्च दक्षता का अर्थ है कम लागत या सीमित संसाधनों में अधिक और बेहतर गुणवत्ता वाला उत्पादन प्राप्त करना। यह अवधारणा नीति निर्माताओं और किसानों को तकनीकी सुधार अपनाने और संसाधनों के अपव्यय को रोकने के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

241. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
प्राथमिक क्षेत्रक की मुख्य विशेषता प्रकृति से कच्चे माल का प्रत्यक्ष निष्कर्षण और संग्रहण है, जिसमें कृषि, खनन और मत्स्य पालन जैसी क्रियाएं शामिल होती हैं। वहीं, द्वितीयक क्षेत्रक इन कच्चे माल को विनिर्माण और औद्योगिक प्रसंस्करण के माध्यम से उपयोगी वस्तुओं और तैयार माल में रूपांतरित करने का कार्य करता है। ये दोनों क्षेत्रक किसी भी अर्थव्यवस्था की उत्पादन श्रृंखला के आधारभूत अंग हैं। प्राथमिक क्षेत्रक जहाँ संसाधनों की आधारशिला रखता है, वहीं द्वितीयक क्षेत्रक उनमें मूल्यवर्धन करके उन्हें समाज के लिए अधिक टिकाऊ और उपयोगी बनाता है।

242. (A) लाभ को अधिकतम करने के लिए सबसे बड़ा संभव बाजार क्षेत्र सुरक्षित करना।
ऑगस्ट लॉश के अवस्थिति मॉडल के अनुसार, एक व्यावसायिक फर्म का प्राथमिक लक्ष्य उस स्थान की पहचान करना है जहाँ वह अधिकतम लाभ अर्जित कर सके। लॉश ने तर्क दिया कि यह केवल परिवहन लागत को कम करने से नहीं, बल्कि सबसे बड़े संभव बाजार क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त करने से संभव है। उन्होंने मांग की स्थानिक परिवर्तनशीलता को महत्व दिया और यह सिद्ध किया कि बाजार प्रतिस्पर्धा के बीच इष्टतम राजस्व प्राप्त करना ही अवस्थिति का वास्तविक उद्देश्य है। यह दृष्टिकोण औद्योगिक भूगोल में मांग पक्ष और उपभोक्ता व्यवहार के महत्व को रेखांकित करता है।

243. (C) संसाधन संरक्षण और प्रबंधन।
'साझा संसाधनों की त्रासदी' एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो स्पष्ट करती है कि जब कोई संसाधन सामूहिक रूप से उपलब्ध होता है और उसका कोई स्पष्ट स्वामी नहीं होता, तो व्यक्तिगत लाभ के लिए लोग उसका अत्यधिक दोहन करते हैं, जिससे वह अंततः समाप्त हो जाता है। यह विचार प्राकृतिक संसाधनों, जैसे चरागाहों और जल स्रोतों, के विवेकपूर्ण संरक्षण और संधारणीय प्रबंधन की आवश्यकता पर बल देता है। यह सामूहिक जिम्मेदारी और पर्यावरणीय सुरक्षा के बीच संतुलन बनाने की चुनौती को दर्शाता है, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है।

244. (D) भार-ह्रास वाला और शीघ्र नष्ट होने वाला है।
चीनी मिलों को गन्ने के खेतों के पास स्थापित किया जाना एक अनिवार्य आर्थिक निर्णय है क्योंकि गन्ना एक भार-ह्रास वाला और अत्यंत नश्वर कच्चा माल है। कटाई के बाद गन्ने में सुक्रोज की मात्रा बहुत तेजी से कम होने लगती है, इसलिए उसे तुरंत संसाधित करना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त, गन्ने का वजन तैयार चीनी की तुलना में बहुत अधिक होता है, जिससे उसे दूर तक ले जाने की परिवहन लागत अव्यावहारिक हो जाती है। स्रोत के पास मिल होने से परिवहन खर्च कम होता है और चीनी की गुणवत्ता तथा पैदावार अधिकतम बनी रहती है।

245. (A) 2, 4, 3, 1
कृषि पद्धतियों का विकास मानव सभ्यता के क्रमिक विकास को दर्शाता है। सबसे पहले मनुष्य शिकार और संग्रहण पर निर्भर था। इसके पश्चात, वनों को साफ करके की जाने वाली झूम कृषि का उदय हुआ। धीरे-धीरे लोगों ने एक ही स्थान पर बसकर स्थायी निर्वाह कृषि शुरू की, जिससे बस्तियों का विकास हुआ। आधुनिक युग में, मशीनीकरण और बाजार की मांग के कारण विस्तृत वाणिज्यिक अनाज कृषि का आगमन हुआ। यह कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है कि कैसे मानवीय तकनीक और पर्यावरण के साथ उसका संबंध समय के साथ निरंतर अधिक जटिल और उत्पादक होता गया।

246. (B) स्वच्छंद उद्योग
स्वच्छंद उद्योग अपनी अवस्थिति के मामले में परिवहन लागत से सबसे कम प्रभावित होते हैं। इनके कच्चे माल अक्सर हल्के होते हैं या उनकी उपलब्धता सर्वव्यापी होती है, और तैयार माल भी उच्च मूल्य वाला एवं परिवहन में सुगम होता है। परिवहन लागत इनकी कुल उत्पादन लागत का एक अत्यंत नगण्य हिस्सा होती है, जिसके कारण ये उद्योग सामग्री के स्रोत या बाजार की निकटता से बंधे नहीं होते हैं। इसी स्वतंत्रता के कारण इन्हें तकनीकी कौशल और कुशल श्रम की उपलब्धता के आधार पर किसी भी सुविधाजनक भौगोलिक स्थान पर स्थापित किया जा सकता है।

247. (D) परिवहन और संचार प्रौद्योगिकी में सुधार द्वारा।
'दूरी की बाधा' को प्रभावी ढंग से कम करने का सबसे सशक्त माध्यम परिवहन और संचार प्रौद्योगिकियों में निरंतर होने वाला सुधार है। उन्नत वाहन, तीव्र मार्ग और त्वरित डिजिटल संचार ने भौगोलिक दूरियों को पार करने में लगने वाले समय और लागत को काफी घटा दिया है। इसे 'समय-स्थान अभिसरण' कहा जाता है, जहाँ दुनिया के सुदूर हिस्से भी एक-दूसरे से सीधे जुड़े हुए महसूस होते हैं। यह तकनीकी प्रगति वैश्विक व्यापार को सुगम बनाती है और लोगों के बीच सामाजिक-आर्थिक अंतःक्रियाओं को तीव्र करती है, जिससे भौगोलिक बाधाएं कम हो जाती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

में वैश्विक कृषि विविधता को समझने के लिए आज भी सबसे व्यापक रूपरेखा मानी जाती है।

282. (A) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
संसाधनों का वर्गीकरण उनकी उपलब्धता और पुनरुत्पादन क्षमता के आधार पर किया जाता है। कोयला एक जीवाश्म ईंधन है जो पृथ्वी पर सीमित मात्रा में है और जिसका निर्माण होने में लाखों वर्ष लगते हैं, इसलिए यह गैर-नवीकरणीय संसाधन है। इसके विपरीत, सौर ऊर्जा सूर्य की निरंतरता के कारण एक अक्षय संसाधन है जो कभी समाप्त नहीं होता और इसे नवीकरणीय की श्रेणी में रखा जाता है। अतः, दोनों कथन बुनियादी वैज्ञानिक और भौगोलिक तथ्यों के पूरी तरह विपरीत हैं। संसाधनों का सही ज्ञान उनके प्रबंधन और ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

283. (D) जब उत्पादन प्रक्रिया भार-वृद्धि वाली हो।
वेबर के सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी विनिर्माण प्रक्रिया में तैयार उत्पाद का वजन प्रयुक्त कच्चे माल से अधिक हो जाता है, तो उसे 'भार-वृद्धि' उद्योग कहा जाता है। ऐसी स्थिति में, भारी और महंगे तैयार माल को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने की परिवहन लागत कच्चे माल को लाने की तुलना में कहीं अधिक होगी। अतः, कुल परिवहन व्यय को न्यूनतम रखने के लिए कारखाने को बाजार के जितना संभव हो सके उतना करीब स्थापित करना ही सबसे तर्कसंगत और लाभप्रद निर्णय होता है। यह अक्सर पेय पदार्थ और खाद्य प्रसंस्करण जैसे उद्योगों में देखा जाता है।

284. (B) कृषि क्षेत्रों के चरित्र को समझना और उनका सीमांकन करना।
किसी क्षेत्र में शस्य संयोजनों के विश्लेषण का प्राथमिक उद्देश्य वहां की कृषि की विशिष्ट विशेषताओं को समझना और विभिन्न फसलों के वितरण के आधार पर कृषि क्षेत्रों की सीमाएं तय करना है। यह सांख्यिकीय पद्धति यह स्पष्ट करती है कि किसी क्षेत्र में कौन सी फसलें मुख्य रूप से उगाई जाती हैं और उनका आपस में क्या संबंध है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं को क्षेत्रीय कृषि समस्याओं को पहचानने और विशिष्ट फसल प्रणालियों के लिए उपयुक्त योजनाएं बनाने में सहायता करता है। यह कृषि भूगोल में क्षेत्रीय विविधताओं के वैज्ञानिक मापन का एक महत्वपूर्ण साधन है।

285. (C) बाजार-उन्मुख, उपभोक्ता वस्तु उद्योग।
ऑगस्ट लॉश का अवस्थिति मॉडल उपभोक्ता वस्तुओं और बाजार-उन्मुख उद्योगों की अवस्थिति की व्याख्या करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। वेबर के न्यूनतम लागत दृष्टिकोण के विपरीत, लॉश ने मांग और बाजार क्षेत्र के विस्तार को प्राथमिकता दी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि उपभोक्ता वस्तुओं के मामले में, उद्योग की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितने बड़े बाजार क्षेत्र की सेवा कर सकता है और अधिकतम राजस्व प्राप्त कर सकता है। लॉश का यह लाभ-अधिकतमकरण सिद्धांत आधुनिक खुदरा व्यापार और सेवा केंद्रों के स्थानिक वितरण को समझने के लिए एक प्रभावी ढांचा प्रदान करता है।

286. (A) 1, 2 और 3
परिवहन लागत एक जटिल आर्थिक चर है जो दूरी के साथ बढ़ती है, लेकिन टर्मिनल शुल्क और निश्चित खर्चों के कारण यह हमेशा एक सीधी रेखा में नहीं होती। यह लागत परिवहन के विभिन्न माध्यमों, जैसे सड़क, रेल या वायुमार्ग, के बीच उनकी वहन क्षमता और तकनीक के आधार पर काफी भिन्न होती है। इसमें टर्मिनल लागत (लदान और प्रबंधन) और लाइन-हॉल लागत (वास्तविक यात्रा का खर्च) दो मुख्य घटक होते हैं। ये तीनों बिंदु परिवहन भूगोल में रसद प्रबंधन और बाजार की पहुँच को निर्धारित करने वाले आधारभूत तत्वों को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

287. (A) कोयला खनन
कोयला खनन प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधि है क्योंकि इसमें सीधे पृथ्वी से प्राकृतिक संसाधनों का निष्कर्षण शामिल है। प्राथमिक क्षेत्रक प्रकृति से कच्चे माल के संग्रहण और दोहन पर आधारित होता है। इसके विपरीत, इस्पात विनिर्माण द्वितीयक क्षेत्रक का हिस्सा है जहाँ कच्चे माल का प्रसंस्करण किया जाता है। बैंकिंग तृतीयक क्षेत्रक की एक सेवा है, और सॉफ्टवेयर विकास चतुर्थक क्षेत्रक की एक बौद्धिक गतिविधि है। आर्थिक गतिविधियों का यह वर्गीकरण संसाधनों के उपयोग और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

288. (B) जिन स्थानों पर अन्य स्थानों के लिए अधिक प्रत्यक्ष कड़ियाँ होती हैं, वहां पहुँचना आसान होता है।
परिवहन भूगोल में अभिगम्यता और संयोजकता के बीच गहरा अंतर्संबंध है। संयोजकता का अर्थ है एक नेटवर्क के भीतर केंद्रों के बीच मौजूद प्रत्यक्ष कड़ियों की संख्या। जिस स्थान पर अन्य क्षेत्रों से जुड़ने के लिए जितनी अधिक और सीधी कड़ियाँ होंगी, वहां तक पहुँचने की सुगमता उतनी ही अधिक होगी, जिसे उच्च अभिगम्यता कहा जाता है। यह सीधा भौगोलिक संबंध स्पष्ट करता है कि बेहतर बुनियादी ढांचा और मार्गों की प्रत्यक्षता ही किसी स्थान को सुलभ और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है। संयोजकता की मजबूती ही बेहतर अभिगम्यता का वास्तविक आधार सिद्ध होती है।

289. (B) भूमि लागत और परिवहन लागत।
वॉन थ्यूनेन के कृषि मॉडल के पीछे का मूल आर्थिक विचार भूमि की लागत (लगान) और बाजार तक पहुँचने की परिवहन लागत के बीच का समझौता है। बाजार के समीप भूमि सबसे महंगी होती है लेकिन परिवहन व्यय न्यूनतम होता है, जो गहन खेती को बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे बाजार से दूरी बढ़ती है, परिवहन खर्च बढ़ता जाता है और भूमि का लगान गिरता जाता है, जिससे किसान कम गहन और सस्ती फसलों का विकल्प चुनते हैं। यह संतुलन ही यह तय करता है कि किस स्थान पर कौन सी कृषि गतिविधि सबसे अधिक लाभप्रद होगी।

290. (A) एक ऐसा उद्योग जहाँ प्रसंस्करण कच्चे माल के वजन को काफी कम कर देता है।
'स्थोक-भंग' स्थान उन उद्योगों के लिए सबसे आकर्षक होता है जहाँ कच्चे माल के प्रसंस्करण के दौरान उसके वजन में

NODIA

खुदरा व्यापार, पर्यटन, परिवहन और शिक्षा जैसी अनिवार्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। तृतीयक क्षेत्रक, जिसे सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है, आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का सबसे बड़ा और गतिशील हिस्सा है। यह प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रकों को आपस में जोड़ने और उपभोक्ताओं तक पहुँच बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे आर्थिक गतिविधियों और रोजगार के अवसरों में निरंतर विस्तार होता है।

257. (B) नेस्टेड षट्भुज
ऑगस्ट लॉश के आर्थिक मॉडल में बाजार क्षेत्रों का स्थानिक वितरण नेस्टेड षट्भुजों के एक विशिष्ट प्रतिरूप द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। लॉश ने तर्क दिया कि षट्कोणीय आकृति ही वह सर्वोत्तम ज्यामितीय समाधान है जो पूरे भौगोलिक क्षेत्र को बिना किसी खाली स्थान या परस्पर अतिव्याप्ति के पूरी तरह कवर कर सकती है। यह नेस्टेड जालक यह सुनिश्चित करता है कि उत्पादन केंद्र और उनके बाजार क्षेत्र एक-दूसरे के साथ कुशलतापूर्वक संतुलित हों। यह प्रतिरूप स्थानिक प्रतिस्पर्धा, परिवहन लागत और उपभोक्ताओं की पहुँच को समझने के लिए भूगोल में एक महत्वपूर्ण वैचारिक ढांचा प्रदान करता है।

258. (A) उनकी निर्माण प्रक्रिया में भूवैज्ञानिक समय लगता है, जो उन्हें मानवीय उद्देश्यों के लिए सीमित बनाता है।
गैर-नवीकरणीय संसाधनों, जैसे जीवाश्म ईंधन और खनिजों का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इनके निर्माण में करोड़ों वर्षों की भूवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ लगती हैं। मानवीय समय सीमा के भीतर इन्हें दोबारा नहीं बनाया जा सकता, इसलिए पृथ्वी पर इनका भंडार निश्चित और सीमित है। निरंतर दोहन से ये संसाधन तेजी से समाप्त हो रहे हैं, जो भविष्य की ऊर्जा और औद्योगिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। इनका विवेकपूर्ण उपयोग और संधारणीय प्रबंधन ही एकमात्र उपाय है जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए इनकी उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है।

259. (C) वह सीमा जिस तक नेटवर्क के केंद्र एक-दूसरे से सीधे जुड़े हुए हैं।
परिवहन भूगोल में संयोजकता एक प्रमुख अवधारणा है जो यह मापती है कि एक नेटवर्क के भीतर विभिन्न केंद्र या नोड्स एक-दूसरे से कितनी सीधे और सरलता से जुड़े हुए हैं। यह मार्गों की प्रत्यक्षता और उनकी संख्या का एक सामूहिक माप है। एक उच्च संयोजित नेटवर्क में केंद्रों के बीच अधिक कड़ियाँ होती हैं, जिससे यात्रा की दूरी और समय कम हो जाता है। यह अवधारणा नेटवर्क की दक्षता, लचीलेपन और क्षेत्रीय पहुंच को दर्शाती है। बेहतर संयोजकता आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करती है और क्षेत्रीय विकास को सुदृढ़ करती है।

260. (A) 1, 2 और 3
आर्थिक भूगोल के शास्त्रीय सिद्धांत स्थानिक संगठन के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करते हैं। वॉन थ्यूनेन का मॉडल बाजार से दूरी के आधार पर कृषि भूमि उपयोग के संकेंद्रित प्रतिरूप को स्पष्ट करता है। अल्फ्रेड वेबर का न्यूनतम-लागत सिद्धांत उद्योगों की स्थापना के लिए सबसे किफायती स्थान खोजने का मार्ग दिखाता है। ऑगस्ट लॉश का मॉडल बाजार क्षेत्रों के विश्लेषण के माध्यम से लाभ अधिकतमकरण की अवधारणा प्रस्तुत करता है। ये तीनों सिद्धांत मिलकर स्थानिक आर्थिक गतिविधियों और उनके वितरण के पीछे के तार्किक कारणों को समझने के लिए एक अनिवार्य वैचारिक आधार प्रदान करते हैं।

261. (C) प्राथमिक क्षेत्रक
जिस अर्थव्यवस्था में अधिकांश लोग खेती, मत्स्य पालन और वानिकी जैसी गतिविधियों में संलग्न होते हैं, उसे प्राथमिक क्षेत्रक प्रधान अर्थव्यवस्था माना जाता है। ये गतिविधियाँ सीधे तौर पर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और संग्रहण पर आधारित होती हैं। ऐसी अर्थव्यवस्थाएँ आमतौर पर विकास के प्रारंभिक चरणों में होती हैं और अपनी आजीविका के लिए प्रकृति की उपलब्धता पर पूरी तरह निर्भर रहती हैं। जैसे-जैसे देश विकसित होता है, आर्थिक गतिविधियों का केंद्र धीरे-धीरे विनिर्माण और सेवाओं की ओर स्थानांतरित हो जाता है, जिससे प्राथमिक क्षेत्रक का सापेक्षिक योगदान कम होने लगता है।

262. (B) कुल परिवहन लागत।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत में 'आइसोडापेन' मानचित्र पर खींची गई वह काल्पनिक रेखा है जो उन सभी भौगोलिक बिंदुओं को आपस में जोड़ती है जहाँ परिवहन की कुल लागत बिल्कुल समान होती है। इसमें कच्चे माल को लाने और तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने का संयुक्त व्यय शामिल होता है। भूगोलवेत्ता इन रेखाओं का उपयोग यह विश्लेषण करने के लिए करते हैं कि कैसे कोई उद्योग न्यूनतम परिवहन लागत वाले केंद्र से दूर हटकर सस्ते श्रम या अन्य लाभ वाले स्थानों की ओर स्थानांतरित हो सकता है, जो अवस्थिति निर्णयों में सहायक है।

263. (D) जोखिम फैलाना और कृषि आय की स्थिरता बढ़ाना।
शस्य विविविधीकरण का मुख्य उद्देश्य कृषि से जुड़े विभिन्न आर्थिक और पर्यावरणीय जोखिमों को कम करना है। एक ही खेत पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने से मृदा की उर्वरता बनी रहती है और कीटों का प्रकोप कम होता है। साथ ही, यदि किसी एक फसल की बाजार कीमत गिर जाती है या पैदावार खराब होती है, तो किसान दूसरी फसलों के माध्यम से अपनी आय सुरक्षित रख सकता है। यह बहुआयामी दृष्टिकोण किसान को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है और संपूर्ण कृषि अर्थव्यवस्था को अधिक लचीला और टिकाऊ बनाने में सहायता करता है।

264. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
स्वच्छंद उद्योग अपनी अवस्थिति के मामले में स्वतंत्र होते हैं क्योंकि वे परिवहन लागत से प्रभावित नहीं होते हैं और किसी भी सुविधाजनक स्थान पर स्थापित किए जा सकते हैं। दूसरी ओर, संसाधन-आधारित उद्योग अपने भारी और वजन घटाने वाले कच्चे माल के कारण विशिष्ट स्थानों, जैसे कि खदानों या खेतों के पास, रहने के लिए आर्थिक रूप से विवश होते हैं। इन दोनों उद्योगों की स्थानिक प्रवृत्तियाँ उनकी उत्पादन प्रक्रिया और सामग्री की प्रकृति पर निर्भर करती हैं। अतः, दोनों कथन विभिन्न प्रकार के उद्योगों के भौगोलिक व्यवहार को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

और प्राकृतिक गैस इसके प्रमुख उदाहरण हैं। चूंकि इनके निर्माण में भूवैज्ञानिक समय लगता है, इसलिए ये भंडार सीमित और गैर-नवीकरणीय हैं। ये आधुनिक औद्योगिक युग की ऊर्जा आवश्यकताओं का मुख्य आधार रहे हैं, लेकिन इनके जलने से होने वाले प्रदूषण और इनके तेजी से समापन के कारण अब वैकल्पिक और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की खोज वैश्विक प्राथमिकता बन गई है।

215. (D) एक किसान बाजार से अलग-अलग दूरियों पर भूमि के लिए कितना भुगतान करने को तैयार है।
'बोली-लगान वक्र' वॉन थ्यूनेन के मॉडल से निकली एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो बाजार से दूरी और भूमि के मूल्य के बीच के संबंध को दर्शाती है। यह वक्र यह स्पष्ट करता है कि बाजार के जितना करीब की भूमि होगी, किसान उसके लिए उतना ही अधिक लगान या किराया देने को तैयार होगा क्योंकि वहां परिवहन लागत न्यूनतम होती है और लाभ की संभावना अधिकतम। जैसे-जैसे दूरी बढ़ती है, परिवहन खर्च बढ़ने के कारण किसान द्वारा दी जाने वाली बोली कम होती जाती है। यह प्रतिस्पर्धा ही शहरी और ग्रामीण भूमि उपयोग प्रतिरूप को निर्धारित करती है।

216. (A) वे लाभ जो फर्में एक-दूसरे के पास स्थित होकर प्राप्त करती हैं, जैसे कि साझा बुनियादी ढांचा और कुशल श्रम पूल।
समूहन अर्थव्यवस्थाएं उन आर्थिक फायदों को संदर्भित करती हैं जो कई उद्योगों के एक ही स्थान पर एकत्रित होने से प्राप्त होते हैं। इस भौगोलिक निकटता के कारण फर्में साझा बुनियादी ढांचे, उन्नत परिवहन नेटवर्क, और एक बड़े कुशल श्रम बाजार का लाभ उठा पाती हैं, जिससे उनकी व्यक्तिगत उत्पादन और संचालन लागत कम हो जाती है। यह प्रक्रिया नवाचार और व्यावसायिक अंतःक्रियाओं को भी बढ़ावा देती है। हालांकि, अत्यधिक जमाव से कभी-कभी भूमि की कीमतें और प्रदूषण बढ़ सकता है, लेकिन शुरुआती चरणों में समूहन उद्योगों के लिए अत्यंत लाभदायक और विकास का मुख्य उत्प्रेरक होता है।

217. (C) तृतीयक क्षेत्रक
कानूनी सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनी तृतीयक क्षेत्रक के अंतर्गत आती है क्योंकि यह समाज और व्यावसायिक संस्थानों को बौद्धिक एवं पेशेवर सेवाएं प्रदान करती है। तृतीयक क्षेत्रक, जिसे सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है, किसी भौतिक वस्तु के उत्पादन के बजाय सेवाओं के प्रावधान पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और परामर्श जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जो अर्थव्यवस्था के सुचारु संचालन के लिए अनिवार्य हैं। यद्यपि उच्च स्तरीय परामर्श चतुर्थक में हो सकता है, लेकिन सामान्य कानूनी सेवाएं पारंपरिक रूप से तृतीयक क्षेत्रक का ही अंग मानी जाती हैं।

218. (A) कृषि क्षेत्रों के निर्धारण के लिए अधिक वस्तुनिष्ठ और सांख्यिकीय रूप से सुदृढ़ पद्धति बनाना।
जे. सी. वीवर की शस्य संयोजन पद्धति का मुख्य लक्ष्य कृषि क्षेत्रों के वर्गीकरण में व्याप्त व्यक्तिगत और व्यक्तिपरक अनुमानों को समाप्त करना था। उन्होंने एक ऐसी सांख्यिकीय रूपरेखा विकसित की जो फसलों के वितरण का गणितीय विश्लेषण करती है, जिससे प्राप्त निष्कर्ष सत्यापन योग्य और वैज्ञानिक होते हैं। यह पद्धति भूगोलवेत्ताओं को किसी क्षेत्र की वास्तविक कृषि विशेषताओं को समझने और विभिन्न क्षेत्रों के बीच सटीक तुलना करने में सक्षम बनाती है। वीवर के इस योगदान ने कृषि भूगोल को वर्णनात्मक अध्ययन से हटाकर विश्लेषणात्मक और मात्रात्मक अध्ययन की ओर अग्रसर किया।

219. (D) उनकी अवस्थिति उनके प्राथमिक कच्चे माल के स्रोत से दृढ़ता से जुड़ी हुई है।
संसाधन-आधारित उद्योगों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी अवस्थिति की कच्चे माल के प्रति गहरी निर्भरता है। ये उद्योग, जैसे कि लोह-इस्पात या चीनी मिलें, भारी और वजन घटाने वाले कच्चे माल का उपयोग करते हैं, जिसके कारण उन्हें परिवहन लागत बचाने के लिए स्रोतों के पास स्थापित करना आर्थिक रूप से अनिवार्य होता है। ये उद्योग स्वच्छंद नहीं होते और न ही ये पूरी तरह सेवाओं पर आधारित होते हैं। कच्चे माल की भौगोलिक स्थिति ही इनकी सफलता और उत्पादन क्षमता को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण स्थानिक कारक सिद्ध होती है, जो इनकी प्रतिस्पर्धात्मकता का आधार है।

220. (B) दूरी की बाधा।
परिवहन भूगोल में 'दूरी की बाधा' का अर्थ यह है कि भौतिक दूरी को पार करने में जो समय, धन और प्रयास खर्च होता है, वह लोगों और वस्तुओं की आवाजाही के लिए एक स्वाभाविक अवरोध का कार्य करता है। जितनी अधिक दूरी होगी, परिवहन की लागत उतनी ही बढ़ेगी, जो आर्थिक अंतःक्रियाओं को हतोत्साहित करती है। इसे 'दूरी का घर्षण' भी कहा जाता है। परिवहन और संचार तकनीकों में होने वाले सुधारों का मुख्य लक्ष्य इसी बाधा को कम करना है ताकि सुगमता और आर्थिक दक्षता को बढ़ाया जा सके, जिससे क्षेत्रीय व्यापार सुदृढ़ होता है।

221. (C) लॉश का मॉडल
ऑगस्ट लॉश का अवस्थिति मॉडल बाजार क्षेत्रों के स्थानिक विश्लेषण और लाभ को अधिकतम करने के सिद्धांत पर आधारित है। वेबर के न्यूनतम लागत दृष्टिकोण के विपरीत, लॉश ने तर्क दिया कि उद्योगपतियों को वह स्थान चुनना चाहिए जहाँ मांग सबसे अधिक हो और वे अपने बाजार क्षेत्र का अधिकतम विस्तार कर सकें। उन्होंने बाजार प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता व्यवहार को केंद्र में रखकर इष्टतम राजस्व प्राप्ति की व्याख्या की। लॉश का यह मॉडल षट्कोणीय बाजार क्षेत्रों के माध्यम से स्थानिक संगठन को समझने के लिए आधुनिक आर्थिक भूगोल में एक अनिवार्य ढांचा प्रदान करता है।

222. (D) अधिक लचीली और स्थिर कृषि अर्थव्यवस्था की ओर।
किसी क्षेत्र में शस्य विविधीकरण बढ़ने से वहां की कृषि प्रणाली अधिक लचीली और स्थिर हो जाती है। जब किसान विभिन्न प्रकार की फसलें उगाता है, तो वह किसी एक फसल की बीमारी या बाजार की कीमतों में गिरावट से होने वाले नुकसान से बच सकता है। यह विविधता मृदा के स्वास्थ्य में सुधार करती है और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सहनशीलता बढ़ाती

NODIA

यह अनिवार्य है कि इनका उपयोग विवेकपूर्ण, कुशल और संधारणीय तरीके से किया जाए ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी इनका अस्तित्व बना रहे। यह अंधाधुंध दोहन के बजाय नियोजित प्रबंधन पर बल देता है। संसाधनों की कमी वैश्विक विकास को बाधित कर सकती है, इसलिए संरक्षण ही दीर्घकालिक समृद्धि और पर्यावरणीय सुरक्षा का सबसे मजबूत और विश्वसनीय आधार माना जाता है।

274. (A) समूहन/विकेंद्रीकरण की अर्थव्यवस्थाएँ।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक सिद्धांत में किसी उद्योग की इष्टतम अवस्थिति परिवहन लागत, श्रम लागत और समूहन लाभों के बीच एक जटिल संतुलन का परिणाम होती है। परिवहन और श्रम लागत के बाद, समूहन या 'एग्लोमेरेशन' वह तीसरा प्राथमिक कारक है जो उद्योगों को एक साथ स्थित होने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे साझा बुनियादी ढांचे और सेवाओं के माध्यम से लागत बचा सकें। कभी-कभी अत्यधिक जमाव से होने वाले नुकसान के कारण विकेंद्रीकरण भी होता है। ये तीनों बल मिलकर ही किसी कारखाने की सबसे अनुकूल भौगोलिक स्थिति का निर्धारण करते हैं।

275. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सड़क परिवहन निस्संदेह आवागमन का सबसे लचीला साधन है क्योंकि यह बिना किसी विशेष टर्मिनल की आवश्यकता के लगभग हर स्थान तक पहुँच सकता है। इसका सबसे बड़ा लाभ इसकी घर-घर तक सीधी सेवा प्रदान करने की क्षमता है, जो इसे व्यक्तिगत यात्रा और छोटी रसद के लिए अनिवार्य बनाता है। सड़क मार्ग उन पहाड़ी या ग्रामीण क्षेत्रों में भी विकसित किए जा सकते हैं जहाँ रेल या जल परिवहन की सुविधा पहुँचाना अत्यंत कठिन या असंभव होता है। यह पहुंच और परिचालन की स्वतंत्रता ही इसे आधुनिक परिवहन तंत्र का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ बनाती है।

276. (D) वह सापेक्ष सुगमता जिसके साथ अन्य स्थानों से किसी स्थान तक पहुँचा जा सकता है।
परिवहन भूगोल में 'अभिगम्यता' की अवधारणा यह मापती है कि एक नेटवर्क के भीतर किसी विशिष्ट गंतव्य तक अन्य स्थानों से कितनी आसानी, समय और कम लागत में पहुँचा जा सकता है। यह केवल सड़कों की भौतिक उपस्थिति नहीं है, बल्कि यह स्थान के साथ संपर्क बनाने के सापेक्ष अवसरों को दर्शाती है। उच्च अभिगम्यता वाले स्थान अधिक व्यापार और निवेश को आकर्षित करते हैं क्योंकि वहां लोगों और माल की आवाजाही सुलभ होती है। यह अवधारणा क्षेत्रीय योजना, शहरी विकास और बाजार की पहुँच का विश्लेषण करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

277. (C) कोयला और लौह अयस्क।
इस्पात उद्योग एक प्रमुख संसाधन-आधारित उद्योग है क्योंकि इसके मुख्य कच्चे माल, कोयला और लौह अयस्क, अत्यंत भारी, स्थूल और वजन घटाने वाले होते हैं। इन सामग्रियों को लंबी दूरी तक ले जाने का परिवहन खर्च तैयार इस्पात की तुलना में बहुत अधिक होता है। इसलिए, ऐतिहासिक रूप से इस्पात संयंत्रों को उन क्षेत्रों के पास स्थापित किया गया है जहाँ ये खनिज प्रचुरता से उपलब्ध हैं। यह अवस्थिति उत्पादन लागत को न्यूनतम रखने और परिचालन क्षमता बढ़ाने के लिए अनिवार्य है। कच्चे माल की निकटता ही इस उद्योग की सफलता और स्थानिक वितरण का मुख्य आधार रही है।

278. (B) कच्चे माल का तैयार माल में प्रसंस्करण।
द्वितीयक क्षेत्रक आर्थिक गतिविधियों का वह भाग है जो प्राथमिक क्षेत्रक से प्राप्त प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण और प्रसंस्करण के माध्यम से उपयोगी वस्तुओं और तैयार माल में रूपांतरित करता है। इसमें कारखाने, निर्माण कार्य और ऊर्जा उत्पादन जैसी क्रियाएं शामिल होती हैं जहाँ कच्चे माल का रूप बदलकर उसमें मूल्यवर्धन किया जाता है। द्वितीयक क्षेत्रक किसी भी अर्थव्यवस्था के औद्योगीकरण का मुख्य चालक है क्योंकि यह कच्चे माल को अधिक टिकाऊ और मानव के लिए सीधे उपयोगी वस्तुओं में बदल देता है। यह प्रसंस्करण ही इसे केवल निष्कर्षण करने वाले प्राथमिक क्षेत्रक से अलग करता है।

279. (D) कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप।
जे. एच. वॉन थ्यूनेन का मॉडल अनिवार्य रूप से कृषि भूमि उपयोग के स्थानिक प्रतिरूप की व्याख्या करने वाला एक मौलिक आर्थिक सिद्धांत है। यह मॉडल यह स्पष्ट करता है कि कैसे एक बाजार शहर के चारों ओर विभिन्न प्रकार की कृषि गतिविधियाँ संकेंद्रित छल्लों के रूप में व्यवस्थित होती हैं। उनका मुख्य तर्क यह था कि भूमि लगान और परिवहन लागत के बीच का संतुलन ही यह निर्धारित करता है कि बाजार से अलग-अलग दूरियों पर कौन सी फसलें उगाई जानी चाहिए। यह सिद्धांत आधुनिक स्थानिक संगठन और भूमि उपयोग विश्लेषण के अध्ययन के लिए भूगोल में एक आधारभूत स्तंभ माना जाता है।

280. (A) तैयार उत्पादों में उच्च मूल्य-से-भार अनुपात होता है।
स्वच्छंद उद्योगों की सबसे प्रमुख पहचान यह है कि उनके तैयार उत्पादों का मूल्य उनके वजन की तुलना में बहुत अधिक होता है, जैसे कि कंप्यूटर चिप्स या कीमती पत्थर। इस विशेषता के कारण, इन उत्पादों की परिवहन लागत उनकी कुल उत्पादन लागत का एक अत्यंत नगण्य हिस्सा होती है। यही कारण है कि ये उद्योग कच्चे माल के स्रोत या बाजार की निकटता से बंधे नहीं होते हैं और इन्हें किसी भी भौगोलिक स्थान पर लचीले ढंग से स्थापित किया जा सकता है। इनकी आर्थिक सफलता परिवहन के बजाय तकनीकी नवाचार और कुशल श्रम पर अधिक निर्भर करती है।

281. (C) डरवेंट व्हिटलसी
विश्व की कृषि प्रणालियों का सबसे व्यवस्थित और वैज्ञानिक वर्गीकरण करने का गौरव डरवेंट व्हिटलसी को प्राप्त है। उन्होंने 1936 में फसलों और पशुओं के साहचर्य, खेती की तकनीकों, भूमि उपयोग की तीव्रता और कृषि उत्पादों के उपभोग के तरीके जैसे कार्यात्मक मानदंडों के आधार पर विश्व को विभिन्न कृषि प्रदेशों में विभाजित किया। उनका यह वर्गीकरण केवल पैदावार पर नहीं, बल्कि संपूर्ण कृषि जीवन और पर्यावरण के साथ मानवीय संबंधों के विश्लेषण पर आधारित था। यह भूगोल

NODIA

231. (D) मशीनीकरण के माध्यम से कृषि उत्पादन और श्रमिक उत्पादकता।
कृषि में मानवीय श्रम के स्थान पर मशीनों का उपयोग करने से न केवल कुल उत्पादन की मात्रा बढ़ती है, बल्कि प्रत्येक श्रमिक की उत्पादकता में भी उल्लेखनीय वृद्धि होती है। ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर और उन्नत सिंचाई प्रणालियाँ जैसे यंत्र कम समय में अधिक काम करने में सक्षम होते हैं, जिससे उत्पादन लागत कम होती है। यह आधुनिक खेती का एक महत्वपूर्ण लक्षण है जो किसानों को बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक उत्पादन करने में समर्थ बनाता है। मशीनीकरण ने कृषि को एक श्रम-प्रधान कार्य से हटाकर एक कुशल और पूंजी-प्रधान तकनीकी व्यवसाय में बदल दिया है।

232. (A) संसाधनों का विवेकपूर्ण और नियोजित उपयोग ताकि उनकी बर्बादी को रोका जा सके और भविष्य में उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।
संसाधन संरक्षण का वास्तविक अर्थ प्राकृतिक संपदा का अंधाधुंध दोहन रोकना और उसे वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधित करना है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते समय संसाधनों को इस प्रकार उपयोग करे कि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त मात्रा में शेष रहें। इसमें अपशिष्ट को कम करना, पुनर्चक्रण और संसाधनों के संधारणीय उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है। यह केवल संसाधनों को बचाना नहीं है, बल्कि यह दीर्घकालिक आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच एक आवश्यक संतुलन बनाने की प्रक्रिया है।

233. (C) भूमि लगान और परिवहन लागत।
वॉन थ्यूनेन के मॉडल में संकेंद्रित छल्लों का प्रतिरूप मुख्य रूप से भूमि लगान और परिवहन लागत के बीच की परस्पर आर्थिक क्रिया का परिणाम है। बाजार के समीप भूमि का लगान अधिक होता है लेकिन परिवहन व्यय न्यूनतम होता है, जो किसानों को अधिक मूल्य वाली और गहन फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। जैसे-जैसे बाजार से दूरी बढ़ती है, परिवहन खर्च बढ़ता जाता है और भूमि का लगान गिरता जाता है, जिससे खेती कम गहन होती जाती है। यह संतुलन ही विभिन्न कृषि गतिविधियों के लिए विशिष्ट संकेंद्रित क्षेत्रों का निर्माण करता है।

234. (A) बाजार-उन्मुख।
वेबर के औद्योगिक सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी विनिर्माण प्रक्रिया में तैयार उत्पाद अपने कच्चे माल की तुलना में अधिक भारी, स्थूल या परिवहन में अधिक महंगा हो जाता है, तो उसे 'भार-वृद्धि' उद्योग कहा जाता है। ऐसी स्थिति में, भारी और महंगे तैयार माल को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने की लागत कच्चे माल को लाने की तुलना में कहीं अधिक होगी। अतः, कुल परिवहन व्यय को न्यूनतम रखने के लिए कारखाने को बाजार के जितना संभव हो सके उतना करीब स्थापित करना ही सबसे तर्कसंगत और आर्थिक रूप से लाभप्रद निर्णय होता है।

235. (A) 1, 2 और 3
अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत एक आदर्शात्मक न्यूनतम-लागत मॉडल है, जिसका उद्देश्य सबसे किफायती स्थान खोजना है। उन्होंने पदार्थ सूचकांक के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि कच्चा माल या बाजार में से कौन सा स्थान उद्योग के लिए अधिक आकर्षक होगा। वेबर के मॉडल की एक मुख्य विशेषता यह भी थी कि उन्होंने केवल लागतों पर ध्यान दिया और मांग की विविधता के प्रभाव को पूरी तरह अनदेखा कर दिया। ये तीनों बिंदु वेबर के शास्त्रीय आर्थिक भूगोल के वैचारिक ढांचे को सही ढंग से परिभाषित करते हैं। अतः, सभी कथन पूर्णतः सत्य हैं।

236. (B) ज्ञान अर्थव्यवस्था
चतुर्थक क्षेत्रक को अक्सर 'ज्ञान अर्थव्यवस्था' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह पूरी तरह से बौद्धिक पूंजी और सूचना के प्रबंधन पर आधारित है। इसमें वैज्ञानिक अनुसंधान, सूचना प्रौद्योगिकी, उच्च तकनीकी परामर्श और रणनीतिक नियोजन जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। इस क्षेत्रक में मूल्य का सृजन शारीरिक श्रम या विनिर्माण के बजाय सूचना के संग्रहण, विश्लेषण और नवाचार के माध्यम से किया जाता है। यह आधुनिक समाज के डिजिटल विकास का मुख्य आधार है और किसी राष्ट्र की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को सुदृढ़ करने में इसकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक मानी जाती है।

237. (C) वॉन थ्यूनेन का कृषि भूमि उपयोग मॉडल
'विलगित राज्य' जे. एच. वॉन थ्यूनेन द्वारा प्रस्तुत कृषि भूमि उपयोग मॉडल की एक काल्पनिक और सरलीकृत भौगोलिक सेटिंग है। इस राज्य की कल्पना एक ऐसे विस्तृत मैदान के रूप में की गई है जो बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटा हुआ है और जिसके केंद्र में केवल एक ही बाजार शहर है। यह सेटिंग वॉन थ्यूनेन को अन्य भौगोलिक और राजनीतिक बाधाओं को हटाकर केवल परिवहन लागत और भूमि लगान के प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण करने की अनुमति देती है। यह आर्थिक भूगोल के इतिहास में स्थानिक संगठन को समझने के लिए पहला व्यवस्थित और आदर्शात्मक मॉडल माना जाता है।

238. (D) कस्टमर सपोर्ट कॉल सेंटर
कॉल सेंटर एक स्वच्छंद उद्योग का सटीक उदाहरण है क्योंकि इसके संचालन के लिए किसी विशिष्ट भौगोलिक कच्चे माल या भारी परिवहन की आवश्यकता नहीं होती है। इस उद्योग की मुख्य आवश्यकता केवल उच्च गति वाली इंटरनेट संयोजकता और निपुण कार्यबल है। चूंकि इसके उत्पाद और सेवाएँ डिजिटल माध्यम से कहीं भी पहुँचाई जा सकती हैं, इसलिए इसे परिवहन लागत या बाजार की दूरी से प्रभावित हुए बिना किसी भी स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। इसके विपरीत, एल्युमीनियम और पेट्रोलियम जैसे उद्योग अपनी भारी सामग्री के कारण विशिष्ट स्थानों से बंधे होते हैं।

239. (A) नेटवर्क के कई अन्य केंद्रों से वहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।
परिवहन भूगोल में किसी केंद्र की उच्च अभिगम्यता का तात्पर्य है कि वह स्थान नेटवर्क के भीतर एक केंद्रीय और सुलभ स्थिति में है। वहां पहुँचने के लिए कई मार्ग और साधन उपलब्ध होते हैं, जिससे यात्रा में समय और लागत दोनों की बचत होती है। उच्च अभिगम्यता वाले स्थान अक्सर व्यापार, सेवाओं और

Downloaded from www.pdf.tube

उल्लेखनीय कमी आती है। यदि परिवहन के साधनों में परिवर्तन वाले स्थान पर ही कारखाने स्थापित किए जाएं, तो भारी कच्चे माल को उतारने और उसी स्थान पर हल्का तैयार उत्पाद बनाने से काफी रसद व्यय बच जाता है। इसके अतिरिक्त, लदान और उतारने के समय ही प्रसंस्करण करना आर्थिक रूप से अधिक कुशल होता है। यही कारण है कि भारी खनिजों और कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण केंद्र अक्सर बड़े बंदरगाहों या रेलवे जंक्शनों पर स्थित होते हैं।

291. (C) ऑगस्ट लॉश का सिद्धांत
ऑगस्ट लॉश का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत मुख्य रूप से लाभ को अधिकतम करने की अवधारणा पर आधारित है। वेबर के विपरीत, जिन्होंने केवल उत्पादन और परिवहन लागत को न्यूनतम करने पर ध्यान केंद्रित किया, लॉश ने तर्क दिया कि उद्योग को वहां होना चाहिए जहाँ वह सबसे अधिक ग्राहकों तक पहुँच सके और अधिकतम राजस्व प्राप्त कर सके। उन्होंने बाजार प्रतिस्पर्धा और मांग के स्थानिक व्यवहार को अपने विश्लेषण का केंद्र बनाया। यह दृष्टिकोण आधुनिक व्यावसायिक रणनीतियों को समझने के लिए अधिक व्यापक है क्योंकि यह लागत और आय के बीच के इष्टतम अंतर को खोजने का लक्ष्य रखता है।

292. (D) शस्य विविविधीकरण
एक ही कृषि क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने की वैज्ञानिक प्रथा को शस्य विविविधीकरण के रूप में जाना जाता है। यह पद्धति एकल कृषि की कमियों को दूर करने के लिए अपनाई जाती है। विविविधीकरण से मृदा के पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है और किसी एक फसल की विफलता या बाजार मूल्य में गिरावट से होने वाले आर्थिक नुकसान का जोखिम काफी कम हो जाता है। यह एक आधुनिक और संधारणीय दृष्टिकोण है जो किसानों को न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ खेती को भी प्रोत्साहन देता है।

293. (C) संधारणीय प्रतिफल।
मत्स्य पालन का प्रबंधन इस प्रकार करना कि मछलियों की आबादी उनकी प्राकृतिक पुनरुत्पादन क्षमता से अधिक कम न हो, संधारणीय प्रतिफल के सिद्धांत का एक सटीक अनुप्रयोग है। इसका मुख्य उद्देश्य नवीकरणीय संसाधनों का दोहन केवल उसी दर तक करना है जिस दर पर वे प्राकृतिक रूप से स्वतः पुनः पूरित हो सकें। यदि दोहन की गति उनके पुनर्जन्म से अधिक हो जाती है, तो संसाधन भविष्य में समाप्त हो सकते हैं। अतः, यह अवधारणा संसाधनों के दीर्घकालिक अस्तित्व और पारिस्थितिक संतुलन को सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक स्तर पर अनिवार्य मानी जाती है।

294. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
द्वितीयक क्षेत्रक विनिर्माण और प्रसंस्करण के माध्यम से कच्चे माल को तैयार उत्पादों में बदलकर उसमें महत्वपूर्ण आर्थिक मूल्य जोड़ता है, जो प्राथमिक क्षेत्रक की तुलना में अधिक होता है। वहीं, तृतीयक क्षेत्रक का उत्पादन अक्सर अमूर्त सेवाओं के रूप में होता है, जैसे कि शिक्षा, परामर्श और बैंकिंग, जिनका कोई भौतिक स्वरूप नहीं होता लेकिन वे अर्थव्यवस्था के लिए अनिवार्य हैं। ये दोनों क्षेत्रक किसी भी विकसित अर्थव्यवस्था के विकास और रोजगार सृजन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। अतः, दोनों कथन इन क्षेत्रकों की मौलिक विशेषताओं और उनके आर्थिक योगदान को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

295. (D) विभिन्न स्रोतों से परिवहन लागत।
अल्फ्रेड वेबर के औद्योगिक सिद्धांत में 'आइसोडापेन' का उपयोग मुख्य रूप से विभिन्न स्रोतों, जैसे कच्चे माल के केंद्रों और बाजार, से जुड़ी संयुक्त परिवहन लागत के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। ये काल्पनिक रेखाएं उन सभी स्थानों को जोड़ती हैं जहाँ कुल परिवहन खर्च एक समान रहता है। इनका उपयोग भूगोलवेत्ता यह समझने के लिए करते हैं कि कैसे किसी उद्योग की अवस्थिति केवल एक कारक के बजाय कई स्रोतों से आने वाली परिवहन लागतों के संचयी योग द्वारा निर्धारित होती है। यह औद्योगिक भूगोल में रसद प्रबंधन के विश्लेषण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है।

296. (A) इसकी कुल लागतों का एक बहुत ही छोटा और नगण्य हिस्सा।
स्वच्छंद उद्योगों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनकी कुल उत्पादन लागत में परिवहन व्यय का महत्व बहुत ही कम होता है। इनके कच्चे माल अक्सर हल्के होते हैं और तैयार उत्पाद उच्च मूल्य वाले एवं परिवहन में सुगम होते हैं, जिससे इन्हें लंबी दूरी तक ले जाना किफायती पड़ता है। इसके कारण, परिवहन लागत इनकी अवस्थिति को किसी विशिष्ट स्थान, जैसे कि कच्चे माल के स्रोत या बाजार, से बांधने में विफल रहती है। यह स्वतंत्रता ही इन उद्योगों को तकनीकी विशेषज्ञता और कुशल श्रम की उपलब्धता के आधार पर कहीं भी स्थापित होने की अनुमति देती है।

NODIA

297. (C) पाइपलाइन
भूमि के ऊपर पेट्रोलियम या प्राकृतिक गैस जैसी भारी और निरंतर मात्रा वाली वस्तुओं के परिवहन के लिए पाइपलाइन सबसे आदर्श और कुशल साधन है। एक बार निर्माण हो जाने के बाद, इसमें परिचालन लागत बहुत कम हो जाती है और प्रवाह पूरी तरह से सुरक्षित एवं मौसम की बाधाओं से मुक्त रहता है। इसमें माल की चोरी या क्षति का जोखिम नगण्य होता है और यह लंबी दूरियों तक तेल और गैस पहुँचाने का सबसे विश्वसनीय माध्यम है। हालांकि इसमें लचीलापन कम होता है, लेकिन तरल पदार्थों के थोक परिवहन के लिए यह सबसे किफायती समाधान सिद्ध होता है।

298. (A) आर्थिक विकास।
अर्थव्यवस्था का प्राथमिक क्षेत्रक से द्वितीयक और फिर तृतीयक एवं चतुर्थक क्षेत्रकों की ओर स्थानांतरित होना आर्थिक विकास का एक सार्वभौमिक और अनिवार्य संकेत है। यह प्रक्रिया समाज के औद्योगीकरण और अंततः सेवा अर्थव्यवस्था में बदलने को दर्शाती है। जैसे-जैसे राष्ट्र विकसित होता है, तकनीकी प्रगति और बढ़ती आय के कारण लोग कृषि से हटकर विनिर्माण और उच्च स्तरीय सेवाओं की ओर बढ़ते हैं, जहाँ अधिक मूल्यवर्धन और बेहतर जीवन स्तर के अवसर उपलब्ध होते हैं। यह क्षेत्रकीय रूपांतरण किसी भी समाज की

(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-1, Q-2, R-4, S-3
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

11. प्रायद्वीपीय पठार के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से बनी एक मेज की आकृति वाली भूमि है।
(B) इसका निर्माण गोंडवाना भूमि के टूटने और अपवहन के कारण हुआ था।
(C) इस पठार की विशेषता चौड़ी एवं उथली घाटियाँ तथा गोलाकार पहाड़ियाँ हैं।
(D) अपनी हालिया विवर्तनिक उत्पत्ति के कारण यह पठार उच्च भूकंपीय गतिविधि वाला क्षेत्र है।

12. उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट स्ट्रीम सर्दियों के दौरान भारत में निम्नलिखित में से किस मौसम परिघटना के लिए उत्तरदायी है?
(A) बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले बार-बार आने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात
(B) उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत में पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ
(C) मालाबार तट पर स्थानीय भारी वर्षा का स्वरूप
(D) उत्तरी मैदानों में उत्पन्न होने वाली मौसमी 'लू' पवनें

13. भारत के किस क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन मुख्य रूप से पाए जाते हैं?
(A) गुजरात और राजस्थान के अर्ध-शुष्क और शुष्क परिदृश्य
(B) उत्तर प्रदेश और बिहार के उपजाऊ जलोढ़ गंगा के मैदान
(C) पश्चिमी घाट और लक्षद्वीप एवं अंडमान के द्वीप समूह
(D) जम्मू और कश्मीर में हिमालय के ऊंचे क्षेत्र

14. भारत में खनिज संसाधनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में काफी समृद्ध और विविध खनिज संसाधन हैं, लेकिन वे असमान रूप से वितरित हैं।
2. प्रायद्वीपीय चट्टानों में कोयले, धात्विक खनिजों और अभ्रक के अधिकांश भंडार पाए जाते हैं।
3. प्रायद्वीप के पश्चिमी और पूर्वी किनारों पर स्थित अवसादी चट्टानों में अधिकांश पेट्रोलियम निक्षेप पाए जाते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

15. उत्तरी मैदान का सबसे बड़ा हिस्सा पुराने जलोढ़ से बना है, जिसे किस नाम से जाना जाता है?
(A) भांगर
(B) खादर
(C) तराई
(D) भाबर

16. उत्तरी मैदानों में 'खादर' क्षेत्र की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) यह शिवालिक की ढलानों के समानांतर कंकड़-पत्थरों की एक पट्टी है।
(B) इसमें बाढ़ के मैदानों के नवीन निक्षेप होते हैं और इनका लगभग प्रतिवर्ष नवीनीकरण होता है।
(C) यह पुराने जलोढ़ का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें अक्सर चूनेदार निक्षेप (कंकड़) होते हैं।
(D) यह भाबर पट्टी के दक्षिण में स्थित एक नम, दलदली और आर्द्र क्षेत्र है।

17. पूर्वी घाट की सबसे ऊँची चोटी कौन सी है?
(A) अनाइमुडी
(B) महेंद्रगिरि
(C) कंचनजंगा
(D) डोड्डाबेट्टा

18. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): मालाबार तट पर जून-जुलाई में दक्षिण-पश्चिम मानसून से भारी वर्षा होती है।
कारण (R): यह तट पश्चिमी घाट के पवनमुखी ढाल पर स्थित है, जो मानसून की अरब सागर शाखा के लिए एक पर्वतीय अवरोध के रूप में कार्य करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

19. किस उद्योग को अक्सर "उदीयमान उद्योग" (सनराइज इंडस्ट्री) कहा जाता है?
(A) लोहा और इस्पात उद्योग
(B) सूती वस्त्र उद्योग
(C) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग
(D) जूट वस्त्र उद्योग

20. निम्नलिखित में से कौन सा शक्ति संसाधन ऊर्जा का गैर-पारंपरिक स्रोत माना जाता है?
(A) कोयला
(B) पेट्रोलियम
(C) प्राकृतिक गैस
(D) सौर ऊर्जा

21. लघु हिमालय और शिवालिक के बीच स्थित अनुदैर्ध्य घाटियों को किस नाम से जाना जाता है?
(A) दुआर
(B) करेवा
(C) दून
(D) बुग्याल

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 08
भारत का भूगोल

1. भारत का निम्नलिखित में से कौन सा भू-आकृतिक विभाग भूवैज्ञानिक दृष्टि से नवीनतम माना जाता है?
(A) प्रायद्वीपीय पठार
(B) उत्तरी मैदान
(C) तटीय मैदान
(D) भारतीय द्वीप समूह

2. भारत की जलवायु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारतीय उपमहाद्वीप पर मानसून का एकता स्थापित करने वाला प्रभाव अत्यंत स्पष्ट है।
कथन II: भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु की क्षेत्रीय विविधताएं नगण्य हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

3. भारत में सबसे प्रमुख और व्यापक वनस्पति प्रकार निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(B) उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन और झाड़ियाँ
(C) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
(D) पर्वतीय वन

4. भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना किस देश के सहयोग से की गई थी?
(A) जर्मनी
(B) यूनाइटेड किंगडम
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका
(D) सोवियत संघ

5. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): भारत के उत्तरी मैदान कृषि की दृष्टि से अत्यंत उत्पादक हैं।
कारण (R): ये मैदान सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित हैं, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ उपजाऊ मृदा पाई जाती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

6. निम्नलिखित में से कौन सी फसल मुख्य रूप से उत्तरी मैदानों की जलोढ़ मृदा वाले क्षेत्रों में नहीं उगाई जाती है?
(A) चावल
(B) कॉफी
(C) गेहूं
(D) गन्ना

7. हिमालय का अनुमानित पूर्व-पश्चिम विस्तार कितना है?
(A) 1,200 किमी
(B) 3,200 किमी
(C) 4,000 किमी
(D) 2,400 किमी

8. 'मानसून' शब्द अरबी शब्द 'मौसिम' से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है:
(A) मौसम (ऋतु)
(B) पवन
(C) वर्षा
(D) बादल

9. प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' किस हिमालयी श्रेणी में स्थित है?
(A) हिमाद्रि
(B) शिवालिक
(C) हिमाचल
(D) ट्रांस-हिमालय

10. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (खनिज):
P. बॉक्साइट
Q. अभ्रक
R. लौह अयस्क
S. मैंगनीज
सूची II (प्रमुख उत्पादक राज्य):
1. ओडिशा
2. झारखंड
3. ओडिशा
4. मध्य प्रदेश
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4

NODIA

57. कश्मीर घाटी के 'करेवा' किसकी खेती के लिए जाने जाते हैं?
(A) केसर
(B) चाय
(C) रबर
(D) जूट

58. भारत की प्रमुख फसलों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत, चीन के बाद विश्व में चावल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
2. देश के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भाग में गेहूं मुख्य खाद्य फसल है।
3. ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाज हैं लेकिन इनका पोषण मूल्य बहुत अधिक होता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

59. पूर्वी तटीय मैदान के उत्तरी भाग को क्या कहा जाता है?
(A) कोरोमंडल तट
(B) मालाबार तट
(C) कोंकण तट
(D) उत्तरी सरकार

60. हुगली बेसिन में जूट वस्त्र उद्योग की स्थापना के लिए निम्नलिखित में से कौन सा कारक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
(A) जूट उत्पादक क्षेत्रों से निकटता
(B) सस्ते श्रम की उपलब्धता
(C) कच्चे जूट के प्रसंस्करण के लिए प्रचुर जल की उपलब्धता
(D) उपरोक्त सभी

61. कोपेन के वर्गीकरण के अनुसार, 'Amw' अक्षर कोड किस प्रकार की जलवायु को दर्शाता है, जो लघु शुष्क ऋतु वाली मानसूनी जलवायु का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) भारत का पश्चिमी तट, गोवा के दक्षिण में
(B) कोरोमंडल तट
(C) प्रायद्वीपीय भारत का आंतरिक भाग
(D) सुदूर पश्चिमी राजस्थान

62. निम्नलिखित में से कौन सा सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला लौह अयस्क है जिसमें 70 प्रतिशत तक लोहांश होता है?
(A) मैग्नेटाइट
(B) हेमेटाइट
(C) सिडेराइट
(D) लिमोनाइट

63. हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी को किस नाम से जाना जाता है?
(A) हिमाद्रि
(B) हिमाचल
(C) शिवालिक
(D) पूर्वांचल

64. केरल और कर्नाटक में आमों को पकने में सहायता करने वाली मानसून पूर्व की वर्षा को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) काल बैसाखी
(B) आम्र वर्षा (मैंगो शावर)
(C) फूलों वाली बौछार (ब्लॉसम शावर)
(D) लू

65. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (राष्ट्रीय उद्यान/अभयारण्य):
P. काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
Q. सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान
R. फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान
S. डेजर्ट (मरुभूमि) राष्ट्रीय उद्यान
सूची II (राज्य):
1. पश्चिम बंगाल
2. राजस्थान
3. असम
4. उत्तराखंड
कोड:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

66. निम्नलिखित में से कौन सी प्रायद्वीपीय पठार की विशेषता नहीं है?
(A) यह पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से निर्मित है।
(B) इसमें चौड़ी और उथली घाटियाँ शामिल हैं।
(C) इसकी विशेषता ऊँची शंक्वाकार चोटियाँ और गहरी खाइयाँ हैं।
(D) यह प्राचीनतम एवं स्थिर भूमि खंडों में से एक है।

67. किसी क्षेत्र को उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों और झाड़ियों के रूप में वर्गीकृत करने के लिए वर्षा की निर्धारित सीमा क्या है?
(A) 200 सेमी से ऊपर
(B) 100 सेमी और 200 सेमी के मध्य
(C) 70 सेमी और 100 सेमी के मध्य
(D) 70 सेमी से कम

68. उत्तर भारत से प्रायद्वीपीय भारत में चीनी उद्योग के स्थानांतरित होने का मुख्य कारण है:
(A) दक्षिण में उगाए जाने वाले गन्ने में सुक्रोज की अधिक

Downloaded from www.pdf.tube

22. भारत के निम्नलिखित भू-आकृतिक विभागों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. मालवा का पठार
2. शिवालिक श्रेणी
3. दक्कन का पठार
4. काराकोरम श्रेणी

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 4-2-1-3
(B) 2-4-1-3
(C) 4-1-2-3
(D) 1-2-3-4

23. दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम के दौरान तमिलनाडु तट के शुष्क रहने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) यह पश्चिमी घाट के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है।
(B) संघनन के लिए तापमान लगातार बहुत अधिक रहता है।
(C) स्थानीय पवनें मानसून की पवनों को क्षेत्र में प्रवेश करने से रोकती हैं।
(D) यह मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर स्थित है।

24. किस प्रकार की वनस्पति की विशेषता सुंदरी जैसे वृक्ष हैं, जो प्रमुख नदियों के डेल्टा में पाए जाते हैं?
(A) मैंग्रोव वन
(B) पर्वतीय वन
(C) उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
(D) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

25. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (फसल):
P. चावल
Q. गेहूं
R. कपास
S. चाय

सूची II (जलवायु संबंधी आवश्यकता):
1. ठंडी वर्धन ऋतु और पकने के समय खिली हुई धूप
2. उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता और 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा
3. उच्च तापमान, हल्की वर्षा और 210 पाला रहित दिन
4. बार-बार होने वाली बौछारों के साथ गर्म और नम पाला रहित जलवायु

कोड:
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

26. झारखंड का कोडरमा क्षेत्र निम्नलिखित में से किस खनिज का अग्रणी उत्पादक है?
(A) अभ्रक
(B) बॉक्साइट
(C) लौह अयस्क
(D) तांबा

27. 'औद्योगिक क्षेत्र' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह से ऐसे क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है जहाँ:
(A) केवल एक बड़े पैमाने का और विशिष्ट उद्योग स्थित हो।
(B) कई उद्योग स्थित हों जो आपस में जुड़े हुए न हों।
(C) स्थानीय स्तर पर कृषि और उद्योग समान रूप से संचालित होते हों।
(D) उद्योग निकटता और अंतर्संबंधों का लाभ उठाने के लिए एक साथ समूह में स्थित हों।

28. गोवा के दक्षिण में स्थित पश्चिमी तटीय पट्टी को क्या कहा जाता है?
(A) कोंकण
(B) कन्नड़ मैदान
(C) कोरोमंडल
(D) उत्तरी सरकार

29. भारत के भू-आकृतिक विभागों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रायद्वीपीय पठार पृथ्वी की सतह पर प्राचीनतम भू-भागों में से एक है।
2. हिमालय और उत्तरी मैदान नवीनतम स्थलकृतियाँ हैं।
3. हिमालय अपनी पुरानी वलित पर्वत संरचना के कारण एक बहुत ही स्थिर स्थलकृति का प्रतिनिधित्व करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

30. भारत के उत्तरी मैदानों से मानसून की वापसी एक:
(A) अचानक होने वाली प्रक्रिया है
(B) अत्यंत तीव्र प्रक्रिया है
(C) ऐसी प्रक्रिया है जो रातों-रात घटित होती है
(D) क्रमिक प्रक्रिया है

31. निम्नलिखित में से कौन सी उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) ये 200 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
(B) वृक्षों की जड़ें लंबी होती हैं जो नमी के लिए मृदा में गहराई तक जाती हैं।
(C) वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु में लगभग छह से आठ सप्ताह के लिए अपनी पत्तियां गिरा देते हैं।
(D) यहाँ पाए जाने वाले सामान्य जंतु हाथी, बंदर और वन लेमुर हैं।

NODIA

81. कपास की कृषि के लिए आदर्श काली मृदा किस क्षेत्र की विशिष्ट विशेषता है?
(A) जलोढ़ मैदान
(B) लाल मृदा क्षेत्र
(C) दक्कन ट्रैप (रेगुर मृदा)
(D) लेटेराइट मृदा क्षेत्र

82. भारत में वनस्पति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पर्वतीय वनों में ऊंचाई बढ़ने के साथ उष्णकटिबंधीय से लेकर टुंड्रा तक वनस्पतियों का अनुक्रम दिखाई देता है।
2. मैंग्रोव वन ज्वार-भाटे से प्रभावित तटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
3. उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन बहु-स्तरीय होते हैं और वृक्षों के पत्तियां गिराने का कोई निश्चित समय नहीं होता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

83. कोरोमंडल तट पर शीतकालीन वर्षा का मुख्य कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) दक्षिण-पश्चिम मानसून
(B) उत्तर-पूर्वी मानसून
(C) पश्चिमी विक्षोभ
(D) अरब सागर से आने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात

84. प्रथम सफल सूती वस्त्र मिल 1854 में किस शहर में स्थापित की गई थी?
(A) कोलकाता
(B) अहमदाबाद
(C) मुंबई
(D) कोयंबटूर

85. राजस्थान में खेतड़ी खदानें किसके लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) लोहा
(B) अभ्रक
(C) तांबा
(D) बॉक्साइट

86. निम्नलिखित में से कौन प्रायद्वीपीय पठार के मध्य उच्चभूमि (Central Highlands) का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(A) नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित प्रायद्वीपीय पठार का भाग।
(B) त्रिभुजाकार भू-भाग जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है।
(C) नर्मदा नदी के उत्तर में पठार का वह भाग जो मालवा पठार के अधिकांश हिस्से को कवर करता है।
(D) पठार का पूर्वी विस्तार जिसे बुंदेलखंड के नाम से जाना जाता है।

87. निम्नलिखित में से किस फसल को 'सुनहरा रेशा' (Golden Fibre) के रूप में भी जाना जाता है?
(A) कपास
(B) जूट
(C) रेशम
(D) सन

88. भारत की जलवायु के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) कर्क रेखा देश को दो लगभग समान जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करती है।
(B) हिमालय मध्य एशिया से आने वाली ठंडी पवनों को भारत में प्रवेश करने से रोकता है।
(C) समुद्री प्रभाव के कारण प्रायद्वीपीय भारत में विषम जलवायु का अनुभव होता है।
(D) वायुदाब और पवन प्रणालियाँ जलवायु निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

89. भारत में प्रथम जूट मिल 1855 में कोलकाता के निकट किस स्थान पर स्थापित की गई थी?
(A) हावड़ा
(B) श्रीरामपुर
(C) रिशरा
(D) टीटागढ़

90. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (भू-आकृतिक विशेषता):
P. भाबर
Q. खादर
R. दून
S. अनाइमुडी
सूची II (स्थान/विशेषता):
1. पश्चिमी घाट की सबसे ऊँची चोटी
2. लघु हिमालय और शिवालिक के बीच अनुदैर्ध्य घाटी
3. बाढ़ के मैदानों का नवीन जलोढ़
4. शिवालिक की ढलानों के समानांतर कंकड़ों की पट्टी
कोड:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

91. भारत में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कौन सा है?
(A) ओडिशा
(B) मध्य प्रदेश
(C) कर्नाटक
(D) महाराष्ट्र

Click Here to Buy book on Amazon

(B) कपास
(C) जूट
(D) गेहूं

45. भारतीय जलवायु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जेट स्ट्रीम क्षोभमंडल में उच्च ऊंचाई वाली पश्चिमी पवनों की एक संकरी पट्टी है।
2. उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट स्ट्रीम ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर पूरे वर्ष हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होती हैं।
3. ग्रीष्म ऋतु के महीनों में प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर एक पूर्वी जेट स्ट्रीम प्रवाहित होती है, जिसे उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट कहा जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

46. छोटानागपुर पठार किस भंडार के रूप में प्रसिद्ध है?
(A) उपजाऊ मृदा
(B) जल संसाधन
(C) खनिज
(D) वन उत्पाद

47. भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी किस द्वीप पर स्थित है?
(A) एलिफेंटा द्वीप
(B) हैवलॉक द्वीप
(C) बैरन द्वीप
(D) पंबन द्वीप

48. भारतीय मानसून की दो मुख्य शाखाएँ कौन सी हैं?
(A) उत्तर-पूर्वी शाखा और दक्षिण-पश्चिमी शाखा
(B) अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा
(C) हिमालयी शाखा और प्रायद्वीपीय शाखा
(D) विषुवतीय शाखा और उष्णकटिबंधीय शाखा

49. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र नहीं है?
(A) छोटानागपुर औद्योगिक पट्टी
(B) विशाखापत्तनम-गुंटूर पट्टी
(C) गुड़गांव-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र
(D) थार मरुस्थल औद्योगिक क्षेत्र

50. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): भारत का पूर्वी तट पश्चिमी तट की तुलना में चक्रवातों के प्रति अधिक संवेदनशील है।
कारण (R): बंगाल की खाड़ी अरब सागर की तुलना में अधिक गर्म है, जो चक्रवाती तूफानों के निर्माण और तीव्र होने के लिए आवश्यक ऊष्मा और नमी प्रदान करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

51. सतलुज और काली नदियों के बीच स्थित हिमालय के भाग को किस नाम से जाना जाता है?
(A) पंजाब हिमालय
(B) कुमाऊं हिमालय
(C) नेपाल हिमालय
(D) असम हिमालय

52. पर्वतीय वनों में, चीड़, देवदार और सिल्वर फर जैसे शंकुधारी वृक्ष कितनी ऊंचाई के मध्य पाए जाते हैं?
(A) 1500 और 3000 मीटर
(B) 500 और 1000 मीटर
(C) 1000 और 2000 मीटर
(D) 3000 और 4500 मीटर

53. भारत में खनिज वितरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) खनिज संसाधन पूरे देश में समान रूप से वितरित हैं।
(B) उत्तरी मैदान धात्विक खनिज निक्षेपों से समृद्ध हैं।
(C) प्रायद्वीपीय पठार भारत के अधिकांश खनिजों का मुख्य भंडार है।
(D) हिमालयी क्षेत्र अपने विशाल पेट्रोलियम भंडारों के लिए जाना जाता है।

54. मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र विशेष रूप से किस उद्योग के लिए जाना जाता है?
(A) जूट वस्त्र
(B) लोहा और इस्पात
(C) सूती वस्त्र और सूचना प्रौद्योगिकी
(D) चीनी उद्योग

55. 'लू' शब्द भारत में किस जलवायु परिघटना से संबंधित है?
(A) उत्तर भारत में सर्दियों में चलने वाली शीत लहरें
(B) उत्तर भारत के ऊपर चलने वाली तीव्र, गर्म और शुष्क पवनें
(C) केरल और कर्नाटक में मानसून पूर्व की वर्षा
(D) सायंकाल के समय पश्चिम बंगाल में चलने वाली धूल भरी आंधी

56. भारत में चीनी उद्योग के सामने आने वाली प्रमुख चुनौती निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) चीनी की मांग में कमी
(B) उद्योग की मौसमी प्रकृति
(C) सरकारी सहायता का अभाव
(D) पूरे वर्ष कच्चे माल की प्रचुरता

Downloaded from www.pdf.tube

आधुनिकता और आर्थिक मजबूती का मुख्य प्रमाण माना जाता है।

299. (D) केंद्रीय शहर में।
वॉन थ्यूनेन के 'विलगित राज्य' में भूमि की कीमत या लगान सबसे अधिक केंद्रीय शहर में होता है। इसका कारण यह है कि केंद्र में स्थित होने से बाजार तक पहुँचने की परिवहन लागत शून्य या न्यूनतम होती है, जो भूमि के आर्थिक मूल्य को चरम पर पहुँचा देती है। जैसे-जैसे शहर के केंद्र से बाहर की ओर बढ़ते हैं, परिवहन व्यय बढ़ता जाता है और परिणामस्वरूप भूमि का लगान निरंतर कम होता जाता है। यह बाजार की निकटता ही भूमि के मूल्य को निर्धारित करने वाला सबसे शक्तिशाली और निर्णायक भौगोलिक कारक है।

300. (B) उत्पादन और परिवहन की कुल लागत न्यूनतम स्तर पर हो।
अल्फ्रेड वेबर का न्यूनतम-लागत सिद्धांत इस मौलिक विचार पर आधारित है कि किसी उद्योग के लिए सबसे आदर्श स्थान वह है जहाँ कुल उत्पादन व्यय, विशेष रूप से परिवहन और श्रम लागत, सबसे कम हो। वेबर ने माना कि एक तर्कसंगत उद्योगपति हमेशा वही स्थान चुनेगा जहाँ कच्चे माल को कारखाने तक लाने और तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने का संयुक्त खर्च न्यूनतम हो। उन्होंने परिवहन, श्रम और समूहन जैसे कारकों के बीच एक आर्थिक संतुलन खोजकर सबसे किफायती भौगोलिक स्थिति को निर्धारित करने का वैज्ञानिक मार्ग प्रशस्त किया।

NODIA

मात्रा।
(B) दक्षिण में पेराई का लंबा मौसम।
(C) दक्षिण में बेहतर सहकारी आंदोलन।
(D) उपरोक्त सभी।

69. उत्तरी मैदानों का पश्चिमी भाग, जिस पर सिंधु और उसकी सहायक नदियों का प्रभुत्व है, मुख्य रूप से कहाँ स्थित है?
(A) भारत
(B) बांग्लादेश
(C) पाकिस्तान
(D) नेपाल

70. भारतीय मानसून से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. केरल तट पर मानसून का आगमन।
2. देश से मानसून की पूर्ण वापसी।
3. मुंबई और दिल्ली में मानसून का आगमन।
4. उत्तर-पश्चिमी भारत से मानसून की वापसी।
नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 1-3-4-2
(B) 1-4-3-2
(C) 3-1-4-2
(D) 4-2-1-3

71. निम्नलिखित में से कौन सा अधात्विक खनिज का उदाहरण है?
(A) लौह अयस्क
(B) तांबा
(C) बॉक्साइट
(D) अभ्रक

72. गंगा का मैदान किन दो नदियों के मध्य विस्तृत है?
(A) सिंधु और सतलुज
(B) घग्गर और तीस्ता
(C) तीस्ता और ब्रह्मपुत्र
(D) यमुना और घाघरा

73. भारत में 'अक्टूबर की गर्मी' (October Heat) की विशेषता क्या है?
(A) उत्तरी मैदानों में तापमान में भारी गिरावट।
(B) मानसून की वापसी के दौरान उच्च तापमान और आर्द्रता।
(C) सुखद मौसम के साथ शीत ऋतु की शुरुआत।
(D) पूर्वी तटीय क्षेत्रों में भारी चक्रवाती वर्षा।

74. मयूरभंज और केंदुझर खदानें, जो उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क के लिए जानी जाती हैं, किस राज्य में स्थित हैं?
(A) झारखंड
(B) छत्तीसगढ़
(C) ओडिशा
(D) कर्नाटक

75. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): भारत के अधिकांश प्रमुख लोहा और इस्पात संयंत्र छोटानागपुर पठार क्षेत्र और उसके आसपास स्थित हैं।
कारण (R): इस क्षेत्र में लौह अयस्क, उच्च श्रेणी का कोकिंग कोयला और अन्य कच्चे माल की उच्च उपलब्धता है, जिससे परिवहन लागत न्यूनतम हो जाती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

76. 'पूर्वांचल' शब्द का तात्पर्य है:
(A) हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी।
(B) भारत की पूर्वी सीमा के साथ विस्तृत हिमालयी प्रणाली की पूर्वी पहाड़ियाँ और पर्वत।
(C) प्रायद्वीपीय पठार का पश्चिमी विस्तार।
(D) बंगाल की खाड़ी के साथ स्थित तटीय मैदान।

77. भारत की सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसल कौन सी है?
(A) गन्ना
(B) कपास
(C) जूट
(D) चाय

78. छत्तीसगढ़ में बैलाडीला की पहाड़ियाँ किसके खनन के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) बॉक्साइट
(B) अति उच्च श्रेणी का हेमेटाइट लौह अयस्क
(C) मैंगनीज
(D) कोयला

79. मानसून का जेट स्ट्रीम सिद्धांत मानसून के आगमन की व्याख्या किसके परिणाम के रूप में करता है?
(A) उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट स्ट्रीम का मौसमी दक्षिण की ओर खिसकना।
(B) उत्तर भारत के मैदानों से पश्चिमी जेट स्ट्रीम का उत्तर की ओर खिसकना।
(C) तिब्बती पठार के ऊपर ध्रुवीय पूर्वी पवनों का प्रबल होना।
(D) हिंद महासागर क्षेत्र में व्यापारिक पवनों का क्षीण होना।

80. निम्नलिखित में से कौन सी पूर्वांचल पहाड़ियों का हिस्सा नहीं है?
(A) पटकाई पहाड़ियाँ
(B) नागा पहाड़ियाँ
(C) अरावली पहाड़ियाँ
(D) मिजो पहाड़ियाँ

Click Here to Buy book on Amazon

32. भारत के किस भाग में 'कर्तन एवं दहन' कृषि को 'झूमिंग' के रूप में जाना जाता है?
(A) उत्तर-पूर्वी राज्य
(B) पश्चिमी घाट
(C) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
(D) मध्य भारत

33. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): लोहा और इस्पात उद्योग एक भारी उद्योग है।
कारण (R): कच्चा माल और तैयार माल दोनों ही भारी और स्थूल होते हैं, जिससे परिवहन लागत अधिक आती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

34. निम्नलिखित में से कौन सी सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) नर्मदा
(D) महानदी

35. 'मानसून प्रस्फोट' (Burst of Monsoon) का तात्पर्य है:
(A) आगमन के समय अचानक होने वाली निरंतर वर्षा।
(B) मानसून पूर्व ऋतु से जुड़ी तीव्र गर्जना के साथ वर्षा।
(C) भारतीय उपमहाद्वीप से मानसून की क्रमिक वापसी।
(D) बंगाल की खाड़ी के ऊपर कम दबाव की द्रोणी का निर्माण।

36. प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊँची चोटी अनाइमुडी कहाँ स्थित है?
(A) नीलगिरी पहाड़ियों में
(B) अन्नामलाई पहाड़ियों में
(C) इलायची (कार्डमम) पहाड़ियों में
(D) पालनी पहाड़ियों में

37. निम्नलिखित में से कौन सा भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों का उदाहरण नहीं है?
(A) मुंबई-पुणे समूह
(B) बेंगलुरु-तमिलनाडु क्षेत्र
(C) हुगली क्षेत्र
(D) लेह-लद्दाख क्षेत्र

38. भारत की खारे पानी की सबसे बड़ी झील किस राज्य में स्थित है?
(A) राजस्थान
(B) गुजरात
(C) ओडिशा
(D) आंध्र प्रदेश

39. उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम निम्नलिखित में से किस घटना से संबंधित है?
(A) दक्षिण-पश्चिम मानसून का आगमन।
(B) पश्चिमी विक्षोभ की घटना।
(C) मानसून की वापसी।
(D) उत्तर भारत में शीत लहर का निर्माण।

40. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (उद्योग):
P. सूती वस्त्र
Q. जूट वस्त्र
R. लोहा और इस्पात
S. सूचना प्रौद्योगिकी
सूची II (प्रमुख केंद्र):
1. जमशेदपुर
2. बेंगलुरु
3. अहमदाबाद
4. रिशरा
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

41. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'तराई' क्षेत्र का सही वर्णन करता है?
(A) यह शिवालिक के समानांतर स्थित शुष्क और सरंध्र भूमि की एक पट्टी है।
(B) यह घने वनों वाला एक नम, दलदली और आर्द्र क्षेत्र है।
(C) यह उत्तरी मैदान का सबसे बड़ा हिस्सा है, जो पुराने जलोढ़ से बना है।
(D) यह बाढ़ के मैदान का क्षेत्र है जहाँ प्रतिवर्ष नवीन जलोढ़ का नवीनीकरण होता है।

42. जीवाश्म ईंधन से प्राप्त होने वाले शक्ति संसाधनों को किस रूप में जाना जाता है?
(A) नवीकरणीय संसाधन
(B) पारंपरिक संसाधन
(C) गैर-पारंपरिक संसाधन
(D) अक्षय संसाधन

43. वनस्पति की दृष्टि से, भारत के निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में 70 सेमी से कम वर्षा होती है?
(A) पश्चिमी घाट श्रेणी के पवनमुखी ढाल
(B) गंगा डेल्टा के उपजाऊ क्षेत्र
(C) अर्ध-शुष्क गुजरात सहित उत्तर-पश्चिमी भाग
(D) मेघालय सहित उत्तर-पूर्वी राज्य

44. भारत में निम्नलिखित में से किसे रबी की फसल माना जाता है?
(A) चावल

NODIA

92. मध्य उच्चभूमि (Central Highlands) के पूर्वी विस्तार को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) मालवा का पठार और दक्कन ट्रैप
(B) बुंदेलखंड और बघेलखंड
(C) छोटानागपुर पठार और राजमहल पहाड़ियाँ
(D) महादेव पहाड़ियाँ और कैमूर पहाड़ियाँ

93. मानसून में विराम या 'मानसून गर्त' का तात्पर्य है:
(A) वर्षा ऋतु की शुरुआत।
(B) वर्षा ऋतु का समापन।
(C) वर्षा ऋतु के दौरान आर्द्र और शुष्क अंतरालों का होना।
(D) भारी वर्षा का आकस्मिक प्रस्फोट।

94. निम्नलिखित में से कौन सा भारत का सबसे महत्वपूर्ण धातुकर्म उद्योग है?
(A) एल्युमीनियम प्रगलन
(B) लोहा और इस्पात उद्योग
(C) तांबा प्रगलन
(D) जस्ता प्रगलन

95. एक सींग वाला गेंडा किस प्रकार के वनों में पाया जाता है?
(A) हिमालय के पर्वतीय वन
(B) राजस्थान के कांटेदार वन
(C) सुंदरबन के मैंग्रोव वन
(D) असम और पश्चिम बंगाल के दलदली और आर्द्र क्षेत्र

96. काली और तीस्ता नदियों के बीच स्थित हिमालय के भाग को किस नाम से जाना जाता है?
(A) पंजाब हिमालय
(B) कुमाऊं हिमालय
(C) नेपाल हिमालय
(D) असम हिमालय

97. प्रारंभिक वर्षों में महाराष्ट्र और गुजरात में सूती वस्त्र उद्योग के केंद्रित होने का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) कच्चे कपास की उपलब्धता, बाजार, परिवहन और नम जलवायु।
(B) विशेष रूप से इन तटीय राज्यों को लक्षित करने वाली सरकारी नीतियां।
(C) देश के अन्य हिस्सों में कुशल श्रम की भारी कमी।
(D) पश्चिमी भारत के प्रमुख समुद्री बंदरगाहों से विशेष निकटता।

98. भारत में सर्वाधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध जीवाश्म ईंधन कौन सा है?
(A) पेट्रोलियम
(B) प्राकृतिक गैस
(C) कोयला
(D) लिग्नाइट

99. ब्रह्मपुत्र का मैदान किसके लिए जाना जाता है?
(A) शुष्क परिस्थितियाँ और रेत के टीले।
(B) नदी द्वीप और गुंफित जलमार्ग।
(C) चूनेदार निक्षेप (कंकड़)।
(D) घने जंगलों वाली तराई पट्टी।

100. बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात के किस तट से टकराने की सर्वाधिक संभावना होती है?
(A) कोंकण तट
(B) मालाबार तट
(C) पूर्वी तट (कोरोमंडल या उत्तरी सरकार)
(D) गुजरात तट

101. निम्नलिखित में से कौन सी भारत में जूट उद्योग के लिए एक प्रमुख चुनौती नहीं है?
(A) कृत्रिम विकल्पों से अंतरराष्ट्रीय बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा।
(B) बांग्लादेश जैसे अन्य जूट उत्पादक देशों से प्रतिस्पर्धा।
(C) घरेलू मांग में कमी।
(D) उत्पादन की उच्च लागत।

102. कर्नाटक के पश्चिमी घाट में स्थित कुद्रेमुख खदानें किसके लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) स्लरी पाइपलाइनों के माध्यम से लौह अयस्क सांद्र का निर्यात
(B) महत्वपूर्ण बॉक्साइट निक्षेप
(C) ऐतिहासिक स्वर्ण निक्षेप
(D) विशाल मैंगनीज निक्षेप

103. दक्कन के पठार के पश्चिमी और पूर्वी किनारों को क्रमशः किसके द्वारा चिह्नित किया जाता है?
(A) क्रमशः अरावली और विंध्य पर्वतमाला।
(B) क्रमशः पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट।
(C) क्रमशः सतपुड़ा पर्वतमाला और छोटानागपुर पठार।
(D) क्रमशः राजमहल पहाड़ियाँ और इलायची पहाड़ियाँ।

104. निम्नलिखित में से कौन सी खरीफ की फसल है?
(A) गेहूं
(B) जौ
(C) मटर
(D) चावल (धान)

105. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): पश्चिमी घाट में पूर्वी घाट की तुलना में अधिक पर्वतीय वर्षा होती है।
कारण (R): पश्चिमी घाट अधिक ऊंचे और सतत हैं, जो आर्द्रता से भरी दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को प्रभावी ढंग से रोकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

131. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) इन्हें लोकप्रिय रूप से मानसूनी वन भी कहा जाता है।
(B) वे ग्रीष्म ऋतु में छह से आठ सप्ताह के लिए अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं।
(C) वे 70 से 200 सेमी वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
(D) वे वर्ष भर हरे-भरे रहते हैं और सघनता में बहु-स्तरीय होते हैं।

132. सौर प्रकाश, पवन और जल जैसे ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करने की प्रक्रिया जो प्रकृति द्वारा नवीनीकृत होती है, किसका आधार है?
(A) पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन
(B) गैर-पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन
(C) जीवाश्म ईंधन ऊर्जा उत्पादन
(D) तापीय विद्युत उत्पादन

133. पूर्वी घाट की दो मुख्य शाखाएँ (पहाड़ियाँ) कौन सी हैं?
(A) मिजो पहाड़ियाँ और नागा पहाड़ियाँ
(B) जावादी पहाड़ियाँ और शेवराय पहाड़ियाँ
(C) महादेव पहाड़ियाँ और कैमूर पहाड़ियाँ
(D) पटकाई पहाड़ियाँ और मणिपुर पहाड़ियाँ

134. राउरकेला इस्पात संयंत्र की स्थापना किसके सहयोग से की गई थी?
(A) ग्रेट ब्रिटेन
(B) जर्मनी
(C) रूस
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

135. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): लौटते मानसून के मौसम (अक्टूबर-नवंबर) के दौरान बंगाल की खाड़ी में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ जाती है।
कारण (R): उत्तर-पश्चिमी भारत के ऊपर कम दबाव की स्थिति बंगाल की खाड़ी में स्थानांतरित हो जाती है, जो चक्रवात निर्माण के लिए आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

136. भारत में मुख्य कॉफी उत्पादक राज्य कौन सा है?
(A) केरल
(B) तमिलनाडु
(C) कर्नाटक
(D) असम

137. भारत का कौन सा भू-आकृतिक विभाग एक द्वीप समूह है?
(A) तटीय मैदान
(B) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
(C) प्रायद्वीपीय पठार
(D) उत्तरी मैदान

138. निम्नलिखित में से कौन सा खनिज चट्टानों के अपघटन से निर्मित होता है, जो अपक्षयित पदार्थ का एक अवशिष्ट द्रव्यमान छोड़ देता है?
(A) कोयला
(B) बॉक्साइट
(C) पेट्रोलियम
(D) जिप्सम

139. हुगली औद्योगिक क्षेत्र किस प्रमुख शहर के परितः केंद्रित है?
(A) मुंबई
(B) चेन्नई
(C) कोलकाता
(D) दिल्ली

140. कौन सा कारक भारत की जलवायु में क्षेत्रीय विविधताओं में योगदान नहीं देता है?
(A) स्थान और अक्षांशीय विस्तार
(B) समुद्र से दूरी
(C) ऊंचाई और उच्चावच विशेषताएँ
(D) देशांतरीय विस्तार

141. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई कौन सी है?
(A) लिटिल अंडमान
(B) उत्तरी अंडमान
(C) मध्य अंडमान
(D) ग्रेट निकोबार

142. भारत में फसलों के मौसम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. रबी की फसलें शीत ऋतु में अक्टूबर से दिसंबर तक बोई जाती हैं और ग्रीष्म ऋतु में अप्रैल से जून तक काटी जाती हैं।
2. खरीफ की फसलें मानसून के आगमन के साथ उगाई जाती हैं और सितंबर-अक्टूबर में काटी जाती हैं।
3. जायद रबी और खरीफ मौसमों के बीच ग्रीष्म ऋतु के महीनों के दौरान एक लंबा फसल मौसम है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

143. निम्नलिखित में से कौन सा उच्च गुणवत्ता वाला कठोर कोयला है?

NODIA

119. विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से किसके कारण हुआ है?
(A) समृद्ध कृषि पृष्ठभूमि से निकटता।
(B) प्रमुख लोहा और इस्पात संयंत्रों की उपस्थिति।
(C) बंदरगाह की सुविधाएं और पेट्रोलियम रिफाइनरी।
(D) इलेक्ट्रॉनिक्स पार्क विकसित करने पर सरकार का विशेष ध्यान।

120. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (बांध/परियोजना):
P. हीराकुंड
Q. भाखड़ा-नांगल
R. नागार्जुन सागर
S. सरदार सरोवर
सूची II (नदी):
1. कृष्णा
2. नर्मदा
3. महानदी
4. सतलुज
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

121. कौन सा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक बेंगलुरु को 'भारत की इलेक्ट्रॉनिक राजधानी' बनाता है?
(A) लगातार सुखद जलवायु और वातावरण की उपस्थिति
(B) बड़ी संख्या में कुशल प्रबंधकों और इंजीनियरों की उपलब्धता
(C) प्रमुख समुद्री बंदरगाहों और परिवहन से शहर की सापेक्ष निकटता
(D) सस्ते और सुलभ कच्चे माल की बड़े पैमाने पर उपलब्धता

122. पूर्वी घाट असतत एवं अनियमित हैं, और किसमें गिरने वाली नदियों द्वारा कटे-फटे हैं?
(A) अरब सागर
(B) बंगाल की खाड़ी
(C) हिंद महासागर
(D) खंभात की खाड़ी

123. भारत में 'लौटते मानसून' के मौसम की क्या विशेषता है?
(A) उत्तरी मैदानों में वर्षा की शुरुआत।
(B) साफ आसमान और तापमान में वृद्धि।
(C) बंगाल की खाड़ी में कम दबाव की स्थितियों का स्थानांतरण।
(D) (B) और (C) दोनों।

124. रॉयल बंगाल टाइगर किस प्रकार के वनों का प्रसिद्ध जंतु है?
(A) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
(B) पर्वतीय वन
(C) मैंग्रोव वन
(D) कांटेदार वन

125. निम्नलिखित में से कौन सा एक लौह खनिज है?
(A) तांबा
(B) बॉक्साइट
(C) मैंगनीज
(D) अभ्रक

126. लक्षद्वीप द्वीप समूह छोटे द्वीपों का एक समूह है जो किससे निर्मित है?
(A) ज्वालामुखी चट्टान
(B) प्रवाल (कोरल)
(C) जलोढ़ निक्षेप
(D) कायांतरित चट्टान

127. निम्नलिखित में से कौन सी भारत की सबसे महत्वपूर्ण रेशा फसल है?
(A) जूट
(B) रेशम
(C) कपास
(D) सन

128. हिमालय की निम्नलिखित पर्वत चोटियों को पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. नंदा देवी
2. कंचनजंगा
3. माउंट एवरेस्ट
4. नामचा बरवा
नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 1-3-2-4
(B) 1-2-3-4
(C) 4-2-3-1
(D) 2-3-1-4

129. पूर्वी तटीय मैदान के दक्षिणी भाग को किस नाम से जाना जाता है?
(A) कोंकण तट
(B) मालाबार तट
(C) कोरोमंडल तट
(D) उत्तरी सरकार

130. उत्तरी मैदानों के ऊपर मानसून गर्त की स्थिति क्या निर्धारित करती है?
(A) क्षेत्र का तापमान
(B) जेट स्ट्रीम की गति
(C) वर्षा का स्थानिक वितरण
(D) मानसून की वापसी का समय

Click Here to Buy book on Amazon

(D) पूर्वी घाट ब्लॉक पर्वत हैं जबकि पश्चिमी घाट वलित पर्वत हैं।

183. भारत में उत्तर-दक्षिण जलवायु विभाजन का मुख्य कारण क्या है?
(A) हिंद महासागर
(B) कर्क रेखा
(C) हिमालय
(D) प्रायद्वीपीय पठार

184. शुष्क पर्णपाती वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वर्षा कितनी होती है?
(A) 200 सेमी से ऊपर
(B) 100 सेमी और 200 सेमी के मध्य
(C) 70 सेमी से कम
(D) 70 सेमी और 100 सेमी के मध्य

185. बोकारो इस्पात संयंत्र किसकी सहायता से स्थापित किया गया था?
(A) जर्मनी
(B) यूनाइटेड किंगडम
(C) सोवियत संघ
(D) जापान

186. निम्नलिखित में से कौन सा खनिज ईंधन का उदाहरण है?
(A) यूरेनियम
(B) कोयला
(C) थोरियम
(D) उपरोक्त सभी

187. पाक जलडमरुमध्य भारत को किस देश से पृथक करता है?
(A) मालदीव
(B) म्यांमार
(C) श्रीलंका
(D) बांग्लादेश

188. 'रोपण कृषि' किसका एक प्रकार है?
(A) जीविका कृषि
(B) स्थानांतरित कृषि
(C) वाणिज्यिक कृषि
(D) मिश्रित कृषि

189. संपूर्ण उत्तरी मैदानों को आच्छादित करने वाली भारत की सर्वाधिक व्यापक और महत्वपूर्ण मृदा कौन सी है?
(A) काली मृदा
(B) लेटेराइट मृदा
(C) जलोढ़ मृदा
(D) लाल मृदा

190. निम्नलिखित राज्यों को दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. उत्तर प्रदेश
2. केरल
3. महाराष्ट्र
4. पश्चिम बंगाल

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 2-4-3-1
(B) 2-3-4-1
(C) 1-2-3-4
(D) 4-3-2-1

191. किस शहर को उसके सूती वस्त्र उद्योग के लिए 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है?
(A) मुंबई
(B) कोयंबटूर
(C) अहमदाबाद
(D) कानपुर

192. उत्तरी मैदानों का सबसे बड़ा घटक कौन सा है?
(A) भाबर
(B) तराई
(C) भांगर
(D) खादर

193. निम्न श्रेणी के भूरे कोयले को किस नाम से जाना जाता है?
(A) एंथ्रेसाइट
(B) बिटुमिनस
(C) लिग्नाइट
(D) पीट

194. 'काल बैसाखी' किन फसलों की कृषि के लिए लाभदायक है?
(A) गेहूं और जौ
(B) चाय, जूट और चावल
(C) कपास और गन्ना
(D) मोटे अनाज और दालें

195. पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच के संकरे तटीय मैदान को किस नाम से जाना जाता है?
(A) पूर्वी तटीय मैदान
(B) पश्चिमी तटीय मैदान
(C) कोरोमंडल तट
(D) उत्तरी सरकार

196. आर्द्र पर्णपाती वनों में सर्वाधिक पाए जाने वाले वृक्ष कौन से हैं?
(A) सागौन, साल और चंदन
(B) कीकर, बबूल और खजूर
(C) चीड़, देवदार और सिल्वर फर
(D) रोजवुड, एबोनी और महोगनी

197. दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर लौह अयस्क पट्टी किन दो राज्यों में स्थित है?

NODIA

(A) लिग्नाइट
(B) पीट
(C) बिटुमिनस
(D) एंथ्रेसाइट

144. बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीपों की श्रृंखला (अंडमान और निकोबार) के बारे में माना जाता है कि वे:
(A) प्रवाल संरचनाएं हैं
(B) जलमग्न पर्वतों का एक उठा हुआ हिस्सा हैं
(C) विशेष रूप से ज्वालामुखी द्वीप हैं
(D) प्रायद्वीपीय पठार के अलग हुए हिस्से हैं

145. पश्चिम बंगाल में दुर्गापुर इस्पात संयंत्र की स्थापना किसके सहयोग से की गई थी?
(A) जर्मनी
(B) सोवियत संघ
(C) यूनाइटेड किंगडम
(D) फ्रांस

146. भारतीय मानसून के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?
(A) यह एक स्थिर और पूर्वानुमान योग्य पवन प्रणाली है।
(B) इसकी विशेषता 'विराम' या शुष्क अंतराल हैं।
(C) यह पूरे देश में समान वर्षा प्रदान करता है।
(D) यह पूरे देश में एक ही समय पर पहुँचता है।

147. आर्द्र पर्णपाती वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वर्षा कितनी होती है?
(A) 50 सेमी और 70 सेमी के बीच
(B) 70 सेमी और 100 सेमी के बीच
(C) 100 सेमी और 200 सेमी के बीच
(D) 200 सेमी से अधिक

148. अपनी उत्कृष्ट परावैद्युत शक्ति और निम्न शक्ति हानि कारक के कारण कौन सा खनिज विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों के लिए अनिवार्य है?
(A) बॉक्साइट
(B) लौह अयस्क
(C) अभ्रक
(D) चूना पत्थर

149. भारत के उत्तरी मैदानों को मोटे तौर पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। इसके पश्चिमी भाग को क्या कहा जाता है?
(A) गंगा का मैदान
(B) ब्रह्मपुत्र का मैदान
(C) पंजाब का मैदान
(D) तराई का मैदान

150. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (शब्द):
P. मानसून प्रस्फोट
Q. अक्टूबर की गर्मी
R. काल बैसाखी
S. आम्र वर्षा
सूची II (विवरण):
1. केरल में मानसून पूर्व की वर्षा
2. मानसून की वापसी के दौरान गर्म और आर्द्र मौसम
3. तीव्र वर्षा के साथ मानसून का आकस्मिक आगमन
4. पश्चिम बंगाल में गरज के साथ तूफान
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

151. निम्नलिखित में से कौन सी सिंधु नदी की सहायक नदी नहीं है?
(A) झेलम
(B) चिनाब
(C) यमुना
(D) सतलुज

152. भारत में अधिकांश लौह अयस्क निम्नलिखित में से किस शैल तंत्र में पाया जाता है?
(A) गोंडवाना तंत्र
(B) धारवाड़ तंत्र
(C) कुडप्पा तंत्र
(D) विंध्य तंत्र

NODIA

153. एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्र की स्थापना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक क्या है?
(A) बॉक्साइट खदानों से निकटता
(B) खुदरा बाजारों से निकटता
(C) सस्ती और नियमित विद्युत आपूर्ति
(D) प्रमुख बंदरगाह सुविधाओं तक पहुंच

154. हिमालय पर्वत किसका उदाहरण हैं?
(A) ब्लॉक (भ्रंशोत्थ) पर्वत
(B) ज्वालामुखी पर्वत
(C) प्राचीन वलित पर्वत
(D) नवीन वलित पर्वत

155. विश्व की सर्वाधिक वर्षा मौसिनराम में होती है, जो किन पहाड़ियों में स्थित है?
(A) नागा पहाड़ियाँ
(B) खासी पहाड़ियाँ
(C) मिजो पहाड़ियाँ
(D) गारो पहाड़ियाँ

156. राष्ट्रीय जूट नीति (2005) का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) उत्पादन बढ़ाना और गुणवत्ता में सुधार करना।
(B) जूट किसानों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करना।

(C) प्रति हेक्टेयर उपज बढ़ाना।
(D) उपरोक्त सभी।

157. गंगा, महानदी, कृष्णा, गोदावरी और कावेरी नदियों के डेल्टा क्षेत्रों में किस प्रकार की वनस्पति सामान्य है?
(A) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(B) पर्वतीय वन
(C) मैंग्रोव वन
(D) कांटेदार वन

158. पश्चिमी तटीय मैदान किसका उदाहरण हैं?
(A) उन्मज्जित तट
(B) निमज्जित तट
(C) तटस्थ तट
(D) मिश्रित तट

159. भारत में जून से सितंबर तक की अवधि को किस रूप में जाना जाता है?
(A) लौटते मानसून की ऋतु
(B) ठंडे मौसम की ऋतु
(C) आगे बढ़ते मानसून की ऋतु
(D) गर्म मौसम की ऋतु

160. निम्नलिखित में से कौन सी भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण गैर-खाद्य फसल है?
(A) चाय
(B) गन्ना
(C) रबर
(D) कपास

161. सिंगरेनी कोलियरीज, जो एक प्रमुख कोयला क्षेत्र है, किस राज्य में स्थित है?
(A) आंध्र प्रदेश
(B) तेलंगाना
(C) ओडिशा
(D) झारखंड

162. 'दक्कन ट्रैप' किस मृदा से समृद्ध क्षेत्र है?
(A) जलोढ़ मृदा
(B) लाल और पीली मृदा
(C) काली मृदा
(D) लेटेराइट मृदा

163. निम्नलिखित में से कौन सा अवसादी चट्टानों में पाया जाने वाला एक प्रमुख शक्ति संसाधन है?
(A) बॉक्साइट
(B) लौह अयस्क
(C) कोयला
(D) मैंगनीज

164. विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप, माजुली, किस नदी द्वारा निर्मित है?
(A) गंगा
(B) ब्रह्मपुत्र
(C) सिंधु
(D) गोदावरी

165. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन वर्ष भर हरे-भरे दिखाई देते हैं।
कारण (R): इन वनों के वृक्ष अपनी पत्तियां गिराने, फूल आने और फल लगने का समय अलग-अलग रखते हैं, जो एक साथ नहीं होता।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

166. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योगों के लिए समूहन अर्थव्यवस्था का लाभ नहीं है?
(A) बैंकिंग और बीमा सेवाएं
(B) प्रतिद्वंद्वी फर्मों से प्रतिस्पर्धा
(C) कुशल श्रम समूह की उपलब्धता
(D) बाजार और आपूर्तिकर्ताओं से निकटता

167. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य 'पंजाब के मैदान' का हिस्सा नहीं है?
(A) पंजाब
(B) हरियाणा
(C) राजस्थान
(D) हिमाचल प्रदेश

168. देश के आंतरिक भागों और तटीय क्षेत्रों के बीच जलवायु का अंतर मुख्य रूप से किसके कारण होता है?
(A) ऊंचाई में अंतर
(B) समुद्र का समकारी प्रभाव
(C) पर्वत अवरोधों की उपस्थिति
(D) वनस्पति आवरण में अंतर

169. 'जायद' क्या है?
(A) रबी और खरीफ मौसमों के बीच एक लघु फसल मौसम
(B) मुख्य शीतकालीन फसल मौसम
(C) मुख्य ग्रीष्मकालीन मानसून फसल मौसम
(D) स्थानांतरित कृषि का एक प्रकार

170. निम्नलिखित में से कौन सा सीमेंट उद्योग में उपयोग किया जाने वाला एक प्रमुख अधात्विक खनिज है?
(A) अभ्रक
(B) चूना पत्थर

Downloaded from www.pdf.tube

(C) जिप्सम
(D) बॉक्साइट

171. 'पूर्वांचल' में निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त अन्य सभी सम्मिलित हैं?
(A) पटकाई पहाड़ियाँ
(B) नागा पहाड़ियाँ
(C) काराकोरम श्रेणी
(D) मिजो पहाड़ियाँ

172. भारत में लोहा और इस्पात उद्योग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. एक भारी उद्योग होने के कारण, इसकी स्थिति मुख्य रूप से कच्चे माल की उपलब्धता से निर्धारित होती है।
2. अधिकांश प्रमुख इस्पात संयंत्र निजी क्षेत्र में स्थित हैं।
3. छोटानागपुर पठार क्षेत्र में लोहा और इस्पात उद्योगों का सर्वाधिक संकेंद्रण है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

173. हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी को किस नाम से जाना जाता है?
(A) शिवालिक
(B) लघु हिमालय
(C) महान आंतरिक हिमालय या हिमाद्रि
(D) पूर्वांचल

174. भारत के उत्तरी मैदानों में व्यापक शीतकालीन वर्षा लाने वाली पवनें कौन सी हैं?
(A) उत्तर-पूर्वी मानसून
(B) दक्षिण-पश्चिम मानसून
(C) पश्चिमी विक्षोभ
(D) आम्र वर्षा

175. गिर वन, जो एशियाई शेरों का अंतिम प्राकृतिक आवास है, किस राज्य में स्थित है?
(A) मध्य प्रदेश
(B) गुजरात
(C) राजस्थान
(D) महाराष्ट्र

176. मात्रा की दृष्टि से भारत में व्यावसायिक लौह अयस्क की सर्वाधिक महत्वपूर्ण किस्म निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) मैग्नेटाइट
(B) हेमेटाइट
(C) सिडेराइट
(D) लिमोनाइट

177. महान हिमालय (हिमाद्रि) का क्रोड किससे निर्मित है?
(A) बलुआ पत्थर
(B) ग्रेनाइट
(C) असंगठित अवसाद
(D) कायांतरित चट्टानें

178. निम्नलिखित में से कौन सी पेय फसल है?
(A) गन्ना
(B) कपास
(C) चाय
(D) ज्वार

179. भारत का प्राचीनतम तेल उत्पादक राज्य कौन सा है?
(A) गुजरात
(B) महाराष्ट्र
(C) असम
(D) राजस्थान

180. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (औद्योगिक क्षेत्र):
P. हुगली क्षेत्र
Q. बेंगलुरु-तमिलनाडु क्षेत्र
R. छोटानागपुर पठार
S. मुंबई-पुणे समूह
सूची II (मुख्य विशेषताएं):
1. खनिज आधारित उद्योग, लोहा और इस्पात
2. जूट वस्त्र उद्योग
3. सूती वस्त्र और पेट्रोकेमिकल्स
4. सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग
कोड:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

NODIA

181. 'भाबर' पट्टी की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) यह घने वनों वाला एक नम और दलदली क्षेत्र है।
(B) यह पूर्णतः नवीन और युवा जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है।
(C) कंकड़ और पत्थरों से बनी इस पट्टी में नदियाँ भूमिगत होकर विलुप्त हो जाती हैं।
(D) इसमें स्थानीय चूनेदार निक्षेप होते हैं जिन्हें कंकड़ के रूप में जाना जाता है।

182. पूर्वी और पश्चिमी घाटों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट की तुलना में अधिक ऊंचे और सतत हैं।
(B) पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट की तुलना में अधिक ऊंचे और सतत हैं।
(C) दोनों घाट ऊंचाई और निरंतरता में समान हैं।

(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

106. हिमालयी क्षेत्रों में उच्च ऊंचाई पर, सामान्यतः समुद्र तल से 3,600 मीटर से अधिक ऊंचाई पर पाया जाने वाला वनस्पति प्रकार है:
(A) शीतोष्ण वन
(B) शंकुधारी वन
(C) अल्पाइन घास के मैदान
(D) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

107. "हरित क्रांति" का भारत के किस प्रमुख उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है?
(A) कपड़ा उद्योग
(B) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग
(C) उर्वरक उद्योग
(D) ऑटोमोबाइल उद्योग

108. पश्चिमी घाट की सबसे ऊँची चोटी कौन सी है?
(A) महेंद्रगिरि
(B) डोड्डाबेट्टा
(C) अनाइमुडी
(D) कलसुबाई

109. 'काल बैसाखी' क्या है?
(A) केरल में मानसून पूर्व की वर्षा।
(B) उत्तर भारत में चलने वाली गर्म और शुष्क पवनें।
(C) पश्चिम बंगाल में तीव्र पवनों के साथ आने वाले स्थानीय गरज के साथ तूफान।
(D) दक्षिणी प्रायद्वीप में मानसून की वापसी।

110. निम्नलिखित में से कौन सी खनिजों की विशेषता नहीं है?
(A) वे प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं।
(B) वे सभी स्थानों पर समान रूप से वितरित होते हैं।
(C) उनकी एक निश्चित रासायनिक संरचना होती है।
(D) उनकी गुणवत्ता और मात्रा के मध्य व्युत्क्रम संबंध होता है।

111. तीस्ता और दिहांग नदियों के बीच स्थित हिमालय के भाग को किस नाम से जाना जाता है?
(A) नेपाल हिमालय
(B) कुमाऊं हिमालय
(C) असम हिमालय
(D) पंजाब हिमालय

112. औद्योगिक क्षेत्रों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. एक औद्योगिक क्षेत्र तब विकसित होता है जब कई उद्योग एक-दूसरे के निकट स्थित होते हैं।
2. ये उद्योग अक्सर समूहन अर्थव्यवस्था के लाभ साझा करते हैं।
3. गुड़गांव-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र खनिजों पर आधारित एक प्रमुख पारंपरिक औद्योगिक क्षेत्र है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

113. प्रायद्वीपीय पठार की विशिष्ट विशेषता, काली मृदा का क्षेत्र, किस नाम से जाना जाता है?
(A) मालवा का पठार
(B) दक्कन ट्रैप
(C) छोटानागपुर पठार
(D) हजारीबाग पठार

114. 'गहन जीविका कृषि' किन क्षेत्रों में की जाती है?
(A) भूमि पर निम्न जनसंख्या दबाव वाले क्षेत्रों में
(B) भूमि पर उच्च जनसंख्या दबाव वाले क्षेत्रों में
(C) विरल जनसंख्या वाले क्षेत्रों में
(D) यंत्रीकृत वाणिज्यिक खेती वाले क्षेत्रों में

115. जेट स्ट्रीम के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) ये तीव्र गति से बहने वाली, संकरी और विसर्पी पवनों की धाराएं हैं।
(B) ये क्षोभसीमा के निकट स्थित होती हैं।
(C) उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट एक स्थायी और वर्ष भर रहने वाली विशेषता है।
(D) उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट शीत ऋतु के मौसम को प्रभावित करता है।

116. मध्य प्रदेश में स्थित बालाघाट खदानें किसके अग्रणी उत्पादक हैं?
(A) बॉक्साइट
(B) तांबा
(C) लौह अयस्क
(D) हीरा

117. अरावली पहाड़ियाँ, जो विश्व की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक हैं, किसके पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी किनारों पर स्थित हैं?
(A) हिमालय पर्वतमाला
(B) दक्कन का पठार
(C) प्रायद्वीपीय पठार
(D) उत्तरी मैदान

118. निम्नलिखित में से कौन सी रोपण (प्लांटेशन) फसल नहीं है?
(A) चाय
(B) कॉफी
(C) रबर
(D) गेहूं

Click Here to Buy book on Amazon

(A) ओडिशा और झारखंड
(B) कर्नाटक और गोवा
(C) छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र
(D) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना

198. भारत का प्रादेशिक जल कितनी दूरी तक विस्तृत है?
(A) 12 समुद्री मील
(B) 24 समुद्री मील
(C) 200 समुद्री मील
(D) 100 समुद्री मील

199. अमरकंटक पठार अलग-अलग दिशाओं में बहने वाली किन दो प्रमुख नदियों का उद्गम स्रोत है?
(A) नर्मदा और ताप्ती
(B) नर्मदा और सोन
(C) महानदी और गोदावरी
(D) कृष्णा और कावेरी

200. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): जूट वस्त्र उद्योग मुख्य रूप से हुगली बेसिन में केंद्रित है।
कारण (R): यह क्षेत्र जूट उत्पादक क्षेत्रों से निकटता, सस्ता जल परिवहन और प्रसंस्करण के लिए प्रचुर जल जैसी अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

201. 'कर्तन एवं दहन' कृषि की विशेषता क्या है?
(A) आधुनिक इनपुट का उच्च उपयोग
(B) कृषि के लिए भूमि का एक टुकड़ा साफ करना और उर्वरता कम होने पर दूसरी जगह स्थानांतरित हो जाना
(C) विस्तृत क्षेत्र में एकल फसल उगाना
(D) केवल वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए फसलें उगाना

202. भारत की सबसे ऊँची चोटी कंचनजंगा किस राज्य में स्थित है?
(A) उत्तराखंड
(B) सिक्किम
(C) अरुणाचल प्रदेश
(D) हिमाचल प्रदेश

203. भारत में ग्रीष्म ऋतु की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से किसका होना है?
(A) पश्चिमी विक्षोभ
(B) उत्तरी मैदानों में 'लू'
(C) उत्तर-पूर्वी मानसूनी पवनें
(D) व्यापक और निरंतर वर्षा

204. निम्नलिखित में से कौन सा धात्विक खनिज नहीं है?
(A) लौह अयस्क
(B) मैंगनीज
(C) बॉक्साइट
(D) नमक

205. कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक समूह किस राज्य में स्थित है?
(A) तमिलनाडु
(B) कर्नाटक
(C) केरल
(D) आंध्र प्रदेश

206. वह नदी जो हिमालय की सबसे पूर्वी सीमा निर्धारित करती है:
(A) गंगा
(B) तीस्ता
(C) ब्रह्मपुत्र
(D) सिंधु

207. निम्नलिखित में से कौन सी भारत में सूती वस्त्र उद्योग के सामने आने वाली समस्या नहीं है?
(A) उच्च गुणवत्ता वाले कपास की कमी
(B) विद्युत की अनियमित आपूर्ति
(C) कृत्रिम रेशा उद्योग से कड़ी प्रतिस्पर्धा
(D) बड़े घरेलू बाजार का अभाव

NODIA

208. भारत में अधिकांश वर्षा का मुख्य कारण क्या है?
(A) दक्षिण-पश्चिम मानसून
(B) उत्तर-पूर्वी मानसून
(C) पश्चिमी विक्षोभ
(D) संवहनीय वर्षा

209. ऊटी (उदगमंडलम) जैसे प्रसिद्ध हिल स्टेशन किन पहाड़ियों में स्थित हैं?
(A) अन्नामलाई पहाड़ियाँ
(B) इलायची पहाड़ियाँ
(C) नीलगिरी पहाड़ियाँ
(D) पालनी पहाड़ियाँ

210. भारत में शक्ति संसाधनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कोयला भारत में सर्वाधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध जीवाश्म ईंधन है।
2. पेट्रोलियम रिफाइनरियां कृत्रिम वस्त्र और रसायन उद्योगों के लिए एक 'नोडल उद्योग' के रूप में कार्य करती हैं।
3. प्राकृतिक गैस को इसके निम्न कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के कारण पर्यावरण के अनुकूल ईंधन माना जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

211. प्रायद्वीपीय भारत में कौन सी दो ऋतुएं स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं, जहाँ विशिष्ट शीत ऋतु का अभाव होता है?
(A) शुष्क और आर्द्र ऋतु
(B) वसंत और शरद ऋतु
(C) गर्म और ठंडी ऋतु
(D) ग्रीष्म और मानसून ऋतु

212. उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) वार्षिक शुष्क ऋतु के दौरान वृक्ष अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं।
(B) वृक्षों के पत्तियाँ गिराने का कोई निश्चित मौसमी समय नहीं होता है।
(C) वन में कठोर कांटेदार वृक्षों और झाड़ियों का प्रभुत्व होता है।
(D) यह केवल 70 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।

213. भारत में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कौन सा है?
(A) गुजरात
(B) झारखंड
(C) ओडिशा
(D) महाराष्ट्र

214. कोंकण तट किस राज्य के तटीय मैदान को संदर्भित करता है?
(A) महाराष्ट्र और गोवा
(B) कर्नाटक
(C) केरल
(D) तमिलनाडु

215. भारत में 'हरित क्रांति' से मुख्य रूप से किसके उत्पादन को सर्वाधिक लाभ हुआ?
(A) चावल और जूट
(B) गेहूं और चावल
(C) कपास और गन्ना
(D) चाय और कॉफी

216. हिमालय की चौड़ाई किस क्षेत्र में सर्वाधिक है?
(A) अरुणाचल प्रदेश
(B) उत्तराखंड
(C) कश्मीर
(D) सिक्किम

217. पुणे शहर मुख्य रूप से किस प्रमुख औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्र से निकटता के कारण एक महत्वपूर्ण आईटी हब के रूप में उभरा है?
(A) दिल्ली
(B) कोलकाता
(C) चेन्नई
(D) मुंबई

218. पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ किस समुद्र के ऊपर उत्पन्न होते हैं?
(A) अरब सागर
(B) बंगाल की खाड़ी
(C) भूमध्य सागर
(D) काला सागर

219. कर्नाटक में 'बेल्लारी-चित्रदुर्ग-चिकमगलूर-तुमकुर' पट्टी किस खनिज भंडार से समृद्ध है?
(A) बॉक्साइट
(B) कोयला
(C) लौह अयस्क
(D) तांबा

220. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (हिमालयी श्रेणी):
P. हिमाद्रि
Q. हिमाचल
R. शिवालिक
S. पूर्वांचल
सूची II (वैकल्पिक नाम/विशेषता):
1. लघु हिमालय
2. पूर्वी पहाड़ियाँ
3. महान आंतरिक हिमालय
4. बाहरी हिमालय
कोड:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

221. भारत में अनेक फसलों की प्रति हेक्टेयर निम्न उपज का एक प्रमुख कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) स्थानीय भू-जोतों का अत्यधिक बड़ा आकार
(B) मानसून और प्राकृतिक उर्वरता पर कृषि की निर्भरता
(C) व्यापक कृषि यंत्रीकरण का लगातार उच्च स्तर
(D) उर्वरकों और रासायनिक कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग

222. 'भू-आकृति' (Physiography) शब्द का तात्पर्य किसके अध्ययन से है?
(A) किसी क्षेत्र की जलवायु
(B) किसी क्षेत्र का जनसंख्या वितरण
(C) पृथ्वी की सतह की भौतिक विशेषताएं
(D) किसी क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियाँ

223. भारतीय जलवायु का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन क्या है?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) उष्णकटिबंधीय जलवायु
(B) विषुवतीय जलवायु
(C) मानसूनी जलवायु
(D) शीतोष्ण जलवायु

224. निम्नलिखित में से कौन सी रबी की फसल है?
(A) मक्का
(B) ज्वार
(C) चना
(D) बाजरा

225. नेवेली लिग्नाइट खदानें, जो निम्न श्रेणी के कोयले का एक प्रमुख स्रोत हैं, किस राज्य में स्थित हैं?
(A) केरल
(B) आंध्र प्रदेश
(C) तमिलनाडु
(D) कर्नाटक

226. मालाबार तट किस राज्य के तटीय मैदान को संदर्भित करता है?
(A) महाराष्ट्र
(B) कर्नाटक
(C) केरल
(D) गोवा

227. भारत के उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वनों में वृक्षों की सर्वाधिक प्रमुख प्रजाति कौन सी है?
(A) रोजवुड
(B) देवदार
(C) सागौन
(D) बबूल

228. निम्नलिखित में से कौन सा इस्पात उद्योग में सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम नहीं है?
(A) सेल (SAIL)
(B) टिस्को (TISCO)
(C) भिलाई इस्पात संयंत्र
(D) राउरकेला इस्पात संयंत्र

229. अरावली श्रेणी किसका उदाहरण है?
(A) नवीन वलित पर्वत
(B) ब्लॉक पर्वत
(C) ज्वालामुखी पर्वत
(D) प्राचीन और अत्यधिक अपरदित अवशिष्ट पर्वत

230. मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा भारत में आगे बढ़ती है और किस भू-आकृतिक विशेषता द्वारा पश्चिम की ओर मुड़ जाती है?
(A) पश्चिमी घाट
(B) अरावली श्रेणी
(C) हिमालय श्रृंखला
(D) प्रायद्वीपीय पठार

231. सीमेंट उद्योग के लिए प्राथमिक कच्चा माल क्या है?
(A) बॉक्साइट
(B) जिप्सम
(C) चूना पत्थर
(D) कोयला

232. 'कंकड़' की परतें उत्तरी मैदानों के किस भाग की एक विशिष्ट विशेषता हैं?
(A) भाबर
(B) तराई
(C) भांगर
(D) खादर

233. फलों और सब्जियों की कृषि को किस नाम से जाना जाता है?
(A) रेशम उत्पादन
(B) अंगूर की खेती
(C) बागवानी (हॉर्टिकल्चर)
(D) मत्स्य पालन

234. मुंबई हाई, बेसिन और अंकलेश्वर भारत में किसके उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं?
(A) कोयला
(B) लौह अयस्क
(C) पेट्रोलियम
(D) मैंगनीज

235. गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियाँ किस भू-आकृतिक संरचना का हिस्सा हैं?
(A) पूर्वांचल हिमालय
(B) मेघालय का पठार (प्रायद्वीपीय पठार का विस्तार)
(C) मध्य उच्चभूमि
(D) शिवालिक श्रेणी

236. कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त व्याख्या करता है कि मौसिनराम में विश्व की सर्वाधिक वर्षा क्यों होती है?
(A) यह कीप के आकार की खासी पहाड़ियों के पवनमुखी ढाल पर स्थित है।
(B) यह भूमध्य रेखा के अत्यंत निकट स्थित है।
(C) यह मानसून की दोनों शाखाओं द्वारा एक साथ प्रभावित होता है।
(D) यहाँ पूरे वर्ष भारी चक्रवाती वर्षा होती है।

237. निम्नलिखित में से कौन सी गहन जीविका कृषि की विशेषता नहीं है?
(A) भूमि पर उच्च जनसंख्या दबाव
(B) यह श्रम प्रधान कृषि है
(C) प्रति इकाई क्षेत्र में निम्न उपज
(D) जैव-रासायनिक इनपुट और सिंचाई की उच्च मात्रा का उपयोग

NODIA

यह क्षेत्र अपनी स्थानिक लुप्तप्राय प्रजातियों और दुर्लभ अल्पाइन वनस्पतियों के लिए प्रसिद्ध है। हिमाचल श्रेणी मुख्य रुप से अत्यधिक संपीडित और परिवर्तित शैलों से बनी है। यहाँ की जलवायु विभिन्न प्रकार के सुंदर फूलों के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है।

10. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
भारत के खनिज संसाधनों का वितरण भौगोलिक रुप से विभिन्न राज्यों में केंद्रित है। ओडिशा राज्य बॉक्साइट और लौह अयस्क के उत्पादन में अग्रणी है। झारखंड का कोडरमा क्षेत्र विश्व स्तर पर अभ्रक के भंडार के लिए प्रसिद्ध माना जाता है।
इसी प्रकार, मध्य प्रदेश मैंगनीज के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये खनिज विभिन्न औद्योगिक गतिविधियों के लिए आवश्यक कच्चा माल प्रदान करते हैं। संसाधनों का यह वितरण मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठार की प्राचीन भूगर्भीय संरचनाओं से संबंधित है।

11. (D) अपनी हालिया विवर्तनिक उत्पत्ति के कारण यह पठार उच्च भूकंपीय गतिविधि वाला क्षेत्र है।
प्रायद्वीपीय पठार भारत का प्राचीनतम और सर्वाधिक स्थिर भू-भाग है, जिसका निर्माण गोंडवाना भूमि के टूटने और उत्तर की ओर खिसकने से हुआ था। यह पुरानी क्रिस्टलीय और आग्नेय चट्टानों से बनी एक मेज जैसी भूमि है।
हालिया विवर्तनिक उत्पत्ति के दावों के विपरीत, यह क्षेत्र भूकंपीय रूप से अत्यंत सुरक्षित माना जाता है क्योंकि इसकी संरचना सुदृढ़ है। यहाँ की घाटियाँ चौड़ी और उथली हैं, जो इसकी लंबी अपरदन प्रक्रिया और भूगर्भीय स्थिरता को दर्शाती हैं।

12. (B) उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत में पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ
शीत ऋतु के दौरान, उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट धारा हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होती है। यह वायुमंडलीय प्रणाली भूमध्यसागरीय क्षेत्र से आने वाले चक्रवाती विक्षोभों को भारतीय उपमहाद्वीप की ओर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
इन विक्षोभों के कारण उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत के मैदानी इलाकों में हल्की वर्षा और पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात होता है। यह शीतकालीन वर्षा रबी की फसलों, विशेष रूप से गेहूं के लिए अत्यंत लाभकारी और आवश्यक मानी जाती है।

13. (C) पश्चिमी घाट और लक्षद्वीप एवं अंडमान के द्वीप समूह
उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन उन क्षेत्रों में विकसित होते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 200 सेंटीमीटर से अधिक होती है। भारत में ये वन मुख्य रूप से पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढालों और द्वीप समूहों में पाए जाते हैं।
यहां की गर्म और आर्द्र जलवायु वृक्षों को वर्ष भर हरा-भरा रहने में सहायता करती है। इन वनों में आबनूस, महोगनी और रोजवुड जैसे कठोर लकड़ी वाले वृक्षों की सघनता होती है। ये वन बहु-स्तरीय होते हैं, जहाँ अत्यधिक जैव विविधता पाई जाती है।

14. (B) केवल 2 और 3
भारत में खनिजों का वितरण भौगोलिक रूप से असमान है। प्रायद्वीपीय पठार की चट्टानें कोयले और धात्विक खनिजों का मुख्य भंडार हैं। अधिकांश महत्वपूर्ण खनिज भंडार देश के पूर्वी और मध्य भागों में संकेंद्रित पाए जाते हैं।
प्रायद्वीप के पश्चिमी और पूर्वी किनारों पर स्थित अवसादी चट्टानों में पेट्रोलियम के निक्षेप पाए जाते हैं, जैसे गुजरात और असम के क्षेत्र। राजस्थान में भी अधात्विक खनिजों के भंडार मिलते हैं। इसके विपरीत उत्तरी मैदानों में खनिजों की भारी कमी है।

15. (A) भांगर
उत्तरी मैदान के उस विशाल हिस्से को भांगर कहा जाता है जो पुराने जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है। यह क्षेत्र वर्तमान बाढ़ के मैदानों के स्तर से ऊपर स्थित होता है और यहाँ नदियों का पानी प्रतिवर्ष नहीं पहुँच पाता है।
इस मृदा में चूनेदार निक्षेपों की अधिकता होती है, जिन्हें स्थानीय भाषा में कंकड़ कहा जाता है। भांगर क्षेत्र खादर की तुलना में कम उपजाऊ होता है क्योंकि इसकी मिट्टी का नवीनीकरण नियमित रूप से नहीं हो पाता है।

16. (B) इसमें बाढ़ के मैदानों के नवीन निक्षेप होते हैं और इनका लगभग प्रतिवर्ष नवीनीकरण होता है।
खादर उत्तरी मैदानों का वह निचला हिस्सा है जहाँ नदियों का बाढ़ का पानी लगभग प्रतिवर्ष पहुँचता है। इस प्रक्रिया के कारण यहाँ नवीन जलोढ़ मिट्टी का निरंतर निक्षेपण होता रहता है, जो इसे अत्यंत उर्वर बनाता है।
मृदा का निरंतर नवीनीकरण होने के कारण खादर क्षेत्र गहन कृषि के लिए आदर्श माना जाता है। यह पुराने जलोढ़ वाले भांगर क्षेत्र से भिन्न है क्योंकि इसकी मिट्टी अधिक महीन और पोषक तत्वों से भरपूर होती है।

17. (B) महेंद्रगिरि
पूर्वी घाट भारत के पूर्वी तट के समानांतर विस्तृत एक असतत पर्वत श्रृंखला है। इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी महेंद्रगिरि है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 1,501 मीटर है और यह ओडिशा राज्य में स्थित है।
पूर्वी घाट पश्चिमी घाट की तुलना में कम ऊँचे हैं और महानदी, गोदावरी एवं कृष्णा जैसी बड़ी नदियों द्वारा इन्हें कई स्थानों पर विच्छेदित किया गया है। इन श्रेणियों में जावादी और शेवराय जैसी महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ भी शामिल हैं।

18. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
केरल का मालाबार तट जून के प्रारंभ में दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा से टकराने वाला पहला क्षेत्र है। यहाँ भारी वर्षा होने का मुख्य कारण पश्चिमी घाट की ऊँची पहाड़ियों की भौगोलिक अवस्थिति है।
ये पहाड़ियाँ मानसून की पवनों के लिए एक शक्तिशाली पर्वतीय अवरोध के रुप में कार्य करती हैं। जब आर्द्र पवनें इन पहाड़ियों के पवनमुखी ढाल से टकराती हैं, तो वे ऊपर उठकर संघनित होती हैं और तीव्र वर्षा करती हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

251. भारत में ग्रीष्म ऋतु के दौरान अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) के उत्तर की ओर खिसकने का निम्नलिखित में से कौन सा परिणाम नहीं है?
(A) यह उत्तरी मैदानों के ऊपर एक कम दबाव की द्रोणी बनाता है।
(B) यह दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को आकर्षित करता है।
(C) यह पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ का कारण बनता है।
(D) यह मानसून के आगमन से संबंधित है।

252. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों और झाड़ियों में पाए जाने वाले सामान्य जंतु कौन से हैं?
(A) हाथी, बंदर, लेमुर, हिरण
(B) चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िया, बाघ, शेर
(C) एक सींग वाला गेंडा, जंगली गधा, ऊंट
(D) हिम तेंदुआ, याक, जंगली भेड़

253. भारत में जूट का सर्वाधिक उत्पादक राज्य कौन सा है?
(A) बिहार
(B) असम
(C) ओडिशा
(D) पश्चिम बंगाल

254. खनिज 'अभ्रक' पारदर्शी, काला, हरा, लाल, पीला या भूरा हो सकता है। इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण क्या है?
(A) यह ऊष्मा और विद्युत का अत्यंत सुचालक है।
(B) इसमें उत्कृष्ट परावैद्युत शक्ति है और यह एक श्रेष्ठ विसंवाहक है।
(C) यह अत्यंत कठोर, भारी और संसाधित करने में कठिन है।
(D) यह लौह और अलौह धातुओं के प्रमुख वैश्विक स्रोत के रूप में कार्य करता है।

255. लूनी नदी, जो भारतीय मरुस्थल की एकमात्र बड़ी नदी है, कहाँ समाप्त होती है?
(A) अरब सागर
(B) सांभर झील
(C) कच्छ का रण
(D) खंभात की खाड़ी

256. दुर्गापुर, भिलाई और राउरकेला इस्पात संयंत्र किस पंचवर्षीय योजना के दौरान स्थापित किए गए थे?
(A) प्रथम पंचवर्षीय योजना
(B) द्वितीय पंचवर्षीय योजना
(C) तृतीय पंचवर्षीय योजना
(D) चौथी पंचवर्षीय योजना

257. 'फूलों वाली बौछार' (ब्लॉसम शावर) किस राज्य में मानसून पूर्व वर्षा की घटना है, जो कॉफी की कृषि के लिए लाभदायक है?
(A) पश्चिम बंगाल
(B) असम
(C) केरल
(D) तमिलनाडु

258. गोवा में स्थित भारत का एक प्रमुख लौह अयस्क निर्यातक बंदरगाह निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) कांडला
(B) मार्माग़ाओ
(C) न्यू मंगलौर
(D) विशाखापत्तनम

259. हिमालय पर्वतमालाओं का सही उत्तर-से-दक्षिण क्रम क्या है?
(A) शिवालिक, हिमाचल, हिमाद्रि
(B) हिमाचल, हिमाद्रि, शिवालिक
(C) हिमाद्रि, हिमाचल, शिवालिक
(D) हिमाद्रि, शिवालिक, हिमाचल

260. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I (कृषि का प्रकार):
P. स्थानांतरित कृषि
Q. गहन जीविका कृषि
R. वाणिज्यिक कृषि
S. रोपण कृषि
सूची II (विवरण):
1. उच्च उत्पादकता के लिए आधुनिक इनपुट की उच्च मात्रा का उपयोग
2. 'कर्तन एवं दहन' कृषि
3. एक विस्तृत क्षेत्र में एकल फसल उगाई जाती है
4. भूमि पर उच्च जनसंख्या दबाव
कोड:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

261. गंगा डेल्टा में वर्षा किस दिशा में कम होती जाती है?
(A) पूर्व से पश्चिम
(B) पश्चिम से पूर्व
(C) उत्तर से दक्षिण
(D) दक्षिण से उत्तर

262. परमाणु ऊर्जा के उत्पादन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा खनिज सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
(A) कोयला
(B) बॉक्साइट
(C) यूरेनियम
(D) लौह अयस्क

263. प्रायद्वीपीय पठार किस प्राचीन भू-भाग का हिस्सा है?
(A) लौरेशिया
(B) अंगारालैंड

Downloaded from www.pdf.tube

(C) गोंडवानालैंड
(D) टेथिस सागर

264. पश्चिमी घाट जैसे भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाने वाली वनस्पति की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) कांटेदार झाड़ियाँ और घास
(B) पर्णपाती वृक्ष जो ग्रीष्म में पत्तियाँ गिराते हैं
(C) सघन, बहु-स्तरीय सदाबहार वन
(D) शीत के प्रति अनुकूलित शंकुधारी वृक्ष

265. 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम ने किस उद्योग को व्यापक प्रोत्साहन दिया है?
(A) ऑटोमोबाइल उद्योग
(B) सीमेंट उद्योग
(C) इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग
(D) कपड़ा उद्योग

266. निम्नलिखित में से कौन सी मोटे अनाज की फसल नहीं है?
(A) ज्वार
(B) बाजरा
(C) रागी
(D) मक्का

267. प्रायद्वीपीय पठार को हिमालयी क्षेत्र से पृथक करने वाली सीमा संरचना कौन सी है?
(A) नर्मदा-सोन रेखा
(B) भारत-गंगा का मैदान
(C) अरावली श्रेणी
(D) विंध्य श्रेणी

268. भारत का कौन सा राज्य पवन ऊर्जा का सबसे बड़ा उत्पादक है?
(A) राजस्थान
(B) गुजरात
(C) तमिलनाडु
(D) महाराष्ट्र

269. उत्तर भारत में शीत ऋतु की विशेषता क्या है?
(A) गर्म दिन और गर्म रातें
(B) सुहावने दिन और सुहावनी रातें
(C) सुहावने दिन और ठंडी रातें
(D) गर्म दिन और ठंडी रातें

270. किसी देश की आर्थिक शक्ति निम्नलिखित में से किसके विकास से मापी जाती है?
(A) कृषि और सेवाएं
(B) विनिर्माण उद्योग
(C) प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियाँ
(D) केवल सेवा क्षेत्र

271. वनस्पति के संदर्भ में, 'अक्षत वनस्पति' का क्या अर्थ है?
(A) कृषकों द्वारा उगाई गई वनस्पति
(B) वह पादप समुदाय जो मानवीय हस्तक्षेप के बिना प्राकृतिक रूप से विकसित हुआ है
(C) आयातित पादप प्रजातियों का समूह
(D) वे वन जिन्हें कटाई के पश्चात पुनः लगाया गया है

272. राजस्थान के पश्चिमी भागों में बनने वाले अर्धचंद्राकार रेत के टीलों को किस नाम से जाना जाता है?
(A) दून
(B) दुआर
(C) बरकान
(D) खादर

273. भारतीय मानक समय रेखा (82°30'E) निम्नलिखित में से किस शहर से होकर गुजरती है?
(A) नागपुर
(B) दिल्ली
(C) मिर्जापुर
(D) कोलकाता

274. ताप्ती नदी का मुहाना कहाँ स्थित है?
(A) बंगाल की खाड़ी
(B) हिंद महासागर
(C) अरब सागर
(D) गोदावरी नदी

NODIA

275. भारत में निम्नलिखित औद्योगिक नीति संबंधी घटनाओं को उनके आरंभ के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) नीति
2. रिशरा में प्रथम जूट मिल की स्थापना
3. मुंबई में प्रथम सफल सूती वस्त्र मिल की स्थापना
4. भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
(A) 3-2-4-1
(B) 2-3-4-1
(C) 2-3-1-4
(D) 3-4-2-1

276. मानसूनी वर्षा की क्षेत्रीय भिन्नता भारतीय भूगोल के किस पहलू का प्रमुख आधार है?
(A) भू-आकृतिक विभाग
(B) जलवायु प्रादेशीकरण
(C) वनस्पति क्षेत्र
(D) औद्योगिक क्षेत्र

277. टिस्को (TISCO) किस स्थान पर स्थित है?
(A) भिलाई
(B) दुर्गापुर
(C) जमशेदपुर
(D) राउरकेला

278. निम्नलिखित में से कौन सी हिमालय से निकलने वाली एक बारहमासी नदी का उदाहरण है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) सिंधु
(D) महानदी

279. 'समूहन अर्थव्यवस्था' शब्द का तात्पर्य है:
(A) दूर स्थित उद्योगों द्वारा अनुभव किया जाने वाला आर्थिक नुकसान।
(B) फर्मों और व्यक्तियों को एक-दूसरे के निकट स्थित होने पर मिलने वाले लाभ।
(C) शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों के पलायन की प्रक्रिया।
(D) समस्त औद्योगिक उत्पादन पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण।

280. निम्नलिखित में से कौन सी हिमालय पर्वत की विशेषता नहीं है?
(A) वे एक अस्थिर भूवैज्ञानिक क्षेत्र का निर्माण करते हैं।
(B) उनकी विशेषता नवीन उच्चावच स्थलाकृति है।
(C) वे पूर्णतः कठोर क्रिस्टलीय आग्नेय चट्टानों से निर्मित हैं।
(D) इनमें ऊँची चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और तीव्रगामी नदियाँ हैं।

281. भारत निम्नलिखित में से किस फसल का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक होने के साथ-साथ उपभोक्ता भी है?
(A) गेहूं
(B) चावल
(C) दालें
(D) गन्ना

282. हिमाचल प्रदेश में मणिकरण और लद्दाख में पूगा घाटी में विकसित किया जा रहा गैर-पारंपरिक ऊर्जा का प्रमुख स्रोत कौन सा है?
(A) सौर ऊर्जा
(B) पवन ऊर्जा
(C) ज्वारीय ऊर्जा
(D) भू-तापीय ऊर्जा

283. नदियाँ और जलधाराएं भाबर पट्टी के पश्चात किस क्षेत्र में पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं?
(A) खादर
(B) भांगर
(C) तराई
(D) दून

284. कोरोमंडल तट अपनी अधिकांश वर्षा किससे प्राप्त करता है?
(A) दक्षिण-पश्चिम मानसून से
(B) उत्तर-पूर्वी मानसून और चक्रवाती अवदाबों से
(C) पश्चिमी विक्षोभ से
(D) ग्रीष्मकालीन संवहनीय बौछारों से

285. भारत में सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्कों की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) वे एकल-खिड़की सेवा और उच्च गति डेटा संचार सुविधाएं प्रदान करते हैं।
(B) वे मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठार के खनिज समृद्ध क्षेत्रों में स्थित हैं।
(C) वे ग्रामीण क्षेत्रों के लिए भारी विनिर्माण और हार्डवेयर उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
(D) वे पूर्णतः भारत सरकार के स्वामित्व और संचालन में हैं।

286. आर्द्र पर्णपाती और शुष्क पर्णपाती वनों के मध्य प्राथमिक अंतर का आधार क्या है?
(A) उनमें पाए जाने वाले जंतुओं के प्रकार।
(B) उन्हें प्राप्त होने वाली वार्षिक वर्षा की मात्रा।
(C) वह ऊँचाई जिस पर वे स्थित हैं।
(D) मृदा का प्रकार जिस पर वे उगते हैं।

287. निम्नलिखित में से कौन सा दर्रा सिक्किम राज्य में स्थित है?
(A) जोजी ला
(B) बारा लाचा ला
(C) शिपकी ला
(D) नाथू ला

288. किस फसल की कृषि के लिए उच्च तापमान, हल्की वर्षा, और खिली हुई धूप के साथ 210 पाला रहित दिनों की आवश्यकता होती है?
(A) गेहूं
(B) चावल
(C) कपास
(D) जूट

289. प्रायद्वीपीय पठार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता किसकी उपस्थिति है?
(A) नवीन वलित पर्वत
(B) उपजाऊ जलोढ़ मैदान
(C) काली मृदा का क्षेत्र जिसे दक्कन ट्रैप कहा जाता है
(D) गहरी खाइयाँ और वी-आकार की घाटियाँ

290. ऊपरी वायु परिसंचरण में जेट स्ट्रीम लगभग किस अक्षांश के मध्य स्थित होती हैं?
(A) 0° - 10° N
(B) 10° - 20° N
(C) 27° - 30° N
(D) 45° - 50° N

291. प्राथमिक और तृतीयक क्षेत्रों के विकास के लिए किस क्षेत्र को आधार माना जाता है?
(A) कृषि क्षेत्र
(B) सेवा क्षेत्र
(C) विनिर्माण क्षेत्र
(D) चतुर्थक क्षेत्र

Click Here to Buy book on Amazon

29. (C) केवल 1 और 2
भारत की भू-आकृतिक संरचना में प्रायद्वीपीय पठार प्राचीनतम भू-भाग है, जो गोंडवानालैंड का एक हिस्सा था। इसके विपरीत, हिमालय पर्वतमाला और उत्तरी मैदान भूवैज्ञानिक रूप से बहुत नवीन हैं, जिनका निर्माण हाल के युगों में हुआ है।
हिमालय एक वलित पर्वत श्रृंखला है जो अभी भी उत्थान की प्रक्रिया में है, इसलिए इसे 'अस्थिर' माना जाता है। उत्तरी मैदानों का निर्माण हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से हुआ है।

30. (D) क्रमिक प्रक्रिया है
भारत से मानसून की वापसी या निवर्तन एक अचानक होने वाली घटना नहीं है, बल्कि यह एक धीमी और क्रमिक प्रक्रिया है। सितंबर के प्रारंभ में यह उत्तर-पश्चिमी भारत से शुरु होकर अक्टूबर के अंत तक संपूर्ण देश से विदा होता है।
जैसे-जैसे सूर्य दक्षिण की ओर खिसकता है, उत्तर भारत के मैदानों पर निम्न वायुदाब की द्रोणी कमजोर होने लगती है। इसके परिणामस्वरूप मानसूनी पवनें धीरे-धीरे पीछे हटने लगती हैं। यह परिवर्तन मौसम में स्पष्ट बदलाव लाता है और आसमान पूर्णतः साफ हो जाता है।

31. (B) वृक्षों की जड़ें लंबी होती हैं जो नमी के लिए मृदा में गहराई तक जाती हैं।
उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन उन शुष्क क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 70 सेंटीमीटर से भी कम होती है। इन वनों के वृक्षों ने पानी की कमी वाली परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए विशिष्ट अनुकूलन विकसित किए हैं।
इनकी जड़ें मृदा में बहुत गहराई तक जाती हैं ताकि वे भूमिगत जल तक पहुँच सकें। पत्तियों का आकार छोटा होता है ताकि वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की हानि कम हो सके। राजस्थान और गुजरात में पाए जाने वाले बबूल इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

32. (A) उत्तर-पूर्वी राज्य
'कर्तन एवं दहन' कृषि को भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों, जैसे असम, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में मुख्य रूप से 'झूमिंग' के नाम से जाना जाता है। यह आदिम निर्वाह कृषि का एक प्रकार है जिसमें वनों को जलाकर खेती की जाती है।
कुछ वर्षों तक फसल उगाने के बाद जब मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है, तो किसान उस जमीन को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। यह चक्र मृदा को प्राकृतिक रूप से पुनः उर्वर होने का अवसर प्रदान करता है।

33. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लोहा और इस्पात उद्योग को 'भारी उद्योग' के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि इसमें उपयोग होने वाला कच्चा माल और तैयार माल दोनों ही वजन में बहुत भारी और स्थूल होते हैं। लौह अयस्क और कोयला इसके मुख्य घटक हैं।
कच्चे माल की भारी प्रकृति के कारण परिवहन की लागत बहुत अधिक हो जाती है, इसलिए अधिकांश इस्पात संयंत्र खदानों के निकट ही स्थापित किए जाते हैं। तैयार उत्पाद जैसे इस्पात की छड़ें भी भारी होती हैं, जिनके वितरण के लिए सुदृढ़ रेल व्यवस्था आवश्यक है।

34. (A) गोदावरी
गोदावरी नदी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है, जिसे इसकी विशालता और धार्मिक महत्व के कारण 'दक्षिण गंगा' भी कहा जाता है। यह महाराष्ट्र के नासिक जिले में पश्चिमी घाट की ढलानों से निकलती है।
इसकी कुल लंबाई लगभग 1,500 किलोमीटर है और इसका अपवाह बेसिन महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में विस्तृत है। यह अंत में बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले एक बड़ा डेल्टा बनाती है और दक्षिण भारत की जीवन रेखा मानी जाती है।

35. (A) आगमन के समय अचानक होने वाली निरंतर वर्षा।
'मानसून प्रस्फोट' का तात्पर्य वर्षा ऋतु की उस प्रारंभिक अवस्था से है जब शुष्क मौसम के बाद अचानक कई दिनों तक तीव्र और निरंतर वर्षा होने लगती है। यह घटना दक्षिण-पश्चिम मानसून के भारतीय तट पर पहुँचने का संकेत देती है।
इसमें गरज और बिजली के साथ मूसलाधार बारिश होती है, जो सामान्य वर्षा से काफी भिन्न और शक्तिशाली होती है। यह अक्सर जून के पहले सप्ताह में केरल के तट पर देखा जाता है और कृषि कार्यों की शुरुआत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

36. (B) अन्नामलाई पहाड़ियों में
अनाइमुडी प्रायद्वीपीय भारत और दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 2,695 मीटर है। यह भौगोलिक रूप से केरल राज्य के इडुक्की जिले में अन्नामलाई पहाड़ियों के समूह में स्थित है।
यह चोटी उस स्थान पर स्थित है जहाँ पश्चिमी घाट की तीन पहाड़ियाँ आपस में मिलती हैं। यहाँ की जलवायु और ऊँचाई के कारण यह विभिन्न प्रकार की दुर्लभ वनस्पतियों का प्राकृतिक आवास है। यह पर्वत शिखर अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

37. (D) लेह-लद्दाख क्षेत्र
भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र वे हैं जहाँ कच्चे माल की सुलभता, ऊर्जा आपूर्ति और परिवहन के साधनों के कारण उद्योगों का सघन संकेंद्रण पाया जाता है। मुंबई-पुणे और बेंगलुरु-तमिलनाडु क्षेत्र इसके वैश्विक पहचान वाले उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
इसके विपरीत, लेह-लद्दाख क्षेत्र अपनी दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों और बुनियादी ढांचे के अभाव के कारण औद्योगिक क्षेत्र की श्रेणी में नहीं आता है। यहाँ मुख्य रूप से पर्यटन आधारित गतिविधियाँ ही प्रचलित हैं। औद्योगिक समूहों का विकास सदैव अनुकूल सरकारी नीतियों पर आधारित होता है।

38. (C) ओडिशा
ओडिशा राज्य के तट पर स्थित चिल्का झील भारत की सबसे बड़ी और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यह

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) उत्तरी मैदान
भारत का विशाल उत्तरी मैदान भूवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देश का नवीनतम भू-आकृतिक विभाग है। इसका निर्माण मुख्य रूप से टेथिस सागर के संकुचन और हिमालय पर्वतमाला के उत्थान के पश्चात हुआ है।
सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी महान नदियों द्वारा हिमालय से लाए गए जलोढ़ अवसादों के निरंतर निक्षेपण से इस उपजाऊ मैदान का विकास हुआ। यह अत्यधिक समतल और कृषि की दृष्टि से भारत का सर्वाधिक उत्पादक क्षेत्र माना जाता है।

2. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
भारतीय उपमहाद्वीप में मानसूनी पवनें ऋतुओं के चक्र को लयबद्धता प्रदान करती हैं। यह पूरे देश में एकता स्थापित करने वाला एक प्रमुख कारक है, जो भारतीय कृषि और जनजीवन को एक सूत्र में पिरोता है।
भारत जैसे विशाल देश में जलवायु की क्षेत्रीय विविधताएं स्पष्ट हैं। राजस्थान के मरुस्थल की शुष्कता और मेघालय की अत्यधिक वर्षा के बीच भारी अंतर है। अतः क्षेत्रीय विविधताएं भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषता हैं, जो स्थानीय उच्चावच पर आधारित हैं।

3. (C) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन भारत के सर्वाधिक व्यापक और प्रमुख वनस्पति प्रकार हैं, जिन्हें मानसूनी वन भी कहा जाता है। ये वन उन क्षेत्रों में विस्तृत हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 70 से 200 सेंटीमीटर के मध्य होती है।
जल की उपलब्धता के आधार पर इन्हें आर्द्र और शुष्क पर्णपाती वनों में विभाजित किया जाता है। ये वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु में जल संरक्षण के लिए अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। सागौन इस वन की सबसे महत्वपूर्ण प्रजाति है।

4. (D) सोवियत संघ
छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान वर्ष 1955 में की गई थी। इस महत्वपूर्ण औद्योगिक इकाई का निर्माण तत्कालीन सोवियत संघ के तकनीकी और आर्थिक सहयोग से संपन्न हुआ था।
यह संयंत्र भारत में इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। इसे मुख्य रूप से रेल पटरियों और भारी संरचनात्मक इस्पात के उत्पादन के लिए अभिकल्पित किया गया था, जो देश के बुनियादी ढांचे के विकास में सहायक है।

5. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत के उत्तरी मैदान विश्व के सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से एक हैं, जिसका मुख्य कारण यहाँ की समृद्ध जलोढ़ मृदा है। इन मैदानों का निर्माण सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के निक्षेपण कार्य द्वारा हुआ है।
नदियों द्वारा लाई गई यह महीन मिट्टी कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत पोषक तत्व प्रदान करती है। पर्याप्त जल आपूर्ति, अनुकूल जलवायु और समतल भू-भाग के साथ मिलकर यह मृदा इस क्षेत्र को सघन जनसंख्या वाला उत्पादक कृषि केंद्र बनाती है।

6. (B) कॉफी
उत्तरी मैदानों की जलोढ़ मृदा मुख्य रूप से चावल, गेहूं और गन्ने जैसी फसलों के लिए अत्यधिक उपयुक्त होती है। जलोढ़ मिट्टी में पोटाश और फास्फोरस की प्रचुरता इन फसलों की सघन खेती में बहुत सहायता करती है।
इसके विपरीत, कॉफी एक ऐसी फसल है जिसे ढालू पहाड़ियों और विशिष्ट उष्णकटिबंधीय उच्च भूमि जलवायु की आवश्यकता होती है। भारत में कॉफी का उत्पादन मुख्य रूप से दक्षिण भारत के पहाड़ी क्षेत्रों, विशेषकर कर्नाटक की पहाड़ियों में केंद्रित है।

7. (D) 2,400 किमी
हिमालय पर्वतमाला विश्व की सबसे ऊँची और नवीन वलित पर्वत श्रृंखला है, जो भारत की उत्तरी सीमा पर चाप की आकृति में विस्तृत है। इसका पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक विस्तार पाया जाता है।
इस विशाल पर्वत तंत्र की कुल लंबाई लगभग 2,400 किलोमीटर है। इसकी चौड़ाई कश्मीर में 400 किलोमीटर से लेकर अरुणाचल प्रदेश में 150 किलोमीटर तक भिन्न होती है। यह उत्तर-पूर्व की दिशा में मुड़कर भारत की पूर्वी सीमाओं का निर्माण करता है।

8. (A) मौसम (ऋतु)
'मानसून' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द 'मौसिम' से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ ऋतु या मौसम होता है। यह शब्द एक वर्ष के दौरान वायु की दिशा में होने वाले ऋतुवत परिवर्तन को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।
प्राचीन काल में अरब व्यापारियों द्वारा हिंद महासागर में नौकायन के दौरान हवाओं के इस चक्रीय व्यवहार को समझने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया गया था। वर्तमान में, यह भारतीय उपमहाद्वीप में वर्षा लाने वाली विशिष्ट वायु प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है।

9. (C) हिमाचल
प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित एक विश्व धरोहर स्थल है। यह सुरम्य क्षेत्र हिमालय की हिमाचल श्रेणी, जिसे लघु या मध्य हिमालय भी कहा जाता है, के उच्च ऊँचाई वाले भागों में स्थित है।

Downloaded from www.pdf.tube

238. नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (एनटीपीसी) किस प्रकार के विद्युत उत्पादन से संबंधित एक प्रमुख निगम है?
(A) जल-विद्युत ऊर्जा
(B) तापीय ऊर्जा
(C) परमाणु ऊर्जा
(D) सौर ऊर्जा

239. भारत की खारे पानी की सबसे बड़ी झील, चिल्का झील, कहाँ स्थित है?
(A) पश्चिमी तटीय मैदान
(B) पूर्वी तटीय मैदान
(C) पंजाब और हरियाणा की सीमा पर
(D) राजस्थान के शुष्क भागों में

240. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं: अभिकथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): सूती वस्त्र उद्योग का कृषि के साथ गहरा संबंध है।
कारण (R): यह किसानों, कपास की कलियां चुनने वालों और ओटाई, कताई, बुनाई, रंगाई एवं डिजाइनिंग में लगे श्रमिकों को आजीविका प्रदान करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

241. निम्नलिखित में से कौन सा दर्रा श्रीनगर को लेह से जोड़ता है?
(A) शिपकी ला
(B) नाथू ला
(C) जोजी ला
(D) बोमडि ला

242. भारत में उगाई जाने वाली चाय की दो मुख्य किस्में कौन सी हैं?
(A) अरेबिका और रोबस्टा
(B) काली चाय और हरी चाय
(C) असामिका और साइनेंसिस
(D) दार्जिलिंग और नीलगिरी

243. हिमालय के ऊपरी क्षेत्रों में वनस्पति शीतोष्ण से अल्पाइन और अंत में टुंड्रा प्रकार में परिवर्तित हो जाती है। यह भिन्नता किसके कारण है?
(A) ऊंचाई के साथ तापमान में कमी।
(B) ऊंचाई के साथ वर्षा में वृद्धि।
(C) ऊंचाई के साथ मृदा के प्रकार में परिवर्तन।
(D) ऊंचाई के साथ सूर्य के प्रकाश की तीव्रता।

244. हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर (HVJ) पाइपलाइन किस संसाधन का परिवहन करती है?
(A) कच्चा तेल
(B) प्राकृतिक गैस
(C) लौह अयस्क स्लरी
(D) जल

245. पश्चिमी तटीय मैदान किस भाग में सर्वाधिक संकरा है?
(A) उत्तरी भाग (कोंकण)
(B) मध्य भाग (कन्नड़)
(C) दक्षिणी भाग (मालाबार)
(D) इसकी संपूर्ण लंबाई में एक समान चौड़ाई है।

246. भारत में दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ने पर दिन और रात की अवधि को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक क्या है?
(A) देशांतर
(B) ऊंचाई
(C) अक्षांश
(D) समुद्र से दूरी

247. भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल कौन सी है?
(A) गेहूं
(B) मोटे अनाज
(C) चावल
(D) मक्का

248. गोंडवाना कोयला क्षेत्र, जो भारत के कोयला भंडार का लगभग 98% हिस्सा है, मुख्य रूप से कहाँ स्थित हैं?
(A) दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी की प्रमुख नदी घाटियों में।
(B) तमिलनाडु और गुजरात में स्थित तटीय क्षेत्रों में।
(C) असम और मेघालय सहित उत्तर-पूर्वी राज्यों में।
(D) जम्मू और कश्मीर में स्थित हिमालय की तलहटी में।

249. निम्नलिखित में से कौन सी भारत में विनिर्माण क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) यह जीडीपी में 50% से अधिक योगदान देता है।
(B) यह देश का सबसे बड़ा नियोक्ता है।
(C) इसे आर्थिक विकास की रीढ़ माना जाता है।
(D) पिछले दो दशकों में इसमें निरंतर गिरावट आ रही है।

NODIA

250. भारत के भू-आकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. हिमालय भूवैज्ञानिक रूप से युवा और संरचनात्मक रूप से वलित पर्वत हैं।
2. उत्तरी मैदान आग्नेय चट्टानों से निर्मित हैं।
3. प्रायद्वीपीय पठार पृथ्वी की सतह पर प्राचीनतम भू-भागों में से एक है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

19. (C) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग
"उदीयमान उद्योग" उन व्यवसायों को कहा जाता है जो विकास के प्रारंभिक चरण में हैं और भविष्य में अत्यधिक विस्तार की क्षमता रखते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग भारत में इस श्रेणी का सबसे प्रमुख और सफल उदाहरण है।
यह उद्योग नवाचार, उच्च तकनीक और तेजी से बढ़ती वैश्विक मांग द्वारा संचालित होता है। इसने देश के आर्थिक परिदृश्य को बदलते हुए लाखों लोगों को रोजगार प्रदान किया है। यह क्षेत्र अपनी निरंतर तकनीकी प्रगति के लिए जाना जाता है।

20. (D) सौर ऊर्जा
ऊर्जा के वे स्रोत जो प्रकृति में असीमित मात्रा में उपलब्ध हैं और जिनका पुनर्चक्रण संभव है, गैर-पारंपरिक या नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत कहलाते हैं। सौर ऊर्जा इस श्रेणी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और स्वच्छ विकल्प माना जाता है।
कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे पारंपरिक स्रोत सीमित हैं और इनके दहन से पर्यावरण प्रदूषण फैलता है। इसके विपरीत, सौर ऊर्जा पर्यावरण के अनुकूल है और इसके निरंतर उपयोग से भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

21. (C) दून
हिमालय पर्वतमाला के अंतर्गत लघु हिमालय और शिवालिक श्रेणियों के मध्य स्थित अनुदैर्ध्य घाटियों को स्थानीय भाषा में 'दून' कहा जाता है। ये घाटियाँ नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के जमाव और विवर्तनिक गतिविधियों के कारण निर्मित हुई हैं।
देहरादून, कोटली दून और पाटली दून इस प्रकार की घाटियों के सबसे प्रसिद्ध उदाहरण हैं। ये क्षेत्र मानव बसाव और कृषि के लिए अत्यंत अनुकूल माने जाते हैं। इनकी समतल स्थलाकृति इन्हें पर्यटन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण बनाती है।

22. (A) 4-2-1-3
भारत की भौगोलिक संरचना को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित करने पर सबसे पहले सुदूर उत्तर में काराकोरम श्रेणी आती है। इसके दक्षिण में हिमालय की सबसे बाहरी श्रेणी शिवालिक का विस्तार पाया जाता है।
शिवालिक के और दक्षिण की ओर बढ़ने पर मध्य भारत में मालवा का पठार स्थित है, जो उत्तरी मैदानों और प्रायद्वीपीय भारत के बीच एक संक्रमण क्षेत्र बनाता है। अंत में, दक्षिण भारत का विशाल दक्कन का पठार आता है।

23. (D) यह मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर स्थित है।
दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान तमिलनाडु का तट शुष्क रहता है क्योंकि इसकी भौगोलिक अवस्थिति मानसूनी हवाओं के अनुकूल नहीं है। यह क्षेत्र बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर स्थित है, जिससे आर्द्र पवनें सीधे यहाँ नहीं टकराती हैं।
साथ ही, यह अरब सागर शाखा के लिए पश्चिमी घाट के वृष्टि-छाया क्षेत्र में पड़ता है। परिणामस्वरूप, यहाँ ग्रीष्मकालीन मानसून से बहुत कम वर्षा होती है। इसके विपरीत, तमिलनाडु तट पर शीत ऋतु के दौरान उत्तर-पूर्वी मानसून से भारी वर्षा होती है।

24. (A) मैंग्रोव वन
मैंग्रोव वन एक विशिष्ट प्रकार की वनस्पति है जो नदियों के डेल्टा और ज्वार-भाटे वाले तटीय क्षेत्रों में विकसित होती है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा में पाए जाने वाले सुंदरी वृक्ष इन वनों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण हैं।
इन वृक्षों की जड़ें खारे पानी में जीवित रहने के लिए अनुकूलित होती हैं और अक्सर पानी के ऊपर दिखाई देती हैं। सुंदरी वृक्षों के कारण ही इस क्षेत्र को 'सुंदरबन' कहा जाता है। ये वन तटीय मृदा कटाव को रोकने में सहायक होते हैं।

25. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
भारत में विभिन्न फसलों के लिए विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। चावल को उच्च तापमान, आर्द्रता और 100 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा की जरूरत होती है। गेहूं के लिए ठंडी वर्धन ऋतु और पकते समय खिली हुई धूप आवश्यक है।
कपास की खेती के लिए उच्च तापमान और कम से कम 210 पाला रहित दिन अनिवार्य होते हैं। चाय एक बागानी फसल है जिसके लिए गर्म-नम जलवायु और वर्ष भर समान रूप से होने वाली बौछारें अत्यंत आवश्यक मानी जाती हैं।

26. (A) अभ्रक
झारखंड राज्य में स्थित कोडरमा जिला भारत ही नहीं, बल्कि विश्व में उच्च गुणवत्ता वाले अभ्रक के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र छोटानागपुर पठार का हिस्सा है, जहाँ खनिज निक्षेपों की अत्यधिक प्रचुरता पाई जाती है।
यहाँ मिलने वाला अभ्रक अपनी विशिष्ट परावैद्युत शक्ति और कम विद्युत हानि के गुणों के कारण विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों के लिए मूल्यवान है। कोडरमा-हजारीबाग पट्टी को भारत की अभ्रक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है।

27. (D) उद्योग निकटता और अंतर्संबंधों का लाभ उठाने के लिए एक साथ समूह में स्थित हों।
औद्योगिक क्षेत्र की संकल्पना उन भौगोलिक क्षेत्रों पर आधारित है जहाँ विभिन्न प्रकार के उद्योग एक-दूसरे के निकट स्थापित होते हैं। इस निकटता का मुख्य उद्देश्य समूहन अर्थव्यवस्था के लाभों को साझा करना और परिवहन लागत को कम करना है।
जब उद्योग समूह में होते हैं, तो वे साझा बुनियादी ढांचे, बैंकिंग और कुशल श्रम जैसे संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर पाते हैं। यह अंतर्संबंध औद्योगिक उत्पादकता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने में सहायक होता है।

28. (B) कन्नड़ मैदान
भारत का पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर और पश्चिमी घाट के मध्य स्थित एक संकरी पट्टी है। गोवा के दक्षिण में स्थित इस तटीय भाग को 'कन्नड़ मैदान' के नाम से जाना जाता है, जो मुख्य रूप से कर्नाटक राज्य में विस्तृत है।
इस तटीय पट्टी का उत्तरी भाग कोंकण कहलाता है और सुदूर दक्षिणी भाग को मालाबार तट कहा जाता है। कन्नड़ मैदान अपनी प्राकृतिक सुंदरता और मत्स्य पालन के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र कई छोटी और तीव्रगामी नदियों द्वारा निर्मित हुआ है।

Click Here to Buy book on Amazon

292. अंडमान द्वीप समूह को निकोबार द्वीप समूह से निम्नलिखित में से किसके द्वारा पृथक किया जाता है?
(A) पाक जलडमरूमध्य
(B) आठ डिग्री चैनल
(C) दस डिग्री चैनल
(D) मन्नार की खाड़ी

293. कौन सा खनिज मुख्य रूप से इस्पात को कठोर करने और फेरो-मैंगनीज मिश्र धातु बनाने के लिए प्रयुक्त होता है?
(A) बॉक्साइट
(B) अभ्रक
(C) मैंगनीज
(D) तांबा

294. 'उत्तराधिकार का अधिकार' जिसके कारण पीढ़ियों के मध्य भूमि का निरंतर विभाजन होता है, किस प्रकार की कृषि के विकास में एक बड़ी बाधा है?
(A) रोपण कृषि
(B) वाणिज्यिक कृषि
(C) गहन जीविका कृषि
(D) विस्तृत कृषि

295. हिमालय के सर्वाधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में निम्नलिखित में से कौन सी वनस्पति पाई जाती है?
(A) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(B) चौड़ी पत्ती वाले शीतोष्ण वन
(C) शंकुधारी वन
(D) अल्पाइन वनस्पति और टुंड्रा

296. राजस्थान राज्य किन दो प्रकार की गैर-पारंपरिक ऊर्जा के विकास की संभावनाओं से अत्यधिक समृद्ध है?
(A) भू-तापीय और ज्वारीय ऊर्जा
(B) सौर और पवन ऊर्जा
(C) परमाणु और जल ऊर्जा
(D) बायोमास और भू-तापीय ऊर्जा

297. पश्चिमी तट अपेक्षाकृत सीधा है, जबकि पूर्वी तट विकसित डेल्टाओं के कारण अत्यधिक कटा-फटा है। इस अंतर का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों का पूर्व की ओर प्रवाह।
(B) ज्वारीय सीमा में अंतर।
(C) महाद्वीपीय मग्नतट की प्रकृति।
(D) प्रचलित पवनों की दिशा।

298. 'मानसून द्रोणी' (Monsoon Trough) एक निम्न वायुदाब का क्षेत्र है जो भारत में किस ऋतु की प्रमुख विशेषता है?
(A) शीत ऋतु
(B) ग्रीष्म ऋतु
(C) वर्षा ऋतु (आगे बढ़ता मानसून)
(D) शरद ऋतु (लौटता मानसून)

299. औद्योगिक अवस्थिति के संदर्भ में, 'बाजार' से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल वह भौतिक स्थान जहाँ वस्तुएं बेची जाती हैं।
(B) तैयार माल की मांग और उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति।
(C) कच्चे माल की सुलभता।
(D) दुकान के लिए भौतिक संरचना।

300. भारत की मुख्य भूमि 8°4'N और 37°6'N अक्षांशों के मध्य विस्तृत है। इसका अनुमानित अक्षांशीय विस्तार कितना है?
(A) 20 डिग्री
(B) 30 डिग्री
(C) 40 डिग्री
(D) 15 डिग्री

www.nodia.in

NODIA

महानदी के मुहाने के दक्षिण में स्थित है और बंगाल की खाड़ी से एक संकरी रेतीली पट्टी द्वारा अलग होती है।
यह झील प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण शीतकालीन आवास स्थल है और जैव विविधता की दृष्टि से अंतरराष्ट्रीय महत्व का स्थल घोषित की गई है। यहाँ भारी मात्रा में मत्स्य पालन होता है, जो स्थानीय समुदायों की आजीविका का मुख्य स्रोत है।

39. (A) दक्षिण-पश्चिम मानसून का आगमन।
ग्रीष्म ऋतु के दौरान, तिब्बती पठार के गर्म होने के कारण ऊपरी वायुमंडल में एक विशिष्ट वायु परिसंचरण विकसित होता है, जिसे उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट धारा कहा जाता है। यह धारा मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर प्रवाहित होती है। इस जेट धारा की उपस्थिति दक्षिण-पश्चिम मानसून के भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन और इसकी तीव्रता से सीधे तौर पर जुड़ी हुई है। यह धरातलीय मानसूनी पवनों को खींचने में मदद करती है, जिससे वर्षा की शुरुआत होती है। यह मानसूनी तंत्र का अनिवार्य और प्रभावी घटक है।

40. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के विभिन्न उद्योग विशिष्ट केंद्रों के आधार पर विकसित हुए हैं। अहमदाबाद अपने विशाल उत्पादन के कारण सूती वस्त्रों का मुख्य केंद्र है, जबकि पश्चिम बंगाल का रिशरा ऐतिहासिक रूप से जूट मिलों के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है।
जमशेदपुर भारत का सबसे पुराना और प्रमुख लोहा-इस्पात शहर है, जिसे 'टाटानगर' भी कहा जाता है। दूसरी ओर, बेंगलुरु अपनी तकनीकी प्रगति के कारण सूचना प्रौद्योगिकी का वैश्विक केंद्र बन गया है। इन केंद्रों का विकास मुख्य रूप से कच्चे माल की उपलब्धता पर आधारित है।

41. (B) इसमें घने वनों वाला एक नम, दलदली और आर्द्र क्षेत्र होता है।
तराई क्षेत्र भाबर पट्टी के दक्षिण में स्थित है, जहाँ भाबर में विलुप्त हुई नदियाँ पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं। पर्याप्त जल की उपलब्धता के कारण यह क्षेत्र अत्यधिक नम, दलदली और आर्द्र परिस्थितियों वाला होता है।
ऐतिहासिक रूप से यह भाग घने वनों से समृद्ध रहा है, हालांकि कृषि भूमि के विस्तार के लिए वनों का एक बड़ा हिस्सा साफ कर दिया गया था। यहाँ नमी के कारण गन्ना और चावल जैसी फसलों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

42. (B) पारंपरिक संसाधन
जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस को ऊर्जा के पारंपरिक स्रोतों के रूप में जाना जाता है। ये स्रोत प्रकृति में सीमित हैं और इनके निर्माण में लाखों वर्षों का समय लगता है, जिससे ये अनवीकरणीय बन जाते हैं।
लंबे समय से ऊर्जा की अधिकांश मांग इन्हीं स्रोतों से पूरी की जाती रही है। हालांकि इनके दहन से वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन होता है, फिर भी औद्योगिक उपयोग के लिए ये वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा आधार बने हुए हैं।

43. (C) अर्ध-शुष्क गुजरात सहित उत्तर-पश्चिमी भाग
भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग, जिसमें राजस्थान का मरुस्थल और गुजरात के अर्ध-शुष्क क्षेत्र शामिल हैं, 70 सेंटीमीटर से भी कम वार्षिक वर्षा प्राप्त करते हैं। कम वर्षा के कारण यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति मुख्य रूप से कटीली झाड़ियों के रूप में विकसित हुई है।
इन क्षेत्रों में मानसून की पवनें पहुँचने तक अपनी अधिकांश नमी खो देती हैं। यहाँ पाए जाने वाले वृक्षों की जड़ें गहरी होती हैं, जो शुष्क परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए अनुकूलित हैं। इसके विपरीत, अन्य तटीय क्षेत्रों में अधिक वर्षा होती है।

44. (D) गेहूं
रबी की फसलें वे होती हैं जो शीत ऋतु के आगमन के साथ अक्टूबर से दिसंबर के बीच बोई जाती हैं और वसंत ऋतु में काटी जाती हैं। गेहूं भारत की सबसे महत्वपूर्ण रबी फसल है, जो उत्तर भारत की खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार है।
इस फसल के विकास के लिए ठंडी जलवायु और पकते समय तेज धूप की आवश्यकता होती है। पश्चिमी विक्षोभों से होने वाली शीतकालीन वर्षा इसके उत्पादन के लिए वरदान सिद्ध होती है। अन्य प्रमुख रबी फसलों में मटर और सरसों शामिल हैं।

45. (D) 1, 2 और 3
जेट धाराएं ऊपरी वायुमंडल में चलने वाली तीव्र हवाएं हैं जो भारत की जलवायु को प्रभावित करती हैं। सर्दियों में पश्चिमी जेट धारा हिमालय के दक्षिण में बहती है और देश में पश्चिमी विक्षोभ लाने का मुख्य कारण बनती है।
ग्रीष्म ऋतु में यह धारा उत्तर की ओर खिसक जाती है और प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर एक पूर्वी जेट धारा सक्रिय हो जाती है। ये धाराएं लगभग 12,000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित होती हैं। इनके मौसमी बदलाव सीधे तौर पर वर्षा के वितरण को प्रभावित करते हैं।

46. (C) खनिज
छोटानागपुर पठार को 'भारत का खनिज भंडार' कहा जाता है क्योंकि यह क्षेत्र धात्विक और अधात्विक खनिजों के मामले में देश का सबसे समृद्ध भाग है। यहाँ लौह अयस्क, कोयला और अभ्रक के विशाल भंडार पाए जाते हैं।
इस पठारी क्षेत्र की प्राचीन चट्टानी संरचना खनिजों के संचय के लिए भूगर्भीय रूप से अत्यंत अनुकूल है। खनिजों की इसी प्रचुरता के कारण जमशेदपुर जैसे प्रमुख औद्योगिक शहर यहाँ विकसित हुए हैं। यह पठार मुख्य रूप से झारखंड और ओडिशा में विस्तृत है।

47. (C) बैरन द्वीप
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित बैरन द्वीप भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी स्थल है। यह द्वीप पोर्ट ब्लेयर से लगभग 135 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में बंगाल की खाड़ी में स्थित एक निर्जन क्षेत्र है।
इस ज्वालामुखी में पहली बार 1787 में विस्फोट दर्ज किया गया था और तब से यह समय-समय पर सक्रिय होता रहा है। भूवैज्ञानिक दृष्टि से यह एक लंबी ज्वालामुखी श्रृंखला का

NODIA

हिस्सा है। इसकी उपस्थिति विवर्तनिक गतिविधियों का एक प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रमाण है।

48. (B) अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा
दक्षिण-पश्चिम मानसून जब भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे से टकराता है, तो यह दो मुख्य शाखाओं में विभाजित हो जाता है। पहली शाखा अरब सागर के ऊपर से आती है और दूसरी बंगाल की खाड़ी के ऊपर से प्रवाहित होती है।
अरब सागर शाखा पश्चिमी तट पर भारी वर्षा करती है, जबकि बंगाल की खाड़ी शाखा पूर्व और उत्तर-पूर्व भारत में नमी पहुँचाती है। ये दोनों शाखाएं अंततः गंगा के मैदानों के ऊपर आपस में मिल जाती हैं, जिससे संपूर्ण भारत में वर्षा होती है।

49. (D) थार मरुस्थल औद्योगिक क्षेत्र
भारत के औद्योगिक क्षेत्रों का विकास मुख्य रूप से परिवहन नेटवर्क और खनिजों की उपलब्धता के आधार पर हुआ है। छोटानागपुर, विशाखापत्तनम और गुड़गांव-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जहाँ विनिर्माण उद्योग संकेंद्रित हैं। इसके विपरीत, थार मरुस्थल एक अत्यधिक शुष्क क्षेत्र है जहाँ जल की कमी के कारण औद्योगिक विकास नगण्य है। यहाँ मुख्य रूप से हस्तशिल्प से संबंधित गतिविधियाँ ही देखी जाती हैं। औद्योगिक समूहों के लिए आवश्यक संसाधन इस मरुस्थलीय क्षेत्र में पर्याप्त उपलब्ध नहीं हैं।

50. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत का पूर्वी तट पश्चिमी तट की तुलना में चक्रवातों के प्रति कहीं अधिक संवेदनशील है। इसका मुख्य कारण बंगाल की खाड़ी का भौगोलिक स्वरूप और इसके जल का उच्च तापमान है, जो तूफानों को ऊर्जा प्रदान करता है।
बंगाल की खाड़ी अरब सागर की तुलना में अधिक गर्म रहती है, जो चक्रवातों के निर्माण के लिए आवश्यक ऊष्मा और नमी उत्पन्न करती है। यही कारण है कि लौटते मानसून के दौरान यहाँ विनाशकारी चक्रवात आते हैं, जो तटीय क्षेत्रों को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।

51. (B) कुमाऊं हिमालय
हिमालय का वह भाग जो सतलुज और काली नदियों के बीच स्थित है, उसे 'कुमाऊं हिमालय' के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से उत्तराखंड राज्य में विस्तृत है और अपनी प्राकृतिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है।
नंदा देवी और त्रिशूल जैसी प्रमुख पर्वत चोटियाँ इसी भाग में स्थित हैं। इसके पश्चिम में पंजाब हिमालय की सीमाएं लगती हैं। यह क्षेत्र गंगा और यमुना जैसी नदियों के उद्गम स्थलों का घर है। यहाँ की सुरम्य घाटियाँ पर्यटन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

52. (A) 1500 और 3000 मीटर
पर्वतीय वनों में ऊँचाई के साथ वनस्पति के स्वरूप में परिवर्तन आता है। हिमालयी क्षेत्रों में 1500 से 3000 मीटर के मध्य शंकुधारी वन पाए जाते हैं, जिनमें चीड़, देवदार और सिल्वर फर जैसे वृक्ष प्रमुख हैं।
इन वृक्षों की टहनियाँ ढालू होती हैं, ताकि उन पर बर्फ न जम सके। यह ऊँचाई शीतोष्ण कटिबंधीय जलवायु का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ हिमपात भी सामान्य है। देवदार की लकड़ी अपनी मजबूती के कारण व्यावसायिक रूप से बहुत मूल्यवान मानी जाती है।

53. (C) प्रायद्वीपीय पठार भारत के अधिकांश खनिजों का मुख्य भंडार है।
भारत में खनिजों का वितरण भूगर्भीय संरचना पर आधारित है, जिसमें प्रायद्वीपीय पठार की प्राचीन चट्टानें खनिजों की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध हैं। यहाँ कोयला, लोहा, मैंगनीज और अभ्रक के विशाल निक्षेप पाए जाते हैं।
इसके विपरीत, उत्तरी मैदान जलोढ़ मिट्टी से बने होने के कारण खनिजों के मामले में निर्धन हैं। हिमालय क्षेत्र में कुछ खनिज मिलते हैं, लेकिन उनका निष्कर्षण अत्यंत कठिन है। देश का औद्योगिक विकास मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत के संसाधनों पर ही निर्भर करता है।

54. (C) सूती वस्त्र और सूचना प्रौद्योगिकी
मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र भारत के सबसे पुराने और विकसित केंद्रों में से एक है। ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र कच्चे कपास की उपलब्धता के कारण सूती वस्त्र उद्योग के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध रहा है।
आधुनिक समय में, पुणे और मुंबई सूचना प्रौद्योगिकी के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे हैं। यहाँ ऑटोमोबाइल और पेट्रोकेमिकल उद्योगों का भी व्यापक विकास हुआ है। कुशल श्रम की प्रचुरता ने इस क्षेत्र को एक बहुआयामी औद्योगिक शक्ति बना दिया है।

55. (B) उत्तर भारत के ऊपर चलने वाली तीव्र, गर्म और शुष्क पवनें
ग्रीष्म ऋतु के दौरान, विशेषकर मई और जून के महीनों में, उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में चलने वाली अत्यंत गर्म और शुष्क हवाओं को 'लू' कहा जाता है। ये पवनें दिन के समय बहुत तीव्र गति से चलती हैं।
लू का तापमान अक्सर 45 से 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। यह घटना रेगिस्तानी क्षेत्रों से आने वाली गर्म हवाओं का परिणाम है। इस दौरान धूल भरी आंधियां चलना एक सामान्य भौगोलिक परिघटना है।

56. (B) उद्योग की मौसमी प्रकृति
भारत में चीनी उद्योग एक कृषि-आधारित उद्योग है जो पूरी तरह से गन्ने की फसल पर निर्भर है। इस उद्योग की सबसे बड़ी चुनौती इसकी मौसमी प्रकृति है, क्योंकि पेराई का समय वर्ष के केवल कुछ महीनों तक ही सीमित रहता है।
इसके अतिरिक्त, गन्ने को काटने के बाद उसे तुरंत पेराई के लिए ले जाना आवश्यक होता है, अन्यथा उसमें सुक्रोज की मात्रा कम होने लगती है। पेराई सत्र के छोटा होने के कारण मिलें वर्ष के शेष समय में कार्यशील नहीं रह पातीं।

57. (A) केसर
कश्मीर घाटी में पाए जाने वाले 'करेवा' उच्च तल वाले जलोढ़ निक्षेप हैं, जो प्राचीन झीलों के अवसादों के जमाव से बने हैं। ये

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

संरचनाएं विशिष्ट रूप से केसर की विश्व स्तरीय खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त और प्रसिद्ध मानी जाती हैं।
करेवा की मिट्टी केसर के पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती है। इसके अलावा, यहाँ बादाम और अखरोट के बागान भी पाए जाते हैं। केसर के उत्पादन में भारत का कश्मीर क्षेत्र विश्व में एक विशिष्ट स्थान रखता है, जो पूरी तरह इन निक्षेपों पर निर्भर है।

58. (D) 1, 2 और 3
भारत एक प्रमुख कृषि प्रधान देश है जहाँ फसलों की व्यापक विविधता पाई जाती है। चावल यहाँ की सबसे प्रमुख खाद्य फसल है और भारत इसका दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। गेहूं उत्तर भारत की मुख्य रबी फसल मानी जाती है।
मोटे अनाज जैसे ज्वार और बाजरा भले ही कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाए जाते हों, लेकिन इनका पोषण मूल्य अत्यंत उच्च होता है। फसलों का यह विविध स्वरूप देश की विभिन्न जलवायु परिस्थितियों का प्रतिबिंब है, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

59. (D) उत्तरी सरकार
भारत का पूर्वी तटीय मैदान बंगाल की खाड़ी और पूर्वी घाट के मध्य स्थित एक विस्तृत मैदान है। इस मैदान के उत्तरी भाग को, जो ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटों के साथ फैला है, 'उत्तरी सरकार' कहा जाता है।
इसके दक्षिणी भाग को कोरोमंडल तट कहा जाता है। उत्तरी सरकार क्षेत्र महानदी, गोदावरी और कृष्णा जैसी नदियों के विशाल डेल्टाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ चिल्का जैसी महत्वपूर्ण झीलें भी स्थित हैं। यह तटीय पट्टी मत्स्य पालन और कृषि के लिए सदैव महत्वपूर्ण रही है।

60. (D) उपरोक्त सभी
पश्चिम बंगाल में हुगली बेसिन जूट उद्योग का सबसे बड़ा केंद्र है। यहाँ उद्योगों के संकेंद्रण का मुख्य कारण कच्चे जूट की प्रचुर उपलब्धता है। हुगली नदी प्रसंस्करण के लिए आवश्यक प्रचुर जल प्रदान करती है।
इसके अतिरिक्त, यहाँ सस्ता जल परिवहन और रेल नेटवर्क का सुदृढ़ विस्तार है। बिहार और ओडिशा से मिलने वाला सुलभ श्रम इस उद्योग के विकास में सहायक सिद्ध होता है। इन सभी भौगोलिक कारकों ने हुगली तट को प्रमुख जूट विनिर्माण क्षेत्र बना दिया है।

61. (A) भारत का पश्चिमी तट, गोवा के दक्षिण में
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में 'Amw' कोड उस मानसूनी जलवायु को दर्शाता है जिसमें एक छोटी शुष्क ऋतु होती है। भारत में इस प्रकार की जलवायु मुख्य रूप से गोवा के दक्षिण में स्थित पश्चिमी तट पर पाई जाती है।
इस क्षेत्र में दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण अत्यधिक वर्षा होती है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन विकसित होते हैं। भारी वर्षा और उच्च तापमान के कारण यहाँ की वनस्पति सघन और विविध होती है, जो विशिष्ट पारिस्थितिकी का निर्माण करती है।

62. (A) मैग्नेटाइट
मैग्नेटाइट सबसे उत्तम गुणवत्ता वाला लौह अयस्क है जिसमें 70 प्रतिशत तक शुद्ध लोहे का अंश पाया जाता है। इसमें उत्कृष्ट चुंबकीय गुण होते हैं, जो इसे विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी और महत्वपूर्ण बनाते हैं।
इसके बाद हेमेटाइट का स्थान आता है, जिसका औद्योगिक उपयोग सर्वाधिक होता है। मैग्नेटाइट के निक्षेप भारत में मुख्य रूप से कर्नाटक और अन्य दक्षिणी राज्यों में पाए जाते हैं। इसकी उच्च गुणवत्ता के कारण यह धातुकर्म प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

63. (C) शिवालिक
हिमालय की सबसे दक्षिणी और बाहरी श्रेणी को शिवालिक के नाम से जाना जाता है। इसकी चौड़ाई 10 से 50 किलोमीटर और ऊँचाई 900 से 1100 मीटर के बीच होती है। यह श्रेणी नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से निर्मित है।
शिवालिक और हिमाचल श्रेणियों के बीच स्थित अनुदैर्ध्य घाटियों को दून कहा जाता है। यह श्रेणी भूवैज्ञानिक रूप से हिमालय का सबसे नवीन हिस्सा है। यहाँ की स्थलाकृति नरम चट्टानों के कारण भूस्खलन के प्रति काफी संवेदनशील मानी जाती है।

64. (B) आम्र वर्षा
केरल और कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु के अंत में होने वाली मानसून पूर्व वर्षा को 'आम्र वर्षा' कहा जाता है। यह वर्षा आम के फलों को शीघ्र पकने में सहायता करती है, जिससे इसे यह नाम प्राप्त हुआ है।
यह भौगोलिक घटना दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन से ठीक पहले होती है और अत्यधिक गर्मी से राहत प्रदान करती है। इसी प्रकार की वर्षा को कर्नाटक में 'कॉफी वर्षा' भी कहा जाता है क्योंकि यह कॉफी के फूलों के खिलने के लिए भी अत्यंत लाभदायक होती है।

65. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के राष्ट्रीय उद्यान विभिन्न राज्यों की विशिष्ट जैव विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। काजीरंगा असम में एक सींग वाले गेंडे के लिए प्रसिद्ध है, जबकि सुंदरबन पश्चिम बंगाल में मैंग्रोव वनों और बाघों के लिए जाना जाता है।
फूलों की घाटी उत्तराखंड के हिमालयी क्षेत्र में स्थित है, जो दुर्लभ वनस्पतियों का घर है। मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए स्थापित किया गया है। ये सभी स्थल प्राकृतिक विरासत के संरक्षण में सहायक हैं।

NODIA

66. (C) इसकी विशेषता ऊँची शंक्वाकार चोटियाँ और गहरी खाइयाँ हैं।
प्रायद्वीपीय पठार भारत का प्राचीनतम और स्थिर भू-भाग है, जिसकी विशेषता चौड़ी, उथली घाटियाँ और गोलाकार पहाड़ियाँ हैं। यह ऊँची शंक्वाकार चोटियों वाले नवीन वलित हिमालय पर्वतमाला से पूर्णतः भिन्न और भौगोलिक रूप से सुदृढ़ है।

इस स्लरी को पाइपलाइनों के जरिए मैंगलोर बंदरगाह तक भेजा जाता है, जहाँ से इसे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है। पर्यावरण संरक्षण की चिंताओं के कारण यहाँ वर्तमान में खनन गतिविधियाँ सीमित कर दी गई हैं। फिर भी, यह क्षेत्र अपनी भौगोलिक स्थिति और तकनीकी निर्यात प्रणाली के लिए उद्योग जगत में एक अनूठा उदाहरण है।

103. (B) क्रमशः पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट।
दक्कन का पठार भारत का एक विशाल त्रिकोणीय भू-भाग है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है। इसके पश्चिमी किनारे को पश्चिमी घाट और पूर्वी किनारे को पूर्वी घाट द्वारा परिभाषित किया जाता है, जो तटीय मैदानों के समानांतर स्थित हैं।
पश्चिमी घाट सतत और ऊँचे हैं, जबकि पूर्वी घाट असतत हैं और नदियों द्वारा कटे-फटे हुए हैं। ये दोनों पर्वत श्रृंखलाएं नीलगिरी पहाड़ियों में आकर एक-दूसरे से मिलती हैं। दक्कन का पठार अपनी काली मिट्टी के लिए प्रसिद्ध है, जो ज्वालामुखीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप लाखों वर्षों में निर्मित हुई है।

104. (D) चावल (धान)
चावल भारत की सबसे प्रमुख खरीफ फसल है, जिसकी बुवाई मानसून के आगमन के साथ जून-जुलाई में की जाती है। इस फसल को बढ़ने के लिए उच्च तापमान, अत्यधिक आर्द्रता और 100 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
इसके विपरीत, गेहूं, जौ और मटर रबी की फसलें हैं जो सर्दियों में उगाई जाती हैं। चावल भारत की खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार है और उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा तटीय क्षेत्रों में इसकी सघन खेती की जाती है। सिंचाई की सुविधाओं के विकास के कारण अब कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी चावल उगाया जाने लगा है।

105. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमी घाट पूर्वी घाट की तुलना में काफी ऊंचे और निरंतर श्रृंखला के रूप में स्थित हैं। मानसून के दौरान, अरब सागर से आने वाली नमी से भरी पवनें इन पहाड़ियों से टकराकर ऊपर उठती हैं और पश्चिमी ढलानों पर भारी वर्षा करती हैं।
पूर्वी घाट कटे-फटे और कम ऊंचे होने के कारण पवनों को उतने प्रभावी ढंग से नहीं रोक पाते हैं। इसलिए पश्चिमी घाट के पवनमुखी ढालों पर सघन वर्षा होती है, जबकि पूर्वी घाट अपेक्षाकृत कम वर्षा प्राप्त करते हैं। यह ऊँचाई और निरंतरता का अंतर दोनों क्षेत्रों की वनस्पति और कृषि को भी प्रभावित करता है।

106. (C) अल्पाइन घास के मैदान
हिमालय के क्षेत्रों में जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती है, तापमान में कमी आती है। 3,600 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर वृक्षों का विकास सीमित हो जाता है और यहाँ अल्पाइन घास के मैदान पाए जाते हैं, जिनमें सिल्वर फर और जुनिपर जैसे पौधे मिलते हैं।
इन घास के मैदानों का उपयोग गुर्जर और बकरवाल जैसे खानाबदोश समुदायों द्वारा गर्मियों में पशु चराने के लिए किया जाता है। बहुत अधिक ऊँचाई पर जाने पर यह वनस्पति काई और लाइकेन के रूप में टुंड्रा प्रकार में बदल जाती है। यह ऊँचाई के साथ होने वाला वनस्पति का क्रमिक परिवर्तन जलवायु के प्रति प्रकृति के अनुकूलन को दर्शाता है।

107. (C) उर्वरक उद्योग
भारत में 1960 के दशक में आई 'हरित क्रांति' ने कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को अनिवार्य बना दिया। इसके परिणामस्वरूप देश में उर्वरक उद्योग का बहुत तेजी से और व्यापक विकास हुआ।
अधिक उपज देने वाली किस्मों (HYV) के बीजों को प्रचुर मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, जिसे पूरा करने के लिए उर्वरकों की मांग बढ़ी। आज भारत उर्वरक उत्पादन में विश्व में अग्रणी स्थान रखता है। इस उद्योग ने न केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद की है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण में भी योगदान दिया है।

108. (C) अनाइमुडी
अनाइमुडी पश्चिमी घाट की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 2,695 मीटर है। यह केरल राज्य में स्थित है और इसे 'दक्षिण भारत का एवरेस्ट' भी कहा जाता है। यह चोटी अन्नामलाई पहाड़ियों का हिस्सा है।
पश्चिमी घाट अपनी निरंतरता और ऊँचाई के लिए प्रसिद्ध हैं, जहाँ अनाइमुडी जैसे शिखर मानसून की पवनों को रोकने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। इसकी तुलना में पूर्वी घाट की चोटियाँ, जैसे महेंद्रगिरि, काफी कम ऊँची हैं। अनाइमुडी क्षेत्र अपनी विशिष्ट जैव विविधता और ठंडी जलवायु के कारण पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण है।

109. (C) पश्चिम बंगाल में तीव्र पवनों के साथ आने वाले स्थानीय गरज के साथ तूफान।
ग्रीष्म ऋतु के दौरान पश्चिम बंगाल में आने वाले विनाशकारी स्थानीय तूफानों को 'काल बैसाखी' कहा जाता है। ये तूफान तीव्र पवनों और मूसलाधार बारिश के साथ आते हैं, जो अक्सर शाम के समय अचानक विकसित होते हैं।
इनका नाम बैसाख महीने में आने के कारण पड़ा है। हालांकि ये तूफान जान-माल का नुकसान पहुँचा सकते हैं, लेकिन ये चाय, जूट और चावल की फसलों के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। यह घटना अत्यधिक गर्मी के बाद वायुमंडल में होने वाले तीव्र संवहन और नमी के मेल का परिणाम है।

110. (B) वे सभी स्थानों पर समान रूप से वितरित होते हैं।
खनिजों की प्रमुख विशेषता यह है कि वे प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं और उनका वितरण भौगोलिक रूप से अत्यंत असमान है। कुछ क्षेत्र विशिष्ट खनिजों में बहुत समृद्ध होते हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में इनका पूर्ण अभाव हो सकता है।
खनिजों की गुणवत्ता और उनकी मात्रा के बीच अक्सर उल्टा संबंध पाया जाता है, यानी उच्च गुणवत्ता वाले खनिज मात्रा में कम होते हैं। वे अनवीकरणीय संसाधन हैं जो समय के साथ समाप्त हो जाते हैं। उनकी एक निश्चित रासायनिक और भौतिक संरचना होती है, जो उन्हें अन्य पदार्थों से अलग पहचान देती है।

Click Here to Buy book on Amazon

76. (B) भारत की पूर्वी सीमा के साथ विस्तृत हिमालयी प्रणाली की पूर्वी पहाड़ियाँ और पर्वत।
'पूर्वांचल' हिमालय पर्वतमाला के उस पूर्वी विस्तार को कहा जाता है जो ब्रह्मपुत्र घाटी के बाद दक्षिण की ओर तेजी से मुड़ जाता है। ये पहाड़ियाँ भारत की पूर्वी सीमा पर म्यांमार के साथ एक प्राकृतिक अवरोध बनाती हैं।
इसमें पटकाई, नागा, मणिपुर और मिजो पहाड़ियाँ शामिल हैं। ये पहाड़ियाँ घने वनों से ढकी हुई हैं और यहाँ अत्यधिक वर्षा होती है। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और जैविक विविधता इसे भारत का एक अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण भौगोलिक अंग बनाती है।

77. (A) गन्ना
गन्ना भारत की सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जो चीनी और गुड़ उद्योग का मुख्य आधार है। भारत विश्व में गन्ने के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। इसकी खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। यह फसल लगभग एक वर्ष में तैयार होती है और किसानों को नकद आय प्रदान करने का प्रमुख स्रोत है। गन्ने का उपयोग एथेनॉल उत्पादन में भी बढ़ रहा है, जो इसे और महत्वपूर्ण बनाता है।

78. (B) अति उच्च श्रेणी का हेमेटाइट लौह अयस्क
छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में स्थित बैलाडीला की पहाड़ियाँ अपने अति उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। यहाँ प्राप्त अयस्क में लोहे की मात्रा बहुत अधिक और अशुद्धियाँ बहुत कम होती हैं।
बैलाडीला का अर्थ 'बैल का कूबड़' होता है, जो इन पहाड़ियों की विशिष्ट आकृति को दर्शाता है। यहाँ से निकाला गया अयस्क मुख्य रूप से विशाखापत्तनम बंदरगाह के माध्यम से जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों को निर्यात किया जाता है। यह क्षेत्र भारत के निर्यात राजस्व में बड़ा योगदान देता है।

79. (B) उत्तर भारत के मैदानों से पश्चिमी जेट स्ट्रीम का उत्तर की ओर खिसकना।
मानसून के आगमन का जेट स्ट्रीम सिद्धांत यह बताता है कि जब उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट धारा हिमालय के उत्तर की ओर खिसकती है, तो भारत में वर्षा की शुरुआत होती है। यह खिसकाव ग्रीष्म ऋतु में तापमान बढ़ने के कारण होता है।
इस प्रक्रिया के साथ ही प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट धारा का विकास होता है, जो मानसूनी पवनों को देश के भीतर खींचती है। यह ऊपरी वायुमंडलीय परिसंचरण धरातलीय मानसून के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाता है। अतः जेट धाराओं का विस्थापन भारतीय मानसून का प्रमुख नियामक है।

80. (C) अरावली पहाड़ियाँ
पूर्वांचल भारत के उत्तर-पूर्वी हिस्से में स्थित पहाड़ियों का समूह है, जिसमें पटकाई, नागा और मिजो पहाड़ियाँ शामिल हैं। इसके विपरीत, अरावली पहाड़ियाँ भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में, मुख्य रूप से राजस्थान में स्थित हैं।
अरावली विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, जबकि पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय के नवीन वलित तंत्र का हिस्सा हैं। पूर्वांचल में सघन वन और भारी वर्षा होती है, जबकि अरावली क्षेत्र शुष्क और अपरदित पहाड़ियों के लिए जाना जाता है। ये दोनों पहाड़ियाँ अलग-अलग विवर्तनिक कालों में निर्मित हुई हैं।

81. (C) दक्कन ट्रैप (रेगुर मृदा)
कपास की खेती के लिए सबसे आदर्श काली मृदा है, जिसे 'रेगुर मृदा' भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से दक्कन ट्रैप के लावा क्षेत्र में पाई जाती है, जो महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है।
इस मिट्टी में नमी धारण करने की अद्भुत क्षमता होती है और सूखने पर इसमें गहरी दरारें पड़ जाती हैं, जिससे मृदा में वायु का संचार बना रहता है। इस विशिष्ट गुण के कारण इसे 'स्व-जुताई' वाली मिट्टी भी कहते हैं। कपास के उत्पादन में गुजरात और महाराष्ट्र अग्रणी राज्य हैं।

82. (D) 1, 2 और 3
भारत की वनस्पति अत्यधिक विविधतापूर्ण है। पर्वतीय क्षेत्रों में ऊँचाई बढ़ने के साथ वनस्पतियों का स्वरूप बदलता है, जबकि मैंग्रोव वन ज्वारीय क्षेत्रों में अनुकूलित होते हैं। उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन अपनी सघनता और बहु-स्तरीय संरचना के लिए प्रसिद्ध हैं।
सदाबहार वनों के वृक्षों के पत्ते गिराने का कोई निश्चित समय नहीं होता, जिससे वे वर्ष भर हरे दिखाई देते हैं। मैंग्रोव की जड़ें पानी में डूबी रहती हैं, जो तट की रक्षा करती हैं। यह विविधता भारत की समृद्ध प्राकृतिक विरासत और विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के संतुलन को दर्शाती है।

83. (B) उत्तर-पूर्वी मानसून
कोरोमंडल तट, जो तमिलनाडु का तटीय क्षेत्र है, अपनी अधिकांश वर्षा शीत ऋतु में उत्तर-पूर्वी मानसून से प्राप्त करता है। ये पवनें जब बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरती हैं, तो नमी ग्रहण कर लेती हैं और तट से टकराकर वर्षा करती हैं।
इसके विपरीत, यह क्षेत्र दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान शुष्क रहता है क्योंकि यह पश्चिमी घाट के वृष्टि-छाया क्षेत्र में स्थित है। उत्तर-पूर्वी मानसून अक्टूबर से दिसंबर के बीच इस तट पर सक्रिय होता है। यह वर्षा क्षेत्र की कृषि और जल आवश्यकताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

84. (C) मुंबई
भारत में प्रथम सफल आधुनिक सूती वस्त्र मिल की स्थापना वर्ष 1854 में मुंबई में की गई थी। मुंबई के तटीय शहर होने के कारण यहाँ की नम जलवायु कताई के लिए अत्यंत अनुकूल थी और कपास के निर्यात-आयात के लिए बंदरगाह की सुविधा उपलब्ध थी।
इसके आसपास के क्षेत्रों में काली मिट्टी होने के कारण कच्चे कपास की प्रचुरता थी। मुंबई में पूँजी, विपणन और परिवहन के साधनों के विकास ने इसे भारत का 'सूती वस्त्रों का महानगर' बना दिया। इस मिल की सफलता ने भारत के आधुनिक औद्योगिक युग की नींव रखी।

NODIA

इस पठार का निर्माण प्राचीन आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से हुआ है। यहाँ की नदियाँ अपनी प्रौढ़ावस्था में हैं और उन्होंने अपनी घाटियों को चौड़ा और समतल कर दिया है। यह क्षेत्र विवर्तनिक रूप से अत्यधिक शांत और सुदृढ़ आधार वाली प्राचीन भूमि है।

67. (D) 70 सेमी से कम
उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन और झाड़ियाँ उन क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ वार्षिक वर्षा की मात्रा 70 सेंटीमीटर से कम होती है। इस शुष्क जलवायु के कारण यहाँ की वनस्पति कटीली और अल्प पत्तों वाली होती है।
राजस्थान, गुजरात और प्रायद्वीपीय पठार के वृष्टि-छाया क्षेत्रों में यह वनस्पति प्रमुखता से पाई जाती है। यहाँ के वृक्षों की जड़ें लंबी होती हैं ताकि वे गहराई से नमी सोख सकें। बबूल और कीकर इस प्रकार के शुष्क वनों के सामान्य उदाहरण हैं।

68. (D) उपरोक्त सभी।
हाल के वर्षों में चीनी उद्योग उत्तर भारत से दक्षिण और पश्चिमी भारत की ओर स्थानांतरित हो रहा है। इसका मुख्य कारण दक्षिण के गन्ने में सुक्रोज की अधिक मात्रा और पेराई के लंबे सत्र की सुलभ उपलब्धता है।
दक्षिण भारत की ठंडी जलवायु गन्ने के रस को शीघ्र सूखने से रोकती है। इसके अतिरिक्त, वहाँ के सहकारी संगठन अधिक कुशल और सक्रिय हैं, जो किसानों को बेहतर मूल्य और तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं। इन्हीं अनुकूल कारकों ने दक्षिण में इस उद्योग को मजबूती दी है।

69. (C) पाकिस्तान
उत्तरी मैदान का पश्चिमी भाग मुख्य रूप से सिंधु और उसकी सहायक नदियों - झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज द्वारा निर्मित है। इस मैदान का एक बहुत बड़ा हिस्सा वर्तमान में पाकिस्तान की भौगोलिक सीमा के भीतर स्थित है।
इस क्षेत्र में दोआबों की प्रचुरता है, जो दो नदियों के बीच की अत्यंत उपजाऊ भूमि होती है। भारत में इसका विस्तार पंजाब और हरियाणा के कुछ हिस्सों तक पाया जाता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही सघन कृषि और सभ्यताओं के विकास का मुख्य केंद्र रहा है।

70. (A) 1-3-4-2
भारतीय मानसून की प्रक्रिया एक निश्चित कालक्रम के अनुसार चलती है। जून के प्रारंभ में मानसून सबसे पहले केरल तट पर पहुँचता है। इसके बाद जून के मध्य तक यह मुंबई और दिल्ली जैसे प्रमुख शहरों में वर्षा प्रारंभ करता है।
सितंबर के प्रारंभ से उत्तर-पश्चिमी भारत से मानसून की वापसी प्रारंभ होती है। अंततः, अक्टूबर और नवंबर के दौरान यह पूरे देश से विदा हो जाता है। यह चक्रीय क्रम भारत की कृषि और जल प्रबंधन की योजना बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

71. (D) अभ्रक
अभ्रक एक महत्वपूर्ण अधात्विक खनिज है जिसमें धातु का अंश नहीं होता है। यह अपनी पतली चादरों में विभाजित होने की क्षमता और विद्युत के प्रति उच्च प्रतिरोधक शक्ति के कारण औद्योगिक रूप से अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।
इसके विपरीत, लौह अयस्क, तांबा और बॉक्साइट धात्विक खनिज हैं जिनसे विभिन्न धातुएं प्राप्त की जाती हैं। अभ्रक का उपयोग मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में विसंवाहक के रूप में किया जाता है। भारत विश्व में उच्च श्रेणी के अभ्रक का एक प्रमुख उत्पादक देश है।

72. (B) घग्गर और तीस्ता
गंगा का मैदान उत्तरी मैदानों का सबसे विस्तृत भाग है जो हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों में फैला हुआ है। यह भौगोलिक रूप से घग्गर और तीस्ता नदियों के बीच विस्तृत पाया जाता है।
यह मैदान अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से ढका हुआ है और इसे भारत का अन्न भंडार कहा जाता है। गंगा और इसकी सहायक नदियाँ जैसे यमुना, घाघरा और गंडक इस क्षेत्र की कृषि उत्पादकता का मुख्य आधार हैं। सघन जनसंख्या यहाँ की प्रमुख विशेषता है।

73. (B) मानसून की वापसी के दौरान उच्च तापमान और आर्द्रता।
'अक्टूबर की गर्मी' मानसून की वापसी के दौरान अनुभव की जाने वाली एक विशिष्ट मौसमी स्थिति है। इस समय आसमान साफ हो जाता है लेकिन भूमि में मौजूद नमी और उच्च तापमान के कारण मौसम बहुत कष्टकारी हो जाता है।
उच्च तापमान और अत्यधिक आर्द्रता के इस मेल से वातावरण में बहुत उमस पैदा होती है, जिसे स्थानीय स्तर पर 'क्वार की उमस' भी कहते हैं। यह स्थिति मानसून के पीछे हटने और शरद ऋतु के आगमन के बीच के संक्रमण काल का प्रतिनिधित्व करती है।

74. (C) ओडिशा
ओडिशा राज्य की मयूरभंज और केंदुझर खदानें उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। यह क्षेत्र भारत की प्रमुख लौह अयस्क पट्टी का हिस्सा है जो औद्योगिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
यहाँ से प्राप्त लौह अयस्क का उपयोग घरेलू इस्पात संयंत्रों में किया जाता है और इसे विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। ओडिशा भारत में लौह अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। इन खदानों की निकटता ने यहाँ कई भारी उद्योगों के विकास में सहायता की है।

75. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत के अधिकांश प्रमुख लोहा और इस्पात संयंत्र छोटानागपुर पठार क्षेत्र में स्थित हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ कच्चे माल जैसे लौह अयस्क, कोकिंग कोयला और चूना पत्थर का एक साथ उपलब्ध होना है।
भारी उद्योग होने के कारण, परिवहन लागत को कम करने के लिए इन्हें खदानों के निकट स्थापित करना आर्थिक रूप से लाभदायक होता है। इसके अलावा, यहाँ पर्याप्त जल आपूर्ति और सुदृढ़ रेल नेटवर्क ने इस क्षेत्र को देश के औद्योगिक हृदय स्थल के रूप में विकसित किया है।

Downloaded from www.pdf.tube

94. (B) लोहा और इस्पात उद्योग
लोहा और इस्पात उद्योग को किसी भी देश के औद्योगिक विकास की आधारशिला या 'रीढ़' माना जाता है। यह भारत का सबसे महत्वपूर्ण धातुकर्म उद्योग है, क्योंकि अन्य सभी उद्योग, चाहे वे भारी हों या हल्के, अपनी मशीनों के लिए इसी पर निर्भर हैं।
ऑटोमोबाइल, निर्माण, रक्षा और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों के लिए इस्पात अनिवार्य है। भारत में टाटा स्टील और सेल जैसे बड़े उपक्रमों ने इस क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस्पात का उत्पादन और खपत किसी राष्ट्र के विकास का एक प्रमुख संकेतक माना जाता है।

95. (D) असम और पश्चिम बंगाल के दलदली और आर्द्र क्षेत्र
एक सींग वाला भारतीय गेंडा मुख्य रूप से असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और पश्चिम बंगाल के उत्तरी भागों के दलदली क्षेत्रों में पाया जाता है। ये जंतु आर्द्र और घास वाले मैदानों में रहना पसंद करते हैं।
भारत सरकार ने इनके संरक्षण के लिए कड़े कदम उठाए हैं, जिससे इनकी संख्या में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है। यह प्रजाति भारत की वन्यजीव विविधता का एक विशिष्ट प्रतीक है। इन दलदली क्षेत्रों का पारिस्थितिकी तंत्र गेंडों के अस्तित्व के लिए आवश्यक अनुकूल परिस्थितियाँ और प्रचुर भोजन उपलब्ध कराता है, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

96. (C) नेपाल हिमालय
हिमालय पर्वतमाला का वह भाग जो काली और तीस्ता नदियों के मध्य स्थित है, उसे 'नेपाल हिमालय' के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में विश्व की सबसे ऊँची चोटियाँ, जैसे माउंट एवरेस्ट और कंचनजंगा, स्थित हैं।
यह हिमालय का सबसे ऊँचा और विस्तृत भाग है। इसका अधिकांश विस्तार नेपाल की सीमाओं के भीतर है, लेकिन यह भारत के सिक्किम और पश्चिम बंगाल राज्यों को भी स्पर्श करता है। अपनी भव्य ऊँचाई और कठिन जलवायु के कारण यह पर्वतारोहियों और शोधकर्ताओं के लिए एक चुनौतीपूर्ण लेकिन आकर्षक क्षेत्र बना हुआ है।

97. (A) कच्चे कपास की उपलब्धता, बाजार, परिवहन और नम जलवायु।
प्रारंभिक दौर में महाराष्ट्र और गुजरात में सूती वस्त्र उद्योग के केंद्रित होने का मुख्य कारण इन राज्यों में कच्चे कपास की प्रचुरता थी। समुद्र के निकट होने के कारण यहाँ की जलवायु नम थी, जो धागे के टूटने को रोकती थी।
इसके अलावा, मुंबई जैसे बड़े बंदरगाहों ने निर्यात और आयात को सुगम बनाया। स्थानीय स्तर पर बैंकिंग सुविधाओं और विपणन केंद्रों की उपलब्धता ने भी उद्योगों को फलने-फूलने में मदद की। इन अनुकूल भौगोलिक और आर्थिक कारकों के कारण ही यह क्षेत्र भारत के 'कॉटन पॉलिस' के रूप में उभरा।

98. (C) कोयला
कोयला भारत में सर्वाधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध जीवाश्म ईंधन है, जो देश की ऊर्जा आवश्यकताओं का लगभग 60 प्रतिशत से अधिक हिस्सा पूरा करता है। यह मुख्य रूप से तापीय विद्युत उत्पादन और लोहा-इस्पात उद्योग में ऊर्जा के स्रोत के रूप में प्रयुक्त होता है।
भारत में कोयले के भंडार मुख्य रूप से गोंडवाना काल की चट्टानों में पाए जाते हैं, जो दामोदर और गोदावरी जैसी नदी घाटियों में स्थित हैं। हालांकि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस भी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन प्रचुरता और उपलब्धता के मामले में कोयला अब भी भारतीय ऊर्जा क्षेत्र की रीढ़ बना हुआ है।

99. (B) नदी द्वीप और गुंफित जलमार्ग।
ब्रह्मपुत्र का मैदान अपनी विशिष्ट नदीय स्थलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ नदी की गति कम होने के कारण अवसादों का जमाव होता है। इसके परिणामस्वरूप यहाँ 'माजुली' जैसे बड़े नदी द्वीपों और गुंफित जलमार्गों का निर्माण होता है।
यह क्षेत्र असम में स्थित है और यहाँ प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ के कारण उपजाऊ मिट्टी का नवीनीकरण होता है। हालांकि बाढ़ एक बड़ी चुनौती है, लेकिन यही जल और मृदा चावल और जूट की खेती के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होते हैं। यह मैदान अपनी सघन वनस्पति और समृद्ध जैव विविधता के लिए भी जाना जाता है।

NODIA

100. (C) पूर्वी तट (कोरोमंडल या उत्तरी सरकार)
बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात मुख्य रूप से भारत के पूर्वी तट से टकराते हैं। यह तट, जिसमें ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु शामिल हैं, चक्रवातों के मार्ग में स्थित होने के कारण अत्यधिक संवेदनशील है।
खाड़ी के गर्म जल से ऊर्जा प्राप्त कर ये चक्रवात तीव्र हो जाते हैं और तटीय क्षेत्रों में भारी वर्षा और तेज हवाओं के साथ तबाही मचाते हैं। मानसून की वापसी के दौरान इनकी आवृत्ति बढ़ जाती है। सरकारी चेतावनी प्रणालियों और आपदा प्रबंधन ने वर्तमान में इन आपदाओं से होने वाले नुकसान को कम किया है।

101. (C) घरेलू मांग में कमी।
भारत में जूट उद्योग के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ हैं, जिनमें कृत्रिम रेशों (सिंथेटिक) से बढ़ती प्रतिस्पर्धा और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अन्य उत्पादक देशों का प्रभाव प्रमुख है। उत्पादन की उच्च लागत और पुरानी मशीनों का उपयोग भी एक बड़ी बाधा है।
इसके विपरीत, जूट उत्पादों की घरेलू मांग में कोई कमी नहीं आई है, बल्कि पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण यह निरंतर बढ़ रही है। सरकार द्वारा जूट की अनिवार्य पैकेजिंग के नियमों ने भी घरेलू खपत को सहारा दिया है। अतः मांग की कमी के बजाय तकनीकी आधुनिकीकरण और प्रतिस्पर्धा ही मुख्य समस्या है।

102. (A) स्लरी पाइपलाइनों के माध्यम से लौह अयस्क सांद्र का निर्यात
कर्नाटक के पश्चिमी घाट में स्थित कुद्रेमुख खदानें विश्व के सबसे बड़े लौह अयस्क निक्षेपों में से एक मानी जाती हैं। यहाँ से निकाले गए अयस्क को एक विशिष्ट तकनीक के माध्यम से पानी के साथ मिलाकर 'स्लरी' बनाया जाता है।

रिफाइनरियों के कारण हुआ है। समुद्र तक सुगम पहुँच ने आयात और निर्यात को बहुत आसान और सस्ता बना दिया है। इस क्षेत्र में लोहा-इस्पात, उर्वरक और जहाज निर्माण जैसे भारी उद्योगों का विकास हुआ है। गोदावरी बेसिन से मिलने वाली प्राकृतिक गैस ने भी इस क्षेत्र की औद्योगिक गतिविधियों को ऊर्जा प्रदान की है। यह पट्टी दक्षिण भारत के आर्थिक विकास का एक प्रमुख इंजन है जो वैश्विक व्यापार से सीधे जुड़ा हुआ है।

120. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत की नदी घाटी परियोजनाएं जल संसाधनों के कुशल प्रबंधन का उदाहरण हैं। महानदी पर हीराकुंड, सतलुज पर भाखड़ा-नांगल, कृष्णा पर नागार्जुन सागर और नर्मदा पर सरदार सरोवर बांध देश के विकास की जीवन रेखा हैं।
ये बांध सिंचाई के साथ-साथ स्वच्छ जल विद्युत ऊर्जा का उत्पादन करते हैं और बाढ़ नियंत्रण में सहायक होते हैं। इनके माध्यम से सूखे क्षेत्रों तक नहरों द्वारा पानी पहुँचाया जाता है, जिससे कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई है। नदियों पर बनी ये विशाल संरचनाएं आधुनिक भारत के मंदिर कहलाती हैं जो आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।

121. (B) बड़ी संख्या में कुशल प्रबंधकों और इंजीनियरों की उपलब्धता
बेंगलुरु को 'भारत की इलेक्ट्रॉनिक राजधानी' कहा जाता है क्योंकि यहाँ उच्च तकनीक वाले उद्योगों के लिए आवश्यक विश्व स्तरीय मानव संसाधन उपलब्ध हैं। बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग कॉलेजों और शोध संस्थानों ने यहाँ कुशल पेशेवरों की कमी नहीं होने दी।
इसके अलावा, शहर की सुखद जलवायु और सहायक सरकारी नीतियों ने वैश्विक आईटी कंपनियों को यहाँ आकर्षित किया है। यह शहर नवाचार और स्टार्टअप संस्कृति का केंद्र बन गया है। बुनियादी ढांचे के विकास और वैश्विक कनेक्टिविटी ने बेंगलुरु को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अंतरराष्ट्रीय ब्रांड के रूप में स्थापित कर दिया है।

122. (B) बंगाल की खाड़ी
पूर्वी घाट भारत के पूर्वी तट के समानांतर स्थित हैं लेकिन ये पश्चिमी घाट की तरह सतत नहीं हैं। महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी नदियों ने इन्हें कई स्थानों पर काटकर बंगाल की खाड़ी की ओर अपना रास्ता बनाया है।
इन नदियों द्वारा किए गए निरंतर अपरदन के कारण पूर्वी घाट पहाड़ियों की एक असतत श्रृंखला के रूप में दिखाई देते हैं। इनका ढाल पूर्व की ओर है, जो प्रायद्वीपीय नदियों के प्रवाह की दिशा निर्धारित करता है। बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली ये नदियाँ मुहाने पर विशाल डेल्टाओं का निर्माण करती हैं।

123. (D) (B) और (C) दोनों।
'लौटते मानसून' की ऋतु के दौरान भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग से मानसून पीछे हटने लगता है। इस मौसम की मुख्य विशेषता साफ आसमान और तापमान में होने वाली क्रमिक वृद्धि है, जिसे 'अक्टूबर की गर्मी' भी कहा जाता है।
इसी समय, उत्तर भारत के मैदानों पर मौजूद निम्न वायुदाब का केंद्र बंगाल की खाड़ी की ओर स्थानांतरित हो जाता है। इस दबाव परिवर्तन के कारण चक्रवाती तूफान उत्पन्न होते हैं जो पूर्वी तट पर भारी वर्षा करते हैं। यह समय वर्षा ऋतु की विदाई और ठंडे शुष्क मौसम के आगमन के बीच का संक्रमण काल है।

124. (C) मैंग्रोव वन
रॉयल बंगाल टाइगर विश्व प्रसिद्ध और भारत का राष्ट्रीय पशु है, जिसका मुख्य निवास स्थान सुंदरबन के मैंग्रोव वन हैं। ये वन गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा के दलदली और ज्वारीय क्षेत्रों में विस्तृत हैं जहाँ सुंदरी वृक्षों की प्रधानता है।
मैंग्रोव वनों का अनूठा पारिस्थितिकी तंत्र बाघों को छिपने के लिए सघन आवरण और प्रचुर शिकार उपलब्ध कराता है। ये बाघ खारे पानी में तैरने की अपनी अद्भुत क्षमता के लिए जाने जाते हैं। यहाँ का संरक्षण क्षेत्र इन राजसी जंतुओं के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

125. (C) मैंग्रोव वन
मैंग्रोव वन तटीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले विशिष्ट वन हैं जहाँ खारा पानी और मीठा पानी आपस में मिलते हैं। ये वन ज्वार-भाटे से प्रभावित होते हैं और इनकी जड़ें मिट्टी के ऊपर दिखाई देती हैं, जो पानी के भीतर श्वसन में मदद करती हैं।
भारत में ये वन मुख्य रूप से महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियों के डेल्टा क्षेत्रों में पाए जाते हैं। सुंदरी वृक्ष इन वनों की सबसे प्रमुख प्रजाति है। ये वन न केवल जैव विविधता के केंद्र हैं, बल्कि समुद्री लहरों से तट की रक्षा करने वाले प्राकृतिक सुरक्षा कवच का भी कार्य करते हैं।

126. (B) प्रवाल (कोरल)
अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप द्वीप समूह का निर्माण प्रवाल जीवों के अवशेषों या मूंगे की चट्टानों के जमाव से हुआ है। ये छोटे-छोटे प्रवाल द्वीप 'एटोल' के रूप में जाने जाते हैं जो अपनी सुंदर लैगून और सफेद रेत के लिए प्रसिद्ध हैं।
भूवैज्ञानिक दृष्टि से ये द्वीप ज्वालामुखी या पर्वतीय उत्पत्ति के नहीं हैं, बल्कि जैविक क्रियाओं का परिणाम हैं। यहाँ की पारिस्थितिकी अत्यंत संवेदनशील है और समुद्री जीवन की विविधता से भरपूर है। कोरल रीफ के कारण यहाँ का पानी बहुत साफ और पारदर्शी दिखाई देता है, जो इसे पर्यटन के लिए स्वर्ग बनाता है।

127. (C) कपास
कपास भारत की सबसे महत्वपूर्ण रेशा फसल है जो कपड़ा उद्योग के लिए मुख्य कच्चा माल प्रदान करती है। भारत विश्व में कपास के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। इसकी खेती मुख्य रूप से दक्कन के पठार की काली मिट्टी में की जाती है।
कपास की गुणवत्ता और लंबे रेशे की मांग वैश्विक बाजार में बहुत अधिक है। इसकी कृषि के लिए उच्च तापमान और कम से कम 210 पाला रहित दिन आवश्यक होते हैं। यह फसल लाखों किसानों और श्रमिकों को रोजगार प्रदान करती है, जिससे यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

111. (C) असम हिमालय
हिमालय पर्वतमाला का वह सुदूर पूर्वी भाग जो तीस्ता नदी से लेकर दिहांग नदी (ब्रह्मपुत्र) तक फैला हुआ है, उसे 'असम हिमालय' कहा जाता है। यह क्षेत्र अपनी अत्यधिक वर्षा और सघन वनों के लिए जाना जाता है।
यह भाग मुख्य रूप से सिक्किम, भूटान और भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में स्थित है। यहाँ नदियाँ गहरी खाइयाँ बनाती हैं और ऊँचाई में विविधता पाई जाती है। पूर्वांचल की पहाड़ियाँ इसी क्षेत्र के दक्षिण की ओर मुड़ने से शुरू होती हैं। यहाँ की जैव विविधता और जनजातीय संस्कृति इसे भारत का एक महत्वपूर्ण सामरिक और प्राकृतिक हिस्सा बनाती है।

112. (B) केवल 1 और 2
औद्योगिक क्षेत्र का विकास तब होता है जब कई उद्योग एक-दूसरे की निकटता का लाभ उठाने के लिए एक समूह में स्थापित होते हैं। इस प्रक्रिया को 'समूहन अर्थव्यवस्था' कहा जाता है, जहाँ उद्योग साझा सेवाओं का उपयोग करके लागत कम करते हैं।
गुड़गांव-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र मुख्य रूप से बाजार और बाजार की मांग पर आधारित एक आधुनिक औद्योगिक समूह है, न कि पारंपरिक खनिजों पर आधारित। यहाँ इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे उद्योगों की प्रधानता है। उद्योगों का इस प्रकार का क्लस्टर विकास क्षेत्र के समग्र आर्थिक उत्थान और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

113. (B) दक्कन ट्रैप
प्रायद्वीपीय पठार का वह हिस्सा जो काली मृदा से ढका हुआ है, उसे 'दक्कन ट्रैप' के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण लाखों वर्ष पूर्व हुई ज्वालामुखीय गतिविधियों के कारण लावा के ठंडे होकर जमने से हुआ है।
यहाँ की काली मिट्टी कपास की खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है और इसे 'रेगुर मृदा' भी कहते हैं। यह क्षेत्र मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश के मालवा पठार तक फैला हुआ है। लावा चट्टानों के अपक्षय से बनी यह मिट्टी उपजाऊ है और नमी को लंबे समय तक बनाए रखने में सक्षम है।

114. (B) भूमि पर उच्च जनसंख्या दबाव वाले क्षेत्रों में
गहन जीविका कृषि उन क्षेत्रों की विशेषता है जहाँ जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक होता है और कृषि योग्य भूमि सीमित होती है। इसमें छोटे भू-जोतों पर अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए अधिक श्रम और आधुनिक इनपुट का उपयोग किया जाता है।
किसान सिंचाई की सुविधाओं और उर्वरकों का प्रचुर उपयोग करके एक ही वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाते हैं। भारत के गंगा के मैदान और तटीय क्षेत्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इस कृषि पद्धति का मुख्य उद्देश्य परिवार की भोजन की आवश्यकताओं को पूरा करना और आजीविका सुनिश्चित करना होता है।

115. (C) उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट एक स्थायी और वर्ष भर रहने वाली विशेषता है।
जेट धाराएं ऊपरी वायुमंडल की तीव्र वायु धाराएं हैं जो मौसमी रूप से अपनी स्थिति बदलती रहती हैं। उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट धारा कोई स्थायी विशेषता नहीं है, बल्कि यह केवल ग्रीष्म ऋतु के दौरान तिब्बती पठार के गर्म होने पर विकसित होती है। इसके विपरीत, पश्चिमी जेट धारा सर्दियों में हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होती है और मौसम को प्रभावित करती है। जैसे ही ग्रीष्म ऋतु आती है, पश्चिमी जेट उत्तर की ओर खिसक जाता है और पूर्वी जेट सक्रिय होता है। जेट धाराओं का यह चक्रीय व्यवहार मानसूनी वर्षा के वितरण में निर्णायक भूमिका निभाता है।

116. (B) तांबा
मध्य प्रदेश का बालाघाट जिला तांबे के उत्पादन के लिए पूरे भारत में अग्रणी स्थान रखता है। यहाँ की खदानें देश के कुल तांबा उत्पादन में लगभग आधे से अधिक का योगदान देती हैं, जो औद्योगिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
तांबा एक लचीली और बिजली की सुचालक धातु है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से बिजली के तारों और उपकरणों के निर्माण में किया जाता है। बालाघाट के अलावा राजस्थान का खेतड़ी भी तांबे के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन उत्पादन की दृष्टि से बालाघाट का महत्व विशिष्ट है। खनिजों का यह संकेंद्रण राज्य की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करता है।

117. (C) प्रायद्वीपीय पठार
अरावली पहाड़ियाँ प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर-पश्चिमी सीमा पर स्थित हैं। यह विश्व की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, जो वर्तमान में अत्यधिक अपरदित होकर अवशिष्ट पहाड़ियों के रूप में शेष बची है।
यह श्रेणी गुजरात के पालनपुर से लेकर दिल्ली तक लगभग 800 किलोमीटर की लंबाई में विस्तृत है। अरावली पहाड़ियाँ भारतीय मरुस्थल के विस्तार को रोकने में एक प्राकृतिक अवरोध का कार्य करती हैं। इनकी ऊँचाई दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर कम होती जाती है। यह क्षेत्र धात्विक खनिजों के भंडार की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

118. (D) गेहूं
रोपण या बागानी कृषि वाणिज्यिक कृषि का एक प्रकार है जिसमें एक बहुत बड़े क्षेत्र में केवल एक ही नगदी फसल उगाई जाती है। चाय, कॉफी, रबर और नारियल इसके प्रमुख उदाहरण हैं जिनमें भारी पूंजी और आधुनिक तकनीक का उपयोग होता है।
इसके विपरीत, गेहूं एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है जिसे सामान्यतः विस्तृत या गहन कृषि पद्धति से उगाया जाता है। रोपण फसलों का मुख्य उद्देश्य निर्यात और औद्योगिक कच्चा माल प्रदान करना होता है। भारत के असम और केरल जैसे राज्यों में बागानी कृषि का बड़े पैमाने पर विकास हुआ है।

119. (C) बंदरगाह की सुविधाएं और पेट्रोलियम रिफाइनरी।
विशाखापत्तनम-गुंटूर औद्योगिक क्षेत्र का तेजी से विकास यहाँ उपलब्ध आधुनिक बंदरगाह सुविधाओं और पेट्रोलियम

Downloaded from www.pdf.tube

85. (C) तांबा
राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित खेतड़ी खदानें भारत में तांबे के उत्पादन का सबसे प्रमुख और प्राचीन केंद्र हैं। तांबा एक महत्वपूर्ण अलौह धातु है जिसका उपयोग मुख्य रूप से विद्युत उपकरण, सिक्के और मिश्र धातु बनाने में किया जाता है।
खेतड़ी बेल्ट में तांबे के खनन का इतिहास सदियों पुराना है। वर्तमान में यहाँ 'हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड' द्वारा आधुनिक तकनीक से खनन किया जाता है। यद्यपि भारत में तांबे का भंडार सीमित है, लेकिन खेतड़ी जैसे क्षेत्र घरेलू मांग को पूरा करने और सामरिक उद्योगों को सहारा देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

86. (C) नर्मदा नदी के उत्तर में पठार का वह भाग जो मालवा पठार के अधिकांश हिस्से को कवर करता है।
प्रायद्वीपीय पठार के उत्तरी भाग को 'मध्य उच्चभूमि' कहा जाता है, जो मुख्य रूप से नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित है। इसमें मालवा का पठार शामिल है, जो पश्चिम में विंध्य श्रेणी और उत्तर-पश्चिम में अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
इसका ढाल उत्तर-पूर्व की ओर है, जिसे चंबल, सिंध और बेतवा जैसी नदियों के प्रवाह से समझा जा सकता है। यह क्षेत्र पश्चिम में चौड़ा है लेकिन पूर्व में संकरा होता जाता है। इसके पूर्वी विस्तार को स्थानीय रूप से बुंदेलखंड और बघेलखंड के नाम से पुकारा जाता है।

87. (B) जूट
जूट को इसके चमकीले रंग और उच्च आर्थिक मूल्य के कारण 'सुनहरा रेशा' कहा जाता है। यह एक प्राकृतिक रेशा है जिसका उपयोग बोरे, रस्सियाँ, कालीन और अन्य सजावटी सामान बनाने में किया जाता है। यह पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल है।
भारत विश्व में जूट का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, जहाँ पश्चिम बंगाल इसका मुख्य केंद्र है। जूट की खेती के लिए बाढ़ के मैदानों की उपजाऊ मिट्टी और उच्च तापमान के साथ भारी वर्षा की आवश्यकता होती है। यह फसल ग्रामीण अर्थव्यवस्था और निर्यात आय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

88. (C) समुद्री प्रभाव के कारण प्रायद्वीपीय भारत में विषम जलवायु का अनुभव होता है।
प्रायद्वीपीय भारत तीनों ओर से समुद्र से घिरा हुआ है, जिसके कारण यहाँ 'समकारी' समुद्री प्रभाव पड़ता है। समुद्र की निकटता तापमान को संतुलित रखती है, जिससे यहाँ ऋतुओं के बीच तापमान में बहुत अधिक अंतर नहीं पाया जाता है।
इसके विपरीत, समुद्र से दूर उत्तर भारत के आंतरिक भागों में 'विषम' या चरम जलवायु पाई जाती है, जहाँ सर्दियाँ बहुत ठंडी और गर्मियाँ बहुत गर्म होती हैं। प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में वार्षिक तापांतर बहुत कम होता है। अतः यह कहना गलत है कि प्रायद्वीपीय भारत में विषम जलवायु का अनुभव होता है।

89. (C) रिशरा
भारत की पहली जूट मिल की स्थापना वर्ष 1855 में पश्चिम बंगाल के रिशरा में की गई थी, जो कोलकाता के निकट हुगली नदी के तट पर स्थित है। जूट उत्पादन के लिए अनुकूल जलवायु और जल की उपलब्धता ने इस स्थान को चुना।
इस मिल की स्थापना के साथ ही भारत में जूट उद्योग के एक नए युग की शुरुआत हुई। हुगली तट पर जूट मिलों के संकेंद्रण का मुख्य कारण कच्चे माल की सुलभता और निर्यात के लिए बंदरगाह की निकटता थी। आज भी यह क्षेत्र जूट विनिर्माण का वैश्विक केंद्र बना हुआ है।

90. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारत की भू-आकृतिक विशेषताएं देश की भौतिक विविधता को दर्शाती हैं। भाबर शिवालिक के आधार पर कंकड़ों की एक संकरी पट्टी है, जबकि खादर नदियों के बाढ़ के मैदानों में पाए जाने वाले उपजाऊ नवीन जलोढ़ निक्षेप हैं।
दून लघु हिमालय और शिवालिक के मध्य स्थित अनुदैर्ध्य घाटियाँ हैं। अनाइमुडी चोटी पश्चिमी घाट का सबसे ऊँचा शिखर है। ये सभी संरचनाएं विभिन्न भूगर्भीय प्रक्रियाओं और जलवायु प्रभावों का परिणाम हैं। यह ज्ञान देश के भौतिक विन्यास और संसाधन वितरण को समझने के लिए अनिवार्य है।

91. (B) मध्य प्रदेश
मध्य प्रदेश भारत में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जहाँ बालाघाट जिला अपने समृद्ध निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। मैंगनीज एक महत्वपूर्ण खनिज है जिसका उपयोग मुख्य रूप से इस्पात बनाने और ब्लीचिंग पाउडर के निर्माण में किया जाता है।
इस्पात को मजबूती और कठोरता प्रदान करने के लिए मैंगनीज का उपयोग मिश्र धातु के रूप में किया जाता है। मध्य प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र और ओडिशा में भी इसके महत्वपूर्ण भंडार पाए जाते हैं। खनिजों का यह संकेंद्रण भारत की औद्योगिक आत्मनिर्भरता और निर्माण क्षेत्र के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

92. (B) बुंदेलखंड और बघेलखंड
मध्य उच्चभूमि मालवा पठार के पूर्व की ओर विस्तृत है, जहाँ इसके विस्तार को स्थानीय रूप से बुंदेलखंड और बघेलखंड के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती भागों में फैला हुआ है।
यहाँ की स्थलाकृति पठारी है और प्राचीन चट्टानों से बनी है। केन और बेतवा जैसी नदियाँ इस क्षेत्र को जल प्रदान करती हैं। इसके और पूर्व में जाने पर छोटानागपुर पठार आता है। बुंदेलखंड अपनी विशिष्ट संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व के लिए भी जाना जाता है, जो मध्य भारत की पहचान है।

93. (C) वर्षा ऋतु के दौरान आर्द्र और शुष्क अंतरालों का होना।
मानसून में 'विराम' उस स्थिति को कहते हैं जब वर्षा ऋतु के दौरान कुछ दिनों या हफ्तों तक बारिश नहीं होती है। यह मानसूनी वर्षा की एक स्वाभाविक विशेषता है, जहाँ वर्षा के दौर के बीच शुष्क अंतराल आते हैं।
यह विराम मानसून द्रोणी की स्थिति में बदलाव के कारण होता है। जब यह द्रोणी हिमालय की ओर खिसकती है, तो मैदानों में वर्षा रुक जाती है और पहाड़ों पर भारी बारिश होती है। इन अंतरालों का कृषि पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि फसलों को उचित समय पर नमी की आवश्यकता होती है।

NODIA

128. (A) 1-3-2-4
हिमालय की प्रमुख चोटियों को पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करने पर सबसे पहले नंदा देवी आती है जो उत्तराखंड में स्थित है। इसके पूर्व में विश्व का सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट आता है जो मुख्य रूप से नेपाल में स्थित है।
इसके आगे बढ़ने पर कंचनजंगा आती है जो भारत के सिक्किम राज्य और नेपाल की सीमा पर स्थित है। अंत में, सुदूर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश की सीमा के पास नामचा बरवा पर्वत शिखर स्थित है। यह क्रम हिमालय पर्वतमाला के विशाल विस्तार और इसकी भौगोलिक निरंतरता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

129. (C) कोरोमंडल तट
भारत के पूर्वी तटीय मैदान के दक्षिणी भाग को 'कोरोमंडल तट' कहा जाता है, जो मुख्य रूप से तमिलनाडु राज्य के तटीय क्षेत्र को कवर करता है। यह तट अपनी विशिष्ट मानसूनी विशेषताओं के कारण भारत के अन्य भागों से काफी अलग है।
यहाँ ग्रीष्मकालीन मानसून के बजाय शीतकालीन मानसून (उत्तर-पूर्वी मानसून) से अधिक वर्षा होती है। यह तट बंगाल की खाड़ी की लहरों से प्रभावित है और यहाँ कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बंदरगाह स्थित हैं। कावेरी नदी का उपजाऊ डेल्टा इसी तट का हिस्सा है, जिसे 'दक्षिण भारत का चावल का कटोरा' कहा जाता है।

130. (C) वर्षा ऋतु (आगे बढ़ता मानसून)
मानसून द्रोणी निम्न वायुदाब का एक लंबा क्षेत्र है जो वर्षा ऋतु के दौरान उत्तर भारत के मैदानों पर विकसित होता है। इस द्रोणी की स्थिति यह निर्धारित करती है कि देश के विभिन्न हिस्सों में वर्षा का वितरण कैसा और कितना होगा।
जब यह द्रोणी उत्तर की ओर हिमालय के करीब खिसकती है, तो मैदानों में वर्षा का 'विराम' आ जाता है। इसके विपरीत, जब यह मैदानों के ऊपर स्थिर होती है, तो वहाँ भारी वर्षा होती है। अतः मानसून द्रोणी का उतार-चढ़ाव भारतीय कृषि के लिए वर्षा की अनिश्चितता का एक प्रमुख कारण है।

131. (D) वे वर्ष भर हरे-भरे रहते हैं और सघनता में बहु-स्तरीय होते हैं।
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन मानसूनी जलवायु की विशेषता हैं, जहाँ वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु के दौरान अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। यह व्यवहार जल संरक्षण के लिए एक प्राकृतिक अनुकूलन है, जो उन्हें सदाबहार वनों से अलग करता है।
सदाबहार वन वर्ष भर हरे रहते हैं और उनमें सघनता बहुत अधिक होती है, जबकि पर्णपाती वनों में वृक्षों के बीच पर्याप्त स्थान होता है। पर्णपाती वन भारत के सबसे व्यापक क्षेत्र में फैले हुए हैं और 70 से 200 सेंटीमीटर वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। सागौन और साल इन वनों के प्रमुख आर्थिक महत्व वाले वृक्ष हैं।

132. (B) गैर-पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन
ऊर्जा के वे स्रोत जिनका प्राकृतिक रूप से नवीनीकरण होता रहता है और जो कभी समाप्त नहीं होते, गैर-पारंपरिक या नवीकरणीय स्रोत कहलाते हैं। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत इसके सबसे प्रभावी और स्वच्छ उदाहरण माने जाते हैं। जीवाश्म ईंधनों की तुलना में ये स्रोत पर्यावरण को बहुत कम नुकसान पहुँचाते हैं क्योंकि इनसे हानिकारक गैसों का उत्सर्जन नहीं होता है। भारत अपनी बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए इन स्रोतों के विकास पर तेजी से ध्यान दे रहा है। यह सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

133. (B) जावादी पहाड़ियाँ और शेवराय पहाड़ियाँ
पूर्वी घाट की श्रृंखला में तमिलनाडु के पास स्थित जावादी और शेवराय पहाड़ियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये पहाड़ियाँ अपनी विशिष्ट ऊँचाई और वनस्पति के कारण क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र में एक बड़ी भूमिका निभाती हैं।
ये पहाड़ियाँ पूर्वी घाट के असतत होने का प्रमाण हैं और अपनी ठंडी जलवायु के कारण हिल स्टेशनों के विकास के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ चंदन के वृक्ष और अन्य औषधीय पौधे प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। भूगर्भीय दृष्टि से ये प्राचीन कायांतरित चट्टानों से बनी हैं और दक्षिण भारत की भौगोलिक सुंदरता को और बढ़ाती हैं।

134. (B) जर्मनी
ओडिशा राज्य में स्थित राउरकेला इस्पात संयंत्र की स्थापना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान की गई थी। इस महत्वपूर्ण औद्योगिक परियोजना के लिए तत्कालीन पश्चिमी जर्मनी की प्रसिद्ध कंपनी 'क्रुप्स एंड डेमाग' ने तकनीकी और वित्तीय सहयोग प्रदान किया था।
यह संयंत्र भारत का पहला सार्वजनिक क्षेत्र का एकीकृत इस्पात कारखाना था। इसकी स्थापना खदानों के निकट होने के कारण कच्चे माल की आपूर्ति में बहुत सुगम है। जर्मनी के सहयोग ने इस संयंत्र को उस समय की आधुनिकतम इस्पात निर्माण तकनीक से लैस करने में मदद की, जो आज भी उत्पादन जारी रखे हुए है।

135. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अक्टूबर और नवंबर के दौरान जब मानसून वापस लौटता है, तो उत्तर भारत के मैदानों पर मौजूद निम्न वायुदाब का केंद्र बंगाल की खाड़ी की ओर खिसक जाता है। तापमान के इस बदलाव से समुद्र के ऊपर तीव्र चक्रवाती स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।
खाड़ी के गर्म जल से मिलने वाली ऊर्जा इन चक्रवातों को बहुत शक्तिशाली बना देती है, जो पूर्वी तटीय राज्यों में भारी तबाही का कारण बनते हैं। यह वायुमंडलीय दबाव का स्थानांतरण ही है जो लौटते मानसून के मौसम को चक्रवातों के प्रति संवेदनशील बनाता है। यह प्रक्रिया भारतीय मौसम विज्ञान की एक नियमित लेकिन विनाशकारी परिघटना है।

136. (C) कर्नाटक
कर्नाटक भारत का सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का लगभग 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अकेले पैदा करता है। यहाँ की पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ और उपजाऊ मृदा कॉफी की कृषि के लिए सर्वोत्तम हैं।
विशेष रूप से कोडागु, चिकमगलूर और हसन जिले अपने विशाल कॉफी बागानों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ उगाई जाने वाली 'अरेबिका' और 'रोबस्टा' किस्मों की अंतरराष्ट्रीय

Click Here to Buy book on Amazon

बाजार में बहुत अधिक मांग है। अंग्रेजों के समय से शुरू हुई यह बागानी खेती आज राज्य की अर्थव्यवस्था और निर्यात का एक प्रमुख स्तंभ बन गई है।

137. (B) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत का एक प्रमुख भू-आकृतिक विभाग है जो बंगाल की खाड़ी में स्थित है। यह द्वीप समूह उत्तर से दक्षिण की ओर फैली द्वीपों की एक लंबी श्रृंखला है, जो रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है।
माना जाता है कि ये द्वीप समुद्र में डूबे हुए पर्वतों के उठे हुए शिखर हैं। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय है और यहाँ घने सदाबहार वन पाए जाते हैं। यह क्षेत्र अपनी अद्वितीय जनजातीय संस्कृति, समृद्ध समुद्री जैव विविधता और पर्यटन की संभावनाओं के कारण भारत की भौगोलिक पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है।

138. (B) बॉक्साइट
बॉक्साइट एक ऐसा खनिज है जिसका निर्माण चट्टानों के अपघटन और अपक्षय की लंबी प्रक्रिया के दौरान होता है। जब चट्टानों के घुलनशील तत्व बह जाते हैं, तो पीछे एल्युमीनियम ऑक्साइड से समृद्ध एक अवशिष्ट द्रव्यमान बचता है, जिसे बॉक्साइट कहते हैं।
यह एल्युमीनियम धातु का मुख्य स्रोत है, जिसका उपयोग विमान निर्माण, बिजली के तारों और घरेलू बर्तनों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। भारत में इसके विशाल भंडार ओडिशा और अमरकंटक के पठारी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इसकी हल्की प्रकृति और मजबूती इसे आधुनिक उद्योगों के लिए एक अनिवार्य खनिज बनाती है।

139. (C) कोलकाता
हुगली औद्योगिक क्षेत्र पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के किनारे कोलकाता महानगर के चारों ओर केंद्रित है। यह भारत के सबसे पुराने और प्रमुख औद्योगिक समूहों में से एक है, जिसका विकास ऐतिहासिक रूप से जूट उद्योग के इर्द-गिर्द हुआ था।
कोलकाता बंदरगाह की निकटता और रेलवे के जाल ने यहाँ उद्योगों के फलने-फूलने के लिए आदर्श स्थितियाँ प्रदान कीं। जूट के अलावा यहाँ इंजीनियरिंग, रसायन और कपड़ा उद्योगों का भी व्यापक विस्तार हुआ है। यह क्षेत्र पूर्वी भारत के आर्थिक और व्यापारिक केंद्र के रूप में देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

140. (D) देशांतरीय विस्तार
भारत की जलवायु में क्षेत्रीय विविधताएं मुख्य रूप से अक्षांशीय विस्तार, हिमालय की ऊँचाई और समुद्र से दूरी जैसे कारकों पर निर्भर करती हैं। देशांतरीय विस्तार का जलवायु पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि यह केवल समय निर्धारण में सहायक होता है।
उत्तर-दक्षिण अक्षांशीय अंतर के कारण सूर्य की किरणों की तीव्रता और दिन-रात की अवधि बदलती है। इसी प्रकार, ऊँचाई तापमान को कम करती है और समुद्र तटीय क्षेत्रों में तापमान को संतुलित रखता है। जलवायु की ये विविधताएं विभिन्न क्षेत्रों की कृषि, वनस्पति और जनजीवन के स्वरूप को गहराई से प्रभावित करती हैं।

141. (C) मध्य अंडमान
मध्य अंडमान द्वीप समूह अंडमान और निकोबार द्वीप श्रृंखला की सबसे बड़ी भौगोलिक और प्रशासनिक इकाई है। यह द्वीप अपनी सघन वनस्पति और विविध वन्यजीवों के लिए जाना जाता है, जो भारत के द्वीपीय क्षेत्र का केंद्र बनाता है।
यहाँ की स्थलाकृति पहाड़ी है और यहाँ उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन बहुतायत में पाए जाते हैं। प्रशासनिक रूप से यह क्षेत्र पोर्ट ब्लेयर से प्रबंधित होता है और यहाँ कृषि एवं वानिकी से जुड़ी गतिविधियाँ प्रमुख हैं। यह द्वीप पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और सामरिक सुरक्षा की दृष्टि से भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

142. (A) केवल 1 और 2
भारत में फसलों के मौसम मुख्य रूप से मानसून और तापमान पर आधारित हैं। रबी की फसलें सर्दियों में बोई जाती हैं और खरीफ की फसलें मानसून के साथ उगाई जाती हैं। जायद एक बहुत ही छोटा मौसम है जो गर्मियों में होता है।
जायद का मौसम लंबा नहीं होता, बल्कि यह रबी की कटाई और खरीफ की बुवाई के बीच के कुछ हफ्तों का अंतराल होता है। इस दौरान तरबूज, खीरा और चारे की फसलें उगाई जाती हैं। फसलों का यह चक्रीय विभाजन मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और साल भर खाद्यान्न आपूर्ति सुनिश्चित करने में मदद करता है।

143. (D) एंथ्रेसाइट
एंथ्रेसाइट कोयले की सर्वोत्तम और उच्चतम श्रेणी है, जिसमें कार्बन की मात्रा 80 प्रतिशत से भी अधिक होती है। यह बहुत कठोर होता है और जलते समय धुआं कम तथा बहुत अधिक ऊष्मा प्रदान करता है, जिससे यह औद्योगिक उपयोग के लिए आदर्श है।
भारत में इस प्रकार के कोयले के भंडार अत्यंत सीमित हैं और मुख्य रूप से जम्मू और कश्मीर के रियासी क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसके विपरीत, बिटुमिनस और लिग्नाइट कोयला अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं लेकिन उनकी गुणवत्ता एंथ्रेसाइट के मुकाबले कम होती है। अपनी शुद्धता के कारण यह धातुकर्म उद्योगों के लिए बहुत कीमती माना जाता है।

144. (B) जलमग्न पर्वतों का एक उठा हुआ हिस्सा हैं
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में भूवैज्ञानिकों का मानना है कि ये द्वीप वास्तव में बंगाल की खाड़ी के भीतर डूबी हुई पर्वत श्रेणियों के सबसे ऊँचे शिखर हैं। यह श्रृंखला म्यांमार की अराकान योमा पर्वतमाला का समुद्री विस्तार मानी जाती है।
ये द्वीप विवर्तनिक रूप से सक्रिय क्षेत्र में स्थित हैं और यहाँ की ऊँची-नीची पहाड़ियाँ इसी पर्वतीय मूल का प्रमाण हैं। यद्यपि यहाँ कुछ ज्वालामुखी द्वीप भी हैं, लेकिन पूरी श्रृंखला का आधार जलमग्न पर्वत ही हैं। यहाँ की सघन जैव विविधता और विशिष्ट भू-आकृति इसी ऐतिहासिक पर्वतीय उत्पत्ति के कारण विकसित हुई है।

NODIA

145. (C) यूनाइटेड किंगडम
पश्चिम बंगाल में स्थित दुर्गापुर इस्पात संयंत्र की स्थापना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान की गई थी। इस विशाल औद्योगिक इकाई के निर्माण में यूनाइटेड किंगडम (ब्रिटेन) ने तकनीकी ज्ञान और वित्तीय सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
यह संयंत्र दामोदर नदी घाटी में स्थित है, जहाँ कोयला और जल की प्रचुर उपलब्धता है। ब्रिटेन के सहयोग ने भारत को इस्पात उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने और भारी इंजीनियरिंग क्षेत्र को मजबूती प्रदान करने में सहायता की। आज भी यह संयंत्र भारतीय रेलवे और रक्षा क्षेत्र के लिए विशेष इस्पात उत्पादों का निर्माण कर रहा है।

146. (B) इसकी विशेषता 'विराम' या शुष्क अंतराल हैं।
भारतीय मानसून की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता 'विराम' या वर्षा के बीच आने वाले शुष्क अंतराल हैं। मानसून के दौरान लगातार वर्षा नहीं होती, बल्कि कुछ दिनों की भारी बारिश के बाद कई दिनों तक मौसम शुष्क रह सकता है।
यह अनिश्चितता और क्षेत्रीय असमानता मानसून को एक जटिल पवन प्रणाली बनाती है जिसका सटीक पूर्वानुमान लगाना कठिन है। कभी यह बाढ़ लाता है तो कभी सूखे का कारण बनता है। यह पूरे देश में एक साथ नहीं पहुँचता और न ही समान वर्षा करता है। मानसून के इस अनिश्चित व्यवहार का सीधा प्रभाव भारतीय कृषि और अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

147. (C) 100 सेमी और 200 सेमी के बीच
उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन उन क्षेत्रों में विकसित होते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 100 से 200 सेंटीमीटर के बीच होती है। ये भारत के सबसे विस्तृत वन प्रकार हैं जो प्रायद्वीपीय पठार के पूर्वी ढलानों और हिमालय की तलहटी में पाए जाते हैं।
इन वनों के वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं ताकि वाष्पोत्सर्जन कम हो सके। सागौन, साल और शीशम इन वनों की सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक प्रजातियाँ हैं। ये वन सघन होते हैं और जैव विविधता की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं। ग्रामीण समुदायों के लिए ये वन ईंधन और लकड़ी के मुख्य स्रोत हैं।

148. (C) अभ्रक
अभ्रक एक अनूठा अधात्विक खनिज है जिसमें उत्कृष्ट परावैद्युत शक्ति और बहुत कम बिजली हानि का गुण होता है। यह ऊँचे वोल्टेज को सहन करने में सक्षम है, जिससे यह विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में एक श्रेष्ठ विसंवाहक के रूप में प्रयुक्त होता है।
रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर और अन्य आधुनिक गैजेट्स के निर्माण के लिए अभ्रक अनिवार्य है। भारत के पास विश्व के कुछ सबसे बड़े अभ्रक भंडार हैं, विशेष रूप से झारखंड और आंध्र प्रदेश में। इसकी चादरों में विभाजित होने की प्रकृति इसे विनिर्माण क्षेत्र के लिए बहुत बहुमुखी और उपयोगी खनिज बनाती है।

149. (C) पंजाब का मैदान
भारत के उत्तरी मैदान के पश्चिमी भाग को 'पंजाब का मैदान' कहा जाता है। यह मैदान मुख्य रूप से सिंधु नदी और उसकी पाँच सहायक नदियों - झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज के निक्षेपण कार्यों द्वारा निर्मित हुआ है।
इस क्षेत्र में 'दोआब' यानी दो नदियों के बीच की भूमि की प्रचुरता है, जो इसे कृषि की दृष्टि से अत्यंत उपजाऊ बनाती है। पंजाब और हरियाणा राज्यों में फैला यह मैदान देश की खाद्य सुरक्षा में अग्रणी भूमिका निभाता है। यहाँ की मिट्टी गहरी जलोढ़ है और आधुनिक सिंचाई सुविधाओं ने इसे भारत का कृषि केंद्र बना दिया है।

150. (B) P-3, Q-2, R-4, S-1
भारत की जलवायु विभिन्न स्थानीय और मौसमी परिघटनाओं द्वारा चिह्नित है। मानसून प्रस्फोट वर्षा की अचानक शुरुआत है, जबकि अक्टूबर की गर्मी मानसून की वापसी के समय की उमस को दर्शाती है। ये प्रक्रियाएं कृषि और जनजीवन को गहराई से प्रभावित करती हैं।
काल बैसाखी बंगाल में आने वाले विनाशकारी तूफान हैं, जबकि आम्र वर्षा केरल में आम के पकने में मदद करने वाली मानसून पूर्व बारिश है। इन घटनाओं का सुमेलित होना भारतीय मौसम विज्ञान की विविधता को स्पष्ट करता है। ये घटनाएँ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं और मानसूनी तंत्र का अभिन्न हिस्सा हैं।

151. (C) यमुना
सिंधु नदी तंत्र उत्तर-पश्चिमी भारत और पाकिस्तान की सबसे बड़ी जल प्रणाली है। झेलम, चिनाब और सतलुज इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं जो अंततः पाकिस्तान के मिठानकोट के पास सिंधु नदी में मिल जाती हैं और पंजाब क्षेत्र को सींचती हैं। इसके विपरीत, यमुना नदी गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी है और यह उत्तराखंड के यमुनोत्री ग्लेशियर से निकलती है। यमुना का सिंधु नदी तंत्र से कोई सीधा संबंध नहीं है। सिंधु की सहायक नदियाँ हिमालय के बर्फ के पिघलने से निरंतर जल प्राप्त करती हैं और इस क्षेत्र की कृषि का मुख्य आधार बनी हुई हैं।

152. (B) धारवाड़ तंत्र
भारत में अधिकांश धात्विक खनिज और विशेष रूप से लौह अयस्क प्राचीन 'धारवाड़ शैल तंत्र' की चट्टानों में पाए जाते हैं। ये चट्टानें भूगर्भीय रूप से बहुत पुरानी हैं और इनमें खनिजों का संकेंद्रण अत्यधिक सघन और उच्च गुणवत्ता वाला होता है।
कर्नाटक, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के प्रमुख लौह अयस्क क्षेत्र इसी शैल प्रणाली का हिस्सा हैं। धारवाड़ चट्टानें धातुकर्म उद्योगों के लिए आवश्यक संसाधनों का मुख्य स्रोत हैं। इन चट्टानों की उपस्थिति ही भारत को खनिज संपदा के मामले में आत्मनिर्भर बनाती है। औद्योगिक विकास के लिए इन प्राचीन संरचनाओं का आर्थिक महत्व बहुत अधिक है।

153. (C) सस्ती और नियमित विद्युत आपूर्ति
एल्युमीनियम प्रगलन एक अत्यधिक बिजली खपत वाला उद्योग है, जहाँ एक टन धातु उत्पादन के लिए भारी मात्रा में

Downloaded from www.pdf.tube

जाता है। भारत के पास थोरियम के विशाल भंडार हैं, जो भविष्य की परमाणु ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन सभी खनिजों का कुशल उपयोग देश की औद्योगिक प्रगति और ऊर्जा आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

187. (C) श्रीलंका
पाक जलडमरुमध्य भारत के तमिलनाडु राज्य और श्रीलंका के मन्नार द्वीप के बीच स्थित एक संकरा जलमार्ग है। यह भौगोलिक विशेषता भारत और श्रीलंका को एक-दूसरे से पृथक करती है और बंगाल की खाड़ी को पाक खाड़ी से जोड़ती है।
यह जलडमरुमध्य सामरिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हिंद महासागर के प्रमुख व्यापारिक मार्गों के करीब स्थित है। यहाँ 'राम सेतु' नामक प्रवाल श्रृंखला भी पाई जाती है। मछुआरों और समुद्री नेविगेशन के लिए यह क्षेत्र हमेशा से ही चर्चा और महत्व का विषय रहा है, जो दोनों देशों के बीच संबंधों का आधार है।

188. (C) वाणिज्यिक कृषि
रोपण कृषि वाणिज्यिक कृषि का एक आधुनिक प्रकार है जिसमें बड़े पैमाने पर पूंजी, उन्नत तकनीक और कुशल श्रम का उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाने के लिए औद्योगिक कच्चा माल या निर्यात योग्य फसलों का उत्पादन करना है।
इसमें एक विस्तृत क्षेत्र में केवल एक ही प्रकार की फसल, जैसे चाय, रबर या कॉफी उगाई जाती. है। इस पद्धति में कृषि को एक उद्योग की तरह प्रबंधित किया जाता है जहाँ प्रसंस्करण और विपणन की सुविधाएँ भी जुड़ी होती हैं। यह व्यवस्था वैश्विक व्यापार और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

189. (C) जलोढ़ मृदा
जलोढ़ मृदा भारत की सबसे व्यापक और महत्वपूर्ण मृदा श्रेणी है, जो संपूर्ण उत्तरी मैदानों और तटीय क्षेत्रों को ढके हुए है। इसका निर्माण मुख्य रूप से हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाए गए सूक्ष्म अवसादों के निक्षेपण से हुआ है।
यह मिट्टी पोटाश और फास्फोरस जैसे पोषक तत्वों से समृद्ध होती है, जो इसे चावल, गेहूं और गन्ने की खेती के लिए अत्यंत उपजाऊ बनाती है। देश के लगभग 40 प्रतिशत भू-भाग पर इसी मृदा का विस्तार है। भारत की विशाल जनसंख्या का भरण-पोषण मुख्य रूप से इसी मृदा की उत्पादकता पर निर्भर करता है।

190. (B) 2-3-4-1
दक्षिण-पश्चिम मानसून भारत में एक निश्चित भौगोलिक मार्ग का अनुसरण करता है। इसकी शुरुआत जून के पहले सप्ताह में सबसे पहले केरल के तट से होती है। इसके बाद मानसूनी पवनें उत्तर की ओर बढ़ते हुए महाराष्ट्र के तट पर पहुँचती हैं।
पश्चिम बंगाल में मानसून का आगमन अरब सागर और बंगाल की खाड़ी की शाखाओं के कारण इसके बाद होता है। अंततः, मानसून की पवनें उत्तर भारत के आंतरिक भागों, जैसे उत्तर प्रदेश तक पहुँचती हैं। यह क्रमिक विस्तार देश के विभिन्न हिस्सों में कृषि कार्यों की शुरुआत और तापमान में गिरावट के लिए जिम्मेदार होता है।

191. (C) अहमदाबाद
गुजरात के अहमदाबाद शहर को उसके विशाल सूती वस्त्र उद्योग और ऐतिहासिक उत्पादन क्षमता के कारण 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है। साबरमती नदी के तट पर स्थित यह शहर कच्चे कपास उत्पादक क्षेत्रों के अत्यंत निकट स्थित है। यहाँ की नम जलवायु और कुशल श्रम की उपलब्धता ने सूती मिलों के विकास के लिए उत्कृष्ट वातावरण प्रदान किया। रेलवे के जाल और विपणन की सुविधाओं ने अहमदाबाद को देश का एक प्रमुख व्यापारिक हब बना दिया। यद्यपि अब अन्य क्षेत्र भी विकसित हुए हैं, लेकिन कपड़ा उद्योग में इसकी ऐतिहासिक महत्ता आज भी बरकरार है।

192. (C) भांगर
उत्तरी मैदान का सबसे बड़ा और प्रमुख हिस्सा 'भांगर' कहलाता है, जो नदियों द्वारा जमा किए गए पुराने जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है। यह क्षेत्र वर्तमान बाढ़ के स्तर से काफी ऊपर स्थित है, जिससे यहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी नहीं पहुँचता।
इस मृदा में चूनेदार निक्षेपों की अधिकता होती है जिन्हें कंकड़ कहा जाता है। भांगर क्षेत्र खादर की तुलना में कम उर्वर माना जाता है क्योंकि इसका नवीनीकरण नियमित नहीं होता। फिर भी, यह क्षेत्र सघन मानव बसाव और गहन कृषि का मुख्य आधार है क्योंकि यह बाढ़ के खतरों से सुरक्षित है।

193. (C) लिग्नाइट
लिग्नाइट को इसके भूरे रंग के कारण 'भूरा कोयला' भी कहा जाता है। यह कोयले की एक निम्न श्रेणी है जिसमें नमी की मात्रा अधिक और कार्बन का अंश कम होता है। यह मुलायम होता है और जलते समय अपेक्षाकृत कम ऊष्मा प्रदान करता है।
भारत में लिग्नाइट के मुख्य भंडार तमिलनाडु के नेवेली क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसका उपयोग मुख्य रूप से तापीय विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है। एंथ्रेसाइट और बिटुमिनस के मुकाबले इसकी गुणवत्ता कम होती है, लेकिन क्षेत्रीय ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने में यह एक महत्वपूर्ण और सुलभ प्राकृतिक संसाधन सिद्ध हुआ है।

194. (B) चाय, जूट और चावल
'काल बैसाखी' पश्चिम बंगाल और असम में आने वाले तीव्र स्थानीय तूफान और वर्षा की घटना है। यद्यपि ये तूफान कभी-कभी विनाशकारी होते हैं, लेकिन वसंत ऋतु में होने वाली यह वर्षा चाय और जूट की फसलों के लिए वरदान मानी जाती है। यह वर्षा मिट्टी में नमी प्रदान करती है जो जूट की बुवाई और चाय की नई कलियों के खिलने के लिए अनिवार्य है। चावल की प्रारंभिक खेती में भी यह सहायक होती है। इन फसलों के उत्पादक क्षेत्रों के लिए काल बैसाखी एक महत्वपूर्ण मौसमी घटक है जो ग्रीष्मकालीन कृषि चक्र को गति प्रदान करता है।

NODIA

सबसे महत्वपूर्ण और प्रचुर भंडार है, जो क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
यहाँ से प्राप्त कोयला मुख्य रूप से दक्षिण भारत के तापीय विद्युत संयंत्रों और उद्योगों की मांग को पूरा करता है। सिंगरेनी के कोयला क्षेत्रों ने तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के औद्योगिक विकास में रीढ़ की हड्डी के समान भूमिका निभाई है। खनिजों का यह विशाल संकेंद्रण राज्य की अर्थव्यवस्था और विद्युत उत्पादन के लिए एक अनिवार्य प्राकृतिक संसाधन है।

162. (C) काली मृदा
दक्कन ट्रैप भारत का एक प्रमुख लावा पठार है जहाँ ज्वालामुखीय चट्टानों के अपक्षय से काली मृदा का निर्माण हुआ है। इस मिट्टी को 'रेगुर मृदा' भी कहा जाता है, जो अपने गहरे काले रंग और महीन बनावट के लिए जानी जाती है।
काली मृदा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी नमी को लंबे समय तक धारण करने की क्षमता है, जिससे यह कपास की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त बन जाती है। इसमें चूना, लोहा और मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्वों की प्रचुरता होती. है। यह मिट्टी महाराष्ट्र और गुजरात के विस्तृत क्षेत्रों को भारत का प्रमुख कृषि केंद्र बनाती है।

163. (C) कोयला
कोयला एक महत्वपूर्ण कार्बनिक अवसादी चट्टान है जो लाखों वर्षों तक दबे हुए पादप अवशेषों के संपीडन से निर्मित होता है। यह भारत का सबसे प्रमुख शक्ति संसाधन है जो मुख्य रूप से गोंडवाना काल की अवसादी परतों में पाया जाता है।
गहराई और संपीडन के आधार पर कोयले की विभिन्न किस्में जैसे पीट, लिग्नाइट और बिटुमिनस पाई जाती हैं। भारत में दामोदर और गोदावरी जैसी नदी घाटियों की अवसादी चट्टानें कोयले के भंडार की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं। यह जीवाश्म ईंधन देश की औद्योगिक ऊर्जा और तापीय विद्युत उत्पादन का मुख्य आधार बना हुआ है।

164. (B) ब्रह्मपुत्र
विश्व का सबसे बड़ा बसने योग्य नदी द्वीप, 'माजुली', असम में ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य स्थित है। इसका निर्माण ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए गाद और अवसादों के निरंतर निक्षेपण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है।
यह द्वीप अपनी अनूठी वैष्णव संस्कृति और जैविक विविधता के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। हालांकि नदी के कटाव के कारण इसका क्षेत्रफल धीरे-धीरे कम हो रहा है, फिर भी यह क्षेत्र कृषि और पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है। माजुली को भारत का पहला 'द्वीप जिला' घोषित किया गया है, जो इसकी महत्ता को दर्शाता है।

165. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन वर्ष भर हरे-भरे दिखाई देते हैं क्योंकि इनमें पाए जाने वाले वृक्षों की विभिन्न प्रजातियाँ अपनी पत्तियाँ गिराने का एक निश्चित समय नहीं रखती हैं। प्रत्येक वृक्ष अपनी प्राकृतिक लय के अनुसार अलग-अलग समय पर पत्तियाँ गिराता है।
इसके परिणामस्वरूप, वन में हमेशा कुछ वृक्ष पत्तियों से लदे होते हैं, जिससे संपूर्ण वन कभी भी नग्न नहीं दिखता। फूल आने और फल लगने का समय भी अलग-अलग होने के कारण यहाँ का आवरण निरंतर बना रहता है। यह विशेषता इन वनों को शुष्क मौसम में भी सघन और जीवंत बनाए रखती है, जो जैव विविधता के लिए अनुकूल है।

166. (B) प्रतिद्वंद्वी फर्मों से प्रतिस्पर्धा
समूहन अर्थव्यवस्था का मुख्य लाभ यह है कि जब उद्योग एक साथ स्थित होते हैं, तो वे साझा बुनियादी ढांचे और सेवाओं का उपयोग करके अपनी लागत कम कर सकते हैं। इसमें कुशल श्रम समूह और बैंकिंग सुविधाओं की सुलभता शामिल है।
उद्योगों की निकटता से परिवहन और विपणन में आसानी होती है, जो उनकी उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है। प्रतिद्वंद्वी फर्मों के बीच होने वाली प्रतिस्पर्धा को समूहन का लाभ नहीं माना जाता, बल्कि यह एक बाजार की स्थिति है। इसके विपरीत, साझा संसाधनों और तकनीकी सहयोग से मिलने वाली बचत ही उद्योगों को समूह में रहने के लिए प्रोत्साहित करती है।

167. (C) राजस्थान
पंजाब का मैदान मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा राज्यों में विस्तृत है, जिसका निर्माण सिंधु की सहायक नदियों द्वारा हुआ है। राजस्थान का अधिकांश भाग थार मरुस्थल के अंतर्गत आता है, जो इस मैदानी क्षेत्र का हिस्सा नहीं है।
यद्यपि राजस्थान का कुछ उत्तरी भाग मैदान को स्पर्श करता है, लेकिन इसे भौगोलिक रूप से पंजाब के मैदान की श्रेणी में नहीं रखा जाता। यह मैदान अपनी गहरी जलोढ़ मिट्टी और सघन खेती के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान की शुष्क परिस्थितियाँ और रेतीली स्थलाकृति इसे पंजाब के उपजाऊ और सिंचित मैदानी भाग से पूर्णतः भिन्न और पृथक बनाती हैं।

168. (B) समुद्र का समकारी प्रभाव
भारत के तटीय क्षेत्रों में समुद्र की निकटता के कारण तापमान में बहुत कम उतार-चढ़ाव होता है, जिसे 'समकारी प्रभाव' कहा जाता है। समुद्र का पानी धीरे-धीरे गर्म और ठंडा होता है, जिससे तटीय जलवायु मध्यम और सुखद बनी रहती है।
इसके विपरीत, देश के आंतरिक भागों में समुद्र का प्रभाव नहीं पहुँच पाता, जिससे वहाँ विषम या चरम जलवायु पाई जाती है। यहाँ गर्मियों में अत्यधिक गर्मी और सर्दियों में बहुत अधिक ठंड पड़ती है। समुद्र से दूरी बढ़ने के साथ मौसम की ये चरम स्थितियाँ और अधिक स्पष्ट हो जाती हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों के जनजीवन को प्रभावित करती हैं।

169. (A) रबी और खरीफ मौसमों के बीच एक लघु फसल मौसम
'जायद' भारत का एक लघु फसल मौसम है जो रबी की कटाई और खरीफ की बुवाई के बीच, मुख्य रूप से मार्च से जून के ग्रीष्मकालीन महीनों में आता है। यह मौसम बहुत छोटा होता है लेकिन कृषि चक्र में महत्वपूर्ण है।
इस दौरान मुख्य रूप से तरबूज, खरबूजा, खीरा, सब्जियाँ और चारे की फसलें उगाई जाती हैं। सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में जायद की फसलें किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करने का एक अच्छा जरिया बनती हैं। यह मौसम उन फसलों के लिए

Click Here to Buy book on Amazon

विद्युत की आवश्यकता होती है। इसलिए, इन संयंत्रों की स्थापना मुख्य रूप से उन स्थानों पर की जाती है जहाँ सस्ती और निरंतर बिजली उपलब्ध हो।
बॉक्साइट की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण है, लेकिन बिजली की लागत इस उद्योग की लाभप्रदता का सबसे बड़ा कारक है। भारत में कई संयंत्र जल-विद्युत या कोयला आधारित तापीय संयंत्रों के निकट स्थित हैं। बिजली आपूर्ति में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए ये संयंत्र अक्सर अपनी निजी बिजली उत्पादन इकाइयां भी स्थापित करते हैं।

154. (D) नवीन वलित पर्वत
हिमालय पर्वतमाला भूवैज्ञानिक दृष्टिकोण से 'नवीन वलित पर्वत' का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इनका निर्माण हाल के भूवैज्ञानिक काल में भारतीय और यूरेशियाई प्लेटों के आपस में टकराने और टेथिस सागर के अवसादों के वलन (मुड़ने) के कारण हुआ है।
ये पर्वत अभी भी ऊपर उठ रहे हैं, जिससे यह क्षेत्र विवर्तनिक रूप से सक्रिय और भूकंपों के प्रति संवेदनशील बना हुआ है। इनकी चोटियाँ नुकीली और घाटियाँ गहरी हैं, जो इनकी युवा अवस्था को दर्शाती हैं। विश्व की सबसे ऊँची पर्वत चोटियाँ इसी श्रेणी का हिस्सा हैं, जो भारत की उत्तरी रक्षा और जलवायु निर्धारण में महत्वपूर्ण हैं।

155. (B) खासी पहाड़ियाँ
मेघालय में स्थित मौसिनराम विश्व का सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान है। यह स्थान मुख्य रूप से 'खासी पहाड़ियों' के दक्षिणी ढाल पर स्थित है, जहाँ इसकी विशिष्ट कीप जैसी भौगोलिक आकृति मानसूनी पवनों को ऊपर उठने के लिए मजबूर करती है।
जब बंगाल की खाड़ी से आने वाली आर्द्र पवनें इन पहाड़ियों से टकराती हैं, तो वे तेजी से ऊपर उठकर संघनित होती हैं और अत्यधिक मूसलाधार वर्षा करती हैं। चेरापूंजी भी इसी क्षेत्र में स्थित है। यहाँ की वार्षिक वर्षा औसतन 11,000 मिलीमीटर से अधिक होती है, जो यहाँ के जनजीवन और सघन वनस्पति का मुख्य आधार है।

156. (D) उपरोक्त सभी।
राष्ट्रीय जूट नीति (2005) को भारत में जूट उद्योग की गिरती स्थिति को सुधारने और इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए लागू किया गया था। इसका मुख्य लक्ष्य जूट के उत्पादन में वृद्धि करना और रेशे की गुणवत्ता में सुधार करना था।
इसके साथ ही, किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना और प्रति हेक्टेयर पैदावार बढ़ाना भी इस नीति के अनिवार्य अंग थे। पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण जूट की वैश्विक मांग बढ़ रही है। इस नीति ने जूट उत्पादों के विविधीकरण और आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया है, जिससे इस पारंपरिक उद्योग को पुनर्जीवन मिला है।

157. (C) मैंग्रोव वन
भारत की प्रमुख नदियों जैसे गंगा, महानदी और कावेरी के डेल्टा क्षेत्रों में खारे और मीठे पानी के मेल के कारण मैंग्रोव वन पाए जाते हैं। ये वन दलदली भूमि और ज्वारीय परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए विशेष रूप से अनुकूलित होते हैं।
सुंदरी वृक्ष इन वनों की सबसे विशिष्ट प्रजाति है, जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत और टिकाऊ होती है। इन वनों की जड़ें पानी के ऊपर निकली रहती हैं जो श्वसन में मदद करती हैं। ये पारिस्थितिकी तंत्र समुद्री कटाव को रोकते हैं और विविध जलीय जीवों के प्रजनन स्थल के रूप में कार्य करते हैं, जो तट की रक्षा के लिए अनिवार्य हैं।

158. (B) निमज्जित तट
भारत का पश्चिमी तटीय मैदान एक 'निमज्जित तट' का उदाहरण है, जिसका अर्थ है कि प्राचीन काल में इस भूमि का एक बड़ा हिस्सा समुद्र के नीचे धंस गया था। इसके परिणामस्वरूप यहाँ का तट अपेक्षाकृत सीधा और संकरा है, जहाँ बड़ी नदियों के डेल्टा का अभाव है।
निमज्जन के कारण ही यहाँ प्राकृतिक बंदरगाहों के विकास के लिए गहरी खाड़ियाँ और अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं, जैसे मुंबई और मर्मगाओ। यहाँ की नदियाँ तीव्रगामी हैं और वे डेल्टा बनाने के बजाय 'ज्वारनदमुख' (एक्चुअरी) बनाती हैं। यह भौगोलिक विशेषता पश्चिमी तट को व्यापार और समुद्री परिवहन के लिए सामरिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण बनाती है।

159. (C) आगे बढ़ते मानसून की ऋतु
भारत में जून से सितंबर तक की अवधि को 'आगे बढ़ते मानसून' या दक्षिण-पश्चिम मानसून की ऋतु के रूप में जाना जाता है। इस दौरान आर्द्र मानसूनी पवनें समुद्र से स्थल की ओर प्रवाहित होती हैं और देश के अधिकांश भागों में वर्षा करती हैं।
यह ऋतु भारतीय कृषि के लिए सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि देश की लगभग 75 प्रतिशत वार्षिक वर्षा इसी समय होती है। मानसून का आगमन केरल तट से शुरू होता है और धीरे-धीरे पूरे उपमहाद्वीप में फैल जाता है। तापमान में गिरावट और चारों ओर हरियाली का आना इस मौसम की प्रमुख पहचान है, जो जनजीवन को प्रभावित करती है।

160. (D) कपास
कपास भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण गैर-खाद्य या नकदी फसल है, जो कपड़ा उद्योग के लिए आधारभूत कच्चा माल प्रदान करती. है। भारत कपास के उत्पादन और निर्यात में विश्व स्तर पर एक प्रमुख स्थान रखता है, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है।
इसके रेशे का उपयोग सूती वस्त्र बनाने में किया जाता है, जो देश का सबसे बड़ा संगठित उद्योग है। कपास की खेती मुख्य रूप से दक्कन के पठार की काली मिट्टी में की जाती है। यह फसल न केवल औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि लाखों किसानों की आय और ग्रामीण रोजगार का एक बड़ा जरिया भी है।

161. (B) तेलंगाना
सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड तेलंगाना राज्य में स्थित एक प्रमुख कोयला खनन क्षेत्र है, जो गोदावरी नदी घाटी के निक्षेपों का दोहन करता है। यह दक्षिण भारत में कोयले का

NODIA

178. (C) चाय
चाय भारत की सबसे महत्वपूर्ण पेय फसल है जिसकी खेती बागानों में बड़े पैमाने पर की जाती है। यह एक श्रम प्रधान उद्योग है जिसके लिए आर्द्र और गर्म जलवायु के साथ वर्ष भर समान रूप से होने वाली वर्षा की आवश्यकता होती है।
भारत विश्व में चाय का एक प्रमुख उत्पादक और निर्यातक देश है। मुख्य रूप से असम, पश्चिम बंगाल की दार्जिलिंग पहाड़ियों और दक्षिण भारत के नीलगिरी क्षेत्रों में इसकी सघन कृषि होती है। चाय के बागान न केवल अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं, बल्कि यह लाखों श्रमिकों, विशेषकर महिलाओं को रोजगार प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

179. (C) असम
असम भारत का सबसे प्राचीन तेल उत्पादक राज्य है, जहाँ डिगबोई में देश का पहला तेल कुआँ 19वीं शताब्दी के अंत में खोजा गया था। यहाँ की ब्रह्मपुत्र घाटी ऐतिहासिक रूप से पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के भंडारों का प्रमुख केंद्र रही है। डिगबोई, नाहरकटिया और मोरान-हुग्रीजन इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण तेल क्षेत्र हैं। यद्यपि अब मुंबई हाई और गुजरात में भी बड़े भंडार खोजे गए हैं, लेकिन असम का योगदान भारत के ऊर्जा इतिहास में अद्वितीय है। यहाँ की रिफाइनरियाँ न केवल राज्य की बल्कि पूरे उत्तर-पूर्व की ईंधन जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं।

180. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत के औद्योगिक क्षेत्रों का विकास विशिष्ट संसाधनों और सुविधाओं के आधार पर हुआ है। हुगली क्षेत्र जूट के लिए प्रसिद्ध है, जबकि छोटानागपुर पठार खनिजों और भारी इस्पात उद्योगों का गढ़ है, जो देश के निर्माण की नींव रखते हैं।
बेंगलुरु-तमिलनाडु क्षेत्र सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए वैश्विक पहचान रखता है। मुंबई-पुणे समूह सूती वस्त्रों के साथ-साथ पेट्रोकेमिकल उद्योगों का भी एक विशाल केंद्र है। उद्योगों का यह भौगोलिक वितरण क्षेत्रीय आर्थिक संतुलन और विभिन्न संसाधनों के इष्टतम उपयोग को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

181. (C) कंकड़ और पत्थरों से बनी इस पट्टी में नदियाँ भूमिगत होकर विलुप्त हो जाती हैं।
'भाबर' शिवालिक की ढलानों के समानांतर स्थित 8 से 16 किलोमीटर चौड़ी एक संकरी पट्टी है। यह मुख्य रूप से नदियों द्वारा जमा किए गए भारी कंकड़ और पत्थरों से बनी है, जो इसे अत्यधिक सरंध्र (छेदयुक्त) और पारगम्य बनाती है।
इस अत्यधिक सरंध्रता के कारण हिमालय से निकलने वाली छोटी नदियाँ और जलधाराएं इस क्षेत्र में पहुँचते ही भूमिगत हो जाती हैं और सतह से गायब हो जाती हैं। यह पट्टी कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है, लेकिन इसके ठीक दक्षिण में तराई का नम क्षेत्र शुरु होता है जहाँ ये नदियाँ पुनः प्रकट होती हैं।

182. (B) पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट की तुलना में अधिक ऊंचे और सतत हैं।
पश्चिमी घाट भारत के पश्चिमी तट के समानांतर एक निरंतर पर्वत श्रृंखला के रूप में स्थित हैं, जिन्हें केवल कुछ दर्रों के माध्यम से ही पार किया जा सकता है। इनकी औसत ऊँचाई पूर्वी घाटों की तुलना में काफी अधिक है।
पश्चिमी घाट उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ने पर और भी ऊंचे होते जाते हैं, जहाँ अनाइमुडी जैसा सर्वोच्च शिखर स्थित है। इसके विपरीत, पूर्वी घाट कटे-फटे और ऊँचाई में कम हैं, जिन्हें नदियों ने कई स्थानों पर विभाजित कर दिया है। यह ऊँचाई और निरंतरता का अंतर मानसूनी वर्षा और जैव विविधता के वितरण को प्रभावित करता है।

183. (B) कर्क रेखा
कर्क रेखा (23°30'N) भारत के लगभग मध्य से होकर गुजरती है, जो देश को दो विशिष्ट जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करती है। इस रेखा के दक्षिण में स्थित क्षेत्र उष्णकटिबंधीय है, जहाँ वर्ष भर उच्च तापमान और समुद्री प्रभाव बना रहता है।
इसके विपरीत, कर्क रेखा के उत्तर में स्थित हिस्सा उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु के अंतर्गत आता है, जहाँ ऋतुओं के अनुसार तापमान में व्यापक उतार-चढ़ाव देखा जाता है। यह विभाजन कृषि के स्वरूप, प्राकृतिक वनस्पति और यहाँ तक कि मानसूनी पवनों के व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित करता है, जो देश की विविधता का आधार है।

184. (D) 70 सेमी और 100 सेमी के बीच
उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन उन क्षेत्रों की विशेषता हैं जहाँ वार्षिक वर्षा की मात्रा 70 से 100 सेंटीमीटर के बीच होती है। ये वन आर्द्र पर्णपाती वनों और कांटेदार वनों के बीच एक संक्रमणकालीन वनस्पति प्रकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।
भारत के प्रायद्वीपीय पठार के खुले मैदानों और उत्तर प्रदेश एवं बिहार के मैदानी भागों में ये वन बहुतायत में पाए जाते हैं। शुष्क ऋतु में ये वृक्ष अपनी पत्तियाँ पूरी तरह गिरा देते हैं और वन एक खुले घास के मैदान की तरह दिखाई देता है। साल, पीपल और नीम इन वनों की प्रमुख वृक्ष प्रजातियाँ हैं।

185. (C) सोवियत संघ
झारखंड राज्य में स्थित बोकारो इस्पात संयंत्र की स्थापना तृतीय पंचवर्षीय योजना के दौरान की गई थी। इस विशाल औद्योगिक परियोजना के निर्माण के लिए तत्कालीन सोवियत संघ (रूस) ने तकनीकी मार्गदर्शन और महत्वपूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान की थी।
यह संयंत्र खदानों के अत्यंत निकट स्थित है, जिससे कच्चे माल की परिवहन लागत बहुत कम हो जाती है। सोवियत संघ के सहयोग ने भारत को उच्च गुणवत्ता वाले इस्पात उत्पादन की अत्याधुनिक तकनीक प्रदान की। वर्तमान में यह 'सेल' के अंतर्गत देश के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण एकीकृत इस्पात संयंत्रों में से एक माना जाता है।

186. (D) उपरोक्त सभी
खनिज ईंधन वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जिनसे ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। इसमें पारंपरिक जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला शामिल है, साथ ही यूरेनियम और थोरियम जैसे रेडियोधर्मी खनिज भी हैं जो परमाणु ऊर्जा उत्पादन के लिए अनिवार्य स्रोत माने जाते हैं।
कोयला तापीय बिजली के लिए मुख्य आधार है, जबकि यूरेनियम का उपयोग आधुनिक परमाणु रिएक्टरों में किया

NODIA

दौरान धूल भरी आंधियां भी चलती हैं। यह घटना मुख्य रूप से पाकिस्तान और राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों से आने वाली गर्म हवाओं के कारण होती है जो मैदानी क्षेत्रों को झुलसा देती हैं।

204. (D) नमक
धात्विक खनिज वे होते हैं जिनमें धातु का अंश पाया जाता है, जैसे लोहा, मैंगनीज और बॉक्साइट। इसके विपरीत, नमक एक अधात्विक खनिज है जो मुख्य रूप से समुद्री जल के वाष्पीकरण या चट्टानी निक्षेपों से प्राप्त किया जाता है।
नमक का रासायनिक रूप सोडियम क्लोराइड है और इसमें कोई धातु नहीं होती। यह भोजन का अनिवार्य हिस्सा होने के साथ-साथ रासायनिक उद्योगों में भी प्रयुक्त होता है। खनिजों के इस वर्गीकरण को समझना औद्योगिक उपयोग के लिए आवश्यक है, क्योंकि धात्विक और अधात्विक खनिजों के निष्कर्षण और उपयोग की प्रक्रियाएं पूर्णतः भिन्न होती हैं।

205. (C) केरल
कोल्लम-तिरुवनंतपुरम औद्योगिक समूह केरल राज्य का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है। इस क्षेत्र का विकास यहाँ उपलब्ध कृषि उत्पादों, समुद्री संसाधनों और विशेष रूप से रबर एवं मसालों के प्रसंस्करण उद्योगों के कारण हुआ है।
यहाँ मत्स्य पालन आधारित उद्योगों और नारियल जटा (कॉयर) से बनने वाले सामानों के निर्माण की प्रचुरता है। शिक्षित और कुशल श्रम शक्ति की उपलब्धता ने यहाँ इलेक्ट्रॉनिक्स और पर्यटन आधारित उद्योगों को भी बढ़ावा दिया है। यह क्षेत्र राज्य की तटीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

206. (C) ब्रह्मपुत्र
ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय पर्वतमाला की सबसे पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है। यह नदी तिब्बत से निकलकर नामचा बरवा पर्वत के पास एक तीव्र मोड़ लेती है और भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में प्रवेश करती है।
इस मोड़ के बाद हिमालय की श्रेणियाँ दक्षिण की ओर झुक जाती हैं और पूर्वांचल पहाड़ियों का निर्माण करती हैं। ब्रह्मपुत्र का मार्ग और इसकी घाटी पूर्वी हिमालय की भौगोलिक संरचना को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती है। यह नदी इस दुर्गम क्षेत्र की जीवन रेखा है और यहाँ के उपजाऊ मैदानों का निर्माण करती है।

207. (D) बड़े घरेलू बाजार का अभाव
भारत का सूती वस्त्र उद्योग कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसे पुरानी मशीनरी, बिजली की अनियमित आपूर्ति और कृत्रिम रेशों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा। उच्च गुणवत्ता वाले लंबे रेशे वाले कपास की कमी भी एक समस्या है।
हालांकि, बड़े घरेलू बाजार का अभाव इसकी समस्या नहीं है, क्योंकि भारत की विशाल जनसंख्या स्वयं ही इस उद्योग के लिए एक बहुत बड़ा और बढ़ता हुआ बाजार उपलब्ध कराती है। देश में वस्त्रों की मांग निरंतर बनी रहती है, जो इस उद्योग को चालू रखने का मुख्य आधार है। अतः मांग के बजाय उत्पादन संबंधी समस्याएं अधिक गंभीर हैं।

208. (A) दक्षिण-पश्चिम मानसून
भारत की लगभग 75 से 80 प्रतिशत वार्षिक वर्षा 'दक्षिण-पश्चिम मानसून' के कारण होती है, जो जून से सितंबर के महीनों में सक्रिय रहता है। यह वर्षा प्रणाली भारतीय कृषि की मुख्य आधारशिला है।
यह मानसून हिंद महासागर से आने वाली नमी युक्त पवनों द्वारा संचालित होता है जो पूरे उपमहाद्वीप में फैल जाती हैं। यद्यपि अन्य कारक जैसे पश्चिमी विक्षोभ और चक्रवात भी वर्षा करते हैं, लेकिन उनकी मात्रा और व्याप्ति मानसून की तुलना में बहुत सीमित है। भारतीय अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा इसी वर्षा के समय और वितरण पर निर्भर करता है।

209. (C) नीलगिरी पहाड़ियाँ
ऊटी, जिसे आधिकारिक तौर पर उदगमंडलम कहा जाता है, तमिलनाडु राज्य में स्थित एक अत्यंत प्रसिद्ध हिल स्टेशन है। यह भौगोलिक रूप से नीलगिरी पहाड़ियों में स्थित है, जहाँ पश्चिमी और पूर्वी घाटों का संगम होता है।
यहाँ की सुखद जलवायु, चाय के बागान और सुंदर पहाड़ियाँ इसे पर्यटकों का स्वर्ग बनाती हैं। डोड्डाबेट्टा, जो नीलगिरी की सबसे ऊँची चोटी है, इसी के निकट स्थित है। नीलगिरी का यह पर्वतीय क्षेत्र अपनी जैव विविधता और नीले फूलों के लिए भी जाना जाता है, जो यहाँ की प्राकृतिक विरासत का मुख्य अंग है।

210. (A) केवल 1 और 2
भारत की ऊर्जा प्रणाली मुख्य रूप से कोयले पर आधारित है, जो बिजली उत्पादन का सबसे प्रचुर स्रोत है। पेट्रोलियम रिफाइनरियाँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे पेट्रोकेमिकल और अन्य उद्योगों के लिए अनिवार्य कच्चा माल प्रदान करती हैं। प्राकृतिक गैस पर्यावरण के अनुकूल है, लेकिन इसका मुख्य लाभ 'निम्न कार्बन उत्सर्जन' है, न कि केवल प्रचुरता। कोयला और पेट्रोलियम के बढ़ते उपयोग के बीच रिफाइनरियों की भूमिका 'नोडल उद्योग' के रूप में और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। ये संसाधन मिलकर देश की औद्योगिक गतिशीलता और परिवहन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होते हैं।

211. (A) शुष्क और आर्द्र ऋतु
प्रायद्वीपीय भारत में समुद्र के समकारी प्रभाव के कारण तापमान में बहुत कम मौसमी परिवर्तन होता है, जिससे यहाँ उत्तर भारत की तरह कड़ाके की ठंड या कड़कती गर्मी की कमी होती है। यहाँ मुख्य रूप से शुष्क और आर्द्र ऋतुएँ ही पाई जाती हैं।
मानसून के दौरान यहाँ आर्द्र स्थिति होती है, जबकि शेष वर्ष मौसम शुष्क रहता है। तापमान वर्ष भर लगभग समान और मध्यम बना रहता है, जिससे यहाँ विशिष्ट शीत ऋतु का अनुभव नहीं होता। यह जलवायु विशेषता दक्षिण भारत की फसलों और जीवनशैली को उत्तर भारत के मैदानी भागों से पूरी तरह अलग बनाती है।

212. (B) वृक्षों के पत्तियाँ गिराने का कोई निश्चित मौसमी समय नहीं होता है।
उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन अपनी सघनता और निरंतर हरियाली के लिए जाने जाते हैं। इन वनों में विभिन्न प्रजातियों

Downloaded from www.pdf.tube

195. (B) पश्चिमी तटीय मैदान
पश्चिमी तटीय मैदान पश्चिमी घाट और अरब सागर के मध्य स्थित एक संकरी और सीधी पट्टी है। यह मैदान अपने विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप और तीव्रगामी नदियों के लिए जाना जाता है जो यहाँ ज्वारनदमुख (एक्चुअरी) बनाती हैं, डेल्टा नहीं।
इस मैदान को उत्तर में कोंकण, मध्य में कन्नड़ और दक्षिण में मालाबार तट के रूप में विभाजित किया गया है। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय और आर्द्र है, जहाँ भारी वर्षा होती है। यह क्षेत्र समुद्री व्यापार, मत्स्य पालन और नारियल एवं मसालों की कृषि के लिए ऐतिहासिक रूप से भारत का एक प्रमुख केंद्र रहा है।

196. (A) सागौन, साल और चंदन
आर्द्र पर्णपाती वनों भारत के उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वर्षा 100 से 200 सेंटीमीटर के बीच होती है। इन वनों में सागौन (टीक) सबसे प्रमुख प्रजाति है, जो अपनी कीमती और टिकाऊ लकड़ी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।
साल और चंदन भी इन वनों के अन्य महत्वपूर्ण वृक्ष हैं जिनका व्यापक आर्थिक महत्व है। चंदन विशेष रूप से कर्नाटक और तमिलनाडु के जंगलों में मिलता है। ये वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। इन वनों का संरक्षण देश की वानिकी और जैव विविधता को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

197. (C) छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र
दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर लौह अयस्क पट्टी मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों में विस्तृत है। यह क्षेत्र उच्च श्रेणी के हेमेटाइट अयस्क के विशाल भंडार के लिए जाना जाता है जो औद्योगिक और निर्यात की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।
छत्तीसगढ़ का बैलाडीला क्षेत्र इसी पट्टी का हिस्सा है जहाँ से प्राप्त अयस्क का निर्यात विशाखापत्तनम बंदरगाह के माध्यम से किया जाता है। महाराष्ट्र का चंद्रपुर जिला भी इस खनिज संपदा से समृद्ध है। यह पट्टी भारत के लोहा और इस्पात उद्योग को कच्चा माल प्रदान करने वाली प्रमुख धमनियों में से एक मानी जाती है।

198. (A) 12 समुद्री मील
अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार, किसी देश की तटरेखा से समुद्र की ओर 12 समुद्री मील (लगभग 22.2 किलोमीटर) तक की दूरी को उस देश का 'प्रादेशिक जल' कहा जाता है। इस क्षेत्र पर संबंधित राष्ट्र का पूर्ण संप्रभु अधिकार होता है।
भारत का प्रादेशिक जल उसकी समुद्री सीमाओं की सुरक्षा और संसाधनों के उपयोग के लिए निर्धारित है। इस सीमा के भीतर होने वाली सभी गतिविधियाँ, जैसे मछली पकड़ना और नेविगेशन, भारत सरकार के नियमों के अधीन होती हैं। यह क्षेत्र देश की सुरक्षा और समुद्री संसाधनों के प्रबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण कानूनी और भौगोलिक सीमा है।

199. (B) नर्मदा और सोन
अमरकंटक पठार, जो मध्य प्रदेश में स्थित है, एक अद्वितीय भौगोलिक जल-विभाजक है। यहाँ से दो प्रमुख नदियाँ, नर्मदा और सोन, विपरीत दिशाओं में निकलती हैं। नर्मदा नदी पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर में गिरती है, जबकि सोन नदी उत्तर-पूर्व की ओर बहकर गंगा में मिल जाती है।
एक ही स्थान से निकलकर अलग-अलग दिशाओं में बहने की यह विशेषता यहाँ की स्थलाकृतिक ढाल को दर्शाती है। नर्मदा प्रायद्वीपीय भारत की एक महत्वपूर्ण भ्रंश घाटी वाली नदी है। यह क्षेत्र अपने प्राकृतिक जल स्रोतों और घने वनों के कारण धार्मिक और पारिस्थितिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

200. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जूट वस्त्र उद्योग मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के किनारे ही केंद्रित है। इसका मुख्य कारण यहाँ जूट उत्पादक क्षेत्रों की निकटता और प्रसंस्करण के लिए आवश्यक प्रचुर जल का हुगली नदी से आसानी से उपलब्ध होना है।
इसके अतिरिक्त, यहाँ विकसित जल परिवहन और रेलवे का जाल कच्चे माल और तैयार माल की आवाजाही को बहुत सस्ता बना देता है। कोलकाता जैसे बड़े महानगर से बैंकिंग, बीमा और निर्यात की सुविधाएं भी इस उद्योग को सहारा देती हैं। भौगोलिक और आर्थिक अनुकूलता का यह संगम हुगली को जूट हब बनाता है।

201. (B) कृषि के लिए भूमि का एक टुकड़ा साफ करना और उर्वरता कम होने पर दूसरी जगह स्थानांतरित हो जाना
'कर्तन एवं दहन' कृषि, जिसे झूम खेती भी कहते हैं, आदिम जीवन निर्वाह का एक तरीका है। इसमें किसान जंगल के एक छोटे हिस्से को काटकर और जलाकर भूमि साफ करते हैं और वहां फसलें उगाते हैं।
जब दो-तीन वर्षों में उस भूमि की प्राकृतिक उर्वरता कम हो जाती है, तो किसान उस स्थान को खाली छोड़ देते हैं और नए भू-खंड की तलाश में चले जाते हैं। यह प्रक्रिया मृदा को पुनः उर्वर होने का अवसर देती है। हालांकि, आधुनिक समय में यह वनों के नुकसान का कारण बन रही है।

202. (B) सिक्किम
कंचनजंगा भारत की सबसे ऊँची और विश्व की तीसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी है, जिसकी ऊँचाई 8,586 मीटर है। यह भौगोलिक रूप से सिक्किम राज्य और नेपाल की सीमा पर हिमालय की मुख्य श्रेणी में स्थित है।
कंचनजंगा केवल एक पहाड़ नहीं है, बल्कि सिक्किम के लोगों के लिए आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक भी है। यहाँ का राष्ट्रीय उद्यान अपनी अद्वितीय अल्पाइन वनस्पति और हिम तेंदुए जैसे जीवों के लिए प्रसिद्ध है। यह चोटी हिमालय के दुर्गम और अत्यंत भव्य सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करती है जो पर्वतारोहियों के लिए बड़ी चुनौती है।

203. (B) उत्तरी मैदानों में 'लू'
भारत में ग्रीष्म ऋतु के दौरान उत्तर और उत्तर-पश्चिमी मैदानों में चलने वाली अत्यंत गर्म और शुष्क हवाओं को 'लू' कहा जाता है। यह इस मौसम की सबसे विशिष्ट और कभी-कभी घातक जलवायु परिघटना है जो मई-जून में प्रभावी होती है।
लू के कारण तापमान अचानक 45 डिग्री से ऊपर पहुँच जाता है, जिससे उमस और स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ जाती हैं। इस

NODIA

उपयुक्त है जिन्हें पकने के लिए तेज धूप और शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है।

170. (B) चूना पत्थर
चूना पत्थर सीमेंट उद्योग का सबसे अनिवार्य और प्राथमिक कच्चा माल है। यह एक अधात्विक खनिज है जो अवसादी चट्टानों में पाया जाता है और इसमें कैल्शियम कार्बोनेट की प्रचुरता होती है। सीमेंट उत्पादन के लिए इसकी भारी मात्रा में आवश्यकता होती है।
भारत में चूना पत्थर के विशाल भंडार पाए जाते हैं, विशेष रूप से राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश में। इस खनिज की उपलब्धता ही देश के विशाल निर्माण क्षेत्र और बुनियादी ढांचे के विकास को सहारा देती है। कच्चा माल भारी होने के कारण अधिकांश सीमेंट कारखाने चूना पत्थर की खदानों के निकट ही स्थापित किए जाते हैं।

171. (C) काराकोरम श्रेणी
पूर्वांचल भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित पहाड़ियों का एक समूह है, जिसमें पटकाई, नागा, मणिपुर और मिजो पहाड़ियाँ शामिल हैं। ये पहाड़ियाँ हिमालय के पूर्वी विस्तार का हिस्सा हैं और म्यांमार के साथ एक प्राकृतिक सीमा बनाती हैं।
इसके विपरीत, काराकोरम श्रेणी सुदूर उत्तर में लद्दाख क्षेत्र में स्थित है, जो हिमालय से भी उत्तर में ट्रांस-हिमालय का हिस्सा है। काराकोरम अपनी ऊँची चोटियों और ग्लेशियरों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि पूर्वांचल की पहाड़ियाँ मध्यम ऊँचाई वाली और सघन वनों से ढकी हैं। अतः काराकोरम को भौगोलिक रूप से पूर्वांचल का हिस्सा नहीं माना जा सकता।

172. (A) केवल 1 और 3
लोहा और इस्पात उद्योग एक भारी उद्योग है जिसकी स्थापना मुख्य रूप से कच्चे माल जैसे लौह अयस्क और कोयले की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में की जाती है। भारत में छोटानागपुर पठार क्षेत्र इन संसाधनों का सबसे बड़ा केंद्र है।
इस पठारी क्षेत्र में परिवहन की सुगमता और कच्चे माल की निकटता के कारण इस्पात संयंत्रों का सर्वाधिक संकेंद्रण पाया जाता है। अधिकांश बड़े इस्पात संयंत्र सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों जैसे 'सेल' द्वारा संचालित हैं, न कि निजी क्षेत्र द्वारा। यह उद्योग देश के अन्य विनिर्माण क्षेत्रों को मशीनरी और आधारभूत ढांचा प्रदान करने के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

173. (C) महान आंतरिक हिमालय या हिमाद्रि
हिमालय की सबसे उत्तरी और ऊँची श्रेणी को 'महान हिमालय' या 'हिमाद्रि' कहा जाता है। यह श्रेणी निरंतर है और इसकी औसत ऊँचाई लगभग 6,000 मीटर है। विश्व की सभी सर्वोच्च चोटियाँ इसी श्रेणी में स्थित हैं।
इसका क्रोड ग्रेनाइट से बना है और यह हमेशा बर्फ से ढकी रहती है, जिससे कई बारहमासी नदियाँ निकलती हैं। यह श्रेणी भारत की उत्तरी सुरक्षा और जलवायु नियंत्रण में एक अभेद्य दीवार की तरह कार्य करती है। हिमाद्रि के दक्षिण में हिमाचल और शिवालिक श्रेणियाँ स्थित हैं, जो ऊँचाई में अपेक्षाकृत कम हैं।

174. (C) पश्चिमी विक्षोभ
उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में शीत ऋतु के दौरान होने वाली वर्षा का मुख्य कारण 'पश्चिमी विक्षोभ' है। ये भूमध्यसागरीय क्षेत्र से आने वाले चक्रवाती तूफान हैं जो पश्चिमी जेट धारा के साथ भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश करते हैं।
यद्यपि इस वर्षा की मात्रा कम होती है, लेकिन यह रबी की फसलों, विशेष रूप से गेहूं के उत्पादन के लिए अत्यंत मूल्यवान मानी जाती है। पहाड़ों पर यह विक्षोभ हिमपात का कारण बनता है। यह मौसमी घटना सर्दियों के दौरान उत्तर भारत की कृषि उत्पादकता और जल संसाधनों के नवीनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

175. (B) गुजरात
गुजरात राज्य के जूनागढ़ जिले में स्थित 'गिर वन' पूरे विश्व में एशियाई शेरों का एकमात्र प्राकृतिक आवास है। यह शुष्क पर्णपाती वनों और कंटीली झाड़ियों का एक विशाल पारिस्थितिकी तंत्र है जो इन राजसी शेरों के लिए अनुकूल है।
भारत सरकार और राज्य सरकार के प्रयासों से इन शेरों के संरक्षण में बड़ी सफलता मिली है, जिससे इनकी संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। गिर का जंगल न केवल शेरों के लिए, बल्कि तेंदुए, हिरण और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण शरणस्थली है। यह क्षेत्र वन्यजीव पर्यटन और प्रकृति प्रेमियों के लिए एक वैश्विक केंद्र है।

176. (B) हेमेटाइट
हेमेटाइट भारत में व्यावसायिक रूप से उपयोग किया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण लौह अयस्क है। यद्यपि मैग्नेटाइट में लोहे की मात्रा अधिक होती है, लेकिन हेमेटाइट अपनी व्यापक उपलब्धता और आसान धातुकर्म प्रक्रिया के कारण औद्योगिक रूप से अधिक पसंद किया जाता है।
भारत के प्रमुख इस्पात संयंत्रों में इसी अयस्क का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में हेमेटाइट के विशाल भंडार मौजूद हैं। यह अयस्क देश के घरेलू इस्पात उत्पादन को सहारा देने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात का भी एक बड़ा हिस्सा बनाता है, जिससे आर्थिक मजबूती मिलती है।

177. (B) ग्रेनाइट
महान हिमालय या हिमाद्रि की सबसे आंतरिक परत, जिसे क्रोड कहा जाता है, मुख्य रूप से प्राचीन 'ग्रेनाइट' चट्टानों से निर्मित है। यह कठोर आग्नेय पत्थर इस विशाल पर्वत श्रृंखला को मजबूती प्रदान करता है, जिससे इसकी चोटियाँ इतनी ऊँची रह पाती हैं।
ग्रेनाइट की यह परत भूगर्भीय हलचलों के दौरान गहराई से ऊपर की ओर धकेली गई थी। इसके ऊपर अवसादी और कायांतरित चट्टानों की परतें पाई जाती हैं। ग्रेनाइट की उपस्थिति यह दर्शाती है कि हिमालय की जड़ें अत्यंत गहरी और ठोस हैं। यह कठोर आधार ही इसे करोड़ों वर्षों के अपरदन के बावजूद विश्व का सर्वोच्च शिखर बनाए हुए है।

Click Here to Buy book on Amazon

के वृक्ष पाए जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपनी पत्तियाँ गिराने, फूल आने और फल लगने का समय अलग-अलग होता है।
इसके परिणामस्वरूप, पूरा वन कभी भी एक साथ पत्तियों से रहित नहीं होता और हमेशा हरा-भरा दिखाई देता है। ये वन 200 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा वाले गर्म और आर्द्र क्षेत्रों में विकसित होते हैं। आबनूस, महोगनी और रोजवुड इन वनों की प्रमुख प्रजातियाँ हैं जो बहु-स्तरीय संरचना बनाती हैं।

213. (C) ओडिशा
ओडिशा भारत में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जहाँ देश के कुल उत्पादन का आधे से अधिक हिस्सा प्राप्त होता है। यहाँ के कोरापुट जिले में स्थित पंचपतमाली निक्षेप राज्य के सबसे महत्वपूर्ण बॉक्साइट भंडार माने जाते हैं।
बॉक्साइट एल्युमीनियम धातु का मुख्य कच्चा माल है, जिसका उपयोग विमान उद्योग और बिजली के उपकरणों में किया जाता है। ओडिशा की यह खनिज संपन्नता राज्य में कई एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्रों की स्थापना का मुख्य आधार बनी है। संसाधनों का यह विशाल भंडार देश के औद्योगिक विकास और निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

214. (A) महाराष्ट्र और गोवा
भारत के पश्चिमी तटीय मैदान का उत्तरी भाग, जो महाराष्ट्र और गोवा राज्यों के तटों के साथ फैला हुआ है, 'कोंकण तट' के नाम से जाना जाता है। यह तट रेखा अत्यधिक कटी-फटी है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।
यहाँ कोंकण रेलवे का प्रसिद्ध नेटवर्क स्थित है जो इस दुर्गम और सुंदर क्षेत्र को जोड़ता है। इस तटीय पट्टी पर कई महत्वपूर्ण बंदरगाह और नारियल के बागान पाए जाते हैं। मानसूनी वर्षा यहाँ बहुत तीव्र होती है, जिससे यहाँ की स्थलाकृति और जनजीवन का स्वरूप निर्धारित होता है। यह क्षेत्र पर्यटन और मत्स्य पालन का केंद्र है।

215. (B) गेहूं और चावल
भारत में 1960 के दशक की 'हरित क्रांति' का सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव गेहूं और चावल के उत्पादन पर पड़ा। उन्नत बीजों, सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से इन खाद्यान्नों की पैदावार में कई गुना की अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई।
विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गेहूं का उत्पादन इतना बढ़ा कि भारत खाद्यान्न के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया। चावल के उत्पादन में भी व्यापक सुधार हुआ, जिससे देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई। इस क्रांति ने भारतीय कृषि को एक आधुनिक और व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करने में मदद की।

216. (C) कश्मीर
हिमालय पर्वतमाला की चौड़ाई पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर धीरे-धीरे कम होती जाती है। सुदूर पश्चिम में स्थित कश्मीर क्षेत्र में इसकी चौड़ाई सर्वाधिक है, जो लगभग 400 किलोमीटर तक विस्तृत है, जहाँ पर्वत श्रृंखलाएं बहुत फैली हुई हैं।
इसके विपरीत, पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक पहुँचते-पहुँचते यह चौड़ाई सिमटकर मात्र 150 किलोमीटर रह जाती है। चौड़ाई का यह अंतर विवर्तनिक प्लेटों के दबाव और टक्कर के प्रभाव को दर्शाता है। कश्मीर में हिमालय का यह विस्तृत विस्तार ऊँचे पठारों, गहरी घाटियों और अनेक पर्वत श्रेणियों के लिए प्रसिद्ध है।

217. (D) मुंबई
पुणे शहर का एक आधुनिक आईटी और शिक्षा केंद्र के रूप में विकास काफी हद तक मुंबई जैसे वैश्विक महानगर से इसकी निकटता के कारण हुआ है। मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे ने इन दोनों शहरों के बीच की दूरी को बहुत कम कर दिया है।
मुंबई की व्यावसायिक सफलता और पुणे की कुशल शैक्षणिक पृष्ठभूमि के मेल ने यहाँ एक शक्तिशाली औद्योगिक गलियारा बनाया है। कई बहुराष्ट्रीय आईटी कंपनियाँ और ऑटोमोबाइल उद्योग इसी निकटता का लाभ उठाने के लिए यहाँ स्थापित हुए हैं। यह भौगोलिक निकटता समूहन अर्थव्यवस्था का एक बेहतरीन उदाहरण है, जिसने पूरे क्षेत्र की आर्थिक तस्वीर बदल दी है।

218. (C) भूमध्य सागर
भारत में सर्दियों के दौरान आने वाले 'पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ' की उत्पत्ति मुख्य रूप से भूमध्य सागर के ऊपर होती है। ये चक्रवात पश्चिमी जेट धारा के प्रभाव में आकर मध्य पूर्व और इराक-ईरान को पार करते हुए भारत पहुँचते हैं।
जब ये विक्षोभ हिमालय के अवरोध से टकराते हैं, तो उत्तर भारत के मैदानी भागों में वर्षा और पहाड़ों पर हिमपात होता है। यह घटना रबी की फसलों, विशेष रूप से गेहूं के लिए बहुत लाभकारी है। यद्यपि ये चक्रवात भारत से बहुत दूर उत्पन्न होते हैं, लेकिन इनका प्रभाव हमारे शीतकालीन मौसम पर अत्यंत गहरा पड़ता है।

219. (C) लौह अयस्क
कर्नाटक की 'बेल्लारी-चित्रदुर्ग-चिकमगलूर-तुमकुर' पट्टी भारत में लौह अयस्क के सबसे बड़े निक्षेपों में से एक है। यहाँ उच्च श्रेणी का मैग्नेटाइट और हेमेटाइट अयस्क प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो औद्योगिक दृष्टि से बहुत कीमती है।
विशेष रूप से कुद्रेमुख और बाबा बुदान की पहाड़ियों में स्थित खदानें इस पट्टी का मुख्य केंद्र हैं। यहाँ से प्राप्त अयस्क का उपयोग स्थानीय इस्पात संयंत्रों में किया जाता है और इसे विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। खनिजों की यह प्रचुरता कर्नाटक को देश के औद्योगिक मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

NODIA

220. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत की विभिन्न श्रेणियों को उनके विशिष्ट नामों और ऊँचाई के आधार पर पहचाना जाता है। हिमाद्रि महान आंतरिक हिमालय है जहाँ सर्वोच्च शिखर स्थित हैं, जबकि हिमाचल श्रेणी को लघु हिमालय के नाम से जाना जाता है जो पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। शिवालिक हिमालय की सबसे बाहरी और नवीन श्रेणी है, जबकि पूर्वांचल भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित पहाड़ियों का समूह है। यह वर्गीकरण हिमालय के क्रमिक उत्थान और उसकी जटिल भौगोलिक संरचना को समझने में मदद करता

अधिक जनसंख्या के दबाव के कारण उर्वरकों, सिंचाई और श्रम का अत्यधिक उपयोग करके अधिकतम पैदावार ली जाती है। यह पद्धति उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ जमीन कम और जनसंख्या अधिक है। किसान आधुनिक इनपुट और बेहतर बीजों का उपयोग करके साल में कई फसलें उगाने का प्रयास करते हैं। निम्न उपज आमतौर पर पारंपरिक निर्वाह कृषि में देखी जाती है, जबकि गहन कृषि उत्पादकता बढ़ाने की एक निरंतर कोशिश है। यह भारत के सघन आबादी वाले मैदानी इलाकों की मुख्य कृषि प्रणाली है।

238. (B) तापीय ऊर्जा
नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC) भारत में तापीय ऊर्जा के उत्पादन के लिए जिम्मेदार सबसे बड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी है। यह मुख्य रूप से कोयले और गैस का उपयोग करके बड़े पैमाने पर विद्युत उत्पादन करती है, जो देश की ग्रिड का मुख्य आधार है।
एनटीपीसी के पास देश भर में फैले कई विशाल बिजली संयंत्र हैं जो औद्योगिक और घरेलू मांग को पूरा करते हैं। यद्यपि अब यह सौर और नवीकरणीय ऊर्जा की ओर भी कदम बढ़ा रहा है, लेकिन इसकी मुख्य पहचान तापीय ऊर्जा के क्षेत्र में विशेषज्ञता से ही है। भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में इस निगम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बुनियादी है।

239. (B) पूर्वी तटीय मैदान
चिल्का झील, जो भारत की खारे पानी की सबसे बड़ी झील है, ओडिशा के पूर्वी तटीय मैदान पर स्थित है। यह एक विशाल लैगून है जो बंगाल की खाड़ी से एक संकरी रेतीली पट्टी द्वारा अलग होता है, जो महानदी के मुहाने के निकट स्थित है।
यह झील अपनी जैव विविधता और प्रवासी पक्षियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। पूर्वी तटीय मैदान की यह विशिष्ट भौगोलिक विशेषता इसे मत्स्य पालन और पर्यावरण पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र बनाती है। चिल्का झील का पारिस्थितिकी तंत्र खारे और मीठे पानी के अनूठे मेल पर आधारित है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय महत्व का एक प्रमुख आर्द्रभूमि स्थल बनाता है।

240. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सूती वस्त्र उद्योग का भारतीय कृषि के साथ बहुत गहरा संबंध है क्योंकि यह उद्योग पूरी तरह से कच्चे कपास के उत्पादन पर निर्भर है। यह लाखों कपास उत्पादक किसानों के लिए नकद आय और आजीविका का प्राथमिक साधन है।
इसके अलावा, कपास की ओटाई, कताई, बुनाई और रंगाई जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं में बड़ी संख्या में ग्रामीण और शहरी श्रमिकों को रोजगार मिलता है। इस प्रकार, यह उद्योग न केवल विनिर्माण क्षेत्र को गति देता है, बल्कि कृषि क्षेत्र की समृद्धि और ग्रामीण विकास में भी सीधे तौर पर योगदान देता है। यह कृषि-औद्योगिक अंतर्संबंध राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का एक प्रमुख आधार है।

241. (C) जोजी ला
जोजी ला दर्रा हिमालय की महान पर्वत श्रृंखला में स्थित है जो श्रीनगर को लेह से जोड़ने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक मार्ग है। यह लगभग 3,528 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और इसे 'बर्फ का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है।
सर्दियों के दौरान भारी हिमपात के कारण यह मार्ग अक्सर बंद हो जाता है, जिससे लद्दाख का संपर्क शेष भारत से कट जाता है। इस समस्या को दूर करने के लिए यहाँ एक आधुनिक सुरंग का निर्माण भी किया जा रहा है। यह दर्रा व्यापार, पर्यटन और रक्षा की दृष्टि से भारत के लिए बहुत ऊँचा भौगोलिक और रणनीतिक महत्व रखता है।

242. (C) असामिका और साइनेंसिस
भारत में उगाई जाने वाली चाय की दो प्रमुख वैज्ञानिक किस्में 'असामिका' और 'साइनेंसिस' हैं। असामिका किस्म मुख्य रूप से असम के गर्म और आर्द्र मैदानी इलाकों में उगाई जाती है, जहाँ इसकी पत्तियाँ बड़ी होती हैं।
साइनेंसिस किस्म तुलनात्मक रूप से ठंडे और ऊँचे क्षेत्रों जैसे दार्जिलिंग में उगाई जाती है, जो अपनी विशिष्ट सुगंध के लिए प्रसिद्ध है। इन दोनों किस्मों ने भारत को विश्व में चाय उत्पादन और निर्यात में एक अग्रणी शक्ति बना दिया है। चाय के बागानों की यह विविधता विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की जलवायु और मृदा के अनुकूलन को दर्शाती है।

243. (A) ऊँचाई के साथ तापमान में कमी।
हिमालयी क्षेत्रों में ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान में होने वाली गिरावट वनस्पति के स्वरूप में परिवर्तन का मुख्य कारण है। जैसे-जैसे हम ऊपर जाते हैं, जलवायु उष्णकटिबंधीय से शीतोष्ण और फिर अल्पाइन में बदल जाती है।
इसी तापमान परिवर्तन के कारण निचले हिस्सों में सघन वन पाए जाते हैं, जो ऊँचाई पर जाकर शंकुधारी वृक्षों और अंततः केवल काई एवं लाइकेन जैसी टुंड्रा वनस्पति में सिमट जाते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे ऊँचाई प्राकृतिक रूप से पौधों की प्रजातियों के वितरण को नियंत्रित करती है। यह ऊर्ध्वाधर विविधता हिमालय को जैविक रूप से अत्यंत समृद्ध और विशिष्ट बनाती है।

244. (B) प्राकृतिक गैस
हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर (HVJ) पाइपलाइन भारत की पहली और सबसे बड़ी अंतर-राज्यीय प्राकृतिक गैस पाइपलाइन है। यह गुजरात के हजीरा को मध्य प्रदेश के विजयपुर और उत्तर प्रदेश के जगदीशपुर से जोड़ती है, जो देश के औद्योगिक गलियारे को ऊर्जा प्रदान करती है।
इस पाइपलाइन का मुख्य उद्देश्य उर्वरक संयंत्रों, बिजली घरों और अन्य उद्योगों को स्वच्छ ईंधन की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना है। इसकी कुल लंबाई 1,700 किलोमीटर से अधिक है। इसने उत्तर और पश्चिम भारत के औद्योगिक विकास में क्रांतिकारी बदलाव लाया है और प्रदूषण कम करने में भी मदद की है। यह गैस परिवहन के क्षेत्र में भारत की एक बड़ी बुनियादी ढांचागत उपलब्धि है।

245. (B) मध्य भाग (कन्नड़)
पश्चिमी तटीय मैदान अपनी संपूर्ण लंबाई में एक समान चौड़ा नहीं है, बल्कि इसका मध्य भाग, जिसे 'कन्नड़ मैदान' कहा जाता

Downloaded from www.pdf.tube

में 'अवशिष्ट पर्वत' के रूप में बची है। ये पहाड़ियाँ अत्यधिक अपरदित हो चुकी हैं और इनकी ऊँचाई अब काफी कम हो गई है।
यह श्रेणी गुजरात से लेकर दिल्ली तक फैली हुई है और राजस्थान के रेगिस्तान को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है। भूवैज्ञानिक दृष्टि से यह श्रृंखला हिमालय से भी बहुत पुरानी है। आज यह मुख्य रूप से विच्छेदित पहाड़ियों के रूप में दिखाई देती है, जो धात्विक खनिजों और भवन निर्माण सामग्री के भंडार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

230. (C) हिमालय श्रृंखला
मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा जब उत्तर-पूर्व भारत की ओर बढ़ती है, तो वह ऊँची हिमालय श्रृंखलाओं से टकराती है। हिमालय का यह विशाल अवरोध इन पवनों को आगे बढ़ने से रोकता है और उन्हें पश्चिम की ओर मुड़ने के लिए मजबूर कर देता है।
इसके परिणामस्वरूप, यह मानसूनी शाखा गंगा के मैदानों के समानांतर बहती है और संपूर्ण उत्तर भारत में वर्षा करती है। हिमालय की स्थिति के बिना, ये आर्द्र पवनें तिब्बत की ओर निकल जातीं और उत्तर भारत एक शुष्क क्षेत्र रह जाता। अतः हिमालय का उच्चावच भारत की वर्षा प्रणाली और कृषि के लिए एक निर्णायक भौगोलिक कारक है।

231. (C) चूना पत्थर
सीमेंट के उत्पादन में चूना पत्थर का उपयोग मुख्य कच्चे माल के रूप में किया जाता है। सीमेंट उद्योग को एक 'भारी' उद्योग माना जाता है क्योंकि इसमें उपयोग होने वाले अयस्क और तैयार माल दोनों ही वजन में बहुत भारी और स्थूल होते हैं।
चूना पत्थर की प्रचुरता के कारण ही सीमेंट कारखाने अक्सर उन क्षेत्रों में लगाए जाते हैं जहाँ इसकी खदानें पास हों, ताकि परिवहन लागत कम की जा सके। इसके अलावा जिप्सम और कोयला भी अन्य महत्वपूर्ण सहायक सामग्री हैं। चूना पत्थर की गुणवत्ता सीधे तौर पर सीमेंट की मजबूती और उसके औद्योगिक मानकों को निर्धारित करती है।

232. (C) भांगर
भांगर उत्तरी मैदानों का वह उच्च भाग है जो पुराने जलोढ़ निक्षेपों से बना है। इस क्षेत्र की एक विशिष्ट विशेषता इसमें मौजूद 'कंकड़' की परतें हैं, जो मृदा में जमा चूनेदार ग्रंथियों के रूप में पाई जाती हैं, जो इसकी पुरानी उत्पत्ति का प्रमाण हैं।
यह मिट्टी बाढ़ के मैदानों से ऊपर स्थित होने के कारण सुरक्षित रहती है, लेकिन कंकड़ों की प्रचुरता के कारण इसे उपजाऊ बनाने के लिए अधिक मेहनत की आवश्यकता होती है। खादर की तुलना में यहाँ की मिट्टी अधिक शुष्क और कठोर होती है। सिंचाई और खाद के संतुलित उपयोग से भांगर क्षेत्र में भी कृषि उत्पादन सफलतापूर्वक किया जाता है।

233. (C) बागवानी
फलों, सब्जियों, फूलों और औषधीय पौधों की सघन और वैज्ञानिक कृषि को 'बागवानी' कहा जाता है। भारत की विविध जलवायु स्थितियों के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार के उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण फलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है।
भारत विश्व में फलों और सब्जियों के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है, जहाँ आम, केला और सेब जैसे फलों की वैश्विक मांग है। बागवानी न केवल किसानों को उच्च आय प्रदान करती है, बल्कि यह पोषण सुरक्षा और ग्रामीण रोजगार के लिए भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। हाल के वर्षों में तकनीकी प्रगति से इस क्षेत्र में व्यापक सुधार हुआ है।

234. (C) Petroleum
मुंबई हाई, बेसिन और अंकलेश्वर भारत के सबसे महत्वपूर्ण पेट्रोलियम उत्पादक क्षेत्र हैं। मुंबई हाई अरब सागर में स्थित एक अपतटीय क्षेत्र है जो देश के कुल कच्चे तेल उत्पादन का सर्वाधिक हिस्सा प्रदान करता है, जबकि अंकलेश्वर गुजरात का प्रमुख तटवर्ती तेल क्षेत्र है।
ये क्षेत्र भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने और तेल आयात पर निर्भरता कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ से प्राप्त कच्चा तेल विभिन्न रिफाइनरियों में भेजा जाता है जहाँ से पेट्रोल, डीजल और अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। इन तेल क्षेत्रों की खोज ने भारत के औद्योगिक और परिवहन क्षेत्र को एक नई गति प्रदान की है।

NODIA

235. (B) मेघालय का पठार (प्रायद्वीपीय पठार का विस्तार)
गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियाँ भौगोलिक रूप से मेघालय के पठार का हिस्सा हैं। यद्यपि ये उत्तर-पूर्व में स्थित हैं, लेकिन भूवैज्ञानिक दृष्टि से ये हिमालय का अंग नहीं हैं, बल्कि दक्षिण के विशाल प्रायद्वीपीय पठार का ही एक पूर्वी विस्तार मानी जाती हैं।
एक भ्रंश के कारण यह हिस्सा मुख्य पठार से अलग हो गया था। ये पहाड़ियाँ अपनी अत्यधिक वर्षा और चेरापूंजी-मौसिनराम जैसे स्थानों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ की संरचना बहुत प्राचीन है और यह धात्विक खनिजों के साथ-साथ समृद्ध जैव विविधता का भी घर है। यह पठार भारत की उत्तर-पूर्वी भौगोलिक पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है।

236. (A) यह कीप के आकार की खासी पहाड़ियों के पवनमुखी ढाल पर स्थित है।
मौसिनराम में विश्व की सर्वाधिक वर्षा होने का प्राथमिक कारण इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति है। यह खासी पहाड़ियों के दक्षिणी ढाल पर स्थित है, जिनकी आकृति एक कीप के समान है जो मानसूनी पवनों को चारों ओर से घेरकर ऊपर उठने पर मजबूर करती है।
जब बंगाल की खाड़ी से आने वाली अत्यधिक आर्द्र पवनें इस कीप जैसी संरचना में प्रवेश करती हैं, तो वे तेजी से ऊपर उठकर भारी संघनन करती हैं, जिससे मूसलाधार बारिश होती है। यह स्थानीय उच्चावच का प्रभाव है जो इसे विश्व का सबसे नम स्थान बनाता है। यहाँ की जलवायु और वनस्पति पूरी तरह से इसी अत्यधिक वर्षा पर आधारित है।

237. (C) प्रति इकाई क्षेत्र में निम्न उपज
गहन जीविका कृषि की मुख्य विशेषता प्रति इकाई क्षेत्र में 'उच्च' उपज प्राप्त करना है, न कि निम्न। इसमें सीमित भूमि पर

यह व्यापक उपयोग पर्यावरण संरक्षण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने की दिशा में भारत के प्रयासों का एक सफल उदाहरण है।

269. (C) सुहावने दिन और ठंडी रातें
उत्तर भारत में शीत ऋतु की मौसम संबंधी विशेषता मुख्य रूप से सुहावने, धूप वाले दिन और काफी ठंडी रातों द्वारा चिह्नित होती है। इस समय आसमान आमतौर पर साफ रहता है और तापमान में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की जाती है, जिससे मौसम बहुत सुखद हो जाता है।
यह स्थिति दिसंबर और जनवरी के महीनों में अपने चरम पर होती है। साफ आसमान के कारण दिन में खिली हुई धूप निकलती है, लेकिन सूर्यास्त के बाद विकिरण के कारण गर्मी तेजी से कम हो जाती है, जिससे रातें बर्फीली और ठंडी हो जाती हैं। यह जलवायु रबी की फसलों के विकास और स्थानीय पर्यटन के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती है।

270. (B) विनिर्माण उद्योग
किसी भी देश की आर्थिक शक्ति और समृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण पैमाना उसके 'विनिर्माण उद्योग' के विकास की सीमा और गुणवत्ता से मापा जाता है। विनिर्माण क्षेत्र कच्चे माल को उच्च मूल्य वाले उत्पादों में बदलकर देश की जीडीपी और निर्यात क्षमता को बढ़ाता है।
यह क्षेत्र न केवल लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है, बल्कि कृषि और सेवा क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक मशीनरी और उपकरण भी उपलब्ध कराता है। विकसित राष्ट्रों का इतिहास गवाह है कि औद्योगिक मजबूती ही स्थायी आर्थिक विकास का मुख्य आधार है। भारत में भी विनिर्माण को बढ़ावा देना आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक अनिवार्य कदम माना गया है।

271. (B) वह पादप समुदाय जो मानवीय हस्तक्षेप के बिना प्राकृतिक रूप से विकसित हुआ है
'अक्षत वनस्पति' उस पादप समुदाय को संदर्भित करती है जो लंबे समय तक मानवीय हस्तक्षेप से दूर रहकर अपने प्राकृतिक स्वरूप में विकसित हुई है। इसे 'शुद्ध प्राकृतिक वनस्पति' भी कहा जाता है, जहाँ प्रजातियों का वितरण केवल पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करता है।
भारत में इस प्रकार की वनस्पति अब केवल दुर्गम हिमालयी क्षेत्रों, थार मरुस्थल के कुछ आंतरिक भागों और अंडमान के घने जंगलों में ही शेष बची है। कृषि फसलें और बागान अक्षत वनस्पति नहीं कहलाते क्योंकि वे मनुष्यों द्वारा लगाए और प्रबंधित किए जाते हैं। इस वनस्पति का संरक्षण जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

272. (C) बरकान
राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तानी भागों में पवनों के जमाव कार्य द्वारा निर्मित अर्धचंद्राकार रेत के टीलों को 'बरकान' कहा जाता है। ये टीले गतिशील होते हैं और पवन की दिशा के अनुसार धीरे-धीरे अपना स्थान बदलते रहते हैं, जो मरुस्थलीय स्थलाकृति की एक प्रमुख विशेषता है।
बरकान का एक ढाल मंद होता है जबकि दूसरा बहुत तीव्र, जो चाँद के आकार जैसा दिखाई देता है। भारत-पाकिस्तान सीमा के निकट जैसलमेर क्षेत्र में इन विशाल बरकानों का सघन विस्तार देखा जा सकता है। ये रेत के टीले न केवल मरुस्थल की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि पवन अपरदन और निक्षेपण की प्रक्रियाएँ यहाँ कितनी सक्रिय हैं।

273. (C) मिर्जापुर
भारतीय मानक समय की गणना 82°30'E देशांतर रेखा के आधार पर की जाती है, जो उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से होकर गुजरती है। यह रेखा पूरे भारत के लिए एक ही मानक समय निर्धारित करती है, जिससे प्रशासनिक और दैनिक कार्यों में एकरूपता बनी रहती है।
यह देशांतर रेखा ग्रीनविच मीन टाइम से 5 घंटे 30 मिनट आगे है। इसे चुनने का मुख्य कारण यह है कि यह भारत के पूर्वी और पश्चिमी देशांतरीय छोरों के लगभग मध्य में स्थित है, जिससे देश के दोनों हिस्सों के समय के बीच का अंतर संतुलित हो जाता है। समय की यह एकरूपता राष्ट्र के एकीकरण और सुचारू संचालन के लिए अनिवार्य है।

274. (C) अरब सागर
ताप्ती नदी प्रायद्वीपीय भारत की उन गिनी-चुनी बड़ी नदियों में से एक है जो भ्रंश घाटी में बहते हुए पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। यह मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में सतपुड़ा की पहाड़ियों से निकलकर अंततः गुजरात के सूरत के निकट 'अरब सागर' में गिरती है।
यह नदी अपने मुहाने पर डेल्टा नहीं बनाती, बल्कि एक 'ज्वारनदमुख' का निर्माण करती है। नर्मदा की तरह ताप्ती भी उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक भौगोलिक सीमा की तरह कार्य करती है। इसकी कुल लंबाई लगभग 724 किलोमीटर है और यह खंभात की खाड़ी के माध्यम से समुद्र में विलीन हो जाती है।

275. (A) 3-2-4-1
भारत के औद्योगिक विकास का इतिहास विभिन्न महत्वपूर्ण चरणों से गुजरा है। सबसे पहले 1854 में मुंबई में सूती वस्त्र मिल की स्थापना हुई, जिसके बाद 1855 में रिशरा में प्रथम जूट मिल बनी। ये औपनिवेशिक काल के दौरान औद्योगिक नींव के शुरुआती पत्थर थे।
स्वतंत्रता के बाद, 1950 के दशक में भिलाई जैसे विशाल इस्पात संयंत्रों की स्थापना की गई ताकि भारी उद्योगों को बढ़ावा मिल सके। अंततः, 1991 में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति लागू की गई, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व के लिए खोल दिया। यह कालक्रम देश की आर्थिक नीतियों में आए बड़े बदलावों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

276. (B) जलवायु प्रादेशीकरण
मानसूनी वर्षा की क्षेत्रीय भिन्नता, जहाँ मेघालय में अत्यधिक वर्षा होती है और राजस्थान में बहुत कम, भारत के 'जलवायु प्रादेशीकरण' का मुख्य आधार बनती है। यह विभिन्न क्षेत्रों को उनकी विशिष्ट वर्षा और तापमान के स्वरूप के अनुसार अलग-अलग जलवायु क्षेत्रों में विभाजित करने में मदद करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

है, अन्य हिस्सों की तुलना में सर्वाधिक संकरा है। यह भाग मुख्य रूप से कर्नाटक राज्य के तट के साथ स्थित है।
इसके विपरीत, कोंकण (उत्तरी भाग) और मालाबार (दक्षिणी भाग) तुलनात्मक रूप से थोड़े अधिक चौड़े हैं। मैदान का यह संकरापन पश्चिमी घाट के समुद्र के अत्यंत निकट होने के कारण है। यहाँ की नदियाँ बहुत छोटी और तीव्रगामी हैं, जिससे यहाँ बड़े मैदानों या डेल्टाओं के निर्माण के लिए पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता है।

246. (C) अक्षांश
भारत के दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ने पर अक्षांशीय स्थिति में होने वाला बदलाव दिन और रात की अवधि में अंतर पैदा करता है। भूमध्य रेखा के निकट होने के कारण दक्षिण भारत में दिन और रात के समय में बहुत कम अंतर होता है।
जैसे-जैसे हम उत्तर की ओर बढ़ते हैं, यह अंतर और अधिक स्पष्ट हो जाता है। अक्षांश सूर्य की किरणों के कोण और उनकी प्राप्ति की अवधि को प्रभावित करता है, जिससे तापमान और ऋतुओं की तीव्रता भी बदलती है। यह भौगोलिक कारक देश की कृषि और विभिन्न क्षेत्रों के दैनिक जीवन चक्र को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

247. (C) चावल
चावल भारत की सबसे प्रमुख और व्यापक रूप से उगाई जाने वाली खाद्यान्न फसल है, जो देश की आधी से अधिक जनसंख्या का मुख्य भोजन है। भारत विश्व में चावल के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है और इसकी खेती लगभग हर राज्य में की जाती है। इसके उत्पादन के लिए प्रचुर जल और उच्च तापमान की आवश्यकता होती है, जिसके कारण यह मानसून पर बहुत अधिक निर्भर है। उत्तर-पूर्वी राज्यों और तटीय मैदानों में चावल की सघन कृषि की जाती है। खाद्यान्न उत्पादन और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में चावल की भूमिका भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के लिए प्राथमिक और अनिवार्य है।

248. (A) दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी की प्रमुख नदी घाटियों में।
भारत के विशाल कोयला भंडार का लगभग 98 प्रतिशत हिस्सा 'गोंडवाना' काल की चट्टानों में पाया जाता है। ये निक्षेप मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदी घाटियों जैसे दामोदर, महानदी, सोन और गोदावरी में संकेंद्रित हैं।
झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और ओडिशा इन कोयला क्षेत्रों के मुख्य केंद्र हैं। इन क्षेत्रों की भूगर्भीय संरचना लाखों वर्षों तक वनस्पतियों के दबने से कोयले के निर्माण के लिए अत्यंत अनुकूल रही है। यह कोयला भारत के लोहा-इस्पात उद्योग और तापीय विद्युत उत्पादन के लिए ऊर्जा का मुख्य और सबसे सस्ता स्रोत बना हुआ है।

249. (C) इसे आर्थिक विकास की रीढ़ माना जाता है।
विनिर्माण क्षेत्र को किसी भी राष्ट्र के 'आर्थिक विकास की रीढ़' माना जाता है क्योंकि यह न केवल कृषि के आधुनिकीकरण में मदद करता है, बल्कि रोजगार के अन्य अवसर भी प्रदान करता है। यह कच्चे माल को मूल्यवान उत्पादों में बदलकर निर्यात को बढ़ावा देता है।
एक मजबूत विनिर्माण आधार बेरोजगारी और गरीबी को कम करने के लिए अनिवार्य है। भारत में 'मेक इन इंडिया' जैसी पहल इसी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए शुरू की गई है। यद्यपि जीडीपी में इसका योगदान सेवा क्षेत्र से कम है, फिर भी इसकी व्यापकता और अन्य क्षेत्रों के साथ इसके जुड़ाव के कारण यह देश की प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण इंजन है।

250. (C) केवल 1 और 3
भारत की भू-आकृति में हिमालय एक नवीन वलित पर्वत श्रृंखला है जो अभी भी विकास की प्रक्रिया में है, जबकि प्रायद्वीपीय पठार पृथ्वी के सबसे प्राचीन और स्थिर भू-भागों में से एक है। ये दोनों संरचनाएं देश के भौगोलिक विन्यास के दो विपरीत छोरों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
उत्तरी मैदान आग्नेय चट्टानों से नहीं, बल्कि नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ अवसादों से निर्मित हुए हैं। हिमालय की ऊँचाई और विवर्तनिक अस्थिरता इसे एक गतिशील क्षेत्र बनाती है, जबकि पठार अपनी ठोस प्राचीन संरचना के कारण भूकंपीय रूप से सुरक्षित है। यह विविधता भारत को विभिन्न प्रकार के खनिज संसाधनों और समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ प्रदान करती है।

251. (C) यह पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ का कारण बनता है।
ग्रीष्म ऋतु में 'अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र' का उत्तर की ओर खिसकना भारतीय मानसून के आगमन के लिए एक आवश्यक घटना है। यह उत्तरी मैदानों के ऊपर एक गहरा निम्न वायुदाब का क्षेत्र बनाता है जो मानसूनी पवनों को आकर्षित करता है।
इसके विपरीत, पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ सर्दियों की घटना है जो जेट स्ट्रीम के कारण होती है, न कि इस खिसकाव से। आईटीसीजेड का यह विस्थापन मानसूनी वर्षा की शुरुआत और उसके वितरण को निर्धारित करने में मुख्य भूमिका निभाता है। यह मौसमी बदलाव देश के तापमान और वायुमंडलीय दबाव प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है, जो कृषि के लिए निर्णायक है।

252. (B) चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िया, बाघ, शेर
उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों और झाड़ियों के शुष्क वातावरण में ऐसे जंतु पाए जाते हैं जो कम पानी और उच्च तापमान वाली परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं। इन क्षेत्रों में चूहे, खरगोश, लोमड़ी और भेड़िये जैसे छोटे और फुर्तीले शिकारी जंतु सामान्य रूप से मिलते हैं।
इसके अलावा, गुजरात के गिर जैसे क्षेत्रों में एशियाई शेर भी पाए जाते हैं जो इसी प्रकार की वनस्पति वाले इलाकों में रहना पसंद करते हैं। यहाँ के वन्यजीवों ने रेगिस्तानी और अर्ध-शुष्क वातावरण में जीवित रहने के लिए विशिष्ट व्यवहार विकसित किए हैं। इन वनों का विरल आवरण इन जंतुओं को दूर तक देखने और शिकार करने में सहायता करता है।

253. (D) पश्चिम बंगाल
पश्चिम बंगाल भारत का सबसे बड़ा जूट उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का एक बहुत बड़ा हिस्सा अकेले पैदा करता है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और

Downloaded from www.pdf.tube

है। प्रत्येक श्रेणी की अपनी विशिष्ट जलवायु, वनस्पति और पारिस्थितिकी है जो देश के लिए महत्वपूर्ण है।

221. (B) मानसून और प्राकृतिक उर्वरता पर कृषि की निर्भरता
भारत में कृषि की प्रति हेक्टेयर निम्न उपज का एक बड़ा कारण आज भी सिंचाई की आधुनिक सुविधाओं का अभाव और मानसून पर अत्यधिक निर्भरता है। अधिकांश किसान वर्षा के समय और मात्रा पर ही अपनी फसलों के लिए आश्रित रहते हैं। इसके अतिरिक्त, कई क्षेत्रों में मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता पर ही भरोसा किया जाता है, जहाँ आधुनिक उर्वरकों और वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग बहुत सीमित है। छोटे भू-जोतों और परंपरागत खेती के तरीकों के कारण भी उत्पादकता प्रभावित होती है। जब तक कृषि में तकनीक और बुनियादी ढांचे का सुधार नहीं होता, तब तक यह चुनौती बनी रहेगी।

222. (C) पृथ्वी की सतह की भौतिक विशेषताएं
'भू-आकृति' शब्द का प्रयोग किसी क्षेत्र की प्राकृतिक बनावट और पृथ्वी की सतह पर मौजूद भौतिक लक्षणों जैसे पहाड़ों, मैदानों, पठारों और नदियों के अध्ययन के लिए किया जाता है। यह भूगोल की एक प्रमुख शाखा है।
यह विषय यह समझाने में मदद करता है कि विभिन्न स्थलाकृतियाँ कैसे और किन भूगर्भीय प्रक्रियाओं के माध्यम से बनी हैं। किसी देश की फिजियोग्राफी उसकी जलवायु, वनस्पति, जल निकासी प्रणाली और यहाँ तक कि मानवीय आर्थिक गतिविधियों को भी निर्धारित करती है। भारत की विविध भू-आकृति इसे एक अद्वितीय भौगोलिक पहचान प्रदान करती है जो इसकी सांस्कृतिक समृद्धि का आधार है।

223. (C) मानसूनी जलवायु
भारत की जलवायु का सबसे सटीक और व्यापक वर्णन 'मानसूनी जलवायु' के रूप में किया जाता है। यह नाम पवनों की दिशा में होने वाले मौसमी परिवर्तन के कारण पड़ा है, जो देश की पूरी वर्षा प्रणाली और ऋतु चक्र को नियंत्रित करता है। यद्यपि भारत एक विशाल देश है और यहाँ क्षेत्रीय विविधताएं पाई जाती हैं, लेकिन मानसूनी पवनों का एकता स्थापित करने वाला प्रभाव इसे एक सूत्र में बांधता है। कृषि से लेकर त्यौहारों तक, भारतीय जनजीवन का हर पहलू मानसून की लय के साथ जुड़ा हुआ है। यह जलवायु प्रकार दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशिया की विशिष्ट पहचान है।

224. (C) चना
चना भारत की एक प्रमुख रबी फसल है जिसे शीत ऋतु के दौरान बोया जाता है। यह एक दलहन फसल है जिसे कम नमी और ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। चने की खेती मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत के शुष्क क्षेत्रों में की जाती है।
इसके विपरीत, मक्का, ज्वार और बाजरा खरीफ की फसलें हैं जो मानसून के दौरान उगाई जाती हैं। रबी की फसलों में गेहूं और सरसों के साथ चने का महत्वपूर्ण स्थान है। यह न केवल पोषण का एक बड़ा स्रोत है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक होता है क्योंकि यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण करता है।

225. (C) तमिलनाडु
नेवेली लिग्नाइट खदानें तमिलनाडु राज्य के कुड्डालोर जिले में स्थित हैं, जो भारत में लिग्नाइट का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण भंडार है। यहाँ खनन और बिजली उत्पादन के लिए 'नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन' द्वारा बड़े पैमाने पर कार्य किया जाता है। इस क्षेत्र से प्राप्त कोयला मुख्य रूप से दक्षिण भारत के तापीय विद्युत संयंत्रों की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करता है। लिग्नाइट में कार्बन की मात्रा कम और नमी अधिक होती है, लेकिन यहाँ उपलब्ध भंडार औद्योगिक विकास के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं। यह क्षेत्र राज्य की बिजली आपूर्ति और औद्योगिक स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

226. (C) केरल
भारत के पश्चिमी तटीय मैदान का सुदूर दक्षिणी भाग, जो मुख्य रूप से केरल राज्य के साथ फैला हुआ है, 'मालाबार तट' के नाम से जाना जाता है। यह तट अपने सुंदर लैगून, नारियल के बागानों और मसालों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है।
ऐतिहासिक रूप से यह तट अंतरराष्ट्रीय मसाला व्यापार का मुख्य केंद्र रहा है। यहाँ मानसून का आगमन सबसे पहले होता है, जिससे यहाँ सघन वर्षा और प्रचुर वनस्पति पाई जाती है। वेम्बनाड झील इसी तट का हिस्सा है। अपनी अद्वितीय भौगोलिक विशेषताओं के कारण मालाबार तट पर्यटन और मत्स्य पालन का एक प्रमुख वैश्विक केंद्र है।

227. (C) सागौन
भारत के उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वनों में 'सागौन' सबसे प्रभावशाली और व्यावसायिक रूप से मूल्यवान वृक्ष प्रजाति है। ये वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 100 से 200 सेंटीमीटर के बीच होती है और इनमें सघनता अधिक होती है। सागौन की लकड़ी अपनी मजबूती, टिकाऊपन और दीमक प्रतिरोधक गुणों के कारण फर्नीचर और जहाज निर्माण के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। इन वनों में सागौन के साथ साल, शीशम और महुआ जैसे अन्य उपयोगी वृक्ष भी मिलते हैं। मानसून के दौरान इन वनों की हरियाली और आर्थिक महत्ता भारतीय वानिकी क्षेत्र का एक प्रमुख गौरव है।

228. (B) टिस्को (TISCO)
टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO), जिसे अब 'टाटा स्टील' के नाम से जाना जाता है, भारत का सबसे पुराना और प्रमुख निजी क्षेत्र का इस्पात उपक्रम है। इसकी स्थापना 1907 में जमशेदजी टाटा द्वारा जमशेदपुर में की गई थी, जो आज एक वैश्विक औद्योगिक शक्ति है।
सेल, भिलाई और राउरकेला जैसे अन्य संयंत्र भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हैं। टिस्को की सफलता ने यह साबित किया कि निजी उद्यम भारत के औद्योगिक विकास में कितनी बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। यह संयंत्र कच्चे माल की निकटता और उत्कृष्ट प्रबंधन के कारण आज भी देश के सबसे सफल इस्पात निर्माताओं में से एक है।

229. (D) प्राचीन और अत्यधिक अपरदित अवशिष्ट पर्वत
अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में से एक है, जो करोड़ों वर्षों की अपरदन प्रक्रिया के कारण वर्तमान

NODIA

261. (A) पूर्व से पश्चिम
भारत में मानसूनी वर्षा की मात्रा सामान्यतः पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर धीरे-धीरे कम होती जाती है। गंगा डेल्टा और बंगाल के क्षेत्रों में मानसूनी पवनें अत्यधिक नमी लेकर आती हैं, जिससे वहाँ बहुत भारी वर्षा होती है।
जैसे-जैसे ये पवनें मैदानी इलाकों में पश्चिम की ओर बढ़ती हैं, इनकी नमी की मात्रा घटती जाती है। इसके परिणामस्वरूप, कोलकाता की तुलना में दिल्ली और राजस्थान में वर्षा काफी कम होती है। वर्षा का यह घटता क्रम कृषि के स्वरूप और फसलों के चयन को भी गहराई से प्रभावित करता है, जहाँ पूर्व में चावल और पश्चिम में गेहूं की प्रधानता दिखाई देती है।

262. (C) यूरेनियम
परमाणु ऊर्जा के उत्पादन के लिए यूरेनियम और थोरियम जैसे रेडियोधर्मी खनिज सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अनिवार्य स्रोत हैं। यूरेनियम का उपयोग परमाणु रिएक्टरों में नाभिकीय विखंडन की प्रक्रिया के माध्यम से बड़ी मात्रा में स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।
भारत में यूरेनियम के भंडार झारखंड और राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इसके अलावा, भारत के पास विश्व के सबसे बड़े थोरियम भंडार हैं, जो केरल की मोनोजाइट रेत में मिलते हैं। जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करने और भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इन परमाणु खनिजों का रणनीतिक महत्व अत्यंत उच्च है।

263. (C) गोंडवानालैंड
भारत का प्रायद्वीपीय पठार भूवैज्ञानिक रूप से प्राचीन 'गोंडवानालैंड' का एक हिस्सा है, जो करोड़ों वर्ष पूर्व एक विशाल महाद्वीप का अंग था। इसके टूटने और उत्तर की ओर खिसकने से ही वर्तमान भारतीय उपमहाद्वीप की नींव पड़ी, जो इसे पृथ्वी की प्राचीनतम सतहों में से एक बनाता है।
यह पठार मुख्य रूप से कठोर आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से बना है जो अत्यधिक स्थिर हैं। इसकी प्राचीनता ही यहाँ पाए जाने वाले प्रचुर खनिज भंडारों और विशिष्ट स्थलाकृतियों का मुख्य कारण है। गोंडवाना उत्पत्ति का यह तथ्य भारत के विवर्तनिक इतिहास और इसके महाद्वीपीय विस्थापन की लंबी यात्रा को प्रमाणित करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

264. (C) सघन, बहु-स्तरीय सदाबहार वनों की प्रधानता।
पश्चिमी घाट जैसे भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन पाए जाते हैं। इन वनों की प्राथमिक विशेषता उनकी अत्यधिक सघनता और बहु-स्तरीय संरचना है, जहाँ विभिन्न ऊँचाइयों पर वृक्षों, झाड़ियों और लताओं के अलग-अलग स्तर पाए जाते हैं।
यहाँ के वृक्षों की पत्तियाँ वर्ष भर हरी रहती हैं और उनकी ऊँचाई 60 मीटर से भी अधिक हो सकती है। सघन छतरी के कारण सूर्य का प्रकाश जमीन तक बहुत कम पहुँच पाता है। यह पारिस्थितिकी तंत्र जैव विविधता का एक विशाल भंडार है, जहाँ कई स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं जो केवल इसी विशेष वातावरण में जीवित रह सकती हैं।

265. (C) इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग
'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम ने भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग को एक अभूतपूर्व गति प्रदान की है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज बनाना है, जिससे हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों की मांग में भारी वृद्धि हुई है।
इसके परिणामस्वरूप मोबाइल निर्माण, सॉफ्टवेयर विकास और डेटा सेवाओं के क्षेत्र में भारत एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभरा है। इस कार्यक्रम ने डिजिटल बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा दिया है, जिससे न केवल तकनीकी क्षेत्र को लाभ हुआ है, बल्कि बैंकिंग और शिक्षा जैसी सेवाएं भी आम नागरिकों तक आसानी से पहुँची हैं। यह आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए एक निर्णायक मोड़ है।

266. (D) मक्का
मोटे अनाज, जिन्हें 'मिलेट्स' भी कहा जाता है, उनमें ज्वार, बाजरा और रागी शामिल हैं। ये फसलें कम वर्षा और कम उपजाऊ मिट्टी में भी उगाई जा सकती हैं और इनका पोषण मूल्य बहुत उच्च होता है। मक्का को सामान्यतः एक खाद्यान्न और चारे की फसल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
मक्का की खेती के लिए थोड़ी अधिक नमी और विशिष्ट जलवायु की आवश्यकता होती है, जो इसे पारंपरिक मोटे अनाजों से अलग बनाती है। हालांकि मक्का भी पोषक तत्वों से भरपूर है, लेकिन मोटे अनाजों की श्रेणी में मुख्य रूप से शुष्क क्षेत्रों की फसलों को ही रखा जाता है। ये फसलें भारत की पोषण सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

267. (B) भारत-गंगा का मैदान
भारत का विशाल उत्तरी मैदान, जिसे 'भारत-गंगा का मैदान' भी कहा जाता है, प्रायद्वीपीय पठार और हिमालयी पर्वत श्रृंखला के बीच एक प्राकृतिक विभाजक रेखा के रूप में स्थित है। यह मैदान इन दोनों विपरीत भू-आकृतिक विभागों को एक-दूसरे से भौगोलिक रूप से पृथक करता है।
यह मैदान नदियों द्वारा लाए गए गहरे जलोढ़ निक्षेपों से बना है और दक्षिण के प्राचीन पठार को उत्तर के नवीन वलित पर्वतों से जोड़ता है। इसकी समतल स्थलाकृति और उपजाऊ मृदा ने इसे देश का सबसे सघन बसा हुआ क्षेत्र बना दिया है। यह मैदान न केवल एक सीमा का कार्य करता है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का मुख्य केंद्र भी है।

268. (C) तमिलनाडु
तमिलनाडु भारत में पवन ऊर्जा के उत्पादन में अग्रणी राज्य है, जहाँ कन्याकुमारी से लेकर मदुरै तक विशाल पवन चक्की फार्म स्थापित किए गए हैं। मुप्पंडल पवन फार्म देश का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण पवन ऊर्जा केंद्र है, जो स्वच्छ बिजली प्रदान करता है।
राज्य की लंबी तटरेखा और अनुकूल पवन गति ने यहाँ इस गैर-पारंपरिक ऊर्जा के विकास के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान किए हैं। तमिलनाडु ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश कर अपनी ऊर्जा आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ किया है। पवन ऊर्जा का

Click Here to Buy book on Amazon

पर्याप्त वर्षा जूट की खेती के लिए सर्वोत्तम परिस्थितियाँ प्रदान करती है।
जूट को 'सुनहरा रेशा' कहा जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से पैकेजिंग सामग्री और हस्तशिल्प में किया जाता है। यहाँ उपलब्ध सस्ता जल परिवहन और प्रसंस्करण के लिए प्रचुर पानी ने इस उद्योग को राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ बना दिया है। लाखों किसान और मिल श्रमिक अपनी आजीविका के लिए इसी फसल पर पूरी तरह निर्भर हैं।

254. (B) इसमें उत्कृष्ट परावैद्युत शक्ति है और यह एक श्रेष्ठ विसंवाहक है।
अभ्रक एक अनूठा अधात्विक खनिज है जो अपनी उत्कृष्ट परावैद्युत शक्ति और बहुत कम बिजली हानि के कारण जाना जाता है। यह उच्च तापमान और वोल्टेज को सहन करने में सक्षम है, जिससे यह विद्युत उपकरणों के लिए एक आदर्श विसंवाहक बन जाता है।
यह खनिज पारदर्शी या विभिन्न रंगों में हो सकता है और इसे बहुत पतली परतों में विभाजित किया जा सकता है। कंप्यूटर, मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के निर्माण में इसका कोई विकल्प नहीं है। भारत विश्व में उच्च श्रेणी के अभ्रक का अग्रणी स्रोत है, जो हमारे तकनीकी और औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

255. (C) कच्छ का रण
लूनी नदी भारतीय मरुस्थल की एकमात्र सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण नदी है, जो राजस्थान के अजमेर के पास अरावली पहाड़ियों से निकलती है। यह नदी थार मरुस्थल के शुष्क क्षेत्रों से बहती हुई अंततः गुजरात में 'कच्छ के रण' के दलदली इलाके में जाकर समाप्त हो जाती है।
लूनी एक अंतर्देशीय नदी है क्योंकि यह किसी समुद्र तक नहीं पहुँच पाती और रास्ते में ही विलुप्त हो जाती है। इसका जल शुरुआत में मीठा होता है, लेकिन मरुस्थल की लवणता के कारण आगे बढ़ने पर यह खारा हो जाता है। यह नदी इस शुष्क क्षेत्र की कृषि और स्थानीय पारिस्थितिकी के लिए जल का एक अत्यंत दुर्लभ और कीमती स्रोत है।

256. (B) द्वितीय पंचवर्षीय योजना
भारत में औद्योगिक विकास की गति तेज करने के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) के दौरान दुर्गापुर, भिलाई और राउरकेला में तीन विशाल एकीकृत इस्पात संयंत्र स्थापित किए गए थे। यह योजना मुख्य रूप से भारी उद्योगों के विकास पर केंद्रित थी।
इन संयंत्रों की स्थापना विदेशी तकनीकी सहयोग से की गई थी, जिससे भारत को बुनियादी ढांचे के निर्माण में आत्मनिर्भरता मिली। इस्पात उत्पादन के इन केंद्रों ने देश के इंजीनियरिंग और निर्माण क्षेत्र को एक मजबूत आधार प्रदान किया। इस योजना काल को भारत की 'औद्योगिक क्रांति' का प्रारंभिक चरण माना जाता है जिसने भविष्य की प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

257. (C) केरल
'फूलों वाली बौछार' केरल और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में मानसून के आगमन से ठीक पहले होने वाली एक स्थानीय वर्षा है। यह वर्षा कॉफी उत्पादक क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि यह कॉफी के फूलों को खिलाने में मदद करती है।
इसके कारण कॉफी की पैदावार में सुधार होता है और फसल समय पर तैयार होती है। इसी समय होने वाली वर्षा को आम के फलों के लिए 'आम्र वर्षा' भी कहा जाता है। यह मौसमी घटना दक्षिण भारत की बागानी फसलों के लिए एक प्राकृतिक आशीर्वाद की तरह है, जो अत्यधिक गर्मी के बाद नमी प्रदान कर पौधों को नवजीवन देती है।

258. (B) मार्माग़ाओ
गोवा में स्थित मार्माग़ाओ बंदरगाह भारत का एक प्रमुख समुद्री द्वार है जो मुख्य रूप से लौह अयस्क के निर्यात के लिए उपयोग किया जाता है। यहाँ से देश के कुल लौह अयस्क निर्यात का लगभग आधा हिस्सा अंतरराष्ट्रीय बाजारों, विशेषकर जापान और चीन को भेजा जाता है।
इस बंदरगाह की स्थिति पश्चिमी तट पर होने के कारण यह वैश्विक व्यापार मार्गों से सीधा जुड़ा हुआ है। इसके निकट स्थित खदानों से प्राप्त उच्च श्रेणी का अयस्क इसे एक विशिष्ट निर्यात केंद्र बनाता है। आधुनिक लोडिंग सुविधाओं और रेलवे कनेक्टिविटी ने मार्माग़ाओ को भारत के खनिज व्यापार और समुद्री अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बना दिया है।

259. (C) हिमाद्रि, हिमाचल, शिवालिक
हिमालय पर्वतमाला को उत्तर से दक्षिण के क्रम में तीन समानांतर श्रेणियों में विभाजित किया गया है। सबसे उत्तर में 'हिमाद्रि' (महान हिमालय) है जो सर्वाधिक ऊँची और निरंतर है। इसके दक्षिण में 'हिमाचल' (लघु हिमालय) स्थित है जो अपनी सुंदर घाटियों के लिए प्रसिद्ध है।
सबसे दक्षिण और बाहरी ओर 'शिवालिक' श्रेणी है जो ऊँचाई में सबसे कम और भूवैज्ञानिक रूप से सबसे नवीन है। यह क्रम हिमालय के क्रमिक उत्थान की प्रक्रिया को दर्शाता है। प्रत्येक श्रेणी की अपनी विशिष्ट ऊँचाई, जलवायु और पारिस्थितिकी तंत्र है, जो मिलकर भारत की उत्तरी सीमा का एक अभेद्य भौगोलिक कवच तैयार करते हैं।

260. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत में कृषि के विभिन्न प्रकार यहाँ की जनसंख्या और संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार विकसित हुए हैं। स्थानांतरित कृषि एक आदिम तरीका है, जबकि गहन जीविका कृषि अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में की जाती है जहाँ भूमि पर भारी दबाव होता है।
वाणिज्यिक कृषि में आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके लाभ कमाया जाता है, और रोपण कृषि एक विस्तृत क्षेत्र में एकल फसल उगाने की पद्धति है। इन सभी प्रणालियों का सुमेलित होना देश की विविधतापूर्ण कृषि व्यवस्था को स्पष्ट करता है। यह वर्गीकरण यह समझने में मदद करता है कि विभिन्न क्षेत्रों में खाद्य आपूर्ति और आजीविका के साधन किस प्रकार व्यवस्थित हैं।

NODIA

कोपेन जैसे भूगोलवेत्ताओं ने इसी भिन्नता का उपयोग करके देश को विभिन्न जलवायु श्रेणियों में बांटा है। वर्षा का यह असमान वितरण ही निर्धारित करता है कि किस क्षेत्र में किस प्रकार की फसलें उगाई जाएंगी और वहाँ का जनजीवन कैसा होगा। अतः मानसूनी असमानता भारत की क्षेत्रीय भौगोलिक पहचान और कृषि नियोजन को समझने की एक अनिवार्य कुंजी है।

277. (C) जमशेदपुर
टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी, जो भारत का पहला और सबसे महत्वपूर्ण निजी इस्पात कारखाना है, झारखंड राज्य के जमशेदपुर शहर में स्थित है। इस स्थान का चयन कच्चे माल जैसे लौह अयस्क, कोयला और पानी की आसान उपलब्धता को ध्यान में रखकर किया गया था।
जमशेदपुर को इसकी औद्योगिक महत्ता के कारण 'भारत का पिट्सबर्ग' भी कहा जाता है। यह संयंत्र स्वर्णरेखा और खरकई नदियों के संगम पर स्थित है, जो इसे निरंतर जल आपूर्ति प्रदान करती हैं। जमशेदजी टाटा के विजन ने इस औद्योगिक केंद्र को एक सुनियोजित शहर के रूप में विकसित किया, जो आज भी भारत के इस्पात उत्पादन का गौरव बना हुआ है।

278. (C) सिंधु
सिंधु नदी हिमालय से निकलने वाली एक 'बारहमासी नदी' का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो वर्ष भर जल के निरंतर प्रवाह के साथ बहती है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसे गर्मियों में हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने से और वर्षा ऋतु में मानसूनी वर्षा से प्रचुर मात्रा में जल प्राप्त होता है।
इसके विपरीत, गोदावरी, कृष्णा और महानदी जैसी प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर हैं और शुष्क मौसम में उनका जल स्तर काफी कम हो जाता है। सिंधु का निरंतर जल प्रवाह ही उत्तर-पश्चिमी भारत और पाकिस्तान की कृषि एवं जल-विद्युत परियोजनाओं की रीढ़ है। यह नदी तंत्र हिमालय की विशाल बर्फ भंडार शक्ति का जीवंत प्रमाण है।

279. (B) फर्मों और व्यक्तियों को एक-दूसरे के निकट स्थित होने पर मिलने वाले लाभ।
'समूहन अर्थव्यवस्था' उस आर्थिक लाभ को संदर्भित करती है जो उद्योगों और व्यावसायिक इकाइयों को एक ही स्थान पर या एक-दूसरे के निकट स्थित होने के कारण प्राप्त होता है। जब फर्मों का समूह होता है, तो वे साझा बुनियादी ढांचे और सेवाओं का कुशलतापूर्वक उपयोग कर पाती हैं।
इसमें कुशल श्रम समूह की आसान उपलब्धता, परिवहन लागत में कमी और बैंकिंग एवं तकनीकी सेवाओं तक बेहतर पहुँच शामिल है। मुंबई-पुणे और बेंगलुरु जैसे औद्योगिक क्लस्टर इसी सिद्धांत पर विकसित हुए हैं। यह समूहन उत्पादकता बढ़ाता है और नवाचार को प्रोत्साहित करता है, जो अंततः क्षेत्र के समग्र आर्थिक विकास को गति प्रदान करता है।

280. (C) वे पूर्णतः कठोर क्रिस्टलीय आग्नेय चट्टानों से निर्मित हैं।
हिमालय पर्वतमाला की मुख्य विशेषता यह है कि ये भूवैज्ञानिक रूप से 'युवा और वलित' पर्वत हैं, जिनका निर्माण अवसादी चट्टानों के मुड़ने से हुआ है। ये पूरी तरह से कठोर आग्नेय चट्टानों से नहीं बने हैं, बल्कि इनमें परतदार चट्टानों की प्रधानता पाई जाती है।
इसके विपरीत, दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार प्राचीन आग्नेय चट्टानों से बना है। हिमालय अपनी ऊँची चोटियों, गहरी घाटियों और तीव्रगामी नदियों के साथ एक 'अस्थिर' और गतिशील भू-भाग का प्रतिनिधित्व करता है जो अभी भी उत्थान की प्रक्रिया में है। यह विवर्तनिक सक्रियता इसे एक अत्यंत रोमांचक लेकिन संवेदनशील भौगोलिक क्षेत्र बनाती है, जहाँ भूकंप की संभावना अधिक रहती है।

281. (C) दालें
भारत विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक देश होने के साथ-साथ उनका सबसे बड़ा उपभोक्ता और आयातक भी है। दालें भारतीय शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का मुख्य स्रोत हैं, जिसके कारण इनकी घरेलू मांग उत्पादन से भी अधिक बनी रहती है।
ये फसलें शुष्क परिस्थितियों में भी उगाई जा सकती हैं और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए नाइट्रोजन स्थिरीकरण का कार्य करती हैं, इसलिए इन्हें फसल चक्र में शामिल किया जाता है। मध्य प्रदेश और राजस्थान इनके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। दालों के मामले में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना भारत की पोषण सुरक्षा और कृषि स्थिरता के लिए एक प्रमुख राष्ट्रीय लक्ष्य बना हुआ है।

282. (D) भू-तापीय ऊर्जा
हिमाचल प्रदेश के मणिकरण और लद्दाख की पुगा घाटी में 'भू-तापीय ऊर्जा' के विकास की विशाल संभावनाएँ खोजी गई हैं। यह ऊर्जा पृथ्वी के आंतरिक भाग से निकलने वाली ऊष्मा और गर्म चश्मों के जल का उपयोग करके उत्पन्न की जाती है।
यह ऊर्जा का एक स्वच्छ, निरंतर और गैर-पारंपरिक स्रोत है जो उन पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है जहाँ बिजली के पारंपरिक ग्रिड पहुँचाना कठिन है। भारत इन क्षेत्रों में प्रायोगिक परियोजनाओं के माध्यम से इस तकनीक को विकसित कर रहा है। भू-तापीय ऊर्जा का उपयोग न केवल बिजली उत्पादन के लिए, बल्कि स्थानीय स्तर पर तापन की जरूरतों को पूरा करने के लिए भी किया जा सकता है।

283. (C) तराई
हिमालय से निकलने वाली नदियाँ और जलधाराएं जो भाबर की कंकड़युक्त पट्टी में भूमिगत होकर विलुप्त हो जाती हैं, वे इसके ठीक दक्षिण में स्थित 'तराई' क्षेत्र में पुनः धरातल पर प्रकट होती हैं। नदियों के इस पुनरागमन के कारण यह क्षेत्र अत्यधिक नम और आर्द्र हो जाता है।
जल की निरंतर उपलब्धता के कारण तराई एक दलदली और घने वनों वाला क्षेत्र बन जाता है, जहाँ जैव विविधता प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। मिट्टी की नमी यहाँ चावल और गन्ने जैसी फसलों की सघन कृषि के लिए बहुत अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है। यह पट्टी भाबर और उत्तरी मैदानों के बीच एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक संक्रमण क्षेत्र का कार्य करती है।

284. (B) उत्तर-पूर्वी मानसून और चक्रवाती अवदाबों से
कोरोमंडल तट, जो मुख्य रूप से तमिलनाडु का तटीय क्षेत्र है, अपनी वार्षिक वर्षा का अधिकांश हिस्सा 'उत्तर-पूर्वी मानसून'

Downloaded from www.pdf.tube

से प्राप्त करता है। यह मानसून अक्टूबर से दिसंबर के दौरान सक्रिय होता है जब पवनें बंगाल की खाड़ी से नमी लेकर आती हैं।
इसके अतिरिक्त, इस दौरान खाड़ी में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात और अवदाब भी यहाँ भारी वर्षा का कारण बनते हैं। यह विशेषता इसे शेष भारत से अलग करती है, जहाँ वर्षा मुख्य रूप से ग्रीष्मकालीन मानसून से होती है। कोरोमंडल तट की यह वर्षा पैटर्न यहाँ की रबी फसलों और जल भंडारों को भरने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

285. (A) वे एकल-खिड़की सेवा और उच्च गति डेटा संचार सुविधाएं प्रदान करते हैं।
भारत में सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए की गई है। ये पार्क सॉफ्टवेयर निर्यातकों को 'एकल-खिड़की सेवा' और विश्व स्तरीय उच्च गति डेटा संचार सुविधाएं प्रदान करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए हैं।
ये केंद्र मुख्य रूप से बड़े शहरों जैसे बेंगलुरु, हैदराबाद और नोएडा में स्थित हैं, जहाँ कुशल पेशेवर और आधुनिक बुनियादी ढांचा उपलब्ध है। इन पार्कों ने भारत को सॉफ्टवेयर सेवाओं के वैश्विक हब के रूप में स्थापित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई है। सरकारी प्रोत्साहन और इन सुविधाओं के मेल ने देश के सेवा क्षेत्र के निर्यात में क्रांतिकारी वृद्धि सुनिश्चित की है।

286. (B) उन्हें प्राप्त होने वाली वार्षिक वर्षा की मात्रा।
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों को आर्द्र और शुष्क श्रेणियों में विभाजित करने का प्राथमिक आधार उन्हें प्राप्त होने वाली 'वार्षिक वर्षा की मात्रा' है। आर्द्र पर्णपाती वन 100 से 200 सेंटीमीटर वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं, जहाँ सघनता अधिक होती है।
इसके विपरीत, शुष्क पर्णपाती वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वर्षा 70 से 100 सेंटीमीटर के बीच होती है, और यहाँ वृक्ष अपेक्षाकृत कम सघन होते हैं। दोनों ही प्रकार के वन ग्रीष्म ऋतु में अपनी पत्तियाँ गिराते हैं, लेकिन आर्द्र वनों में सागौन जैसे कीमती वृक्षों की प्रधानता होती है। वर्षा का यह सूक्ष्म अंतर ही इन वनों की संरचना और उनके आर्थिक मूल्य को निर्धारित करता है।

287. (D) नाथू ला
नाथू ला दर्रा हिमालय की ऊँची पर्वतमालाओं में स्थित एक ऐतिहासिक मार्ग है जो भारत के सिक्किम राज्य को तिब्बत से जोड़ता है। यह लगभग 4,310 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और प्राचीन 'रेशम मार्ग' की एक महत्वपूर्ण शाखा रहा है।
1962 के युद्ध के बाद इसे बंद कर दिया गया था, लेकिन 2006 में सीमा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए इसे पुनः खोला गया। यह दर्रा न केवल व्यापारिक दृष्टि से, बल्कि सामरिक और पर्यटन की दृष्टि से भी भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सर्दियों में भारी बर्फबारी के कारण यह मार्ग अक्सर दुर्गम हो जाता है, जो इसकी कठिन भौगोलिक स्थिति को दर्शाता है।

NODIA

288. (C) कपास
कपास एक ऐसी उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे अपनी वृद्धि के लिए विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसके लिए उच्च तापमान, हल्की वर्षा और पकते समय खिली हुई धूप के साथ कम से कम 210 'पाला रहित दिन' अनिवार्य माने जाते हैं।
पाला कपास के रेशों को गंभीर नुकसान पहुँचाता है, जिससे इसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है। इसीलिए इसकी खेती मुख्य रूप से भारत के उन हिस्सों में की जाती है जहाँ सर्दियाँ बहुत कठोर नहीं होतीं, जैसे गुजरात और महाराष्ट्र। कपास की यह संवेदनशीलता और इसकी लंबी विकास अवधि इसे एक विशिष्ट कृषि चुनौती और उच्च मूल्य वाली व्यावसायिक नकदी फसल बनाती है।

289. (C) काली मृदा का क्षेत्र जिसे दक्कन ट्रैप कहा जाता है
प्रायद्वीपीय पठार की सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट भौगोलिक विशेषता इसके पश्चिमी भाग में स्थित 'काली मृदा का क्षेत्र' है, जिसे भूवैज्ञानिक रूप से 'दक्कन ट्रैप' कहा जाता है। इसका निर्माण प्राचीन ज्वालामुखीय विस्फोटों के दौरान निकले लावा के जमने से हुआ है।
यह मिट्टी कपास की कृषि के लिए विश्व भर में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है क्योंकि इसमें नमी को लंबे समय तक रोके रखने की अद्भुत क्षमता होती है। दक्कन ट्रैप की ये चट्टानें समय के साथ अपरदित होकर अत्यंत उपजाऊ बनी हैं। यह क्षेत्र महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश की कृषि और औद्योगिक समृद्धि का मुख्य आधार है, जो देश की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान देता है।

290. (C) 27° - 30° N
जेट धाराएं ऊपरी वायुमंडल में प्रवाहित होने वाली तीव्र वायु धाराएं हैं, जो लगभग 27° से 30° उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित होती हैं। इन्हें 'उप-उष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट धाराएं' कहा जाता है, जो भारत की जलवायु को गहराई से प्रभावित करती हैं।
सर्दियों के दौरान ये धाराएं हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होती हैं और भारत में पश्चिमी विक्षोभों को लाने के लिए जिम्मेदार होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य के उत्तर की ओर खिसकने के साथ ये धाराएं भी हिमालय के उत्तर की ओर चली जाती हैं। जेट धाराओं की यह मौसमी शिफ्टिंग ही भारतीय मानसून के आगमन और शीतकालीन वर्षा के वितरण को निर्धारित करने वाला एक मुख्य कारक है।

291. (C) विनिर्माण क्षेत्र
विनिर्माण क्षेत्र को अर्थव्यवस्था का केंद्र माना जाता है क्योंकि यह प्राथमिक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र दोनों के विकास के लिए आवश्यक आधार प्रदान करता है। यह कृषि को आधुनिक उपकरण और मशीनरी देकर उसकी उत्पादकता बढ़ाता है।
साथ ही, विनिर्माण गतिविधियों के विस्तार से परिवहन, बैंकिंग और व्यापार जैसी सेवाओं की मांग बढ़ती है, जो सेवा क्षेत्र को मजबूती प्रदान करती है। एक मजबूत औद्योगिक आधार के बिना अन्य क्षेत्रों का निरंतर विकास संभव नहीं है। अतः

विनिर्माण न केवल स्वयं रोजगार पैदा करता है, बल्कि पूरे आर्थिक तंत्र में एक सकारात्मक चक्र का निर्माण करता है, जिससे राष्ट्र समृद्ध होता है।

292. (C) दस डिग्री चैनल
'दस डिग्री चैनल' बंगाल की खाड़ी में स्थित एक संकरा जलमार्ग है जो भौगोलिक रूप से अंडमान द्वीप समूह को निकोबार द्वीप समूह से पृथक करता है। यह रेखा लगभग 150 किलोमीटर चौड़ी है और सामरिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है।
यह जलमार्ग हिंद महासागर के प्रमुख समुद्री व्यापार मार्गों का हिस्सा है। इसके उत्तर में लिटिल अंडमान और दक्षिण में कार निकोबार द्वीप स्थित हैं। यह चैनल न केवल इन दोनों द्वीप समूहों के बीच एक सीमा का कार्य करता है, बल्कि यह क्षेत्र की विशिष्ट समुद्री जैव विविधता और नौवहन नियंत्रण के लिए भी भारत के लिए एक अनिवार्य भौगोलिक विशेषता है।

293. (C) मैंगनीज
मैंगनीज एक अत्यंत महत्वपूर्ण धात्विक खनिज है जिसका उपयोग मुख्य रूप से इस्पात के निर्माण में एक अनिवार्य घटक के रूप में किया जाता है। यह लोहे को कठोरता प्रदान करता है और 'फेरो-मैंगनीज' मिश्र धातु बनाने के लिए भी प्रयुक्त होता है, जो टिकाऊ मशीनों के लिए आवश्यक है।
इसके अलावा, मैंगनीज का उपयोग ब्लीचिंग पाउडर, कीटनाशकों और शुष्क बैटरियों के निर्माण में भी बड़े पैमाने पर होता है। भारत में इसके प्रचुर भंडार मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमावर्ती पट्टियों में पाए जाते हैं। इस्पात उद्योग की मजबूती पूरी तरह से मैंगनीज की निरंतर आपूर्ति पर निर्भर करती है, जिससे यह राष्ट्रीय औद्योगिक सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

294. (C) गहन जीविका कृषि
भारत में 'उत्तराधिकार का अधिकार' एक बड़ी सामाजिक और आर्थिक चुनौती है जिसके कारण हर पीढ़ी के साथ कृषि भूमि का निरंतर विभाजन होता रहता है। इसके परिणामस्वरूप भू-जोतों का आकार इतना छोटा हो जाता है कि उन पर आर्थिक रूप से लाभकारी खेती करना कठिन हो जाता है।
छोटे खेतों पर आधुनिक मशीनों का उपयोग संभव नहीं होता, जिससे किसानों को 'गहन जीविका कृषि' के लिए मजबूर होना पड़ता है जहाँ वे केवल अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए श्रम-प्रधान खेती करते हैं। भूमि के इस विखंडन ने कृषि उत्पादकता को सीमित कर दिया है और यह ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक यंत्रीकरण और वाणिज्यिक खेती के विकास में एक प्रमुख बाधा बन गया है।

295. (D) अल्पाइन वनस्पति और टुंड्रा
हिमालय के सर्वाधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में, जहाँ जलवायु अत्यंत ठंडी और कठोर होती है, केवल 'अल्पाइन वनस्पति और टुंड्रा' ही जीवित रह पाते हैं। समुद्र तल से 3,600 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर बड़े वृक्षों का स्थान छोटी झाड़ियाँ और घास के मैदान ले लेते हैं।
सुदूर ऊँचाइयों पर, जहाँ बर्फ जमी रहती है, वनस्पति केवल काई और लाइकेन तक सीमित हो जाती है, जो टुंड्रा प्रकार का प्रतिनिधित्व करती है। इन क्षेत्रों का उपयोग खानाबदोश जनजातियाँ गर्मियों में अपने पशुओं को चराने के लिए करती हैं। यह ऊँचाई के साथ होने वाला अंतिम वनस्पति संक्रमण है, जो जीवन के कठोरतम प्राकृतिक अनुकूलन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

296. (B) सौर और पवन ऊर्जा
राजस्थान अपनी विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों और प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के कारण 'सौर और पवन ऊर्जा' के विकास के लिए भारत का सबसे समृद्ध और अनुकूल राज्य है। यहाँ वर्ष के अधिकांश दिनों में मिलने वाली तीव्र सूर्य की रोशनी और खुली थार मरुभूमि पवन चक्कियों के लिए आदर्श स्थान प्रदान करती है।
राज्य में सौर पार्क और पवन फार्मों के माध्यम से बिजली उत्पादन की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। ये गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत न केवल पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं, बल्कि राज्य की ऊर्जा आत्मनिर्भरता में भी बड़ा योगदान दे रहे हैं। भविष्य में राजस्थान भारत के हरित ऊर्जा हब के रूप में उभरने की पूरी क्षमता रखता है, जो सतत विकास की दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

297. (A) अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों का पूर्व की ओर प्रवाह।
भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों के बीच का मुख्य अंतर प्रायद्वीपीय पठार के सामान्य ढाल और नदियों के प्रवाह की दिशा के कारण है। महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी अधिकांश बड़ी नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं और बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।
ये नदियाँ अपने मुहाने पर विशाल मात्रा में अवसाद जमा करती हैं, जिससे पूर्वी तट पर विस्तृत और कटे-फटे डेल्टाओं का निर्माण हुआ है। इसके विपरीत, पश्चिमी तट की नदियाँ छोटी और तीव्रगामी हैं जो डेल्टा नहीं बनातीं। नदियों के इस निक्षेपण कार्य ने पूर्वी तट को कृषि के लिए अत्यंत उपजाऊ और भौगोलिक रूप से जटिल बना दिया है, जबकि पश्चिमी तट अपेक्षाकृत सीधा और संकरा बना हुआ है।

298. (C) वर्षा ऋतु (आगे बढ़ता मानसून)
'मानसून द्रोणी' निम्न वायुदाब का एक लंबा और गहरा क्षेत्र है जो वर्षा ऋतु के दौरान उत्तर भारत के मैदानों पर स्थापित होता है। यह द्रोणी मानसूनी पवनों को देश की ओर आकर्षित करने और वर्षा के वितरण को नियंत्रित करने में मुख्य भूमिका निभाती है।
इसकी स्थिति में होने वाला मामूली बदलाव भी देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाली वर्षा की मात्रा और समय को प्रभावित करता है। जब यह द्रोणी उत्तर की ओर खिसकती है, तो हिमालयी क्षेत्रों में भारी बारिश होती है और मैदानों में शुष्क अंतराल आ जाता है। मानसून द्रोणी का यह उतार-चढ़ाव ही भारतीय मानसून की अनिश्चितता और उसके जटिल व्यवहार का प्राथमिक वैज्ञानिक कारण माना जाता है।

299. (B) तैयार माल की मांग और उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति।
औद्योगिक अवस्थिति के संदर्भ में 'बाजार' केवल एक स्थान नहीं है, बल्कि यह उत्पादित माल की वास्तविक 'मांग' और उसे

Click Here to Buy book on Amazon

खरीदने की लोगों की आर्थिक क्षमता को दर्शाता है। उद्योगों की सफलता काफी हद तक बाजार की निकटता पर निर्भर करती है ताकि वितरण लागत कम हो।

एक सुलभ बाजार तैयार माल की त्वरित बिक्री सुनिश्चित करता है, जो उद्योग के चक्र को चालू रखने के लिए अनिवार्य है। उपभोक्ता वस्तुओं और शीघ्र खराब होने वाले उत्पादों के लिए बाजार की निकटता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। अतः किसी भी औद्योगिक इकाई की स्थापना से पहले बाजार का विश्लेषण करना आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए एक प्राथमिक और निर्णायक कदम होता है।

300. (B) 30 डिग्री

भारत की मुख्य भूमि का अक्षांशीय विस्तार लगभग 8°4'N से 37°6'N के बीच है। यदि हम इन दोनों सीमाओं के बीच के अंतर की गणना करें, तो यह लगभग '30 डिग्री' आता है, जो देश के विशाल उत्तर-दक्षिण विस्तार को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

यह व्यापक अक्षांशीय विस्तार देश के विभिन्न हिस्सों में दिन-रात की अवधि और तापमान में होने वाली विविधता के लिए जिम्मेदार है। जहाँ दक्षिण भारत में उष्णकटिबंधीय स्थितियाँ बनी रहती हैं, वहीं सुदूर उत्तर में उप-उष्णकटिबंधीय और पहाड़ी जलवायु पाई जाती है। अक्षांशों का यह व्यापक अंतर ही भारत की विविध कृषि प्रणालियों, प्राकृतिक वनस्पतियों और सांस्कृतिक विविधता का मुख्य भौगोलिक आधार बनाता है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 09
मानचित्रकला

1. भौगोलिक अध्ययनों में मानचित्र को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) कलात्मक प्रदर्शन के लिए पृथ्वी की सतह का एक सजावटी चित्रण।
(B) किसी भौगोलिक क्षेत्र की चुनिंदा विशेषताओं का एक प्रतीकात्मक और मापित निरूपण।
(C) बिना किसी ज्यामितीय मापनी के एक साथ जोड़ी गई उपग्रह छवियों का संग्रह।
(D) किसी भौगोलिक क्षेत्र की विशेषताओं का पाठ्य विवरण और व्यवस्थित सूची।

2. भूगोल में मानचित्रों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: मानचित्र स्थानिक सूचनाओं को संग्रहीत करने और संप्रेषित करने के प्राथमिक उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।
कथन II: मानचित्रों का उपयोग विशेष रुप से केवल नौसंचालन के लिए किया जाता है, स्थानिक विश्लेषण के लिए नहीं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन II सही है, लेकिन कथन I गलत है।

3. एक मानचित्र जो किसी विशेष विषय के वितरण को दर्शाता है, जैसे कि जनसंख्या घनत्व या वर्षा, उसे क्या कहा जाता है?
(A) स्थलाकृतिक मानचित्र
(B) भू-संपत्ति मानचित्र
(C) विषयक मानचित्र
(D) सामान्य संदर्भ मानचित्र

4. निम्नलिखित में से कौन सा गुणात्मक विषयक मानचित्र का उदाहरण है?
(A) प्रति वर्ग किलोमीटर व्यक्तियों में जनसंख्या घनत्व दर्शाने वाला मानचित्र।
(B) जिलेवार प्रति व्यक्ति आय के स्तर को दर्शाने वाला मानचित्र।
(C) विभिन्न राज्यों में साक्षरता का प्रतिशत दर्शाने वाला मानचित्र।
(D) विभिन्न मृदा प्रकारों के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र।

5. किस मापन तकनीक में विभिन्न श्रेणियों को उनके महत्व या प्रासंगिक के आधार पर एक संख्यात्मक मान दिया जाता है?
(A) रैंक स्कोर
(B) रेखीय स्कोर
(C) भारित स्कोर
(D) अनुपात स्कोर

6. मानचित्र मापनी के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) एक बड़ी मापनी का मानचित्र एक छोटे क्षेत्र को अधिक विस्तार के साथ दिखाता है।
(B) एक बड़ी मापनी का मानचित्र छोटी मापनी के मानचित्र की तुलना में कम विस्तृत होता है।
(C) एक छोटी मापनी का मानचित्र कम विस्तार के साथ एक बड़े क्षेत्र को दिखाता है।
(D) 1:25,000 की मापनी, 1:1,000,000 की मापनी से बड़ी मापनी है।

7. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में, Rn मान 0 किस प्रकार के अधिवास प्रतिरूप को दर्शाता है?
(A) स्थानिक वितरण का पूर्णतः एकसमान या नियमित प्रतिरूप।
(B) पूर्णतः यादृच्छिक और स्वतंत्र स्थानिक वितरण प्रतिरूप।
(C) मुख्य परिवहन मार्ग या भौतिक विशेषता के साथ एक रेखीय प्रतिरूप।
(D) एक पूर्णतः गुच्छित प्रतिरूप जहां सभी बिंदु एक ही स्थान पर स्थित हों।

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): प्रवाह मानचित्र स्थानों के बीच वस्तुओं, लोगों या सूचनाओं की गति को दिखाने में प्रभावी होते हैं।
कारण (R): प्रवाह मानचित्र पर प्रवाह रेखाओं की चौड़ाई आमतौर पर प्रवाह की मात्रा के समानुपाती होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

9. केंद्रीय प्रवृत्ति का कौन सा माप डेटासेट में चरम मानों से सबसे अधिक प्रभावित होता है?
(A) माध्यिका
(B) बहुलक
(C) माध्य
(D) गुणोत्तर माध्य

NODIA

10. किस प्रकार का मानचित्र प्रक्षेप ग्लोब को एक ऐसे बेलन पर प्रक्षेपित करके बनाया जाता है जो भूमध्य रेखा को स्पर्श करता हो?
(A) बेलनाकार प्रक्षेप
(B) शंकु प्रक्षेप
(C) खमध्य प्रक्षेप
(D) रूढ़ प्रक्षेप

11. एक प्रतिचयन तकनीक जहाँ जनसंख्या को उपसमूहों (स्तरों) में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक उपसमूह से नमूने लिए जाते हैं, कहलाती है:
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) व्यवस्थित प्रतिचयन
(C) गुच्छ प्रतिचयन
(D) स्तरित प्रतिचयन

12. सूची I में दिए गए मानचित्र प्रकारों को सूची II में उनके प्राथमिक उद्देश्यों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (मानचित्र प्रकार)
P. स्थलाकृतिक मानचित्र
Q. वर्णमात्री मानचित्र
R. समान रेखा मानचित्र
S. भू-संपत्ति मानचित्र
सूची II: (प्राथमिक उद्देश्य)
1. प्रशासनिक इकाइयों के लिए मात्रात्मक डेटा दर्शाता है
2. भूमि स्वामित्व की सीमाओं को दर्शाता है
3. ऊंचाई और उच्चावच विशेषताओं को दर्शाता है
4. समान मान वाली रेखाओं को दर्शाता है
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

13. भौगोलिक विश्लेषण में 'भारित स्कोर' का उपयोग करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) एकल विशेषता के आधार पर विशेषताओं को उच्चतम से निम्नतम तक क्रमबद्ध करना।
(B) एक बड़े भौगोलिक डेटासेट के अंकगणितीय औसत मान की गणना करना।
(C) विश्लेषण में विचार किए गए विभिन्न कारकों को अलग-अलग महत्व प्रदान करना।
(D) शोध पक्षपात को कम करने के लिए एक बड़ी जनसंख्या से यादृच्छिक रूप से नमूना चुनना।

14. सांख्यिकीय मापों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: मानक विचलन अपने माध्य से डेटा के एक सेट के विक्षेपण का माप है।
कथन II: कम मानक विचलन यह दर्शाता है कि डेटा बिंदु माध्य के बहुत समीप हैं।
(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

15. भूगोल में समाश्रयण विश्लेषण का मुख्य लक्ष्य क्या है?
(A) आश्रित और एक या अधिक स्वतंत्र चरों के बीच संबंधों को मॉडल करना।
(B) उनकी साझा स्थानिक विशेषताओं के आधार पर समान विशेषताओं को एक साथ समूहित करना।
(C) स्थानिक प्रतिरूप के भीतर एकाग्रता या विक्षेपण की मात्रा को मापना।
(D) बिंदुओं के एक वितरित सेट के औसत भौगोलिक स्थान की गणना करना।

16. सुदूर संवेदन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह दूर से, विशेष रूप से विमान या उपग्रहों से वस्तुओं या क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का विज्ञान है।
2. इसे व्यापक रूप से सक्रिय और निष्क्रिय सुदूर संवेदन में वर्गीकृत किया जा सकता है।
3. निष्क्रिय सुदूर संवेदन प्रणालियों के पास प्रदीप्ति के लिए ऊर्जा का अपना स्रोत होता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

17. एक भूगोलवेत्ता समय के साथ एक शहर के शहरी विकास का अध्ययन कर रही है। उसके पास वर्ष 1950, 1975, 1995 और 2020 के मानचित्र हैं। उसके अध्ययन के लिए इन मानचित्रों का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) 1975, 1950, 2020, 1995
(B) 1950, 1975, 1995, 2020
(C) 2020, 1995, 1975, 1950
(D) 1950, 1995, 1975, 2020

18. भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) में, कागजी मानचित्रों के डेटा को डिजिटल प्रारूप में बदलने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) डिजिटाइजिंग
(B) बफरिंग
(C) ओवरलेइंग
(D) जियोकोडिंग

19. निम्नलिखित में से कौन केंद्रीय प्रवृत्ति का माप नहीं है?
(A) माध्य
(B) माध्यिका
(C) मानक विचलन
(D) बहुलक

Downloaded from www.pdf.tube

20. निम्नलिखित प्रतिचयन तकनीकों को उनके डिज़ाइन की बढ़ती जटिलता के क्रम में व्यवस्थित करें, सबसे सरल से शुरू करते हुए।
1. स्तरित प्रतिचयन
2. सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
3. व्यवस्थित प्रतिचयन
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

21. "निरूपक भिन्न" (RF) मानचित्र मापनी को व्यक्त करने का एक तरीका है। निम्नलिखित में से कौन सा RF मान सबसे बड़ी मापनी के मानचित्र का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1:1,000,000
(B) 1:250,000
(C) 1:24,000
(D) 1:50,000

22. दो चरों के बीच -0.9 का सहसंबंध गुणांक क्या दर्शाता है?
(A) एक मजबूत धनात्मक संबंध।
(B) एक मजबूत ऋणात्मक संबंध।
(C) एक कमजोर ऋणात्मक संबंध।
(D) लगभग कोई संबंध नहीं।

23. निम्नलिखित में से कौन सा सांख्यिकीय आरेख किसी संपूर्ण के भागों या प्रतिशत डेटा को दर्शाने के लिए सबसे उपयुक्त है?
(A) रेखा आरेख
(B) आयतचित्र
(C) दंड आरेख
(D) पाई चार्ट

24. एक यथाकृतिक मानचित्र प्रक्षेप का मूलभूत गुण किसकी रक्षा करना है?
(A) आकृति
(B) क्षेत्रफल
(C) दूरी
(D) केंद्र से दिशा

25. सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) आइसोपलिथ - असमान मान वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखाएँ।
(B) प्रवाह मानचित्र - बिना दिशा के स्थिर डेटा का प्रतिनिधित्व करता है।
(C) कोरोप्लिथ - औसत मान दिखाने के लिए प्रशासनिक क्षेत्रों के छायांकन का उपयोग करता है।
(D) बिंदु मानचित्र - प्रत्येक बिंदु एक निश्चित क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, मान का नहीं।

26. निम्नलिखित में से कौन एक सक्रिय सुदूर संवेदन प्रणाली का उदाहरण है?
(A) एक राडार (RADAR) प्रणाली जो ऊर्जा की तरंगें भेजती है और परावर्तन को रिकॉर्ड करती है।
(B) एक कैमरा जो छवि कैप्चर करने के लिए सूर्य के प्रकाश का उपयोग करता है।
(C) पृथ्वी से तापीय उत्सर्जन को मापने वाला एक उपग्रह सेंसर।
(D) परावर्तित सौर विकिरण को रिकॉर्ड करने वाला एक मल्टीस्पेक्ट्रल स्कैनर।

27. 'डिजिटल मानचित्रण' शब्द किस प्रक्रिया को संदर्भित करता है?
(A) पारंपरिक कार्टोग्राफिक उपकरणों का उपयोग करके मैन्युअल रूप से मानचित्र बनाना।
(B) थियोडोलाइट और चेन का उपयोग करके भूमि का सर्वेक्षण करना।
(C) बड़े प्रारूप वाले प्लॉटर का उपयोग करके मानचित्रों को मुद्रित करना।
(D) कंप्यूटर प्रारूप में भौगोलिक डेटा का संग्रहण, संचयन और प्रसंस्करण करना।

28. डेटासेट की माध्यिका क्या होती है?
(A) सबसे अधिक बार आने वाला मान।
(B) मध्य मान जब डेटा को आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।
(C) सभी मानों का योग जिसे मानों की संख्या से विभाजित किया गया हो।
(D) उच्चतम और निम्नतम मानों के बीच का अंतर।

NODIA

29. सूची I में दी गई सांख्यिकीय अवधारणाओं को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (सांख्यिकीय अवधारणा)
P. माध्य
Q. बहुलक
R. मानक विचलन
S. समाश्रयण
सूची II: (विवरण)
1. वह मान जो सबसे अधिक बार आता है
2. औसत के चारों ओर डेटा के फैलाव का माप
3. चरों के बीच संबंधों को मॉडल करने की एक विधि
4. डेटासेट का अंकगणितीय औसत
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

30. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में, 2.15 के समीप Rn मान क्या दर्शाता है?
(A) पूर्णतः गुच्छन की ओर झुकाव वाला प्रतिरूप।
(B) एक प्रतिरूप जो पूर्णतः यादृच्छिक है।

(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

73. मानचित्रण में निम्नलिखित कंप्यूटर अनुप्रयोगों पर विचार कीजिए:
1. मानचित्रों को शीघ्रता से बनाने के लिए स्वचालित कार्टोग्राफी।
2. स्थानिक विश्लेषण और मॉडलिंग के लिए जीआईएस।
3. आधार मानचित्रों को अद्यतनीकरण करने के लिए उपग्रह इमेजरी का उपयोग।

इनमें से किन अनुप्रयोगों ने आधुनिक कार्टोग्राफी को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

74. एक भारित स्कोर को रैंक स्कोर की तुलना में अधिक परिष्कृत माना जाता है क्योंकि यह:
(A) चरों को अलग-अलग महत्व देने की अनुमति देता है।
(B) गणना करने में सरल है।
(C) केवल गुणात्मक डेटा के लिए कार्य करता है।
(D) डेटा को सरल आरोही क्रम में व्यवस्थित करता है।

75. स्थानिक विश्लेषण के संदर्भ में, सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की प्राथमिक सीमा क्या है?
(A) इसके परिणामस्वरूप नमूना बिंदुओं का गुच्छन हो सकता है, जिससे कुछ क्षेत्र बिना नमूने के रह जाते हैं।
(B) इसे लागू करना बहुत जटिल है।
(C) इसके लिए डेटा के वितरण की पूर्व समझ की आवश्यकता होती है।
(D) इसका उपयोग बड़े अध्ययन क्षेत्रों के लिए नहीं किया जा सकता है।

76. सांख्यिकीय आरेखों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. एक आयतचित्र का उपयोग निरंतर डेटा के आवृत्ति वितरण को दिखाने के लिए किया जाता है।
2. एक पाई चार्ट लंबी अवधि के रुझान दिखाने के लिए आदर्श है।
3. एक रेखा आरेख डेटा बिंदुओं की एक श्रृंखला को जोड़ता है और समय-श्रृंखला डेटा के लिए प्रभावी है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

77. निम्नलिखित मानचित्र मापनियों को सबसे छोटी मापनी से सबसे बड़ी मापनी के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. 1:25,000
2. 1:1,000,000
3. 1:250,000
4. 1:50,000

(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 4, 1, 3, 2

78. दो चरों के बीच शून्य सहसंबंध का तात्पर्य है:
(A) रेखीय संबंध का अभाव।
(B) एक पूर्ण रेखीय संबंध।
(C) एक पूर्ण ऋणात्मक संबंध।
(D) एक कारण-कार्य संबंध।

79. प्रवाह मानचित्रों के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) मानचित्र पर रेखाओं की चौड़ाई मात्रा की परवाह किए बिना एकसमान होती है।
(B) वे यातायात या वस्तुओं जैसी घटनाओं की गति को दर्शाते हैं।
(C) आवाजाही की दिशा एक प्रमुख घटक है।
(D) वे मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रवाह डेटा का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

80. एक कार्टोग्राफर विषयक मानचित्र बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाता है। इन चरणों को सबसे तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. डेटा संग्रह
2. डेटा वर्गीकरण
3. मानचित्र प्रक्षेप का चयन
4. प्रतीकीकरण

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 2, 1, 4

81. खमध्य प्रक्षेप परिवार ग्लोब को किस पर प्रक्षेपित करता है?
(A) बेलन
(B) समतल
(C) शंकु
(D) गोला

82. सहसंबंध के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: बहु-सहसंबंध एक आश्रित चर और दो या अधिक स्वतंत्र चरों के बीच संबंध की मजबूती को मापता है।
कथन II: 1 का बहु-सहसंबंध गुणांक चरों के बीच पूर्ण रेखीय संबंध को दर्शाता है।
(A) कथन I गलत है, कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

41. मानचित्र प्रक्षेप और उसकी प्राथमिक विशेषता के गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) मर्केटर प्रक्षेप - यथाकृतिक
(B) साइनुसोइडल प्रक्षेप - समकक्ष
(C) नोमोनिक प्रक्षेप - समकक्ष
(D) खमध्य समदूरस्थ प्रक्षेप - केंद्र से वास्तविक दूरी

42. सूची I में दिए गए जीआईएस शब्दों को सूची II में उनकी परिभाषाओं के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (GIS शब्द)
P. वेक्टर डेटा
Q. रास्टर डेटा
R. टोपोलॉजी
S. जियोरेफरेंसिंग
सूची II: (परिभाषा)
1. विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली कोशिकाओं या पिक्सल का एक ग्रिड
2. भौगोलिक डेटा को एक ज्ञात समन्वय प्रणाली के साथ संरेखित करना
3. विशेषताओं को बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों के रूप में प्रदर्शित करना
4. जुड़ने वाली या आसन्न विशेषताओं के बीच स्थानिक संबंध
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

43. मानचित्रण में कंप्यूटर के उपयोग का एक प्रमुख लाभ निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) यह कार्टोग्राफिक सिद्धांतों को समझने की आवश्यकता को समाप्त कर देता है।
(B) यह मानचित्र बनाने के लिए आवश्यक डेटा की मात्रा को कम करता है।
(C) यह सभी मानचित्रों को विरूपण से मुक्त बनाता है।
(D) यह मानचित्रों के तेजी से अद्यतनीकरण और संशोधन की अनुमति देता है।

44. यदि वर्षा और फसल की पैदावार के बीच सहसंबंध गुणांक +0.8 है, तो इसका तात्पर्य है कि:
(A) अधिक वर्षा के कारण फसल की पैदावार कम होती है।
(B) वर्षा और फसल की पैदावार के बीच एक मजबूत धनात्मक संबंध है।
(C) वर्षा और फसल की पैदावार के बीच एक कमजोर ऋणात्मक संबंध है।
(D) वर्षा और फसल की पैदावार के बीच कोई संबंध नहीं है।

45. प्रयुक्त विकसित सतह के आधार पर वर्गीकृत मानचित्र प्रक्षेपों के प्रकारों में निम्नलिखित में से कौन सा शामिल नहीं है?
(A) बेलनाकार
(B) शंकु
(C) यथाकृतिक
(D) खमध्य

46. एक शोधकर्ता किसी देश में स्वास्थ्य सुविधाओं का विश्लेषण करना चाहता है। प्रतिचयन तकनीक के चयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यदि सुविधाएं समान रूप से फैली हुई हैं, तो व्यवस्थित प्रतिचयन कुशल होगा।
2. यदि सुविधाएं शहरी क्षेत्रों में केंद्रित हैं, तो सरल यादृच्छिक प्रतिचयन शहरी क्षेत्रों का अधिक प्रतिनिधित्व कर सकता है।
3. ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए, स्तरित प्रतिचयन सबसे उपयुक्त होगा।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

47. सांख्यिकीय वितरण में उच्चतम और निम्नतम मानों के बीच के अंतर को क्या कहा जाता है?
(A) परास
(B) मानक विचलन
(C) प्रसरण
(D) अंतर-चतुर्थक परास

48. केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति का एकमात्र माप है जिसका उपयोग नाममात्र डेटा के लिए किया जा सकता है।
कथन II: माध्य की गणना नाममात्र और क्रमसूचक सहित सभी प्रकार के डेटा के लिए की जा सकती है।
(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

49. प्रवाह मानचित्र के पीछे मूल सिद्धांत क्या है?
(A) समान मान वाले बिंदुओं को एक रेखा से जोड़ना।
(B) स्थानों के बीच आवाजाही की मात्रा को दर्शाने के लिए रेखा की चौड़ाई का उपयोग करना।
(C) किसी बिंदु स्थान पर मात्रा को दर्शाने के लिए प्रतीक के आकार का उपयोग करना।
(D) औसत मान के आधार पर प्रशासनिक क्षेत्रों को छायांकित करना।

50. मापन तकनीकों के संदर्भ में, 'रैंक स्कोर' क्या प्राप्त करता है?
(A) यह डेटा को उच्च से निम्न या इसके विपरीत एक क्रमसूचक अनुक्रम में व्यवस्थित करता है।

NODIA

(C) एक सीधी रेखा में व्यवस्थित प्रतिरूप।
(D) पूर्णतः विकीर्ण षटकोणीय व्यवस्था की ओर झुकाव वाला प्रतिरूप।

31. यदि एक भूगोलवेत्ता 1000 की सूची में से एक यादृच्छिक शुरुआत के बाद प्रत्येक 10वें घर को चुनकर 100 घरों का नमूना चुनना चाहता है, तो किस प्रतिचयन तकनीक का उपयोग किया जा रहा है?
(A) व्यवस्थित प्रतिचयन
(B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) स्तरित प्रतिचयन
(D) गुच्छ प्रतिचयन

32. भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जीआईएस एक ऐसी प्रणाली है जिसे सभी प्रकार के भौगोलिक डेटा को कैप्चर करने, संग्रहीत करने, विश्लेषण करने, प्रबंधित करने और प्रस्तुत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
कथन II: जीआईएस का प्राथमिक कार्य केवल दृष्टिगत रूप से आकर्षक मानचित्र बनाना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

33. मानचित्र प्रक्षेपों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कोई भी मानचित्र प्रक्षेप 2D सतह पर 3D पृथ्वी के सभी गुणों को एक साथ पूरी तरह से प्रदर्शित नहीं कर सकता है।
2. समकक्ष प्रक्षेप भू-भागों के सापेक्ष आकार को सुरक्षित रखते हैं।
3. यथाकृतिक प्रक्षेप स्थानीय आकृतियों और कोणों को सुरक्षित रखते हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

34. एक दंड आरेख जहाँ दंड क्षैतिज रूप से व्यवस्थित होते हैं, उसका उपयोग सबसे अच्छा तब किया जाता है जब:
(A) श्रेणियों के लेबल लंबे हों।
(B) डेटा समय श्रृंखला को दर्शाता हो।
(C) डेटा किसी संपूर्ण के भागों को दर्शाता हो।
(D) श्रेणियों की संख्या बहुत कम हो।

35. किसी विशिष्ट विशेषता के आधार पर भौगोलिक इकाइयों के एक सेट को रैंक देने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) भारित स्कोर
(B) मानक स्कोर
(C) रैंक स्कोर
(D) आवृत्ति स्कोर

36. निम्नलिखित में से कौन सा भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का घटक नहीं है?
(A) हार्डवेयर
(B) सॉफ्टवेयर
(C) डेटा
(D) यादृच्छिक संख्या तालिका

37. एक कार्टोग्राफर मरुस्थल के विस्तार को दर्शाने वाले मानचित्रों की एक श्रृंखला बना रहा है। निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. विभिन्न वर्षों के लिए उपग्रह चित्र प्राप्त करना।
2. भूमि आवरण प्रकारों का वर्गीकरण करना।
3. प्रत्येक वर्ष के लिए मरुस्थल की सीमा को डिजिटाइज करना।
4. परिवर्तन दर्शाने वाले अंतिम मानचित्र बनाना।

(A) 1, 3, 2, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 1, 2, 4

38. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): बहु-समाश्रयण में, एक एकल आश्रित चर के मान की भविष्यवाणी करने के लिए एक से अधिक स्वतंत्र चरों का उपयोग किया जाता है।
कारण (R): बहु-समाश्रयण सरल रेखीय समाश्रयण की तुलना में गणना करने और व्याख्या करने में आसान है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

39. दो देशों के बीच प्रवासन की मात्रा और दिशा को दर्शाने के लिए सबसे उपयुक्त मानचित्र कौन सा होगा?
(A) वर्णमात्री मानचित्र
(B) बिंदु मानचित्र
(C) आइसोपलिथ मानचित्र
(D) प्रवाह मानचित्र

40. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn मान 1 क्या दर्शाता है?
(A) यादृच्छिक प्रतिरूप
(B) गुच्छित प्रतिरूप
(C) विकीर्ण प्रतिरूप
(D) रेखीय प्रतिरूप

Downloaded from www.pdf.tube

सपाट मानचित्र पर परिवर्तित करना।
(D) किसी क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास को दिखाना।

62. डेटासेट के 'बहुलक' को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) अंकगणितीय औसत।
(B) मध्य मान।
(C) अधिकतम और न्यूनतम मान के बीच का अंतर।
(D) सबसे अधिक बार आने वाला मान।

63. दो चरों के बीच कारण-प्रभाव संबंध की सबसे अच्छी जांच किस सांख्यिकीय पद्धति के माध्यम से की जाती है?
(A) समाश्रयण
(B) सहसंबंध
(C) केंद्रीय प्रवृत्ति के माप
(D) निकटतम पड़ोसी विश्लेषण

64. समकक्ष प्रक्षेप को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है?
(A) यथाकृतिक प्रक्षेप
(B) इक्विवेलेंट प्रक्षेप
(C) समदूरस्थ प्रक्षेप
(D) कॉनफॉर्मल प्रक्षेप

65. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): जीआईएस विभिन्न स्रोतों से डेटा को एक ही प्रणाली में एकीकृत करने की अनुमति देता है।
कारण (R): जीआईएस की एक प्रमुख विशेषता स्थानिक रूप से संदर्भित डेटा को संभालने की इसकी क्षमता है, जो ओवरले विश्लेषण की अनुमति देती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

66. नदी प्रदूषण के एक अध्ययन में, एक शोधकर्ता नदी के मार्ग के साथ 5 किमी के निश्चित अंतराल पर पानी के नमूने एकत्र करता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) स्तरित प्रतिचयन
(B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) गुच्छ प्रतिचयन
(D) व्यवस्थित प्रतिचयन

67. वह मानचित्र जो स्थानीय स्तर पर कोणों और आकृतियों को सुरक्षित रखता है लेकिन क्षेत्रफल को विकृत करता है, कहलाता है:
(A) यथाकृतिक मानचित्र
(B) समकक्ष मानचित्र
(C) समदूरस्थ मानचित्र
(D) रूढ़ मानचित्र

68. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): रैंक स्कोर विधि एक मात्रात्मक तकनीक है।
कारण (R): इसमें गुणात्मक या मात्रात्मक डेटा को संख्यात्मक रैंक देना शामिल है, जिसका सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

69. निम्नलिखित में से कौन भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का प्राथमिक कार्य नहीं है?
(A) डेटा कैप्चर
(B) डेटा स्टोरेज
(C) डेटा विश्लेषण
(D) उपग्रह प्रक्षेपण

70. मानक विचलन की गणना के लिए सबसे पहले निम्नलिखित में से किस माप की आवश्यकता होती है?
(A) माध्य
(B) बहुलक
(C) माध्यिका
(D) परास

71. एक सरल रेखीय समाश्रयण मॉडल तब उपयुक्त होता है जब स्वतंत्र और आश्रित चर के बीच संबंध कैसा प्रतीत होता है:
(A) रेखीय
(B) वृत्ताकार
(C) यादृच्छिक
(D) घातांकीय

72. सूची I में दिए गए मानचित्र प्रक्षेप के गुणों को सूची II में उनके द्वारा सुरक्षित रखी जाने वाली विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (प्रक्षेप गुण)
P. यथाकृतिक
Q. समकक्ष
R. समदूरस्थ
S. खमध्य
सूची II: (सुरक्षित विशेषता)
1. क्षेत्रफल
2. केंद्रीय बिंदु से दिशा
3. आकृति
4. केंद्रीय बिंदु से दूरी
कूट:

NODIA

(B) यह महत्व के आधार पर एक विशिष्ट भार प्रदान करता है।
(C) यह डेटा के अंकगणितीय औसत की गणना करता है।
(D) यह डेटा बिंदुओं के बीच की दूरी को मापता है।

51. डिजिटल मानचित्रण मुख्य रूप से पारंपरिक कार्टोग्राफी से किस रूप में भिन्न है?
(A) प्रतीकों और रंगों के उपयोग में।
(B) मापनी और प्रक्षेप पर निर्भरता में।
(C) कंप्यूटर आधारित डेटा प्रारूप के उपयोग में।
(D) उच्चावच विशेषताओं के प्रदर्शन में।

52. विक्षेपण का वह माप जो प्रसरण के वर्गमूल के रूप में गणना किया जाता है:
(A) परास
(B) माध्य विचलन
(C) चतुर्थक विचलन
(D) मानक विचलन

53. मानचित्र के प्रकारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्थलाकृतिक मानचित्र एक विस्तृत, बड़ी मापनी का मानचित्र है जो प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों विशेषताओं को दर्शाता है।
2. भू-संपत्ति मानचित्र एक छोटी मापनी का मानचित्र है जिसका उपयोग मौसम के पूर्वानुमान के लिए किया जाता है।
3. विषयक मानचित्र किसी विशिष्ट विषय के स्थानिक वितरण को दिखाने पर केंद्रित होता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

54. Y = a + bX के रूप वाले समाश्रयण समीकरण का उपयोग किसके लिए किया जाता है?
(A) सहसंबंध गुणांक की गणना करने के लिए।
(B) X के मान के आधार पर Y के मान का अनुमान लगाने के लिए।
(C) डेटासेट का बहुलक निर्धारित करने के लिए।
(D) डेटा बिंदुओं के विक्षेपण को मापने के लिए।

55. भूगोल में निकटतम पड़ोसी विश्लेषण का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) दो बिंदुओं के बीच का सबसे छोटा मार्ग निर्धारित करना।
(B) किसी क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व की गणना करना।
(C) वितरण में केंद्रीय बिंदु की पहचान करना।
(D) इस बात को मापना कि कोई बिंदु प्रतिरूप किस सीमा तक गुच्छित, यादृच्छिक या विकीर्ण है।

56. कई दशकों में किसी देश की जनसंख्या में परिवर्तन दिखाने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा सांख्यिकीय आरेख सबसे उपयुक्त है?
(A) रेखा आरेख
(B) पाई चार्ट
(C) विक्षेप आरेख
(D) आयतचित्र

57. एक भूगोलवेत्ता शहर के लिए जीआईएस डेटाबेस विकसित कर रहा है। निम्नलिखित क्रियाओं को सबसे तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. डेटा विश्लेषण
2. डेटा इनपुट
3. डेटा आउटपुट
4. डेटा प्रबंधन

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 2, 1, 4, 3

58. यदि प्रतिचयन फ्रेम में कोई आवधिक या चक्रीय प्रतिरूप है, तो किस प्रकार का प्रतिचयन पक्षपात के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है?
(A) व्यवस्थित प्रतिचयन
(B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) स्तरित प्रतिचयन
(D) गुच्छ प्रतिचयन

59. 1:50,000 की मापनी वाले मानचित्र को किस रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) छोटी मापनी का मानचित्र
(B) मध्यम मापनी का मानचित्र
(C) दीवार मानचित्र
(D) बड़ी मापनी का मानचित्र

60. सुदूर सेंसरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: निष्क्रिय सुदूर सेंसर प्राकृतिक ऊर्जा का पता लगाते हैं जो देखी गई दृश्य वस्तु से परावर्तित या उत्सर्जित होती है।
कथन II: LiDAR निष्क्रिय सुदूर संवेदन तकनीक का एक उदाहरण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

61. निम्नलिखित में से कौन मानचित्र प्रक्षेप के उद्देश्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) मानचित्र के एक छोटे हिस्से को बड़ा करना।
(B) पृथ्वी का त्रि-आयामी मॉडल बनाना।
(C) पृथ्वी की गोलाकार सतह को व्यवस्थित रूप से एक

Click Here to Buy book on Amazon

(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(C) कथन I सही है, कथन II गलत है।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

83. पारंपरिक कागजी मानचित्रों की तुलना में डिजिटल मानचित्रण का सबसे महत्वपूर्ण लाभ क्या है?
(A) वे सौंदर्य की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं।
(B) उन्हें डेटाबेस से गतिशील रूप से जोड़ा जा सकता है और आसानी से अद्यतनीकरण किया जा सकता है।
(C) उनमें किसी भी प्रकार का प्रक्षेप विरूपण नहीं होता है।
(D) वे हमेशा उत्पादन और वितरण के लिए निःशुल्क होते हैं।

84. निकटतम पड़ोसी सांख्यिकी (Rn) के सूत्र की गणना प्रेक्षित औसत दूरी और किसका उपयोग करके की जाती है?
(A) यादृच्छिक प्रतिरूप में अपेक्षित औसत दूरी।
(B) किन्हीं दो बिंदुओं के बीच की अधिकतम दूरी।
(C) दूरियों का मानक विचलन।
(D) अध्ययन क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल।

85. एक भूगोलवेत्ता जिले के विभिन्न गांवों में पशुओं की सही संख्या दिखाना चाहता है। किस प्रकार का मानचित्र सबसे उपयुक्त होगा?
(A) वर्णमात्री मानचित्र
(B) आइसोपलिथ मानचित्र
(C) बिंदु मानचित्र
(D) डेसिमेट्रिक मानचित्र

86. भूमि उपयोग प्रकारों के डेटासेट के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का कौन सा माप सबसे उपयुक्त होगा?
(A) बहुलक
(B) माध्य
(C) माध्यिका
(D) मानक विचलन

87. मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोग की एक सीमा निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और प्रशिक्षण की उच्च प्रारंभिक लागत।
(B) बड़े डेटासेट को संभालने में अक्षमता।
(C) सरल कार्यों के लिए धीमी प्रसंस्करण गति।
(D) उत्पादित मानचित्र हमेशा गलत होते हैं।

88. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): स्तरित प्रतिचयन यह सुनिश्चित करता है कि जनसंख्या के भीतर विभिन्न उपसमूहों का नमूने में पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व हो।
कारण (R): स्तरित प्रतिचयन में, जनसंख्या को सजातीय स्तरों में विभाजित किया जाता है, और प्रत्येक स्तर से एक सरल यादृच्छिक नमूना लिया जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

89. एक समाश्रयण विश्लेषण से समीकरण प्राप्त होता है: फसल पैदावार (टन में) = 5 + 2.5 × (वर्षा सेमी में)। यदि वर्षा 10 सेमी है तो अनुमानित फसल पैदावार क्या है?
(A) 30 टन
(B) 7.5 टन
(C) 17.5 टन
(D) 25 टन

90. भूगोल में उपयोग किए जाने वाले सांख्यिकीय आरेख के उदाहरणों में निम्नलिखित को छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) दंड आरेख
(B) पाई चार्ट
(C) प्रवाह आरेख
(D) स्थलाकृतिक परिच्छेदिका

91. शंकु प्रक्षेप के मानक अक्षांशों के साथ कौन सा गुण सुरक्षित रहता है?
(A) मापनी
(B) क्षेत्रफल
(C) आकृति
(D) दिक-मान

92. भौगोलिक अध्ययनों में एक उपकरण के रूप में "मानचित्र" शब्द का अर्थ है कि इसका मुख्य रूप से किसके लिए उपयोग किया जाता है:
(A) स्थानिक संबंधों का विश्लेषण, व्याख्या और संप्रेषण।
(B) सजावट और कलात्मक अभिव्यक्ति।
(C) ऐतिहासिक दस्तावेजों का भंडारण और प्रदर्शन।
(D) केवल समुद्री मार्गों का नौसंचालन।

93. विक्षेपण के मापों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानक विचलन को मूल डेटा के समान इकाइयों में व्यक्त किया जाता है।
2. प्रसरण मानक विचलन का वर्ग होता है।
3. एक बड़ा मानक विचलन डेटा में अधिक परिवर्तनशीलता का संकेत देता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

94. सुदूर संवेदन और जीआईएस के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) सुदूर संवेदन डेटा अधिग्रहण के बारे में है, जबकि

Downloaded from www.pdf.tube

वाले यात्री।
(B) एक शहर से दूसरे शहर में प्रवासन।
(C) अपने स्रोत से मुहाने की ओर बहने वाली नदी।
(D) एक ही बंदरगाह से कई देशों में भेजे जाने वाले सामान।

158. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): बड़ी, भौगोलिक रूप से बिखरी हुई आबादी के लिए सरल यादृच्छिक प्रतिचयन अव्यवहारिक हो सकता है।
कारण (R): व्यापक रूप से बिखरे हुए नमूना स्थानों की यात्रा करना कठिन या महंगा हो सकता है, और पूरी आबादी की पूरी सूची उपलब्ध नहीं हो सकती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

159. आयतचित्र और दंड आरेख के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) आयतचित्र में दंड एक-दूसरे को स्पर्श करते हैं, जबकि दंड आरेख में वे आमतौर पर अलग होते हैं।
(B) आयतचित्र का उपयोग असंतत डेटा के लिए किया जाता है, जबकि दंड आरेख निरंतर डेटा के लिए होता है।
(C) आयतचित्र हमेशा प्रतिशत दिखाता है, जबकि दंड आरेख पूर्ण संख्याएँ दिखाता है।
(D) दंड आरेख केवल क्षैतिज रूप से खींचा जा सकता है।

160. मानचित्र प्रक्षेप किस मूलभूत समस्या को हल करने का प्रयास करते हैं?
(A) 3D गोले को 2D समतल पर प्रदर्शित करने की समस्या।
(B) छोटे मानचित्र पर बहुत अधिक विवरण दिखाने की समस्या।
(C) मानचित्र के लिए सही रंगों के चयन की समस्या।
(D) एक स्पष्ट उत्तर दिशा सूचक खींचने की समस्या।

161. 0 का सहसंबंध गुणांक क्या दर्शाता है?
(A) दो चरों के बीच कोई रेखीय संबंध नहीं है।
(B) दो चर पूर्ण रूप से संबंधित हैं।
(C) जैसे-जैसे एक चर बढ़ता है, दूसरा घटता है।
(D) एक चर दूसरे का कारण बनता है।

162. सूची I में दिए गए शब्दों को सूची II में आवेदन के क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. मानक विचलन
Q. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
R. समाश्रयण
S. मानचित्र प्रक्षेप
सूची II: (आवेदन का क्षेत्र)
1. कार्टोग्राफी
2. भविष्यसूचक मॉडलिंग
3. बिंदु प्रतिरूप विश्लेषण
4. वर्णनात्मक सांख्यिकी
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

163. जीआईएस का कौन सा घटक ओवरले और बफरिंग जैसे विश्लेषणात्मक कार्यों के लिए उत्तरदायी है?
(A) सॉफ्टवेयर
(B) हार्डवेयर
(C) डेटा
(D) उपयोगकर्ता

164. मानचित्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सभी मानचित्र वास्तविकता का सरलीकरण हैं।
कथन II: एक मानचित्र पृथ्वी की सतह की हर एक विशेषता को पूर्ण सटीकता के साथ दिखा सकता है।
(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

165. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): सक्रिय सुदूर संवेदन प्रणालियाँ दिन या रात के किसी भी समय डेटा प्राप्त कर सकती हैं।
कारण (R): ये प्रणालियाँ लक्ष्य को रोशन करने के लिए ऊर्जा का अपना स्रोत प्रदान करती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

166. मानचित्र की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
1. यह एक विशिष्ट मापनी पर खींचा जाता है।
2. यह विशेषताओं को दर्शाने के लिए प्रतीकों का उपयोग करता है।
3. यह वास्तविकता का चुनिंदा प्रतिनिधित्व है।
इनमें से कौन से मानचित्र के मूलभूत गुण हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

NODIA

104. विक्षेपण के मापों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मानक विचलन विक्षेपण का एक स्थिर माप है, जिसका अर्थ है कि यह चरम मानों से बहुत अधिक प्रभावित नहीं होता है।
कथन II: परास विक्षेपण का एक अत्यधिक स्थिर माप है।
(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

105. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दर्शाने वाले प्रवाह मानचित्र में तीर क्या दर्शाएंगे?
(A) वस्तुओं के प्रवाह की दिशा।
(B) व्यापार करने वाले देशों की जनसंख्या।
(C) व्यापार करने वाले देशों की जीडीपी।
(D) व्यापार करने वाले देशों की जलवायु।

106. एक भूगोलवेत्ता अलग-अलग उच्च, मध्यम और निम्न-आय वाले क्षेत्रों वाले शहर में आय के स्तर को समझने के लिए एक सर्वेक्षण की योजना बना रहा है। निम्नलिखित में से कौन सी विधि सबसे प्रभावी होगी?
1. शहर के सभी घरों का सरल यादृच्छिक प्रतिचयन।
2. स्तरित प्रतिचयन, जिसमें क्षेत्रों को स्तरों के रूप में लिया जाए।
3. शहर-व्यापी सूची से प्रत्येक 50वें घर का व्यवस्थित प्रतिचयन।
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) 1 और 3 समान रूप से प्रभावी हैं।

107. निम्नलिखित में से कौन सा मानचित्र मापनी निरूपण का प्रकार नहीं है?
(A) शब्दिक कथन
(B) निरूपक भिन्न
(C) रैखिक या आलेखीय मापनी
(D) रंग प्रवणता मापनी

108. मर्केटर प्रक्षेप का मुख्य दोष क्या है?
(A) उच्च अक्षांशों में क्षेत्रफल का अत्यधिक विरूपण।
(B) निम्न अक्षांशों में आकृतियों का अत्यधिक विरूपण।
(C) दिक-मान रेखाओं को सीधी रेखाओं के रूप में दिखाने में अक्षमता।
(D) निर्देशांकों को प्लॉट करने में कठिनाई।

109. सूची I में दिए गए शब्दों को सूची II में उनकी संबंधित अवधारणाओं के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. Rn < 1
Q. Rn > 1
R. r = +1.0
S. r = -1.0
सूची II: (संबंधित अवधारणा)
1. विकीर्ण प्रतिरूप
2. पूर्ण धनात्मक सहसंबंध
3. गुच्छित प्रतिरूप
4. पूर्ण ऋणात्मक सहसंबंध
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

110. समान तापमान वाले बिंदुओं को जोड़ने वाली रेखाओं को दर्शाने वाला मानचित्र क्या कहलाता है?
(A) समताप रेखा
(B) समदाब रेखा
(C) समवर्षा रेखा
(D) समलवण रेखा

111. "समाश्रयण गुणांक" (Y = a + bX में 'b') क्या दर्शाता है?
(A) X में एक-इकाई परिवर्तन के लिए Y में औसत परिवर्तन।
(B) जब X शून्य हो तो Y का मान।
(C) X और Y के बीच सहसंबंध की मजबूती।
(D) मॉडल का सांख्यिकीय महत्व।

112. भूगोल में 'उपकरण के रूप में मानचित्र' की मुख्य विशेषता इसकी किस क्षमता में है?
(A) स्थानिक विश्लेषण और प्रतिरूपों की पहचान की सुविधा प्रदान करना।
(B) विशुद्ध रूप से कलात्मक रूप में जानकारी प्रस्तुत करना।
(C) किसी स्थान का विस्तृत लिखित इतिहास प्रदान करना।
(D) क्षेत्रीय कार्य और प्रत्यक्ष अवलोकन की आवश्यकता को प्रतिस्थापित करना।

113. भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) में सामान्य विश्लेषणात्मक कार्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बफरिंग किसी विशेषता के चारों ओर एक निर्दिष्ट दूरी का क्षेत्र बनाती है।
2. ओवरले विश्लेषण में कई डेटा परतों को संयोजित करना शामिल है।
3. नेटवर्क विश्लेषण का उपयोग सबसे छोटा मार्ग या इष्टतम मार्ग खोजने के लिए किया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन से जीआईएस में सामान्य विश्लेषणात्मक कार्य हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

Click Here to Buy book on Amazon

178. रेखा आरेख एक प्रकार का सांख्यिकीय आरेख है जो विशेष रूप से क्या दिखाने के लिए उपयोगी है?
(A) समय के साथ रुझान और परिवर्तन।
(B) किसी संपूर्ण का अनुपात।
(C) एकल चर का आवृत्ति वितरण।
(D) अलग-अलग श्रेणियों के बीच तुलना।

179. मानचित्र भौगोलिक अध्ययन के लिए एक "उपकरण" है क्योंकि यह अनुमति देता है:
(A) स्थानिक प्रतिरूपों और संबंधों को देखने की।
(B) क्षेत्रीय कार्य के बिना भौगोलिक सिद्धांतों को सिद्ध करने की।
(C) कलात्मक परिदृश्य बनाने की।
(D) गैर-स्थानिक, पाठ्य डेटा संग्रहीत करने की।

180. रैंक स्कोर विधि की प्राथमिक सीमा यह है कि यह:
(A) रैंकों के बीच के अंतर के परिमाण को स्पष्ट नहीं करती है।
(B) गणना करने में बहुत जटिल है।
(C) इसका उपयोग केवल दो डेटा बिंदुओं के लिए किया जा सकता है।
(D) गणना के लिए कंप्यूटर की आवश्यकता होती है।

181. बहु-समाश्रयण में, यदि हमारे पास एक आश्रित चर और तीन स्वतंत्र चर हैं, तो लक्ष्य एक ऐसा समीकरण खोजना है जो:
(A) तीन स्वतंत्र चरों के भारित संयोजन का उपयोग करके आश्रित चर का सबसे अच्छा अनुमान लगा सके।
(B) प्रत्येक स्वतंत्र चर को दूसरों के साथ सह-संबंधित करता हो।
(C) चारों चरों का औसत मान ज्ञात करता हो।
(D) स्वतंत्र चरों को महत्व के क्रम में रैंक करता हो।

182. विक्षेपण के मापों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: मानक विचलन, परास की तुलना में विक्षेपण का अधिक व्यापक माप है।
कथन II: मानक विचलन माध्य से प्रत्येक डेटा बिंदु के विचलन पर विचार करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(B) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

183. निम्नलिखित में से कौन सा गुणात्मक विषयक मानचित्र का उदाहरण है?
(A) भूगर्भीय चट्टान प्रकारों के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र।
(B) प्रति व्यक्ति आय दर्शाने वाला मानचित्र।
(C) शहरी जनसंख्या का प्रतिशत दर्शाने वाला मानचित्र।
(D) जनसंख्या घनत्व दर्शाने वाला मानचित्र।

184. विशेषताओं को रेखांकित करके स्कैन किए गए कागजी मानचित्रों को वेक्टर डेटा में बदलने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) हेड्स-अप डिजिटाइजिंग
(B) जियोरेफरेंसिंग
(C) बफरिंग
(D) रास्टराइजेशन

185. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): मर्केटर प्रक्षेप का व्यापक रूप से नौसंचालन के लिए उपयोग किया जाता है।
कारण (R): यह एक यथाकृतिक प्रक्षेप है जहाँ कोई भी सीधी रेखा एक स्थिर दिक-मान रेखा होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

186. केंद्रीय प्रवृत्ति का कौन सा माप उस मान के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके नीचे 50% अवलोकन स्थित होते हैं?
(A) माध्यिका
(B) माध्य
(C) बहुलक
(D) मिड-रेंज

187. बहु-मानदंड विश्लेषण में भारित स्कोर का उद्देश्य क्या है?
(A) अंतिम परिणाम में विभिन्न मानदंडों के सापेक्ष महत्व को प्रतिबिंबित करना।
(B) यह सुनिश्चित करना कि सभी मानदंडों को समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाए।
(C) डेटा को 1 से N तक रैंक करके सरल बनाना।
(D) मानदंडों के स्थानिक वितरण की गणना करना।

188. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): यदि एक ही बिंदु से बहुत अधिक प्रवाह हों, तो प्रवाह मानचित्र अव्यवस्थित और पढ़ने में कठिन हो सकता है।
कारण (R): प्रभावी प्रवाह मानचित्र बनाने के लिए कार्टोग्राफिक सामान्यीकरण और प्रतीक डिजाइन अनिवार्य हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

126. एक सरल सहसंबंध गुणांक (r) की सीमा किसके बीच होती है?
(A) -1 और +1
(B) 0 और 1
(C) 0 और 100
(D) -∞ और +∞

127. निम्नलिखित में से कौन विक्षेपण का एक माप है?
(A) मानक विचलन
(B) माध्य
(C) बहुलक
(D) माध्यिका

128. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): यदि प्रशासनिक इकाइयों के आकार में बहुत अधिक भिन्नता हो, तो वर्णमात्री मानचित्र भ्रामक हो सकता है।
कारण (R): बड़ी इकाइयाँ मानचित्र पर दृष्टिगत रूप से प्रभावी हो सकती हैं, भले ही उनका जनसंख्या घनत्व या मान कम हो, जिसे क्षेत्रफल-आकार प्रभाव के रूप में जाना जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

129. समाश्रयण विश्लेषण का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(A) अन्य चरों के मान के आधार पर एक चर के मान का अनुमान लगाना।
(B) संबंध की मजबूती को मापना।
(C) डेटा को समूहों में वर्गीकृत करना।
(D) एक चर के आवृत्ति वितरण को दिखाना।

130. "1 सेमी = 10 किमी" के रूप में लिखे मापनी वाला मानचित्र किसका उदाहरण है?
(A) शब्दिक मापनी
(B) निरूपक भिन्न
(C) आलेखीय मापनी
(D) अनुपात मापनी

131. जीआईएस में रास्टर डेटा की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह स्थानिक जानकारी को कोशिकाओं या पिक्सल के एक संरचित ग्रिड में संग्रहीत करता है।
(B) यह भौगोलिक विशेषताओं को अलग-अलग बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों के रूप में प्रदर्शित करता है।
(C) यह स्पष्ट रूप से आसन्नता और जुड़ाव जैसे टोपोलॉजिकल संबंधों को संग्रहीत करता है।
(D) यह वेक्टर डेटा मॉडल की तुलना में अधिक कुशल नेटवर्क विश्लेषण करता है।

132. सूची I में सेंसर प्रकारों को सूची II में उनके सिद्धांतों या उदाहरणों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (सेंसर प्रकार)
P. सक्रिय सेंसर
Q. निष्क्रिय सेंसर
R. पंचक्रोमैटिक सेंसर
S. मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर
सूची II: (उदाहरण/सिद्धांत)
1. कई विशिष्ट तरंगदैर्घ्य बैंडों में ऊर्जा रिकॉर्ड करता है
2. एकल, विस्तृत बैंड में ऊर्जा रिकॉर्ड करता है
3. बाहरी ऊर्जा स्रोत पर निर्भर करता है
4. अपनी ऊर्जा उत्सर्जित करता है और परावर्तन को रिकॉर्ड करता है
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

133. केंद्रीय प्रवृत्ति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. माध्यिका वह मान है जो वितरण को दो बराबर हिस्सों में विभाजित करती है।
2. बहुलक वितरण में सबसे अधिक बार आने वाला मान है।
3. माध्य वितरण में चरम मानों के प्रति संवेदनशील होता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

134. भौगोलिक विश्लेषण में प्रतिचयन तकनीकों के उपयोग का निम्नलिखित में से कौन सा लाभ नहीं है?
(A) यह जनसंख्या के 100% सटीक प्रतिनिधित्व की गारंटी देता है।
(B) यह पूर्ण जनगणना की तुलना में कम समय लेने वाला है।
(C) यह पूर्ण जनगणना की तुलना में कम खर्चीला है।
(D) यह सटीकता के ज्ञात स्तर के साथ परिणाम प्रदान कर सकता है।

135. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में, यदि बिंदुओं के बीच प्रेक्षित औसत दूरी अपेक्षित औसत दूरी से बहुत कम है, तो Rn मान क्या होगा?
(A) 0 के करीब
(B) 1.0 के करीब
(C) 2.15 के करीब
(D) एक बड़ी ऋणात्मक संख्या

Downloaded from www.pdf.tube

जीआईएस डेटा प्रबंधन और विश्लेषण के बारे में है।
(B) सुदूर संवेदन कंप्यूटर का उपयोग करता है, जबकि जीआईएस नहीं।
(C) जीआईएस का उपयोग मानचित्र बनाने के लिए किया जाता है, जबकि सुदूर संवेदन का नहीं।
(D) कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है; ये शब्द परस्पर विनिमेय हैं।

95. भारित स्कोर आवंटित करते समय, भार किसके आधार पर निर्धारित किए जाते हैं?
(A) शोधकर्ता के निर्णय या महत्व के पूर्व-निर्धारित मॉडल पर।
(B) डेटा के रैंक क्रम पर।
(C) मान की घटना की आवृत्ति पर।
(D) एक यादृच्छिक आवंटन प्रक्रिया पर।

96. भूगोल में प्रतिचयन तकनीकों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन जनसंख्या के प्रत्येक तत्व को चुने जाने का समान और स्वतंत्र अवसर प्रदान करता है।
(B) व्यवस्थित प्रतिचयन में प्रत्येक चयन के लिए यादृच्छिक संख्या तालिका का उपयोग करके नमूने चुनना शामिल है।
(C) स्तरित प्रतिचयन का उपयोग तब किया जाता है जब जनसंख्या सजातीय होती है।
(D) गुच्छ प्रतिचयन तब सबसे कुशल होता है जब गुच्छों के भीतर के तत्व विषम होते हैं।

97. एक सामान्य जीआईएस परियोजना के चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. समस्या को परिभाषित करना
2. डेटा अधिग्रहण
3. डेटा विश्लेषण
4. परिणाम प्रस्तुत करना
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

98. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): मर्केटर प्रक्षेप का व्यापक रूप से नौसंचालन के लिए उपयोग किया जाता है।
कारण (R): यह एक यथाकृतिक प्रक्षेप है जहाँ कोई भी सीधी रेखा एक स्थिर दिक-मान रेखा होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

99. सरल रेखीय समाश्रयण में, 'लाइन ऑफ बेस्ट फिट' वह होती है जो:
(A) बिंदुओं से रेखा तक की वर्गित ऊर्ध्वाधर दूरियों के योग को न्यूनतम करती है।
(B) पहले और अंतिम डेटा बिंदुओं को जोड़ती है।
(C) डेटा बिंदुओं की अधिकतम संख्या से होकर गुजरती है।
(D) सहसंबंध गुणांक को अधिकतम करती है।

100. कार्टोग्राफी में "मापनी" की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) मानचित्र पर दूरी और जमीन पर संबंधित दूरी के बीच का अनुपात।
(B) कागजी मानचित्र का भौतिक आकार।
(C) मानचित्र पर उपयोग किए जाने वाले रंगों की सीमा।
(D) मानचित्र पर खींची गई रेखाओं की मोटाई।

101. संपत्ति रेखाओं और स्वामित्व विवरणों को दिखाने के लिए विशेष रूप से किस प्रकार का मानचित्र बनाया गया है?
(A) स्थलाकृतिक मानचित्र
(B) भू-संपत्ति मानचित्र
(C) विषयक मानचित्र
(D) सड़क मानचित्र

102. सूची I में विश्लेषण तकनीकों को सूची II में उनके उद्देश्यों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (विश्लेषण तकनीक)
P. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
Q. समाश्रयण विश्लेषण
R. सहसंबंध विश्लेषण
S. भारित स्कोर
सूची II: (उद्देश्य)
1. दो चरों के बीच संबंध की मजबूती और दिशा को मापना
2. उपयुक्तता विश्लेषण के लिए मानदंडों को अलग-अलग महत्व देना
3. यह निर्धारित करना कि क्या बिंदु प्रतिरूप गुच्छित, यादृच्छिक या विकीर्ण है
4. एक आश्रित चर के मान को मॉडल करना और उसका अनुमान लगाना
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

103. मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों की एक प्रमुख क्षमता कौन सी है जो मैन्युअल कार्टोग्राफी में कठिन थी?
(A) उत्तर दिशा सूचक का उपयोग करना
(B) त्रि-आयामी विज़ुअलाइज़ेशन और फ्लाई-थ्रू बनाना
(C) स्पष्ट रेखाएं खींचना
(D) मानचित्र संकेत का उपयोग करना

NODIA

(A) उत्तरी ध्रुव से किसी भी अन्य बिंदु तक।
(B) किसी भी बिंदु से किसी अन्य बिंदु तक।
(C) भूमध्य रेखा पर किसी भी बिंदु से भूमध्य रेखा पर किसी अन्य बिंदु तक।
(D) दक्षिणी ध्रुव से किसी भी बिंदु तक।

148. निम्नलिखित में से कौन सरल रैंक स्कोर की गणना की प्रक्रिया का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वस्तुओं की एक सूची को क्रमित करना और अनुक्रमिक संख्याएँ प्रदान करना।
(B) प्रत्येक मान को पूर्व-निर्धारित भार से गुणा करना।
(C) सूची के औसत मान की गणना करना।
(D) सूची में सबसे सामान्य मान खोजना।

149. सूची I में दिए गए आरेखों को सूची II में उनके सर्वोत्तम उपयोग के मामलों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (आरेख)
P. रेखा आरेख
Q. पाई चार्ट
R. आयतचित्र
S. दंड आरेख
सूची II: (सर्वोत्तम उपयोग)
1. विभिन्न अलग-अलग श्रेणियों में मात्राओं की तुलना करना
2. एक निरंतर चर के आवृत्ति वितरण को दिखाना
3. किसी संपूर्ण की आनुपातिक या प्रतिशत संरचना प्रदर्शित करना
4. निरंतर अवधि में रुझान या परिवर्तन दिखाना
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

150. भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) में, उस स्थानिक डेटा मॉडल के लिए क्या शब्द है जो भौगोलिक विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों का उपयोग करता है?
(A) वेक्टर मॉडल
(B) रास्टर मॉडल
(C) पिक्सेल मॉडल
(D) ग्रिड मॉडल

151. यदि एक सरल समाश्रयण मॉडल में उच्च R-वर्ग मान है, तो इसका अर्थ है:
(A) स्वतंत्र चर, आश्रित चर में भिन्नता के एक बड़े हिस्से की व्याख्या करता है।
(B) मॉडल प्रदान किए गए डेटासेट के लिए मूल रूप से उपयुक्त नहीं है।
(C) चरों के बीच सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से शून्य सिद्ध होता है।
(D) स्वतंत्र चर सीधे आश्रित चर को बदलने का कारण बनता है।

152. निम्नलिखित में से कौन सा भौगोलिक विश्लेषण में उपयोग किया जाने वाला प्रतिचयन का प्रकार नहीं है?
(A) परिणामी
(B) यादृच्छिक
(C) व्यवस्थित
(D) स्तरित

153. एक भूगोलवेत्ता को भूमि-उपयोग मानचित्र बनाने का काम सौंपा गया है। निम्नलिखित संभावित डेटा स्रोतों पर विचार करें:
1. उच्च-रिज़ॉल्यूशन उपग्रह इमेजरी।
2. ज़ोनिंग नियमों के मौजूदा कागजी मानचित्र।
3. क्षेत्रीय सर्वेक्षण के दौरान एकत्र किया गया जीपीएस (GPS) डेटा।
डिजिटल भूमि-उपयोग मानचित्र बनाने के लिए इनमें से किस स्रोत को जीआईएस में एकीकृत किया जा सकता है?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

154. निम्नलिखित डेटासेट के लिए मानक विचलन क्या है: {5, 5, 5, 5, 5}?
(A) 0
(B) 5
(C) 1
(D) 25

155. वह मानचित्र जो विभिन्न प्रशासनिक जिलों को छायांकित करके जनसंख्या घनत्व दर्शाता है, किसका उदाहरण है?
(A) वर्णमात्री मानचित्र
(B) आइसोपलिथ मानचित्र
(C) बिंदु मानचित्र
(D) स्थलाकृतिक मानचित्र

156. सांख्यिकीय आरेख का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) संख्यात्मक डेटा को दृष्टिगत रूप से समझने योग्य प्रारूप में प्रस्तुत करना।
(B) विस्तृत सांख्यिकीय विश्लेषण की आवश्यकता को प्रतिस्थापित करना।
(C) भौगोलिक डेटा एकत्र करने के लिए एक विधि प्रदान करना।
(D) विश्व मानचित्र के लिए प्रक्षेप बनाना।

157. निम्नलिखित में से कौन प्रवाह मानचित्र पर 'अनेक-से-एक' प्रवाह का उदाहरण है?
(A) विभिन्न उपनगरों से केंद्रीय व्यावसायिक जिले में आने

Click Here to Buy book on Amazon

114. यदि किसी डेटासेट में कुछ बहुत उच्च मान हैं, तो माध्य और माध्यिका कैसे संबंधित होंगे?
(A) माध्य, माध्यिका से अधिक होगा।
(B) माध्यिका, माध्य से अधिक होगी।
(C) माध्य और माध्यिका बराबर होंगे।
(D) कोई पूर्व-अनुमानित संबंध नहीं है।

115. सुदूर संवेदन में एक निष्क्रिय सेंसर ऊर्जा के किस स्रोत पर निर्भर करता है?
(A) सूर्य से आने वाली ऊर्जा या पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित ऊर्जा।
(B) सेंसर द्वारा स्वयं उत्पन्न और उत्सर्जित ऊर्जा।
(C) जमीन आधारित ट्रांसमीटरों से ऊर्जा।
(D) पृथ्वी के भीतर से भू-तापीय ऊर्जा।

116. निम्नलिखित में से कौन सा गलत युग्म है?
(A) समाश्रयण - केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
(B) माध्य - केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
(C) मानक विचलन - विक्षेपण का माप
(D) सहसंबंध - संबंध का माप

117. एक मैदान में गाँवों के निकटतम पड़ोसी विश्लेषण से 2.10 का Rn मान प्राप्त होना क्या दर्शाता है?
(A) अत्यधिक विकीर्ण, संभवतः भूमि धारण प्रणालियों के कारण।
(B) एक केंद्रीय संसाधन के चारों ओर गुच्छित।
(C) यादृच्छिक रूप से बिखरे हुए।
(D) एक परिवहन रेखा के साथ व्यवस्थित।

118. कौन सा सांख्यिकीय आरेख एक निरंतर चर के वितरण को दर्शाने के लिए वर्ग अंतराल और आवृत्तियों का उपयोग करता है?
(A) आयतचित्र
(B) पाई चार्ट
(C) दंड आरेख
(D) रेखा आरेख

119. सड़क के पतों को भौगोलिक निर्देशांक आवंटित करने के लिए जीआईएस का उपयोग करने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) जियोकोडिंग
(B) जियोरेफरेंसिंग
(C) डिजिटाइजिंग
(D) बफरिंग

120. निम्नलिखित में से कौन सा 'बहु-सहसंबंध' की सबसे अच्छी परिभाषा है?
(A) एक आश्रित चर और स्वतंत्र चरों के एक सेट के बीच सहसंबंध।
(B) समय के कई बिंदुओं पर दो चरों के बीच सहसंबंध।
(C) कई सरल सहसंबंध गुणांकों का औसत।
(D) अन्य चरों के प्रभाव की उपेक्षा करते हुए दो चरों के बीच सहसंबंध।

121. सटीक मापन के लिए उपयोगी होने हेतु मानचित्र में किसका स्पष्ट रूप से परिभाषित होना आवश्यक है?
(A) मापनी
(B) रंग योजना
(C) शीर्षक
(D) उत्तर दिशा सूचक

122. स्कोरिंग विधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: रैंक स्कोर विधि में, वस्तुओं को उनके बीच के अंतर के परिमाण पर ध्यान दिए बिना केवल क्रमबद्ध किया जाता है।
कथन II: भारित स्कोर विधि में, रैंक और महत्व के परिमाण दोनों पर विचार किया जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

123. वह मानचित्र प्रक्षेप जो एक केंद्रीय बिंदु से अन्य सभी बिंदुओं तक सही दिशा दिखाता है, वह है:
(A) खमध्य
(B) यथाकृतिक
(C) समकक्ष
(D) समदूरस्थ

124. सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में स्तरित प्रतिचयन के उपयोग का एक प्रमुख लाभ क्या है?
(A) यह अधिक प्रतिनिधि नमूना तैयार कर सकता है और प्रतिचयन त्रुटि को कम कर सकता है।
(B) इसे डिजाइन करना और लागू करना बहुत सरल है।
(C) इसके लिए प्रतिचयन फ्रेम की आवश्यकता नहीं होती है।
(D) यह गारंटी देता है कि नमूना भौगोलिक रूप से गुच्छित होगा।

125. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): पेशेवर क्षेत्रों में डिजिटल मानचित्रण ने काफी हद तक मैन्युअल कार्टोग्राफिक तकनीकों का स्थान ले लिया है।
कारण (R): कंप्यूटर मानचित्र उत्पादन के लिए बेहतर गति, संपादन के लिए लचीलापन और विश्लेषणात्मक क्षमताएं प्रदान करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

167. एक शोधकर्ता 'उच्च उपयुक्तता' को 3, 'मध्यम उपयुक्तता' को 2 और 'कम उपयुक्तता' को 1 का मान देता है। यह किसका अनुप्रयोग है?
(A) रैंक स्कोर
(B) भारित स्कोर
(C) मानक विचलन
(D) समाश्रयण

168. किसी क्षेत्र में विभिन्न मृदा प्रकारों की आवृत्ति दिखाने के लिए कौन सा सांख्यिकीय आरेख सबसे उपयुक्त होगा?
(A) दंड आरेख
(B) रेखा आरेख
(C) आयतचित्र
(D) प्रकीर्णन आरेख

169. सूची I में सांख्यिकीय मापों को सूची II में उनके प्रकारों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (माप)
P. माध्य
Q. मानक विचलन
R. सहसंबंध गुणांक
S. Rn सांख्यिकी
सूची II: (प्रकार)
1. संबंध का माप
2. केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
3. स्थानिक प्रतिरूप का माप
4. विक्षेपण का माप
कूट:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-1, Q-4, R-2, S-3
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

170. निम्नलिखित में से कौन 'मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोग' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) कार्टोग्राफिक कार्यों को करने के लिए सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर का उपयोग।
(B) ऐतिहासिक मानचित्र बनाने की तकनीकों का अध्ययन।
(C) कागजी मानचित्रों की भौतिक छपाई।
(D) कंप्यूटर जनित टेम्प्लेट का उपयोग करके मानचित्रों का मैन्युअल चित्रण।

171. यदि मानचित्र का निरूपक भिन्न 1:100,000 है, तो यह है:
(A) 1:250,000 की तुलना में बड़े पैमाने का मानचित्र
(B) 1:50,000 की तुलना में बड़े पैमाने का मानचित्र
(C) 1:250,000 की तुलना में छोटे पैमाने का मानचित्र
(D) 1:50,000 के समान मापनी

172. सुदूर संवेदन के पीछे मूल सिद्धांत दूर से किसका मापन करना है?
(A) विद्युत चुंबकीय विकिरण
(B) गुरुत्वाकर्षण खिंचाव
(C) वायुमंडलीय दबाव
(D) पवन वेग

173. एक भूगोलवेत्ता ऊंचाई और तापमान के बीच संबंध का अध्ययन करना चाहता है। निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार कीजिए:
1. उन्हें संभवतः एक ऋणात्मक सहसंबंध प्राप्त होगा।
2. दी गई ऊंचाई पर तापमान का अनुमान लगाने के लिए समाश्रयण विश्लेषण का उपयोग किया जा सकता है।
3. संबंध को देखने के लिए प्रकीर्णन आरेख एक उपयोगी प्रारंभिक चरण होगा।
उपर्युक्त में से कौन से बिंदु मान्य हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

174. भौगोलिक अध्ययनों में भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का निम्नलिखित में से कौन सा लाभ नहीं है?
(A) डेटा त्रुटि के सभी स्रोतों का उन्मूलन।
(B) जटिल स्थानिक प्रश्न करने की क्षमता।
(C) मानचित्र उत्पादन का स्वचालन।
(D) विविध डेटासेट का एकीकरण।

175. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn सांख्यिकी की गणना के लिए निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी की आवश्यकता होती है:
(A) बिंदुओं के बीच की माध्यिका दूरी।
(B) अध्ययन क्षेत्र में बिंदुओं की संख्या।
(C) अध्ययन क्षेत्र का आकार।
(D) प्रत्येक बिंदु और उसके निकटतम पड़ोसी के बीच की औसत दूरी।

176. अधिक पूर्व-पश्चिम विस्तार वाले मध्य-अक्षांश देशों के लिए कौन सा मानचित्र प्रक्षेप सबसे उपयुक्त होगा?
(A) लैम्बर्ट यथाकृतिक शंकु प्रक्षेप
(B) ध्रुवीय नोमोनिक प्रक्षेप
(C) मर्केटर प्रक्षेप
(D) साइनुसोइडल प्रक्षेप

177. किसी शहर में सर्वेक्षण करते समय, एक शोधकर्ता शहर को खंडों में विभाजित करता है, यादृच्छिक रूप से कुछ खंडों को चुनता है, और फिर चयनित खंड के भीतर प्रत्येक घर का साक्षात्कार करता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) गुच्छ प्रतिचयन
(B) स्तरित प्रतिचयन
(C) व्यवस्थित प्रतिचयन
(D) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन

NODIA

136. एक भूगोलवेत्ता नए अस्पताल के लिए उपयुक्तता मानचित्र बना रहा है। वे जनसंख्या घनत्व, सड़क पहुंच और मौजूदा अस्पतालों से दूरी जैसे कारकों पर विचार करते हैं। इन कारकों को संयोजित करने के लिए, जनसंख्या घनत्व को अधिक महत्व देते हुए, कौन सी तकनीक सबसे उपयुक्त है?
(A) भारित स्कोर
(B) रैंक स्कोर
(C) सरल सहसंबंध
(D) निकटतम पड़ोसी विश्लेषण

137. बड़े पूर्व-पश्चिम विस्तार वाले देश के मानचित्रण के लिए कौन सा मानचित्र प्रक्षेप सबसे उपयुक्त है?
(A) दो मानक अक्षांशों वाला सामान्य शंकु प्रक्षेप
(B) सामान्य बेलनाकार प्रक्षेप
(C) ध्रुवीय खमध्य प्रक्षेप
(D) अनुप्रस्थ मर्केटर प्रक्षेप

138. डिजिटल मानचित्रण के संदर्भ में कंप्यूटर के कार्य का सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) डेटा कैप्चर, स्टोरेज, हेरफेर, विश्लेषण और प्रदर्शन के लिए एक उपकरण।
(B) भौगोलिक ज्ञान और सिद्धांतों का प्रतिस्थापन।
(C) केवल पहले से बने मानचित्रों को मुद्रित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला उपकरण।
(D) उपग्रहों को लॉन्च करने और नियंत्रित करने के लिए एक प्रणाली।

139. यदि परीक्षा अंकों के एक सेट का मानक विचलन 5 है, और माध्य 75 है, तो इसका क्या तात्पर्य है?
(A) अधिकांश अंक 75 के अपेक्षाकृत करीब हैं।
(B) सभी छात्रों ने ठीक 75 अंक प्राप्त किए।
(C) अंक माध्य से बहुत दूर बिखरे हुए हैं।
(D) परीक्षा बहुत सरल थी।

140. निम्नलिखित सुदूर संवेदन प्रक्रियाओं को प्रारंभ से अंत तक सही क्रम में व्यवस्थित करें।
1. संचरण, अभिग्रहण और प्रसंस्करण
2. व्याख्या और विश्लेषण
3. ऊर्जा स्रोत या प्रदीप्ति
4. लक्ष्य के साथ अंतःक्रिया
(A) 3, 4, 1, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 1, 4, 2

141. सरल और बहु-समाश्रयण के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) उपयोग किए गए स्वतंत्र चरों की संख्या।
(B) उपयोग किए गए आश्रित चर का प्रकार।
(C) समाश्रयण रेखा की आकृति।
(D) सहसंबंध की गणना की विधि।

142. प्रवाह मानचित्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्रवाह मानचित्र मार्ग और आवाजाही की मात्रा दोनों दिखा सकते हैं।
कथन II: प्रवाह मानचित्र पर तीर विशुद्ध रूप से सजावटी होते हैं और दिशा नहीं दर्शाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

143. संपत्ति कर निर्धारण का कार्य सौंपी गई सरकारी एजेंसी के लिए किस प्रकार का मानचित्र सबसे उपयोगी है?
(A) एक भू-संपत्ति मानचित्र
(B) एक रोड एटलस
(C) एक जलवायु मानचित्र
(D) एक छोटी मापनी का विश्व मानचित्र

144. शहर में किराने की दुकानों के स्थानिक प्रतिरूप का विश्लेषण करने के लिए कि क्या वे गुच्छित हैं या समान रूप से फैले हुए हैं, एक भूगोलवेत्ता किसका उपयोग करेगा:
(A) निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
(B) समाश्रयण विश्लेषण
(C) सहसंबंध विश्लेषण
(D) केंद्रीय प्रवृत्ति के माप

145. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): आय जैसे विषम वितरणों के लिए माध्यिका अक्सर माध्य की तुलना में केंद्रीय प्रवृत्ति का बेहतर माप होती है।
कारण (R): माध्यिका अत्यधिक उच्च या निम्न मानों से प्रभावित नहीं होती है, जबकि माध्य इन मानों की ओर खिंच जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

146. मानचित्र मूल रूप से एक "उपकरण" है क्योंकि यह:
(A) स्थानिक घटनाओं की जांच और संप्रेषण का एक साधन है।
(B) एक अंतिम उत्पाद है जिसे बदला नहीं जा सकता।
(C) वास्तविकता का एक पूर्ण, विरूपण-रहित मॉडल है।
(D) उपयोग करने के लिए शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती है।

147. उत्तरी ध्रुव पर केंद्रित एक खमध्य समदूरस्थ प्रक्षेप कहाँ से सही दूरी दिखाएगा?

Downloaded from www.pdf.tube

189. सूची I में दिए गए जीआईएस डेटा प्रकारों को सूची II में उनके वास्तविक दुनिया की विशेषताओं के उदाहरणों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (GIS डेटा)
P. बिंदु
Q. रेखा
R. बहुभुज
S. रास्टर
सूची II: (वास्तविक दुनिया की विशेषता का उदाहरण)
1. एक नदी या सड़क
2. एक उपग्रह छवि या ऊंचाई मॉडल
3. एक शहर या कुएं का स्थान
4. एक देश की सीमा या झील
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

190. मानचित्र प्रक्षेप बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली विकसित सतह में निम्नलिखित में से कौन सा शामिल नहीं है?
(A) एक गोलाभ
(B) एक बेलन
(C) एक शंकु
(D) एक समतल

191. 'डिजिटल मानचित्रण' की एक प्रमुख विशेषता है:
(A) भौगोलिक जानकारी का एक संरचित, कंप्यूटर-पठनीय प्रारूप में भंडारण।
(B) गैर-स्केलेबल डेटा प्रारूपों का उपयोग।
(C) विशेष रूप से ऐतिहासिक मानचित्रों पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) कार्टोग्राफिक त्रुटियों का पूर्ण अभाव।

192. सूची I में दिए गए संक्षिप्त रूपों को सूची II में उनकी अवधारणाओं या पूर्ण रूपों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (संक्षिप्त रूप)
P. GIS
Q. GPS
R. RF
S. NNA
सूची II: (पूर्ण रूप/अवधारणा)
1. निरूपक भिन्न
2. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
3. भौगोलिक सूचना प्रणाली
4. ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

193. सरल रेखीय समाश्रयण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह स्वतंत्र (X) और आश्रित (Y) चरों के बीच एक रेखनीय संबंध मानता है।
2. इसका उपयोग दिए गए X मानों के लिए Y मानों का अनुमान लगाने के लिए किया जा सकता है।
3. यह एक बिंदु प्रतिरूप में गुच्छन की मात्रा को मापता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

194. सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में व्यवस्थित प्रतिचयन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ है:
(A) चयन की सुगमता और अध्ययन क्षेत्र का समान कवरेज।
(B) गैर-सजातीय आबादी को बेहतर ढंग से संभालने की क्षमता।
(C) प्रतिचयन पक्षपात का पूर्ण उन्मूलन।
(D) चक्रीय प्रतिरूप में व्यवस्थित आबादी के लिए उपयोगिता।

195. मानचित्र पर मापनी उपयोगकर्ता को अनुमति देती है:
(A) मानचित्र पर मापी गई दूरियों को वास्तविक जमीनी दूरियों में बदलने की।
(B) मानचित्र के अभिविन्यास को निर्धारित करने की।
(C) मानचित्र के प्रतीकों को समझने की।
(D) उस तिथि की पहचान करने की जब मानचित्र बनाया गया था।

196. कल्पना कीजिए कि आप मृदा की गुणवत्ता, ढाल और जल की उपलब्धता के मानदंडों (प्रत्येक 1-5 रैंक) के साथ कृषि के लिए एक उपयुक्तता मानचित्र बना रहे हैं। एक अंतिम स्कोर बनाने के लिए जहां मृदा की गुणवत्ता दूसरों की तुलना में दोगुनी महत्वपूर्ण हो, किस विधि का उपयोग किया जाना चाहिए?
(A) रैंक स्कोर, तीनों रैंकों को एक साथ जोड़कर।
(B) खेत गुच्छों को देखने के लिए निकटतम पड़ोसी विश्लेषण।
(C) ढाल और गुणवत्ता को संबंधित करने के लिए सरल सहसंबंध।
(D) भारित स्कोर, मृदा रैंक को 2 से गुणा करके।

197. केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) किसी भी डेटासेट के लिए माध्य, माध्यिका और बहुलक हमेशा एक ही मान होते हैं।
(B) माध्य अंकगणितीय औसत है।

NODIA

(B) खेत का सर्वेक्षण करने के लिए कंपास और चेन का उपयोग करना।
(C) प्लास्टिक शीट पर मैन्युअल रूप से विशेषताओं को अंकित करना।
(D) कागजी मानचित्र के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए प्रिंटिंग प्रेस का उपयोग करना।

222. सूची I में कार्टोग्राफिक तकनीकों को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (कार्टोग्राफिक तकनीक)
P. प्रवाह मानचित्र
Q. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
R. रैंक स्कोर
S. भारित स्कोर
सूची II: (विवरण)
1. विशेषताओं की एक श्रृंखला को क्रमसूचक संख्याएँ प्रदान करना
2. अलग-अलग महत्व के साथ कई मानदंडों को संयोजित करना
3. बिंदु विशेषताओं के स्थानिक प्रतिरूप को मापना
4. स्थानों के बीच आवाजाही और मात्रा दिखाना
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

223. नाममात्र डेटा, जैसे शहर में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं की सूची के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का सबसे उपयुक्त माप कौन सा है?
(A) बहुलक
(B) माध्य
(C) माध्यिका
(D) परास

224. ग्लोब की विशेषताओं को एक शंकु पर प्रक्षेपित करके किस प्रकार का मानचित्र प्रक्षेप बनाया जाता है?
(A) शंकु
(B) बेलनाकार
(C) खमध्य
(D) छद्म-बेलनाकार

225. 'उपकरण' के रूप में मानचित्र की प्राथमिक भूमिका किससे संबंधित प्रश्नों का उत्तर देना है:
(A) "वहाँ क्या है?" (स्थान) और "...का प्रतिरूप क्या है?" (वितरण)।
(B) "यह कब हुआ?" (इतिहास) और "इसे किसने किया?" (जीवनी)।
(C) "यह सुंदर क्यों है?" (सौंदर्यशास्त्र) और "यह कैसा सुनाई देता है?" (ध्वनिकी)।
(D) "रासायनिक संरचना क्या है?" (रसायन विज्ञान) और "कीमत क्या है?" (अर्थशास्त्र)।

226. प्रतिचयन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्तरित प्रतिचयन में जनसंख्या को सजातीय उपसमूहों में विभाजित करना शामिल है।
2. व्यवस्थित प्रतिचयन में एक क्रमित सूची से नियमित अंतराल पर मदों का चयन करना शामिल है।
3. गुच्छ प्रतिचयन में जनसंख्या को समूहों में विभाजित करना और समूहों के यादृच्छिक चयन से सभी व्यक्तियों का नमूना लेना शामिल है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

227. मानचित्रों पर शब्दिक मापनी की तुलना में आलेखीय मापनी अक्सर क्यों पसंद की जाती है?
(A) यह मानचित्र को बड़ा या छोटा करने पर भी सही रहती है।
(B) यह अधिक सटीक है।
(C) यह अधिकांश लोगों के लिए पढ़ने में सरल है।
(D) यह मानचित्र पर कम स्थान लेती है।

228. समाश्रयण समीकरण $Y = a + bX$ में, 'a' क्या दर्शाता है?
(A) Y-अंतःखंड, या जब X, 0 हो तो Y का मान।
(B) समाश्रयण रेखा की ढाल।
(C) सहसंबंध गुणांक।
(D) Y का अनुमानित मान।

229. निम्नलिखित में से कौन मानचित्र मापनी का रूप नहीं है?
(A) उत्तर दिशा मानचित्र के शीर्ष पर है
(B) 1:24,000
(C) एक इंच एक मील का प्रतिनिधित्व करता है
(D) मील और किलोमीटर में विभाजित एक आलेखीय दंड

230. आयतचित्र किसका आलेखीय प्रतिनिधित्व है?
(A) संख्यात्मक डेटा का वितरण।
(B) दो चरों के बीच संबंध।
(C) किसी संपूर्ण के भागों का अनुपात।
(D) समय की अवधि में परिवर्तन।

231. सक्रिय और निष्क्रिय सुदूर सेंसर के बीच मूलभूत अंतर यह है कि सक्रिय सेंसर:
(A) प्रदीप्ति का अपना स्रोत प्रदान करता है।
(B) केवल दिन के दौरान ही संचालित हो सकता है।
(C) केवल दृश्य प्रकाश रिकॉर्ड करता है।
(D) हमेशा जमीन पर स्थित होता है।

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(B) X में प्रत्येक 1-इकाई वृद्धि के लिए, Y में 2 इकाइयों की वृद्धि होती है।
(C) X और Y के बीच कोई संबंध नहीं है।
(D) X में प्रत्येक 1-इकाई वृद्धि के लिए, Y में 100 इकाइयों की कमी होती है।

210. 'डिजिटल मानचित्र' शब्द का तात्पर्य है कि मानचित्र किस रूप में मौजूद है:
(A) कंप्यूटर पर एक फ़ाइल के रूप में।
(B) हाथ से बने रेखाचित्र के रूप में।
(C) मुद्रित कागजी प्रति के रूप में।
(D) एक मानसिक छवि के रूप में।

211. निम्नलिखित में से कौन समकक्ष मानचित्र प्रक्षेप का गुण है?
(A) यह पृथ्वी के क्षेत्रों के सापेक्ष मानचित्र पर क्षेत्रों का सही अनुपात बनाए रखता है।
(B) यह छोटे क्षेत्रों की आकृति को पूरी तरह से सुरक्षित रखता है।
(C) यह मानचित्र के केंद्र से अन्य सभी बिंदुओं तक सही दूरी दिखाता है।
(D) मानचित्र पर सभी सीधी रेखाएं वृहत् वृत्त होती हैं।

212. तापमान के डेटासेट {10, 12, 12, 15, 25} के लिए बहुलक क्या है?
(A) 12
(B) 10
(C) 15
(D) 14.8

213. भौगोलिक अनुसंधान में प्रतिचयन तकनीक का उपयोग करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) एक छोटे, प्रतिनिधि उपसमूह के आधार पर जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालना।
(B) जनसंख्या के प्रत्येक तत्व का अध्ययन करना।
(C) अनुसंधान में त्रुटि की किसी भी संभावना को समाप्त करना।
(D) अध्ययन क्षेत्र का विस्तृत मानचित्र बनाना।

214. मर्केटर प्रक्षेप के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: मर्केटर प्रक्षेप एक बेलनाकार, यथाकृतिक प्रक्षेप है।
कथन II: मर्केटर प्रक्षेप ध्रुवीय क्षेत्रों में भू-भागों के आकार का सटीक प्रतिनिधित्व करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

215. 'भारित स्कोर' तकनीक किसका एक रूप है?
(A) बहु-मानदंड मूल्यांकन
(B) यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) केंद्रीय प्रवृत्ति मापन
(D) स्थानिक प्रतिरूप विश्लेषण

216. यदि एक शोधकर्ता शहरों को जनसंख्या के आकार के आधार पर बड़े से छोटे क्रम में रैंक कर रहा है, तो वे किसका उपयोग कर रहे हैं?
(A) रैंक स्कोर
(B) भारित स्कोर
(C) जेड-स्कोर
(D) माध्य स्कोर

217. समवर्षा रेखाओं को दर्शाने वाला मानचित्र किसके समान बिंदुओं को जोड़ने वाला मानचित्र है?
(A) वर्षा
(B) तापमान
(C) दबाव
(D) लवणता

218. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): जीआईएस में, सड़कों या भवनों जैसी स्पष्ट सीमाओं वाली अलग-अलग विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए आमतौर पर वेक्टर डेटा मॉडल पसंद किए जाते हैं।
कारण (R): ऊंचाई या तापमान जैसी निरंतर घटनाओं को संग्रहीत करने के लिए वेक्टर मॉडल अधिक गणनात्मक रूप से कुशल हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

219. मानक विचलन का मान किसका माप है?
(A) माध्य के चारों ओर डेटा का प्रसार या परिवर्तनशीलता।
(B) डेटासेट का औसत मान।
(C) डेटासेट में सबसे सामान्य मान।
(D) दो अलग-अलग डेटासेट के बीच संबंध।

220. यदि दो चरों के बीच सहसंबंध गुणांक शून्य है तो इसका क्या अर्थ है?
(A) दो चरों के बीच कोई रेखीय संबंध नहीं है।
(B) दो चर गैर-रेखीय तरीके से मजबूती से संबंधित हैं।
(C) एक चर दूसरे का व्युत्क्रम है।
(D) एक चर में वृद्धि दूसरे में कमी का कारण बनती है।

221. निम्नलिखित में से कौन 'मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोग' का एक उदाहरण है?
(A) साइट उपयुक्तता विश्लेषण करने के लिए जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करना।

(C) माध्यिका एक क्रमित सेट में मध्य मान है।
(D) बहुलक सबसे अधिक बार आने वाला मान है।

198. जीआईएस का एक प्रमुख कार्य जो इसे सरल डिजिटल मानचित्रण सॉफ्टवेयर से अलग करता है, वह है:
(A) उन्नत स्थानिक विश्लेषण क्षमताएं।
(B) रंग प्रदर्शित करने की क्षमता।
(C) मानचित्र मुद्रित करने की क्षमता।
(D) बिंदुओं और रेखाओं का उपयोग करने की क्षमता।

199. सहसंबंध विश्लेषण में r = -0.85 का मान क्या दर्शाता है?
(A) एक मजबूत ऋणात्मक रेखीय संबंध।
(B) एक मजबूत धनात्मक रेखीय संबंध।
(C) एक कमजोर धनात्मक रेखीय संबंध।
(D) एक कमजोर ऋणात्मक रेखीय संबंध।

200. निम्नलिखित डेटा प्रकारों को गणितीय रूप से कम से कम बहुमुखी से सबसे अधिक बहुमुखी के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. अनुपात
2. नाममात्र
3. क्रमसूचक
4. अंतराल
(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 3, 2, 1, 4

201. निम्नलिखित में से कौन सा मानचित्र राज्यों या जिलों जैसी पूर्व-निर्धारित प्रशासनिक इकाइयों के लिए डेटा दिखाता है?
(A) वर्णमात्री मानचित्र
(B) आइसोपलिथ मानचित्र
(C) डेसिमेट्रिक मानचित्र
(D) स्थलाकृतिक मानचित्र

202. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): मानक विचलन कभी भी ऋणात्मक संख्या नहीं हो सकता है।
कारण (R): इसकी गणना माध्य से वर्गित अंतरों का उपयोग करके की जाती है, जो हमेशा गैर-ऋणात्मक होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है, लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है, लेकिन R सही है।

203. एक भूगोलवेत्ता राष्ट्रीय उद्यान में एक दुर्लभ पौधे की प्रजाति के वितरण का अध्ययन करना चाहता है। निम्नलिखित में से कौन सी प्रतिचयन रणनीति सबसे कम प्रभावी होगी?
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) व्यवस्थित प्रतिचयन
(C) वनस्पति क्षेत्रों पर आधारित स्तरित प्रतिचयन
(D) पूरे उद्यान की पूर्ण गणना

204. नोमोनिक प्रक्षेप का प्राथमिक लाभ यह है कि:
(A) सभी वृहत् वृत्तों को सीधी रेखाओं के रूप में दर्शाया जाता है।
(B) यह एक समकक्ष प्रक्षेप है।
(C) ध्रुवों पर इसमें कोई विरूपण नहीं होता है।
(D) यह हर जगह स्थानीय आकृतियों को सटीक रूप से सुरक्षित रखता है।

205. आवाजाही के प्रतिरूपों को दर्शाने वाले प्रवाह मानचित्र में, उपनगर को शहर के केंद्र से जोड़ने वाली रेखा की चौड़ाई आमतौर पर क्या दर्शाती है?
(A) यात्रियों की संख्या।
(B) यात्रा की दूरी।
(C) यात्रा का समय।
(D) प्रयुक्त परिवहन का प्रकार।

206. निम्नलिखित में से कौन 'निकटतम पड़ोसी विश्लेषण' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) बिंदु प्रतिरूप में स्थानिक विक्षेपण की मात्रा मापने की तकनीक।
(B) प्रवृत्ति रेखा के आधार पर मानों का अनुमान लगाने की विधि।
(C) विभिन्न मानचित्र परतों को भार आवंटित करने की प्रक्रिया।
(D) डेटा को विभिन्न समूहों में वर्गीकृत करने का तरीका।

207. सुदूर संवेदन और जीआईएस के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) सुदूर संवेदन मुख्य रूप से डेटा अधिग्रहण से संबंधित है, जबकि जीआईएस विश्लेषण और प्रबंधन पर केंद्रित है।
(B) जीआईएस सुदूर संवेदन की तुलना में पुरानी तकनीक है।
(C) सुदूर संवेदन केवल अंतरिक्ष से किया जा सकता है, जबकि जीआईएस जमीन आधारित है।
(D) जीआईएस वेक्टर डेटा के साथ कार्य करता है, जबकि सुदूर संवेदन विशेष रूप से रास्टर डेटा के साथ।

208. एक वर्ष में राज्य में पांच अलग-अलग फसलों के कुल उत्पादन की तुलना करने के लिए सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय आरेख होगा:
(A) दंड आरेख
(B) रेखा आरेख
(C) आयतचित्र
(D) प्रकीर्णन आरेख

209. एक समाश्रयण समीकरण की गणना Y = 100 - 2X के रूप में की जाती है। इसका क्या तात्पर्य है?
(A) X में प्रत्येक 1-इकाई वृद्धि के लिए, Y में 2 इकाइयों की कमी होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

232. समाश्रयण विश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: बहु-समाश्रयण एकल आश्रित चर का अनुमान लगाने के लिए कई स्वतंत्र चरों का उपयोग करता है।
कथन II: सरल समाश्रयण एकल आश्रित चर का अनुमान लगाने के लिए एकल स्वतंत्र चर का उपयोग करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

233. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn मानों की सीमा आमतौर पर कहाँ से कहाँ तक होती है?
(A) 0 से 2.15 तक।
(B) -1 से +1 तक।
(C) 0 से 100 तक।
(D) 1 से 10 तक।

234. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का एक अनुप्रयोग है?
(A) अस्पताल के 5 किमी के भीतर के सभी क्षेत्रों की पहचान करना।
(B) किसी क्षेत्र के इतिहास के बारे में एक रिपोर्ट लिखना।
(C) किसी परिदृश्य की तस्वीर लेना।
(D) राष्ट्रीय जीडीपी की गणना करना।

235. निम्नलिखित में से कौन मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों द्वारा लाई गई एक प्रमुख क्रांति है?
(A) गतिशील और इंटरैक्टिव मानचित्र बनाने की क्षमता।
(B) रंगीन छपाई का आविष्कार।
(C) उत्तरी ध्रुव की खोज।
(D) कागज के आकार का मानकीकरण।

236. मानचित्र प्रक्षेप का वह गुण जो बिंदुओं के चारों ओर सही कोणीय संबंधों को सुरक्षित रखता है, कहलाता है:
(A) यथाकृतिकता
(B) समकक्षता
(C) समदूरस्थता
(D) खमध्यता

237. एक डेटासेट के मान हैं: {2, 3, 5, 5, 7, 8, 10}। माध्यिका क्या है?
(A) 5
(B) 2
(C) 5.7
(D) 8

238. शहरी उद्यानों के एक अध्ययन में, यदि शोधकर्ता यह सुनिश्चित करना चाहता है कि विभिन्न आकारों के उद्यानों का नमूने में प्रतिनिधित्व हो, तो सबसे अच्छी तकनीक होगी:
(A) स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) व्यवस्थित प्रतिचयन
(D) सुविधा प्रतिचयन

239. मानक विचलन की गणना किसका माप है?
(A) विक्षेपण
(B) केंद्रीय स्थान
(C) साहचर्य
(D) विषमता

240. प्रवाह मानचित्र पर तीर क्या दिखाने के लिए आवश्यक हैं?
(A) आवाजाही की दिशा।
(B) मानचित्र की मापनी।
(C) प्रशासनिक सीमाएँ।
(D) समान मान वाले स्थान।

241. रैंक स्कोर किसका एक रूप है?
(A) क्रमसूचक मापन
(B) नाममात्र मापन
(C) अंतराल मापन
(D) अनुपात मापन

242. 1:2,000,000 की मापनी वाला मानचित्र किसे दिखाने के लिए सबसे उपयुक्त होगा?
(A) एक महाद्वीप की प्रमुख नदी प्रणालियाँ।
(B) एक एकल विश्वविद्यालय परिसर का खाका।
(C) एक छोटे शहर के भीतर संपत्ति की रेखाएं।
(D) एक एकल शहर का सड़क नेटवर्क।

243. सरल रेखीय समाश्रयण में 'आश्रित चर' क्या है?
(A) वह चर जिसका अनुमान लगाया जा रहा है।
(B) वह चर जिसका उपयोग अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।
(C) समाश्रयण समीकरण में स्थिरांक।
(D) समाश्रयण रेखा की ढाल।

244. मानचित्र सामान्यीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सभी मानचित्रों में सामान्यीकरण का कोई न कोई रूप शामिल होता है।
कथन II: सामान्यीकरण में मानचित्र को पठनीय बनाने के लिए सरलीकरण, चयन और प्रतीकीकरण जैसी प्रक्रियाएं शामिल हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

245. निम्नलिखित में से कौन भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का एक प्रमुख घटक है?
(A) स्थानिक डेटा को कैप्चर करने, संग्रहीत करने, विश्लेषण

NODIA

प्राप्त करना।
(B) किसी भी क्षेत्रीय कार्य को करने से बचना।
(C) बिना साक्ष्य के पूर्व-कल्पित परिकल्पना को सिद्ध करना।
(D) किसी क्षेत्र के केवल सबसे सुलभ हिस्सों का अध्ययन करना।

291. मानचित्र मापनी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) एक बड़ी मापनी का मानचित्र उच्च विस्तार के साथ एक छोटे क्षेत्र को दिखाता है।
(B) 1:1,000,000 की मापनी एक बड़ी मापनी है।
(C) एक छोटी मापनी का मानचित्र उच्च विस्तार के साथ एक छोटे क्षेत्र को दिखाता है।
(D) निरूपक भिन्न शब्दिक मापनी की तुलना में कम सटीक है।

292. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: निकटतम पड़ोसी विश्लेषण एक तकनीक है जिसका उपयोग आय और शिक्षा जैसे दो चरों के बीच संबंध की मजबूती को मापने के लिए किया जाता है।
कथन II: निकटतम पड़ोसी विश्लेषण का परिणाम एक Rn सांख्यिकी है जो बिंदुओं के समूह के स्थानिक प्रतिरूप के प्रकार का वर्णन करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

293. निम्नलिखित में से कौन 'विषयक मानचित्र' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) किसी विशिष्ट विषय या थीम के स्थानिक प्रतिरूप को चित्रित करने के लिए डिज़ाइन किया गया मानचित्र।
(B) एक मानचित्र जो सड़कों, नदियों और शहरों जैसी विभिन्न सामान्य जानकारी दिखाता है।
(C) एक मानचित्र जो कानूनी उद्देश्यों के लिए संपत्ति स्वामित्व सीमाओं को दर्शाता है।
(D) विशेष रूप से वायु और समुद्री नौसंचालन के लिए उपयोग किया जाने वाला मानचित्र।

294. उपयुक्तता विश्लेषण के लिए एक भारित स्कोर सरल रैंक स्कोर से बेहतर है क्योंकि यह:
(A) विभिन्न कारकों के सापेक्ष महत्व को शामिल करने की अनुमति देता है।
(B) हाथ से गणना करना सरल है।
(C) इसके लिए किसी विशेषज्ञ के निर्णय की आवश्यकता नहीं होती है।
(D) इसका उपयोग केवल दो मानदंडों के साथ किया जा सकता है।

295. किस प्रकार का मानचित्र प्रक्षेप विशेष रूप से अपने केंद्र बिंदु से वास्तविक दूरी बनाए रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है?
(A) खमध्य समदूरस्थ
(B) यथाकृतिक
(C) समकक्ष
(D) मर्केटर

296. भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) को सबसे अच्छी तरह से किसके लिए एक प्रणाली के रूप में परिभाषित किया गया है:
(A) स्थानिक डेटा को कैप्चर करने, संग्रहीत करने, विश्लेषण करने, प्रबंधित करने और प्रस्तुत करने के लिए।
(B) केवल डिजिटल मानचित्र बनाने के लिए।
(C) वास्तविक समय में उपग्रह इमेजरी देखने के लिए।
(D) केवल गैर-स्थानिक सांख्यिकी की गणना करने के लिए।

297. मानक विचलन विक्षेपण का एक उपयोगी माप है क्योंकि यह:
(A) अपनी गणना में डेटासेट के प्रत्येक मान का उपयोग करता है।
(B) कैलकुलेटर के बिना गणना करना सरल है।
(C) चरम मानों से प्रभावित नहीं होता है।
(D) हमेशा एक पूर्ण संख्या होती है।

298. चर A और चर B के बीच -1.0 का सहसंबंध गुणांक तात्पर्य है कि:
(A) जैसे-जैसे A बढ़ता है, B पूर्ण रूप से घटता है।
(B) A और B के बीच कोई संबंध नहीं है।
(C) जैसे-जैसे A बढ़ता है, B पूर्ण रूप से बढ़ता है।
(D) A और B के बीच संबंध यादृच्छिक है।

299. एक वर्ष में शहर के औसत मासिक तापमान में परिवर्तन दिखाने के लिए सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय आरेख होगा:
(A) रेखा आरेख
(B) पाई चार्ट
(C) आयतचित्र
(D) तापमान बनाम वर्षा दिखाने वाला प्रकीर्णन आरेख

300. यदि डेटा में कोई अंतर्निहित आवधिकता मौजूद है, तो निम्नलिखित में से कौन सी प्रतिचयन विधि एक गैर-प्रतिनिधि नमूना तैयार करने की सबसे अधिक संभावना रखती है?
(A) व्यवस्थित प्रतिचयन, डेटा आवधिकता के साथ संभावित संरेखण के कारण।
(B) स्तरित प्रतिचयन, क्योंकि इसके लिए व्यापक पूर्व ज्ञान की आवश्यकता होती है।
(C) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन, क्योंकि डिज़ाइन मूल रूप से बहुत सरल है।
(D) गुच्छ प्रतिचयन, क्योंकि यह समूह-स्तरीय डेटा प्रसरणों पर निर्भर करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

256. एक उपकरण के रूप में मानचित्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह स्थानिक जानकारी के लिए एक भंडारण माध्यम है।
2. यह स्थानिक वितरण और प्रतिरूपों के विश्लेषण के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।
3. यह स्थानिक अंतर्दृष्टि के लिए एक संप्रेषण माध्यम के रूप में कार्य करता है।

भूगोल में मानचित्र की वैध भूमिकाएँ उपर्युक्त में से कौन सी हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

257. किसी देश में वार्षिक आय के डेटासेट के लिए, 'विशिष्ट' आय का प्रतिनिधित्व करने के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति के किस माप को आम तौर पर प्राथमिकता दी जाती है?
(A) माध्यिका
(B) माध्य
(C) बहुलक
(D) परास

258. एक सरल यादृच्छिक नमूना वह है जिसमें:
(A) जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य को चुने जाने का समान अवसर प्राप्त होता है।
(B) जनसंख्या को पहले स्तरों में विभाजित किया जाता है।
(C) सदस्यों को नियमित अंतराल पर चुना जाता है।
(D) सबसे सुविधाजनक सदस्यों को चुना जाता है।

259. खमध्य प्रक्षेप को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है?
(A) एजिम्यूथल प्रक्षेप
(B) शंकु प्रक्षेप
(C) बेलनाकार प्रक्षेप
(D) मर्केटर प्रक्षेप

260. मानक विचलन की गणना के लिए निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें।
1. डेटासेट के माध्य की गणना करें।
2. प्रत्येक डेटा बिंदु के लिए, माध्य से उसकी दूरी का वर्ग ज्ञात करें।
3. प्रसरण का वर्गमूल ज्ञात करें।
4. वर्गित दूरियों के औसत (प्रसरण) की गणना करें।

(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 3, 1, 2

261. कई मानदंडों के आधार पर किसी स्थान को स्कोर आवंटित करने की प्रक्रिया, जहाँ प्रत्येक मानदंड को अलग-अलग महत्व दिया जाता है, क्या कहलाती है?
(A) भारित स्कोर विश्लेषण
(B) रैंक स्कोर विश्लेषण
(C) निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
(D) सरल सहसंबंध

262. जीआईएस डेटा मॉडल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जीआईएस में रास्टर डेटा ऊंचाई जैसी निरंतर घटनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है।
कथन II: सबसे छोटा मार्ग खोजने जैसे नेटवर्क विश्लेषण करने के लिए वेक्टर डेटा अधिक कुशल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

263. वह मानचित्र जो 'आवासीय', 'वाणिज्यिक' और 'औद्योगिक' जैसी भूमि उपयोग श्रेणियों को दर्शाता है, किसका एक प्रकार है?
(A) विषयक मानचित्र
(B) स्थलाकृतिक मानचित्र
(C) भू-संपत्ति मानचित्र
(D) सामान्य संदर्भ मानचित्र

264. समाश्रयण विश्लेषण का प्राथमिक आउटपुट क्या है?
(A) एक समीकरण जो चरों के बीच संबंध को मॉडल करता है।
(B) एक एकल सहसंबंध गुणांक।
(C) डेटा का समूहों में वर्गीकरण।
(D) एक चर के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र।

265. डेटासेट के लिए कम मानक विचलन क्या दर्शाता है?
(A) डेटा बिंदु माध्य के बहुत समीप होते हैं।
(B) डेटा बिंदु मानों की एक विस्तृत श्रृंखला में फैले हुए हैं।
(C) माध्य डेटा के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का एक न्यून माप है।
(D) डेटासेट में कई चरम मान हैं।

266. मानचित्र को "भौगोलिक अध्ययनों में एक उपकरण" कहा जाता है क्योंकि यह सक्षम बनाता है:
(A) स्थानिक संबंधों और प्रतिरूपों का विश्लेषण।
(B) वास्तविकता की सटीक प्रतिकृति।
(C) अन्य सभी शोध विधियों का प्रतिस्थापन।
(D) गैर-स्थानिक ऐतिहासिक घटनाओं का प्रलेखन।

267. वेक्टर-आधारित जीआईएस में रेखा विशेषता का उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) एक नदी
(B) एक कुआँ
(C) एक झील
(D) एक वन

268. जनसंख्या घनत्व के वितरण को दर्शाने वाले विश्व मानचित्र के लिए मर्केटर प्रक्षेप उपयुक्त नहीं है क्योंकि:

Downloaded from www.pdf.tube

करने और प्रदर्शित करने की एक विधि।
(B) मौसम पूर्वानुमान के लिए उपयोग किया जाने वाला एक प्रकार का उपग्रह।
(C) मैन्युअल मानचित्र चित्रण के लिए एक पारंपरिक उपकरण।
(D) माध्य की गणना के लिए एक सांख्यिकीय सूत्र।

246. मानक विचलन को किसमें व्यक्त किया जाता है?
(A) माध्य के समान इकाइयों में।
(B) माध्य की वर्ग इकाइयों में।
(C) इकाई-रहित अनुपातों में।
(D) प्रतिशत इकाइयों में।

247. सांख्यिकीय आरेख के रूप में पाई चार्ट की सबसे महत्वपूर्ण सीमा क्या है?
(A) दृष्टि से खंडों के सापेक्ष आकार की सटीक तुलना करना कठिन है।
(B) यह किसी संपूर्ण के भागों को नहीं दिखा सकता।
(C) इसका उपयोग केवल समय-श्रृंखला डेटा के लिए किया जा सकता है।
(D) इसके लिए निरंतर डेटा की आवश्यकता होती है।

248. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): मानचित्र प्रक्षेप का चयन मानचित्र बनाने में एक महत्वपूर्ण चरण है।
कारण (R): विभिन्न प्रक्षेपों के अलग-अलग गुण और विरूपण होते हैं, और चयन मानचित्र के उद्देश्य पर निर्भर करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

249. निम्नलिखित में से कौन सा मानचित्र प्रकार वायु दाब जैसे सतह पर निरंतर डेटा का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करेगा?
(A) आइसोपलिथ मानचित्र
(B) वर्णमात्री मानचित्र
(C) बिंदु मानचित्र
(D) भू-संपत्ति मानचित्र

250. "सुदूर संवेदन" शब्द का तात्पर्य है:
(A) पृथ्वी की सतह के भौतिक संपर्क में आए बिना उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने का विज्ञान।
(B) जीआईएस के भीतर डेटा का विश्लेषण करने की प्रक्रिया।
(C) पारंपरिक उपकरणों का उपयोग करके भूमि के सर्वेक्षण की तकनीक।
(D) शून्य से डिजिटल मानचित्रों का निर्माण।

251. +1 का सहसंबंध गुणांक क्या दर्शाता है?
(A) एक पूर्ण धनात्मक रेखीय संबंध।
(B) चरों के बीच कोई संबंध नहीं।
(C) एक पूर्ण ऋणात्मक रेखीय संबंध।
(D) एक कमजोर धनात्मक रेखीय संबंध।

252. सूची I में मानचित्र प्रक्षेपों को सूची II में उनके वर्गों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (प्रक्षेप का नाम)
P. मर्केटर
Q. लैम्बर्ट यथाकृतिक शंकु
R. नोमोनिक
S. साइनुसोइडल
सूची II: (वर्ग)
1. शंकु
2. खमध्य
3. बेलनाकार
4. छद्म-बेलनाकार
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

253. डिजिटल मानचित्रण का प्राथमिक लाभ निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) भौगोलिक जानकारी को अद्यतनीकरण और प्रसारित करने में सुगमता।
(B) मानचित्र मापनियों की आवश्यकता का उन्मूलन।
(C) ऐसे मानचित्रों का निर्माण जो हमेशा 100% सटीक होते हैं।
(D) मानचित्र बनाने की प्रक्रिया को विशुद्ध रूप से कलात्मक प्रक्रिया में बदलना।

254. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में, यदि बिंदुओं के बीच प्रेक्षित माध्य दूरी एक यादृच्छिक प्रतिरूप में अपेक्षित माध्य दूरी के बराबर है, तो Rn मान क्या होगा?
(A) 1
(B) 0
(C) 2.15
(D) -1

255. यदि आप विभिन्न देशों से भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या दिखाने वाला मानचित्र बनाना चाहते हैं, तो कौन सा मानचित्र सबसे प्रभावी होगा?
(A) एक प्रवाह मानचित्र।
(B) भारत का एक वर्णमात्री मानचित्र।
(C) भारत का एक स्थलाकृतिक मानचित्र।
(D) एक आइसोपलिथ मानचित्र।

NODIA

280. यदि किसी भवन के आकार के आधार पर उसकी कीमत का अनुमान लगाने वाले सरल समाश्रयण मॉडल की ढाल धनात्मक है, तो इसका अर्थ है:
(A) बड़े भवन अधिक महंगे होते हैं।
(B) बड़े भवन कम महंगे होते हैं।
(C) भवन के आकार और कीमत के बीच कोई संबंध नहीं है।
(D) आकार की परवाह किए बिना सभी भवनों की कीमत समान है।

281. राडार और लिडार किस प्रकार की सुदूर संवेदन प्रणाली के उदाहरण हैं?
(A) सक्रिय
(B) निष्क्रिय
(C) फोटोग्राफिक
(D) मैन्युअल

282. सूची I में दिए गए शब्दों को सूची II में दिए गए उदाहरणों के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही विकल्प का चयन कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. केंद्रीय प्रवृत्ति
Q. विक्षेपण
R. सहसंबंध
S. समाश्रयण
सूची II: (उदाहरण)
1. वर्षा और फसल पैदावार के बीच संबंध
2. वर्ग फुट के आधार पर भवन की कीमतों का अनुमान लगाना
3. किसी क्षेत्र की औसत आय
4. एक महीने में तापमान की परिवर्तनशीलता
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

283. भौगोलिक अध्ययनों में एक उपकरण के रूप में मानचित्र की मुख्य विशेषता इसकी किस क्षमता में है:
(A) विश्लेषण के लिए अंतरिक्ष का मापित, प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान करना।
(B) परिदृश्य की व्यक्तिपरक व्याख्या प्रदान करना।
(C) सांख्यिकीय डेटा की आवश्यकता को प्रतिस्थापित करना।
(D) कला के नमूने के रूप में कार्य करना।

284. विभिन्न क्षेत्रों को आवंटित राष्ट्रीय बजट का प्रतिशत दिखाने के लिए इनमें से कौन सा सांख्यिकीय आरेख अनुपयुक्त होगा?
(A) रेखा आरेख
(B) पाई चार्ट
(C) विभाजित दंड आरेख
(D) प्रतिशत अक्ष वाला सरल दंड आरेख

285. एक कार्टोग्राफर एक ऐसा मानचित्र बनाना चाहता है जहाँ महाद्वीपों की आकृतियों को सही ढंग से सुरक्षित रखा जाए, भले ही उनके आकार के विकृत होने की मूल्य चुकानी पड़े। किस प्रकार का प्रक्षेप चुना जाना चाहिए?
(A) एक यथाकृतिक प्रक्षेप
(B) एक समकक्ष प्रक्षेप
(C) एक समदूरस्थ प्रक्षेप
(D) एक नोमोनिक प्रक्षेप

286. एक शोधकर्ता फसल की पैदावार पर तीन अलग-अलग उर्वरकों की प्रभावशीलता की तुलना करना चाहता है। निम्नलिखित में से कौन सा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण मान्य है/हैं?
1. उर्वरक प्रकार के आधार पर पैदावार को मॉडल करने के लिए बहु-समाश्रयण का उपयोग करना।
2. प्रत्येक उर्वरक के लिए औसत पैदावार की तुलना करने के लिए दंड आरेखों का उपयोग करना।
3. यह देखने के लिए सहसंबंध का उपयोग करना कि क्या उर्वरक पैदावार से संबंधित है।
उपर्युक्त में से कौन से बिंदु मान्य हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

287. निम्नलिखित में से कौन विक्षेपण का माप नहीं है?
(A) माध्यिका
(B) परास
(C) प्रसरण
(D) मानक विचलन

288. मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोग का एक प्रमुख लाभ किसकी क्षमता है:
(A) जटिल और दोहराव वाले कार्टोग्राफिक कार्यों को स्वचालित करने की।
(B) ऐसे मानचित्र बनाने की जिनमें किसी व्याख्या की आवश्यकता न हो।
(C) डेटा संग्रह की आवश्यकता को समाप्त करने की।
(D) बिना किसी मापनी या प्रक्षेप के मानचित्र बनाने की।

289. सरल रेखीय समाश्रयण में, स्वतंत्र चर वह है जो:
(A) किसी अन्य चर में भिन्नता का अनुमान लगाने या समझाने के लिए उपयोग किया जाता है।
(B) जिसका अनुमान लगाया जा रहा है या जिसे समझाया जा रहा है।
(C) जिसे हमेशा Y-अक्ष पर प्लॉट किया जाता है।
(D) जिसे पूरे विश्लेषण के दौरान स्थिर रखा जाता है।

290. भौगोलिक विश्लेषण में प्रतिचयन तकनीकों के उपयोग का उद्देश्य क्या है:
(A) एक बड़ी आबादी से कुशल तरीके से प्रतिनिधि जानकारी

Click Here to Buy book on Amazon

(A) यह उच्च अक्षांशों में भू-भागों के क्षेत्रफल को बहुत अधिक बढ़ा देता है।
(B) यह भूमध्य रेखा के पास आकृतियों को विकृत करता है।
(C) यह यथाकृतिक प्रक्षेप नहीं है।
(D) इसका उपयोग नौसंचालन के लिए नहीं किया जा सकता है।

269. बहुलक किस प्रकार के डेटा के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का एकमात्र उपयुक्त माप है?
(A) नाममात्र
(B) अनुपात
(C) अंतराल
(D) क्रमसूचक

270. छात्र संतोष के एक सर्वेक्षण में, एक शोधकर्ता 50 प्रथम वर्ष, 50 द्वितीय वर्ष और 50 तृतीय वर्ष के छात्रों का चयन करता है। यह किस प्रतिचयन तकनीक का उदाहरण है?
(A) स्तरित प्रतिचयन
(B) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(C) व्यवस्थित प्रतिचयन
(D) गुच्छ प्रतिचयन

271. डिजिटल मानचित्रण तेजी से मानचित्र अद्यतनीकरण की सुविधा प्रदान करता है क्योंकि:
(A) डेटा संपादन योग्य, इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में संग्रहीत किया जाता है।
(B) कंप्यूटर अनुमान लगा सकते हैं कि परिवर्तन कहाँ हुए हैं।
(C) कागज और स्याही की अब आवश्यकता नहीं है।
(D) यह पारंपरिक मानचित्रों की तुलना में कम रंगों का उपयोग करता है।

272. प्रकीर्णन आरेख एक सांख्यिकीय आरेख है जिसका उपयोग किसके लिए किया जाता है:
(A) दो मात्रात्मक चरों के बीच संबंध प्रदर्शित करने के लिए।
(B) एकल चर का आवृत्ति वितरण दिखाने के लिए।
(C) किसी संपूर्ण के अनुपात का प्रतिनिधित्व करने के लिए।
(D) अलग-अलग श्रेणियों में मानों की तुलना करने के लिए।

273. सहसंबंध गुणांक की गणना करने का उद्देश्य क्या निर्धारित करना है:
(A) दो चरों के बीच रेखीय संबंध की मजबूती और दिशा।
(B) दो चरों के बीच कारण और प्रभाव।
(C) डेटासेट का औसत मान।
(D) स्थानिक प्रतिरूप में गुच्छन की मात्रा।

274. प्रवाह मानचित्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्रवाह मानचित्रों का उपयोग स्थिर, गतिहीन घटनाओं को दर्शाने के लिए किया जाता है।
कथन II: प्रवाह मानचित्र के मुख्य घटक अलग-अलग मोटाई की रेखाएं और दिशा दिखाने वाले तीर हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

275. निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में 0.2 का Rn मान किस प्रतिरूप को इंगित करता है:
(A) महत्वपूर्ण रूप से गुच्छित
(B) यादृच्छिक
(C) महत्वपूर्ण रूप से विकीर्ण
(D) एकसमान

276. किस प्रकार का मानचित्र प्रक्षेप वैचारिक रूप से ग्लोब के एक ही बिंदु पर समतल कागज रखकर बनाया जाता है?
(A) खमध्य
(B) बेलनाकार
(C) शंकु
(D) छद्म-बेलनाकार

277. 'माध्य' की गणना कैसे की जाती है:
(A) सभी मानों को जोड़कर और मानों की कुल संख्या से विभाजित करके।
(B) डेटासेट का मध्य मान ज्ञात करके।
(C) डेटासेट में सबसे अधिक बार आने वाला मान ज्ञात करके।
(D) उच्चतम मान से निम्नतम मान घटाकर।

278. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — अभिकथन (A) और कारण (R)।
अभिकथन (A): जीआईएस स्थानिक निर्णय लेने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है।
कारण (R): जीआईएस स्थानिक जानकारी की विभिन्न परतों को एकीकृत कर सकता है और जटिल विश्लेषण कर सकता है, जैसे कि उन स्थानों की पहचान करना जो कई मानदंडों को पूरा करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

279. सरल रैंक स्कोर की एक सीमा क्या है?
(A) यह रैंक की गई मदों के बीच के अंतर के परिमाण को नहीं दर्शाता है।
(B) इसे मात्रात्मक डेटा पर लागू नहीं किया जा सकता है।
(C) इसकी गणना करना कठिन है।
(D) इसका उपयोग 10 से अधिक मदों के लिए नहीं किया जा सकता है।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) किसी भौगोलिक क्षेत्र की चुनिंदा विशेषताओं का एक प्रतीकात्मक और मापित निरूपण।
मानचित्र पृथ्वी की सतह या उसके किसी भाग का एक निश्चित मापनी पर द्वि-आयामी प्रदर्शन है। यह भौगोलिक विशेषताओं का प्रतीकात्मक और मापित निरूपण प्रस्तुत करता है। इसमें विभिन्न तत्वों को विशिष्ट प्रतीकों और रंगों द्वारा दिखाया जाता है। यह वास्तविकता का एक वैज्ञानिक और सरलीकृत चित्रण है, जो स्थानिक संबंधों को समझने और सूचनाओं के प्रभावी विश्लेषण में अत्यंत सहायक होता है।

2. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मानचित्र भौगोलिक सूचनाओं के संग्रहण और संप्रेषण के प्राथमिक उपकरण हैं। भूगोल में इनका उपयोग केवल नौसंचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थानिक विश्लेषण और प्रतिरूपों की पहचान के लिए भी अनिवार्य हैं। इनके माध्यम से जटिल आंकड़ों को दृश्य रूप में सरल बनाया जाता है। यह क्षेत्रीय योजना और वैज्ञानिक शोध के लिए एक व्यवस्थित और विश्वसनीय विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करते हैं।

3. (C) विषयक मानचित्र
विषयक मानचित्र किसी विशिष्ट विषय या आंकड़ों के स्थानिक वितरण को दर्शाते हैं। इनमें जनसंख्या घनत्व, वर्षा, तापमान या मृदा जैसे विशेष तत्वों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ये सामान्य संदर्भ मानचित्रों से भिन्न होते हैं क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य विशिष्ट भौगोलिक प्रतिरूपों को उजागर करना होता है। सांख्यिकीय आंकड़ों को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में दर्शाने के लिए यह एक अत्यंत प्रभावी और वैज्ञानिक विधि है।

4. (D) विभिन्न मृदा प्रकारों के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र।
विभिन्न मृदा प्रकारों के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र गुणात्मक विषयक मानचित्र का सटीक उदाहरण है। गुणात्मक मानचित्र किसी क्षेत्र की विशेषताओं की श्रेणियों या प्रकारों को दर्शाते हैं, न कि उनकी संख्यात्मक मात्रा को। इसमें क्षेत्रों को उनके गुणों के आधार पर अलग-अलग रंगों या प्रतीकों से पहचाना जाता है। यह मात्रात्मक डेटा के बजाय वस्तुओं की प्रकृति और उनकी उपस्थिति पर केंद्रित होता है।

5. (C) भारित स्कोर
भारित स्कोर एक मापन तकनीक है जिसमें विभिन्न श्रेणियों को उनकी प्रासंगिकता के आधार पर विशिष्ट संख्यात्मक मान दिया जाता है। इसका उपयोग बहु-मानदंड निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में होता है। इसमें प्रत्येक कारक को एक निश्चित भार आवंटित किया जाता है, जिससे कुल परिणाम में उस कारक का प्रभाव स्पष्ट होता है। यह विधि भौगोलिक विश्लेषण को अधिक सटीक, संतुलित और तर्कसंगत बनाने में सहायक है।

6. (B) एक बड़ी मापनी का मानचित्र छोटी मापनी के मानचित्र की तुलना में कम विस्तृत होता है।
बड़ी मापनी का मानचित्र छोटे भौगोलिक क्षेत्र को अत्यंत विस्तार और सूक्ष्मता के साथ प्रदर्शित करता है। इसके विपरीत, छोटी मापनी का उपयोग महाद्वीपों जैसे विशाल क्षेत्रों को दिखाने के लिए किया जाता है, जिसमें विवरणों का सामान्यीकरण होता है। मापनी जितनी बड़ी होगी, धरातल के विवरण उतने ही स्पष्ट होंगे। अतः यह कहना गलत है कि बड़ी मापनी का मानचित्र छोटी मापनी की तुलना में कम विस्तृत होता है।

7. (D) एक पूर्णतः गुच्छित प्रतिरूप जहां सभी बिंदु एक ही स्थान पर स्थित हों।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn मान 0 एक पूर्णतः गुच्छित प्रतिरूप को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि वितरण में सभी बिंदु एक ही स्थान पर या अत्यंत निकट स्थित हैं। यह तकनीक किसी क्षेत्र में बिंदुओं के स्थानिक वितरण की व्यवस्था को मापने के लिए उपयोग की जाती है। Rn मान 0 से 2.15 के बीच होता है, जहाँ 0 गुच्छन और 1 यादृच्छिकता को सूचित करता है।

8. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
प्रवाह मानचित्र स्थानों के बीच वस्तुओं, सूचनाओं या लोगों की गतिशीलता दर्शाने के लिए प्रभावी होते हैं। इन मानचित्रों पर खींची गई प्रवाह रेखाओं की चौड़ाई आमतौर पर प्रवाह की वास्तविक मात्रा के समानुपाती होती है। यह दृश्य प्रदर्शन आंकड़ों की मात्रात्मक गहराई को समझने में मदद करता है। रेखाओं की दिशा और मोटाई के माध्यम से जटिल स्थानिक संपर्कों को सरल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

9. (C) माध्य
केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों में माध्य वह माप है जो डेटासेट में मौजूद चरम मानों से सर्वाधिक प्रभावित होता है। यदि आंकड़ों में कोई बहुत बड़ा या छोटा मान शामिल हो, तो माध्य का मान काफी बदल जाता है। इसके विपरीत, माध्यिका और बहुलक पर चरम मानों का प्रभाव बहुत कम पड़ता है। अतः अत्यधिक विषम वितरण वाले आंकड़ों के विश्लेषण में माध्य के स्थान पर अन्य मापों को प्राथमिकता दी जाती है।

10. (A) बेलनाकार प्रक्षेप
बेलनाकार प्रक्षेप ग्लोब को एक ऐसे बेलन पर प्रक्षेपित करके बनाया जाता है जो भूमध्य रेखा को स्पर्श करता है। इस प्रक्रिया में अक्षांश और देशांतर रेखाएं एक-दूसरे को समकोण पर काटती हुई सीधी रेखाओं के रूप में दिखाई देती हैं। इसका उपयोग मुख्य रूप से विश्व मानचित्र बनाने हेतु किया जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

मानक विचलन आंकड़ों में अधिक विविधता को दर्शाता है, जबकि कम मान आंकड़ों की स्थिरता और माध्य के निकट संकेंद्रण को सूचित करता है।

53. (A) केवल 1 और 3
स्थलाकृतिक मानचित्र बड़ी मापनी के होते हैं जो प्राकृतिक और मानव निर्मित विशेषताओं को विस्तार से दिखाते हैं। विषयक मानचित्र किसी विशिष्ट विषय जैसे जनसंख्या या जलवायु के स्थानिक वितरण पर केंद्रित होते हैं। भू-संपत्ति मानचित्र भी बड़ी मापनी के होते हैं जिनका उपयोग भूमि स्वामित्व और सीमाओं के लिए किया जाता है, न कि मौसम पूर्वानुमान हेतु। अतः केवल प्रथम और तृतीय कथन सत्य हैं। मानचित्रों का सही वर्गीकरण उनके उद्देश्य और मापनी पर आधारित होता है।

54. (B) X के मान के आधार पर Y के मान का अनुमान लगाने के लिए।
समाश्रयण समीकरण Y = a + bX का उपयोग स्वतंत्र चर X के दिए गए मान के आधार पर आश्रित चर Y के मान की भविष्यवाणी करने हेतु किया जाता है। यहाँ 'a' अंतःखंड है और 'b' ढाल को दर्शाता है, जो चरों के बीच के संबंध की दर बताता है। यह तकनीक सांख्यिकीय पूर्वानुमान और भविष्य के रुझानों को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। भूगोल में इसका उपयोग वर्षा के आधार पर फसल उत्पादन या ऊंचाई के आधार पर तापमान का अनुमान लगाने हेतु होता है।

55. (D) इस बात को मापना कि कोई बिंदु प्रतिरूप किस सीमा तक गुच्छित, यादृच्छिक या विकीर्ण है।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण का प्राथमिक उद्देश्य किसी क्षेत्र में बिंदुओं के स्थानिक वितरण की प्रकृति को वैज्ञानिक रूप से मापना है। यह निर्धारित करता है कि क्या बिंदु समूह में हैं, यादृच्छिक रूप से बिखरे हुए हैं, या एक नियमित अंतराल पर व्यवस्थित हैं। भूगोलवेत्ता इस तकनीक का उपयोग बस्तियों या प्राकृतिक संसाधनों के फैलाव का विश्लेषण करने के लिए करते हैं। यह विश्लेषण क्षेत्रीय विकास और योजना बनाने के लिए एक सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है।

56. (A) रेखा आरेख
कई दशकों में किसी देश की जनसंख्या में होने वाले क्रमिक परिवर्तन को दिखाने हेतु रेखा आरेख सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय उपकरण है। इसमें समय को क्षैतिज अक्ष पर और जनसंख्या को ऊर्ध्वाधर अक्ष पर दर्शाया जाता है, जिससे वृद्धि या गिरावट के रुझान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह निरंतर डेटा और समय-श्रृंखला विश्लेषण के लिए प्रभावी है। रेखा आरेख के माध्यम से भविष्य की प्रवृत्तियों का अनुमान लगाना और तुलनात्मक अध्ययन करना सरल हो जाता है।

57. (A) 2, 4, 1, 3
जीआईएस डेटाबेस विकसित करने का तार्किक क्रम डेटा इनपुट से शुरू होता है, जहाँ सूचनाओं को प्रणाली में प्रविष्ट किया जाता है। इसके बाद, डेटा प्रबंधन का चरण आता है जिसमें सूचनाओं को व्यवस्थित और संग्रहीत किया जाता है। तीसरे चरण में, वैज्ञानिक विश्लेषण करके आवश्यक निष्कर्ष निकाले जाते हैं। अंत में, डेटा आउटपुट के माध्यम से परिणामों को मानचित्रों या रिपोर्टों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह प्रक्रिया आंकड़ों की शुद्धता और विश्लेषण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करती है।

58. (A) व्यवस्थित प्रतिचयन
व्यवस्थित प्रतिचयन उस स्थिति में पक्षपात के प्रति संवेदनशील होता है जब प्रतिचयन फ्रेम में कोई अंतर्निहित आवधिक या चक्रीय प्रतिरूप मौजूद हो। यदि प्रतिचयन अंतराल आंकड़ों के चक्र के साथ मेल खा जाता है, तो नमूना पूरी जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएगा। इससे प्राप्त परिणाम भ्रामक हो सकते हैं और जनसंख्या की वास्तविक विविधता को छिपा सकते हैं। अतः इस विधि का उपयोग करते समय आंकड़ों की क्रमबद्ध प्रकृति की सावधानीपूर्वक जांच करना अत्यंत आवश्यक है।

59. (D) बड़ी मापनी का मानचित्र
1:50,000 की मापनी वाले मानचित्र को बड़ी मापनी के मानचित्र के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह मापनी पर्याप्त विवरण प्रदान करती है, जिससे गांवों, सड़कों और छोटी उच्चावच विशेषताओं को स्पष्ट रूप से दिखाया जा सकता है। भारत में भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित स्थलाकृतिक मानचित्र इसी मापनी पर आधारित होते हैं। यह छोटी मापनी वाले विश्व मानचित्रों की तुलना में बहुत अधिक सूक्ष्म जानकारी प्रदान करता है और स्थानीय स्तर की योजना बनाने हेतु उपयोगी है।

60. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
निष्क्रिय सुदूर सेंसर प्राकृतिक ऊर्जा का पता लगाते हैं जो सूर्य से परावर्तित या स्वयं वस्तु से उत्सर्जित होती है। LiDAR एक सक्रिय सुदूर संवेदन तकनीक है, न कि निष्क्रिय, क्योंकि यह स्वयं लेजर प्रकाश उत्सर्जित करती है और उसके परावर्तन को मापती है। सक्रिय सेंसर अपनी ऊर्जा का उपयोग करते हैं, जबकि निष्क्रिय सेंसर बाहरी स्रोतों पर निर्भर होते हैं। अतः केवल प्रथम कथन सत्य है। LiDAR और राडार सक्रिय प्रणालियों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

61. (C) पृथ्वी की गोलाकार सतह को व्यवस्थित रूप से एक सपाट मानचित्र पर परिवर्तित करना।
मानचित्र प्रक्षेप का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की त्रि-आयामी गोलाकार सतह को गणितीय और व्यवस्थित रूप से द्वि-आयामी सपाट मानचित्र पर स्थानांतरित करना है। चूंकि गोले को बिना विरूपण के समतल नहीं किया जा सकता, इसलिए प्रक्षेप विभिन्न विधियों का उपयोग करते हैं। ये विधियाँ विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार क्षेत्रफल, आकृति, दिशा या दूरी की शुद्धता बनाए रखने का प्रयास करती हैं। प्रक्षेप का सही चुनाव मानचित्र की उपयोगिता और उसकी वैज्ञानिक शुद्धता के लिए अत्यंत आवश्यक होता है।

62. (D) सबसे अधिक बार आने वाला मान।
डेटासेट के बहुलक को उस मान के रूप में परिभाषित किया जाता है जो वितरण में सबसे अधिक बार या उच्चतम आवृत्ति के साथ आता है। यह केंद्रीय प्रवृत्ति का एक सरल माप है जो

NODIA

इसके विपरीत, 1:1,000,000 जैसी छोटी मापनी बड़े क्षेत्रों को कम विस्तार के साथ प्रदर्शित करती है।

22. (B) एक मजबूत ऋणात्मक संबंध।
सहसंबंध गुणांक चरों के बीच संबंध की दिशा और मजबूती को दर्शाता है। -0.9 का मान एक मजबूत ऋणात्मक संबंध को इंगित करता है। इसका अर्थ है कि यदि एक चर के मान में वृद्धि होती है, तो दूसरे चर के मान में महत्वपूर्ण रूप से कमी आने की प्रवृत्ति होती है। सहसंबंध का मान -1 और +1 के बीच रहता है, जहाँ -1 पूर्ण ऋणात्मक संबंध को दर्शाता है।

23. (D) पाई चार्ट
पाई चार्ट एक वृत्ताकार सांख्यिकीय आरेख है जो संपूर्ण आंकड़ों के विभिन्न भागों या प्रतिशत संरचना को दर्शाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। इसमें वृत्त के विभिन्न खंडों का क्षेत्रफल प्रत्येक श्रेणी के सापेक्ष अनुपात को प्रदर्शित करता है। इसका उपयोग अक्सर बजट आवंटन, भूमि उपयोग या जनसंख्या संरचना जैसे आंकड़ों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने हेतु किया जाता है। यह आंकड़ों को समझने का सरल दृश्य रूप है।

24. (A) आकृति
यथाकृतिक मानचित्र प्रक्षेप का मूलभूत गुण स्थानीय स्तर पर भौगोलिक क्षेत्रों की आकृतियों और कोणों की रक्षा करना है। हालांकि इसमें दूरियों और क्षेत्रफल में विरुपण हो सकता है, लेकिन यह छोटी आकृतियों को उनके वास्तविक स्वरूप में बनाए रखता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से उन कार्यों में किया जाता है जहाँ दिशा और कोणीय सटीकता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। मर्केटर प्रक्षेप यथाकृतिक प्रक्षेप का एक प्रसिद्ध उदाहरण है।

25. (C) कोरोप्लिथ - औसत मान दिखाने के लिए प्रशासनिक क्षेत्रों के छायांकन का उपयोग करता है।
कोरोप्लिथ मानचित्र प्रशासनिक इकाइयों के भीतर आंकड़ों के वितरण को दर्शाने के लिए छायांकन या रंगों के विभिन्न घनत्व का उपयोग करता है। यह जनसंख्या घनत्व या साक्षरता दर जैसे औसत मानों को दिखाने के लिए अत्यंत प्रभावी है। इसमें प्रत्येक क्षेत्र को उसके सांख्यिकीय मान के आधार पर विशिष्ट रंग दिया जाता है। यह स्थानिक भिन्नताओं को स्पष्ट करने और क्षेत्रों के बीच तुलना करने में बहुत सहायक है।

26. (A) एक राडार (RADAR) प्रणाली जो ऊर्जा की तरंगें भेजती है और परावर्तन को रिकॉर्ड करती है।
सक्रिय सुदूर संवेदन प्रणालियाँ स्वयं की ऊर्जा का उपयोग करती हैं और उसे लक्ष्य की ओर भेजती हैं। राडार इसका प्रमुख उदाहरण है जो सूक्ष्म तरंगें उत्सर्जित करता है और वस्तुओं से टकराकर लौटने वाले परावर्तन को रिकॉर्ड करता है। इसके विपरीत, निष्क्रिय सेंसर केवल सूर्य के प्रकाश या प्राकृतिक विकिरण का उपयोग करते हैं। सक्रिय प्रणालियों का लाभ यह है कि वे दिन और रात दोनों समय प्रभावी हैं।

27. (D) कंप्यूटर प्रारूप में भौगोलिक डेटा का संग्रहण, संचयन और प्रसंस्करण करना।
डिजिटल मानचित्रण वह प्रक्रिया है जिसमें भौगोलिक आंकड़ों को कंप्यूटर आधारित प्रारूप में संग्रहीत और संसाधित किया जाता है। यह पारंपरिक मानचित्रण की तुलना में अधिक सटीक और अद्यतन करने में आसान है। इसमें जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके स्थानिक सूचनाओं का विश्लेषण किया जाता है। डिजिटल मानचित्रों को विभिन्न पैमानों पर आसानी से बदला जा सकता है, जिससे जटिल भौगोलिक समस्याओं के संदर्भ में निर्णय लेना सरल हो जाता है।

28. (B) मध्य मान जब डेटा को आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।
डेटासेट की माध्यिका वह केंद्रीय मान है जो तब प्राप्त होता है जब सभी आंकड़ों को आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। यह वितरण को दो बराबर भागों में विभाजित करती है, जहाँ आधे मान इसके ऊपर और आधे इसके नीचे होते हैं। माध्यिका चरम मानों से प्रभावित नहीं होती है, जिससे यह विषम वितरण वाले आंकड़ों के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का एक विश्वसनीय माप बन जाती है।

29. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
माध्य डेटासेट का अंकगणितीय औसत है, जबकि बहुलक वह मान है जो वितरण में सबसे अधिक बार आता है। मानक विचलन माध्य के चारों ओर आंकड़ों के फैलाव या विक्षेपण को मापता है। समाश्रयण विश्लेषण चरों के बीच संबंधों को गणितीय रूप से मॉडल करने की एक महत्वपूर्ण विधि है। ये सभी सांख्यिकीय उपकरण डेटा की प्रकृति को समझने और भौगोलिक शोध में सटीक निष्कर्ष निकालने हेतु आवश्यक हैं।

30. (D) पूर्णतः विकीर्ण षटकोणीय व्यवस्था की ओर झुकाव वाला प्रतिरूप।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में 2.15 के समीप Rn मान पूर्णतः विकीर्ण या समान वितरण वाले प्रतिरूप को दर्शाता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब सभी बिंदु एक-दूसरे से अधिकतम संभव दूरी पर व्यवस्थित होते हैं, जो अक्सर एक षटकोणीय ग्रिड जैसा दिखता है। यह तकनीक स्थानिक व्यवस्था की शुद्धता मापने के लिए महत्वपूर्ण है। Rn मान जितना उच्च होगा, वितरण उतना ही नियमित और व्यवस्थित होगा।

31. (A) व्यवस्थित प्रतिचयन
जब एक शोधकर्ता किसी सूची में से यादृच्छिक शुरुआत के बाद निश्चित अंतराल पर नमूने चुनता है, तो इसे व्यवस्थित प्रतिचयन कहा जाता है। इस मामले में प्रत्येक 10वें घर का चयन करना एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जो संपूर्ण प्रतिचयन फ्रेम को कवर करती है। यह विधि सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में अधिक कुशल है। यह सुनिश्चित करती है कि नमूना पूरी आबादी में समान रूप से फैला रहे।

32. (B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) एक शक्तिशाली प्रणाली है जिसे स्थानिक आंकड़ों के संग्रहण, विश्लेषण और

Click Here to Buy book on Amazon

91. (A) मापनी
शंकु प्रक्षेप में मानक अक्षांशों के साथ मापनी का गुण पूरी तरह सुरक्षित रहता है, जिसका अर्थ है कि इन अक्षांशों पर दूरियां वास्तविक होती हैं। मानक अक्षांश वह रेखा होती है जहाँ शंकु ग्लोब को स्पर्श करता है, जिससे उस विशिष्ट स्थान पर विरूपण न्यूनतम होता है। जैसे-जैसे हम मानक अक्षांश से दूर जाते हैं, विरूपण बढ़ता जाता है। इसलिए, मध्यम अक्षांश वाले देशों के मानचित्रण के लिए यह प्रक्षेप अत्यंत सटीक माना जाता है क्योंकि यह विशिष्ट अक्षांशों पर शुद्धता बनाए रखता है।

92. (A) स्थानिक संबंधों का विश्लेषण, व्याख्या और संप्रेषण।
भौगोलिक अध्ययनों में मानचित्र को एक उपकरण माना जाता है क्योंकि इसका मुख्य कार्य स्थानिक संबंधों का विश्लेषण, व्याख्या और प्रभावी संप्रेषण करना है। यह जटिल भौगोलिक सूचनाओं को एक संक्षिप्त और दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है जिसे समझना और विश्लेषित करना आसान होता है। मानचित्र केवल चित्रण नहीं हैं, बल्कि वे शोधकर्ताओं को प्रतिरूपों की पहचान करने और भविष्य की योजना बनाने में मदद करते हैं। यह भूगोलवेत्ताओं के लिए वास्तविकता को समझने और सूचना साझा करने का एक वैज्ञानिक माध्यम है।

93. (D) 1, 2 और 3
विक्षेपण के मापों के संदर्भ में तीनों कथन वैज्ञानिक रूप से सत्य हैं। मानक विचलन को मूल आंकड़ों की इकाइयों में व्यक्त किया जाता है, जो इसे समझने में सरल बनाता है। प्रसरण इसी मानक विचलन का वर्ग होता है और आंकड़ों के फैलाव का एक गणितीय माप है। एक बड़ा मानक विचलन स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि डेटा में अधिक परिवर्तनशीलता और बिखराव है। ये सांख्यिकीय उपकरण भौगोलिक डेटा की विविधता और विश्वसनीयता का आकलन करने के लिए अनिवार्य और अत्यंत उपयोगी हैं।

94. (A) सुदूर संवेदन डेटा अधिग्रहण के बारे में है, जबकि जीआईएस डेटा प्रबंधन और विश्लेषण के बारे में है।
सुदूर संवेदन और जीआईएस के बीच प्राथमिक अंतर उनके कार्यों में निहित है। सुदूर संवेदन उपग्रहों या विमानों के माध्यम से धरातल की जानकारी प्राप्त करने या डेटा अधिग्रहण की एक तकनीक है। इसके विपरीत, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) उस एकत्रित डेटा को संग्रहीत करने, विश्लेषित करने और वैज्ञानिक रूप से प्रबंधित करने का एक शक्तिशाली सॉफ्टवेयर उपकरण है। ये दोनों तकनीकें एक-दूसरे की पूरक हैं और आधुनिक भौगोलिक शोध एवं स्थानिक नियोजन के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

95. (A) शोधकर्ता के निर्णय या महत्व के पूर्व-निर्धारित मॉडल पर।
भारित स्कोर आवंटित करने की प्रक्रिया में भार का निर्धारण शोधकर्ता के अनुभव, विशेषज्ञ निर्णय या किसी स्थापित वैज्ञानिक मॉडल के आधार पर किया जाता है। इसमें प्रत्येक कारक की प्रासंगिकता और उसके प्रभाव की तीव्रता को ध्यान में रखा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी स्थान के चयन में जल की उपलब्धता को भूमि की कीमत से अधिक भार दिया जा सकता है। यह व्यक्तिपरक लेकिन तर्कसंगत निर्णय विश्लेषण को यथार्थवादी बनाता है और विभिन्न मानदंडों के बीच संतुलन स्थापित करता है।

96. (A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन जनसंख्या के प्रत्येक तत्व को चुने जाने का समान और स्वतंत्र अवसर प्रदान करता है।
सरल यादृच्छिक प्रतिचयन के बारे में यह कथन पूर्णतः सत्य है कि यह जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को नमूने में शामिल होने का एक समान और निष्पक्ष अवसर प्रदान करता है। यह सांख्यिकीय पक्षपात को कम करता है और प्राप्त परिणामों को पूरी आबादी पर लागू करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। अन्य विधियाँ विशिष्ट स्थितियों और जनसंख्या की संरचना के आधार पर उपयोग की जाती हैं। भूगोल में वैज्ञानिक शोध के लिए यादृच्छिकता एक मौलिक आवश्यकता है।

97. (A) 1, 2, 3, 4
एक सामान्य जीआईएस परियोजना का व्यवस्थित क्रम समस्या को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने से शुरू होता है। इसके बाद, प्रासंगिक आंकड़ों का अधिग्रहण किया जाता है ताकि विश्लेषण के लिए सामग्री उपलब्ध हो। तीसरे चरण में, वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है और निष्कर्ष निकाले जाते हैं। अंत में, प्राप्त परिणामों को मानचित्रों, रिपोर्टों या ग्राफिक्स के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण परियोजना की सफलता और निर्णयों की वैज्ञानिक सटीकता सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है।

98. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
मर्केटर प्रक्षेप नौसंचालन के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है क्योंकि यह एक यथाकृतिक प्रक्षेप है जो कोणीय शुद्धता बनाए रखता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस पर खींची गई कोई भी सीधी रेखा एक स्थिर दिक-मान रेखा होती है, जिससे जहाज का मार्ग निर्धारित करना सरल हो जाता है। यद्यपि यह ध्रुवों की ओर क्षेत्रफल को विकृत करता है, लेकिन दिशात्मक सटीकता इसे समुद्री और हवाई मार्गों के लिए अपरिहार्य बनाती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों पूर्णतः सत्य हैं।

99. (A) बिंदुओं से रेखा तक की वर्गित ऊर्ध्वाधर दूरियों के योग को न्यूनतम करती है।
सरल रेखीय समाश्रयण में 'लाइन ऑफ बेस्ट फिट' वह रेखा है जो डेटा बिंदुओं और रेखा के बीच की वर्गित ऊर्ध्वाधर दूरियों के योग को न्यूनतम स्तर पर लाती है। इसे न्यूनतम वर्ग विधि भी कहा जाता है। यह रेखा चरों के बीच के औसत संबंध का प्रतिनिधित्व करती है और भविष्यवाणियों के लिए सबसे सटीक आधार प्रदान करती है। यह सुनिश्चित करता है कि मॉडल आंकड़ों के समग्र रुझान को यथासंभव निकटता से प्रतिबिंबित करे, जिससे सांख्यिकीय त्रुटि कम से कम बनी रहे।

100. (A) मानचित्र पर दूरी और जमीन पर संबंधित दूरी के बीच का अनुपात।
कार्टोग्राफी में मापनी की अवधारणा मानचित्र पर किन्हीं दो बिंदुओं के बीच की दूरी और धरातल पर उन्हीं दो बिंदुओं के बीच की वास्तविक दूरी के अनुपात को व्यक्त करती है।

NODIA

वास्तविक विश्व की समन्वय प्रणाली के साथ संरेखित किया जाता है। ये सभी घटक स्थानिक डेटा प्रबंधन हेतु अनिवार्य हैं।

43. (D) यह मानचित्रों के तेजी से अद्यतनीकरण और संशोधन की अनुमति देता है।
मानचित्रण में कंप्यूटर के उपयोग का लाभ मानचित्रों का तेजी से अद्यतनीकरण और संशोधन करने की क्षमता है। पारंपरिक विधियों में बदलाव करना समय लेने वाला होता था। डिजिटल प्रारूप में डेटा होने से नई जानकारी को आसानी से जोड़ा जा सकता है और मानचित्र को तुरंत पुन: प्रस्तुत किया जा सकता है। यह तकनीक समय की बचत करती है और मानचित्रों की प्रासंगिकता बनाए रखने में मदद करती है, जो वर्तमान समय में बहुत महत्वपूर्ण है।

44. (B) वर्षा और फसल की पैदावार के बीच एक मजबूत धनात्मक संबंध है।
सहसंबंध गुणांक +0.8 वर्षा और फसल की पैदावार के बीच एक मजबूत धनात्मक संबंध को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि जैसे-जैसे वर्षा की मात्रा बढ़ती है, फसल की पैदावार में भी वृद्धि होने की प्रबल संभावना होती है। चूंकि मान +1 के काफी करीब है, इसलिए यह संबंध सांख्यिकीय रूप से विश्वसनीय माना जाता है। भूगोल में ऐसे संबंधों का अध्ययन संसाधनों के कुशल प्रबंधन और कृषि संबंधी भविष्यवाणियां करने में सहायक होता है।

45. (C) यथाकृतिक
मानचित्र प्रक्षेपों का वर्गीकरण अक्सर उस सतह के आधार पर किया जाता है जिस पर ग्लोब को प्रक्षेपित किया जाता है। बेलनाकार, शंकु और खमध्य इसके तीन प्रमुख प्रकार हैं। यथाकृतिक प्रक्षेप सतह के आधार पर नहीं, बल्कि उसके गुणों के आधार पर एक वर्गीकरण है, जो कोणीय शुद्धता पर केंद्रित होता है। बेलनाकार प्रक्षेप बेलन का उपयोग करता है, शंकु प्रक्षेप शंकु का, और खमध्य प्रक्षेप समतल सतह का उपयोग करता है। अतः यथाकृतिक इस श्रेणी में शामिल नहीं है।

46. (D) 1, 2 और 3
स्वास्थ्य सुविधाओं के विश्लेषण के लिए प्रतिचयन तकनीक का चुनाव आंकड़ों के वितरण पर निर्भर करता है। यदि सुविधाएं समान रूप से फैली हों, तो व्यवस्थित प्रतिचयन कुशल है। शहरी एकाग्रता की स्थिति में सरल यादृच्छिक प्रतिचयन कुछ क्षेत्रों का अधिक प्रतिनिधित्व कर सकता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से संतुलित प्रतिनिधित्व हेतु स्तरित प्रतिचयन सबसे सटीक विधि है। अतः शोध के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सभी तीनों कथनों पर विचार करना अनिवार्य है।

47. (A) परास
सांख्यिकीय वितरण में उच्चतम और निम्नतम मानों के बीच के अंतर को परास कहा जाता है। यह विक्षेपण का सबसे सरल माप है जो आंकड़ों के फैलाव की एक त्वरित झलक प्रदान करता है। हालांकि यह मध्य मानों के वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं देता, लेकिन यह चरम सीमाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। भौगोलिक शोध में तापमान की भिन्नता या वर्षा के अंतराल को समझने के लिए परास का उपयोग प्राथमिक विश्लेषण के रूप में किया जाता है।

48. (A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
बहुलक ही एकमात्र ऐसा केंद्रीय प्रवृत्ति का माप है जिसका उपयोग नाममात्र आंकड़ों के लिए किया जा सकता है, जहाँ केवल श्रेणियों की आवृत्ति देखी जाती है। इसके विपरीत, माध्य की गणना के लिए मात्रात्मक आंकड़ों की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे नाममात्र या क्रमसूचक आंकड़ों के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता। माध्य हेतु मानों का योग और औसत निकालना अनिवार्य है। अतः केवल प्रथम कथन सांख्यिकीय सिद्धांतों के अनुसार सत्य है, जबकि द्वितीय कथन गलत है।

49. (B) स्थानों के बीच आवाजाही की मात्रा को दर्शाने के लिए रेखा की चौड़ाई का उपयोग करना।
प्रवाह मानचित्र का मूल सिद्धांत स्थानों के बीच होने वाली आवाजाही की मात्रा और दिशा को दृष्टिगत रूप से प्रदर्शित करना है। इसमें रेखाओं की मोटाई प्रवाह की मात्रा के समानुपाती होती है, जो इसे डेटा विश्लेषण हेतु प्रभावी बनाती है। यह तकनीक यातायात, व्यापार या प्रवासन के प्रतिरूपों को समझने में भूगोलवेत्ताओं की सहायता करती है। इसके माध्यम से जटिल स्थानिक संपर्कों को एक नज़र में समझा जा सकता है, जो साधारण मानचित्रों में कठिन होता है।

50. (A) इट डेटा को उच्च से निम्न या इसके विपरीत एक क्रमसूचक अनुक्रम में व्यवस्थित करता है।
रैंक स्कोर तकनीक का मुख्य उद्देश्य आंकड़ों को उनके मानों के आधार पर एक निश्चित क्रम या श्रेणी में व्यवस्थित करना है। इसमें वस्तुओं को प्रथम, द्वितीय या तृतीय जैसे स्थान दिए जाते हैं, जिससे उनका सापेक्षिक स्थान स्पष्ट हो जाता है। यह विधि गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों के लिए उपयोगी है। हालांकि यह मानों के बीच के सटीक अंतर को नहीं दर्शाती, लेकिन यह तुलनात्मक विश्लेषण और प्राथमिक वर्गीकरण हेतु एक प्रभावी उपकरण है।

NODIA

51. (C) कंप्यूटर आधारित डेटा प्रारूप के उपयोग में।
डिजिटल मानचित्रण पारंपरिक कार्टोग्राफी से मुख्य रूप से कंप्यूटर आधारित डेटा प्रारूपों के उपयोग के कारण भिन्न है। जहाँ पारंपरिक विधि में कागज और स्याही का उपयोग होता था, वहीं डिजिटल मानचित्रण में आंकड़ों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में संग्रहीत और संसाधित किया जाता है। यह मानचित्रों के संपादन, विश्लेषण और अद्यतनीकरण को अत्यंत सरल और तीव्र बनाता है। इसके माध्यम से भौगोलिक सूचनाओं को विभिन्न परतों में संयोजित करना और जटिल स्थानिक मॉडलिंग करना संभव हो गया है।

52. (D) मानक विचलन
मानक विचलन विक्षेपण का वह माप है जिसकी गणना प्रसरण के वर्गमूल के रूप में की जाती है। यह सांख्यिकीय उपकरण यह बताता है कि आंकड़ों के बिंदु अपने माध्य से औसतन कितनी दूर हैं। यह विक्षेपण का सबसे विश्वसनीय माप माना जाता है क्योंकि यह प्रत्येक मान पर विचार करता है। उच्च

72. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
यथाकृतिक प्रक्षेप आकृति को सुरक्षित रखता है, जबकि समकक्ष प्रक्षेप क्षेत्रफल की शुद्धता बनाए रखता है। समदूरस्थ प्रक्षेप का गुण केंद्रीय बिंदु से अन्य स्थानों की वास्तविक दूरी को प्रदर्शित करना है। खमध्य प्रक्षेप की विशेषता यह है कि यह केंद्र से अन्य सभी बिंदुओं तक की सही दिशा को सुरक्षित रखता है। मानचित्र निर्माण में इन गुणों का सही मिलान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। प्रत्येक प्रक्षेप अपनी विशिष्ट विशेषता के कारण अलग भौगोलिक उपयोग हेतु चुना जाता है।

73. (D) 1, 2 और 3
आधुनिक कार्टोग्राफी में कंप्यूटर अनुप्रयोगों ने क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। स्वचालित कार्टोग्राफी ने मानचित्र निर्माण की गति बढ़ाई है, जबकि जीआईएस ने जटिल स्थानिक विश्लेषण और मॉडलिंग को संभव बनाया है। उपग्रह इमेजरी के उपयोग से आधार मानचित्रों का निरंतर और सटीक अद्यतनीकरण सुनिश्चित होता है। इन तकनीकों के एकीकरण ने पारंपरिक मानचित्रण को एक वैज्ञानिक और गतिशील प्रक्रिया में बदल दिया है। अतः ये सभी अनुप्रयोग आधुनिक भूगोल और स्थानिक विज्ञान के अनिवार्य अंग बन चुके हैं।

74. (A) चरों को अलग-अलग महत्व देने की अनुमति देता है।
भारित स्कोर को सरल रैंक स्कोर की तुलना में अधिक परिष्कृत माना जाता है क्योंकि यह विश्लेषण में शामिल विभिन्न चरों को उनके सापेक्ष महत्व के अनुसार अलग-अलग भार देने की सुविधा प्रदान करता है। सरल रैंक स्कोर सभी कारकों को समान मानता है, जबकि भारित स्कोर यथार्थवादी निर्णय लेने में मदद करता है। यह तकनीक विशेष रूप से साइट चयन और पर्यावरणीय मूल्यांकन में उपयोगी है जहाँ कुछ कारक दूसरों की तुलना में अधिक निर्णायक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

75. (A) इसके परिणामस्वरूप नमूना बिंदुओं का गुच्छन हो सकता है, जिससे कुछ क्षेत्र बिना नमूने के रह जाते हैं।
स्थानिक विश्लेषण में सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की एक बड़ी सीमा यह है कि नमूना बिंदु संयोग से किसी एक क्षेत्र में गुच्छित हो सकते हैं। इसके कारण अध्ययन क्षेत्र के अन्य महत्वपूर्ण हिस्से बिना नमूने के रह सकते हैं, जिससे आंकड़ों में स्थानिक अंतराल पैदा होता है। यह स्थिति जनसंख्या के वास्तविक भौगोलिक वितरण का गलत प्रतिनिधित्व कर सकती है। अतः बड़े अध्ययन क्षेत्रों के लिए अक्सर व्यवस्थित या स्तरित प्रतिचयन को प्राथमिकता दी जाती है ताकि भौगोलिक कवरेज संतुलित रहे।

76. (B) केवल 1 और 3
आयतचित्र का उपयोग निरंतर आंकड़ों के आवृत्ति वितरण को दर्शाने हेतु किया जाता है, जहाँ दंड आपस में जुड़े होते हैं। रेखा आरेख समय-श्रृंखला आंकड़ों के लिए प्रभावी है क्योंकि यह बिंदुओं को जोड़कर परिवर्तनों के रुझान को स्पष्ट करता है। इसके विपरीत, पाई चार्ट लंबी अवधि के रुझान दिखाने के बजाय किसी एक समय पर संरचना या अनुपात प्रदर्शित करने हेतु श्रेष्ठ है। अतः प्रथम और तृतीय कथन सही हैं, जो सांख्यिकीय डेटा की दृश्य प्रस्तुति के सिद्धांतों के अनुरूप हैं।

77. (A) 2, 4, 1, 3
मानचित्र मापनी का क्रम उनके अनुपात पर निर्भर करता है; हर का मान जितना बड़ा होगा, मापनी उतनी ही छोटी होगी। 1:1,000,000 सबसे छोटी मापनी है जो विशाल क्षेत्रों को कम विस्तार से दिखाती है। इसके बाद 1:250,000 और फिर 1:50,000 आती है। 1:25,000 यहाँ सबसे बड़ी मापनी है क्योंकि यह धरातल के विवरणों को सबसे अधिक सूक्ष्मता और विस्तार के साथ प्रदर्शित करती है। अतः छोटी से बड़ी मापनी का सही क्रम 2, 3, 4, 1 है, जो विवरणों की बढ़ती मात्रा को दर्शाता है।

78. (A) रेखीय संबंध का अभाव।
दो चरों के बीच शून्य सहसंबंध का तात्पर्य है कि उनके बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रेखीय संबंध नहीं है। इसका अर्थ है कि एक चर के मान में परिवर्तन का दूसरे चर के मान पर कोई निश्चित या पूर्व-अनुमानित प्रभाव नहीं पड़ता है। हालांकि उनके बीच कोई गैर-रेखीय संबंध हो सकता है, लेकिन शून्य सहसंबंध रेखीय निर्भरता की पूर्ण अनुपस्थिति को स्पष्ट करता है। यह शोधकर्ताओं को यह निष्कर्ष निकालने में मदद करता है कि चरों के बीच सीधा कोई जुड़ाव नहीं है।

79. (A) मानचित्र पर रेखाओं की चौड़ाई मात्रा की परवाह किए बिना एकसमान होती है।
प्रवाह मानचित्र के बारे में यह कहना गलत है कि रेखाओं की चौड़ाई एकसमान होती है। वास्तव में, प्रवाह मानचित्र का मुख्य गुण यह है कि रेखाओं की चौड़ाई प्रवाह की मात्रा के समानुपाती होती है। मोटी रेखा अधिक मात्रा को और पतली रेखा कम मात्रा को दर्शाती है। ये मानचित्र गतिशीलता और दिशा को दिखाने हेतु डिजाइन किए गए हैं। रेखाओं की मोटाई में भिन्नता ही आंकड़ों के मात्रात्मक वितरण को दृष्टिगत रूप से प्रभावशाली और समझने योग्य बनाती है।

80. (A) 3, 1, 2, 4
विषयक मानचित्र बनाने की वैज्ञानिक प्रक्रिया में सबसे पहले मानचित्र प्रक्षेप का चयन किया जाता है ताकि आधार तैयार हो सके। इसके बाद, आवश्यक आंकड़ों का संग्रह किया जाता है और उसे विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। अंत में, वर्गीकृत सूचनाओं को मानचित्र पर दर्शाने के लिए उपयुक्त प्रतीकीकरण का उपयोग किया जाता है। यह व्यवस्थित क्रम आंकड़ों की शुद्धता और मानचित्र की पठनीयता को सुनिश्चित करता है। प्रत्येक चरण एक सूचनात्मक विषयक मानचित्र के निर्माण हेतु महत्वपूर्ण है।

81. (B) समतल
खमध्य प्रक्षेप परिवार में ग्लोब की विशेषताओं को एक समतल सतह पर प्रक्षेपित किया जाता है। यह कागज आमतौर पर ग्लोब के किसी एक बिंदु, जैसे ध्रुव, को स्पर्श करता है। इस प्रक्षेप की विशेषता यह है कि यह केंद्र से अन्य सभी बिंदुओं तक की सही दिशा और कोणीय संबंध बनाए रखता है। इसका

Downloaded from www.pdf.tube

आंकड़ों के सबसे सामान्य या लोकप्रिय रुझान को दर्शाता है। इसका उपयोग अक्सर गुणात्मक आंकड़ों जैसे मृदा के प्रकार के विश्लेषण के लिए किया जाता है। बहुलक विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब शोधकर्ता को सबसे अधिक घटित होने वाली घटना या श्रेणी की पहचान करनी हो।

63. (A) समाश्रयण
दो चरों के बीच कारण-प्रभाव संबंध की जांच के लिए समाश्रयण विश्लेषण सबसे प्रभावी सांख्यिकीय पद्धति है। यह तकनीक न केवल चरों के बीच संबंध की मजबूती को मापती है, बल्कि यह भी स्पष्ट करती है कि एक स्वतंत्र चर में परिवर्तन दूसरे आश्रित चर को कैसे प्रभावित करता है। सहसंबंध केवल संबंध की दिशा बताता है, जबकि समाश्रयण एक भविष्य कहनेवाला मॉडल प्रदान करता है। भौगोलिक शोध में जटिल अंतर्संबंधों को समझने के लिए यह एक अनिवार्य विश्लेषणात्मक उपकरण है।

64. (B) इक्विवेलेंट प्रक्षेप
समकक्ष प्रक्षेप को 'इक्विवेलेंट' या समान क्षेत्रफल वाला प्रक्षेप भी कहा जाता है। इस प्रक्षेप की विशेषता यह है कि यह पृथ्वी की सतह के विभिन्न भू-भागों के सापेक्ष क्षेत्रफल के अनुपात को मानचित्र पर सटीक रूप से बनाए रखता है। इसका उपयोग उन मानचित्रों हेतु किया जाता है जहाँ क्षेत्रों के आकार की तुलना करना आवश्यक हो, जैसे जनसंख्या वितरण के मानचित्र। हालांकि इसमें आकृतियाँ विकृत हो सकती हैं, लेकिन सांख्यिकीय प्रतिनिधित्व की शुद्धता बनी रहती है।

65. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) की शक्ति विभिन्न स्रोतों और प्रारूपों के आंकड़ों को एक एकीकृत प्रणाली में संयोजित करने की क्षमता है। इसकी प्रमुख विशेषता स्थानिक रूप से संदर्भित आंकड़ों को संभालना है, जो कई डेटा परतों के ओवरले विश्लेषण की अनुमति देता है। यह एकीकरण शोधकर्ताओं को जटिल स्थानिक संबंधों को देखने और उनका विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि स्थानिक संदर्भ ही डेटा एकीकरण का मूल आधार है।

66. (D) व्यवस्थित प्रतिचयन
जब शोधकर्ता किसी निश्चित अंतराल या क्रम का पालन करते हुए नमूने एकत्र करता है, जैसे नदी के मार्ग पर प्रत्येक 5 किमी की दूरी पर, तो यह व्यवस्थित प्रतिचयन का उदाहरण है। यह विधि अध्ययन क्षेत्र के समान कवरेज को सुनिश्चित करती है और इसे लागू करना अत्यंत सरल और तर्कसंगत है। यह समय और संसाधनों की बचत करती है जबकि एक प्रतिनिधि डेटासेट प्रदान करती है। भौगोलिक सर्वेक्षणों और पर्यावरणीय निगरानी में इस तकनीक का व्यापक उपयोग किया जाता है।

67. (A) यथाकृतिक मानचित्र
यथाकृतिक मानचित्र प्रक्षेप वह होता है जो स्थानीय स्तर पर कोणों और सूक्ष्म आकृतियों को सटीक रूप से सुरक्षित रखता है। हालांकि इसमें बड़े क्षेत्रों के क्षेत्रफल में महत्वपूर्ण विरूपण हो सकता है, लेकिन दिशा और कोणीय संबंध शुद्ध रहते हैं। मर्केटर प्रक्षेप इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है, जिसका उपयोग समुद्री और हवाई नौसंचालन के लिए अनिवार्य रूप से किया जाता है। यह प्रक्षेप उन कार्यों हेतु श्रेष्ठ है जहाँ दिशा की सटीकता क्षेत्रफल की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती है।

68. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
रैंक स्कोर विधि एक मात्रात्मक तकनीक है क्योंकि इसमें गुणात्मक या मात्रात्मक आंकड़ों को सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु संख्यात्मक रैंक प्रदान की जाती है। यह प्रक्रिया आंकड़ों को एक व्यवस्थित क्रम में लाती है, जिससे विभिन्न इकाइयों के बीच तुलना करना संभव हो जाता है। यद्यपि मूल डेटा गुणात्मक हो सकता है, लेकिन रैंक आवंटन के बाद इसका गणितीय प्रसंस्करण किया जा सकता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि संख्यात्मक रैंक ही इसे मात्रात्मक विश्लेषण के योग्य बनाती है।

69. (D) उपग्रह प्रक्षेपण
भौगोलिक सूचना प्रणाली के प्राथमिक कार्यों में डेटा कैप्चर, डेटा स्टोरेज, विश्लेषण और परिणामों का प्रदर्शन शामिल है। उपग्रह प्रक्षेपण एक एयरोस्पेस इंजीनियरिंग कार्य है, जो जीआईएस के प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है। हालांकि जीआईएस उपग्रहों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करता है, लेकिन वह उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजने की प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है। जीआईएस विशेष रूप से कंप्यूटर आधारित स्थानिक आंकड़ों के प्रसंस्करण और वैज्ञानिक विश्लेषण पर केंद्रित एक प्रणाली है।

NODIA

70. (A) माध्य
मानक विचलन की गणना के लिए सबसे अनिवार्य और प्रारंभिक चरण डेटासेट के माध्य या औसत मान को ज्ञात करना है। चूंकि मानक विचलन यह मापता है कि आंकड़े अपने माध्य से कितने विचलित हैं, इसलिए माध्य के बिना इसकी गणना संभव नहीं है। यह प्रक्रिया प्रत्येक मान और माध्य के बीच के अंतर को वर्गित करके शुरू होती है। अतः माध्य ही वह आधार है जिस पर विक्षेपण के इस महत्वपूर्ण सांख्यिकीय माप की पूरी संरचना टिकी हुई है।

71. (A) रेखीय
सरल रेखीय समाश्रयण मॉडल का उपयोग तब प्रभावी होता है जब स्वतंत्र और आश्रित चरों के बीच का संबंध एक सीधी रेखा के रूप में दिखाई देता है। इसका तात्पर्य है कि एक चर में परिवर्तन होने पर दूसरा चर एक स्थिर दर से बदलता है। यदि डेटा बिंदुओं का प्रकीर्णन आरेख एक स्पष्ट रेखीय प्रवृत्ति दिखाता है, तो यह मॉडल सटीक भविष्यवाणियां करने में सक्षम होता है। यह सांख्यिकीय उपकरण जटिल भौगोलिक चरों के बीच के सीधे संबंधों को समझने का वैज्ञानिक आधार है।

प्रबंधन के लिए डिजाइन किया गया है। इसका प्राथमिक कार्य केवल सुंदर मानचित्र बनाना नहीं है, बल्कि जटिल भौगोलिक समस्याओं का समाधान और स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण करना है। जीआईएस के माध्यम से विभिन्न डेटा परतों को एकीकृत करके निर्णय लेने की प्रक्रिया को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया जाता है। यह एक विश्लेषणात्मक शक्ति है।

33. (D) 1, 2 और 3
मानचित्र प्रक्षेप के संदर्भ में तीनों कथन तकनीकी रूप से सही हैं। कोई भी प्रक्षेप त्रि-आयामी पृथ्वी की विशेषताओं को द्वि-आयामी सतह पर बिना किसी विरुपण के पूरी तरह प्रदर्शित नहीं कर सकता। समकक्ष प्रक्षेप भू-भागों के सापेक्ष क्षेत्रफल को सुरक्षित रखते हैं, जबकि यथाकृतिक प्रक्षेप स्थानीय आकृतियों और कोणों की शुद्धता बनाए रखते हैं। मानचित्रकार आवश्यकतानुसार प्रक्षेप का चयन करता है ताकि विशिष्ट गुणों की शुद्धता बनी रहे।

34. (A) श्रेणियों के लेबल लंबे हों।
क्षैतिज दंड आरेख का उपयोग तब प्रभावी होता है जब श्रेणियों के नाम या लेबल लंबे होते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें पढ़ने के लिए पर्याप्त स्थान मिलता है। यह प्रारूप ऊर्ध्वाधर दंडों की तुलना में अधिक स्पष्टता प्रदान करता है जब डेटा में कई अलग-अलग श्रेणियां शामिल हों। इसका उपयोग अक्सर विभिन्न देशों या उत्पादों के बीच तुलनात्मक सांख्यिकी को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह प्रस्तुति आंकड़ों को सुगम बनाती है।

35. (C) रैंक स्कोर
रैंक स्कोर किसी विशिष्ट विशेषता के आधार पर भौगोलिक इकाइयों के समूह को क्रम में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया है। इसमें इकाइयों को उनकी सांख्यिकीय स्थिति के अनुसार प्रथम, द्वितीय या तृतीय जैसे स्थान दिए जाते हैं। यह विधि जटिल आंकड़ों को सरल बनाने और विभिन्न क्षेत्रों के बीच तुलनात्मक स्थिति को स्पष्ट करने में सहायक होती है। इसका उपयोग अक्सर विकास संकेतकों के आधार पर जिलों के प्रदर्शन को मापने हेतु होता है।

36. (D) यादृच्छिक संख्या तालिका
भौगोलिक सूचना प्रणाली के मुख्य घटकों में हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, डेटा, प्रक्रियाएं और लोग शामिल हैं। ये तत्व मिलकर स्थानिक सूचनाओं के प्रबंधन का कार्य करते हैं। यादृच्छिक संख्या तालिका सांख्यिकीय प्रतिचयन के लिए एक उपकरण है, लेकिन यह जीआईएस का कोई अंतर्निहित संरचनात्मक घटक नहीं है। जीआईएस एक एकीकृत तकनीक है जहाँ हार्डवेयर डेटा को संसाधित करता है और सॉफ्टवेयर विश्लेषणात्मक क्षमताएं प्रदान करता है, जिससे वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

37. (C) 1, 2, 3, 4
मरुस्थल के विस्तार का अध्ययन करने हेतु सबसे पहले विभिन्न वर्षों के उपग्रह चित्र प्राप्त किए जाते हैं। इसके बाद, भूमि आवरण के प्रकारों का वैज्ञानिक वर्गीकरण किया जाता है। तीसरे चरण में, प्रत्येक विशिष्ट वर्ष के लिए मरुस्थल की सीमाओं को डिजिटल प्रारूप में अंकित किया जाता है। अंत में, इन आंकड़ों का विश्लेषण करके समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को दर्शाने वाले मानचित्र तैयार किए जाते हैं। यह प्रक्रिया वैज्ञानिक सटीकता सुनिश्चित करती है।

38. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
बहु-समाश्रयण विश्लेषण में एकल आश्रित चर के मान की भविष्यवाणी करने के लिए एक से अधिक स्वतंत्र चरों का उपयोग किया जाता है। हालांकि, इसकी गणना और परिणामों की व्याख्या करना सरल रेखीय समाश्रयण की तुलना में अधिक जटिल होता है। इसमें जटिल सांख्यिकीय गणनाओं और चरों के बीच आपसी संबंधों के सूक्ष्म विश्लेषण की आवश्यकता होती है। अतः अभिकथन सत्य है लेकिन कारण तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह सरल नहीं है।

39. (D) प्रवाह मानचित्र
देशों के बीच प्रवासन की मात्रा और दिशा को दर्शाने के लिए प्रवाह मानचित्र सबसे उपयुक्त साधन है। इसमें रेखाओं की चौड़ाई प्रवासियों की संख्या को दर्शाती है और तीर की दिशा आवाजाही के मार्ग को सूचित करती है। यह मानचित्र जटिल स्थानिक गतिशीलता को सरल दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है। प्रवासन के अलावा, इसका उपयोग व्यापार और परिवहन के प्रतिरूपों को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करने के लिए भी भूगोल में किया जाता है।

40. (A) यादृच्छिक प्रतिरूप
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn मान 1 पूर्णतः यादृच्छिक स्थानिक प्रतिरूप को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि बिंदुओं का वितरण किसी विशिष्ट नियम के बजाय पूरी तरह स्वतंत्र और बिखरा हुआ है। यह सांख्यिकीय मान शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि क्या कोई भौगोलिक घटना संयोग से घटित हुई है या इसके पीछे कोई निश्चित प्रक्रिया कार्य कर रही है। Rn मान 1 यादृच्छिकता के लिए एक मानक बेंचमार्क है।

41. (C) नोमोनिक प्रक्षेप - समकक्ष
नोमोनिक प्रक्षेप एक समकक्ष प्रक्षेप नहीं है, बल्कि इसकी विशेषता यह है कि यह सभी वृहत् वृत्तों को सीधी रेखाओं के रूप में प्रदर्शित करता है। समकक्ष प्रक्षेपों का उद्देश्य क्षेत्रफल की शुद्धता बनाए रखना होता है, जबकि नोमोनिक प्रक्षेप दिशा और नौसंचालन के विशिष्ट कार्यों के लिए डिजाइन किया गया है। मर्केटर यथाकृतिक है और साइनुसोइडल समकक्ष प्रक्षेप का उदाहरण है। प्रक्षेपों का चुनाव अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य पर निर्भर करता है।

42. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
जीआईएस में वेक्टर डेटा विशेषताओं को बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों के रूप में प्रदर्शित करता है। रास्टर डेटा पिक्सल के एक ग्रिड का उपयोग करता है, जो अक्सर उपग्रह छवियों के लिए होता है। टोपोलॉजी आसन्न विशेषताओं के बीच स्थानिक संबंधों को परिभाषित करती है, जिससे विश्लेषण सटीक होता है। जियोरेफरेंसिंग वह प्रक्रिया है जिसमें डिजिटल डेटा को

Click Here to Buy book on Amazon

उपयोग मुख्य रूप से ध्रुवीय क्षेत्रों के मानचित्रण और विमानन मानचित्रों हेतु किया जाता है जहाँ केंद्र से दिशात्मक शुद्धता भौगोलिक विश्लेषण के लिए अनिवार्य होती है।

82. (B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
बहु-सहसंबंध एक आश्रित चर और स्वतंत्र चरों के समूह के बीच संबंध की समग्र मजबूती को मापने का एक प्रभावी सांख्यिकीय उपकरण है। 1 का बहु-सहसंबंध गुणांक चरों के बीच पूर्ण और आदर्श रेखीय संबंध को दर्शाता है, जहाँ सभी डेटा बिंदु मॉडल के अनुरूप होते हैं। यह तकनीक जटिल भौगोलिक घटनाओं को समझने में सहायक है जहाँ परिणाम कई कारकों से प्रभावित होते हैं। अतः दोनों कथन सहसंबंध विश्लेषण के सिद्धांतों के अनुसार तकनीकी रूप से पूर्णतः सही और प्रासंगिक हैं।

83. (B) उन्हें डेटाबेस से गतिशील रूप से जोड़ा जा सकता है और आसानी से अद्यतनीकरण किया जा सकता है।
डिजिटल मानचित्रण का महत्वपूर्ण लाभ यह है कि मानचित्रों को सीधे डेटाबेस से जोड़ा जा सकता है, जिससे जानकारी में बदलाव होने पर मानचित्र स्वतः अद्यतन हो जाते हैं। पारंपरिक कागजी मानचित्रों में संशोधन के लिए पूरी छपाई प्रक्रिया को दोहराना पड़ता था, जो महंगा और समय लेने वाला था। डिजिटल तकनीक संपादन में लचीलापन और सूचनाओं के त्वरित संचरण की अनुमति देती है। यह गतिशील प्रकृति आधुनिक समय की तीव्र भौगोलिक सूचना आवश्यकताओं और सटीक निर्णय लेने के लिए आवश्यक है।

84. (A) यादृच्छिक प्रतिरूप में अपेक्षित औसत दूरी।
निकटतम पड़ोसी सांख्यिकी की गणना प्रेक्षित औसत दूरी और उसी क्षेत्र में एक पूर्णतः यादृच्छिक प्रतिरूप के लिए अपेक्षित औसत दूरी के अनुपात के आधार पर की जाती है। यह सूत्र शोधकर्ताओं को यह बताने में मदद करता है कि बिंदुओं का वितरण यादृच्छिकता से कितना विचलित है। यह विश्लेषण स्थानिक सांख्यिकी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो बस्तियों और अन्य भौगोलिक विशेषताओं के वितरण के स्वरूप को स्पष्ट करता है। अपेक्षित दूरी की गणना क्षेत्र की सघनता का उपयोग करके की जाती है।

85. (C) बिंदु मानचित्र
विभिन्न गांवों में पशुओं की सटीक संख्या को दर्शाने के लिए बिंदु मानचित्र सबसे उपयुक्त विकल्प है। इस मानचित्र में प्रत्येक बिंदु एक निश्चित संख्या का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे वितरण का घनत्व और मात्रा दोनों स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह आंकड़ों के वास्तविक स्थानिक वितरण को बिना किसी प्रशासनिक सीमा के पक्षपात के प्रदर्शित करता है। बिंदु मानचित्र जटिल आंकड़ों को सरल दृश्य रूप में प्रस्तुत करने और क्षेत्रों के बीच सघनता की तुलना करने हेतु एक उत्कृष्ट सांख्यिकीय उपकरण है।

86. (A) बहुलक
भूमि उपयोग प्रकारों के डेटासेट के लिए बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति का सबसे उपयुक्त माप है क्योंकि यह नाममात्र आंकड़ों की श्रेणी में आता है। यहाँ माध्य या माध्यिका की गणना संभव नहीं है क्योंकि श्रेणियों का कोई गणितीय मान नहीं होता। बहुलक शोधकर्ता को यह बताता है कि किसी क्षेत्र में किस प्रकार का भूमि उपयोग सबसे अधिक व्यापक या प्रचलित है। यह विश्लेषण शहरी नियोजन और संसाधन प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जहाँ सबसे प्रमुख श्रेणी की पहचान करना आवश्यक होता है।

NODIA

87. (A) हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और प्रशिक्षण की उच्च प्रारंभिक लागत।
मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों के लाभों के बावजूद, इसकी प्रमुख सीमा हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और तकनीकी प्रशिक्षण हेतु आवश्यक उच्च प्रारंभिक लागत है। इसके लिए उन्नत कंप्यूटर प्रणाली और विशेष जीआईएस सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है जो महंगे हो सकते हैं। साथ ही, इन प्रणालियों को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए कुशल जनशक्ति और निरंतर प्रशिक्षण अनिवार्य है। यह निवेश छोटे संगठनों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बन सकता है, हालांकि इसके दीर्घकालिक लाभ अधिक होते हैं।

88. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
स्तरित प्रतिचयन यह सुनिश्चित करने की एक उत्कृष्ट विधि है कि नमूने में जनसंख्या के सभी महत्वपूर्ण उपसमूहों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो। इसमें जनसंख्या को पहले सजातीय स्तरों में बांटा जाता है, और फिर प्रत्येक स्तर से स्वतंत्र रूप से एक सरल यादृच्छिक नमूना लिया जाता है। यह प्रक्रिया नमूने की सटीकता को बढ़ाती है और प्रतिचयन त्रुटि को कम करती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि स्तरों में विभाजन ही विविधता को नमूने में सही ढंग से समाहित करने का आधार है।

89. (A) 30 टन
दिए गए समाश्रयण समीकरण में फसल पैदावार की गणना 5 + (2.5 × वर्षा) के रूप में की जाती है। जब वर्षा का मान 10 सेमी होता है, तो गणना (2.5 × 10) यानी 25 और उसमें 5 जोड़ने पर कुल 30 प्राप्त होती है। अतः अनुमानित फसल पैदावार 30 टन होगी। यह मॉडल स्पष्ट करता है कि वर्षा की मात्रा और पैदावार के बीच एक सकारात्मक संबंध है। सांख्यिकीय समीकरणों का ऐसा उपयोग कृषि योजना और उत्पादन के भविष्यवाणियां करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

90. (D) स्थलाकृतिक परिच्छेदिका
दंड आरेख, पाई चार्ट और प्रवाह आरेख सांख्यिकीय आरेखों के उदाहरण हैं जिनका उपयोग मात्रात्मक आंकड़ों को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने हेतु किया जाता है। स्थलाकृतिक परिच्छेदिका एक भू-आकृतिक उपकरण है जो ऊंचाई के परिवर्तनों और सतह के उच्चावच को दर्शाती है, यह सांख्यिकीय वितरण का प्रतिनिधित्व नहीं करती। सांख्यिकीय आरेख आंकड़ों के विश्लेषण और तुलना पर केंद्रित होते हैं, जबकि परिच्छेदिका भौतिक भू-आकृतियों के चित्रण के लिए होती है। अतः स्थलाकृतिक परिच्छेदिका इस श्रेणी से बाहर की तकनीक है।

यह प्रक्षेप निम्न अक्षांशीय क्षेत्रों की आकृतियों को सटीक रूप से प्रदर्शित करने और नौसंचालन में अत्यंत उपयोगी है।

11. (D) स्तरित प्रतिचयन
स्तरित प्रतिचयन एक तकनीक है जहाँ जनसंख्या को विशिष्ट उपसमूहों या स्तरों में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक स्तर से नमूने लिए जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि नमूने में जनसंख्या के सभी महत्वपूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व हो। यह विधि तब विशेष रूप से उपयोगी होती है जब जनसंख्या विषम हो और विभिन्न समूहों की विशेषताओं का अलग-अलग अध्ययन करना आवश्यक हो।

12. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
स्थलाकृतिक मानचित्र ऊंचाई और उच्चावच को दर्शाते हैं, जबकि वर्णमात्री मानचित्र प्रशासनिक इकाइयों के मात्रात्मक आंकड़ों को प्रदर्शित करते हैं। समान रेखा मानचित्र उन रेखाओं का उपयोग करते हैं जो समान मान वाले स्थानों को जोड़ती हैं। भू-संपत्ति मानचित्रों का प्राथमिक उद्देश्य भूमि स्वामित्व की सीमाओं को स्पष्ट करना है। इन सभी मानचित्रों का उपयोग भौगोलिक सूचनाओं को व्यवस्थित और विश्लेषित करने के लिए किया जाता है।

13. (C) विश्लेषण में विचार किए गए विभिन्न कारकों को अलग-अलग महत्व प्रदान करना।
भौगोलिक विश्लेषण में भारित स्कोर का उपयोग विभिन्न कारकों को उनके सापेक्ष महत्व के अनुसार अलग-अलग मान प्रदान करने के लिए किया जाता है। यह तकनीक बहु-मानदंड विश्लेषण में निर्णय लेने की प्रक्रिया को तर्कसंगत बनाती है। इसके माध्यम से शोधकर्ता यह सुनिश्चित करता है कि अधिक महत्वपूर्ण कारक अंतिम परिणाम को अधिक प्रभावित करें। यह विधि जटिल भौगोलिक समस्याओं के समाधान और अनुकूलन अध्ययन में सहायक है।

14. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मानक विचलन विक्षेपण का एक महत्वपूर्ण माप है जो यह बताता है कि आंकड़ों का सेट अपने माध्य से कितना विचलित है। कम मानक विचलन यह दर्शाता है कि डेटा बिंदु माध्य के बहुत समीप केंद्रित हैं, जिससे आंकड़ों में स्थिरता का पता चलता है। उच्च मानक विचलन आंकड़ों में अधिक फैलाव और विविधता को इंगित करता है। यह उपकरण डेटा की विश्वसनीयता समझने में सहायक होता है।

15. (A) आश्रित और एक या अधिक स्वतंत्र चरों के बीच संबंधों को मॉडल करना।
भूगोल में समाश्रयण विश्लेषण का मुख्य लक्ष्य एक आश्रित चर और स्वतंत्र चरों के बीच गणितीय संबंध स्थापित करना है। इसके माध्यम से यह समझा जाता है कि स्वतंत्र चरों में परिवर्तन होने पर आश्रित चर पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह तकनीक भविष्यवाणियां करने और भौगोलिक घटनाओं के कारण-प्रभाव संबंधों के विश्लेषण के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह जटिल डेटा के बीच वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

16. (B) केवल 1 और 2
सुदूर संवेदन विमान या उपग्रहों के माध्यम से दूर से ही वस्तुओं या क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने का विज्ञान है। इसे मुख्य रूप से सक्रिय और निष्क्रिय सुदूर संवेदन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। निष्क्रिय सुदूर संवेदन प्रणालियाँ स्वयं की ऊर्जा के बजाय सूर्य के प्रकाश या प्राकृतिक तापीय विकिरण पर निर्भर होती हैं। सक्रिय प्रणालियों के पास अपनी ऊर्जा का स्रोत होता है। अतः प्रथम दो कथन सत्य हैं।

17. (B) 1950, 1975, 1995, 2020
शहरी विकास के अध्ययन के लिए मानचित्रों को समय के क्रमानुसार व्यवस्थित करना आवश्यक है ताकि विकास के चरणों को समझा जा सके। दिए गए वर्षों का सही कालानुक्रमिक क्रम 1950 से शुरू होकर 1975, फिर 1995 और अंत में 2020 है। यह क्रम समय की निरंतरता को दर्शाता है और शहर के विस्तार की गति और दिशा का विश्लेषण करने में मदद करता है। व्यवस्थित अध्ययन ही नियोजन का आधार है।

18. (A) डिजिटाइजिंग
भौगोलिक सूचना प्रणाली में कागजी मानचित्रों के आंकड़ों को डिजिटल प्रारूप में बदलने की प्रक्रिया को डिजिटाइजिंग कहा जाता है। इसमें मानचित्र की विशेषताओं जैसे बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों को कंप्यूटर प्रणाली में प्रविष्ट किया जाता है। यह प्रक्रिया डेटा के भंडारण, संपादन और विश्लेषण को सुगम बनाती है। इसके माध्यम से पुराने मानचित्रों को आधुनिक तकनीकी प्रारूप में लाकर भविष्य के स्थानिक विश्लेषण हेतु सुरक्षित बनाया जाता है।

19. (C) मानक विचलन
केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों का उपयोग आंकड़ों के सेट के प्रतिनिधि या औसत मान को खोजने के लिए किया जाता है। माध्य, माध्यिका और बहुलक इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके विपरीत, मानक विचलन विक्षेपण का एक माप है, जो यह बताता है कि डेटा बिंदु अपने औसत मान से कितनी दूर फैले हुए हैं। अतः मानक विचलन केंद्रीय प्रवृत्ति का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह आंकड़ों की परिवर्तनशीलता दर्शाता है।

20. (A) 2, 3, 1
प्रतिचयन तकनीकों की जटिलता उनके डिजाइन पर निर्भर करती है। सरल यादृच्छिक प्रतिचयन सबसे बुनियादी विधि है जहाँ प्रत्येक इकाई के चयन की समान संभावना होती है। व्यवस्थित प्रतिचयन एक निश्चित अंतराल का पालन करता है। स्तरित प्रतिचयन सबसे जटिल है क्योंकि इसमें पहले जनसंख्या को सजातीय समूहों में विभाजित करना और फिर नमूना लेना शामिल है। अतः इन तकनीकों का सही क्रम 2, 3, 1 है।

21. (C) 1:24,000
निरूपक भिन्न में जिस मान का हर सबसे छोटा होता है, वह सबसे बड़ी मापनी का प्रतिनिधित्व करता है। बड़ी मापनी का मानचित्र छोटे क्षेत्र को अधिक विस्तार और स्पष्टता के साथ दिखाता है। यहाँ 1:24,000 सबसे बड़ी मापनी है क्योंकि इसमें धरातल की दूरियों को कम अनुपात में छोटा किया गया है।

Downloaded from www.pdf.tube

मापनी के बिना मानचित्र केवल एक स्केच मात्र रह जाता है, क्योंकि इसमें सटीक माप संभव नहीं होता। यह भूगोलवेत्ताओं को मानचित्र से वास्तविक दुनिया की दूरियों और क्षेत्रफल की गणना करने में सक्षम बनाती है। मापनी मानचित्र की शुद्धता और उसकी वैज्ञानिक उपयोगिता का सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत तत्व है।

101. (B) भू-संपत्ति मानचित्र
भू-संपत्ति मानचित्र विशेष रूप से व्यक्तिगत भूमि स्वामित्व, संपत्ति की सीमाओं और कानूनी विवरणों को दिखाने के लिए तैयार किए जाते हैं। ये मानचित्र बहुत बड़ी मापनी पर बनाए जाते हैं ताकि छोटी से छोटी सीमा को भी स्पष्टता के साथ अंकित किया जा सके। इनका मुख्य उपयोग सरकारी राजस्व विभागों, नगर नियोजन और कानूनी विवादों के समाधान में किया जाता है। ये मानचित्र सार्वजनिक और निजी भूमि के सटीक विभाजन को सुनिश्चित करने और कर निर्धारण के लिए एक अनिवार्य वैधानिक दस्तावेज के रूप में कार्य करते हैं।

102. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण का उपयोग किसी बिंदु प्रतिरूप के स्थानिक विक्षेपण की प्रकृति को समझने के लिए किया जाता है। समाश्रयण विश्लेषण चरों के बीच गणितीय संबंधों को मॉडल करने में सहायक होता है, जिससे भविष्यवाणियाँ संभव होती हैं। सहसंबंध विश्लेषण दो चरों के बीच संबंध की दिशा और गहराई को मापता है। भारित स्कोर तकनीक का उपयोग बहु-मानदंड निर्णय लेने में विभिन्न कारकों को उनकी प्राथमिकता के अनुसार महत्व देने हेतु किया जाता है। ये सभी भौगोलिक शोध के वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक स्तंभ हैं।

103. (B) त्रि-आयामी विज़ुअलाइज़ेशन और फ्लाई-थ्रू बनाना
मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों ने त्रि-आयामी विज़ुअलाइज़ेशन और वर्चुअल फ्लाई-थ्रू बनाने की क्षमता प्रदान की है, जो मैन्युअल कार्टोग्राफी में अत्यंत कठिन और लगभग असंभव था। यह तकनीक उच्चावच और शहरी परिदृश्यों को सजीव और यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत करती है। इससे जटिल भौगोलिक आंकड़ों को समझना और प्रस्तुत करना अधिक प्रभावी हो गया है। डिजिटल मॉडलिंग के माध्यम से शोधकर्ता किसी क्षेत्र का विभिन्न कोणों से सूक्ष्म निरीक्षण कर सकते हैं, जिससे योजना निर्माण और पर्यावरणीय विश्लेषण में नई दिशाएं खुलती हैं।

104. (D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
विक्षेपण के मापों के संदर्भ में दोनों कथन सांख्यिकीय रूप से गलत हैं। मानक विचलन चरम मानों से अत्यधिक प्रभावित होता है क्योंकि इसमें प्रत्येक विचलन का वर्ग किया जाता है। इसी प्रकार, परास विक्षेपण का सबसे अस्थिर माप है क्योंकि यह केवल दो चरम मानों (अधिकतम और न्यूनतम) पर निर्भर करता है और शेष आंकड़ों की पूरी तरह उपेक्षा करता है। अतः आंकड़ों की स्थिरता और वितरण की शुद्धता को समझने के लिए इन मापों की सीमाओं और उनकी गणना के तरीके को जानना अत्यंत आवश्यक है।

NODIA

105. (A) वस्तुओं के प्रवाह की दिशा।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को दर्शाने वाले प्रवाह मानचित्र में तीर मुख्य रूप से वस्तुओं के प्रवाह की दिशा को प्रदर्शित करते हैं। ये तीर यह बताते हैं कि निर्यात किस देश से शुरू हो रहा है और आयात किस गंतव्य तक पहुँच रहा है। इसके साथ ही, इन रेखाओं की मोटाई व्यापार की गई वस्तुओं की मात्रा या मूल्य को सूचित करती है। यह दृश्य प्रतिनिधित्व वैश्विक आर्थिक संबंधों और व्यापारिक मार्गों के प्रतिरूप को समझने के लिए भूगोल और अर्थशास्त्र में एक अत्यंत प्रभावशाली उपकरण माना जाता है।

106. (B) केवल 2
जब किसी शहर में आय के स्तर जैसे विषम वितरण का अध्ययन करना हो, तो स्तरित प्रतिचयन सबसे प्रभावी विधि है। इसमें शहर को आय के आधार पर सजातीय क्षेत्रों या स्तरों (उच्च, मध्यम, निम्न) में विभाजित किया जाता है और फिर प्रत्येक स्तर से नमूने लिए जाते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक सामाजिक-आर्थिक समूह का डेटासेट में उचित और प्रतिनिधित्वपूर्ण स्थान हो। सरल यादृच्छिक प्रतिचयन में कुछ वर्गों के छूटने का जोखिम रहता है, जबकि स्तरित विधि अधिक सटीक और संतुलित परिणाम प्रदान करती है।

107. (D) रंग प्रवणता मापनी
मानचित्र मापनी को मुख्य रूप से तीन रूपों में व्यक्त किया जाता है: शब्दिक कथन, निरूपक भिन्न और रैखिक या आलेखीय मापनी। रंग प्रवणता का उपयोग मानचित्र पर डेटा की तीव्रता या श्रेणियों को दिखाने के लिए किया जाता है, लेकिन यह दूरियों को मापने के लिए कोई आधिकारिक या तकनीकी 'मापनी' का प्रकार नहीं है। मापनी मानचित्र पर दूरी और धरातल पर दूरी के बीच के गणितीय अनुपात को परिभाषित करती है। शुद्धता और स्पष्टता के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरूपक भिन्न और आलेखीय मापनी को श्रेष्ठ माना जाता है।

108. (A) उच्च अक्षांशों में क्षेत्रफल का अत्यधिक विरूपण।
मर्केटर प्रक्षेप का सबसे प्रमुख दोष यह है कि इसमें भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर क्षेत्रों का क्षेत्रफल बहुत अधिक बढ़ जाता है। उच्च अक्षांशों में स्थित द्वीप और महाद्वीप, जैसे ग्रीनलैंड, अपने वास्तविक आकार की तुलना में बहुत बड़े दिखाई देते हैं। हालांकि यह प्रक्षेप आकृतियों और दिशाओं को सटीक रूप से सुरक्षित रखता है, लेकिन क्षेत्रफल का यह अत्यधिक विरूपण इसे सांख्यिकीय वितरण दिखाने के लिए अनुपयुक्त बनाता है। यह नौसंचालन के लिए तो उत्कृष्ट है, लेकिन वैश्विक तुलनात्मक अध्ययन में भ्रम पैदा कर सकता है।

109. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn < 1 गुच्छित प्रतिरूप को और Rn > 1 विकीर्ण प्रतिरूप को इंगित करता है। सहसंबंध विश्लेषण में r = +1.0 पूर्ण धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है, जहाँ दोनों चर एक ही दिशा में बढ़ते हैं। इसके विपरीत, r = -1.0 पूर्ण ऋणात्मक सहसंबंध को सूचित करता है, जहाँ एक चर के बढ़ने पर दूसरा घटता है। ये सांख्यिकीय मान भौगोलिक चरों और स्थानिक वितरणों की प्रकृति को सटीक रूप से परिभाषित

182. (C) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
विक्षेपण के मापों के संदर्भ में दोनों कथन सांख्यिकीय रूप से पूर्णतः सही हैं। मानक विचलन, परास की तुलना में विक्षेपण का कहीं अधिक व्यापक और विश्वसनीय माप है क्योंकि यह केवल चरम मानों के बजाय पूरे डेटासेट पर विचार करता है। यह प्रत्येक डेटा बिंदु के माध्य से होने वाले विचलन को गणितीय रूप से शामिल करता है, जिससे वितरण की परिवर्तनशीलता का एक सूक्ष्म चित्रण प्राप्त होता है। डेटा की स्थिरता और गहराई को समझने के लिए सांख्यिकी में इस उपकरण का उपयोग अनिवार्य माना जाता है।

183. (A) भूगर्भीय चट्टान प्रकारों के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र।
भूगर्भीय चट्टान प्रकारों के वितरण को दर्शाने वाला मानचित्र गुणात्मक विषयक मानचित्र का एक प्रमुख उदाहरण है। इस प्रकार के मानचित्र मात्रात्मक डेटा के बजाय वस्तुओं की श्रेणियों, गुणों या प्रकारों को प्रदर्शित करते हैं। इसमें विभिन्न रंगों या प्रतीकों का उपयोग केवल श्रेणियों के बीच अंतर करने के लिए किया जाता है, न कि उनके सांख्यिकीय मान को दिखाने के लिए। यह शोधकर्ताओं को किसी क्षेत्र की भौतिक संरचना और गुणों की विविधता को समझने में मदद करता है, जो स्थानिक योजना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

184. (A) हेड्स-अप डिजिटाइजिंग
स्कैन किए गए कागजी मानचित्रों के ऊपर कंप्यूटर स्क्रीन पर कर्सर की सहायता से विशेषताओं को रेखांकित करके उन्हें डिजिटल वेक्टर डेटा में बदलने की प्रक्रिया को हेड्स-अप डिजिटाइजिंग कहा जाता है। यह आधुनिक जीआईएस में डेटा निर्माण की एक अत्यंत लोकप्रिय और सटीक विधि है। इसमें पुरानी सूचनाओं को बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों के रूप में परिवर्तित किया जाता है ताकि उनका भविष्य में स्थानिक विश्लेषण किया जा सके। यह प्रक्रिया पुराने मानचित्रों के संरक्षण और उन्हें आधुनिक विश्लेषणात्मक प्रारूप में लाने के लिए अनिवार्य है।

185. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
मर्केटर प्रक्षेप समुद्री और हवाई नौसंचालन के लिए विश्व स्तर पर अपरिहार्य है क्योंकि यह एक यथाकृतिक प्रक्षेप है जो कोणीय शुद्धता बनाए रखता है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस पर खींची गई कोई भी सीधी रेखा एक स्थिर दिक-मान रेखा (रम्ब लाइन) होती है, जिससे गंतव्य तक का मार्ग निर्धारित करना अत्यंत सरल हो जाता है। यद्यपि इसमें ध्रुवीय क्षेत्रों में क्षेत्रफल का विरूपण होता है, लेकिन दिशात्मक सटीकता इसे नौसंचालन के लिए सर्वश्रेष्ठ बनाती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों पूर्णतः सत्य हैं।

186. (A) माध्यिका
केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों में माध्यिका वह मान है जिसके नीचे और ऊपर वितरण के ठीक 50-50 प्रतिशत अवलोकन स्थित होते हैं। यह डेटा के क्रमित सेट का मध्य बिंदु है जो वितरण को दो बराबर भागों में विभाजित करता है। माध्यिका की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह चरम मानों या आउटलेर्स से प्रभावित नहीं होती है, जिससे यह विषम आंकड़ों के लिए एक बहुत ही स्थिर और प्रतिनिधि माप बन जाती है। यह डेटा के वास्तविक केंद्र को समझने का एक वैज्ञानिक और विश्वसनीय माध्यम है।

187. (A) अंतिम परिणाम में विभिन्न मानदंडों के सापेक्ष महत्व को प्रतिबिंबित करना।
बहु-मानदंड विश्लेषण में भारित स्कोर का मुख्य उद्देश्य अंतिम निर्णय प्रक्रिया में शामिल विभिन्न मानदंडों के सापेक्ष और वास्तविक महत्व को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करना है। यह स्वीकार करता है कि सभी कारक समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं होते हैं; उदाहरण के लिए, किसी साइट के चयन में पर्यावरणीय सुरक्षा को लागत की तुलना में अधिक भार दिया जा सकता है। यह तकनीक विश्लेषण को अधिक संतुलित, यथार्थवादी और वैज्ञानिक बनाती है। इसके माध्यम से जटिल भौगोलिक समस्याओं के समाधान में प्राथमिकताएं स्पष्ट रूप से निर्धारित की जा सकती हैं।

188. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
प्रवाह मानचित्रों में यदि एक ही बिंदु से बहुत अधिक प्रवाह रेखाएँ निकलती हैं, तो मानचित्र अत्यधिक अव्यवस्थित और पढ़ने में कठिन हो सकता है, जो इसके संचार मूल्य को कम कर देता है। प्रभावी मानचित्रण के लिए कार्टोग्राफिक सामान्यीकरण और प्रतीकों का उचित चयन अत्यंत आवश्यक है ताकि सूचना स्पष्ट बनी रहे। हालांकि कारण यह नहीं बताता कि अव्यवस्था क्यों होती है, बल्कि समाधान की ओर इशारा करता है। अतः अभिकथन सत्य है और कारण का संदर्भ तो सही है लेकिन वह अभिकथन की व्याख्या नहीं करता।

189. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
जीआईएस में बिंदु का उपयोग शहर जैसे विशिष्ट स्थानों के लिए, रेखा का उपयोग नदी या सड़क जैसी रैखिक विशेषताओं के लिए और बहुभुज का उपयोग देश की सीमाओं जैसे क्षेत्रों के लिए किया जाता है। रास्टर डेटा उपग्रह छवियों या ऊंचाई मॉडल जैसी निरंतर घटनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए ग्रिड का उपयोग करता है। इन डेटा प्रारूपों का सही मिलान और उपयोग ही यथार्थवादी स्थानिक मॉडलिंग और सटीक विश्लेषण का आधार है। प्रत्येक प्रारूप अपनी विशिष्टता के कारण अलग भौगोलिक सूचनाओं के लिए चुना जाता है।

190. (A) एक गोलाभ
मानचित्र प्रक्षेप बनाने की प्रक्रिया में बेलन, शंकु और समतल तीन प्रमुख विकसित सतहें हैं जिन पर ग्लोब की विशेषताओं को प्रक्षेपित किया जा सकता है। गोलाभ स्वयं पृथ्वी की आकृति को दर्शाता है और इसे 'विकसित सतह' नहीं माना जा सकता क्योंकि इसे बिना काटे या विरूपित किए समतल नहीं किया जा सकता है। विकसित सतह वह होती है जिसे गणितीय रूप से एक सपाट कागज के रूप में फैलाया जा सके। अतः बेलनाकार, शंकु और खमध्य प्रक्षेप ही इन सतहों के आधार पर वर्गीकृत प्रमुख श्रेणियां हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

119. (A) जियोकोडिंग
सड़कों के पतों या वर्णनात्मक स्थान की जानकारी को विशिष्ट भौगोलिक निर्देशांकों (अक्षांश और देशांतर) में बदलने की प्रक्रिया को जियोकोडिंग कहागा जाता है। यह जीआईएस का एक महत्वपूर्ण कार्य है जो पते-आधारित डेटा को मानचित्र पर सटीक रूप से प्लॉट करने में सक्षम बनाता है। इसके माध्यम से व्यावसायिक स्थानों, अपराध स्थलों या आपातकालीन सेवाओं के वितरण का स्थानिक विश्लेषण किया जा सकता है। यह तकनीक डिजिटल मानचित्रों को वास्तविक दुनिया की भौतिक स्थितियों और मानवीय गतिविधियों से जोड़ने का एक प्रभावी और वैज्ञानिक सेतु है।

120. (A) एक आश्रित चर और स्वतंत्र चरों के एक सेट के बीच सहसंबंध।
बहु-सहसंबंध एक सांख्यिकीय माप है जो एक एकल आश्रित चर और स्वतंत्र चरों के एक पूरे समूह के बीच के संयुक्त संबंध की मजबूती को व्यक्त करता है। यह दर्शाता है कि स्वतंत्र चरों का सामूहिक प्रभाव आश्रित चर में होने वाले परिवर्तनों को कितनी सटीकता से स्पष्ट कर सकता है। भूगोल में इसका उपयोग जटिल घटनाओं, जैसे फसल उत्पादन, को समझने के लिए किया जाता है जो वर्षा, तापमान और उर्वरक जैसे कई कारकों से एक साथ प्रभावित होती हैं। यह विश्लेषण की समग्रता को बढ़ाता है।

121. (A) मापनी
मानचित्र पर सटीक मापन और विश्लेषण के लिए मापनी का स्पष्ट रूप से परिभाषित होना सबसे अनिवार्य आवश्यकता है। मापनी मानचित्र की दूरियों और धरातल की वास्तविक दूरियों के बीच एक निश्चित गणितीय संबंध स्थापित करती है। इसके बिना, मानचित्र से प्राप्त कोई भी दूरी या क्षेत्रफल का डेटा वैज्ञानिक रूप से मान्य नहीं होगा। यद्यपि शीर्षक और दिशा सूचक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन मापनी ही वह आधारभूत तत्व है जो मानचित्र को एक सटीक और विश्वसनीय भौगोलिक उपकरण के रूप में कार्य करने योग्य बनाती है।

122. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
स्कोरिंग विधियों के बारे में दोनों कथन तकनीकी रूप से सही हैं। रैंक स्कोर विधि में मदों को केवल उनके परिमाण के आधार पर क्रमित किया जाता है, जहाँ उनके बीच के वास्तविक अंतर की उपेक्षा की जाती है। इसके विपरीत, भारित स्कोर विधि अधिक उन्नत है क्योंकि यह रैंक के साथ-साथ प्रत्येक कारक के सापेक्ष महत्व या परिमाण को भी शामिल करती है। ये विधियाँ बहु-मानदंड निर्णय लेने की प्रक्रिया को सरल और वैज्ञानिक बनाती हैं, जिससे जटिल भौगोलिक समस्याओं का प्रभावी समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

123. (A) खमध्य
खमध्य प्रक्षेप की सबसे महत्वपूर्ण और अद्वितीय विशेषता यह है कि यह मानचित्र के केंद्रीय बिंदु से अन्य सभी बिंदुओं तक की सही दिशा को प्रदर्शित करता है। इसमें केंद्र से खींची गई कोई भी सीधी रेखा वास्तविक दिगंश या दिशा को दर्शाती है। इस गुण के कारण इसका उपयोग विमानन, रेडियो संचार और ध्रुवीय क्षेत्रों के मानचित्रण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। यह प्रक्षेप उन कार्यों के लिए अपरिहार्य है जहाँ दिशात्मक शुद्धता भौगोलिक विश्लेषण या नौसंचालन का मुख्य और अनिवार्य उद्देश्य होती है।

124. (A) यह अधिक प्रतिनिधि नमूना तैयार कर सकता है और प्रतिचयन त्रुटि को कम कर सकता है।
स्तरित प्रतिचयन का मुख्य लाभ यह है कि यह जनसंख्या को सजातीय समूहों में विभाजित करके अधिक प्रतिनिधि नमूना तैयार करता है, जिससे प्रतिचयन त्रुटि कम हो जाती है। यह सुनिश्चित करता है कि जनसंख्या के सभी महत्वपूर्ण वर्गों का नमूने में उचित स्थान हो, जो सरल यादृच्छिक प्रतिचयन में संभव नहीं हो पाता। यह विधि विशेष रूप से तब उपयोगी है जब अध्ययन क्षेत्र में विविधता अधिक हो। इससे प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय होते हैं और पूरी जनसंख्या की विशेषताओं को सूक्ष्मता से प्रतिबिंबित करते हैं।

125. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
आधुनिक समय में डिजिटल मानचित्रण ने पेशेवर क्षेत्रों में मैन्युअल तकनीकों को लगभग पूरी तरह प्रतिस्थापित कर दिया है। कंप्यूटर आधारित प्रणालियाँ मानचित्रों के निर्माण में असाधारण गति, संपादन में अत्यधिक लचीलापन और उन्नत विश्लेषणात्मक क्षमताएं प्रदान करती हैं। डिजिटल डेटा को आसानी से अद्यतन और साझा किया जा सकता है, जो आज की तीव्र सूचना आवश्यकताओं के लिए अनिवार्य है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि तकनीकी श्रेष्ठता और कार्यक्षमता ही इस बदलाव का मुख्य और निर्णायक आधार रही है।

126. (A) -1 और +1
सरल सहसंबंध गुणांक (r) का मान सदैव -1 और +1 के बीच स्थित होता है। -1 का मान एक पूर्ण ऋणात्मक संबंध को दर्शाता है, जहाँ एक चर बढ़ने पर दूसरा घटता है। +1 का मान एक पूर्ण धनात्मक संबंध को सूचित करता है, जहाँ दोनों चर एक ही दिशा में बदलते हैं। 0 का मान चरों के बीच किसी भी रेखीय संबंध के अभाव को प्रकट करता है। यह सांख्यिकीय माप चरों के बीच की निकटता और प्रभाव की दिशा को वैज्ञानिक रूप से व्यक्त करने का मानक पैमाना है।

127. (A) मानक विचलन
विक्षेपण के मापों का उपयोग यह समझने के लिए किया जाता है कि डेटा के मान अपने केंद्रीय औसत से कितने दूर फैले हुए हैं। मानक विचलन इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो प्रसरण के वर्गमूल के रूप में डेटा की परिवर्तनशीलता को मापता है। इसके विपरीत, माध्य, माध्यिका और बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति के माप हैं जो डेटा के प्रतिनिधि मान को खोजते हैं। मानक विचलन शोधकर्ताओं को डेटा की विश्वसनीयता और वितरण की स्थिरता के बारे में महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

164. (A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
सभी मानचित्र वास्तविकता का एक अनिवार्य सरलीकरण होते हैं क्योंकि वे केवल चुनिंदा सूचनाओं को ही एक निश्चित मापनी पर प्रदर्शित करते हैं। एक मानचित्र के लिए पृथ्वी की हर सूक्ष्म विशेषता को पूर्ण सटीकता के साथ दिखाना असंभव है, क्योंकि विरूपण और सामान्यीकरण मानचित्रण प्रक्रिया के अभिन्न अंग हैं। मानचित्रकार को जटिलताओं को कम करके केवल प्रासंगिक डेटा को ही प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करना पड़ता है। अतः केवल प्रथम कथन सत्य है, जबकि द्वितीय कथन मानचित्रण की व्यावहारिक और वैज्ञानिक सीमाओं के विरुद्ध है।

165. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
सक्रिय सुदूर संवेदन प्रणालियाँ, जैसे राडार, दिन या रात के किसी भी समय प्रभावी ढंग से डेटा प्राप्त करने में सक्षम होती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि ये प्रणालियाँ लक्ष्य को रोशन करने के लिए ऊर्जा का अपना स्वतंत्र स्रोत (जैसे सूक्ष्म तरंगें या लेजर) उत्सर्जित करती हैं। वे बाहरी सौर प्रकाश पर निर्भर नहीं होती हैं, जिससे वे बादलों या अंधेरे की स्थिति में भी धरातल की जानकारी जुटा सकती हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि स्व-प्रदीप्ति ही उनकी निरंतर संचालन क्षमता का तकनीकी आधार है।

166. (D) 1, 2 और 3
मानचित्र की तीन मूलभूत विशेषताएं इसकी वैज्ञानिक पहचान सुनिश्चित करती हैं: यह सदैव एक निश्चित मापनी पर आधारित होता है, यह वास्तविक दुनिया की विशेषताओं को दिखाने के लिए प्रतीकों का उपयोग करता है, और यह वास्तविकता का एक चुनिंदा प्रतिनिधित्व है। मापनी दूरियों को मापने योग्य बनाती है, प्रतीक सूचना को संक्षिप्त करते हैं, और चयनात्मकता मानचित्र को पठनीय और उद्देश्यपूर्ण बनाती है। इन तीनों गुणों के बिना कोई भी चित्रण तकनीकी रूप से मानचित्र नहीं माना जा सकता। अतः ये सभी गुण भौगोलिक मानचित्रण के अनिवार्य स्तंभ हैं।

167. (A) रैंक स्कोर
जब एक शोधकर्ता विभिन्न श्रेणियों को 'उच्च', 'मध्यम' और 'निम्न' जैसे क्रमसूचक मान (3, 2, 1) प्रदान करता है, तो यह रैंक स्कोर तकनीक का प्रत्यक्ष अनुप्रयोग है। इसमें वस्तुओं को उनके गुणात्मक महत्व के आधार पर एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। यह विधि जटिल डेटा को सरल श्रेणियों में वर्गीकृत करने और तुलनात्मक विश्लेषण को सुगम बनाने के लिए अत्यंत उपयोगी है। भूगोल में इसका उपयोग अक्सर भूमि उपयुक्तता या विकास के स्तरों को शीघ्रता से रैंक करने और प्राथमिकताएं तय करने हेतु किया जाता है।

168. (A) दंड आरेख
किसी क्षेत्र में विभिन्न मृदा प्रकारों की आवृत्ति या उपलब्धता को दर्शाने के लिए दंड आरेख सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय साधन है। इसमें प्रत्येक मृदा प्रकार को एक अलग दंड के रूप में दिखाया जाता है, जिसकी ऊंचाई उस मिट्टी के तहत आने वाले क्षेत्रफल या आवृत्ति को स्पष्ट करती है। यह अलग-अलग श्रेणियों के बीच मात्रात्मक तुलना करने के लिए एक सरल और प्रभावी दृश्य प्रारूप प्रदान करता है। दंड आरेख के माध्यम से शोधकर्ता और योजनाकार मृदा के वितरण प्रतिरूप को एक नज़र में समझ सकते हैं।

169. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
माध्य केंद्रीय प्रवृत्ति का एक महत्वपूर्ण माप है, जबकि मानक विचलन डेटा के विक्षेपण या फैलाव को वैज्ञानिक रूप से मापता है। सहसंबंध गुणांक दो चरों के बीच के सांख्यिकीय संबंध की दिशा और मजबूती को स्पष्ट करता है। Rn सांख्यिकी स्थानिक प्रतिरूपों के विश्लेषण के लिए उपयोग की जाती है, जो यह बताती है कि बिंदु प्रतिरूप गुच्छित हैं या बिखरे हुए हैं। इन मापों का सही वर्गीकरण और अनुप्रयोग भौगोलिक शोध की गहराई और शुद्धता को बढ़ाने के लिए अपरिहार्य है, जिससे सटीक निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

170. (A) कार्टोग्राफिक कार्यों को करने के लिए सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर का उपयोग।
मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों का तात्पर्य विभिन्न कार्टोग्राफिक कार्यों, जैसे मानचित्र निर्माण, संपादन, विश्लेषण और प्रदर्शन के लिए विशेष सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर का उपयोग करना है। इसने पारंपरिक मैन्युअल विधियों को आधुनिक डिजिटल तकनीकों से बदल दिया है, जिससे कार्य में अत्यधिक गति और सटीकता आई है। जीआईएस इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है जो स्थानिक डेटा के प्रबंधन के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करता है। कंप्यूटर के उपयोग ने जटिल भौगोलिक सूचनाओं के भंडारण और उनके सूक्ष्म विश्लेषण की संभावनाओं को अपार विस्तार दिया है।

171. (A) 1:100,000 की तुलना में बड़े पैमाने का मानचित्र
निरूपक भिन्न में जिस मान का हर छोटा होता है, वह उतनी ही बड़ी मापनी का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ 1:100,000 की मापनी 1:250,000 की तुलना में बड़ी मापनी है क्योंकि इसमें धरातल के विवरणों को कम छोटा किया गया है। बड़ी मापनी का मानचित्र छोटे भौगोलिक क्षेत्र को अधिक विस्तार, सूक्ष्म जानकारी और स्पष्टता के साथ दिखाने में सक्षम होता है। इसके विपरीत, छोटी मापनी का उपयोग विशाल क्षेत्रों जैसे देशों के सामान्य चित्रण के लिए किया जाता है जहाँ विवरणों की सघनता कम होती है।

172. (A) विद्युत चुंबकीय विकिरण
सुदूर संवेदन का मूल सिद्धांत पृथ्वी की सतह से परावर्तित या उत्सर्जित विद्युत चुंबकीय विकिरण का मापन करना है। यह विज्ञान दूर स्थित वस्तुओं के भौतिक संपर्क में आए बिना उनके गुणों की जानकारी जुटाने के लिए विद्युत चुंबकीय स्पेक्ट्रम के विभिन्न बैंडों का उपयोग करता है। सेंसर इन विकिरणों को डिजिटल डेटा में परिवर्तित करते हैं, जिसका उपयोग भूमि आवरण, वनस्पति स्वास्थ्य और अन्य भौगोलिक विशेषताओं के विश्लेषण के लिए किया जाता है। यह तकनीक धरातल की व्यापक और सूक्ष्म निगरानी के लिए एक अपरिहार्य आधुनिक साधन बन चुकी है।

NODIA

137. (A) दो मानक अक्षांशों वाला सामान्य शंकु प्रक्षेप
बड़े पूर्व-पश्चिम विस्तार वाले देशों के लिए दो मानक अक्षांशों वाला सामान्य शंकु प्रक्षेप सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह प्रक्षेप मानक अक्षांशों के साथ विरूपण को न्यूनतम रखता है, जिससे उन क्षेत्रों में मापनी और आकृति की शुद्धता बनी रहती है। रूस, कनाडा या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विशाल देशों के मानचित्रण के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह मध्यम अक्षांशों में विस्तृत भू-भागों को प्रदर्शित करने के लिए एक वैज्ञानिक और सटीक आधार प्रदान करता है, जिससे दूरियों का मापन विश्वसनीय रहता है।

138. (A) डेटा कैप्चर, स्टोरेज, हेरफेर, विश्लेषण और प्रदर्शन के लिए एक उपकरण।
डिजिटल मानचित्रण के संदर्भ में कंप्यूटर केवल एक चित्रण उपकरण नहीं है, बल्कि यह डेटा कैप्चर, सुरक्षित भंडारण, कुशल हेरफेर, वैज्ञानिक विश्लेषण और दृश्य प्रदर्शन के लिए एक शक्तिशाली माध्यम है। यह भौगोलिक सूचनाओं के विशाल भंडार को तेजी से संसाधित करने की क्षमता प्रदान करता है। कंप्यूटर के उपयोग से मानचित्रण की प्रक्रिया अधिक सटीक, लचीला और अद्यतन करने में सरल हो गई है। यह आधुनिक स्थानिक विज्ञान की रीढ़ है जो जटिल डेटा को मूल्यवान भौगोलिक अंतर्दृष्टि में बदलने का कार्य करती है।

139. (A) अधिकांश अंक 75 के अपेक्षाकृत करीब हैं।
यदि किसी डेटासेट का माध्य 75 है और मानक विचलन केवल 5 है, तो इसका तात्पर्य है कि डेटा बिंदुओं में भिन्नता कम है और अधिकांश अंक 75 के बहुत करीब स्थित हैं। यह विक्षेपण का कम स्तर डेटा की उच्च स्थिरता और एकरूपता को दर्शाता है। मानक विचलन जितना कम होगा, डेटा उतना ही संकेंद्रित होगा। शैक्षिक मूल्यांकन में यह इंगित करता है कि छात्रों के प्रदर्शन में बहुत अधिक अंतर नहीं है और अधिकांश का स्तर औसत के निकट ही है।

140. (A) 3, 4, 1, 2
सुदूर संवेदन की प्रक्रिया ऊर्जा स्रोत या सूर्य के प्रकाश से शुरू होती है, जो लक्ष्य को प्रकाशित करती है। इसके बाद, यह ऊर्जा लक्ष्य या धरातल के साथ अंतःक्रिया करती है और परावर्तित होती है। तीसरे चरण में, सेंसर द्वारा इस ऊर्जा का संचरण, अभिग्रहण और प्रारंभिक प्रसंस्करण किया जाता है। अंत में, प्राप्त डेटा की वैज्ञानिक व्याख्या और विश्लेषण करके आवश्यक भौगोलिक सूचनाएं प्राप्त की जाती हैं। यह क्रमबद्ध प्रक्रिया दूर से डेटा प्राप्त करने और उसे समझने के लिए एक मानक वैज्ञानिक ढांचा प्रदान करती है।

141. (A) उपयोग किए गए स्वतंत्र चरों की संख्या।
सरल और बहु-समाश्रयण के बीच का मूलभूत अंतर विश्लेषण में उपयोग किए जाने वाले स्वतंत्र चरों की कुल संख्या पर आधारित है। सरल समाश्रयण में केवल एक स्वतंत्र चर का उपयोग एक आश्रित चर का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है। इसके विपरीत, बहु-समाश्रयण में दो या अधिक स्वतंत्र चरों का उपयोग किया जाता है, जिससे मॉडल अधिक यथार्थवादी और व्यापक बन जाता है। यह भौगोलिक शोध में महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांश घटनाएँ केवल एक कारक के बजाय कई कारकों से प्रभावित होती हैं।

142. (B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
प्रवाह मानचित्रों का उपयोग स्थानों के बीच होने वाली आवाजाही के मार्ग और उसकी मात्रा दोनों को दर्शाने के लिए किया जाता है, जो उन्हें स्थानिक विश्लेषण हेतु उपयोगी बनाता है। इन मानचित्रों पर तीर सजावटी नहीं होते, बल्कि वे आवाजाही की वास्तविक दिशा को प्रदर्शित करने वाले अनिवार्य घटक हैं। तीरों के बिना प्रवाह का स्रोत और गंतव्य स्पष्ट नहीं हो सकता। अतः केवल प्रथम कथन सत्य है। ये मानचित्र परिवहन, प्रवासन और वैश्विक व्यापार के प्रतिरूपों को समझने के लिए अत्यंत वैज्ञानिक और दृश्य माध्यम हैं।

143. (A) एक भू-संपत्ति मानचित्र
संपत्ति कर निर्धारण का कार्य करने वाली सरकारी एजेंसी के लिए भू-संपत्ति मानचित्र सबसे उपयोगी उपकरण है। यह मानचित्र बहुत बड़ी मापनी पर बनाया जाता है और इसमें व्यक्तिगत भूखंडों की सटीक सीमाएं, स्वामित्व विवरण और क्षेत्रफल अंकित होता है। इसके माध्यम से अधिकारी प्रत्येक संपत्ति की सही पहचान कर सकते हैं और उसके आधार पर कर की गणना कर सकते हैं। यह कानूनी शुद्धता सुनिश्चित करने और भूमि संबंधी विवादों को टालने के लिए एक अनिवार्य और वैधानिक भौगोलिक दस्तावेज के रूप में कार्य करता है।

144. (A) निकटतम पड़ोसी विश्लेषण
शहर में किराने की दुकानों के स्थानिक प्रतिरूप का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए निकटतम पड़ोसी विश्लेषण सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय उपकरण है। यह तकनीक यह मापने में मदद करती है कि क्या दुकानें कुछ क्षेत्रों में गुच्छित हैं, यादृच्छिक रूप से बिखरी हुई हैं, या पूरे शहर में समान अंतराल पर फैली हुई हैं। यह विश्लेषण शहरी नियोजन और विपणन रणनीतियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से सुविधाओं की पहुँच और वितरण की कुशलता का आकलन करके बेहतर नागरिक सेवाएं सुनिश्चित की जा सकती हैं।

145. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
आय जैसे विषम वितरण वाले आंकड़ों के लिए माध्यिका केंद्रीय प्रवृत्ति का एक श्रेष्ठ माप है क्योंकि यह चरम मानों से प्रभावित नहीं होती है। माध्य अक्सर बहुत उच्च या निम्न मानों की ओर खिंच जाता है, जिससे वह औसत का गलत प्रतिनिधित्व कर सकता है। माध्यिका केवल डेटा के मध्य स्थान को दर्शाती है, जो वितरण के वास्तविक केंद्र का अधिक यथार्थवादी चित्रण प्रदान करती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि सांख्यिकीय स्थिरता ही माध्यिका को ऐसे मामलों में अधिक विश्वसनीय बनाती है।

146. (A) स्थानिक घटनाओं की जांच और संप्रेषण का एक साधन है।
मानचित्र को एक "उपकरण" के रूप में परिभाषित किया जाता है क्योंकि यह भौगोलिक और स्थानिक घटनाओं की सूक्ष्म जांच, विश्लेषण और उनके प्रभावी संप्रेषण का एक सशक्त

Click Here to Buy book on Amazon

128. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
वर्णमात्री मानचित्र में यदि प्रशासनिक इकाइयों के आकार में बहुत अधिक अंतर हो, तो वह दृष्टिगत रूप से भ्रामक हो सकता है। बड़ी इकाइयाँ, भले ही उनका सांख्यिकीय मान कम हो, मानचित्र पर अधिक हावी दिखाई देती हैं, जिसे क्षेत्रफल-आकार प्रभाव कहा जाता है। यह दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर कर सकता है कि बड़ा क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि भौगोलिक मानचित्रण में दृश्य धारणा की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए इकाइयों के आकार का संतुलित होना अत्यंत आवश्यक है।

129. (A) अन्य चरों के मान के आधार पर एक चर के मान का अनुमान लगाना।
समाश्रयण विश्लेषण का प्राथमिक लक्ष्य एक सांख्यिकीय मॉडल बनाना है जिसके माध्यम से स्वतंत्र चरों के मानों के आधार पर आश्रित चर के मान का सटीक अनुमान लगाया जा सके। यह तकनीक चरों के बीच के कार्यात्मक और गणितीय संबंध को स्पष्ट करती है। भूगोल में इसका उपयोग भविष्य की प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है, जैसे शहरीकरण के आधार पर प्रदूषण के स्तर का अनुमान। यह शोधकर्ताओं को योजना बनाने और डेटा-आधारित भविष्यवाणियां करने के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

130. (A) शब्दिक मापनी
जब मानचित्र की मापनी को सीधे शब्दों में व्यक्त किया जाता है, जैसे "1 सेमी = 10 किमी", तो इसे शब्दिक मापनी कहा जाता है। यह विधि आम उपयोगकर्ताओं के लिए समझने और प्रयोग करने में बहुत सरल है। इसमें मानचित्र की दूरी और धरातल की दूरी के बीच के संबंध को स्पष्ट भाषा में लिखा जाता है। हालांकि यह आलेखीय मापनी की तरह मानचित्र के आकार परिवर्तन के साथ स्वतः समायोजित नहीं होती, लेकिन यह त्वरित संदर्भ और सामान्य मानचित्रण कार्यों के लिए अत्यंत प्रभावी मानी जाती है।

131. (A) यह स्थानिक जानकारी को कोशिकाओं या पिक्सल के एक संरचित ग्रिड में संग्रहीत करता है।
जीआईएस में रास्टर डेटा मॉडल की मुख्य विशेषता यह है कि यह भौगोलिक सूचनाओं को कोशिकाओं या पिक्सल के एक निरंतर ग्रिड के रूप में संग्रहीत करता है। प्रत्येक पिक्सेल में एक विशिष्ट मान होता है जो उस स्थान की विशेषता, जैसे ऊंचाई या तापमान, को दर्शाता है। यह मॉडल उपग्रह छवियों और निरंतर भौगोलिक घटनाओं के प्रतिनिधित्व के लिए अत्यंत उपयुक्त है। रास्टर डेटा का विश्लेषण गणितीय रूप से सरल होता है और यह जटिल प्राकृतिक परिदृश्यों को विस्तार से चित्रित करने में सक्षम होता है।

132. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
सक्रिय सेंसर अपनी ऊर्जा उत्सर्जित करते हैं और परावर्तन को रिकॉर्ड करते हैं, जबकि निष्क्रिय सेंसर बाहरी ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर होते हैं। पंचक्रोमैटिक सेंसर एक ही विस्तृत तरंगदैर्घ्य बैंड में डेटा कैप्चर करते हैं, जो उच्च रिजोल्यूशन प्रदान करता है। मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर कई विशिष्ट तरंगदैर्घ्य बैंडों में ऊर्जा को रिकॉर्ड करते हैं, जिससे वस्तुओं की पहचान और वर्गीकरण करना आसान हो जाता है। सुदूर संवेदन में इन सेंसरों का चुनाव अध्ययन के उद्देश्य और आवश्यक डेटा की सूक्ष्मता पर निर्भर करता है।

133. (D) 1, 2 और 3
केंद्रीय प्रवृत्ति के संदर्भ में सभी तीनों कथन सांख्यिकीय रूप से सत्य हैं। माध्यिका वितरण को दो समान हिस्सों में बांटने वाला मध्य मान है। बहुलक वह मान है जिसकी आवृत्ति सबसे अधिक होती है, जो डेटा की लोकप्रियता दर्शाता है। माध्य अंकगणितीय औसत होने के कारण चरम मानों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है, जो पूरे परिणाम को बदल सकते हैं। इन तीनों मापों का सामूहिक उपयोग डेटा की व्यापक प्रकृति और उसके केंद्र को वैज्ञानिक रूप से समझने के लिए अनिवार्य है।

134. (A) यह जनसंख्या के 100% सटीक प्रतिनिधित्व की गारंटी देता है।
प्रतिचयन तकनीक का उपयोग करने का यह लाभ नहीं है कि यह 100% सटीकता की गारंटी देता है, क्योंकि नमूने में हमेशा कुछ प्रतिचयन त्रुटि की संभावना बनी रहती है। हालांकि, यह पूर्ण जनगणना की तुलना में बहुत कम समय लेने वाला, सस्ता और व्यावहारिक है। वैज्ञानिक प्रतिचयन के माध्यम से ज्ञात सटीकता के स्तर और आत्मविश्वास अंतराल के साथ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। भूगोलवेत्ता बड़ी आबादी का अध्ययन करने के लिए इस पद्धति का उपयोग करते हैं क्योंकि यह संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग सुनिश्चित करती है।

135. (A) 0 के करीब
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में यदि बिंदुओं के बीच प्रेक्षित माध्य दूरी अपेक्षित माध्य दूरी से बहुत कम होती है, तो Rn मान 0 के करीब पहुँच जाता है। यह स्थिति पूर्णतः गुच्छित प्रतिरूप को इंगित करती है, जहाँ बिंदु एक-दूसरे के अत्यंत निकट केंद्रित होते हैं। यह सांख्यिकीय माप स्थानिक वितरण की सघनता को समझने में मदद करता है। मान का 0 की ओर झुकाव यह स्पष्ट करता है कि भौगोलिक घटनाएँ किसी विशिष्ट स्थान या संसाधनों के चारों ओर केंद्रित होने की प्रबल प्रवृत्ति रखती हैं।

136. (A) भारित स्कोर
नए अस्पताल के लिए उपयुक्तता मानचित्र बनाने हेतु भारित स्कोर तकनीक सबसे उपयुक्त है क्योंकि यह विभिन्न कारकों को उनकी प्राथमिकता के अनुसार अलग-अलग महत्व देने की अनुमति देती है। इस मामले में, शोधकर्ता जनसंख्या घनत्व को सड़क पहुंच की तुलना में अधिक भार दे सकता है, जिससे अंतिम परिणाम अधिक यथार्थवादी और उपयोगी होता है। यह विधि जटिल निर्णय लेने की प्रक्रिया में वैज्ञानिक सटीकता लाती है। जीआईएस के साथ मिलकर यह तकनीक साइट चयन और क्षेत्रीय नियोजन के लिए एक अपरिहार्य उपकरण बन गई है।

प्रदर्शित करने और विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों के बीच तुलना करने के लिए अत्यंत प्रभावी है। भूगोलवेत्ता और योजनाकार इसका उपयोग सामाजिक-आर्थिक संकेतकों के स्थानिक वितरण को समझने और प्रभावी नीति निर्माण के लिए व्यापक रूप से करते हैं।

156. (A) संख्यात्मक डेटा को दृष्टिगत रूप से समझने योग्य प्रारूप में प्रस्तुत करना।
सांख्यिकीय आरेख का प्राथमिक उद्देश्य जटिल और विशाल संख्यात्मक आंकड़ों को सरल, आकर्षक और आसानी से समझने योग्य दृश्य प्रारूप में परिवर्तित करना है। यह शोधकर्ताओं और आम जनता को डेटा के रुझानों, वितरणों और तुलनाओं को एक नज़र में पहचानने में सक्षम बनाता है। आरेख केवल सूचनाओं का प्रदर्शन नहीं करते, बल्कि वे डेटा के पीछे छिपे सांख्यिकीय प्रतिरूपों को उजागर करते हैं। यह वैज्ञानिक निष्कर्षों को संप्रेषित करने और निर्णय लेने की प्रक्रिया को सहज बनाने के लिए एक अत्यंत शक्तिशाली और अनिवार्य उपकरण है।

157. (A) विभिन्न उपनगरों से केंद्रीय व्यावसायिक जिले में आने वाले यात्री।
'अनेक-से-एक' प्रवाह का उदाहरण वह स्थिति है जहाँ कई अलग-अलग स्रोतों से प्रवाह शुरू होकर एक ही गंतव्य पर समाप्त होता है। विभिन्न उपनगरों से यात्रियों का हर सुबह एक केंद्रीय व्यावसायिक जिले में आना इसका सबसे सटीक भौगोलिक उदाहरण है। प्रवाह मानचित्र पर इसे कई पतली रेखाओं के रूप में दिखाया जाता है जो एक ही केंद्र पर आकर मिलती हैं और वहाँ एक मोटी रेखा या संकेंद्रण बनाती हैं। यह स्थानिक गतिशीलता के केंद्रोन्मुखी प्रतिरूप को समझने और शहरी परिवहन नियोजन में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।

158. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
बड़ी और भौगोलिक रूप से बिखरी हुई आबादी के लिए सरल यादृच्छिक प्रतिचयन करना अव्यवहारिक और अत्यंत खर्चीला हो सकता है। नमूना बिंदुओं का व्यापक फैलाव शोधकर्ताओं के लिए यात्रा और रसद संबंधी चुनौतियां पैदा करता है, विशेषकर जब पूरी आबादी की सूची उपलब्ध न हो। इसके अतिरिक्त, बिखरे हुए नमूनों के कारण समय और श्रम का अपव्यय होता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि व्यावहारिक सीमाएं और संसाधनों की कमी ही अक्सर शोधकर्ताओं को अधिक कुशल वैकल्पिक प्रतिचयन विधियों की ओर ले जाती हैं।

159. (A) आयतचित्र में दंड एक-दूसरे को स्पर्श करते हैं, जबकि दंड आरेख में वे आमतौर पर अलग होते हैं।
आयतचित्र और दंड आरेख के बीच मुख्य संरचनात्मक अंतर यह है कि आयतचित्र में दंड एक-दूसरे को स्पर्श करते हैं, जो डेटा की निरंतरता को दर्शाते हैं। दंड आरेख में दंडों के बीच रिक्त स्थान होता है, क्योंकि वे अलग-अलग श्रेणियों या असंतत डेटा का प्रतिनिधित्व करते हैं। आयतचित्र का उपयोग वर्ग अंतरालों वाले आवृत्ति वितरण के लिए किया जाता है, जबकि दंड आरेख का उपयोग नाममात्र श्रेणियों के बीच तुलना के लिए होता है। यह सूक्ष्म अंतर डेटा की प्रकृति और उसके सही सांख्यिकीय प्रस्तुतीकरण को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

160. (A) 3D गोले को 2D समतल पर प्रदर्शित करने की समस्या।
मानचित्र प्रक्षेप उस मूलभूत चुनौती को हल करने का प्रयास करते हैं जहाँ पृथ्वी के त्रि-आयामी गोले को द्वि-आयामी सपाट कागज पर बिना किसी विरूपण के दिखाना असंभव होता है। इस प्रक्रिया में गणितीय सूत्रों का उपयोग करके ग्लोब की सतह को समतल सतह पर स्थानांतरित किया जाता है। हालांकि हर प्रक्षेप में कुछ न कुछ विरूपण (आकृति, क्षेत्रफल या दिशा में) अनिवार्य है, लेकिन प्रक्षेप का चुनाव इस आधार पर किया जाता है कि किस गुण को सुरक्षित रखना सबसे आवश्यक है। यह मानचित्रण का एक आधारभूत वैज्ञानिक स्तंभ है।

161. (A) दो चरों के बीच कोई रेखीय संबंध नहीं है।
सहसंबंध गुणांक का 0 होना यह स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि दो चरों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रेखीय संबंध मौजूद नहीं है। इसका अर्थ है कि एक चर के मान में परिवर्तन होने पर दूसरे चर के मान में किसी निश्चित दिशा में परिवर्तन होने की कोई प्रवृत्ति नहीं देखी जाती है। यद्यपि उनके बीच कोई जटिल गैर-रेखीय संबंध हो सकता है, लेकिन रेखीय सहसंबंध का अभाव यह सिद्ध करता है कि वे एक-दूसरे पर सीधे निर्भर नहीं हैं। यह शोधकर्ताओं को स्वतंत्र भौगोलिक कारकों की पहचान करने में मदद करता है।

162. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
मानक विचलन वर्णनात्मक सांख्यिकी का एक हिस्सा है जो विक्षेपण को मापता है, जबकि निकटतम पड़ोसी विश्लेषण बिंदु प्रतिरूपों के स्थानिक वितरण को समझने के लिए उपयोग किया जाता है। समाश्रयण विश्लेषण चरों के बीच संबंधों के आधार पर भविष्यसूचक मॉडलिंग का कार्य करता है। मानचित्र प्रक्षेप कार्टोग्राफी का मूलभूत आधार है जो पृथ्वी की सतह को समतल पर प्रदर्शित करता है। इन सभी उपकरणों का सही अनुप्रयोग भौगोलिक डेटा के सूक्ष्म विश्लेषण और वैज्ञानिक निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए अनिवार्य है। प्रत्येक तकनीक अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है।

163. (A) सॉफ्टवेयर
जीआईएस का सॉफ्टवेयर घटक ही वह इंजन है जो ओवरले, बफरिंग और नेटवर्क विश्लेषण जैसे जटिल विश्लेषणात्मक कार्यों को निष्पादित करने के लिए उत्तरदायी है। इसमें वे एल्गोरिदम और उपकरण होते हैं जो कच्चे स्थानिक डेटा को मूल्यवान भौगोलिक जानकारी में संसाधित करते हैं। यद्यपि हार्डवेयर डेटा को संग्रहीत और प्रदर्शित करता है, लेकिन विश्लेषणात्मक शक्ति पूरी तरह से सॉफ्टवेयर की क्षमताओं पर निर्भर करती है। आधुनिक जीआईएस सॉफ्टवेयर शोधकर्ताओं को जटिल स्थानिक समस्याओं को हल करने और विभिन्न परिदृश्यों को मॉडल करने के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

करने और वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालने के लिए आधार प्रदान करते हैं।

110. (A) समताप रेखा
समताप रेखा वह काल्पनिक रेखा है जो मानचित्र पर समान औसत तापमान वाले स्थानों को आपस में जोड़ती है। इसका उपयोग मुख्य रूप से जलवायु मानचित्रों में तापमान के वैश्विक और क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूपों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। ये रेखाएं जलवायु क्षेत्रों की पहचान करने और मौसम के विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। समान मानों को जोड़ने की यह तकनीक, जिसे आइसोप्लेथ मैपिंग कहा जाता है, तापमान की निरंतरता को एक स्पष्ट दृश्य रूप में प्रस्तुत करने का एक वैज्ञानिक माध्यम है।

111. (A) X में एक-इकाई परिवर्तन के लिए Y में औसत परिवर्तन।
समाश्रयण समीकरण Y = a + bX में 'b' को समाश्रयण गुणांक या रेखा की ढाल कहा जाता है। यह यह दर्शाता है कि स्वतंत्र चर X के मान में एक इकाई की वृद्धि या कमी होने पर आश्रित चर Y के मान में औसतन कितना परिवर्तन होगा। यह गुणांक चरों के बीच के कार्यात्मक संबंध की दर को स्पष्ट करता है। भूगोल में इसका उपयोग यह मापने के लिए किया जाता है कि वर्षा या उर्वरक जैसे कारक फसल की पैदावार को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

112. (A) स्थानिक विश्लेषण और प्रतिरूपों की पहचान की सुविधा प्रदान करना।
भूगोल में मानचित्र की मुख्य विशेषता एक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में कार्य करना है, जो स्थानिक संबंधों और प्रतिरूपों की पहचान को सुगम बनाता है। यह शोधकर्ताओं को विभिन्न भौगोलिक घटनाओं के बीच के जटिल संबंधों को देखने और समझने में मदद करता है। मानचित्र केवल सूचनाओं का प्रदर्शन नहीं हैं, बल्कि वे डेटा के पीछे छिपे हुए स्थानिक रुझानों को उजागर करते हैं। यह वैज्ञानिक अन्वेषण और क्षेत्रीय योजना बनाने के लिए एक अत्यंत शक्तिशाली और अपरिहार्य माध्यम के रूप में कार्य करता है।

113. (D) 1, 2 और 3
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) में बफरिंग, ओवरले और नेटवर्क विश्लेषण तीनों ही मूलभूत विश्लेषणात्मक कार्य हैं। बफरिंग किसी विशेषता के चारों ओर प्रभाव क्षेत्र बनाती है, जबकि ओवरले विश्लेषण विभिन्न डेटा परतों को संयोजित करके नए भौगोलिक निष्कर्ष निकालता है। नेटवर्क विश्लेषण का उपयोग परिवहन और रसद में सबसे छोटा या अनुकूलतम मार्ग खोजने के लिए किया जाता है। ये सभी कार्य जीआईएस को केवल एक मानचित्रण उपकरण से ऊपर उठाकर एक शक्तिशाली स्थानिक निर्णय समर्थन प्रणाली के रूप में स्थापित करते हैं।

114. (A) माध्य, माध्यिका से अधिक होगा।
यदि किसी डेटासेट में कुछ बहुत उच्च मान (आउटलेर्स) होते हैं, तो माध्य इन चरम मानों की ओर खिंच जाता है, जिससे उसका मान बढ़ जाता है। इसके विपरीत, माध्यिका केवल मध्य स्थान को दर्शाती है और चरम मानों से प्रभावित नहीं होती है। इस स्थिति में, जिसे धनात्मक विषमता कहा जाता है, माध्य का मान माध्यिका से अधिक हो जाता है। यह वितरण की प्रकृति को समझने में मदद करता है कि डेटा उच्च मानों की ओर झुका हुआ है, जो अक्सर आय वितरण जैसे मामलों में देखा जाता है।

115. (A) सूर्य से आने वाली ऊर्जा या पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित ऊर्जा।
सुदूर संवेदन में निष्क्रिय सेंसर स्वयं ऊर्जा उत्सर्जित नहीं करते हैं, बल्कि वे बाहरी स्रोतों से आने वाली ऊर्जा पर निर्भर होते हैं। इनका सबसे प्रमुख स्रोत सूर्य से आने वाली विद्युत चुंबकीय ऊर्जा है जो पृथ्वी की सतह से परावर्तित होती है। इसके अतिरिक्त, ये सेंसर पृथ्वी की वस्तुओं द्वारा स्वाभाविक रूप से उत्सर्जित तापीय ऊर्जा को भी रिकॉर्ड कर सकते हैं। चूंकि ये सौर प्रकाश पर निर्भर होते हैं, इसलिए इनका उपयोग मुख्य रूप से दिन के दौरान उच्च गुणवत्ता वाली इमेजरी प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

116. (A) समाश्रयण - केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
दिए गए युग्मों में 'समाश्रयण - केंद्रीय प्रवृत्ति का माप' गलत है, क्योंकि समाश्रयण वास्तव में चरों के बीच संबंधों को मॉडल करने और भविष्यवाणियां करने की एक सांख्यिकीय पद्धति है। माध्य केंद्रीय प्रवृत्ति का एक प्रमुख माप है, जबकि मानक विचलन डेटा के विक्षेपण या फैलाव को दर्शाता है। सहसंबंध दो चरों के बीच संबंध की मजबूती और दिशा को मापता है। सांख्यिकी के इन विभिन्न उपकरणों का सही वर्गीकरण डेटा विश्लेषण की शुद्धता और निष्कर्षों की वैज्ञानिकता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

117. (A) अत्यधिक विकीर्ण, संभवतः भूमि धारण प्रणालियों के कारण।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में 2.10 का Rn मान एक अत्यंत विकीर्ण या समान रूप से व्यवस्थित प्रतिरूप को इंगित करता है। यह मान 2.15 के अधिकतम आदर्श मान के बहुत करीब है, जो पूर्ण विक्षेपण को दर्शाता है। गाँवों के संदर्भ में ऐसी व्यवस्था अक्सर सुनियोजित भूमि धारण प्रणालियों या संसाधनों के समान वितरण के कारण हो सकती है। यह दर्शाता है कि बस्तियाँ एक-दूसरे से अधिकतम संभव दूरी पर स्थित हैं, जो एक नियमित और व्यवस्थित स्थानिक संरचना का प्रमाण प्रदान करती है।

118. (A) आयतचित्र
आयतचित्र एक सांख्यिकीय आरेख है जो निरंतर डेटा के आवृत्ति वितरण को प्रदर्शित करने के लिए वर्ग अंतराल और दंडों का उपयोग करता है। इसमें दंडों की चौड़ाई वर्ग अंतराल को और ऊंचाई आवृत्ति को दर्शाती है, और दंड आपस में जुड़े होते हैं। इसका उपयोग अक्सर वर्षा, आयु या तापमान जैसे निरंतर चरों के वितरण प्रतिरूपों को समझने के लिए किया जाता है। यह डेटा की सांद्रता और विस्तार को एक ही नज़र में स्पष्ट रूप से देखने के लिए भूगोल में एक अनिवार्य दृश्य उपकरण है।

NODIA

173. (D) 1, 2 और 3
ऊंचाई और तापमान के अध्ययन में सभी तीनों बिंदु वैज्ञानिक रुप से मान्य हैं। ऊंचाई बढ़ने पर तापमान सामान्यतः कम होता है, जो एक ऋणात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। प्रकीर्णन आरेख इस संबंध को प्राथमिक रुप से देखने में मदद करता है, जबकि समाश्रयण विश्लेषण भविष्यवाणियों के लिए एक गणितीय मॉडल प्रदान करता है। इन सांख्यिकीय उपकरणों का सामूहिक उपयोग भौगोलिक चरों के बीच के अंतर्संबंधों को गहराई से समझने और सटीक निष्कर्ष निकालने के लिए अनिवार्य है। यह जलवायु संबंधी शोध का एक मानक आधार है।

174. (A) डेटा त्रुटि के सभी स्रोतों का उन्मूलन।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का उपयोग करने का यह लाभ नहीं है कि यह डेटा त्रुटि के सभी स्रोतों को पूरी तरह समाप्त कर देता है। यद्यपि जीआईएस जटिल विश्लेषण, डेटा एकीकरण और स्वचालन में अत्यंत शक्तिशाली है, लेकिन डेटा की शुद्धता हमेशा मूल इनपुट की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। उपकरण मानवीय भूलों या स्रोत डेटा की अशुद्धियों को स्वतः ठीक नहीं कर सकता। जीआईएस एक विश्लेषणात्मक शक्ति प्रदान करता है, लेकिन इसके परिणामों की विश्वसनीयता हमेशा इनपुट डेटा की शुद्धता और वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर ही आधारित होती है।

175. (A) बिंदुओं के बीच की माध्यिका दूरी।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn सांख्यिकी की गणना के लिए प्रेक्षित औसत दूरी, अध्ययन क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल और बिंदुओं की कुल संख्या की आवश्यकता होती है। माध्यिका दूरी का इस सांख्यिकीय सूत्र में कोई प्रत्यक्ष उपयोग नहीं होता है, क्योंकि यह विश्लेषण औसत दूरियों के तुलनात्मक अनुपात पर आधारित है। औसत दूरी यह बताती है कि औसतन बिंदु अपने पड़ोसियों के कितने करीब हैं। इन चरों का उपयोग करके ही यह निर्धारित किया जाता है कि स्थानिक वितरण गुच्छित है, यादृच्छिक है या पूरी तरह विकीर्ण है।

176. (A) लैम्बर्ट यथाकृतिक शंकु प्रक्षेप
अधिक पूर्व-पश्चिम विस्तार वाले मध्य-अक्षांश देशों के मानचित्रण के लिए लैम्बर्ट यथाकृतिक शंकु प्रक्षेप सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह प्रक्षेप मानक अक्षांशों के पास विरूपण को बहुत कम रखता है और कोणीय संबंधों को सटीक रूप से सुरक्षित करता है। इसकी यथाकृतिक प्रकृति इसे हवाई नौसंचालन और क्षेत्रीय नियोजन के लिए उत्कृष्ट बनाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के कई देशों के स्थलाकृतिक मानचित्रों के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है क्योंकि यह बड़े भू-भागों को पर्याप्त शुद्धता के साथ प्रदर्शित करता है।

177. (A) गुच्छ प्रतिचयन
जब शोधकर्ता पूरी आबादी को प्राकृतिक रुप से होने वाले समूहों या खंडों में विभाजित करता है और फिर उन खंडों का यादृच्छिक चुनाव करके चयनित समूहों के सभी सदस्यों का अध्ययन करता है, तो इसे गुच्छ प्रतिचयन कहा जाता है। यह विधि बड़े भौगोलिक क्षेत्रों में सर्वेक्षण करने के लिए अत्यंत कुशल और लागत प्रभावी है क्योंकि यह शोधकर्ता के कार्य को सीमित क्षेत्रों में केंद्रित कर देती है। यह व्यक्तिगत स्तर पर यादृच्छिक प्रतिचयन करने की तुलना में व्यावहारिक रुप से अधिक सरल और रसद की दृष्टि से सुगम होती है।

178. (A) समय के साथ रुझान और परिवर्तन।
रेखा आरेख एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांख्यिकीय आरेख है जो विशेष रूप से निरंतर समय अवधि में होने वाले रुझानों और परिवर्तनों को दिखाने के लिए उपयोगी है। यह डेटा बिंदुओं को एक रेखा से जोड़ता है, जिससे वृद्धि, गिरावट या स्थिरता के प्रतिरुप स्पष्ट रुप से उभरकर आते हैं। इसका उपयोग अक्सर जनसंख्या वृद्धि, तापमान में बदलाव या आर्थिक संकेतकों के विश्लेषण के लिए किया जाता है। रेखा आरेख की सरलता और स्पष्टता इसे समय-श्रृंखला डेटा के प्रभावी दृश्य संप्रेषण के लिए भूगोल में श्रेष्ठ बनाती है।

179. (A) स्थानिक प्रतिरूपों और संबंधों को देखने की।
मानचित्र भौगोलिक अध्ययन के लिए एक अपरिहार्य "उपकरण" है क्योंकि यह शोधकर्ताओं को स्थानिक प्रतिरूपों, वितरणों और विभिन्न भौगोलिक तत्वों के बीच के संबंधों को स्पष्ट रुप से देखने की अनुमति देता है। यह जटिल डेटा को एक दृश्य रुप में परिवर्तित करता है जिसे समझना और विश्लेषित करना आसान होता है। मानचित्र केवल चित्रण नहीं हैं, बल्कि वे वैज्ञानिक अन्वेषण और भविष्य की योजना बनाने के लिए एक विश्लेषणात्मक मंच प्रदान करते हैं। यह भूगोलवेत्ताओं के लिए वास्तविकता को समझने और सूक्ष्म स्थानिक निष्कर्ष निकालने का प्राथमिक माध्यम है।

180. (A) यह रैंक की गई मदों के बीच के अंतर के परिमाण को नहीं दर्शाता है।
रैंक स्कोर विधि की सबसे बड़ी प्राथमिक सीमा यह है कि यह रैंक की गई वस्तुओं के बीच के वास्तविक अंतर के परिमाण को स्पष्ट नहीं करती है। उदाहरण के लिए, प्रथम और द्वितीय स्थान के बीच का अंतर द्वितीय और तृतीय के बीच के अंतर से बहुत अलग हो सकता है, लेकिन रैंक उन्हें समान अंतराल पर दिखाती है। यह केवल एक सापेक्ष क्रम प्रदान करती है, जो सूक्ष्म मात्रात्मक विश्लेषण के लिए अपर्याप्त हो सकता है। अतः सटीक मापन के लिए अक्सर इस विधि के साथ अन्य मापों का उपयोग किया जाता है।

181. (A) तीन स्वतंत्र चरों के भारित संयोजन का उपयोग करके आश्रित चर का सबसे अच्छा अनुमान लगा सके।
बहु-समाश्रयण का मुख्य लक्ष्य एक ऐसा गणितीय समीकरण प्राप्त करना है जो कई स्वतंत्र चरों के भारित संयोजन का उपयोग करके आश्रित चर के मान का सबसे सटीक अनुमान लगा सके। यह चरों के बीच के सामूहिक प्रभाव को स्पष्ट करता है, जो वास्तविक दुनिया की जटिलताओं को समझने के लिए आवश्यक है। यह तकनीक शोधकर्ताओं को यह पहचानने में मदद करती है कि कौन से कारक परिणाम को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। भूगोल में इसका उपयोग जलवायु परिवर्तन या शहरी विकास जैसे बहु-आयामी मुद्दों के विश्लेषण हेतु किया जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

माध्यम है। यह केवल एक चित्र नहीं है, बल्कि शोधकर्ताओं को जटिल स्थानिक प्रतिरूपों को देखने और समझने में सक्षम बनाता है। इसके माध्यम से विभिन्न स्थानों के बीच के संबंधों और वितरण की व्याख्या की जा सकती. है। भूगोलवेत्ताओं के लिए यह निर्णय लेने और क्षेत्रीय विकास की योजनाएं बनाने का एक अनिवार्य और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

147. (A) उत्तरी ध्रुव से किसी भी अन्य बिंदु तक।
उत्तरी ध्रुव पर केंद्रित एक खमध्य समदूरस्थ प्रक्षेप का मुख्य गुण यह है कि यह ध्रुव से पृथ्वी के किसी भी अन्य बिंदु तक की वास्तविक दूरी को मानचित्र पर प्रदर्शित करता है। इसमें केंद्र से खींची गई प्रत्येक सीधी रेखा न केवल सही दिशा बताती है, बल्कि वह सटीक मापनी पर आधारित होती है। इस अद्वितीय विशेषता के कारण इसका उपयोग ध्रुवीय अन्वेषण और लंबी दूरी के विमानन मार्गों की योजना बनाने के लिए किया जाता है। यह केंद्र से दूरियों के शुद्ध मापन के लिए अपरिहार्य है।

148. (A) वस्तुओं की एक सूची को क्रमित करना और अनुक्रमिक संख्याएँ प्रदान करना।
सरल रैंक स्कोर की गणना में वस्तुओं या भौगोलिक इकाइयों की एक सूची को उनके मानों के आधार पर आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इसके बाद, प्रत्येक मद को उसकी स्थिति के अनुसार 1, 2, 3 जैसी अनुक्रमिक संख्याएँ या रैंक प्रदान किए जाते हैं। यह विधि जटिल डेटा को तुलनात्मक श्रेणियों में बदलने के लिए अत्यंत सरल और प्रभावी है। हालांकि यह मानों के बीच के सटीक अंतर को नहीं बताती, लेकिन यह सापेक्ष स्थिति को स्पष्ट करने में बहुत सहायक होती है।

149. (C) P-4, Q-3, R-2, S-1
रेखा आरेख निरंतर अवधि में रुझान दिखाने के लिए श्रेष्ठ है, जबकि पाई चार्ट किसी संपूर्ण की आनुपातिक संरचना प्रदर्शित करता है। आयतचित्र का उपयोग निरंतर चर के आवृत्ति वितरण को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दंड आरेख विभिन्न अलग-अलग श्रेणियों के बीच मात्रात्मक तुलना करने के लिए सबसे प्रभावी साधन है। इन सांख्यिकीय आरेखों का सही चयन डेटा की प्रकृति और प्रस्तुति के उद्देश्य पर निर्भर करता है। ये सभी उपकरण भौगोलिक आंकड़ों को समझने योग्य और दृष्टिगत रुप से प्रभावी बनाने के लिए अनिवार्य हैं।

150. (A) वेक्टर मॉडल
भौगोलिक सूचना प्रणाली में वेक्टर मॉडल वह स्थानिक डेटा मॉडल है जो वास्तविक दुनिया की विशेषताओं को बिंदुओं, रेखाओं और बहुभुजों के रूप में प्रदर्शित करता है। बिंदु का उपयोग विशिष्ट स्थानों के लिए, रेखा का उपयोग सड़कों या नदियों के लिए और बहुभुज का उपयोग क्षेत्रों या सीमाओं के लिए किया जाता है। यह मॉडल सटीक सीमाओं को दर्शाने और नेटवर्क विश्लेषण करने के लिए अत्यंत कुशल है। वेक्टर डेटा अपनी सटीकता और कम भंडारण स्थान की आवश्यकता के कारण कार्टोग्राफी में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

151. (A) स्वतंत्र चर, आश्रित चर में भिन्नता के एक बड़े हिस्से की व्याख्या करता है।
सरल समाश्रयण मॉडल में उच्च R-वर्ग मान यह दर्शाता है कि चुना गया स्वतंत्र चर, आश्रित चर में होने वाले परिवर्तनों या भिन्नता के एक बड़े और महत्वपूर्ण हिस्से को प्रभावी ढंग से स्पष्ट करता है। यह मॉडल की 'फिट' या उसकी व्याख्यात्मक शक्ति का एक पैमाना है। R-वर्ग का मान जितना अधिक होगा, मॉडल उतना ही विश्वसनीय और भविष्यवाणियों के लिए सटीक माना जाएगा। यह सांख्यिकीविदों को यह समझने में मदद करता है कि उनका मॉडल वास्तविक डेटा के साथ कितना निकटता से संरेखित है।

152. (A) परिणामी
भौगोलिक विश्लेषण में यादृच्छिक, व्यवस्थित और स्तरित प्रतिचयन के प्रमुख प्रकार हैं जिनका उपयोग वैज्ञानिक रूप से डेटा एकत्र करने के लिए किया जाता है। 'परिणामी' प्रतिचयन का कोई तकनीकी प्रकार नहीं है जो स्थापित सांख्यिकीय प्रतिचयन विधियों के अंतर्गत आता हो। यादृच्छिक प्रतिचयन निष्पक्षता सुनिश्चित करता है, व्यवस्थित प्रतिचयन कवरेज में निरंतरता लाता है, और स्तरित प्रतिचयन विविधता का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतिचयन तकनीक का चुनाव अध्ययन के उद्देश्य और जनसंख्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है ताकि निष्कर्ष सटीक और विश्वसनीय प्राप्त हो सकें।

153. (D) 1, 2 और 3
डिजिटल भूमि-उपयोग मानचित्र बनाने के लिए उपग्रह इमेजरी, ज़ोनिंग नियमों के कागजी मानचित्र और क्षेत्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त जीपीएस डेटा तीनों ही अत्यंत मूल्यवान स्रोत हैं। जीआईएस की सबसे बड़ी विशेषता इन विविध स्रोतों से प्राप्त डेटा को एक एकीकृत स्थानिक वातावरण में संयोजित करने की क्षमता है। कागजी मानचित्रों को डिजिटाइज किया जा सकता है, जबकि उपग्रह चित्र और जीपीएस डेटा प्रत्यक्ष डिजिटल इनपुट प्रदान करते हैं। इन सभी का संयोजन मानचित्र की शुद्धता और उसकी विश्लेषणात्मक गहराई को बढ़ाने में अनिवार्य भूमिका निभाता है।

154. (A) 0
डेटासेट {5, 5, 5, 5, 5} के लिए मानक विचलन 0 होगा क्योंकि इसके सभी मान समान हैं। चूंकि इस सेट में माध्य से कोई भी मान विचलित नहीं हो रहा है, इसलिए विक्षेपण पूरी तरह से अनुपस्थित है। मानक विचलन यह मापता है कि डेटा में कितनी भिन्नता या फैलाव है; यदि सभी बिंदु माध्य पर ही स्थित हैं, तो विचलन का मान शून्य प्राप्त होता है। यह स्थिति सांख्यिकीय रूप से पूर्ण स्थिरता और डेटा में किसी भी प्रकार की परिवर्तनशीलता के अभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

155. (A) वर्णमात्री मानचित्र
वह मानचित्र जो जनसंख्या घनत्व जैसी सांख्यिकीय जानकारी को दर्शाने के लिए प्रशासनिक जिलों को विभिन्न रंगों या छायाओं से भरता है, वर्णमात्री या कोरोप्लिथ मानचित्र कहलाता है। इसमें प्रत्येक क्षेत्र की छाया का घनत्व उस क्षेत्र के डेटा मान के समानुपाती होता है। यह विधि क्षेत्रीय असमानताओं को

NODIA

191. (A) भौगोलिक जानकारी का एक संरचित, कंप्यूटर-पठनीय प्रारूप में भंडारण।
डिजिटल मानचित्रण की सबसे महत्वपूर्ण पहचान भौगोलिक सूचनाओं का एक व्यवस्थित और कंप्यूटर-पठनीय डिजिटल प्रारूप में भंडारण करना है। यह तकनीक मानचित्रों के तेजी से संपादन, सूक्ष्म विश्लेषण और अद्यतनीकरण को संभव बनाती है, जो पारंपरिक कागजी मानचित्रों में संभव नहीं था। इसमें डेटा को विभिन्न परतों में संयोजित किया जा सकता है, जिससे जटिल स्थानिक संबंधों को समझना आसान हो जाता है। डिजिटल प्रारूप मानचित्रों की पहुँच को व्यापक बनाता है और उन्हें विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों पर साझा करने की सुविधा प्रदान करता है।

192. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
जीआईएस (GIS) का पूर्ण रूप भौगोलिक सूचना प्रणाली है और जीपीएस (GPS) का अर्थ ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम है। आरएफ (RF) मानचित्र की मापनी को निरूपक भिन्न के रूप में व्यक्त करता है, जबकि एनएनए (NNA) निकटतम पड़ोसी विश्लेषण की संक्षिप्त शब्दावली है। ये सभी भौगोलिक अध्ययन और स्थानिक तकनीक के आधारभूत स्तंभ हैं। इन अवधारणाओं का सही ज्ञान और अनुप्रयोग आधुनिक भूगोलवेत्ता के लिए अत्यंत आवश्यक है ताकि वे डेटा का सूक्ष्मता से विश्लेषण कर सकें और वैश्विक स्तर पर सटीक सूचनाएं साझा कर सकें।

193. (B) केवल 1 और 2
सरल रेखीय समाश्रयण विश्लेषण चरों के बीच एक सीधी रेखा के संबंध को मानता है और इसका उपयोग स्वतंत्र चर के आधार पर आश्रित चर के भविष्य के मानों का अनुमान लगाने हेतु किया जाता है। यह तकनीक भविष्यवाणियों के लिए एक गणितीय ढांचा प्रदान करती है। हालांकि, यह बिंदु प्रतिरूप में गुच्छन की मात्रा को नहीं मापता, क्योंकि वह कार्य निकटतम पड़ोसी विश्लेषण का है। अतः केवल प्रथम दो कथन ही समाश्रयण के सिद्धांतों के अनुसार सही और प्रासंगिक हैं।

194. (A) चयन की सुगमता और अध्ययन क्षेत्र का समान कवरेज।
व्यवस्थित प्रतिचयन का सबसे बड़ा लाभ इसके क्रियान्वयन की सरलता और अध्ययन क्षेत्र का व्यापक एवं समान कवरेज सुनिश्चित करना है। इसमें एक निश्चित अंतराल का पालन किया जाता है, जिससे नमूना बिंदु पूरी जनसंख्या में समान रूप से फैल जाते हैं। यह सरल यादृच्छिक प्रतिचयन में होने वाले संभावित गुच्छन के जोखिम को कम करता है। भौगोलिक सर्वेक्षणों में यह विधि अत्यंत लोकप्रिय है क्योंकि यह शोधकर्ता को कम समय और प्रयास में एक प्रतिनिधित्वपूर्ण डेटासेट प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

195. (A) मानचित्र पर मापी गई दूरियों को वास्तविक जमीनी दूरियों में बदलने की।
मानचित्र पर दी गई मापनी उपयोगकर्ता को यह अद्वितीय क्षमता प्रदान करती है कि वह मानचित्र पर मापी गई सूक्ष्म दूरियों को धरातल की वास्तविक और विशाल दूरियों में गणितीय रूप से परिवर्तित कर सके। मापनी के बिना मानचित्र से प्राप्त कोई भी जानकारी मापन की दृष्टि से अधूरी रहती है। यह भौगोलिक विश्लेषण, यात्रा योजना और संसाधन प्रबंधन के लिए एक अनिवार्य आधार प्रदान करती है। मापनी ही वह वैज्ञानिक सेतु है जो कागज के चित्रण को वास्तविक दुनिया के भौतिक आयामों से जोड़ता है।

196. (D) भारित स्कोर, मृदा रैंक को 2 से गुणा करके।
जब विश्लेषण में कई कारकों को शामिल किया जाता है और किसी एक कारक को दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, तो भारित स्कोर विधि का उपयोग किया जाना चाहिए। इस स्थिति में, मृदा की गुणवत्ता को दोगुना महत्व देने के लिए उसके रैंक को 2 के भार से गुणा किया जाएगा। यह तकनीक सुनिश्चित करती है कि अंतिम उपयुक्तता स्कोर में मृदा की गुणवत्ता का अधिक प्रभावी प्रभाव पड़े। यह जटिल निर्णय लेने की प्रक्रिया को वैज्ञानिक और यथार्थवादी आधार प्रदान करती है।

197. (A) किसी भी डेटासेट के लिए माध्य, माध्यिका और बहुलक हमेशा एक ही मान होते हैं।
यह कहना सांख्यिकीय रूप से गलत है कि किसी भी डेटासेट के लिए माध्य, माध्यिका और बहुलक हमेशा एक ही होते हैं। ये मान केवल पूर्णतः सममित या 'नॉर्मल' वितरण में ही समान होते हैं। अधिकांश वास्तविक डेटासेट में, जो अक्सर विषम होते हैं, ये तीनों माप अलग-अलग मान प्रदान करते हैं। माध्य औसत को, माध्यिका मध्य स्थिति को और बहुलक लोकप्रियता को दर्शाता है। अतः वितरण की प्रकृति के आधार पर इन मापों के बीच अंतर होना एक सामान्य और वैज्ञानिक वास्तविकता है।

198. (A) उन्नत स्थानिक विश्लेषण क्षमताएं।
जीआईएस का वह प्रमुख कार्य जो इसे साधारण डिजिटल मानचित्रण सॉफ्टवेयर से अलग और श्रेष्ठ बनाता है, वह इसकी उन्नत स्थानिक विश्लेषण क्षमताएं हैं। जीआईएस केवल चित्र बनाने के लिए नहीं, बल्कि विभिन्न डेटा परतों के बीच जटिल संबंधों की पहचान करने, ओवरले विश्लेषण करने और स्थानिक मॉडलिंग के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह शोधकर्ताओं को "क्या होगा यदि" जैसे प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम बनाता है। यह विश्लेषणात्मक गहराई ही जीआईएस को नियोजन और संसाधन प्रबंधन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बनाती है।

199. (A) एक मजबूत ऋणात्मक रेखीय संबंध।
सहसंबंध विश्लेषण में r = -0.85 का मान दो चरों के बीच एक अत्यंत मजबूत ऋणात्मक रेखीय संबंध को दर्शाता है। ऋणात्मक चिह्न यह स्पष्ट करता है कि जैसे-जैसे एक चर का मान बढ़ता है, दूसरे चर के मान में कमी आने की एक स्पष्ट प्रवृत्ति होती है। चूंकि मान -1 के बहुत निकट है, इसलिए यह संबंध सांख्यिकीय रूप से बहुत विश्वसनीय और महत्वपूर्ण माना जाता है। भूगोल में इसका उपयोग अक्सर विपरीत दिशा में व्यवहार करने वाले चरों के अंतर्संबंधों को वैज्ञानिक रूप से समझने हेतु किया जाता है।

200. (A) 2, 3, 4, 1
डेटा प्रकारों की गणितीय बहुमुखी प्रतिभा उनके मापन स्तर पर निर्भर करती है। नाममात्र डेटा सबसे कम बहुमुखी है क्योंकि

NODIA

इसमें केवल वर्गीकरण होता है। क्रमसूचक डेटा में क्रम जोड़ा जाता है, जिससे यह थोड़ा अधिक उपयोगी होता है। अंतराल डेटा मानों के बीच के सटीक अंतर को दर्शाता है। अनुपात डेटा सबसे अधिक बहुमुखी है क्योंकि इसमें एक वास्तविक शून्य बिंदु होता है, जो सभी प्रकार की सांख्यिकीय गणनाओं की अनुमति देता है। अतः सही बढ़ता हुआ क्रम 2, 3, 4, 1 है।

201. (A) वर्णमात्री मानचित्र
वर्णमात्री मानचित्र, जिसे कोरोप्लिथ मानचित्र भी कहा जाता है, पूर्व-निर्धारित प्रशासनिक इकाइयों जैसे राज्यों या जिलों के आधार पर सांख्यिकीय डेटा को प्रदर्शित करता है। इसमें प्रत्येक इकाई को उसके डेटा मान के अनुसार एक विशिष्ट रंग या छाया दी जाती है। यह क्षेत्रीय असमानताओं और प्रशासनिक स्तर पर वितरण प्रतिरूपों को समझने के लिए सबसे प्रभावी साधन है। साक्षरता दर या जनसंख्या घनत्व जैसे आंकड़ों को स्पष्ट दृश्य रूप देने के लिए भूगोलवेत्ता और नीति निर्माता इस मानचित्र का व्यापक रूप से उपयोग करते हैं।

202. (A) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या करता है।
सांख्यिकी में मानक विचलन कभी भी ऋणात्मक नहीं हो सकता क्योंकि इसकी गणना माध्य से प्रत्येक मान के विचलन के वर्गों का उपयोग करके की जाती है। वर्गित मान हमेशा धनात्मक या शून्य होते हैं, और उनका औसत (प्रसरण) भी गैर-ऋणात्मक होता है। अंत में, प्रसरण का धनात्मक वर्गमूल लेने पर हमें मानक विचलन प्राप्त होता है। यह विक्षेपण का एक शुद्ध परिमाण है जो केवल डेटा के फैलाव को दर्शाता है, न कि उसकी दिशा। अतः अभिकथन और कारण दोनों गणितीय रूप से सत्य हैं।

203. (A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
दुर्लभ पौधों की प्रजातियों के वितरण का अध्ययन करने के लिए सरल यादृच्छिक प्रतिचयन सबसे कम प्रभावी हो सकता है क्योंकि इसमें दुर्लभ प्रजातियों के पूरी तरह छूट जाने का उच्च जोखिम रहता है। चूंकि वे पौधे केवल विशिष्ट स्थानों पर ही मिल सकते हैं, इसलिए यादृच्छिक चयन से उनके पाए जाने की संभावना बहुत कम होती है। इस मामले में वनस्पति क्षेत्रों पर आधारित स्तरित प्रतिचयन या संपूर्ण गणना अधिक सटीक परिणाम प्रदान करेगी। शोधकर्ता को लक्षित प्रजाति की प्रकृति के आधार पर ही प्रतिचयन विधि चुननी चाहिए।

204. (A) सभी वृहत् वृत्तों को सीधी रेखाओं के रूप में दर्शाया जाता है।
नोमोनिक प्रक्षेप का सबसे अद्वितीय और प्राथमिक लाभ यह है कि इस पर पृथ्वी के सभी वृहत् वृत्तों को सीधी रेखाओं के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। यह गुण इसे विमानन और समुद्री नौसंचालन के लिए अत्यंत उपयोगी बनाता है क्योंकि किन्हीं दो बिंदुओं के बीच का सबसे छोटा मार्ग एक सीधी रेखा के रूप में खींचा जा सकता है। यद्यपि इसमें केंद्र से दूर जाने पर क्षेत्रफल और आकृति में अत्यधिक विरूपण होता है, लेकिन मार्ग नियोजन के लिए इसकी वैज्ञानिक उपयोगिता अतुलनीय और अनिवार्य है।

205. (A) यात्रियों की संख्या।
आवाजाही के प्रतिरूपों को दर्शाने वाले प्रवाह मानचित्र में रेखा की चौड़ाई या मोटाई आमतौर पर उस मार्ग पर यात्रियों की कुल संख्या या प्रवाह की मात्रा को प्रदर्शित करती है। मोटी रेखाएं उच्च यातायात सघनता को दर्शाती हैं, जबकि पतली रेखाएं कम आवाजाही को सूचित करती हैं। यह दृश्य प्रतिनिधित्व शहरी नियोजन और परिवहन प्रबंधन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तुरंत बता देता है कि कौन से मार्ग सबसे अधिक व्यस्त हैं। इसके माध्यम से बुनियादी ढांचे के विकास के लिए सही प्राथमिकताएं तय की जा सकती हैं।

206. (A) बिंदु प्रतिरूप में स्थानिक विक्षेपण की मात्रा मापने की तकनीक।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय तकनीक है जिसका उपयोग किसी क्षेत्र में बिंदु प्रतिरूपों के स्थानिक विक्षेपण या वितरण की प्रकृति को मापने के लिए किया जाता है। यह गणितीय रूप से यह निर्धारित करता है कि वितरण गुच्छित है, यादृच्छिक है या समान रूप से बिखरा हुआ है। भूगोलवेत्ता इस उपकरण का उपयोग बस्तियों, उद्योगों या सुविधाओं के फैलाव के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए करते हैं। यह स्थानिक व्यवस्था के पीछे कार्य करने वाली प्रक्रियाओं को समझने और बेहतर क्षेत्रीय योजना बनाने के लिए आधार प्रदान करता है।

207. (A) सुदूर संवेदन मुख्य रूप से डेटा अधिग्रहण से संबंधित है, जबकि जीआईएस विश्लेषण और प्रबंधन पर केंद्रित है।
सुदूर संवेदन और जीआईएस के बीच का मुख्य अंतर उनके कार्यात्मक उद्देश्यों में निहित है। सुदूर संवेदन उपग्रहों या विमानों के माध्यम से धरातल की जानकारी जुटाने या डेटा अधिग्रहण की एक उन्नत तकनीक है। इसके विपरीत, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) उस प्राप्त डेटा को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने, व्यवस्थित करने और उसका सूक्ष्म वैज्ञानिक विश्लेषण करने का एक शक्तिशाली सॉफ्टवेयर माध्यम है। ये दोनों तकनीकें एक-दूसरे की पूरक हैं और आधुनिक स्थानिक विज्ञान में एक साथ मिलकर जटिल भौगोलिक समस्याओं का समाधान करती हैं।

208. (A) दंड आरेख
पांच अलग-अलग फसलों के कुल उत्पादन की मात्रात्मक तुलना करने के लिए दंड आरेख सबसे प्रभावी सांख्यिकीय आरेख है। इसमें प्रत्येक फसल को एक अलग दंड के रूप में दिखाया जाता है, जिससे उनकी पैदावार के बीच का अंतर तुरंत और स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है। यह श्रेणियों के बीच तुलना करने का एक सरल और दृश्य रूप से शक्तिशाली माध्यम है। कृषि सांख्यिकी को प्रस्तुत करने और उत्पादन के रुझानों का विश्लेषण करने के लिए शोधकर्ता और अर्थशास्त्री इस आरेख का भूगोल में व्यापक उपयोग करते हैं।

209. (A) X में प्रत्येक 1-इकाई वृद्धि के लिए, Y में 2 इकाइयों की कमी होती है।
समाश्रयण समीकरण Y = 100 - 2X में, गुणांक -2 यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि स्वतंत्र चर X और आश्रित चर Y के बीच

Downloaded from www.pdf.tube

एक ऋणात्मक संबंध है। इसका अर्थ है कि यदि X के मान में एक इकाई की वृद्धि होती है, तो Y के मान में औसतन 2 इकाइयों की कमी होने की संभावना है। यहाँ 100 अंतःखंड है, जो तब Y का मान होता है जब X शून्य हो। यह सांख्यिकीय मॉडल चरों के बीच परिवर्तन की दर को सटीक रूप से व्यक्त करने में सहायक है।

210. (A) कंप्यूटर पर एक फ़ाइल के रूप में।
"डिजिटल मानचित्र" शब्द का सीधा तात्पर्य यह है कि मानचित्र भौगोलिक सूचनाओं के एक इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस या कंप्यूटर फ़ाइल के रूप में मौजूद है। इसे हाथ से कागज पर नहीं बनाया जाता, बल्कि डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर का उपयोग करके निर्मित और प्रबंधित किया जाता है। डिजिटल मानचित्रों को आसानी से संपादन योग्य बनाया जा सकता है, उन्हें विभिन्न पैमानों पर ज़ूम किया जा सकता है और डेटा के साथ गतिशील रूप से जोड़ा जा सकता है। यह आधुनिक तकनीक मानचित्रों की पहुँच, शुद्धता और उपयोगिता को कई गुना बढ़ा देती है।

211. (A) यह पृथ्वी के क्षेत्रों के सापेक्ष मानचित्र पर क्षेत्रों का सही अनुपात बनाए रखता है।
समकक्ष मानचित्र प्रक्षेप की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि यह धरातल के विभिन्न भू-भागों के वास्तविक क्षेत्रफल के अनुपात को मानचित्र पर पूरी तरह सुरक्षित रखता है। इसका उपयोग उन सांख्यिकीय मानचित्रों के लिए अनिवार्य है जहाँ क्षेत्रों के आकार की तुलना करना मुख्य उद्देश्य हो, जैसे कि जनसंख्या वितरण या वन क्षेत्र का प्रदर्शन। हालांकि इसमें आकृतियों में कुछ विरूपण हो सकता है, लेकिन क्षेत्रफल की शुद्धता इसे सांख्यिकीय डेटा के वैज्ञानिक और निष्पक्ष प्रतिनिधित्व के लिए भूगोल में एक अनिवार्य उपकरण बनाती है।

212. (A) 12
डेटासेट {10, 12, 12, 15, 25} में मान '12' की आवृत्ति सबसे अधिक है, क्योंकि यह दो बार आया है जबकि अन्य मान केवल एक बार आए हैं। सांख्यिकी में बहुलक वह मान होता है जो वितरण में सबसे अधिक बार घटित होता है, जो डेटा के सबसे लोकप्रिय या सामान्य रुझान को दर्शाता है। यह गणना में अत्यंत सरल है और डेटा के केंद्र को समझने में मदद करता है। तापमान के इस उदाहरण में, 12 डिग्री सबसे अधिक बार रिकॉर्ड किया गया मान है।

213. (A) एक छोटे, प्रतिनिधि उपसमूह के आधार पर जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालना।
भौगोलिक अनुसंधान में प्रतिचयन तकनीक का मुख्य उद्देश्य पूरी जनसंख्या का अध्ययन किए बिना, एक छोटे लेकिन प्रतिनिधित्वपूर्ण उपसमूह के विश्लेषण के माध्यम से पूरी आबादी के बारे में सटीक निष्कर्ष निकालना है। यह पद्धति शोधकर्ता के समय, धन और श्रम की भारी बचत करती है। वैज्ञानिक प्रतिचयन यह सुनिश्चित करता है कि चुना गया नमूना जनसंख्या की विविधता को प्रतिबिंबित करे, जिससे प्राप्त परिणाम विश्वसनीय और मान्य होते हैं। यह बड़े पैमाने पर भौगोलिक सर्वेक्षण करने के लिए एक अनिवार्य और तार्किक सांख्यिकीय उपकरण है।

214. (B) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
मर्केटर प्रक्षेप एक बेलनाकार और यथाकृतिक प्रक्षेप है जो कोणीय शुद्धता और आकृतियों को स्थानीय स्तर पर सुरक्षित रखता है। हालांकि, यह कहना गलत है कि यह ध्रुवीय क्षेत्रों में भू-भागों के आकार का सटीक प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि यह ध्रुवों की ओर जाने पर क्षेत्रफल को अत्यधिक बढ़ा देता है। ग्रीनलैंड जैसे क्षेत्र इसमें अपने वास्तविक आकार से कई गुना बड़े दिखाई देते हैं। अतः केवल प्रथम कथन सत्य है। यह प्रक्षेप नौसंचालन के लिए तो श्रेष्ठ है, लेकिन क्षेत्रफल की तुलना के लिए अनुपयुक्त है।

215. (A) बहु-मानदंड मूल्यांकन
'भारित स्कोर' तकनीक बहु-मानदंड मूल्यांकन का एक प्रमुख रूप है, जिसका उपयोग जटिल निर्णय लेने की प्रक्रिया में किया जाता है। इसमें विभिन्न कारकों या मानदंडों को उनकी सापेक्षिक प्राथमिकता और महत्व के आधार पर अलग-अलग भार आवंटित किए जाते हैं। यह शोधकर्ताओं को एक ऐसा एकीकृत परिणाम प्राप्त करने में सक्षम बनाता है जो सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को संतुलित रूप से शामिल करता है। भूगोल में इसका उपयोग अक्सर साइट चयन, उपयुक्तता विश्लेषण और पर्यावरणीय जोखिम मूल्यांकन जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक और तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने हेतु किया जाता है।

216. (A) रैंक स्कोर
जब कोई शोधकर्ता इकाइयों को उनके मानों के आधार पर एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित करता है, जैसे शहरों को उनकी जनसंख्या के अनुसार बड़े से छोटे क्रम में रखना, तो वह रैंक स्कोर तकनीक का उपयोग कर रहा होता है। इसमें प्रत्येक इकाई को उसकी स्थिति के अनुसार 1, 2, 3 जैसी श्रेणी दी जाती है। यह विधि तुलनात्मक विश्लेषण को सरल बनाती है और क्षेत्रों के सापेक्ष विकास या महत्व को स्पष्ट करने में सहायक होती है। यद्यपि यह मानों के सूक्ष्म अंतर को नहीं दर्शाती, लेकिन प्राथमिक वर्गीकरण हेतु अत्यंत प्रभावी है।

217. (A) वर्षा
समवर्षा रेखा वह काल्पनिक रेखा है जो मानचित्र पर उन स्थानों को आपस में जोड़ती है जहाँ वर्षा की मात्रा समान होती है। यह मानचित्रण तकनीक, जिसे आइसोप्लेथ पद्धति कहा जाता है, वर्षा के क्षेत्रीय और वैश्विक वितरण प्रतिरूपों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से जलवायु क्षेत्रों की पहचान और कृषि संबंधी योजनाएँ बनाना आसान हो जाता है। यह डेटा की निरंतरता को एक स्पष्ट दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे वर्षा की सघनता और विस्तार को एक नज़र में समझा जा सकता है।

218. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
जीआईएस में सड़कों या भवनों जैसी स्पष्ट और अलग-अलग सीमाओं वाली विशेषताओं के लिए वेक्टर डेटा मॉडल को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि यह उनकी ज्यामिति को सटीक

NODIA

272. (A) दो मात्रात्मक चरों के बीच संबंध प्रदर्शित करने के लिए।
प्रकीर्णन आरेख एक अत्यंत उपयोगी सांख्यिकीय आरेख है जिसका उपयोग दो मात्रात्मक चरों के बीच के संभावित संबंध को दृष्टिगत रूप से प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। इसमें प्रत्येक डेटा बिंदु को उसके X और Y मानों के आधार पर ग्राफ पर प्लॉट किया जाता है। यह शोधकर्ताओं को यह तुरंत पहचानने में मदद करता है कि चरों के बीच कोई धनात्मक, ऋणात्मक या शून्य सहसंबंध है। यह समाश्रयण विश्लेषण शुरू करने से पहले चरों के बीच के व्यवहार और रुझान को समझने के लिए भूगोल में एक प्राथमिक वैज्ञानिक चरण माना जाता है।

273. (A) दो चरों के बीच रेखीय संबंध की मजबूती और दिशा।
सहसंबंध गुणांक की गणना का मुख्य उद्देश्य दो चरों के बीच के सांख्यिकीय रेखीय संबंध की मजबूती और उसकी दिशा को वैज्ञानिक रूप से निर्धारित करना है। यह बताता है कि क्या दो चर एक साथ बदलते हैं और उनका आपसी जुड़ाव कितना गहरा है। +1 पूर्ण धनात्मक और -1 पूर्ण ऋणात्मक संबंध को दर्शाता है, जबकि 0 का अर्थ है कि कोई रेखीय संबंध नहीं है। यह माप भूगोलवेत्ताओं को जटिल अंतर्संबंधों को समझने और भविष्य के लिए वैज्ञानिक परिकल्पनाएँ बनाने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

274. (B) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
प्रवाह मानचित्रों का उपयोग स्थिर घटनाओं के बजाय गतिशील घटनाओं, जैसे प्रवासन या यातायात, को दर्शाने के लिए किया जाता है, इसलिए प्रथम कथन गलत है। प्रवाह मानचित्र के मुख्य और अनिवार्य घटकों में अलग-अलग मोटाई की रेखाएं (जो मात्रा दर्शाती हैं) और दिशा दिखाने वाले तीर शामिल होते हैं। ये दृश्य तत्व ही इस मानचित्र को आवाजाही के प्रतिरूपों को समझने के लिए एक प्रभावी विश्लेषणात्मक उपकरण बनाते हैं। अतः केवल द्वितीय कथन तकनीकी और कार्टोग्राफिक रूप से सत्य है। ये मानचित्र स्थानिक गतिशीलता के चित्रण हेतु अपरिहार्य हैं।

275. (A) महत्वपूर्ण रूप से गुच्छित
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में 0.2 का Rn मान यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि बिंदुओं का स्थानिक वितरण महत्वपूर्ण रूप से गुच्छित है। चूंकि यह मान 0 के बहुत निकट है, इसलिए यह दर्शाता है कि भौगोलिक विशेषताएं एक-दूसरे के अत्यंत समीप केंद्रित हैं और यादृच्छिक रूप से नहीं फैली हैं। यह विश्लेषण शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि बस्तियां या उद्योग किसी विशिष्ट संसाधन या लाभ के कारण एक ही स्थान पर संकेंद्रित हो रहे हैं। यह स्थानिक सांख्यिकी का एक अत्यंत संवेदनशील और सटीक वैज्ञानिक माप है।

276. (A) खमध्य
खमध्य प्रक्षेप एक ऐसा मानचित्र प्रक्षेप है जो वैचारिक रूप से ग्लोब के किसी एक बिंदु पर एक समतल कागज रखकर बनाया जाता है। इस स्पर्श बिंदु पर विरूपण शून्य होता है और केंद्र से अन्य सभी बिंदुओं तक की दिशाएं बिल्कुल सटीक होती हैं। अपनी विशिष्ट ज्यामितीय प्रकृति के कारण, इसका उपयोग मुख्य रूप से ध्रुवीय क्षेत्रों के मानचित्रण और विमानन मानचित्रों के लिए किया जाता है। यह प्रक्षेप केंद्र से कोणीय शुद्धता बनाए रखने के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जो इसे विशिष्ट वैज्ञानिक और नौसंचालन कार्यों हेतु अनिवार्य बनाता है।

277. (A) सभी मानों को जोड़कर और मानों की कुल संख्या से विभाजित करके।
'माध्य' या अंकगणितीय औसत की गणना करने के लिए डेटासेट के सभी व्यक्तिगत मानों का योग निकाला जाता है और फिर उसे मानों की कुल संख्या से विभाजित किया जाता है। यह केंद्रीय प्रवृत्ति का सबसे सामान्य और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला माप है। यह डेटा के प्रतिनिधि मान को खोजने में मदद करता है, हालांकि यह चरम मानों के प्रति संवेदनशील होता है। भूगोल में इसका उपयोग औसत वर्षा, औसत आय या औसत तापमान जैसे महत्वपूर्ण सांख्यिकीय निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए एक आधारभूत उपकरण के रूप में किया जाता है।

278. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) स्थानिक निर्णय लेने के लिए एक असाधारण शक्तिशाली उपकरण है क्योंकि यह विभिन्न स्रोतों से प्राप्त स्थानिक सूचनाओं की कई परतों को एकीकृत कर सकती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता जटिल ओवरले विश्लेषण करने की क्षमता है, जो उन क्षेत्रों की पहचान करती है जो एक साथ कई मानदंडों को पूरा करते हैं। यह वैज्ञानिक क्षमता नियोजन और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सटीक निर्णय लेने के लिए अनिवार्य है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि डेटा एकीकरण ही जीआईएस की विश्लेषणात्मक शक्ति का मूल आधार है।

279. (A) यह रैंक की गई मदों के बीच के अंतर के परिमाण को नहीं दर्शाता है।
सरल रैंक स्कोर की एक प्रमुख सांख्यिकीय सीमा यह है कि यह रैंक की गई वस्तुओं के बीच के वास्तविक गणितीय अंतर के परिमाण को प्रदर्शित नहीं करता है। यह केवल एक सापेक्ष क्रम बताता है, जैसे कौन प्रथम है और कौन द्वितीय, लेकिन यह नहीं स्पष्ट करता कि उनके बीच की दूरी कितनी है। यह डेटा को सरल तो बनाता है, लेकिन सूक्ष्म मात्रात्मक विश्लेषण के लिए अधूरा रह जाता है। अतः शोधकर्ता अक्सर अधिक गहराई के लिए रैंक के साथ अन्य मापों का उपयोग करते हैं ताकि वितरण की वास्तविकता को पूर्णतः समझा जा सके।

280. (A) बड़े भवन अधिक महंगे होते हैं।
यदि किसी भवन के आकार और उसकी कीमत के बीच के सरल समाश्रयण मॉडल की ढाल धनात्मक है, तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि इन दोनों चरों के बीच एक सीधा और धनात्मक संबंध है। सांख्यिकीय रूप से, जैसे-जैसे भवन का आकार (स्वतंत्र चर) बढ़ता है, उसकी अनुमानित कीमत (आश्रित चर) में भी वृद्धि होने की प्रबल प्रवृत्ति होती है। यह मॉडल चरों के व्यवहार के रुझान को स्पष्ट करता है, जो अचल संपत्ति के बाजार विश्लेषण और आर्थिक भविष्यवाणियों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

फोटोकॉपी या डिजिटल ज़ूम) के साथ आनुपातिक रूप से बदलती है। इसके विपरीत, शाब्दिक या संख्यात्मक मापनी मानचित्र को बड़ा या छोटा करने पर गलत हो जाती है क्योंकि लिखे हुए अंक स्वयं नहीं बदलते। आलेखीय मापनी एक रेखा के रूप में होती है जो मानचित्र के साथ ही विस्तृत या संकुचित होती है, जिससे दूरियों का मापन हमेशा सटीक और विश्वसनीय बना रहता है। यह इसकी सबसे बड़ी तकनीकी विशेषता है।

228. (A) Y-अंतःखंड, या जब X, 0 हो तो Y का मान।
समाश्रयण समीकरण Y = a + bX में 'a' सांख्यिकीय रूप से Y-अंतःखंड को दर्शाता है। यह वह मान है जो आश्रित चर Y तब प्राप्त करता है जब स्वतंत्र चर X का मान शून्य होता है। यह समीकरण का आधार बिंदु है जहाँ से समाश्रयण रेखा शुरू होती है। यह चरों के बीच के संबंध का प्रारंभिक स्तर स्पष्ट करता है। भूगोल और सांख्यिकी में इसके माध्यम से मॉडल की आधारभूत स्थिति को समझा जाता है, जिससे आगे की भविष्यवाणियां और चरों के प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण संभव हो पाता है।

229. (A) उत्तर दिशा मानचित्र के शीर्ष पर है
"उत्तर दिशा मानचित्र के शीर्ष पर है" मानचित्र के अभिविन्यास का एक सामान्य संकेत है, लेकिन यह मानचित्र की 'मापनी' का प्रकार नहीं है। मापनी सदैव मानचित्र की दूरी और वास्तविक धरातल की दूरी के बीच के गणितीय अनुपात को व्यक्त करती है। निरूपक भिन्न, शाब्दिक कथन और आलेखीय दंड मापनी के तीन वैज्ञानिक और तकनीकी रूप हैं। उत्तर दिशा सूचक केवल मानचित्र को पढ़ने की दिशा निर्धारित करता है, जबकि मापनी मानचित्र से सटीक मापन और स्थानिक विश्लेषण करने के लिए आधारभूत ढांचा प्रदान करती है।

230. (A) संख्यात्मक डेटा का वितरण।
आयतचित्र संख्यात्मक डेटा के आवृत्ति वितरण का एक शक्तिशाली आलेखीय प्रतिनिधित्व है। इसमें निरंतर डेटा को विभिन्न वर्ग अंतरालों में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक अंतराल की आवृत्ति को जुड़े हुए दंडों के माध्यम से दर्शाया जाता है। यह डेटा की सघनता, फैलाव और उसके समग्र स्वरूप को एक नज़र में स्पष्ट करता है। सांख्यिकी में इसका उपयोग यह समझने के लिए किया जाता है कि डेटा किस मान के चारों ओर संकेंद्रित है और उसमें कितनी विविधता है। यह निरंतर चरों के विश्लेषण के लिए अनिवार्य उपकरण है।

231. (A) प्रदीप्ति का अपना स्रोत प्रदान करता है।
सक्रिय और निष्क्रिय सुदूर सेंसरों के बीच का मूलभूत तकनीकी अंतर ऊर्जा के स्रोत में निहित है। सक्रिय सेंसर, जैसे राडार, स्वयं ऊर्जा (विद्युत चुंबकीय तरंगें) उत्सर्जित करते हैं और लक्ष्य से टकराकर वापस आने वाले परावर्तन को रिकॉर्ड करते हैं। उन्हें सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती, जिससे वे रात में भी कार्य कर सकते हैं। इसके विपरीत, निष्क्रिय सेंसर केवल प्राकृतिक ऊर्जा पर निर्भर होते हैं। सक्रिय प्रणालियों की यह स्व-प्रदीप्ति क्षमता उन्हें विभिन्न वायुमंडलीय और प्रकाश स्थितियों में अधिक विश्वसनीय और निरंतर बनाती है।

232. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
समाश्रयण विश्लेषण के बारे में दोनों कथन सांख्यिकीय रूप से पूर्णतः सत्य हैं। सरल समाश्रयण एक एकल स्वतंत्र चर के आधार पर आश्रित चर का अनुमान लगाता है, जो दो चरों के बीच के सीधे संबंध को स्पष्ट करता है। बहु-समाश्रयण अधिक व्यापक है क्योंकि यह एक से अधिक स्वतंत्र चरों का उपयोग करता है, जो वास्तविक दुनिया की जटिल भौगोलिक घटनाओं को मॉडल करने के लिए आवश्यक है। ये दोनों तकनीकें चरों के बीच के कार्यात्मक संबंधों को समझने और सटीक भविष्यवाणियां करने के लिए अपरिहार्य वैज्ञानिक साधन हैं।

233. (0) 0 से 2.15 तक।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में Rn सांख्यिकी के मानों की सीमा आमतौर पर 0 से 2.15 के बीच होती. है। 0 का मान पूर्णतः गुच्छित प्रतिरूप को दर्शाता है जहाँ सभी बिंदु एक ही स्थान पर होते हैं। 1 का मान एक यादृच्छिक या स्वतंत्र वितरण को इंगित करता है। 2.15 का मान अधिकतम विक्षेपण या पूर्णतः नियमित षटकोणीय वितरण की स्थिति को सूचित करता है। यह पैमाना शोधकर्ताओं को किसी क्षेत्र में भौगोलिक विशेषताओं की स्थानिक व्यवस्था और उसके पीछे की प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक रूप से मापने में सक्षम बनाता है।

234. (A) अस्पताल के 5 किमी के भीतर के सभी क्षेत्रों की पहचान करना।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का एक प्रमुख और व्यावहारिक अनुप्रयोग 'बफर विश्लेषण' है, जिसके माध्यम से किसी विशिष्ट स्थान, जैसे अस्पताल, के चारों ओर एक निश्चित दूरी के भीतर के क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है। यह स्थानिक विश्लेषण नागरिक सुविधाओं की पहुँच और क्षेत्रीय योजना बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जीआईएस अपनी विश्लेषणात्मक शक्ति के माध्यम से विभिन्न भौगोलिक मानदंडों को एकीकृत करता है और प्रभावी निर्णय लेने में सहायता करता है। यह केवल मानचित्र बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि जटिल स्थानिक समस्याओं का समाधान प्रदान करता है।

235. (A) गतिशील और इंटरैक्टिव मानचित्र बनाने की क्षमता।
मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों द्वारा लाई गई सबसे बड़ी क्रांति गतिशील और इंटरैक्टिव मानचित्र बनाने की क्षमता है। पारंपरिक कागजी मानचित्र स्थिर होते थे, लेकिन डिजिटल मानचित्रों को उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार ज़ूम कर सकता है, डेटा परतों को बदल सकता है और रीयल-टाइम जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह तकनीक स्थानिक डेटा के साथ सीधे जुड़ाव की अनुमति देती है, जिससे विश्लेषण अधिक सूक्ष्म और प्रभावी हो जाता है। इसने भौगोलिक सूचनाओं के प्रसार और उपयोग के तरीके को पूरी तरह से बदलकर रख दिया है।

NODIA

236. (A) यथाकृतिकता
मानचित्र प्रक्षेप का वह गुण जो किसी भी बिंदु के चारों ओर सही कोणीय संबंधों और सूक्ष्म आकृतियों को सुरक्षित रखता है, यथाकृतिकता या 'कॉन्फॉर्मेलिटी' कहलाता है। इसमें देशांतर और अक्षांश रेखाएं एक-दूसरे को समकोण पर काटती

रूप से दर्शाता है। हालांकि, ऊंचाई या तापमान जैसी निरंतर भौगोलिक घटनाओं के लिए रास्टर डेटा मॉडल अधिक कुशल और उपयुक्त होता है, न कि वेक्टर मॉडल। रास्टर मॉडल ग्रिड कोशिकाओं का उपयोग करता है जो निरंतर डेटा के उतार-चढ़ाव को बेहतर ढंग से कैप्चर करते हैं। अतः अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण सांख्यिकीय और तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण है।

219. (A) माध्य के चारों ओर डेटा का प्रसार या परिवर्तनशीलता।
मानक विचलन का मान यह मापता है कि डेटा के बिंदु अपने माध्य या औसत मान से औसतन कितनी दूर फैले हुए हैं। यह विक्षेपण का सबसे विश्वसनीय सांख्यिकीय माप है क्योंकि यह डेटासेट के प्रत्येक मान को गणना में शामिल करता है। उच्च मानक विचलन डेटा में अधिक बिखराव और परिवर्तनशीलता को दर्शाता है, जबकि कम मान यह इंगित करता है कि डेटा माध्य के निकट संकेंद्रित है। यह शोधकर्ताओं को डेटा की स्थिरता और वितरण की प्रकृति के बारे में सूक्ष्म जानकारी प्रदान करता है।

220. (A) दो चरों के बीच कोई रेखीय संबंध नहीं है।
शून्य सहसंबंध गुणांक का स्पष्ट तात्पर्य यह है कि दो चरों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रेखीय संबंध मौजूद नहीं है। इसका अर्थ है कि एक चर के मान में होने वाला परिवर्तन दूसरे चर के मान में किसी निश्चित दिशा में परिवर्तन का संकेत नहीं देता है। यद्यपि उनके बीच कोई जटिल गैर-रेखीय संबंध हो सकता है, लेकिन शून्य मान रेखीय निर्भरता की पूर्ण अनुपस्थिति को प्रमाणित करता है। यह निष्कर्ष शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि वे दो चर स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं।

221. (A) साइट उपयुक्तता विश्लेषण करने के लिए जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करना।
मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोग का सबसे सटीक उदाहरण जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके साइट उपयुक्तता विश्लेषण करना है। यह प्रक्रिया कंप्यूटर की शक्ति का उपयोग करके विभिन्न स्थानिक डेटा परतों को एकीकृत और विश्लेषित करती है, जो मैन्युअल रूप से करना अत्यंत कठिन होता है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से डेटा का प्रसंस्करण, प्रबंधन और जटिल मॉडलिंग संभव हो गया है। यह आधुनिक पद्धति पारंपरिक विधियों की तुलना में कहीं अधिक तीव्र, सटीक और वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रदान करती है, जो नियोजन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

222. (C) P-4, Q-3, R-1, S-2
प्रवाह मानचित्र आवाजाही और उसकी मात्रा को प्रदर्शित करते हैं, जबकि निकटतम पड़ोसी विश्लेषण स्थानिक बिंदु प्रतिरूपों को मापने का कार्य करता है। रैंक स्कोर विधि वस्तुओं को क्रमित करके अनुक्रमिक संख्याएँ प्रदान करती है। भारित स्कोर तकनीक विभिन्न मानदंडों को उनके सापेक्ष महत्व के साथ संयोजित करके एक एकीकृत निर्णय लेने में सहायता करती है। भूगोल में इन विभिन्न कार्टोग्राफिक और सांख्यिकीय तकनीकों का सही अनुप्रयोग डेटा के सूक्ष्म विश्लेषण और वैज्ञानिक निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए आधारभूत और अनिवार्य आवश्यकता है। प्रत्येक तकनीक अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है।

223. (A) बहुलक
नाममात्र डेटा के लिए, जैसे शहर में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं की सूची, बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति का सबसे उपयुक्त माप है। चूंकि भाषाओं का कोई गणितीय मान नहीं होता, इसलिए उनका माध्य या माध्यिका नहीं निकाली जा सकती। बहुलक शोधकर्ता को यह बताता है कि कौन सी भाषा सबसे अधिक प्रचलित है या किस श्रेणी की आवृत्ति सबसे अधिक है। यह विश्लेषण सामाजिक और सांस्कृतिक वितरण को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है, जहाँ सबसे प्रमुख श्रेणी की पहचान करना ही मुख्य उद्देश्य होता है।

224. (A) शंकु
शंकु प्रक्षेप एक ऐसा मानचित्र प्रक्षेप है जो ग्लोब की विशेषताओं को एक काल्पनिक शंकु पर प्रक्षेपित करके बनाया जाता है। यह शंकु ग्लोब को एक या दो मानक अक्षांशों पर स्पर्श करता है, जहाँ विरूपण न्यूनतम होता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से मध्यम अक्षांशों वाले क्षेत्रों, जैसे यूरोप या उत्तरी अमेरिका, के सटीक मानचित्रण के लिए किया जाता है। यह प्रक्षेप मानक अक्षांशों के पास आकृति और मापनी की शुद्धता बनाए रखने में बहुत प्रभावी है, जो इसे क्षेत्रीय भूगोल के लिए एक वैज्ञानिक विकल्प बनाता है।

225. (A) "वहाँ क्या है?" (स्थान) और "...का प्रतिरूप क्या है?" (वितरण)।
एक उपकरण के रूप में मानचित्र की प्राथमिक भूमिका स्थानिक प्रश्नों का उत्तर देना है, जैसे कि कोई वस्तु कहाँ स्थित है और उसका वितरण प्रतिरूप कैसा है। मानचित्र भूगोलवेत्ताओं को धरातल पर विभिन्न घटनाओं के स्थान और उनके फैलाव को देखने और विश्लेषित करने में सक्षम बनाते हैं। यह स्थानिक संबंधों की पहचान करने और भौगोलिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए आधार प्रदान करता है। भूगोल का मूल आधार ही 'स्थान' और 'वितरण' है, और मानचित्र इन दोनों पहलुओं को वैज्ञानिक रूप से संप्रेषित करने का श्रेष्ठ साधन है।

226. (D) 1, 2 और 3
प्रतिचयन के संदर्भ में सभी तीनों कथन वैज्ञानिक रूप से सत्य हैं। स्तरित प्रतिचयन में जनसंख्या को सजातीय समूहों में बांटकर विविधता सुनिश्चित की जाती है। व्यवस्थित प्रतिचयन में एक निश्चित अंतराल पर नमूनों का चयन किया जाता है, जो लागू करने में सरल है। गुच्छ प्रतिचयन में समूहों का यादृच्छिक चयन करके उन समूहों के सभी सदस्यों का अध्ययन किया जाता है, जो बड़े क्षेत्रों के लिए व्यावहारिक है। इन तकनीकों का सही चुनाव शोध की सटीकता और संसाधनों की कुशलता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

227. (A) यह मानचित्र को बड़ा या छोटा करने पर भी सही रहती है।
मानचित्रों पर आलेखीय मापनी को अक्सर इसलिए प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि यह मानचित्र के आकार परिवर्तन (जैसे

Downloaded from www.pdf.tube

निर्णय लेने के लिए एक शक्तिशाली विश्लेषणात्मक शक्ति प्रदान करता है।

246. (A) माध्य के समान इकाइयों में।
मानक विचलन की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसे मूल डेटा और माध्य के समान इकाइयों में ही व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि डेटा किलोग्राम में है, तो मानक विचलन भी किलोग्राम में ही होगा। यह प्रसरण से भिन्न है, जो वर्ग इकाइयों में होता है। समान इकाई होने के कारण मानक विचलन को समझना और डेटा के वास्तविक फैलाव के साथ उसकी तुलना करना बहुत सरल और व्यावहारिक हो जाता है। यह विक्षेपण का एक अत्यंत सुलभ और वैज्ञानिक सांख्यिकीय माप है।

247. (A) दृष्टि से खंडों के सापेक्ष आकार की सटीक तुलना करना कठिन है।
पाई चार्ट की सबसे महत्वपूर्ण सीमा यह है कि मानव आँख के लिए वृत्त के विभिन्न खंडों के सापेक्ष कोणों और क्षेत्रफल की सटीक तुलना करना काफी कठिन होता है, विशेषकर जब खंडों का आकार लगभग समान हो। यह दंड आरेख की तुलना में कम सटीक सूचना संप्रेषण कर सकता है जहाँ ऊंचाई को मापना आसान होता है। हालांकि यह किसी संपूर्ण के आनुपातिक वितरण को दिखाने के लिए लोकप्रिय है, लेकिन सूक्ष्म मात्रात्मक अंतरों को समझने के लिए यह सबसे विश्वसनीय सांख्यिकीय आरेख नहीं माना जाता है।

248. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
मानचित्र प्रक्षेप का चयन मानचित्र निर्माण की प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील चरण है। प्रत्येक प्रक्षेप के अपने विशिष्ट गणितीय गुण और अनिवार्य विरूपण होते हैं, जो आकृति, क्षेत्रफल या दिशा को प्रभावित करते हैं। प्रक्षेप का सही चुनाव पूरी तरह से मानचित्र के विशिष्ट उद्देश्य पर निर्भर करता है; जैसे नौसंचालन के लिए यथाकृतिक और सांख्यिकीय तुलना के लिए समकक्ष प्रक्षेप श्रेष्ठ है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि वैज्ञानिक सटीकता ही उद्देश्य के अनुरुप प्रक्षेप चुनने का मुख्य आधार है।

249. (A) आइसोपलिथ मानचित्र
वायु दाब, तापमान या वर्षा जैसी सतह पर निरंतर बदलने वाली भौगोलिक घटनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए आइसोपलिथ मानचित्र सबसे उपयुक्त होता है। यह मानचित्र उन काल्पनिक रेखाओं का उपयोग करता है जो समान मान वाले स्थानों को आपस में जोड़ती हैं, जिससे डेटा की निरंतरता और वितरण प्रतिरूप स्पष्ट हो जाते हैं। यह विधि सांख्यिकीय डेटा को एक चिकने और निरंतर दृश्य रूप में प्रस्तुत करती है, जो प्रशासनिक सीमाओं से मुक्त होता है। भूगोल में वायुमंडलीय और जलवायु संबंधी विश्लेषण के लिए यह एक अनिवार्य उपकरण है।

250. (A) पृथ्वी की सतह के भौतिक संपर्क में आए बिना उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने का विज्ञान।
"सुदूर संवेदन" वह आधुनिक विज्ञान और तकनीक है जो पृथ्वी की सतह या किसी वस्तु के प्रत्यक्ष भौतिक संपर्क में आए बिना, दूर से ही उसके बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से उपग्रहों या विमानों पर लगे सेंसरों के माध्यम से विद्युत चुंबकीय विकिरण को रिकॉर्ड करके की जाती है। यह तकनीक दुर्गम क्षेत्रों की निगरानी, प्राकृतिक आपदा प्रबंधन और संसाधन सर्वेक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भूगोलवेत्ताओं को धरातल का एक व्यापक और सूक्ष्म वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

NODIA

251. (A) एक पूर्ण धनात्मक रेखीय संबंध।
+1 का सहसंबंध गुणांक दो चरों के बीच एक आदर्श और पूर्ण धनात्मक रेखीय संबंध को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि दोनों चर हमेशा एक ही दिशा में और एक निश्चित अनुपात में बदलते हैं; यदि एक चर बढ़ता है, तो दूसरा भी आनुपातिक रूप से निश्चित ही बढ़ेगा। प्रकीर्णन आरेख पर ऐसे मान एक सीधी ऊपर की ओर जाती रेखा के रूप में दिखाई देते हैं। यद्यपि वास्तविक भौगोलिक डेटा में ऐसा पूर्ण संबंध विरल है, लेकिन यह सांख्यिकी में अधिकतम साहचर्य की एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक सीमा के रूप में कार्य करता है।

252. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
मर्केटर एक बेलनाकार प्रक्षेप है, जबकि लैम्बर्ट यथाकृतिक प्रक्षेप शंकु श्रेणी में आता है। नोमोनिक प्रक्षेप स्वमध्य प्रक्षेप का एक प्रकार है, और साइनुसोइडल को छद्म-बेलनाकार प्रक्षेप के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इन प्रक्षेपों का सही वर्गीकरण उनकी विकसित सतह और ज्यामितीय गुणों पर आधारित है। मानचित्रण में प्रत्येक वर्ग की अपनी विशिष्ट उपयोगिता और सीमाएं होती हैं। प्रक्षेपों के इन समूहों को समझना शोधकर्ताओं को अध्ययन के क्षेत्र और उद्देश्य के अनुसार सबसे उपयुक्त मानचित्र आधार चुनने में सहायता प्रदान करता है।

253. (A) भौगोलिक जानकारी को अद्यतनीकरण और प्रसारित करने में सुगमता।
डिजिटल मानचित्रण का सबसे बड़ा और निर्णायक लाभ भौगोलिक सूचनाओं को अत्यंत सुगमता और गति के साथ अद्यतनीकरण तथा प्रसारित करने की क्षमता है। पारंपरिक कागजी मानचित्रों के विपरीत, डिजिटल डेटा को तुरंत संशोधित किया जा सकता है और इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक स्तर पर साझा किया जा सकता है। यह तकनीक गतिशील सूचनाओं, जैसे आपदा प्रबंधन या यातायात नियंत्रण, के लिए अपरिहार्य है। डिजिटल प्रारूप मानचित्रों को अधिक लचीला और संवादात्मक बनाता है, जिससे वे आधुनिक समय की तीव्र निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं के लिए उपयुक्त बन जाते हैं।

254. (A) 1
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण में यदि बिंदुओं के बीच की प्रेक्षित माध्य दूरी ठीक उसी क्षेत्र में एक पूर्णतः यादृच्छिक वितरण के लिए अपेक्षित माध्य दूरी के बराबर होती है, तो Rn मान 1 प्राप्त होता है। यह सांख्यिकीय परिणाम यह सिद्ध करता है कि

बिंदुओं का स्थानिक वितरण किसी विशिष्ट प्रक्रिया या गुच्छन के बजाय पूरी तरह स्वतंत्र और यादृच्छिक है। भूगोलवेत्ता इस मान को एक मानक संदर्भ बिंदु के रूप में उपयोग करते हैं ताकि यह समझा जा सके कि वितरण यादृच्छिकता से कितना विचलित या उसके निकट है।

255. (A) एक प्रवाह मानचित्र।
विभिन्न देशों से भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या और उनके प्रस्थान बिंदुओं को दिखाने के लिए प्रवाह मानचित्र सबसे प्रभावी और वैज्ञानिक साधन है। इसमें रेखाओं की मोटाई पर्यटकों की संख्या (मात्रा) को प्रदर्शित करती है और तीरों की दिशा उनके मार्ग को स्पष्ट करती है। यह मानचित्र जटिल वैश्विक गतिशीलता को एक सरल दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है जिसे समझना आसान होता है। पर्यटन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में यह मानचित्र स्थानिक संपर्कों और आकर्षण के केंद्रों को उजागर करने के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

256. (D) 1, 2 और 3
भौगोलिक अध्ययन में मानचित्र की भूमिका बहुआयामी और अनिवार्य है। यह स्थानिक सूचनाओं के भंडारण का एक सुरक्षित माध्यम है, जहाँ डेटा को भौगोलिक संदर्भ में संरक्षित किया जाता है। साथ ही, यह स्थानिक वितरण और प्रतिरूपों के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है। अंततः, यह जटिल स्थानिक अंतर्दृष्टि को सरल और प्रभावी तरीके से संप्रेषित करने का एक श्रेष्ठ माध्यम भी है। अतः ये सभी भूमिकाएं मानचित्र को भूगोल का एक अपरिहार्य और सर्वव्यापी वैज्ञानिक आधार स्तंभ बनाती हैं।

257. (A) माध्यिका
किसी देश में वार्षिक आय जैसे अत्यधिक विषम आंकड़ों के विश्लेषण में, 'विशिष्ट' या प्रतिनिधि आय को दर्शाने के लिए माध्यिका को ही प्राथमिकता दी जाती है। आय वितरण में अक्सर कुछ बहुत अमीर व्यक्तियों के मान माध्य को ऊपर की ओर खींच लेते हैं, जिससे वह आम नागरिक की आय का गलत चित्रण कर सकता है। माध्यिका केवल मध्य मान को दर्शाती है, जो चरम मानों से प्रभावित नहीं होती। अतः यह जनसंख्या के वास्तविक आर्थिक स्तर और जीवन स्तर को समझने के लिए अधिक सटीक और विश्वसनीय सांख्यिकीय माप है।

258. (A) जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य को चुने जाने का समान अवसर प्राप्त होता है।
एक सरल यादृच्छिक नमूना वह होता है जिसमें सांख्यिकीय निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को नमूने में शामिल होने का पूरी तरह समान और स्वतंत्र अवसर प्रदान किया जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का मानवीय पक्षपात या पूर्व-नियोजित चयन नहीं होता है। यह पद्धति शोधकर्ताओं को ऐसे निष्कर्ष निकालने की अनुमति देती है जिन्हें पूरी आबादी पर विश्वास के साथ लागू किया जा सके। भूगोल में वैज्ञानिक शोध और सर्वेक्षणों के लिए यह सबसे मौलिक और महत्वपूर्ण प्रतिचयन आधार माना जाता है, जो परिणामों की वैधता सुनिश्चित करता है।

259. (A) एजिम्यूथल प्रक्षेप
खमध्य प्रक्षेप को एजिम्यूथल प्रक्षेप के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यह केंद्र बिंदु से अन्य सभी बिंदुओं तक की सही दिशा या 'एजिमथ' को सुरक्षित रखता है। इस प्रक्षेप में ग्लोब को एक समतल सतह पर प्रक्षेपित किया जाता है। अपनी दिशात्मक शुद्धता के कारण इसका उपयोग मुख्य रूप से ध्रुवीय मानचित्रों, विमानन मार्गों और रेडियो संचार के क्षेत्रों में व्यापक रूप से किया जाता है। यह प्रक्षेप उन विशिष्ट भौगोलिक कार्यों के लिए अनिवार्य है जहाँ केंद्र से कोणीय सटीकता बनाए रखना मुख्य उद्देश्य होता है।

260. (A) 1, 2, 4, 3
मानक विचलन की गणना एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जो सबसे पहले डेटासेट के माध्य को ज्ञात करने से शुरू होती है। इसके बाद, प्रत्येक डेटा बिंदु का माध्य से विचलन निकालकर उसका वर्ग किया जाता है ताकि धनात्मक मान प्राप्त हों। तीसरे चरण में, इन वर्गित विचलनों के औसत की गणना की जाती है, जिसे प्रसरण कहते हैं। अंत में, प्रसरण का वर्गमूल निकालकर मानक विचलन प्राप्त किया जाता है। यह सांख्यिकीय प्रक्रिया डेटा के फैलाव और उसकी विश्वसनीयता को वैज्ञानिक रूप से मापने का एक मानक और सूक्ष्म तरीका है।

261. (A) भारित स्कोर विश्लेषण
कई मानदंडों के आधार पर किसी स्थान को स्कोर आवंटित करने की वह प्रक्रिया जहाँ प्रत्येक मानदंड को उसकी प्रासंगिकता के अनुसार अलग-अलग महत्व दिया जाता है, भारित स्कोर विश्लेषण कहलाती है। यह तकनीक स्वीकार करती है कि वास्तविक दुनिया में सभी कारक परिणाम को समान रूप से प्रभावित नहीं करते हैं। इसका उपयोग साइट उपयुक्तता अध्ययन और पर्यावरणीय मूल्यांकन में प्राथमिकताएं तय करने के लिए किया जाता है। यह विश्लेषण को अधिक यथार्थवादी, तर्कसंगत और वैज्ञानिक बनाता है, जिससे जटिल भौगोलिक समस्याओं के समाधान में सटीकता आती है और निर्णय लेना सुगम होता है।

262. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
जीआईएस डेटा मॉडलों के बारे में दोनों कथन तकनीकी रूप से पूर्णतः सही हैं। रास्टर डेटा मॉडल ग्रिड कोशिकाओं का उपयोग करता है, जो ऊंचाई या वर्षा जैसी निरंतर भौगोलिक घटनाओं को प्रदर्शित करने के लिए श्रेष्ठ है। इसके विपरीत, वेक्टर डेटा मॉडल सटीक ज्यामिति और टोपोलॉजी पर आधारित होता है, जो नेटवर्क विश्लेषण और सड़कों के बीच सबसे छोटा मार्ग खोजने के लिए अत्यंत कुशल है। शोध की प्रकृति और डेटा की विशेषताओं के आधार पर इन दोनों मॉडलों का सही चुनाव भौगोलिक विश्लेषण की शुद्धता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करता है।

263. (A) विषयक मानचित्र
वह मानचित्र जो 'आवासीय', 'वाणिज्यिक' और 'औद्योगिक' जैसी विशिष्ट भूमि उपयोग श्रेणियों के स्थानिक वितरण को दर्शाता है, विषयक मानचित्र का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका मुख्य

Click Here to Buy book on Amazon

उद्देश्य किसी विशेष विषय या थीम को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में उजागर करना है। ये मानचित्र शहरी नियोजन, संसाधन प्रबंधन और पर्यावरणीय अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये क्षेत्रों की कार्यात्मक प्रकृति को स्पष्ट दृश्य रूप प्रदान करते हैं। विषयक मानचित्र जटिल आंकड़ों को सरल बनाकर स्थानिक प्रतिरूपों को समझने में भूगोलवेत्ताओं की सहायता करते हैं।

264. (A) एक समीकरण जो चरों के बीच संबंध को मॉडल करता है।
समाश्रयण विश्लेषण का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण आउटपुट एक गणितीय समीकरण होता है जो स्वतंत्र और आश्रित चरों के बीच के कार्यात्मक संबंध को मॉडल करता है। यह समीकरण (जैसे Y = a + bX) शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि एक चर में परिवर्तन दूसरे को कैसे प्रभावित करता है। इसके माध्यम से ज्ञात डेटा के आधार पर अज्ञात मानों की सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है। यह वैज्ञानिक उपकरण भौगोलिक भविष्यवाणियों, जैसे जनसंख्या अनुमान या कृषि उत्पादन, के लिए एक मजबूत और विश्वसनीय सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है।

265. (A) डेटा बिंदु माध्य के बहुत समीप होते हैं।
किसी डेटासेट के लिए कम मानक विचलन का मान यह स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि अधिकांश डेटा बिंदु अपने माध्य या औसत मान के बहुत करीब संकेंद्रित हैं। यह विक्षेपण का निम्न स्तर डेटा की उच्च स्थिरता, एकरूपता और विश्वसनीयता को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि आंकड़ों में बिखराव कम है और वे एक निश्चित प्रवृत्ति का मजबूती से पालन कर रहे हैं। वैज्ञानिक शोध में कम मानक विचलन प्राप्त होना यह संकेत देता है कि प्राप्त परिणाम अधिक सटीक और पूर्वानुमान के योग्य हैं।

266. (A) स्थानिक संबंधों और प्रतिरूपों का विश्लेषण।
मानचित्र को "भौगोलिक अध्ययनों में एक उपकरण" इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह शोधकर्ताओं को स्थानिक संबंधों, वितरणों और प्रतिरूपों का सूक्ष्म वैज्ञानिक विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है। यह जटिल धरातलीय सूचनाओं को एक दृश्य और मापित प्रारूप में परिवर्तित करता है, जिससे घटनाओं के बीच के भौगोलिक अंतर्संबंधों को समझना आसान हो जाता है। मानचित्र केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं हैं, बल्कि वे निर्णय लेने और भविष्य की योजनाएं बनाने के लिए एक विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करते हैं। यह भूगोलवेत्ता के लिए अन्वेषण का प्राथमिक माध्यम है।

267. (A) एक नदी
वेक्टर-आधारित जीआईएस में 'रेखा' विशेषता का सबसे सटीक उदाहरण एक नदी या सड़क है। वेक्टर मॉडल भौगोलिक विशेषताओं को उनकी ज्यामिति के आधार पर प्रदर्शित करता है, जहाँ रेखाएं बिंदुओं के एक क्रम से बनी होती हैं जिनका उपयोग रैखिक तत्वों को दिखाने के लिए किया जाता है। एक नदी की लंबाई, मार्ग और उसकी दिशा को वेक्टर लाइनों के माध्यम से अत्यंत शुद्धता के साथ मानचित्रित किया जा सकता है। यह मॉडल नेटवर्क विश्लेषण और हाइड्रोलॉजिकल मॉडलिंग के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह प्रवाह की निरंतरता को प्रभावी ढंग से दर्शाता है।

268. (A) इट उच्च अक्षांशों में भू-भागों के क्षेत्रफल को बहुत अधिक बढ़ा देता है।
जनसंख्या घनत्व के वैश्विक वितरण को दिखाने के लिए मर्केटर प्रक्षेप अनुपयुक्त है क्योंकि यह उच्च अक्षांशों, जैसे रूस और ग्रीनलैंड, के क्षेत्रफल को उनके वास्तविक आकार की तुलना में बहुत अधिक बढ़ा देता है। सांख्यिकीय तुलना के लिए क्षेत्रफल की शुद्धता अनिवार्य होती है ताकि दर्शक विभिन्न क्षेत्रों के बीच सही अनुपात समझ सकें। मर्केटर प्रक्षेप नौसंचालन के लिए तो श्रेष्ठ है, लेकिन यह वैश्विक घनत्व के वितरण को दृष्टिगत रूप से भ्रामक बना देता है। ऐसे उद्देश्यों के लिए समकक्ष प्रक्षेपों का उपयोग करना ही वैज्ञानिक रूप से सही है।

269. (A) नाममात्र
बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति का एकमात्र ऐसा माप है जो नाममात्र या गुणात्मक डेटा के विश्लेषण के लिए उपयुक्त है। चूंकि नाममात्र डेटा में केवल श्रेणियां या नाम होते हैं जिनका कोई गणितीय मान नहीं होता, इसलिए उनका माध्य या माध्यिका निकालना असंभव है। बहुलक शोधकर्ता को यह बताता है कि कौन सी श्रेणी की आवृत्ति सबसे अधिक है या कौन सा समूह सबसे अधिक प्रचलित है। उदाहरण के लिए, किसी क्षेत्र में सबसे प्रमुख फसल या बोली जाने वाली मुख्य भाषा की पहचान करने के लिए बहुलक ही एकमात्र वैज्ञानिक सांख्यिकीय विकल्प है।

270. (A) स्तरित प्रतिचयन
जब एक शोधकर्ता जनसंख्या को पहले सजातीय उपसमूहों (जैसे प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के छात्र) में विभाजित करता है और फिर प्रत्येक समूह से निश्चित संख्या में नमूने लेता है, तो यह स्तरित प्रतिचयन का उदाहरण है। यह विधि सुनिश्चित करती है कि नमूने में जनसंख्या के प्रत्येक महत्वपूर्ण वर्ग का समान और प्रतिनिधित्वपूर्ण स्थान हो। यह सांख्यिकीय सटीकता को बढ़ाता है और प्रतिचयन पक्षपात को कम करता है। भूगोल और सामाजिक विज्ञान में विविधतापूर्ण आबादी का संतुलित अध्ययन करने के लिए यह एक अत्यंत विश्वसनीय और वैज्ञानिक तकनीक है।

271. (A) डेटा संपादन योग्य, इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में संग्रहीत किया जाता है।
डिजिटल मानचित्रण में मानचित्रों का तेजी से अद्यतनीकरण इसलिए संभव है क्योंकि सारा भौगोलिक डेटा डिजिटल और संपादन योग्य इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में संग्रहीत होता है। पारंपरिक कागजी मानचित्रों के विपरीत, जहाँ संशोधन के लिए पूरी छपाई प्रक्रिया दोहरानी पड़ती थी, डिजिटल सिस्टम में केवल नई सूचनाओं को डेटाबेस में प्रविष्ट करना होता है और मानचित्र स्वतः अद्यतन हो जाता है। यह तकनीक समय और लागत की बचत करती है और सुनिश्चित करती है कि उपयोगकर्ताओं को हमेशा नवीनतम और सटीक भौगोलिक जानकारी उपलब्ध रहे, जो गतिशील नियोजन हेतु अनिवार्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

हैं, जिससे स्थानीय स्तर पर दिशा की शुद्धता बनी रहती है। यद्यपि बड़े क्षेत्रों के क्षेत्रफल में विरूपण हो सकता है, लेकिन आकृतियों का सटीक प्रतिनिधित्व इसे नौसंचालन और मौसम संबंधी मानचित्रों के लिए अनिवार्य बनाता है। मर्केटर प्रक्षेप यथाकृतिक गुणों का सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला उदाहरण है।

237. (A) 5
दिए गए क्रमित डेटासेट {2, 3, 5, 5, 7, 8, 10} में कुल सात मान हैं। माध्यिका वह मान होता है जो इस श्रृंखला के बिल्कुल मध्य में स्थित होता है। यहाँ चतुर्थ स्थान पर आने वाला मान '5' है, जो श्रृंखला को दो बराबर हिस्सों (तीन मान ऊपर और तीन मान नीचे) में विभाजित करता है। अतः 5 इस सेट की माध्यिका है। माध्यिका वितरण के केंद्र को समझने का एक प्रभावी माप है, विशेषकर जब डेटा में बहुत बड़े या छोटे मान मौजूद हों।

238. (A) स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
शहरी उद्यानों के अध्ययन में यदि शोधकर्ता विभिन्न आकारों के उद्यानों का उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना चाहता है, तो स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन सबसे श्रेष्ठ तकनीक है। इसमें उद्यानों को पहले उनके क्षेत्रफल के आधार पर विभिन्न स्तरों (जैसे छोटे, मध्यम, बड़े) में विभाजित किया जाता है और फिर प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक नमूने लिए जाते हैं। यह विधि सुनिश्चित करती है कि कोई भी महत्वपूर्ण श्रेणी नमूने से बाहर न रहे। इससे प्राप्त परिणाम अधिक सटीक और पूरी आबादी की विविधता को प्रतिबिंबित करने वाले होते हैं।

239. (A) विक्षेपण
मानक विचलन की गणना सांख्यिकी में विक्षेपण या प्रसार का एक मुख्य माप है। यह वैज्ञानिक रूप से यह बताता है कि डेटा के बिंदु अपने माध्य या औसत मान से कितनी दूर फैले हुए हैं। यह केवल केंद्रीय प्रवृत्ति को नहीं मापता, बल्कि यह स्पष्ट करता है कि डेटा में कितनी परिवर्तनशीलता या विविधता मौजूद है। भौगोलिक शोध में वर्षा या तापमान की स्थिरता को समझने के लिए इसका व्यापक उपयोग होता है। उच्च मानक विचलन डेटा में अधिक बिखराव को दर्शाता है, जबकि कम मान स्थिरता को सूचित करता है।

240. (A) आवाजाही की दिशा।
प्रवाह मानचित्र पर तीर का प्राथमिक और अनिवार्य कार्य आवाजाही या प्रवाह की वास्तविक दिशा को प्रदर्शित करना है। इसके बिना यह समझना असंभव होगा कि प्रवासन, व्यापार या परिवहन का प्रवाह किस बिंदु से शुरू होकर किस गंतव्य तक पहुँच रहा है। तीर की दिशा स्थानिक गतिशीलता के प्रतिरूप को स्पष्ट करती है। रेखाओं की चौड़ाई के साथ मिलकर, तीर एक व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं जो मात्रा और दिशा दोनों को एक साथ प्रभावी ढंग से संप्रेषित करता है, जो भौगोलिक विश्लेषण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

241. (A) क्रमसूचक मापन
रैंक स्कोर क्रमसूचक मापन का एक प्रमुख रूप है जहाँ मदों को उनके गुणों या मानों के आधार पर एक विशिष्ट क्रम (जैसे प्रथम, द्वितीय, तृतीय) में व्यवस्थित किया जाता है। यह विधि वस्तुओं के सापेक्ष स्थान को तो स्पष्ट करती है, लेकिन उनके बीच के वास्तविक गणितीय अंतर को नहीं मापती। सांख्यिकी में इसका उपयोग तब किया जाता है जब तुलना करना मुख्य उद्देश्य हो। भूगोल में जिलों या राज्यों को उनके विकास सूचकांक के आधार पर रैंक देना इसका एक अत्यंत सामान्य और प्रभावी व्यावहारिक उदाहरण है।

242. (A) एक महाद्वीप की प्रमुख नदी प्रणालियाँ।
1:2,000,000 की मापनी एक छोटी मापनी है जो विशाल भौगोलिक क्षेत्रों को दिखाने के लिए उपयुक्त होती है। यह एक पूरे महाद्वीप की प्रमुख नदी प्रणालियों या पर्वत श्रृंखलाओं जैसे बड़े प्रतिरूपों को प्रदर्शित करने के लिए श्रेष्ठ है। इस मापनी पर छोटे विवरण, जैसे शहर की सड़कें या व्यक्तिगत भूखंड, नहीं दिखाए जा सकते क्योंकि वे बहुत सूक्ष्म हो जाएंगे। छोटी मापनी का मुख्य उद्देश्य व्यापक क्षेत्रीय रुझानों और बड़े स्थानिक वितरणों को एक संक्षिप्त मानचित्र पर प्रस्तुत करना है, जो महाद्वीपीय स्तर के अध्ययन के लिए अनिवार्य है।

243. (A) वह चर जिसका अनुमान लगाया जा रहा है।
सरल रेखीय समाश्रयण में 'आश्रित चर' वह चर होता है जिसके मान की भविष्यवाणी या अनुमान स्वतंत्र चर के आधार पर किया जाता है। इसे आमतौर पर Y-अक्ष पर प्रदर्शित किया जाता है। इसकी प्रकृति और मान स्वतंत्र चर में होने वाले परिवर्तनों पर निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम वर्षा के आधार पर फसल पैदावार का अनुमान लगा रहे हैं, तो पैदावार आश्रित चर होगी। यह विश्लेषण शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि मुख्य परिणामी चर अन्य कारकों से कैसे प्रभावित होता है।

244. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
मानचित्र सामान्यीकरण के बारे में दोनों कथन सत्य हैं क्योंकि हर मानचित्र वास्तविकता का एक अनिवार्य सरलीकरण होता है। इसमें जटिल डेटा को पठनीय बनाने के लिए महत्वपूर्ण विशेषताओं का चयन, अनावश्यक विवरणों का सरलीकरण और प्रतीकीकरण की प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। चूंकि एक छोटे पैमाने पर हर सूक्ष्म विवरण को दिखाना असंभव है, इसलिए सामान्यीकरण के बिना कोई भी उपयोगी मानचित्र नहीं बनाया जा सकता। यह प्रक्रिया मानचित्रकार को वैज्ञानिक और स्पष्ट तरीके से केवल प्रासंगिक जानकारी प्रस्तुत करने में सक्षम बनाती है।

245. (A) स्थानिक डेटा को कैप्चर करने, संग्रहीत करने, विश्लेषण करने और प्रदर्शित करने की एक विधि।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत घटक स्थानिक डेटा को कैप्चर करने, सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने, सूक्ष्म विश्लेषण करने और दृश्य रूप में प्रदर्शित करने की इसकी एकीकृत विधि है। यह एक व्यापक प्रणाली है जो हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और डेटा को एक साथ जोड़ती है ताकि जटिल भौगोलिक समस्याओं का समाधान किया जा सके। जीआईएस केवल मानचित्र बनाने का उपकरण नहीं है, बल्कि यह स्थानिक सूचनाओं के प्रबंधन और वैज्ञानिक

NODIA

281. (A) सक्रिय
राडार और लिडार सक्रिय सुदूर संवेदन प्रणालियों के प्रमुख उदाहरण हैं क्योंकि वे प्रदीप्ति के लिए ऊर्जा का अपना स्रोत स्वयं प्रदान करते हैं। राडार सूक्ष्म तरंगों का उपयोग करता है और लिडार लेजर प्रकाश का, जो धरातल से टकराकर वापस लौटते हैं और सेंसर द्वारा रिकॉर्ड किए जाते हैं। ये प्रणालियाँ बाहरी सौर ऊर्जा पर निर्भर नहीं होती हैं, जिससे वे दिन और रात दोनों समय निरंतर कार्य करने में सक्षम होती हैं। उनकी यह स्व-संचालित ऊर्जा क्षमता उन्हें बादलों और अंधेरे जैसी कठिन परिस्थितियों में भी सटीक डेटा प्राप्त करने योग्य बनाती है।

282. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
केंद्रीय प्रवृत्ति का उदाहरण औसत आय है, जबकि विक्षेपण तापमान की परिवर्तनशीलता को दर्शाता है। सहसंबंध वर्षा और फसल पैदावार के बीच के अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है। समाश्रयण का उपयोग भवन के आकार के आधार पर उसकी कीमत का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है, जो भविष्यसूचक मॉडलिंग का कार्य है। ये सभी सांख्यिकीय अवधारणाएं भौगोलिक डेटा के सूक्ष्म विश्लेषण और वैज्ञानिक निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए आधारभूत हैं। प्रत्येक तकनीक अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है, जिससे जटिल भौगोलिक परिदृश्यों को समझना और प्रबंधित करना संभव हो पाता है।

283. (A) विश्लेषण के लिए अंतरिक्ष का मापित, प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान करना।
भौगोलिक अध्ययनों में मानचित्र की मुख्य विशेषता एक वैज्ञानिक उपकरण के रूप में इसकी क्षमता है, जो वास्तविक विश्व के अंतरिक्ष का एक मापित और प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान करता है। यह विशाल और जटिल धरातलीय सूचनाओं को एक संक्षिप्त, दृश्य और समझने योग्य प्रारूप में परिवर्तित करता है। इसके माध्यम से स्थानिक संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण और व्याख्या संभव हो पाती है। मानचित्र केवल सूचनाओं का प्रदर्शन नहीं हैं, बल्कि वे शोधकर्ताओं को प्रतिरूपों की पहचान करने और प्रभावी क्षेत्रीय योजना बनाने के लिए एक अनिवार्य विश्लेषणात्मक मंच प्रदान करते हैं।

284. (A) रेखा आरेख
विभिन्न क्षेत्रों को आवंटित बजट का प्रतिशत दिखाने के लिए रेखा आरेख एक अनुपयुक्त विकल्प है क्योंकि इसका उपयोग मुख्य रूप से समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को दर्शाने के लिए किया जाता है। आनुपातिक वितरण या प्रतिशत संरचना दिखाने के लिए पाई चार्ट या विभाजित दंड आरेख कहीं अधिक प्रभावी और वैज्ञानिक होते हैं। रेखा आरेख निरंतर डेटा के रुझानों को स्पष्ट करता है, जबकि बजट आवंटन अलग-अलग श्रेणियों का एक स्थिर विभाजन है। अतः डेटा की प्रकृति और प्रस्तुति के उद्देश्य के आधार पर सही आरेख का चुनाव करना अनिवार्य है।

285. (A) एक यथाकृतिक प्रक्षेप
यदि किसी मानचित्र का मुख्य उद्देश्य महाद्वीपों की आकृतियों को स्थानीय स्तर पर कोणीय शुद्धता के साथ सुरक्षित रखना है, तो यथाकृतिक प्रक्षेप ही सबसे श्रेष्ठ चुनाव होगा। यद्यपि इस प्रक्रिया में क्षेत्रफल का विरुपण हो सकता है, लेकिन यह प्रक्षेप सूक्ष्म आकृतियों को उनके वास्तविक स्वरूप में बनाए रखता है। मर्केटर प्रक्षेप इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है। भूगोल में प्रक्षेप का चुनाव हमेशा सुरक्षित रखी जाने वाली विशेषता और मानचित्र के विशिष्ट उपयोग पर निर्भर करता है। यथाकृतिक प्रक्षेप उन कार्यों के लिए अपरिहार्य है जहाँ आकृति और दिशा की शुद्धता सर्वोपरि होती है।

286. (D) 1, 2 और 3
फसल पैदावार पर उर्वरकों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सभी तीनों विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण वैज्ञानिक रूप से मान्य और अत्यंत उपयोगी हैं। समाश्रयण विश्लेषण उर्वरक की मात्रा के आधार पर पैदावार का अनुमान लगाने में मदद करता है, जबकि दंड आरेख विभिन्न उर्वरकों की औसत पैदावार के बीच स्पष्ट तुलना प्रदान करता है। सहसंबंध विश्लेषण चरों के बीच के संबंध की मजबूती को स्पष्ट करता है। इन सांख्यिकीय उपकरणों का सामूहिक उपयोग शोध को व्यापक और विश्वसनीय बनाता है, जिससे कृषि नियोजन के लिए सटीक और डेटा-आधारित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

287. (A) माध्यिका
माध्यिका केंद्रीय प्रवृत्ति का एक माप है, न कि विक्षेपण का। यह डेटासेट के मध्य मान को दर्शाती है जो वितरण को दो बराबर भागों में विभाजित करता है। इसके विपरीत, परास, प्रसरण और मानक विचलन विक्षेपण के माप हैं जो यह बताते हैं कि डेटा में कितना फैलाव, बिखराव या परिवर्तनशीलता मौजूद है। विक्षेपण के माप यह समझने के लिए अनिवार्य हैं कि डेटा अपने औसत से कितना विचलित है। अतः सांख्यिकीय विश्लेषण में केंद्रीय प्रवृत्ति और विक्षेपण के बीच के इस मूलभूत अंतर को समझना अत्यंत आवश्यक है।

288. (A) जटिल और दोहराव वाले कार्टोग्राफिक कार्यों को स्वचालित करने की।
मानचित्रण में कंप्यूटर अनुप्रयोगों का सबसे महत्वपूर्ण लाभ जटिल और बार-बार किए जाने वाले कार्टोग्राफिक कार्यों को पूर्णतः स्वचालित करने की क्षमता है। इसने मानचित्र निर्माण की गति और सटीकता को कई गुना बढ़ा दिया है, जिससे मानवीय त्रुटियों की संभावना कम हो गई है। डिजिटल प्रणालियों के माध्यम से डेटा का प्रसंस्करण, मापनी परिवर्तन और प्रतीकीकरण अत्यंत सुगम हो गया है। यह स्वचालन भूगोलवेत्ताओं को अपना समय डेटा के गहरे वैज्ञानिक विश्लेषण और व्याख्या में लगाने की अनुमति देता है, जिससे अधिक समृद्ध और सूचनात्मक भौगोलिक निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

289. (A) किसी अन्य चर में भिन्नता का अनुमान लगाने या समझाने के लिए उपयोग किया जाता है।
सरल रेखीय समाश्रयण में 'स्वतंत्र चर' वह चर है जिसका उपयोग किसी अन्य आश्रित चर में होने वाली भिन्नता या परिवर्तन को समझाने या उसका अनुमान लगाने के लिए किया जाता है। इसे आमतौर पर X-अक्ष पर प्रदर्शित किया जाता है। यह मॉडल का प्रेरक कारक होता है जिसके आधार पर भविष्यवाणियां की जाती हैं। उदाहरण के लिए, वर्षा की मात्रा एक स्वतंत्र चर हो

Click Here to Buy book on Amazon

69. निम्नलिखित में से कौन सी यमुना नदी की सहायक नदी नहीं है?
(A) चंबल
(B) बेतवा
(C) केन
(D) सोन

70. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मालवा के पठार की तुलना में बुंदेलखंड का पठार कृषि की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम विकसित है।
कारण (R): इस क्षेत्र में लाल और पीली मृदा का मिश्रण पाया जाता है जिसकी जल धारण क्षमता कम होती है तथा वर्षा भी अनियमित है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

71. "संजय-डुबरी टाइगर रिजर्व" मध्य प्रदेश के किस भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है?
(A) मालवा का पठार
(B) बुंदेलखंड का पठार
(C) बघेलखंड का पठार
(D) नर्मदा घाटी

72. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
1. प्राचीन बुंदेलखंड नीस से निर्मित।
2. बेतवा, धसान और केन जैसी नदियों द्वारा अपवाहित।
3. अत्यधिक महाद्वीपीय जलवायु।
ये विशेषताएँ मध्य प्रदेश के किस भौगोलिक क्षेत्र का वर्णन करती हैं?
(A) बघेलखंड का पठार
(B) बुंदेलखंड का पठार
(C) मालवा का पठार
(D) मध्य भारत का पठार

73. मुद्रा और स्टांप पेपर के उत्पादन के लिए 'सिक्योरिटी पेपर मिल' कहाँ स्थित है?
(A) नेपानगर
(B) नर्मदापुरम (होशंगाबाद)
(C) अमलाई
(D) भोपाल

74. पश्चिम की ओर बहने वाली नर्मदा और ताप्ती नदियाँ अपने मुहाने पर डेल्टा नहीं बनाती हैं, इसका मुख्य कारण क्या है?
(A) वे कठोर चट्टानों से होकर बहती हैं और कम अवसाद ले जाती हैं।
(B) ज्वारनदमुख पर ज्वारीय धाराएँ बहुत तीव्र होती हैं।
(C) वे बहुत कम दूरी तक बहती हैं।
(D) उनका जल लवणीय है।

75. पन्ना जिले का सबसे महत्वपूर्ण खनिज संसाधन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) कोयला
(B) लौह अयस्क
(C) बॉक्साइट
(D) हीरा

76. मध्य प्रदेश में वर्षा के स्वरूप के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) राज्य मुख्य रूप से मानसून की अरब सागर शाखा से वर्षा प्राप्त करता है।
(B) वर्षा वाले दिनों की संख्या पूर्व से पश्चिम की ओर घटती जाती है।
(C) शीतकालीन वर्षा रबी फसलों के लिए महत्वपूर्ण है।
(D) औसत वार्षिक वर्षा लगभग 112 सेमी है।

77. मैकल श्रेणी मध्य प्रदेश के किस पर्वत तंत्र का पूर्वी भाग है?
(A) विंध्य श्रेणी
(B) अरावली श्रेणी
(C) सतपुड़ा श्रेणी
(D) कैमूर श्रेणी

78. रीवा-सतना पठार में सीमेंट उद्योग के लिए प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राथमिक कच्चा माल है:
(A) बॉक्साइट
(B) जिप्सम
(C) चूना पत्थर
(D) कोयला

79. इंदिरा सागर परियोजना, जो मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय परियोजनाओं में से एक है, किस नदी पर निर्मित है?
(A) चंबल
(B) बेतवा
(C) नर्मदा
(D) सोन

80. नदी और उसके किनारे स्थित शहर का गलत युग्म पहचानिए।
(A) क्षिप्रा - उज्जैन
(B) नर्मदा - जबलपुर
(C) चंबल - ग्वालियर
(D) बेतवा - ओरछा

81. मध्य प्रदेश का निम्नलिखित में से कौन सा भौगोलिक विभाग त्रिभुजाकार है और दक्कन ट्रैप लावा से निर्मित है?
(A) मध्य भारत का पठार
(B) बुंदेलखंड का पठार
(C) मालवा का पठार
(D) बघेलखंड का पठार

NODIA

सूचित करता है, जो वैज्ञानिक शोध के लिए अनिवार्य जानकारी है।

298. (A) जैसे-जैसे A बढ़ता है, B पूर्ण रुप से घटता है।
चर A और B के बीच -1.0 का सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी में एक 'पूर्ण ऋणात्मक रेखीय संबंध' को प्रदर्शित करता है। इसका सीधा और निश्चित तात्पर्य यह है कि दोनों चर एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत दिशा में और एक स्थिर अनुपात में बदलते हैं; यदि चर A के मान में वृद्धि होती है, तो चर B के मान में पूर्णतः और आनुपातिक रुप से कमी होगी। यद्यपि वास्तविक भौगोलिक आंकड़ों में ऐसा पूर्ण संबंध मिलना अत्यंत विरल है, लेकिन यह चरों के बीच के अधिकतम संभव विपरीत साहचर्य की एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सीमा को स्पष्ट करता है।

299. (A) रेखा आरेख
एक वर्ष की अवधि में किसी शहर के औसत मासिक तापमान में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों और उतार-चढ़ाव को दिखाने के लिए रेखा आरेख सबसे उपयुक्त सांख्यिकीय आरेख है। यह समय-श्रृंखला डेटा के रुझानों को स्पष्ट करने के लिए श्रेष्ठ है क्योंकि यह डेटा बिंदुओं को एक रेखा से जोड़ता है, जिससे वृद्धि या गिरावट के प्रतिरुप को एक नज़र में उजागर कर देता है। इसके माध्यम से मौसमी प्रवृत्तियों को समझना और भविष्य के तापमान का अनुमान लगाना आसान हो जाता है। रेखा आरेख की सरलता और स्पष्टता इसे जलवायु संबंधी डेटा के दृश्य संप्रेषण हेतु श्रेष्ठ बनाती है।

300. (A) व्यवस्थित प्रतिचयन, डेटा आवधिकता के साथ संभावित संरेखण के कारण।
यदि अध्ययन क्षेत्र के डेटा में कोई अंतर्निहित आवधिकता या चक्रीय प्रतिरूप मौजूद है, तो व्यवस्थित प्रतिचयन के माध्यम से एक गैर-प्रतिनिधि नमूना प्राप्त होने का सबसे अधिक जोखिम रहता है। यदि प्रतिचयन अंतराल डेटा के प्राकृतिक चक्र के साथ मेल खा जाता है, तो नमूना केवल चक्र के एक ही हिस्से को बार-बार कैप्चर करेगा, जिससे पूरी आबादी की विविधता छिप जाएगी। यह स्थिति प्राप्त परिणामों को पक्षपाती और भ्रामक बना सकती है। अतः इस विधि का उपयोग करने से पहले डेटा की क्रमबद्ध प्रकृति की सावधानीपूर्वक जांच करना अत्यंत आवश्यक है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

(B) उर्वरक
(C) फार्मास्यूटिकल्स
(D) औद्योगिक गैसें

46. मध्य प्रदेश की नदियों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) ताप्ती नदी नर्मदा के समानांतर प्रवाहित होती है और अरब सागर में गिरती है।
(B) क्षिप्रा नदी सोन नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है।
(C) मध्य प्रदेश की सभी प्रमुख नदियाँ मैकल श्रेणी से निकलती हैं।
(D) चंबल नदी पूर्व की ओर बहकर महानदी में मिल जाती है।

47. बुंदेलखंड पठार क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से किस पर आधारित है?
(A) बड़े पैमाने पर औद्योगिक विनिर्माण
(B) खनन और उत्खनन
(C) पर्यटन और सेवा क्षेत्र
(D) निर्वाह कृषि और पशुपालन

48. आयरन ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण ईंट जैसे लाल रंग की मृदा, जो बालाघाट जैसे उच्च वर्षा और तापमान वाले क्षेत्रों में पाई जाती है, वह है:
(A) लैटेराइट मृदा
(B) काली मृदा
(C) जलोढ़ मृदा
(D) मिश्रित लाल और काली मृदा

49. निम्नलिखित में से कौन सी मालवा पठार की भौगोलिक स्थिति की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) गहरे बीहड़ों और उत्खात भूमि स्थलाकृतियों की बार-बार उपस्थिति।
(B) खड़ी कगार और सघन उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन।
(C) चपटी चोटियों वाली पहाड़ियाँ और उनके मध्य काली मृदा से आच्छादित घाटियाँ।
(D) प्राचीन ग्रेनाइट और रूपांतरित नीस की प्रधानता वाला परिदृश्य।

50. जनसंख्या की दृष्टि से मध्य प्रदेश का कौन सा भौगोलिक क्षेत्र सबसे कम आबादी वाला है?
(A) नर्मदा घाटी
(B) बघेलखंड का पठार
(C) मालवा का पठार
(D) बुंदेलखंड का पठार

51. मध्य प्रदेश के संसाधन भूगोल से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को तार्किक कालानुक्रमिक क्रम (प्राचीन से नवीन) में व्यवस्थित कीजिए:
1. गोंडवाना संस्तरों से कोयले का निष्कर्षण।
2. दक्कन बेसाल्ट प्रवाह से काली मृदा का निर्माण।
3. चंबल घाटी में जलोढ़ का निक्षेपण।
4. विंध्यन बलुआ पत्थरों का निर्माण।
(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

52. 'भांडेर' और 'कैमूर' श्रेणियां किस बड़ी भौगोलिक इकाई की प्रमुख उप-श्रेणियां हैं?
(A) सतपुड़ा श्रेणी
(B) विंध्य श्रेणी
(C) मैकल श्रेणी
(D) महादेव पहाड़ियाँ

53. मध्य प्रदेश की कौन सी प्रमुख फसल मुख्य रूप से तेल निष्कर्षण और पशु आहार के लिए प्रोटीन स्रोत के रूप में उगाई जाती है?
(A) गेहूं
(B) चावल
(C) सोयाबीन
(D) चना

54. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नर्मदा घाटी मध्य प्रदेश के सबसे उपजाऊ कृषि क्षेत्रों में से एक है।
कारण (R): घाटी गहरी काली मृदा और पुराने जलोढ़ से आच्छादित है, जो विभिन्न फसलों के लिए उपयुक्त है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

55. निम्नलिखित में से कौन सी चंबल नदी पर स्थित एक प्रमुख जलविद्युत परियोजना है?
(A) बरगी बांध
(B) तवा परियोजना
(C) गांधी सागर बांध
(D) बाणसागर परियोजना

56. मध्य प्रदेश के औद्योगिक परिदृश्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उत्तर प्रदेश के रेनुकूट में स्थित हिंडाल्को संयंत्र मध्य प्रदेश के अमरकंटक क्षेत्र से बॉक्साइट प्राप्त करता है।
II. तटरेखा की अनुपस्थिति राज्य में बंदरगाह आधारित उद्योगों के विकास को सीमित करती है।
III. जलोढ़ मृदा की उपलब्धता के कारण कागज उद्योग उत्तरी जिलों में केंद्रित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II

NODIA

कारण (R): पठार की ऊँचाई और कर्क रेखा से इसकी निकटता इसकी जलवायु परिस्थितियों को प्रभावित करती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

11. निम्नलिखित में से कौन सी मध्य प्रदेश में पाई जाने वाली मृदा का प्रमुख प्रकार नहीं है?
(A) काली मृदा
(B) जलोढ़ मृदा
(C) लैटेराइट मृदा
(D) मरुस्थलीय मृदा

12. मध्य प्रदेश में 'रेगुर' शब्द का प्रयोग आमतौर पर किस मृदा के लिए किया जाता है?
(A) लाल और पीली मृदा
(B) काली मृदा
(C) जलोढ़ मृदा
(D) लैटेराइट मृदा

13. मध्य प्रदेश के प्रमुख उद्योगों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सीमेंट उद्योग सतना और कटनी जैसे चूना पत्थर बाहुल्य क्षेत्रों में केंद्रित है।
II. बॉक्साइट की उपलब्धता के कारण एल्युमीनियम उद्योग मुख्य रूप से राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है।
III. संसाधनों की कमी के कारण मध्य प्रदेश में रासायनिक उद्योग विद्यमान नहीं है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

14. मध्य प्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में सर्वाधिक होती है?
(A) ग्वालियर
(B) इंदौर
(C) रीवा
(D) पचमढ़ी

15. नर्मदा नदी पर निर्मित बरगी बांध का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) जलविद्युत उत्पादन और सिंचाई
(B) केवल औद्योगिक जल आपूर्ति
(C) जबलपुर शहर के लिए बाढ़ नियंत्रण
(D) मालवा क्षेत्र को पेयजल आपूर्ति

16. बुंदेलखंड के पठार में व्यापक रूप से पाई जाने वाली विंध्यन शैल समूह की चट्टानें किस खनिज संसाधन का महत्वपूर्ण स्रोत हैं?
(A) कोयला
(B) भवन निर्माण सामग्री जैसे बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
(C) मैंगनीज
(D) बॉक्साइट

17. निम्नलिखित में से कौन सी मध्य प्रदेश की मुख्य खरीफ फसल है?
(A) गेहूं
(B) सोयाबीन
(C) चना
(D) सरसों

18. नर्मदा घाटी किस प्रकार की भूगर्भीय संरचना का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) भ्रंश घाटी
(B) अभिनति घाटी
(C) अपनति घाटी
(D) लटकती घाटी

19. भौगोलिक क्षेत्र और उसकी विशिष्ट विशेषता के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) बघेलखंड का पठार - काली मृदा की प्रधानता
(B) मध्य भारत का पठार - नर्मदा नदी का उद्गम स्थल
(C) मालवा का पठार - गेहूं और सोयाबीन की कृषि का प्रमुख क्षेत्र
(D) बुंदेलखंड का पठार - राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व

20. मध्य प्रदेश की जनसंख्या के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) सभी भारतीय राज्यों में इसका जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है।
(B) साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।
(C) शहरी जनसंख्या ग्रामीण जनसंख्या से अधिक है।
(D) इसकी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत है।

21. बघेलखंड पठार के सिंगरौली क्षेत्र को किस ऊर्जा संसाधन के विशाल भंडार के लिए जाना जाता है?
(A) यूरेनियम
(B) पेट्रोलियम
(C) कोयला
(D) थोरियम

22. मध्य प्रदेश के निम्नलिखित भौगोलिक विभाजनों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मध्य भारत का पठार
2. मालवा का पठार

Click Here to Buy book on Amazon

3. नर्मदा-सोन घाटी
4. सतपुड़ा-मैकल श्रेणी

सही कूट का चयन कीजिए:
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 4, 3, 2, 1

23. मध्य प्रदेश में सीमेंट, कागज और रसायन के अतिरिक्त कौन सा उद्योग प्रमुख है?
(A) कपड़ा
(B) ऑटोमोबाइल
(C) सॉफ्टवेयर
(D) एल्युमीनियम

24. मध्य प्रदेश के उत्तरी जिलों में पाई जाने वाली जलोढ़ मृदा की उर्वरता का मुख्य कारण क्या है?
(A) चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा गाद का निक्षेपण
(B) पर्णपाती वनों से प्राप्त उच्च जीवांश की मात्रा
(C) दक्कन ट्रैप से ज्वालामुखीय राख का निक्षेप
(D) प्राचीन रवेदार चट्टानों का अपक्षय

25. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): बघेलखंड का पठार खनिज संसाधनों, विशेष रूप से कोयले में समृद्ध है।
कारण (R): बघेलखंड के पठार की भूगर्भीय संरचना में गोंडवाना शैल समूहों की प्रधानता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. निम्नलिखित में से कौन सी नदी विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमाला के बीच प्रवाहित होती है?
(A) नर्मदा
(B) चंबल
(C) सोन
(D) ताप्ती

27. बुंदेलखंड पठार की जलवायु का सबसे सटीक वर्णन किस रूप में किया जा सकता है?
(A) शुष्क शीत ऋतु के साथ उष्णकटिबंधीय मानसून
(B) हल्की ग्रीष्म ऋतु के साथ आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय
(C) कम दैनिक तापांतर के साथ समुद्री जलवायु
(D) ग्रीष्म और शीत ऋतु में अत्यधिक तापमान के साथ महाद्वीपीय जलवायु

28. मध्य प्रदेश में फसलों और उनके प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) गेहूं - मालवा का पठार
(B) कपास - बुंदेलखंड का पठार
(C) सोयाबीन - मालवा का पठार
(D) चावल - बघेलखंड का पठार

29. उत्तर प्रदेश का रेनुकूट एल्युमीनियम संयंत्र अपना प्राथमिक कच्चा माल, बॉक्साइट, मध्य प्रदेश के किस निकटवर्ती क्षेत्र से प्राप्त करता है?
(A) मालवा का पठार
(B) बुंदेलखंड का पठार
(C) बघेलखंड का पठार (अमरकंटक क्षेत्र)
(D) मध्य भारत का पठार

30. मध्य प्रदेश के भूगोल के संदर्भ में 'धूपगढ़' क्या दर्शाता है?
(A) नर्मदा घाटी का सबसे गहरा बिंदु
(B) चंबल नदी पर एक प्रमुख जलप्रपात
(C) विंध्य श्रेणी में एक प्रसिद्ध गुफा प्रणाली
(D) सतपुड़ा श्रेणी की उच्चतम चोटी

31. नदियों और उनकी विशेषताओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: नदी
P. चंबल
Q. बेतवा
R. सोन
S. ताप्ती
सूची II: सहायक नदी/उद्गम विशेषता
1. अमरकंटक से निकलती है
2. मुलताई से निकलती है
3. क्षिप्रा इसकी एक प्रमुख सहायक नदी है
4. रायसेन में कुमरागाँव के पास से निकलती है
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

32. मध्य प्रदेश में कागज उद्योग, विशेष रूप से नेपानगर और अमलाई जैसे स्थानों पर, निम्नलिखित में से किस वन संसाधन पर मुख्य रूप से निर्भर है?
(A) सागौन की लकड़ी
(B) बांस और सलाई की लकड़ी
(C) साल के बीज
(D) तेंदू पत्ता

33. निम्नलिखित में से कौन सा कथन नर्मदा घाटी का सही वर्णन करता है?
(A) यह एक विस्तृत जलोढ़ मैदान है जो चावल की खेती के लिए प्रसिद्ध है।
(B) यह उपजाऊ काली मृदा वाली एक संकीर्ण और लंबी

NODIA

भ्रंश घाटी है।
(C) यह विरल वनस्पति वाला एक शुष्क क्षेत्र है।
(D) यह ठंडी जलवायु वाला एक उच्च ऊँचाई वाला पठार है।

34. मुरैना जिले के एक किसान के मृदा से संबंधित निम्नलिखित में से किस समस्या से सर्वाधिक चिंतित होने की संभावना है?
(A) अवनालिका अपरदन और बीहड़ निर्माण
(B) काली मृदा के कारण जलजमाव
(C) लैटेराइट मृदा में पोषक तत्वों का निक्षालन
(D) लाल मृदा में उच्च लवणता

35. मध्य प्रदेश के खनिज और ऊर्जा संसाधनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य में भारत में कोयले का सबसे बड़ा भंडार है।
II. पन्ना देश का एकमात्र सक्रिय हीरा उत्पादक क्षेत्र है।
III. राज्य मैंगनीज का एक प्रमुख उत्पादक है, जो मुख्य रूप से बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों से प्राप्त होता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल III
(D) I, II और III

36. मालवा के पठार का सामान्य ढाल किस दिशा की ओर है?
(A) दक्षिण
(B) पश्चिम
(C) उत्तर
(D) पूर्व

37. निम्नलिखित में से कौन सा मध्य प्रदेश में सीमेंट उद्योग का प्रमुख केंद्र नहीं है?
(A) सतना
(B) कटनी
(C) दमोह
(D) पन्ना

38. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में पूर्वी भाग की तुलना में कम वर्षा होती है।
कारण (R): मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा की वर्षा करने वाली हवाएं पश्चिमी मध्य प्रदेश तक पहुँचने तक अपनी अधिकांश नमी खो देती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

39. मध्य प्रदेश के पठारों से निकलने वाली चंबल, बेतवा और केन नदियाँ उत्तर की ओर बहकर किस प्रमुख नदी में मिल जाती हैं?
(A) गोदावरी
(B) महानदी
(C) यमुना
(D) गंगा

40. मध्य प्रदेश में निम्नलिखित में से कौन सी मृदा सर्वाधिक क्षेत्र में पाई जाती है?
(A) जलोढ़ मृदा
(B) काली मृदा
(C) लैटेराइट मृदा
(D) लाल और पीली मृदा

41. तवा बांध, जो एक प्रमुख सिंचाई परियोजना है, किस मुख्य नदी की सहायक नदी पर निर्मित है?
(A) चंबल
(B) सोन
(C) बेतवा
(D) नर्मदा

42. मध्य भारत के पठार का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(A) बीहड़ स्थलाकृति की विशेषता वाला एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र।
(B) वन्यजीवों के लिए प्रसिद्ध एक सघन वनाच्छादित क्षेत्र।
(C) चावल की खेती की प्रधानता वाला उच्च वर्षा वाला क्षेत्र।
(D) गहरी काली मृदा वाला एक ज्वालामुखीय पठार।

43. मध्य प्रदेश की भौगोलिक स्थिति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) नर्मदा-सोन घाटी विंध्य और सतपुड़ा श्रेणियों को अलग करती है।
(B) मालवा का पठार दक्कन ट्रैप बेसाल्ट से निर्मित है।
(C) बघेलखंड का पठार राज्य का सबसे पश्चिमी भौगोलिक विभाग है।
(D) बुंदेलखंड का पठार प्राचीन प्रायद्वीपीय खंड का हिस्सा है।

44. बघेलखंड और सतपुड़ा क्षेत्रों में गोंडवाना शैल समूहों की उपस्थिति सीधे तौर पर किसकी उपलब्धता से संबद्ध है?
(A) बॉक्साइट
(B) संगमरमर
(C) कोयला
(D) तांबा

45. निम्नलिखित में से कौन सा मध्य प्रदेश का एक प्रमुख रासायनिक उद्योग उत्पाद है, जो इसके कृषि आधार से जुड़ा है?
(A) पेट्रोकेमिकल्स

NODIA

अध्याय 10
मध्य प्रदेश का भूगोल

1. क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्य प्रदेश का निम्नलिखित में से कौन सा भौगोलिक विभाग सबसे बड़ा है?
(A) नर्मदा-सोन घाटी
(B) मालवा का पठार
(C) सतपुड़ा-मैकल श्रेणी
(D) बुंदेलखंड का पठार

2. मध्य प्रदेश की मृदा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: काली मृदा मुख्य रूप से मालवा के पठार और नर्मदा घाटी में पाई जाती है।
कथन II: लाल और पीली मृदा, कम उपजाऊ होने के कारण, मुख्य रूप से बघेलखंड क्षेत्र में पाई जाती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. मध्य प्रदेश में पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों में निम्नलिखित में से कौन सी एक अपवाद है?
(A) नर्मदा
(B) ताप्ती
(C) सोन
(D) माही

4. मध्य प्रदेश में वर्षा का वितरण सामान्यतः किस दिशा में कम होता है?
(A) पश्चिम से पूर्व की ओर
(B) उत्तर से दक्षिण की ओर
(C) दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर
(D) दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर

5. मध्य प्रदेश में कृषि संसाधनों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) राज्य सोयाबीन, दालों और तिलहन का अग्रणी उत्पादक है।
(B) गेहूं मालवा क्षेत्र में उगाई जाने वाली प्रमुख रबी फसल है।
(C) चावल की खेती पश्चिमी, कम वर्षा वाले जिलों तक सीमित है।
(D) चंबल घाटी में नहर सिंचाई प्रणाली महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6. मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले की मलंजखंड खदान किस खनिज के निष्कर्षण के लिए प्रसिद्ध है?
(A) कोयला
(B) तांबा
(C) लौह अयस्क
(D) हीरा

7. औद्योगिक केंद्रों और उनके प्रमुख उद्योगों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: औद्योगिक केंद्र
P. पन्ना
Q. नेपानगर
R. कोरबा
S. कटनी
सूची II: प्रमुख उद्योग
1. अखबारी कागज
2. सीमेंट
3. हीरा खनन
4. एल्युमीनियम
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

8. मध्य प्रदेश का कौन सा भौगोलिक क्षेत्र चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित बीहड़ों की विशेषता रखता है?
(A) मध्य भारत का पठार
(B) बघेलखंड का पठार
(C) मालवा का पठार
(D) नर्मदा घाटी

9. अमरकंटक का पठार किन दो प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल है?
(A) नर्मदा और ताप्ती
(B) सोन और चंबल
(C) नर्मदा और सोन
(D) बेतवा और केन

10. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मालवा के पठार में समशीतोष्ण जलवायु पाई जाती है, जहाँ न तो ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी होती है और न ही शीत ऋतु में अत्यधिक ठंड।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) केवल I और II
(C) केवल III
(D) I, II और III

57. मध्य भारत के पठार में भिंड और मुरैना जिले किस पर्यावरणीय समस्या से सर्वाधिक प्रभावित हैं?
(A) मृदा लवणीकरण
(B) वनों की कटाई
(C) बीहड़ अपरदन
(D) जलजमाव

58. भौगोलिक क्षेत्रों और उनके प्रमुख चट्टान प्रकारों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: भौगोलिक क्षेत्र
P. मालवा का पठार
Q. बुंदेलखंड का पठार
R. बघेलखंड का पठार
S. नर्मदा घाटी
सूची II: प्रमुख चट्टान प्रकार
1. ग्रेनाइट और नीस
2. गोंडवाना प्रणाली
3. दक्कन ट्रैप
4. जलोढ़ और अवसादी चट्टानें
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

59. बघेलखंड पठार के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है।
(B) यह मुख्य रूप से गोंडवाना काल की चट्टानों से निर्मित है।
(C) यह राज्य में सोयाबीन की खेती का मुख्य क्षेत्र है।
(D) सोन और जोहिला इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण नदियाँ हैं।

60. मालवा पठार क्षेत्र में सिंचाई का प्राथमिक स्रोत क्या है?
(A) बड़ी नदियों से निकाली गई नहरें
(B) कुएं और नलकूप
(C) टैंक और तालाब
(D) प्रत्यक्ष वर्षा

61. कौन सा खनिज, जो लोहा और इस्पात उद्योग के लिए आवश्यक है, बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है?
(A) चूना पत्थर
(B) बॉक्साइट
(C) मैंगनीज
(D) डोलोमाइट

62. भेड़ाघाट में अपनी संगमरमर की चट्टानों के लिए प्रसिद्ध जबलपुर शहर किस नदी के तट पर स्थित है?
(A) ताप्ती
(B) नर्मदा
(C) चंबल
(D) सोन

63. किस भौगोलिक क्षेत्र को मध्य प्रदेश के "अन्न भंडार" या "गेहूं की डलिया" के रूप में जाना जाता है?
(A) बघेलखंड का पठार
(B) बुंदेलखंड का पठार
(C) मालवा का पठार
(D) मध्य भारत का पठार

64. मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग (खंडवा, खरगोन) में कपास की खेती के केंद्रित होने का प्रमुख जलवायु कारण क्या है?
(A) 200 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा
(B) लंबी पाला-मुक्त अवधि और मध्यम वर्षा
(C) ठंडी ग्रीष्म ऋतु और भारी हिमपात
(D) कम आर्द्रता और बार-बार आने वाले चक्रवात

65. निम्नलिखित में से कौन सा औद्योगिक उत्पाद कटनी शहर से सर्वाधिक संबद्ध है?
(A) अखबारी कागज
(B) एल्युमीनियम
(C) सीमेंट
(D) रसायन

66. "मध्य भारत का पठार" मध्य प्रदेश के किस भाग में स्थित है?
(A) दक्षिण-पूर्वी
(B) दक्षिण-पश्चिमी
(C) उत्तर-पश्चिमी
(D) उत्तर-पूर्वी

67. मध्य प्रदेश की नदियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नर्मदा मध्य प्रदेश की सबसे लंबी नदी है और पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है।
कथन II: ताप्ती नदी बैतूल जिले से निकलती है और यह भी पश्चिम की ओर अरब सागर में गिरती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

68. बघेलखंड क्षेत्र में पाई जाने वाली लाल और पीली मृदा की कम उर्वरता का मुख्य कारण क्या है?
(A) सतह पर नमक का अत्यधिक जमाव
(B) नाइट्रोजन, फास्फोरस और जीवांश की कमी
(C) जलजमाव और दोषपूर्ण जल निकासी
(D) विषैली भारी धातुओं की उपस्थिति

NODIA

सकती है जिसका उपयोग फसल उत्पादन के स्तर को समझने के लिए किया जाता है। यह चरों के बीच के कार्यात्मक संबंध को परिभाषित करने वाला मुख्य आधारभूत तत्व है।

290. (A) एक बड़ी आबादी से कुशल तरीके से प्रतिनिधि जानकारी प्राप्त करना।
भौगोलिक विश्लेषण में प्रतिचयन तकनीकों का प्राथमिक उद्देश्य पूरी जनसंख्या का अध्ययन किए बिना, एक छोटे लेकिन प्रतिनिधित्वपूर्ण उपसमूह के माध्यम से पूरी आबादी के बारे में सटीक और वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करना है। यह पद्धति शोधकर्ता के बहुमूल्य समय, धन और श्रम की बचत करती है। वैज्ञानिक प्रतिचयन यह सुनिश्चित करता है कि चुना गया नमूना जनसंख्या की वास्तविक विविधता और विशेषताओं को प्रतिबिंबित करे। यह बड़े पैमाने पर किए जाने वाले भौगोलिक सर्वेक्षणों के लिए एक अनिवार्य और तार्किक सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है, जिससे निष्कर्ष विश्वसनीय और मान्य होते हैं।

291. (A) एक बड़ी मापनी का मानचित्र उच्च विस्तार के साथ एक छोटे क्षेत्र को दिखाता है।
मानचित्र मापनी के संदर्भ में यह कथन पूर्णतः सत्य है कि एक बड़ी मापनी का मानचित्र उच्च विवरण और सूक्ष्म जानकारी के साथ एक अपेक्षाकृत छोटे भौगोलिक क्षेत्र को प्रदर्शित करता है। मापनी जितनी बड़ी होगी (जैसे 1:5,000), धरातल की विशेषताएं उतनी ही स्पष्ट और विस्तृत दिखाई देंगी। इसके विपरीत, छोटी मापनी का उपयोग विशाल क्षेत्रों जैसे देशों को दिखाने के लिए किया जाता है जहाँ विवरणों का सामान्यीकरण करना पड़ता है। मानचित्र का चुनाव हमेशा अध्ययन के लिए आवश्यक विस्तार के स्तर और भौगोलिक क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर करता है।

292. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
निकटतम पड़ोसी विश्लेषण चरों के बीच संबंध नहीं मापता, बल्कि यह स्थानिक बिंदु प्रतिरूपों की व्यवस्था (गुच्छित, यादृच्छिक या विकीर्ण) को मापने की तकनीक है, इसलिए प्रथम कथन गलत है। इसका परिणाम एक Rn सांख्यिकी के रूप में प्राप्त होता है जो भौगोलिक विशेषताओं के स्थानिक वितरण के प्रकार का सूक्ष्म वैज्ञानिक वर्णन करता है। अतः केवल द्वितीय कथन ही सांख्यिकीय और भौगोलिक सिद्धांतों के अनुसार सत्य है। यह विश्लेषण बस्तियों और सुविधाओं के फैलाव के स्वरूप को समझने और क्षेत्रीय विकास की योजना बनाने के लिए अपरिहार्य आधार प्रदान करता है।

293. (A) किसी विशिष्ट विषय या थीम के स्थानिक प्रतिरूप को चित्रित करने के लिए डिज़ाइन किया गया मानचित्र।
विषयक मानचित्र विशेष रूप से किसी एक विशिष्ट विषय या थीम, जैसे जलवायु, जनसंख्या घनत्व या मृदा के प्रकार, के स्थानिक वितरण प्रतिरूपों को गहराई से चित्रित करने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं। ये मानचित्र सामान्य संदर्भ मानचित्रों से अलग होते हैं क्योंकि इनका पूरा ध्यान एक विशेष भौगोलिक विशेषता के विश्लेषण पर केंद्रित होता है। ये शोधकर्ताओं को डेटा के पीछे छिपे स्थानिक रुझानों को उजागर करने और प्रभावी क्षेत्रीय योजना बनाने में सहायता करते हैं। सांख्यिकीय आंकड़ों को भौगोलिक दृश्य रूप देने के लिए यह एक अत्यंत वैज्ञानिक और प्रभावी माध्यम है।

294. (A) विभिन्न कारकों के सापेक्ष महत्व को शामिल करने की अनुमति देता है।
उपयुक्तता विश्लेषण के लिए भारित स्कोर तकनीक सरल रैंक स्कोर से अधिक श्रेष्ठ और परिष्कृत है क्योंकि यह विभिन्न कारकों को उनकी वास्तविक प्रासंगिकता के अनुसार अलग-अलग महत्व या भार देने की अनुमति देती है। सरल रैंक स्कोर सभी मानदंडों को समान मानता है, जो अक्सर यथार्थवादी नहीं होता। भारित स्कोर के माध्यम से शोधकर्ता यह सुनिश्चित करता है कि अधिक निर्णायक कारक अंतिम परिणाम को अधिक प्रभावित करें। यह तकनीक जटिल भौगोलिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को वैज्ञानिक सटीकता और तार्किक संतुलन प्रदान करती है, जिससे निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय होते हैं।

295. (A) खमध्य समदूरस्थ
खमध्य समदूरस्थ प्रक्षेप विशेष रूप से अपने केंद्र बिंदु से पृथ्वी के अन्य सभी बिंदुओं तक की वास्तविक और सटीक दूरी को मानचित्र पर बनाए रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें केंद्र से खींची गई कोई भी सीधी रेखा न केवल सही दिशा बताती है, बल्कि वह एक सटीक और निरंतर मापनी का पालन करती है। इस अद्वितीय गुण के कारण इसका उपयोग विमानन, रेडियो संचार और ध्रुवीय क्षेत्रों के अन्वेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। यह प्रक्षेप उन विशिष्ट कार्यों के लिए अपरिहार्य है जहाँ केंद्र से दूरियों का शुद्ध मापन सर्वोपरि उद्देश्य होता है।

296. (A) स्थानिक डेटा को कैप्चर करने, संग्रहीत करने, विश्लेषण करने, प्रबंधित करने और प्रस्तुत करने के लिए।
भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) को सबसे सटीक रूप से स्थानिक डेटा के पूर्ण जीवनचक्र—संग्रहण, सुरक्षित भंडारण, वैज्ञानिक विश्लेषण, कुशल प्रबंधन और दृश्य प्रदर्शन—के लिए डिज़ाइन की गई एक एकीकृत प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और डेटा को एक विश्लेषणात्मक मंच पर लाता है। जीआईएस केवल मानचित्र बनाने का उपकरण नहीं है, बल्कि यह जटिल भौगोलिक समस्याओं को हल करने और स्थानिक संबंधों को गहराई से समझने के लिए एक शक्तिशाली निर्णय समर्थन प्रणाली प्रदान करता है। यह आधुनिक स्थानिक विज्ञान की अनिवार्य रीढ़ है।

297. (A) अपनी गणना में डेटासेट के प्रत्येक मान का उपयोग करता है।
मानक विचलन विक्षेपण का एक अत्यंत उपयोगी और विश्वसनीय सांख्यिकीय माप है क्योंकि यह अपनी गणना की प्रक्रिया में डेटासेट के प्रत्येक व्यक्तिगत मान को शामिल करता है। यह केवल चरम मानों पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि यह स्पष्ट करता है कि औसतन प्रत्येक बिंदु माध्य से कितना विचलित है। यह सूक्ष्मता इसे डेटा की परिवर्तनशीलता और वितरण की स्थिरता को समझने के लिए श्रेष्ठ बनाती है। उच्च मानक विचलन अधिक बिखराव को और कम मान डेटा की सांद्रता को

Click Here to Buy book on Amazon

82. सतपुड़ा-मैकल श्रेणी में 'मैकल' महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किन नदियों का उद्गम क्षेत्र है?
(A) नर्मदा, सोन, जोहिला
(B) चंबल, बेतवा, केन
(C) ताप्ती, वेनगंगा, वर्धा
(D) क्षिप्रा, काली सिंध, पार्वती

83. मध्य प्रदेश में कृषि प्रवृत्तियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सरसों मुरैना और भिंड जैसे उत्तरी जिलों में उगाई जाने वाली प्रमुख रबी तिलहन फसल है।
II. ज्वार की खेती बुंदेलखंड क्षेत्र में इसकी सूखा-प्रतिरोधी प्रकृति के कारण प्रमुख है।
III. नर्मदा घाटी अपनी उपजाऊ मृदा के कारण राज्य के "सोयाबीन के कटोरे" के रूप में प्रसिद्ध है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

84. 'पातालकोट' घाटी, जो अपने विशिष्ट भौगोलिक गर्त और जनजातीय जनसंख्या के लिए प्रसिद्ध है, मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित है?
(A) बालाघाट
(B) मंडला
(C) छिंदवाड़ा
(D) झाबुआ

85. शहडोल, उमरिया और सीधी जिलों में निम्नलिखित में से कौन सा ऊर्जा संसाधन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है?
(A) प्राकृतिक गैस
(B) कोयला
(C) यूरेनियम
(D) पवन ऊर्जा

86. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मध्य भारत के पठार के अंतर्गत आने वाले मध्य प्रदेश के उत्तरी जिलों में जलोढ़ मृदा का उच्च संकेंद्रण है।
कारण (R): यह मृदा मालवा के पठार से निकलने वाली चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों के निक्षेपण कार्य द्वारा निर्मित होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

87. मध्य प्रदेश में कपास और सोयाबीन की कृषि के लिए कौन सी मृदा सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) लैटेराइट मृदा
(B) लाल और पीली मृदा
(C) काली मृदा
(D) जलोढ़ मृदा

88. बाणसागर बांध किस नदी पर स्थित एक प्रमुख बहु-राज्यीय सिंचाई और जलविद्युत परियोजना है?
(A) नर्मदा
(B) चंबल
(C) सोन
(D) केन

89. खनिजों और उनके प्रमुख उत्पादक जिलों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: खनिज
P. तांबा
Q. हीरा
R. मैंगनीज
S. कोयला
सूची II: प्रमुख उत्पादक जिला
1. सिंगरौली
2. बालाघाट (मलंजखंड)
3. बालाघाट (भरवेली)
4. पन्ना
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-1, Q-4, R-3, S-2

90. प्रसिद्ध धुआंधार जलप्रपात किस शहर के निकट नर्मदा नदी पर स्थित है?
(A) नर्मदापुरम
(B) ओंकारेश्वर
(C) जबलपुर
(D) अमरकंटक

91. मध्य प्रदेश में जनसंख्या वितरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) जनसंख्या सभी भौगोलिक क्षेत्रों में समान रूप से वितरित है।
(B) मालवा का पठार और नर्मदा घाटी उच्च जनसंख्या संकेंद्रण वाले क्षेत्र हैं।
(C) बघेलखंड और बुंदेलखंड के पठारों में जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है।
(D) शहरी केंद्र विशेष रूप से नर्मदा नदी के किनारे स्थित हैं।

92. 'दक्कन ट्रैप' नामक भूगर्भीय संरचना मध्य प्रदेश की किस प्रमुख भौगोलिक इकाई के निर्माण के लिए उत्तरदायी है?
(A) बुंदेलखंड का पठार
(B) बघेलखंड का पठार
(C) मालवा का पठार

NODIA

(D) शक्कर

167. बांधों और उनकी नदियों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: बांध
P. बरगी बांध
Q. गांधी सागर बांध
R. बाणसागर परियोजना
S. राजघाट बांध
सूची II: नदी
1. चंबल
2. सोन
3. बेतवा
4. नर्मदा
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

168. विंध्यन कगार मुख्य रूप से किस प्रकार की चट्टान से निर्मित हैं?
(A) बेसाल्ट
(B) ग्रेनाइट
(C) बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
(D) नीस

169. सिंगरौली क्षेत्र में खुली खदान कोयला खनन से संबंधित प्रमुख पर्यावरणीय चिंता क्या है?
(A) भूकंपीय गतिविधि में वृद्धि।
(B) वायु और जल प्रदूषण, और भूमि क्षरण।
(C) बीहड़ों का निर्माण।
(D) मृदा लवणीकरण।

170. भौगोलिक क्षेत्रों का सही पश्चिम-से-पूर्व क्रम कौन सा है?
(A) मालवा का पठार, मध्य भारत का पठार, बघेलखंड का पठार
(B) मध्य भारत का पठार, मालवा का पठार, बुंदेलखंड का पठार, बघेलखंड का पठार
(C) बघेलखंड का पठार, बुंदेलखंड का पठार, मालवा का पठार
(D) मालवा का पठार, नर्मदा घाटी, बुंदेलखंड का पठार

171. 'कलियासोत' और 'केरवा' बांध किस शहर को जलापूर्ति करते हैं?
(A) इंदौर
(B) ग्वालियर
(C) जबलपुर
(D) भोपाल

172. बालाघाट और छिंदवाड़ा में लैटेराइट मृदा की उपस्थिति किसका संकेतक है?
(A) शुष्क मरुस्थलीय जलवायु
(B) स्पष्ट आर्द्र और शुष्क मौसम वाली जलवायु
(C) ठंडी समशीतोष्ण जलवायु
(D) ज्वालामुखीय गतिविधि

173. 'तवा जलाशय' किस संरक्षित क्षेत्र के अंतर्गत स्थित है?
(A) कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
(B) बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान
(C) सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान
(D) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान

174. निम्नलिखित में से कौन सी मध्य प्रदेश की जनसंख्या की प्रमुख विशेषता है?
(A) उच्चतम लिंगानुपात
(B) न्यूनतम साक्षरता दर
(C) अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का उच्च अनुपात
(D) उच्चतम जनसंख्या वृद्धि दर

175. प्रसिद्ध चंदेरी साड़ियाँ किस भौगोलिक क्षेत्र से संबद्ध हैं?
(A) मालवा का पठार
(B) नर्मदा घाटी
(C) बुंदेलखंड का पठार
(D) मध्य भारत का पठार

176. निम्नलिखित में से कौन सा जिला बुंदेलखंड क्षेत्र का हिस्सा नहीं है?
(A) टीकमगढ़
(B) छतरपुर
(C) दतिया
(D) उज्जैन

177. मध्य प्रदेश में विद्युत संसाधनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मध्य प्रदेश में कई ताप विद्युत संयंत्र हैं लेकिन जलविद्युत क्षमता सीमित है।
कथन II: राज्य में बांध निर्माण के लिए उपयुक्त ढाल वाली बारहमासी नदियों का अभाव है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

178. कपास और मिर्च के लिए प्रसिद्ध 'निमाड़' का मैदान किस क्षेत्र का भाग है?
(A) निचली नर्मदा घाटी
(B) चंबल बेसिन
(C) बघेलखंड उच्च भूमि
(D) बुंदेलखंड का मैदान

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

105. मध्य प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नर्मदा घाटी भू-पर्पटी के वलन के कारण निर्मित एक अभिनति बेसिन है।
II. मालवा का पठार राज्य की सबसे बड़ी भौगोलिक इकाई है।
III. बुंदेलखंड का पठार बघेलखंड के पठार के पूर्व में स्थित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II
(C) केवल I और II
(D) I, II और III

106. कोरबा ताप विद्युत केंद्र किस नदी के जल का उपयोग करता है, जो महानदी की सहायक नदी है?
(A) नर्मदा
(B) सोन
(C) हसदेव
(D) गोदावरी

107. भौगोलिक विभाजनों और उनकी विशेषताओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: भौगोलिक विभाजन
P. सतपुड़ा श्रेणी
Q. बुंदेलखंड का पठार
R. विंध्य श्रेणी (मालवा क्षेत्र)
S. नर्मदा घाटी
सूची II: उच्चतम चोटी/विशेषता
1. सिद्ध बाबा चोटी
2. सिगार चोटी
3. धूपगढ़ चोटी
4. संगमरमर की चट्टानें (भेड़ाघाट)
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

108. बघेलखंड क्षेत्र में जनसंख्या के विरल घनत्व का मुख्य कारण क्या है?
(A) भीषण सूखा और अचानक आने वाली बाढ़।
(B) ऊबड़-खाबड़ धरातल, सघन वन और तुलनात्मक रूप से कम मृदा उर्वरता।
(C) बारहमासी नदियों और विश्वसनीय भूजल का पूर्ण अभाव।
(D) मानव बस्ती को प्रतिबंधित करने वाली सरकारी नीतियां।

109. मध्य प्रदेश में गेहूं के अतिरिक्त कौन सी एक प्रमुख रबी फसल है?
(A) चावल
(B) मक्का
(C) चना
(D) ज्वार

110. 'चचाई जलप्रपात' बीहड़ नदी पर स्थित है, यह किस भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत आता है?
(A) मालवा का पठार
(B) रीवा-पन्ना का पठार
(C) बुंदेलखंड का पठार
(D) सतपुड़ा श्रेणी

111. "उत्खात भूमि" स्थलाकृति मध्य प्रदेश के किस नदी बेसिन से संबंधित है?
(A) नर्मदा बेसिन
(B) ताप्ती बेसिन
(C) चंबल बेसिन
(D) सोन बेसिन

112. मध्य प्रदेश के खनिज संसाधनों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) राज्य कोयला और लौह अयस्क के उत्पादन पर एकाधिकार रखता है।
(B) बॉक्साइट के भंडार राज्य के पश्चिमी जिलों में केंद्रित हैं।
(C) प्रमुख कोयला क्षेत्र सतपुड़ा क्षेत्र की गोंडवाना चट्टानों में स्थित हैं।
(D) हीरे की खदानें मालवा पठार के दक्कन ट्रैप में पाई जाती हैं।

113. नेपानगर में अखबारी कागज कारखाने की स्थापना के लिए निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक कारक नहीं है?
(A) बांस और सलाई की लकड़ी की उपलब्धता
(B) समीपवर्ती क्षेत्रों से कोयले की आपूर्ति
(C) निर्यात के लिए समुद्री बंदरगाह से निकटता
(D) ताप्ती नदी से जल की उपलब्धता

114. मिश्रित लाल और काली मृदा सामान्यतः मध्य प्रदेश के किन क्षेत्रों में पाई जाती है?
(A) विशेष रूप से मालवा के पठार में
(B) काली मृदा और लाल-पीली मृदा के मध्य संक्रमण क्षेत्रों में (जैसे सागर, दमोह)
(C) केवल चंबल घाटी में
(D) सतपुड़ा श्रेणी के उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में

115. निम्नलिखित में से कौन सा शहर कर्क रेखा के सर्वाधिक समीप स्थित है?
(A) ग्वालियर
(B) इंदौर
(C) जबलपुर
(D) भोपाल

116. भीमबेटका के शैलाश्रय किस पर्वत श्रृंखला में स्थित हैं?

NODIA

(D) रीवा-पन्ना का पठार

93. निम्नलिखित में से कौन सी मध्य प्रदेश की प्रमुख खरीफ फसल नहीं है?
(A) चावल
(B) सोयाबीन
(C) कपास
(D) गेहूं

94. मध्य प्रदेश की निम्नलिखित नदियों को उनके प्रवाह की दिशा के आधार पर पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. नर्मदा
2. चंबल
3. बेतवा
4. सोन
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 3, 2, 1

95. मध्य प्रदेश के रासायनिक उद्योग में कास्टिक सोडा का उत्पादन मुख्य रूप से कहाँ होता है?
(A) पन्ना और सतना
(B) नागदा और अमलाई
(C) इंदौर और भोपाल
(D) ग्वालियर और मुरैना

96. मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में पाई जाने वाली लैटेराइट मृदा की क्या विशेषता है?
(A) उच्च उर्वरता और पर्णपाती वनों के जीवांश से समृद्ध मृदा।
(B) ज्वालामुखीय बेसाल्ट से उत्पन्न उच्च मृत्तिका अंश वाली गहरी काली मृदा।
(C) उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में तीव्र निक्षालन द्वारा निर्मित, जिससे आयरन ऑक्साइड शेष रह जाता है।
(D) चंबल जैसी नदी प्रणालियों द्वारा महीन गाद के निक्षेपण से निर्मित मृदा।

97. उज्जैन शहर किस नदी के तट पर स्थित है, जो चंबल की सहायक नदी है?
(A) काली सिंध
(B) पार्वती
(C) क्षिप्रा
(D) केन

98. 'सिद्ध बाबा' चोटी (1172 मीटर) किस भौगोलिक क्षेत्र का उच्चतम बिंदु है?
(A) मालवा का पठार
(B) बघेलखंड का पठार
(C) सतपुड़ा श्रेणी
(D) बुंदेलखंड का पठार

99. सतना-रीवा क्षेत्र में सीमेंट उद्योग के संकेंद्रण का सबसे प्रमुख कारण क्या है?
(A) कुशल श्रम की उपलब्धता
(B) दिल्ली के बाजार से निकटता
(C) उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के प्रचुर भंडार
(D) उद्योग लगाने के लिए सरकारी सब्सिडी

100. मध्य प्रदेश के भूविज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बुंदेलखंड क्षेत्र कठोर ग्रेनाइट और नीस चट्टानों से निर्मित है, जिससे भूजल निष्कर्षण कठिन हो जाता है।
कथन II: मालवा का पठार छिद्रयुक्त बेसाल्टिक चट्टान से निर्मित होने के कारण भूजल प्राप्त करने की बेहतर क्षमता रखता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

101. 'बोरी वन्यजीव अभयारण्य' किस पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है?
(A) विंध्य श्रेणी
(B) सतपुड़ा श्रेणी
(C) कैमूर श्रेणी
(D) अरावली श्रेणी

102. चंबल बेसिन में बीहड़ निर्माण से किस प्रकार की कृषि को सर्वाधिक क्षति होती है?
(A) वृक्षारोपण कृषि
(B) झूम कृषि
(C) जलोढ़ मैदानी खेती
(D) सीढ़ीदार खेती

103. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मध्य प्रदेश को प्रायः भारत का 'सोयाबीन राज्य' कहा जाता है।
कारण (R): मालवा के पठार की जलवायु और काली मृदा सोयाबीन की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

104. निम्नलिखित में से कौन सी नदी मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है?
(A) नर्मदा
(B) ताप्ती
(C) चंबल
(D) महानदी

Click Here to Buy book on Amazon

पाए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

129. मध्य प्रदेश में सर्वाधिक वर्षा पचमढ़ी में होती है, जो किस भौगोलिक इकाई में स्थित है?
(A) विंध्य श्रेणी
(B) मालवा का पठार
(C) सतपुड़ा-मैकल श्रेणी
(D) बुंदेलखंड का पठार

130. गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और जवाहर सागर बांध किस नदी पर निर्मित हैं?
(A) नर्मदा
(B) चंबल
(C) सोन
(D) बेतवा

131. उद्योगों और उनके प्रमुख स्थानों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: उद्योग
P. एल्युमीनियम संयंत्र
Q. अखबारी कागज मिल
R. सिक्योरिटी पेपर मिल
S. प्रमुख सीमेंट केंद्र
सूची II: प्रमुख स्थान
1. नेपानगर
2. नर्मदापुरम
3. सतना
4. रेनुकूट
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

132. गुजरात का 'काकरापार' परमाणु ऊर्जा संयंत्र उस नदी के निचले प्रवाह पर स्थित है जो मध्य प्रदेश से निकलती है:
(A) नर्मदा
(B) माही
(C) ताप्ती
(D) साबरमती

133. मध्य प्रदेश का कौन सा भौगोलिक क्षेत्र आर्कियन युग की प्राचीनतम चट्टानों, विशेष रूप से बुंदेलखंड नीस से निर्मित है?
(A) मालवा का पठार
(B) बुंदेलखंड का पठार
(C) नर्मदा घाटी
(D) बघेलखंड का पठार

134. निम्नलिखित में से कौन सी काली मृदा की विशेषता नहीं है?
(A) उच्च जल धारण क्षमता
(B) चूना, लोहा और मैग्नीशिया से भरपूर
(C) शुष्क होने पर गहरी दरारें विकसित होना
(D) प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होना

135. 'सरदार सरोवर परियोजना' किस नदी पर स्थित है?
(A) ताप्ती
(B) माही
(C) चंबल
(D) नर्मदा

136. बघेलखंड क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से किस पर निर्भर है?
(A) बागवानी और पुष्प कृषि
(B) ऑटोमोबाइल विनिर्माण
(C) खनिज और वन संसाधन
(D) सेवा और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग

137. मध्य प्रदेश में वर्षा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मध्य प्रदेश के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी भागों में पश्चिमी भागों की तुलना में अधिक वर्षा होती है।
कथन II: दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा पूरे राज्य के लिए वर्षा का प्राथमिक स्रोत है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

138. ग्वालियर, शिवपुरी और मुरैना का क्षेत्र किस भौगोलिक विभाग का भाग है?
(A) बुंदेलखंड का पठार
(B) रीवा-पन्ना का पठार
(C) मध्य भारत का पठार
(D) मालवा का पठार

139. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मालवा का पठार राज्य का प्रमुख कृषि क्षेत्र है, जो सोयाबीन और गेहूं जैसी फसलों के लिए प्रसिद्ध है।
कारण (R): यह पठार उपजाऊ काली मृदा से आच्छादित है और यहाँ मध्यम वर्षा होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

193. बुंदेलखंड और मालवा पठार के मध्य मुख्य अंतर किसमें है?
(A) ऊँचाई
(B) भूविज्ञान और मृदा प्रकार
(C) वर्षा का स्वरूप
(D) प्रमुख भाषा

194. 'हलाली' बांध किस नदी की सहायक नदी पर स्थित है?
(A) चंबल
(B) नर्मदा
(C) बेतवा
(D) सोन

195. मध्य प्रदेश के उद्योगों के बारे में कथनों पर विचार कीजिए:
I. नेपानगर अखबारी कागज के लिए प्रसिद्ध है।
II. पीथमपुर ऑटोमोबाइल का केंद्र है।
III. कटनी को 'चूना नगरी' कहा जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

196. 'पेंच राष्ट्रीय उद्यान' मध्य प्रदेश और किस राज्य की सीमा पर स्थित है?
(A) उत्तर प्रदेश
(B) राजस्थान
(C) महाराष्ट्र
(D) छत्तीसगढ़

197. मध्य प्रदेश से निकलने वाली पूर्व की ओर बहने वाली नदी कौन सी है?
(A) ताप्ती
(B) नर्मदा
(C) माही
(D) सोन

198. "रीवा-पन्ना पठार" को किस अन्य नाम से जाना जाता है?
(A) सतपुड़ा का पठार
(B) विंध्यन कगारी भूमि
(C) मालवा का पठार
(D) बुंदेलखंड नीस

199. नर्मदा घाटी किसके रूप में कार्य करती है?
(A) प्रतिकर्ष क्षेत्र
(B) विरल जनजातीय पट्टी
(C) सघन बस्ती और कृषि का रैखिक गलियारा
(D) औद्योगिक बाह्य-प्रवास का क्षेत्र

200. मृदा के प्रकारों और उनके क्षेत्रों को सुमेलित कीजिए।
सूची I: मृदा
P. काली मृदा
Q. जलोढ़ मृदा
R. लाल और पीली मृदा
S. लैटेराइट मृदा
सूची II: क्षेत्र
1. बघेलखंड
2. मालवा का पठार
3. उत्तरी मध्य प्रदेश
4. बालाघाट
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

201. 'सोहागपुर' और 'उमरिया' किस संसाधन से संबद्ध हैं?
(A) बॉक्साइट
(B) कोयला
(C) मीथेन
(D) यूरेनियम

202. बुंदेलखंड पठार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह बेतवा और केन जैसी उत्तर की ओर बहने वाली नदियों द्वारा अपवाहित होता है।
कथन II: इस पठार का सामान्य ढाल दक्षिण की ओर है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

203. 'ड्यूरम गेहूं' किस क्षेत्र की विशेषता है?
(A) बघेलखंड
(B) बुंदेलखंड
(C) मालवा और नर्मदा घाटी
(D) चंबल क्षेत्र

204. चंबल नदी के उद्गम के सर्वाधिक समीप कौन सा शहर है?
(A) उज्जैन
(B) महू
(C) ग्वालियर
(D) भोपाल

205. अभिकथन (A): झाबुआ और अलीराजपुर में जनजातीय जनसंख्या का उच्च संकेंद्रण है।
कारण (R): ये जिले पहाड़ी और वनाच्छादित हैं जो ऐतिहासिक रूप से शरण स्थल रहे हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

154. मध्य प्रदेश में कृषि स्थितियों के बारे में कथनों पर विचार कीजिए:
I. नर्मदा बेसिन उपजाऊ गहरी काली मृदा के लिए प्रसिद्ध है।
II. चंबल बेसिन जलोढ़ मृदा के लिए प्रसिद्ध है जो अवनालिका अपरदन के प्रति संवेदनशील है।
III. बघेलखंड क्षेत्र में कम उपजाऊ लाल और पीली मृदा पाई जाती है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

155. 'ओंकारेश्वर' बांध किस नदी पर स्थित है?
(A) ताप्ती
(B) क्षिप्रा
(C) नर्मदा
(D) चंबल

156. बैतूल जिले के सारणी में स्थित ताप विद्युत संयंत्र मुख्य रूप से किस कोयला क्षेत्र का उपयोग करते हैं?
(A) सिंगरौली
(B) सोहागपुर
(C) पाथाखेड़ा
(D) उमरिया

157. मालवा के पठार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मालवा का पठार खनिज भंडारों की दृष्टि से निर्धन है।
कथन II: पठार दक्कन ट्रैप से निर्मित है, जिसमें सामान्यतः धात्विक खनिज नहीं पाए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

158. निम्नलिखित में से कौन सा मध्य प्रदेश का प्रमुख भौगोलिक विभाजन नहीं है?
(A) नर्मदा-सोन घाटी
(B) मालवा का पठार
(C) दक्कन का मुख्य पठार
(D) बघेलखंड का पठार

159. 'माताटीला बांध' किस नदी पर निर्मित है?
(A) नर्मदा
(B) चंबल
(C) केन
(D) बेतवा

160. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र संतरे और कपास दोनों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है?
(A) रीवा
(B) ग्वालियर
(C) छिंदवाड़ा/खंडवा क्षेत्र
(D) सागर

161. ग्वालियर, भिंड और मुरैना जिलों में मुख्य रूप से कौन सी मृदा पाई जाती है?
(A) काली मृदा
(B) लैटेराइट मृदा
(C) जलोढ़ मृदा
(D) लाल और पीली मृदा

162. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): बालाघाट और मंडला जिलों में ग्वालियर और शिवपुरी की तुलना में अधिक वर्षा होती है।
कारण (R): ये जिले राज्य के पूर्वी भाग में स्थित हैं और बंगाल की खाड़ी शाखा के मार्ग के समीप हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

163. पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र किस भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है?
(A) बघेलखंड का पठार
(B) मालवा का पठार
(C) नर्मदा घाटी
(D) बुंदेलखंड का पठार

164. केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना से मुख्य रूप से किस क्षेत्र को लाभ होगा?
(A) मालवा
(B) बघेलखंड
(C) निमाड़
(D) बुंदेलखंड

165. बघेलखंड पठार का सबसे सटीक वर्णन क्या है?
(A) नदी अपरदन द्वारा निर्मित बीहड़ क्षेत्र।
(B) गोंडवाना संरचना वाला ऊबड़-खाबड़ पठार, जो कोयला भंडार में समृद्ध है।
(C) बेसाल्टिक लावा से निर्मित मोटी काली मृदा वाला पठार।
(D) गेहूं उत्पादन के लिए प्रसिद्ध उपजाऊ जलोढ़ मैदान।

166. निम्नलिखित में से कौन सी नर्मदा की सहायक नदी नहीं है?
(A) तवा
(B) हिरण
(C) पूर्णा

Click Here to Buy book on Amazon

140. मध्य प्रदेश से निकलने वाली वह कौन सी प्रायद्वीपीय नदी है जो उत्तर की ओर बहकर गंगा तंत्र में मिल जाती है?
(A) नर्मदा
(B) ताप्ती
(C) सोन
(D) गोदावरी

141. मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र कौन सा है?
(A) सोहागपुर कोयला क्षेत्र
(B) पेंच-कान्हा घाटी कोयला क्षेत्र
(C) सिंगरौली कोयला क्षेत्र
(D) उमरिया कोयला क्षेत्र

142. मानसून के जल संरक्षण के लिए अपनाई जाने वाली पारंपरिक 'हवेली' प्रणाली किस क्षेत्र में प्रचलित है?
(A) चंबल घाटी
(B) नर्मदा घाटी
(C) बघेलखंड का पठार
(D) बुंदेलखंड का पठार

143. भेड़ाघाट की "संगमरमर की चट्टानें" मुख्य रूप से किस खनिज से निर्मित हैं?
(A) डोलोमाइट
(B) चूना पत्थर
(C) कैल्साइट
(D) जिप्सम

144. निम्नलिखित में से कौन सा मध्य प्रदेश के प्रमुख रासायनिक उद्योग का उदाहरण है?
(A) हीरा तराशना
(B) उर्वरक उत्पादन
(C) अखबारी कागज निर्माण
(D) एल्युमीनियम प्रगलन

145. 'सिगार चोटी' किस भौगोलिक विभाग का उच्चतम बिंदु है?
(A) बुंदेलखंड का पठार
(B) सतपुड़ा श्रेणी
(C) मालवा का पठार
(D) बघेलखंड का पठार

146. निम्नलिखित में से कौन सी फसल मालवा पठार की कृषि अर्थव्यवस्था का प्रमुख हिस्सा नहीं है?
(A) गेहूं
(B) सोयाबीन
(C) कपास
(D) चावल

147. मध्य प्रदेश की प्रमुख नदियों के बारे में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) नर्मदा भारत में पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे लंबी नदी है।
(B) चंबल महू के समीप जनापाव पहाड़ियों से निकलती है।
(C) सोन नदी प्रयागराज के समीप नर्मदा से मिलती है।
(D) प्रदूषण स्तर के कारण बेतवा को 'मध्य प्रदेश की गंगा' कहा जाता है।

148. मध्य प्रदेश की जनजातीय जनसंख्या राज्य के किन क्षेत्रों में सर्वाधिक केंद्रित है?
(A) उत्तरी और मध्य जिले
(B) दक्षिणी और पूर्वी जिले
(C) केवल पश्चिमी जिले
(D) विशेष रूप से नर्मदा घाटी

149. 'राजघाट बांध' मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के मध्य किस नदी पर एक संयुक्त परियोजना है?
(A) केन
(B) धसान
(C) बेतवा
(D) चंबल

150. निम्नलिखित औद्योगिक प्रक्रियाओं को उत्पादन श्रृंखला के आधार पर व्यवस्थित कीजिए:
1. बॉक्साइट का खनन
2. एलुमिना का उत्पादन
3. एलुमिना का प्रगलन
4. एल्युमीनियम उत्पादों का विनिर्माण
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

151. कौन सा भौगोलिक विभाग भारत में एक प्रमुख जल विभाजक का कार्य करता है?
(A) बुंदेलखंड का पठार
(B) बघेलखंड का पठार
(C) विंध्य-सतपुड़ा श्रेणियां
(D) मध्य भारत का पठार

NODIA

152. बघेलखंड जैसे क्षेत्रों में मृदा का लाल-पीला रंग किसके कारण होता है?
(A) उच्च जीवांश सामग्री
(B) ज्वालामुखीय उत्पत्ति
(C) रवेदार और रूपांतरित चट्टानों में लोहे का प्रसार
(D) लोयस का निक्षेपण

153. बुंदेलखंड क्षेत्र के आर्थिक पिछड़ेपन का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) भौगोलिक पृथक्करण
(B) प्रतिकूल कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ और सतही संसाधनों की कमी
(C) सीमित भूमि पर अत्यधिक जनसंख्या का दबाव
(D) राजनीतिक अस्थिरता

179. 'राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य' किस जीव के संरक्षण के लिए स्थापित किया गया था?
(A) बाघ
(B) बारहसिंगा
(C) घड़ियाल
(D) सोन चिरैया

180. नर्मदा और सोन का उद्गम स्थल 'अमरकंटक' किस पहाड़ी श्रृंखला का भाग है?
(A) विंध्य श्रेणी
(B) महादेव पहाड़ियाँ
(C) मैकल श्रेणी
(D) भांडेर श्रेणी

181. नर्मदा-सोन घाटी किन दो श्रेणियों को अलग करती है?
(A) मालवा और बुंदेलखंड
(B) विंध्याचल और सतपुड़ा
(C) बघेलखंड और मध्य भारत
(D) मालवा और मध्य भारत

182. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. दक्कन ट्रैप के अपक्षय से निर्मित।
II. स्वतः जुताई वाली प्रकृति।
III. कपास के लिए उपयुक्त।
यह किस मृदा का वर्णन है?
(A) जलोढ़ मृदा
(B) लैटेराइट मृदा
(C) काली मृदा
(D) लाल और पीली मृदा

183. निम्नलिखित में से कौन सी नदी मध्य प्रदेश से नहीं निकलती है?
(A) चंबल
(B) बेतवा
(C) महानदी
(D) ताप्ती

184. मध्य प्रदेश में न्यूनतम वर्षा कहाँ दर्ज की जाती है?
(A) पचमढ़ी
(B) मिंड
(C) बालाघाट
(D) रीवा

185. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): रीवा-पन्ना पठार में सीमेंट उद्योग विकसित है।
कारण (R): इस क्षेत्र में पर्याप्त कोयला भंडार का अभाव है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

186. ऐतिहासिक ओरछा शहर किस नदी के तट पर स्थित है?
(A) केन
(B) धसान
(C) बेतवा
(D) नर्मदा

187. भौगोलिक क्षेत्र और उसकी मुख्य फसल का कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) बघेलखंड का पठार - गेहूं
(B) बुंदेलखंड का पठार - सोयाबीन
(C) मालवा का पठार - कपास और सोयाबीन
(D) मध्य भारत का पठार - चावल

188. उर्वरक उद्योग में प्रयुक्त 'रॉक फॉस्फेट' मध्य प्रदेश के किस जिले में पाया जाता है?
(A) बालाघाट
(B) पन्ना
(C) झाबुआ
(D) सिंगरौली

189. मध्य भारत के पठार के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है।
(B) यह चंबल नदी द्वारा अपवाहित है।
(C) यह उपजाऊ काली मृदा के लिए जाना जाता है।
(D) यहाँ बीहड़ पाए जाते हैं।

190. नर्मदा पर स्थित बांधों को पूर्व से पश्चिम के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. इंदिरा सागर
2. बरगी
3. सरदार सरोवर
4. ओंकारेश्वर
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 3, 4, 1, 2

191. मालवा के पठार में कृषि के लिए मुख्य चुनौती क्या है?
(A) मृदा की खराब गुणवत्ता
(B) बार-बार बाढ़
(C) गिरता भूजल स्तर
(D) बाजार का अभाव

192. 'अमरकंटक ताप विद्युत केंद्र' किस जिले में स्थित है?
(A) शहडोल
(B) अनूपपुर
(C) उमरिया
(D) सीधी

Downloaded from www.pdf.tube

(A) सतपुड़ा श्रेणी
(B) विंध्य श्रेणी
(C) मैकल श्रेणी
(D) कैमूर श्रेणी

117. चंबल नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चंबल नदी अपने निचले मार्ग में मार्ग परिवर्तन के लिए जानी जाती है।
कथन II: नदी का उच्च अवसाद भार और मध्य भारत के पठार का कोमल जलोढ़ निक्षेप इसके विसर्पण और बीहड़ निर्माण में सहायक है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

118. बुंदेलखंड पठार में कृषि विकास की प्रमुख बाधा क्या है?
(A) कृषि योग्य भूमि का अभाव
(B) अनिश्चित वर्षा और मृदा की कम जल धारण क्षमता
(C) कीटों का अत्यधिक प्रकोप
(D) कृषि उत्पादों के बाजार का अभाव

119. बालाघाट जिले की 'भरवेली खदान' किस खनिज के लिए एशिया की सबसे बड़ी भूमिगत खदान है?
(A) तांबा
(B) कोयला
(C) मैंगनीज
(D) बॉक्साइट

120. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नर्मदा और ताप्ती नदियाँ भ्रंश घाटियों से होकर प्रवाहित होती हैं।
कारण (R): इन घाटियों का निर्माण पर्वत निर्माणकारी प्रक्रियाओं के दौरान दो समानांतर भ्रंशों के मध्य भू-खंड के धंसने से हुआ है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

121. निम्नलिखित में से कौन सा जिला मालवा पठार का भाग नहीं है?
(A) इंदौर
(B) उज्जैन
(C) सीधी
(D) देवास

122. मध्य प्रदेश में मृदा के प्रकारों को उनके क्षेत्र विस्तार के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. काली मृदा
2. लाल और पीली मृदा
3. जलोढ़ मृदा
4. लैटेराइट मृदा
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 3, 1, 4

123. 'ओरिएंट पेपर मिल' किस जिले में स्थित है?
(A) नर्मदापुरम
(B) शहडोल
(C) बैतूल
(D) सतना

124. मालवा के पठार की जनसंख्या का प्राथमिक व्यवसाय क्या है?
(A) खनन
(B) वानिकी
(C) कृषि
(D) मत्स्य पालन

125. मध्य प्रदेश की नदियों से संबंधित कौन सा कथन गलत है?
(A) नर्मदा भारत की पांचवीं सबसे बड़ी नदी है।
(B) सोन नदी अमरकंटक से निकलकर उत्तर-पूर्व की ओर बहते हुए गंगा में मिल जाती है।
(C) वैनगंगा नदी उत्तर की ओर बहकर यमुना में मिल जाती है।
(D) ताप्ती नदी बैतूल में सतपुड़ा श्रेणी से निकलती है।

126. मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में पाए जाने वाले विंध्याचल शैल समूह की चट्टानें किसका महत्वपूर्ण स्रोत हैं?
(A) कोयला और पेट्रोलियम
(B) हीरा और चूना पत्थर
(C) तांबा और मैंगनीज
(D) बॉक्साइट और लौह अयस्क

127. मध्य प्रदेश की जलवायु का सबसे सटीक वर्णन किस रूप में किया जा सकता है?
(A) उष्णकटिबंधीय मानसून
(B) भूमध्यरेखीय
(C) उष्ण मरुस्थलीय
(D) टुंड्रा

128. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मध्य प्रदेश भारत में हीरे का एकमात्र उत्पादक है।
II. राज्य तांबा अयस्क का अग्रणी उत्पादक है, जहाँ मलंजखंड एक प्रमुख खदान है।
III. चूना पत्थर के भंडार मुख्य रूप से मालवा पठार क्षेत्र में

NODIA

206. नर्मदा और सोन नदियों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) जल की मात्रा
(B) प्रवाह की दिशा
(C) जल की शुद्धता
(D) लंबाई

207. नेपानगर में कागज उद्योग किस पर निर्भर है?
(A) शहरी कार्यबल
(B) वन आधारित कच्चे माल की आपूर्ति
(C) अंतर्राष्ट्रीय बाजार
(D) शुष्क जलवायु

208. कौन सा क्षेत्र उत्तर में यमुना के मैदान और दक्षिण में मालवा पठार से घिरा है?
(A) मध्य भारत का पठार
(B) बघेलखंड का पठार
(C) बुंदेलखंड का पठार
(D) नर्मदा घाटी

209. रिहंद किसकी सहायक नदी है?
(A) नर्मदा
(B) चंबल
(C) यमुना
(D) सोन

210. मध्य प्रदेश और गुजरात को लाभ पहुँचाने वाली नर्मदा बेसिन की परियोजना है:
(A) बाणसागर
(B) राजघाट
(C) सरदार सरोवर
(D) माताटीला

211. 'भेल' संयंत्र कहाँ स्थित है?
(A) इंदौर
(B) जबलपुर
(C) ग्वालियर
(D) भोपाल

212. पन्ना में हीरे की उपस्थिति का कारण है:
(A) बेसाल्टिक लावा
(B) गोंडवाना कोयला संस्तर
(C) किम्बरलाइट पाइप
(D) जलोढ़ निक्षेप

213. मध्य भारत के पठार की जलवायु का प्रकार है:
(A) आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय
(B) उष्णकटिबंधीय आर्द्र
(C) स्टेपी-तुल्य
(D) समुद्री जलवायु

214. सतपुड़ा श्रेणी के बारे में सही कथन है:
(A) यह एक ब्लॉक पर्वत है जो नर्मदा और ताप्ती भ्रंशों के मध्य स्थित है।
(B) यह एक वलित पर्वत है।
(C) यह एक ज्वालामुखी पर्वत है।
(D) यह उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित है।

215. काली सिंध, पार्वती और क्षिप्रा किसकी सहायक नदियाँ हैं?
(A) नर्मदा
(B) बेतवा
(C) चंबल
(D) सोन

216. संसाधनों के वितरण के संबंध में कथनों पर विचार कीजिए:
I. बघेलखंड कोयले में समृद्ध है।
II. बालाघाट तांबा और मैंगनीज में समृद्ध है।
III. मालवा काली मृदा में समृद्ध है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) I, II और III

217. छत्तीसगढ़ के मैदान तत्कालीन मध्य प्रदेश के किस भौगोलिक क्षेत्र का हिस्सा थे?
(A) मालवा का पठार
(B) महानदी बेसिन
(C) नर्मदा घाटी
(D) बुंदेलखंड उच्च भूमि

218. 'अल्कलॉइड फैक्ट्री' कहाँ स्थित है?
(A) मंदसौर
(B) नीमच
(C) रतलाम
(D) उज्जैन

219. कथन I: नर्मदा को "मध्य प्रदेश की जीवन रेखा" कहा जाता है।
कथन II: राज्य की कृषि और उद्योग नर्मदा बेसिन पर निर्भर हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

220. 'जनापाव कुटी' किस नदी का उद्गम स्थल है?
(A) क्षिप्रा
(B) बेतवा
(C) माही
(D) चंबल

221. नर्मदा रिफ्ट घाटी के निर्माण का परिणाम है:
(A) कोयला भंडार का निर्माण।
(B) नर्मदा का पश्चिम की ओर प्रवाह।

Click Here to Buy book on Amazon

(C) केवल I और II
(D) I, II और III

251. सही सुमेलित युग्म है:
(A) पन्ना - कागज
(B) नेपानगर - सीमेंट
(C) रेनुकूट - एल्युमीनियम
(D) कटनी - एल्युमीनियम

252. झाबुआ और अलीराजपुर की विशेषता है:
(A) उच्च शहरीकरण
(B) पहाड़ी इलाका और भील जनजाति की प्रधानता
(C) गहन गेहूं कृषि
(D) बड़े औद्योगिक परिसर

253. 'माता टीला' बांध किस राज्य के साथ संयुक्त परियोजना है?
(A) राजस्थान
(B) गुजरात
(C) महाराष्ट्र
(D) उत्तर प्रदेश

254. बघेलखंड पठार के संबंध में कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह राज्य का सबसे विकसित क्षेत्र है।
कथन II: यहाँ समृद्ध कोयला और बॉक्साइट भंडार हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(D) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

255. 'सांची' किस नदी के समीप स्थित है?
(A) नर्मदा
(B) क्षिप्रा
(C) बेतवा
(D) चंबल

256. शहडोल जिले में कौन सी मृदा पाई जाती है?
(A) काली मृदा
(B) जलोढ़ मृदा
(C) लाल और पीली मृदा
(D) मरुस्थलीय मृदा

257. मंदसौर और नीमच किसकी खेती के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) सोयाबीन
(B) कपास
(C) अफीम
(D) गन्ना

258. 'बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान' किस श्रेणी में है?
(A) सतपुड़ा श्रेणी
(B) महादेव पहाड़ियाँ
(C) विंध्य श्रेणी
(D) मैकल श्रेणी

259. मध्य प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा संसाधन है:
(A) पेट्रोलियम
(B) प्राकृतिक गैस
(C) कोयला
(D) भूतापीय ऊर्जा

260. जिलों और संसाधनों को सुमेलित कीजिए।
सूची I: जिला
P. पन्ना
Q. बालाघाट
R. सिंगरौली
S. सतना
सूची II: संसाधन
1. कोयला
2. चूना पत्थर
3. हीरा
4. तांबा
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

261. 'महेश्वर' परियोजना किस नदी पर है?
(A) चंबल
(B) ताप्ती
(C) सोन
(D) नर्मदा

262. भूगर्भीय रूप से नर्मदा-सोन घाटी एक क्या है?
(A) हॉर्स्ट
(B) ग्रेबेन
(C) अभिनति
(D) अपनति

263. मध्य भारत के पठार में कम उत्पादकता का कारण है:
(A) अकुशल किसान
(B) छोटी जोतें
(C) मृदा गुणवत्ता और जल आपूर्ति की कमी
(D) सरकारी उपेक्षा

264. 'राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग संस्थान' कहाँ है?
(A) इंदौर
(B) भोपाल
(C) जबलपुर
(D) ग्वालियर

265. मध्य प्रदेश और राजस्थान के मध्य सीमा बनाने वाली नदी है:
(A) नर्मदा
(B) बेतवा

NODIA

(C) हैवी इंजीनियरिंग
(D) एल्युमीनियम

236. नर्मदा घाटी की अधिकांश जनसंख्या किसमें संलग्न है?
(A) पशुपालन
(B) सघन कृषि
(C) वानिकी
(D) औद्योगिक श्रम

237. 'वैनगंगा' किस जिले की मुख्य नदी है?
(A) मुरैना
(B) उज्जैन
(C) बालाघाट
(D) नीमच

238. सतपुड़ा श्रेणी के संबंध में कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: यह मैकल और महादेव पहाड़ियों में अधिक चौड़ी है।
कथन II: इसका पश्चिमी भाग राजपीपला पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

239. ग्वालियर और शिवपुरी के पठार किस इकाई के भाग हैं?
(A) मालवा का पठार
(B) मध्य भारत का पठार
(C) बुंदेलखंड का पठार
(D) रीवा-पन्ना का पठार

240. 'बेतवा' नदी का उद्गम स्थल है:
(A) इंदौर
(B) भोपाल
(C) रायसेन
(D) नर्मदापुरम

241. 'ऊर्जा संसाधन' का उदाहरण है:
(A) बॉक्साइट
(B) चूना पत्थर
(C) कोयला
(D) तांबा

242. पठारों को पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मालवा
2. बुंदेलखंड
3. बघेलखंड
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

243. उत्तरी जिलों में कम लिंगानुपात का संबंध किससे है?
(A) खनिज
(B) उद्योग
(C) जनसांख्यिकी
(D) वर्षा

244. 'पचमढ़ी बायोस्फीयर रिजर्व' में शामिल हैं:
(A) कान्हा, बांधवगढ़
(B) बोरी अभयारण्य, सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान
(C) कूनो, माधव
(D) चंबल अभयारण्य

245. अभिकथन (A): मध्य प्रदेश में सीमेंट संयंत्रों की संख्या अधिक है।
कारण (R): विंध्यन क्षेत्र में चूना पत्थर के व्यापक भंडार हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

246. 'जोहिला' नदी कहाँ से निकलती है?
(A) अमरकंटक
(B) भोपाल
(C) बैतूल
(D) महू

247. 'कूनो राष्ट्रीय उद्यान' किस क्षेत्र में है?
(A) बघेलखंड का पठार
(B) मालवा का पठार
(C) मध्य भारत का पठार
(D) नर्मदा घाटी

248. 'ग्वालियर व्यापार मेला' किस क्षेत्र का प्रमुख केंद्र है?
(A) मालवा
(B) बुंदेलखंड
(C) मध्य भारत
(D) बघेलखंड

249. दक्कन ट्रैप ज्वालामुखी का प्रभाव है:
(A) विंध्य का निर्माण
(B) मालवा पठार और काली मृदा का निर्माण
(C) कोयला निक्षेप
(D) बीहड़ निर्माण

250. कथनों पर विचार कीजिए:
I. नर्मदा एक बारहमासी नदी है।
II. चंबल ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती है।
III. सोन खनिज समृद्ध पठार से बहती है।
(A) केवल I और III
(B) केवल II

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) मालवा का पठार
मालवा का पठार मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित है और यह राज्य की सबसे बड़ी भौगोलिक इकाई है। इसका निर्माण प्राचीन ज्वालामुखीय लावा के जमने से हुआ है, जिससे यहाँ अत्यंत उपजाऊ काली मिट्टी का विस्तार पाया जाता है। यह क्षेत्र राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 28 प्रतिशत भाग घेरता है और कृषि उत्पादन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मध्य प्रदेश में काली मिट्टी मुख्य रूप से मालवा के पठार और नर्मदा घाटी में विस्तृत है, जो कपास और सोयाबीन के लिए उत्तम मानी जाती है। दूसरी ओर, लाल और पीली मिट्टी बघेलखंड क्षेत्र में पाई जाती है। इस मृदा में नाइट्रोजन और जीवांश की भारी कमी होती है, जिसके कारण इसकी उर्वरता कम होती है। अतः राज्य की मृदा संरचना के संदर्भ में दोनों कथन सत्य हैं।

3. (C) सोन
मध्य प्रदेश की अधिकांश बड़ी नदियाँ जैसे नर्मदा, ताप्ती और माही पश्चिम की ओर प्रवाहित होकर अरब सागर में गिरती हैं। इसके विपरीत, सोन नदी अमरकंटक के पठार से निकलकर उत्तर-पूर्व की ओर बहती है और अंततः बिहार में गंगा नदी में मिल जाती है। सोन नदी गंगा तंत्र का हिस्सा है, जबकि नर्मदा और ताप्ती भ्रंश घाटियों से होकर अपना जल ले जाती हैं।

4. (D) दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर
मध्य प्रदेश में वर्षा का वितरण असमान है और इसकी मात्रा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर जाने पर निरंतर कम होती जाती है। राज्य के दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे बालाघाट में सर्वाधिक वर्षा होती है, जबकि उत्तर-पश्चिमी जिलों जैसे भिंड और मुरैना में सबसे कम वर्षा दर्ज की जाती है। मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा उत्तर-पश्चिम तक पहुँचते-पहुँचते अपनी अधिकांश नमी खो देती है।

5. (C) चावल की खेती पश्चिमी, कम वर्षा वाले जिलों तक सीमित है।
मध्य प्रदेश के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी हिस्सों में चावल की खेती प्रमुखता से की जाती है, क्योंकि यहाँ वर्षा अधिक होती है। पश्चिमी जिलों में कम वर्षा और काली मिट्टी के कारण सोयाबीन और कपास का उत्पादन अधिक होता है। राज्य सोयाबीन और दलहन का अग्रणी उत्पादक है और मालवा में गेहूं प्रमुख रबी फसल है। चंबल घाटी में नहरों के माध्यम से सिंचाई की उत्तम सुविधा उपलब्ध है।

6. (B) तांबा
मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में स्थित मलंजखंड खदान तांबा अयस्क के निष्कर्षण के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यह एशिया की सबसे बड़ी खुले मुँह वाली तांबा खदान मानी जाती है, जहाँ से हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा उत्खनन किया जाता है। यहाँ तांबे के विशाल भंडार मौजूद हैं, जो राज्य को खनिज राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट भूगर्भीय संरचना के लिए प्रसिद्ध है।

7. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मध्य प्रदेश के विभिन्न औद्योगिक केंद्र विशिष्ट उत्पादों के लिए जाने जाते हैं। पन्ना अपनी हीरा खदानों के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जबकि नेपानगर में देश का पहला अखबारी कागज कारखाना स्थापित किया गया था। कोरबा क्षेत्र एल्युमीनियम उद्योग का प्रमुख केंद्र रहा है और कटनी जिला अपने चूना पत्थर के भंडारों के कारण सीमेंट उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यह मिलान राज्य की औद्योगिक विविधता को दर्शाता है।

8. (A) मध्य भारत का पठार
मध्य भारत का पठार मुख्य रूप से चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित गहरे बीहड़ों और उत्खात भूमि के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र भिंड, मुरैना और श्योपुर जिलों में विस्तृत है, जहाँ मृदा अपरदन एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है। चंबल नदी ने कोमल जलोढ़ मिट्टी को काटकर उबड़-खाबड़ स्थलाकृति का निर्माण किया है। यह भौगोलिक विशेषता इस पठार को अन्य विभागों से अलग बनाती है।

9. (C) नर्मदा और सोन
अनूपपुर जिले में स्थित अमरकंटक का पठार मध्य प्रदेश का एक अत्यंत महत्वपूर्ण जल विभाजक और नदी उद्गम स्थल है। यहाँ से नर्मदा नदी पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर में गिरती है, जबकि सोन नदी उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित होकर गंगा में मिल जाती है। इसी स्थान से जोहिला नदी का भी उद्गम होता है। अमरकंटक की पहाड़ियाँ मैकल श्रेणी का हिस्सा हैं, जो अत्यंत पवित्र मानी जाती हैं।

10. (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
मालवा के पठार की जलवायु समशीतोष्ण है, जिसे चीनी यात्री फाह्यान ने विश्व की सर्वश्रेष्ठ जलवायु कहा था। यहाँ न तो ग्रीष्म ऋतु में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है और न ही शीत ऋतु में कड़ाके की ठंड होती है। यद्यपि पठार की ऊँचाई और कर्क रेखा की स्थिति जलवायु को प्रभावित करती है, लेकिन इस विशिष्ट प्रकृति का मुख्य कारण इसकी समुद्र से दूरी और भौगोलिक स्थिति है।

11. (D) मरुस्थलीय मृदा
मध्य प्रदेश की भूगर्भीय विविधता के कारण यहाँ काली, लाल-पीली, जलोढ़ और लैटेराइट मिट्टी के प्रकार पाए जाते हैं। काली मिट्टी राज्य के सर्वाधिक भू-भाग पर विस्तृत है, जबकि उत्तर में

Downloaded from www.pdf.tube

(C) चंबल
(D) सोन

266. बुंदेलखंड पठार की विशेषता नहीं है:
(A) नीस से निर्मित
(B) उत्तरवर्ती नदियाँ
(C) उपजाऊ गहरी काली मृदा
(D) तापीय विषमता

267. अनूपपुर जिले का महत्व है:
(A) उच्चतम चोटी
(B) नर्मदा और सोन का उद्गम
(C) सबसे बड़ी कोयला खदान
(D) हीरे की खदानें

268. 'गजक' किस क्षेत्र का प्रसिद्ध उत्पाद है?
(A) मालवा
(B) बघेलखंड
(C) निमाड़
(D) मध्य भारत (मुरैना)

269. 'विंध्याचल ताप विद्युत केंद्र' कहाँ स्थित है?
(A) शहडोल
(B) बैतूल
(C) सिंगरौली
(D) खंडवा

270. अभिकथन (A): मालवा पठार की पश्चिमी सीमा अरावली से मिलती है।
कारण (R): मालवा का पठार पहाड़ी दीवारों से पूर्णतः पृथक है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

271. भिंड-मुरैना में मृदा अपरदन का कारण है:
(A) वायु अपरदन
(B) परत अपरदन
(C) अवनालिका अपरदन
(D) हिमनद अपरदन

272. 'कान्हा और पेंच घाटी' किसके लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) बॉक्साइट
(B) लौह अयस्क
(C) कोयला
(D) चूना पत्थर

273. 'असीरगढ़' का किला कहाँ है?
(A) खंडवा
(B) खरगोन
(C) बुरहानपुर
(D) बैतूल

274. कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मध्य प्रदेश की नदियाँ प्रायद्वीपीय और वर्षा आधारित हैं।
कथन II: नर्मदा एक हिमालयी नदी है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

NODIA

275. भोपाल से ग्वालियर की यात्रा में कौन से क्षेत्र आते हैं?
(A) बघेलखंड और बुंदेलखंड
(B) मालवा और मध्य भारत का पठार
(C) नर्मदा घाटी और सतपुड़ा
(D) रीवा-पन्ना और बघेलखंड

276. भील जनजाति कहाँ पाई जाती है?
(A) पूर्वी भाग
(B) पश्चिमी भाग
(C) उत्तरी भाग
(D) मध्य भाग

277. 'टोंस' नदी कहाँ से निकलती है?
(A) मालवा का पठार
(B) सतना में कैमूर पहाड़ियाँ
(C) मैकल श्रेणी
(D) महादेव पहाड़ियाँ

278. खनिज संसाधनों पर आधारित उद्योग है:
(A) सोयाबीन तेल
(B) सूती वस्त्र
(C) सीमेंट
(D) चीनी

279. 'गढ़ कुंडार' किस क्षेत्र से संबंधित है?
(A) मालवा
(B) निमाड़
(C) बघेलखंड
(D) बुंदेलखंड

280. पूर्णा किसकी सहायक नदी है?
(A) नर्मदा
(B) ताप्ती
(C) माही
(D) साबरमती

281. तापीय विषमता कहाँ अधिक होगी?
(A) पचमढ़ी

(B) ग्वालियर
(C) इंदौर
(D) बालाघाट

282. 'गोंड' जनजाति कहाँ केंद्रित है?
(A) उत्तरी जिले
(B) पश्चिमी जिले
(C) सतपुड़ा और विंध्य श्रेणियां
(D) शहरी केंद्र

283. 'धारवाड़' शैल समूह किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) कोयला
(B) मैंगनीज और तांबा
(C) हीरा
(D) बॉक्साइट

284. गलत युग्म पहचानिए:
(A) मालवा - काली मृदा
(B) बघेलखंड - कोयला
(C) बुंदेलखंड - सरसों (बीहड़ रहित)
(D) मध्य भारत - जलोढ़ मृदा, सरसों

285. क्षेत्रीय नामों को सुमेलित कीजिए।
सूची I: पुराना नाम
P. जेजाकभुक्ति
Q. अवंती
R. चेदि
S. वत्स
सूची II: आधुनिक क्षेत्र
1. मालवा
2. बुंदेलखंड
3. ग्वालियर
4. बघेलखंड
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

286. नर्मदा घाटी की उच्च उत्पादकता का कारण है:
(A) उर्वरकों का प्रयोग
(B) उपजाऊ मृदा और सिंचाई सुविधाएं
(C) लंबा कृषि मौसम
(D) सरकारी सब्सिडी

287. जलवायु के बारे में सही कथन है:
I. पूरा राज्य कर्क रेखा के अंतर्गत है।
II. राज्य में चार मौसम होते हैं।
III. वर्षा पश्चिम में अधिक है।
(A) केवल II
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

288. कपिलधारा प्रपात किस नदी पर है?
(A) ताप्ती
(B) चंबल
(C) नर्मदा
(D) बेतवा

289. 'व्हीकल फैक्ट्री जबलपुर' किसका उपक्रम है?
(A) निजी क्षेत्र
(B) रक्षा मंत्रालय
(C) रेलवे
(D) कृषि विभाग

290. अभिकथन (A): मालवा पठार सघन आबादी वाला है।
कारण (R): यहाँ अनुकूल कृषि, जलवायु और व्यापारिक विकास हुआ है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

291. सागौन वन मुख्य रूप से कहाँ मिलते हैं?
(A) चंबल घाटी
(B) नर्मदापुरम और बैतूल
(C) मुरैना
(D) मैकल श्रेणी

292. 'सोपस्टोन' कहाँ पाया जाता है?
(A) चंबल घाटी
(B) नर्मदा घाटी
(C) सोन घाटी
(D) ताप्ती घाटी

293. विदिशा किन नदियों के संगम पर है?
(A) नर्मदा और तवा
(B) बेतवा और बेस
(C) क्षिप्रा और खान
(D) चंबल और काली सिंध

294. नर्मदा के नौपरिवहन के बारे में सही है:
कथन II: क्षिप्रिकाओं और प्रपातों के कारण यह नौगम्य नहीं है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(D) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

295. कपड़ा उद्योग का केंद्र नहीं है:
(A) इंदौर

Click Here to Buy book on Amazon

(B) उज्जैन
(C) सिंगरौली
(D) बुरहानपुर

296. रतलाम किसके लिए प्रसिद्ध है?
(A) पोहा
(B) समोसा
(C) जलेबी
(D) सेव

297. 'सिगार चोटी' किसके समीप है?
(A) उज्जैन
(B) भोपाल
(C) इंदौर
(D) रतलाम

298. तेंदू पत्ता संग्रहण क्षेत्र है:
(A) मालवा
(B) बघेलखंड और सतपुड़ा वन पट्टी
(C) चंबल
(D) निमाड़

299. 'संजय सरोवर' परियोजना से लाभान्वित जिला है:
(A) बालाघाट
(B) ग्वालियर
(C) रीवा
(D) झाबुआ

300. विभाजन के बाद मध्य प्रदेश ने क्या खोया?
(A) गेहूं क्षेत्र
(B) काली मृदा क्षेत्र
(C) समृद्ध वन, खनिज और विद्युत संसाधन
(D) बीहड़ प्रभावित भूमि

NODIA

स्थित है, जो एक गहरी भ्रंश घाटी है। सबसे दक्षिण में सतपुड़ा-मैकल श्रेणी का विस्तार है। यह क्रम राज्य की भूगर्भीय बनावट को स्पष्ट करता है।

23. (D) एल्युमीनियम
मध्य प्रदेश में खनिज आधारित उद्योगों में एल्युमीनियम उद्योग अत्यंत महत्वपूर्ण है। राज्य के पूर्वी हिस्सों, विशेष रूप से अनूपपुर और अमरकंटक क्षेत्र में बॉक्साइट के प्रचुर भंडार पाए जाते हैं, जो एल्युमीनियम उत्पादन के लिए प्राथमिक कच्चा माल है। यद्यपि कपड़ा उद्योग भी राज्य में प्रचलित है, लेकिन भारी उद्योगों की श्रेणी में एल्युमीनियम प्रमुख है। यह उद्योग राज्य की औद्योगिक प्रगति और संसाधन दक्षता को दर्शाता है।

24. (A) चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा गाद का निक्षेपण
मध्य प्रदेश के उत्तरी जिलों जैसे भिंड और मुरैना में पाई जाने वाली जलोढ़ मिट्टी अत्यंत उपजाऊ है। इस मृदा का निर्माण चंबल और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपने बहाव के साथ लाई गई महीन गाद और अवसादों के जमाव से हुआ है। यह मिट्टी कृषि के लिए बहुत अनुकूल होती है और इसमें गेहूं तथा सरसों की अच्छी पैदावार होती है। नदियों की निक्षेपण प्रक्रिया ने इसे समृद्ध मैदान बनाया है।

25. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बघेलखंड का पठार खनिज संपदा की दृष्टि से बहुत समृद्ध है, विशेष रूप से यहाँ कोयले के विशाल भंडार पाए जाते हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ की भूगर्भीय संरचना में गोंडवाना शैल समूहों की प्रधानता होना है, क्योंकि कोयला इन्हीं चट्टानों में संचित होता है। सिंगरौली और सुहागपुर जैसे प्रमुख कोयला क्षेत्र इसी पठारी भाग के अंतर्गत आते हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है।

26. (A) नर्मदा
नर्मदा नदी मध्य प्रदेश की सबसे लंबी नदी है, जो विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वतमालाओं के मध्य स्थित एक भ्रंश घाटी से होकर प्रवाहित होती है। उत्तर में विंध्याचल श्रेणी और दक्षिण में सतपुड़ा श्रेणी इस नदी के समानांतर स्थित हैं। यह नदी अमरकंटक से निकलकर पश्चिम की ओर बहती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है। इन दो पर्वत श्रेणियों के बीच इसकी स्थिति इसे अद्वितीय पहचान प्रदान करती है।

27. (D) ग्रीष्म और शीत ऋतु में अत्यधिक तापमान के साथ महाद्वीपीय जलवायु
बुंदेलखंड पठार की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है, जिसकी मुख्य विशेषता तापीय विषमता है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी पड़ती है और तापमान बहुत ऊँचा हो जाता है, जबकि शीत ऋतु में कड़ाके की ठंड का अनुभव होता है। समुद्र से अत्यधिक दूरी के कारण यहाँ तापमान में भारी उतार-चढ़ाव देखा जाता है। वर्षा भी यहाँ अनियमित और कम होती है, जो कृषि को गहराई से प्रभावित करती है।

28. (B) कपास - बुंदेलखंड का पठार
कपास की खेती के लिए गहरी काली मिट्टी और मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है, जो मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के पश्चिमी भागों और निमाड़ क्षेत्र में उपलब्ध है। बुंदेलखंड का पठार मिश्रित लाल और काली मिट्टी वाला क्षेत्र है, जहाँ कपास की तुलना में दलहन और तिलहन की खेती अधिक होती है। मालवा में गेहूं और सोयाबीन तथा बघेलखंड में चावल की पैदावार प्रमुख है। अतः यह युग्म गलत है।

29. (C) बघेलखंड का पठार (अमरकंटक क्षेत्र)
उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में स्थित रेनुकूट एल्युमीनियम संयंत्र को बॉक्साइट की आपूर्ति मध्य प्रदेश के अमरकंटक क्षेत्र से होती है। अमरकंटक और उसके आसपास के पठारी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले बॉक्साइट के प्रचुर भंडार मौजूद हैं। रेल और सड़क मार्ग के माध्यम से कच्चे माल का यह परिवहन अंतर-राज्यीय औद्योगिक सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह क्षेत्र धातु उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

30. (D) सतपुड़ा श्रेणी की उच्चतम चोटी
धूपगढ़ मध्य प्रदेश और सतपुड़ा पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई 1350 मीटर है। यह होशंगाबाद जिले के पचमढ़ी में महादेव पहाड़ियों पर स्थित है। यहाँ से सूर्यास्त और सूर्योदय का दृश्य अत्यंत मनोरम होता है, जो इसे एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बनाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति राज्य के ऊँचावच को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह चोटी पूरे मध्य भारत की सर्वोच्च चोटी है।

31. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्य प्रदेश की नदियों के उद्गम और उनकी विशेषताओं का मिलान महत्वपूर्ण भौगोलिक तथ्य प्रदान करता है। चंबल की सहायक नदी क्षिप्रा है, जबकि बेतवा का उद्गम रायसेन जिले के कुमरागाँव से होता है। सोन नदी अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती है और ताप्ती नदी बैतूल जिले के मुलताई नामक स्थान से अपना सफर शुरू करती है। ये नदियाँ राज्य की जल निकासी प्रणाली को सुव्यवस्थित करती हैं।

32. (B) बांस और सलाई की लकड़ी
मध्य प्रदेश में कागज उद्योग मुख्य रूप से वनों से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित है। नेपानगर और अमलाई जैसे स्थानों पर स्थित पेपर मिलों में बांस और सलाई की लकड़ी का उपयोग लुगदी बनाने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। राज्य के दक्षिण-पूर्वी जिलों में बांस के सघन वन पाए जाते हैं, जो इस उद्योग को सतत आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं। यह उद्योग जनजातीय आबादी को रोजगार प्रदान करता है।

33. (B) यह उपजाऊ काली मृदा वाली एक संकीर्ण और लंबी भ्रंश घाटी है।
नर्मदा घाटी मध्य प्रदेश की एक प्रमुख भौगोलिक इकाई है जो विंध्य और सतपुड़ा श्रेणियों के बीच एक संकीर्ण और लंबी भ्रंश घाटी के रूप में स्थित है। यह घाटी अत्यंत उपजाऊ गहरी काली मिट्टी और जलोढ़ निक्षेपों से ढकी हुई है, जो कृषि उत्पादन के लिए बहुत अनुकूल है। इस घाटी को राज्य की 'कृषि की रीढ़'

Downloaded from www.pdf.tube

जलोढ़ और पूर्व में लाल-पीली मिट्टी मिलती है। मरुस्थलीय मिट्टी मुख्य रूप से राजस्थान जैसे शुष्क राज्यों की विशेषता है और यह मध्य प्रदेश के किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में नहीं पाई जाती है।

12. (B) काली मृदा
काली मिट्टी को स्थानीय भाषा में 'रेगुर' या 'कपासी मृदा' के नाम से जाना जाता है। इसमें जल धारण करने की उच्च क्षमता होती है और सूखने पर इसमें गहरी दरारें पड़ जाती हैं, जिसे 'स्वतः जुताई' की विशेषता कहा जाता है। यह मिट्टी दक्कन ट्रैप की बेसाल्टिक चट्टानों के अपक्षय से निर्मित हुई है। मध्य प्रदेश के मालवा पठार और नर्मदा घाटी में इसका विस्तार सबसे अधिक पाया जाता है।

13. (A) केवल I
मध्य प्रदेश में सीमेंट उद्योग का विकास सतना और कटनी जैसे चूना पत्थर बाहुल्य क्षेत्रों में हुआ है, क्योंकि चूना पत्थर इसका मुख्य कच्चा माल है। एल्युमीनियम उद्योग भी राज्य में महत्वपूर्ण है, लेकिन कथन III गलत है क्योंकि उर्वरक और कीटनाशक जैसे रासायनिक उद्योग नागदा और पीथमपुर जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। अतः केवल पहला कथन ही सत्य है, जो खनिज और औद्योगिक स्थिति को दर्शाता है।

14. (D) पचमढ़ी
पचमढ़ी मध्य प्रदेश का एकमात्र पर्वतीय स्थल है और यहाँ राज्य की सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है, जो लगभग 199 सेंटीमीटर होती है। यह महादेव पहाड़ियों में स्थित है और अपनी सघन वनस्पति तथा शीतल जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। इसके विपरीत, ग्वालियर और पश्चिमी जिलों में वर्षा काफी कम होती है। पचमढ़ी की भौगोलिक स्थिति मानसून की दोनों शाखाओं से आर्द्रता प्राप्त करती है।

15. (A) जलविद्युत उत्पादन और सिंचाई
नर्मदा नदी पर जबलपुर के निकट निर्मित बरगी बांध, जिसे रानी अवंती बाई लोधी सागर परियोजना के नाम से जाना जाता है, एक बहुउद्देशीय परियोजना है। इसका मुख्य उद्देश्य विशाल कृषि क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा प्रदान करना और जलविद्युत का उत्पादन करना है। यह परियोजना क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आसपास के शहरों के लिए पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करती है।

16. (B) भवन निर्माण सामग्री जैसे बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
बुंदेलखंड और विंध्य क्षेत्रों में पाई जाने वाली विंध्यन शैल समूह की चट्टानें भवन निर्माण सामग्री के समृद्ध स्रोत हैं। यहाँ से उच्च गुणवत्ता वाला बलुआ पत्थर, चूना पत्थर और स्लेट प्राप्त होता है। ऐतिहासिक इमारतों जैसे सांची के स्तूप और ग्वालियर के किले के निर्माण में इन्हीं पत्थरों का उपयोग किया गया है। ये चट्टानें रासायनिक रूप से स्थिर होती हैं और वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

17. (B) सोयाबीन
सोयाबीन मध्य प्रदेश की सबसे प्रमुख खरीफ फसल है और राज्य देश के कुल उत्पादन में प्रथम स्थान पर है, जिसके कारण इसे 'सोया राज्य' कहा जाता है। इसकी बुवाई मानसून के आगमन के साथ जून-जुलाई में की जाती है। गेहूं, चना और सरसों रबी की फसलें हैं, जिनकी खेती शीत ऋतु में होती है। मालवा क्षेत्र सोयाबीन उत्पादन का केंद्र है, जहाँ की काली मिट्टी अत्यंत उपयुक्त है।

18. (A) भ्रंश घाटी
नर्मदा नदी एक विशिष्ट भूगर्भीय संरचना से होकर बहती है जिसे भ्रंश घाटी कहा जाता है। इस घाटी का निर्माण दो समानांतर पर्वत श्रेणियों, विंध्याचल और सतपुड़ा के मध्य भूमि के धंसने से हुआ है। इसी कारण नर्मदा नदी सामान्य ढाल के विपरीत पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। यह संरचना भारत के प्रायद्वीपीय पठार की एक अद्वितीय विशेषता है, जो नदी के वेग को प्रभावित करती है।

19. (C) मालवा का पठार - गेहूं और सोयाबीन की कृषि का प्रमुख क्षेत्र
मालवा का पठार अपनी अत्यंत उपजाऊ काली मिट्टी और अनुकूल जलवायु के कारण गेहूं और सोयाबीन के उत्पादन में राज्य का नेतृत्व करता है। इसे 'गेहूं की डलिया' के नाम से भी जाना जाता है। अन्य विकल्पों में, बघेलखंड में चावल की प्रधानता है और नर्मदा का उद्गम मैकल श्रेणी से होता है। बुंदेलखंड में जनसंख्या घनत्व मालवा की तुलना में काफी कम है। अतः मालवा और कृषि का युग्म सही है।

20. (D) इसकी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत है।
मध्य प्रदेश भारत में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाला राज्य है। यहाँ भील, गोंड, बैगा और सहरिया जैसी अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं, जो राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 21 प्रतिशत भाग हैं। राज्य का जनसंख्या घनत्व राष्ट्रीय औसत से कम है और साक्षरता दर में सुधार की आवश्यकता है। शहरीकरण की तुलना में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत यहाँ अधिक है, जो सामाजिक संरचना को दर्शाता है।

NODIA

21. (C) कोयला
बघेलखंड पठार के सिंगरौली क्षेत्र को मध्य प्रदेश की 'ऊर्जा राजधानी' कहा जाता है क्योंकि यहाँ कोयले के विशाल भंडार मौजूद हैं। यहाँ पाई जाने वाली कोयले की परतें भारत में सबसे मोटी परतों में से एक हैं। इस कोयले का उपयोग ताप विद्युत केंद्रों में बिजली उत्पादन के लिए किया जाता है। यहाँ की गोंडवाना शैल संरचना कोयले के निर्माण के लिए उत्तरदायी है, जो अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ आधार देती है।

22. (B) 1, 2, 3, 4
मध्य प्रदेश के भौगोलिक विभाजनों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित करने पर सबसे उत्तर में मध्य भारत का पठार स्थित है। इसके दक्षिण में मालवा का पठार आता है, जो राज्य का सबसे बड़ा भाग है। मालवा के दक्षिण में नर्मदा-सोन घाटी

(C) मालवा पठार का निर्माण।
(D) जलोढ़ का निक्षेपण।

222. सीमेंट कारखानों का मुख्य प्रदूषक है:
(A) भारी धातुएं
(B) विविक्त कणिकीय पदार्थ (धूल)
(C) रेडियोधर्मी कचरा
(D) कार्बनिक सॉल्वैंट्स

223. कौन सा जिला राजस्थान और उत्तर प्रदेश दोनों के साथ सीमा साझा करता है?
(A) गुना
(B) मुरैना
(C) रीवा
(D) बालाघाट

224. मालवा पठार की कृषि के लिए सबसे कम महत्वपूर्ण कारक है:
(A) काली मृदा
(B) मध्यम वर्षा
(C) नहर सिंचाई जाल
(D) गेहूं हेतु उपयुक्त तापमान

225. अभिकथन (A): बुंदेलखंड को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ता है।
कारण (R): यहाँ की ग्रेनाइट संरचना के कारण भूजल भंडारण क्षमता कम है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. 'बाघ की गुफाएं' किस नदी के तट पर स्थित हैं?
(A) चंबल
(B) नर्मदा (बाघिनी सहायक)
(C) ताप्ती
(D) बेतवा

227. 'WCL' और 'NCL' किसके खनन से संबद्ध हैं?
(A) हीरा
(B) तांबा
(C) कोयला
(D) मैंगनीज

228. मध्य प्रदेश के भौगोलिक विभाजनों के बारे में सही कथन है:
(A) सतपुड़ा एक निरंतर श्रृंखला है।
(B) मालवा का पठार बुंदेलखंड से ऊँचा है।
(C) नर्मदा घाटी पूर्व में चौड़ी है।
(D) बघेलखंड दक्कन ट्रैप का हिस्सा है।

229. सूची सुमेलित कीजिए।
सूची I: विशेषता
P. बीहड़
Q. संगमरमर
R. धूपगढ़
S. बॉक्साइट
सूची II: स्थान
1. पचमढ़ी
2. अमरकंटक
3. भेड़ाघाट
4. चंबल घाटी
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

230. सोयाबीन के बाद गेहूं उगाने की पद्धति किस क्षेत्र में सामान्य है?
(A) बघेलखंड का पठार
(B) मालवा का पठार
(C) बुंदेलखंड का पठार
(D) मध्य भारत का पठार

231. ऐतिहासिक स्थल 'मांडू' किस श्रेणी पर स्थित है?
(A) सतपुड़ा श्रेणी
(B) मैकल श्रेणी
(C) विंध्य श्रेणी
(D) कैमूर श्रेणी

232. किस जिले में काली मृदा होने की संभावना सबसे कम है?
(A) इंदौर
(B) उज्जैन
(C) रीवा
(D) खंडवा

233. 'चोरल बांध' किस शहर के समीप है?
(A) भोपाल
(B) ग्वालियर
(C) इंदौर
(D) जबलपुर

234. 'ऊपरमाल' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?
(A) नर्मदा घाटी
(B) चंबल घाटी
(C) मालवा का पठार
(D) बघेलखंड

235. निम्नलिखित में से कौन सा मध्य प्रदेश का प्रमुख उद्योग नहीं है?
(A) सीमेंट
(B) कागज

Click Here to Buy book on Amazon

कहा जाता है। इसकी संरचना इसे अन्य भागों से पृथक करती है।

34. (A) अवनालिका अपरदन और बीहड़ निर्माण
मुरैना जिले के किसान मृदा अपरदन की समस्या से सबसे अधिक पीड़ित हैं, जिसे स्थानीय स्तर पर बीहड़ निर्माण के रूप में जाना जाता है। चंबल नदी के तेज़ बहाव ने यहाँ की कोमल जलोढ़ मिट्टी में गहरी अवनालिकाएँ बना दी हैं, जिससे उपजाऊ कृषि भूमि नष्ट हो रही है। यह समस्या न केवल कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता का कारण भी बनती है।

35. (B) केवल II और III
पन्ना जिला भारत का एकमात्र सक्रिय हीरा उत्पादक क्षेत्र है, जो राज्य को वैश्विक खनिज मानचित्र पर विशिष्ट स्थान दिलाता है। इसके साथ ही, मध्य प्रदेश मैंगनीज का भी एक प्रमुख उत्पादक है, जिसके भंडार मुख्य रूप से बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों में संचित हैं। यद्यपि राज्य में कोयले के बड़े भंडार हैं, लेकिन यह भंडार के मामले में देश में प्रथम स्थान पर नहीं है। अतः कथन II और III सही हैं।

36. (C) उत्तर
मालवा के पठार का सामान्य ढाल उत्तर और उत्तर-पूर्व दिशा की ओर है। इसका प्रमाण यहाँ बहने वाली प्रमुख नदियों जैसे चंबल, काली सिंध, पार्वती और बेतवा के प्रवाह मार्ग से मिलता है, जो सभी उत्तर की ओर बहकर अंततः यमुना नदी में मिल जाती हैं। पठार की यह ढाल संरचना क्षेत्रीय जल निकासी और कृषि प्रतिरूप को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह ढाल क्रमिक है।

37. (D) पन्ना
सीमेंट उद्योग के लिए चूना पत्थर की उपलब्धता अनिवार्य है, जिसके कारण सतना, कटनी और दमोह जैसे जिले सीमेंट उत्पादन के बड़े केंद्रों के रूप में उभरे हैं। पन्ना जिला मुख्य रूप से अपनी हीरा खदानों और वन्यजीव अभयारण्य के लिए जाना जाता है, यहाँ बड़े स्तर पर सीमेंट के कारखाने मौजूद नहीं हैं। राज्य के विंध्यन शैल समूह वाले क्षेत्रों में चूना पत्थर के प्रचुर भंडार पाए जाते हैं।

38. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश में वर्षा का वितरण पूर्व से पश्चिम की ओर घटता जाता है। बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी हवाएं राज्य के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी हिस्सों में भारी वर्षा करती हैं। जैसे-जैसे ये हवाएं पश्चिमी भाग की ओर बढ़ती हैं, इनकी नमी कम होती जाती है, जिससे पश्चिमी जिलों में वर्षा का स्तर तुलनात्मक रूप से कम रह जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं।

39. (C) यमुना
मध्य प्रदेश के पठारी क्षेत्रों से निकलने वाली चंबल, बेतवा और केन जैसी नदियाँ उत्तर की ओर प्रवाहित होती हैं। मालवा और बुंदेलखंड के ढाल का अनुसरण करते हुए ये नदियाँ अंततः उत्तर प्रदेश में यमुना नदी में विलीन हो जाती हैं। यमुना नदी स्वयं गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी है। इस प्रकार, मध्य प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा यमुना-गंगा बेसिन का अंग है। इन नदियों का जल महत्वपूर्ण है।

40. (B) काली मृदा
काली मिट्टी मध्य प्रदेश के सर्वाधिक भौगोलिक क्षेत्रफल पर पाई जाने वाली मृदा है, जो राज्य के लगभग 47 प्रतिशत भाग को आच्छादित करती है। इसे इसकी संरचना के आधार पर गहरी काली, साधारण काली और छिछली काली मिट्टी में विभाजित किया गया है। मालवा का पठार, नर्मदा घाटी और सतपुड़ा इसके मुख्य क्षेत्र हैं। कपास, सोयाबीन और गेहूं की खेती के लिए यह मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है।

41. (D) नर्मदा
तवा बांध मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजना है। यह नर्मदा नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी 'तवा' पर निर्मित किया गया है। इस बांध से निर्मित विशाल जलाशय न केवल सिंचाई के लिए जल प्रदान करता है, बल्कि पर्यटन और मत्स्य पालन के लिए भी उपयोगी है। सतपुड़ा की पहाड़ियों से निकलने वाली तवा नदी नर्मदा की जल प्रणाली को सुदृढ़ बनाती है।

42. (A) बीहड़ स्थलाकृति की विशेषता वाला एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र।
मध्य भारत का पठार राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक अर्ध-शुष्क भौगोलिक इकाई है। यहाँ वर्षा कम होती है और विषम जलवायु पाई जाती है। इस क्षेत्र की सबसे प्रमुख विशेषता चंबल नदी द्वारा निर्मित गहरे बीहड़ और 'उत्खात भूमि' स्थलाकृति है। जलोढ़ मिट्टी की उपस्थिति के बावजूद, अत्यधिक मृदा अपरदन ने यहाँ की भूमि को खेती के लिए चुनौतीपूर्ण बना दिया है। यह एक संक्रमण क्षेत्र है।

43. (C) बघेलखंड का पठार राज्य का सबसे पश्चिमी भौगोलिक विभाग है।
बघेलखंड का पठार मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी और पूर्वी भाग में स्थित है, न कि पश्चिमी भाग में। राज्य का सबसे पश्चिमी भौगोलिक विभाग मालवा का पठार है जो राजस्थान और गुजरात की सीमाओं को स्पर्श करता है। अन्य भौगोलिक तथ्य जैसे नर्मदा-सोन घाटी का पर्वतों को अलग करना और मालवा का बेसाल्टिक लावा से बना होना सही हैं। अतः विकल्प (C) भौगोलिक रूप से गलत है।

44. (C) कोयला
बघेलखंड और सतपुड़ा क्षेत्रों में पाई जाने वाली गोंडवाना शैल समूह की चट्टानें भारत के विशाल कोयला भंडार के लिए जानी जाती हैं। मध्य प्रदेश में कोयले का अधिकांश संचय इन्हीं संरचनाओं में हुआ है। सिंगरौली, सुहागपुर और पेंच-कान्हा घाटी जैसे प्रमुख कोयला क्षेत्र इसी भूगर्भीय प्रणाली का हिस्सा हैं। गोंडवाना काल के दौरान वनस्पतियों के दबने से इन परतों का निर्माण हुआ, जो ऊर्जा सुरक्षा के लिए अनिवार्य हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

स्थिर भाग माना जाता है। इन प्राचीन चट्टानों की उपस्थिति के कारण ही इस क्षेत्र में भूजल का संचय कठिन होता है।

134. (D) प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होना
काली मिट्टी की विशेषताओं में उच्च जल धारण क्षमता, सूखने पर दरारें पड़ना और चूना, लोहा तथा मैग्नीशिया जैसे तत्वों की प्रचुरता शामिल है। यह मिट्टी आमतौर पर तटस्थ से लेकर क्षारीय प्रकृति की होती है, न कि अत्यधिक अम्लीय। इसकी यही रासायनिक बनावट इसे कपास और चने जैसी फसलों के लिए उपयुक्त बनाती है। अम्लीय मिट्टी मुख्य रुप से अधिक वर्षा और निक्षालन वाले क्षेत्रों (जैसे लैटेराइट) में पाई जाती है।

135. (D) नर्मदा
सरदार सरोवर परियोजना नर्मदा नदी पर निर्मित भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय परियोजनाओं में से एक है। यद्यपि इसका मुख्य बांध गुजरात के केवडिया में स्थित है, लेकिन मध्य प्रदेश इसका सबसे बड़ा भागीदार है। इस परियोजना से मध्य प्रदेश को जलविद्युत का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त होता है। यह नर्मदा घाटी विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के बीच जल और बिजली के वितरण को सुनिश्चित करती है।

136. (C) खनिज और वन संसाधन
बघेलखंड क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्य रुप से इसकी प्राकृतिक संपदा, विशेष रुप से खनिजों और वनों पर निर्भर है। यहाँ कोयले के विशाल भंडार और बॉक्साइट तथा चूना पत्थर जैसे खनिज प्रचुरता में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र सघन वनों से आच्छादित है, जो लकड़ी, तेंदू पत्ता और अन्य वनोपज प्रदान करते हैं। कृषि यहाँ उतनी विकसित नहीं है, इसलिए खनन और वन आधारित गतिविधियाँ ही निवासियों की मुख्य आजीविका हैं।

137. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मध्य प्रदेश में वर्षा का वितरण असमान है और पूर्वी भाग, जो बंगाल की खाड़ी के निकट है, पश्चिमी भाग की तुलना में अधिक वर्षा प्राप्त करता है। कथन II गलत है क्योंकि मध्य प्रदेश को दक्षिण-पश्चिम मानसून की दोनों शाखाओं—अरब सागर और बंगाल की खाड़ी—से वर्षा प्राप्त होती है। पश्चिमी भाग मुख्य रुप से अरब सागर शाखा से और पूर्वी भाग बंगाल की खाड़ी शाखा से वर्षा प्राप्त करता है।

138. (C) मध्य भारत का पठार
ग्वालियर, शिवपुरी और मुरैना जैसे जिले मध्य भारत के पठार के भौगोलिक विभाग के अंतर्गत आते हैं। यह पठार राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है और राजस्थान की सीमा से लगा हुआ है। इस क्षेत्र की विशेषता शुष्क जलवायु, कँटीले वन और चंबल नदी द्वारा निर्मित बीहड़ हैं। ग्वालियर का किला और शिवपुरी के माधव राष्ट्रीय उद्यान इसी पठारी क्षेत्र की पहचान हैं। यह क्षेत्र ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

139. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मालवा का पठार मध्य प्रदेश का सबसे प्रमुख कृषि क्षेत्र है, जिसे 'गेहूं की डलिया' भी कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यहाँ की उपजाऊ काली मिट्टी है जो नमी को सोखकर रखती है और कपास, सोयाबीन तथा गेहूं के लिए आदर्श है। साथ ही यहाँ की मध्यम मानसूनी वर्षा फसलों की वृद्धि में सहायक होती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण स्पष्ट करता है कि मालवा कृषि में समृद्ध क्यों है।

140. (C) सोन
सोन नदी मध्य प्रदेश के अमरकंटक से निकलने वाली एक महत्वपूर्ण प्रायद्वीपीय नदी है। प्रायद्वीपीय नदियों की सामान्य प्रवाह दिशा के विपरीत, यह उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। मैकल पर्वतमाला से निकलकर यह शहडोल और सीधी जिलों से गुजरते हुए बिहार में प्रवेश करती है और अंततः पटना के पास सीधे गंगा नदी में विलीन हो जाती है। सोन नदी गंगा की दक्षिण से मिलने वाली सबसे बड़ी सहायक नदियों में से एक है।

141. (A) सोहागपुर कोयला क्षेत्र
सोहागपुर कोयला क्षेत्र मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है, जो शहडोल जिले में स्थित है। यह क्षेत्र गोंडवाना शैल समूह का हिस्सा है और यहाँ से बड़ी मात्रा में उच्च श्रेणी के कोयले का निष्कर्षण किया जाता है। सिंगरौली क्षेत्र अपनी कोयले की मोटी परत के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन कुल क्षेत्रफल और उत्पादन की दृष्टि से सोहागपुर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कोयला क्षेत्र ताप विद्युत गृहों के लिए ईंधन का मुख्य स्रोत है।

NODIA

142. (B) नर्मदा घाटी
'हवेली' प्रणाली मध्य प्रदेश की नर्मदा घाटी, विशेष रुप से जबलपुर और नरसिंहपुर जिलों में प्रचलित एक पारंपरिक जल संरक्षण पद्धति है। इसमें मानसून के दौरान खेतों के चारों ओर ऊँची मेढ़ें बनाकर वर्षा जल को रोका जाता है ताकि मिट्टी में नमी बनी रहे। रबी की बुवाई से पहले इस पानी को निकाल दिया जाता है। यह पद्धति काली मिट्टी की नमी धारण क्षमता का उपयोग करके बिना अतिरिक्त सिंचाई के गेहूं की अच्छी पैदावार सुनिश्चित करती है।

143. (C) कैल्साइट
भेड़ाघाट की विश्व प्रसिद्ध संगमरमर की चट्टानें मुख्य रुप से कैल्साइट खनिज से निर्मित हैं। यह संगमरमर चूना पत्थर के कायांतरण का परिणाम है। नर्मदा नदी के तेज बहाव ने इन सफेद चट्टानों को काटकर एक संकीर्ण और गहरी घाटी बना दी है, जो देखने में अत्यंत आकर्षक लगती है। कैल्साइट की शुद्धता के कारण यहाँ का संगमरमर चमकदार और सफेद होता है, जिसे स्थानीय स्तर पर शिल्पकारी के लिए भी बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

144. (B) उर्वरक उत्पादन
मध्य प्रदेश में रासायनिक उद्योग के क्षेत्र में उर्वरक उत्पादन एक प्रमुख गतिविधि है। गुना जिले के विजयपुर में स्थित नेशनल

56. (B) केवल I और II
मध्य प्रदेश एक भू-आबद्ध राज्य है, जिसकी कोई समुद्र तट रेखा नहीं है, जो बंदरगाह आधारित भारी उद्योगों के विकास में एक प्राकृतिक बाधा है। राज्य के अमरकंटक क्षेत्र से बॉक्साइट की आपूर्ति उत्तर प्रदेश के हिंडाल्को संयंत्र को की जाती है, जो अंतर-राज्यीय संसाधन निर्भरता को दर्शाता है। कागज उद्योग मुख्य रूप से वनों पर आधारित है और यह दक्षिणी क्षेत्रों में केंद्रित है। अतः कथन I और II सही हैं।

57. (C) बीहड़ अपरदन
भिंड और मुरैना जिले चंबल नदी द्वारा उत्पन्न बीहड़ अपरदन या अवनालिका अपरदन की समस्या से अत्यधिक ग्रस्त हैं। यहाँ की कोमल जलोढ़ मिट्टी को नदी ने गहरी खाइयों और नालियों में बदल दिया है, जिससे हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि कृषि के अयोग्य हो गई है। यह समस्या न केवल पर्यावरणीय है, बल्कि इसने क्षेत्र के विकास को भी प्रभावित किया है। मृदा संरक्षण यहाँ की प्राथमिकता है।

58. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
मध्य प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रों की पहचान उनकी विशिष्ट चट्टानों से होती है। मालवा का पठार दक्कन ट्रैप के बेसाल्ट से बना है, जबकि बुंदेलखंड का आधार प्राचीन ग्रेनाइट और नीस चट्टानें हैं। बघेलखंड क्षेत्र गोंडवाना शैल समूह की प्रधानता रखता है जहाँ कोयला पाया जाता है। नर्मदा घाटी में प्राचीन जलोढ़ और अवसादी चट्टानों का जमाव मिलता है। यह भूगर्भीय विविधता राज्य के खनिजों का आधार है।

59. (C) यह राज्य में सोयाबीन की खेती का मुख्य क्षेत्र है।
सोयाबीन की खेती मुख्य रूप से मालवा पठार की विशेषता है, जहाँ की काली मिट्टी इसके लिए अत्यंत अनुकूल है। बघेलखंड क्षेत्र में वर्षा की अधिकता और लाल-पीली मिट्टी के कारण मुख्य फसल चावल है। बघेलखंड राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है और यहाँ सोन तथा जोहिला जैसी नदियाँ बहती हैं। यह क्षेत्र अपनी गोंडवाना संरचना के कारण खनिज संपदा में धनी है। अतः सोयाबीन वाला विकल्प गलत है।

60. (B) कुएं और नलकूप
मालवा पठार में सिंचाई के लिए कुओं और नलकूपों पर अत्यधिक निर्भरता है। यहाँ की बेसाल्टिक चट्टानों में भूजल का संचय दरारों और छिद्रों में होता है, जिसे निकालने के लिए नलकूपों का व्यापक उपयोग किया जाता है। यद्यपि कुछ नहरें भी मौजूद हैं, लेकिन सिंचाई का प्रमुख भाग भूमिगत जल से ही प्राप्त होता है। हाल के वर्षों में गिरता भूजल स्तर इस क्षेत्र के लिए चिंता का विषय है।

61. (C) मैंगनीज
मैंगनीज एक अत्यंत महत्वपूर्ण खनिज है जिसका उपयोग मुख्य रूप से लोहा और इस्पात उद्योग में मिश्र धातु बनाने के लिए किया जाता है। मध्य प्रदेश का बालाघाट और छिंदवाड़ा क्षेत्र मैंगनीज के उत्पादन में देश में अग्रणी है। बालाघाट की 'भरवेली' खदान एशिया की सबसे बड़ी मैंगनीज खदानों में से एक है। राज्य का यह खनिज बेल्ट औद्योगिक विकास और निर्यात राजस्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

62. (B) नर्मदा
मध्य प्रदेश का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र जबलपुर नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। यहाँ से कुछ ही दूरी पर 'भेड़ाघाट' स्थित है, जहाँ नर्मदा नदी संगमरमर की ऊँची चट्टानों के बीच से बहती है। इसी स्थान पर प्रसिद्ध 'धुआंधार जलप्रपात' भी स्थित है। नर्मदा नदी न केवल शहर की जल आवश्यकताओं को पूरा करती है, बल्कि यह क्षेत्र के पर्यटन और धार्मिक महत्व का मुख्य आधार है।

63. (C) मालवा का पठार
मालवा के पठार को अपनी उपजाऊ काली मिट्टी और अनुकूल समशीतोष्ण जलवायु के कारण मध्य प्रदेश का "अन्न भंडार" या "गेहूं की डलिया" कहा जाता है। यहाँ गेहूं की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और यहाँ का 'शरबती गेहूं' अपनी गुणवत्ता के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। कृषि की आधुनिक तकनीकों और सिंचाई सुविधाओं ने इस क्षेत्र को राज्य के सबसे समृद्ध कृषि क्षेत्र बनाया है।

64. (B) लंबी पाला-मुक्त अवधि और मध्यम वर्षा
कपास की सफल खेती के लिए कम से कम 200 पाला-मुक्त दिनों और मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है, जो निमाड़ क्षेत्र (खंडवा, खरगोन) में प्रचुरता से मिलती है। यहाँ की काली मिट्टी नमी को संचित करने में सक्षम है, जो कपास की लंबी रेशे वाली किस्मों के लिए आदर्श है। पाला कपास की फसलों को भारी नुकसान पहुँचाता है, इसलिए पश्चिमी मध्य प्रदेश की जलवायु इसके अनुकूल है।

65. (C) सीमेंट
कटनी शहर अपने प्रचुर चूना पत्थर भंडारों के कारण सीमेंट उद्योग के लिए विख्यात है, जिसके कारण इसे 'चूना नगरी' भी कहा जाता है। यहाँ कई प्रमुख सीमेंट संयंत्र स्थापित हैं जो देश के बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान देते हैं। चूना पत्थर के साथ-साथ यहाँ अन्य सहायक खनिजों की उपलब्धता ने इसे एक बड़ा औद्योगिक केंद्र बना दिया है। परिवहन सुविधा इस उद्योग की सफलता का मुख्य कारक है।

66. (C) उत्तर-पश्चिमी
मध्य भारत का पठार मध्य प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में स्थित है। यह क्षेत्र राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सीमाओं से सटा हुआ है और इसमें भिंड, मुरैना, ग्वालियर तथा शिवपुरी जैसे जिले शामिल हैं। भौगोलिक रूप से यह पठार मालवा के उत्तर में और बुंदेलखंड के पश्चिम में स्थित है। इसकी स्थलाकृति चंबल नदी के प्रवाह और उसके द्वारा निर्मित बीहड़ों से गहराई से प्रभावित है।

67. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
नर्मदा नदी मध्य प्रदेश की सबसे लंबी नदी है, जो लगभग 1077 किलोमीटर की दूरी राज्य के भीतर तय करती है और पश्चिम की ओर भ्रंश घाटी में बहती है। ताप्ती नदी भी मध्य प्रदेश के

Click Here to Buy book on Amazon

बैतूल जिले से निकलती है और नर्मदा के समानांतर पश्चिम की ओर प्रवाहित होकर अरब सागर में विसर्जित होती है। ये दोनों नदियाँ भारतीय प्रायद्वीप की उन विरल नदियों में से हैं जो पश्चिम की ओर बहती हैं।

68. (B) नाइट्रोजन, फास्फोरस और जीवांश की कमी
बघेलखंड क्षेत्र की लाल और पीली मिट्टी की उर्वरता कम होने का प्राथमिक कारण इसमें आवश्यक पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस और जीवांश की भारी कमी होना है। लाल रंग लौह ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण होता है, जो पौधों के लिए प्रत्यक्ष पोषण प्रदान नहीं करता। इस मिट्टी की जल धारण क्षमता भी मध्यम होती है। उचित उर्वरकों के प्रबंधन के बिना, इस मृदा में कृषि पैदावार कम रहती है।

69. (D) सोन
चंबल, बेतवा और केन नदियाँ मध्य प्रदेश के पठारों से निकलकर उत्तर की ओर बहती हैं और अंततः उत्तर प्रदेश में यमुना नदी में मिल जाती हैं। सोन नदी, हालांकि उत्तर-पूर्व की ओर बहती है, लेकिन यह यमुना में न मिलकर सीधे पटना के पास गंगा नदी में विलीन होती है। इस प्रकार सोन नदी सीधे गंगा की सहायक नदी है, न कि यमुना की। यह अंतर तंत्र को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

70. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बुंदेलखंड का पठार मालवा की तुलना में कृषि में पीछे है क्योंकि यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण हैं। यहाँ पाई जाने वाली लाल-पीली और मिश्रित मिट्टी की जल धारण क्षमता बहुत कम होती है, जिससे फसलें जल्दी सूख जाती हैं। इसके अतिरिक्त, वर्षा की अनिश्चितता और सिंचाई के सीमित साधनों ने कृषि विकास को बाधित किया है। मालवा की काली मिट्टी के विपरीत यहाँ का धरातल कठोर है।

71. (C) बघेलखंड का पठार
संजय-डुबरी टाइगर रिजर्व मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के सीधी जिले में स्थित है, जो बघेलखंड पठार का हिस्सा है। यह क्षेत्र अपनी जैव विविधता और सघन वनों के लिए जाना जाता है। बघेलखंड की विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ और वन्यजीवों के लिए उपयुक्त आवास इसे संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाते हैं। यह टाइगर रिजर्व राज्य के पूर्वी वन्यजीव गलियारे का एक प्रमुख अंग है जो पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है।

72. (B) बुंदेलखंड का पठार
बुंदेलखंड का पठार अपनी विशिष्ट भूगर्भीय और जलवायु विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र प्राचीन 'बुंदेलखंड नीस' से बना है, जो भारत की प्राचीनतम चट्टानों में से एक है। यहाँ से बेतवा, केन और धसान जैसी प्रमुख नदियाँ बहती हैं। यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय है, जहाँ ग्रीष्म ऋतु में बहुत गर्मी और शीत ऋतु में अत्यधिक ठंड पड़ती है। ये विशेषताएँ मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र को परिभाषित करती हैं।

73. (B) नर्मदापुरम
नर्मदापुरम में भारत की एकमात्र 'सिक्योरिटी पेपर मिल' स्थित है। इस मिल की स्थापना 1967 में की गई थी और यहाँ बैंक नोटों तथा स्टांप पेपर के उत्पादन के लिए विशेष उच्च गुणवत्ता वाला कागज तैयार किया जाता है। यह संस्थान राष्ट्रीय सुरक्षा और मुद्रा प्रणाली के लिए सामरिक महत्व का है। नर्मदा नदी के किनारे इसकी स्थिति जल की निरंतर आपूर्ति और औद्योगिक विकास की दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त है।

74. (A) वे कठोर चट्टानों से होकर बहती हैं और कम अवसाद ले जाती हैं।
नर्मदा और ताप्ती नदियाँ कठोर चट्टानी आधार वाली भ्रंश घाटियों से होकर बहती हैं, जिसके कारण उनके मार्ग में अपरदन कम होता है और वे अपने साथ कम गाद लेकर चलती हैं। साथ ही, इन नदियों का ढाल तीव्र होने के कारण जल का वेग बहुत अधिक होता है, जिससे अवसाद मुहाने पर जमा होने के बजाय सीधे समुद्र में बह जाते हैं। यही कारण है कि ये नदियाँ डेल्टा के स्थान पर ज्वारनदमुख बनाती हैं।

75. (D) हीरा
पन्ना जिला मध्य प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में हीरा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हीरे के भंडार किम्बरलाइट पाइप्स और जलोढ़ निक्षेपों में पाए जाते हैं। पन्ना की खदानें देश में सक्रिय रूप से हीरा निकालने का एकमात्र स्रोत हैं। यहाँ का 'मझगवां' क्षेत्र प्रमुख खनन केंद्र है। हीरे की उपलब्धता ने इस जिले को एक विशेष औद्योगिक पहचान दी है, जिससे यह खनिज संपदा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

76. (C) शीतकालीन वर्षा रबी फसलों के लिए महत्वपूर्ण है।
मध्य प्रदेश में शीतकाल में होने वाली वर्षा, जिसे स्थानीय स्तर पर 'मावठ' कहा जाता है, वास्तव में गेहूं और चने जैसी रबी फसलों के लिए अत्यंत लाभदायक होती है। विकल्प (C) इसे गलत नहीं बल्कि सही तथ्य बताता है। सामान्यतः राज्य में मानसून की अरब सागर शाखा का प्रभाव अधिक रहता है और वर्षा पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती है। यह कृषि और जल प्रबंधन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

77. (C) सतपुड़ा श्रेणी
मैकल श्रेणी सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला का सबसे पूर्वी भाग है। यह श्रेणी मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित है और इसकी आकृति अर्धचंद्राकार है। यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि नर्मदा, सोन और जोहिला जैसी प्रमुख नदियों का उद्गम इसी श्रेणी के अमरकंटक पठार से होता है। मैकल श्रेणी अपनी सघन वनस्पति और समृद्ध जल संसाधनों के लिए प्रसिद्ध है, जो इसे पारिस्थितिक केंद्र बनाती है।

78. (C) चूना पत्थर
रीवा-सतना पठार विंध्यन शैल समूह का हिस्सा है, जहाँ उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के विशाल भंडार मौजूद हैं। चूना पत्थर सीमेंट निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक कच्चा माल है। इस प्रचुरता के कारण ही इस क्षेत्र में सीमेंट उद्योगों का भारी संकेंद्रण हुआ है। यहाँ स्थित सतना, रीवा और मैहर जैसे

NODIA

स्थानों पर देश के बड़े सीमेंट कारखाने कार्यरत हैं। स्थानीय कच्चे माल ने औद्योगिक विकास किया है।

79. (C) नर्मदा
इंदिरा सागर परियोजना मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में पुनासा के निकट नर्मदा नदी पर निर्मित एक विशाल बहुउद्देशीय परियोजना है। यह परियोजना न केवल राज्य की सबसे बड़ी जल भंडारण क्षमता वाली संरचना है, बल्कि यह जलविद्युत उत्पादन और लाखों हेक्टेयर भूमि की सिंचाई में भी अग्रणी भूमिका निभाती है। इसका जलाशय 'पुनासा बांध' के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह परियोजना क्षेत्रीय समृद्धि का प्रमुख आधार है।

80. (C) चंबल - ग्वालियर
ग्वालियर शहर सीधे चंबल नदी के तट पर स्थित नहीं है, बल्कि यह चंबल बेसिन के अंतर्गत आता है। उज्जैन क्षिप्रा नदी के किनारे, जबलपुर नर्मदा नदी के किनारे और ओरछा बेतवा नदी के तट पर स्थित ऐतिहासिक शहर हैं। ग्वालियर की जल आपूर्ति चंबल से प्रभावित तो है, लेकिन नदी शहर के मुख्य भाग से कुछ दूरी पर बहती है। अतः नदियों और किनारे बसे शहरों के युग्म में यह भिन्न है।

81. (C) मालवा का पठार
मालवा का पठार मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में एक विशाल त्रिभुजाकार आकृति बनाता है। इसका निर्माण भूगर्भीय काल में हुए ज्वालामुखी विस्फोटों से निकले दक्कन ट्रैप लावा के जमाव और उसके बाद हुए अपक्षय से हुआ है। इसी ज्वालामुखीय उत्पत्ति के कारण यहाँ गहरी काली मिट्टी पाई जाती है। यह पठार उत्तर में विंध्य श्रेणियों और पश्चिम में अरावली से घिरा हुआ है। इसकी बनावट इसे कृषि उत्पादन के लिए सक्षम बनाती है।

82. (A) नर्मदा, सोन, जोहिला
सतपुड़ा-मैकल श्रेणी के अंतर्गत आने वाला मैकल पठार एक महत्वपूर्ण जल विभाजक है जहाँ से तीन अलग-अलग दिशाओं में बहने वाली नदियों का उद्गम होता है। नर्मदा पश्चिम की ओर, सोन उत्तर-पूर्व की ओर और जोहिला भी इसी क्षेत्र से निकलकर सोन में मिल जाती है। अमरकंटक इसी श्रेणी का हिस्सा है। इन नदियों का एक ही क्षेत्र से निकलना भारत के भूगोल की एक महत्वपूर्ण घटना है, जो हाइड्रोलॉजिकल महत्व दर्शाती है।

83. (B) केवल I और II
मध्य प्रदेश के उत्तरी जिलों जैसे मुरैना और भिंड में सरसों का उत्पादन सर्वाधिक होता है, इसलिए इसे 'सरसों की हांडी' भी कहा जाता है। बुंदेलखंड में कम वर्षा के कारण ज्वार जैसी सूखा-प्रतिरोधी फसलें उगाई जाती हैं। कथन III गलत है क्योंकि मालवा का पठार राज्य का मुख्य 'सोयाबीन का कटोरा' है, न कि केवल नर्मदा घाटी। यद्यपि नर्मदा घाटी उपजाऊ है, लेकिन सोयाबीन का सघन उत्पादन मालवा में होता है।

84. (C) छिंदवाड़ा
पातालकोट घाटी मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के तामिया विकासखंड में स्थित एक अत्यंत गहरी और सुरम्य घाटी है। यह घाटी घोड़े की नाल के आकार की है और धरातल से लगभग 1200-1500 फीट नीचे स्थित है। यहाँ 'भारिया' जनजाति निवास करती है, जो सदियों तक बाहरी दुनिया से पृथक रही। अपनी विशिष्ट भौगोलिक गहराई और औषधीय वनस्पतियों के कारण यह क्षेत्र प्रसिद्ध है। यहाँ सूर्य की किरणें देर से पहुँचती हैं।

85. (B) कोयला
शहडोल, उमरिया और सीधी जिले मध्य प्रदेश के प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। यहाँ गोंडवाना काल की चट्टानों में कोयले के विशाल संचय पाए जाते हैं। सुहागपुर और उमरिया की खदानें राज्य की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। कोयले की उपलब्धता ने इन जिलों में औद्योगिक गतिविधियों और बिजली उत्पादन को बढ़ावा दिया है। यह क्षेत्र खनिज गलियारे का अनिवार्य हिस्सा है।

86. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य भारत के पठार के अंतर्गत आने वाले ग्वालियर, भिंड और मुरैना जैसे जिलों में जलोढ़ मिट्टी का विस्तार पाया जाता है। इस मृदा का निर्माण चंबल और उसकी सहायक नदियों द्वारा मालवा के ऊँचे क्षेत्रों से बहाकर लाई गई महीन मिट्टी और गाद के निक्षेपण से हुआ है। यह मृदा अत्यंत उपजाऊ होती है और इसमें फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

87. (C) काली मृदा
काली मिट्टी, जिसे रेगुर मृदा भी कहा जाता है, कपास और सोयाबीन की खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। इसमें जल धारण करने की अद्भुत क्षमता होती है और यह चूना, मैग्नीशियम और लोहे जैसे खनिजों से समृद्ध होती है। कपास के लिए आवश्यक नमी इसे काली मिट्टी से प्राप्त होती है, जबकि सोयाबीन के लिए इसकी उर्वरता प्रभावी है। राज्य में इन फसलों का उत्पादन इसी मृदा के विस्तार के कारण है।

88. (C) सोन
बाणसागर बांध मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में सोन नदी पर निर्मित एक विशाल बहुउद्देशीय परियोजना है। यह परियोजना मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों का एक संयुक्त उपक्रम है, जो इन राज्यों के बड़े कृषि क्षेत्रों को सिंचाई की सुविधा प्रदान करती है। सोन नदी का जल इस बांध के माध्यम से कृषि और बिजली उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता है। यह अंतर-राज्यीय जल सहयोग का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

89. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
मध्य प्रदेश के खनिजों और उनके उत्पादक जिलों का मिलान राज्य की संसाधन संपन्नता को दर्शाता है। तांबा मुख्य रूप से बालाघाट के मलंजखंड से प्राप्त होता है, जबकि हीरे के लिए पन्ना जिला देश भर में एकमात्र स्रोत है। मैंगनीज का निष्कर्षण बालाघाट की भरवेली खदान से बड़े पैमाने पर किया जाता है। कोयले के मामले में सिंगरौली जिला राज्य का प्रमुख उत्पादक केंद्र है। ये खनिज बेल्ट आर्थिक आधार हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

45. (B) उर्वरक
मध्य प्रदेश में रासायनिक उद्योग का एक प्रमुख हिस्सा कृषि क्षेत्र से जुड़ा है, जिसमें उर्वरक उत्पादन अग्रणी है। गुना जिले के विजयपुर में स्थित विशाल नेशनल फर्टिलाइजर लिमिटेड का संयंत्र इसका उत्तम उदाहरण है। यह संयंत्र गैस पाइपलाइन पर आधारित है और राज्य के किसानों को यूरिया की आपूर्ति सुनिश्चित करता है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होने के कारण, उर्वरक उद्योग का विकास उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है।

46. (A) ताप्ती नदी नर्मदा के समानांतर प्रवाहित होती है और अरब सागर में गिरती है।
ताप्ती नदी बैतूल जिले के मुलताई से निकलकर सतपुड़ा पहाड़ियों के दक्षिण में नर्मदा के समानांतर पश्चिम दिशा की ओर बहती है। यह नर्मदा की तरह ही भ्रंश घाटी का अनुसरण करती है और अंततः खंभात की खाड़ी के माध्यम से अरब सागर में मिल जाती है। क्षिप्रा नदी चंबल की सहायक है, न कि सोन की। मध्य प्रदेश की सभी नदियाँ विभिन्न पर्वतीय क्षेत्रों से उद्गमित होती हैं।

47. (D) निर्वाह कृषि और पशुपालन
बुंदेलखंड पठार की उबड़-खाबड़ स्थलाकृति, कठोर चट्टानी धरातल और जल संसाधनों की कमी के कारण यहाँ की अर्थव्यवस्था पारंपरिक रूप से निर्वाह कृषि और पशुपालन पर आधारित रही है। यहाँ सिंचाई सुविधाओं का अभाव और मिट्टी की कम जल धारण क्षमता बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती को बाधित करती है। प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण, लोग आजीविका के लिए पशुपालन और सीमित वर्षा आधारित फसलों पर निर्भर हैं।

48. (A) लैटेराइट मृदा
लैटेराइट मिट्टी का निर्माण उच्च वर्षा और तीव्र तापमान वाले क्षेत्रों में निक्षालन प्रक्रिया के माध्यम से होता है। इसमें लौह ऑक्साइड और एल्युमीनियम की अधिकता होती है, जिससे इसका रंग ईंट जैसा लाल दिखाई देता है। मध्य प्रदेश में यह मिट्टी मुख्य रूप से बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों के कुछ हिस्सों में पाई जाती है। यह मिट्टी कृषि के लिए अधिक उपजाऊ नहीं है, किंतु निर्माण हेतु उपयोगी है।

49. (C) चपटी चोटियों वाली पहाड़ियाँ और उनके मध्य काली मृदा से आच्छादित घाटियाँ।
मालवा के पठार की भू-आकृति दक्कन ट्रैप के लावा प्रवाह से निर्मित हुई है, जिसके कारण यहाँ चपटी चोटियों वाली पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। इन पहाड़ियों के बीच चौड़ी और समतल घाटियाँ स्थित हैं, जो अत्यंत उपजाऊ और गहरी काली मिट्टी से भरी हुई हैं। यह विशेषता इस क्षेत्र को एक समृद्ध कृषि क्षेत्र बनाती है। यह परिदृश्य न केवल अद्वितीय है, बल्कि क्षेत्रीय कृषि विविधता का आधार भी है।

50. (B) बघेलखंड का पठार
बघेलखंड का पठार मध्य प्रदेश का सबसे कम जनसंख्या वाला भौगोलिक क्षेत्र है। इसकी विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ, जैसे उबड़-खाबड़ धरातल, सघन वनाच्छादन और उपजाऊ मिट्टी की कमी, जनसंख्या के सघन निवास के लिए उपयुक्त नहीं हैं। इसके विपरीत, मालवा का पठार और नर्मदा घाटी अपने अनुकूल कृषि संसाधनों के कारण सघन आबादी वाले क्षेत्र हैं। आधारभूत संरचना का सीमित विकास भी यहाँ विरल जनसंख्या का कारण है।

51. (A) 4, 1, 2, 3
मध्य प्रदेश का भूगर्भीय इतिहास अत्यंत प्राचीन है। सबसे पहले विंध्यन शैल समूहों का निर्माण हुआ, जो भवन निर्माण सामग्री के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके बाद गोंडवाना युग में कोयला परतों का निर्माण हुआ। तृतीय चरण में दक्कन ट्रैप के लावा प्रवाह से काली मिट्टी की आधारभूत चट्टानें बनीं। सबसे अंत में चंबल और अन्य नदी प्रणालियों द्वारा नवीन जलोढ़ का निक्षेपण हुआ। यह क्रम विविधता को दर्शाता है।

52. (B) विंध्य श्रेणी
भांडेर और कैमूर श्रेणियां विंध्याचल पर्वत श्रृंखला का पूर्वी विस्तार हैं। कैमूर श्रेणी मध्य प्रदेश के पूर्वी हिस्से में एक महत्वपूर्ण जल विभाजक का कार्य करती है, जो सोन और यमुना नदी के बेसिन को अलग करती है। भांडेर श्रेणी मध्य भाग में स्थित है। ये श्रेणियाँ प्राचीन अवसादी चट्टानों से बनी हैं और अपनी खड़ी कगारों के लिए प्रसिद्ध हैं। विंध्य तंत्र की ये उप-श्रेणियां जल प्रवाह को प्रभावित करती हैं।

53. (C) सोयाबीन
सोयाबीन एक बहुउपयोगी फसल है जिसे मध्य प्रदेश में तेल निष्कर्षण और पशु आहार के लिए उच्च प्रोटीन स्रोत के रूप में उगाया जाता है। इसके दानों से खाद्य तेल निकाला जाता है और बचा हुआ पदार्थ पशुओं के लिए पौष्टिक आहार के रूप में उपयोग होता है। राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था में सोयाबीन का योगदान अद्वितीय है, जिसके कारण मध्य प्रदेश को 'सोया राज्य' की उपाधि प्राप्त है।

54. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नर्मदा घाटी को मध्य प्रदेश का सबसे समृद्ध कृषि क्षेत्र माना जाता है। इस घाटी में जमा प्राचीन जलोढ़ और गहरी काली मिट्टी पौधों के विकास के लिए आवश्यक खनिजों और नमी से भरपूर होती है। यहाँ सिंचाई की पर्याप्त उपलब्धता और मिट्टी की उच्च उर्वरता के कारण गेहूं, गन्ना और चना जैसी फसलों का अत्यधिक उत्पादन होता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही और तर्कसंगत हैं।

55. (C) गांधी सागर बांध
गांधी सागर बांध चंबल नदी पर निर्मित पहली और सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना है। यह मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में स्थित है और राजस्थान के साथ एक संयुक्त उपक्रम है। इस बांध से न केवल भारी मात्रा में बिजली का उत्पादन होता है, बल्कि यह एक विशाल जलाशय का निर्माण भी करता है जो सिंचाई के लिए जल प्रदान करता है। अन्य बांध नर्मदा और सोन नदी तंत्र से संबंधित हैं।

NODIA

है। यह अभयारण्य भारत के सबसे पुराने जंगल संरक्षण क्षेत्रों में से एक माना जाता है। यह सतपुड़ा टाइगर रिजर्व का भी अंग है और यहाँ सागौन के सघन वन पाए जाते हैं। सतपुड़ा की ऊबड़-खाबड़ चोटियों और गहरी घाटियों के बीच इसकी स्थिति इसे विविध वन्यजीवों के लिए आदर्श आवास प्रदान करती है।

102. (C) जलोढ़ मैदानी खेती
चंबल बेसिन में होने वाले भीषण अवनालिका अपरदन और बीहड़ निर्माण से जलोढ़ मैदानों में की जाने वाली खेती को सबसे अधिक क्षति पहुँचती है। चंबल नदी ने उपजाऊ समतल भूमि को गहरे खड्डों और नालियों में बदल दिया है, जिससे यहाँ पारंपरिक खेती करना लगभग असंभव हो गया है। यह समस्या न केवल कृषि उत्पादकता को घटाती है, बल्कि क्षेत्र के किसानों को भूमिहीन और आर्थिक रूप से कमजोर भी बना रही है।

103. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश भारत में सोयाबीन का सबसे बड़ा उत्पादक है, जिसके कारण इसे 'सोयाबीन राज्य' कहा जाता है। मालवा के पठार की मध्यम वर्षा और दक्कन ट्रैप से निर्मित उपजाऊ काली मिट्टी सोयाबीन की जड़ों के विकास और उच्च पैदावार के लिए प्रकृति का एक अनूठा उपहार है। यहाँ की जलवायु परिस्थितियों ने सोयाबीन को मुख्य व्यावसायिक फसल के रूप में स्थापित करने में सहायता की है। अतः व्याख्या पूर्णतः तर्कसंगत है।

104. (C) चंबल
चंबल नदी मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है और यह राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश के साथ राज्य की सीमा साझा करती है। यह नदी उत्तर की ओर बहते हुए चंबल के बीहड़ों का निर्माण करती है और अंततः यमुना नदी में मिल जाती है। इसकी यह सीमावर्ती अवस्थिति राजनीतिक और भौगोलिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। चंबल नदी का प्रवाह मार्ग राज्य के उत्तरी जिलों के भूगोल को गहराई से प्रभावित करता है।

105. (A) केवल I और III
नर्मदा घाटी एक भ्रंश घाटी है जो भू-पर्पटी के धंसने से बनी है, न कि वलन से, इसलिए कथन I गलत है। बुंदेलखंड का पठार बघेलखंड के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में स्थित है, न कि पूर्व में, अतः कथन III भी गलत है। मालवा का पठार वास्तव में राज्य की सबसे बड़ी भौगोलिक इकाई है, जो क्षेत्रफल का लगभग 28 प्रतिशत है। इस प्रकार, राज्य के भौगोलिक विभाजनों के संदर्भ में पहला और तीसरा कथन त्रुटिपूर्ण हैं।

106. (C) हसदेव
कोरबा ताप विद्युत केंद्र अपनी जल आवश्यकताओं के लिए हसदेव नदी पर निर्भर है। हसदेव नदी महानदी की एक प्रमुख सहायक नदी है, जो इस औद्योगिक क्षेत्र के लिए जीवन रेखा का कार्य करती है। यद्यपि कोरबा वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य का हिस्सा है, लेकिन भौगोलिक रूप से यह मध्य भारत के उस खनिज और जल नेटवर्क से जुड़ा है जो ऊर्जा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। कोयला और जल की प्रचुरता ने ही यहाँ विद्युत उत्पादन संभव बनाया है।

107. (C) P-3, Q-1, R-2, S-4
मध्य प्रदेश के भौगोलिक विभाजनों और उनकी विशिष्टताओं का मिलान क्षेत्र की पहचान को स्पष्ट करता है। सतपुड़ा श्रेणी की उच्चतम चोटी धूपगढ़ है, जबकि बुंदेलखंड पठार का सर्वोच्च बिंदु सिद्ध बाबा चोटी है। विंध्य श्रेणी के मालवा क्षेत्र में सिंगार चोटी सबसे ऊँची है। नर्मदा घाटी अपने भेड़ाघाट के संगमरमर की चट्टानों और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। ये विशेषताएँ राज्य की भूगर्भीय विविधता को प्रदर्शित करती हैं।

108. (B) ऊबड़-खाबड़ धरातल, सघन वन और तुलनात्मक रूप से कम मृदा उर्वरता।
बघेलखंड क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व कम होने का मुख्य कारण यहाँ की विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। यह क्षेत्र अत्यधिक ऊबड़-खाबड़ है और यहाँ सघन पर्णपाती वन पाए जाते हैं, जिससे कृषि भूमि का विस्तार सीमित हो गया है। यहाँ पाई जाने वाली लाल और पीली मिट्टी भी मालवा की काली मिट्टी की तुलना में कम उपजाऊ है। इन प्राकृतिक बाधाओं और कठिन जीवन परिस्थितियों के कारण लोग यहाँ विरल रूप से निवास करते हैं।

109. (C) चना
मध्य प्रदेश में गेहूं के बाद चना दूसरी सबसे महत्वपूर्ण रबी फसल है। राज्य भारत के कुल चना उत्पादन में शीर्ष स्थान पर है, जिससे इसे 'दलहन राज्य' की पहचान भी मिलती है। चने की खेती कम पानी और ठंडी जलवायु में अच्छी होती है, जो मध्य प्रदेश की शीतकालीन परिस्थितियों के अनुकूल है। अन्य फसलें जैसे मक्का, चावल और ज्वार मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में उगाई जाती हैं। चने का उत्पादन आय का बड़ा स्रोत है।

110. (B) रीवा-पन्ना का पठार
चचाई जलप्रपात मध्य प्रदेश के रीवा जिले में बीहड़ नदी पर स्थित है, जो रीवा-पन्ना पठार का हिस्सा है। यह जलप्रपात लगभग 130 मीटर ऊँचा है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। रीवा-पन्ना का पठार विंध्य श्रेणियों का कगारी हिस्सा है, जहाँ कई नदियाँ ऊँचाई से गिरकर सुंदर प्रपातों का निर्माण करती हैं। चचाई प्रपात इस क्षेत्र की जल विद्युत क्षमता और पर्यटन दोनों की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थल है।

111. (C) चंबल बेसिन
"उत्खात भूमि" या 'बैडलैंड' स्थलाकृति चंबल नदी बेसिन की सबसे विशिष्ट पहचान है। चंबल नदी ने अपने बहाव मार्ग में कोमल मिट्टी का गहरा कटाव किया है, जिससे वहाँ हजारों एकड़ में फैले बीहड़ों का निर्माण हुआ है। ये बीहड़ अत्यधिक ऊबड़-खाबड़ और गहरे खड्डों वाले होते हैं, जो कृषि के लिए पूरी तरह अयोग्य हैं। यह भू-आकृति मृदा अपरदन के चरम रूप

Click Here to Buy book on Amazon

90. (C) जबलपुर
प्रसिद्ध 'धुआंधार जलप्रपात' मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर के निकट भेड़ाघाट में नर्मदा नदी पर स्थित है। यहाँ नर्मदा नदी संगमरमर की चट्टानों से लगभग 30 मीटर की ऊँचाई से गिरती है, जिससे पानी की नन्हीं बूंदों का कोहरा जैसा बन जाता है, जो धुएँ के समान दिखाई देता है। इसी कारण इसे 'धुआंधार' कहा जाता है। यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है और संगमरमर की चट्टानों के बीच इसकी सुंदरता अद्वितीय है।

91. (B) मालवा का पठार और नर्मदा घाटी उच्च जनसंख्या संकेंद्रण वाले क्षेत्र हैं।
मध्य प्रदेश में जनसंख्या का वितरण मुख्य रूप से संसाधनों की उपलब्धता और कृषि उत्पादकता से प्रेरित है। मालवा का पठार और नर्मदा घाटी अपनी उपजाऊ मिट्टी, विकसित कृषि और बढ़ते औद्योगिक केंद्रों के कारण राज्य के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। इंदौर, भोपाल और जबलपुर जैसे बड़े शहर इन्हीं क्षेत्रों में स्थित हैं। इसके विपरीत, वनाच्छादित बघेलखंड जैसे क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व काफी कम पाया जाता है।

92. (C) मालवा का पठार
'दक्कन ट्रैप' एक विशाल भूगर्भीय संरचना है जो ज्वालामुखी क्रिया के परिणामस्वरूप निकले लावा के जमने से बनी है। मध्य प्रदेश का मालवा पठार इसी दक्कन ट्रैप का हिस्सा है। लाखों वर्ष पूर्व हुए दरारी उद्भेदन से निकले बेसाल्टिक लावा ने इस क्षेत्र की आधारशिला रखी। समय के साथ इन बेसाल्टिक चट्टानों के टूटने और अपक्षय से काली मिट्टी का निर्माण हुआ। यह संरचना मालवा की विशिष्ट कृषि के लिए उत्तरदायी है।

93. (D) गेहूं
गेहूं मध्य प्रदेश की एक प्रमुख रबी फसल है, जिसकी बुवाई शीत ऋतु के आगमन पर की जाती है और कटाई मार्च-अप्रैल में होती है। इसके विपरीत चावल, सोयाबीन और कपास खरीफ की फसलें हैं, जो मानसून की वर्षा पर निर्भर होती हैं और जून-जुलाई में बोई जाती हैं। मध्य प्रदेश गेहूं उत्पादन में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है, विशेष रूप से मालवा का गेहूं अपनी उच्च गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है।

94. (A) 1, 2, 3, 4
मध्य प्रदेश की नदियों को पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करने पर नर्मदा सबसे पश्चिम में स्थित है, जो पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। इसके बाद चंबल नदी आती है जो पश्चिमी भाग से निकलकर उत्तर की ओर जाती है। बेतवा राज्य के मध्य भाग से प्रवाहित होती है, और सोन नदी सबसे पूर्व में अमरकंटक से निकलकर उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। यह व्यवस्था जल निकासी प्रणाली को स्पष्ट करती है।

95. (B) नागदा और अमलाई
मध्य प्रदेश में रासायनिक उद्योग के प्रमुख केंद्रों में नागदा और अमलाई शामिल हैं। उज्जैन जिले के नागदा में ग्रेसिम इंडस्ट्रीज द्वारा कास्टिक सोडा का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है, जो वस्त्र और लुगदी उद्योगों के लिए एक महत्वपूर्ण कच्चा माल है। इसी तरह, अमलाई में भी औद्योगिक रसायनों का उत्पादन होता है। ये केंद्र राज्य के औद्योगिक मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं और रोजगार सृजन में सहायक हैं।

96. (C) उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में तीव्र निक्षालन द्वारा निर्मित, जिससे आयरन ऑक्साइड शेष रह जाता है।
मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों, जैसे बालाघाट और छिंदवाड़ा में पाई जाने वाली लैटेराइट मिट्टी का निर्माण तीव्र निक्षालन प्रक्रिया से होता है। भारी वर्षा के कारण मिट्टी के ऊपरी स्तर से सिलिका और अन्य पोषक तत्व बह जाते हैं, जिससे केवल लौह और एल्युमीनियम के ऑक्साइड ही शेष रह जाते हैं। इससे मिट्टी कठोर और लाल रंग की हो जाती है। यह मिट्टी कृषि की दृष्टि से कम उपजाऊ होती है।

97. (C) क्षिप्रा
ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का शहर उज्जैन क्षिप्रा नदी के पावन तट पर स्थित है। क्षिप्रा नदी इंदौर के निकट काकरीबर्डी पहाड़ी से निकलती है और उत्तर की ओर बहते हुए अंततः चंबल नदी में मिल जाती है। उज्जैन में प्रत्येक 12 वर्ष में होने वाला 'सिंहस्थ कुंभ' इसी नदी के किनारे आयोजित किया जाता है। मालवा क्षेत्र की यह महत्वपूर्ण नदी 'मालवा की गंगा' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

NODIA

98. (D) बुंदेलखंड का पठार
'सिद्ध बाबा' चोटी बुंदेलखंड पठार का उच्चतम बिंदु है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 1172 मीटर है। यह चोटी दतिया जिले के पास स्थित है और इस पूरे भौगोलिक क्षेत्र की ऊँचावच विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती है। बुंदेलखंड का पठार अपनी कठोर ग्रेनाइट चट्टानों और पहाड़ियों के लिए जाना जाता है। सिद्ध बाबा चोटी न केवल एक भौगोलिक पहचान है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए सांस्कृतिक महत्व का केंद्र भी है।

99. (C) उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के प्रचुर भंडार
सतना-रीवा क्षेत्र में सीमेंट उद्योग के अत्यधिक विकास का मुख्य कारण यहाँ विंध्यन शैल समूह में पाए जाने वाले उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के विशाल भंडार हैं। सीमेंट निर्माण में चूना पत्थर एक भारी कच्चा माल है, इसलिए उद्योगों की स्थापना खदानों के समीप ही की जाती है। परिवहन लागत कम होने और कच्चे माल की निरंतर उपलब्धता ने इस क्षेत्र को भारत के प्रमुख सीमेंट उत्पादन केंद्रों में से एक बनाया है।

100. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
बुंदेलखंड क्षेत्र प्राचीन ग्रेनाइट और नीस चट्टानों से बना है, जो अत्यंत कठोर होती हैं, जिससे वर्षा का पानी जमीन के भीतर कम रिस पाता है और भूजल स्तर सीमित रहता है। दूसरी ओर, मालवा पठार की बेसाल्टिक चट्टानें समय के साथ दरारों के कारण कुछ हद तक जल संचय में सहायक होती हैं, जिससे वहां भूजल की स्थिति बेहतर है। अतः राज्य की भूगर्भीय संरचना और जल स्तर के संबंध में दोनों कथन सत्य हैं।

101. (B) सतपुड़ा श्रेणी
बोरी वन्यजीव अभयारण्य मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम जिले में स्थित है और यह सतपुड़ा पर्वत श्रेणी का एक अभिन्न हिस्सा

मुरैना में पाई जाती है। सबसे कम विस्तार लैटेराइट मिट्टी का है जो बालाघाट जैसे विशिष्ट वर्षा वाले क्षेत्रों तक सीमित है। यह क्रम भूगर्भीय विविधता को स्पष्ट करता है।

123. (B) शहडोल
'ओरिएंट पेपर मिल' मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के अमलाई नामक स्थान पर स्थित है। यह निजी क्षेत्र की एक बड़ी कागज मिल है जो लुगदी और विभिन्न प्रकार के कागज का उत्पादन करती है। इस मिल की स्थापना के पीछे मुख्य कारण क्षेत्र में बांस के सघन वनों की उपलब्धता और जल तथा ऊर्जा के पर्याप्त स्रोत होना था। यह उद्योग शहडोल और आसपास के क्षेत्रों के औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण है।

124. (C) कृषि
मालवा के पठार की अधिकांश जनसंख्या का प्राथमिक व्यवसाय कृषि है। यहाँ की गहरी काली मिट्टी और मध्यम वर्षा गेहूं, सोयाबीन, कपास और चने की सघन खेती के लिए अत्यंत अनुकूल है। मालवा को राज्य का "अन्न भंडार" कहा जाता है, जहाँ उन्नत कृषि तकनीकों और सिंचाई के साधनों का व्यापक उपयोग होता है। यद्यपि यहाँ उद्योग और व्यापार भी विकसित हैं, लेकिन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार आज भी कृषि ही है।

125. (C) वैनगंगा नदी उत्तर की ओर बहकर यमुना में मिल जाती है।
वैनगंगा नदी मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के पास से निकलती है और यह दक्षिण की ओर बहती हुई अंततः गोदावरी नदी तंत्र में मिल जाती है। यह मध्य प्रदेश की उन विरल नदियों में से एक है जो दक्षिण की ओर प्रवाहित होती हैं, न कि उत्तर की ओर यमुना में। नर्मदा भारत की पाँचवीं सबसे लंबी नदी है और सोन गंगा की सहायक है, ये तथ्य सही हैं। ताप्ती का उद्गम भी बैतूल में सतपुड़ा से होता है। अतः विकल्प (C) गलत है।

126. (B) हीरा और चूना पत्थर
मध्य प्रदेश के उत्तरी और मध्य भागों में विस्तृत विंध्याचल शैल समूह की चट्टानें आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये चट्टानें भारत में हीरे का एकमात्र ज्ञात स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त, विंध्यन तंत्र में चूना पत्थर के विशाल भंडार पाए जाते हैं, जो सीमेंट उद्योग का मुख्य आधार हैं। यहाँ से उच्च गुणवत्ता वाला भवन निर्माण पत्थर भी प्राप्त होता है। यह शैल समूह खनिज संपदा को मजबूती प्रदान करने वाला मुख्य स्तंभ है।

127. (A) उष्णकटिबंधीय मानसून
मध्य प्रदेश की जलवायु मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है। राज्य के मध्य से कर्क रेखा गुजरने के कारण यहाँ तापमान ऊँचा रहता है, और अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान होती है। यहाँ स्पष्ट रूप से तीन मौसम—ग्रीष्म, वर्षा और शीत ऋतु—पाए जाते हैं। समुद्र से दूरी के कारण यहाँ की जलवायु में महाद्वीपीय प्रभाव भी देखा जाता है। यह जलवायु राज्य की कृषि विविधता का मुख्य निर्धारक है।

128. (A) केवल I और II
मध्य प्रदेश भारत का एकमात्र हीरा उत्पादक राज्य है, जहाँ पन्ना जिला मुख्य केंद्र है। साथ ही, राज्य तांबा उत्पादन में भी देश में शीर्ष स्थान पर है, जहाँ बालाघाट की मलंजखंड खदान प्रमुख है। चूना पत्थर के भंडार मुख्य रूप से सतना, कटनी और धार जैसे विंध्यन क्षेत्रों में पाए जाते हैं, केवल मालवा तक सीमित नहीं हैं। अतः प्रथम दो कथन सही हैं और राज्य की खनिज प्रधानता को प्रमाणित करते हैं।

129. (C) सतपुड़ा-मैकल श्रेणी
पचमढ़ी मध्य प्रदेश का एकमात्र पर्वतीय स्थल है और यह सतपुड़ा-मैकल पर्वत श्रेणी की महादेव पहाड़ियों में स्थित है। यह स्थान राज्य की सबसे ऊँची चोटी 'धूपगढ़' का घर है और यहाँ की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह अरब सागर और बंगाल की खाड़ी दोनों मानसून शाखाओं से आर्द्रता प्राप्त करता है, जिससे यहाँ राज्य की सर्वाधिक वर्षा होती है। अपनी सघन हरियाली के कारण इसे 'सतपुड़ा की रानी' भी कहा जाता है।

130. (B) चंबल
गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और जवाहर सागर बांध चंबल नदी घाटी परियोजना के प्रमुख अंग हैं। गांधी सागर मध्य प्रदेश में स्थित है, जबकि अन्य दो बांध राजस्थान में हैं। यह परियोजना सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन के लिए बनाई गई थी और यह मध्य प्रदेश तथा राजस्थान का एक सफल संयुक्त उपक्रम है। चंबल नदी पर बने इन बांधों ने उत्तरी मध्य प्रदेश के सूखे क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया है।

131. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्य प्रदेश के उद्योगों और उनके प्रमुख केंद्रों का मिलान क्षेत्रीय औद्योगिक विशेषज्ञता को दर्शाता है। एल्युमीनियम संयंत्र रेनुकूट को अमरकंटक से कच्चा माल मिलता है। नेपानगर अखबारी कागज के लिए प्रसिद्ध है, जबकि नर्मदापुरम में सिक्योरिटी पेपर मिल स्थित है। सतना जिला अपने विशाल सीमेंट कारखानों के लिए जाना जाता है। ये औद्योगिक केंद्र राज्य के संसाधनों के प्रसंस्करण और आर्थिक मूल्यवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

NODIA

132. (C) ताप्ती
गुजरात का काकरापार परमाणु ऊर्जा संयंत्र ताप्ती नदी के तट पर स्थित है। ताप्ती नदी मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के मुलताई से निकलती है और पश्चिम की ओर बहते हुए गुजरात में प्रवेश करती है। परमाणु संयंत्रों को शीतलन प्रक्रिया के लिए भारी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है, जो ताप्ती नदी द्वारा सुनिश्चित की जाती है। यह नदी मध्य प्रदेश और गुजरात के बीच एक महत्वपूर्ण जल साझाकरण का प्राकृतिक माध्यम है।

133. (B) बुंदेलखंड का पठार
बुंदेलखंड का पठार पृथ्वी की सबसे प्राचीन चट्टानों में से एक 'बुंदेलखंड नीस' से निर्मित है, जो आर्कियन युग की हैं। ये ग्रेनाइट और नीस चट्टानें अत्यंत कठोर होती हैं और इस क्षेत्र की विशिष्ट उबड़-खाबड़ स्थलाकृति का आधार बनाती हैं। भूगर्भीय दृष्टि से यह हिस्सा भारत के प्राचीन प्रायद्वीपीय खंड का सबसे

को प्रदर्शित करती है और चंबल क्षेत्र के भूगोल को भारत में अद्वितीय बनाती है।

112. (C) प्रमुख कोयला क्षेत्र सतपुड़ा क्षेत्र की गोंडवाना चट्टानों में स्थित हैं।
मध्य प्रदेश में कोयले का संचय मुख्य रूप से गोंडवाना काल की चट्टानों में हुआ है, जो बघेलखंड और सतपुड़ा दोनों क्षेत्रों में फैली हुई हैं। सतपुड़ा कोयला क्षेत्र के अंतर्गत पेंच, कान्हा और तवा घाटी जैसे महत्वपूर्ण खनन केंद्र आते हैं। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि राज्य का हीरे पर एकाधिकार है, न कि कोयले और लोहे पर। बॉक्साइट पूर्वी जिलों में अधिक है और हीरे विंध्यन संरचना में मिलते हैं, दक्कन ट्रैप में नहीं।

113. (C) निर्यात के लिए समुद्री बंदरगाह से निकटता
नेपानगर में अखबारी कागज कारखाने की स्थापना के लिए बांस और सलाई की लकड़ी की स्थानीय उपलब्धता, ताप्ती नदी से जल और समीप के क्षेत्रों से कोयले की आपूर्ति प्राथमिक कारक थे। मध्य प्रदेश एक भू-आबद्ध राज्य होने के कारण, यहाँ किसी भी उद्योग के लिए समुद्री बंदरगाह से निकटता का कारक लागू नहीं होता है। नेपानगर की अवस्थिति पूर्णतः स्थानीय कच्चे माल और रेल परिवहन की सुविधा पर आधारित थी।

114. (B) काली मृदा और लाल-पीली मृदा के मध्य संक्रमण क्षेत्रों में (जैसे सागर, दमोह)
मध्य प्रदेश में मिश्रित लाल और काली मिट्टी उन क्षेत्रों में पाई जाती है जहाँ काली मिट्टी का क्षेत्र समाप्त होता है और लाल-पीली मिट्टी का क्षेत्र प्रारंभ होता है। सागर, दमोह और बुंदेलखंड के कुछ दक्षिणी हिस्से इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इस मृदा में दोनों प्रकार की मिट्टियों के गुण मिश्रित होते हैं। यह मृदा मध्यम उर्वरता वाली होती है और इसमें सिंचाई के माध्यम से दलहन तथा मोटे अनाजों की अच्छी पैदावार की जा सकती है।

115. (D) भोपाल
कर्क रेखा मध्य प्रदेश के ठीक बीच से होकर 14 जिलों से गुजरती है। राज्य की राजधानी भोपाल कर्क रेखा के अत्यंत समीप स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से भोपाल की स्थिति इसे जलवायु और खगोलीय मापन के लिए महत्वपूर्ण बनाती है। इंदौर और जबलपुर भी इसके दक्षिण में स्थित हैं, लेकिन भोपाल की निकटता सबसे अधिक स्पष्ट है। ग्वालियर राज्य के उत्तरी भाग में होने के कारण कर्क रेखा से काफी दूर स्थित है।

116. (B) विंध्य श्रेणी
प्रसिद्ध भीमबेटका के शैलाश्रय मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों में स्थित हैं। ये प्राचीन गुफाएँ आदिमानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं और यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। विंध्य श्रेणी की बलुआ पत्थर की चट्टानों ने इन चित्रों को हजारों वर्षों तक संरक्षित रखने में सहायता की है। यह स्थान मानव सभ्यता के विकास के अध्ययन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

117. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
चंबल नदी अपने निचले मार्ग, विशेष रूप से मध्य भारत के पठारी क्षेत्र में, अपना मार्ग बदलने और विसर्पण के लिए जानी जाती है। यहाँ की मिट्टी कोमल जलोढ़ प्रकार की है, जिसे नदी का जल आसानी से काट देता है। नदी द्वारा बहाकर लाया गया भारी अवसाद भार और भूमि का मंद ढाल इसे सीधे बहने के बजाय टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलने के लिए विवश करता है, जिससे बीहड़ों का विस्तार होता रहता है। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

118. (B) अनिश्चित वर्षा और मृदा की कम जल धारण क्षमता
बुंदेलखंड पठार में कृषि के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती जलवायु और मिट्टी की प्रकृति है। यहाँ वर्षा बहुत अनिश्चित और कम होती है, जिससे बार-बार सूखे की स्थिति बनती है। साथ ही यहाँ पाई जाने वाली लाल और मिश्रित मिट्टी पानी को सोखकर रखने में अक्षम होती है, जिसके कारण नमी जल्दी समाप्त हो जाती है। सिंचाई के स्थायी साधनों की कमी और कठोर चट्टानी धरातल भूजल स्तर को भी ऊपर नहीं आने देते।

119. (C) मैंगनीज
बालाघाट जिले में स्थित 'भरवेली' खदान एशिया की सबसे बड़ी भूमिगत मैंगनीज खदान है। मैंगनीज का उपयोग मुख्य रूप से स्टील उद्योग में किया जाता है ताकि लोहे को कठोर और जंगरोधी बनाया जा सके। मध्य प्रदेश इस खनिज के उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य है। भरवेली खदान से प्राप्त उच्च गुणवत्ता वाला मैंगनीज न केवल घरेलू उद्योगों की माँग पूरी करता है, बल्कि इसका बड़े पैमाने पर निर्यात भी किया जाता है।

120. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नर्मदा और ताप्ती नदियाँ भारत की उन प्रमुख नदियों में से हैं जो पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं क्योंकि वे भ्रंश घाटियों में स्थित हैं। इन घाटियों का निर्माण पृथ्वी की आंतरिक हलचलों के दौरान विंध्य और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के बीच की भूमि के नीचे धंसने से हुआ है। ये नदियाँ ढाल का अनुसरण न करके इन प्राकृतिक दरारों के माध्यम से बहती हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और सटीक व्याख्या करते हैं।

121. (C) सीधी
सीधी जिला मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है और यह भौगोलिक रूप से बघेलखंड पठार का हिस्सा है। इसके विपरीत, इंदौर, उज्जैन और देवास जिले राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित हैं और मालवा के उपजाऊ पठार के प्रमुख अंग हैं। मालवा अपनी काली मिट्टी और समशीतोष्ण जलवायु के लिए जाना जाता है, जबकि सीधी क्षेत्र अपनी पहाड़ी बनावट और कोयला भंडारों के लिए प्रसिद्ध है। अतः सीधी जिला मालवा पठार में नहीं आता।

122. (A) 1, 2, 3, 4
मध्य प्रदेश में मृदा के क्षेत्रीय विस्तार को देखें तो काली मिट्टी सबसे बड़े क्षेत्र पर पाई जाती है। इसके बाद लाल और पीली मिट्टी का स्थान है जो बघेलखंड क्षेत्र में विस्तृत है। तीसरे स्थान पर जलोढ़ मिट्टी आती है जो राज्य के उत्तरी जिलों जैसे भिंड और

Downloaded from www.pdf.tube

फर्टिलाइजर लिमिटेड का संयंत्र देश के सबसे महत्वपूर्ण उर्वरक कारखानों में से एक है। यह संयंत्र गैस पर आधारित है और कृषि क्षेत्र की नाइट्रोजन उर्वरकों की माँग को पूरा करता है। राज्य की कृषि प्रधानता और प्राकृतिक गैस की उपलब्धता ने इस उद्योग को यहाँ सफल बनाया है, जो उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है।

145. (C) मालवा का पठार
सिगार चोटी मालवा के पठार का उच्चतम बिंदु है, जिसकी ऊँचाई 881 मीटर है। यह चोटी इंदौर जिले के महू के पास स्थित है। मालवा का पठार अपनी औसत ऊँचाई और समतल धरातल के लिए जाना जाता है, लेकिन सिगार और जानापाव जैसी चोटियाँ इस क्षेत्र की भौगोलिक विविधता को दर्शाती हैं। यहाँ से कई महत्वपूर्ण नदियों का उद्गम होता है। सिगार चोटी इस क्षेत्र के ऊँचावच को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण मानक मानी जाती है।

146. (D) चावल
चावल मालवा पठार की मुख्य फसल नहीं है क्योंकि यहाँ की औसत वर्षा और मिट्टी की प्रकृति मुख्य रूप से गेहूं और सोयाबीन के लिए अधिक अनुकूल है। चावल की खेती के लिए बहुत अधिक जल और विशिष्ट आर्द्र परिस्थितियों की आवश्यकता होती है, जो मध्य प्रदेश के पूर्वी जिलों (जैसे बालाघाट) में पाई जाती है। मालवा में काली मिट्टी की प्रधानता और मध्यम वर्षा के कारण कपास और दलहन की खेती अधिक सफल है।

147. (C) सोन नदी प्रयागराज के निकट नर्मदा से मिलती है।
सोन नदी के बारे में दिया गया कथन गलत है क्योंकि सोन नदी नर्मदा से नहीं, बल्कि पटना के पास सीधे गंगा नदी में मिलती है। नर्मदा और सोन दोनों अमरकंटक से निकलती हैं, लेकिन वे विपरीत दिशाओं में बहती हैं। अन्य कथन सही हैं: नर्मदा पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे लंबी नदी है, चंबल जनापाव से निकलती है और बेतवा को मध्य प्रदेश की गंगा (प्रदूषण के आधार पर) कहा जाता है। अतः विकल्प (C) गलत है।

148. (B) दक्षिणी और पूर्वी जिले
मध्य प्रदेश की जनजातीय जनसंख्या मुख्य रूप से राज्य के दक्षिणी और पूर्वी जिलों में केंद्रित है। झाबुआ और धार जैसे पश्चिमी जिलों में भी भील जनजाति की प्रधानता है, लेकिन बालाघाट, मंडला, शहडोल और डिंडोरी जैसे जिले गोंड, बैगा और कोल जनजातियों के प्रमुख निवास स्थल हैं। इन क्षेत्रों की पहाड़ी और वनाच्छादित भौगोलिक स्थिति ने इन समुदायों को अपनी पारंपरिक संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए एक सुरक्षित प्राकृतिक परिवेश प्रदान किया है।

149. (C) बेतवा
राजघाट बांध मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की एक महत्वपूर्ण संयुक्त सिंचाई परियोजना है, जो बेतवा नदी पर निर्मित की गई है। यह बांध मध्य प्रदेश के अशोकनगर जिले और उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले की सीमा पर स्थित है। इसे 'रानी लक्ष्मीबाई परियोजना' के नाम से भी जाना जाता है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य दोनों राज्यों के बुंदेलखंड क्षेत्र की भूमि को सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराना और आर्थिक समृद्धि लाना है।

150. (A) 1, 2, 3, 4
एल्युमीनियम उत्पादन की प्रक्रिया एक व्यवस्थित क्रम का अनुसरण करती है। सबसे पहले खानों से बॉक्साइट का उत्खनन किया जाता है। इसके बाद रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बॉक्साइट से एलुमिना प्राप्त किया जाता है। तृतीय चरण में, एलुमिना का विद्युत अपघटन करके शुद्ध एल्युमीनियम धातु निकाली जाती है। अंत में, इस धातु का उपयोग विभिन्न औद्योगिक उत्पादों के विनिर्माण के लिए किया जाता है। यह श्रृंखला संसाधनों के मूल्यवर्धन और औद्योगिक विकास को स्पष्ट करती है।

151. (C) विंध्य-सतपुड़ा श्रेणियाँ
विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियां भारत के प्रमुख जल विभाजक के रूप में कार्य करती हैं। ये श्रेणियाँ उत्तर भारत की नदियों और दक्षिण भारत की नदियों के बीच एक प्राकृतिक बाधा बनाती हैं। उदाहरण के लिए, चंबल और बेतवा उत्तर की ओर बहती हैं, जबकि ताप्ती और गोदावरी दक्षिण की ओर। इन श्रेणियों की अवस्थिति ही मध्य प्रदेश और संपूर्ण प्रायद्वीपीय भारत के नदी प्रवाह तंत्र और जल वितरण की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

152. (C) रवेदार और रूपांतरित चट्टानों में लोहे का प्रसार
बघेलखंड जैसे क्षेत्रों में मिट्टी का लाल और पीला रंग मुख्य रूप से रवेदार और रूपांतरित चट्टानों में लोहे के प्रसार के कारण होता है। जब चट्टानों में मौजूद लोहे के अंश का ऑक्सीकरण होता है, तो मिट्टी का रंग लाल हो जाता है, और जब यह जलयोजित होती है, तो यह पीली दिखाई देती है। यह मिट्टी अम्लीय से तटस्थ होती है और इसमें नाइट्रोजन की कमी पाई जाती है। इसकी यह विशिष्ट रंगत क्षेत्रीय भूविज्ञान का परिणाम है।

153. (B) प्रतिकूल कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ और सतही संसाधनों की कमी
बुंदेलखंड क्षेत्र के आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण यहाँ की कठिन कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ हैं। यहाँ की कठोर ग्रेनाइट संरचना जल के संचय को कठिन बनाती है, जिससे सिंचाई के लिए सतही और भूजल दोनों की कमी रहती है। अनियमित वर्षा और कम उपजाऊ मिट्टी के कारण कृषि उत्पादकता निम्न बनी रहती है। प्राकृतिक संसाधनों के सीमित होने और कठिन भौगोलिक बनावट ने औद्योगिक विकास को भी धीमा रखा है। ये बुनियादी चुनौतियाँ विकास को बाधित करती हैं।

154. (D) I, II और III
मध्य प्रदेश के विभिन्न कृषि क्षेत्रों की विशेषताएँ उनके भूगोल पर आधारित हैं। नर्मदा बेसिन अपनी उपजाऊ और गहरी काली मिट्टी के लिए जाना जाता है। चंबल बेसिन की जलोढ़ मिट्टी अपनी कोमलता के कारण चंबल नदी द्वारा उत्पन्न अवनालिका अपरदन के प्रति बहुत संवेदनशील है। बघेलखंड क्षेत्र में प्राचीन चट्टानों के कारण कम उपजाऊ लाल और पीली मिट्टी

NODIA

175. (C) बुंदेलखंड का पठार
विश्व प्रसिद्ध चंदेरी साड़ियाँ बुंदेलखंड पठार क्षेत्र, विशेष रूप से अशोकनगर जिले के चंदेरी शहर से संबंधित हैं। यह हस्तकला सदियों पुरानी है और रेशम तथा सूती धागों के बेहतरीन मिश्रण के लिए जानी जाती है। चंदेरी की भौगोलिक अवस्थिति और वहाँ की ऐतिहासिक विरासत ने इस कला को फलने-फूलने का आधार दिया है। बुंदेलखंड की इस सांस्कृतिक पहचान को अब भौगोलिक संकेतक (GI Tag) भी प्राप्त है, जो इसे वैश्विक बाजार में एक विशिष्ट स्थान दिलाता है।

176. (D) उज्जैन
टीकमगढ़, छतरपुर और दतिया जिले मध्य प्रदेश के उत्तर-मध्य भाग में स्थित हैं और बुंदेलखंड पठार के प्रमुख अंग हैं। इसके विपरीत, उज्जैन जिला राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित है और मालवा के पठार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और भौगोलिक केंद्र है। बुंदेलखंड अपनी प्राचीन ग्रेनाइट चट्टानों और शुष्क जलवायु के लिए जाना जाता है, जबकि उज्जैन उपजाऊ काली मिट्टी वाले क्षेत्र में आता है। अतः उज्जैन का संबंध बुंदेलखंड के भौगोलिक विस्तार से नहीं है।

177. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
मध्य प्रदेश के संदर्भ में ये दोनों कथन तथ्यात्मक रूप से गलत हैं। राज्य में न केवल ताप विद्युत, बल्कि जलविद्युत की भी विशाल क्षमता है और नर्मदा नदी पर बने बांध इसका प्रमाण हैं। कथन II भी गलत है क्योंकि राज्य में नर्मदा और ताप्ती जैसी कई बारहमासी नदियाँ हैं जिनका ढाल और प्रवाह बांध निर्माण तथा बिजली उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त है। मध्य प्रदेश ऊर्जा क्षेत्र में एक आत्मनिर्भर और अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित है।

178. (A) निचली नर्मदा घाटी
निमाड़ का मैदान, जिसमें मुख्य रूप से खंडवा और खरगोन जिले शामिल हैं, निचली नर्मदा घाटी का हिस्सा है। यह क्षेत्र अपनी उपजाऊ काली मिट्टी और अनुकूल जलवायु के कारण कपास और मिर्च के उत्पादन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यहाँ कपास की उच्च गुणवत्ता के कारण इन्हें "सुनहरे जिले" भी कहा जाता है। नर्मदा नदी की उपस्थिति और घाटी की सुगम स्थलाकृति ने इस क्षेत्र को एक सघन और उत्पादक कृषि क्षेत्र के रूप में विकसित किया है।

179. (C) घड़ियाल
राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य की स्थापना मुख्य रूप से 'घड़ियाल' के संरक्षण के लिए की गई थी, जो एक अत्यंत दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजाति है। यह अभयारण्य चंबल नदी के किनारे मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के संगम पर स्थित है। यहाँ घड़ियालों के अलावा मगरमच्छ और गंगा डॉल्फिन का भी संरक्षण किया जाता है। चंबल नदी का स्वच्छ और प्रदूषण रहित जल इन जलीय जीवों के प्रजनन और जीवन के लिए एक आदर्श प्राकृतिक आवास प्रदान करता है।

180. (C) मैकल श्रेणी
नर्मदा और सोन नदियों का उद्गम स्थल 'अमरकंटक' मैकल पर्वत श्रेणी का हिस्सा है। मैकल श्रेणी सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला का पूर्वी विस्तार है और यह एक महत्वपूर्ण जल विभाजक का कार्य करती है। अमरकंटक की ऊँचाई और इसकी विशिष्ट भूगर्भीय संरचना इसे नदियों के उद्गम के लिए उपयुक्त बनाती है। यहाँ से नदियाँ अलग-अलग दिशाओं में बहती हैं—नर्मदा पश्चिम की ओर और सोन उत्तर-पूर्व की ओर। यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

181. (B) विंध्याचल और सतपुड़ा
नर्मदा-सोन घाटी मध्य प्रदेश की एक प्रमुख भौगोलिक संरचना है जो उत्तर में विंध्याचल श्रेणी और दक्षिण में सतपुड़ा श्रेणी के बीच स्थित है। यह घाटी एक गहरी भ्रंश रेखा का अनुसरण करती है, जो इन दोनों विशाल पर्वत प्रणालियों को एक-दूसरे से अलग करती है। विंध्याचल और सतपुड़ा के मध्य स्थित यह संकरा मैदान अत्यंत उपजाऊ है और राज्य की जल निकासी व्यवस्था में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह विभाजन राज्य के ऊँचावच को दो स्पष्ट भागों में बाँटता है।

182. (C) काली मृदा
दिए गए लक्षण स्पष्ट रूप से काली मिट्टी का वर्णन करते हैं। यह मिट्टी दक्कन ट्रैप की बेसाल्टिक चट्टानों के टूटने से बनी है। इसकी सबसे अनूठी विशेषता 'स्वतः जुताई' है, क्योंकि सूखने पर इसमें गहरी दरारें पड़ जाती हैं जो हवा को गहराई तक पहुँचने देती हैं। कपास की खेती के लिए यह सर्वोत्तम मानी जाती है, इसलिए इसे 'कपासी मृदा' भी कहा जाता है। मध्य प्रदेश के मालवा और नर्मदा क्षेत्रों में इसकी व्यापक उपलब्धता राज्य की कृषि संपन्नता का मुख्य कारण है।

183. (C) महानदी
चंबल, बेतवा और ताप्ती नदियाँ मध्य प्रदेश के विभिन्न पर्वतीय क्षेत्रों से निकलती हैं। इसके विपरीत, महानदी का उद्गम छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले में स्थित सिहावा पहाड़ियों से होता है। यद्यपि महानदी का बेसिन पुराने समय में अविभाजित मध्य प्रदेश का हिस्सा था, लेकिन वर्तमान भौगोलिक सीमा के अनुसार इसका मुख्य स्रोत मध्य प्रदेश में नहीं है। महानदी मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ और ओडिशा के माध्यम से बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

184. (B) भिंड
मध्य प्रदेश में न्यूनतम वर्षा भिंड जिले के गोहद क्षेत्र में दर्ज की जाती है, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा लगभग 55 सेंटीमीटर के आसपास होती है। इसका कारण इसकी उत्तर-पश्चिमी भौगोलिक स्थिति है, जहाँ मानसून की दोनों शाखाओं की आर्द्रता पहुँचते-पहुँचते काफी कम हो जाती है। इसके विपरीत पचमढ़ी में सर्वाधिक वर्षा होती है। भिंड की यह शुष्क परिस्थिति इस क्षेत्र की कृषि और प्राकृतिक वनस्पति के स्वरूप को मुख्य रूप से निर्धारित करती है।

185. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
रीवा-पन्ना पठार में सीमेंट उद्योग के विकसित होने का मुख्य कारण वहाँ चूना पत्थर के प्रचुर भंडार होना है, जो अभिकथन को सत्य बनाता है। हालांकि, कारण (R) गलत है क्योंकि सीमेंट उद्योग के लिए कोयला एक आवश्यक ऊर्जा स्रोत है,

Click Here to Buy book on Amazon

165. (B) गोंडवाना संरचना वाला एक उबड़-खाबड़ पठार, जो कोयला भंडार में समृद्ध है।
बघेलखंड का पठार मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित एक उबड़-खाबड़ और पहाड़ी क्षेत्र है। इसकी भूगर्भीय बनावट मुख्य रुप से गोंडवाना काल की चट्टानों से प्रभावित है, जिसके कारण यह कोयला भंडार में अत्यंत समृद्ध है। सिंगरौली जैसे विशाल कोयला क्षेत्र इसी पठार का हिस्सा हैं। यहाँ की विषम स्थलाकृति और सघन वन इसे कृषि की तुलना में खनन और वनोपज के लिए अधिक उपयुक्त बनाते हैं। यह पठार राज्य की ऊर्जा और औद्योगिक नींव को मजबूत करने वाला मुख्य भौगोलिक विभाग है।

166. (C) पूर्णा
पूर्णा नदी नर्मदा की सहायक नदी नहीं है, बल्कि यह ताप्ती नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। तवा, हिरण और शक्कर नदियाँ नर्मदा की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं जो इसके जलग्रहण क्षेत्र को विस्तृत बनाती हैं। नर्मदा का सहायक नदी तंत्र बहुत विशाल है, जिसमें कुल 41 प्रमुख नदियाँ शामिल हैं। पूर्णा नदी का प्रवाह मुख्य रूप से ताप्ती के दक्षिण में होता है। नदियों के इस सूक्ष्म अंतर को समझना मध्य प्रदेश की जल निकासी प्रणाली के सटीक अध्ययन के लिए आवश्यक है।

167. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्य प्रदेश के प्रमुख बांधों और उनकी नदियों का मिलान राज्य के जल प्रबंधन को स्पष्ट करता है। बरगी बांध नर्मदा नदी पर स्थित है, जो जबलपुर के निकट है। गांधी सागर चंबल नदी पर बना पहला प्रमुख बांध है। बाणसागर परियोजना सोन नदी पर निर्मित है, जो तीन राज्यों को लाभ पहुँचाती है। राजघाट बांध बेतवा नदी पर स्थित है और मध्य प्रदेश-उत्तर प्रदेश की संयुक्त परियोजना है। ये सभी बांध क्षेत्रीय कृषि और ऊर्जा उत्पादन के आधारभूत स्तंभ हैं।

168. (C) बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
विंध्यन कगार मुख्य रूप से कठोर बलुआ पत्थर और चूना पत्थर की चट्टानों से निर्मित हैं। ये श्रेणियाँ प्राचीन अवसादी चट्टानों का परिणाम हैं, जो समय के साथ अपरदित होकर खड़ी कगारों में बदल गई हैं। चूना पत्थर की उपस्थिति ने इस पूरे क्षेत्र में सीमेंट उद्योग के विकास को संभव बनाया है, जबकि बलुआ पत्थर का उपयोग सदियों से वास्तुकला और इमारतों के निर्माण में किया जा रहा है। ये चट्टानें टिकाऊ होती हैं, जो कगारों को विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती हैं।

169. (B) वायु और जल प्रदूषण, और भूमि क्षरण।
सिंगरौली क्षेत्र में बड़े पैमाने पर की जा रही खुली खदान कोयला खनन प्रक्रिया ने गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियाँ पैदा की हैं। कोयले के परिवहन और धूल से वायु प्रदूषित होती है, जबकि खदानों से निकलने वाला अपशिष्ट जल स्थानीय जल निकायों को विषाक्त बनाता है। इसके अतिरिक्त, बड़े क्षेत्रों में खुदाई के कारण वन विनाश और भूमि का क्षरण होता है, जिससे प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ जाता है। यह औद्योगिक प्रगति और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन की समस्या है।

170. (B) मध्य भारत का पठार, मालवा का पठार, बुंदेलखंड का पठार, बघेलखंड का पठार
मध्य प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रों का पश्चिम से पूर्व की ओर सही क्रम राज्य के मानचित्र पर उनकी स्थिति को दर्शाता है। सबसे पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर मध्य भारत का पठार स्थित है। इसके बाद मालवा का विस्तृत पठार आता है। मध्य-उत्तर की दिशा में बुंदेलखंड का पठार फैला है, और सबसे पूर्व में बघेलखंड का पठार स्थित है। यह क्रम राज्य की विविध भूगर्भीय संरचना और जलवायु के क्रमिक बदलाव को समझने के लिए एक स्पष्ट भौगोलिक आधार प्रदान करता है।

171. (D) भोपाल
कलियासोत और केरवा बांध मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल को जल आपूर्ति करने वाले महत्वपूर्ण स्रोत हैं। ये बांध न केवल शहर की पेयजल और औद्योगिक जरूरतों को पूरा करते हैं, बल्कि शहर के पारिस्थितिक संतुलन और भूजल स्तर को बनाए रखने में भी सहायक हैं। मानसून के दौरान इन बांधों का प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोरम होता है, जो पर्यटन को भी बढ़ावा देता है। भोपाल की झीलें और ये बांध शहर के जल प्रबंधन की एक सुव्यवस्थित प्रणाली का अभिन्न हिस्सा हैं।

172. (B) स्पष्ट आर्द्र और शुष्क मौसम वाली जलवायु
बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों में लैटेराइट मिट्टी की उपस्थिति इस बात का संकेत है कि यहाँ स्पष्ट आर्द्र और शुष्क मौसम वाली मानसूनी जलवायु पाई जाती है। भारी मानसूनी वर्षा के कारण मिट्टी का निक्षालन होता है, और उसके बाद शुष्क मौसम में उच्च तापमान मिट्टी को कठोर बना देता है। यह प्रक्रिया केवल उन्हीं क्षेत्रों में होती है जहाँ वर्षा और तापमान दोनों का स्तर ऊँचा रहता है। यह मिट्टी बागवानी और कुछ विशिष्ट फसलों के लिए अनुकूल होती है।

173. (C) सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान
तवा जलाशय मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम जिले में स्थित है और यह सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान के कोर क्षेत्र का हिस्सा है। तवा और देनवा नदियों के संगम पर बना यह जलाशय उद्यान के वन्यजीवों के लिए जल का मुख्य स्रोत है। यहाँ का शांत वातावरण और जल निकाय प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करते हैं और पर्यटकों के लिए नौकायन की सुविधा प्रदान करते हैं। यह संरक्षित क्षेत्र और जलाशय का मिलन एक समृद्ध और विविध जैव विविधता वाला पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है।

174. (C) अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का उच्च अनुपात
मध्य प्रदेश की सबसे विशिष्ट जनसांख्यिकीय विशेषता यहाँ अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का उच्च अनुपात है। भारत में सबसे अधिक जनजातीय आबादी इसी राज्य में निवास करती है, जो कुल जनसंख्या का लगभग 21 प्रतिशत है। भील, गोंड और बैगा जैसी प्रमुख जनजातियाँ राज्य की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत की धुरी हैं। जनजातीय समुदायों की इतनी बड़ी उपस्थिति मध्य प्रदेश को एक अद्वितीय पहचान और सामाजिक संरचना प्रदान करती है, जो राष्ट्रीय स्तर पर राज्य की विशिष्टता है।

NODIA

का विस्तार पाया जाता है। अतः दिए गए तीनों कथन राज्य के कृषि और मृदा भूगोल की सही व्याख्या करते हैं।

155. (C) नर्मदा
ओंकारेश्वर बांध मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में मान्धाता द्वीप के निकट नर्मदा नदी पर निर्मित एक प्रमुख जलविद्युत और सिंचाई परियोजना है। यह नर्मदा नदी पर बनी बड़ी परियोजनाओं की श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह बांध न केवल राज्य की बिजली की जरूरतों को पूरा करता है, बल्कि निमाड़ क्षेत्र के बड़े हिस्से को सिंचाई के लिए पानी भी उपलब्ध कराता है। ओंकारेश्वर एक पवित्र धार्मिक स्थल भी है, जहाँ नदी का आध्यात्मिक और भौगोलिक महत्व है।

156. (C) पाथाखेड़ा
बैतूल जिले के सारणी में स्थित सतपुड़ा ताप विद्युत केंद्र अपनी कोयले की आपूर्ति मुख्य रूप से समीप की पाथाखेड़ा कोयला खदानों से प्राप्त करता है। पाथाखेड़ा सतपुड़ा कोयला बेल्ट का एक प्रमुख हिस्सा है। कोयला खदानों के समीप ताप विद्युत केंद्र की स्थिति परिवहन लागत को कम करती है और बिजली उत्पादन की दक्षता को बढ़ाती है। यह केंद्र राज्य के ऊर्जा उत्पादन नेटवर्क की एक महत्वपूर्ण इकाई है, जो स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग का सटीक उदाहरण है।

157. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मालवा का पठार भूगर्भीय रूप से दक्कन ट्रैप के लावा प्रवाह से बना है, जिसमें मुख्य रूप से बेसाल्टिक चट्टानें पाई जाती हैं। इन चट्टानों की संरचना ऐसी है कि इनमें धात्विक खनिजों जैसे लोहा, तांबा या मैंगनीज के बड़े भंडार नहीं पाए जाते। इसी कारण मालवा का क्षेत्र कृषि में तो समृद्ध है, लेकिन खनिज संसाधनों की दृष्टि से इसे निर्धन माना जाता है। अतः दोनों कथन सत्य हैं, जो क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों के निर्धारण में भूविज्ञान की भूमिका को स्पष्ट करते हैं।

158. (C) मुख्य दक्कन का पठार
मध्य प्रदेश के प्रमुख भौगोलिक विभाजनों में मालवा का पठार, नर्मदा-सोन घाटी, बुंदेलखंड, बघेलखंड, मध्य भारत का पठार और सतपुड़ा श्रेणी शामिल हैं। यद्यपि मालवा दक्कन के पठार का एक हिस्सा माना जाता है, लेकिन "मुख्य दक्कन का पठार" शब्द का प्रयोग आमतौर पर महाराष्ट्र और कर्नाटक के क्षेत्रों के लिए किया जाता है। मध्य प्रदेश के संदर्भ में इसे एक अलग प्रशासनिक या भौगोलिक विभाग के रूप में नहीं गिना जाता है, जो इसकी क्षेत्रीय पहचान से पृथक है।

159. (D) बेतवा
माताटीला बांध उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित है, लेकिन यह मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की एक संयुक्त परियोजना है जो बेतवा नदी पर बनी है। यह बांध बुंदेलखंड क्षेत्र के कृषि विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दोनों राज्यों के सीमावर्ती जिलों को सिंचाई का जल और बिजली प्रदान करता है। बेतवा नदी पर बने इस बांध ने क्षेत्र में जल प्रबंधन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती दी है। इसे राजघाट के साथ एक पूरक परियोजना माना जाता है।

160. (C) छिंदवाड़ा/खंडवा क्षेत्र
छिंदवाड़ा और निमाड़ का क्षेत्र मध्य प्रदेश में कपास और संतरे के उत्पादन के लिए विशिष्ट स्थान रखता है। खंडवा और खरगोन को "सुनहरे जिले" कहा जाता है क्योंकि यहाँ उच्च गुणवत्ता वाले कपास की पैदावार होती है। वहीं छिंदवाड़ा जिला अपनी संतरा पट्टी के लिए प्रसिद्ध है, जो नागपुर के समीप होने के कारण समान जलवायु साझा करता है। इन क्षेत्रों की काली मिट्टी और अनुकूल वातावरण इन दोनों नकदी फसलों के विकास के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं।

161. (C) जलोढ़ मृदा
ग्वालियर, भिंड और मुरैना जिले मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित हैं जहाँ मुख्य रूप से जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण चंबल और उसकी सहायक नदियों द्वारा जमा किए गए गाद और अवसादों से हुआ है। जलोढ़ मृदा में पोटाश की प्रचुरता होती है, जिससे यह गेहूं, सरसों और गन्ने जैसी फसलों के लिए बहुत उपजाऊ होती है। हालांकि, इस क्षेत्र में वनों की कमी के कारण यह मिट्टी कटाव और बीहड़ निर्माण की समस्या से भी जूझ रही है।

162. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश के पूर्वी जिलों जैसे बालाघाट और मंडला में पश्चिमी जिलों की तुलना में अधिक वर्षा होती है। इसका कारण यह है कि ये जिले बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी हवाओं के सीधे मार्ग में पड़ते हैं। मैकल श्रेणी की ऊँचाई इन बादलों को रोककर यहाँ भारी वर्षा कराती है। जैसे-जैसे मानसून उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता है, बादलों की नमी कम हो जाती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और वर्षा के वितरण की सही व्याख्या करते हैं।

163. (B) मालवा का पठार
पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है और यह भौगोलिक रूप से मालवा पठार का हिस्सा है। इंदौर के निकट होने के कारण इसे 'भारत का डेट्रायट' कहा जाता है क्योंकि यहाँ ऑटोमोबाइल उद्योगों का भारी संकेंद्रण है। मालवा पठार का समतल धरातल और विकसित आधारभूत संरचना उद्योगों की स्थापना के लिए अनुकूल रही है। यह क्षेत्र राज्य के आर्थिक विकास का प्रमुख केंद्र है और यहाँ से बड़ी मात्रा में औद्योगिक उत्पादों का निर्यात किया जाता है।

164. (D) बुंदेलखंड
केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना भारत की पहली नदी जोड़ो परियोजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य बुंदेलखंड क्षेत्र में जल की कमी को दूर करना है। इस परियोजना के माध्यम से केन नदी के अधिशेष जल को बेतवा नदी में स्थानांतरित किया जाएगा। इससे छतरपुर, टीकमगढ़ और पन्ना जैसे जिलों में सिंचाई की सुविधा बढ़ेगी और पीने के पानी का संकट दूर होगा। बुंदेलखंड जैसे सूखा प्रवण क्षेत्र के लिए यह परियोजना एक वरदान साबित होगी, जिससे कृषि और अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा।

Downloaded from www.pdf.tube

और यद्यपि स्थानीय स्तर पर विशाल कोयला क्षेत्र नहीं हैं, लेकिन कोयले की आपूर्ति पड़ोसी बघेलखंड क्षेत्रों से आसानी से हो जाती है। अतः सीमेंट उद्योग की सफलता कच्चे माल की सुलभता पर आधारित है।

186. (C) बेतवा
बुंदेलखंड का ऐतिहासिक शहर ओरछा बेतवा नदी के तट पर स्थित है। यह शहर अपने भव्य महलों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है, और बेतवा नदी इसकी सुंदरता और सामरिक सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। बेतवा का प्रवाह यहाँ की पथरीली भूमि के बीच अत्यंत मनोरम दृश्य उत्पन्न करता है। ओरछा के ऐतिहासिक महत्व और बेतवा के निर्मल जल का संगम इसे न केवल एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाता है, बल्कि यह क्षेत्रीय संस्कृति का प्रतीक भी है।

187. (C) मालवा का पठार - कपास और सोयाबीन
मालवा का पठार अपनी उपजाऊ काली मिट्टी के कारण कपास और सोयाबीन के उत्पादन के लिए पूरे देश में विख्यात है। यह राज्य का सबसे विकसित कृषि क्षेत्र है जहाँ इन व्यावसायिक फसलों की पैदावार बहुत अधिक होती है। अन्य विकल्पों में विसंगति है क्योंकि बघेलखंड में मुख्य रूप से चावल होता है और बुंदेलखंड मोटे अनाजों के लिए जाना जाता है। अतः मालवा और कपास-सोयाबीन का युग्म भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः सही सुमेलित है।

188. (C) झाबुआ
रॉक फॉस्फेट एक महत्वपूर्ण खनिज है जिसका उपयोग रासायनिक उर्वरकों के निर्माण में किया जाता है। मध्य प्रदेश में इसके प्रमुख भंडार झाबुआ जिले में पाए जाते हैं। झाबुआ की खदानों से प्राप्त रॉक फॉस्फेट राज्य के उर्वरक उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करता है, जो कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है। यह खनिज राज्य के पश्चिमी भाग की विशिष्ट भूगर्भीय संरचना का हिस्सा है। झाबुआ का यह संसाधन राज्य की खनिज आधारित औद्योगिक आत्मनिर्भरता के लिए अत्यंत मूल्यवान है।

189. (C) यह उपजाऊ गहरी काली मृदा के लिए जाना जाता है।
मध्य भारत का पठार गहरी काली मिट्टी के लिए नहीं, बल्कि जलोढ़ मिट्टी के लिए जाना जाता है। जलोढ़ मिट्टी चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए निक्षेपों से बनी है। अन्य कथन सही हैं: यह राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में है, चंबल यहाँ की मुख्य नदी है और यहाँ मृदा अपरदन के कारण व्यापक बीहड़ पाए जाते हैं। गहरी काली मिट्टी मुख्य रूप से मालवा और नर्मदा घाटी की विशेषता है, न कि मध्य भारत के पठार की।

190. (A) 2, 1, 4, 3
नर्मदा नदी पर स्थित बांधों को पूर्व से पश्चिम की ओर व्यवस्थित करने पर सबसे पहले बरगी बांध आता है। इसके बाद खंडवा जिले में इंदिरा सागर परियोजना स्थित है। और आगे बढ़ने पर ओंकारेश्वर बांध आता है, और अंत में गुजरात की सीमा के पास सरदार सरोवर बांध स्थित है। यह क्रम नर्मदा घाटी विकास योजना के अंतर्गत जल संसाधनों के चरणबद्ध उपयोग को दर्शाता है, जो सिंचाई और बिजली उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

191. (C) गिरता हुआ भूजल स्तर
मालवा पठार में कृषि के समक्ष वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती गिरता हुआ भूजल स्तर है। यहाँ की मिट्टी उपजाऊ है और वर्षा भी मध्यम होती है, लेकिन सोयाबीन और गेहूं जैसी फसलों की सघन खेती के लिए नलकूपों के माध्यम से अत्यधिक जल निकासी की जा रही है। कठोर बेसाल्टिक चट्टानों के कारण भूजल का पुनर्भरण धीमा होता है, जिससे कुएँ और बोरवेल सूख रहे हैं। यह स्थिति दीर्घकालिक कृषि स्थिरता के लिए एक गंभीर पर्यावरणीय और आर्थिक खतरा पैदा कर रही है।

192. (B) अनूपपुर
अमरकंटक ताप विद्युत केंद्र मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले के चचाई नामक स्थान पर स्थित है। यह केंद्र अमरकंटक पहाड़ियों के निकट होने के कारण जल और कोयले की सुलभता का लाभ उठाता है। यद्यपि इसका नाम अमरकंटक है, लेकिन प्रशासनिक रूप से यह अनूपपुर जिले के अंतर्गत आता है। यह राज्य के पुराने और महत्वपूर्ण बिजली उत्पादन केंद्रों में से एक है, जो पूर्वी मध्य प्रदेश के औद्योगिक और घरेलू क्षेत्रों को विद्युत ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

193. (B) भूविज्ञान और मिट्टी के प्रकार
बुंदेलखंड और मालवा पठार के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर उनकी भूगर्भीय संरचना और मिट्टी में है। बुंदेलखंड का निर्माण प्राचीन ग्रेनाइट और नीस चट्टानों से हुआ है, जिससे वहाँ की मिट्टी मिश्रित लाल और काली है। इसके विपरीत, मालवा का पठार ज्वालामुखीय बेसाल्ट से बना है, जिससे वहाँ गहरी काली उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है। यह अंतर दोनों क्षेत्रों की कृषि पद्धतियों, जल उपलब्धता और वनस्पति के स्वरूप को बुनियादी तौर पर अलग बनाता है, जो आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है।

194. (C) बेतवा
हलाली बांध, जिसे सम्राट अशोक सागर परियोजना के नाम से भी जाना जाता है, रायसेन और विदिशा जिलों की सीमा पर स्थित है। यह बांध बेतवा नदी की सहायक नदी 'हलाली' पर निर्मित किया गया है। इस परियोजना का मुख्य लाभ विदिशा और रायसेन जिलों के कृषि क्षेत्रों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराना है। बेतवा नदी तंत्र की यह एक महत्वपूर्ण उप-परियोजना है, जो क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा और जल प्रबंधन को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होती है।

195. (D) I, II और III
मध्य प्रदेश के उद्योगों के संदर्भ में दिए गए तीनों कथन सत्य हैं। नेपानगर अपने अखबारी कागज कारखाने के लिए ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है। पीथमपुर ऑटोमोबाइल उद्योग का एक बड़ा वैश्विक केंद्र है, जिसे 'भारत का डेट्रायट' कहा जाता है। कटनी जिला अपने प्रचुर चूना पत्थर भंडारों के कारण 'चूना नगरी' के रूप में जाना जाता है और यहाँ सीमेंट उद्योग का व्यापक

NODIA

विकास हुआ है। ये केंद्र राज्य की विविध औद्योगिक क्षमता और संसाधन उपयोग को दर्शाते हैं।

196. (C) महाराष्ट्र
पेंच राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के सिवनी और छिंदवाड़ा जिलों के साथ-साथ महाराष्ट्र के नागपुर जिले की सीमा पर फैला हुआ है। यह एक अंतर-राज्यीय संरक्षित क्षेत्र है जिसे 'रुडयार्ड किपलिंग' की 'द जंगल बुक' की प्रेरणा स्थली माना जाता है। इस उद्यान का प्रबंधन दोनों राज्यों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में किया जाता है। पेंच नदी इस उद्यान के बीच से गुजरती है, जो इसे दो भागों में विभाजित करती है और वन्यजीवों के लिए जीवन रेखा का कार्य करती है।

197. (D) सोन
मध्य प्रदेश से निकलने वाली अधिकांश प्रमुख नदियाँ या तो पश्चिम की ओर या उत्तर की ओर बहती हैं। सोन नदी एकमात्र ऐसी बड़ी प्रायद्वीपीय नदी है जो अमरकंटक से निकलकर उत्तर-पूर्व और पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। यह उत्तर प्रदेश और झारखंड की सीमाओं को छूते हुए बिहार में गंगा नदी में मिल जाती है। सोन नदी का यह पूर्ववर्ती प्रवाह मार्ग इसे राज्य की अन्य नदी प्रणालियों से भौगोलिक दृष्टि से विशिष्ट और महत्वपूर्ण बनाता है।

198. (B) विंध्यन कगारी भूमि
"रीवा-पन्ना पठार" को भौगोलिक शब्दावली में 'विंध्यन कगारी भूमि' के नाम से भी जाना जाता है। इसका कारण यह है कि यह पठार विंध्याचल श्रेणी के उत्तरी ढाल पर एक खड़ी दीवार या कगार के रूप में स्थित है। यहाँ की ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति, कई सुंदर जलप्रपात और चूना पत्थर की प्रचुरता इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। यह क्षेत्र गंगा के मैदान और दक्षिण के पठार के बीच एक स्पष्ट भौगोलिक और भूगर्भीय सीमा रेखा बनाता है।

199. (C) सघन बस्ती और कृषि का रैखिक गलियारा
नर्मदा घाटी मध्य प्रदेश में सघन बस्तियों और समृद्ध कृषि का एक रैखिक गलियारा है। इस घाटी की उपजाऊ काली मिट्टी और नर्मदा नदी से प्राप्त सिंचाई की सुविधाओं ने इसे राज्य के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में बदल दिया है। यहाँ सड़क और रेल मार्गों का भी अच्छा विकास हुआ है, जो पूर्व से पश्चिम की ओर जुड़ाव प्रदान करते हैं। कृषि उत्पादकता और व्यापारिक गतिविधियों के कारण यह घाटी राज्य की अर्थव्यवस्था की एक गतिशील जीवन रेखा मानी जाती है।

200. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
मध्य प्रदेश की मिट्टी और उनके क्षेत्रों का मिलान राज्य की भौगोलिक विविधता को स्पष्ट करता है। काली मिट्टी मुख्य रूप से मालवा के पठार में पाई जाती है, जो कृषि के लिए अत्यंत समृद्ध है। जलोढ़ मिट्टी उत्तरी मध्य प्रदेश में नदियों द्वारा जमा की गई है। लाल और पीली मिट्टी बघेलखंड क्षेत्र की विशेषता है, जबकि लैटेराइट मिट्टी बालाघाट जैसे उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। यह वितरण पैटर्न फसलों के क्षेत्रीय चयन को प्रभावित करता है।

201. (B) कोयला
सोहागपुर और उमरिया क्षेत्र मध्य प्रदेश में कोयला संसाधनों के प्रमुख भंडार केंद्र हैं। सोहागपुर राज्य का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है, जहाँ गोंडवाना काल की चट्टानों में उच्च गुणवत्ता वाला कोयला पाया जाता है। उमरिया कोयला क्षेत्र भी अपनी निरंतर उत्पादन क्षमता के लिए जाना जाता है। इन क्षेत्रों से प्राप्त कोयला न केवल राज्य के ताप विद्युत गृहों को ऊर्जा प्रदान करता है, बल्कि यह क्षेत्र के औद्योगिक विकास और आर्थिक समृद्धि का मुख्य स्तंभ भी है।

202. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
बुंदेलखंड का पठार बेतवा, केन और धसान जैसी नदियों द्वारा अपवाहित होता है जो उत्तर दिशा की ओर बहकर यमुना में मिल जाती हैं, इसलिए कथन I सत्य है। हालांकि, कथन II गलत है क्योंकि इन नदियों का उत्तर की ओर बहना यह प्रमाणित करता है कि इस पठार का सामान्य ढाल उत्तर की ओर है, न कि दक्षिण की ओर। पठार की यह उत्तरवर्ती ढाल मध्य प्रदेश के उत्तरी भूगोल और गंगा-यमुना बेसिन के साथ इसके जुड़ाव को निर्धारित करती है।

203. (C) मालवा और नर्मदा घाटी
'ड्यूरम गेहूं', जिसे स्थानीय स्तर पर 'मालवी गेहूं' भी कहा जाता है, मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के मालवा पठार और नर्मदा घाटी क्षेत्र की विशेषता है। यह गेहूं अपनी कठोरता, उच्च प्रोटीन मात्रा और सुनहरे रंग के लिए जाना जाता है, जो पास्ता और सूजी बनाने के लिए विश्व स्तर पर माँग में रहता है। यहाँ की काली मिट्टी और मध्यम ठंडी जलवायु ड्यूरम गेहूं की सर्वोत्तम गुणवत्ता के उत्पादन के लिए आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं, जिससे यह क्षेत्र निर्यात में अग्रणी है।

204. (B) महू
चंबल नदी का उद्गम इंदौर जिले की महू तहसील में स्थित विंध्याचल श्रेणी की 'जानापाव' पहाड़ियों से होता है। अतः भौगोलिक दृष्टि से महू शहर चंबल नदी के उद्गम के सबसे निकट स्थित प्रमुख स्थान है। यहाँ से निकलकर चंबल उत्तर की ओर प्रवाहित होती है। महू न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण छावनी क्षेत्र है, बल्कि चंबल जैसी बड़ी नदी के स्रोत के रूप में इसका भौगोलिक महत्व भी अद्वितीय है। यह स्थान इंदौर के पठारी भूगोल का हिस्सा है।

205. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
झाबुआ और अलीराजपुर जिलों में भील और भिलाला जैसी जनजातियों का अत्यधिक संकेंद्रण पाया जाता है। इसका मुख्य कारण यहाँ की विषम भौगोलिक स्थिति है; यह क्षेत्र पहाड़ी और वनों से आच्छादित है। ऐतिहासिक रूप से इन दुर्गम क्षेत्रों ने जनजातीय समुदायों को बाहरी आक्रमणों और प्रभावों से सुरक्षा प्रदान की, जिससे वे अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रख सके। अतः भौगोलिक परिस्थितियाँ जनजातीय जनसंख्या के वितरण का एक तार्किक और ऐतिहासिक आधार प्रस्तुत करती हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

206. (B) प्रवाह की दिशा
नर्मदा और सोन नदियाँ दोनों मध्य प्रदेश के अमरकंटक पठार से निकलती हैं, लेकिन उनके बीच सबसे बड़ा अंतर उनके प्रवाह की दिशा में है। नर्मदा नदी पश्चिम की ओर बहते हुए एक लंबी भ्रंश घाटी से गुजरती है और अरब सागर में गिरती है। इसके विपरीत, सोन नदी उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित होती है और अंततः गंगा नदी में मिल जाती है। यह विपरीत प्रवाह दिशा अमरकंटक को भारत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भौगोलिक और जल-विभाजन केंद्र बनाती है।

207. (B) वन आधारित कच्चे माल की आपूर्ति
नेपानगर में कागज उद्योग की स्थापना और सफलता मुख्य रूप से वन आधारित कच्चे माल की प्रचुर आपूर्ति पर निर्भर है। यहाँ के आसपास के सघन वनों से बांस और सलाई की लकड़ी आसानी से प्राप्त हो जाती है, जो कागज की लुगदी बनाने के लिए अनिवार्य है। ताप्ती नदी से जल और स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता ने इसे देश के पहले अखबारी कागज केंद्र के रूप में विकसित किया। यह उद्योग प्राकृतिक संसाधनों के औद्योगिक मूल्यवर्धन का एक सटीक उदाहरण है।

208. (A) मध्य भारत का पठार
मध्य भारत का पठार मध्य प्रदेश की एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई है जो उत्तर में यमुना नदी के विशाल मैदान और दक्षिण में मालवा के ऊँचे पठार के बीच स्थित है। यह क्षेत्र चंबल बेसिन का हिस्सा है और राजस्थान की सीमा से लगा हुआ है। इसकी अवस्थिति इसे गंगा के मैदान और प्रायद्वीपीय पठार के बीच एक संक्रमण क्षेत्र बनाती है। उबड़-खाबड़ धरातल और बीहड़ों की उपस्थिति इस पठार को अपनी एक अलग पहचान और चुनौतीपूर्ण भौगोलिक स्वरूप प्रदान करती है।

209. (D) सोन
रिहंद नदी सोन नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। यह छत्तीसगढ़ के सरगुजा क्षेत्र से निकलकर उत्तर की ओर बहती है और उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में सोन नदी में मिल जाती है। रिहंद नदी पर बना 'रिहंद बांध' क्षेत्र के लिए ऊर्जा और सिंचाई का एक विशाल स्रोत है। सोन नदी तंत्र में रिहंद का योगदान इसके जल स्तर को बनाए रखने और पूर्वी मध्य प्रदेश तथा पड़ोसी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण है।

210. (C) सरदार सरोवर
सरदार सरोवर परियोजना नर्मदा नदी पर निर्मित एक विशाल बांध है जो मध्य प्रदेश और गुजरात के बीच जल और बिजली के साझाकरण का मुख्य माध्यम है। हालांकि बांध गुजरात में स्थित है, लेकिन इसके डूब क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा और उत्पादित जलविद्युत की सर्वाधिक भागीदारी मध्य प्रदेश के पास है। यह परियोजना दोनों राज्यों के कृषि और औद्योगिक विकास के लिए एक साझा जीवन रेखा है, जो अंतर-राज्यीय सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय समृद्धि को बढ़ावा देती है।

211. (D) भोपाल
भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड का विशाल संयंत्र मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित है। इसकी स्थापना 1960 में की गई थी और यह भारी विद्युत उपकरणों, जैसे टर्बाइन और ट्रांसफार्मर के निर्माण के लिए देश का एक प्रमुख सार्वजनिक उपक्रम है। भोपाल की भौगोलिक अवस्थिति और परिवहन सुविधाओं ने इस उद्योग के विकास में सहायता की है। भेल न केवल भोपाल की औद्योगिक पहचान है, बल्कि यह राज्य के हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार भी प्रदान करता है।

212. (C) किम्बरलाइट पाइप्स
पन्ना में हीरे की उपस्थिति का मुख्य भूगर्भीय कारण वहाँ पाई जाने वाली 'किम्बरलाइट पाइप्स' हैं। हीरा अत्यंत उच्च ताप और दबाव पर पृथ्वी की गहराई में बनता है और इन ज्वालामुखी पाइपों के माध्यम से धरातल के पास आता है। पन्ना के 'मझगवां' क्षेत्र में ऐसी ही एक सक्रिय पाइप मौजूद है जहाँ से प्राथमिक रूप से हीरा निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त, नदियों के जलोढ़ निक्षेपों में भी हीरे पाए जाते हैं, जो इन मूल पाइपों के अपरदन से प्राप्त होते हैं।

213. (C) स्टेपी-तुल्य (अर्ध-शुष्क)
मध्य भारत के पठार की जलवायु मुख्य रूप से 'स्टेपी-तुल्य' या अर्ध-शुष्क प्रकार की है। यहाँ वार्षिक वर्षा काफी कम होती है और तापमान में भारी भिन्नता पाई जाती है। ग्रीष्म ऋतु बहुत गर्म और शुष्क होती है, जबकि शीत ऋतु में तापमान काफी नीचे गिर जाता है। समुद्र से अत्यधिक दूरी और अरावली के वृष्टि छाया क्षेत्र के प्रभाव के कारण यहाँ की जलवायु में शुष्कता बनी रहती है, जो यहाँ की कँटीली वनस्पति और कृषि प्रतिरूप को निर्धारित करती है।

214. (A) यह नर्मदा और ताप्ती भ्रंशों के बीच स्थित एक ब्लॉक पर्वत है।
सतपुड़ा पर्वत श्रेणी एक 'ब्लॉक पर्वत' का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह श्रेणी उत्तर में नर्मदा नदी की भ्रंश घाटी और दक्षिण में ताप्ती नदी की भ्रंश घाटी के मध्य एक ऊँचे उठे हुए भू-खंड के रूप में स्थित है। इसका निर्माण पृथ्वी की हलचलों के कारण पार्श्व भूमि के धंसने से हुआ है। सतपुड़ा श्रेणी पश्चिम में राजपीपला से लेकर पूर्व में मैकल तक फैली हुई है। इसकी यह विशिष्ट अवस्थिति मध्य भारत के ऊँचावच और जल प्रवाह प्रणाली को नियंत्रित करती है।

215. (C) चंबल
काली सिंध, पार्वती और क्षिप्रा नदियाँ चंबल नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। ये सभी नदियाँ मालवा के पठारी क्षेत्र से निकलती हैं और उत्तर की ओर बहते हुए चंबल में विलीन हो जाती हैं। इन नदियों का जाल मालवा के कृषि क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्षिप्रा नदी जहाँ धार्मिक दृष्टि से प्रसिद्ध है, वहीं काली सिंध और पार्वती क्षेत्रीय सिंचाई के मुख्य स्रोत हैं। चंबल का विशाल तंत्र इन नदियों के माध्यम से यमुना-गंगा बेसिन को जल प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

236. (B) सघन कृषि
नर्मदा घाटी मध्य प्रदेश का सबसे उपजाऊ कृषि क्षेत्र है, जिसके कारण यहाँ की अधिकांश जनसंख्या सघन कृषि में संलग्न है। घाटी की गहरी काली मिट्टी और नर्मदा नदी से उपलब्ध सिंचाई सुविधाओं के कारण यहाँ वर्ष भर विभिन्न फसलें जैसे गेहूं, चना, गन्ना और सोयाबीन उगाई जाती हैं। अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों ने यहाँ घनी बस्तियों के विकास को प्रोत्साहित किया है। कृषि उत्पादकता यहाँ इतनी अधिक है कि यह क्षेत्र राज्य की आर्थिक समृद्धि और खाद्य सुरक्षा का मुख्य केंद्र बन गया है।

237. (C) बालाघाट
वैनगंगा नदी मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले की मुख्य और सबसे महत्वपूर्ण नदी है। यह नदी सिवनी जिले के मुंडारा गाँव से निकलती है और दक्षिण की ओर बहती हुई बालाघाट शहर के बीच से गुजरती है। वैनगंगा और इसकी सहायक नदियाँ इस क्षेत्र में धान की खेती के लिए आवश्यक जल और उपजाऊ मिट्टी प्रदान करती हैं। बालाघाट का प्रसिद्ध 'धुती बांध' इसी नदी पर स्थित है। यह नदी दक्षिण मध्य प्रदेश की जल प्रणाली और कृषि अर्थव्यवस्था का आधार मानी जाती है।

238. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सतपुड़ा पर्वत श्रेणी अपनी बनावट में काफी विविधता रखती है। इसका पूर्वी भाग, जिसे मैकल श्रेणी कहा जाता है, और मध्य भाग, जहाँ महादेव पहाड़ियाँ स्थित हैं, काफी चौड़ा और ऊँचा है। इसके विपरीत, श्रेणी का सबसे पश्चिमी हिस्सा गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा पर 'राजपीपला की पहाड़ियों' के नाम से जाना जाता है। अतः सतपुड़ा की क्षेत्रीय विशेषताओं के बारे में दिए गए दोनों कथन सत्य हैं, जो इस श्रेणी के पश्चिम से पूर्व की ओर बदलते भौगोलिक स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

239. (B) मध्य भारत का पठार
ग्वालियर और शिवपुरी के पठार भौगोलिक रूप से 'मध्य भारत के पठार' का हिस्सा हैं। यह क्षेत्र राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है और राजस्थान की सीमा से लगा हुआ है। यहाँ की मिट्टी मुख्य रूप से जलोढ़ है और जलवायु अर्ध-शुष्क है। ग्वालियर का ऐतिहासिक दुर्ग और शिवपुरी का प्राकृतिक सौंदर्य इसी पठारी क्षेत्र की विशेषताएँ हैं। यह पठार विंध्य और अरावली श्रेणियों के बीच एक संक्रमण क्षेत्र के रूप में कार्य करता है, जो अपनी विशिष्ट ऊँचावच और शुष्कता के लिए जाना जाता है।

240. (C) रायसेन
बेतवा नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के 'कुमरागाँव' से होता है। यह नदी विंध्याचल श्रेणी से निकलकर उत्तर-पूर्व दिशा में बहती है और भोपाल, विदिशा और ओरछा जैसे ऐतिहासिक शहरों से गुजरते हुए अंततः उत्तर प्रदेश में यमुना नदी में मिल जाती है। बेतवा को 'बुंदेलखंड की जीवन रेखा' भी कहा जाता है। इसकी जल शक्ति का उपयोग कई महत्वपूर्ण सिंचाई और बिजली परियोजनाओं के लिए किया जाता है, जो क्षेत्रीय विकास का आधार हैं।

241. (C) कोयला
कोयला मध्य प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण और प्राथमिक ऊर्जा संसाधन है। राज्य के पास भारत के विशाल कोयला भंडार का एक बड़ा हिस्सा है, जो मुख्य रूप से सिंगरौली, सुहागपुर और पेंच घाटी जैसे क्षेत्रों में पाया जाता है। इस कोयले का उपयोग ताप विद्युत केंद्रों में बिजली उत्पादन के लिए किया जाता है, जो राज्य की औद्योगिक और घरेलू ऊर्जा जरूरतों को पूरा करता है। तांबा और बॉक्साइट धात्विक खनिज हैं, जबकि चूना पत्थर निर्माण कार्य में प्रयुक्त होता है, ऊर्जा उत्पादन में नहीं।

242. (A) 1, 2, 3
मध्य प्रदेश के पठारों को पश्चिम से पूर्व की ओर व्यवस्थित करने पर सबसे पहले मालवा का पठार आता है जो राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित है। मध्य-उत्तर की ओर बढ़ने पर बुंदेलखंड का पठार आता है, और सबसे पूर्व में बघेलखंड का पठार स्थित है। यह क्रम राज्य की भौगोलिक अवस्थिति और भूगर्भीय संरचना के क्रमिक विस्तार को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। पश्चिम से पूर्व की इस यात्रा में जलवायु, मिट्टी के प्रकार और कृषि पद्धतियों में भी स्पष्ट बदलाव दिखाई देते हैं।

243. (C) जनसांख्यिकी
मध्य प्रदेश के उत्तरी जिलों में पाया जाने वाला कम लिंगानुपात मुख्य रूप से सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारकों से संबंधित है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से प्रतिकूल पुरुष-महिला अनुपात के लिए जाना जाता रहा है, जिसका कारण गहरी सामाजिक रुढ़ियाँ और सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ हैं। यद्यपि भूगोल और अर्थव्यवस्था जीवन स्तर को प्रभावित करते हैं, लेकिन लिंगानुपात जैसी विशेषताएँ जनसांख्यिकीय अध्ययन का हिस्सा हैं जो क्षेत्रीय सामाजिक विकास के स्तर और चुनौतियों को प्रतिबिंबित करती हैं।

NODIA

244. (B) बोरी अभयारण्य, सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान
पचमढ़ी बायोस्फीयर रिजर्व मध्य प्रदेश का एक प्रमुख जैव-आरक्षित क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत 'बोरी वन्यजीव अभयारण्य' और 'सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान' के विशाल भू-भाग शामिल हैं। यह क्षेत्र सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की महादेव पहाड़ियों में स्थित है और अपनी अद्वितीय जैव विविधता, औषधीय वनस्पतियों और सागौन के सघन वनों के लिए जाना जाता है। यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त यह रिजर्व प्राकृतिक आवासों के संरक्षण और पारिस्थितिकीय शोध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

245. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश भारत में सीमेंट उत्पादन का एक बड़ा केंद्र है, और इसका प्रत्यक्ष कारण राज्य के विंध्यन शैल समूह वाले क्षेत्रों में चूना पत्थर के प्रचुर और उच्च गुणवत्ता वाले भंडार होना है। सीमेंट उद्योग एक कच्चा माल आधारित उद्योग है, इसलिए कारखानों की स्थापना खदानों के समीप की जाती है ताकि परिवहन लागत कम हो सके। सतना, कटनी और दमोह जैसे जिलों में सीमेंट संयंत्रों की भारी संख्या इसी संसाधन संपन्नता का परिणाम है। अतः व्याख्या सत्य है।

226. (B) नर्मदा (बाघिनी सहायक नदी)
प्रसिद्ध 'बाघ की गुफाएं' मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित हैं। ये गुफाएं नर्मदा नदी की एक छोटी सहायक नदी 'बाघिनी' के तट पर स्थित विंध्याचल श्रेणी की पहाड़ियों को काटकर बनाई गई हैं। बौद्ध धर्म से संबंधित ये गुफाएं अपने भित्ति चित्रों और वास्तुकला के लिए जानी जाती हैं। बाघिनी नदी के किनारे इनकी शांत और सुरक्षित स्थिति प्राचीन भिक्षुओं के लिए ध्यान और कला साधना के लिए उपयुक्त थी। यह स्थान कला और प्रकृति के अद्भुत संगम का प्रतीक है।

227. (C) कोयला
पश्चिमी कोलफील्ड्स लिमिटेड और नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड मध्य प्रदेश में कोयला खनन से जुड़ी प्रमुख कंपनियाँ हैं। एनसीएल मुख्य रूप से सिंगरौली कोयला क्षेत्र में सक्रिय है, जबकि डब्ल्यूसीएल राज्य के दक्षिणी हिस्सों जैसे पाथाखेड़ा और पेंच-कान्हा घाटी में खनन कार्य करती है। ये कोल इंडिया की सहायक कंपनियाँ हैं और राज्य के विशाल कोयला भंडार का दोहन करके ऊर्जा उत्पादन के लिए ईंधन की आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं। कोयला खनन राज्य के राजस्व और औद्योगिक विकास का मुख्य आधार है।

228. (B) मालवा का पठार बुंदेलखंड से ऊँचा है।
ऊँचाई की दृष्टि से मालवा का पठार बुंदेलखंड के पठार से तुलनात्मक रूप से अधिक ऊँचा है। मालवा की औसत ऊँचाई समुद्र तल से 500-600 मीटर के बीच है, जबकि बुंदेलखंड के अधिकांश हिस्से की ऊँचाई 300-400 मीटर के आसपास रहती है। मालवा का ऊँचा होना इसकी जलवायु को अधिक सुखद और समशीतोष्ण बनाता है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि सतपुड़ा एक टूटी हुई श्रृंखला है, नर्मदा घाटी पश्चिम में अधिक चौड़ी है और बघेलखंड गोंडवाना संरचना का हिस्सा है, दक्कन ट्रैप का नहीं।

229. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
मध्य प्रदेश की विशिष्ट भौगोलिक विशेषताओं और उनके स्थानों का मिलान क्षेत्र की विविधता को उजागर करता है। चंबल घाटी अपने गहरे बीहड़ों और मृदा अपरदन के लिए जानी जाती है। भेड़ाघाट अपनी संगमरमर की चट्टानों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। धूपगढ़ चोटी पचमढ़ी में स्थित है, जो राज्य का सर्वोच्च बिंदु है। बॉक्साइट के भंडार मुख्य रूप से अमरकंटक के पठारी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। यह मिलान राज्य के प्राकृतिक और पर्यटन संसाधनों की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है।

230. (B) मालवा का पठार
मालवा के पठार में सोयाबीन के बाद गेहूं उगाने की द्विफसली पद्धति एक सामान्य और सफल कृषि चक्र है। वर्षा ऋतु में किसान यहाँ की काली मिट्टी में सोयाबीन उगाते हैं, जो मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिरीकरण में भी सहायता करती है। इसके बाद शीत ऋतु में उसी उपजाऊ मिट्टी में गेहूं की बुवाई की जाती है। यह पद्धति मालवा के किसानों को अच्छी आय प्रदान करती है और यहाँ की अनुकूल जलवायु तथा मिट्टी की उर्वरता का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित करती है।

231. (C) विंध्य श्रेणी
ऐतिहासिक और पर्यटन स्थल मांडू मध्य प्रदेश के धार जिले में विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों पर स्थित है। यह स्थान अपनी ऊँचाई और चारों ओर फैली गहरी खाइयों के कारण सामरिक दृष्टि से सुरक्षित था, जिससे इसे 'खुशियों का शहर' कहा जाता था। विंध्य की इन पहाड़ियों ने मांडू के महलों और स्मारकों को एक मनोरम प्राकृतिक पृष्ठभूमि प्रदान की है। मानसून के दौरान यहाँ की हरियाली और बादलों का मिलन इस पर्वतीय स्थल को अत्यंत सुंदर बना देता है।

232. (C) रीवा
मध्य प्रदेश के भौगोलिक वितरण के अनुसार, इंदौर, उज्जैन और खंडवा जिले राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित हैं जहाँ काली मिट्टी प्रचुरता में पाई जाती है। इसके विपरीत, रीवा जिला राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है जहाँ मुख्य रूप से लाल और पीली मिट्टी या मिश्रित मिट्टी पाई जाती है। काली मिट्टी की बेसाल्टिक उत्पत्ति रीवा के भूगर्भीय स्वरूप से मेल नहीं खाती, इसलिए यहाँ काली मिट्टी होने की संभावना इन अन्य जिलों की तुलना में सबसे कम है।

233. (C) इंदौर
चोरल बांध मध्य प्रदेश के इंदौर जिले की महू तहसील में स्थित है। यह बांध चोरल नदी पर निर्मित है और इंदौर शहर के पास एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल और पिकनिक स्थल के रूप में जाना जाता है। इस जलाशय का जल आसपास के कृषि क्षेत्रों में सिंचाई के लिए और क्षेत्र के भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। इंदौर जैसे बढ़ते शहरी केंद्र के लिए चोरल बांध जैसे स्थानीय जल संसाधन पारिस्थितिक और मनोरंजक दोनों दृष्टियों से अत्यंत मूल्यवान माने जाते हैं।

234. (C) मालवा का पठार
'ऊपरमाल' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से मालवा पठार के उस ऊँचे और पथरीले हिस्से के लिए किया जाता है जो राजस्थान की सीमा से लगा हुआ है। भौगोलिक रूप से यह मालवा का उत्तरी-पश्चिमी विस्तार है। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट ऊँचाई और धरातलीय बनावट के कारण आसपास के मैदानी इलाकों से अलग पहचान रखता है। स्थानीय इतिहास और भूगोल में 'ऊपरमाल' का उल्लेख एक समृद्ध और सामरिक पठारी क्षेत्र के रूप में मिलता है, जो मालवा की विविधता का एक महत्वपूर्ण अंग है।

235. (C) भारी इंजीनियरिंग
मध्य प्रदेश की औद्योगिक संरचना मुख्य रूप से कृषि और खनिज संसाधनों पर आधारित है, जिसमें सीमेंट, कागज, चीनी और एल्युमीनियम जैसे उद्योग प्रमुख हैं। हालांकि भोपाल में भेल जैसा एक विशाल संस्थान मौजूद है, लेकिन समग्र रूप से 'भारी इंजीनियरिंग' को राज्य का एक व्यापक या प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र नहीं माना जाता जैसा कि सीमेंट या कपड़ा उद्योग है। राज्य के अधिकांश औद्योगिक केंद्र स्थानीय कच्चे माल के प्रसंस्करण पर केंद्रित हैं, जो यहाँ की मुख्य आर्थिक गतिविधि है।

Click Here to Buy book on Amazon

216. (D) I, II और III
मध्य प्रदेश के संसाधनों के वितरण के बारे में दिए गए तीनों कथन सत्य हैं। बघेलखंड क्षेत्र अपनी गोंडवाना संरचना के कारण कोयला भंडार में समृद्ध है। बालाघाट जिला तांबा और मैंगनीज के उत्पादन में देश में शीर्ष पर है। मालवा का पठार दक्कन ट्रैप से निर्मित उपजाऊ काली मिट्टी के लिए प्रसिद्ध है, जो सोयाबीन और कपास की खेती का आधार है। यह संसाधन विविधता राज्य के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को उनकी विशिष्ट आर्थिक पहचान और औद्योगिक आधार प्रदान करती है।

217. (B) महानदी बेसिन
वर्ष 2000 में मध्य प्रदेश के विभाजन से पूर्व, छत्तीसगढ़ के मैदान राज्य के दक्षिण-पूर्वी हिस्से का अभिन्न अंग थे। यह क्षेत्र मुख्य रूप से महानदी बेसिन के अंतर्गत आता था, जिसे अपनी उच्च चावल उत्पादकता के कारण "धान का कटोरा" कहा जाता था। विभाजन के बाद यह उपजाऊ मैदानी भाग और यहाँ के प्रचुर खनिज संसाधन नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य में चले गए। इस भौगोलिक परिवर्तन ने मध्य प्रदेश के कृषि और औद्योगिक स्वरूप को काफी प्रभावित किया, जिससे राज्य का क्षेत्रफल भी कम हो गया।

218. (B) नीमच
मध्य प्रदेश की 'अल्कलॉइड फैक्ट्री' नीमच जिले में स्थित है। यह सरकारी स्वामित्व वाला कारखाना अफीम से विभिन्न प्रकार के औषधीय रसायनों और दवाओं के निर्माण के लिए जाना जाता है। नीमच और मंदसौर का क्षेत्र भारत में अफीम की खेती का प्रमुख केंद्र है, इसलिए कच्चे माल की सुलभता के कारण इस कारखाने की स्थापना यहाँ की गई। यह संस्थान न केवल औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह नियंत्रित दवा उत्पादन और अनुसंधान के क्षेत्र में भी विशिष्ट स्थान रखता है।

219. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
नर्मदा नदी को मध्य प्रदेश की 'जीवन रेखा' कहना पूर्णतः तर्कसंगत है क्योंकि राज्य की कृषि, पेयजल और औद्योगिक गतिविधियाँ काफी हद तक इस नदी पर निर्भर हैं। नर्मदा बेसिन में निर्मित विशाल सिंचाई परियोजनाओं और जलविद्युत केंद्रों ने राज्य की आर्थिक तस्वीर बदल दी है। नर्मदा नदी न केवल भौतिक संसाधन प्रदान करती है, बल्कि यह राज्य की सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना का भी केंद्र है। अतः दोनों कथन नर्मदा के राज्य के प्रति बहुआयामी महत्व को सही ढंग से दर्शाते हैं।

220. (D) चंबल
चंबल नदी का उद्गम इंदौर जिले की महू तहसील में विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की 'जनापाव' पहाड़ी से होता है। लगभग 854 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह स्थान एक महत्वपूर्ण तीर्थ और प्राकृतिक स्थल है। यहाँ से निकलकर चंबल नदी उत्तर की ओर बढ़ती है और मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के बीच सीमा बनाती है। जानापाव की भौगोलिक स्थिति चंबल जैसी विशाल नदी के सतत प्रवाह का प्रारंभिक स्रोत है, जो आगे चलकर बीहड़ों और उपजाऊ मैदानों का निर्माण करती है।

221. (B) नर्मदा का पश्चिम की ओर प्रवाह।
नर्मदा नदी के पश्चिम की ओर बहने का मुख्य कारण इसकी 'भ्रंश घाटी' है। भारत का प्रायद्वीपीय पठार सामान्यतः पूर्व की ओर ढालू है, जिसके कारण अधिकांश नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। लेकिन नर्मदा और ताप्ती नदियाँ दो समानांतर पर्वतों के बीच बनी गहरी दरार या भ्रंश में स्थित हैं, जिसका ढाल पश्चिम की ओर है। यह भूगर्भीय संरचना नदी को सामान्य ढाल के विपरीत दिशा में प्रवाहित होने के लिए विवश करती है, जो भारत के भूगोल की एक अनूठी घटना है।

222. (B) विविक्त कणिकीय पदार्थ (धूल)
सीमेंट कारखानों से होने वाले प्रदूषण में 'विविक्त कणिकीय पदार्थ' या धूल सबसे प्रमुख प्रदूषक है। चूना पत्थर के पीसने, क्लिंकर बनाने और सीमेंट की पैकिंग के दौरान बड़ी मात्रा में महीन धूल के कण वायुमंडल में उत्सर्जित होते हैं। यह धूल न केवल श्रमिकों और आसपास रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि कृषि भूमि और वनस्पतियों पर जमकर उनकी उत्पादकता को भी कम करती है। आधुनिक संयंत्र अब इसे रोकने के लिए विशिष्ट फिल्टर का उपयोग करते हैं।

223. (B) मुरैना
मुरैना जिला मध्य प्रदेश के सबसे उत्तरी छोर पर स्थित है और इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह राजस्थान और उत्तर प्रदेश दोनों राज्यों के साथ अपनी सीमाएँ साझा करता है। चंबल नदी इस जिले की सीमाओं के साथ बहती है, जो एक प्राकृतिक राज्य सीमा का कार्य भी करती है। मुरैना का यह सामरिक स्थान इसे अंतर-राज्यीय व्यापार और परिवहन का एक प्रमुख केंद्र बनाता है। यह जिला चंबल संभाग का मुख्यालय भी है और अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान रखता है।

224. (C) नहर सिंचाई जाल
मालवा पठार की कृषि मुख्य रूप से उपजाऊ काली मिट्टी, मध्यम मानसूनी वर्षा और भूमिगत जल पर आधारित है। अन्य क्षेत्रों की तुलना में, यहाँ 'नहर सिंचाई जाल' का महत्व अपेक्षाकृत कम है क्योंकि यहाँ की पथरीली बेसाल्टिक भूमि पर लंबी नहरों का निर्माण और रखरखाव चुनौतीपूर्ण है। यद्यपि कुछ हालिया परियोजनाएँ आई हैं, लेकिन ऐतिहासिक रूप से यहाँ के किसान सिंचाई के लिए स्थानीय जल स्रोतों और वर्षा पर ही अधिक निर्भर रहे हैं, जो उनकी कृषि पद्धति का मुख्य आधार है।

225. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बुंदेलखंड क्षेत्र लंबे समय से गंभीर जल संकट से जूझ रहा है, और इसका प्राथमिक कारण यहाँ की भूगर्भीय संरचना है। यह क्षेत्र प्राचीन ग्रेनाइट और नीस चट्टानों से बना है जो अभेद्य हैं और जिनमें छिद्रों की कमी होती है। इसके कारण वर्षा का जल जमीन के भीतर नहीं जा पाता और भूजल का पुनर्भरण बहुत कम होता है। साथ ही, कठोर चट्टानें गहरे जल संचय को कठिन बनाती हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण जल संकट की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

NODIA

246. (A) अमरकंटक
जोहिला नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित अमरकंटक की पहाड़ियों से होता है। अमरकंटक एक अद्वितीय जल विभाजक है जहाँ से तीन प्रमुख नदियाँ—नर्मदा, सोन और जोहिला—निकलती हैं। जोहिला नदी सोन नदी की एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है और यह निकलने के बाद कुछ दूरी तक बहकर सोन में विलीन हो जाती है। इस पवित्र स्थान से नदियों का निकलना इसे न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है।

247. (C) मध्य भारत का पठार
कूनो राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के श्योपुर और मुरैना जिलों में स्थित है, जो भौगोलिक रूप से 'मध्य भारत के पठार' का हिस्सा है। यह क्षेत्र चंबल बेसिन के अंतर्गत आता है और यहाँ की शुष्क कँटीली वनस्पति और खुला परिदृश्य चीतों और अन्य बड़े शिकारियों के लिए एक आदर्श प्राकृतिक आवास प्रदान करता है। हाल ही में चीतों के पुनरुद्धार परियोजना के कारण यह उद्यान वैश्विक चर्चा का केंद्र बना है। यह पठारी भाग अपनी विशिष्ट पारिस्थितिकी के लिए जाना जाता है।

248. (C) मध्य भारत
प्रसिद्ध 'ग्वालियर व्यापार मेला' मध्य भारत के पठारी क्षेत्र का एक प्रमुख व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र है। यह मेला ऐतिहासिक रूप से पशु व्यापार के लिए शुरू हुआ था, लेकिन अब यह ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के व्यापार के लिए देश के बड़े मेलों में गिना जाता है। ग्वालियर की भौगोलिक स्थिति, जो उत्तर और मध्य भारत को जोड़ती है, इस मेले की सफलता का मुख्य आधार है। यह न केवल आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है, बल्कि क्षेत्रीय संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करता है।

249. (B) मालवा पठार और काली मिट्टी का निर्माण।
प्राचीन काल में हुए दरारी ज्वालामुखी उद्भेदन और दक्कन ट्रैप के लावा प्रवाह का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव मालवा पठार के निर्माण के रूप में देखा जाता है। बेसाल्टिक लावा के जमने से बने इस ऊँचे भू-भाग के ऊपर कालांतर में अपक्षय और क्षरण की प्रक्रियाओं से उपजाऊ काली मिट्टी का निर्माण हुआ। यह मिट्टी कपास और सोयाबीन की खेती के लिए वरदान साबित हुई है। इस प्रकार ज्वालामुखीय गतिविधि ने मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग की पूरी कृषि अर्थव्यवस्था और भूगोल की नींव रखी है।

250. (A) केवल I और III
नर्मदा एक विशाल जलग्रहण क्षेत्र वाली बारहमासी नदी है जो वर्ष भर बहती है। सोन नदी भी अमरकंटक के खनिज समृद्ध पठारी क्षेत्रों से होकर बहती है, जो इसे आर्थिक महत्व प्रदान करती है। कथन II गलत है क्योंकि यद्यपि चंबल का प्रवाह ग्रीष्म ऋतु में कम हो सकता है, लेकिन यह पूरी तरह नहीं सूखती और बांधों के कारण इसका जल प्रवाह नियंत्रित रहता है। अतः नर्मदा की निरंतरता और सोन की संसाधन संपन्नता राज्य के नदी भूगोल के सटीक और सही तथ्य हैं।

251. (C) रेनुकूट - एल्युमीनियम
उद्योगों और उनके स्थानों के संदर्भ में रेनुकूट और एल्युमीनियम का युग्म सही सुमेलित है। यद्यपि रेनुकूट उत्तर प्रदेश में है, लेकिन यह मध्य प्रदेश के अमरकंटक से बॉक्साइट प्राप्त करता है और राज्य की सीमा के निकट स्थित एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि पन्ना हीरे के लिए है, नेपानगर कागज के लिए है और कटनी सीमेंट उद्योग का बड़ा केंद्र है। यह औद्योगिक संबंध कच्चे माल की उपलब्धता और अंतर-राज्यीय परिवहन की सुगमता को प्रदर्शित करता है।

252. (B) पहाड़ी भू-भाग और भील जनजाति की प्रधानता।
झाबुआ और अलीराजपुर जिले मध्य प्रदेश के सबसे पश्चिमी भाग में स्थित हैं और इनकी मुख्य विशेषता यहाँ का पहाड़ी ऊबड़-खाबड़ धरातल और भील तथा भिलाला जनजातियों की सघन जनसंख्या है। ये जिले अरावली और विंध्य के मिलन स्थल के पास हैं और यहाँ की सामाजिक-आर्थिक संरचना पूरी तरह से जनजातीय संस्कृति से प्रेरित है। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और कठिन जीवन परिस्थितियों के बावजूद यह क्षेत्र अपनी पारंपरिक लोक कलाओं के लिए पहचाना जाता है।

253. (D) उत्तर प्रदेश
माताटीला बांध बेतवा नदी पर निर्मित है और यह मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की एक संयुक्त बहुउद्देशीय परियोजना है। यद्यपि बांध का मुख्य ढांचा उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में है, लेकिन इससे होने वाला लाभ और जल का बँटवारा दोनों राज्यों के बीच एक संधि के तहत किया जाता है। यह परियोजना बुंदेलखंड के सूखे जिलों को सिंचाई और बिजली प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह दो राज्यों के बीच सफल जल संसाधन प्रबंधन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

254. (C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
बघेलखंड का पठार मध्य प्रदेश का सबसे विकसित क्षेत्र नहीं है, बल्कि यह अपनी विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण विकास की दौड़ में मालवा और नर्मदा घाटी से पीछे है, इसलिए कथन I गलत है। हालांकि कथन II बिल्कुल सही है क्योंकि यह क्षेत्र गोंडवाना संरचना के कारण कोयला, बॉक्साइट और चूना पत्थर जैसे खनिजों में अत्यंत समृद्ध है। यहाँ सिंगरौली जैसे बड़े औद्योगिक केंद्र इन्हीं संसाधनों पर आधारित हैं, जो राज्य की खनिज संपदा का आधार हैं।

255. (C) बेतवा
विश्व प्रसिद्ध बौद्ध धरोहर स्थल सांची मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है और यह बेतवा नदी के समीपवर्ती क्षेत्र में आता है। बेतवा नदी सांची की पहाड़ियों के पास से बहती है, जो इस ऐतिहासिक स्थल को एक सुंदर और शांत प्राकृतिक परिवेश प्रदान करती है। प्राचीन काल में नदियों के किनारे बस्तियों और स्मारकों का निर्माण सुरक्षा और जल की सुलभता के लिए किया जाता था। सांची के स्तूप और बेतवा का यह सानिध्य मध्य भारत की समृद्ध विरासत और भूगोल को जोड़ता है।

Downloaded from www.pdf.tube

276. (B) पश्चिमी भाग
भील जनजाति मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में सर्वाधिक पाई जाती है, विशेष रूप से झाबुआ, अलीराजपुर, धार और बड़वानी जिलों में। यह राज्य की सबसे बड़ी जनजातीय आबादी में से एक है। भील समुदाय की अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और पारंपरिक जीवनशैली है जो यहाँ के पहाड़ी और वनाच्छादित भूगोल से गहराई से जुड़ी हुई है। इनका प्रमुख त्योहार 'भगोरिया' पूरे देश में प्रसिद्ध है। पश्चिमी मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना में भील जनजाति का योगदान महत्वपूर्ण है।

277. (B) सतना में कैमूर की पहाड़ियाँ
'टोंस' नदी, जिसे प्राचीन काल में 'तमसा' भी कहा जाता था, मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित विंध्याचल की कैमूर पहाड़ियों से निकलती है। यह नदी उत्तर-पूर्व की ओर बहती है और कई सुंदर जलप्रपातों का निर्माण करती है, जिनमें 'पुरवा प्रपात' प्रसिद्ध है। अंततः यह नदी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी में मिल जाती है। टोंस नदी विंध्यन क्षेत्र की जल निकासी प्रणाली की एक महत्वपूर्ण इकाई है और यह क्षेत्रीय कृषि तथा पारिस्थितिकी के लिए जल का एक विश्वसनीय स्रोत प्रदान करती है।

278. (C) सीमेंट
सीमेंट उद्योग एक पूर्णतः खनिज संसाधनों पर आधारित उद्योग है, क्योंकि इसका मुख्य कच्चा माल चूना पत्थर है जो खदानों से प्राप्त होता है। मध्य प्रदेश में विंध्यन शैल समूह में चूना पत्थर की प्रचुरता के कारण सतना और कटनी जैसे जिलों में यह उद्योग विकसित हुआ है। अन्य विकल्प जैसे सोयाबीन तेल, सूती वस्त्र और चीनी 'कृषि आधारित' उद्योग हैं क्योंकि उनका कच्चा माल फसलों से प्राप्त होता है। सीमेंट उद्योग राज्य के औद्योगिक राजस्व और निर्माण क्षेत्र की रीढ़ माना जाता है।

279. (D) बुंदेलखंड
'गढ़ कुंडार' मध्य प्रदेश के निवारी जिले में स्थित एक ऐतिहासिक किला और क्षेत्र है, जो बुंदेलखंड पठार के अंतर्गत आता है। यह स्थान खंगार राजवंश की राजधानी रहा है और अपनी रहस्यमयी वास्तुकला तथा वीरता की कहानियों के लिए प्रसिद्ध है। बुंदेलखंड की ऊबड़-खाबड़ और पथरीली भूमि पर स्थित यह किला क्षेत्र की सामरिक और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। गढ़ कुंडार का इतिहास और इसका भूगोल बुंदेलखंड की गौरवशाली विरासत को गहराई से प्रदर्शित करते हैं।

280. (B) ताप्ती
पूर्णा नदी ताप्ती नदी की सबसे महत्वपूर्ण और मुख्य सहायक नदी है। यह ताप्ती के दक्षिण की ओर बहती है और महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में ताप्ती के साथ विलीन हो जाती है। ताप्ती नदी स्वयं मध्य प्रदेश के बैतूल जिले से निकलकर पश्चिम की ओर बहती है। पूर्णा नदी का जल और इसके द्वारा लाई गई मिट्टी ताप्ती बेसिन की कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है। नदियों के इस तंत्र को समझना मध्य भारत के पश्चिमी जल निकासी व्यवस्था के अध्ययन के लिए अनिवार्य है।

281. (B) ग्वालियर
तापीय विषमता ग्वालियर में सर्वाधिक होगी क्योंकि यह मध्य भारत के पठारी क्षेत्र में स्थित है जहाँ महाद्वीपीय जलवायु पाई जाती है। समुद्र से अत्यधिक दूरी और शुष्क भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ ग्रीष्म ऋतु में तापमान बहुत ऊँचा चला जाता है और शीत ऋतु में कड़ाके की ठंड पड़ती है। इसके विपरीत पचमढ़ी और इंदौर जैसे क्षेत्रों में ऊँचाई या वनस्पति के प्रभाव से तापमान अपेक्षाकृत मध्यम रहता है। ग्वालियर की यह मौसमी चरम सीमा यहाँ के जनजीवन को प्रभावित करती है।

NODIA

282. (C) सतपुड़ा और विंध्य श्रेणियाँ
'गोंड' जनजाति मध्य प्रदेश की एक प्रमुख और प्राचीन जनजाति है, जिसका संकेंद्रण मुख्य रूप से सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के वनाच्छादित क्षेत्रों में पाया जाता है। मंडला, डिंडोरी, छिंदवाड़ा और नर्मदा घाटी के आसपास के जिले इनके मुख्य निवास स्थल हैं। गोंड समुदाय की अपनी समृद्ध कला, संस्कृति और पारंपरिक सामाजिक ढांचा है। इन पर्वतीय क्षेत्रों की सुरक्षित भौगोलिक स्थिति ने गोंडों को अपनी सदियों पुरानी परंपराओं को जीवित रखने में सहायता की है।

283. (B) मैंगनीज और तांबा
मध्य प्रदेश में 'धारवाड़' शैल समूह खनिज संपदा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से मैंगनीज और तांबा जैसे धात्विक खनिजों के लिए। बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों में इस शैल समूह का विस्तार पाया जाता है, जहाँ मलंजखंड में तांबा और भरवेली में मैंगनीज के विशाल भंडार मौजूद हैं। धारवाड़ क्रम की चट्टानें भारत की सबसे पुरानी रूपांतरित चट्टानों में से हैं और इनमें विविध मूल्यवान खनिज संचित हैं। यह भूगर्भीय संरचना राज्य को राष्ट्रीय खनिज मानचित्र पर अग्रणी स्थान प्रदान करती है।

284. (C) बुंदेलखंड - सरसों (बीहड़ों के बिना)
सरसों का उत्पादन मुख्य रूप से मध्य भारत के पठारी क्षेत्र की विशेषता है जहाँ बीहड़ पाए जाते हैं, इसलिए इसे 'सरसों की हांडी' कहा जाता है। बुंदेलखंड क्षेत्र मोटे अनाजों और दलहन के लिए जाना जाता है, सरसों के लिए नहीं। अन्य युग्म सही हैं: मालवा में काली मिट्टी, बघेलखंड में कोयला भंडार और मध्य भारत के पठार में जलोढ़ मिट्टी तथा सरसों की प्रधानता है। अतः बुंदेलखंड और सरसों का युग्म यहाँ गलत सुमेलित है क्योंकि सरसों का सघन उत्पादन उत्तर के मैदानों में होता है।

285. (C) P-2, Q-1, R-3, S-4
मध्य प्रदेश के पुराने ऐतिहासिक नामों और उनके आधुनिक क्षेत्रों का मिलान राज्य की ऐतिहासिक निरंतरता को दर्शाता है। 'जेजाकभुक्ति' बुंदेलखंड का प्राचीन नाम है, जबकि 'अवंती' मालवा क्षेत्र को कहा जाता था। 'वत्स' का संबंध ग्वालियर और उसके आसपास के क्षेत्र से रहा है, और 'चेदि' महाजनपद का विस्तार वर्तमान बघेलखंड और पूर्वी मध्य प्रदेश के हिस्सों में था। ये प्राचीन नाम क्षेत्र की गौरवशाली सांस्कृतिक और राजनीतिक विरासत के प्रमाण हैं जो आज भी स्थानीय पहचान से जुड़े हैं।

266. (C) उपजाऊ गहरी काली मृदा
बुंदेलखंड पठार की विशेषता उपजाऊ गहरी काली मिट्टी नहीं है; यह विशेषता मुख्य रूप से मालवा के पठार और नर्मदा घाटी की है। बुंदेलखंड का धरातल प्राचीन नीस और ग्रेनाइट से बना है, जिससे यहाँ की मिट्टी मुख्य रूप से मिश्रित लाल और काली या कम उपजाऊ दोमट प्रकार की है। यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय है और नदियाँ उत्तर की ओर बहती हैं, लेकिन मिट्टी की कम जल धारण क्षमता और पथरीला स्वरूप यहाँ की कृषि के लिए एक बड़ी भौगोलिक सीमा और चुनौती है।

267. (B) नर्मदा और सोन का उद्गम
मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले का सबसे बड़ा भौगोलिक और धार्मिक महत्व यहाँ स्थित अमरकंटक का पठार है, जो नर्मदा और सोन जैसी दो महान नदियों का उद्गम स्थल है। यहाँ से नर्मदा पश्चिम की ओर और सोन उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। यह स्थान एक पवित्र तीर्थ स्थल होने के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और जल-विभाजन केंद्र भी है। अमरकंटक की इसी विशिष्टता के कारण अनूपपुर जिला राज्य के मानचित्र पर एक विशिष्ट और सम्मानित स्थान रखता है।

268. (D) मध्य भारत (मुरैना)
'गजक' मध्य प्रदेश के मध्य भारत के पठारी क्षेत्र, विशेष रूप से मुरैना जिले का एक अत्यंत प्रसिद्ध पारंपरिक उत्पाद है। मुरैना की गजक को उसकी शुद्धता और विशिष्ट स्वाद के लिए भौगोलिक संकेतक भी प्राप्त है। यहाँ शीत ऋतु के दौरान तिल और गुड़ से बनी गजक का निर्माण एक बड़े कुटीर उद्योग के रूप में किया जाता है। मुरैना के इस उत्पाद ने न केवल राज्य बल्कि पूरे देश में अपनी एक अलग पहचान बनाई है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

269. (C) सिंगरौली
विंध्याचल ताप विद्युत केंद्र मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले के वैढ़न नामक स्थान पर स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा ताप विद्युत संयंत्र है, जो नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन द्वारा संचालित किया जाता है। सिंगरौली में प्रचुर मात्रा में कोयले की उपलब्धता और पास के जलाशयों से जल की सुलभता ने इसे इतने विशाल संयंत्र के लिए सबसे उपयुक्त स्थान बनाया है। यह केंद्र देश की बिजली आपूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान देता है और सिंगरौली को ऊर्जा हब के रूप में स्थापित करता है।

270. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
मालवा के पठार की पश्चिमी सीमा वास्तव में अरावली पर्वतमाला के साथ स्पर्श करती है या उसके बहुत समीप है, जो अभिकथन को सत्य बनाती है। हालांकि कारण (R) गलत है क्योंकि मालवा का पठार पहाड़ी दीवारों से पूरी तरह पृथक नहीं है; इसके उत्तर में विंध्याचल श्रेणी और पश्चिम में अरावली का विस्तार इसे प्राकृतिक रूप से सीमाबद्ध करता है। यह पठार अन्य भौगोलिक इकाइयों के साथ निरंतरता में जुड़ा हुआ है, जो इसके क्षेत्रीय भूगोल को परिभाषित करता है।

271. (C) अवनालिका अपरदन
भिंड और मुरैना जिलों में मृदा अपरदन का मुख्य कारण 'अवनालिका अपरदन' है। चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों का तेज बहाव यहाँ की कोमल जलोढ़ मिट्टी को गहराई से काट देता है, जिससे गहरी खाइयाँ और नालियाँ बन जाती हैं। इस प्रक्रिया ने इस उपजाऊ क्षेत्र को बीहड़ों में बदल दिया है, जिससे बड़े पैमाने पर कृषि योग्य भूमि नष्ट हो गई है। यह समस्या न केवल खेती को प्रभावित करती है, बल्कि यह इस क्षेत्र की एक गंभीर पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौती भी बन गई है।

272. (C) कोयला
मध्य प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित कान्हा और पेंच घाटी क्षेत्र कोयला संसाधनों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह क्षेत्र सतपुड़ा कोयला बेल्ट का हिस्सा है, जहाँ गोंडवाना काल की चट्टानों में कोयले के संचय पाए जाते हैं। पेंच-कान्हा घाटी की खदानें राज्य के ताप विद्युत गृहों और उद्योगों को ऊर्जा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यद्यपि ये क्षेत्र राष्ट्रीय उद्यानों के लिए भी जाने जाते हैं, लेकिन भूगर्भीय रूप से यहाँ कोयले का खनन एक प्रमुख आर्थिक और औद्योगिक गतिविधि रही है।

273. (C) बुरहानपुर
ऐतिहासिक 'असीरगढ़' का किला मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिले में स्थित है। इस किले को "दक्षिण का प्रवेश द्वार" कहा जाता था क्योंकि उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर जाने वाले मार्ग पर इसका नियंत्रण था। यह किला सतपुड़ा पर्वतमाला की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। इसकी सुदृढ़ बनावट और ऊँचाई इसे अजय बनाती थी। बुरहानपुर का यह किला आज भी अपनी वास्तुकला और ऐतिहासिक गौरव के लिए पर्यटकों को आकर्षित करता है।

274. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मध्य प्रदेश की नदियाँ मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा हैं और वे वर्षा पर आधारित हैं, इसलिए कथन I सत्य है। हालांकि कथन II गलत है क्योंकि नर्मदा एक हिमालयी नदी नहीं है; इसका उद्गम मध्य प्रदेश के अमरकंटक पठार से होता है, जो कि प्रायद्वीपीय भारत की एक प्राचीन पर्वत श्रृंखला है। हिमालयी नदियाँ बर्फ के पिघलने से बनी होती हैं और बारहमासी होती हैं, जबकि नर्मदा जैसी प्रायद्वीपीय नदियाँ मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती हैं।

275. (B) मालवा और मध्य भारत का पठार
भोपाल से ग्वालियर की यात्रा के दौरान यात्री मुख्य रूप से दो प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों—मालवा का पठार और मध्य भारत का पठार—से होकर गुजरते हैं। भोपाल स्वयं मालवा के पूर्वी किनारे पर स्थित है, और जैसे ही हम उत्तर की ओर बढ़ते हैं, पठारी भूमि धीरे-धीरे मध्य भारत के पठारी क्षेत्र में परिवर्तित हो जाती है। यह यात्रा राज्य के विविध ऊँचावच, वनस्पति और जलवायु के क्रमिक बदलाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है, जो मालवा की हरियाली से उत्तर की शुष्कता की ओर ले जाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

256. (C) लाल और पीली मृदा
शहडोल जिला मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है और यह बघेलखंड पठार का हिस्सा है, जहाँ मुख्य रूप से लाल और पीली मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी का निर्माण प्राचीन रवेदार चट्टानों के अपक्षय से हुआ है और इसमें लौह ऑक्साइड की अधिकता के कारण लाल रंग होता है। यह मिट्टी मध्यम उर्वरता वाली होती है और चावल तथा मोटे अनाजों की खेती के लिए उपयोग की जाती है। शहडोल के कोयला क्षेत्रों के ऊपर इसी मिट्टी का विस्तार देखने को मिलता है।

257. (C) अफीम
मंदसौर और नीमच जिले मध्य प्रदेश ही नहीं, बल्कि भारत में अफीम की वैध खेती के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ की विशिष्ट जलवायु और मिट्टी अफीम के पौधों के विकास के लिए अत्यंत उपयुक्त है। भारत सरकार के नियंत्रण में यहाँ अफीम का उत्पादन औषधीय और वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है। नीमच में स्थित अल्कलॉइड फैक्ट्री इसी कच्चे माल का प्रसंस्करण करती है। यह इस क्षेत्र की एक प्रमुख व्यावसायिक गतिविधि है, जो इसे राज्य के अन्य कृषि क्षेत्रों से अलग बनाती है।

258. (C) विंध्य श्रेणी
बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में स्थित है और यह विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह उद्यान अपनी 32 पहाड़ियों के लिए प्रसिद्ध है और यहाँ का ऐतिहासिक किला विंध्य की ऊँची पहाड़ियों पर स्थित है। विंध्यन संरचना ने यहाँ के वन्यजीवों, विशेष रूप से बाघों के लिए एक सुरक्षित और विविध प्राकृतिक आवास प्रदान किया है। इस उद्यान की भौगोलिक स्थिति और प्राचीन स्मारक इसे पर्यटन और वन्यजीव संरक्षण दोनों की दृष्टि से अद्वितीय बनाते हैं।

259. (C) कोयला
कोयला मध्य प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा संसाधन है क्योंकि राज्य की अधिकांश विद्युत उत्पादन क्षमता ताप विद्युत केंद्रों पर आधारित है जो कोयले का उपयोग करते हैं। मध्य प्रदेश में भारत के कुछ सबसे बड़े कोयला क्षेत्र मौजूद हैं। कोयले की प्रचुरता ने न केवल बिजली उत्पादन को सुगम बनाया है, बल्कि यह रेलवे और भारी उद्योगों के लिए भी ऊर्जा का मुख्य स्रोत है। पेट्रोलियम और गैस की तुलना में कोयला राज्य की आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार है।

260. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्य प्रदेश के जिलों और उनके प्रमुख संसाधनों का मिलान क्षेत्रीय आर्थिक भूगोल को स्पष्ट करता है। पन्ना जिला अपनी हीरा खदानों के लिए विश्वविख्यात है, जबकि बालाघाट के मलंजखंड से देश का सर्वाधिक तांबा प्राप्त होता है। सिंगरौली को राज्य की 'ऊर्जा राजधानी' कहा जाता है क्योंकि यहाँ कोयले के विशाल भंडार हैं। सतना जिला अपने प्रचुर चूना पत्थर संसाधनों के कारण सीमेंट उद्योग का अग्रणी केंद्र है। यह संसाधन विविधता राज्य के औद्योगिक ढांचे की मजबूती का मुख्य कारण है।

261. (D) नर्मदा
महेश्वर जलविद्युत परियोजना मध्य प्रदेश के खरगोन जिले में नर्मदा नदी पर स्थित है। यह परियोजना नर्मदा घाटी के एकीकृत विकास का एक हिस्सा है, जिसका उद्देश्य बिजली उत्पादन और कृषि के लिए जल का प्रबंधन करना है। महेश्वर एक ऐतिहासिक और धार्मिक नगर भी है, जहाँ नर्मदा का विस्तार अत्यंत सुंदर और विस्तृत है। यह परियोजना न केवल क्षेत्र की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करती है, बल्कि निमाड़ क्षेत्र की सिंचाई व्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

262. (B) भ्रंश द्रोणी
भूगर्भीय रूप से नर्मदा-सोन घाटी एक 'भ्रंश द्रोणी' का उदाहरण है। इसका निर्माण दो समानांतर भ्रंशों के बीच के भू-खंड के नीचे धंसने से हुआ है, जिसके किनारे (विंध्य और सतपुड़ा) ब्लॉक पर्वत के रूप में खड़े हैं। यह एक लंबी और संकीर्ण खाई जैसी संरचना है जो पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हुई है। इस विशिष्ट बनावट के कारण ही नर्मदा और सोन जैसी नदियाँ इन गहरी घाटियों का अनुसरण करते हुए अपने मार्ग तय करती हैं।

NODIA

263. (C) मिट्टी की गुणवत्ता और जल आपूर्ति की कमी
मध्य भारत के पठार में कृषि उत्पादकता कम होने का मुख्य कारण यहाँ की मृदा गुणवत्ता की चुनौतियाँ और जल आपूर्ति की कमी है। यद्यपि यहाँ जलोढ़ मिट्टी है, लेकिन भीषण अवनालिका अपरदन ने इसे अनुपजाऊ बीहड़ों में बदल दिया है। साथ ही यह क्षेत्र अर्ध-शुष्क जलवायु में आता है जहाँ वर्षा कम और अनिश्चित है। सिंचाई के स्थायी साधनों के अभाव और मिट्टी के कटाव ने खेती को एक कठिन कार्य बना दिया है, जिससे यहाँ की उत्पादकता अन्य क्षेत्रों के मुकाबले कम रहती है।

264. (B) भोपाल
'राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग संस्थान' मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित है। यह एशिया का एक प्रमुख जैव-सुरक्षा प्रयोगशाला केंद्र है जो पशुओं में होने वाले घातक विषाणु रोगों, जैसे बर्ड फ्लू, के अनुसंधान और निदान के लिए समर्पित है। भोपाल की केंद्रीय अवस्थिति और यहाँ मौजूद उन्नत वैज्ञानिक आधारभूत संरचना ने इस महत्वपूर्ण संस्थान की स्थापना में सहायता की है। यह संस्थान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

265. (C) चंबल
चंबल नदी मध्य प्रदेश और राजस्थान के बीच एक लंबी प्राकृतिक और राजनीतिक सीमा बनाती है। यह नदी मध्य प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी जिलों से बहते हुए राजस्थान में प्रवेश करती है और कई किलोमीटर तक दोनों राज्यों के बीच विभाजक रेखा का कार्य करती है। चंबल की यह सीमावर्ती अवस्थिति अंतर-राज्यीय जल वितरण और सीमा सुरक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस नदी का जल और इसके द्वारा निर्मित बीहड़ दोनों राज्यों के सीमावर्ती भूगोल की एक साझा पहचान हैं।

286. (B) उपजाऊ मिट्टी और सिंचाई सुविधाएं
नर्मदा घाटी की उच्च कृषि उत्पादकता का मुख्य कारण यहाँ की अत्यंत उपजाऊ गहरी काली और जलोढ़ मिट्टी का होना है। साथ ही नर्मदा नदी और उस पर निर्मित अनेक बांधों ने क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं का एक विस्तृत जाल बिछा दिया है। प्रचुर जल और उपजाऊ मिट्टी के संगम ने इस घाटी को राज्य का एक प्रमुख खाद्य उत्पादक क्षेत्र बना दिया है। यहाँ साल भर फसलों का चक्र चलता रहता है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति और राज्य की खाद्य सुरक्षा सुदृढ़ होती है।

287. (A) केवल II
मध्य प्रदेश की जलवायु के बारे में केवल दूसरा कथन सत्य है कि राज्य में स्पष्ट रूप से ऋतु चक्र होते हैं। कथन I गलत है क्योंकि कर्क रेखा केवल 14 जिलों से गुजरती है, पूरे राज्य से नहीं। कथन III भी गलत है क्योंकि वर्षा पश्चिमी भाग में नहीं, बल्कि पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी भाग में अधिक होती है। राज्य की मानसूनी जलवायु इन मौसमी चक्रों और क्षेत्रीय वर्षा विसंगतियों के कारण विविध कृषि और वनस्पति का आधार बनती है, जो इसकी भौगोलिक पहचान है।

288. (C) नर्मदा
कपिलधारा जलप्रपात मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में अमरकंटक के पास नर्मदा नदी पर स्थित पहला प्रमुख जलप्रपात है। यह नर्मदा के उद्गम स्थल से मात्र कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जहाँ नदी ऊँचाई से नीचे गिरती है। इसका नाम ऋषि कपिल के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने यहाँ तपस्या की थी। अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक पवित्रता के कारण यह स्थान पर्यटकों और श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह नर्मदा नदी की प्रारंभिक यात्रा का एक सुंदर भौगोलिक पड़ाव है।

289. (B) रक्षा मंत्रालय
जबलपुर में स्थित 'व्हीकल फैक्ट्री' भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन एक प्रमुख उपक्रम है। यह कारखाना भारतीय सेना के लिए विभिन्न प्रकार के भारी वाहनों, जैसे ट्रक और लड़ाकू वाहनों का निर्माण करता है। जबलपुर की सामरिक अवस्थिति और रेलवे कनेक्टिविटी ने यहाँ रक्षा उद्योगों के विकास में बड़ी भूमिका निभाई है। यह संस्थान न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह जबलपुर को एक विशिष्ट औद्योगिक पहचान और रोजगार का बड़ा आधार भी प्रदान करता है।

290. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मालवा का पठार मध्य प्रदेश का सबसे सघन आबादी वाला क्षेत्र है, जिसका प्रमुख कारण यहाँ की अनुकूल भौगोलिक और आर्थिक परिस्थितियाँ हैं। यहाँ की उपजाऊ काली मिट्टी और सुखद समशीतोष्ण जलवायु ने कृषि को अत्यधिक विकसित किया है, जिससे जनसंख्या को आधार मिला है। साथ ही इंदौर, उज्जैन और भोपाल जैसे व्यापारिक केंद्रों और उद्योगों के विकास ने यहाँ लोगों के बसने के लिए व्यापक अवसर प्रदान किए हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं।

291. (B) नर्मदापुरम और बैतूल
मध्य प्रदेश में उच्च गुणवत्ता वाले सागौन के वन मुख्य रूप से नर्मदापुरम और बैतूल जिलों में पाए जाते हैं। नर्मदापुरम की 'बोरी घाटी' अपने सर्वोत्तम सागौन के पेड़ों के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के इन क्षेत्रों की मिट्टी और आर्द्र जलवायु सागौन के विकास के लिए अत्यंत उपयुक्त है। सागौन की लकड़ी अपनी मजबूती और टिकाऊपन के लिए जानी जाती है, जो राज्य के वन राजस्व में एक बड़ा योगदान देती है और स्थानीय समुदायों को रोजगार प्रदान करती है।

292. (B) नर्मदा घाटी
सेलखड़ी का उत्पादन मुख्य रूप से मध्य प्रदेश की नर्मदा घाटी, विशेष रूप से जबलपुर के भेड़ाघाट क्षेत्र में होता है। यहाँ की संगमरमर की चट्टानों के साथ सेलखड़ी के निक्षेप पाए जाते हैं, जो अत्यंत नरम और चिकने होते हैं। इसका उपयोग टेलकम पाउडर, सौंदर्य प्रसाधन और सजावटी हस्तशिल्प बनाने में किया जाता है। जबलपुर के स्थानीय शिल्पकार सेलखड़ी से सुंदर मूर्तियाँ और खिलौने बनाने के लिए जाने जाते हैं। यह खनिज इस क्षेत्र की विशिष्ट भूगर्भीय संपदा और कुटीर उद्योग का आधार है।

293. (B) बेतवा और बेस
मध्य प्रदेश का ऐतिहासिक विदिशा शहर बेतवा और उसकी सहायक नदी 'बेस' के संगम के पास स्थित है। नदियों के इस संगम ने प्राचीन काल से ही इस शहर को सामरिक और व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया है। बेतवा नदी यहाँ की जीवन रेखा है, जो ऐतिहासिक धरोहरों को एक प्राकृतिक और सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करती है। जल की निरंतर उपलब्धता ने यहाँ की कृषि और शहरी विकास को सदियों से सहारा दिया है, जो इसकी भौगोलिक पहचान है।

294. (C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
नर्मदा नदी भारत की उन प्रमुख नदियों में से एक है जो नौपरिवहन के लिए उपयुक्त नहीं है, इसलिए कथन II बिल्कुल सही है। इसका कारण इसके मार्ग में आने वाली अनेक क्षिप्रिकाएं और ऊँचे जलप्रपात हैं, जो बड़े जहाजों या नौकाओं के निरंतर आवागमन को बाधित करते हैं। यद्यपि नदी का मुहाना गुजरात में नौगम्य हो सकता है, लेकिन मध्य प्रदेश के पहाड़ी और चट्टानी इलाकों में यह संभव नहीं है। अतः कथन I गलत है और भौतिक बाधाएँ ही इसकी मुख्य भौगोलिक विशेषता हैं।

295. (C) सिंगरौली
इंदौर, उज्जैन और बुरहानपुर मध्य प्रदेश में कपड़ा उद्योग के ऐतिहासिक और प्रमुख केंद्र रहे हैं, जहाँ सूती वस्त्रों का बड़ा उत्पादन होता है। इसके विपरीत सिंगरौली जिला पूरी तरह से कोयला खनन और ताप विद्युत उत्पादन पर केंद्रित है, जिसे राज्य की 'ऊर्जा राजधानी' कहा जाता है। सिंगरौली में कपड़ा उद्योग का कोई महत्वपूर्ण संकेंद्रण नहीं है। अतः विकल्पों में सिंगरौली ही वह स्थान है जो कपड़ा उद्योग की श्रेणी में नहीं आता है। यहाँ की अर्थव्यवस्था खनिज संसाधनों पर आधारित है।

NODIA

296. (D) सेव
रतलाम शहर अपनी विशिष्ट नमकीन 'सेव' के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है, जिसे 'रतलामी सेव' के नाम से जाना जाता है। इस उत्पाद को इसकी विशिष्टता और स्वाद के लिए भौगोलिक संकेतक भी प्राप्त है। रतलाम की जलवायु और बेसन तथा मसालों का पारंपरिक मिश्रण इसे एक अनूठा स्वाद प्रदान करता है। यहाँ सेव का निर्माण एक बड़े स्थानीय उद्योग के रूप में किया जाता है, जिसने शहर को खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक पहचान और गौरव दिलाया है।

297. (C) इंदौर
सिगार चोटी मालवा पठार का उच्चतम शिखर है और यह मध्य प्रदेश के इंदौर जिले की महू तहसील के निकट स्थित है। इंदौर शहर से इसकी निकटता और मालवा के पठारी भूगोल में इसकी ऊँचाई इसे एक महत्वपूर्ण स्थल बनाती है। यह चोटी न केवल विंध्याचल श्रेणी का हिस्सा है, बल्कि यहाँ से आसपास के मैदानी इलाकों का व्यापक नजारा भी मिलता है। इंदौर के समीप इसकी अवस्थिति इसे क्षेत्रीय ऊँचावच के अध्ययन और स्थानीय पर्यटन के लिए एक प्रमुख केंद्र बनाती है।

298. (B) बघेलखंड और सतपुड़ा वन पट्टी
मध्य प्रदेश में तेंदू पत्ता का सर्वाधिक संग्रहण बघेलखंड और सतपुड़ा की सघन वन पट्टियों में किया जाता है। राज्य देश में तेंदू पत्ता का सबसे बड़ा उत्पादक है, जिसका उपयोग बीड़ी उद्योग में किया जाता है। सागर, मंडला, शहडोल और जबलपुर जैसे जिले इसके प्रमुख संग्रहण केंद्र हैं। यह वनोपज राज्य के लाखों जनजातीय लोगों की आजीविका का मुख्य आधार है। वन विभाग द्वारा इसके संग्रहण के लिए व्यापक सहकारी तंत्र बनाया गया है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाता है।

299. (A) बालाघाट
'संजय सरोवर' परियोजना, जिसे ऊपरी वैनगंगा परियोजना के नाम से भी जाना जाता है, मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के बालाघाट और सिवनी जिलों को लाभान्वित करती है। यह बांध वैनगंगा नदी पर निर्मित किया गया है और एशिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध माना जाता है। इस परियोजना का जल बालाघाट के धान उत्पादक क्षेत्रों के लिए सिंचाई का मुख्य स्रोत है। यह क्षेत्रीय कृषि विकास और जल संचयन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है, जिसने स्थानीय किसानों की समृद्धि सुनिश्चित की है।

300. (C) समृद्ध वन, खनिज और ऊर्जा संसाधन
वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ के गठन के बाद, अविभाजित मध्य प्रदेश ने अपने क्षेत्रफल का एक बड़ा हिस्सा और उसके साथ ही सघन वन, महत्वपूर्ण खनिज भंडार और भारी बिजली उत्पादन क्षमता वाले क्षेत्रों को खो दिया। यद्यपि मध्य प्रदेश के पास गेहूं और काली मिट्टी का विशाल क्षेत्र बना रहा, लेकिन संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य के अधिकार में चला गया। इस विभाजन ने मध्य प्रदेश की आर्थिक और औद्योगिक संरचना को पुनर्गठित करने की आवश्यकता पैदा की।

Downloaded from www.pdf.tube

Visit :
www.pdf.tube

NODIA

Download PDFs For :

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 600.00